श्री गुरु ग्रंथ साहिब

(मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद)

चौथी सैंची

डॉ० जोध सिंह

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के शाश्वत महत्त्व वाले सर्वधर्म समभाव के सिद्धान्तों और मूल्यों को ध्यान में रखकर भारतीय धर्मों के इतिहास की विशिष्ट उपलब्धि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का देवनागरी लिपि में मूलपाठ सहित सरल सुबोध एवं साहित्यक हिन्दी में किया हुआ यह पहला अनूठा अनुवाद कार्य है। इस अनुवाद कार्य में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मूलपाठ का पृष्ठ–क्रम शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर द्वारा प्रकाशित श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पृष्ठ–क्रम के अनुरूप है और इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि हर सैंची (जिल्द) में आई प्रमुख वाणी की विस्तृत जानकारी अन्त में परिशिष्ट रूप में दी गई है। सिक्ख धर्म–दर्शन के प्रख्यात विद्वान डॉ० जोध सिंह इस अनुवाद से पहले लगभग एक दर्जन अंग्रेजी, हिन्दी और पंजाबी पुस्तकों के अलावा श्री दसम ग्रंथ और वारां भाई गुरदास का हिन्दी, अंग्रेजी अनुवाद सुधी पाठकों तक पहुँचा चुके हैं जिनकी हिन्दी जगत् ने भरपूर रूप से सराहना की है। इस अनुवाद कार्य को अधिक लाभदायक बनाने के लिए जहां सिक्ख धर्म और जीवन–शैली से संबंधित शब्दावली सूची रूप में देकर उसका अर्थ दिया गया है वहीं सिक्ख धर्म–दर्शन, व्यावहारिक सिद्धान्तों, सिक्ख इतिहास और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अन्तरक्रम को समझने के लिए अस्सी से अधिक पृष्ठों की भूमिका भी दी गई है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सर्वथा नवीन जीवन दर्शन को समझने में विशेष रूप से सहायक है। निश्चित रूप से यह अनुवाद कार्य सिक्ख धर्म पर शोध कार्य करने वालों, धर्म की जीवन के व्यवहार में सार्थकता को समझने की इच्छा रखने वालों तथा सामान्य जिज्ञासुओं के लिए समान रूप से उपयोगी है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब

(मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद)

चौथी सैंची

डॉ. जोध सिंह
प्रोफैसर, सिक्ख धर्म एवं दर्शन
मैंबर, इंडियन कौंसिल ऑफ फिलासोफीकल रिसर्च (ICPR)
मुख्य सम्पादक, सिक्ख धर्म विश्वकोष
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला (पंजाब)

द सिक्ख हैरीटेज पब्लीकेशन्स,
पटियाला – 147 002

प्रकाशकः
द सिक्ख हैरीटेज पब्लीकेशन्स
15 बसन्त विहार, सरहिन्द रोड, पटियाला–147 002
टैलीफोन: 0175–2353102, 98144–14691

प्रथम संस्करण : 2004

400 रुपये

मुद्रक
दी डॉन प्रेस,
कटड़ा शेर सिंह, अमृतसर ।
टैलीफोन: 2541312, 2554735

विशेष सूचना

- मूल पाठ के लिप्यन्त्रण का आधारः शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा प्रकाशित श्री गुरु ग्रंथ साहिब ।

- मूल पाठ के शब्दों के अंतिम व्यंजन के साथ लगी ह्रस्व 'इ' (ि) और ह्रस्व 'उ' (ु) मात्रा का उच्चारण नहीं किया जाता है ।

विशेष आभार

परम पिता परमात्मा के प्रति मैं आभारी हूँ जिसने यह अनुवाद कार्य मुझसे कराया । मैं विशेष आभारी हूँ

सरदार राजिन्दर सिंह चाहल
सरदारनी जोगिन्दर कौर चाहल M/s J.K. Diesels Dhanbad
एवं सम्पूर्ण चाहल परिवार का

जिन्होंने इस अनुवाद कार्य को पाठकों तक पहुँचाने के लिए सभी साधन जुटाए और मेरी मेहनत को सार्थक बनाने में पूर्ण योगदान दिया ।

समर्पण

अठारहवीं सदी के उन लाखों
शहीद योद्धाओं को
जिन्होंने तत्कालीन शासकों द्वारा
सिक्खों के सिरों की कीमत
निर्धारित कर दिए जाने के बावजूद
सिक्ख स्वरूप का त्याग नहीं किया,
भारत की अस्मिता, सिक्ख नैतिक मूल्यों तथा
गुरु ग्रंथ साहिब के सर्वधर्म समभाव
की प्रखरता की रक्षा के लिए
पूर्ण कर्त्तव्य निष्ठा के साथ
प्राणों की आहुति दी ।

पृष्ट 1107 से 1430 तक का
मूलपाठ एवं अनुवाद

तुखारी छंत महला १ बारह माहा

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तू सुणि किरत करंमा पुरबि कमाइआ ॥ सिरि सिरि सुख सहंमा देहि सु तू भला ॥ हरि रचना तेरी किआ गति मेरी हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥ प्रिअ बाझु दुहेली कोइ न बेली गुरमुखि अंम्रितु पीवां ॥ रचना राचि रहे निरंकारी प्रभ मनि करम सुकरमा ॥ नानक पंथु निहाले सा धन तू सुणि आतम रामा ॥ १ ॥ बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥ सा धन सभि रस चोलै अंकि समाणीआ ॥ हरि अंकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे ॥ नव घर थापि महल घरु ऊचउ निज घरि वासु मुरारे ॥ सभ तेरी तू मेरा प्रीतमु निसि बासुर रंगि रावै ॥ नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥ २ ॥ तू सुणि हरि रस भिंने प्रीतम आपणे ॥ मनि तनि रवत रवंने घड़ी न बीसरै ॥ किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥ ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥ ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥ नानक द्रिसटि दीरघ सुखु पावै गुर सबदी मनु धीरा ॥ ३ ॥ बरसै अंम्रित धार बूंद सुहावणी ॥ साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥ हरि मंदरि आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण सारी ॥ घरि घरि कंतु रवै सोहागणि हउ किउ कंति विसारी ॥ उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥ नानक वरसै अंम्रित बाणी करि किरपा घरि आवै ॥ ४ ॥ चेतु बसंतु भला भवर

तुखारी छन्द महला १
बारह माहा (मासा)*

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे प्रभु, तू सुन, अपने पिछले किए हुए कर्मों के फलस्वरूप प्रत्येक जीव सुख अथवा दुख सहता है; जो तू देता है वही भला है। हे प्रभु, यह रचना तेरी ही है और इसमें भला मेरी क्या मजाल है; प्रभु के बिना तो मैं घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकता। प्रियतम के बिना मैं जीव स्त्री दुखी हूँ, मेरा कोई भी साथी नहीं है और गुरमुख बनकर ही मैं अमृत का पान करती हूँ। उस निराकार प्रभु की रचना में ही हम सब लीन हो रहे हैं परन्तु वास्तव में प्रभु को मन में बसाना ही सबसे उत्तम काम है। हे प्रभु, तू सुन, नानक का कथन है कि यह जीव स्त्री तेरा रास्ता देख रही है।। १ ।। हृदय रूपी चातक प्रिय-प्रिय बोलता रहता है और जीभ रूपी कोयल वाणी का उच्चारण करती रहती है। वह जीव स्त्री इस प्रकार सभी रसों का आनन्द लेती हुई प्रभु पति की गोदी में बस जाती है। प्रभु को अच्छी लगने वाली जीव स्त्री ही उस प्रभु के अंक में लीन होती है और वही स्त्री सुहागिन कही जाती है। वही नौ द्वारों वाले शरीर को पति प्रभु का ऊँचा निवास स्थान बनाकर वहीं अपने वास्तविक स्वरूप में प्रभु का निवास देखती है। मैं सम्पूर्ण रूप से तेरी हूँ और तू मेरा प्रियतम है, इस भाव को मन में बसाते हुए वह रात दिन उसके रंग में लीन होकर उसका सुमिरन करती है। हे नानक, हृदय रूपी चातक प्रिय-प्रिय बोलता रहता है और जीभ रूपी कोयल का शब्द भी शोभायमान बना रहता है।। २ ।। तू ऐसे लोगों का हाल सुन जो अपने प्रभु प्रियतम के रस में भीगे हुए रहते हैं और जिनके मन-तन में सुमिरन के कारण प्रभु समाया हुआ है अर्थात् तू मेरा हाल सुन। मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ, तुझे कैसे भुला सकता हूँ क्योंकि मैं तो तेरे गुणानुवाद के फलस्वरूप ही जीवित बना रहता हूँ। ना तो कोई मेरा है और ना ही यहाँ मैं किसी का हूँ; प्रभु के बिना मुझसे रहा नहीं जाता। मैंने तो उस प्रभु का ही आसरा पकड़ा है और उस प्रभु के चरणों का निवास हो जाने से मेरा शरीर पवित्र हो गया है। हे नानक, ऐसा जीव अब दूरदृष्टि वाला बन जाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से उसके मन को धैर्य बना रहता है।। ३ ।। सुहावनी अमृत की बूंद धारा प्रवाह बरस रही है; मेरी प्रभु से प्रीति बन गई है और वह मेरा प्रियतम मुझे स्वाभाविक रूप से ही मिल गया है। यदि प्रभु को भाता है तो वह प्रभु इस शरीर रूपी घर में आता है जहाँ जीव स्त्री खड़ी होकर अर्थात पूरी लगन के साथ उसके गुणों का सुमिरन कर रही है। हर सुहागिन के हृदय रूपी घर में वह प्रियतम रमण कर रहा है परन्तु मुझे मेरे पति ने क्यों भुला दिया है। झुके हुए बादल छाए हुए हैं, शोभायुक्त वर्षा हुई है और मन तन में प्रभु का प्रेम सुख दे रहा है। हे नानक, जब वह कृपा करके हृदय रूपी घर में आ बसता है तो उसकी अमृत वाणी की घनघोर वर्षा होती है।। ४ ।। चैत्र के बसन्त ऋतु वाले समय में भँवरे

* विस्तार के लिए परिशिष्ट १ देखें

सुहावड़े ॥ बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़े ॥ पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥ भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माए ॥ नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥ ५ ॥ वैसाखु भला साखा वेस करे ॥ धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥ घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥ कीमति कउण करे तुधु भावां देखि दिखावै ढोलो ॥ दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥ नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥ ६ ॥ माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥ थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥ धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥ साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥ निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥ नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥ ७ ॥ आसाड़ु भला सूरजु गगनि तपै ॥ धरती दूख सहै सोखै अगनि भखै ॥ अगनि रसु सोखै मरीऐ धोखै भी सो किरतु न हारे ॥ रथु फिरै छाइआ धन ताकै टीडु लवै मंझि बारे ॥ अवगण बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥ नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥ ८ ॥ सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥ मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥ पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥ सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥ हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावए ॥ नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥ ९ ॥ भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥ जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥ बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥ प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥ मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥ नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥ १० ॥ असुनि आउ पिरा सा धन झूरि मुई ॥ ता मिलीऐ प्रभ मेले दूजै भाइ खुई ॥ झूठि विगुती ता पिर मुती

सुहावने लगते हैं। यदि मेरा प्रियतम मेरे हृदय रूपी घर में लौट आए तो जैसे वन निर्जन स्थानों पर भी फल फूल उठता है उसी प्रकार मेरा हृदय भी खिल उठे। प्रियतम यदि घर नहीं आता है तो जीव स्त्री कैसे सुख पा सकती है; विरह की खींचतान में उसका शरीर टूटता जाता है। बाहर तो आम के वृक्ष पर सुन्दर कोयल बोलती है परन्तु मैं अपने अन्तर्मन के दुख को कैसे सहन करूं क्योंकि यह और भी तेज हो जाता है। फूलों से लदी हुई डालियों पर भँवरा घूम रहा है और इस सब खुशी को देखकर मैं वियोगिन कैसे जीवित बनी रहूँ। हे माँ, यह तो मेरे लिए मौत ही है। हे नानक, यदि जीव स्त्री प्रभु रूपी पति को घर पर पा जाए तो वह स्वाभाविक रूप से ही सुख प्राप्त करती रहती है।। ५ ।। वैशाख के भले समय में पेड़ों की शाखाएं सुन्दर वेश धारण करती हैं। द्वार पर खड़ी जीव स्त्री प्रभु पति का रास्ता देखती हुई कहती है कि हे प्रभु, दया करके मेरे पास आ जाओ। हे प्यारे, तुम मेरे हृदय रूपी घर में आ जाओ, तुमने तो ना तैर सकने वालों को पार उतार दिया है; तेरे बिना तो मेरा मूल्य आधी कौड़ी के बराबर भी नहीं है। किस कीमत पर मैं तुझे अच्छी लग सकती हूँ और हे प्रियतम, मैं कैसे तुझे देखकर अपने हृदय की पीड़ा दिखा सकती हूँ। जिसने उस प्रभु को दूर नहीं जाना, अन्तर्मन में ही उसे मान लिया है उसने वास्तव में प्रभु के ठिकाने को पहचान लिया है। हे नानक, वैशाख के महीने में वही प्रभु को प्राप्त करता है जिसकी सुरति शब्द में लीन हो गई है और जिसका मन सन्तुष्ट हो गया है।। ६ ।। ज्येष्ठ माह में वह भला प्रियतम क्यों भूले। सारी धरती भट्टी की तरह तप रही है और यह जीव स्त्री तेरे सामने विनती कर रही है। गुणों को याद करती हुई जीव स्त्री विनती करती है कि हे प्रभु, मैं तेरे गुणों का सुमिरन करती हूँ ताकि तुझे अच्छी लग सकूं। सत्य के महल में वह अलेप बना हुआ प्रभु निवास करता है और हे प्रभु, यदि तू मुझे आने दे तभी मैं वहाँ आ सकती हूँ। विनम्र और बलहीन जीव स्त्री पति के महलों में सुख कैसे पा सकती है। हे नानक, ज्येष्ठ के महीने में यदि वह उस प्रभु का ही रूप होकर गुण ग्रहण करने वाली बन जाती है तो वह उसकी कृपा से प्रभु में लीन हो जाती है।। ७ ।। आषाढ़ का महीना भी भला है जिसमें सूर्य आकाश में तपता रहता है। धरती दुख सहन करती हुई उसकी आग को खाती हुई सूखती रहती है। अग्नि रूपी सूर्य जल रूपी रस को सुखा देता है और स्वयं ही जलता-जलता मरता रहता है परन्तु फिर भी अपना काम करने में हार नहीं मानता। इस सूर्य का रथ घूमता रहता है और जीव स्त्री इसकी गर्मी से बचने के लिए छाया को ढूंढती रहती है; निर्जन क्षेत्रों में टिड्डे अपनी ध्वनियाँ निकालते रहते हैं। जो जीव स्त्री यहाँ से अवगुणों की पोटली बांधकर चलती है उसे आगे जाकर दुख ही दुख मिलता है परन्तु जो सत्य को हृदय में बसाए रहती है उसे सुख प्राप्त होता है। हे नानक, जिसे सत्य को संभालने वाला मन प्रभु ने दे दिया है उसके जीवन मरण दोनों में ही प्रभु उसके साथ बना रहता है।। ८ ।। हे मेरे मन, सावन के महीने में तू रस से भर जा क्योंकि अब बादलों के बरसने का मौसम आ गया है। मुझे तन मन में मेरा पति प्रभु भाता है परन्तु मेरा प्रियतम मुझसे दूर परदेस में चला गया है। प्रियतम घर नहीं आता और मैं उसके वियोग में मरी जाती हूँ और संसार की चकाचौंध वाली बिजलियाँ चमक-चमक कर मुझे डरा रही हैं। हे माँ, मेरी सेज अकेली ही है और उस पर मैं दुखी होकर खड़ी हूँ और मेरा यह दुख मेरे लिए मौत के बराबर है। प्रभु के बिना यह नींद और भूख भला कैसे लगेगी तथा वस्त्र भी मेरे शरीर को अब सुख नहीं देते। हे नानक, अपने प्रिय की सुहागिन वही है जो प्रियतम के अंक में समाई रहती है।। ९ ।। भादों के महीने में द्वैतभाव के भ्रमों में भूली हुई यौवनपूर्ण जीव स्त्री पछताती रहती है। उसके चारों ओर प्रभु की कृपा की वर्षा का जल भरा रहता है और यह आनन्द लेने का मौसम होता है। काली रात में भी बेशक प्रभु की कृपा की वर्षा होती रहती है परन्तु मेंढक और मोरों के बोलते रहने के बावजूद भी प्रियतम से बिछुड़ी हई स्त्री को भला कैसे सुख मिल सकता है। पपीहा प्रिय प्रिय कहता रहता है और सांप भी डसते हुए इधर-उधर दौड़ते रहते हैं। तालाब पानी से पूरे भर जाते हैं और मच्छर काटते रहते हैं; उस प्रभु के बिना इन साँसारिक कष्टों से कैसे छुटकारा पाकर भला सुख प्राप्त किया जा सकता है। हे नानक, इस सब के बारे में ज्ञान देने वाले गुरु से पूछकर आगे बढ़ो और जहाँ प्रभु का निवास है उसी तरफ ही चल दो।। १० ।। आश्विन के महीने में हे प्रियतम, तुम आ जाओ क्योंकि यह जीव स्त्री तो पश्चाताप में ही मर चुकी है। द्वैतभाव में इस रास्ता भूली हुई जीव स्त्री को यदि प्रभु ही मिला दे तो वह उससे जा मिलती है। वास्तव में जब वह झूठ में नष्ट हो गई तभी इसके प्रियतम ने इसे छोड़ दिया और

कुकह काह सि फुले ॥ आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले ॥ दह दिसि साख हरी हरीआवल सहजि पकै सो मीठा ॥ नानक असुनि मिलहु पिआरे सतिगुर भए बसीठा ॥ ११ ॥ कतकि किरतु पइआ जो प्रभ भाइआ ॥ दीपकु सहजि बलै तति जलाइआ ॥ दीपक रस तेलो धन पिर मेलो धन ओमाहै सरसी ॥ अवगण मारी मरै न सीझै गुणि मारी ता मरसी ॥ नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥ नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥ १२ ॥ मंघर माहु भला हरि गुण अंकि समावए ॥ गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥ निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ ॥ गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥ नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥ १३ ॥ पोखि तुखारु पड़ै वणु त्रिणु रसु सोखै ॥ आवत की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रंगु माणी ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी ॥ दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावउ मति देहो ॥ नानक रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥ १४ ॥ माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥ साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ ॥ प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा ॥ गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥ पुंन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥ नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥ १५ ॥ फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥ अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥ मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ करि किरपा घरि आओ ॥ बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाओ ॥ हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥ नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥ १६ ॥ बे दस माह रुती थिती वार भले ॥ घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥ प्रभ मिले पिआरे कारज सारे करता सभ बिधि जाणै ॥ जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलि भइआ रंगु माणै ॥ घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी

अब इसके सरकंडे जैसे शरीर पर कास के सफेद फूल आ गए हैं अर्थात इसका यौवन व्यतीत हो गया और बुढ़ापा आ पहुँचा है। अब आगे इसे दुखों की गर्मी और पीछे इसे निष्क्रियता की घोर ठंडक दिखाई देती है; किसी ओर चलने में अब इसका मन घबराता है। अब यह देख पाती है कि दसों दिशाओं में शाखाएं हरी तभी होती हैं जब वे अपने मूल (प्रभु) के साथ ही धीरे-धीरे विकसित होती हैं ; अब वह यह भी जान जाती है कि जो धीरे धीरे पकता है वह मीठा होता है। नानक का कथन है कि हे प्रियतम आश्विन मास में तो मुझे आ मिलो क्योंकि अब तो सच्चा गुरु भी मेरा बिचौलिया (वकील) बन गया है।। ११ ।। कार्तिक के महीने में वही फल मिला है जो उस प्रभु को अच्छा लगा है। वही दीपक स्वाभाविक रूप से जलता रहता है जिसे तत्व ज्ञान के तेल से जलाया गया हो; उस दीपक में प्रेम रूपी तेल होता है। जिस स्त्री का प्रभु पति के साथ मिलाप हो जाता है वह उत्साह पूर्वक प्रसन्न बनी रहती है। जीव स्त्री पापों की मारी हुई मरकर भी मुक्त नहीं होती। जब उसे गुणों के साथ मारा जाता है वह तभी मुक्ति प्राप्त करती हैं। हे प्रभु, जिन्हें तू अपना नाम और भक्ति देता है वे अपने वास्तविक घर में बैठे रहते हैं और सदा तुझ पर ही आस लगाए रहते हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु, अपने किवाड़ खोलकर हमसे आ मिलो क्योंकि वियोग की एक घड़ी भी छः महीने के बराबर हो रही है।। १२ ।। प्रभु के गुण हृदय में समाने से अगहन का महीना भला हो जाता है। गुणवंती स्त्री उसके गुणों को याद करती है और कहती है कि काश! मुझे वह अटल प्रभु अच्छा लगता और मैं भी प्रभु को याद करती रहती। वह चतुर, सुजान, विधाता प्रभु अटल है और यह सारा संसार चलायमान है। ज्ञान ध्यान के गुणों से ही उस प्रभु के अंक में लीन हुआ जाता है और वह भी तब होता है यदि प्रभु को अच्छा लगे। प्रभु-नाम के गीत, नाद, कविताएं इत्यादि कवियों के मुँह से सुनकर दुख भाग खड़े होते हैं। हे नानक, वह जीव स्त्री प्रभु पति को प्यारी लगती है जो हृदय से उसकी भक्ति करती है और उसके सामने बनी रहती है।। १३ ।। पौष के महीने में पाला पड़ता है और वन तथा वनस्पति का रस सूख जाता है। तू जो हमारे मन तन और मुख में समाया हुआ है हे प्रभु, क्यों नहीं आता। वह संसार का जीवन प्रभु तन मन में बस जाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से उसका आनन्द लिया जाता है। जीवन के चारों स्रोत अर्थात अण्डज, स्वेदज, उदभिज और माँ का गर्भ आदि सबमें तुम्हारी ही ज्योति भरी हुई है। हे दयालु दाता प्रभु, मुझे दर्शन दो और ऐसी मति प्रदान करो कि मैं ऊँची अवस्था प्राप्त कर सकूं। जिसे प्रभु के साथ प्रेम हो गया है हे नानक, वह उस रस में रसपूर्ण बने हुए के साथ प्रेम पूर्वक रमण करती है।। १४ ।। यदि अन्तर्मन में ही तीर्थ को जान लिया जाए तो माघ का महीना भी पवित्र बन जाता है। वह सज्जन प्रभु स्वाभाविक रूप से ही मिलता है और जीव गुणों को ग्रहण करके उसकी गोदी में लीन हो जाता है। हे बांके प्रभु सुन, गुणों के कारण ही तुझ प्रियतम के अंक में पहुँचा जाता है और यदि मैं तुझे भा जाऊं तो यही मेरे लिए सरोवरों में स्नान करने के तुल्य है। गंगा, यमुना, त्रिवेणी संगम और सातों समुद्रों का स्नान भी मेरे लिए यही है कि मैं तुझे भा जाऊँ। युगों-युगों में उस परमेश्वर को ही जानना पुण्य दान और परमेश्वर की पूजा के समान है। हे नानक, माघ महीने का मास और अड़सठ तीर्थों का स्नान केवल प्रभु का सुमिरन करना ही है।। १५ ।। स्वभाव में प्रेम आ गया तो फाल्गुन के महीने में मन खिल उठता है। अपना अभिमान गँवाने से दिन रात प्रसन्नता बनी रहती है। जब उसको भा गया तो मेरे मन का मोह चुक गया; हे प्रियतम प्रभु, कृपा करके मेरे हृदय रूपी घर में आ जाओ। प्रियतम के बिना मैं अनेकों वेश कर रही हूँ परन्तु मुझे उसके महल में ठिकाना नहीं मिलता। यदि प्रियतम ने मुझे चाहा तो मैने हार, डोरी, वस्त्र इत्यादि से श्रृंगार कर लिया है। हे नानक, अपने गुरु ने मुझे प्रियतम प्रभु से मिला लिया है और मुझ जीव स्त्री ने पति प्रभु को हृदय में ही पा लिया है।। १६ ।। दो और दस अर्थात बारहों महीने, ऋतुएं, तिथियां और वार सब भले हैं; घड़ियाँ, मुहूर्त और पल आदि भी सभी सच्चे हैं यदि स्वाभाविक रूप से ही प्रभु आ मिले। जब प्रभु मिलता है तो सभी काम सँवर जाते है; वह कर्ता परमात्मा सभी विधियों को जानने वाला है। जिसने यह शृंगार बनाया है जीव स्त्री उसी की प्यारी बन जाती है और उससे मिलाप करके आनन्दित बनी रहती है। यदि प्रियतम प्रभु ने रमण कर लिया तो हृदय रूपी सेज भी सुहावनी बन गई;

गुरमुखि मसतकि भागो ॥ नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥ १७ ॥ १ ॥ तुखारी महला १ ॥ पहिलै पहरै नैण सलोनड़ीए रैणि अंधिआरी राम ॥ वखरु राखु मुईए आवै वारी राम ॥ वारी आवै कवणु जगावै सूती जम रसु चूसए ॥ रैणि अंधेरी किआ पति तेरी चोरु पड़ै घरु मूसए ॥ राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनंती मेरीआ ॥ नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ ॥ १ ॥ दूजा पहरु भइआ जागु अचेती राम ॥ वखरु राखु मुईए खाजै खेती राम ॥ राखहु खेती हरि गुर हेती जागत चोरु न लागै ॥ जम मगि न जावहु ना दुखु पावहु जम का डरु भउ भागै ॥ रवि ससि दीपक गुरमति दुआरै मनि साचा मुखि धिआवए ॥ नानक मूरखु अजहु न चेतै किव दूजै सुखु पावए ॥ २ ॥ तीजा पहरु भइआ नीद विआपी राम ॥ माइआ सुत दारा दूखि संतापी राम ॥ माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै ॥ नामु धिआवै ता सुखु पावै गुरमति कालु न ग्रासै ॥ जंमणु मरणु कालु नही छोडै विणु नावै संतापी ॥ नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोहि विआपी ॥ ३ ॥ चउथा पहरु भइआ दउतु बिहागै राम ॥ तिन घरु राखिअड़ा जुो अनदिनु जागै राम ॥ गुर पूछि जागे नामि लागे तिना रैणि सुहेलीआ ॥ गुर सबदु कमावहि जनमि न आवहि तिना हरि प्रभु बेलीआ ॥ कर कंपि चरण सरीरु कंपै नैण अंधुले तनु भसम से ॥ नानक दुखीआ जुग चारे बिनु नाम हरि के मनि वसे ॥ ४ ॥ खूली गंठि उठो लिखिआ आइआ राम ॥ रस कस सुख ठाके बंधि चलाइआ राम ॥ बंधि चलाइआ जा प्रभ भाइआ ना दीसै ना सुणीऐ ॥ आपण वारी सभसै आवै पकी खेती लुणीऐ ॥ घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीआ ॥ नानक सुरि नर सबदि मिलाए तिनि प्रभि कारणु कीआ ॥ ५ ॥ २ ॥ तुखारी महला १ ॥ तारा चड़िआ लंमा किउ नदरि निहालिआ राम ॥ सेवक पूर करंमा सतिगुरि सबदि दिखालिआ राम ॥ गुर सबदि दिखालिआ सचु समालिआ अहिनिसि देखि बीचारिआ ॥ धावत पंच रहे घरु जाणिआ कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ अंतरि जोति भई गुर साखी चीने राम करंमा ॥

गुरमुख बने हुए जीव के माथे पर भाग्य चमक उठा। हे नानक, वह प्रियतम दिन रात जीव स्त्री के साथ रमण करता रहता है अर्थात उससे मिला रहता है और प्रभु रूपी पति होने से जीव स्त्री का सुहाग स्थिर बना रहता है।। १७ ।। १ ।। तुखारी महला १ ।। हे सुन्दर आँखों वाली स्त्री, जीवन रूपी रात्रि का पहला प्रहर अज्ञान रूपी अंधकार से भरा रहता है। तू प्रभु-नाम रूपी सौदा सम्भाल कर रख नहीं तो हे मरजानी स्त्री, तेरी भी बारी आने ही वाली है। तेरी बारी आने वाली है इसलिए तुझ सोई हुई को कौन जगाए; यम तेरे जीवन का रस चूसता जा रहा है। इस अंधेरी रात में तेरी इज्ज़त कैसे बचेगी क्योंकि काम, क्रोध आदि चोर तेरे शरीर रूपी घर को लूटते जा रहे हैं। हे अगम्य, अपार एवं रक्षा करने वाले प्रभु, तुम मेरी विनती को सुन लो। नानक का कथन है कि मूर्ख व्यक्ति कभी भी सावधान नहीं होता और उसे जीवन के अज्ञानपूर्ण अंधकारमय समय में कुछ भी पता नहीं चलता।। १ ।। जीवन का दूसरा प्रहर आ गया है इसलिए हे मूर्ख, तू अभी भी जाग जा। तू अभी भी अपने सौदे को बचाकर रख ले। तेरी गुणों की खेती को विकारों द्वारा खाया जा रहा है। प्रभु-गुरु के साथ प्रेम लगाकर अपनी खेती की रक्षा करो क्योंकि सावधान बने रहने से चोर नहीं लग सकते। अपने आध्यात्मिक जीवन के मौत वाले रास्ते पर मत जाओ और दुख को प्राप्त मत करो; ऐसा करने का यम का भय भाग खड़ा होगा। गुरमति के द्वार पर आने से सूरज, चन्द्रमा जैसे ज्ञान के दीपक जल उठेंगे, तेरे मन में सच्चा प्रभु निवास कर लेगा और तू मुख से प्रभु का सुमिरन करता रहेगा। हे नानक, मूर्ख व्यक्ति तो आधा जीवन व्यतीत हो जाने पर भी सावधान नहीं होता; दूसरे आधे भाग में यह भला कैसे सुख प्राप्त करेगा।। २ ।। जीवन के तीसरे प्रहर में पुत्र, स्त्री के मोह की नींद घेर लेती है। पुत्र, स्त्री के रूप में माया दुख और संताप देती रहती है। पुत्र और स्त्री की माया का इस संसार में प्यारा चुग्गा यह जीव रूपी पक्षी चुगता रहता है और सदैव फँसता चला जाता है। यदि यह प्रभु-नाम का सुमिरन करे तभी यह सुख प्राप्त करेगा और गुरुमति के अनुरूप चलने से काल इसे खा नहीं सकेगा। प्रभु-नाम से विहीन होकर यह संतप्त बना रहता है और काल के वश में जन्म-मरण इसे छोड़ता नहीं। हे नानक, जीवन के तीसरे प्रहर में लोग त्रिगुणात्मक माया के मोह में ग्रस्त बने रहते हैं।। ३ ।। जीवन के चौथे प्रहर में सुबह का प्रकाश हो गया और सूरज चढ़ आया अर्थात आयु समाप्त हो गई। जो सदैव ज्ञान में जगता रहा उसने अपने घर को बचा लिया है। प्रभु-नाम में लगे हुए जो गुरु से पूछ कर सावधान बने रहे उनकी जीवन रूपी रात्रि सुखद बन गई है। उन्होंने शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण बनाया, वे फिर जन्म मरण में नहीं आते और हरि प्रभु उनका मित्र बन जाता है। इस चौथे प्रहर में हाथ, पाँव और शरीर काँपने लगता है, आँखे अंधी हो जाती है और शरीर राख की तरह आभा विहीन हो जाता है। हे नानक, प्रभु-नाम को मन में बसाए बगैर यह जीव चारों युगों में दुखी बना रहता है।। ४ ।। हिसाब किताब की पोटली खुल गई और लिखा हुआ संदेश आ पहुँचा कि अब यहाँ से चलते बनो। सभी प्रकार के रस और सुख समाप्त हो गए और दूत इसे बाँधकर ले चले। प्रभु को जैसा अच्छा लगा इसे बाँधकर ले चला गया और अब ना तो कुछ दिखाई देता है और ना कोई सुनने वाला है। सबकी अपनी अपनी बारी आती जा रही है और पकी हुई खेती को काटा जा रहा है। हर घड़ी और निमेष का लेखा लिया जाता है और हे जीव, अब तुझे बुरा-भला सब कुछ सहना पड़ेगा। हे नानक, अच्छे पुरुषों को प्रभु ने शब्द के माध्यम से अपने साथ मिला लिया है और इसके लिए उस प्रभु ने ही कारण की रचना की है।। ५ ।। २ ।। तुखारी महला १ ।। जिसे कृपा दृष्टि से प्रभु ने आनन्दित कर दिया है उसकी आयु की अंधेरी रात में आध्यात्मिक प्रकाश देने वाला लम्बा तारा चढ़ जाता है अर्थात वह ज्ञानवान हो जाता है। जब सेवक के भाग्य पूर्ण रूप से खुल गए तो सच्चे गुरु ने शब्द के माध्यम से वह आध्यात्मिक प्रकाश का तारा दिखा दिया है। शब्द-गुरु के माध्यम से जब उसे दिखा दिया गया तो उसने सत्य को हृदय में संभाल कर दिन रात उस पर चिंतन किया है। इस अवस्था में पाँचों चोर अब घर के पास नहीं आते तथा काम, क्रोध का विष मारा जा चुका है। गुरु की शिक्षा के फलस्वरूप अन्तर्मन में ज्योति प्रकट हो गई और प्रभु के कौतुकों की पहचान हो जाती है।

नानक हउमै मारि पतीणे तारा चड़िआ लंमा ॥ १ ॥ गुरमुखि जागि रहे चूकी अभिमानी राम ॥ अनदिनु भोरु भइआ साचि समानी राम ॥ साचि समानी गुरमुखि मनि भानी गुरमुखि साबतु जागे ॥ साचु नामु अंम्रितु गुरि दीआ हरि चरनी लिव लागे ॥ प्रगटी जोति जोति महि जाता मनमुखि भरमि भुलाणी ॥ नानक भोरु भइआ मनु मानिआ जागत रैणि विहाणी ॥ २ ॥ अउगण वीसरिआ गुणी घरु कीआ राम ॥ एको रवि रहिआ अवरु न बीआ राम ॥ रवि रहिआ सोई अवरु न कोई मन ही ते मनु मानिआ ॥ जिनि जल थल त्रिभवण घटु घटु थापिआ सो प्रभु गुरमुखि जानिआ ॥ करण कारण समरथ अपारा त्रिबिधि मेटि समाई ॥ नानक अवगण गुणह समाणे ऐसी गुरमति पाई ॥ ३ ॥ आवण जाण रहे चूका भोला राम ॥ हउमै मारि मिले साचा चोला राम ॥ हउमै गुरि खोई परगटु होई चूके सोग संतापै ॥ जोती अंदरि जोति समाणी आपु पछाता आपै ॥ पेईअड़ै घरि सबदि पतीणी साहुरड़ै पिर भाणी ॥ नानक सतिगुरि मेलि मिलाई चूकी काणि लोकाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥ तुखारी महला १ ॥ भोलावड़ै भुली भुलि भुलि पछोताणी ॥ पिरि छोडिअड़ी सुती पिर की सार न जाणी ॥ पिरि छोडी सुती अवगणि मुती तिसु धन विधण राते ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विगुती हउमै लगी ताते ॥ उडरि हंसु चलिआ फुरमाइआ भसमै भसम समाणी ॥ नानक सचे नाम विहूणी भुलि भुलि पछोताणी ॥ १ ॥ सुणि नाह पिआरे इक बेनंती मेरी ॥ तू निज घरि वसिअड़ा हउ रुलि भसमै ढेरी ॥ बिनु अपने नाहै कोइ न चाहै किआ कहीऐ किआ कीजै ॥ अंम्रित नामु रसन रसु रसना गुर सबदी रसु पीजै ॥ विणु नावै को संगि न साथी आवै जाइ घनेरी ॥ नानक लाहा लै घरि जाईऐ साची सचु मति तेरी ॥ २ ॥ साजन देसि विदेसीअड़े सानेहड़े देदी ॥ सारि समाले तिन सजणा मुंध नैण भरेदी ॥ मुंध नैण भरेदी गुण सारेदी किउ प्रभ मिला पिआरे ॥ मारगु पंथु न जाणउ विखड़ा किउ पाईऐ पिरु पारे ॥ सतिगुर सबदी मिलै विछुंनी तनु मनु आगै राखै ॥ नानक अंम्रित बिरखु महा रस फलिआ मिलि प्रीतम रसु चाखै ॥ ३ ॥ महलि

हे नानक, जब व्यक्ति अहंकार को मारकर सन्तोष वाला जीवन अपना लेता है जो उसके हृदय रूपी आकाश में आध्यात्मिक प्रकाश देने वाला लम्बा तारा उदित हो जाता है।। १ ।। सावधान बने गुरमुख लोगों की अभिमान की अवस्था समाप्त हो चुकी होती है। सदैव उनमें प्रकाश बना रहता है और वे सत्य में समाए रहते हैं। सत्य में समाए हुए गुरमुख प्रभु के मन को भा जाते हैं और ऐसे ही गुरमुख सावधान बने रहकर कर्तव्य कर्म में पूरे बने रहते हैं। जब गुरु ने प्रभु का सच्चा नाम रूपी अमृत प्रदान कर दिया तो प्रभु के चरणों में लौ लग जाती है। तब परमात्मा की ज्योति प्रकट हो जाती है, उस परम ज्योति में परमात्मा को देख लिया जाता है परन्तु मनमुख व्यक्ति भ्रमों में ही भटकते रहते हैं। हे नानक, जीवन के चौथे प्रहर में प्रातः काल हो गया, मन सन्तुष्ट हो गया तथा सावधान बने रहकर जीवन रूपी रात्रि व्यतीत हो गई।। २ ।। जब गुणों ने हृदय में घर कर लिया तो अवगुण भूल गए। अब केवल एक ही प्रभु रमण करता रहा और जीव के लिए अब दूसरा कोई नहीं होता। जब मन को मन में से ही शान्ति मिल गई तब फिर वह प्रभु ही सर्वत्र बसा हुआ प्रतीत होने लगा और दूसरा कोई भी दिखाई नहीं दिया। गुरमुख बनकर जीव ने उस प्रभु को जान लिया जिसने जल, स्थल, तीनों लोकों और घट घट की रचना की है। वह करने कराने वाला समर्थ अपरम्पार प्रभु है जिसने त्रिगुणात्मक माया को मिटाकर नष्ट कर दिया। हे नानक, अब हमने ऐसी गुरमति प्राप्त कर ली है कि हमारे सभी अवगुण गुणों में लीन होकर समाप्त हो गए हैं।। ३ ।। हमारा आवागमन समाप्त हो गया और सभी भ्रम नष्ट हो गए हैं। अहंकार को मारकर जब उससे मिलाप हुआ तो यह शरीर रूपी हमारा चोला सच्चा और सफल हो गया। प्रकट होकर गुरु ने हमारे अहंकार को समाप्त कर दिया जिससे हमारे शोक और संताप समाप्त हो गए हैं। हमारी ज्योति उसकी ज्योति में लीन हो गई है और हमने स्वयं अपने आपको पहचान लिया है। माँ-बाप के घर में तो मैं शब्द के माध्यम से जब प्रसन्न बनी रही तो ससुराल में भी मैं अपने प्रियतम की चहेती बन गई। हे नानक, सच्चे गुरु ने यह मेल मिलाया है और मेरी लोगों पर मोहताजी समाप्त हो गई है।। ४ ।। ३।। तुखारी महला १ ।। भ्रमों में लगातार भूली-भटकती हुई हैं पछताती रही; मैंने प्रियतम प्रभु के महत्व को नहीं जाना इसलिए मुझ सोती को छोड़कर वह चला गया। अवगुणों में मस्त बनी हुई सोती हुई को जिसे प्रियतम ने छोड़ दिया उसकी जीवन रूपी रात तो विधवा के जीवन की तरह हो गई है। काम, क्रोध और अहंकार में नष्ट हुई जीव स्त्री अपने अहंकार में ही संतप्त होती रही। जीव के प्राण पखेरू उस प्रभु के आदेश के मुताबिक उड़ चले और मिट्टी रूपी शरीर मिट्टी में ही मिल गया। हे नानक, सच्चे नाम से विहीन बनी हुई और भूली हुई जीव स्त्री भटकती हुई पछताती रहती है।। १ ।। हे प्यारे पति प्रभु, तुम मेरी एक विनती सुनो। तुम तो अपने घर में सुख से बसे हो परन्तु मैं तो यहाँ राख की ढेरी होकर भटक रही हूँ। बेशक कुछ भी कहा जाए और कुछ भी किया जाए अपने स्वामी पति के बिना दूसरा कोई भी नहीं चाहने वाला होता है। अमृत नाम जो रसों का भी रस है हे जीव, शब्द-गुरु के माध्यम से अपनी जीभ के द्वारा उस रस का पान करो। अनेकों लोग आते जाते रहते हैं परन्तु प्रभु-नाम के बिना कोई भी संगी साथी नहीं बनता। हे नानक, लाभ प्राप्त करके अपने घर वापस जाना चाहिए क्योंकि हे प्रभु, यही तेरी दी हुई सच्ची सूझ बुद्धि है।। २ ।। परदेस में गए प्रियतम को जीव स्त्री संदेशा भेजती है तथा उस सज्जन पति को याद करती हुई आँखों में पानी भर लेती है। आँखों में पानी भरकर और उसके गुणों को याद करके वह यही सोचती है कि उस प्यारे प्रभु पति से कैसे मिला जाए। उस तक पहुंचने का मार्ग बहुत ही कठिन है; दूर बसने वाले उस प्रियतम को कैसे प्राप्त किया जाए। सच्चे गुरु के उपदेश के फलस्वरूप यदि वह तन मन अर्पण कर दे तो वह बिछुड़ी हुई अपने प्रियतम से मिल जाती है। हे नानक, प्रभु-नाम का अमृत वृक्ष महारस और फल देने वाला है और जीव स्त्री उस प्रियतम से मिलकर उसके रस को चखती रहती है।। ३ ।।

बुलाइड़ीए बिलमु न कीजै ॥ अनदिनु रतड़ीए सहजि मिलीजै ॥ सुखि सहजि मिलीजै रोसु न कीजै गरबु निवारि समाणी ॥ साचै राती मिलै मिलाई मनमुखि आवण जाणी ॥ जब नाची तब घूघटु कैसा मटुकी फोड़ि निरारी ॥ नानक आपै आपु पछाणै गुरमुखि ततु बीचारी ॥ ४ ॥ ४ ॥ तुखारी महला १ ॥ मेरे लाल रंगीले हम लालन के लाले ॥ गुरि अलखु लखाइआ अवरु न दूजा भाले ॥ गुरि अलखु लखाइआ जा तिसु भाइआ जा प्रभि किरपा धारी ॥ जगजीवनु दाता पुरखु बिधाता सहजि मिले बनवारी ॥ नदरि करहि तू तारहि तरीऐ सचु देवहु दीन दइआला ॥ प्रणवति नानक दासनि दासा तू सरब जीआ प्रतिपाला ॥ १ ॥ भरिपुरि धारि रहे अति पिआरे ॥ सबदे रवि रहिआ गुर रूपि मुरारे ॥ गुर रूप मुरारे त्रिभवण धारे ता का अंतु न पाइआ ॥ रंगी जिनसी जंत उपाए नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ अपरंपरु आपे थापि उथापे तिसु भावै सो होवै ॥ नानक हीरा हीरै बेधिआ गुण कै हारि परोवै ॥ २ ॥ गुण गुणहि समाणे मसतकि नाम नीसाणो ॥ सचु साचि समाइआ चूका आवण जाणो ॥ सचु साचि पछाता साचै राता साचु मिलै मनि भावै ॥ साचे ऊपरि अवरु न दीसै साचे साचि समावै ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मेरा बंधन खोलि निरारे ॥ नानक जोती जोति समाणी जा मिलिआ अति पिआरे ॥ ३ ॥ सच घरु खोजि लहे साचा गुर थानो ॥ मनमुखि नह पाईऐ गुरमुखि गिआनो ॥ देवै सचु दानो सो परवानो सद दाता वड दाणा ॥ अमरु अजोनी असथिरु जापै साचा महलु चिराणा ॥ दोति उचापति लेखु न लिखीऐ प्रगटी जोति मुरारी ॥ नानक साचा साचै राचा गुरमुखि तरीऐ तारी ॥ ४ ॥ ५ ॥ तुखारी महला १ ॥ ए मन मेरिआ तू समझु अचेत इआणिआ राम ॥ ए मन मेरिआ छडि अवगण गुणी समाणिआ राम ॥ बहु साद लुभाणे किरत कमाणे विछुड़िआ नही मेला ॥ किउ दुतरु तरीऐ जम डरि मरीऐ जम का पंथु दुहेला ॥ मनि रामु नही जाता साझ प्रभाता अवघटि रुधा किआ करे ॥ बंधनि बाधिआ इन बिधि छूटै गुरमुखि सेवै नरहरे ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू छोडि आल जंजाला राम ॥ ए मन

प्रभु ने तुझे अपने महल में बुलाया है इसलिए तू अब देर ना कर; हर दिन उसके प्रेम में लीन बनी रहने वाली जीव स्त्री तू उसे स्वाभाविक और सहज रूप में ही मिलेगी। तू क्रोध मत कर और स्वाभाविक रूप से ही उससे मिल क्योंकि अहंकार का निवारण करके ही उससे मिला जाता है। गुरु के द्वारा मिलाई हुई जीव स्त्री सच्चे प्रभु में लीन होकर प्रभु से मिलाप कर लेती है परन्तु मनमुख बनी रहने वाली आवागमन में भटकती रहती है। जब तू परमार्थ के आनन्द में आनन्दित होकर नाचने ही लग गई है अर्थात परमार्थ के कामों में ही लीन हो गई है तब फिर घूंघट निकालने का क्या काम; लोक लाज की मटकी फोड़कर तुझे सांसारिकता से अलिप्त बने ही रहना होगा। हे नानक, सार तत्व यही है कि गुरमुख अपने आपको पहचान लेता है।। ४ ।। ४ ।। तुखारी महला १ ।। हे मेरे प्रेम पूर्ण प्रभु, हम तो तेरे दासों के भी सेवक हैं। गुरु ने वह अदृष्ट प्रभु हमें दिखा दिया है इसलिए हम अब किसी दूसरे की खोज नहीं करते। गुरु ने भी उस अदृष्ट प्रभु का तभी दर्शन कराया जब प्रभु को अच्छा लगा अथवा प्रभु ने कृपा धारण की। जब उसकी कृपा होती है तो संसार का जीवन वह विधाता प्रभु स्वाभाविक रूप से ही मिल जाता है। हे प्रभु, जब तेरी कृपा दृष्टि होती है तो तू ही हमें पार उतारता है। अतः हे दीन दयालु, हमें सत्य को समझने का दान दो। तू सभी जीवों का पालन करने वाला है और नानक विनती करता है कि मैं तो तेरे दासों का भी दासू हूँ।। १ ।। भरपूर प्रभु में वह अत्यन्त प्यारा विद्यमान है और शब्द में ही गुरु रूप होकर प्रभु रमण कर रहा है। प्रभु ने गुरु रूप में तीनों लोकों को धारण कर रखा है और उसकी लीला के रहस्य को नहीं जाना जा सकता। उसने कई रंगों और कई प्रकार के जीव पैदा किए हैं और उनको हर रोज अधिक से अधिक दान देता रहता है। उस अपरम्पार प्रभु ने स्वयं ही सबको बनाया और नष्ट किया है अर्थात जो उसे अच्छा लगता है वही होता है। हे नानक, गुरु गुणों के हार में अपने आपको पिरोता है और हीरे में हीरा बनकर बिंध जाता है।। २ ।। जब जीव के गुण उस प्रभु के गुणों में लीन हो गए तो जीव के माथे पर प्रभु-नाम के सुमिरन का चिन्ह प्रकट हो गया। इसका सत्य उस परम सत्य में लीन हो गया और इसका आवागमन समाप्त हो गया। सत्य में लीन होकर सत्य को पहचान लिया गया और जब इस सत्य से मिलाप हुआ तो वह मन को अच्छा लगने लगा। उस सच्चे प्रभु के उपर अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता और सच्चे बनकर ही उस सत्य में लीन हुआ जाता है। उस प्रभु ने मेरे मन को मोहित कर लिया है और बन्धन खोलकर मुझे आज़ाद कर दिया है। हे नानक, मेरी ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो गई है और आगे बढ़कर मैं उस अत्यन्त प्यारे प्रभु से मिल गया हूँ। ३ ।। गुरु का स्थान सच्चा है और उस सत्य को हृदय रूपी घर में ही खोजकर देखा जाता है। मनमुख बनकर ज्ञान नहीं मिलता। यह ज्ञान गुरमुख को ही प्राप्त होता है। वह महान दाता और सदैव दान देने वाला प्रभु सत्य का दान देता है तथा वही जीव स्वीकार करता है। उस प्रभु का चिरन्तन बना रहने वाला ठिकाना अमर अयोनी और सदैव स्थिर बना रहने वाला सच्चा स्थान है। जब प्रभु की ज्योति हृदय में प्रकट हो जाती है तो फिर रोज-रोज के कर्मों का हिसाब नहीं लिखा जाता। हे नानक, सच्चा जीव उस सच्चे प्रभु में लीन हो जाता है और गुरमुख बनकर वह संसार सागर को तैर जाता है।। ४ ।। ५ ।। तुखारी महला १ ।। हे मेरे मन, तू असावधान और मूर्ख बना हुआ है, इस तथ्य को अच्छी तरह समझ ले। हे मेरे मन, अवगुणों को छोड़कर तू गुणों में लीन हो जा। तू अनेकों स्वादों का लोभ करता हुआ पूर्व कर्मों के अनुसार ही आचरण करता जा रहा है; बिछुड़े हुए का मिलाप इस तरह नहीं होता। इस प्रकार कैसे भी ना तैरे जा सकने वाले संसार सागर को तैरा जा सकता है; आगे मार्ग दुखदायी है और यम के डर में ही मरते रहना पड़ता है। सुबह-शाम तेरे मन ने प्रभु को नहीं पहचाना इसलिए अब कठिन मार्ग पर जाता हुआ भला तू क्या कर सकता है। गुरमुख बनकर यदि परमात्मा का सुमिरन किया जाए तो इस विधि से बन्धनों से छूटा जा सकता है।। १ ।। हे मेरे मन, तू सभी झंझटों को छोड़ दे और

मेरिआ हरि सेवहु पुरखु निराला राम ॥ हरि सिमरि एकंकारु साचा सभु जगतु जिंनि उपाइआ ॥ पउणु पाणी अगनि बाधे गुरि खेलु जगति दिखाइआ ॥ आचारि तू वीचारि आपे हरि नामु संजम जप तपो ॥ सखा सैनु पिआरु प्रीतमु नामु हरि का जपु जपो ॥ २ ॥ ए मन मेरिआ तू थिरु रहु चोट न खावही राम ॥ ए मन मेरिआ गुण गावहि सहजि समावही राम ॥ गुण गाइ राम रसाइ रसीअहि गुर गिआन अंजनु सारहे ॥ त्रै लोक दीपकु सबदि चानणु पंच दूत संघारहे ॥ भै काटि निरभउ तरहि दुतरु गुरि मिलिऐ कारज सारए ॥ रूपु रंगु पिआरु हरि सिउ हरि आपि किरपा धारए ॥ ३ ॥ ए मन मेरिआ तू किआ लै आइआ किआ लै जाइसी राम ॥ ए मन मेरिआ ता छुटसी जा भरमु चुकाइसी राम ॥ धनु संचि हरि हरि नाम वखरु गुर सबदि भाउ पछाणहे ॥ मैलु परहरि सबदि निरमलु महलु घरु सचु जाणहे ॥ पति नामु पावहि घरि सिधावहि झोलि अंम्रित पी रसो ॥ हरि नामु धिआईऐ सबदि रसु पाईऐ वडभागि जपीऐ हरि जसो ॥ ४ ॥ ए मन मेरिआ बिनु पउड़ीआ मंदरि किउ चड़ै राम ॥ ए मन मेरिआ बिनु बेड़ी पारि न अंबड़ै राम ॥ पारि साजनु अपारु प्रीतमु गुर सबद सुरति लंघावए ॥ मिलि साधसंगति करहि रलीआ फिरि न पछोतावए ॥ करि दइआ दानु दइआल साचा हरि नाम संगति पावओ ॥ नानकु पइअंपै सुणहु प्रीतम गुर सबदि मनु समझावओ ॥ ५ ॥ ६ ॥

तुखारी छंत महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीऐ राम ॥ जब लगु दरसु न होइ किउ अंम्रितु पीवीऐ राम ॥ किउ अंम्रितु पीवीऐ हरि बिनु जीवीऐ तिसु बिनु रहनु न जाए ॥ अनदिनु प्रिउ प्रिउ करे दिनु राती पिर बिनु पिआस न जाए ॥ अपणी क्रिपा करहु हरि पिआरे हरि हरि नामु सद सारिआ ॥ गुर कै सबदि मिलिआ मै प्रीतमु हउ सतिगुर विटहु वारिआ ॥ १ ॥ जब देखां पिरु पिआरा हरि गुण

उस अलिप्त प्रभु-पुरुष का सुमिरन करता रह जिसने सारे संसार को उत्पन्न किया है। तू उस सच्चे एक ही प्रभु का सुमिरन कर। उस प्रभु ने ही पवन, पानी, अग्नि को अपने नियंत्रण में रखा है और यह संसार रूपी खेल सबको दिखाया है। हे मन, यदि तू प्रभु-नाम को संयम, जप, तप बना ले तो तभी तू अच्छे आचरण वाला और ज्ञानवान कहा जा सकता है। प्रभु-नाम का ही तू जाप कर क्योंकि वही तेरा साथी, सम्बन्धी और प्यारा प्रीतम है।। २ ।। हे मन, तू स्थिर हो जा और फिर तू चोटें नहीं खाएगा। हे मन, तू प्रभु का गुणानुवाद करता रह और इस प्रकार तू अपने स्वाभाविक रूप में स्थित हो जाएगा। प्रभु रूपी रस का आनन्द लेकर उसका गुण गाता रह और गुरु के ज्ञान का सुरमा तू अपनी आँखों में डाल जिसके माध्यम से सारे संसार के दीपक प्रभु का प्रकाश शब्द के माध्यम से तुझे मिल जाएगा और तू काम, क्रोध आदि पांचों शत्रुओं को मार लेगा। भय समाप्त करके निर्भय बनकर दुष्तर संसार सागर को तैरा जाता है और गुरु को मिलने से सभी कार्य सँवर जाते हैं। प्रभु स्वयं कृपा धारण करता है और उसके रूप रंग में जीव का प्यार बन जाता है।। ३ ।। हे मेरे मन, तू क्या लेकर आया था और यहाँ से क्या लेकर जाएगा। हे मेरे मन, जब तू भ्रमों को समाप्त कर देगा तो तभी तेरा छुटकारा होगा। प्रभु-नाम रूपी सौदे के धन को तू इकट्ठा कर और शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु प्रेम की पहचान कर। निर्मल शब्द के माध्मय से मन की मैल को दूर करके उस प्रभु के ठिकाने को अपने हृदय में ही सत्य रूप में देख ले। प्रभु-नाम रूपी शोभा को लेकर तू अपने घर वापिस जाएगा और खुले हाथों से प्रेम पूर्वक अमृत पान करता रहेगा। प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए शब्द के माध्यम से उसके रस को प्राप्त किया जाता है और बड़े भाग्य से ही हरि यश का सुमिरन होता है।। ४ ।। हे मेरे मन, सीढ़ियों के बिना मकान पर कैसे चढ़ा जा सकेगा। हे मेरे मन, बिना नाव के पार नहीं उतरा जा सकता। अपार प्रियतम तो उस पार है जहाँ सुरति शब्द-गुरु के माध्यम से ले जाती है। साधसंगति के मिलाप से आनन्दित हुआ जाता है तथा फिर पछताना नहीं पड़ता। हे प्रभु, दया करके प्रभु-नाम और संगति को सच्चा दान प्रदान करो। नानक विनती करता है कि हे मेरे प्रियतम, मेरी बात सुनो और शब्द-गुरु के माध्यम से मेरे मन को समझा दे।। ५ ।। ६ ।।

तुखारी छन्द महला ४ ੧ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

उस प्रियतम का प्रेम अन्तर्मन में है तो उस प्रियतम के बिना कैसे जीवित रहा जा सकता है। जब तक उसका दर्शन नहीं होता तब तक कैसे अमृत पान किया जा सकता है। अमृत कैसे पीएं, प्रभु के बिना कैसे जीवित बने रहें, यह असम्भव है; उसके बिना तो रहा ही नहीं जा सकता। मेरा हृदय सदैव दिन रात पपीहे की तरह प्रिय प्रिय कहता रहता है और उस प्रियतम के बिना मेरी प्यास नहीं बुझती। हे प्यारे प्रभु, मुझ पर कृपा करो। मैंने तो सदैव प्रभु-नाम का ही सुमिरन किया है। शब्द-गुरु के माध्यम से मैं प्रियतम से मिल गया हूँ और मैं सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। जब भी मैं प्रियतम प्रभु को देखूं तो पूर्ण प्रेम से मैं उसके गुणों का

रसि रवा राम ॥ मेरै अंतरि होइ विगासु प्रिउ प्रिउ सचु नित चवा राम ॥
प्रिउ चवा पिआरे सबदि निसतारे बिनु देखे त्रिपति न आवए ॥ सबदि सीगारु
होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवए ॥ दइआ दानु मंगत जन दीजै मै
प्रीतमु देहु मिलाए ॥ अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर विटहु घुमाए ॥ २ ॥
हम पाथर गुरु नाव बिखु भवजलु तारीऐ राम ॥ गुर देवहु सबदु सुभाइ मै मूड़
निसतारीऐ राम ॥ हम मूड़ मुगध किछु मिति नही पाई तू अगंमु वड जाणिआ ॥
तू आपि दइआलु दइआ करि मेलहि हम निरगुणी निमाणिआ ॥ अनेक जनम
पाप करि भरमे हुणि तउ सरणागति आए ॥ दइआ करहु रखि लेवहु हरि जीउ
हम लागह सतिगुर पाए ॥ ३ ॥ गुर पारस हम लोह मिलि कंचनु होइआ राम ॥
जोती जोति मिलाइ काइआ गड़ु सोहिआ राम ॥ काइआ गड़ु सोहिआ मेरै प्रभि
मोहिआ किउ सासि गिरासि विसारीऐ ॥ अद्रिसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी हउ
सतिगुर कै बलिहारीऐ ॥ सतिगुर आगै सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥
आपे दइआ करहु प्रभ दाते नानक अंकि समावै ॥ ४ ॥ १ ॥ तुखारी महला ४ ॥
हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ जो तुम धिआवहि जगदीस ते जन भउ
बिखमु तरा ॥ बिखम भउ तिन तरिआ सुहेला जिन हरि हरि नामु धिआइआ ॥
गुर वाकि सतिगुर जो भाइ चले तिन हरि हरि आपि मिलाइआ ॥ जोती जोति
मिलि जोति समाणी हरि क्रिपा करि धरणीधरा ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर
अपरपरा ॥ १ ॥ तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ तू
अलख अभेउ अगंमु गुर सतिगुर बचनि लहिआ ॥ धनु धंनु ते जन पुरख पूरे
जिन गुर संतसंगति मिलि गुण रवे ॥ बिबेक बुधि बीचारि गुरमुखि गुर सबदि
खिनु खिनु हरि नित चवे ॥ जा बहहि गुरमुखि हरि नामु बोलहि जा खड़े गुरमुखि
हरि हरि कहिआ ॥ तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ २ ॥
सेवक जन ते सेवहि परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ तिन के कोटि
सभि पाप खिनु परहरि हरि दूरि करे ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जिन

सुमिरन करूं ; मेरा अन्तर्मन खिल जाए और पपीहे की तरह मैं सदैव प्रिय-प्रिय ही करता रहूँ। मैं प्रिय कहता रहूँ तो मेरा शब्द के माध्यम से पार उतारा हो जाएगा; उस प्रभु को देखे बिना मुझे सन्तुष्टि नहीं होती। जीव स्त्री यदि सदैव शब्द का शृंगार करे तो वह प्रभु के नाम का सुमिरन करती रहती है। हे प्रभु, मुझ भिखारी सेवक पर दया करके अपने मिलाप का दान प्रदान करो। हमने सदैव गुरु प्रभु का ही सुमिरन किया है और सच्चे गुरु पर हम बलिहारी जाते हैं।। २ ।। हम तो पत्थर हैं और गुरु नाव है जो हमें विष के संसार सागर से पार उतार लेता है। हे प्रभु, मुझे प्रेम पूर्वक शब्द प्रदान करो ताकि मैं मूर्ख पार उतर जाऊं। हम मूर्ख तेरी शक्ति का अनुमान नहीं लगा सके क्योंकि तू अगम्य है और महानतम रूप में जाना जाता है। हम गुण विहीनों और विनम्र लोगों को तो हे दयालु प्रभु, तू दया करके ही अपने आप से मिलाता है। अनेकों जन्मों तक पाप करते हुए हम भटकते रहे और अब शरणागत बन कर तेरे पास आए हैं। हम तो सच्चे गुरु के चरणों में लीन हुए हैं इसलिए हे प्रभु, तुम दया करो और हमें बचा लो।। ३ ।। गुरु वह पारस पत्थर है जिससे मिलकर हम लोहे जैसे भी सोना बन गए हैं। इस ज्योति को परम ज्योति में मिलाया गया और यह शरीर रूपी किला सुन्दर बन गया है। इस सुन्दर किले ने मेरे प्रभु को मोहित कर लिया है और जब उसका निवास इसी में बना है तो फिर भला अपने श्वास और ग्रास के साथ उसे क्यों भुलाया जाए। उस अदृष्ट और अगोचर प्रभु को शब्द-गुरु के माध्यम से हमने पकड़ लिया है और इस युक्ति के लिए मैं सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ। यदि सच्चे गुरु प्रभु को अच्छा लगे तो मैं उसके आगे अपना शीश भी अर्पण कर सकता हूं अर्थात अपना सर्वस्व उसे दे सकता हूँ। हे दाता प्रभु, दया करो जिससे नानक तेरी गोदी में लीन हो जाए।। ४ ।। १ ।। तुखारी महला ४ ।। वह प्रभु अगम्य, अगाध, अपरम्पार और अनन्त है। हे प्रभु, जो तेरा सुमिरन करते हैं वे सेवक इस विषम संसार सागर को पार कर जाते हैं। जिन्होंने हे प्रभु, तेरे नाम का सुमिरन किया है वे आसानी से इस भवजल को पार कर गए हैं। सच्चे गुरु के उपदेश के अनुसार जो प्रेमपूर्वक चलता रहे उसे प्रभु स्वयं अपने से मिला लेता है। धरती के आश्रय प्रभु ने कृपा की और ऐसे व्यक्ति की ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो गई है। वह प्रभु अगम्य, अथाह, अपरम्पार और अनन्त है।। १ ।। हे अगम्य, अथाह मालिक प्रभु, तू घट-घट में व्याप्त बना हुआ है, तू अदृष्ट, रहस्यातीत और अगम्य है और सच्चे गुरु के उपदेश के माध्यम से ही तुझे समझा जाता है। वे सेवक धन्य और पूर्ण पुरुष हैं जिन्होंने गुरु और शान्त पुरुषों की संगति में मिल बैठकर उस प्रभु के गुणों का सुमिरन किया है। गुरमुख व्यक्ति के पास विवेक बुद्धि और ज्ञान का चिंतन होता है और शब्द-गुरु के माध्यम से वह प्रत्येक क्षण सदैव प्रभु का सुमिरन करता रहता है। गुरमुख यदि बैठता है तो प्रभु-नाम का उच्चारण करता है और यदि खड़ा भी होता है तो प्रभु को याद करता रहता है। हे प्रभु, तू अगम्य और अथाह है और तू ही घट-घट में समाया हुआ है।। २ ।। गुरु के उपदेश के अनुसार जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया ऐसा सुमिरन करने वाले सेवकजन सफल एवं स्वीकृत होते हैं। प्रभु उनके करोड़ों पाप क्षण भर में दूर कर देता है।

मनि चिति इकु अराधिआ ॥ तिन का जनमु सफलिओ सभु कीआ करतै जिन गुर बचनी सचु भाखिआ ॥ ते धंनु जन वड पुरख पूरे जो गुरमति हरि जपि भउ बिखमु तरे ॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ ३ ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ हमरै हाथि किछु नाहि जा तू मेलहि ता हउ आइ मिला ॥ जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ॥ तिन की गणत न करिअहु को भाई जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ॥ नानक दइआलु होआ तिन ऊपरि गुर का भाणा मंनिआ भला ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ ४ ॥ २ ॥ तुखारी महला ४ ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता स्रिसटि नाथु ॥ तिन तू धिआइआ मेरा रामु जिन कै धुरि लेखु माथु ॥ जिन कउ धुरि हरि लिखिआ सुआमी तिन हरि हरि नामु अराधिआ ॥ तिन के पाप इक निमख सभि लाथे जिन गुर बचनी हरि जापिआ ॥ धनु धंनु ते जन जिन हरि नामु जपिआ तिन देखे हउ भइआ सनाथु ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता स्रिसटि नाथु ॥ १ ॥ तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ जिन जपिआ हरि मनि चीति हरि जपि जपि मुकतु घणी ॥ जिन जपिआ हरि ते मुकत प्राणी तिन के ऊजल मुख हरि दुआरि ॥ ओइ हलति पलति जन भए सुहेले हरि राखि लीए रखनहारि ॥ हरि संतसंगति जन सुणहु भाई गुरमुखि हरि सेवा सफल बणी ॥ तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ २ ॥ तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ वणि त्रिणि त्रिभवणि सभ स्रिसटि मुखि हरि हरि नामु चविआ ॥ सभि चवहि हरि हरि नामु करते असंख अगणत हरि धिआवए ॥ सो धंनु धनु हरि संतु साधू जो हरि प्रभ करते भावए ॥ सो सफलु दरसनु देहु करते जिसु हरि हिरदै नामु सद चविआ ॥ तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ ३ ॥ तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ जिस कै मसतकि गुर हाथु तिसु हिरदै हरि गुण टिकहि ॥ हरि गुण हिरदै

जिन्होंने चित्त और मन लगाकर एक प्रभु की आराधना की है उनके सभी पाप और दोष विनष्ट हो जाते हैं। जिन्होंने गुरु के उपदेश के अनुरूप सच बोला है उन सबका जीवन प्रभु ने सफल कर दिया है। वे पूर्ण पुरुष सेवक बड़े हैं और धन्य हैं जिन्होंने गुरमति के अनुरूप चलकर प्रभु का जाप करते हुए संसार रूपी भवसागर को पार कर लिया है। वही सेवक सुमिरन करते हैं और स्वीकृत होते हैं जिन्होंने गुरमति में चलकर प्रभु की आराधना की है।। ३ ।। हे प्रभु, तू स्वयं अन्तर्यामी है और तू जैसे हमें चलाता है हमें वैसे ही चलना होता है। हमारे हाथ में कुछ भी नहीं है; यदि तू हमें मिला ले तो हम आ मिलते हैं। हे स्वामी, जिन्हें तू मिला लेता है उनका सभी लेखा जोखा समाप्त हो जाता है। जिन्हें गुरु के उपदेश के माध्यम से प्रभु ने अपने से मिला लिया है, हे भाई, अब उनका तो हिसाब किया ही नहीं जाता। हे नानक, जिन्होंने गुरु का हुकुम मान लिया है प्रभु उन पर ही दयालु हो जाता है। हे प्रभु, तू स्वयं अन्तर्यामी है और जैसे तू चलाता है मैं तो वैसे ही चलता हूँ।। ४ ।। २ ।। तुखारी महला ४ ।। तू संसार का जीवन संसार का मालिक, सबको बनाने वाला तथा इस सृष्टि का स्वामी है। जिनके माथे पर प्रारम्भ से ही लेख लिखा है वे ही तेरी आराधना करते हैं। प्रारम्भ से ही प्रभु ने जिनके भाग्य में लिख दिया है उन्होंने ही प्रभु-नाम की आराधना की है। उनके तो सभी पाप एक क्षण में उतर जाते हैं जिन्होंने गुरु के उपदेश के अनुसार प्रभु का जाप किया है। वे सेवक धन्य हैं जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है; उनका दर्शन करके तो मैं भी मालिक वाला अर्थात सेवक कहलाने योग्य हो गया हूं। तू ही संसार का जीवन, जगदीश, सब कुछ बनाने वाला और सृष्टि का मालिक है।। १ ।। सबके उपर बने रहने वाले सच्चे मालिक, तू जल, स्थल और अन्तरिक्ष में पूर्ण रूप से व्याप्त है। दुनिया के बहुत सारे लोग जिन्होंने मन चित्त से प्रभु का जाप किया है वे उसका सुमिरन करते हुए मुक्त हो गए हैं। प्रभु का सुमिरन करने वाले प्राणी मुक्त हो जाते हैं और प्रभु के द्वार पर उनके मुख उज्जवल बने रहते हैं। लोक परलोक में वे सेवक सुखी बने रहते हैं और रक्षा करने वाले प्रभु ने उन्हें बचा लिया है। हे सेवक भाइयो, साधु पुरुषों की संगति में ही प्रभु का निवास है और गुरमुख द्वारा प्रभु की की हुई सेवा सफल होती है। हे सबके उपर बने रहने वाले सच्चे मालिक, तू जल-स्थल और अन्तरिक्ष में पूर्ण रूप से व्याप्त है।। २ ।। हे एक ही प्रभु, तू एक ही रूप में सभी स्थानों में व्याप्त है। वन, वनस्पति का तिनका-तिनका, तीनों लोक और सारी सृष्टि अपने मुख से प्रभु-नाम का उच्चारण करती है। सभी प्रभु-नाम का उच्चारण करते हैं तथा असंख्य जीव प्रभु का सुमिरन करते रहते हैं। जो कर्ता प्रभु को भा जाते हैं वे ही सन्त साधु धन्य और सफल हैं। हे एक ही प्रभु, तू एक ही रूप में सभी स्थानों और स्थानान्तरों में रमण कर रहा है।। ३ ।। हे मेरे स्वामी, तेरी भक्ति के भण्डार असंख्य हैं; जिसे तू देता है ये उसी को मिलते हैं। जिसके माथे पर गुरु का हाथ है उसी के हृदय में प्रभु के गुण टिक पाते हैं। प्रभु के गुण

टिकहि तिस कै जिसु अंतरि भउ भावनी होई ॥ बिनु भै किनै न प्रेमु पाइआ बिनु भै पारि न उतरिआ कोई ॥ भउ भाउ प्रीति नानक तिसहि लागै जिसु तू आपणी किरपा करहि ॥ तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ ४ ॥ ३ ॥ तुखारी महला ४ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ दुरमति मैलु हरी अगिआनु अंधेरु गइआ ॥ गुर दरसु पाइआ अगिआनु गवाइआ अंतरि जोति प्रगासी ॥ जनम मरण दुख खिन महि बिनसे हरि पाइआ प्रभु अबिनासी ॥ हरि आपि करतै पुरबु कीआ सतिगुरू कुलखेति नावणि गइआ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ १ ॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ अनदिनु भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा ॥ हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइआ ॥ जिन दरसु सतिगुर गुरू कीआ तिन आपि हरि मेलाइआ ॥ तीरथ उदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ २ ॥ प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ खबरि भई संसारि आए त्रै लोआ ॥ देखणि आए तीनि लोक सुरि नर मुनि जन सभि आइआ ॥ जिन परसिआ गुरु सतिगुरू पूरा तिन के किलविख नास गवाइआ ॥ जोगी दिगंबर संनिआसी खटु दरसन करि गए गोसटि ढोआ ॥ प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ ३ ॥ दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ जागाती मिले दे भेट गुर पिछै लंघाइ दीआ ॥ सभ छुटी सतिगुरू पिछै जिनि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ गुर बचनि मारगि जो पंथि चाले तिन जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ सभ गुरू गुरू जगतु बोलै गुर कै नाइ लइऐ सभि छुटकि गइआ ॥ दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ ४ ॥ त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ सभ मोही देखि दरसनु गुर संत किनै आढु न दामु लइआ ॥ आढु दामु किछु पइआ न बोलक जागातीआ मोहण मुंदणि पई ॥ भाई हम करह किआ किसु पासि मांगह सभ

उसी के हृदय में टिकते हैं जिसके अन्दर अनुशासन और श्रद्धा होती है। अनुशासन के बिना कोई भी प्रेम को नहीं पा सकता और बिना अनुशासन रूपी भय के कोई भी पार नहीं उतर सकता। हे नानक, भय, प्रेम और अनुशासन वही अपनाता है जिस पर तू अपनी कृपा करता है। तेरी भक्ति के भण्डार असंख्य हैं और हे मेरे स्वामी, जिसे तू देता है ये उसी को मिलते हैं।। ४ ।। ३ ।। तुखारी महला ४ ।। मुझे तो अभिजित नक्षत्र में पर्व पर स्नान का फल प्राप्त हो गया जब मुझे सच्चे गुरु के दर्शन हो गए। दुर्मति की मेरी मैल नष्ट हो गई और मेरे अज्ञान का अंधेरा समाप्त हो गया। गुरु का दर्शन पाकर मैंने अज्ञान को खो दिया और मेरे अन्तर्मन में प्रभु की ज्योति का प्रकाश हो गया। मेरा जन्म मरण का दुख अविनाशी प्रभु को पा जाने से क्षण भर में ही समाप्त हो गया। कर्ता प्रभु ने स्वयं ही यह पर्व बनाया और सच्चा गुरु स्वयं कुरुक्षेत्र में स्नान करने गया। स्नान के उस पर्व में अभिजित नक्षत्र में मुझे सच्चे गुरु परमात्मा का दर्शन हो गया।। १ ।। सच्चा गुरु संगत और सिक्खों के लिए इधर-उधर भ्रमण करता है। उसे देखकर हर क्षण उसी में भक्ति बनी रहती है। प्रभु में बनी हुई इस भक्ति को देखने के लिए उमड़ कर सभी लोग आने लगे। सच्चे गुरु के दर्शन जिन्होंने कर लिए प्रभु ने स्वयं उन्हें अपने से मिला लिया। सच्चे गुरु ने तीर्थों पर जाकर जो भी काम किया वह सब लोगों का उद्धार करने के लिए ही था। सच्चा गुरु संगति और सिक्खों के लिए इधर-उधर भ्रमण करता रहा।। २ ।। सच्चे गुरु का पर्व बना और सबसे पहले वे कुरुक्षेत्र आए। उनके आने की खबर सारे संसार और तीनों लोकों को हो गई। तीनों लोकों के देवता समान व्यक्ति साधक सभी उनका दर्शन करने के लिए आए। जिन्होंने सच्चे गुरु के दर्शन कर लिए उनके सभी पाप नष्ट होकर समाप्त हो गए। योगी, दिगम्बर, संन्यासी और छः दर्शनों के ज्ञाता सभी विचार चर्चा करके अपनी-अपनी भेंट अर्पण कर गए। इस प्रकार सच्चे गुरु का पर्व बना और वे पहले कुरुक्षेत्र में आए।। ३ ।। दूसरा वे यमुना पर गए और गुरु ने प्रभु-नाम का जाप किया कराया। महसूल आदि कर लेने वाले भी भेंट देकर मिले और गुरु के पीछे ही गुरु के आसरे में सभी वहाँ से पार हो गए। सच्चे गुरु के कारण ही वे सभी जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया मुक्त हो गए। गुरु के उपदेश में बताये मार्ग पर जो चलता है यम रूपी कर लेने वाला उसके पास भी नहीं आता। सारा संसार गुरु-गुरु कहने लगा और गुरु का नाम लेने से सभी मुक्त हो गए। इस प्रकार गुरु यमुना पर गए और वहाँ भी उन्होंने प्रभु का नाम जपा और जपाया।। ४ ।। तीसरे, वे गंगा पर गए जहाँ एक विचित्र कौतुक हुआ। शान्त गुरु का दर्शन करके सभी मोहित हो गए और किसी ने आधी कौड़ी चुंगी इत्यादि भी नहीं ली। चुंगी वालों के बक्से में किसी ने आधी कौड़ी भी नहीं डाली क्योंकि वे सभी गुरु का दर्शन करके मोहित हो गए अर्थात् वे हक्के-बक्के रह गए थे। भाइयो, मैं क्या करूं और किससे माँगूं, यह सब

भागि सतिगुर पिछै पई ॥ जागातीआ उपाव सिआणप करि वीचारु डिठा भंनि बोलका सभि उठि गइआ ॥ त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ ५ ॥ मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥ गुरु सतिगुरु गुरु गोविदु पुछि सिम्रिति कीता सही ॥ सिम्रिति सासत्र सभनी सही कीता सुकि प्रहिलादि स्रीरामि करि गुर गोविदु धिआइआ ॥ देही नगरि कोटि पंच चोर वटवारे तिन का थाउ थेहु गवाइआ ॥ कीरतन पुराण नित पुंन होवहि गुर बचनि नानकि हरि भगति लही ॥ मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥ ६ ॥ ४ ॥ १० ॥

तुखारी छंत महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

घोलि घुमाई लालना गुरि मनु दीना ॥ सुणि सबदु तुमारा मेरा मनु भीना ॥ इहु मनु भीना जीउ जल मीना लागा रंगु मुरारा ॥ कीमति कही न जाई ठाकुर तेरा महलु अपारा ॥ सगल गुणा के दाते सुआमी बिनउ सुनहु इक दीना ॥ देहु दरसु नानक बलिहारी जीअड़ा बलि बलि कीना ॥ १ ॥ इहु तनु मनु तेरा सभि गुण तेरे ॥ खंनीऐ वंञा दरसन तेरे ॥ दरसन तेरे सुणि प्रभ मेरे निमख द्रिसटि पेखि जीवा ॥ अंम्रित नामु सुनीजै तेरा किरपा करहि त पीवा ॥ आस पिआसी पिर कै ताई जिउ चात्रिकु बूंदेरे ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी देहु दरसु प्रभ मेरे ॥ २ ॥ तू साचा साहिबु साहु अमिता ॥ तू प्रीतमु पिआरा प्रान हित चिता ॥ प्रान सुखदाता गुरमुखि जाता सगल रंग बनि आए ॥ सोई करमु कमावै प्राणी जेहा तू फुरमाए ॥ जा कउ क्रिपा करी जगदीसुरि तिनि साधसंगि मनु जिता ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी जीउ पिंडु तउ दिता ॥ ३ ॥ निरगुणु राखि लीआ संतन का सदका ॥ सतिगुरि ढाकि लीआ मोहि पापी पड़दा ॥ ढाकनहारे प्रभू हमारे जीअ प्रान सुखदाते ॥ अबिनासी अबिगत सुआमी पूरन पुरख बिधाते ॥ उसतति कहनु न जाइ तुमारी कउणु कहै तू कद का ॥ नानक दासु ता कै बलिहारी मिलै नामु हरि निमका ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥

सृष्टि तो भाग-भाग कर सच्चे गुरु के पीछे हो चली। महसूल लेने वालों ने भी सयानेपन से काम लिया और वे अपने बक्सों को बन्द करके उन्हें देखते हुए उठकर पीछे हट गए अर्थात किसी ने कुछ वसूल नहीं किया। तीसरा, इस प्रकार वे गंगा पर आए और वहां यह कौतुक बन गया।। ५ ।। नगर के श्रेष्ठ लोग मिलकर आए और उन्होंने सच्चे गुरु का आसरा पकड़ लिया। सच्चे गुरु ने उन लोगों के पूछने पर स्मृतियों आदि का हवाला देते हुए गुरु और प्रभु के बारे में किए हुए प्रश्नों के उत्तर देकर उन्हें सन्तुष्ट कर दिया। गुरु जी ने स्मृतियों और शास्त्रों के आधार पर बताया कि किस प्रकार प्रहलाद, श्रीराम, शुक आदि ने प्रभु-गुरु का सुमिरन किया था और इस शरीर रूपी नगरी के पांचों चोरों का नामोनिशान मिटा दिया था। वहाँ नित्य कीर्तन और पुराणों की कथा होती थी परन्तु हे नानक, गुरु के उपदेश के माध्यम से अब उन नगर वासियों ने प्रभु भक्ति को मन में धारण कर लिया। नगर के सभी प्रमुख व्यक्ति मिलकर पहुँचे और उन्होंने सच्चे गुरु का आसरा ग्रहण कर लिया।। ६ ।। ४ ।। १० ।।

तुखारी छन्द महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे प्रभु, मैं तुझ पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ और गुरु के माध्यम से मैंने अपना मन तुझे दे दिया है। तेरे शब्द को सुनकर मेरा मन तन भीग उठा है। जल की मछली की तरह मेरा यह मन तेरे प्रेम में भीग गया है और इसे प्रभु का रंग लग गया है। हे मालिक, तेरा स्थान अपार अनन्त है उसके मूल्य को नहीं आँका जा सकता। हे सभी गुणों के दाता प्रभु , इस दीन की एक विनती सुन लो। बलिहारी जाते हुए नानक को दर्शन दे क्योंकि मैंने तो अपने प्राण तुझ पर कुर्बान कर दिए हैं।। १ ।। यह तन और मन तथा सभी गुण तेरे ही हैं। तेरे दर्शन के लिए तो मैं टुकड़े टुकड़े भी हो सकता हूँ। हे मेरे प्रभु, तेरे दर्शनों को क्षण भर के लिए भी देखकर मैं सदैव आध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहता हूँ। तेरे अमृत नाम के बारे में सुना जाता है परन्तु यदि तू कृपा करे तभी मैं उस अमृत को पी सकता हूँ। जिस प्रकार चातक वर्षा की बूंद के लिए प्यासा बना रहता है उसी प्रकार प्रियतम प्रभु के लिए मैं जीव स्त्री आशा लगाए हुए प्यासी बनी हुई हूँ। नानक का कथन है कि हे प्रभु, मेरे प्राण तुझ पर बलिहारी हैं तू मुझे अपना दर्शन दे।। २ ।। हे अपरिमित प्रभु, तू ही सच्चा मालिक और साहूकार है और तू ही हमारे प्राणों और चित्त का प्यारा प्रभु है। वह प्राणों का सुखदाता है जिसे गुरमुख बनकर जाना जाता है और सभी रंग और खेल उसी के कारण ही बने हुए हैं। जैसा तू कहता है वैसे ही कर्म प्राणी करता है। प्रभु ने जिस पर कृपा की उसने ही साधुसंगति के माध्यम से मन को जीत लिया है। नानक कहता है कि मेरे प्राण तुझ पर बलिहारी हैं क्योंकि ये प्राण और शरीर तूने ही दिए हैं।। ३ ।। शान्त पुरुषों की संगति के कारण मुझ गुण विहीन को भी प्रभु ने बचा लिया है। सच्चे गुरु ने ही मुझ पापी का पर्दा ढक लिया है। जीवन और प्राणों को सुख देने वाला वह प्रभु ही हमारे पापों को ढकने वाला है और वही अविनाशी, अव्यक्त, पूर्ण पुरुष और विधाता मालिक है। तेरी महिमा नहीं कही जा सकती क्योंकि कौन कह सकता है कि तू कब का विद्यमान है। दास नानक तो उस पर बलिहारी जाता है जिसके माध्यम से क्षण भर के लिए भी प्रभु-नाम प्राप्त हो जाए।। ४ ।। १ ।। ११

केदारा महला ४ घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे ॥ अगम अगोचरु न जाइ हरि लखिआ गुरु पूरा मिलै लखावीऐ रे ॥ रहाउ ॥ जिसु आपे किरपा करे मेरा सुआमी तिसु जन कउ हरि लिव लावीऐ रे ॥ सभु को भगति करे हरि केरी हरि भावै सो थाइ पावीऐ रे ॥ १ ॥ हरि हरि नामु अमोलकु हरि पहि हरि देवै ता नामु धिआवीऐ रे ॥ जिस नो नामु देइ मेरा सुआमी तिसु लेखा सभु छडावीऐ रे ॥ २ ॥ हरि नामु अराधहि से धंनु जन कहीअहि तिन मसतकि भागु धुरि लिखि पावीऐ रे ॥ तिन देखे मेरा मनु बिगसै जिउ सुतु मिलि मात गलि लावीऐ रे ॥ ३ ॥ हम बारिक हरि पिता प्रभ मेरे मो कउ देहु मती जितु हरि पावीऐ रे ॥ जिउ बछुरा देखि गऊ सुखु मानै तिउ नानक हरि गलि लावीऐ रे ॥ ४ ॥ १ ॥

केदारा महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन हरि हरि गुन कहु रे ॥ सतिगुरू के चरन धोइ धोइ पूजहु इन बिधि मेरा हरि प्रभु लहु रे ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु बिखै रस इन संगति ते तू रहु रे ॥ मिलि सतसंगति कीजै हरि गोसटि साधू सिउ गोसटि हरि प्रेम रसाइणु राम नामु रसाइणु हरि राम नाम राम रमहु रे ॥ १ ॥

केदारा महला ४ घरु १

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे मन, सदैव राम नाम का गायन करते रहो। उस अगम्य, अगोचर प्रभु को देखा नहीं जा सकता; पूर्ण गुरु के मिलने पर ही उसे समझा जाता है।। रहाउ।। मेरा मालिक प्रभु जिस पर स्वयं कृपा करे उसी सेवक की लौ प्रभु के साथ लगती है। प्रभु की भक्ति तो सभी करते हैं परन्तु जो प्रभु को भा जाती है उसी की भक्ति सफल मानी जाती है।। १ ।। प्रभु के पास उसका अमूल्य नाम है; प्रभु देता है तभी उसके नाम का सुमिरन किया जाता है। मेरा स्वामी जिसे अपना नाम दे देता है उसका सभी लेखा-जोखा समाप्त हो जाता है।। २ ।। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं उन सेवकों को धन्य कहा जाता है और उनके माथे पर ऐसा भाग्य लेख प्रारम्भ से ही पड़ा होता है। उन्हें देखकर मेरा मन उसी प्रकार खिल उठता है जैसे बच्चा माँ से मिलकर प्रसन्न होकर उसके गले से लग जाता है।। ३ ।। हे मेरे प्रभु पिता, हम बच्चे हैं हमें ऐसी मति प्रदान करो जिससे हम प्रभु को पा सकें। जिस प्रकार बछड़ा गाय को देखकर सुख प्राप्त करता है। हे नानक, उसी प्रकार हमें भी गले से लगाकर सुख प्रदान करो।। ४ ।। १ ।।

केदारा महला ४ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे मन, प्रभु के गुणों का कथन करता रह। सच्चे गुरु के चरणों को धो-धोकर उनकी पूजा कर और इस प्रकार मेरे प्रभु का दर्शन प्राप्त कर ले।। रहाउ।। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान और विषयों की संगति से तू दूर ही बना रह। तू सत्संगति के माध्यम से प्रभु की चर्चा कर, साधु पुरुषों के साथ विचारविमर्श कर, प्रभु प्रेम की रसायन, राम नाम की रसायन रूपी औषधि को पान करता हुआ तू प्रभु के राम नाम में लीन बना रह।। १ ।।

अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे ॥ जन नानक कउ हरि दइआल होहु सुआमी हरि संतन की धूरि करि हरे ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

केदारा महला ५ घरु २   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

माई संतसंगि जागी ॥ प्रिअ रंग देखै जपती नामु निधानी ॥ रहाउ ॥ दरसन पिआस लोचन तार लागी ॥ बिसरी तिआस बिडानी ॥ १ ॥ अब गुरु पाइओ है सहज सुखदाइक दरसनु पेखत मनु लपटानी ॥ देखि दमोदर रहसु मनि उपजिओ नानक प्रिअ अंम्रित बानी ॥ २ ॥ १ ॥

केदारा महला ५ घरु ३   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दीन बिनउ सुनु दइआल ॥ पंच दास तीनि दोखी एक मनु अनाथ नाथ ॥ राखु हो किरपाल ॥ रहाउ ॥ अनिक जतन गवनु करउ ॥ खटु करम जुगति धिआनु धरउ ॥ उपाव सगल करि हरिओ नह नह हुटहि बिकराल ॥ १ ॥ सरणि बंदन करुणा पते ॥ भव हरण हरि हरि हरि हरे ॥ एक तूही दीन दइआल ॥ प्रभ चरन नानक आसरो ॥ उधरे भ्रम मोह सागर ॥ लगि संतना पग पाल ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

केदारा महला ५ घरु ४   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सरनी आइओ नाथ निधान ॥ नाम प्रीति लागी मन भीतरि मागन कउ हरि दान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखदाई पूरन परमेसुर करि किरपा राखहु मान ॥ देहु प्रीति साधू संगि सुआमी हरि गुन रसन बखान ॥ १ ॥ गोपाल दइआल गोबिद दमोदर निरमल कथा गिआन ॥ नानक कउ हरि कै रंगि रागहु चरन कमल संगि धिआन ॥ २ ॥ १ ॥ ३ ॥ केदार महला ५ ॥ हरि के दरसन को मनि चाउ ॥ करि किरपा सतसंगि मिलावहु तुम देवहु अपनो नाउ ॥ रहाउ ॥ करउ सेवा सत पुरख पिआरे

अन्दर के अभिमान के जोर को तू जितना भी जानता है इसे दूर कर दे और अपने आपको पकड़कर नियन्त्रण में बनाए रख। हे प्रभु, दास नानक पर दयालु होकर इसे सन्तजनों की चरणधूलि बनाए रखो।। २ ।। १ ।। २ ।।

केदारा महला ५ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सन्त संगति में मेरी आध्यात्मिक वृत्ति अज्ञान की नींद को छोड़कर जग गई है। वह अब प्यारे प्रभु के रंगों को देखती है और सभी सुखों वाले नाम का जाप करती है।। रहाउ।। उसके दर्शन की प्यास के कारण मेरी आँखों की टकटकी उसकी ओर लग गई है और अब मुझे पराए पदार्थों की प्यास भूल गई है।। १ ।। अब मैंने स्वाभाविक रूप से ही सुख देने वाला गुरु प्राप्त कर लिया है और उसका दर्शन देखते ही मन उसके साथ लिपट गया है। उस प्रभु को देखकर मेरे मन में आनन्द उत्पन्न हो गया और हे नानक, अब मुझे अमृतवाणी प्रिय लगने लग गई है।। २ ।। १ ।।

केदारा महला ५ घरु ३ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे दयालु प्रभु, तू इस दीन की विनती को सुन ले। पांचों चोर रूपी पांच विकार और तीन गुण दुख पहुँचाने वाले हैं तथा हे अनाथों के नाथ, इन सबका सिरमौर एक मन भी है। हे कृपालु प्रभु, मुझे बचा लो।। रहाउ।। अनेकों यत्नों से मैं तीर्थों आदि पर जाता हूँ। योग के षटकर्मों की युक्ति अपनाकर मैं ध्यान लगाता हूँ परन्तु ये सभी उपाय करके मैं हार गया हूँ; ये विकराल दुख देने वाले दूर नहीं होते।। १ ।। हे दया के स्वामी प्रभु, तेरी शरण में आकर मैं तुझे प्रणाम करता हूँ। हे प्रभु, तू ही संसार के बन्धनों को तोड़कर संसार सागर के भय को दूर करने वाला है। एक तू ही दीन दयालु है और नानक को तो प्रभु के चरणों का ही आसरा है। सन्तजनों के पल्ले और चरणों में लगकर मैं भ्रम और मोह के सागर के पार उतर गया हूँ।। २ ।। १ ।। २ ।।

केदारा महला ५ घरु ४ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे सुखों के भण्डार नाथ, मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। हे प्रभु, तुझसे दान माँगने के लिए तेरे नाम की प्रीति मेरे मन में लग गई है।। १ ।। रहाउ।। सुख देने वाले हे पूर्ण परमेश्वर, कृपा करके मेरा मान रखते हुए मुझे साधु पुरुषों का प्रेम प्रदान करो क्योंकि मैं अपनी जीभ से प्रभु के गुणों का ही बखान कर रहा हूँ।। १ ।। हे दयालु और धरती की पालना करने वाले प्रभु, तेरी कथा और ज्ञान दोनों ही निर्मल हैं। नानक को तो प्रभु के रंग में रंग दो ताकि तुम्हारे चरण कमलों में उसका ध्यान बना रहे।। २ ।। १ ।। ३ ।। केदारा महला ५ ।। मेरे मन में प्रभु के दर्शन का चाव बना हुआ है। कृपा करके हे प्रभु, मुझे सत्संगति में मिला दो और तुम मुझे अपना नाम दे दो।। रहाउ ।। हे सच्चे प्यारे पुरुष प्रभु, मैं तेरी सेवा करता रहूँ और

जत सुनीऐ तत मनि रहसाउ ॥ वारी फेरी सदा घुमाई कवनु अनूपु तेरो ठाउ ॥ १ ॥ सरब प्रतिपालहि सगल समालहि सगलिआ तेरी छाउ ॥ नानक के प्रभ पुरख बिधाते घटि घटि तुझहि दिखाउ ॥ २ ॥ २ ॥ ४ ॥ केदारा महला ५ ॥ प्रिअ की प्रीति पिआरी ॥ मगन मनै महि चितवउ आसा नैनहु तार तुहारी ॥ रहाउ ॥ ओइ दिन पहर मूरत पल कैसे ओइ पल घरी किहारी ॥ खूले कपट धपट बुझि त्रिसना जीवउ पेखि दरसारी ॥ १ ॥ कउनु सु जतनु उपाउ किनेहा सेवा कउन बीचारी ॥ मानु अभिमानु मोहु तजि नानक संतह संगि उधारी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुन गावहु ॥ करहु क्रिपा गोपाल गोबिदे अपना नामु जपावहु ॥ रहाउ ॥ काढि लीए प्रभ आन बिखै ते साधसंगि मनु लावहु ॥ भ्रम भउ मोहु कटिओ गुर बचनी अपना दरसु दिखावहु ॥ १ ॥ सभ की रेन होइ मनु मेरा अहंबुधि तजावहु ॥ अपनी भगति देहि दइआला वडभागी नानक हरि पावहु ॥ २ ॥ ४ ॥ ६ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि बिनु जनमु अकारथ जात ॥ तजि गोपाल आन रंगि राचत मिथिआ पहिरत खात ॥ रहाउ ॥ धनु जोबनु संपै सुख भोगवै संगि न निबहत मात ॥ म्रिग त्रिसना देखि रचिओ बावर द्रुम छाइआ रंगि रात ॥ १ ॥ मान मोह महा मद मोहत काम क्रोध कै खात ॥ करु गहि लेहु दास नानक कउ प्रभ जीउ होइ सहात ॥ २ ॥ ५ ॥ ७ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि बिनु कोइ न चालसि साथ ॥ दीना नाथ करुणापति सुआमी अनाथा के नाथ ॥ रहाउ ॥ सुत संपति बिखिआ रस भोगवत नह निबहत जम कै पाथ ॥ नामु निधानु गाउ गुन गोबिद उधरु सागर के खात ॥ १ ॥ सरनि समरथ अकथ अगोचर हरि सिमरत दुख लाथ ॥ नानक दीन धूरि जन बांछत मिलै लिखत धुरि माथ ॥ २ ॥ ६ ॥ ८ ॥

केदारा महला ५ घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बिसरत नाहि मन ते हरी ॥ अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥ रहाउ ॥ बूंद कहा

मैं जब भी तुम्हारा नाम सुनता हूँ तो मेरा मन आनन्दित हो उठता हैं। मैं तुझ पर बार-बार बलिहारी जाऊं यदि मुझे पता लग जाए कि तेरा अनुपम ठिकाना कौन सा है।। १ ।। तू सबका पालन पोषण करता है, सबकी सम्भाल करता है और सबके सिर पर तेरी ही छाया अर्थात सबको तेरा ही आसरा है। नानक के विधाता प्रभु, मैं घट-घट में तुझे ही देखता रहूँ।। २ ।। २ ।। ४ ।। केदारा महला ५ ।। उस प्रियतम की प्रीति बहुत ही प्यारी है; मन में मग्न होकर कई आशाओं के साथ मैं तुम्हें देखता हूँ और मेरी आँखों की तुम्हारी ओर ही टकटकी लगी हुई है।। रहाउ।। वे दिन, प्रहर, मूहुर्त, पल और घड़ियाँ कैसी होंगी जब तेरा दर्शन हो और उसके साथ मन के कपाट तुरन्त खुल जाएं तथा मेरी तृष्णा समाप्त हो जाए; ऐसे दर्शन देख देखकर ही मुझे जीवन मिलेगा।। १ ।। कौन सा यत्न, उपाय, कैसी सेवा और कौन सा विचार करूं जिससे तुम्हारा दर्शन हो जाए। हे नानक, तू अपने सम्मान का अभिमान और मोह त्याग दे तो सन्तजनों के साथ तेरा उद्धार हो जाएगा।। २ ।। ३ ।। ५ ।। केदारा महला ५ ।। सदैव बार-बार प्रभु के ही गुण गाते रहो। हे धरती के रक्षक प्रभु, मुझ पर कृपा करो और अपने नाम का सुमिरन कराओ।। रहाउ।। प्रभु ने मुझे अन्य विषय-विकारों से बाहर निकाल लिया है और मेरा मन साधुसंगति में लगा दिया है। मेरा भ्रम, भय और मोह गुरु के वचनों के कारण कट गया है, इसलिए हे प्रभु, अब मुझे अपना दर्शन दे दो।। १ ।। अहंकार वाली बुद्धि मुझसे दूर कर दो ताकि मेरा मन सबकी चरण धूलि बन जाए। हे दयालु, मुझे अपनी भक्ति प्रदान करो ताकि यह नानक बड़े भाग्य से प्रभु को पा जाए।। २ ।। ४ ।। ६ ।। केदारा महला ५ ।। प्रभु के बिना यह जीवन निरर्थक ही जा रहा है। यह जीव प्रभु को त्यागकर अन्यों के प्रेम में लीन बना हुआ है इसलिए यह जो भी खाता पहनता है वह सब झूठ बन जाता है।। रहाउ।। धन, यौवन, सम्पत्ति और सुखों को यह भोगता है परन्तु ये थोड़ा सा भी साथ नहीं निभते। यह बावला मृगतृष्णा को देखकर उसी में लीन बना है और यह नहीं जानता कि यहाँ के सुख और रंगरलियाँ पेड़ की छाया की तरह अस्थिर हैं।। १ ।। मान, मोह, अभिमान, काम, क्रोध के ही गड्डे हैं। यह उन्हीं में मोहित बना हुआ है। हे प्रभु, मेरी सहायता करते हुए दास नानक को इनसे बाहर निकाल लो।। २ ।। ५ ।। ७ ।। केदारा महला ५ ।। प्रभु के बिना कोई भी साथ चलने वाला नहीं है। करुणा का स्वामी वह दीनानाथ प्रभु, अनाथों का भी नाथ है।। रहाउ।। पुत्र, सम्पत्ति और भोगने वाले विषय विकारों के रस यम के मार्ग पर साथ नहीं निभते। नाम के भण्डार उस प्रभु के गुण गाकर हे जीव, तू इन गड्डों से पार हो जा।। १ ।। शरण देने में समर्थ उस अकथनीय एवं अगोचर प्रभु के सुमिरन से हमारे सभी दुख उतर जाते हैं। दीन नानक तो प्रभु के सेवकों की चरण धूलि माँगता है परन्तु मिलता वही है जो व्यक्ति के माथे पर प्रारम्भ से ही लिखा होता है।। २ ।। ६ ।। ८ ।।

केदारा महला ५ घरु ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मन से प्रभु भूलता नहीं; अब तो उसकी प्रीति इतनी प्रबल हो गई है कि अन्य विषयों की तृष्णा जल गई है।। रहाउ।। पानी की बूंद को

तिआगि चात्रिक मीन रहत न घरी ॥ गुन गोपाल उचारु रसना टेव एह परी ॥ १ ॥ महा नाद कुरंक मोहिओ बेधि तीखन सरी ॥ प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥ २ ॥ १ ॥ ९ ॥ केदारा महला ५ ॥ प्रीतम बसत रिद महि खोर ॥ भरम भीति निवारि ठाकुर गहि लेहु अपनी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अधिक गरत संसार सागर करि दइआ चारहु धोर ॥ संतसंगि हरि चरन बोहिथ उधरते लै मोर ॥ १ ॥ गरभ कुंट महि जिनहि धारिओ नही बिखै बन महि होर ॥ हरि सकत सरन समरथ नानक आन नही निहोर ॥ २ ॥ २ ॥ १० ॥ केदारा महला ५ ॥ रसना राम राम बखानु ॥ गुन गुोपाल उचारु दिनु रैनि भए कलमल हान ॥ रहाउ ॥ तिआगि चलना सगल संपत कालु सिर परि जानु ॥ मिथन मोह दुरंत आसा झूठु सरपर मानु ॥ १ ॥ सति पुरख अकाल मूरति रिदै धारहु धिआनु ॥ नामु निधानु लाभु नानक बसतु इह परवानु ॥ २ ॥ ३ ॥ ११ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम को आधारु ॥ कलि कलेस न कछु बिआपै संतसंगि बिउहारु ॥ रहाउ ॥ करि अनुग्रहु आपि राखिओ नह उपजतउ बेकारु ॥ जिसु परापति होइ सिमरै तिसु दहत नह संसारु ॥ १ ॥ सुख मंगल आनंद हरि हरि प्रभ चरन अंम्रित सारु ॥ नानक दास सरनागती तेरे संतना की छारु ॥ २ ॥ ४ ॥ १२ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम बिनु ध्रिगु स्रोत ॥ जीवन रूप बिसारि जीवहि तिह कत जीवन होत ॥ रहाउ ॥ खात पीत अनेक बिंजन जैसे भार बाहक खोत ॥ आठ पहर महा स्रमु पाइआ जैसे बिरख जंती जोत ॥ १ ॥ तजि गुोपाल जि आन लागे से बहु प्रकारी रोत ॥ कर जोरि नानक दानु मागै हरि रखउ कंठि परोत ॥ २ ॥ ५ ॥ १३ ॥ केदारा महला ५ ॥ संतह धूरि ले मुखि मली ॥ गुणा अचुत सदा पूरन नह दोख बिआपहि कली ॥ रहाउ ॥ गुर बचनि कारज सरब पूरन ईत ऊत न हली ॥ प्रभ एक अनिक सरबत पूरन बिखै अगनि न जली ॥ १ ॥ गहि भुजा लीनो दासु अपनो जोति जोती रली ॥ प्रभ चरन सरन अनाथु आइओ नानक हरि संगि चली ॥ २ ॥ ६ ॥ १४ ॥ केदारा महला ५ ॥

छोड़कर पपीहा कैसे रह सकता है, इसी प्रकार मछली भी घड़ी भर नहीं रह सकती। इसी प्रकार प्रभु के गुणों का उच्चारण करने की मेरी जीभ की भी आदत बन गई है अर्थात् सुमिरन के बिना यह रह नहीं सकती।। १ ।। महानाद से मोहित होकर हिरण तीखे तीरों द्वारा बिंध जाता है। नानक ने तो सभी सुखों को देने वाले प्रभु के चरण कमलों के साथ अपनी गाँठ बाँध ली है।। २ ।। १ ।। ६ ।। केदारा महला ५ ।। मेरे हृदय की गुफा में छिपकर मेरा प्रियतम बस रहा है। हे प्रभु, भ्रम की दीवार को दूर कर दे और मुझे अपनी तरफ खींच ले।। १ ।। रहाउ।। यह संसार सागर बहुत गहरा गर्त है। मुझ पर दया करके मुझे किनारे पर चढ़ा लो। सन्तजनों के संग प्रभु चरण रूपी जहाज पर मुझे चढ़ाकर मेरा उद्धार कर दो।। १ ।। जिसने गर्भ कुण्ड में हमें धारण करके बचाया था, विषय विकारों के वन में भी वही है जो हमें बचा लेगा। प्रभु की शरण ही बलवान और समर्थ है इसलिए हे नानक, हमारे पर अन्य किसी का एहसान नहीं है ॥२॥२॥१०॥केदारा महला ५ ।। हे जीव, तू राम नाम का उच्चारण कर। तू प्रभु के गुणों का दिन रात उच्चारण कर जिससे तेरे पापों का नाश हो जाएगा।। रहाउ।। सारी सम्पत्ति को त्यागकर यहाँ से चलना होगा और तू काल को अपने सिर पर खड़ा ही समझ। बुरे अन्त वाली आशाएं और झूठे मोह को तू आवश्यक रूप से झूठा ही मान।। १ ।। सत्य स्वरूप वह कालातीत प्रभु है, हे जीव, तू उसी का ध्यान बनाए रख। हे नानक, सुखों का भण्डार प्रभु-नाम ही लाभदायक है और यही वस्तु प्रभु के पास स्वीकार होती है।। २ ।। ३ ।। ११ ।। केदारा महला ५ ।। प्रभु के नाम का आसरा लेने से कलह, क्लेश आदि कुछ भी व्याप्त नहीं होता और शान्त पुरुषों के साथ मेलजोल हो जाता है।। रहाउ।। प्रभु ने कृपा करके हमें बचा लिया है और अब विकार हमारे मन में उत्पन्न नहीं होते। जो उसे पाकर उसका सुमिरन करते हैं उन्हें संसार विषय-विकारों की अग्नि में जला नहीं पाता।। १ ।। प्रभु के पास ही सभी प्रकार के सुख, मंगल और आनन्द हैं और प्रभु के चरण ही अमृत रूपी सार तत्व हैं। दास नानक तो हे प्रभु, तेरा शरणागत है और शान्त पुरुषों की चरण धूलि है।। २ ।। ४ ।। १२ ।। केदारा महला ५ ।। प्रभु के नाम के बिना कुछ भी सुनने को धिक्कार है। जीवन स्वरूप प्रभु को भुलाकर जो जीवित बने रहते हैं उनका जीवन भी भला क्या जीवन है।। रहाउ।। जैसे गधा भार उठाये रहता है वे अनेकों प्रकार के व्यंजनों को खाते पीते रहते हैं। आठों प्रहर वे उसी प्रकार मेहनत करते रहते है जैसे कोल्हू में जुता हुआ बैल मेहनत करता रहता है। प्रभु को त्यागकर जो अन्य लोगों के पीछे लग जाते हैं वे अनेकों प्रकार से रोते रहते हैं। नानक तो हाथ जोड़कर यही दान माँगता है कि हे प्रभु, मुझे अपने गले से लगाए रखो।। २ ।। ५ ।। १३ ।। केदारा महला ५ ।। सन्तजनों की चरण धूलि जब मुख पर लगा ली तो सभी गुणों वाले प्रभु के गुणों के कारण इस कलियुग में दुख प्रभावित नहीं करते।। रहाउ।। गुरु के उपदेश के कारण सभी कार्य पूरे हो जाते हैं और मन इधर-उधर नहीं डोलता। जो सबमें एक प्रभु को ही व्याप्त मानता है उसे विषय विकारों की अग्नि नहीं जलाती ।। १ ।। अपने दास को उसने बाँह से पकड़ लिया है और दास की ज्योति उस प्रभु की ज्योति में लीन हो गई। यह अनाथ तो प्रभु के चरणों की शरण में आ गया है और नानक तो अब प्रभु के साथ ही चल पड़ा है।। २ ।। ६ ।। १४ ।। केदारा महला ५ ।।

हरि के नाम की मन रुचै ॥ कोटि सांति अनंद पूरन जलत छाती बुझै ॥ रहाउ ॥ संत मारगि चलत प्रानी पतित उधरे मुचै ॥ रेनु जन की लगी मसतकि अनिक तीरथ सुचै ॥ १ ॥ चरन कमल धिआन भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै ॥ सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥ २ ॥ ७ ॥ १५ ॥

केदारा छंत महला ५   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मिलु मेरे प्रीतम पिआरिआ ॥ रहाउ ॥ पूरि रहिआ सरबत्र मै सो पुरखु बिधाता ॥ मारगु प्रभ का हरि कीआ संतन संगि जाता ॥ संतन संगि जाता पुरखु बिधाता घटि घटि नदरि निहालिआ ॥ जो सरनी आवै सरब सुख पावै तिलु नही भंनै घालिआ ॥ हरि गुण निधि गाए सहज सुभाए प्रेम महा रस माता ॥ नानक दास तेरी सरणाई तू पूरन पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ हरि प्रेम भगति जन बेधिआ से आन कत जाही ॥ मीनु बिछोहा ना सहै जल बिनु मरि पाही ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ दूख किनि सहीऐ चात्रिक बूंद पिआसिआ ॥ कब रैनि बिहावै चकवी सुखु पावै सूरज किरणि प्रगासिआ ॥ हरि दरसि मनु लागा दिनसु सभागा अनदिनु हरि गुण गाही ॥ नानक दासु कहै बेनंती कत हरि बिनु प्राण टिकाही ॥ २ ॥ सास बिना जिउ देहुरी कत सोभा पावै ॥ दरस बिहूना साध जनु खिनु टिकणु न आवै ॥ हरि बिनु जो रहणा नरकु सो सहणा चरन कमल मनु बेधिआ ॥ हरि रसिक बैरागी नामि लिव लागी कतहु न जाइ निखेधिआ ॥ हरि सिउ जाइ मिलणा साधसंगि रहणा सो सुखु अंकि न मावै ॥ होहु क्रिपाल नानक के सुआमी हरि चरनह संगि समावै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत प्रभ मिले हरि करुणा धारे ॥ निरगुणु नीचु अनाथु मै नही दोख बीचारे ॥ नही दोख बीचारे पूरन सुख सारे पावन बिरदु बखानिआ ॥ भगति वछलु सुनि अंचलुो गहिआ घटि घटि पूर समानिआ ॥ सुख सागरो पाइआ सहज सुभाइआ जनम मरन दुख हारे ॥ करु गहि लीने नानक दास अपने राम नाम उरि हारे ॥ ४ ॥ १ ॥

यदि प्रभु के नाम की रुचि मन में उत्पन्न हो जाए तो करोड़ों प्रकार की शान्ति एवं पूर्ण आनन्द प्राप्त हो जाते हैं तथा जलती हुई छाती अर्थात तृष्णाओं में जलता हुआ हृदय बुझकर शान्त हो जाता है।। रहाउ।। सन्त पुरुषों के मार्ग पर चलते हुए अनेकों पतित प्राणियों का उद्धार हुआ है। जब प्रभु के सेवक की चरण धूलि माथे पर लग गई तो ऐसा समझो कि कई तीर्थों का पवित्र स्नान हो गया।। १ ।। जब अन्तर्मन में ही उसके चरण कमलों पर ध्यान लग जाता है तो हर हृदय में अर्थात घर घर में वह प्रभु ही दिखाई देता है। हे नानक, उस अपार प्रभु की शरण में आने से यम फिर तंग नहीं करता।। २ ।। ७ ।। १५ ।।

केदारा छन्द महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे प्यारे प्रीतम, मुझसे आ मिलो।। रहाउ।। वह विधाता प्रभु सबमें भरपूर रूप से व्याप्त है। प्रभु को मिलने का रास्ता तो उसने स्वयं ही बनाया है परन्तु सन्तजनों की संगति में ही उसे जाना जाता है। उस विधाता प्रभु को सन्तजनों के साथ ही जाना जाता है और अपनी अन्तरदृष्टि से उसे घट-घट में देखा जाता है। जो उसकी शरण में आ जाता है वह सारे सुखों को प्राप्त करता है तथा प्रभु उसकी थोड़ी सी की हुई मेहनत को भी व्यर्थ नहीं जाने देता। शरण आया हुआ व्यक्ति सहज स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के गुणों के भण्डार का गुणानुवाद करता रहता है और उसके प्रेम के महारस में लीन हो जाता है। दास नानक तो हे प्रभु, तेरी शरण में है और तू ही पूर्ण विधाता प्रभु है।। १ ।। प्रभु के सेवक प्रभु के प्रेम और भक्ति में बिंध गए हैं; अब वे भला कौन से दूसरे स्थान पर जा पाएंगे। मछली वियोग नहीं सह पाती और जल के बिना मर जाती है। प्रभु के बिना कैसे रहा जाए और कैसे वियोग के दुख को सहा जाए। हम तो बूंद के प्यासे चातक की तरह हैं। हम तो उस चकवी की तरह हैं जो यह सोचती रहती है कि कब रात बीते और सूर्य की किरण का प्रकाश होने से कब वह सुख प्राप्त करे। मेरे लिए तो वही दिन भाग्यशाली है जिस दिन मेरा मन प्रभु के दर्शन में लीन हो जाता है और मैं हर रोज उस प्रभु के गुण गाता रहता हूँ। दास नानक तो विनती करता है कि हे प्रभु, मेरे प्राण हरि दर्शन के बिना कैसे बच सकते हैं।। २ ।। श्वास के बिना भला शरीर कैसे शोभा पा सकता है ; प्रभु दर्शन से विहीन साधक व्यक्ति क्षण भर भी स्थिर नहीं रह पाता। प्रभु के चरण कमल में मेरा मन इस प्रकार बिंध गया है कि प्रभु के बिना रहना तो नरक को सहन करने के समान हो गया है। जो प्रभु के प्रेम वाला वैराग्यवान है उसकी तो प्रभु-नाम में लौ लगी रहती है और उसे कहीं भी बुरा नहीं कहा जाता। प्रभु से जा मिलना और साधसंगति में रहने का सुख तो हमारे हृदय में समाया नहीं रह सकता अर्थात वह अनन्त है। हे नानक के स्वामी, तुम कृपा करो ताकि मैं प्रभु चरणों में लीन बना रहूँ।। ३ ।। प्रभु ने कृपा धारण की और मुझ खोजते-खोजते को प्रभु मिल गया है। मैं तो गुण विहीन नीच और अनाथ हूँ परन्तु उसने मेरे दोषों पर विचार नहीं किया। उसने मेरे दोषों की परवाह नहीं की और मुझे सभी पूर्ण सुख प्रदान कर दिए क्योंकि पवित्र करना उस प्रभु का नित्य कर्म और धर्म कहा जाता है। भक्त वत्सल होने के प्रभु के होने के गुण को सुनकर मैंने उसका आँचल थाम लिया और अब मुझे वह घट-घट में समाया हुआ प्रतीत होता है। सहज स्वाभाविक रूप से ही मैंने सुखों के सागर उस प्रभु को पा लिया है और उसने मेरे जन्म मरण का दुख दूर कर दिया है। हमने राम नाम को हृदय में हार की तरह धारण कर लिया है और हे नानक, प्रभु ने अपने दासों को हाथ पकड़कर अपने में लीन कर लिया है।। ४ ।। १ ।।

रागु केदारा बाणी कबीर जीउ की   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥ लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥ १ ॥ तेरा जनु एकु आधु कोई ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीन्है सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ ॥ चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन्ह ही परम पदु पाइआ ॥ २ ॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम सदा रहै निहकामा ॥ त्रिसना अरु माइआ भ्रमु चूका चितवत आतम रामा ॥ ३ ॥ जिह मंदरि दीपकु परगासिआ अंधकारु तह नासा ॥ निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा कहि कबीर जन दासा ॥ ४ ॥ १ ॥ किनही बनजिआ कांसी तांबा किनही लउग सुपारी ॥ संतहु बनजिआ नामु गोबिद का ऐसी खेप हमारी ॥ १ ॥ हरि के नाम के बिआपारी ॥ हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे लाए तउ सच लागे साचे के बिउहारी ॥ साची बसतु के भार चलाए पहुचे जाइ भंडारी ॥ २ ॥ आपहि रतन जवाहर मानिक आपै है पासारी ॥ आपै दह दिस आप चलावै निहचलु है बिआपारी ॥ ३ ॥ मनु करि बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥ २ ॥ री कलवारि गवारि मूढ मति उलटो पवनु फिरावउ ॥ मनु मतवार मेर सर भाठी अंम्रित धार चुआवउ ॥ १ ॥ बोलहु भईआ राम की दुहाई ॥ पीवहु संत सदा मति दुरलभ सहजे पिआस बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै बिचि भाउ भाइ कोऊ बूझहि हरि रसु पावै भाई ॥ जेते घट अंम्रितु सभ ही महि भावै तिसहि पीआई ॥ २ ॥ नगरी एकै नउ दरवाजे धावतु बरजि रहाई ॥ त्रिकुटी छूटै दसवा दरु खूल्है ता मनु खीवा भाई ॥ ३ ॥ अभै पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी ॥ उबट चलंते इहु मदु पाइआ जैसे खोंद खुमारी ॥ ४ ॥ ३ ॥ काम क्रोध त्रिसना के लीने गति नही एकै जानी ॥ फूटी आखै

रागु केदारा वाणी कबीर जी की ੧ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रशंसा और निन्दा दोनों ही त्यागने योग्य हैं और मान अथवा अपमान का विचार भी त्याग दो। जो लोहे और सोने को समान रूप से जानते हैं वे लोग ही परमात्मा की प्रतिमूर्ति हैं।। १ ।। तेरा तो एक आधा ही सेवक ऐसा है जो काम, क्रोध, लोभ, मोह को त्यागकर प्रभु के परमपद को पहचानता है।। १ ।। रहाउ।। रजो गुण, तमोगुण, सतोगुण जो सब कहे जाते हैं ये सब तो तेरी ही माया हैं। जो व्यक्ति चौथे पद को पहचान जाता है वही परम पद को प्राप्त करता है।। २ ।। ऐसा सेवक तीर्थ, व्रत, नियम, शौच, संयम आदि के फल के प्रति निष्काम भाव सदैव बनाए रहता है। उसी की तृष्णा और माया का भ्रम समाप्त हो चुका होता है जो अन्तर्मन में प्रभु-नाम का सुमिरन करता रहता है।। ३ ।। जिस भी घर में दीपक प्रकाशित हो जाए, अंधकार वहाँ से भाग जाता है। इसी प्रकार जब निर्भय प्रभु अन्तर्मन में भर जाता है तो कबीर कहता है कि ऐसे दास और सेवक के अन्दर से भ्रम भाग खड़ा होता है।।४ ।।१ ।।किसी ने तो काँसा खरीदा है किसी ने ताँबा और किसी ने लौंग सुपारी खरीदे हैं। हे सन्तजनों, हमारा माल तो ऐसा है कि हमने तो प्रभु के नाम का व्यापार कर लिया है।। १ ।। प्रभु-नाम के हम व्यापारी हैं और जबसे प्रभु-नाम रूपी अमूल्य हीरा हमारे हाथ लग गया है तबसे हमारी साँसारिकता छूट गई है।। १ ।। रहाउ।। सत्य की ओर जब तुमने लगाया तो हम सत्य में लग गए और सत्य के व्यापारी हो गए। हमने तो सच्ची वस्तु के गट्ठर के गट्ठर लाद लिए हैं और प्रभु के भण्डार तक जा पहुंचे हैं।। १२ ।। वह प्रभु स्वयं ही रत्न है, जवाहर है, माणिक है और स्वयं ही सौदे को फैलाने वाला जौहरी भी है। दसों दिशाओं में वह स्वयं ही सबको चलाता है और वह व्यापारी अटल बना रहने वाला है।। ३ ।। मन को हमने बैल बनाया सुरति को प्रभु में जोड़ने का मार्ग तैयार किया और ज्ञान की खेप को भरकर उस मन रूपी बैल पर लाद लिया। हे सन्तजनों सुन लो कबीर कहता है कि इस प्रकार मेरी रवेप गन्तव्य तक पहुँच सकी है अर्थात उस प्रभु से मेरा मिलाप हो सका है।। ४ ।। २ ।। हे मूर्ख, असभ्य कलवाड़ी (बुद्धि), तुम वासना रूपी पवन को साँसारिकता की ओर से उलटाओ। मन को दशम द्वार की भट्ठी में से अमृतधारा बहाकर मतवाला बनाओ।। १ ।। हे भाइयो, उस राम की ही जय जयकार करो और इस प्रकार की सुरा का पान करो; वह दुर्लभ है परन्तु शीघ्र ही प्यास बुझाने वाली है।। १ ।। रहाउ।। भय में ही प्रेम भावना है और जो कोई इस भाव को समझ जाता है वही हरि रस प्राप्त करता है। शरीर रूपी जितने भी घड़े हैं उन सबमें अमृत का निवास है परन्तु जो प्रभु को भा जाते हैं वह उन्हें ही पिलाता है। शरीर रूपी नगरी के नौ दरवाजें हैं; इनकी तरफ दौड़ते मन को रोक कर रखो। जब तीनों गुणों की माया छूट जाती है तो दसवाँ द्वार खुलता है और तभी मन आनन्द विभोर होता है।। ३ ।। अभयपद प्राप्त होने पर वहाँ से सभी ताप भाग खड़े होते हैं; विचार पूर्वक कहा हुआ यह कबीर का कथन है कि माया की ओर से इस मन को उलटाने से यह शराब प्राप्त होती है और खाए पीए पशु की तरह व्यक्ति हष्ट पुष्ट तथा मस्त बना रहता है।।४ ।।३ ।।काम, क्रोध और तृष्णा से ग्रस्त इस जीव ने उस एक प्रभु के बल को नहीं समझा। फूटी हुई आँख वालों अर्थात अज्ञानियों को

कछू न सूझै बूडि मूए बिनु पानी ॥ १ ॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ असति चरम बिसटा के मूंदे दुरगंध ही के बेढे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुम ते कालु न दूरे ॥ अनिक जतन करि इहु तनु राखहु रहै अवसथा पूरे ॥ २ ॥ आपन कीआ कछू न होवै किआ को करै परानी ॥ जा तिसु भावै सतिगुरु भेटै एको नामु बखानी ॥ ३ ॥ बलूआ के घरूआ महि बसते फुलवत देह अइआने ॥ कहु कबीर जिह रामु न चेतिओ बूडे बहुतु सिआने ॥ ४ ॥ ४ ॥ टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ भाउ भगति सिउ काजु न कछूऐ मेरो कामु दीवान ॥ १ ॥ रामु बिसारिओ है अभिमानि ॥ कनिक कामनी महा सुंदरी पेखि पेखि सचु मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लालच झूठ बिकार महा मद इह बिधि अउध बिहानि ॥ कहि कबीर अंत की बेर आइ लागो कालु निदानि ॥ २ ॥ ५ ॥ चारि दिन अपनी नउबति चले बजाइ ॥ इतनकु खटीआ गठीआ मटीआ संगि न कछु लै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिहरी बैठी मिहरी रोवै दुआरै लउ संगि माइ ॥ मरहट लगि सभु लोगु कुटंबु मिलि हंसु इकेला जाइ ॥ १ ॥ वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुरि न देखै आइ ॥ कहतु कबीरु रामु की न सिमरहु जनमु अकारथु जाइ ॥ २ ॥ ६ ॥

रागु केदारा बाणी रविदास जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥ चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥ १ ॥ रे चित चेति चेत अचेत ॥ काहे न बालमीकहि देख ॥ किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु ॥ लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥ २ ॥ अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पासि ॥ ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥ ३ ॥ १ ॥

कुछ भी दिखाई नहीं देता और वे बिना पानी के ही डूब मरते हैं।। १ ।। हे जीव, तू टेढ़ा-मेढ़ा होकर क्यों चलता है। वास्तव में तो तू हड्डी, चमड़ा और विष्ठा का बाँधा हुआ दुर्गन्ध में लिपटा हुआ ही पदार्थ है।। १ ।। रहाउ।। कौन से भ्रम में भूले हुए तुमने प्रभु-नाम का जाप नहीं किया; काल तुमसे दूर नहीं है। तुम अनेकों यत्न करके इस शरीर को बचाए रहते हो परन्तु आयु पूरी होने पर यह शरीर यहीं रह जाएगा।। २ ।। यह प्राणी जो कुछ मर्जी कर ले इसका अपना किया हुआ कुछ नहीं होता। यदि प्रभु को अच्छा लग जाए तो इसे सच्चा गुरु मिल जाता है और फिर यह एक प्रभु-नाम का ही बखान करता है।। ३ ।। जीव इस शरीर पर मूर्ख बनकर फूला रहता है और यह नहीं जानता कि वास्तव में वह रेत के घर में रह रहा है। कबीर का कथन है कि ऐसे बहुत से सयाने डूब चुके हैं जिन्होंने प्रभु का सुमिरन नहीं किया है।। ४ ।। ४ ।। टेढ़ी पगड़ी बाँधकर अभिमान पूर्ण बनकर लोग टेढ़े चलते हैं और पान के बीड़े खाते रहते हैं। वे यह भी मानते हैं कि प्रेम और भक्ति से हमारा कुछ लेना-देना नहीं है; हमारा काम तो हुकूमत करना है।। १ ।। अभिमानी बनकर उन्होंने प्रभु को भुला दिया है तथा सोना, सुन्दर स्त्रियों को देख-देखकर ही वे इन्हें सदैव स्थिर बने रहने वाले सत्य रूप में मानते हैं।। १ ।। रहाउ।। लालच, झूठ, विकारों के घोर मद में इनकी सारी आयु व्यतीत हो जाती है। कबीर कहता है कि अन्त में इन्हें भी काल का दुख आ लगता है अर्थात इन्हें मरना ही होता है।। २ ।। ५ ।। ये राजागण चार दिन के लिए अपना अपना नगाड़ा पीटकर यहाँ से चलते बने। जो कुछ कमाई की वो गाँठों में बंधी हुई मिट्टी में ही दबी रही और ये साथ में कुछ भी नहीं ले जा पाए।। १ ।। रहाउ।। दहलीज़ तक बैठकर स्त्री रोती रही और दरवाज़े तक माँ ने साथ दिया। मरघट तक सभी लोग और कुटुम्ब के सदस्य साथ चलते रहे परन्तु आगे तो इस जीव रूपी हंस को अकेला ही जाना होता है।। १ ।। वे पुत्र, वह धन, वह नगर और शहर फिर देखना नसीब नहीं होते। कबीर कहता है कि हे भाई, तुम प्रभु का सुमिरन क्यों नहीं करते, तुम्हारा जीवन व्यर्थ जा रहा है।। २ ।। ६ ।।

रागु केदारा वाणी रविदास जी की १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

योग साधना के षटकर्म (धौती, नेती, न्यौली आदि कर्म) करने वाला हो, अच्छी कुल से भी सम्बन्धित हो परन्तु यदि हृदय में प्रभु की भक्ति नहीं है और प्रभु के चरण कमलों की कथा वार्ता उसे अच्छी नहीं लगती तो ऐसा व्यक्ति चाण्डाल के समान है।। १ ।। हे असावधान मन, तू होश में आ जा। तू वाल्मीकि की ओर क्यों नहीं देखता जो किस जाति में था और राम भक्ति के कारण उसकी यह विशेषता बन गई कि वह किस पद तक (ऋषि बनकर) अमर हो गया।। १ ।। रहाउ।। वह कुत्तों का शत्रु था, सब लोगों से अधिक भंयकर था परन्तु उसने प्रभु के साथ जब प्रेम लगा लिया तो यह बेचारा संसार उसकी क्या प्रशंसा करेगा, उसकी शोभा तो तीनों लोकों में फैल गई।। २ ।। अजामिल, लूला-लंगड़ा, पिंगला, शिकारी और गजराज ये सभी मुक्त होकर प्रभु के चरणों में जा पहुँचे। जब ऐसी दुर्मति वाले लोग पार उतर गए तो हे रविदास, उसका सुमिरन करने से तू भला पार क्यों नहीं उतरेगा।। ३ ।। १ ।।

रागु भैरउ महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

तुझ ते बाहरि किछू न होइ ॥ तू करि करि देखहि जाणहि सोइ ॥ १ ॥ किआ कहीऐ किछु कही न जाइ ॥ जो किछु अहै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥ किसु आगै कीचै अरदासि ॥ २ ॥ आखणु सुनणा तेरी बाणी ॥ तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ ३ ॥ करे कराए जाणै आपि ॥ नानक देखै थापि उथापि ॥ ४ ॥ १ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु भैरउ महला १ घरु २ ॥ गुर कै सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि तरे ॥ सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पारि परे ॥ १ ॥ भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥ नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु देवा गुरु अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा ॥ आपे दाति करी गुरि दातै पाइआ अलख अभेवा ॥ २ ॥ मनु राजा मनु मन ते मानिआ मनसा मनहि समाई ॥ मनु जोगी मनु बिनसि बिओगी मनु समझै गुण गाई ॥ ३ ॥ गुर ते मनु मारिआ सबदु वीचारिआ ते विरले संसारा ॥ नानक साहिबु भरिपुरि लीणा साच सबदि निसतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ भैरउ महला १ ॥ नैनी द्रिसटि नही तनु हीना जरि जीतिआ सिरि कालो ॥ रूपु रंगु रहसु नही साचा किउ छोडै जम जालो ॥ १ ॥ प्राणी हरि जपि जनमु गइओ ॥

राहु भैरउ महला १ घरु १ चौपदे

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

हे प्रभु, तुझसे बाहर कुछ भी नहीं होता। तू सब कुछ कर करके देखता और जानता रहता है।। १ ।। क्या कहा जाए तेरे बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। जो कुछ भी यहाँ हैं वह सब तेरी ही रज़ा में है।। रहाउ।। हमें जो कुछ भी करना है उसके लिए हमें तुझसे ही कहना है और भला किसके आगे अरदास की जाए।। २ ।। जो कुछ कहना और सुनना है वह सब तेरी ही वाणी है। हे सब प्रकार के कौतुक करने वाले प्रभु, तू स्वयं ही सब कुछ जानता है।। ३ ।। वह करने-कराने और जानने वाला स्वयं ही है तथा हे नानक, वह बना-मिटाकर स्वयं ही सब कुछ देखता रहता है।। ४ ।। १ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। राहु भैरउ महला १ घरु २।।

शब्द-गुरु के माध्यम से अनेकों मुनिजन पार उतर गए और इन्द्र और ब्रह्मा आदि पार उतर गए है। गुरु की कृपा से सनक सनंदन तपस्वी आदि अनेकों सेवक संसार सागर से पार हो गए।। १ ।। संसार सागर को गुरु शब्द के उपदेश के बिना कैसे पार किया जा सकता है। प्रभु-नाम के बिना सारे संसार में रोग फैला है और दुविधा में ही डूब डूबकर लोग मर रहे हैं।। १ ।। रहाउ।। गुरु ही देवता है और गुरु ही अदृष्ट और रहस्यातीत है। गुरु की सेवा से ही तीनों लोकों की समझ प्राप्त होती है। दाता गुरु ने ही अपनी कृपा का दान दिया जिससे मैंने इस अदृष्ट और रहस्यातीत प्रभु को पा लिया है।। २ ।। मन ही भोगने वाला राजा हे परन्तु गुरु मिलाप के बाद यही मन अपने आप से ही सन्तुष्ट हो जाता है और इसकी सभी इच्छाएं मन में ही लीन हो जाती है तथा यह शान्त हो जाता है। मन ही योगी है, मन ही वियोगी बनकर नष्ट होता है और प्रभु के गुण गाने से ही मन को समझ प्राप्त होती है।। ३ ।। संसार में ऐसे लोग बिरले हैं जिन्होंने गुरु के माध्यम से मन को मारा है और शब्द का चिंतन किया है। हे नानक, वह प्रभु सबमें भरपूर रूप से व्याप्त है और उसके सच्चे शब्द के माध्यम से ही जीव का पार उतारा होता है।। ४ ।। १ ।। २ ।। भैरउ महला १ ।। आँखों में रोशनी नहीं रही, यह शरीर कमजोर हो गया और इसे बुढ़ापे ने जीत लिया है तथा इसके सिर पर अब काल आ खड़ा हुआ है।। १ ।। यह रूप रंग और स्वाद स्थिर बने रहने वाले नहीं है इसलिए यम का जाल भला इसे कैसे छोड़ सकता है।। १ ।। हे प्राणी, प्रभु का जाप कर क्योंकि यह तेरा जीवन समाप्त हो रहा है।

साच सबद बिनु कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन महि कामु क्रोधु हउ ममता कठिन पीर अति भारी ॥ गुरमुखि राम जपहु रसु रसना इन बिधि तरु तू तारी ॥ २ ॥ बहरे करन अकलि भई होछी सबद सहजु नही बूझिआ ॥ जनमु पदारथु मनमुखि हारिआ बिनु गुर अंधु न सूझिआ ॥ ३ ॥ रहै उदासु आस निरासा सहज धिआनि बैरागी ॥ प्रणवति नानक गुरमुखि छूटसि राम नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ भैरउ महला १ ॥ भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी ॥ नेत्री धुंधि करन भए बहरे मनमुखि नामु न जानी ॥ १ ॥ अंधुले किआ पाइआ जगि आइ ॥ रामु रिदै नही गुर की सेवा चाले मूलु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा रंगि नही हरि राती जब बोलै तब फीके ॥ संत जना की निंदा विआपसि पसू भए कदे होहि न नीके ॥ २ ॥ अंम्रित का रसु विरली पाइआ सतिगुर मेलि मिलाए ॥ जब लगु सबद भेदु नही आइआ तब लगु कालु संताए ॥ ३ ॥ अन को दरु घरु कबहू न जानसि एको दरु सचिआरा ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ नानकु कहै विचारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ भैरउ महला १ ॥ सगली रैणि सोवत गलि फाही दिनसु जंजालि गवाइआ ॥ खिनु पलु घड़ी नही प्रभु जानिआ जिनि इहु जगतु उपाइआ ॥ १ ॥ मन रे किउ छूटसि दुखु भारी ॥ किआ ले आवसि किआ ले जावसि राम जपहु गुणकारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊंधउ कवलु मनमुख मति होछी मनि अंधै सिरि धंधा ॥ कालु बिकालु सदा सिरि तेरै बिनु नावै गलि फंधा ॥ २ ॥ डगरी चाल नेत्र फुनि अंधुले सबद सुरति नही भाई ॥ सासत्र बेद त्रै गुण है माइआ अंधुलउ धंधु कमाई ॥ ३ ॥ खोइओ मूलु लाभु कह पावसि दुरमति गिआन विहूणे ॥ सबदु बीचारि राम रसु चाखिआ नानक साचि पतीणे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ भैरउ महला १ ॥ गुर कै संगि रहै दिनु राती रामु रसनि रंगि राता ॥ अवरु न जाणसि सबदु पछाणसि अंतरि जाणि पछाता ॥ १ ॥ सो जनु ऐसा मै मनि भावै ॥ आपु मारि अपरंपरि राता गुर की कार कमावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि पुरखु निरंजनु आदि पुरखु आदेसो ॥ घट घट

सच्चे शब्द के बिना तू कभी भी मुक्त नहीं हो सकेगा और यह तेरा जीवन व्यर्थ बनकर रह जाएगा।। १ ।। रहाउ।। शरीर में काम, क्रोध, अहंकार और मैं मेरी की अत्यन्त भारी पीड़ा बनी हुई है। तू गुरमुख बनकर अपनी जीभ से रसपूर्ण प्रभु के नाम का जाप कर और इस प्रकार संसार सागर से पार उतर जा।। २ ।। तेरे कान बहरे हो गए हैं, बुद्धि भी खराब हो गई है परन्तु तूने शब्द की स्वाभाविकता के रहस्य को नहीं जाना है। मनमुख बनकर तू जीवन रूपी विशेष पदार्थ को हार गया है और तुझ अन्धे बने हुए को गुरु के बिना कुछ भी पता नहीं चल सकता।। ३ ।। स्वाभाविक रूप से ही यदि तू प्रभु में ध्यान लगाकर वैराग्यवान बना रहे और आशाओं, तृष्णाओं के बीच तटस्थ बना रहे तो नानक का कथन है कि गुरमुख बनकर तेरा छुटकारा हो जाएगा और राम नाम में तेरी लौ लगी रहेगी।। ४ ।। २ ।। ३ ।। भैरउ महला १ ।। तेरी चाल भोंड़ी हो गई है, हाथ पांव तेरे ढीले हो गए हैं और तेरे शरीर की त्वचा कुम्हला गई है। आँखों के सामने धुन्ध छा गई हैं, कान बहरे हो गए हैं परन्तु मनमुख बने हुए तुमने प्रभु के नाम को नहीं जाना है।। १ ।। अन्धे अज्ञानी जीव, तूने इस संसार में आकर क्या पाया है। ना तो तेरे हृदय में प्रभु है, ना ही गुरु की सेवा है, तू तो अपना मूलधन भी यहाँ से गंवा कर जा रहा है।। १ ।। रहाउ।। तेरी जीभ भी प्रभु के प्रेम में रंगी हुई नहीं है और जब भी बोलती है फीका बोलती है। शान्त पुरुषों की निंदा ही करते हुए तुम पशु हो गए हो और कभी भी अच्छे नहीं बन सके।। २ ।। अमृत का स्वाद तो किसी बिरले ने ही प्राप्त किया है और सच्चा गुरु ही अपने से मिलाकर उस प्रभु से मिला लेता है। जब तक जीव को शब्द के रहस्य का पता नहीं चलता है तब तक इसे काल सताता रहता है।। ३ ।। जिसने किसी अन्य के द्वार और घर को ना जानते हुए केवल एक प्रभु के ही घर को जाना है वही सचिआर व्यक्ति है और नानक विचार पूर्वक कहता है कि गुरु की कृपा से उसी ने परम पद प्राप्त किया है।। ४ ।। ३ ।। ४ ।। भैरउ महला १ ।। सारी रात तो गले में चिन्ताओं के फंदे डालकर सोता रहा और दिन को इसने साँसारिक जंजालों में ही गँवा दिया है। जिस प्रभु ने इस संसार की रचना की है उसे इसने एक क्षण, एक पल और एक घड़ी के लिए भी नहीं जाना समझा है।। १ ।। हे मन, तेरा यह भारी दुख कैसे समाप्त होगा। तू क्या लेकर यहाँ आता है और यहाँ से क्या लेकर जाता है; गुण प्रदान करने वाले लाभकारी प्रभु के नाम का ही सुमिरन करता रह।। १ ।। रहाउ।। मनमुख बने हुए का तेरा हृदय कमल औंधा पड़ा हुआ है, तेरा मन अन्धा होने के कारण तेरे सिर पर संसार के अनेकों धन्धे लदे हुए हैं और तेरी बुद्धि भी ओछी हो गई है। विकराल काल सदैव तेरे सिर पर बना रहता है और प्रभु-नाम से विहीन होने पर तेरे गले में फन्दा ही पड़ा रहता है।। २ ।। तेरी चाल टेढ़ी-मेढ़ी हो गई है, तेरे नेत्र भी अन्धे हो गए हैं परन्तु तेरी सुरति को शब्द अच्छा नहीं लग सका है। ये शास्त्र, वेद तथा तीनों गुण मायावी हैं और तू अन्धा बनकर साँसारिक धन्धों में लीन बना हुआ है।। ३ ।। हे दुर्मति वाले और ज्ञान से विहीन प्राणी, तूने तो मूलधन ही खो दिया है इसलिए तुझे लाभ कैसे प्राप्त होगा। जिन्होंने शब्द का चिंतन करके प्रभु-नाम के रस को चख लिया है, हे नानक, वे ही सत्य के माध्यम से सन्तुष्ट हो गए हैं।। ४ ।। ४ ।। ५ ।। भैरउ महला १ ।। जो गुरु के साथ दिन रात बना रहता है और जिसकी जीभ प्रभु के रंग में ही लीन बनी रहती है वह अन्य किसी को नहीं जानता। अन्तर्मन में शब्द को पहचान कर उस परमात्मा को अन्दर ही जान लेता है।। १ ।। ऐसा सेवक मेरे मन को अच्छा लगता है जो अपने आपको विकारों के संदर्भ में मारकर उस अपरम्पार प्रभु में लीन बना रहता है और गुरु की सेवा करता रहता है।। १ ।। रहाउ।। वह अन्दर-बाहर उस परमात्मा को जानता हुआ उस आदि पुरुष को प्रणाम करता रहता है और यह भी मानता है कि अपने सत्य स्वरूप में वह प्रभु घट-घट में

अंतरि सरब निरंतरि रवि रहिआ सचु वेसो ॥ २ ॥ साचि रते सचु अंम्रितु जिहवा मिथिआ मैलु न राई ॥ निरमल नामु अंम्रित रसु चाखिआ सबदि रते पति पाई ॥ ३ ॥ गुणी गुणी मिलि लाहा पावसि गुरमुखि नामि वडाई ॥ सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नामु सखाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ भैरउ महला १ ॥ हिरदै नामु सरब धनु धारणु गुर परसादी पाईऐ ॥ अमर पदारथ ते किरतारथ सहज धिआनि लिव लाईऐ ॥ १ ॥ मन रे राम भगति चितु लाईऐ ॥ गुरमुखि राम नामु जपि हिरदै सहज सेती घरि जाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमु भेदु भउ कबहु न छूटसि आवत जात न जानी ॥ बिनु हरि नाम को मुकति न पावसि डूबि मुए बिनु पानी ॥ २ ॥ धंधा करत सगली पति खोवसि भरमु न मिटसि गवारा ॥ बिनु गुर सबद मुकति नही कब ही अंधुले धंधु पसारा ॥ ३ ॥ अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ मन ही ते मनु मूआ ॥ अंतरि बाहरि एको जानिआ नानक अवरु न दूआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ भैरउ महला १ ॥ जगन होम पुंन तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै ॥ राम नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥ १ ॥ राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ॥ बिखु खावै बिखु बोली बोलै बिनु नावै निहफलु मरि भ्रमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै संधिआ करम तिकाल करै ॥ बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु उरझि मरै ॥ २ ॥ डंड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै ॥ राम नाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नामु सु पारि परै ॥ ३ ॥ जटा मुकटु तनि भसम लगाई बसत्र छोडि तनि नगनु भइआ ॥ राम नाम बिनु त्रिपति न आवै किरत कै बांधै भेखु भइआ ॥ ४ ॥ जेते जीअ जंत जलि थलि महीअलि जत्र कत्र तू सरब जीआ ॥ गुर परसादि राखि ले जन कउ हरि रसु नानक झोलि पीआ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ८ ॥

रागु भैरउ महला ३ चउपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥ १ ॥ जाति का गरबु न करि मूरख

सदैव सबमें बसा हुआ है।। २ ।। सत्य में लीन व्यक्ति की जीभ पर सत्य रूपी अमृत ही होता है और उसे जरा सी भी झूठ की मैल नहीं लगी होती। उसने निर्मल प्रभु-नाम के अमृत रस को चख लिया होता है और शब्द में लीन होकर ही वह सम्मान प्राप्त करता है।। ३ ।। गुणवान सिक्ख गुणपूर्ण गुरु से मिलकर लाभ प्राप्त करता है और गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का गुणानुवाद करता है। हे नानक, गुरु की सेवा से उसके सभी दुख मिट जाते हैं और प्रभु का नाम उसका सखा-मित्र बन जाता है।। ४ ।। ५ ।। ६ ।। भैरउ महला १ ।। गुरु की कृपा से ही सब प्रकार के धन को धारण करने वाला प्रभु-नाम हृदय में प्राप्त होता है। जब सहज स्वाभाविक रूप से ध्यान लगाकर अपनी लौ उस प्रभु में लगाई जाती है तो प्रभु-नाम रूपी अमर पदार्थ के माध्यम से जीव कृतार्थ हो जाता है।। १ ।। हे मन, प्रभु की भक्ति में ही ध्यान लगाना चाहिए। गुरमुख बनकर हृदय में प्रभु-नाम का जाप करते हुए सहज भाव से स्वाभाविक रूप में ही अपने मूल घर अर्थात् अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित हुआ जाता है।। १ ।। रहाउ।। हम इस संसार में आते और जाते तो रहे परन्तु इस रहस्य को नहीं जान सके और भ्रम तथा ऊँच-नीच का भेद-भाव तथा भय कभी भी समाप्त नहीं हो सका। प्रभु के नाम के बिना कोई भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता और प्रभु-नाम से विहीन तो बिना पानी के ही डूब मरने वाले लोग होते हैं।। २ ।। साँसारिक धन्धे करते हुए इसका सारा सम्मान समाप्त हो जाता है परन्तु फिर भी इस गँवार का भ्रम मिटता नहीं। शब्द-गुरु के बिना इसकी कभी भी मुक्ति नहीं हो सकती और इसने अन्धा अज्ञानी बनकर साँसारिक धन्धों का मात्र प्रसार ही किया है। जब मन की सहायता से ही मन के विकार नष्ट होते हैं तभी उस कुल रहित निरंजन प्रभु में मन लीन होकर उसके हुकुम को मानता है। हे नानक, अब वह अन्दर-बाहर एक प्रभु को ही जानता है अन्य किसी को भी नहीं पहचानता।। ४ ।। ६ ।। ७ ।। भैरउ महला १ ।। यज्ञ, होम, पुण्य, तपस्या, पूजा आदि में लगी यह देही अनेकों दुख सहती रहती है। राम नाम के बिना यह मुक्ति नहीं प्राप्त करती क्योंकि मुक्ति प्रदायक नाम तो गुरमुख बनकर ही प्राप्त किया जाता है।। १ ।। संसार में लिए हुए जन्म प्रभु-नाम के बिना व्यर्थ ही होते हैं। व्यक्ति यहाँ विष खाता है, विष पूर्ण बोली बोलता है और प्रभु-नाम से विहीन बनकर व्यर्थ ही मरकर भटकता रहता है।। १ ।। रहाउ।। पुस्तकों का पठन करके यह व्याकरण आदि का बखान करता रहता है और तीनों समय संध्या आदि के कर्म करता रहता है परन्तु हे प्राणी, शब्द-गुरु के बिना मुक्ति कैसे प्राप्त होगी; प्रभु-नाम से विहीन बना रहकर तू अनेकों धन्धों में उलझा हुआ मरता ही रहता है।। २ ।। डंडा, कमण्डल, शिखा (चोटी), जनेउ, धोती, तीर्थ, भ्रमण आदि तू बार बार करता रहता है। उस प्रभु-नाम के बिना शान्ति नहीं प्राप्त होती इसलिए तू प्रभु-नाम का जाप कर ताकि तू पार उतर सके।। ३ ।। जटाओं को मुकुट बनाकर तूने शरीर में भस्म लगाई है और वस्त्रों को त्याग कर तू नंगा हो गया है परन्तु यह तो तेरे कर्मकाण्डों के संस्कार हैं जिनके अधीन तूने यह वेश धारण कर रखे हैं; वास्तविक सन्तुष्टि तो राम नाम के बिना नहीं प्राप्त हो सकती।। ४ ।। जल, स्थल और अन्तरिक्ष में जितने भी जीव हैं और वे जहाँ कही भी हैं उन सभी जीवों में तू ही विद्यमान है। गुरु की कृपा से अपने सेवक को बचा ले; नानक ने तो प्रभु रूपी रस को हिला-हिलाकर पूर्ण प्रेम से पी लिया है।। ५ ।। ७ ।। ८ ।।

रागु भैरउ महला ३ चौपदे घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। कोई भी अपनी जाति का गर्व ना करे क्योंकि ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म को जानता है।। १ ।। हे गंवार और मूर्ख व्यक्ति, तू जाति का अभिमान मत कर

गवारा ॥ इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारे वरन आखै सभु कोई ॥ ब्रहमु बिंद ते सभ ओपति होई ॥ २ ॥ माटी एक सगल संसारा ॥ बहु बिधि भांडे घड़े कुम्हारा ॥ ३ ॥ पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥ घटि वधि को करै बीचारा ॥ ४ ॥ कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ ५ ॥ १ ॥ भैरउ महला ३ ॥ जोगी ग्रिही पंडित भेखधारी ॥ ए सूते अपणै अहंकारी ॥ १ ॥ माइआ मदि माता रहिआ सोइ ॥ जागतु रहै न मूसै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो जागै जिसु सतिगुरु मिलै ॥ पंच दूत ओहु वसगति करै ॥ २ ॥ सो जागै जो ततु बीचारै ॥ आपि मरै अवरा नह मारै ॥ ३ ॥ सो जागै जो एको जाणै ॥ परकिरति छोडै ततु पछाणै ॥ ४ ॥ चहु वरना विचि जागै कोइ ॥ जमै कालै ते छूटै सोइ ॥ ५ ॥ कहत नानक जनु जागै सोइ ॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री होइ ॥ ६ ॥ २ ॥ भैरउ महला ३ ॥ जा कउ राखै अपणी सरणाई ॥ साचे लागै साचा फलु पाई ॥ १ ॥ रे जन कै सिउ करहु पुकारा ॥ हुकमे होआ हुकमे वरतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एहु आकारु तेरा है धारा ॥ खिन महि बिनसै करत न लागै बारा ॥ २ ॥ करि प्रसादु इकु खेलु दिखाइआ ॥ गुर किरपा ते परम पदु पाइआ ॥ ३ ॥ कहत नानकु मारि जीवाले सोइ ॥ ऐसा बूझहु भरमि न भूलहु कोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥ जेहा कराए तेहा करी सीगारु ॥ १ ॥ जां तिसु भावै तां करे भोगु ॥ तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उसतति निंदा करे किआ कोई ॥ जां आपे वरतै एको सोई ॥ २ ॥ गुर परसादी पिरम कसाई ॥ मिलउगी दइआल पंच सबद वजाई ॥ ३ ॥ भनति नानकु करे किआ कोइ ॥ जिस नो आपि मिलावै सोइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ भैरउ महला ३ ॥ सो मुनि जि मन की दुबिधा मारे ॥ दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे ॥ १ ॥ इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ मनु खोजत नामु नउ निधि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइआ ॥ ममता लाइ भरमि भोलाइआ ॥ २ ॥ इसु मन ते सभ पिंड पराणा ॥ मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा ॥ ३ ॥

क्योंकि इस अभिमान के फलस्वरूप अनेकों विकार उत्पन्न होते हैं।। १ ।। रहाउ।। सब लोग चार वर्णों की बात किया करते हैं परन्तु वास्तव में सारी सृष्टि की उत्पत्ति एक ब्रह्म के बिन्दु से ही होती है।। २ ।। सारे संसार के लिए एक जैसी ही मिट्टी होती है जिससे कुम्हार रूपी प्रभु अनेकों प्रकार के जीव रूपी बर्तनों की रचना करता है।। ३ ।। पाँचों तत्व मिलकर देही का आकार बनता है और कौन कह सकता है कि किसी में कोई तत्व कम या अधिक है।। ४ ।। नानक का कथन है कि जीव कर्मों का बंधा हुआ है और सच्चे गुरु से मिलाप के बिना उसकी मुक्ति नहीं होती।। ५ ।। १ ।। भैरउ महला ३ ।। योगी, गृहस्थी, पंडित और अनेकों वेश धारण करने वाले लोग अपने अहंकार के कारण अज्ञान की नींद में सोए हुए हैं। माया के अभिमान में लीन व्यक्ति तो सोता रहता है परन्तु ज्ञानवान बनकर जो जागता है उसे कोई भी लूट नहीं सकता।। १ ।। रहाउ।। जागता वही है जिसे सच्चा गुरु मिल जाता है; वही पाँचों दूतों को वश में कर लेता है।। २ ।। जो तत्व का चिंतन करने वाला है वही जागता रहता है; वह अन्यों को मारने की अपेक्षा विकारों के प्रति स्वयं मरा रहता है।। ३ ।। जो केवल एक प्रभु को ही जानता है वही जागता रहता है। वह व्यर्थ की बेगार को छोड़ता है और सार तत्व को पहचान जाता है।। ४ ।। चारों वर्णों में से जो कोई भी सावधान बना रहता है वही यम काल से छूटकर मुक्त हो जाता है।। ५ ।। नानक का कथन है कि वही सेवक जागृत अवस्था में बना रहता है जिसकी आँखों में ज्ञान का अंजन पड़ा होता है।। ६ ।। २ ।। भैरउ महला ३ ।। जिसको वह प्रभु अपनी शरण में रखता है वही सत्य में लीन रहता है और सच्चा फल प्राप्त करता है।। १ ।। हे जीव, तू किसको पुकार रहा है क्योंकि सब कुछ हुकुम में ही उत्पन्न हुआ है और हुकुम में ही कार्यशील है।। १ ।। रहाउ।। संसार के सभी आकारों को तूने ही धारण कर रखा है जो क्षण भर में ही विनष्ट हो जाते हैं और उन्हें पैदा करते समय तुझे जरा भी देर नहीं लगती।। २ ।। प्रभु ने कृपा करके एक ऐसा खेल दिखा दिया है कि गुरु की कृपा से हमने परमपद को प्राप्त कर लिया है।। ३ ।। नानक कहता है कि वह प्रभु ही मारने और जीवित करने वाला है; उसे इस प्रकार का ही समझो और भ्रमों में पड़कर उसे कोई भी मत भूलो।। ४ ।। ३ ।। भैरउ महला ३ ।। मैं ऐसी जीव स्त्री हूँ कि मेरा पति वह कर्ता प्रभु है। वह जैसा कराता है मैं वैसा ही शृंगार करती हूँ।। १ ।। जब उसे अच्छा लगता है वह तभी हमसे रमण करता है ; हमारा तन मन तो उस सच्चे सहिब के प्रति समर्पित है।। १ ।। रहाउ।। जब वह एक प्रभु ही सबमें कार्यशील है तो भला कोई भी उसकी स्तुति अथवा निंदा क्यों और कैसे करे।। २ ।। गुरु की कृपा से अपने प्रियतम की तरफ खिंची हुई मैं पूर्ण आनन्द के वाद्य बजाकर उस दयालु प्रभु को मिलूंगी।। ३ ।। नानक कहता है कि जिसको प्रभु स्वयं अपने से मिला लेता है उसके लिए अन्य कोई क्या कर सकता है।। ४ ।। ४ ।। भैरउ महला ३ ।। वास्तविक मुनि वही है जो मन की दुविधा को मार देता है और दुविधा को मारकर ब्रह्म का चिंतन करता है।। १ ।। हे भाई, इस मन को खोज लो। मन को खोजते हुए ही नाम रूपी नौ निधियाँ प्राप्त होंगी।। १ ।। रहाउ।। मोह को मूल रूप से इस संसार में स्थित करके उस कर्ता प्रभु ने इस जगत की उत्पत्ति की है तथा मैं मेरी के भाव में इसे लगाकर इसे भ्रम में भटका दिया है।। २ ।। इस मन के संस्कारों से ही सभी शरीर और प्राण बनते हैं अर्थात मन ही शरीर और प्राण का कारण है। मन के चिंतन के फलस्वरूप ही प्रभु के हुकुम को बूझकर उसमें लीन हुआ जाता है।। ३ ।।

करमु होवै गुरु किरपा करै ॥ इहु मनु जागै इसु मन की दुविधा मरै ॥ ४ ॥
मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥ सभ महि वसै अतीतु अनरागी ॥ ५ ॥ कहत नानकु
जो जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरंजन देउ ॥ ६ ॥ ५ ॥ भैरउ महला ३ ॥ राम
नामु जगत निसतारा ॥ भवजलु पारि उतारणहारा ॥ १ ॥ गुर परसादी हरि नामु
सम्हालि ॥ सद ही निबहै तेरै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु न चेतहि मनमुख गावारा ॥
बिनु नावै कैसे पावहि पारा ॥ २ ॥ आपे दाति करे दातारु ॥ देवणहारे कउ
जैकारु ॥ ३ ॥ नदरि करे सतिगुरू मिलाए ॥ नानक हिरदै नामु वसाए ॥ ४ ॥ ६ ॥
भैरउ महला ३ ॥ नामे उधरे सभि जितने लोअ ॥ गुरमुखि जिना परापति
होइ ॥ १ ॥ हरि जीउ अपणी क्रिपा करेइ ॥ गुरमुखि नामु वडिआई देइ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ राम नामि जिन प्रीति पिआरु ॥ आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु ॥ २ ॥
बिनु नावै मनमुख जम पुरि जाहि ॥ अउखे होवहि चोटा खाहि ॥ ३ ॥ आपे
करता देवै सोइ ॥ नानक नामु परापति होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ भैरउ महला ३ ॥
गोविंद प्रीति सनकादिक उधारे ॥ राम नाम सबदि बीचारे ॥ १ ॥ हरि जीउ अपणी
किरपा धारु ॥ गुरमुखि नामे लगै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि प्रीति भगति
साची होइ ॥ पूरै गुरि मेलावा होइ ॥ २ ॥ निज घरि वसै सहजि सुभाइ ॥
गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ आपे वेखै वेखणहारु ॥ नानक नामु
रखहु उर धारि ॥ ४ ॥ ८ ॥ भैरउ महला ३ ॥ कलजुग महि राम नामु
उर धारु ॥ बिनु नावै माथै पावै छारु ॥ १ ॥ राम नामु दुलभु है
भाई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु जन भालहि
सोइ ॥ पूरे गुर ते प्रापति होइ ॥ २ ॥ हरि का भाणा मंनहि से जन
परवाणु ॥ गुर कै सबदि नाम नीसाणु ॥ ३ ॥ सो सेवहु जो कल रहिआ
धारि ॥ नानक गुरमुखि नामु पिआरि ॥ ४ ॥ ९ ॥ भैरउ महला ३ ॥
कलजुग महि बहु करम कमाहि ॥ ना रुति न करम थाइ पाहि ॥ १ ॥
कलजुग महि राम नामु है सारु ॥ गुरमुखि साचा लगै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ॥ गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ ॥ २ ॥

जब प्रभु का अनुग्रह हो जाए तो गुरु कृपा करता है तथा यह मन सावधान हो जाता है और इस मन की दुविधा मर जाती है।। ४ ।। मन का वास्तविक स्वभाव तो वैराग्यवान (प्रेम पूर्ण) बने रहना ही है। मूल रूप से वह यही मानता है कि सबमें वह अतीत और मोह से रहित प्रभु बसता है।। ५ ।। नानक कहता है कि जो इस रहस्य को जानता है वही आदि पुरुष, निरंजन प्रभु का रूप है।। ६ ।। ५ ।। भैरउ महला ३ ।। राम नाम ही संसार का उद्धार करने वाला है और यही संसार सागर से पार उतारने वाला है।। १ ।। गुरु की कृपा से हे जीव, तू प्रभु-नाम को याद रख क्योंकि यही सदैव तेरे साथ निभेगा।। १ ।। रहाउ।। हे मनमुख और गँवार प्राणी, तू प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता और प्रभु-नाम के बिना तू कैसे पार उतर जाएगा।। २ ।। वह दाता स्वयं ही दान देता है और देने वाले उस प्रभु की जय जयकार है।। ३ ।। वह कृपा दृष्टि करके सच्चे गुरु से मिला देता है और हे नानक, हृदय में नाम को बसा देता है।। ४ ।। ६ ।। भैरउ महला ३ ।। जितने भी लोक हैं उनका उद्धार प्रभु-नाम के माध्यम से ही हुआ है और जिन्हें यह नाम प्राप्त होता है वे ही गुरमुख हैं।। १ ।। प्रभु जब अपनी कृपा करता है तो गुरमुख बने व्यक्ति को प्रभु-नाम की शोभा प्रदान करता है।। १ ।। रहाउ।। जिनकी प्रीति और प्यार राम नाम के साथ है वे स्वयं तो पार उतर ही जाते हैं साथ ही साथ वे सारे कुल का उद्धार करने वाले भी हो जाते हैं।। २ ।। नाम से विहीन मनमुख यमपुरी में जाता है और वहाँ चोटें खाकर दुखी होता रहता है।। ३ ।। यह कर्ता प्रभु जिन्हें स्वयं ही देता है हे नानक, उन्हीं को प्रभु-नाम प्राप्त होता है।। ४ ।। ७ ।। भैरउ महला ३ ।। प्रभु की प्रीति से ही सनक सनन्दन आदि का उद्धार हुआ है। शब्द के माध्यम से ही प्रभु-नाम का चिंतन होता है।। १ ।। हे प्रभु, अपनी कृपा धारण करो ताकि गुरमुख बनकर हमारा प्रभु-नाम में प्रेम लगा रहे।। १ ।। रहाउ।। अन्तर्मन की प्रीति से ही सच्ची भक्ति होती है और पूर्ण गुरु के माध्यम से ही मिलाप होता है।। २ ।। जीव सहज स्वाभाविक रूप से ही अपने वास्तविक घर में आ बसता है और गुरमुख बने हुए इसके मन में प्रभु-नाम बस जाता है।। ३ ।। वह देखने सम्भालने वाला प्रभु स्वयं ही देखता है और हे नानक, प्रभु-नाम को हृदय में धारण किए रहो।। ४ ।। ८ ।। भैरउ महला ३ ।। कलियुग में प्रभु-नाम ही हृदय का आसरा है और प्रभु-नाम के बिना माथे पर राख ही पड़ती है।। १ ।। हे भाई, राम नाम दुर्लभ पदार्थ है जो गुरु की कृपा से मन में आ बसता है।। १ ।। रहाउ।। उस राम नाम को प्रभु का सेवक खोजता हे तथा वह पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है।। २ ।। प्रभु का उपदेश जो मान लेते हैं वे सेवक स्वीकृत हो जाते है और शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु-नाम का चिन्ह उन पर अंकित हो जाता है अर्थात् वे प्रभु-नाम में लीन दिखाई पड़ते हैं।। ३ ।। उस प्रभु का सुमिरन करो जिसने सभी शक्तियों को धारण कर रखा है। हे नानक, गुरमुख व्यक्ति को ही प्रभु-नाम से प्यार होता है।। ४ ।। ६ ।। भैरउ महला ३ ।। कलयुग में जो अनेकों कर्मकाण्ड करते हैं उनके लिए ना तो यहाँ समय अच्छा है और ना ही उनके कर्मकाण्ड किसी गिनती में आते हैं।। १ ।। कलियुग में प्रभु-नाम ही सर्वश्रेष्ट है और गुरमुख बनकर ही सत्य के साथ सच्चा घाट लगता है।। १ ।। रहाउ।। तन मन को खोजते हुए अन्त में उसे अपने घर में ही प्राप्त किया जाता है और गुरमुख व्यक्ति राम नाम में ही चित्त लगाए रहता है।। २ ।।

गिआन अंजनु सतिगुर ते होइ ॥ राम नामु रवि रहिआ तिहु लोइ ॥ ३ ॥ कलिजुग महि हरि जीउ एकु होर रुति न काई ॥ नानक गुरमुखि हिरदै राम नामु लेहु जमाई ॥ ४ ॥ १० ॥

भैरउ महला ३ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा मनमुख रोगि विआपे त्रिसना जलहि अधिकाई ॥ मरि मरि जंमहि ठउर न पावहि बिरथा जनमु गवाई ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम करि किरपा देहु बुझाई ॥ हउमै रोगी जगतु उपाइआ बिनु सबदै रोगु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंम्रिति सासत्र पड़हि मुनि केते बिनु सबदै सुरति न पाई ॥ त्रै गुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई ॥ २ ॥ इकि आपे काढि लए प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाए ॥ हरि का नामु निधानो पाइआ सुखु वसिआ मनि आए ॥ ३ ॥ चउथी पदवी गुरमुखि वरतहि तिन निज घरि वासा पाइआ ॥ पूरै सतिगुरि किरपा कीनी विचहु आपु गवाइआ ॥ ४ ॥ एकसु की सिरि कार एक जिनि ब्रहमा बिसनु रुद्रु उपाइआ ॥ नानक निहचलु साचा एको ना ओहु मरै न जाइआ ॥ ५ ॥ १ ॥ ११ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा ॥ गुरमुखि बूझहि रोगु गवावहि गुर सबदी वीचारा ॥ १ ॥ हरि जीउ सतसंगति मेलाइ ॥ नानक तिस नो देइ वडिआई जो राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ममता कालि सभि रोगि विआपे तिन जम की है सिरि कारा ॥ गुरमुखि प्राणी जमु नेड़ि न आवै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥ २ ॥ जिन हरि का नामु न गुरमुखि जाता से जग महि काहे आइआ ॥ गुर की सेवा कदे न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ नानक से पूरे वडभागी सतिगुर सेवा लाए ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि गुरबाणी सुखु पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ १२ ॥ भैरउ महला ३ ॥ दुख विचि जंमै दुखि मरै दुख विचि कार कमाइ ॥ गरभ जोनी विचि कदे न निकलै बिसटा माहि समाइ ॥ १ ॥ ध्रिगु ध्रिगु मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का सबदु सभि रोग गवाए जिस नो हरि जीउ

ज्ञान रूपी अंजन (सुरमां) सच्चे गुरु से ही मिलता हे और उसी से पता लगता है कि तीनों लोकों में राम नाम ही व्याप्त है।। ३ ।। हे प्रभु, कलयुग में केवल एक प्रभु-नाम ही है तथा अन्य कोई भी समय यहाँ अच्छा नहीं है हे नानक, तू गुरमुख बनकर हृदय में राम नाम को स्थित कर ले।। ४ ।। १० ।।

भैरउ महला ३ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मनमुख व्यक्ति को दूविधा का रोग लगा रहता है और तृष्णा में वह बुरी तरह जलता रहता है। वह मर मरकर जन्म लेता रहता है, वह कोई भी ठिकाना नहीं पाता और व्यर्थ में ही अपना जीवन गंवा देता है।। १ ।। हे मेरे प्रियतम, कृपा करके हमें समझा दे। अहंकार का रोगी सारा संसार पैदा किया गया है और शब्द के बिना यह रोग समाप्त नहीं होगा।। १ ।। रहाउ।। मुनियों ने कितने ही स्मृतियाँ और शास्त्र पढ़े परन्तु शब्द ब्रह्म के बिना किसी को भी प्रभु में लीन होने की सुरति प्राप्त नहीं हुई। इन ग्रन्थों में वर्णित तीनों गुणों का रोग सबको लग गया है और मैं मेरी में ही लोगों ने अपनी ऊँची चेतना को गंवा दिया है।। २ ।। कईयों को प्रभु ने स्वयं ही इन रोगों से बाहर निकाल लिया है और गुरु की सेवा में उन्हें लगा दिया है। उन्होंने प्रभु के नाम का भण्डार पा लिया है और उनके मन में सुख बस गया है।। ३ ।। गुरमुख तीनों गुणों से ऊपर चौथे पद में सहज अवस्था में विचरण करते हैं और उन्होंने अपने मूल घर अर्थात प्रभु के पास निवास प्राप्त कर लिया है। पूर्ण सच्चे गुरु ने उन पर कृपा की है और उनके हृदय का अभिमान दूर कर दिया है।। ४ ।। एक प्रभु की ही कृपा जीव के सिर पर है और ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आदि को उस प्रभु ने ही पैदा किया है। हे नानक, वह सच्चा एक प्रभु ही अटल है; ना वह मरता है और ना ही उसको कोई पैदा करता है।। ५ ।। १ ।। ११ ।। भैरउ महला ३ ।। मनमुख दुविधा में पड़ा सदैव रोगी बना रहता है और इस प्रकार यह संसार ही रोगी है। गुरमुख इस रहस्य को बूझकर शब्द-गुरु के चिंतन के माध्यम से रोग को दूर कर लेता है।। १ ।। हे प्रभु, हमें सत्संगति से मिला दे क्योंकि हे नानक, प्रभु उसी को बड़प्पन प्रदान करता है जो राम नाम में अपने चित्त को लगाए रहता है।। १ ।। रहाउ।। मैं मेरी अर्थात कालिमा युक्त ममता का रोग सभी को लगा हुआ है और ऐसे व्यक्ति के सिर पर यम को लकीर सदैव खिंची ही रहती है। गुरमुख व्यक्ति के पास तो यम आता ही नहीं क्योंकि उसने हृदय में प्रभु को धारण करके रखा होता है।। २ ।। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु-नाम को नहीं जाना वे भला संसार में क्यों आए हैं। उन्होंने गुरु की सेवा कभी नहीं की तथा अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है।। ३ ।। हे नानक, वही पूर्ण भाग्यशाली है जो सच्चे गुरु की सेवा में लगे हुए है। गुरु की वाणी के माध्यम से वे सुख प्राप्त करते हैं और मनोवांछित फल पाते रहते हैं।। ४ ।। २ ।। १२ ।। भैरउ महला ३ ।। जीव दुख में ही जन्म लेता है, दुख में ही मरता है और दुखों में पड़ा हुआ ही काम धन्धा करता रहता है। वह गर्भ योनि में से कभी भी छुटकारा प्राप्त नहीं करता और अंततः गन्दगी में ही मर खप जाता है।। १ ।। ऐसे मनमुख व्यक्ति को धिक्कार है जिसने अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है। उसने पूर्ण गुरु की सेवा भी नहीं की और उसे प्रभु का नाम भी अच्छा नहीं लगा है।। १ ।। रहाउ।। जिसे प्रभु स्वयं शब्द-गुरु में लीन कर लेता है उसके सभी रोग समाप्त हो जाते हैं

लाए ॥ नामे नामि मिलै वडिआई जिस नो मंनि वसाए ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटै ता फलु पाए सचु करणी सुख सारु ॥ से जन निरमल जो हरि लागे हरि नामे धरहि पिआरु ॥ ३ ॥ तिन की रेणु मिलै तां मसतकि लाई जिन सतिगुरु पूरा धिआइआ ॥ नानक तिन की रेणु पूरै भागि पाईऐ जिनी राम नामि चितु लाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३ ॥ भैरउ महला ३ ॥ सबदु बीचारे सो जनु साचा जिन कै हिरदै साचा सोई ॥ साची भगति करहि दिनु राती तां तनि दुखु न होई ॥ १ ॥ भगतु भगतु कहै सभु कोई ॥ बिनु सतिगुर सेवे भगति न पाईऐ पूरै भागि मिलै प्रभु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख मूलु गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई ॥ जमकालु सदा है सिर ऊपरि दूजै भाइ पति खोई ॥ २ ॥ बहले भेख भवहि दिनु राती हउमै रोगु न जाई ॥ पड़ि पड़ि लूझहि बादु वखाणहि मिलि माइआ सुरति गवाई ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवहि परम गति पावहि नामि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु जिना मनि वसिआ दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ १४ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मनमुख आसा नही उतरै दूजै भाइ खुआए ॥ उदरु नै साणु न भरीऐ कबहू त्रिसना अगनि पचाए ॥ १ ॥ सदा अनंदु राम रसि राते ॥ हिरदै नामु दुबिधा मनि भागी हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपताते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे पारब्रहमु स्रिसटि जिनि साजी सिरि सिरि धंधै लाए ॥ माइआ मोहु कीआ जिनि आपे आपे दूजै लाए ॥ २ ॥ तिस नो किहु कहीऐ जे दूजा होवै सभि तुधै माहि समाए ॥ गुरमुखि गिआनु ततु बीचारा जोती जोति मिलाए ॥ ३ ॥ सो प्रभु साचा सद ही साचा साचा सभु आकारा ॥ नानक सतिगुरि सोझी पाई सचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ ५ ॥ १५ ॥ भैरउ महला ३ ॥ कलि महि प्रेत जिन्ही रामु न पछाता सतजुगि परम हंस बीचारी ॥ दुआपुरि त्रेतै माणस वरतहि विरलै हउमै मारी ॥ १ ॥ कलि महि राम नामि वडिआई ॥ जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै मुकति न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि मंनि वसाई ॥ आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई ॥ २ ॥ मेरा प्रभु है गुण का

जिसके मन में प्रभु अपना नाम बसा देता है उसे नाम के माध्यम से ही बड़प्पन प्राप्त हो जाता है।। २ ।। यदि सच्चा गुरु मिल जाए तभी फल प्राप्त होता है और यह पता लग जाता है कि सत्य ही वास्तविक कर्म है और यही सारे सुखों का सार तत्व है। जो प्रभु के साथ लग गए हैं वे ही सेवक निर्मल होते हैं और वे ही प्रभु-नाम के साथ प्रेम बनाए रखते हैं।। ३ ।। जिन्होंने पूर्ण सच्चे गुरु का सुमिरन किया है उनकी चरणधूलि मिले तो मैं उसे माथे पर लगाऊं। हे नानक, जिन्होंने राम नाम में चित्त लगाया है उनकी चरणधूलि पूर्ण भाग्य से ही प्राप्त होती है।। ४ ।। ३ ।। १३ ।। भैरउ महला ३ ।। जिसके हृदय में सच्चा प्रभु है वही शब्द का चिंतन करता है और वही सच्चा सेवक है। वह दिन रात सच्ची भक्ति में लीन बना रहता है और तभी उसके तन को कोई भी दुख नहीं होता।। १ ।। भक्त तो सबको कहा जाता है परन्तु सच्चे गुरु की सेवा के बिना भक्ति नहीं मिलती और वह प्रभु भी पूर्ण भाग्यशाली होने से मिलता है।। १ ।। रहाउ।। मनमुख व्यक्ति तो अपना मूलधन भी गंवा देता है और लाभ की कामना करता है; उसे भला लाभ कैसे प्राप्त होगा। उसके सिर पर सदैव यम क़ाल मंडराता रहता है और द्वैतभाव में पड़कर वह अपने सम्मान को खोता रहता है।। २ ।। अनेकों वेशों में वह दिन रात भटकता रहता है परन्तु उसके अहंकार का रोग नष्ट नही होता। वह पढ़-पढ़कर झगड़ता रहता है, विवाद करता है और माया से मिलकर उसने अपनी ऊँची चेतना भी नष्ट कर ली है।। ३ ।। वह सच्चे गुरु की सेवा करने से परम गति को प्राप्त करता है और प्रभु-नाम के माध्यम से उसे बड़प्पन प्राप्त होता है। हे नानक, जिनके हृदय में प्रभु-नाम बस गया है वे ही उस सच्चे प्रभु के द्वार पर सम्मान प्राप्त करते हैं।। ४ ।। ४ ।। १४ ।। भैरउ महला ३ ।। मनमुख व्यक्ति की आशाएं समाप्त नहीं होती। वह द्वैतभाव में भटकता रहता है। उसका पेट नदी की तरह कभी भरता ही नहीं और वह तृष्णा रूपी अग्नि में मर खप जाता है।। १ ।। प्रभु-नाम के रस में जो लीन हैं वे सदैव आनन्दित बने रहते हैं। उनके हृदय में प्रभु-नाम होने से उनके मन की दुविधा भाग गई होती है और वह प्रभु-नाम का अमृतपान करके तृप्त बने रहते हैं।। १ ।। रहाउ।। वह परब्रह्म प्रभु ही है जिसने स्वयं सृष्टि की रचना की है और सबको अपने अपने काम में लगाया है। उसने ही माया मोह पैदा किए हैं और स्वयं ही जीवों को द्वैतभाव में लगाया है।। २ ।। यदि वह कोई अन्य हो तो उसे कहा जाए; हे प्रभु, सब तुझमें ही लीन हैं। गुरमुख व्यक्ति ने ज्ञान तत्व का चिंतन किया है और उसकी ज्योति को उसने अपनी ज्योति में मिला लिया है।। ३ ।। वह प्रभु सदैव सत्य स्वरूप है और उसके बनाए सभी आकार भी सच्चे हैं। हे नानक, जब सच्चे गुरु ने यह रहस्य समझा दिया तो सच्चे नाम के माध्यम से जीव का पार उतारा हो जाता है।। ४ ।। ५ ।। १५ ।। भैरउ महला ३ ।। जिन्होंने प्रभु-नाम को नहीं पहचाना, वे इस कलियुग में प्रेतों के समान हैं और तत्व चिन्तक सतयुग के परमहंस है। अहंकार को मारने वाले बिरले ही लोग हैं और वे द्वापर तथा त्रेता युग के मनुष्य हैं।। १ ।। कलियुग में राम नाम के माध्यम से ही शोभा प्राप्त होती है। गुरमुख व्यक्ति ने तो युगों-युगों में उस एक प्रभु को ही जानते हुए यह भी जान लिया है कि प्रभु-नाम के बिना मुक्ति नहीं मिलती।। १ ।। रहाउ।। गुरमुख व्यक्ति मन में प्रभु-नाम बसाता है। वही सच्चा सेवक हृदय में प्रभु-नाम के दर्शन करता है। जिसने राम नाम में लौ लगा ली है वह स्वयं पार उतरता है और सारे कुल को भी पार उतार लेता है।। २ ।। गुणों का दाता मेरा प्रभु

दाता अवगण सबदि जलाए ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहे हिरदै नामु वसाए ॥ ३ ॥ घरु दरु महलु सतिगुरू दिखाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ जो किछु कहे सु भला करि मानै नानक नामु वखाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मनसा मनहि समाइ लै गुर सबदी वीचार ॥ गुर पूरे ते सोझी पवै फिरि मरै न वारो वार ॥ १ ॥ मन मेरे राम नामु आधारु ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सभ इछ पुजावणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ महि एको रवि रहिआ गुर बिनु बूझ न पाइ ॥ गुरमुखि प्रगटु होआ मेरा हरि प्रभु अनदिनु हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ सुखदाता हरि एकु है होर थै सुखु न पाहि ॥ सतिगुरु जिनी न सेविआ दाता से अंति गए पछुताहि ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ फिरि दुखु न लागै धाइ ॥ नानक हरि भगति परापति होई जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १७ ॥ भैरउ महला ३ ॥ बाझु गुरू जगतु बउराना भूला चोटा खाई ॥ मरि मरि जंमै सदा दुखु पाए दर की खबरि न पाई ॥ १ ॥ मेरे मन सदा रहहु सतिगुर की सरणा ॥ हिरदै हरि नामु मीठा सद लागा गुर सबदे भवजलु तरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भेख करै बहुतु चितु डोलै अंतरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ अंतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दर बारु ॥ २ ॥ गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन कउ मुकति दुआरि ॥ अंतरि सांति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उर धारि ॥ ३ ॥ जिउ तिसु भावै तिवै चलावै करणा किछू न जाई ॥ नानक गुरमुखि सबदु सम्हाले राम नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ८ ॥ १८ ॥ भैरउ महला ३ ॥ हउमै माइआ मोहि खुआइआ दुखु खटे दुख खाइ ॥ अंतरि लोभ हलकु दुखु भारी बिनु बिबेक भरमाइ ॥ १ ॥ मनमुखि ध्रिगु जीवणु सैसारि ॥ राम नामु सुपनै नही चेतिआ हरि सिउ कदे न लागै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पसूआ करम करै नही बूझै कूड़ु कमावै कूड़ो होइ ॥ सतिगुरु मिलै त उलटी होवै खोजि लहै जनु कोइ ॥ २ ॥ हरि हरि नामु रिदै सद वसिआ पाइआ गुणी निधानु ॥ गुर परसादी पूरा पाइआ चूका मन अभिमानु ॥ ३ ॥ आपे करता करे कराए आपे मारगि पाए ॥

शब्द के माध्यम से अवगुणों को जला देता है। जिनके मन में प्रभु बस गया है वे सेवक ही शोभायमान बनते हैं और प्रभु उनके हृदय में ही अपना नाम स्थित करता है।। ३ ।। सच्चे गुरु ने ही उस प्रभु का घर और द्वार दिखाया है और अब यह जीव स्त्री प्रेम में लीन होकर आनन्द का भोग करती है। हे नानक, अब वह प्रभु-नाम का बखान करती है और जो प्रभु पति कहता है उसी को वह भला मानती है।। ४ ।। ६ ।। १६ ।। भैरउ महला ३ ।। शब्द-गुरु का चिंतन मन की इच्छाओं को मन के अन्दर ही समाप्त कर देता है। जीव को अब पूर्ण गुरु से सूझ बुद्धि प्राप्त हो जाती है और फिर वह बार बार नहीं मरता।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु-नाम को ही अपना आसरा बना। गुरु की कृपा से ही परम पद पाया जाता है और प्रभु का नाम ही सब इच्छाओं को पूरा करने वाला है।। १ ।। रहाउ।। गुरु के बिना यह समझ नहीं पड़ती कि वह एक ही प्रभु सबमें रमण कर रहा है। गुरमुख बनकर और प्रतिदिन प्रभु का गुणानुवाद करने से वह मेरा प्रभु हृदय में प्रकट हुआ है।। २ ।। वह एक ही प्रभु सुख दाता है तथा अन्य किसी से भी सुख प्राप्त नहीं होता। जिन्होंने उस दाता सच्चे गुरु का सुमिरन नहीं किया वे अंतिम समय में पछताते हुए यहाँ से जाते हैं।। ३ ।। सच्चे गुरु का सुमिरन करने से सदैव सुख पाया जाता है और फिर दुख आकर नहीं लगता। हे नानक, जब प्रभु की भक्ति प्राप्त हो जाती है तो जीव की ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो जाती है।। ४ ।। ७ ।। १७ ।। भैरउ महला ३ ।। गुरु से विहीन यह संसार पागल बना है और भटकता हुआ चोटें खाता रहता है। मर मरकर जन्म लेता हुआ यह सदैव दुख पाता रहता है और प्रभु के द्वार की इसे खबर तक नहीं मिलती।। १ ।। हे मेरे मन, तू सदैव सच्चे गुरु की शरण में रह। जब हृदय में सदैव प्रभु-नाम मीठा लगता है तो शब्द-गुरु के माध्यम से संसार सागर को पार कर लिया जाता है।। १ ।। रहाउ।। व्यक्ति वेश तो अनेकों बना लेता है परन्तु इसके अन्तर्मन में काम, क्रोध, अहंकार बना रहने से इसका चित्त शान्त नहीं होता। तृष्णा और भूख इसके अन्तर्मन में बहुत बनी रहती है और इसीलिए यह घर घर के दरवाज़े पर चीखता चिल्लाता रहता है।। २ ।। शब्द-गुरु में लीन होकर जो विकारों के प्रति मर जाता है वही पुनः आध्यात्मिक तौर से जीवित हो उठता है और ऐसे लोगों को ही मुक्ति का द्वार प्राप्त होता है। इनके अन्तर्मन में शान्ति और सदैव सुख बना रहता है क्योंकि इन्होंने प्रभु को अपने हृदय में धारण किया होता है।। ३ ।। उसे जैसे अच्छा लगता है वह वैसे ही हमें चलाता है और हमसे तो कुछ भी नहीं किया जा सकता। हे नानक, गुरमुख बनकर शब्द को हृदय में सम्भाले रखने से ही प्रभु-नाम ही शोभा प्राप्त होती है।। ४ ।। ८ ।। १८ ।। भैरउ महला ३ ।। अहंकार और माया मोह में भटका व्यक्ति दुख ही कमाता है और दुख ही खाता है। उसके अन्दर लोभ के पागलपन का भारी दुख बना रहता है और विवेकहीन बनकर वह भटकता रहता है।। १ ।। मनमुख व्यक्ति का इस संसार में जीवन ही धिक्कार है। उसने सपने में भी प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया होता और प्रभु से उसका कभी भी प्रेम नहीं लगा होता ।। १ ।। रहाउ।। वह पशु के कर्म करता हुआ प्रभु के रहस्य को नहीं जानता तथा झूठ का आचरण करता हुआ सब कुछ झूठा ही बना देता है। सच्चे गुरु के मिलने से वह संसार की वासनाओं से विमुख होता है और इस प्रकार कोई बिरला सेवक ही उस प्रभु को खोज पाता है।। २ ।। जब प्रभु का नाम सदैव हृदय में बसा रहा तो गुणों के भण्डार प्रभु को पा लिया गया। गुरु की कृपा से मैंने पूर्ण प्रभु को पा लिया और मेरे मन का अभिमान समाप्त हो गया।। ३ ।। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता कराता है और स्वयं ही ठीक रास्ते पर डाल देता है।

आपे गुरमुखि दे वडिआई नानक नामि समाए ॥ ४ ॥ ९ ॥ १९ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मेरी पटीआ लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजै भाइ फाथे जम जाला ॥ सतिगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरै नाला ॥ १ ॥ गुर उपदेसि प्रहिलादु हरि उचरै ॥ सासना ते बालकु गमु न करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माता उपदेसै प्रहिलाद पिआरे ॥ पुत्र राम नामु छोडहु जीउ लेहु उबारे ॥ प्रहिलादु कहै सुनहु मेरी माइ ॥ राम नामु न छोडा गुरि दीआ बुझाइ ॥ २ ॥ संडा मरका सभि जाइ पुकारे ॥ प्रहिलादु आपि विगड़िआ सभि चाटड़े विगाड़े ॥ दुसट सभा महि मंत्रु पकाइआ ॥ प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ ॥ ३ ॥ हाथि खड़गु करि धाइआ अति अहंकारि ॥ हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ॥ खिन महि भैआन रूपु निकसिआ थंम्ह उपाड़ि ॥ हरणाखसु नखी बिदारिआ प्रहलादु लीआ उबारि ॥ ४ ॥ संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥ प्रहलाद जन के इकीह कुल उधारे ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारे ॥ नानक राम नामि संत निसतारे ॥ ५ ॥ १० ॥ २० ॥ भैरउ महला ३ ॥ आपे दैत लाइ दिते संत जना कउ आपे राखा सोई ॥ जो तेरी सदा सरणाई तिन मनि दुखु न होई ॥ १ ॥ जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ ॥ दैत पुत्रु प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहि दिन राती दुबिधा सबदे खोई ॥ सदा निरमल है जो सचि राते सचु वसिआ मनि सोई ॥ २ ॥ मूरख दुबिधा पढ़हि मूलु न पछाणहि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ संत जना की निंदा करहि दुसटु दैतु चिड़ाइआ ॥ ३ ॥ प्रहलादु दुबिधा न पड़ै हरि नामु न छोडै डरै न किसै दा डराइआ ॥ संत जना का हरि जीउ राखा दैतै कालु नेड़ा आइआ ॥ ४ ॥ आपणी पैज आपे राखै भगतां देइ वडिआई ॥ नानक हरणाखसु नखी बिदारिआ अंधै दर की खबरि न पाई ॥ ५ ॥ ११ ॥ २१ ॥

रागु भैरउ महला ४ चउपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि जन संत करि किरपा पगि

वह गुरमुख स्वयं ही बड़प्पन प्रदान करके हे नानक, जीव को अपने नाम में लीन कर लेता है।। ४ ।। ६ ।। १६ ।। भैरउ महला ३ ।। मेरी पट्टी पर प्रभु गोपाल लिख दो।। द्वैतभाव में लगकर तो यम के जाल में फंसा जाता है। सच्चा गुरु प्रभु मेरा पालन पोषण करता है और वह सुखदाता हरि मेरे साथ ही बना रहता है।। १ ।। अध्यापक के उपदेश को सुनकर भी प्रहलाद प्रभु का उच्चारण करता है और यह बालक अध्यापक के दण्ड से नहीं डरता।। १ ।। रहाउ।। माँ भी उपदेश देती है कि हे प्यारे पुत्र प्रहलाद, तुम राम नाम को छोड़ दो और अपनी जान बचा लो। प्रहलाद कहता है कि हे मेरी माँ, मेरी बात सुन ले; मुझे तो प्रभु, गुरु ने समझा दिया है इसलिए मैं राम नाम नहीं छोडूंगा।। २ ।। षण्ड और अमरक दोनों ही प्रहलाद को पढ़ाने वाले दुहाई देने लगे कि प्रहलाद स्वयं तो बिगड़ा ही है इसने अन्य सभी विद्यार्थियों को भी बिगाड़ दिया है। दुष्ट राजा ने प्रहलाद के विरुद्ध अपनी सभा में सलाह मशवरा किया परन्तु प्रभु प्रहलाद का रक्षक बना।। ३ ।। हाथ में खड़ग पकड़कर घोर अहंकारी बनकर राजा प्रहलाद की तरफ चला और कहने लगा कि बता तेरा प्रभु कहां है जो तुझे बचा लेगा। क्षण भर में ही भयानक रूप धारण करके वह प्रभु खम्भे को फाड़कर प्रकट हुआ। हिरण्यकश्यपु को उसने अपने नाखुनों से ही फाड़कर मार दिया और प्रहलाद को बचा लिया।। ४ ।। प्रभु शान्त पुरुषों के कामों को संवार देता है और इस प्रकार सेवक प्रहलाद के इक्कीस कुलों का उसने उद्धार कर दिया। शब्द-गुरु के माध्यम से अहंकार रूपी विष को मारा जाता है और हे नानक, राम नाम ही शान्त पुरुषों का पार उतारा करता है।। ५ ।। १० ।। २० ।। भैरउ महला ३ ।। प्रभु स्वयं ही अपने सन्जनों के पीछे दैत्यों को लगा देता है और फिर स्वयं ही उनकी रक्षा भी करता है। हे प्रभु जो सदैव तेरी शरण में रहते हैं उनके मनमें कभी भी दुख पैदा नहीं होता।। १ ।। युगों-युगों में भक्तों के सम्मान की रक्षा वह प्रभु करता आया है। दैत्य-पुत्र प्रहलाद ना तो गायत्री मंत्र जानता था ना तर्पण आदि का कर्मकाण्ड जानता था; वह कुछ भी नहीं जानता था परन्तु शब्द ब्रह्म के मेल ने उसे प्रभु से मिला दिया।। १ ।। रहाउ।। दिन रात जो प्रभु की भक्ति करता है शब्द के माध्मय से उसकी दुविधा नष्ट हो जाती है। जो सत्य में लीन है वह सदैव निर्मल बना रहता है और उसी के मन में सत्य बसा रहता है।। २ ।। मूर्ख लोग दुविधा में पड़े हुए पठन-पाठन तो करते हैं परन्तु अपने मूल को नहीं पहचानते और अपने जीवन को वे व्यर्थ ही गंवा देते हैं। सन्तजनों की निन्दा करने वाले दुष्ट दैत्य हिरण्यश्यपु को प्रहलाद के विरुद्ध क्रोधित कर दिया गया।। ३ ।। प्रहलाद किसी दुविधा में नहीं पड़ा, उसने प्रभु-नाम को नहीं छोड़ा और ना ही किसी के डराने से डरा। प्रभु तो सन्तजनों का रक्षक बन गया और दैत्य का काल उसके पास आ गया।। ४ ।। प्रभु अपने बिरद की लाज स्वयं ही रखता है और भक्तों को बड़प्पन प्रदान करता है। हे नानक, उसने हिरण्यकश्यपु को नाखुनों से फाड़ डाला परन्तु फिर भी उस अन्धे अज्ञानी ने प्रभु के द्वार के बारे में कुछ भी नहीं जाना।। ५ ।। ११ ।। २१ ।।

रागु भैरउ महला ४ चौपदे घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु के सेवक शान्त पुरुष यदि कृपा करे तो उस प्रभु के चरणों में

लाइणु ॥ गुर सबदी हरि भजु सुरति समाइणु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु नामु नराइणु ॥ हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि भवजलु हरि नामि तराइणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगति साध मेलि हरि गाइणु ॥ गुरमती ले राम रसाइणु ॥ २ ॥ गुर साधू अंम्रित गिआन सरि नाइणु ॥ सभि किलविख पाप गए गावाइणु ॥ ३ ॥ तू आपे करता स्रिसटि धराइणु ॥ जनु नानकु मेलि तेरा दास दसाइणु ॥ ४ ॥ १ ॥ भैरउ महला ४ ॥ बोलि हरि नामु सफल सा घरी ॥ गुर उपदेसि सभि दुख परहरी ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु नामु नरहरी ॥ करि किरपा मेलहु गुरु पूरा सतसंगति संगि सिंधु भउ तरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगजीवनु धिआइ मनि हरि सिमरी ॥ कोट कोटंतर तेरे पाप परहरी ॥ २ ॥ सतसंगति साध धूरि मुखि परी ॥ इसनानु कीओ अठसठि सुरसरी ॥ ३ ॥ हम मूरख कउ हरि किरपा करी ॥ जनु नानकु तारिओ तारण हरी ॥ ४ ॥ २ ॥ भैरउ महला ४ ॥ सुक्रितु करणी सारु जपमाली ॥ हिरदै फेरि चलै तुधु नाली ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु बनवाली ॥ करि किरपा मेलहु सतसंगति तूटि गई माइआ जम जाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सेवा घाल जिनि घाली ॥ तिसु घड़ीऐ सबदु सची टकसाली ॥ २ ॥ हरि अगम अगोचरु गुरि अगम दिखाली ॥ विचि काइआ नगर लधा हरि भाली ॥ ३ ॥ हम बारिक हरि पिता प्रतिपाली ॥ जन नानक तारहु नदरि निहाली ॥ ४ ॥ ३ ॥ भैरउ महला ४ ॥ सभि घट तेरे तू सभना माहि ॥ तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ १ ॥ हरि सुखदाता मेरे मन जापु ॥ हउ तुधु सालाही तू मेरा हरि प्रभु बापु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह हरि प्रभु सोइ ॥ सभ तेरै वसि दूजा अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जिस कउ तुम हरि राखिआ भावै ॥ तिस कै नेड़ै कोइ न जावै ॥ ३ ॥ तू जलि थलि महीअलि सभ तै भरपूरि ॥ जन नानक हरि जपि हाजरा हजूरि ॥ ४ ॥ ४ ॥

भैरउ महला ४ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का संतु हरि की हरि मूरति जिसु हिरदै हरि नामु मुरारि ॥ मसतकि भागु होवै जिसु लिखिआ

लगा जाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु का सुमिरन कर अपनी सुरति को उसमें लीन किया जाता है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु के नाम का सुमिरन कर। सुखदाता प्रभु ही कृपा करता है तो गुरमुख व्यक्ति प्रभु-नाम के माध्यम से संसार सागर को तैर जाते हैं ।। १ ।। रहाउ।। साधसंगति के मिलाप से प्रभु का गुणानुवाद होता है और गुरु के उपदेश से राम नाम की रसायन (औषधि) प्राप्त होती है।। २ ।। यदि साधना वाले गुरु के अमृत-ज्ञान के सरोवर में स्नान हो जाए तो सभी कलेश और पाप नष्ट हो जाते हैं।। ३ ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही कर्ता है और सृष्टि का आसरा है।। दास नानक को अपने से मिला ले क्योंकि यह तो तेरे दासों का भी दास है।। ४ ।। १ ।। भैरउ महला ४ ।। जिस घड़ी में प्रभु-नाम का उच्चारण किया जाता है वही घड़ी फलदायक होती है। गुरु के उपदेश के द्वारा सभी दुख दूर कर दिए जाते हैं।। १ ।। हे मेरे मन, तू उस प्रभु के नाम का सुमिरन कर जो भक्तों की सहायता करने वाला है। कृपा करो मुझे पूर्ण गुरु से मिला दो जिसकी सत्संगति में भवसागर पार किया जाता है।। १ ।। रहाउ।। जगत के जीवन प्रभु की आराधना करो और मन में प्रभु का सुमिरन करते रहो; तेरे करोड़ों पाप दूर हो जाएंगे।। २ ।। साधु पुरुषों के सत्संगति की चरण धूलि यदि तेरे मुख पर लग जाए तो यह मान लो अड़सठ बार गंगा के स्नान का फल प्राप्त हो गया है।। ३ ।। मुझ मूर्ख पर प्रभु ने कृपा की है और उस पार उतारने वाले प्रभु ने दास नानक को भी पार उतार दिया है।। ४ ।। २ ।। भैरउ महला ४ ।। अच्छा आचरण ही श्रेष्ठ माला है। तू इसे अपने हृदय में फेरता रह क्योंकि यही तेरे साथ चलेगी।। १ ।। उस संसार के स्वामी प्रभु के नाम का सुमिरन करो। कृपा करके सत्संगति से मिला दो क्योंकि अब मैंने माया के जाल को तोड़ दिया है जो वास्तव में मौत के समान है।। १ ।। रहाउ।। गुरमुख बनकर जिसने सेवा की मेहनत की है उसका जीवन उस प्रभु की सच्ची टकसाल में सुन्दर बन गया है।। २ ।। प्रभु अगम्य एवं अगोचर है परन्तु गुरु ने उस अगम्य को भी हमें दिखा दिया है। हमने शरीर रूपी नगरी में ही उसे खोज लिया है।। ३ ।। हम बच्चे हैं और प्रभु हमारा पालन पोषण करने वाला पिता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, अपने सेवकों पर कृपा दृष्टि करके उन्हें आनन्दित कर पार उतार लो।। ४ ।। ३ ।। भैरउ महला ४ ।। ये सभी शरीर तेरे हैं और तू ही इन सबमें स्थित बना है। तुझसे बाहर तो कोई भी नहीं है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु ही सुखदाता है, तू उसका जाप कर। हे प्रभु, तू ही मेरा पिता है इसलिए मैं तेरा गुणानुवाद करता रहता हूँ।। १ ।। रहाउ।। मैं जिधर भी देखता हूं उधर ही प्रभु दिखाई देता है। सब कुछ तेरे बस में हैं और तेरे बिना दूसरा कोई नहीं है।। २ ।। हे प्रभु, जिसकी तू रक्षा करना चाहता है उसके पास तो कोई भी नहीं आ सकता।। ३ ।। तू जल, स्थल और अन्तरिक्ष में सभी स्थानों पर पूरी तरह व्याप्त है। हे नानक, प्रभु के सेवक उसका सुमिरन करके उसके सामने प्रस्तुत हो गए हैं।। ४ ।। ४ ।।

भैरउ महला ४ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु का सन्त प्रभु की ही मूर्ति है और उसके हृदय में प्रभु का नाम ही बसा रहता है। जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखा हो,

सो गुरमति हिरदै हरि नामु सम्हारि ॥ १ ॥ मधुसूदनु जपीऐ उर धारि ॥ देही नगरि तसकर पंच धातू गुर सबदी हरि काढे मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन का हरि सेती मनु मानिआ तिन कारज हरि आपि सवारि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि अंगीकारु कीआ करतारि ॥ २ ॥ मता मसूरति तां किछु कीजै जे किछु होवै हरि बाहरि ॥ जो किछु करे सोई भल होसी हरि धिआवहु अनदिनु नामु मुरारि ॥ ३ ॥ हरि जो किछु करे सु आपे आपे ओहु पूछि न किसै करे बीचारि ॥ नानक सो प्रभु सदा धिआईऐ जिनि मेलिआ सतिगुरु किरपा धारि ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ भैरउ महला ४ ॥ ते साधू हरि मेलहु सुआमी जिन जपिआ गति होइ हमारी ॥ तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी ॥ १ ॥ हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ क्रिपा क्रिपा करि जगत पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन मति ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी ॥ तिन की सेवा लाइ हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥ २ ॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते हरि दरगह काढे मारी ॥ ते नर निंदक सोभ न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥ ३ ॥ हरि आपि बुलावै आपे बोलै हरि आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥ हरि जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलसी जन नानक किआ एहि जंत विचारी ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥ भैरउ महला ४ ॥ सतसंगति साई हरि तेरी जितु हरि कीरति हरि सुनणे ॥ जिन हरि नामु सुणिआ मनु भीना तिन हम स्रेवह नित चरणे ॥ १ ॥ जगजीवनु हरि धिआइ तरणे ॥ अनेक असंख नाम हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरसिख हरि बोलहु हरि गावहु ले गुरमति हरि जपणे ॥ जो उपदेसु सुणे गुर केरा सो जनु पावै हरि सुख घणे ॥ २ ॥ धंनु सु वंसु धंनु सु पिता धंनु सु माता जिनि जन जणे ॥ जिन सासि गिरासि धिआइआ मेरा हरि हरि से साची दरगह हरि जन बणे ॥ ३ ॥ हरि हरि अगम नाम हरि तेरे विचि भगता हरि धरणे ॥ नानक जनि पाइआ मति गुरमति जपि हरि हरि पारि पवणे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

वह गुरमति के माध्यम से हृदय में प्रभु-नाम को सम्भाले रहता है।। १ ।। उस प्रभु को हृदय में धारण करके उसके नाम का जाप करना चाहिए। इस शरीर रूपी नगर में पांच भटकाने-दौड़ाने वाले चोर बैठे हैं जिन्हें शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु ने मारकर बाहर निकाल दिया है।। १ ।। रहाउ।। जिनका मन प्रभु के साथ लग गया है प्रभु स्वयं उनके कार्य संवार देता है। प्रभु ने उन्हें अंगीकार कर लिया है और इसलिए उनकी लोगों पर बनी मोहताजी समाप्त हो गई हैं।। २ ।। किसी से विचार विमर्श तो तब किया जाए यदि प्रभु कहीं बाहर हो। उस प्रभु के नाम की आराधना सदैव करते रहो क्योंकि वह जो कुछ भी करेगा वह भला ही होगा।। ३ ।। प्रभु जो कुछ भी करता है स्वयं ही करता है और वह किसी से पूछकर अथवा विचार विमर्श करके नहीं करता। हे नानक, जिसने कृपा धारण करके सच्चे गुरु से मिला दिया है उस प्रभु का सदैव सुमिरन करते रहना चाहिए।। ४ ।। १ ।। ५ ।। भैरउ महला ४ ।। हे मेरे स्वामी प्रभु, तुम ऐसे साधु पुरुषों से मिलाप करा दो जिनका सुमिरन करने से हमारी मुक्ति हो जाए। उनका दर्शन देखकर मेरा मन खिल उठता है और मैं प्रत्येक क्षण उन पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। हरि प्रभु के नाम का जाप हृदय से किया जाना चाहिए; हे संसार के पिता स्वामी, हम पर कृपा कर और हमें अपने दासों के दास का पानी भरने वाला बना दे।। १ ।। रहाउ।। जिनके हृदय में वह प्रभु बस गया है उनकी मति और सम्मान उत्तम है हमें हे प्रभु, उनकी सेवा में लगा दे क्योंकि उनके सुमिरन से ही हमारी गति होती है।। २ ।। जो ऐसे सच्चे गुरु साधु को नहीं पा सके हैं उन्हें मारकर प्रभु के दरबार से बाहर निकाल दिया जाता है। ऐसे निन्दक व्यक्ति कहीं भी सम्मान नहीं पाते और सृजनकर्ता प्रभु उनके नाक काट देता है अर्थात उन्हें बेइज़्ज़त करता है।। ३ ।। वह निराकार निरंजन प्रभु, जो आहारों से भी परे हैं स्वयं ही बुलवाता है और जीवों के अन्दर स्वयं ही बोलता है। हे प्रभु, जिसे तू मिलाता है वही तुझसे मिलता है। दास नानक के अनुसार ये बेचारे जीव भला तेरे सामने क्या हैं।। ४ ।। २ ।। ६ ।। भैरउ महला ४ ।। हे प्रभु, तेरी सत्संगति वही है जहाँ प्रभु की कीर्ति सुनने को मिलती है। जिन्होंने प्रभु का नाम सुना है उनका मन सन्तुष्ट हो गया है और हम सदैव उनके चरणों की सेवा करते हैं।। १ ।। जगत के जीवन उस प्रभु का सुमिरन करके ही तैरा जाता है। हे प्रभु, तेरे अनेकों और असंख्य नाम है उन्हें जीभ से गिना नहीं जा सकता।। १ ।। रहाउ।। हे गुरसिक्खो, प्रभु का उच्चारण करो, प्रभु का ही गायन करो और गुरमति लेकर प्रभु का ही जाप करो। जो गुरु का उपदेश सुनता है वह सेवक प्रभु से अनेकों सुख प्राप्त करता है।। २ ।। वह वंश धन्य है, वह पिता धन्य है और वह माता भी धन्य है जिसने प्रभु से सेवकों को पैदा किया है। जिन्होंने हर साँस और ग्रास के साथ मेरे प्रभु का सुमिरन किया है वे ही प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करते हैं।। ३ ।। हे प्रभु, तेरे नाम अगम्य हैं और प्रभु ने ही भक्तों के हृदय में उन्हें टिकाया है। गुरु की मति के माध्यम से दास नानक ने उस प्रभु को पा लिया है जो पार उतार देने वाला है।। ४ ।। ३ ।। ७ ।।

भैरउ महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सगली थीति पासि डारि राखी ॥ असटम थीति गोविंद जनमा सी ॥ १ ॥ भरमि भूले नर करत कचराइण ॥ जनम मरण ते रहत नाराइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि पंजीरु खवाइओ चोर ॥ ओहु जनमि न मरै रे साकत ढोर ॥ २ ॥ सगल पराध देहि लोरोनी ॥ सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुरु जोनी ॥ ३ ॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ नानक का प्रभु रहिओ समाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ भैरउ महला ५ ॥ ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥ भउ नही लागै जां ऐसे बुझीआ ॥ १ ॥ राखा एकु हमारा सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ जहा कहां प्रभु तूं वरतंता ॥ २ ॥ घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ ३ ॥ २ ॥ भैरउ महला ५ ॥ वरत न रहउ न मह रमदाना ॥ तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥ १ ॥ एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ हिंदू तुरक दुहां नेबेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हज काबै जाउ न तीरथ पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥ २ ॥ पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥ एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥ ३ ॥ ना हम हिंदू न मुसलमान ॥ अलह राम के पिंडु परान ॥ ४ ॥ कहु कबीर इहु कीआ वखाना ॥ गुर पीर मिलि खुदि खसमु पछाना ॥ ५ ॥ ३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ दस मिरगी सहजे बंधि आनी ॥ पांच मिरग बेधे सिव की बानी ॥ १ ॥ संतसंगि ले चड़िओ सिकार ॥ म्रिग पकरे बिनु घोर हथीआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आखेर बिरति बाहरि आइओ धाइ ॥ अहेरा पाइओ घर कै गांइ ॥ २ ॥ म्रिग पकरे घरि आणे हाटि ॥ चुख चुख ले गए बांढे बाटि ॥ ३ ॥ एहु अहेरा कीनो दानु ॥ नानक कै घरि केवल नामु ॥ ४ ॥ ४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ जे सउ लोचि लोचि खावाइआ ॥ साकत हरि हरि चीति न आइआ ॥ १ ॥ संत जना की लेहु मते ॥ साधसंगि पावहु परम गते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाथर कउ बहु नीरु पवाइआ ॥ नह

भैरउ महला ५ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

लोगों ने सभी निथियों को तो एक तरफ रख दिया और अष्टम तिथि अर्थात अष्टमी को परमात्मा की जन्म तिथि मान लिया है।। १ ।। भ्रमों में भूले हुए लोग कच्ची बातें करते हैं क्योंकि प्रभु तो जन्म मरण से रहित है।। १ ।। रहाउ।। पर्दा आदि डालकर चोरी चोरी ठाकुर को भोग लगाया जाता है परन्तु प्रभु से टूटे हुए हे पशु, वह प्रभु जन्म और मरण में नहीं आता।। २ ।। जिस देही को तू लोरियां देता रहता है यही सारे अपराधों का कारण है। वह मुख जल जाये तो यह कहता है कि प्रभु योनियों में आता है।। ३ ।। वह ना जन्म लेता है, ना मरता है ना आता है ना ही जाता है। नानक का प्रभु तो सबमें लीन बना रहता है।। ४ ।। १ ।। भैरउ महला ५ ।। जब यह जान लिया कि प्रभु सबमें समाया है तो फिर व्यक्ति उठते हुए भी सुखी बना रहता है और बैठते हुए भी सुखी बना रहता है। जब इस प्रकार जान लिया जाए तो कोई भी भय नहीं लगता।। १ ।। एक प्रभु ही हमारा रक्षक है जो सबके हृदय की बातें जानने वाला है।। १।। रहाउ।। तू निश्चित होकर सो और निश्चित होकर नींद से उठ जा क्योंकि जहाँ कहीं भी देखा जाता है हे प्रभु, तू ही कार्यशील दिखाई देता है।। २ ।। नानक का कथन है कि गुरु ने यह शिक्षा मन में पक्की कर ली है कि यदि घर में सुख है तो बाहर भी सुख ही प्राप्त होगा अर्थात सुख और दुख मन की अवस्था है।। ३ ।। २ ।। भैरउ महला ५ ।। मैं ना तो व्रत रखता हूँ ना ही रमज़ान के महीने में रोज़े रखता हूँ। मैं तो केवल उसी का सुमिरन करता हूँ जो अन्त में हमारी रक्षा करता है।। १ ।। मेरे लिए तो वही धरती का स्वामी प्रभु है जो मुसलमानों के लिए अल्लाह है। हिन्दु और मुसलमान दोनों से ही मैंने पल्ला छुड़ा लिया है।। १ ।। रहाउ।। ना मैं हज के लिए काबा जाता हूँ और ना ही पूजा करने के लिए तीर्थों पर जाता हूँ। मैं तो केवल एक प्रभु का ही सुमिरन करता हूँ अन्य किसी का सुमिरन नहीं करता हूँ।। २ ।। ना तो मैं पूजा करता हूँ और ना ही नमाज़ पढ़ता हूँ। एक निराकार प्रभु को ही हृदय में जानकर मैं उसे प्रणाम करता हूँ।। ३ ।। हम ना तो हिन्दु हैं ना मुसलमान हैं परन्तु हमारा शरीर और हमारे प्राण उस अल्लाह और राम के ही हैं ।। ४ ।। हे कबीर, तू भी बता दे कि हमने यह बखान किया है तथा गुरु पीर को मिलकर स्वयं उस मालिक को पहचान लिया है।। ५ ।। ३ ।। भैरउ महला ५ ।। दस इन्द्रिय रूपी मृग मैंने आसानी से ही बांध लिए हैं और पांच काम, क्रोध रूपी मृगों को मैंने शिव बाण अर्थात निशाना ना चूकने वाले शब्द के तीरों से बींध दिया है।। १ ।। सन्तपुरुषों को साथ लेकर मैं शिकार पर निकला हूँ और इन मृगों को मैंने बिना घोड़े और बिना शस्त्र के ही पकड़ लिया है।। १ ।। रहाउ।। आखेट की मेरी वृत्ति तो बाहर की तरफ दौड़ती थी परन्तु मैं अपने घर में ही वह शिकार प्राप्त कर लिया है।। २ ।। मृगों को पकड़कर मैं हृदय रूपी दुकान पर उन्हें ले आया हूँ और इनको छोटे छोटे टुकड़े करके इन्हें बाँट दिया है अर्थात इन्हें नष्ट कर दिया है।। ३ ।। यह शिकार तो मैंने दूसरों को दान कर दिया है क्योंकि नानक के हृदय में तो केवल एक प्रभु का ही नाम स्थित है।। ४ ।। ४ ।। भैरउ महला ५ ।। यदि सैकड़ों तरीकों से प्रेमपूर्वक खिलाया जाए तो भी प्रभु से टूटे हुए पदार्थवादी जीव के हृदय में प्रभु याद नहीं आता।। १ ।। तुम शान्त पुरुषों का उपदेश प्राप्त कर लो और साधसंगति में परमगति को पा लो।। १ ।। रहाउ।। पत्थर पर कितना भी पानी डाला जाए परन्तु

भीगै अधिक सूकाइआ ॥ २ ॥ खटु सासत्र मूरखै सुनाइआ ॥ जैसे दह दिस पवनु झुलाइआ ॥ ३ ॥ बिनु कण खलहानु जैसे गाहन पाइआ ॥ तिउ साकत ते को न बरासाइआ ॥ ४ ॥ तित ही लागा जितु को लाइआ ॥ कहु नानक प्रभि बणत बणाइआ ॥ ५ ॥ ५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ जीउ प्राण जिनि रचिओ सरीर ॥ जिनहि उपाए तिस कउ पीर ॥ १ ॥ गुरु गोबिंदु जीअ कै काम ॥ हलति पलति जा की सद छाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु आराधन निरमल रीति ॥ साधसंगि बिनसी बिपरीति ॥ २ ॥ मीत हीत धनु नह पारणा ॥ धंनि धंनि मेरे नाराइणा ॥ ३ ॥ नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥ एक बिना दूजा नही जाणी ॥ ४ ॥ ६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ आगै दयु पाछै नाराइण ॥ मधि भागि हरि प्रेम रसाइण ॥ १ ॥ प्रभू हमारै सासत्र सउण ॥ सूख सहज आनंद ग्रिह भउण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना नामु करन सुणि जीवे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि अमर थिरु थीवे ॥ २ ॥ जनम जनम के दूख निवारे ॥ अनहद सबद वजे दरबारे ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि लीए मिलाए ॥ नानक प्रभ सरणागति आए ॥ ४ ॥ ७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ कोटि मनोरथ आवहि हाथ ॥ जम मारग कै संगी पांथ ॥ १ ॥ गंगा जलु गुर गोबिंद नाम ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै पीवत बहुड़ि न जोनि भ्रमाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा जाप ताप इसनान ॥ सिमरत नाम भए निहकाम ॥ २ ॥ राज माल सादन दरबार ॥ सिमरत नाम पूरन आचार ॥ ३ ॥ नानक दास इहु कीआ बीचारु ॥ बिनु हरि नाम मिथिआ सभ छारु ॥ ४ ॥ ८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ लेपु न लागो तिल का मूलि ॥ दुसटु ब्राहमणु मूआ होइ कै सूल ॥ १ ॥ हरि जन राखे पारब्रहमि आपि ॥ पापी मूआ गुर परतापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणा खसमु जनि आपि धिआइआ ॥ इआणा पापी ओहु आपि पचाइआ ॥ २ ॥ प्रभ मात पिता अपणे दास का रखवाला ॥ निंदक का माथा ईहां ऊहा काला ॥ ३ ॥ जन नानक की परमेसरि सुणी अरदासि ॥ मलेछु पापी पचिआ भइआ निरासु ॥ ४ ॥ ९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु ॥ झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नगज

वह इतना अधिक सूखा होता है कि भीगता नहीं।। २ ।। मूर्ख को छः शास्त्र सुनाना ऐसे ही है जैसे दसों दिशाओं में हवा बिना किसी उद्देश्य के बहती रहती है।। ३ ।। जैसे दानों के बिना खलिहान में गहाई की जाए तो वहाँ से कुछ भी प्राप्त नहीं होता इसी प्रकार प्रभु से टूटे व्यक्ति से कोई भी लाभ नहीं उठा पाता।। ४ ।। नानक कहता है कि प्रभु ने ऐसा लेखा जोखा बनाया है कि प्रत्येक जीव वहीं लगा हुआ है जहाँ प्रभु ने उसे लगाया है।। ५ ।। ५ ।। भैरउ महला ५ ।। जिसने हमारे शरीर और प्राणों की रचना की है तथा जिसने हमें उत्पन्न किया है उसी को ही हमारा दर्द है।। १ ।। गुरु और प्रभु ही जीव के काम आने वाले हैं तथा लोक परलोक में सदैव उन्हीं का आसरा बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का सुमिरन ही निर्मल जीवन ढंग है क्योंकि साधसंगति में ही विपरीत बुद्धि विनष्ट होती है।। २ ।। मित्र-दोस्त और धन का आसरा कुछ भी नहीं होता। केवल मेरा प्रभु ही धन्य है जो वास्तव में सबका आसरा है।। ३ ।। नानक इस अमृतवाणी को बोलता है और उस एक प्रभु के बिना किसी दूसरे को नहीं जानता॥ ४ ॥ ६ ॥ भैरउ महला ५ ।। परमात्मा आगे भी है और पीछे भी वह हरि प्रभु ही है। मध्य भाग में भी वह रसों का घर और प्रेम करने वाला प्रभु ही है।। १ ।। प्रभु ही हमारा शास्त्र और शकुन इत्यादि है। वही सहज सुख देने वाला तथा आनन्दित बना रहने वाला वास्तविक ठिकाना है।। १ ।। रहाउ।। जीभ उसका नाम लेकर और कान उसके बारे में सुनकर ही जीवित बने रहते हैं। प्रभु का बार बार सुमिरन करते रहने से ही व्यक्ति अमर और स्थिर बना रहता है।। २ ।। प्रभु ने ही हमारे जन्मों जन्मों के दुखों का निवारण कर दिया है। उसके दरबार में अनहद शब्द बजता ही रहता है।। ३ ।। हे नानक, जब हम प्रभु की शरण में आ गए हैं तो प्रभु ने कृपा करके हमें अपने से मिला लिया है।। ४ ।। ७ ।। भैरउ महला ५ ।। करोड़ों आशाएं पूरी हो जाती हैं और प्रभु का नाम सुमिरन करने से आगे एक संगी साथी मिल जाता है।। १ ।। गुरु-प्रभु का नाम वह गंगा जल है जिसका जो सुमिरन करता है उसकी मुक्ति हो जाती है और उसे पीकर फिर योनियों में भटकना नहीं पड़ता।। १ ।। रहाउ।। पूजा, जाप, तपस्या इत्यादि प्रभु-नाम के सुमिरन के सामने निरर्थक हो जाते हैं।। २ ।। राज, माल, महल और दरबार आदि पूर्ण आचरण वाले अर्थात पूरी तौर से तभी अच्छे लगते है जब प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाए।। ३ ।। दास नानक ने तो यही विचार बनाया है कि प्रभु-नाम के बिना सभी झूठ और राख के समान है।। ४ ।। ८ ।। भैरउ महला ५ ।। विषय-विकारों के ज़हर का जरा भी असर नहीं हुआ और वह विष देने वाला कर्मकाण्डी दुष्ट ब्राह्मण पेट के शूल के कारण मर गया।। १ ।। प्रभु के सेवकों की रक्षा वह परब्रह्म स्वयं करता है और गुरु-प्रभु के प्रताप से पापी मर गया।। १ ।। रहाउ।। सेवक ने तो अपने मालिक का स्वयं ही सुमिरन किया है और वह मूर्ख पापी स्वयं ही मर खप गया है।। २ ।। प्रभु ही माता-पिता बनकर अपने दास की रक्षा करता है तथा निन्दक व्यक्ति का मुँह यहाँ और वहाँ काला ही होता है।। ३ ।। परमेश्वर ने दास नानक की अरदास सुनी तो वह मलेच्छ पापी निराश होकर तबाह हो गया।। ४ ।। ९ ।। भैरउ महला ५ ।। हे प्रभु, तेरा नाम बहुत ही खूबसूरत, महान और महान है। इस संसार का अभिमान झूठा है और अत्यन्त झूठा है।। १ ।। रहाउ।।

तेरे बंदे दीदारु अपारु ॥ नाम बिना सभ दुनीआ छारु ॥ १ ॥ अचरजु तेरी कुदरति तेरे कदम सलाह ॥ गनीव तेरी सिफति सचे पातिसाह ॥ २ ॥ नीधरिआ धर पनह खुदाइ ॥ गरीब निवाजु दिनु रैणि धिआइ ॥ ३ ॥ नानक कउ खुदि खसम मिहरवान ॥ अलहु न विसरै दिल जीअ परान ॥ ४ ॥ १० ॥ भैरउ महला ५ ॥ साच पदारथु गुरमुखि लहहु ॥ प्रभ का भाणा सति करि सहहु ॥ १ ॥ जीवत जीवत जीवत रहहु ॥ राम रसाइणु नित उठि पीवहु ॥ हरि हरि हरि हरि रसना कहहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलिजुग महि इक नामि उधारु ॥ नानकु बोलै ब्रहम बीचारु ॥ २ ॥ ११ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु सेवि सरब फल पाए ॥ जनम जनम की मैलु मिटाए ॥ १ ॥ पतित पावन प्रभ तेरो नाउ ॥ पूरबि करम लिखे गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगि होवै उधारु ॥ सोभा पावै प्रभ कै दुआर ॥ २ ॥ सरब कलिआण चरण प्रभ सेवा ॥ धूरि बाछहि सभि सुरि नर देवा ॥ ३ ॥ नानक पाइआ नाम निधानु ॥ हरि जपि जपि उधरिआ सगल जहानु ॥ ४ ॥ १२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ अपणे दास कउ कंठि लगावै ॥ निंदक कउ अगनि महि पावै ॥ १ ॥ पापी ते राखे नाराइण ॥ पापी की गति कतहू नाही पापी पचिआ आप कमाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दास राम जीउ लागी प्रीति ॥ निंदक की होई बिपरीति ॥ २ ॥ पारब्रहमि अपणा बिरदु प्रगटाइआ ॥ दोखी अपणा कीता पाइआ ॥ ३ ॥ आइ न जाई रहिआ समाई ॥ नानक दास हरि की सरणाई ॥ ४ ॥ १३ ॥

रागु भैरउ महला ५ चउपदे घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

स्रीधर मोहन सगल उपावन निरंकार सुखदाता ॥ ऐसा प्रभु छोडि करहि अन सेवा कवन बिखिआ रस माता ॥ १ ॥ रे मन मेरे तू गोविद भाजु ॥ अवर उपाव सगल मै देखे जो चितवीऐ तितु बिगरसि काजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ठाकुरु छोडि दासी कउ सिमरहि मनमुख अंध अगिआना ॥ हरि की भगति करहि तिन निंदहि निगुरे पसू समाना ॥ २ ॥ जीउ पिंडु तनु धनु सभु प्रभ का साकत कहते मेरा

तेरे भक्त सुन्दर हैं और तेरा दर्शन अनन्त सौन्दर्यपूर्ण है। तेरे नाम के बिना सारी दुनियां राख के समान है।। १ ।। संसार में कार्यशील तेरी शक्ति आश्चर्यपूर्ण है और संसार के चलाने के लिए तेरे उठाये कदम प्रशंसनीय है। हे सच्चे सम्राट, तेरा गुणानुवाद अमूल्य है।। २ ।। निराश्रितों का आसरा हे प्रभु, तू ही है। गरीबों को सम्मान देने वाले प्रभु, मैं दिन रात तेरी आराधना करता हूँ।। ३ ।। नानक पर तो वह मालिक खुद मेहरबान हो गया है और मेरे हृदय और प्राण से वह अल्लाह कभी भी ना भूले।। ४ ।। १० ।। भैरउ महला ५ ।। गुरमुख बनकर सत्य रूपी पदार्थ प्राप्त करो और प्रभु की आज्ञा को सत्य रूप में स्वीकार करो।। १ ।। प्रभु रूपी रसायन का सदैव आगे बढ़कर पान करते रहो और इस प्रकार आध्यात्मिक तौर से जीवित बने रहो। अपनी जीभ से सदैव हरि-हरि, का उच्चारण करते रहो।। १ ।। रहाउ।। कलियुग में एक नाम ही उद्धार करने वाला है तथा नानक इसे ब्रह्म चिंतन मानकर इसका उच्चारण कर रहा है।। २ ।। ११ ।। भैरउ महला ५ ।। सच्चे गुरु का सुमिरन करके सभी फलों को प्राप्त किया जाता है और जन्मों जन्मान्तरों की मैल मिटाई जाती है।। १ ।। पापियों को पवित्र करने वाला हे प्रभु, तेरा ही नाम है और पहले के लिखे हुए भाग्य लेखों के अनुरूप मैं तेरा गुणानुवाद करता रहता हूँ।। १ ।। रहाउ।। व्यक्ति का उद्धार साधसंगति में होता है और वह प्रभु के द्वार पर सम्मान प्राप्त करता है।। २ ।। प्रभु के चरणों की सेवा सभी प्रकार का सुख देने वाली है और उसकी चरण धूलि तो देवता और मनुष्य सभी चाहते रहते हैं।। ३ ।। नानक ने तो प्रभु-नाम का वह भण्डार प्राप्त कर लिया है जिसका सुमिरन करते हुए सारा संसार पार उतर गया है।। ४ ।। १२ ।। भैरउ महला ५ ।। प्रभु अपने दास को तो अपने गले लगाता है और निन्दक व्यक्ति को संसार की तृष्णा रूपी अग्नि में डाले रहता है।। १ ।। प्रभु ही पापी व्यक्ति से रक्षा करता है; पापी की गति तो कहीं भी नहीं होती और वह अपने किए कर्मों के कारण ही जल-जलकर मरता रहता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के दास की प्रभु से प्रीति लग गई है परन्तु निन्दक इस जीवन ढंग के विपरीत चलने वाला होता है॥ २ ॥ परब्रह्म प्रभु ने अपने स्वभाव को बार-बार प्रकट किया है अर्थात उसने सदैव भक्तों की रक्षा की है। पापी व्यक्ति अपने किए हुए का फल पाते रहते हैं ।। ३ ।। वह प्रभु ना आता है न जाता है और सबमें लीन बना रहता है। हे नानक, प्रभु का सेवक तो सदैव प्रभु की शरण में ही पड़ा रहता है।। ४ ।। १३ ।।

रागु भैरउ महला ५ चौपदे घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सारे ऐश्वर्य को धारण करने वाला और सबको मोहित किए रहने वाला वह निराकार तथा सुखदायक प्रभु ही सबको उत्पन्न करने वाला है। विषय विकारों के रस में लीन होकर कौन भला ऐसे प्रभु को छोड़कर किसी अन्य की सेवा करेगा।। १ ।। हे मेरे मन, तू केवल प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि मैंने अन्य सभी उपायों को देख लिया है; अन्य जिस किसी का भी सुमिरन किया जाए उससे हमारे काम बिगड़ जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। मालिक को छोड़कर उसकी दासी साँसारिकता रूपी माया का सुमिरन करने वाला मनमुख व्यक्ति अन्धा और अज्ञानी है। ऐसा व्यक्ति गुरु विहीन और पशु के समान बनकर उनकी निंदा करता है जो प्रभु की भक्ति करते हैं।। २ ।। यह प्राण, शरीर और धन तो सब प्रभु का ही है परन्तु पदार्थवादी यह कहता है कि यह सब कुछ मेरा है।

अहंबुधि दुरमति है मैली बिनु गुर भवजलि फेरा ॥ ३ ॥ होम जग जप तप सभि संजम तटि तीरथि नही पाइआ ॥ मिटिआ आपु पए सरणाई गुरमुखि नानक जगतु तराइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ बन महि पेखिओ त्रिण महि पेखिओ ग्रिहि पेखिओ उदासाए ॥ दंडधार जटधारै पेखिओ वरत नेम तीरथाए ॥ १ ॥ संतसंगि पेखिओ मन माएं ॥ ऊभ पइआल सरब महि पूरन रसि मंगल गुण गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोग भेख संनिआसै पेखिओ जति जंगम कापड़ाए ॥ तपी तपीसुर मुनि महि पेखिओ नट नाटिक निरताए ॥ २ ॥ चहु महि पेखिओ खट महि पेखिओ दस असटी सिंम्रिताए ॥ सभ मिलि एको एकु वखानहि तउ किस ते कहउ दुराए ॥ ३ ॥ अगह अगह बेअंत सुआमी नह कीम कीम कीमाए ॥ जन नानक तिन कै बलि बलि जाईऐ जिह घटि परगटीआए ॥ ४ ॥ २ ॥ १५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निकटि बुझै सो बुरा किउ करै ॥ बिखु संचै नित डरता फिरै ॥ है निकटे अरु भेदु न पाइआ ॥ बिनु सतिगुर सभ मोही माइआ ॥ १ ॥ नेड़ै नेड़ै सभु को कहै ॥ गुरमुखि भेदु विरला को लहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि न देखै पर ग्रिहि जाइ ॥ दरबु हिरै मिथिआ करि खाइ ॥ पई ठगउरी हरि संगि न जानिआ ॥ बाझु गुरू है भरमि भुलानिआ ॥ २ ॥ निकटि न जानै बोलै कूड़ु ॥ माइआ मोहि मूठा है मूड़ु ॥ अंतरि वसतु दिसंतरि जाइ ॥ बाझु गुरू है भरमि भुलाइ ॥ ३ ॥ जिसु मसतकि करमु लिखिआ लिलाट ॥ सतिगुरु सेवे खुल्हे कपाट ॥ अंतरि बाहरि निकटे सोइ ॥ जन नानक आवै न जावै कोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ जिसु तू राखहि तिसु कउनु मारै ॥ सभ तुझ ही अंतरि सगल संसारै ॥ कोटि उपाव चितवत है प्राणी ॥ सो होवै जि करै चोज विडाणी ॥ १ ॥ राखहु राखहु किरपा धारि ॥ तेरी सरणि तेरै दरवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि सेविआ निरभउ सुखदाता ॥ तिनि भउ दूरि कीआ एकु पराता ॥ जो तू करहि सोई फुनि होइ ॥ मारै न राखै दूजा कोइ ॥ २ ॥ किआ तू सोचहि माणस बाणि ॥ अंतरजामी पुरखु सुजाणु ॥ एक टेक एको आधारु ॥ सभ किछु जाणै सिरजणहारु ॥ ३ ॥ जिसु ऊपरि

उनके पास अहंकार से भरी मैली बुद्धि है तथा गुरु से विहीन बने रहने पर उनका संसार में आवागमन बना ही रहता है।। ३ ।। होम, यज्ञ, जप, तप, सभी प्रकार के संयम, नदियों के किनारे बसे तीर्थों पर भ्रमण आदि से उस प्रभु को नहीं पाया जाता। हे नानक, जब अपना अभिमान त्यागकर और गुरमुख बनकर उसकी शरण में आया जाए तभी सारे संसार का पार उतारा होता है।। ४ ।। १ ।। १४ ।। भैरउ महला ५ ।। मैंने उसे वन में खोजा, तिनकों में खोजा और उदासीन होकर घरों में भी खोजा; दण्ड धारण करके अर्थात योगी बनके, जटाएं धारण करके, व्रत, नियम और तीर्थों पर भी उसे खोजा है परन्तु वह नहीं मिला।। १ ।। शान्त पुरुषों की संगति में मैंने उसे मन में ही देख लिया है। वह आकाश, पाताल सभी में व्याप्त है और यह जानकर मैंने उस प्रभु के पूर्ण रस वाले मंगल गीतों का गायन किया है।। १ ।। रहाउ।। योग के वेश में, संन्यास में, यतिभाव में, जंगम, श्वेताम्बर, तपी, तपीश्वर, नटों के नाटक, नृत्य और मुनियों आदि में भी मैंने उसे खोजा है (परन्तु वह इन सबमें नहीं है) ।। २ ।। चारों वेदों में, छः शास्त्रों में, अठारह पुराणों तथा सभी स्मृतियों में भी उसे खोजा है। सभी मिलकर उस एक प्रभु का ही बखान करते हैं तो फिर भला उस प्रभु का किसके प्रति बुरा भाव हो सकता हैं अर्थात प्रछन्न रूप से वह सब में ही है।। ३ ।। वह अनन्त, अगाध स्वामी ऐसा है कि उसका मूल्य नहीं आंका जा सकता। दास नानक तो उन पर बार बार बलिहारी जाता है जिनके हृदय में वह प्रभु प्रकट हो जाता है।। ४ ।। २ ।। १५ ।। भैरउ महला ५ ।। जो प्रभु को पास ही समझता है वह भला, बुरा काम कैसे कर सकता है परन्तु जो विकारों का विष इकट्ठा करता रहता है वही सदैव डर कर भटकता रहता है। वह प्रभु है तो पास ही परन्तु किसी ने इस रहस्य को नहीं जाना है। सच्चे गुरु के बिना यह सारी सृष्टि माया में मोहित हुई पड़ी है।। १ ।। वैसे सब कोई उसे "पास है, पास है" कहता है परन्तु कोई बिरला ही गुरमुख बनकर इस रहस्य को जान पाता है।। १ ।। रहाउ।। व्यक्ति उसे पास नहीं देखता परन्तु दूसरों के घरों की ओर भागता है। वह धन चुराता है और झूठ का व्यवहार करते हुए ही उसे खाता रहता है। माया रूपी ठगबूटी खाकर उसने प्रभु को अपने पास नहीं जाना है और इस प्रकार गुरु के बिना वह भ्रमों में भटका हुआ है।। २ ।। वह झूठ बोलता है और उसे पास नहीं समझता; इस प्रकार वह मूर्ख माया में लीन होकर ठगा जा रहा है। वास्तविक नाम रूपी वस्तु तो अन्दर ही है परन्तु व्यक्ति उसके लिए देश-देशान्तरों में जाकर भटकता है; गुरु-विहीन बनकर वह भ्रमों में ही भटक रहा है।। ३ ।। जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखा है वही सच्चे गुरु प्रभु का सुमिरन करता है और उसके मन के दरवाजे खुल जाते हैं। अन्दर बाहर और पास में वह प्रभु ही है तथा दास नानक का यह कथन है कि वह कहीं भी आता या जाता नहीं।। ४ ।। ३ ।। १६ ।। भैरउ महला ५ ।। जिसे तू बचा लेता है उसे भला कौन मार सकता है; हे प्रभु, यह सारा संसार तेरे ही अन्दर है। यह जीव अनेकों उपाय सोचता है परन्तु होता वही है जो यह कौतुक करने वाला प्रभु करता है।। १ ।। हे प्रभु, हम तेरी शरण और तेरे द्वार पर हैं। कृपा करके हमारी रक्षा करो।। १ ।। रहाउ।। जिन्होंने सुख देने वाले उस निर्भय प्रभु का सुमिरन किया है उन्होंने अपना भय दूर कर उस एक प्रभु को पहचान लिया है। हे प्रभु, जो तू करता है वही बार-बार होता है दूसरा कोई भी हमें मारने या बचाने वाला नहीं।। २ ।। हे जीव, तू अपने स्वभाव के अनुसार ही क्या सोचता रहता है। वह अन्तर्यामी सब कुछ जानने वाला सर्वव्यापक है। वह एक ही सबका आधार और सदैव बना रहने वाला आसरा है तथा वह सृजनहार प्रभु सब कुछ जानता है।। ३ ।।

नदरि करे करतारु ॥ तिसु जन के सभि काज सवारि ॥ तिस का राखा एको सोइ ॥ जन नानक अपड़ि न साकै कोइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ तउ कड़ीऐ जे होवै बाहरि ॥ तउ कड़ीऐ जे विसरै नरहरि ॥ तउ कड़ीऐ जे दूजा भाए ॥ किआ कड़ीऐ जां रहिआ समाए ॥ १ ॥ माइआ मोहि कड़े कड़ि पचिआ ॥ बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तउ कड़ीऐ जे दूजा करता ॥ तउ कड़ीऐ जे अनिआइ को मरता ॥ तउ कड़ीऐ जे किछु जाणै नाही ॥ किआ कड़ीऐ जां भरपूरि समाही ॥ २ ॥ तउ कड़ीऐ जे किछु होइ धिङाणै ॥ तउ कड़ीऐ जे भूलि रंञाणै ॥ गुरि कहिआ जो होइ सभु प्रभ ते ॥ तब काड़ा छोडि अचिंत हम सोते ॥ ३ ॥ प्रभ तूहै ठाकुरु सभु को तेरा ॥ जिउ भावै तिउ करहि निबेरा ॥ दुतीआ नासति इकु रहिआ समाइ ॥ राखहु पैज नानक सरणाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ बिनु बाजे कैसो निरतिकारी ॥ बिनु कंठै कैसे गावनहारी ॥ जील बिना कैसे बजै रबाब ॥ नाम बिना बिरथे सभि काज ॥ १ ॥ नाम बिना कहहु को तरिआ ॥ बिनु सतिगुर कैसे पारि परिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु जिहवा कहा को बकता ॥ बिनु स्रवना कहा को सुनता ॥ बिनु नेत्रा कहा को पेखै ॥ नाम बिना नरु कही न लेखै ॥ २ ॥ बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ बिनु अमरै कैसे राज मंडित ॥ बिनु बूझे कहा मनु ठहराना ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना ॥ ३ ॥ बिनु बैराग कहा बैरागी ॥ बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी ॥ बिनु बसि पंच कहा मन चूरे ॥ नाम बिना सद सद ही झूरे ॥ ४ ॥ बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु ॥ बिनु पेखे कहु कैसो धिआनु ॥ बिनु भै कथनी सरब बिकार ॥ कहु नानक दर का बीचार ॥ ५ ॥ ६ ॥ १९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ काम रोगि मैगलु बसि लीना ॥ द्रिसटि रोगि पचि मुए पतंगा ॥ नाद रोगि खपि गए कुरंगा ॥ १ ॥ जो जो दीसै सो सो रोगी ॥ रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥ बासन रोगि भवरु बिनसानो ॥ हेत रोग का सगल संसारा ॥ त्रिबिधि रोग महि बधे बिकारा ॥ २ ॥ रोगे मरता रोगे जनमै ॥ रोगे

वह कर्ता प्रभु जिस पर कृपादृष्टि करता है उस सेवक के सभी काम बन जाते हैं। उस सेवक का रक्षक वह एक प्रभु ही है और हे दास नानक, उस तक कोई भी नहीं पहुँच सकता।। ४ ।। ४ ।। १७ ।। भैरउ महला ५ ।। दुखी तो हम तब हों जब वह प्रभु कहीं बाहर हो, दुखी तो हम तब हों जब वह प्रभु हमें विस्मृत हो जाए, दुखी तो हम तब होते हैं जब हम द्वैतभाव में पड़ जाते हैं। जब हम उसे सभी में लीन मान लेते हैं तो फिर भला हम कैसे दुखी बने रह सकते हैं।। १ ।। यह जीव माया मोह में जलता हुआ अंततः नष्ट हो गया है तथा प्रभु-नाम से विहीन होकर भटकते-भटकते यह मरता खपता रहता है।। १ ।। रहाउ।। दुखी तो हम तब होते हैं जब हम प्रभु के अतिरिक्ति किसी अन्य को कर्ता मानते हैं; हम तब भी दुखी होते हैं जब हम यह जानते हैं कि कोई उसके हुकुम के बाहर दुखी होकर मर रहा है अर्थात सब कुछ उसके हुकुम के अन्तर्गत ही होता है। हम तब दुखी होते हैं जब उस प्रभु के बारे में कुछ भी नहीं जानते। जब वह भरपूर रूप से सबमें समाहित है तो फिर भला हमें दुखी होने की क्या जरूरत है।। २ ।। यदि कहीं जोर ज़बरदस्ती हो रही हो तब भी हम दुखी होते है; यदि कोई गलती से किसी को तंग करता हो तब भी हम दुखी होते है। गुरु ने यह बताया है कि जो कुछ भी हो रहा है वह सब प्रभु के द्वारा ही हो रहा है। जब यह समझ आ जाती है तो दुख छोड़कर हम निश्चिंत होकर सोते हैं।। ३ ।। हे प्रभु, सब तेरे ही हैं और तू सबका मालिक है इसलिए जैसा तुझे अच्छा लगता है तू हमारे कार्य निपटाता है। दूसरा कोई भी नहीं है केवल वह एक ही सबमें समाया है। मेरी इज्जत बचा लो क्योंकि नानक तो तुम्हारी शरण में आ पड़ा है।। ४ ।। ५ ।। १८ ।। भैरउ महला ५ ।। वाद्य के बिना नृत्य कैसे हो सकता है और गले के बिना गाने वाली क्या कर सकती है। तीखा स्वर निकालने वाली छोटी तार (ज़ील=ज़ीर) के बिना रबाब कैसे बज सकती है। इसी प्रकार प्रभु-नाम के बिना सभी काम व्यर्थ हैं।। १ ।। बताओ नाम के बिना कौन पार उतर सका है और सच्चे गुरु के बिना कौन पार जा सका है।। १ ।। रहाउ।। जीभ के बिना कौन बोल सकता है, कानों के बिना कौन सुन सकता है, आँखों के बिना कौन देख सकता है। इसी प्रकार प्रभु के बिना मनुष्य किसी भी काम का नहीं रहता।। २ ।। विद्या से बिना भला कौन पंडित हो सकता है और हुकुम देने की शक्ति के बिना भला राजा की क्या शोभा हो सकती है। बिना उसको समझे मन कैसे स्थिर हो सकता है तथा प्रभु-नाम के बिना तो सारा संसार ही पागल बना बैठा है।। ३ ।। वास्तविक वैराग्य के बिना भला किसे बैरागी कहा जा सकता है और अहंकार को त्यागे बिना कैसे कोई त्यागी हो सकता है। पाँचों विकारों को वश में किए बिना मन का मर्दन करके कैसे उसको वश में किया जा सकता है। प्रभु-नाम के बिना सदैव पछतावा ही पछतावा होता है।। ४ ।। गुरु के उपदेश के बिना ज्ञान कैसे हो सकता है और अन्तर्दृष्टि के बिना ध्यान कैसे लग सकता है। प्रभु के भय (अनुशासन) के बिना सब कुछ कहा हुआ विकार मात्र ही है। इसलिए हे नानक, उस प्रभु के द्वार के चिंतन का कथन करता रह।। ५ ।। ६ ।। १६ ।। भैरउ महला ५ ।। अहंकार का रोग मनुष्य को दिया गया है और काम रोग से पीड़ित होकर हाथी व्यक्तियों के वश में आ जाता है। दृष्टि रोग के कारण पतंगे जल मरते हैं और हिरण नाद के मोह के रोग के कारण पकड़ा जाता है और मार डाला जाता है।। १ ।। जो जो भी दिखाई दे रहा है वह रोगी ही है। रोग से विहीन तो मेरा वह परम योगी सच्चा गुरु प्रभु ही है।। १ ।। रहाउ।। जीभ के स्वाद के रोग में पड़ी हुई मछली पकड़ी जाती है और गंध रोग से पीड़ित भँवरा नष्ट हो जाता है। मोह के रोग में तो सारा संसार ही रोगी बना हुआ है और तीन गुणों के रोग में पड़े इस संसार के विकार हमेशा बढ़ते ही रहते हैं।। २ ।। रोग में ही उसका जन्म होता है रोग में ही यह मरता है तथा रोगों में ही

फिरि फिरि जोनी भरमै ॥ रोग बंध रहनु रती न पावै ॥ बिनु सतिगुर रोगु कतहि न जावै ॥ ३ ॥ पारब्रहमि जिसु कीनी दइआ ॥ बाह पकड़ि रोगहु कढि लइआ ॥ तूटे बंधन साधसंगु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ २० ॥ भैरउ महला ५ ॥ चीति आवै तां महा अनंद ॥ चीति आवै तां सभि दुख भंज ॥ चीति आवै तां सरधा पूरी ॥ चीति आवै तां कबहि न झूरी ॥ १ ॥ अंतरि राम राइ प्रगटे आइ ॥ गुरि पूरै दीओ रंगु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चीति आवै तां सरब को राजा ॥ चीति आवै तां पूरे काजा ॥ चीति आवै तां रंगि गुलाल ॥ चीति आवै तां सदा निहाल ॥ २ ॥ चीति आवै तां सद धनवंता ॥ चीति आवै तां सद निभरंता ॥ चीति आवै तां सभि रंग माणे ॥ चीति आवै तां चूकी काणे ॥ ३ ॥ चीति आवै तां सहज घरु पाइआ ॥ चीति आवै तां सुंनि समाइआ ॥ चीति आवै सद कीरतनु करता ॥ मनु मानिआ नानक भगवंता ॥ ४ ॥ ८ ॥ २१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ बापु हमारा सद चरंजीवी ॥ भाई हमारे सद ही जीवी ॥ मीत हमारे सदा अबिनासी ॥ कुटंबु हमारा निज घरि वासी ॥ १ ॥ हम सुखु पाइआ तां सभहि सुहेले ॥ गुरि पूरै पिता संगि मेले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंदर मेरे सभ ते ऊचे ॥ देस मेरे बेअंत अपूछे ॥ राजु हमारा सद ही निहचलु ॥ मालु हमारा अखूटु अबेचलु ॥ २ ॥ सोभा मेरी सभ जुग अंतरि ॥ बाज हमारी थान थनंतरि ॥ कीरति हमरी घरि घरि होई ॥ भगति हमारी सभनी लोई ॥ ३ ॥ पिता हमारे प्रगटे माझ ॥ पिता पूत रलि कीनी सांझ ॥ कहु नानक जउ पिता पतीने ॥ पिता पूत एकै रंगि लीने ॥ ४ ॥ ९ ॥ २२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निरवैर पुरख सतिगुर प्रभ दाते ॥ हम अपराधी तुम्ह बखसाते ॥ जिसु पापी कउ मिलै न ढोई ॥ सरणि आवै तां निरमलु होई ॥ १ ॥ सुखु पाइआ सतिगुरू मनाइ ॥ सभ फल पाए गुरू धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहम सतिगुर आदेसु ॥ मनु तनु तेरा सभु तेरा देसु ॥ चूका पड़दा तां नदरी आइआ ॥ खसमु तूहै सभना के राइआ ॥ २ ॥ तिसु भाणा सूके कासट हरिआ ॥ तिसु भाणा तां थल सिरि सरिआ ॥ तिसु भाणा तां सभि फल पाए ॥ चिंत गई

भटकता हुआ यह योनियों में भ्रमण करता रहता है। रोगों में बंधा यह कहीं भी स्थिर नहीं हो पाता और सच्चे गुरु के बिना कभी भी रोग समाप्त नहीं होता।। ३ ।। प्रभु ने जिस पर दया कर दी उसकी बाँह पकड़कर वह उसे रोगों से बाहर निकाल लेता है। साधसंगति को पाकर उसके बंधन टूट जाते हैं और नानक का कथन है कि गुरु उसके रोग मिटा देता है।। ४ ।। ७ ।। २० ।। भैरउ महला ५ ।। वह मन में याद रहे तो महा आनन्द प्राप्त होता है और वह मन में याद रहे तो सभी दुख नष्ट हो जाते हैं। वह मन में याद रहे तो श्रद्धा पूर्ण हो जाती है और यदि वह याद बना रहे तो कभी भी पश्चाताप नहीं करना पड़ता।। १ ।। पूर्ण गुरु ने जब उसके साथ प्रेम लगा दिया तो अन्तर्मन में वह प्रभु प्रकट हो उठा है।। १ ।। रहाउ।। यदि वह चित्त में याद आता रहे तो व्यक्ति सबका राजा बन जाता है और उसकी याद बनी रहने से सभी काम पूरे हो जाते हैं। उसकी याद आने से प्रेम का पक्का लाल रंग चढ़ जाता है और उसकी याद बनी रहने से व्यक्ति सदैव प्रसन्न बना रहता है।। २ ।। यदि वह याद आता रहे तो व्यक्ति सदैव धनवान बना रहता है और उसका चित्त में सुमिरन करते रहने से जीव भ्रमों से रहित हो जाता है। यदि उसकी याद बनी रहे तो जीव सब प्रकार के आनन्द का भोग करता है और उसकी याद बनी रहने से किसी की मोहताजी नहीं रहती।। ३ ।। उसकी याद बनी रहने से सबसे ऊँची अवस्था स्वाभाविक रूप से ही प्राप्त हो जाती है और यदि वह चित्त में बना रहे तो व्यक्ति शून्य रूपी परब्रह्म में लीन हो जाता है। यदि वह याद आता रहे तो व्यक्ति सदैव उसकी कीर्ति का गायन करता रहता है और हे नानक, उसका मन प्रभु में लीन होकर सन्तुष्ट हो जाता है।। ४ ।। ८ ।। २१ ।। भैरउ महला ५ ।। हमारा पिता प्रभु निरन्तर चिरंजीव बना रहता है और हमारे संगी साथी भी सदैव आध्यात्मिक तौर पर जीवित बने रहते हैं। हमारे मित्र सदैव के लिए अविनाशी हो जाते हैं और हमारा परिवार अपने मूल घर अर्थात परमात्मा में निवास बना लेता है।।१।। जब हमने सुख प्राप्त कर लिया तो हमारे सभी संगी साथी भी सुखी हो गए हैं। पूर्ण गुरु ने हमें उस पिता प्रभु के साथ मिला दिया है।। १ ।। रहाउ।। मेरे महल अब सबसे ऊँचे हो गए हैं और मेरे देश-परदेश अनन्त और किसी पूछताछ से रहित हो गए हैं। अब हमारा राज सदैव अटल बना रहने वाला हो गया है और हमारा धन माल भी अक्षय और अविचल बन गया है।। २ ।। सभी युगों में मेरी महिमा हो गई है और देश-देशान्तरों में हमारी प्रसिद्धि हो गई है। पिता प्रभु की कृपा से हमारी प्रसिद्धि और यश घर-घर में हो गया है और हमारी भक्ति ने सभी लोकों को प्रभावित कर दिया है।। ३ ।। हमारे पिता प्रभु हमारे हृदय में प्रकट हो गए हैं और पिता और पुत्र ने मिलकर आपस में साझेदारी कर ली है। नानक का कथन है कि यदि पिता प्रसन्न हो गया तो पिता और पुत्र दोनों एक ही प्रेम के रंग में रंगे हुए हैं।। ४ ।। ६ ।। २२ ।। भैरउ महला ५ ।। हे दाता और सच्चे गुरु प्रभु, तुम शत्रु भाव से विहीन परम पुरुष हो और हम अपराधी हैं तथा तुम हमें माफ करने वाले हो। जिस पापी को कहीं भी आसरा नहीं मिलता यदि वह तुम्हारी शरण में आ जाए तो वह भी पवित्र हो जाता है।। १ ।। सच्चे गुरु को मनाकर हमने सुख प्राप्त कर लिया है और गुरु की आराधना करके हमने सभी फल प्राप्त कर लिए हैं।। १ ।। रहाउ।। हे परब्रह्म सच्चे गुरु, तुझे प्रणाम है; यह मन, तन तेरा ही है और यह सारा देश भी तेरा ही है। जब भ्रम का पर्दा उठ गया तभी हमें यह दिखाई दिया कि हे राजाओं के राजा प्रभु, तू ही सबका मालिक है।। २ ।। यदि उसे भा जाए तो सूखी लकड़ी भी हरी हो जाती है और यदि उसे अच्छा लगे तो सूखी धरती पर भी सरोवर बन जाते हैं। उसे अच्छा लगे तो सभी फल प्राप्त होते हैं और

लगि सतिगुर पाए ॥ ३ ॥ हरामखोर निरगुण कउ तूठा ॥ मनु तनु सीतलु मनि अंम्रितु वूठा ॥ पारब्रहम गुर भए दइआला ॥ नानक दास देखि भए निहाला ॥ ४ ॥ १० ॥ २३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु मेरा बेमुहताजु ॥ सतिगुर मेरे सचा साजु ॥ सतिगुरु मेरा सभस का दाता ॥ सतिगुरु मेरा पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ गुर जैसा नाही को देव ॥ जिसु मसतकि भागु सु लागा सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मेरा सरब प्रतिपालै ॥ सतिगुरु मेरा मारि जीवालै ॥ सतिगुर मेरे की वडिआई ॥ प्रगटु भई है सभनी थाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मेरा ताणु निताणु ॥ सतिगुरु मेरा घरि दीबाणु ॥ सतिगुर कै हउ सद बलि जाइआ ॥ प्रगटु मारगु जिनि करि दिखलाइआ ॥ ३ ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु भउ न बिआपै ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै ॥ नानक सोधे सिंम्रिति बेद ॥ पारब्रहम गुर नाही भेद ॥ ४ ॥ ११ ॥ २४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु लैत मनु परगटु भइआ ॥ नामु लैत पापु तन ते गइआ ॥ नामु लैत सगल पुरबाइआ ॥ नामु लैत अठसठि मजनाइआ ॥ १ ॥ तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ गुरि उपदेसिआ ततु गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु लैत दुखु दूरि पराना ॥ नामु लैत अति मूड़ सुगिआना ॥ नामु लैत परगटि उजीआरा ॥ नामु लैत छुटे जंजारा ॥ २ ॥ नामु लैत जमु नेड़ि न आवै ॥ नामु लैत दरगह सुखु पावै ॥ नामु लैत प्रभु कहै साबासि ॥ नामु हमारी साची रासि ॥ ३ ॥ गुरि उपदेसु कहिओ इहु सारु ॥ हरि कीरति मन नामु अधारु ॥ नानक उधरे नाम पुनहचार ॥ अवरि करम लोकह पतीआर ॥ ४ ॥ १२ ॥ २५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नमसकार ता कउ लख बार ॥ इहु मनु दीजै ता कउ वारि ॥ सिमरनि ता कै मिटहि संताप ॥ होइ अनंदु न विआपहि ताप ॥ १ ॥ ऐसो हीरा निरमल नाम ॥ जासु जपत पूरन सभि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा की द्रिसटि दुख डेरा ढहै ॥ अंम्रित नामु सीतलु मनि गहै ॥ अनिक भगत जा के चरन पूजारी ॥ सगल मनोरथ पूरनहारी ॥ २ ॥ खिन महि ऊणे सुभर भरिआ ॥ खिन महि सूके कीने हरिआ ॥ खिन महि निथावे कउ दीनो थानु ॥ खिन

सच्चे गुरु के चरणों में लगकर हमारी चिंता समाप्त हो जाती है।। ३ ।। वह प्रभु गुण-विहीन और हरामखोरों पर भी जब प्रसन्न होता है तो अमृत उनके हृदय में बस जाता है और उनका मन तन शीतल हो जाता है। परब्रह्म गुरु हम पर दयालु हो गए हैं और नानक तो उनके सेवकों को देखकर भी प्रसन्न हो उठा है।। ४ ।। १० ।। २३ ।। भैरउ महला ५ ।। मेरा सच्चा गुरु किसी का मोहताज नहीं हैं और मेरे सच्चे गुरु का सारा कार्य व्यापार भी सच्चा है। मेरा सच्चा गुरु सब को देने वाला दाता है और वह विधाता प्रभु ही मेरा सच्चा गुरु है।। १ ।। गुरु जैसा अन्य देवता कोई भी नहीं है और जिसके माथे पर भाग्य लेख है वही उसकी सेवा में लीन होता है।। १ ।। रहाउ।। मेरा सच्चा गुरु सबका पालन-पोषण करता है और मेरा सच्चा गुरु प्रभु मारकर भी जीवित बनाए रखता है। मेरे सच्चे गुरु की शोभा सभी स्थानों पर प्रकट हो उठी है।। २ ।। मुझ बलहीन का बल भी मेरा सच्चा गुरु ही है और सच्चा गुरु ही मेरा घर और वह आसरा है जहाँ मैं फरियाद कर सकता हूँ। जिसने साफ रास्ता मुझे दिखा दिया है मैं उस सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ।। ३ ।। जिन्होंने गुरु का सुमिरन किया है उन्हें किसी प्रकार का भी भय नही होता ; गुरु का सुमिरन करने वाले को कोई भी दुख अथवा संताप नहीं प्रभावित करता। नानक ने तो वेदों और स्मृतियों को भी खोज डाला है और पाया है कि परब्रह्म और गुरु एक ही है; इनमें कोई भेद नहीं है।। ४ ।। ११ ।। २४ ।। भैरउ महला ५ ।। उसका नाम लेते ही वह मन में अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गया तथा उसके नाम का सुमिरन करते ही मेरे शरीर का पाप नष्ट हो गया। उसके नाम का सुमिरन करते ही सभी पर्वों का फल प्राप्त हो जाता है तथा उसके नाम का सुमिरन करने से प्राणी अड़सठ तीर्थों का मानो स्नान कर लेता है।। १ ।। गुरु ने यह तत्व ज्ञान हमें बताया है कि प्रभु का नाम ही हमारा तीर्थ स्नान है।। १ ।। रहाउ।। उसका नाम लेने से दुख दूर हो गया है और उसके नाम के सुमिरन से अत्यन्त मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानवान हो जाता है। उसके सुमिरन से अन्दर बाहर उज्जवल हो जाता है और उसके नाम के सुमिरन से हमारे जंजाल नष्ट हो जाते हैं।। २ ।। प्रभु के नाम के सुमिरन से यम पास भी नहीं आता और उसका नाम लेने भर से प्रभु के दरबार में सुख पाया जाता है। नाम लेने वाले को प्रभु शाबाश कहता है और नाम ही वास्तव में हमारी सच्ची रासपूंजी है।। ३ ।। सारतत्व रूप में गुरु ने हमें यही उपदेश दिया है कि प्रभु का गुणानुवाद और प्रभु का नाम ही मन का आसरा है। हे नानक, ऐसा मानने से नाम के माध्यम से प्रायश्चित आदि कर्मों से जीव का बचाव होकर उद्धार हो जाता है। अन्य सभी कर्म तो केवल लोगों को ही खुश करने के लिए होते हैं।। ४ ।। १२ ।। २५ ।। भैरउ महला ५ ।। उस प्रभु को लाखों बार प्रणाम है और मैं यह मन उस पर कुर्बान करता हूँ। उस प्रभु के सुमिरन से ही संताप मिटते हैं और जीव आनन्दित बना रहता है तथा उसे कोई भी दुख प्रभावित नहीं करता।। १ ।। प्रभु का निर्मल नाम इस प्रकार का हीरा है कि जिसका जाप करने से सभी काम पूरे हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। जिसकी कृपादृष्टि से दुखों का समूह नष्ट हो जाता है वही अमृत नाम मन को शीतल करने के लिए पकड़े रखना चाहिए। अनेकों भक्त उस नाम और नामी के चरणों की पूजा करते हैं क्योंकि वही सभी उद्देश्यो को पूर्ण करने वाला है।। २ ।। क्षण भर में ही वह खाली सरोवरों को पूरा भर देता है और क्षण भर में ही वह सूखे हुए स्थलों को हरा-भरा कर देता है। क्षण भर में ही वह निराश्रित व्यक्ति को आसरा देता है और क्षण भर में

महि निमाणे कउ दीनो मानु ॥ ३ ॥ सभ महि एकु रहिआ भरपूरा ॥ सो जापै जिसु सतिगुरु पूरा ॥ हरि कीरतनु ता को आधारु ॥ कहु नानक जिसु आपि दइआरु ॥ ४ ॥ १३ ॥ २६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ मोहि दुहागनि आपि सीगारी ॥ रूप रंग दे नामि सवारी ॥ मिटिओ दुखु अरु सगल संताप ॥ गुर होए मेरे माई बाप ॥ १ ॥ सखी सहेरी मेरै ग्रसति अनंद ॥ करि किरपा भेटे मोहि कंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपति बुझी पूरन सभ आसा ॥ मिटे अंधेर भए परगासा ॥ अनहद सबद अचरज बिसमाद ॥ गुरु पूरा पूरा परसाद ॥ २ ॥ जा कउ प्रगट भए गोपाल ॥ ता कै दरसनि सदा निहाल ॥ सरब गुणा ता कै बहुतु निधान ॥ जा कउ सतिगुरि दीओ नामु ॥ ३ ॥ जा कउ भेटिओ ठाकुरु अपना ॥ मनु तनु सीतलु हरि हरि जपना ॥ कहु नानक जो जन प्रभ भाए ॥ ता की रेनु बिरला को पाए ॥ ४ ॥ १४ ॥ २७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ चितवत पाप न आलकु आवै ॥ बेसुआ भजत किछु नह सरमावै ॥ सारो दिनसु मजूरी करै ॥ हरि सिमरन की वेला बजर सिरि परै ॥ १ ॥ माइआ लगि भूलो संसारु ॥ आपि भुलाइआ भुलावणहारै राचि रहिआ बिरथा बिउहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पेखत माइआ रंग बिहाइ ॥ गड़बड़ करै कउडी रंगु लाइ ॥ अंध बिउहार बंध मनु धावै ॥ करणैहारु न जीअ महि आवै ॥ २ ॥ करत करत इव ही दुखु पाइआ ॥ पूरन होत न कारज माइआ ॥ कामि क्रोधि लोभि मनु लीना ॥ तड़फि मूआ जिउ जल बिनु मीना ॥ ३ ॥ जिस के राखे होए हरि आपि ॥ हरि हरि नामु सदा जपु जापि ॥ साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ अपणी दइआ करे सो पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ साच सबदु हिरदे मन माहि ॥ जनम जनम के किलविख जाहि ॥ १ ॥ राम नामु जीअ को आधारु ॥ गुर परसादि जपहु नित भाई तारि लए सागर संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ लिखिआ हरि एहु निधानु ॥ से जन दरगह पावहि मानु ॥ सूख सहज आनंद गुण गाउ ॥ आगै मिलै निथावे थाउ ॥ २ ॥ जुगह जुगंतरि इहु ततु सारु ॥ हरि सिमरणु

ही वह सम्मानहीन को सम्मान दिला देता है।। ३ ।। वह एक ही सबमें परिपूर्ण रूप से व्याप्त है और वही उसका सुमिरन करता है जिसका पूर्ण सच्चा गुरु होता है। नानक कहता है कि जिस पर वह स्वयं दयालु हो जाता है प्रभु का गुणानुवाद ही उसका आसरा बन जाता है।। ४ ।। १३ ।। २६ ।। भैरउ महला ५ ।। मुझ दुहागिन (बुरे कर्मो वाली स्त्री) को तूने ही शृंगार करके रूप रंग देकर प्रभु-नाम के माध्यम से सँवार दिया है। मेरा दुख और सारा संताप उस समय मिट गया है जब गुरु प्रभु ही मेरे माँ-बाप बन गया है ।। १ ।। हे सखी सहेलियो, मेरे घर में आनन्द बन गया है क्योंकि कृपालु होकर मेरे पति प्रभु मुझे मिल गए हैं।। १ ।। रहाउ।। मेरी जलन बुझ गई है, आशापूर्ण हो गई है, अंधकार मिट गया है और चारों और प्रकाश ही प्रकाश हो गया है। पूर्ण गुरु ही पूर्ण कृपा के माध्यम से अब अनहद शब्द और आश्चर्यपूर्ण आनन्द चारों ओर फैल गया है।। २ ।। वह प्रभु जिसमें प्रकट हो उठा है उसके दर्शन करके मैं सदैव प्रसन्न बना रहता हूँ। जिसको सच्चे गुरु ने प्रभु नाम का रहस्य समझा दिया है उसको हर प्रकार के गुणों के बहुत से भण्डार प्राप्त हो गए हैं।। ३ ।। जिसे अपना मालिक मिल गया है उसका मन तन शीतल हो गया है और अब वह प्रभु-नाम का ही जाप करता रहता है। नानक का कथन है कि जो सेवक प्रभु को भा जाते हैं उनकी चरणधूलि किसी बिरले को ही प्राप्त होती है।। ४ ।। १४ ।। २७ ।। भैरउ महला ५ ।। पाप के लिए सोचते समय व्यक्ति को जरा भी आलस्य नहीं होता। वेश्याओं की तरफ भागते और इन्हें भोगते हुए भी वह जरा भी नहीं शरमाता। वह सारा दिन धन इकट्ठा करने हेतु मजदूरी करता है परन्तु प्रभु का सुमिरन करते समय उसके सिर पर मानो वज्र ही आ गिरता है अर्थात मानो वह मर ही जाता है।। १ ।। माया के पीछे लगकर यह सारा संसार भूला हुआ भटक रहा है परन्तु उस भटकाने वाले ने ही इसे भटकाया है और यह संसार भी व्यर्थ के कामों में लीन बना है।। १ ।। रहाउ।। धन-धौलत को देखते हुए ही इसकी आयु का रंग बदल जाता है अर्थात जवानी से बुढ़ापा आ जाता है। एक कौड़ी से भी पूरा प्रेम दिखाते हुए उसके लालच में हिसाब-किताब में भी गड़बड़ करता रहता है। अन्धे व्यवहार में बंधा इसका मन दौड़ता रहता है और इसके हृदय में वह कर्ता प्रभु कभी भी याद नहीं आता।। २ ।। यही सब करते-करते इसने अनेकों दुख प्राप्त किए हैं परन्तु धन-धौलत के इसके काम फिर भी पूरे नहीं होते। काम, क्रोध और लोभ में इसका मन लीन बना रहता है और यह ऐसे तड़प-तड़प कर मर रहा है जैसे जल के बिना मछली मरती है।। ३ ।। प्रभु जिसका स्वयं रक्षक बन जाता है वह सदैव प्रभु के नाम का ही सुमिरन करता रहता है। साधसंगति में जिसने भी प्रभु के गुणों का गायन किया है हे नानक, उसने पूर्ण सच्चा गुरु प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। १५ ।। २८ ।। भैरउ महला ५ ।। जिस पर प्रभु स्वयं दया करता है वही उसे प्राप्त करता है और प्रभु का नाम उसके मन में बस जाता है। जिसके मन और हृदय में सच्चा शब्द बस जाता है उसके जन्मों-जन्मों के पाप समाप्त हो जाते हैं।। १ ।। यह प्रभु-नाम ही व्यक्ति के प्राणों का आधार है इसलिए हे भाई, गुरु की कृपा से इसका सदैव सुमिरन करो ताकि संसार सागर से यह पार उतार ले।। १ ।। रहाउ।। यह भण्डार प्रभु ने जिसके माथे के लेखों में लिख दिया है ऐसे व्यक्ति प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करते रहते हैं। स्वाभाविक रूप से सुखी और आनन्दित बने रहकर उसके गुण गाते रहो जिससे प्रभु दरबार में सभी आश्रयों से विहीन लोगों को भी स्थान मिल जाता है।। २ ।। युगों-युगान्तरों से यही सार तत्व रहा है कि प्रभु का सुमिरन ही

साचा बीचारु ॥ जिसु लड़ि लाइ लए सो लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ ३ ॥ तेरे भगत भगतन का आपि ॥ अपणी महिमा आपे जापि ॥ जीअ जंत सभि तेरै हाथि ॥ नानक के प्रभ सद ही साथि ॥ ४ ॥ १६ ॥ २९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै अंतरजामी ॥ नामु हमारै आवै कामी ॥ रोमि रोमि रविआ हरि नामु ॥ सतिगुर पूरै कीनो दानु ॥ १ ॥ नामु रतनु मेरै भंडार ॥ अगम अमोला अपर अपार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारै निहचल धनी ॥ नाम की महिमा सभ महि बनी ॥ नामु हमारै पूरा साहु ॥ नामु हमारै बेपरवाहु ॥ २ ॥ नामु हमारै भोजन भाउ ॥ नामु हमारै मन का सुआउ ॥ नामु न विसरै संत प्रसादि ॥ नामु लैत अनहद पूरे नाद ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते नामु नउ निधि पाई ॥ गुर किरपा ते नाम सिउ बनि आई ॥ धनवंते सेई परधान ॥ नानक जा कै नामु निधान ॥ ४ ॥ १७ ॥ ३० ॥ भैरउ महला ५ ॥ तू मेरा पिता तूहै मेरा माता ॥ तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता ॥ तू मेरा ठाकुरु हउ दासु तेरा ॥ तुझ बिनु अवरु नही को मेरा ॥ १ ॥ करि किरपा करहु प्रभ दाति ॥ तुम्हरी उसतति करउ दिन राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम तेरे जंत तू बजावनहारा ॥ हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा ॥ तउ परसादि रंग रस माणे ॥ घट घट अंतरि तुमहि समाणे ॥ २ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥ साधसंगि तुमरे गुण गाउ ॥ तुम्हरी दइआ ते होइ दरद बिनासु ॥ तुमरी मइआ ते कमल बिगासु ॥ ३ ॥ हउ बलिहारि जाउ गुरदेव ॥ सफल दरसनु जा की निरमल सेव ॥ दइआ करहु ठाकुर प्रभ मेरे ॥ गुण गावै नानकु नित तेरे ॥ ४ ॥ १८ ॥ ३१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सदा सदा ता कउ जोहारु ॥ ऊचे ते ऊचा जा का थान ॥ कोटि अघा मिटहि हरि नाम ॥ १ ॥ तिसु सरणाई सदा सुखु होइ ॥ करि किरपा जा कउ मेलै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा के करतब लखे न जाहि ॥ जा का भरवासा सभ घट माहि ॥ प्रगट भइआ साधू कै संगि ॥ भगत अराधहि अनदिनु रंगि ॥ २ ॥ देदे तोटि नही भंडार ॥ खिन महि थापि उथापनहार ॥ जा का हुकमु न मेटै कोइ ॥ सिरि पातिसाहा साचा सोइ ॥ ३ ॥ जिस

सच्चा चिंतन और जीवन मार्ग है। जिन्हें प्रभु ने अपना पल्लू थमा दिया है वे ही उसके साथ लीन हो गए है और जन्मों-जन्मों का सोया हुआ उनका भाग्य जाग उठा है।। ३ ।। हे प्रभु, भक्त तेरे हैं और तू स्वयं भक्तजनों का है। अपनी महिमा का जाप तू स्वयं ही करवाता है। हे प्रभु, संसार के सारे जीव तेरे ही हाथ में हैं और प्रभु तो सदैव ही नानक के साथ बना हुआ है।। ४ ।। १६ ।। २६ ।। भैरउ महला ५ ।। नाम ही हमारे लिए अन्तर्यामी है और नाम ही हमारे काम आता है। प्रभु का नाम हमारे रोम-रोम में बस रहा है और सच्चे गुरु ने हमें वह दान स्वरूप दिया है।। १ ।। नाम रूपी रत्न मेरे लिए विशाल भण्डार है और वही अगम्य, अमूल्य एवं अपरम्पार है।। १ ।। रहाउ।। नाम ही हमारा अटल स्वामी है और नाम की महिमा ही सबमें बनी हुई है। नाम ही हमारे लिए पूर्ण साहूकार है और प्रभु-नाम ही हमारे लिए बेपरवाह है।। २ ।। हमारा भोजन और हमारा प्रेम भी प्रभु-नाम ही है और हमारे मन का वास्तविक प्रयोजन भी प्रभु-नाम ही है। शान्त पुरुषों की कृपा से प्रभु-नाम हमें कभी भी ना भूले क्योंकि नाम का सुमरिन करने से ही अनहद नाद बज उठता है।। ३ ।। प्रभु की कृपा से ही हमने नाम रूपी नौ निधियां प्राप्त कर ली हैं और गुरु की कृपा से ही हमारी प्रीति नाम से बन गई है। हे नानक, जिनके पास प्रभु-नाम का भण्डार है वे ही प्रधान है और वे ही धनवान हैं॥४॥१७॥३०॥ भैरउ महला ५ ।। तू ही मेरा पिता और तू ही मेरी माता है तथा तू ही मेरे प्राणों को सुख देने वाला दाता है। मेरा मालिक तू है और मैं तेरा दास हूँ तथा तेरे बिना अन्य कोई भी मेरा नहीं है।। १ ।। कृपा करके हे प्रभु, यह दान दे दो कि दिन रात मैं तुम्हारी ही स्तुति करता रहूँ।। १ ।। रहाउ।। हम तेरे यन्त्र हैं और तू ही उनको बजाने वाला है। हे दाता, हमें दान दे दो क्योंकि हम भिखारी तेरे ही हैं। तेरी कृपा से ही हम रस रंग भोगते हैं और हे प्रभु, तुम ही घट-घट में समाए हो।। २ ।। तुम्हारी कृपा से ही तुम्हारे नाम का सुमिरन किया जाता है और साधसंगति में तुम्हारे ही गुण गाए जाते हैं। तुम्हारी दया से ही हमारी पीड़ाएँ विनष्ट होती हैं और तुम्हारी कृपा से ही हमारा हृदय कमल खिल उठता है।। ३ ।। मैं उस गुरुदेव पर बलिहारी जाता हूँ जिसका दर्शन फलदायक है और जिसकी सेवा भी पवित्र है। हे मेरे ठाकुर प्रभु, मुझ पर ऐसी दया करो कि नानक सदैव तेरे गुण गाता रहे।। ४ ।। १८ ।। ३१ ।। भैरउ महला ५ ।। जिसका दरबार सबसे ऊँचा है तू सदैव उसी को प्रणाम करता रह। जिसका स्थान ऊँचे से ऊँचा है उस प्रभु के नाम से करोड़ों पाप मिट जाते हैं।। १ ।। जिस पर कृपा करके प्रभु उसे अपने से मिला लेता है उसकी शरण में आने पर सदैव सुख प्राप्त होता रहता है।। १ ।। रहाउ।। जिसके नामों को समझा नहीं जा सकता और सबके हृदय में जिसका भरोसा है वह प्रभु साधु पुरुषों की संगति में प्रकट होता है। भक्तजन सदैव प्रेम पूर्वक उसकी आराधना करते रहते हैं।। २ ।। लगातार देते रहने से भी उसके भण्डार में कमी नहीं आती और वह क्षण भर में ही बनाकर बिगाड़ डालने वाला है। जिसके हुकुम को कोई नहीं मिटा सकता, सम्राटों का सम्राट वही सच्चा प्रभु है।। ३ ।। हमें जिसका

की ओट तिसै की आसा ॥ दुखु सुखु हमरा तिस ही पासा ॥ राखि लीनो सभु जन का पड़दा ॥ नानकु तिस की उसतति करदा ॥ ४ ॥ १९ ॥ ३२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ रोवनहारी रोजु बनाइआ ॥ बलन बरतन कउ सनबंधु चिति आइआ ॥ बूझि बैरागु करे जे कोइ ॥ जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥ १ ॥ बिखिआ का सभु धंधु पसारु ॥ विरलै कीनो नाम अधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिबिधि माइआ रही बिआपि ॥ जो लपटानो तिसु दूख संताप ॥ सुखु नाही बिनु नाम धिआए ॥ नाम निधानु बडभागी पाए ॥ २ ॥ स्वांगी सिउ जो मनु रीझावै ॥ स्वागि उतारिऐ फिरि पछुतावै ॥ मेघ की छाइआ जैसे बरतनहार ॥ तैसो परपंचु मोह बिकार ॥ ३ ॥ एक वसतु जे पावै कोइ ॥ पूरन काजु ताही का होइ ॥ गुर प्रसादि जिनि पाइआ नामु ॥ नानक आइआ सो परवानु ॥ ४ ॥ २० ॥ ३३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ संत की निंदा जोनी भवना ॥ संत की निंदा रोगी करना ॥ संत की निंदा दूख सहाम ॥ डानु दैत निंदक कउ जाम ॥ १ ॥ संतसंगि करहि जो बादु ॥ तिन निंदक नाही किछु सादु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत की निंदा कंधु छेदावै ॥ भगत की निंदा नरकु भुंचावै ॥ भगत की निंदा गरभ महि गलै ॥ भगत की निंदा राज ते टलै ॥ २ ॥ निंदक की गति कतहू नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खाहि ॥ चोर जार जूआर ते बुरा ॥ अणहोदा भारु निंदकि सिरि धरा ॥ ३ ॥ पारब्रहम के भगत निरवैर ॥ सो निसतरै जो पूजे पैर ॥ आदि पुरखि निंदकु भोलाइआ ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइआ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ३४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै बेद अरु नाद ॥ नामु हमारै पूरे काज ॥ नामु हमारै पूजा देव ॥ नामु हमारै गुर की सेव ॥ १ ॥ गुरि पूरै द्रिड़िओ हरि नामु ॥ सभ ते ऊतमु हरि हरि कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारै मजन इसनानु ॥ नामु हमारै पूरन दानु ॥ नामु लैत ते सगल पवीत ॥ नामु जपत मेरे भाई मीत ॥ २ ॥ नामु हमारै सउण संजोग ॥ नामु हमारै त्रिपति सुभोग ॥ नामु हमारै सगल आचार ॥ नामु हमारै निरमल बिउहार ॥ ३ ॥ जा कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ सगल जना की हरि हरि टेक ॥ मनि तनि नानक हरि गुण गाउ ॥ साधसंगि

आसरा है हम उसी का आसरा लगाए रहते हैं और हमारा सुख-दुख सब उसी के पास ही कहा जाता है। सभी सेवकों का पर्दा अर्थात इज़्ज़त वही बचाता है और नानक उसी का ही गुणानुवाद करता है।। ४ ।। १६ ।। ३२ ।। भैरउ महला ५ ।। रोने वाले ने तो रोज रोने का ही नियम बना लिया है और जीवन के कार्य व्यवहारों के सम्बन्धों की याद आते ही व्यक्ति रोने लगता है। परन्तु पूर्ण विचार सहित यदि कोई वैराग्यवान हो जाए तो उसे फिर जन्म-मरण का दुख नही उठाना पड़ता।। १ ।। सॉंसारिक धन्धों का प्रसार वास्तव में विष रूपी माया है और इसमें किसी बिरले ने ही प्रभु-नाम को आधार बनाया है।। १ ।। रहाउ।। त्रिगुणात्मक माया सबमें फैली है और जो इससे लिपटा रहता है उसी के अन्दर दुख और संताप बना रहता है। प्रभु-नाम की आराधना के बिना सुख प्राप्त नहीं होता परन्तु कोई बड़े भाग्य वाला ही प्रभु-नाम का सुखदायक भण्डार प्राप्त करता है।। २ ।। स्वांगी व्यक्ति को देखकर जो मन में खुश होता है वही उस समय पछताने लगता है जब स्वांगी अपना बहुरूपिए वाला स्वाँग उतार देता है। सॉंसारिक व्यवहार बादल की छाया के समान है और मोह तथा विकारों का प्रपंच भी वैसा ही है।। ३ ।। प्रभु-नाम रूपी एक ही वस्तु को यदि कोई पा जाए तो उसका सारा कार्य सफल हो जाता है। गुरु की कृपा से जिसने प्रभु-नाम पा लिया, हे नानक, उसका ही इस संसार में आना सफल है।। ४ ।। २० ।। ३३ ।। भैरउ महला ५ ।। शान्त पुरुषों की निन्दा योनियों में भ्रमण करवाती है और सन्त की निन्दा ही व्यक्ति को रोगी बना देती है। सन्त की निन्दा से ही दुख सहने पड़ते हैं और निन्दक व्यक्ति को यम दण्ड सहना पड़ता है।। १ ।। सन्त पुरुषों के साथ जो वाद-विवाद करते हैं ऐसे निन्दकों के जीवन में कोई रस नहीं होता।। १ ।। रहाउ।। भक्त की निन्दा तो निन्दक के शरीर को तोड़ देती है और भक्त की निन्दा ही नरक को भोगवाती है। भक्त की निन्दा जन्म-मरण के चक्र में दुखी करती रहती है और भक्त की निन्दा करने वाला अपने राज से भी नीचे आ गिरता है।। २ ।। निन्दक की मुक्ति तो कहीं नहीं होती क्योंकि वह जैसा बोता है उसे स्वयं ही खाना पड़ता है। चोर, व्यभिचारी और जुआरी से भी वह बुरा होता है और निन्दा कर करके व्यक्ति अपने चारों ओर दुख की रचना कर लेता है।। ३ ।। परब्रह्म प्रभु के भक्त तो शत्रु भाव से रहित होते हैं और वही व्यक्ति पार उतरता है जो इन भक्तों के चरणों की पूजा करता है। प्रभु ने भी निन्दक को भटकाया हुआ है परन्तु हे नानक, किए हुए कामों के संस्कारों के फल को मिटाया नहीं जा सकता।। ४ ।। २१ ।। ३४ ।। भैरउ महला ५ ।। प्रभु का नाम ही हमारे लिए वेद और नाद है और प्रभु का नाम ही हमारे कार्यों को पूरा करने वाला है। नाम ही हमारे लिए पूजा और देवता है और नाम का सुमिरन ही हमारे लिए गुरु की सेवा है। पूर्ण गुरु से हमने प्रभु-नाम को मन में पक्का किया है। हमारे लिए तो सबसे उत्तम काम प्रभु-नाम का सुमिरन ही है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु-नाम ही हमारे लिए पवित्र स्नान है और प्रभु-नाम का सुमिरन ही हमारे लिए पूर्णदान है। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं वे सभी पवित्र हो जाते हैं और प्रभु-नाम का सुमिरन करने वाले के सभी लोग अपने ही भाई और मित्र बन जाते हैं।। २ ।। प्रभु-नाम ही हमारे लिए शुभ शकुन और संयोग है और प्रभु-नाम से ही हम पूर्ण रूप से खा-पीकर तृप्त होते हैं। प्रभु-नाम ही हमारा सम्पूर्ण आचार है और प्रभु-नाम के कारण ही हमारा व्यवहार निर्मल बनता है।। ३ ।। जिसके हृदय में एक प्रभु बस गया है वह प्रभु ही सभी का आसरा और आधार बन गया है। साधसंगति में

जिसु देवै नाउ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ३५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निरधन कउ तुम देवहु धना ॥ अनिक पाप जाहि निरमल मना ॥ सगल मनोरथ पूरन काम ॥ भगत अपुने कउ देवहु नाम ॥ १ ॥ सफल सेवा गोपाल राइ ॥ करन करावनहार सुआमी ता ते बिरथा कोइ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोगी का प्रभ खंडहु रोगु ॥ दुखीए का मिटावहु प्रभ सोगु ॥ निथावे कउ तुम्ह थानि बैठावहु ॥ दास अपने कउ भगती लावहु ॥ २ ॥ निमाणे कउ प्रभ देतो मानु ॥ मूड़ मुगधु होइ चतुर सुगिआनु ॥ सगल भइआन का भउ नसै ॥ जन अपने कै हरि मनि बसै ॥ ३ ॥ पारब्रहम प्रभ सूख निधान ॥ ततु गिआनु हरि अंम्रित नाम ॥ करि किरपा संत टहलै लाए ॥ नानक साधू संगि समाए ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ संत मंडल महि हरि मनि वसै ॥ संत मंडल महि दुरतु सभु नसै ॥ संत मंडल महि निरमल रीति ॥ संतसंगि होइ एक परीति ॥ १ ॥ संत मंडलु तहा का नाउ ॥ पारब्रहम केवल गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत मंडल महि जनम मरणु रहै ॥ संत मंडल महि जमु किछू न कहै ॥ संतसंगि होइ निरमल बाणी ॥ संत मंडल महि नामु वखाणी ॥ २ ॥ संत मंडल का निहचल आसनु ॥ संत मंडल महि पाप बिनासनु ॥ संत मंडल महि निरमल कथा ॥ संतसंगि हउमै दुख नसा ॥ ३ ॥ संत मंडल का नही बिनासु ॥ संत मंडल महि हरि गुणतासु ॥ संत मंडल ठाकुर बिस्रामु ॥ नानक ओति पोति भगवानु ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ रोगु कवनु जां राखै आपि ॥ तिसु जन होइ न दूखु संतापु ॥ जिसु ऊपरि प्रभु किरपा करै ॥ तिसु ऊपर ते कालु परहरै ॥ १ ॥ सदा सखाई हरि हरि नामु ॥ जिसु चीति आवै तिसु सदा सुखु होवै निकटि न आवै ता कै जामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब इहु न सो तब किनहि उपाइआ ॥ कवन मूल ते किआ प्रगटाइआ ॥ आपहि मारि आपि जीवाले ॥ अपने भगत कउ सदा प्रतिपाले ॥ २ ॥ सभ किछु जाणहु तिस कै हाथ ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ दुख भंजनु ता का है नाउ ॥ सुख पावहि तिस के गुण गाउ ॥ ३ ॥ सुणि सुआमी संतन अरदासि ॥ जीउ प्रान धनु तुम्हरै पासि ॥ इहु जगु तेरा सभ तुझहि धिआए ॥

जिसे वह प्रभु-नाम प्रदान कर देता है हे नानक, वह तन मन से प्रभु के गुण गाने की बात करता रहता है।। ४ ।। २२ ।। ३५ ।। भैरउ महला ५ ।। हे प्रभु, निर्धन को तुम धन प्रदान करने वाले हो और जिसे तुम देते हो उसका मन निर्मल हो जाता है और उसके अनेकों पाप भाग खड़े होते हैं। उसके सभी उद्देश्य और कामनाएँ पूरी हो जाती हैं इसलिए हे प्रभु, अपने भक्त को अपना नाम प्रदान करो।। १ ।। उस प्रभु की सेवा ही फलदायक है। वह प्रभु ही सब करने कराने वाला है और उससे बाहर कोई भी कुछ नहीं कर सकता।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, रोगी का रोग नष्ट कर दो और दुखी व्यक्ति का शोक मिटा दो। निराश्रित को तुम अपने आसरे में रख लो और अपने दास को अपनी भक्ति में लगा लो।। २ ।। निर्बल को हे प्रभु, तुम सम्मान देते हो और तेरे कारण ही मूढ़ और मूर्ख व्यक्ति चतुर बनकर ज्ञानवान हो जाते हैं। सभी प्रकार के भय देने वालों का भय भाग खड़ा होता है क्योंकि तेरे सेवक के हृदय में केवल प्रभु ही बसा रहता है।। ३ ।। परब्रह्म प्रभु ही सुखों का खजाना है और प्रभु का अमृत नाम ही वास्तविक तत्वज्ञान है। कृपा करके तू सन्तजनों को अपनी सेवा में लगाता है और हे नानक वह प्रभु साधु पुरुषों में ही समाहित बना रहता है।। ४ ।। २३ ।। ३६ ।। भैरउ महला ५ ।। सन्त पुरुषों की संगति से प्रभु क निवास मन में हो जाता है और शान्त पुरुषों की संगति में सभी पाप भाग खड़े होते हैं। सन्तजनों की संगति में ही आचरण निर्मल बनता है और सन्त संगति में ही एक प्रभु के साथ प्रीति बनी रहती है।। १ ।। सन्तसंगति अथवा सन्तमण्डल का नाम उस समूह को दिया जाता है जहाँ केवल परब्रह्म का ही गुणानुवाद होता है।। १ ।। रहाउ।। सन्तमण्डल में जन्म-मरण समाप्त जो जाता है और सन्तमण्डल में ही यम कुछ नही कह और कर पाता। सन्त संगति में ही हमारी वाणी पवित्र होती है और सन्तमण्डल में ही प्रभु-नाम का बखान किया जाता है।। २ ।। सन्तसंगति का स्थान स्थिरता प्रदान करने वाला आसन बन जाता है और सन्तमण्डल में आने पर पापों का विनाश हो जाता है। सन्तमण्डल में ही पवित्र कथा वार्ता होती है और सन्त संगति में ही अहंकार का दुख भाग खड़ा होता है।। ३ ।। सन्तों की संगति का विनाश नहीं होता और सन्तमण्डल में ही गुणों का भण्डार प्रभु स्थित बना रहता है। सन्तमण्डल ही वास्तव में प्रभु का विश्राम स्थल है और हे नानक, वहाँ पूर्ण रूप से प्रभु निवास करता रहता है।। ४ ।। २४ ।। ३७ ।। भैरउ महला ५ ।। रोग भला क्या कर सकता है यदि प्रभु स्वयं रक्षक हो जाए। ऐसे व्यक्ति को कोई भी दुख और संताप नहीं भोगना पड़ता। प्रभु जिसपर कृपा कर देता है उसके सिर से काल का भय दूर हो जाता है। प्रभु का नाम ही सदैव मित्र बना रहता है। वह जिसके हृदय में बस जाता है उसे सदैव सुख प्राप्त होता रहता है और यम उसके पास भी नहीं आता।। १ ।। रहाउ।। जब यह जीव नहीं था तब इसे किसने उत्पन्न किया। इसका मूल क्या था और यह प्रकट रूप में कैसा बन गया। प्रभु स्वयं ही मारता है स्वयं ही जीवित कर देता है और अपने भक्त का पालन पोषण सदैव करता रहता है।। २ ।। सब कुछ जान लो कि उस प्रभु के हाथ में ही है। मेरा प्रभु ही अनाथों का नाथ है। उसका नाम ही दुख भंजन है और उसी के गुण गाकर सुख प्राप्त किया जाता है।। ३ ।। हे स्वामी प्रभु, तू सन्तजनों की अरदास सुन ले क्योंकि हमारा तो जीव, प्राण, धन सब तुम्हारे ही पास है। यह संसार तेरा है और सब तुझे ही याद करते हैं।

करि किरपा नानक सुखु पाए ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ तेरी टेक रहा कलि माहि ॥ तेरी टेक तेरे गुण गाहि ॥ तेरी टेक न पोहै कालु ॥ तेरी टेक बिनसै जंजालु ॥ १ ॥ दीन दुनीआ तेरी टेक ॥ सभ महि रविआ साहिबु एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी टेक करउ आनंद ॥ तेरी टेक जपउ गुर मंत ॥ तेरी टेक तरीऐ भउ सागरु ॥ राखणहारु पूरा सुख सागरु ॥ २ ॥ तेरी टेक नाही भउ कोइ ॥ अंतरजामी साचा सोइ ॥ तेरी टेक तेरा मनि ताणु ॥ ईहां ऊहां तू दीबाणु ॥ ३ ॥ तेरी टेक तेरा भरवासा ॥ सगल धिआवहि प्रभ गुणतासा ॥ जपि जपि अनदु करहि तेरे दासा ॥ सिमरि नानक साचे गुणतासा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ प्रथमे छोडी पराई निंदा ॥ उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥ लोभु मोहु सभु कीनो दूरि ॥ परम बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ॥ १ ॥ ऐसो तिआगी विरला कोइ ॥ हरि हरि नामु जपै जनु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहंबुधि का छोडिआ संगु ॥ काम क्रोध का उतरिआ रंगु ॥ नाम धिआए हरि हरि हरे ॥ साध जना कै संगि निसतरे ॥ २ ॥ बैरी मीत होए संमान ॥ सरब महि पूरन भगवान ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ ३ ॥ करि किरपा जिसु राखै आपि ॥ सोई भगतु जपै नाम जाप ॥ मनि प्रगासु गुर ते मति लई ॥ कहु नानक ता की पूरी पई ॥ ४ ॥ २७ ॥ ४० ॥ भैरउ महला ५ ॥ सुखु नाही बहुते धनि खाटे ॥ सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ सुखु नाही बहु देस कमाए ॥ सरब सुखा हरि हरि गुण गाए ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद लहहु ॥ साधसंगति पाईऐ वडभागी गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता सुत बनिता ॥ बंधन करम धरम हउ करता ॥ बंधन काटनहारु मनि वसै ॥ तउ सुखु पावै निज घरि बसै ॥ २ ॥ सभि जाचिक प्रभ देवनहार ॥ गुण निधान बेअंत अपार ॥ जिस नो करमु करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नामु तिनै जनि जपना ॥ ३ ॥ गुर अपने आगै अरदासि ॥ करि किरपा पुरख गुणतासि ॥ कहु नानक तुमरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ रखहु गुसाई ॥ ४ ॥ २८ ॥ ४१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ गुर मिलि तिआगिओ

हे प्रभु, कृपा कर, ताकि नानक सुख प्राप्त कर सके।। ४ ।। २५ ।। ३८ ।। भैरउ महला ५ ।। घोर कलियुग में मुझे तेरा ही आसरा बना रहे और मैं तेरी टेक लेकर तेरे गुण गाता रहूँ। तेरी टेक लेने से काल छू नहीं पाता और तेरा आसरा लेने से ही सभी जंजाल विनष्ट हो जाते हैं।। १ ।। सारी दीन दुनियां को तेरा ही आसरा है और वह एक प्रभु ही सबमें समाया रहता है।। १ ।। रहाउ।। तेरी टेक लेकर ही मैं आनन्दित होता हूँ और तेरी टेक से ही मैं गुरु के उपदेश को याद करता रहता हूँ। तेरे आसरे से ही भवसागर को तैरा जाता है क्योंकि सुखों का सागर वह पूर्ण प्रभु ही हमारी रक्षा करने वाला है।। २ ।। तेरी टेक लेने से कोई भय नहीं रहता क्योंकि वह सच्चा प्रभु हमारे हृदय की सभी बातें जानता रहता है। मुझे तो तेरी ही टेक और मेरे मन में तेरा ही बल है; हे प्रभु, इस लोक और उस लोक में तू ही मेरा आसरा है।। ३ ।। सबको तेरी ही टेक और तेरा ही भरोसा है इसीलिए सब लोग गुणों के भण्डार उस प्रभु का ही सुमिरन करते हैं। तेरे दास तेरा सुमिरन कर-करके आनन्दित बने रहते हैं इसलिए हे नानक, तू भी गुणों के भण्डार उस सच्चे प्रभु का सुमिरन कर।। ४ ।। २६ ।। ३६ ।। भैरउ महला ५ ।। पहले तो मैंने निन्दा को छोड़ा जिससे मेरे मन की सारी चिन्ताएं समाप्त हो गई। लोभ और मोह सबको मैंने दूर कर दिया और प्रभु को अपने सामने देखकर मैं परम वैष्णव अर्थात निर्मल भक्त बन गया हूँ।। १ ।। जो सेवक बनकर प्रभु-नाम का बार-बार सुमिरन करता रहे ऐसा त्यागी इस संसार में कोई बिरला ही होता है।। १ ।। रहाउ।। फिर मैंने अहंकार का साथ छोड़ दिया, जिससे मुझ पर काम, क्रोध का रंग उतर गया। प्रभु के नाम का सुमिरन करके साधु पुरुषों की संगति में हम पार हो गए हैं। अब शत्रु और मित्र मेरे लिए समान हो गए और सबमें मुझे पूर्ण प्रभु दिखाई देने लगा है। प्रभु की आज्ञा मानकर मैंने सुख प्राप्त किया तथा पूर्ण गुरु ने प्रभु का नाम मेरे हृदय में पक्का कर दिया है।। ३ ।। जिस पर कृपा करके वह उसे बचा लेता है वही भक्त प्रभु-नाम का सुमिरन करता रहता है। जब गुरु से शिक्षा प्राप्त की तो मन प्रकाशित हो उठा और इस प्रकार नानक का कथन है कि ऐसे व्यक्ति की जीवन यात्रा सफल हो जाती है।। ४ ।। २७ ।। ४० ।। भैरउ महला ५ ।। बहुत अधिक धन कमाने में भी सुख नहीं है और नृत्य तथा नाटक आदि देखने पर भी वास्तविक सुख प्राप्त नहीं होता। बहुत से देशों को प्राप्त कर लेने पर भी सुख नहीं मिलता और सभी सुखों का सुख प्रभु का गुण गाने से प्राप्त होता है।। १ ।। स्वाभाविक सुख और सहज के आनन्द को खोजते रहो यह बड़े भाग्य से साधसंगति में प्राप्त होता है और गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का जाप करते रहो।। १ ।। रहाउ।। माता-पिता, पुत्र और स्त्री बन्धनों में डाले रहते हैं। धर्म, कर्म करने का अभिमान भी बन्धन बन जाता है। जब बन्धनों को काटने वाला प्रभु मन में बस जाता है तो तभी जीव सुख प्राप्त करता है और अपने वास्तविक घर परमात्मा में निवास बना लेता है।। २ ।। सभी याचक हैं और प्रभु ही देने वाला है; वह अनन्त और अपार प्रभु ही गुणों का खजाना है। जिस पर प्रभु अपनी कृपा कर दे उसी सेवक ने प्रभु का नाम जपते रहना है।। ३ ।। मेरी तो अपने गुरु के आगे अरदास है कि हे सर्वव्यापक गुणों के भण्डार प्रभु, हम पर कृपा करो। नानक कहता है कि हे प्रभु, मैं तेरी ही शरण में हूँ और जैसे भी तुझे अच्छा लगे तू मुझे वैसा ही बनाए रख ।। ४ ।। २८ ।। ४१ ।। भैरउ महला ५ ।। गुरु से मिलकर हमने

दूजा भाउ ॥ गुरमुखि जपिओ हरि का नाउ ॥ बिसरी चिंत नामि रंगु लागा ॥ जनम जनम का सोइआ जागा ॥ १ ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाए ॥ साधू संगि सरब सुख पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोग दोख गुर सबदि निवारे ॥ नाम अउखधु मन भीतरि सारे ॥ गुर भेटत मनि भइआ अनंद ॥ सरब निधान नाम भगवंत ॥ २ ॥ जनम मरण की मिटी जम त्रास ॥ साधसंगति ऊंध कमल बिगास ॥ गुण गावत निहचलु बिस्राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥ ३ ॥ दुलभ देह आई परवानु ॥ सफल होई जपि हरि हरि नामु ॥ कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥ सासि गिरासि जपउ हरि हरी ॥ ४ ॥ २९ ॥ ४२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊचा जा का नाउ ॥ सदा सदा ता के गुण गाउ ॥ जिसु सिमरत सगला दुखु जाइ ॥ सरब सूख वसहि मनि आइ ॥ १ ॥ सिमरि मना तू साचा सोइ ॥ हलति पलति तुमरी गति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुरख निरंजन सिरजनहार ॥ जीअ जंत देवै आहार ॥ कोटि खते खिन बखसनहार ॥ भगति भाइ सदा निसतार ॥ २ ॥ साचा धनु साची वडिआई ॥ गुर पूरे ते निहचल मति पाई ॥ करि किरपा जिसु राखनहारा ॥ ता का सगल मिटै अंधिआरा ॥ ३ ॥ पारब्रहम सिउ लागो धिआन ॥ पूरन पूरि रहिओ निरबान ॥ भ्रम भउ मेटि मिले गोपाल ॥ नानक कउ गुर भए दइआल ॥ ४ ॥ ३० ॥ ४३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासु ॥ मिटहि कलेस सुख सहजि निवासु ॥ तिसहि परापति जिसु प्रभु देइ ॥ पूरे गुर की पाए सेव ॥ १ ॥ सरब सुखा प्रभ तेरो नाउ ॥ आठ पहर मेरे मन गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ आवण जाण रहे हरि धिआइ ॥ भगति भाइ प्रभ की लिव लाइ ॥ २ ॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ तूटे माइआ मोह पिआर ॥ प्रभ की टेक रहै दिनु राति ॥ पारब्रहमु करे जिसु दाति ॥ ३ ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाइ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ४४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥ हरि

द्वैतभाव त्याग दिया है और गुरमुख बनकर प्रभु के नाम का सुमिरन किया है। प्रभु-नाम से प्रेम लगने पर सभी चिन्ताएँ भूल गई हैं और जन्मों-जन्मों का अज्ञान से सोया हुआ मन अब ज्ञान के कारण सावधान हो गया है। प्रभु ने कृपा करके अपनी सेवा में लगा लिया है और साधु पुरुषों की संगत में हमने सभी सुख प्राप्त कर लिए है।। १ ।। रहाउ।। शब्द-गुरु के माध्यम से रोग और सभी पाप दूर हो गए हैं; प्रभु-नाम रूपी औषधि अब पूर्ण रूप से मन में लीन हो गई है। गुरु से मिलाप होते ही मन आनन्दित हो गया है और प्रभु के नाम से ही सारे सुख प्राप्त हो गए हैं।। २ ।। जन्म और मरण का यम का भय मिट गया है और साधसंगति में औंधा पड़ा कमल (सहस्रार) खिल उठा है। प्रभु का गुणानुवाद करते हुए हमें अटल शान्ति मिल गई है और हमारे सभी काम पूरे हो गए हैं।। ३ ।। इस दुर्लभ शरीर का संसार में आना स्वीकृत हो गया है और यह प्रभु का नाम जपता हुआ सफल हो गया है। नानक का कथन है कि जब प्रभु ने कृपा कर दी तो हर श्वास और ग्रास के साथ मैं प्रभु-नाम का सुमिरन करने लग गया हूँ।।४ ॥२९ ॥४२ ॥भैरउ महला ५ ।। जिस प्रभु का नाम सबसे ऊँचा है, हे जीव, सदैव उसी के गुण गाते रहो। उसके सुमिरन से सारा दुख समाप्त हो जाता है और सारे सुख मन में आ बसते हैं।। १ ।। हे मन, तू उस सच्चे प्रभु का ही सुमिरन कर जिससे इस लोक और परलोक में तेरी गति हो जाए।। १ ।। रहाउ।। माया से रहित वह सर्वव्यापक प्रभु ही सृजनहार है और वही जीवों को भोजन भी प्रदान करता है। करोड़ों गलतियों को वह क्षण भर में ही क्षमा कर देने वाला है और उसकी भक्ति भावना के फलस्वरूप ही जीवों का सदैव पार उतारा होता आया है।। २ ।। उसी का दिया हुआ नाम रूपी धन सच्चा है और उसी की महिमा भी सच्ची है; यही अटल उपदेश हमने पूर्ण गुरु से प्राप्त किया है। कृपा करके वह जिसका रक्षक बन जाता है उसका सम्पूर्ण अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है।। ३ ।। जिसका ध्यान परब्रह्म परमात्मा में लग गया है उसे वह परमात्मा पूर्ण रूप से सबमें स्थित बना हुआ अनुभव होता रहता है। नानक पर तो प्रभु-गुरु दयालु हो गया है और वह भ्रम और भय को मिलाकर प्रभु में लीन हो गया है।।४ ॥३० ॥४३ ॥भैरउ महला ५ ।। जिसके सुमिरन से मन प्रकाशित हो उठता है, दुख और क्लेश मिट जाते हैं और स्वाभाविक सुख में निवास बन जाता है वह उसे ही प्राप्त होता है जिसे प्रभु स्वयं प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति ही पूर्ण गुरु की सेवा प्राप्त करता है।। १ ।। हे प्रभु, तेरा नाम सभी सुख देने वाला है और हे मेरे मन, तू आठों प्रहर उसका गुणानुवाद करता रह।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का नाम यदि मन में बसा लिया जाए तो व्यक्ति मनोवांछित फल प्राप्त करता है। प्रभु सुमिरन से आवागमन का चक्र समाप्त हो जाता है और भक्ति भावना में लीन होकर प्रभु में लौ लगी रहती है।। २ ।। काम, क्रोध और अहंकार विनष्ट हो जाता है तथा माया-मोह का प्रेम टूट जाता है। परमात्मा ही जिसको यह दान देता है वही जीव दिन रात प्रभु के आसरे में स्थित बना रहता है।। ३ ।। करने-कराने वाले प्रभु, तू ही सभी के हृदय की बात जानने वाला है। तू कृपा करके हमें अपनी सेवा में लगा ले क्योंकि हे नानक, तेरे दास तो तेरी ही शरण में पड़े रहते हैं।।४ ॥३१ ॥४४ ॥ भैरउ महला ५ ।। जो प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता, वह तो शर्म से ही मर जाता है तथा नाम से विहीन होकर वह भला सुखपूर्वक कैसे सो सकता है। प्रभु के

सिमरनु छाडि परम गति चाहै ॥ मूल बिना साखा कत आहै ॥ १ ॥ गुरु गोविंदु मेरे मन धिआइ ॥ जनम जनम की मैलु उतारै बंधन काटि हरि संगि मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथि नाइ कहा सुचि सैलु ॥ मन कउ विआपै हउमै मैलु ॥ कोटि करम बंधन का मूलु ॥ हरि के भजन बिनु बिरथा पूलु ॥ २ ॥ बिनु खाए बूझै नही भूख ॥ रोगु जाइ तां उतरहि दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोहि बिआपिआ ॥ जिनि प्रभि कीना सो प्रभु नही जापिआ ॥ ३ ॥ धनु धनु साध धंनु हरि नाउ ॥ आठ पहर कीरतनु गुण गाउ ॥ धनु हरि भगति धनु करणैहार ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख अपार ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ४५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ गुर सुप्रसंन होए भउ गए ॥ नाम निरंजन मन महि लए ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ बिनसि गए सगले जंजाल ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद घने ॥ साधसंगि मिटे भै भरमा अंम्रितु हरि हरि रसन भने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल सिउ लागो हेतु ॥ खिन महि बिनसिओ महा परेतु ॥ आठ पहर हरि हरि जपु जापि ॥ राखनहार गोविद गुर आपि ॥ २ ॥ अपने सेवक कउ सदा प्रतिपारै ॥ भगत जना के सास निहारै ॥ मानस की कहु केतक बात ॥ जम ते राखै दे करि हाथ ॥ ३ ॥ निरमल सोभा निरमल रीति ॥ पारब्रहमु आइआ मनि चीति ॥ करि किरपा गुरि दीनो दानु ॥ नानक पाइआ नामु निधानु ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ करण कारण समरथु गुरु मेरा ॥ जीअ प्राण सुखदाता नेरा ॥ भै भंजन अबिनासी राइ ॥ दरसनि देखिऐ सभु दुखु जाइ ॥ १ ॥ जत कत पेखउ तेरी सरणा ॥ बलि बलि जाई सतिगुर चरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन काम मिले गुरदेव ॥ सभि फलदाता निरमल सेव ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ राम नामु रिद दीओ निवास ॥ २ ॥ सदा अनंदु नाही किछु सोगु ॥ दूखु दरदु नह बिआपै रोगु ॥ सभु किछु तेरा तू करणैहारु ॥ पारब्रहम गुर अगम अपार ॥ ३ ॥ निरमल सोभा अचरज बाणी ॥ पारब्रहम पूरन मनि भाणी ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सोइ ॥ नानक सभु किछु प्रभ ते होइ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ४७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ मनु तनु राता राम रंगि चरणे ॥

सुमिरन को छोड़कर तू परमगति चाहता है परन्तु जड़ के बिना कहीं शाखाओं की स्थिति हो सकती है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु-गुरु का सुमिरन कर। यही जन्मों-जन्मों की मैल उतारता है और बन्धन काटकर प्रभु के साथ ही लीन कर लेता है।। १ ।। रहाउ।। तीर्थो पर स्नान करने से भी कठोर पत्थर जैसे मन भला कैसे पवित्र हो सकते हैं क्योंकि मन में तो अहंकार की मैल भरी ही रहती है। करोड़ों कर्मकाण्ड बन्धन का कारण ही बनते हैं और प्रभु के सुमिरन के बिना धन दौलत के बाँधे हुए गट्ठर सभी व्यर्थ हो जाते हैं।। २ ।। बिना खाए हुए भूख नहीं दूर हो सकती और जब रोगी मन का रोग नष्ट हो जाए तो दुख भी समाप्त हो जाते हैं। जिस प्रभु ने पैदा किया है उसका तो सुमिरन किया नहीं और यह मन काम, क्रोध, लोभ और मोह में ही लीन बना रहा है।। ३ ।। साधु पुरुष धन्य हैं और प्रभु का नाम भी धन्य है; आठों प्रहर उसी की कीर्ति का गुणानुवाद करते रहो। प्रभु की भक्ति धन्य है और उस भक्ति को करने वाला भी धन्य है। नानक तो उस अपरम्पर सर्वव्यापक प्रभु की शरण में पड़ा हुआ है।। ४ ।। ३२ ।। ४५ ।। भैरउ महला ५ ।। गुरु प्रसन्न हो गए तो सभी भय दूर हो जाते हैं तथा माया रहित प्रभु का नाम मन में आ बसता है। जब दीनदयालु प्रभु सदैव कृपा करता रहता है तो हमारे सभी साँसारिक जंजाल विनष्ट हो जाते हैं।। १ ।। प्रभु-नाम में ही स्वाभाविक सुख और गहरा आनन्द बना रहता है। प्रभु का अमृत नाम अपनी जीभ से उच्चारण करने पर साधसंगत के माध्यम से भय और भ्रम मिट जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। जब प्रभु के चरण कमलों से प्रेम लग गया तो अहंकार जैसा महाप्रेत भी क्षण भर में विनष्ट हो गया। तू आठों प्रहर प्रभु का सुमिरन, जाप, करता रह क्योंकि वह प्रभु-गुरु स्वयं ही तेरी रक्षा करने वाला है।। २ ।। अपने सेवक का वह सदैव पालन-पोषण करता है और भक्तजनों के तो हर श्वास को भी वह देखता रहता है। मनुष्यों की तो बात ही छोड़ो, वह प्रभु अपने भक्त की यम से भी अपना हाथ देकर रक्षा करता है।। ३ ।। जब परब्रह्म प्रभु मन और चित्त में याद आ गया तो व्यक्ति की शोभा भी पवित्र हो जाती है और उसका आचरण भी पवित्र हो जाता है। गुरु ने कृपा करके अपना नाम प्रदान किया है और हे नानक, हमने तो नाम के उस भण्डार को प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। ३३ ।। ४६ ।। भैरउ महला ५ ।। मेरा समर्थ गुरु ही सब कुछ करने-कराने वाला है। वह मेरे पास ही है और वही जीवों के प्राणों को सुख देने वाला दाता है। वह अविनाशी प्रभु भय को नष्ट करने वाला है; उसका दर्शन करने से ही सभी दुख दूर हो जाते हैं।। १ ।। मैं जहाँ कहीं भी होऊँ, तेरी शरण और तेरा ही आसरा देखता हूँ तथा सदैव सच्चे गुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। रहाउ।। गुरुदेव के मिलने से सभी काम पूरे हो गए हैं। वह गुरुदेव प्रभु ही सभी फल देने वाला है और उसकी सेवा ही निर्मल और पवित्र है। उसने अपने दासों का हाथ थाम लिया है और उनके हृदय में प्रभु-नाम का निवास बना दिया है।। २ ।। प्रभु के दास सदैव आनन्दित रहते हैं और उन्हें कोई भी दुख, शोक प्रभावित नहीं करता। उन्हें कोई भी रोग, पीड़ा का दुख नहीं होता। हे परब्रह्म, अगम्य एवं अपार गुरु, यह सब कुछ तेरा ही है और तू ही सब कुछ करने वाला है।। ३ ।। तेरी शोभा निर्मल है और तेरी वाणी आश्चर्य ही आश्चर्य है। पूर्ण परब्रह्म के मन को यही अच्छी लगती है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष में वह एक ही प्रभु रमण कर रहा है और हे नानक, सब कुछ उस प्रभु के द्वारा ही हो रहा है।। ४ ।। ३४ ।। ४७ ।। भैरउ महला ५ ।। सभी आशाओं को पूरा करने वाले प्रभु के चरणों के प्रेम में मेरा तन मन रंग गया है।

सरब मनोरथ पूरन करणे ॥ आठ पहर गावत भगवंतु ॥ सतिगुरि दीनो पूरा मंतु ॥ १ ॥ सो वडभागी जिसु नामि पिआरु ॥ तिस कै संगि तरै संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी जि सिमरै एक ॥ सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक ॥ सो कुलवंता जि सिमरै सुआमी ॥ सो पतिवंता जि आपु पछानी ॥ २ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ गुण गुोपाल दिनु रैनि धिआइआ ॥ तूटे बंधन पूरन आसा ॥ हरि के चरण रिद माहि निवासा ॥ ३ ॥ कहु नानक जा के पूरन करमा ॥ सो जनु आइआ प्रभ की सरना ॥ आपि पवितु पावन सभि कीने ॥ राम रसाइणु रसना चीन्हे ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु लैत किछु बिघनु न लागै ॥ नामु सुणत जमु दूरहु भागै ॥ नामु लैत सभ दूखह नासु ॥ नामु जपत हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ निरबिघन भगति भजु हरि हरि नाउ ॥ रसकि रसकि हरि के गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि सिमरत किछु चाखु न जोहै ॥ हरि सिमरत दैत देउ न पोहै ॥ हरि सिमरत मोहु मानु न बधै ॥ हरि सिमरत गरभ जोनि न रुधै ॥ २ ॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरनु बहु माहि इकेला ॥ जाति अजाति जपै जनु कोइ ॥ जो जापै तिस की गति होइ ॥ ३ ॥ हरि का नामु जपीऐ साधसंगि ॥ हरि के नाम का पूरन रंगु ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारि ॥ सासि सासि हरि देहु चितारि ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४९ ॥ भैरउ महला ५ ॥ आपे सासतु आपे बेदु ॥ आपे घटि घटि जाणै भेदु ॥ जोति सरूप जा की सभ वथु ॥ करण कारण पूरन समरथु ॥ १ ॥ प्रभ की ओट गहहु मन मेरे ॥ चरन कमल गुरमुखि आराधहु दुसमन् दूखु न आवै नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे वणु त्रिणु त्रिभवण सारु ॥ जा कै सूति परोइआ संसारु ॥ आपे सिव सकती संजोगी ॥ आपि निरबाणी आपे भोगी ॥ २ ॥ जत कत पेखउ तत तत सोइ ॥ तिसु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सागरु तरीऐ नाम कै रंगि ॥ गुण गावै नानकु साधसंगि ॥ ३ ॥ मुकति भुगति जुगति वसि जा कै ॥ ऊणा नाही किछु जन ता कै ॥ करि किरपा जिसु होइ सुप्रसंन ॥ नानक दास सेई जन धंन ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ५० ॥ भैरउ महला ५ ॥ भगता मनि आनंदु गोबिंद ॥ असथिति भए बिनसी

सच्चे गुरु ने मुझे पूर्ण उपदेश दे दिया है और अब यह मन आठों प्रहर प्रभु का ही गुणानुवाद करता रहता है।। १ ।। जिसका प्रभु-नाम के साथ प्रेम है वह व्यक्ति भाग्यशाली है और उसकी संगति में ही सारा संसार पार उतर जाता है।। १ ।। रहाउ।। ज्ञानवान वही है जो एक ही प्रभु का सुमिरन करता है और धनवान वही है जिसके पास विवेक बुद्धि है। कुलीन वही है जो प्रभु का सुमिरन करता है और सम्मानित व्यक्ति भी वही है जो अपने आपको पहचानता है।। २ ।। प्रभु के गुणों का दिन रात सुमिरन करते हुए ही गुरु की कृपा से हमने परमपद प्राप्त कर लिया है। हमारे बन्धन टूट गए हैं और आशाएँ पूरी हो गई हैं तथा प्रभु के चरणों का निवास हमारे हृदय में बन गया है।। ३ ।। नानक का कथन है कि जिसका पूर्ण भाग्य होता है वह व्यक्ति प्रभु की शरण में आ जाता है। वह स्वयं पवित्र होता है, उसने अन्य सबको भी पवित्र किया होता है और उसने राम रूपी रसों के घर को अपनी जीभ के सुमिरन के द्वारा पहचान लिया होता है।। ४ ।। ३५ ।। ४८ ।। भैरउ महला ५ ।। प्रभु-नाम सुमिरन करने से कोई भी रुकावट सामने नहीं रहती और प्रभु का नाम सुनने से यम दूर से ही भाग खड़ा होता है। प्रभु-नाम सुमिरन से सारे दुखों का नाश हो जाता है और प्रभु का नाम जपने वालों का प्रभु के चरणों मे ही निवास हो जाता है।। १ ।। रुकावटों को दूर करने वाली प्रभु भक्ति है और हे जीव, तू प्रभु के नाम का ही सुमिरन कर तथा रस ले लेकर प्रभु का गुणानुवाद करता रह।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का सुमिरन करते रहने से किसी की बुरी नज़र नहीं लगती और प्रभु का सुमिरन करने से देवता और दैत्य दोनों ही व्यक्ति को स्पर्श नहीं कर पाते। प्रभु सुमिरन से अभिमान और मोह जीव को बाँधता नहीं और प्रभु सुमिरन से गर्भ योनि में नहीं फंसना पड़ता।। २ ।। प्रभु के सुमिरन के लिए सभी समय भले हैं परन्तु प्रभु का सुमिरन करने वाला अनेकों में कोई अकेला ही होता है। प्रभु-नाम का तथाकथित ऊँची जाति और नीची जाति वाला कोई भी सुमिरन करे; इसका सुमिरन तो जो भी करता है उसकी मुक्ति हो जाती है।। ३ ।। साधसंगत में यदि प्रभु के नाम का सुमिरन किया जाए तो प्रभु के नाम का पूरा रंग व्यक्ति पर चढ़ जाता है अर्थात साधसंगत में बैठकर मन ही मन सुमिरन करना अधिक महत्वपूर्ण है। हे प्रभु, नानक पर कृपा करो और श्वास -श्वास के साथ सुमिरन करते रहने का दान उसे दे दो।। ४ ।। ३६ ।। ४६ ।। भैरउ महला ५ ।। वह स्वयं ही शास्त्र है स्वयं ही वेद है और स्वयं ही घट-घट के रहस्यों को जानने वाला है। उस ज्योति स्वरूप की ही यह सारी रचना रूपी वस्तु है और वही सब कुछ करने-कराने मे पूर्ण समर्थ है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु के आसरे को पकड़ लो, गुरमुख बनकर प्रभु के चरण कमल की आराधना करो जिससे शत्रु और कोई भी दुख पास नहीं आता।। १ ।। रहाउ।। वह स्वयं ही तिनका है, स्वयं ही वन है और स्वयं ही तीनों लोकों का सार तत्व है। उसी के सूत्र में यह सारा संसार पिरोया हुआ है। वह स्वयं ही चैतन्य एवं भौतिक पदार्थ का संयोग कराने वाला है और स्वयं ही भोगी भी है और भोगों से अलिप्त बना रहने वाला भी है।। २ ।। जिधर-किधर भी मैं देखता हूँ वह उधर-उधर ही दिखाई देता है और उसके बिना दूसरा कोई नहीं है। प्रभु-नाम के प्रेम के कारण ही संसार सागर को तैरा जाता है और नानक तो साधसंगति में उस प्रभु के ही गुण गाता रहता है।। ३ ।। मुक्ति, आनन्द और उस आनन्द को प्राप्त करने की युक्ति भी उस प्रभु के ही वश में है। हे सेवक, उसके पास किसी भी चीज की कमी नहीं है। कृपालु बनकर जिस पर वह प्रसन्न हो जाता है, हे नानक, ऐसे ही उसके दास और सेवक धन्य कहे जाते हैं।। ४ ।। ३७ ।। ५० ।। भैरउ महला ५ ।। भक्तों के मन में प्रभु का आनन्द है और भक्त जब उस आनन्द में स्थित हो गए तो उनकी सारी चिन्ताएँ विनष्ट हो गई हैं।

सभ चिंद ॥ भै भ्रम बिनसि गए खिन माहि ॥ पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥ १ ॥ राम राम संत सदा सहाइ ॥ घरि बाहरि नाले परमेसरु रवि रहिआ पूरन सभ ठाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनु मालु जोबनु जुगति गोपाल ॥ जीअ प्राण नित सुख प्रतिपाल ॥ अपने दास कउ दे राखै हाथ ॥ निमख न छोडै सद ही साथ ॥ २ ॥ हरि सा प्रीतमु अवरु न कोइ ॥ सारि सम्हाले साचा सोइ ॥ मात पिता सुत बंधु नराइणु ॥ आदि जुगादि भगत गुण गाइणु ॥ ३ ॥ तिस की धर प्रभ का मनि जोरु ॥ एक बिना दूजा नाही होरु ॥ नानक कै मनि इहु पुरखारथु ॥ प्रभू हमारा सारे सुआरथु ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ५१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ भै कउ भउ पड़िआ सिमरत हरि नाम ॥ सगल बिआधि मिटी त्रिहु गुण की दास के होए पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के लोक सदा गुण गावहि तिन कउ मिलिआ पूरन धाम ॥ जन का दरसु बांछै दिन राती होइ पुनीत धरम राइ जाम ॥ १ ॥ काम क्रोध लोभ मद निंदा साधसंगि मिटिआ अभिमान ॥ ऐसे संत भेटहि वडभागी नानक तिन कै सद कुरबान ॥ २ ॥ ३९ ॥ ५२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ पंच मजमी जो पंचन राखै ॥ मिथिआ रसना नित उठि भाखै ॥ चक्र बणाइ करै पाखंड ॥ झुरि झुरि पचै जैसे त्रिअ रंड ॥ १ ॥ हरि के नाम बिना सभ झूठु ॥ बिनु गुर पूरे मुकति न पाईऐ साची दरगहि साकत मूठु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कुचीलु कुदरति नही जानै ॥ लीपिऐ थाइ न सुचि हरि मानै ॥ अंतरु मैला बाहरु नित धोवै ॥ साची दरगहि अपनी पति खोवै ॥ २ ॥ माइआ कारणि करै उपाउ ॥ कबहि न घालै सीधा पाउ ॥ जिनि कीआ तिसु चीति न आणै ॥ कूड़ी कूड़ी मुखहु वखाणै ॥ ३ ॥ जिस नो करमु करे करतारु ॥ साधसंगि होइ तिसु बिउहारु ॥ हरि नाम भगति सिउ लागा रंगु ॥ कहु नानक तिसु जन नही भंगु ॥ ४ ॥ ४० ॥ ५३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निंदक कउ फिटके संसारु ॥ निंदक का झूठा बिउहारु ॥ निंदक का मैला आचारु ॥ दास अपुने कउ राखनहारु ॥ १ ॥ निंदकु मुआ निंदक कै नालि ॥ पारब्रहम परमेसरि

परब्रह्म प्रभु जब मन में आकर बस गया तब सभी भय और भ्रम क्षण भर में ही नष्ट हो गए हैं।। १ ।। वह प्रभु सन्तों का सदा सहायक होता है; घर बाहर और साथ में परमेश्वर ही बस रहा है जो सभी स्थानों में व्याप्त है।। १ ।। रहाउ।। हमारा धन, माल, यौवन, जीवन की युक्ति सब कुछ प्रभु ही है और वही हमारे हृदय और प्राणों का सदा बना रहने वाला सुख है और वही हमारा पालन-पोषण करता है। वह सदैव साथ बना रहकर क्षण भर के लिए भी नहीं छोड़ता और अपने दास को हाथ देकर उसकी रक्षा करता है।। २ ।। प्रभु जैसा प्रियतम अन्य कोई नहीं है और वही सच्चा प्रभु हमारी खोज खबर लेता रहता है। माता-पिता, पुत्र और बन्धु वह प्रभु स्वयं ही है। वही आदि से युगादि से स्थित है और भक्त उसी के गुण गाते हैं।। ३ ।। भक्तों का आसरा और उनके हृदय की शक्ति प्रभु ही होता है और उस एक के बिना अन्य दूसरा कोई नहीं है। नानक के मन में तो यही बल और आसरा है कि प्रभु हमारे कार्यों को सँवार देगा।।४ ।।३८ ।।५१ ।।भैरउ महला ५ ।। प्रभु का नाम सुमिरन करते ही भय भी भयभीत हो उठा है। तीनों गुणों के सभी रोग मिट गए हैं और प्रभु के सुमिरन से दास के सभी काम पूरे हो गए हैं।। १ ।। रहाउ।। जो प्रभु के लोग सदैव उसके गुण गाते हैं उन्हें उसका पूर्ण ठिकाना प्राप्त हो जाता है। धर्मराज और यम भी ऐसे सेवकों का दर्शन दिन-रात चाहता रहता है और पवित्र बन जाता है।। १ ।। साधसंगत में काम, क्रोध, लोभ, मद, निन्दा और अभिमान मिट जाते हैं। जिनको ऐसे शान्त पुरुष मिल गए हैं वे बड़े भाग्य वाले हैं और नानक उन पर सदैव बलिहारी जाता है।। २ ।। ३९ ।। ५२ ।। भैरउ महला ५ ।। जो पाँचों विकारों को धारण किए रहता है उसे इन पांचों का मजमा लगाने वाला पंच मजमी कहा जाता है। वह नित्य उठकर अपनी जीभ से झूठ बोलता रहता है। माथे पर तिलक और चक्र आदि बनाकर वह पाखण्ड करता रहता है और पछताता हुआ उसी प्रकार मरता-खपता रहता है जैसे विधवा स्त्री होती है।। १ ।। प्रभु के नाम के बिना सब कुछ झूठ है; पूर्ण गुरु के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती और प्रभु से टूटा व्यक्ति परमात्मा के सच्चे दरबार में लूट लिया जाता है।। १ ।। रहाउ।। वह गन्दा व्यक्ति प्रभु की शक्ति को नहीं जानता। स्थान की लीपा-पोती करने से परमात्मा इसे पवित्र स्थान नहीं मान सकता। जिनका अन्तर्मन मैला है और जो बाहर सदैव धोते रहते हैं वे प्रभु के सच्चे दरबार में अपना सम्मान गँवा लेते हैं।। २ ।। जीव धन-सम्पदा के लिए अनेकों उपाय करता है; वह कभी भी सीधा कदम नहीं रखता अर्थात उलटे काम ही करता रहता है। जिसने यह सब कुछ बनाया है उसे वह मन में नहीं बसाता और झूठ में पड़ा ही मुँह से परमात्मा का नाम कहता रहता है।। ३ ।। वह कर्ता प्रभु जिस पर कृपा करे उसका सारा व्यवहार साधसंगति के साथ बन जाता है। प्रभु-नाम की भक्ति से उसका प्रेम लग जाता है और नानक का कथन है कि ऐसे सेवक को कोई भी रुकावट नहीं पड़ती।। ४ ।। ४० ।। ५३ ।। भैरउ महला ५ ।। निन्दक व्यक्ति को सारा संसार ही फटकारता रहता है क्योंकि निन्दक व्यक्ति का व्यवहार झूठा ही होता है। निन्दक का आचरण भी मैला होता है परन्तु प्रभु तो अपने सेवकों को (निन्दा से) बचाए रहता है।। १ ।। निन्दक व्यक्ति निन्दकों के साथ लगा हुआ ही मर जाता है। अपने सेवकों को तो परब्रह्म प्रभु परमेश्वर बचा लेता है

जन राखे निंदक कै सिरि कड़किओ कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंदक का कहिआ कोइ न मानै ॥ निंदक झूठु बोलि पछुताने ॥ हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि ॥ निंदक कउ दई छोडै नाहि ॥ २ ॥ हरि का दासु किछु बुरा न मागै ॥ निंदक कउ लागै दुख सांगै ॥ बगुले जिउ रहिआ पंख पसारि ॥ मुख ते बोलिआ तां कढिआ बीचारि ॥ ३ ॥ अंतरजामी करता सोइ ॥ हरि जनु करै सु निहचलु होइ ॥ हरि का दासु साचा दरबारि ॥ जन नानक कहिआ ततु बीचारि ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ५४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ दुइ कर जोरि करउ अरदासि ॥ जीउ पिंडु धनु तिस की रासि ॥ सोई मेरा सुआमी करनैहारु ॥ कोटि बार जाई बलिहार ॥ १ ॥ साधू धूरि पुनीत करी ॥ मन के बिकार मिटहि प्रभ सिमरत जनम जनम की मैलु हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै ग्रिह महि सगल निधान ॥ जा की सेवा पाईऐ मानु ॥ सगल मनोरथ पूरनहार ॥ जीअ प्रान भगतन आधार ॥ २ ॥ घट घट अंतरि सगल प्रगास ॥ जपि जपि जीवहि भगत गुणतास ॥ जा की सेव न बिरथी जाइ ॥ मन तन अंतरि एकु धिआइ ॥ ३ ॥ गुर उपदेसि दइआ संतोखु ॥ नामु निधानु निरमलु इहु थोकु ॥ करि किरपा लीजै लड़ि लाइ ॥ चरन कमल नानक नित धिआइ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ५५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुर अपुने सुनी अरदासि ॥ कारजु आइआ सगला रासि ॥ मन तन अंतरि प्रभू धिआइआ ॥ गुर पूरे डरु सगल चुकाइआ ॥ १ ॥ सभ ते वड समरथ गुरदेव ॥ सभि सुख पाई तिस की सेव ॥ रहाउ ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस का अमरु न मेटै कोइ ॥ पारब्रहमु परमेसरु अनूपु ॥ सफल मूरति गुरु तिस का रूपु ॥ २ ॥ जा कै अंतरि बसै हरि नामु ॥ जो जो पेखै सु ब्रहम गिआनु ॥ बीस बिसुए जा कै मनि परगासु ॥ तिसु जन कै पारब्रहम का निवासु ॥ ३ ॥ तिसु गुर कउ सद करी नमसकार ॥ तिसु गुर कउ सद जाउ बलिहार ॥ सतिगुर के चरन धोइ धोइ पीवा ॥ गुर नानक जपि जपि सद जीवा ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५६ ॥

और निन्दक के सिर पर काल गरजता रहता है।। १ ।। रहाउ।। निन्दक का कहा हुआ कोई नहीं मानता तथा निन्दक झूठ बोलकर पछताता रहता है। वह हाथ पटकता है और धरती के साथ सिर पीटता है परन्तु वह प्रभु निन्दक को छोड़ता नहीं है।। २ ।। प्रभु का सेवक किसी का भी बुरा नहीं मानता परन्तु निन्दक व्यक्ति को तो बर्छी जैसे तीखे दुखों को सहन करना पड़ता है। निन्दक बगुले की तरह पंखों को पसार कर सफेदपोश बना रहता है परन्तु जब वह मुख से बोलता है तो उसकी पोल खुल जाती है और भले लोग विचारपूर्वक उसे अपनी सत्संगत से बाहर कर देते हैं।। ३ ।। वह कर्ता प्रभु ही अन्तर्यामी है और उस प्रभु का सेवक जो कुछ भी करता है वह अटल होता है। दास नानक ने विचारपूर्वक यह तत्व की बात कही है कि प्रभु का दास प्रभु के दरबार में सच्चा होता है।। ४ ।। ४१ ।। ५४ ।। भैरउ महला ५ ।। दोनों हाथ जोड़कर मैं अरदास करता रहता हूँ कि यह प्राण, शरीर और धन सब उस परमात्मा की दी हुई पूंजी हैं। वह मेरा प्रभु स्वामी सब कुछ करने वाला है और मैं करोड़ों बार उस पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। साधु पुरुषों की चरण धूलि ने हमें पवित्र कर दिया है और प्रभु का सुमिरन करने से मन के विकार मिट गए हैं तथा हमारे जन्मों-जन्मातरों की मैल दूर हो गई है।। १ ।। रहाउ ।। जिसके घर में सभी भण्डार हैं, जिसकी सेवा से सम्मान प्राप्त किया जाता है और जो सभी आशाओं को पूरा करने वाला है वही प्रभु भक्तजनों के जीवन और प्राण का आधार है ।। २ ।। जो सभी के हृदय को प्रकाशित करता है, गुणों के भण्डार उस प्रभु का सुमिरन कर भक्तजन जीवित बने रहते हैं। जिसकी की हुई सेवा व्यर्थ नहीं जाती, हे जीव, तू मन तन से उस एक प्रभु का ही सुमिरन कर ।। ३ ।। गुरु के उपदेश के माध्यम से दया और सन्तोष आदि गुण प्राप्त होते हैं। प्रभु-नाम का खजाना ही पवित्र पदार्थ है। हे प्रभु, कृपा करके हमें अपनी शरण में ले लो ताकि नानक सदैव तुम्हारे चरण कमलों की आराधना करता रहे।।४ ॥४२ ॥५५ ॥भैरउ महला ५ ।। मेरे सच्चे गुरु ने मेरी अरदास सुन ली है और मेरा सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न हो गया है। मन-तन में हमने प्रभु का सुमिरन किया और उस पूर्ण गुरु ने हमारा पूरा भय दूर कर दिया है।। १ ।। हमारा समर्थ गुरु सबसे बड़ा है और उसकी सेवा में ही हमने सभी सुख प्राप्त कर लिए हैं।। रहाउ।। जिसका किया हुआ ही सब कुछ होता है उसके हुकुम को कोई मिटा नहीं सकता। वह परब्रह्म परमेश्वर अनुपम है। उसका दर्शन सभी फल देने वाला है और वह गुरु (ज्ञान) रूप में व्यक्त होता है।। २ ।। जिसके अन्तर्मन में प्रभु-नाम बसता है वह सेवक जो कुछ भी देखता है उसे उसमें से प्रभु का ज्ञान ही दिखाई देता है। पूर्ण रूप से जिसका मन प्रकाशित हो उठता है उस सेवक के हृदय में परब्रह्म प्रभु का निवास हो जाता है।। ३ ।। ऐसे प्रभु-गुरु को मैं सदैव प्रणाम करता हूँ और ऐसे गुरु पर मैं बलिहारी जाता हूँ। ऐसे सच्चे गुरु के चरणों को मैं धो-धोकर पीता हूँ और हे नानक, गुरु का सुमिरन करते हुए ही मैं सदैव जीवित बना रहता हूँ।।४ ।।४३ ।।५६।।

रागु भैरउ महला ५ पड़ताल घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

परतिपाल प्रभ क्रिपाल कवन गुन गनी ॥ अनिक रंग बहु तरंग सरब को धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक गिआन अनिक धिआन अनिक जाप जाप ताप ॥ अनिक गुनित धुनित ललित अनिक धार मुनी ॥ १ ॥ अनिक नाद अनिक बाज निमख निमख अनिक स्वाद अनिक दोख अनिक रोग मिटहि जस सुनी ॥ नानक सेव अपार देव तटह खटह बरत पूजा गवन भवन जात्र करन सगल फल पुनी ॥ २ ॥ १ ॥ ५७ ॥ ८ ॥ २१ ॥ ७ ॥ ५७ ॥ ९३ ॥

भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा ॥ अंम्रित बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा ॥ १ ॥ नानक हउमै रोग बुरे ॥ जह देखां तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे परखे परखणहारै बहुरि सूलाकु न होई ॥ जिन कउ नदरि भई गुरि मेले प्रभ भाणा सचु सोई ॥ २ ॥ पउणु पाणी बैसंतरु रोगी रोगी धरति सभोगी ॥ मात पिता माइआ देह सि रोगी रोगी कुटंब संजोगी ॥ ३ ॥ रोगी ब्रहमा बिसनु सरुद्रा रोगी सगल संसारा ॥ हरि पदु चीनि भए से मुकते गुर का सबदु वीचारा ॥ ४ ॥ रोगी सात समुंद सनदीआ खंड पताल सि रोगि भरे ॥ हरि के लोक सि साचि सुहेले सरबी थाई नदरि करे ॥ ५ ॥ रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका ॥ बेद कतेब करहि कह बपुरे नह बूझहि इक एका ॥ ६ ॥ मिठ रसु खाइ सु रोगि भरीजै कंद मूलि सुखु नाही ॥ नामु विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछुताही ॥ ७ ॥ तीरथि भरमै रोगु न छूटसि पड़िआ बादु बिबादु भइआ ॥ दुबिधा रोगु से अधिक वडेरा माइआ का मुहताजु भइआ ॥ ८ ॥ गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिसु रोगु गइआ ॥ नानक हरि जन अनदिनु निरमल

रागु भैरउ महला ५ पड़ताल घरु ३   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे पालनहार कृपालु प्रभु, मैं तेरे किस-किस गुण की गिनती करूं। तेरे अनेकों रंग हैं, अनेकों तेरे मन की मौजें है; हे प्रभु, तू ही सबका मालिक है।। १।। रहाउ।। अनेकों ज्ञानवान है, अनेकों ध्यान लगाने वाले हैं; अनेकों तेरा जाप और तपस्या करने वाले हैं, अनेकों सुन्दर स्वरों को मिलाकर उनकी धुन के माध्यम से तेरे गुण गाते हैं और अनेकों ही तेरा ध्यान लगाने के लिए मौन धारण करते हैं।। १ ।। अनेकों गाते हैं, और पल-पल बाद अनेकों वाद्य बजाते है; तेरा यश सुनने से अनेकों प्रकार के दुख और रोग दूर हो जाते हैं। हे नानक, उस अपरम्पर प्रभु की सेवा में ही सभी फल और पुण्य आ जाते हैं अर्थात तीर्थों पर निवास करना, षटकर्म, व्रत, पूजा, यात्रा आदि का फल उस प्रभु की सेवा में ही प्राप्त हो जाता है।। २ ।। १ ।। ५७ ।। ८ ।। २१ ।। ७ ।। ५७ ।। ६३ ।।

भैरउ अष्टपदियाँ महला १ घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

गुरु के साथ चिंतन करने से इस रहस्य का पता चलता है कि जीवात्मा में ही प्रभु है और प्रभु में ही सभी जीवात्माएँ है। उसके अमृत नाम को शब्द के माध्यम से ही पहचाना जाता है और उसका अमृत नाम दुख को मिटा देता है और अहंकार को मार देता है।। १ ।। हे नानक, अहंकार के रोग भयानक हैं। जिधर भी देखो उसकी एक वेदना और दुख ही दिखाई देता है; प्रारम्भ से ही शब्द को प्रदान कर वह प्रभु स्वयं ही कृपा कर देता है।। १ ।। रहाउ।। खरे और खोटे होने को परखने के लिए तीखे नोंक वाले यन्त्र से जब उसे पहले ही परख लिया जाता है तो दुबारा उसमें छेद करके उसे फिर नहीं परखा जाता। जिन पर उस प्रभु की कृपादृष्टि हो गई उसको गुरु से मिला दिया जाता है और सत्य वही है जो प्रभु को अच्छा लगता है।। २ ।। पवन, पानी, अग्नि तथा सभी भोगों समेत यह धरती भी अहंकार से ग्रस्त रोगी ही है। माता-पिता, माया, यह शरीर भी रोगी है और परिवार से जुड़े हुए अन्य लोग भी रोगी हैं।। ३ ।। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सारा संसार अहंकार से ग्रस्त होने के कारण सभी रोगी ही हैं। प्रभु के परमपद को जिन्होंने शब्द-गुरु के चिंतन के माध्यम से जान लिया हैं वे ही वास्तव में मुक्त कहे जाते हैं।। ४ ।। नदियों समेत सातों समुद्र भी रोगी हैं तथा अनेकों खण्ड और अनेकों पाताल भी रोगों से भरे हुए हैं। प्रभु के भक्त ही सच्चे और सुखी हैं और प्रभु सभी स्थानों में उन पर कृपा दृष्टि बनाए रखता है।। ५ ।। छः दर्शनों के मानने वाले भी रोगी हैं। अनेकों वेश धारण करके अनेकों प्रकार के हठ करने वाले भी रोगी ही हैं। वेद, कतेब बेचारे भी क्या करें जब ये जीव उस एक प्रभु के रहस्य को समझते ही नहीं।। ६ ।। मीठे रसों को खाने से भी अपने आपको रोग से ही भरा जाता है तथा कन्दमूल खाने पर भी सुख नहीं पाया जाता। जो प्रभु के नाम को भुलाकर अन्य मार्ग पर चलते हैं वे अन्तिम समय में पछताते ही रहते हैं।। ७ ।। तीर्थों पर भ्रमण करने से भी यह रोग नहीं छूटता और पढ़ना तो वास्तव में वाद-विवाद ही होकर रह जाता है। इससे तो और भी अधिक भयानक दुविधा का रोग आ लगता है और व्यक्ति धन सम्पदा का मोहताज बनकर ही रह जाता है।। ८ ।। गुरमुख बनकर यदि सच्चे शब्द का गुणानुवाद करते हुए मन को सत्यशील बनाया जाए तो ऐसे व्यक्ति का अहंकार का रोग समाप्त हो जाता है। हे नानक, जिन पर उसकी कृपा

जिन कउ करमि नीसाणु पइआ ॥ ९ ॥ १ ॥

भैरउ महला ३ घरु २ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ॥ अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ॥ मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ ॥ कारणु करता करदा आइआ ॥ १ ॥ गुर का सबदु मेरै अंतरि धिआनु ॥ हउ कबहु न छोडउ हरि का नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिता प्रहलादु पड़ण पठाइआ ॥ लै पाटी पाधे कै आइआ ॥ नाम बिना नह पड़उ अचार ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंद मुरारि ॥ २ ॥ पुत्र प्रहिलाद सिउ कहिआ माइ ॥ परविरति न पड़हु रही समझाइ ॥ निरभउ दाता हरि जीउ मेरै नालि ॥ जे हरि छोडउ तउ कुलि लागै गालि ॥ ३ ॥ प्रहलादि सभि चाटड़े विगारे ॥ हमारा कहिआ न सुणै आपणे कारज सवारे ॥ सभ नगरी महि भगति द्रिड़ाई ॥ दुसट सभा का किछु न वसाई ॥ ४ ॥ संडै मरकै कीई पूकार ॥ सभे दैत रहे झख मारि ॥ भगत जना की पति राखै सोई ॥ कीते कै कहिऐ किआ होई ॥ ५ ॥ किरत संजोगी दैति राजु चलाइआ ॥ हरि न बूझै तिनि आपि भुलाइआ ॥ पुत्र प्रहलाद सिउ वादु रचाइआ ॥ अंधा न बूझै कालु नेड़ै आइआ ॥ ६ ॥ प्रहलादु कोठे विचि राखिआ बारि दीआ ताला ॥ निरभउ बालकु मूलि न डरई मेरै अंतरि गुर गोपाला ॥ कीता होवै सरीकी करै अनहोदा नाउ धराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सु आइ पहुता जन सिउ वादु रचाइआ ॥ ७ ॥ पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीस गुसाई ॥ जगजीवनु दाता अंति सखाई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥ ८ ॥ थंम्हु उपाड़ि हरि आपु दिखाइआ ॥ अहंकारी दैतु मारि पचाइआ ॥ भगता मनि आनंदु वजी वधाई ॥ अपने सेवक कउ दे वडिआई ॥ ९ ॥ जंमणु मरणा मोहु उपाइआ ॥ आवणु जाणा करते लिखि पाइआ ॥ प्रहलाद कै कारजि हरि आपु दिखाइआ ॥ भगता का बोलु आगै आइआ ॥ १० ॥ देव कुली लखिमी कउ करहि जैकारु ॥ माता नरसिंघ का रूपु निवारु ॥ लखिमी

का चिन्ह अंकित हो गया प्रभु के वे सेवक ही सदैव पवित्र बने रहते हैं।। ६ ।। १ ।।

भैरउ महला ३ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

उस कर्ता प्रभु ने एक खेल बनाया है और अनहद वाणी को शब्द रूप में हमें सुना दिया है। मनमुख व्यक्ति तो उसे सुनकर भी अनसुना कर देते हैं परन्तु गुरमुख व्यक्ति उसके रहस्य को जान जाते हैं। वे जान जाते हैं कि इस शब्द का कारण वह कर्ता प्रभु ही है जो सदैव इसके नाद को बजाता रहता है।। १ ।। मेरे अन्तर्मन में शब्द-गुरु का ही ध्यान बना रहता है और प्रभु के नाम को मैं कभी भी नही छोड़ सकता।। १ ।। रहाउ।। पिता ने प्रहलाद को पढ़ने के लिए भेजा और वह पट्टी आदि लेकर पंडित के पास आ गया। वहाँ उसने कहा कि मैं प्रभु-नाम के बिना अन्य कोई भी बात नहीं पढ़ूंगा इसलिए मेरी पट्टी पर उस प्रभु का नाम ही लिख दो।। २ ।। माँ ने पुत्र प्रहलाद को कहा कि तुम अन्य रीति से मत पढ़ो अर्थात पंडित जैसा पढ़ाता है वैसे ही पढ़ो। प्रहलाद ने कहा कि वह निर्भय दाता-प्रभु मेरे साथ बसता है और यदि मैं प्रभु को छोड़ता हूँ तो मेरे वंश की बदनामी होगी।। ३ ।। प्रहलाद के अध्यापक ने यह अनुभव किया कि प्रहलाद ने मेरे सभी शिष्यों को भी बिगाड़ दिया है; यह हमारा कहना नहीं सुनता और अपने हिसाब से ही काम किए जाता है। प्रहलाद ने सारे नगर में प्रभु भक्ति को पक्का कर दिया और दुष्टों की सभा का उस पर कोई भी वश नहीं चल पाया।। ४ ।। प्रहलाद को पढ़ाने वाले अध्यापक (षंड और अमरक) ने दैत्यों के सामने पुकार लगाई परन्तु सभी दैत्य झख मारकर रह गए। भक्तजनों के सम्मान की रक्षा तो वह प्रभु ही करता है और उस प्रभु का पैदा किया हुआ जीव भला क्या कर सकता है।। ५ ।। पूर्व जन्म के किए हुए अच्छे कर्मो के संयोग से हिरण्यकश्यपु दैत्यराज बन गया था परन्तु वह प्रभु को कुछ भी नहीं समझता था और वास्तव में तो प्रभु ने ही उसे भुलावे में डाल दिया था। पुत्र प्रहलाद से उसने विवाद शुरु कर लिया परन्तु वह अज्ञानी अन्धा यह वहीं जान सका कि उसका काल उसके पास ही आ पहुँचा है।। ६ ।। प्रहलाद को एक मकान में रखा गया और उसके दरवाजे पर ताला लगा दिया गया, परन्तु वह निर्भय बालक यह मानकर कि मेरे अन्तर्मन में तो प्रभु-गुरु का निवास है। जरा भी नहीं डरा जब प्रभु का बनाया हुआ जीव उस बनाने वाले प्रभु के साथ बराबरी करके बिना अधिकार के अपना नाम ऊँचा रखता है तो उसे जो उसके भाग्य में लिखा होता है वह मिल जाता है अर्थात वह प्रभु के सेवक से विवाद आरम्भ कर देता है।। ७ ।। प्रहलाद के पिता ने गदा उठाते हुए कहा कि बता तेरा मालिक और संसार का स्वामी वह प्रभु कहाँ है। प्रहलाद ने उत्तर दिया कि संसार का जीवन वह दाता प्रभु ही अन्त में सखा बनता है और मैं तो जहाँ भी देखता हूँ मुझे वह समाया हुआ दिखाई देता है।। ८ ।। खम्भे को फाड़कर प्रभु ने अपने आपको प्रत्यक्ष किया और अहंकारी दैत्य को मारकर नष्ट कर दिया। अपने सेवक को प्रभु ने बड़प्पन प्रदान किया और भक्तजनों के मन में आनन्द की बधाईयाँ बजने लगी।। ९ ।। जन्म लेना, मरना, मोह इत्यादि उस प्रभु ने ही पैदा किए हैं और उस कर्ता प्रभु ने आवागमन के लेखों को लिखकर जीव में डाल दिया है। प्रहलाद के कार्य के लिए प्रभु ने अपने प्रकट होने का दृष्य दिखाया और भक्तजनों का कहा हुआ वचन पूरा हुआ।। १० ।। पुराण परम्परा के अनुसार सभी देवता लक्ष्मी को नमस्कार करके कहने लगे कि हे माता, नरसिंह को कहिए कि इस भयानक रूप को अब समाप्त किया जाए। लक्ष्मी भी

भउ करै न साकै जाइ ॥ प्रहलादु जनु चरणी लागा आइ ॥ ११ ॥ सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ ॥ राजु मालु झूठी सभ माइआ ॥ लोभी नर रहे लपटाइ ॥ हरि के नाम बिनु दरगह मिलै सजाइ ॥ १२ ॥ कहै नानकु सभु को करे कराइआ ॥ से परवाणु जिनी हरि सिउ चितु लाइआ ॥ भगता का अंगीकारु करदा आइआ ॥ करतै अपणा रूपु दिखाइआ ॥ १३ ॥ १ ॥ २ ॥ भैरउ महला ३ ॥ गुर सेवा ते अंम्रित फलु पाइआ हउमै त्रिसन बुझाई ॥ हरि का नामु हिर्दै मनि वसिआ मनसा मनहि समाई ॥ १ ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु मेरे पिआरे ॥ अनदिनु हरि गुण दीन जनु मांगै गुर कै सबदि उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना कउ जमु जोहि न साकै रती अंच दूख न लाई ॥ आपि तरहि सगले कुल तारहि जो तेरी सरणाई ॥ २ ॥ भगता की पैज रखहि तू आपे एह तेरी वडिआई ॥ जनम जनम के किलविख दुख काटहि दुबिधा रती न राई ॥ ३ ॥ हम मूड़ मुगध किछु बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई ॥ जो तुधु भावै सोई करसी अवरु न करणा जाई ॥ ४ ॥ जगतु उपाइ तुधु धंधै लाइआ भूंडी कार कमाई ॥ जनमु पदारथु जूऐ हारिआ सबदै सुरति न पाई ॥ ५ ॥ मनमुखि मरहि तिन किछू न सूझै दुरमति अगिआन अंधारा ॥ भवजलु पारि न पावहि कब ही डूबि मुए बिनु गुर सिरि भारा ॥ ६ ॥ साचै सबदि रते जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाए ॥ गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाए ॥ ७ ॥ तूं आपि निरमलु तेरे जन है निरमल गुर कै सबदि वीचारे ॥ नानकु तिन कै सद बलिहारै राम नामु उरि धारे ॥ ८ ॥ २ ॥ ३ ॥

भैरउ महला ५ असटपदीआ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥ जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाए ॥ नाम बिना जनमु बिरथा जाए ॥ १ ॥ तिसु सालाही जिसु हरि धनु रासि ॥ सो वडभागी जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु कोट कई सैना ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सहज

भयभीत होकर नरसिंह के पास नही जा सकी परन्तु भक्त प्रहलाद नरसिंह के चरणों मे आ लगा और उसने भयानक रूप को उतार दिया।। ११ ।। सभी सुखों के खजाने प्रभु-नाम को सच्चे गुरु ने मन में पक्का कर दिया है और अब राज, माल, माया आदि सब कुछ झूठा लगने लगा है। लोभी व्यक्ति इनहीं में लिपटा रहता है और प्रभु के नाम से विहीन को प्रभु के दरबार में सजा मिलती रहती है।। १२ ।। नानक का कथन है कि हर कोई प्रभु द्वारा कराया हुआ काम ही करता है और वे ही इस जीवन में सफल होते हैं जिन्होंने प्रभु के साथ अपने मन को जोड़ लिया है। भक्तों की सहायता तो प्रभु करता ही रहा है और उन्हें प्रभु ने सदैव अपने कर्ता रूप के दर्शन दिए हैं।। १३ ।। १ ।। २ ।। भैरउ महला ३ ।। गुरु की सेवा से नाम रूपी अमृत फल प्राप्त होता है जिससे अहंकार और तृष्णा समाप्त हो जाते हैं। प्रभु का नाम हृदय में बस जाता है और मन की इच्छाएँ मन में ही समाप्त हो जाती हैं।। १ ।। हे प्रभु, कृपा करो; यह दीन सेवक प्रतिदिन तुझसे हरि गुण माँगता है; शब्द-गुरु के माध्यम से तू मेरा उद्धार कर दे।। १ ।। रहाउ।। शान्त पुरुषों को यम देख भी नहीं पाता और उन्हें दुख की रत्ती भर आँच भी नहीं लगती। जो तेरी शरण में आ जाते हैं वे स्वयं तो पार उतरते ही हैं अपने सम्पूर्ण वंश को भी पार उतार देते हैं।। २ ।। भक्तों के सम्मान को तू स्वयं बचाता है, यही तेरा बड़प्पन है। तू ही जन्म-जन्मान्तरों के पापों के दुख को काट देता है और जीव में रत्ती भर भी दुविधा शेष नहीं रहती।। ३ ।। हम तो मूर्ख और मूढ़ हैं जो कुछ भी नहीं जानते; तू स्वयं ही हमें अपने रहस्य को समझा दे। तुझे जो अच्छा लगता है तू वही करता है और अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता।। ४ ।। संसार को उत्पन्न करके तूने काम धन्धों में लगा दिया है परन्तु संसार की चाल टेढ़ी ही बनी रहती है। साँसारिक लोगों ने इस जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को जुए में हार दिया है और शब्द को अपने हृदय में धारण नहीं किया है।। ५ ।। मनमुख व्यक्ति मर-खप जाते है परन्तु दुर्मति और अज्ञान के अंधकार के कारण उन्हें कुछ भी सुझाई नहीं पड़ता। वे कभी भी संसार सागर को पार नहीं कर पाते और सिर पर बोझ लादे हुए गुरु से विहीन बने रहकर डूब मरते हैं।। ६ ।। प्रभु के सच्चे सेवक सच्चे शब्द में लीन बने रहते हैं और प्रभु स्वयं ही उन्हें अपने से मिला लेता है। शब्द के माध्यम से ही गुरु की वाणी पहचानी जाती है और व्यक्ति सत्य में लौ लगाए रहता है।। ७ ।। तू स्वयं निर्मल है और शब्द-गुरु का चिंतन करने वाले तेरे सेवक भी निर्मल हैं। नानक तो उन पर सदैव बलिहारी जाता है जिन्होंने प्रभु-नाम को हृदय में धारण कर लिया है।। ८ ।। २ ।। ३ ।।

भैरउ महला ५ अष्टपदियां घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

वही बड़ा राजा है जिसके हृदय में प्रभु का नाम है और जिसके हृदय में नाम है उसके सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं। जिसके हृदय में प्रभु-नाम है वह करोड़ों प्रकार के धन प्राप्त करता है परन्तु नाम के बिना व्यक्ति का जीवन व्यर्थ ही जाता है।। १ ।। मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ जिसके पास प्रभु रूपी धन की रास पूंजी है और जिसके माथे पर गुरु का हाथ है वही भाग्यशाली है।। १ ।। रहाउ।। जिसके हृदय में नाम है उसके पास अनेकों किले और अनेकों सेनाएं हैं। जिसके पास हृदय में नाम है उसे ही स्वाभाविक सहज

सुखैना ॥ जिसु नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥ नाम बिना ध्रिगु जीवणु मूआ ॥ २ ॥ जिसु नामु रिदै सो जीवन मुकता ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सभ ही जुगता ॥ जिसु नामु रिदै तिनि नउ निधि पाई ॥ नाम बिना भ्रमि आवै जाई ॥ ३ ॥ जिसु नामु रिदै सो वेपरवाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सद ही लाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु वड परवारा ॥ नाम बिना मनमुख गावारा ॥ ४ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु निहचल आसनु ॥ जिसु नामु रिदै तिसु तखति निवासनु ॥ जिसु नामु रिदै सो साचा साहु ॥ नामहीण नाही पति वेसाहु ॥ ५ ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ महि जाता ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु बिधाता ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ ते ऊचा ॥ नाम बिना भ्रमि जोनी मूचा ॥ ६ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि पहारा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु परवाणु ॥ नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥ ७ ॥ तिनि नामु पाइआ जिसु भइओ क्रिपाल ॥ साधसंगति महि लखे गुोपाल ॥ आवण जाण रहे सुखु पाइआ ॥ कहु नानक ततै ततु मिलाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ कोटि बिसन कीने अवतार ॥ कोटि ब्रहमंड जा के ध्रमसाल ॥ कोटि महेस उपाइ समाए ॥ कोटि ब्रहमे जगु साजण लाए ॥ १ ॥ ऐसो धणी गुविंदु हमारा ॥ बरनि न साकउ गुण बिसथारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि माइआ जा कै सेवकाइ ॥ कोटि जीअ जा की सिहजाइ ॥ कोटि उपारजना तेरै अंगि ॥ कोटि भगत बसत हरि संगि ॥ २ ॥ कोटि छत्रपति करत नमसकार ॥ कोटि इंद्र ठाढे है दुआर ॥ कोटि बैकुंठ जा की द्रिसटी माहि ॥ कोटि नाम जा की कीमति नाहि ॥ ३ ॥ कोटि पूरीअत है जा कै नाद ॥ ॥ कोटि अखारे चलित बिसमाद ॥ कोटि सकति सिव आगिआकार ॥ कोटि जीअ देवै आधार ॥ ४ ॥ कोटि तीरथ जा के चरन मझार ॥ कोटि पवित्र जपत नाम चार ॥ कोटि पूजारी करते पूजा ॥ कोटि बिसथारनु अवरु न दूजा ॥ ५ ॥ कोटि महिमा जा की निरमल हंस ॥ कोटि उसतति जा की करत ब्रहमंस ॥ कोटि परलउ ओपति निमख माहि ॥ कोटि गुणा तेरे गणे न जाहि ॥ ६ ॥ कोटि गिआनी कथहि गिआनु ॥ कोटि धिआनी धरत धिआनु ॥ कोटि तपीसर

सुख प्राप्त होता है। जिसके हृदय में नाम है वही शीतल होता है और नाम के बिना जीवन धिक्कार और मरा हुआ है।। २ ।। जिसके हृदय में नाम है वही जीवन मुक्त है और हृदय में नाम धारण करने वाले के पास ही सभी प्रकार की विधियां और युक्तियां हैं। जिसके हृदय में नाम है उसी ने नौ निधियाँ प्राप्त की है और प्रभु-नाम के बिना व्यक्ति भ्रमों में पड़ा आता जाता रहता है।। ३ ।। जिसके हृदय में नाम है उसे किसी की परवाह नहीं होती और हृदय में नाम धारण करने वाले को सदैव लाभ ही लाभ प्राप्त होता है। जिसके हृदय में नाम है उसका परिवार भी विशाल हो जाता है अर्थात सारा संसार उसका परिवार हो जाता है। प्रभु-नाम के बिना मनमुख व्यक्ति गँवार ही कहा जाता है।। ४ ।। जिसके हृदय में नाम है उसका आसन अटल है और हृदय में नाम धारण करने वाले को राज सिंहासन पर बैठने का अवसर भी प्राप्त होता है। जिसके हृदय में नाम है वही सच्चा साहूकार है और नाम विहीन व्यक्ति का ना तो सम्मान होता है और ना ही उसका भरोसा किया जाता है।। ५ ।। जिसके हृदय में नाम है उसे सबमें ही जाना जाता है और जिसके हृदय में नाम का निवास होता है वही विधाता प्रभु बन जाता है। हृदय में नाम धारण करने वाला व्यक्ति सबसे ऊँचा होता है और नाम विहीन व्यक्ति अनेकों योनियों में भटकता रहता है।। ६ ।। जिसके हृदय में प्रभु-नाम है उसको प्रभु संसार में रमा हुआ प्रत्यक्ष दिखाई दे जाता है और हृदय में नाम धारण करने वाले का अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है। जिसके हृदय में प्रभु-नाम है वह व्यक्ति ही प्रभु के समक्ष स्वीकृत होता है अन्यथा नाम विहीन व्यक्ति का तो आवागमन बना ही रहता है।। ७ ।। जिस पर प्रभु कृपालु हो जाता है वही प्रभु-नाम को प्राप्त करता है तथा वही साधसंगत में धरती के पालन कर्ता प्रभु को देखता रहता है। वह सुख प्राप्त करता है और उसका आवागमन समाप्त हो जाता है। नानक का कथन है कि इस प्रकार प्रभु तत्व में यह जीव तत्व मिल जाता है।। ८ ।। १ ।। ४ ।। भैरउ महला ५ ।। प्रभु ने विष्णु जैसे करोड़ों अवतार पैदा किए हैं और जीव के लिए धर्म का आचरण करने के लिए करोड़ों ब्रह्माण्डों की रचना की है। उसने करोड़ों महेश उत्पन्न करके उन्हें अपने में लीन कर लिया है और करोड़ों ब्रह्मा संसारों की रचना करने में उसने लगा दिए हैं।। १ ।। हमारा प्रभु इस प्रकार का हमारा मालिक है जिसके गुणों के विस्तार का वर्णन नहीं किया जा सकता।। १ ।। रहाउ।। करोड़ों रूपों में माया उसकी दासी है और करोड़ों ही जीव रूपी सेजों में वह रमण कर रहा है। करोड़ों ही सृष्टियाँ तेरे अंग में लीन हैं और करोड़ों ही भक्त उस प्रभु के साथ बसे रहते हैं। करोड़ों ही छत्रपति तुझे प्रणाम करते हैं और करोड़ों इन्द्र तेरे द्वार पर खड़े रहते हैं। जिसकी एक दृष्टि में करोड़ों बैकुण्ठ हैं और उसके करोड़ों ही नाम है जिनका मूल्य नहीं आँका जा सकता।। ३ ।। उसके करोड़ों ही नाद बजते रहते हैं और आश्चर्य में डालने वाले उसके करोड़ों ही चरित्र और कर्मभूमियाँ, अर्थात अखाड़े हैं। करोड़ों शक्तियाँ और शिव उसकी आज्ञा में चलते है और करोड़ों ही जीवों को प्रभु अपना आसरा देता है।।४ ।।करोड़ों ही तीर्थ जिसके चरणों में स्थित हैं करोड़ों ही व्यक्ति उस प्रभु के पवित्र और सुन्दर नाम का सुमिरन करते हैं। करोड़ों ही पुजारी उसकी पूजा करते हैं और करोड़ों प्रकार के विस्तारों को बनाए रखने वाला उस प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं हैं।। ५ ।। करोड़ों निर्मल जीव आत्माएं जिसकी महिमा करती हैं; करोड़ों रूपों में उसी प्रभु की स्तुति सनक सनन्दन आदि करते हैं। एक क्षण में ही वह करोड़ों प्रलय और उत्पत्तियाँ कर देता हैं और हे प्रभु, तेरे करोड़ों ही गुण हैं जिनको गिना नहीं जा सकता॥६॥ करोड़ों ही ज्ञानवान व्यक्ति ज्ञान का कथन करते हैं और करोड़ों ही ध्यानी उसका ध्यान लगाते हैं। करोड़ों तपीश्वर

तप ही करते ॥ कोटि मुनीसर मोुनि महि रहते ॥ ७ ॥ अविगत नाथु अगोचर सुआमी ॥ पूरि रहिआ घट अंतरजामी ॥ जत कत देखउ तेरा वासा ॥ नानक कउ गुरि कीओ प्रगासा ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरि मो कउ कीनो दानु ॥ अमोल रतनु हरि दीनो नामु ॥ सहज बिनोद चोज आनंता ॥ नानक कउ प्रभु मिलिओ अचिंता ॥ १ ॥ कहु नानक कीरति हरि साची ॥ बहुरि बहुरि तिसु संगि मनु राची ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अचिंत हमारै भोजन भाउ ॥ अचिंत हमारै लीचै नाउ ॥ अचिंत हमारै सबदि उधार ॥ अचिंत हमारै भरे भंडार ॥ २ ॥ अचिंत हमारै कारज पूरे ॥ अचिंत हमारै लथे विसूरे ॥ अचिंत हमारै बैरी मीता ॥ अचिंतो ही इहु मनु वसि कीता ॥ ३ ॥ अचिंत प्रभू हम कीआ दिलासा ॥ अचिंत हमारी पूरन आसा ॥ अचिंत हम्हा कउ सगल सिधांतु ॥ अचिंतु हम कउ गुरि दीनो मंतु ॥ ४ ॥ अचिंत हमारे बिनसे बैर ॥ अचिंत हमारे मिटे अंधेर ॥ अचिंतो ही मनि कीरतनु मीठा ॥ अचिंतो ही प्रभु घटि घटि डीठा ॥ ५ ॥ अचिंत मिटिओ है सगलो भरमा ॥ अचिंत वसिओ मनि सुख बिस्रामा ॥ अचिंत हमारै अनहत वाजे ॥ अचिंत हमारै गोबिंदु गाजे ॥ ६ ॥ अचिंत हमारै मनु पतीआना ॥ निहचल धनी अचिंतु पछाना ॥ अचिंतो उपजिओ सगल बिबेका ॥ अचिंत चरी हथि हरि हरि टेका ॥ ७ ॥ अचिंत प्रभू धुरि लिखिआ लेखु ॥ अचिंत मिलिओ प्रभु ठाकुरु एकु ॥ चिंत अचिंता सगली गई ॥ प्रभ नानक नानक नानक मई ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥

भैरउ बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इहु धनु मेरे हरि को नाउ ॥ गांठि न बाधउ बेचि न खाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी ॥ भगति करउ जनु सरनि तुम्हारी ॥ १ ॥ नाउ मेरे माइआ नाउ मेरे पूंजी ॥ तुमहि छोडि जानउ नही दूजी ॥ २ ॥ नाउ मेरे बंधिप नाउ मेरे भाई ॥ नाउ मेरे संगि अंति होइ सखाई ॥ ३ ॥ माइआ महि जिसु रखै उदासु ॥ कहि कबीर हउ ता को दासु ॥ ४ ॥ १ ॥ नांगे आवनु नांगे जाना ॥ कोइ न रहिहै

तपस्या करते रहते हैं और करोड़ों मुनि मौन धारण किए रहते हैं।। ७ ।। वह सबका नाथ प्रभु अव्यक्त, अगोचर और सबका स्वामी है और वही अन्तर्यामी प्रभु सभी शरीरों में पूर्ण रूप से व्याप्त है। जिधर भी देखता हूँ तेरा ही निवास दिखाई देता है और नानक को तो गुरु ने अपने प्रकाश से प्रकाशित कर दिया है।। ८ ।। २ ।। ५ ।। भैरउ महला ५ ।। सच्चे गुरु ने मुझे दान दिया है और दान में प्रभु-नाम का अमूल्य रत्न मुझे प्रदान कर दिया है। स्वाभाविक रूप से ही अनन्त विनोद और कौतुक करने वाला प्रभु तो नानक को अचानक ही प्राप्त हो गया है।। १ ।। नानक का कथन है कि प्रभु की कीर्ति ही सच्ची है और वह तो बार-बार उसी में लीन बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। प्रेम रूपी भोजन हमारे यहाँ तो बिना किसी तनाव के किया जाता है और तनाव मुक्त होकर ही हमारे यहाँ उस प्रभु के नाम का जाप किया जाता है। निर्यत्न ही हमारा उद्धार शब्द के माध्यम से होता है और तनावमुक्त बने रहने से ही हमारे भण्डार भरे रहते हैं।। २ ।। स्वाभाविक रूप से ही हमारे काम पूरे हो जाते है और बिना किसी चिन्ता के ही हमारे दुख उतर जाते हैं। स्वाभाविक रूप से ही शत्रु हमारे मित्र बन गए हैं और सहज स्वाभाविक रूप से ही यह मन हमने वश में कर लिया है।। ३ ।। चिन्ता विहीन प्रभु ने ही हमें भरोसा दिलाया है और चिन्तामुक्त बने रहकर ही हमारी आशाएँ पूरी हो गई है। अचिन्त बने रहकर हमें तत्व की पहचान हो गई है और गुरु ने चिन्तामुक्त होने का हमको उपदेश दिया है।। ४ ।। अचिन्त बने रहने से ही हमारी शत्रु भावना विनष्ट हो गई है और स्वाभाविक ही हमारा अज्ञान का अंधकार मिट गया है। चिन्तामुक्त होने से ही मन को प्रभु की कीर्ति मीठी लगती है और सरलस्वभाव में बने रहने से ही प्रभु घट घट मे दिखाई देता है।। ५ ।। चिन्तामुक्त होकर ही हमारे सभी भ्रम मिट गए हैं और हमारा मन सुख की अवस्था में विश्राम करता है। स्वाभाविक रूप से ही हमारे अन्तर्मन में अनहद वाद्य बजता रहता है और अपने आप ही हमारे अन्दर प्रभु प्रकट हो उठता है।। ६ ।। सहज स्वाभाविक ही हमारा मन सन्तुष्ट हो उठा है और स्वतः ही उसने उस अटल प्रभु को पहचान लिया है। चिन्ता मुक्त होने से ही सब प्रकार की विवेक बुद्धि उत्पन्न होती है और अचिन्त बने रहकर ही प्रभु का आसरा हाथ लग सका है।। ७ ।। चिन्तामुक्त प्रभु ने प्रारम्भ से ही हमारा लेखा लिखा है और स्वाभाविक रूप से ही हमें वह एक ही मालिक प्रभु मिल गया है। चिन्ता और अचिन्ता दोनों ही पक्ष पूर्ण रूप से समाप्त हो गएं है और प्रभु नानक का रूप और नानक प्रभु का रूप हो गया है।। ८ ।। ३ ।। ६ ।।

भैरउ वाणी भक्तों की।। कबीर जी घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु का नाम मेरा ऐसा धन है जिसे कंजूसों की तरह ना तो मैं गाँठ में बाँधे घूमता हूँ और ना ही इसे व्यर्थ में ही बेचकर इसकी कम कीमत आँकता और खाता हूँ।। १ ।। रहाउ।। प्रभु-नाम ही मेरी खेती है और प्रभु-नाम ही मेरी बगीची है। हे प्रभु, मैं सेवक बनकर तुम्हारी शरण में आकर तुम्हारी भक्ति करता रहूँ।। १ ।। नाम ही मेरी धन-सम्पत्ति है और नाम ही मेरी रासपूंजी है; तुम्हें छोड़कर मेरी अन्य कोई भी रासपूंजी नहीं है।। २ ।। प्रभु-नाम ही मेरा बन्धु और भाई है तथा यह प्रभु-नाम ही है जो अन्तिम समय मेरा मददगार होगा।। ३ ।। माया में जिस व्यक्ति को वह अलिप्त बनाए रखे, कबीर का कथन है कि मैं तो ऐसे व्यक्ति का दास हूँ।। ४ ।। १ ।। यहाँ नंगे ही आना है और नंगे ही चले जाना है ; यहाँ कोई भी

राजा राना ॥ १ ॥ रामु राजा नउ निधि मेरै ॥ संपै हेतु कलतु धनु तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत संग न जात संगाती ॥ कहा भइओ दरि बांधे हाथी ॥ २ ॥ लंका गढु सोने का भइआ ॥ मूरखु रावनु किआ ले गइआ ॥ ३ ॥ कहि कबीर किछु गुनु बीचारि ॥ चले जुआरी दुइ हथ झारि ॥ ४ ॥ २ ॥ मैला ब्रहमा मैला इंदु ॥ रवि मैला मैला है चंदु ॥ १ ॥ मैला मलता इहु संसारु ॥ इकु हरि निरमलु जा का अंतु न पारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैले ब्रहमंडाइ कै ईस ॥ मैले निसि बासुर दिन तीस ॥ २ ॥ मैला मोती मैला हीरु ॥ मैला पउनु पावकु अरु नीरु ॥ ३ ॥ मैले सिव संकरा महेस ॥ मैले सिध साधिक अरु भेख ॥ ४ ॥ मैले जोगी जंगम जटा सहेति ॥ मैली काइआ हंस समेति ॥ ५ ॥ कहि कबीर ते जन परवान ॥ निरमल ते जो रामहि जान ॥ ६ ॥ ३ ॥ मनु करि मका किबला करि देही ॥ बोलनहारु परम गुरु एही ॥ १ ॥ कहु रे मुलां बांग निवाज ॥ एक मसीति दसै दरवाज ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिसिमिलि तामसु भरमु कदूरी ॥ भाखि ले पंचै होइ सबूरी ॥ २ ॥ हिंदू तुरक का साहिबु एक ॥ कह करै मुलां कह करै सेख ॥ ३ ॥ कहि कबीर हउ भइआ दिवाना ॥ मुसि मुसि मनूआ सहजि समाना ॥ ४ ॥ ४ ॥ गंगा कै संगि सलिता बिगरी ॥ सो सलिता गंगा होइ निबरी ॥ १ ॥ बिगरिओ कबीरा राम दुहाई ॥ साचु भइओ अन कतहि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदन कै संगि तरवरु बिगरिओ ॥ सो तरवरु चंदनु होइ निबरिओ ॥ २ ॥ पारस कै संगि तांबा बिगरिओ ॥ सो तांबा कंचनु होइ निबरिओ ॥ ३ ॥ संतन संगि कबीरा बिगरिओ ॥ सो कबीरु रामै होइ निबरिओ ॥ ४ ॥ ५ ॥ माथे तिलकु हथि माला बानां ॥ लोगन रामु खिलउना जानां ॥ १ ॥ जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥ लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥ राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥ २ ॥ सतिगुरु पूजउ सदा सदा मनावउ ॥ ऐसी सेव दरगह सुखु पावउ ॥ ३ ॥ लोगु कहै कबीरु बउराना ॥ कबीर का मरमु राम पहिचानां ॥ ४ ॥ ६ ॥ उलटि जाति कुल दोऊ बिसारी ॥ सुंन सहज महि बुनत हमारी ॥ १ ॥ हमरा झगरा

राजा-राणा बैठा नहीं रह सकेगा।। १ ।। वह राजा प्रभु ही मेरी नवनिधियों के समान है और हे मालिक, यह हमारी सम्पत्ति मोह और स्त्री आदि सब तेरे ही दिए हुए हैं।। १ ।। रहाउ ।। यहाँ कुछ भी नहीं आता और ना ही यहाँ से कुछ साथ जाता है। उन लोगों का क्या हुआ जिन लोगों ने दरवाजे पर हाथी बाँध रखे थे।। २ ।। लंका सोने का किला थी परन्तु मूर्ख रावण यहाँ से क्या लेकर जा सका।। ३ ।। कबीर कहता है कि हे जीव, तू उस प्रभु के गुणों का कुछ विचार कर अन्यथा तू जुआरियों की तरह दोनों हाथ झाड़कर यहाँ से चलता बनेगा।। ४ ।। २ ।। ब्रह्मा भी मैला है, इन्द्र भी मैला है, सूरज भी मैला है और चन्द्र भी मैला अथवा अपवित्र है।। १ ।। यह संसार मैलेपन को अपने पर मलता रहता है; यहाँ एक प्रभु ही निर्मल है जिसका कोई ओर-छोर नहीं है।। १ ।। रहाउ।। इन ब्रह्माण्डों के राजागण भी मैले हैं और दिन रात तथा तीसों दिन मैले ही मैले हैं।। २ ।। हीरा-मोती सभी मैले हैं और विकारयुक्त होने से पवन, पानी, अग्नि आदि सभी मैले हैं।। ३ ।। शिव-शंकर और महेश भी (अभिमान के कारण) मैले हैं तथा सिद्ध साधक और अनेकों पेशों वाले सम्प्रदाय भी मैले ही हैं।। ४ ।। योगी, जंगम अपनी जटाओं समेत मैले हैं और वास्तव में यह आत्मा भी इस शरीर समेत मैली है।। ५ ।। कबीर का कथन है कि वे सेवक ही स्वीकृत होते हैं जो प्रभु को जानते हुए निर्मल बने रहते हैं।। ६ ।। ३ ।। हे जीव, तू मन को मक्का बना और इस शरीर को किबला (मक्का का वह स्थान जिस ओर मुँह करके नमाज पढ़ी जाती है) बना। वास्तव में तेरे अन्दर जो बोल रहा है यही तेरा परम गुरु है।। १ ।। हे मुल्ला, दस दरवाजे वाले इस शरीर के अन्दर ही तू ऊँचे सुर में बाँग (आवाज़) लगा और नमाज पढ़।। १ ।। रहाउ।। तू भ्रम और मन की मलीनता को मार डाल और पाँचों विकारों को समाप्त करके तू सन्तोषी व्यक्ति बन जा।। २ ।। हिन्दु और मुसलमान का मालिक एक ही है बेशक मुल्ला और शेख जो मर्जी कहते और करते रहें।। ३ ।। कबीर कहता है कि मैं तो सच्चा प्रेमी हो गया हूँ और मन को धीरे-धीरे मारकर अपने स्वाभाविक रूप में लीन हो गया हूँ।। ४ ।। ४ ।। छोटी नदी ने अपना आप समाप्त करके जब अपने आप को गंगा में लीन किया तो वह छोटी सी नदी भी गंगा ही बन गई।। १ ।। राम को पुकार पुकार कर यह कबीर भी राम में ही लीन हो गया हैं और उसी का सत्य स्वरूप बना अब अन्य कहीं नहीं जाता।। १ ।। रहाउ।। जब वृक्ष चन्दन की सुगन्ध में लीन हुआ तो वह वृक्ष भी चन्दन ही हो निकला।। २ ।। जब पारस पत्थर के साथ ताँबा स्पर्श में आया तो वह ताँबा भी सोना हो निकला।। ३ ।। कबीर भी सन्तों की संगत में अपने अपको मिटाकर मिल गया है और वही कबीर अब परमात्मा का स्वरूप हो गया है।। ४ ।। ५ ।। लोगों ने माथे पर तिलक और हाथ में माला लेकर ऐसी बनावट बनाई है कि वास्तव में प्रभु तो जैसे उनके लिए खिलौना मात्र ही है अर्थात वे सोचते हैं कि जैसे बच्चा खिलौनों से आकर्षित हो जाता है उसी प्रकार प्रभु भी तिलक और माला आदि से आकर्षित हो जाता है।। १ ।। हे प्रभु, यदि मैं पागल भी हूँ तब भी मैं तेरा ही हूँ; लोग भला मेरे रहस्य को क्यों समझ पाएंगे।। १ ।। रहाउ।। पूजा के लिए ना तो मैं पत्ते तोड़ता हूँ और ना ही किसी देवता की पूजा करता हूँ क्योंकि प्रभु की भक्ति के बिना सारी सेवा निष्फल ही है।। २ ।। सच्चे गुरु (प्रभु) की पूजा करते हुए सदैव उसे मनाता हूँ और उसके इस प्रकार के सुमिरन से प्रभु के दरबार में सुख प्राप्त करता हूँ।। ३ ।। लोग कहते है कि कबीर बावला हो गया है परन्तु कबीर के वास्तविक रहस्य को तो केवल राम ही पहचानता है।। ४ ।। ६ ।। हमने माया की ओर से अपना मन उलटा कर अपनी जाति और कुल परम्परा को भुलाकर त्याग दिया है। हम तो अब शून्य और सहज भाव में ही ओत-प्रोत हो गए हैं।। १ ।। अब हमारा किसी से भी कोई झगड़ा

रहा न कोऊ ॥ पंडित मुलां छाडे दोऊ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुनि बुनि आप आपु पहिरावउ ॥ जह नही आपु तहा होइ गावउ ॥ २ ॥ पंडित मुलां जो लिखि दीआ ॥ छाडि चले हम कछू न लीआ ॥ ३ ॥ रिदै इखलासु निरखि ले मीरा ॥ आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥ ४ ॥ ७ ॥ निरधन आदरु कोई न देइ ॥ लाख जतन करै ओहु चिति न धरेइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥ आगे बैठा पीठि फिराइ ॥ १ ॥ जउ सरधनु निरधन कै जाइ ॥ दीआ आदरु लीआ बुलाइ ॥ २ ॥ निरधनु सरधनु दोनउ भाई ॥ प्रभ की कला न मेटी जाई ॥ ३ ॥ कहि कबीर निरधनु है सोई ॥ जा के हिरदै नामु न होई ॥ ४ ॥ ८ ॥ गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥ इस देही कउ सिमरहि देव ॥ सो देही भजु हरि की सेव ॥ १ ॥ भजहु गुोबिंद भूलि मत जाहु ॥ मानस जनम का एही लाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जरा रोगु नही आइआ ॥ जब लगु कालि ग्रसी नही काइआ ॥ जब लगु बिकल भई नही बानी ॥ भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥ २ ॥ अब न भजसि भजसि कब भाई ॥ आवै अंतु न भजिआ जाई ॥ जो किछु करहि सोई अब सारु ॥ फिरि पछुताहु न पावहु पारु ॥ ३ ॥ सो सेवकु जो लाइआ सेव ॥ तिन ही पाए निरंजन देव ॥ गुर मिलि ता के खुल्हे कपाट ॥ बहुरि न आवै जोनी बाट ॥ ४ ॥ इही तेरा अउसरु इह तेरी बार ॥ घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ कहत कबीरु जीति कै हारि ॥ बहु बिधि कहिओ पुकारि पुकारि ॥ ५ ॥ १ ॥ ९ ॥ सिव की पुरी बसै बुधि सारु ॥ तह तुम्ह मिलि कै करहु बिचारु ॥ ईत ऊत की सोझी परै ॥ कउनु करम मेरा करि करि मरै ॥ १ ॥ निज पद ऊपरि लागो धिआनु ॥ राजा राम नामु मोरा ब्रहम गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूल दुआरै बंधिआ बंधु ॥ रवि ऊपरि गहि राखिआ चंदु ॥ पछम दुआरै सूरजु तपै ॥ मेर डंड सिर ऊपरि बसै ॥ २ ॥ पसचम दुआरे की सिल ओड़ ॥ तिह सिल ऊपरि खिड़की अउर ॥ खिड़की ऊपरि दसवा दुआरु ॥ कहि कबीर ता का अंतु न पारु ॥ ३ ॥ २ ॥ १० ॥ सो मुलां जो मन सिउ लरै ॥ गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥ काल पुरख का मरदै मानु ॥ तिसु मुला कउ

नहीं रहा क्योंकि हमने पंडित और मुहल्ला दोनों को छोड़ दिया है।। १ ।। रहाउ ।। मैं अपने अभिमान पर अपने प्रेम को बुनकर उसे पहनाता हूँ और फिर जब मेरा अभिमान नहीं रहता तब मैं उस प्रभु का गुणानुवाद करता रहता हूँ।। २ ।। पंडित और मुल्ला ने जो कुछ भी लिख दिया हैं, हम तो उस सबको छोड़कर आगे चल पड़े हैं और इसमें हमने कुछ भी अपने साथ नहीं लिया है अर्थात उसे नहीं माना है।। ३ ।। हे राजन, यदि हृदय में पवित्रता है तो उस प्रभु को देख ले क्योंकि कबीर कहता है कि स्वयं को खोजने से ही वह प्रभु मिलता है।। ४ ।। ७ ।। निर्धन व्यक्ति को कोई भी आदर नही देता। वह लाखों प्रयत्न करे परन्तु कोई भी व्यक्ति धनवान के पास जाता है तो धनवान उसकी ओर पीठ करके बैठ जाता है।। १ ।। यदि धनवान निर्धन के यहाँ जाता है तो निर्धन उसे बुलाता भी है और उसका आदर भी करता है।। २ ।। निर्धन और धनवान दोनों ही भाई हैं और उनका निर्धन धनवान होना तो प्रभु का हुकुम है जिसे मिटाया नहीं सकता।। ३ ।। कबीर कहता है कि वास्तविक निर्धन तो वह है जिसके हृदय में प्रभु-नाम नहीं होता।। ४ ।। ८ ।। जीव ने जब गुरु की सेवा की और भक्तिपूर्ण आचरण किया तब उसने इस मानव शरीर को प्राप्त किया है। इस शरीर को तो देवता लोग भी प्राप्त करने की इच्छा बनाए रखते है। हे जीव, तू इस देही के माध्यम से प्रभु का सुमिरन करता रह (क्योंकि मानव जीवन ही इस काम के लिए अमूल्य अवसर है)।। १ ।। मानव जीवन का यही लाभ है कि प्रभु का सुमिरन करते रहो और उसे भुलाए मत रखो।। १ ।। रहाउ।। जब तक बुढ़ापे का रोग नहीं आ पहुँचा, जब तक समय ने तेरे शरीर को खा नहीं लिया, जब तक तेरी वाणी कला विहीन और दुर्बल नहीं हो गई अर्थात अपनी जवानी के समय में ही हे मेरे मन, तू उस प्रभु का सुमिरन कर ले।। २ ।। यदि तू अभी सुमिरन नहीं करेगा तो हे मेरे भाई, फिर कब करेगा क्योंकि जब तेरा अन्तिम समय आ जाएगा तो फिर यह सुमिरन हो नहीं सकेगा। जो कुछ करना है उसका ध्यान अभी कर ले क्योंकि जब तू पार नहीं उतर सकेगा तो फिर पछताता ही रहेगा।। ३ ।। सेवक वही है जिसे प्रभु ने अपनी सेवा में लगा लिया है और वही उस कालिमा से रहित प्रभु को प्राप्त करता है। गुरु से मिलकर उसके मन के दरवाजे खुल चुके होते हैं और वह फिर योनियों के मार्ग पर नहीं आता जाता।। ४ ।। हे जीव, तेरे लिए यही अवसर और यही उचित समय है कि तू अपने हृदय में ही उसे देखकर उसका चिंतन कर ले। कबीर कहता है और अनेकों विधियों से पुकार-पुकार कर कहता है कि हे जीव, तू अब चाहे तो जीवन के खेल को जीत ले और चाहे तो इस जीवन की बाजी को हार जा।। ५ ।। १ ।। ९ ।। शिव की पुरी रूपी गगनमण्डल अर्थात दशम् द्वार में श्रेष्ठ बुद्धि का निवास होता है। उस श्रेष्ठ बुद्धि को प्राप्त करके तुम प्रभु का चिंतन करो जिससे तुम्हें इस लोक और परलोक की समझ पड़ जाएगी और यह भी पता चल जाएगा कि मेरा-मेरा करते हुए मरते रहने में भला कौन सा लाभ है।। १ ।। मैंने तो अपने वास्तविक स्वरूप पर अपना ध्यान लगाया है और उस परम राजन् प्रभु का नाम ही मेरा ब्रह्मज्ञान है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु रूपी मूल द्वार पर ही हमने अपने मन का बन्ध (सम्बन्ध) बनाया है और तमोगुणी स्वभाव (सूर्य) पर सतोगुणी स्वभाव (चन्द्र) को स्थित किया हुआ है। जब उलटी दिशा में चलने से जहाँ पहले अज्ञान का अन्धकार था उस स्थान पर अब ज्ञान का सूर्य चमक उठा है। वह प्रभु जिसके हुकुम में सम्पूर्ण जगत है अब मेरे मन में बस रहा है।। २ ।। अज्ञान के द्वार रूपी शिला का आखिरी भाग मुझे मिल गया है और मैंने देखा है कि इस अज्ञान की शिला के उपर प्रकाश देने वाली एक और खिड़की है। इस खिड़की के उपर ही प्रभु का निवास स्थान दशम् द्वार है। कबीर का कथन है कि अब इस प्रकार की स्थिति बन गई है कि उसका ओर-छोर नहीं रह गया है अर्थात मैं प्रभु में ही लीन हो गया हूँ।। ३ ।। २।। १०।। असली मुल्ला वह है जो मन से जूझता है और गुरु के उपदेश के माध्यम से काल के सामने डटता है। वह यमराज के अहंकार का मर्दन करता है और ऐसे मुल्ला को मेरा

सदा सलामु ॥ १ ॥ है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥ दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काजी सो जु काइआ बीचारै ॥ काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै ॥ सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥ २ ॥ सो सुरतानु जु दुइ सर तानै ॥ बाहरि जाता भीतरि आनै ॥ गगन मंडल महि लसकरु करै ॥ सो सुरतानु छत्रु सिरि धरै ॥ ३ ॥ जोगी गोरखु गोरखु करै ॥ हिंदू राम नामु उचरै ॥ मुसलमान का एकु खुदाइ ॥ कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११ ॥ महला ५ ॥ जो पाथर कउ कहते देव ॥ ता की बिरथा होवै सेव ॥ जो पाथर की पांई पाइ ॥ तिस की घाल अजांई जाइ ॥ १ ॥ ठाकुरु हमरा सद बोलंता ॥ सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि देउ न जानै अंधु ॥ भ्रम का मोहिआ पावै फंधु ॥ न पाथरु बोलै ना किछु देइ ॥ फोकट करम निहफल है सेव ॥ २ ॥ जे मिरतक कउ चंदनु चड़ावै ॥ उस ते कहहु कवन फल पावै ॥ जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई ॥ तां मिरतक का किआ घटि जाई ॥ ३ ॥ कहत कबीर हउ कहउ पुकारि ॥ समझि देखु साकत गावार ॥ दूजै भाइ बहुतु घर गाले ॥ राम भगत है सदा सुखाले ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२ ॥ जल महि मीन माइआ के बेधे ॥ दीपक पतंग माइआ के छेदे ॥ काम माइआ कुंचर कउ बिआपै ॥ भुइअंगम भ्रिंग माइआ महि खापे ॥ १ ॥ माइआ ऐसी मोहनी भाई ॥ जेते जीअ तेते डहकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंखी म्रिग माइआ महि राते ॥ साकर माखी अधिक संतापे ॥ तुरे उसट माइआ महि भेला ॥ सिध चउरासीह माइआ महि खेला ॥ २ ॥ छिअ जती माइआ के बंदा ॥ नवै नाथ सूरज अरु चंदा ॥ तपे रखीसर माइआ महि सूता ॥ माइआ महि कालु अरु पंच दूता ॥ ३ ॥ सुआन सिआल माइआ महि राता ॥ बंतर चीते अरु सिंघाता ॥ मांजार गाडर अरु लूबरा ॥ बिरख मूल माइआ महि परा ॥ ४ ॥ माइआ अंतरि भीने देव ॥ सागर इंद्रा अरु धरतेव ॥ कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ ॥ तब छूटे जब साधू पाइआ ॥ ५ ॥ ५ ॥ १३ ॥ जब लगु मेरी मेरी करै ॥ तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ जब

सदा ही सलाम है।। १ ।। वह प्रभु तो सामने ही है। इसे भला दूर क्यों बताते हो। मन के द्वन्द को बनाए रखने वाले विकारों को बाँध लो और उस सुन्दर प्रभु को प्राप्त कर लो।। १ ।। रहाउ।। काज़ी वह जो काया के बारे में सोचता हुआ उसे पूरी तरह समझता है। वह शरीर की अग्नि में ब्रह्म को प्रकाशित करता रहता है। वह स्वप्न में भी बिन्दु को चंचल बनाने वाले विषय-विकारों को अपने पास नही आने देता और इस प्रकार के काज़ी को बुढ़ापा और मरण नहीं देखना पड़ता।। २ ।। सुलतान कहलवाने योग्य वही है जो ज्ञान और वैराग्य के दोनों तीरों को तान कर बाहर फेंकता रहे और बाहर जाते मन को रोककर भीतर स्थित बनाए रखे ।। ३ ।। योगी तो गोरख की रट लगाता है और हिन्दु राम नाम का उच्चारण करता रहता है। मुसलमान केवल एक खुदा की बात करता है परन्तु कबीर का स्वामी तो सबमें ही व्याप्त बना रहने वाला है।। ४ ।। ३ ।। ११ ।। महला ५ ।। जो पत्थर को ही परमात्मा कहते हैं उनकी सेवा व्यर्थ हो जाती है। जो पत्थर के पैरों पर गिरते हैं उनकी यह मेहनत निष्फल बन जाती है।। १ ।। हमारा मालिक तो सदैव बातचीत करता रहने वाला है और वह प्रभु सभी जीवों को दान भी देता रहता है।। १ ।। रहाउ।। अन्धा अज्ञानी व्यक्ति यह नहीं जानता कि उसके अन्तर्मन में ही परमात्मा है। भ्रमों में पड़ा यह जीव अपने गले में फन्दे डाले रहता है। पत्थर न तो कुछ बोलता है ना कुछ देता है इसलिए उसके लिए किए हुए कर्मकाण्ड व्यर्थ हैं और उसकी सेवा भी निष्फल होती है। यदि मृत व्यक्ति पर चन्दन चढ़ाया जाए तो बताओ भला उससे कौन सा फल मिलेगा। यदि मृतक को गन्दगी में भी फेंक दिया जाए तो उस मृतक का भला क्या कम हो जाएगा।। ३ ।। कबीर कहता है कि मैं पुकार-पुकार कर कह रहा हूँ कि प्रभु से दूर जा चुके गंवार व्यक्ति तू इस बात को समझ और ठीक तरह से देख। द्वैतभाव ने अनेकों घरों को गलाकर नष्ट कर दिया है इसलिए राम (प्रभु) के भक्त ही सदैव सुखी बने रहने वाले हैं।।४ ।।४ ।।१२ ।। लालच में फँसी जल की मछली कुण्डी में अटक जाती है। पतंगा भी सुख के लोभ में दीपक की तरफ दौड़कर नष्ट हो जाता है। हाथी में काम रूपी माया व्याप्त बनी रहती है तथा साँप और भंवरा सुगन्ध की माया में ही नष्ट हो जाते हैं।। १ ।। हे भाई, माया ऐसी मोहिनी है कि इस संसार में जितने भी जीव है इसने उन सबको बहका रखा है।। १ ।। रहाउ।। पक्षी, पशु सभी माया में ही लीन हैं और शक्कर रूपी माया मक्खी तक को बहुत अधिक दुख देती है। घोड़े और ऊँट भी माया में ही लीन है तथा चौरासी सिद्ध भी माया में ही अनेकों प्रकार के खेल खेलते रहते हैं ।। ३ ।। छः यति भी माया के ही बन्दे हैं और यही स्थिति नौ नाथों, सूर्य और चांद की बनी हुई है। तपस्वी, ऋषि सभी माया की नींद में ही सोए हुए है तथा पांचों विकार और यमराज आदि सभी माया में ही पड़े हुए हैं।। ३ ।। कुत्ते, गीदड़, बन्दर, चीते, शेर सभी मायावी प्रपंचों में ही लीन है। बिल्ले, लोमड़ियाँ और भेड़ें आदि तथा वृक्षों की जड़ें आदि भी माया में ही फंसे हुए हैं।। ४ ।। देवतागण, सागर, इन्द्र और धरती आदि सभी माया के ही अन्तर्गत हैं। कबीर कहता है कि जिसको भी पेट लगा है वह माया में ही लीन बना हुआ है और माया के जाल से वह तभी छूटता है जब वह वास्तविक सच्चे साधु पुरुष को पा जाता है।।५ ।।५ ।।१३ ।।जब तक यह जीव मेरी मेरी कहता रहता है तब तक इसका एक भी काम पूरा नहीं होता। जब

मेरी मेरी मिटि जाइ ॥ तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु बिचारु मना ॥ हरि की न सिमरहु दुख भंजना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु सिंघु रहै बन माहि ॥ तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥ जब ही सिआरु सिंघ कउ खाइ ॥ फूलि रही सगली बनराइ ॥ २ ॥ जीतो बूडै हारो तिरै ॥ गुर परसादी पारि उतरै ॥ दासु कबीरु कहै समझाइ ॥ केवल राम रहहु लिव लाइ ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४ ॥ सतरि सैइ सलार है जा के ॥ सवा लाखु पैकाबर ता के ॥ सेख जु कहीअहि कोटि अठासी ॥ छपन कोटि जा के खेल खासी ॥ १ ॥ मो गरीब की को गुजरावै ॥ मजलसि दूरि महलु को पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी है खेल खाना ॥ चउरासी लख फिरै दिवानां ॥ बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ उनि भी भिसति घनेरी पाई ॥ २ ॥ दिल खलहलु जा कै जरद रू बानी ॥ छोडि कतेब करै सैतानी ॥ दुनीआ दोसु रोसु है लोई ॥ अपना कीआ पावै सोई ॥ ३ ॥ तुम दाते हम सदा भिखारी ॥ देउ जबाबु होइ बजगारी ॥ दासु कबीरु तेरी पनह समानां ॥ भिसतु नजीकि राखु रहमाना ॥ ४ ॥ ७ ॥ १५ ॥ सभु कोई चलन कहत है ऊहां ॥ ना जानउ बैकुंठु है कहां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आप आप का मरमु न जानां ॥ बातन ही बैकुंठु बखानां ॥ १ ॥ जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥ तब लगु नाही चरन निवास ॥ २ ॥ खाई कोटु न परल पगारा ॥ ना जानउ बैकुंठ दुआरा ॥ ३ ॥ कहि कमीर अब कहीऐ काहि ॥ साधसंगति बैकुंठै आहि ॥ ४ ॥ ८ ॥ १६ ॥ किउ लीजै गढु बंका भाई ॥ दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पांच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ ॥ जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ ॥ १ ॥ कामु किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुंनु दरवाजा ॥ क्रोधु प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा ॥ २ ॥ स्वाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाई ॥ तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ गढु लीओ न जाई ॥ ३ ॥ प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ ॥ ब्रहम अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ ॥ ४ ॥ सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा ॥ साधसंगति अरु गुर की क्रिपा ते

इसकी मेरी-मेरी की भावना मिट जाती है तब प्रभु स्वयं आकर इसके काम सँवारता है।। १ ।। हे मेरे मन, इस प्रकार के ज्ञान का चिंतन कर और दुखों को नष्ट करने वाले प्रभु का सुमिरन तू क्यों नहीं करता।। १ ।। रहाउ।। जब तक अहंकार रूपी शेर शरीर रूपी वन में बना रहता है तब तक वन फलता फूलता ही नहीं। जैसे ही विनम्रता रूपी गीदड़ अहंकार रूपी शेर को खा जाता है तो सारी वनस्पति फल-फूल उठती है।। २ ।। जो इस संसार को जीतता है वह तो डूब जाता है और जो उसे हार जाता है अर्थात इससे तटस्थ हो जाता है वह पार उतर जाता है। जीव गुरु की कृपा से ही पार उतरता हैं। सेवक कबीर समझाकर यह कहता है कि केवल प्रभु में ही अपनी लौ लगाए रखो॥३॥६॥१४॥ उस खुदा के सात हजार फरिश्ते माने जाते हैं और हज़रत आदम से लेकर मोहम्मद साहिब तक सवा लाख पैगम्बर माने जाते हैं। अट्ठासी करोड़ शेख कहे जाते हैं और छप्पन करोड़ उनके खास सेवक माने जाते है।। १ ।। मुझ गरीब की पुकार वहाँ तक कौन पहुँचाएगा क्योंकि उसकी मजलिस (दरबार) बहुत दूर है और उसके ठिकाने (महल) को कौन पा सकता है।। १ ।। रहाउ।। तैंतीस करोड़ देवता भी उसके सेवक के रूप में हैं और चौरासी लाख योनियों में पागल बन कर जीव भटक रहे हैं। बाबा आदम पर थोड़ी सी कृपा दृष्टि खुदा ने की और उसको भी अच्छा स्वर्ग प्राप्त हो गया।। २ ।। जिसके हृदय में द्वैतभाव के कारण खलबली मची रहती है उसके मुंह का रंग भी पीला रहता है और वह कतेबों की शिक्षा छोड़कर शैतान की शिक्षा पर अमल करता रहता है। जीव दुनियाँ को दोष देता है और लोगों पर रोष प्रकट करता रहता है परन्तु वास्तव में वह अपने किए हुए का फल ही पाता है।। ३ ।। तुम दाता हो और हम सदैव तेरे सामने भिखारी हैं। यदि मैं तेरे दिए हुए को आगे देने से जवाब दूं तो मैं वास्तव में गुनहगार बनता हूँ। दास कबीर तो तेरी शरण में आ गया है और हे रहम करने वाले खुदा, यही उसके लिए बहिश्त है; तू सदैव उसे इसी के पास बनाए रख।। ४ ।। ७ ।। १५ ।। सब कोई वहाँ चलने के लिए ही कहते हैं परन्तु मैं नहीं जानता कि वह बैकुण्ठ कहाँ है।। १ ।। रहाउ।। अपने रहस्य को तो व्यक्ति जानता ही नहीं और अपनी बातों से बैकुण्ठ की व्याख्या करने में जुटा रहता है। जब तक इस मन में बैकुण्ठ की आशा बनी रहती है तब तक प्रभु के चरणों में निवास नहीं होता।। २ ।। ना तो वहाँ खाई है ना गारे से अच्छी तरह लीपा हुआ किला है। मैं तो बैकुण्ठ के द्वार का भी अता-पता नहीं जानता।। ३ ।। कबीर कहता है कि अब भला इसके बारे में क्या कहा जाए क्योंकि हमारा बैकुण्ठ तो साधसंगत ही है।। ४ ।। ८ ।। १६ ।। इस शरीर रूपी पक्के किले को कैसे जीता जाए; इसमें द्वैत रूपी दोहरी दीवार बनी है और इसके चारों ओर तीनों गुणों की खाई बनी है।। १ ।। रहाउ।। पाँच तत्वों को पच्चीस गुण अर्थात पाँच गुणों की पच्चीस प्रकृतियां प्रबल माया के आसरे में मोह, अभिमान और ईर्ष्या आदि के रूप में विद्यमान है। इस गरीब सेवक का तो इस पर कोई जोर नहीं चलता इसलिए हे प्रभु, मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ।। १ ।। पाप और पुण्य के दरवाजे में काम के किवाड़ लगे हैं और सुख और दुख इसके पहरेदार हैं। क्रोध इसमें प्रधान रूप में लड़ाकू योद्धा बनकर बैठा हैं और विद्रोही मन इसमें राजा बना हुआ है।। २ ।। उसने स्वादों का कवच पहन रखा है, ममता का टोप धारण किया है और कुबुद्धि की कमान चढ़ाई हुई है। तृष्णा के तीर उसने हृदय में धारण किए हुए हैं; अतः इस प्रकार इस किले को जीता नहीं जा सकता।। ३ ।। यदि प्रेम का पलीता और सुरति की हवाई बना कर उसके माध्यम से ज्ञान का गोला चलाया जाए तथा ब्रह्म अग्नि को स्वाभाविक रूप से प्रज्जवलित किया जाए तो एक ही चोट में इसको फतह किया जा सकता है।। ४ ।। सत्य और सन्तोष को लेकर यदि लड़ाई की जाए तो दोनों दरवाजे टूट जाते हैं तथा साधसंगत और गुरु की कृपा से इस किले के राजा मन को

पकरिओ गढ को राजा ॥ ५ ॥ भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी ॥ दासु कमीरु चढ़िओ गढ़ ऊपरि राजु लीओ अबिनासी ॥ ६ ॥ ९ ॥ १७ ॥ गंग गुसाइनि गहिर गंभीर ॥ जंजीर बांधि करि खरे कबीर ॥ १ ॥ मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥ चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥ रहाउ ॥ गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ म्रिगछाला पर बैठे कबीर ॥ २ ॥ कहि कंबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखन है रघुनाथ ॥ ३ ॥ १० ॥ १८ ॥

भैरउ कबीर जीउ असटपदी घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अगम द्रुगम गड़ि रचिओ बास ॥ जा महि जोति करे परगास ॥ बिजुली चमकै होइ अनंदु ॥ जिह पउढ़े प्रभ बाल गोबिंद ॥ १ ॥ इहु जीउ राम नाम लिव लागै ॥ जरा मरनु छूटै भ्रमु भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अबरन बरन सिउ मन ही प्रीति ॥ हउमै गावनि गावहि गीत ॥ अनहद सबद होत झुनकार ॥ जिह पउढ़े प्रभ स्री गोपाल ॥ २ ॥ खंडल मंडल मंडल मंडा ॥ त्रिअ असथान तीनि त्रिअ खंडा ॥ अगम अगोचरु रहिआ अभ अंत ॥ पारु न पावै को धरनीधर मंत ॥ ३ ॥ कदली पुहप धूप परगास ॥ रज पंकज महि लीओ निवास ॥ दुआदस दल अभ अंतरि मंत ॥ जह पउड़े स्री कमला कंत ॥ ४ ॥ अरध उरध मुखि लागो कासु ॥ सुंन मंडल महि करि परगासु ॥ ऊहां सूरज नाही चंद ॥ आदि निरंजनु करै अनंद ॥ ५ ॥ सो ब्रहमंडि पिंडि सो जानु ॥ मान सरोवरि करि इसनानु ॥ सोहं सो जा कउ है जाप ॥ जा कउ लिपत न होइ पुंन अरु पाप ॥ ६ ॥ अबरन बरन घाम नही छाम ॥ अवर न पाईऐ गुर की साम ॥ टारी न टरै आवै न जाइ ॥ सुंन सहज महि रहिओ समाइ ॥ ७ ॥ मन मधे जानै जे कोइ ॥ जो बोलै सो आपै होइ ॥ जोति मंत्रि मनि असथिरु करै ॥ कहि कबीर सो प्रानी तरै ॥ ८ ॥ १ ॥ कोटि सूर जा कै परगास ॥ कोटि महादेव अरु कबिलास ॥ दुरगा कोटि जा कै मरदनु करै ॥ ब्रहमा कोटि बेद उचरै ॥ १ ॥ जउ जाचउ तउ केवल राम ॥ आन देव सिउ नाही काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि चंद्रमे

पकड़ लिया जाता है।। ५ ।। भगवान को चाहने वालों की भीड़ अर्थात सत्संगति और सुमिरन की शक्ति से काल के भय की फाँसी कट जाती है। हे कबीर, प्रभु का सेवक इस प्रकार किले पर चढ़ जाता है और अविनाशी राज को प्राप्त कर लेता है।। ६ ।। ६ ।। १७ ।। सबका पालन करने वाली गंगा गहरी और गम्भीर है और जंजीरों से बांधकर कबीर को वहाँ ले जाया गया।। १ ।। जब उसका मन ही नहीं डोला तो फिर भला तन क्यों डरता। कबीर का चित तो प्रभु के चरण कमलों में लीन बना हुआ था। रहाउ।। गंगा की लहरों के साथ मेरी जंजीर टूट गई है और यह कबीर मृगछाला के आसन पर जा बैठा।। २ ।। कबीर कहता है कि जहाँ कोई संगी साथी नहीं होता वहाँ प्रभु ही जल और स्थल में रक्षक बना रहता है।। ३ ।। १० ।। १८।।

भैरउ कबीर जी अष्टपदी घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसाद।।

उस प्रभु ने अगम्य और दुर्गम किला (दशम द्वार) बनाकर उसमें अपना निवास किया हुआ है और उस प्रभु की ज्योति से ही वह शरीर रूपी किला प्रकाशित होता रहता है। जिस ठिकाने पर धरती का स्वामी प्रभु बसता है वहाँ प्रभु की ज्ञान रूपी बिजली चमकती है और आनन्द बना रहता है।। १ ।। जब इस जीव की राम नाम में लौ लग जाती है तो इसका जन्म-मरण छूट जाता है और भ्रम भाग खड़ा होता है।। १ ।। रहाउ।। जिनके मन में वर्ण-अवर्ण अर्थात जाति-पाति का ही प्रेम बना है वे सदैव अहंकार के गीत गाते रहते हैं। जिस स्थान पर धरती का पालक प्रभु बसता है वहाँ तो सदैव अनहद शब्द की झंकार होती रहती है।। २ ।। वह प्रभु खण्डों, मण्डलों को बनाने वाला है तथा तीनों लोकों तीनों देवताओं और तीनों गुणों का नाश करने वाला भी है। वह अगम्य, अगोचर प्रभु हृदय में ही बसा रहता है और कोई भी धरती को धारण करने वाले उस प्रभु के रहस्य को नहीं जान पाता।। ३ ।। केले, फूल, धूपबत्ती में उसी का प्रकाश है और चरण कमलों की धूलि में ही उसका निवास है। बारह पंखुड़ियों वाले हृदय कमल में उसकी प्रेरणा और मन्तव्य स्थित बना रहता है और उसी स्थान पर वह प्रभु टिका रहता है।। ४ ।। नीचे और ऊपर वह प्रकाश करने वाला है और वही प्रकाश शून्य मण्डल (दशम द्वार) में भी है। वहाँ ज्ञान रूपी सूर्य का प्रकाश है और चन्द्रमा की निष्क्रिय शान्ति नहीं है। वह आदि निरंजन वहीं पर आनन्द भोगता है।। ५ ।। जो ब्रह्माण्ड में है उस सबको शरीर में भी जान लो तथा प्रभु रूपी मानसरोवर में स्नान कर लो। मैं वही हूँ, अर्थात सोहम् उस प्रभु का जाप है जिस पर पाप और पुण्य का कोई लेप नहीं होता।। ६ ।। वर्ण, अर्वण और धूप तथा छाया का उस पर प्रभाव नहीं होता। वह प्रभु गुरु की शरण में आए बिना नहीं पाया जाता। उसमें लगा ध्यान टूटता नहीं और फिर मनुष्य आवागमन में नहीं पड़ता तथा स्वाभाविक रूप से ही विकार शून्य अवस्था में लीन बना रहता है।। ७ ।। यदि मन में ही उसे कोई जान ले तो फिर वह जो कुछ भी बोलेगा स्वयं ही पूरा हो जाएगा। जो व्यक्ति प्रभु की ज्योति के अनुभूति रूपी मन्त्र से मन को स्थिर कर लेता है, कबीर का कथन है कि वह प्राणी पार उतर जाता है।। ८।। १ ।। करोड़ों सूर्यो जितना जिसका प्रकाश है, करोड़ों महादेव और करोड़ों जिसके कैलाश पर्वत हैं ; करोड़ों दुर्गा जिसके चरणों को दबाती हैं और करोड़ों ब्रह्मा जिसके लिए वेदों का उच्चारण करते हैं।। १ ।। मैं यदि माँगता ही हूँ तो केवल ऐसे प्रभु को ही माँगता हूँ; अन्य देवताओं आदि से मुझे कुछ लेना देना नहीं है।। १ ।। रहाउ।। करोड़ों चन्द्रमा

करहि चराक ॥ सुर तेतीसउ जेवहि पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दरबार ॥ धरम कोटि जा के प्रतिहार ॥ २ ॥ पवन कोटि चउबारे फिरहि ॥ बासक कोटि सेज बिसथरहि ॥ समुंद कोटि जा के पानीहार ॥ रोमावलि कोटि अठारह भार ॥ ३ ॥ कोटि कमेर भरहि भंडार ॥ कोटिक लखिमी करै सीगार ॥ कोटिक पाप पुंन बहु हिरहि ॥ इंद्र कोटि जा के सेवा करहि ॥ ४ ॥ छपन कोटि जा कै प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खिअत अपार ॥ लट छूटी वरतै बिकराल ॥ कोटि कला खेलै गोपाल ॥ ५ ॥ कोटि जग जा कै दरबार ॥ गंध्रब कोटि करहि जैकार ॥ बिदिआ कोटि सभै गुन कहै ॥ तऊ पारब्रहम का अंतु न लहै ॥ ६ ॥ बावन कोटि जा कै रोमावली ॥ रावन सैना जह ते छली ॥ सहस कोटि बहु कहत पुरान ॥ दुरजोधन का मथिआ मानु ॥ ७ ॥ कंद्रप कोटि जा कै लवै न धरहि ॥ अंतर अंतरि मनसा हरहि ॥ कहि कबीर सुनि सारिगपान ॥ देहि अभै पदु मांगउ दान ॥ ८ ॥ २ ॥ १८ ॥ २० ॥

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रे जिहबा करउ सत खंड ॥ जामि न उचरसि स्री गोबिंद ॥ १ ॥ रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ ॥ सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ जिहबा अवरें काम ॥ निरबाण पदु इकु हरि को नामु ॥ २ ॥ असंख कोटि अन पूजा करी ॥ एक न पूजसि नामै हरी ॥ ३ ॥ प्रणवै नामदेउ इहु करणा ॥ अनंत रूप तेरे नाराइणा ॥ ४ ॥ १ ॥ पर धन पर दारा परहरी ॥ ता कै निकटि बसै नरहरी ॥ १ ॥ जो न भजंते नाराइणा ॥ तिन का मै न करउ दरसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कै भीतरि है अंतरा ॥ जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥ २ ॥ प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥ ना सोहै बतीस लखना ॥ ३ ॥ २ ॥ दूधु कटोरै गडवै पानी ॥ कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥ १ ॥ दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥ नाही त घर को बापु रिसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोइन कटोरी अंम्रित भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥ २ ॥ एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ नामे देखि नराइनु हसै ॥ ३ ॥ दूधु पीआइ भगतु

जिसके चिराग हैं और तैतीसों करोड़ देवता उसी का भोजन करते हैं। नौ ग्रहों के करोड़ों झुण्ड तेरे दरबार में खड़े रहते हैं और करोड़ों ही धर्मराज उसके दरबान बने रहते हैं।। २ ।। उसके महल में करोड़ों पवन घूमते रहते हैं और करोड़ों ही वासुकी नाग उसकी सेज़ के तौर पर बिछे रहते हैं। करोड़ों ही समुद्र उसके पानी भरने वाले हैं और अत्यन्त भार वाली करोड़ों प्रकार की वनस्पति उसकी रोमावली है।। ३ ।। करोड़ों कुबेर उसके भण्डार भरते रहते है और करोड़ों लक्ष्मियां उसके कारण शृंगार करती रहती हैं। करोड़ों ही पाप उसे देखने से दूर हो जाते हैं और करोड़ों इन्द्र उस प्रभु की सेवा में लगे रहते हैं।। ४ ।। स्थान-स्थान और नगर-नगर पर चमकते रहने वाले छप्पन करोड़ अपार बादल तेरे प्रतिहारी (दरबान) हैं। कई लटाओं, जटाओं को खोलकर विकराल रूप में कार्यशील हैं और उन सब में करोड़ों शक्तियों के रूप में वह प्रभु ही खेलता रहता है।। ५ ।। उसके दरबार में करोड़ों यज्ञ- अनुष्ठान आदि चलते रहते हैं और करोड़ों गंधर्व उसकी जय-जयकार करते रहते हैं। करोड़ों विद्याएँ उस प्रभु के गुण गाती रहती है पर फिर भी उस परब्रह्म के रहस्य को नहीं जान पाती।। ६ ।। बावन करोड़ रोमावली जैसी जिसकी बानर सेना थी और उसने रावण की सेना को भी छल लिया अर्थात हरा दिया था, उसका हजारों करोड़ों विधियों से पुराण वर्णन करते हैं। उसी ने ही दुर्योधन के अभिमान का नाश किया था।। ७ ।। करोड़ों कामदेव उसकी बराबरी नहीं कर पाते हालांकि यही कामदेव प्रत्येक हृदय की वासना को चुराते रहते हैं। कबीर कहता है कि हे प्रभु, मेरी बात सुनो और मैं तुझसे अभय पद को माँग रहा हूँ, यह मुझे प्रदान कर दो।। ८ ।। २ ।। १८ ।। २०।।

भैरउ वाणी नामदेव जी की घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे जीभ, यदि तू प्रभु के नाम का उच्चारण नहीं करेगी तो मैं तेरे सात टुकड़े कर दूंगा।। १ ।। हे जीव, अपनी जीभ को प्रभु-नाम में रंग ले और प्रभु-नाम का सुमिरन करके अपने आपको अच्छे रस रंग वाली बना ले।। १ ।। रहाउ।। अन्य काम करती हुई हे जीभ, तेरे सभी कार्य झूठे हैं क्योंकि एक प्रभु का नाम ही निर्वाण पद अर्थात दुख विहीन अवस्था तक पहुँचाता है।। २ ।। असंख्य, करोड़ लोगों ने कई अन्य प्रकार की पूजा की और एक प्रभु के नाम की आराधना नहीं की है।। ३ ।। नामदेव विनती करता है कि हे जीव, तेरे लिए करने योग्य कार्य यही है कि तू यह कहती रहे कि हे प्रभु, तेरे रूप अनन्त हैं।। ४ ।। १ ।। जिसने पराए धन, पराई स्त्री अर्थात इन पदार्थो को त्याग दिया है प्रभु उसके निकट ही बसा रहता है।। १ ।। जो प्रभु का भजन नहीं करते मैं उनका कभी भी दर्शन ना करूं।। १ ।। रहाउ।। जिनके अन्तर्मन में प्रभु से दूरी बनी हुई है वे व्यक्ति वैसे ही हैं जैसे पशु होते हैं।। २ ।। नामदेव विनती करता है कि व्यक्ति बेशक बत्तीस लक्षणों वाला सुन्दर व्यक्ति हो परन्तु नाक के बिना वह अच्छा नहीं लगता।। ३ ।। २ ।। लोटे में पानी लेकर नामदेव ने कपिला गाय को दुहा और दूध को कटोरे में भर कर ले आया।। १ ।। वह प्रभु से कहने लगा कि हे राजन, तुम दूध पियो; यदि तुम दूध पी लोगे तो मेरा मन प्रसन्न हो जाएग नहीं तो मेरे पिता जी जिन्होंने मुझे तुमको दूध पिलाने के लिए कहा है नाराज हो जाएंगे।। १ ।। रहाउ।। सोने की कटोरी को अमृत रूपी दूध से भरकर नामदेव ने हाथ में लेकर उसे प्रभु के सामने रख दिया।। २ ।। नामदेव को देखकर प्रभु ने हँसते हुए कहा कि एक तेरे जैसा भक्त ही मेरे मन में बसा रहता है।। ३ ।। इस प्रकार दूध पिलाकर भक्त वापस

घरि गइआ ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ मै बउरी मेरा रामु भतारु ॥ रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥ १ ॥ भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु ॥ तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥ रसना राम रसाइनु पीजै ॥ २ ॥ अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥ मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥ ३ ॥ उसतति निंदा करै नरु कोई ॥ नामे स्रीरंगु भेटल सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥ कबहू घर घर टूक मगावै ॥ कबहू कूरनु चने बिनावै ॥ १ ॥ जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ॥ हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥ कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥ २ ॥ कबहू खाट सुपेदी सुवावै ॥ कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥ ३ ॥ भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥ जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥ ४ ॥ ५ ॥ हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥ भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥ १ ॥ हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ ॥ छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लै कमली चलिओ पलटाइ ॥ देहुरै पाछै बैठा जाइ ॥ २ ॥ जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥ भगत जनां कउ देहुरा फिरै ॥ ३ ॥ ६ ॥

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥ त्रिखावंत जल सेती काज ॥ जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥ ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥ १ ॥ नामे प्रीति नाराइण लागी ॥ सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी पर पुरखा रत नारी ॥ लोभी नरु धन का हितकारी ॥ कामी पुरख कामनी पिआरी ॥ ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥ २ ॥ साई प्रीति जि आपे लाए ॥ गुर परसादी दुबिधा जाए ॥ कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥ नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥ ३ ॥ जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥ ऐसा हरि सेती मनु राता ॥ प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥ गोबिदु बसै हमारै चीति ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ घर की नारि

घर आ गया तथा नामदेव को प्रभु का दर्शन हो गया।। ४ ।। ३ ।। मैं बावली हूँ और मेरा पति वह प्रभु है। मैं पूर्ण रुचि पूर्वक उसके लिए अपना सिंगार करती हूँ।। १ ।। हे लोगो, तुम भले जितनी मर्जी मेरी निन्दा कर लो परन्तु मेरा तन मन तो उस प्यारे प्रभु के योग्य होकर उसके हवाले हो चुका है।। १ ।। रहाउ।। हमें किसी से भी वाद-विवाद नहीं करना चाहिए और अपनी जीभ से राम नाम की रसायन (औषधि) पीते रहना चाहिए।। २ ।। हे मन, अब तो मेरी जान पर ऐसी आ बनी है कि मैं बाजे-गाजे के साथ प्रकट रूप में उस प्रभु से मिलाप करूंगी।। ३ ।। कोई प्रशंसा करे अथवा निन्दा करे परन्तु नामदेव का तो प्रभु के साथ मिलाप हो गया है।। ४ ।। ४ ।। कभी तो व्यक्ति को खीर खाण्ड और घी भी अच्छा नहीं लगता और कभी वह प्रभु उसे घर-घर रोटी माँगने के काम में लगा देता है। उसके हुकुम में जीव कभी तो कूड़े पर चने भी बीनता रहता है। १ ।। हे भाई, जैसे राम रखता है हमें वैसे ही रहना है। प्रभु की महिमा का कुछ भी कथन नहीं किया जा सकता।। १ ।। रहाउ।। कभी तो वह तेज घोड़ों की सवारी करके उन्हें नचाता है और कभी व्यक्ति को पाँव में जूता भी नसीब नही होता।। २ ।। कभी तो वह जीव को सुन्दर सफेद बिस्तरे वाली खटिया पर सुलाता है और कभी उसे धरती पर सोने के लिए पुआल भी नसीब नहीं होती। नामदेव कहता है कि एक प्रभु का नाम ही पार उतारने वाला है और जिसे गुरु मिल जाता है उसे गुरु ही पार पहुँचा देता है।। ४ ।। ५ ।। हे प्रभु, मैं तो हँसता-खेलता तेरे मन्दिर में तेरे दर्शन करने आया था परन्तु मुझ भक्ति करते हुए को लोगों ने पकड़कर उठा दिया है।। १ ।। हे यादव राज, मेरी जाति हीन है; मैंने भला छीपी के रूप में जन्म क्यों लिया है।। १ ।। रहाउ।। नामदेव ने अपनी कम्बल जैसी चादर पकड़ ली और पलट कर मन्दिर से बाहर आ गया। वह मन्दिर के पिछवाड़े जाकर वहाँ बैठ गया।। २ ।। जैसे-जैसे नामदेव प्रभु के गुणों का उच्चारण करता जाता है वैसे वैसे ही भक्तजनों का देहरा (मन्दिर) घूमता जाता है।। ३ ।। ६।।

भैरउ नामदेव जी घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जैसी प्रीति भूखे आदमी की अनाज के साथ होती है, प्यासे को जैसा जल के साथ स्नेह होता है, जिस प्रकार मूर्ख व्यक्ति कुटुम्ब के धन्धों में ही लीन रहता है इसी प्रकार की प्रीति नामदेव की प्रभु के साथ लगी है।। १ ।। नामदेव का प्रेम प्रभु के साथ लग गया है और वह सहज स्वाभाविक रूप से ही बैरागी हो गया है।। १ ।। रहाउ।। जिस प्रकार पराए पुरुष में स्त्री लीन बनी रहती है, जैसे लोभी व्यक्ति धन का प्रेमी बना रहता है, जैसे कामी व्यक्ति को स्त्री अच्छी लगती रहती है इसी प्रकार की प्रीति नामदेव की उस प्रभु के साथ बनी हुई है।। २ ।। प्रेम वही है जो प्रभु स्वयं लगाता है और गुरु की कृपा से ही व्यक्ति की दुविधा समाप्त होती है। जीव प्रभु में जब लीन हो जाता है तो फिर उससे कभी टूटता नहीं; इसीलिए नामदेव ने उस प्रभु के सच्चे नाम में चित्त लगाया हुआ है।। ३ ।। जैसे बच्चे और माँ की प्रीति होती है उसी प्रकार प्रभु में मेरा मन लीन हो गया है। नामदेव कहता है कि हमें ऐसी प्रीति लग गई है कि वह प्रभु हमारे चित्त में बसा हुआ है।। ४ ।। १ ।। ७ ।।

तिआगै अंधा ॥ पर नारी सिउ घालै धंधा ॥ जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥ १ ॥ पापी का घरु अगने माहि ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की भगति न देखै जाइ ॥ मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥ मूलहु भूला आवै जाइ ॥ अम्रितु डारि लादि बिखु खाइ ॥ २ ॥ जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥ कापरु पहिरि करहि सीगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वा के गले जम का है फास ॥ ३ ॥ जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥ सो भजि परि है गुर की सरना ॥ कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥ इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥ संडा मरका जाइ पुकारे ॥ पड़ै नही हम ही पचि हारे ॥ रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥ १ ॥ राम नामा जपिबो करै ॥ हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥ पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥ २ ॥ दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥ गिरि तर जल जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥ ३ ॥ काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥ पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै ॥ ४ ॥ हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥ कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥ ५ ॥ ३ ॥ ९ ॥ सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥ देखउ राम तुम्हारे कामा ॥ १ ॥ नामा सुलताने बाधिला ॥ देखउ तेरा हरि बीठुला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥ नातरु गरदनि मारउ ठांइ ॥ २ ॥ बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥ बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥ ३ ॥ मेरा कीआ कछू न होइ ॥ करि है रामु होइ है सोइ ॥ ४ ॥ बादिसाहु चड़िओ अहंकारि ॥ गज हसती दीनो चमकारि ॥ ५ ॥ रुदनु करै नामे की माइ ॥ छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥ ६ ॥ न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥ पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥ ७ ॥ करै गजिंदु सुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की ओट ॥ ८ ॥ काजी मुलां करहि सलामु ॥ इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥ ९ ॥ बादिसाह बेनती सुनेहु ॥

प्रथा, प्रत्येक व्यक्ति घर की स्त्री को त्यागकर पराई स्त्री के साथ प्रेम करता रहता है। सेमल के वृक्ष को देखकर तोता प्रसन्न हो जाता है परन्तु उसकी सेम के साथ चिपककर अन्तत: वह मर जाता है॥ १ ॥ पापी का घर तो सदैव अग्नि में ही है, वह सदैव जलता रहता है और उसकी जलन कभी मिटती नहीं॥ १ ॥ रहाउ॥ वह प्रभु की भक्ति को न देखता है और ना वहाँ जाता है तथा सीधे मार्ग को छोड़कर कुमार्ग की ओर कदम बढ़ाता रहता है। वह अपने मूल स्रोत प्रभु को भुलाकर आवागमन में पड़ा रहता है तथा अमृत को छोड़कर विषय-विकारों को लादता और खाता रहता है॥ २ ॥ जिस प्रकार वेश्या के यहाँ मुजरे का अखाड़ा लगता है तो वहाँ वस्त्र पहन कर अनेकों प्रकार के श्रृंगार किए जाते हैं। विषयों में लीन व्यक्ति उस वेश्या के नाच घूमने पर उसके अति निकट होकर उसकी साँसें गिनता है और इस प्रकार के व्यक्ति के गले में यम का फन्दा पड़ा रहता है॥ ३ ॥ जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखे हैं वह ही भागकर गुरु की शरण में आ जाता है। नामदेव तो यही विचार कहता है कि हे सन्तजनों, इस विधि से ही तुम पार उतर सकते हो॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥ प्रहलाद के अध्यापक षण्ड और अमरक जाकर पुकार लगाते हैं कि प्रहलाद पढ़ता नहीं है और हम सब ही मर खप रहे हैं। वह ताल-बजा बजा कर प्रभु-नाम का उच्चारण करता है और इसने सभी अन्य विद्यार्थियों को भी बिगाड़ दिया है॥ १ ॥ प्रहलाद राम नाम का जाप करता था और हृदय में प्रभु के सुमिरन को बसाए रहता था॥ १ ॥ रहाउ॥ पटरानी माँ यह कहती है कि राजनृ पिता ने तो सारी धरती वश में की है परन्तु एक पुत्र ही ऐसा है जो उसके कहने में नहीं है और उसने अपने मन में कुछ अलग ही ठान रखी है॥ २ ॥ दुष्टों ने सभा में बैठकर यह मन्त्रणा की कि इसकी आयु को बढ़ा दिया जाए अर्थात इसे मार डाला जाए। प्रहलाद को प्रभु की माया ने पहाड़ से गिराए जाने पर, जल में डुबोए जाने पर और अग्नि के भय में से बचा लिया॥ ३ ॥ खड्ग निकाल कर हिरण्यकश्यपु काल रूप में बोला कि अब बता तेरी रक्षा करने वाला कौन है। प्रहलाद ने उत्तर दिया कि तीनों लोकों का स्वामी पीताम्बर धारण करने वाला प्रभु इसी खम्भे में ही विद्यमान है॥ ४ ॥ प्रभु ने हिरण्यकश्यपु को नाखूनों से फाड़ डाला तथा देवता और मनुष्यों की रक्षा करने वाला बन गया। नामदेव कहता है कि हम तो उस नरसिंह प्रभु का ही सुमिरन करते हैं और वह प्रभु ही अभय पद का दान देने वाला है॥ ५ ॥ ३ ॥ ६ ॥ (मोहम्मद बिन तुगलक) सुलतान पूछता है कि सुन रे नामदेव, मैं देखना चाहता हूँ कि तेरा राम क्या काम करता है अर्थात मुझे करामात दिखा॥ १ ॥ सुलतान ने नामदेव को बाँध लिया और कहा कि तेरे विट्ठल को मैं देखना हूँ कि वह क्या करता है॥ १ ॥ रहाउ॥ तू इस मरी हुई गाय को जिन्दा कर दे नहीं तो मैं तुझे गर्दन से पकड़कर इसी जगह पर मार डालूँगा॥ २ ॥ हे बादशाह, ऐसा कैसे हो सकता है क्योंकि मरा हुआ तो कोई भी जीवित नहीं हो सकता॥ ३ ॥ मेरा किया हुआ तो कुछ नहीं हो सकता और जो प्रभु करेगा वही होगा॥ ४ ॥ बादशाह पर अहंकार सवार हो गया और उसने हाथी को उकसा कर उसकी तरफ दौड़ा दिया॥ ५ ॥ नामदेव की माँ रोती हुई कहती है कि ओ नामदेव, तू राम को छोड़कर खुदा को क्यों नहीं याद करता॥ ६ ॥ ना तो तेरा बच्चा हूँ ना तू मेरी माँ है, मैं तो शरीर के गिरने तक भी प्रभु के गुण गाता रहूँगा॥ ७ ॥ हाथी नामदेव पर सूँड से चोट मारता है परन्तु नामदेव प्रभु की कृपा से बच जाता है॥ ८ ॥ काजी और मुल्ला सभी मुझे सलाम करते हैं परन्तु इस हिन्दू ने मेरे अभिमान का मर्दन कर दिया है॥ ९ ॥ लोग कहते हैं कि हे बादशाह, तुम हमारी विनती मान लो और

नामे सर भरि सोना लेहु ॥ १० ॥ मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥ दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥ ११ ॥ पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥ नामा गावै गुन गोपाल ॥ १२ ॥ गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ तउ नामा हरि करता रहै ॥ १३ ॥ सात घड़ी जब बीती सुणी ॥ अजहु न आइओ त्रिभवण धणी ॥ १४ ॥ पाखंतण बाज बजाइला ॥ गरुड़ चढ़े गोबिंद आइला ॥ १५ ॥ अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चढ़े आए गोपाल ॥ १६ ॥ कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥ कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥ १७ ॥ कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥ सभु कोई देखै पतीआइ ॥ १८ ॥ नामा प्रणवै सेल मसेल ॥ गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥ १९ ॥ दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादिसाह के आगे धरी ॥ २० ॥ बादिसाहु महल महि जाइ ॥ अउघट की घट लागी आइ ॥ २१ ॥ काजी मुलां बिनती फुरमाइ ॥ बखसी हिंदू मै तेरी गाइ ॥ २२ ॥ नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ ॥ २३ ॥ इस पतीआ का इहै परवानु ॥ साचि सीलि चालहु सुलितान ॥ २४ ॥ नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥ मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥ २५ ॥ जउ अब की बार न जीवै गाइ ॥ त नामदेव का पतीआ जाइ ॥ २६ ॥ नामे की कीरति रही संसारि ॥ भगत जनां ले उधरिआ पारि ॥ २७ ॥ सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥ नामे नाराइन नाही भेदु ॥ २८ ॥ १ ॥ १० ॥ घरु २ ॥ जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥ जउ गुरदेउ त उतरै पारि ॥ जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै ॥ जउ गुरदेउ त जीवत मरै ॥ १ ॥ सति सति सति सति सति गुरदेव ॥ झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ गुरदेउ त नामु द्रिड़ावै ॥ जउ गुरदेउ न दह दिस धावै ॥ जउ गुरदेउ पंच ते दूरि ॥ जउ गुरदेउ न मरिबो झूरि ॥ २ ॥ जउ गुरदेउ त अंम्रित बानी ॥ जउ गुरदेउ त अकथ कहानी ॥ जउ गुरदेउ त अंम्रित देह ॥ जउ गुरदेउ नामु जपि लेहि ॥ ३ ॥ जउ गुरदेउ भवन त्रै सूझै ॥ जउ गुरदेउ ऊच पद बूझै ॥ जउ गुरदेउ त सीसु अकासि ॥ जउ गुरदेउ सदा साबासि ॥ ४ ॥ जउ गुरदेउ सदा बैरागी ॥ जउ गुरदेउ पर निंदा तिआगी ॥

नामदेव के वजन के बराबर सोना लेकर नामदेव को छोड़ दो।। १० ।। बादशाह कहता है कि यदि मैं रिश्वत के रूप में धन लेता हूँ तो मैं नरक में जाता हूँ और नरक को छोड़कर सांसारिक दौलत को इकट्ठी करने वाला जाना जाता हूँ।। ११ ।। नामदेव के पाँव में बेड़ी है पर वह हाथ से ताल देकर उस प्रभु के गुणों का गायन कर रहा है।। १२ ।। यदि गंगा और यमुना उलटी दिशा में भी बहने लगी तो भी नामदेव प्रभु का नाम कहता रहेगा।। १३ ।। जब सात घड़ियाँ बीत जाने की आवाज सुनी तो तब तक भी तीन लोकों का मालिक प्रभु वहाँ नहीं पहुँचा।। १४ ।। (लोक परम्परा के अनुसार) गरुड़ के पंखों का वाद्य बजाते हुए गरुड़ पर सवार प्रभु वहाँ आ पहुंचे।। १५ ।। अपने भक्त का उन्होंने प्रतिपालन किया और धरती का मालिक गरुड़ पर चढ़कर वहाँ आ पहुँचा।। १६ ।। प्रभु ने कहा कि हे नामदेव, यदि तू कहे तो मैं धरती को उलटा दूँ, तू कहे तो इस धरती को उपर टांग दूँ।। १७ ।। तू कहे तो मरी हुई गाय को जीवित कर दूं ताकि सभी कोई प्रत्यक्ष रूप से देख लें।। १८ ।। नामदेव ने कहा कि भाई, गाय को दुहने के लिए उसकी पिछली टांगों पर रस्सी बाँध दी जाए और इस प्रकार बछड़े को छोड़कर गाय का दूध दुह लिया जाए ।। १६ ।। दूध दुह कर जब मटकी भर ली गई तो उसे लेकर बादशाह के आगे रख दिया गया।। २० ।। बादशाह महल में चला गया और उसी घड़ी वह बीमार पड़ गया।। २१ ।। बादशाह ने काजी और मुल्ला के माध्यम से विनती की कि हे हिन्दू, तू मुझे क्षमा कर दे और अब तो मैं तेरी गाय हूँ।। २२ ।। नामदेव कहता है कि हे बादशाह, मुझे भी यह भरोसा दो।। २३ ।। इस भरोसे का मानदण्ड यही है कि हे सुलतान, तुम सत्य और शीलपूर्वक अपना कार्य करते रहो।। २४ ।। नामदेव सबके मन में बस गया और सभी हिन्दू मिलकर नामदेव के पास आ गए।। २५।। लोग कहने लगे कि यदि इस बार गाय जीवित ना हुई तो नामदेव की साख जाती रहेगी।। २६ ।। नामदेव की कीर्ति संसार में बनी रही और भक्तों को साथ लेकर वह संसार सागर से पार उतर गया।। २७ ।। निन्दक लोगों को सब प्रकार के क्लेश और दुख सहने पड़े परन्तु नामदेव और नारायण में कहीं भी कोई अन्तर नहीं है।। २८ ।। १ ।। १०।। घरु २।। यदि गुरु कृपालु हो जाए तो प्रभु मिल जाता है। यदि गुरु कृपालु हो जाए तो व्यक्ति पार उतर जाता है। यदि गुरुदेव कृपालु हो जाए तो व्यक्ति जीवित रहते हुए भी विकारों के प्रति मर जाता है।। १ ।। गुरु ही सच्चा है, सच्चा है और सच्चा है तथा बाकी अन्य सब सेवा झूठी है, झूठी है और झूठी है।। १ ।। रहाउ।। यदि गुरु कृपालु है तो वह प्रभु-नाम को हृदय में पक्का करता है और व्यक्ति दसों दिशाओं में नहीं भागता। यदि गुरु कृपालु है तो काम, क्रोध आदि पाँचों विकारों से व्यक्ति दूर बना रहता है और यदि गुरु दयालु है तो पछताते हुए मरना नहीं पड़ता।। २ ।। यदि गुरु देव कृपालु है तो वाणी भी अमृत जैसी मीठी हो जाती है और यदि गुरुदेव कृपालु है तो जीव की कहानी भी अकथनीय बन जाती है। यदि गुरुदेव कृपालु है तो देही अमर हो जाती है और यदि गुरुदेव कृपालु है तो प्रभु-नाम का जाप करके सब कुछ प्राप्त कर लिया जाता है।। ३ ।। गुरुदेव के कृपालु होने पर तीनों लोकों के रहस्य का पता लग जाता है और यदि गुरु कृपालु है तो परम पद के रहस्य को जान लिया जाता है। यदि गुरुदेव कृपालु है तो व्यक्ति का सिर आकाश को जा छूता है और यदि गुरुदेव कृपालु है तो शाबाश ही मिलती रहती है।। ४ ।। गुरुदेव के कारण ही व्यक्ति सदैव वैराग्यवान बना रहता है और यदि गुरुदेव कृपालु है तो पराई निन्दा को भी त्याग दिया जाता है।

जउ गुरदेउ बुरा भला एक ॥ जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख ॥ ५ ॥ जउ गुरदेउ कंधु नही हिरै ॥ जउ गुरदेउ देहुरा फिरै ॥ जउ गुरदेउ त छापरि छाई ॥ जउ गुरदेउ सिहज निकसाई ॥ ६ ॥ जउ गुरदेउ त अठसठि नाइआ ॥ जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ ॥ जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा ॥ जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा ॥ ७ ॥ जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥ जउ गुरदेउ त जम ते छूटै ॥ जउ गुरदेउ त भउजल तरै ॥ जउ गुरदेउ त जनमि न मरै ॥ ८ ॥ जउ गुरदेउ अठदस बिउहार ॥ जउ गुरदेउ अठारह भार ॥ बिनु गुरदेउ अवर नही जाई ॥ नामदेउ गुर की सरणाई ॥ ९ ॥ १ ॥ २ ॥ ११ ॥

भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २ ੧ओ सतिगुर प्रसादि ॥

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥ जो दीसै सो होइ बिनासा ॥ बरन सहित जो जापै नामु ॥ सो जोगी केवल निहकामु ॥ १ ॥ परचै रामु रवै जउ कोई ॥ पारसु परसै दुबिधा न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥ बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥ मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ करता होइ सु अनभै रहै ॥ २ ॥ फल कारन फूली बनराइ ॥ फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥ गिआनै कारन करम अभिआसु ॥ गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥ ३ ॥ घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥ जीवत मुकत सदा निरबान ॥ कहि रविदास परम बैराग ॥ रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥ ४ ॥ १ ॥ नामदेव ॥ आउ कलंदर केसवा ॥ करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥ जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला ॥ चमर पोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥ १ ॥ छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा ॥ भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥ २ ॥ देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥ बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै ॥ ३ ॥ भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥ नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥ ४ ॥ १ ॥

यदि गुरुदेव कृपलु है तो बुरा और भला एक समान ही लगते है और यदि गुरु कृपालु है तो भाग्य के लेख भी अच्छे हो जाते हैं।। ५ ।। यदि गुरु कृपालु है तो शरीर रूपी दीवार का नाश नहीं होता और यदि गुरु कृपालु है तो मन्दिर घूम जाता है। यदि वह प्रभु-गुरु कृपालु है तो वह भक्त की झोपड़ी भी बना देता है और यदि गुरु कृपालु है तो वह पानी में फेंकी हुई खाट भी बाहर सूखी निकाल देता है।। ६ ।। गुरु की प्रसन्नता अड़सठ तीर्थो पर स्नान के तुल्य है और शरीर पर चक्रों के चिन्ह बनाना भी गुरु की प्रसन्नता में ही शामिल है। यदि गुरु प्रसन्न है तो बारह प्रकार की सेवा भी उसकी प्रसन्नता में ही आ जाती है और गुरु की प्रसन्नता से सभी प्रकार के विष भी मीठे मेवे बन जाते हैं।। ७ ।। यदि गुरु प्रसन्न है तो संशय टूट जाता है और यदि गुरु प्रसन्न है तो यम से छुटकारा मिल जाता है। यदि गुरु कृपालु है तो जीव संसार-सागर को तैर जाता है और यदि गुरु प्रसन्न हो तो जन्म और मरण नहीं होता।। ८।। गुरु की प्रसन्नता में ही अठारह पुराणों का कार्य व्यवहार शामिल है और यदि गुरु प्रसन्न है तो अठारह भार जितनी वनस्पति पूजा-अर्चना में भेंट हो चुकी मान ली जाती है। गुरु के बिना अन्य कोई भी आसरा नहीं होता और नामदेव तो गुरु की ही शरण में आ कर पड़ा है।। ९ ।। १ ।। २ ।। ११।।

भैरउ वाणी रविदास जी की घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु को देखे बिना उससे मिलने की आशा पैदा नहीं हो सकती और जो कुछ दिखाई दे रहा है वह विनष्ट हो जाने वाला है। पूरे वर्णन समेत जो प्रभु के नाम का जाप करता है वही योगी कैवल्य प्राप्त करता हुआ निष्काम हो जाता है।। १ ।। जो गुरु के ज्ञान के माध्यम से प्रभु का सुमिरन करता है वह गुरु रूपी पारस को मिलकर अपनी दुविधा समाप्त कर लेता है।। १ ।। रहाउ।। मुनि वह है जो मन की दुविधा को खा जाता है और शरीर के द्वारों के बिना ही अपनी आत्मा में इन तीनों लोकों को लीन कर ले अर्थात संसार की आशाएँ एवं तृष्णाएँ समाप्त कर ले। मन के स्वभाव के पीछे लगकर तो सब कोई इन्द्रियों के माध्यम से काम करते रहते हैं परन्तु परमात्मा को कर्ता मानने का ज्ञान जिसे प्राप्त हो जाए वह निर्भय बना रहता है।। २ ।। फल के कारण ही सारी वनस्पति में फूल लगते हैं। जब फल लग जाता है तब फूल अपने आप ही समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार ज्ञान के लिए कर्मो का अभ्यास किया जाता है परन्तु जब ज्ञान हो जाता है तो कर्मकाण्डों का नाश हो जाता है।। ३ ।। घी के लिए सयाने लोग दूध का मन्थन करते हैं और जीवन मुक्त होकर सदैव निर्वाण अवस्था में पहुंचे रहते हैं। रविदास परम वैराग्य की बात कहता है कि हे अभागे जीव, तू अपने हृदय में प्रभु का सुमिरन क्यो नहीं करता।। ४ ।। १ ।। नामदेव।। हे कलन्दर (फकीर) प्रभु, तुम हमसे एक बहुत बड़े फकीर के वेश में आ मिलो।। रहाउ।। तुम ऐसे हो जिसने आकाश को सिर पर टोपी की तरह पहन रखा है और सातों पाताल तेरी खड़ाऊँ हैं। हे प्रभु, तुम इस प्रकार शोभा युक्त बने हो क्योंकि चमड़ा पहनने वाले सभी जीव वास्तव में तेरा ही निवास स्थान हैं।। १ ।। छप्पन करोड़ बादलों का तेरा चोला है और सोलह हजार तेरे अधोवस्त्र (पायजामा आदि) हैं। अठारह भार जितनी भारी तेरी गदा है और यह सारा संसार तेरा थाल है।। २ ।। यह देही तेरी मसजिद है जिसमें मन मौलाना बनकर स्वाभाविक रूप से ही तेरी नमाज गुजारता रहता है। माया के साथ तेरा निकाह हुआ है और यही माया निराकार को आकार में बदलती रहती है। भक्ति करते हुए के मेरे खड़ताल आदि छीन लिए गए हैं; मैं अब किसके सामने पुकार लगाऊँ। नामदेव का मालिक तो अन्तर्यामी है। जो बिना वेश वाला और बिना मकान वाला बनकर सबमें रमण करता रहता हैं।। ४ ।। १ ।।

रागु बसंतु महला १ घरु १ चउपदे दुतुके

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥ परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥ १ ॥ भोलिआ हउमै सुरति विसारि ॥ हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥ पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥ २ ॥ अखी कुदरति कंनी बाणी मुखि आखणु सचु नामु ॥ पति का धनु पूरा होआ लागा सहजि धिआनु ॥ ३ ॥ माहा रुती आवणा वेखहु करम कमाइ ॥ नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ महला १ बसंतु ॥ रुति आईले सरस बसंत माहि ॥ रंगि राते रवहि सि तैरै चाइ ॥ किसु पूज चड़ावउ लगउ पाइ ॥ १ ॥ तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ जगजीवन जुगति न मिलै काइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥ किसु पूज चड़ावउ देउ धूप ॥ तेरा अंतु न पाइआ कहा पाइ ॥ तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ २ ॥ तेरे सठि संबत सभि तीरथा ॥ तेरा सचु नामु परमेसरा ॥ तेरी गति अविगति नही जाणीऐ ॥ अणजाणत नामु वखाणीऐ ॥ ३ ॥ नानकु वेचारा किआ कहै ॥ सभु लोकु सलाहे एकसै ॥ सिरु नानक लोका पाव है ॥ बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥ ४ ॥ २ ॥ बसंतु महला १ ॥ सुइने का चउका कंचन कुआर ॥ रुपे कीआ कारा बहुतु बिसथारु ॥ गंगा का उदकु करंते की आगि ॥ गरुड़ा खाणा दुध सिउ गाडि ॥ १ ॥ रे मन

रागु बसंतु महला १ घरु १ चौपदे दो पक्तियों वाले

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

सब महीनों में मुबारक महीना आ पहुँचा है जिसमें सदैव बसन्त ऋतु बनी रहती है। हे मेरे चित्त, तू प्रसन्न हो कर खिल जा और सदैव उस प्रभु का सुमिरन करता रह।। १ ।। हे भोले जीव, तू अहंकार की वृत्ति को भुला दे। अहंकार को मारकर मन में चिंतन कर और गुणों को अपने अन्दर सम्भाल ले।। १ ।। रहाउ।। यह संसार कर्म रूपी पेड़ है जिसकी शाखाएँ प्रभु का नाम हैं और धर्म रूप में कर्तव्यनिष्ठा इसका फूल है और फल ज्ञान है। यहाँ पत्तो के रूप में जब परमात्मा की घनी छाया प्राप्त हो जाती है तो साथ ही साथ मन का अभिमान भी समाप्त हो जाता है।। २ ।। यहाँ प्रभु की कुदरत अथवा विश्व-प्रसार की शक्ति को आँखों से देखा जाता है, कानों से उसकी वाणी सुनी जाती है और मुख से उसके सच्चे नाम का उच्चारण किया जाता है। जब उस प्रभु में स्वाभाविक रूप से ही ध्यान लगा रहता है तो व्यक्ति के सम्मान का धन पूर्ण रूप से उसे प्राप्त हो जाता है।। ३ ।। महीनों और ऋतुओं ने तो आते ही रहना है परन्तु हे जीव, तुझे यहाँ फिर नहीं आना इसलिए उसकी कृपा की कमाई करके देख ले। हे नानक, ऐसे व्यक्ति सदैव हरे भरे बने रहकर कभी भी सूखते नहीं जो गुरमुख बनकर उस प्रभु में लीन बने रहते हैं।। ४ ।। १ ।। महला १ बसंत।। रसपूर्ण ऋतु में बसन्त का महीना आ गया है इसलिए हे प्रभु, जो तेरे नाम में लीन बने हैं वे तेरे प्यार में उत्साहित बने रहकर तेरा सुमिरन करते हैं। प्रभु को छोड़कर मैं किसी अन्य की पूजा क्यो करूं और अन्य किसके पांव लगूं।। १ ।। हे राजन, मुझे तेरे दासों का दास कहा जाता है और मैं जानता हूँ कि जगत का जीवन प्रभु किसी भी प्रकार की युक्तियों के माध्यम से नहीं मिलता।। १ ।। रहाउ।। तेरी सत्ता तो एक ही है परन्तु तेरे रूप अनेक हैं। अब मैं किस की पूजा करूं और किसे धूपबत्ती अर्पण करूँ। किसी से भी तेरे रहस्य को नहीं जाना जा सका। हे प्रभु राजन, मुझे तो तुम्हारे दासों का दास कहा जाता है।। २ ।। समय, संवत् और सभी तीर्थ तेरे ही हैं और हे परमेश्वर, तेरा नाम ही सच्चा है। तेरी गति और सीमा अव्यक्त है और इसे नहीं जाना जा सकता। तुझे जाने बिना ही तेरे नाम का सुमिरन करते रहना चाहिए।। ३ ।। बेचारा नानक क्या कह सकता है; तुझ एक का ही सभी लोग गुणानुवाद करते हैं। गुरमुख व्यक्तियों के चरणों पर नानक का सिर रखा हुआ है और तेरे जितने भी नाम हैं नानक उन पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। २ ।। बसंतु महला १।। सोने का चौका, और सोने के ही मटके हो; चाँदी की लकीरें बहुत दूर-दूर तक खींची हों, गंगा का जल और पवित्र अग्नि हो, बहुत ही नर्म भोजन हो जो दूध में मिला कर बनाया गया हो।। १ ।। हे मन,

लेखै कबहू न पाइ ॥ जामि न भीजै साच नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दस अठ लीखे होवहि पासि ॥ चारे बेद मुखागर पाठि ॥ पुरबी नावै वरनां की दाति ॥ वरत नेम करे दिन राति ॥ २ ॥ काजी मुलां होवहि सेख ॥ जोगी जंगम भगवे भेख ॥ को गिरही करमा की संधि ॥ बिनु बूझे सभ खड़ीअसि बंधि ॥ ३ ॥ जेते जीअ लिखी सिरि कार ॥ करणी उपरि होवगि सार ॥ हुकमु करहि मूरख गावार ॥ नानक साचे के सिफति भंडार ॥ ४ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ३ तीजा ॥ बसत्र उतारि दिगंबरु होगु ॥ जटाधारि किआ कमावै जोगु ॥ मनु निरमलु नह दसवै दुआर ॥ भ्रमि भ्रमि आवै मूढ़ा वारो वार ॥ १ ॥ एकु धिआवहु मूढ़ मना ॥ पारि उतरि जाहि इक खिनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिम्रिति सासत्र करहि वखिआण ॥ नादी बेदी पढ़हि पुराण ॥ पाखंड द्रिसटि मनि कपटु कमाहि ॥ तिन कै रमईआ नेड़ि नाहि ॥ २ ॥ जे को ऐसा संजमी होइ ॥ क्रिआ विसेख पूजा करेइ ॥ अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि ॥ ओइ निरंजनु कैसे पाहि ॥ ३ ॥ कीता होआ करे किआ होइ ॥ जिस नो आपि चलाए सोइ ॥ नदरि करे तां भरमु चुकाए ॥ हुकमै बूझै तां साचा पाए ॥ ४ ॥ जिसु जीउ अंतरु मैला होइ ॥ तीरथ भवै दिसंतर लोइ ॥ नानक मिलीऐ सतिगुर संग ॥ तउ भवजल के तूटसि बंध ॥ ५ ॥ ४ ॥ बसंतु महला १ ॥ सगल भवन तेरी माइआ मोह ॥ मै अवरु न दीसै सरब तोह ॥ तू सुरि नाथा देवा देव ॥ हरि नामु मिलै गुर चरन सेव ॥ १ ॥ मेरे सुंदर गहिर गंभीर लाल ॥ गुरमुखि राम नाम गुन गाए तू अपरंपरु सरब पाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ बिनु गुर मैल मलीन अंगु ॥ बिनु हरि नाम न सुधु होइ ॥ गुर सबदि सलाहे साचु सोइ ॥ २ ॥ जा कउ तू राखहि रखनहार ॥ सतिगुरू मिलावहि करहि सार ॥ बिखु हउमै ममता परहराइ ॥ सभि दूख बिनासे राम राइ ॥ ३ ॥ ऊतम गति मिति हरि गुन सरीर ॥ गुरमति प्रगटे राम नाम हीर ॥ लिव लागी नामि तजि दूजा भाउ ॥ जन नानक हरि गुरु गुर मिलाउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ बसंतु महला १ ॥ मेरी सखी सहेली सुनहु भाइ ॥ मेरा पिरु रीसालू संगि साइ ॥ ओहु अलखु न लखीऐ कहहु काइ ॥

जब तक ये सब सच्चे नाम में नहीं रंगे जाते, ये किसी गिनती में नहीं आते।। १।। रहाउ।। अठारहों पुराण लिखे हुए पास में हो, चारों वेदों का पाठ मौखिक रूप से याद हो, वर्णों के मुताबिक पर्वों पर स्नान और दान किया हो और दिन रात व्यक्ति व्रतों और नियमों का पालन करता रहे परन्तु सच्चे नाम में भीगे बगैर यह सब व्यर्थ हैं।। २ ।। काजी, मुल्ला, शेख, योगी, जंगम और अनेकों लोग भगवा वेश धारण करने वाले बने रहते हैं। कई गृहस्थी कर्मकाण्ड में पड़े रहते हैं परन्तु यदि वे उस प्रभु-नाम के रहस्य को नहीं जानते तो सब को बाँधकर ले जाया जाता है।। ३ ।। जितने भी जीवों के भाग्य लेखों में काम करना लिखा है उनका फैसला वास्तव में उनके किए हुए कर्मों पर ही आधारित होगा। मूर्ख व्यक्ति अपना हुकुम चलाते हैं परन्तु हे नानक, गुणों के भण्डार तो उस सच्चे प्रभु के ही हैं।। ४ ।। ३ ।। बसंतु महला ३ तीसरा।। तू वस्त्रों को उतार कर नागा साधु बना है और जटाओं को धारण करके तू भला कैसा योगाभ्यास कर रहा है। दशम द्वार में पहुँच कर जब तेरा मन निर्मल नहीं हुआ तो मूर्ख व्यक्ति बार बार भ्रमों में ही भटकता रहता है।। १।। हे मूर्ख मन, तू उस एक प्रभु का ही सुमिरन कर जिससे एक क्षण भर में ही तू पार उतर जाएगा।। १।। रहाउ।। स्मृति, शास्त्र भी बखान करते हैं और कई नाद और वेद को पढ़ने वाले हैं तथा कई पुराणों का अध्ययन करने वाले हैं। यदि पाखण्ड पूर्ण दृष्टि बनी हुई है और मन में कपट का आचरण है तो प्रभु उनके पास भी नहीं आता।। २ ।। यदि कोई ऐसा संयमी व्यक्ति हो जो विशेष प्रकार की क्रियाएँ और पूजा करता हो परन्तु उसके अन्तर्मन में लोभ और विकार बने रहते हो तो भला वह उस प्रभु को कैसे पा सकता है।। ३ ।। जो प्रभु का रचा हुआ जीव है उसके करने से भला क्या हो सकता है; उसे तो स्वयं प्रभु अपनी मर्जी से चला रहा है। वह प्रभु कृपा दृष्टि कर दे तो उसका भ्रम समाप्त हो जाता है और उसके हुकुम को यदि वह समझ ले तो सच्चा प्रभु उसे प्राप्त हो जाता है।। ४ ।। जिसका अन्तर्मन मैला है वह बेशक देशान्तरों में और सभी लोकों में तीर्थस्नान करता फिरे उसका कोई फल नहीं होता। हे नानक, प्रभु से मिलाप तो सच्चे गुरु के साथ ही होता है और तभी संसार सागर के बन्धन टूटते हैं।। ५ ।। ४ ।। बसंतु महला १ ।। सभी लोक तेरी माया और मोह का ही परिणाम हैं परन्तु मुझे अन्य कोई दिखाई ना देकर सबमें तू ही दिखाई देता है। तू बड़े बड़े देवताओं का नाथ और देवों का भी देव है तथा प्रभु का नाम गुरु के चरणों की सेवा करने से प्राप्त होता है।। १ ।। हे मेरे सुन्दर, गहरे और गम्भीर चिंतन वाले प्यारे प्रभु, गुरमुख व्यक्ति ही प्रभु-नाम के गुण गाता है और तू ही अपरम्पर रूप में सबका पालन करने वाला है।। १ ।। रहाउ।। साधक पुरुष के बिना प्रभु का साथ प्राप्त नहीं होता और गुरु के बिना विकारों की मैल से शरीर का हर अंग अपवित्र बना रहता है। प्रभु-नाम के बिना शरीर पवित्र नहीं होता और शब्द-गुरु का गुणानुवाद ही सच्चा गुणानुवाद है।। २।। हे रक्षा करने वाले प्रभु, जिसे तू बचा लेता है उसे तू सच्चे गुरु से मिलाकर उसकी सम्भाल करता रहता है। उसके अहंकार और ममता का विष दूर कर हे राजन प्रभु, तू उसके दुखों का विनाश कर देता है।। ३।। शरीर में प्रभु के गुण धारण करने से उत्तम अवस्था और गति प्राप्त हो जाती है। गुरमत के माध्यम से ही राम नाम रूपी हीरा प्रकट होता है। द्वैतभाव त्यागने से अब प्रभु-नाम में लौ लग गई है और हे दास नानक, गुरु ने मुझे प्रभु-गुरु से मिला दिया है।। ४ ।। ५ ।। बसंतु महला १।। हे मेरी सखी सहेलियो (सत्संगियों), मेरी बात प्रेम पूर्वक सुनो कि मेरा सुन्दर प्रियतम प्रभु तो सदेव सबके साथ ही बसता है। वह अदृष्ट है, बताओं उसे कैसे मिला जाए।

गुरि संगि दिखाइओ राम राइ ॥ १ ॥ मिलु सखी सहेली हरि गुन बने ॥ हरि प्रभ संगि खेलहि वर कामनि गुरमुखि खोजत मन मने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखी दुहागणि नाहि भेउ ॥ ओहु घटि घटि रावै सरब प्रेउ ॥ गुरमुखि थिरु चीनै संगि देउ ॥ गुरि नामु द्रिड़ाइआ जपु जपेउ ॥ २ ॥ बिनु गुर भगति न भाउ होइ ॥ बिनु गुर संत न संगु देइ ॥ बिनु गुर अंधुले धंधु रोइ ॥ मनु गुरमुखि निरमलु मलु सबदि खोइ ॥ ३ ॥ गुरि मनु मारिओ करि संजोगु ॥ अहिनिसि रावे भगति जोगु ॥ गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ॥ जन नानक हरि वरु सहज जोगु ॥ ४ ॥ ६ ॥ बसंतु महला १ ॥ आपे कुदरति करे साजि ॥ सचु आपि निबेड़े राजु राजि ॥ गुरमति ऊतम संगि साथि ॥ हरि नामु रसाइणु सहजि आथि ॥ १ ॥ मत बिसरसि रे मन राम बोलि ॥ अपरंपरु अगम अगोचरु गुरमुखि हरि आपि तुलाए अतुलु तोलि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर चरन सरेवहि गुरसिख तोर ॥ गुर सेव तरे तजि मेर तोर ॥ नर निंदक लोभी मनि कठोर ॥ गुर सेव न भाई सि चोर चोर ॥ २ ॥ गुरु तुठा बखसे भगति भाउ ॥ गुरि तुठै पाईऐ हरि महलि ठाउ ॥ परहरि निंदा हरि भगति जागु ॥ हरि भगति सुहावी करमि भागु ॥ ३ ॥ गुरु मेलि मिलावै करे दाति ॥ गुरसिख पिआरे दिनसु राति ॥ फलु नामु परापति गुरु तुसि देइ ॥ कहु नानक पावहि विरले केइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ३ इक तुका ॥ साहिब भावै सेवकु सेवा करै ॥ जीवतु मरै सभि कुल उधरै ॥ १ ॥ तेरी भगति न छोडउ किआ को हसै ॥ साचु नामु मेरै हिरदै वसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे माइआ मोहि प्राणी गलतु रहै ॥ तैसे संत जन राम नाम रवत रहै ॥ २ ॥ मै मूरख मुगध ऊपरि करहु दइआ ॥ तउ सरणागति रहउ पइआ ॥ ३ ॥ कहतु नानकु संसार के निहफल कामा ॥ गुर प्रसादि को पावै अंम्रित नामा ॥ ४ ॥ ८ ॥

महला १ बसंतु हिंडोल घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साल ग्राम बिप पूजि मनावहु सुक्रितु तुलसी माला ॥ राम नामु जपि बेड़ा बांधहु दइआ करहु

उस राम रूपी राजा को तो गुरु ने ही हमें हमारे साथ दिखा दिया है।। १ ।। हे सखी सहेलियो, आओ मिलो; हम सबको प्रभु के गुण अच्छे लगते हैं। उस प्रभु रूपी वर की स्त्रियां प्रभु के साथ ही रमण करती रहती हैं और गुरमुख बनकर उसको मन में ही खोजती हैं।। १ ।। रहाउ।। जो मनमुख हैं वे कुलटा दुहागिन स्त्रियां हैं और वे उसके इस रहस्य को नहीं जान सकती कि सबका प्रिय वह प्रभु घट-घट में रमण करने वाला है। गुरमुख व्यक्ति उस परमात्मा को अपने अन्दर स्थित मानकर उसे पहचानता रहता है तथा गुरु ही उस सुमिरन करने योग्य प्रभु के नाम का सुमिरन करवाता है।। २ ।। गुरु के बिना भक्ति और प्रेम नहीं होता और प्रभु ही गुरु-विहीनों को शान्त पुरुषों की संगत प्रदान नहीं करता। गुरु के बिना जीव अन्धे अज्ञानी बने हुए धन्धों में ही उलझकर रोते रहते हैं। गुरमुख होकर ही मन निर्मल होता है और शब्द के माध्यम से अपनी मैल त्यागता है।। ३ ।। गुरु ही अपने से मिलाकर जीव के मन को मार देता है और फिर मन भक्ति में लीन होकर दिन रात उस प्रभु के मिलाप का आनन्द लेता है। गुरु रूपी शान्त पुरुष की संगत में दुख और रोग मिट जाता है और हे नानक, प्रभु प्रियतम से मिलने वाले सेवक सहज योग को प्राप्त होते हैं।। ४ ।। ६ ।। बसंतु महला १ ।। वह स्वयं ही कुदरत की सृजना करता है। वह अपने हुकुम के अन्तर्गत ही अपनी प्रभु सत्ता स्थापित करके सत्य रूप में हर तथ्य का निपटारा करता है और गुरमति के फलस्वरूप ही वह उत्तम प्रभु अपने साथ ही अनुभव होता है और प्रभु-नाम की रसायन व्यक्ति के अन्दर स्वाभाविक रूप से ही प्रकट होती है।। १ ।। हे मन, राम नाम बोलता रह और कहीं तू उसको भुला मत देना। वह प्रभु अपरम्पर, अगम्य एवं अगोचर है और वह अतुलनीय केवल गुरमुख बनकर ही अन्तर्मन में तौला, अनुभव किया जा सकता है।। १ ।। रहाउ।। तेरे गुरु के सिक्ख प्रभु-गुरु के चरणों की ही सेवा करते हैं और मेरा-तेरा छोड़कर गुरु की सेवा के माध्यम से पार उतर जाते हैं। यह व्यक्ति तो निन्दक है, लोभी है और इसका मन अत्यन्त कठोर है; जिन्हें गुरु की सेवा अच्छी नहीं लगती वे वास्तव में चोर ही चोर हैं।। २ । गुरु प्रसन्न होता है तो वह भक्ति भावना प्रदान करता है और गुरु की प्रसन्नता के फलस्वरूप ही प्रभु का ठौर ठिकाना प्राप्त किया जाता है। हे जीव, तू निन्दा को त्याग दे और प्रभु की भक्ति में सावधान बना रह। प्रभु की कृपा से ही और भाग्य लेखों के कारण ही प्रभु की भक्ति सुहावनी लगती हैं।। ३ ।। प्रभु-गुरु ही मेल मिलाता है और प्यारे गुर सिक्खों को दिन रात दान देता रहता है। गुरु ही कृपालु होकर नाम रूपी फल की प्राप्ति करवाता है और नानक का कथन है कि कोई बिरला ही नाम रूपी फल प्राप्त करता है।। ४ ।। ७ ।। बसंतु महला ३ एक पंक्ति वाला।। यदि मालिक को अच्छा लगे तभी सेवक सेवा करता है और यदि वह जीवन में ही विकारों के प्रति मर जाता है तो उसके सम्पूर्ण कुल का भी उद्धार हो जाता है।। १ ।। बेशक कोई कितना ही हँसे, मैं तेरी भक्ति को नहीं छोड़ूंगा क्योंकि तेरा सच्चा नाम मेरे हृदय में बसता रहता है।। १ ।। रहाउ।। जिस प्रकार मोहिनी माया में यह जीव फँसा रहता है उसी प्रकार शान्त पुरुष राम नाम का आनन्द लेते रहते हैं।। २ ।। हे प्रभु, मुझ मूर्ख पर भी दया करो जिससे मैं तुम्हारी शरण में ही पड़ा रहूँ।। ३ । नानक का कथन है कि सांसारिक धन्धे निष्फल हैं और गुरु की कृपा से ही कोई अमृत नाम को प्राप्त करता है।। ४ ।। ८ ।।

महला १ बसंतु हिंडोल घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे सालग्राम के निवासी ब्राह्मण, तू कर्मकाण्डी ढंग से पूजा को छोड़कर प्रभु को ही शालिग्राम समझ और अपने अच्छे कर्मो को तुलसी की माला बनाकर उस प्रभु को रिझा। प्रभु-नाम के जाप को तुम पार उतारने वाला बेड़ा बनाकर उस दयालु प्रभु की दया की

दइआला ॥ १ ॥ काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु ॥ काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर हरिहट माल टिंड परोवहु तिसु भीतरि मनु जोवहु ॥ अंम्रितु सिंचहु भरहु किआरे तउ माली के होवहु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई ॥ जिउ गोडहु तिउ तुम्ह सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई ॥ ३ ॥ बगुले ते फुनि हंसुला होवै जे तू करहि दइआला ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा दइआ करहु दइआला ॥ ४ ॥ १ ॥ ९ ॥ बसंतु महला १ हिंडोल ॥ साहुरड़ी वथु सभु किछु साझी पेवकड़ै धन वखे ॥ आपि कुचजी दोसु न देऊ जाणा नाही रखे ॥ १ ॥ मेरे साहिबा हउ आपे भरमि भुलाणी ॥ अखर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कढि कसीदा पहिरहि चोली तां तुम्ह जाणहु नारी ॥ जे घरु राखहि बुरा न चाखहि होवहि कंत पिआरी ॥ २ ॥ जे तूं पड़िआ पंडितु बीना दुइ अखर दुइ नावा ॥ प्रणवति नानकु एकु लंघाए जे करि सचि समावां ॥ ३ ॥ २ ॥ १० ॥ बसंतु हिंडोल महला १ ॥ राजा बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो ॥ दुइ माई दुइ बापा पड़ीअहि पंडित करहु बीचारो ॥ १ ॥ सुआमी पंडिता तुम्ह देहु मती ॥ किन बिधि पावउ प्रानपती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पंडै पाइआ ॥ चंदु सूरजु दुइ घर ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइआ ॥ २ ॥ राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ ॥ ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ ॥ ३ ॥ कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिन्हा ही सेती वासा ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु मासा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११ ॥ बसंतु हिंडोल महला १ ॥ साचा साहु गुरू सुखदाता हरि मेले भुख गवाए ॥ करि किरपा हरि भगति द्रिड़ाए अनदिनु हरि गुण गाए ॥ १ ॥ मत भूलहि रे मन चेति हरी ॥ बिनु गुर मुकति नाही त्रै लोई गुरमुखि पाईऐ नामु हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी ॥ बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै हरि नामु हरी ॥ २ ॥ घटि घटि गुपतु उपाए वेखै परगटु गुरमुखि संत जना ॥ हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने

माँग करो।। १ ।। तुम बंजर और क्षारीय मिट्टी वाली धरती को व्यर्थ ही कर्मकाण्डों के माध्यम से सींच रहे हो और अपने जीवन को गँवा रहे हो। तुम्हारे कर्मकाण्डी आचरण की दीवार तो अन्दर से कच्ची और खोखली है। तुम इस पर क्यों धार्मिक दिखावे का चूना लगा रहे हो।। १ ।। रहाउ।। तुम अपने हाथों को अर्थात अपनी सेवा को कुएँ से अमृत जल निकालने वाली रहट की माला बनाओ और इस कुँए पर अपने मन को बैल बनाकर लगा दो। फिर जब तुम अमृत नाम रूपी जल से जीवन की विभिन्न क्यारियों को सींचोगे तभी तुम उस प्रभु रूपी माली के अपने बन सकोगे।। २।। काम और क्रोध को तुम खुरपी बनाओ अर्थात खुरपा धरती से तो प्रेम करता है परन्तु नुकसान देने वाले व्यर्थ के घास-फूस से क्रोधित होकर उसे बाहर निकाल फेंकता है; इसी प्रकार तुम काम, क्रोध का उचित प्रयोग करते हुए अपने अन्दर से अवगुण निकाल बाहर फेंको और गुणों को धारण किए रहो। इस प्रकार जैसे-जैसे तुम इस शरीर रूपी धरती की गुड़ाई करते जाओगे, तुम्हें सुख प्राप्त होता जाएगा और तुम्हारा ऐसा किया हुआ काम निष्फल होकर कभी भी नहीं मिटेगा। प्रभु यदि तू दयालु हो जाए तो जीव रूपी बगुला भी हंस बन जाता है। तेरे दासों का भी दास नानक विनती करता है कि हे प्रभु, अपनी दया बनाए रखो।। ४ ।। १ ।। ६ ।। बसंतु महला १ हिंडोल।। प्रभु रूपी ससुर की दी हुई सभी वस्तुएँ साँझी हैं परन्तु इस लोक रूपी घर में आकर हमने अलगाववादी भावना अपना ली है। जीव स्त्री स्वयं तो सम्भालना जानती नहीं और अपने आपको दोष नहीं देती।। १ ।। हे मेरे प्रभु, मैं स्वयं ही भ्रमों में भूली हुई हूं परन्तु जो मेरे भाग्य में अक्षर तूने लिखे हैं मैं तो अपने कर्मों के माध्यम से उन्हीं को गाती हूँ तथा अन्य किसी भी भाषा को नहीं जानती।। १ ।। रहाउ।। यदि नाम रूपी कसीदे की कढ़ाई करके प्रेम रूपी चोली धारण की जाए तब तुम वास्तविक स्त्री के रूप में जानी जाती हो। यदि तू बुरी वस्तुओं की ओर ना देखे और अपने मन को अपने अन्दर ही सम्भाले रहे तभी तू उस प्रियतम की प्यारी बन सकती है।। २ ।। हे पंडित, यदि तू वास्तव में पढ़ा-लिखा सयाना है तो राम नाम के दो अक्षर ही तुझे पार उतारने के लिए दो-दो नावों के समान हैं। नानक विनती करता है कि यदि मैं सत्य में लीन हो जाऊँ तो वह एक प्रभु ही मुझे पार उतार देता है।।३ ।।२ ।।१० ।।बसंतु हिंडोल महला १ ।। मन रूपी राजा बच्चे के समान अनजान है और यह शरीर रूपी नगरी भी वास्तव में कच्ची है और इस बालक का प्यार काम, क्रोध आदि दुष्टों के साथ लगा है। आशा और तृष्णा इसकी दो माँ है और राग और द्वेष इसके दो बाप बताए जाते हैं; हे पंडित, तुम जरा इस तथ्य पर विचार करो।। १ ।। इन सबके मालिक प्रभु रूपी पंडित, तुम हमें मति प्रदान करो और बताओ कि किस विधि से प्राणों के पति परमेश्वर को पाया जा सकता है।। १ ।। रहाउ।। वनस्पति में आग होते हुए भी वह हरी-भरी बनकर खिली रहती है। सागर विशाल होते हुए भी अपनी सीमा में ऐसे बंधा रहता है जैसे गठरी बाँधकर रखी हुई हो। चन्द्र और सूर्य ठण्डे और गर्म स्वभाव वाले दोनों एक ही आकाश रूपी घर में ठीक-ठीक बसते रहते हैं। यह सब कैसे सम्भव है। इसका वास्तविक ज्ञान व्यक्ति को नहीं होता अर्थात इस ज्ञान की आवश्यकता है कि काम, क्रोध आदि की अग्नि और आशाओं, इच्छाओं के विकराल सागर के होते हुए भी कैसे अपने यौवन और जीवन को सम्भाल कर रखना है।। २ ।। प्रभु-नाम में रमण करने वाला उसे माना जाता है जो माया का भोग लगाकर उसे खा जाए और ऐसे व्यक्ति की निशानी यह है कि वह क्षमा रूपी धन इकट्ठा करता रहता है।। ३ ।। ऐसे व्यक्ति मन के पीछे ही लगे रहते हैं जो कहे हुए को सुनते नहीं और खाए हुए को वास्तविक रूप में मानते ही नहीं अर्थात कृतघ्न हैं। दासों का दास नानक कहता है कि यह मन तो घड़ी भर में बड़ा हो जाता है और घड़ी भर में ही नीच और हलका हो जाता है।। ४ ।। ३ ।। ११ ।। बसंतु हिंडोल महला १ ।। गुरु सच्चा और सुख देने वाला साहूकार है। वही हमारी भूख मिटाकर हमें प्रभु से मिलाता है। वह प्रतिदिन हम पर कृपा करके हमसे प्रभु की भक्ति करवाता है और सदैव प्रभु के गुण गाता रहता है।। १ ।। हे मन, तू प्रभु को मत भूल और उसका सुमिरन कर क्योंकि गुरु के बिना तीनों लोकों में मुक्ति नहीं हो सकती और गुरमुख बनकर ही प्रभु नाम को प्राप्त किया जाता है।। १ ।। रहाउ।। भक्ति के बिना सच्चा गुरु नहीं प्राप्त होता और बिना अच्छे भाग्य के प्रभु की भक्ति नहीं प्राप्त होती। बिना भाग्य के सत्संगति प्राप्त नहीं होती और प्रभु का नाम भी प्रभु की कृपा से ही प्राप्त होता है।। २ ।। घट-घट में छिपा प्रभु सृष्टि को पैदा करके उसको सम्भालता है परन्तु वह गुरमुख बने हुए शान्त पुरुषों में ही प्रकट होता है। जो प्रभु-नाम का उच्चारण करते हैं वहीं प्रभु के प्रेम में भीगे रहते हैं और

हरि जलु अंम्रित नामु मना ॥ ३ ॥ जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरमुखि से परधान कीए ॥ पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुर संगि थीए ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२ ॥

बसंतु महला ३ घरु १ दुतुके ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

माहा रुती महि सद बसंतु ॥ जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥ किआ हउ आखा किरम जंतु ॥ तेरा किनै न पाइआ आदि अंतु ॥ १ ॥ तै साहिब की करहि सेव ॥ परम सुख पावहि आतम देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करमु होवै तां सेवा करै ॥ गुर परसादी जीवत मरै ॥ अनदिनु साचु नामु उचरै ॥ इन बिधि प्राणी दुतरु तरै ॥ २ ॥ बिखु अंम्रितु करतारि उपाए ॥ संसार बिरख कउ दुइ फल लाए ॥ आपे करता करे कराए ॥ जो तिसु भावै तिसै खवाए ॥ ३ ॥ नानक जिस नो नदरि करेइ ॥ अंम्रित नामु आपे देइ ॥ बिखिआ की बासना मनहि करेइ ॥ अपणा भाणा आपि करेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ बसंतु महला ३ ॥ राते साचि हरि नामि निहाला ॥ दइआ करहु प्रभ दीन दइआला ॥ तिसु बिनु अवरु नही मै कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखै सोइ ॥ १ ॥ गुर गोपाल मेरै मनि भाए ॥ रहि न सकउ दरसन देखे बिनु सहजि मिलउ गुरु मेलि मिलाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु लोभी लोभि लुभाना ॥ राम बिसारि बहुरि पछुताना ॥ बिछुरत मिलाइ गुर सेव रांगे ॥ हरि नामु दीओ मसतकि वडभागे ॥ २ ॥ पउण पाणी की इह देह सरीरा ॥ हउमै रोगु कठिन तनि पीरा ॥ गुरमुखि राम नाम दारू गुण गाइआ ॥ करि किरपा गुरि रोगु गवाइआ ॥ ३ ॥ चारि नदीआ अगनी तनि चारे ॥ त्रिसना जलत जले अहंकारे ॥ गुरि राखे वडभागी तारे ॥ जन नानक उरि हरि अंम्रितु धारे ॥ ४ ॥ २ ॥ बसंतु महला ३ ॥ हरि सेवे सो हरि का लोगु ॥ साचु सहजु कदे न होवै सोगु ॥ मनमुख मुए नाही हरि मन माहि ॥ मरि मरि जंमहि भी मरि जाहि ॥ १ ॥ से जन जीवे जिन हरि मन माहि ॥ साचु सम्हालहि साचि समाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि न सेवहि ते हरि ते दूरि ॥ दिसंतरु भवहि सिरि पावहि धूरि ॥ हरि आपे जन लीए लाइ ॥ तिन सदा सुखु है तिलु

प्रभु रूपी अमृत नाम का जल उनके हृदय में बसा रहता है ।। ३ ।। जिन्हें प्रभु की ओर से ही सिंहासन पर बैठने का बड़प्पन प्राप्त होता है अर्थात अन्यों की अगुवाई करने का सौभाग्य प्राप्त होता है उन्हें वास्तव में प्रभु ही प्रमुखता प्रदान करता है। हे नानक, ऐसे पारस रूपी व्यक्तियों से मिलने वाले भी पारस बन जाते हैं और प्रभु रूपी गुरु सदैव उनके साथ ही बसा रहता है।। ४ ।। ४ ।। १२ ।।

बसंतु महला ३ घरु १ दो पंक्तियों वाले   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सब महीनों और ऋतुओं में वही सदा खिला रहने वाला बसंत का महीना है जिसमें सभी जीव जन्तु आध्यात्मिक रूप से ही हरे-भरे बने रहते हैं। मैं छोटा सा कीट जैसा जीव क्या कहूँ, तेरा ओर-छोर तो कोई भी नहीं जान सका है। हे प्रभु, तुझ मालिक की जो सेवा करते हैं वे परम सुख प्राप्त करते हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु की कृपा हो तो व्यक्ति सेवा करता है और गुरु की कृपा से जीवन में ही विकारों के प्रति मरा रहता है। वह प्रतिदिन सच्चे नाम का सुमिरन करता है और इस विधि से यह प्राणी विकराल सागर को तैर कर पार कर जाता है।। २ ।। प्रभु ने ही विष और अमृत दोनों को बनाया है और संसार रूपी वृक्ष को ये दोनों ही फल लगे हैं। वह कर्ता स्वयं ही सब कुछ करने कराने वाला है और जो उसे ठीक लगता है वही वह जीवों को खिलाता है।। ३ ।। हे नानक, जिस पर वह कृपा दृष्टि करता है उसे स्वयं ही अपना अमृत रूपी नाम दे देता है उसके विषयों की वासनाओं को वह रोक देता है और अपनी मर्जी से ही वह ऐसा करता है।। ४ ।। १ ।। बसंतु महला ३ ।। जो प्रभु के सच्चे नाम में रंगे हैं वे ही आनन्दित हैं। हे दीनदयालु प्रभु, हम पर भी दया करो। उस प्रभु के बिना मेरे लिए दूसरा कोई नहीं है और जैसा उसे अच्छा लगता है वह हमें वैसे ही रखता है।। १ ।। प्रभु-गुरु ही मेरे मन को भाता है; मैं उसके दर्शन के बिना रह नहीं सकता और संयोग बनने से स्वाभाविक रूप से ही गुरु उस से मेल मिलाप करा देता है।। १ ।। रहाउ।। यह लोभी मन लोभ में ही लीन पड़ा है तथा प्रभु को भुलाकर बाद में पछताता रहता है। गुरु की सेवा में रंगकर यह बिछुड़ा हुआ फिर उस प्रभु से मिल जाता है और इसके माथे पर बड़ा भाग्य लेख लिखा होने से प्रभु इसे अपना नाम प्रदान करता है।। २ ।। पवन और पानी के मेल से बना यह शरीर अहंकार के भयानक रोग से पीड़ित बना रहता है। गुरमुख व्यक्ति ने प्रभु के गुणानुवाद का जब राम नाम की औषधि प्रदान की तो गुरु की कृपा से इसका रोग समाप्त हो गया।। ३ ।। शरीर में हिंसा, मोह, लोभ और क्रोध की चार नदियाँ हैं जो इस शरीर में बहती रहती हैं। ऐसे जीव अपनी तृष्णा और अहंकार में जलते रहते हैं। गुरु जिनको बचा लेता है वे भाग्यशाली पार उतर जाते हैं और हे नानक, प्रभु के सेवक तो अपने हृदय में प्रभु रूपी शान्ति का अमृत धारण किए रहते हैं।। ४ ।। २ ।। बसंतु महला ३ ।। जो प्रभु का सुमिरन करते हैं वे ही प्रभु के लोग हैं। उन्हें सदैव सच्चा आनन्द प्राप्त होता रहता है और कभी भी शोक नहीं होता। जिनके मन में प्रभु नहीं होता ऐसे मनमुख व्यक्ति मरे हुए पड़े रहते हैं और वे मर-मर कर जन्म लेते हैं और फिर मरते रहते हैं।। १ ।। जीवित वही लोग रहते हैं जिनके मन मे प्रभु का निवास होता है और जो सदैव सत्य को ही सम्भाले रहते है तथा सत्य में ही लीन हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। जो प्रभु का सुमिरन नहीं करते, वे प्रभु से दूर हैं; वे देशों-प्रदेशों में भटकते फिरते हैं और उनके सिर पर मिट्टी पड़ती रहती है। प्रभु स्वयं ही अपने सेवकों को अपने साथ लगा लेता है; वे सेवक सदैव सुखी रहते हैं और उन्हें तिल मात्र

न तमाइ ॥ २ ॥ नदरि करे चूकै अभिमानु ॥ साची दरगह पावै मानु ॥ हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ जीअ जंत की करे प्रतिपाल ॥ गुर परसादी सद सम्हाल ॥ दरि साचै पति सिउ घरि जाइ ॥ नानक नामि वडाई पाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ३ ॥ अंतरि पूजा मन ते होइ ॥ एको वेखै अउरु न कोइ ॥ दूजै लोकी बहुतु दुखु पाइआ ॥ सतिगुरि मैनो एकु दिखाइआ ॥ १ ॥ मेरा प्रभु मउलिआ सद बसंतु ॥ इहु मनु मउलिआ गाइ गुण गोबिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ॥ तां प्रभ साचे लगै पिआरु ॥ आपु छोडि होहि दासत भाइ ॥ तउ जगजीवनु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ भगति करे सद वेखै हजूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ इसु भगती का कोई जाणै भेउ ॥ सभु मेरा प्रभु आतम देउ ॥ ३ ॥ आपे सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ जगजीवन सिउ आपि चितु लाए ॥ मनु तनु हरिआ सहजि सुभाए ॥ नानक नामि रहे लिव लाए ॥ ४ ॥ ४ ॥ बसंतु महला ३ ॥ भगति वछलु हरि वसै मनि आइ ॥ गुर किरपा ते सहज सुभाइ ॥ भगति करे विचहु आपु खोइ ॥ तद ही साचि मिलावा होइ ॥ १ ॥ भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥ गुर कै हेति साचै प्रेम पिआरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति करे सो जनु निरमलु होइ ॥ गुर सबदी विचहु हउमै खोइ ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ सदा सांति सुखि सहजि समाइ ॥ २ ॥ साचि रते तिन सद बसंत ॥ मनु तनु हरिआ रवि गुण गुविंद ॥ बिनु नावै सूका संसारु ॥ अगनि त्रिसना जलै वारो वार ॥ ३ ॥ सोई करे जि हरि जीउ भावै ॥ सदा सुखु सरीरि भाणै चितु लावै ॥ अपणा प्रभु सेवे सहजि सुभाइ ॥ नानक नामु वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ बसंतु महला ३ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाए ॥ मनु तनु हरिआ सतिगुर भाए ॥ सफलिओ बिरखु हरि कै दुआरि ॥ साची बाणी नाम पिआरि ॥ १ ॥ ए मन हरिआ सहज सुभाइ ॥ सच फलु लागै सतिगुर भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ गुर कै सबदि वेखै सद हजूरि ॥ छाव घणी फूली बनराइ ॥ गुरमुखि बिगसै सहजि सुभाइ ॥ २ ॥ अनदिनु कीरतनु करहि दिन राति ॥ सतिगुरि

भी लालच नहीं होता।। २ ।। प्रभु कृपा दृष्टि करे तो अभिमान समाप्त हो जाता है और जीव प्रभु के सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करता है। प्रभु सदैव प्रत्यक्ष रूप से देखता रहता है और शब्द-गुरु के रूप में सब ओर समाया रहता है।। ३ ।। सभी जीवों का वही पालन-पोषण करता है इसलिए हे जीव, तू गुरु की कृपा से सदैव उसका सुमिरन करता रह। इस प्रकार तू उस सच्चे प्रभु के द्वार पर पड़ा सम्मानपूर्वक अपने मूल घर (परमात्मा) में लीन हो जाएगा और हे नानक, प्रभु-नाम के माध्यम से तू शोभा प्राप्त करेगा।। ४ ।। ३ ।। बसंतु महला ३ ।। अन्दर की पूजा तो वास्तव में मन से ही होती है जिसमें केवल एक प्रभु को ही देखा जाता है अन्य किसी को नहीं। द्वैतभाव में लोगों ने बहुत दुख प्राप्त किया है परन्तु सच्चे गुरु ने तो मुझे वह एक प्रभु ही दिखा दिया है।। १ ।। बसंत के रूप में वह प्रभु ही चारों ओर खिला हुआ है और प्रभु के गुण गाता हुआ मेरा मन भी खिल उठा है।। १ ।। रहाउ।। गुरु से पूछो और उसके बताए हुए पर यदि तुम गहरा चिंतन करोगे तो सच्चे प्रभु से तुम्हें प्यार हो जाएगा। यदि अभिमान छोड़कर तुम सेवक के भाव को अपना लो तो संसार को जीवन देने वाला प्रभु मन में आ बसेगा।। २ ।। व्यक्ति भक्ति करे, सदा उसे सामने ही देखे और यह भी माने कि मेरा प्रभु सदैव चारों ओर समाया है। इस प्रकार की भक्ति का कोई विरला ही रहस्य जानता है कि सब में मेरी आत्मा का स्वामी प्रभु ही बस रहा है।। ३ ।। वह सच्चा गुरु स्वयं ही अपने से मिला लेता है और संसार के जीवन का प्रेम चित्त में लगा देता है। स्वाभाविक रूप में ही बने रहने से यह मन तन हरा-भरा रहता है और हे नानक, प्रभु के नाम में लौ लगी रहती है।। ४ ।। ४ ।। बसंतु महला ३ ।। गुरु की कृपा से और सरल, सहज स्वभाव के फलस्वरूप भक्त वत्सल प्रभु मन में आ बसता है। जब व्यक्ति अन्तर्मन से अभिमान को समाप्त करके भक्ति करता है तभी उसका मिलाप सत्य से होता है।। १ ।। भक्तजन ही सदैव प्रभु के द्वार पर शोभायमान होते हैं और वे गुरु के और सत्य के प्रेम प्यार में लीन बने रहते हैं।। १ ।। रहाउ।। जो सेवक भक्ति करता है वह निर्मल हो जाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से वह अपने अन्तर्मन का अभिमान खो देता है। प्रभु स्वयं उसके मन में आ बसता है और वह सेवक सदैव शान्त बना रहकर अपने स्वाभाविक सुख में ही लीन हो जाता है।। २ ।। जो सत्य में लीन हैं उनके लिए आध्यात्मिक आनन्द स्वरूप बसंत सदैव ही बना रहता है। प्रभु के गुणों का सुमिरन करने से उनका मन तन हरा-भरा बना रहता है। प्रभु-नाम के बिना सारा संसार ही सूखा है और बार-बार तृष्णा की अग्नि में जल रहा है।। ३ ।। जो प्रभु को भाता है वह वही करता है जो प्रभु को अच्छे लगने वाले आदेश को हृदय में बसा लेता है उसका शरीर सदैव सुखी बना रहता है। वह सहज, सरल स्वभाव के माध्यम से अपने प्रभु का सुमिरन करता है और हे नानक, प्रभु-नाम उसके मन में आ बसता है।। ४ ।। ५ ।। बसंतु महला ३ ।। शब्द के माध्यम से माया-मोह को जलाया जाता है और सच्चे गुरु की रज़ा में चलने से मन तन हरा-भरा बना रहता है। प्रभु के द्वार पर पहुँचा हुआ यह शरीर रूपी वृक्ष फलदायक बनता है और इसका प्रभु की सच्ची वाणी और नाम के साथ प्रेम बन जाता है। यह मन रूपी वृक्ष स्वाभाविक रूप से ही खिल उठता है और सच्चे गुरु की रज़ा में इसके साथ सत्य का फल लगता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु स्वयं ही पास है स्वयं ही दूर है और शब्द-गुरु के माध्यम से जीव इसे सदैव प्रत्यक्ष अनुभव करता रहता है। फली-फूली वनस्पति की छाया बहुत घनी हो जाती है और गुरमुख बना जीव भी अपने सरल स्वाभाविक रूप में खिल उठता है।। २ ।। गुरमुख व्यक्ति सदैव दिन रात प्रभु की कीर्ति का ही गायन करते हैं और सच्चा गुरु

गवाई विचहु जूठि भरांति ॥ परपंच वेखि रहिआ विसमादु ॥ गुरमुखि पाईऐ नाम प्रसादु ॥ ३ ॥ आपे करता सभि रस भोग ॥ जो किछु करे सोई परु होग ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ नानक मिलीऐ सबदु कमाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ बसंतु महला ३ ॥ पूरै भागि सचु कार कमावै ॥ एको चेतै फिरि जोनि न आवै ॥ सफल जनमु इसु जग महि आइआ ॥ साचि नामि सहजि समाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखि कार करहु लिव लाइ ॥ हरि नामु सेवहु विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन की है साची बाणी ॥ गुर कै सबदि जग माहि समाणी ॥ चहु जुग पसरी साची सोइ ॥ नामि रता जनु परगटु होइ ॥ २ ॥ इकि साचै सबदि रहे लिव लाइ ॥ से जन साचे साचै भाइ ॥ साचु धिआइआ देखि हजूरि ॥ संत जना की पग पंकज धूरि ॥ ३ ॥ एको करता अवरु न कोइ ॥ गुर सबदी मेलावा होइ ॥ जिनि सचु सेविआ तिनि रसु पाइआ ॥ नानक सहजे नामि समाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ३ ॥ भगति करहि जन देखि हजूरि ॥ संत जना की पग पंकज धूरि ॥ हरि सेती सद रहहि लिव लाइ ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ १ ॥ दासा का दासु विरला कोई होइ ॥ ऊतम पदवी पावै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एको सेवहु अवरु न कोइ ॥ जितु सेविऐ सदा सुखु होइ ॥ ना ओहु मरै न आवै जाइ ॥ तिसु बिनु अवरु सेवी किउ माइ ॥ २ ॥ से जन साचे जिनी साचु पछाणिआ ॥ आपु मारि सहजे नामि समाणिआ ॥ गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ मनु निरमलु निरमल सचु सोइ ॥ ३ ॥ जिनि गिआनु कीआ तिसु हरि तू जाणु ॥ साच सबदि प्रभु एकु सिञाणु ॥ हरि रसु चाखै तां सुधि होइ ॥ नानक नामि रते सचु सोइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ बसंतु महला ३ ॥ नामि रते कुलां का करहि उधारु ॥ साची बाणी नाम पिआरु ॥ मनमुख भूले काहे आए ॥ नामहु भूले जनमु गवाए ॥ १ ॥ जीवत मरै मरि मरणु सवारै ॥ गुर कै सबदि साचु उर धारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सचु भोजनु पवितु सरीरा ॥ मनु निरमलु सद गुणी गहीरा ॥ जंमै मरै न आवै जाइ ॥ गुर परसादी साचि समाइ ॥ २ ॥ साचा सेवहु साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि

उनके अन्तर्मन की जूठन और भ्रम को दूर कर देता है। वह प्रभु आश्चर्य स्वरूप होकर अपनी लीला को देखता रहता है और व्यक्ति गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम का प्रसाद रूपी भोजन प्राप्त करता है। वह प्रभु स्वयं ही कर्ता है और सभी रसों को भोगने वाला है। वह जो कुछ भी करता है उसे अवश्य होना ही होता है। उस महान दाता को तिल मात्र भी लालच नहीं होता और हे नानक, उसे शब्द को मन में बसाकर और उसके अनुरूप आचरण करके ही मिला जाता है।। ४ ।। ६ ।। बसंतु महला ३ ।। पूर्ण भाग्यशाली होने से ही जीव सत्य के कार्य करता रहता है और एक प्रभु का ही सुमरिन करता हुआ वह फिर योनि में नहीं आता। स्वाभाविक रूप से वह सत्य नाम के माध्यम से सहज भाव में लीन हो जाता है और इस संसार में उसका आना और उसका जीवन सफल हो जाता है।। १ ।। हे गुरमुख जीव, तुम अपनी लौ प्रभु में लगाते हुए कार्य व्यवहार करो और अपने अभिमान को अन्तर्मन से गंवा कर प्रभु-नाम का सुमिरन करो।। १ ।। रहाउ।। ऐसे सेवक का कहा हुआ वाक्य सच्चा होता है और शब्द-गुरु के माध्यम से वह सारे संसार में फैल जाता है। सत्य रूप होने से वह चारों युगों में फैल जाता है और इस प्रकार प्रभु-नाम में लीन हुआ सेवक चारों ओर प्रकट (प्रसिद्ध) हो जाता है।। २ ।। कई सच्चे शब्द के माध्यम से प्रभु में लौ लगाए रहते हैं और वास्तव में ऐसे ही व्यक्ति सच्चे होते है और उस सच्चे प्रभु को भा जाते हैं। वे प्रभु को प्रत्यक्ष देखकर सत्य का ही सुमिरन करते हैं और सन्तजनों के चरण कमलों की धूलि ही बने रहते हैं।। ३ ।। वह कर्ता प्रभु एक ही है और उसके बिना अन्य कोई नहीं हैं। शब्द-गुरु के माध्यम से ही उसके साथ मिलाप होता है। जिन्होंने सत्य का सुमिरन किया है उन्होंने ही जीवन के वास्तविक रस को प्राप्त कर लिया है। हे नानक, वे स्वाभाविक रूप में ही प्रभु-नाम में लीन हो जाते हैं।। ४ ।। ७ ।। बसंतु महला ३ ।। प्रभु के सेवक प्रभु को आस-पास प्रत्यक्ष मानकर ही उसकी भक्ति करते हैं और सन्तजनों के चरण-कमलों की धूलि बने रहते हैं। वे अपनी लौ सदैव प्रभु में ही लगाए रहते हैं क्योंकि पूर्ण सच्चे गुरु ने उन्हें यह रहस्य समझा दिया होता है।। १ ।। कोई बिरला ही प्रभु के दासों का भी दास बनता है और वही उत्तम पद को भी प्राप्त करता है।। १ ।। रहाउ।। जिसके सुमिरन से सदैव सुख प्राप्त होता है उस एक का ही सुमिरन करते रहो अन्य किसी का नहीं। वह ना आता है, न जाता है और ना ही मरता है; हे मेरी माँ, उसे छोड़कर मैं भला किसी अन्य का सुमिरन क्यों करूं।। २ ।। वे ही सच्चे सेवक हैं जिन्होंने सत्य को पहचान लिया है और अहंकार भाव को मारकर स्वाभाविक रूप से ही प्रभु-नाम में लीन हो गए हैं। गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम प्राप्त होता है जिससे मन निर्मल हो जाता है और व्यक्ति की सच्ची शोभा भी निर्मल बनी रहती है।। ३ ।। हे जीव, जिसने ज्ञान उत्पन्न किया है तू उस प्रभु को जान और सच्चे शब्द के माध्यम से केवल एक ही प्रभु से पहचान बना। तू प्रभु रूपी रस को चखेगा तो तभी तेरी शुद्धि होगी और हे नानक, नाम में लीन होकर तेरी सच्ची शोभा बनी रहेगी।। ४ ।। ८ ।। बसंतु महला ३ ।। प्रभु-नाम में लीन व्यक्ति अपने कुलों का भी उद्धार कर लेता है, उसकी कही हुई वाणी भी सच्ची होती है और उसके अन्दर प्रभु-नाम का प्रेम होता है। मनमुख भटकते हैं और वे भला संसार में क्यों आते हैं ; प्रभु-नाम को भुलाकर वे जीवन को गँवा देते हैं।। १ ।। जो जीवन में ही विकारों के प्रति मार जाता है वह मर कर भी अपने मरने को सफल बना लेता है। वही शब्द के माध्यम से सत्य को हृदय में धारण कर लेता है।। १ ।। रहाउ।। गुरमुख के लिए सत्य ही भोजन है जो उसके शरीर को पवित्र बनाए रहता है। उसका मन सदैव प्रभु के गहरे गुणों के कारण निर्मल बना रहता है। वह जन्मता, मरता और आता जाता नहीं है; गुरु की कृपा से वह सत्य में लीन हो जाता है।। २ ।। सत्य की पहचान करके उस सच्चे प्रभु का ही सुमिरन करो। ऐसा करने वाले

हरि दरि नीसाणै ॥ दरि साचै सचु सोभा होइ ॥ निज घरि वासा पावै सोइ ॥ ३ ॥ आपि अभुलु सचा सचु सोइ ॥ होरि सभि भूलहि दूजै पति खोइ ॥ साचा सेवहु साची बाणी ॥ नानक नामे साचि समाणी ॥ ४ ॥ ९ ॥ बसंतु महला ३ ॥ बिनु करमा सभ भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ॥ मनमुख अंधे ठउर न पाई ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि समाई ॥ १ ॥ हुकमु मंने सो जनु परवाणु ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचि रते जिन्हा धुरि लिखि पाइआ ॥ हरि का नामु सदा मनि भाइआ ॥ सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ जोती जोति मिलाए सोइ ॥ २ ॥ एकु नामु तारे संसारु ॥ गुर परसादी नाम पिआरु ॥ बिनु नामै मुकति किनै न पाई ॥ पूरे गुर ते नामु पलै पाई ॥ ३ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ सतिगुर सेवा नामु द्रिढ़ाए ॥ जिन इकु जाता से जन परवाणु ॥ नानक नामि रते दरि नीसाणु ॥ ४ ॥ १० ॥ बसंतु महला ३ ॥ क्रिपा करे सतिगुरु मिलाए ॥ आपे आपि वसै मनि आए ॥ निहचल मति सदा मन धीर ॥ हरि गुण गावै गुणी गहीर ॥ १ ॥ नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ॥ ब्रिथा जनमु फिरि आवहि जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु भेख करहि मनि सांति न होइ ॥ बहु अभिमानि अपणी पति खोइ ॥ से वडभागी जिन सबदु पछाणिआ ॥ बाहरि जादा घर महि आणिआ ॥ २ ॥ घर महि वसतु अगम अपारा ॥ गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ॥ नामु नव निधि पाई घर ही माहि ॥ सदा रंगि राते सचि समाहि ॥ ३ ॥ आपि करे किछु करणु न जाइ ॥ आपे भावै लए मिलाइ ॥ तिस ते नेड़ै नाही को दूरि ॥ नानक नामि रहिआ भरपूरि ॥ ४ ॥ ११ ॥ बसंतु महला ३ ॥ गुर सबदी हरि चेति सुभाइ ॥ राम नाम रसि रहै अघाइ ॥ कोट कोटंतर के पाप जलि जाहि ॥ जीवत मरहि हरि नामि समाहि ॥ १ ॥ हरि की दाति हरि जीउ जाणै ॥ गुर कै सबदि इहु मनु मउलिआ हरि गुणदाता नामु वखाणै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगवै वेसि भ्रमि मुकति न होइ ॥ बहु संजमि सांति न पावै कोइ ॥ गुरमति नामु परापति होइ ॥ वडभागी हरि पावै सोइ ॥ २ ॥ कलि महि

शब्द-गुरु का झंडा पकड़कर प्रभु के द्वार पर पहुँच जाते हैं। उस सच्चे के द्वार पर सत्य ही शोभायमान होता है और ऐसा व्यक्ति अपने मूल निवास प्रभु में लीन हो जाता है।। ३ ।। वह सच्चा प्रभु स्वयं कभी नहीं भूलता; अन्य सभी तो द्वैतभाव में अपना सम्मान गँवा कर घूमते भटकते रहते हैं। उस सच्चे का सुमिरन करो क्योंकि उसकी वाणी भी सच्ची है। हे नानक, प्रभु-नाम के माध्यम से ही वह वाणी सत्यनिष्ठ बनी रहती है।। ४ ।। ६ ।। बसंतु महला ३ ।। प्रभु की कृपा के बिना सारी सृष्टि भ्रमों में पड़ी भटक रही है और माया-मोह में पड़ी बहुत दुख प्राप्त कर रही है। अन्धे अज्ञानी मनमुखों को कोई ठिकाना नहीं मिलता और विष्ठा के वे कीड़े विष्ठा में ही मर-खप जाते हैं।। १ ।। जो प्रभु के हुकुम को मानते हैं वही सेवक सफल होते हैं और उन्हीं पर शब्द-गुरु तथा प्रभु के नाम का चिन्ह अंकित बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। प्रारम्भ से ही जिनके भाग्य में लिखा होता है वे ही सत्य में रंगे रहते हैं। उन्हें ही प्रभु का नाम अपने मन में सदेव अच्छा लगता रहता है। सच्चे गुरु की वाणी से ही सदैव सुख मिलता है और वही जीव की ज्योति को उस परम ज्योति में मिला देती है।। २ ।। प्रभु का एक नाम ही संसार को पार उतारता है और गुरु की कृपा से प्रभु-नाम में प्रेम लगता है। प्रभु-नाम के बिना किसी ने भी मुक्ति प्राप्त नहीं की है और प्रभु का नाम पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है।। ३ ।। वही समझ पाता है जिसे प्रभु स्वयं समझा देता है। सच्चे गुरु की सेवा से प्रभु-नाम पक्के तौर पर मन में याद बना रहता है। जिन्होंने एक प्रभु को ही जाना है वे सेवक ही सफल हैं और वे ही हे नानक, प्रभु-नाम में रंगे हुए अपने विशेष चिन्ह समेत प्रभु के द्वार पर पहुँच पाते हैं।। ४ ।। १० ।। बसंतु महला ३ ।। यदि प्रभु कृपा करे तो वह सच्चे गुरु से मिला देता है और फिर प्रभु स्वयं ही मन में आ बसता है। अब व्यक्ति की मति स्थिर हो जाती है तथा उसके मन में सदैव धैर्य बना रहता है। फिर वह प्रभु के गहरे गुणों का गायन करता रहता है।। १ ।। प्रभु-नाम को भुलाने वाले, विकारों का विष खाकर मरते हैं; उनका जीवन व्यर्थ होता है और वे बार-बार आवागमन में पड़े रहते हैं।। १।। रहाउ।। बहुत से वेश धारण करने से भी मन शान्त नहीं होता; बहुत अभिमान करने से भी व्यक्ति अपने सम्मान को ही गँवाता है। वे भाग्यशाली हैं जिन्होंने शब्द को पहचान लिया है और बाहर की तरफ दौड़ते मन को अपने अन्दर ही स्थिर कर लिया है।। २ ।। जीव के अन्दर ही अगम्य एवं अपार पदार्थ हैं जिन्हें शब्द के चिंतन और गुरमति के माध यम से जीव खोज लेता है। वह शरीर रूपी घर के अन्दर ही प्रभु-नाम रूपी नवनिधियाँ प्राप्त कर लेता है और सदैव उस प्रभु के रंग में रंगकर सत्य में लीन हो जाता है।। ३ ।। वह प्रभु स्वयं सब कुछ करता है और अन्य किसी से भी कुछ नहीं किया जाता। जब उसे अच्छा लगता है तो वह जीव को अपने से मिला लेता है। उससे निकट तो कोई भी नहीं हैं, बाकी सब तो दूर ही दूर हैं। हे नानक, वह अपने नाम के माध्यम से सबमें समाया हुआ रहता है।। ४।। ११ ।। बसंतु महला ३ ।। शब्द-गुरु के द्वारा प्रेमपूर्वक प्रभु का सुमिरन करके व्यक्ति राम नाम के आनन्द में सन्तुष्ट बना रहता है; फिर शरीर रूपी करोड़ो जन्मों के किलों (शरीरों) के पाप जल कर नष्ट हो जाते हैं। अब व्यक्ति जीवन में ही विकारों के प्रति मरकर प्रभु-नाम में लीन हो जाते हैं।। १ ।। प्रभु के दिए हुए दान के बारे में तो वह प्रभु ही जानता है। शब्द-गुरु के माध्यम से यह मन हरा-भरा होकर प्रभु-नाम का उच्चारण करने लगा है जिससे प्रभु के गुण प्राप्त होते हैं।। १ ।। रहाउ।। भगवा वेश धारण करके भ्रमण करते रहने से मुक्ति नहीं मिलेगी और बनावटी ढंग से अनेकों प्रकार के संयम करने से किसी को भी शान्ति प्राप्त नहीं होती। गुरमति के माध्यम से प्रभु-नाम की प्राप्ति होती है और वह भाग्यशाली है जो प्रभु को पा जाता है।। २ ।। कलियुग में

राम नामि वडिआई ॥ गुर पूरे ते पाइआ जाई ॥ नामि रते सदा सुखु पाई ॥
बिनु नामै हउमै जलि जाई ॥ ३ ॥ वडभागी हरि नामु बीचारा ॥ छूटै राम
नामि दुखु सारा ॥ हिरदै वसिआ सु बाहरि पासारा ॥ नानक जाणै सभु
उपावणहारा ॥ ४ ॥ १२ ॥ बसंतु महला ३ इक तुके ॥ तेरा कीआ किरम
जंतु ॥ देहि त जापी आदि मंतु ॥ १ ॥ गुण आखि वीचारी मेरी माइ ॥
हरि जपि हरि कै लगउ पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर प्रसादि लागे नाम सुआदि ॥
काहे जनमु गवावहु वैरि वादि ॥ २ ॥ गुरि किरपा कीन्ही चूका अभिमानु ॥
सहज भाइ पाइआ हरि नामु ॥ ३ ॥ ऊतम ऊचा सबद कामु ॥ नानकु वखाणै
साचु नामु ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥ बसंतु महला ३ ॥ बनसपति मउली चड़िआ
बसंतु ॥ इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥ १ ॥ तुम्ह साचु धिआवहु मुगध मना ॥
तां सुखु पावहु मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इतु मनि मउलिऐ भइआ अनंदु ॥
अंम्रित फलु पाइआ नामु गोबिंद ॥ २ ॥ एको एकु सभु आखि वखाणै ॥
हुकमु बूझै तां एको जाणै ॥ ३ ॥ कहत नानकु हउमै कहै न कोइ ॥ आखणु
वेखणु सभु साहिब ते होइ ॥ ४ ॥ २ ॥ १४ ॥ बसंतु महला ३ ॥ सभि जुग
तेरे कीते होए ॥ सतिगुरु भेटै मति बुधि होए ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे लैहु
मिलाइ ॥ गुर कै सबदि सच नामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि बसंतु हरे
सभि लोइ ॥ फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ ॥ २ ॥ सदा बसंतु गुर सबदु
वीचारे ॥ राम नामु राखै उर धारे ॥ ३ ॥ मनि बसंतु तनु मनु हरिआ होइ ॥
नानक इहु तनु बिरखु राम नामु फलु पाए सोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १५ ॥ बसंतु
महला ३ ॥ तिन्ह बसंतु जो हरि गुण गाइ ॥ पूरै भागि हरि भगति कराइ ॥ १ ॥
इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ॥ इहु मनु जलिआ दूजै दोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
इहु मनु धंधै बांधा करम कमाइ ॥ माइआ मूठा सदा बिललाइ ॥ २ ॥ इहु मनु
छूटै जां सतिगुरु भेटै ॥ जमकाल की फिरि आवै न फेटै ॥ ३ ॥ इहु मनु छूटा
गुरि लीआ छडाइ ॥ नानक माइआ मोहु सबदि जलाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६ ॥
बसंतु महला ३ ॥ बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥ एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु

तो प्रभु-नाम की ही महानता है और यह प्रभु-नाम पूर्ण गुरु के माध्यम से ही प्राप्त होता है। नाम में लीन बनकर सदैव सुख पाया जाता है और प्रभु-नाम से विहीन होने पर जीव अहंकार में ही जलता रहता है।। ३ ।। बड़े भाग्य से ही प्रभु-नाम का चिंतन प्राप्त होता है और राम नाम के माध्यम से सारा दुख समाप्त हो जाता है। जो हृदय में बस रहा है वही बाहर भी फैला हुआ है। हे नानक, हमें वह पैदा करने वाला सब कुछ जानता है।। ४ ।। १२ ।। बसंतु महला ३ एक पंक्ति वाला।। हे प्रभु, ये जितने कीड़े और जीव जन्तु हैं तेरे ही पैदा किए हुए हैं और हे प्रभु, तुम ही मुझे यदि मन्त्र (सतिनामु) प्रदान करो तो मैं उसका सुमिरन करता रहूँ।। १ ।। हे माँ, मैं प्रभु के गुणों को कहता हुआ उनका चिंतन करूं और प्रभु का सुमिरन करता हुआ प्रभु के चरणों में आ लगूँ।। १ ।। रहाउ।। गुरु की कृपा से ही प्रभु-नाम का स्वाद जीव को लग जाता है, इसलिए हे जीव, तू शत्रुता और वाद-विवाद में क्यों अपना जीवन गँवा रहा है।। २ ।। गुरु ने कृपा की और हमारा अभिमान समाप्त हो गया और हमनें स्वाभाविक रूप से ही प्रभु-नाम प्राप्त कर लिया है।। ३ ।। सबसे उत्तम और ऊँचा काम शब्द का चिंतन करना ही है और नानक तो उस प्रभु के सच्चे नाम का ही बखान कर रहा है।। ४ ।। १ ।। १३ ।। बसंतु महला ३ ।। बसंत ऋतु आने पर सारी वनस्पति खिल उठी है और मेरा यह मन सच्चे गुरु की संगति में खिल उठा है।। १ ।। हे मेरे मूर्ख मन, तुम सत्य का ही सुमिरन करो; तभी तुझे सुख प्राप्त हो सकेगा।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का नाम प्राप्त करके हमने अमृत फल पा लिया है और आनन्द में बने रहने से हमारा मन प्रफुल्लित हो उठा है।। २ ।। उस एक के बारे में सभी कहते रहते हैं परन्तु यदि प्रभु के हुकुम के रहस्य को जान लिया जाए तभी उस एक प्रभु को समझा जा सकता है।। ३ ।। नानक कहता है कि हुकुम को बूझ लेने से अहंकार भावना कुछ भी नहीं कर पाती और फिर हमारा कहना और देखना सब प्रभु के माध्यम से होता हुआ हमें अनुभव होने लगता है।। ४ ।। २ ।। १४ ।। बसंतु महला ३ ।। हे प्रभु, सभी युग तेरे ही बनाए हुए हैं परन्तु मति और बुद्धि तभी कार्यशील होती है जब सच्चे गुरु से मिलाप हो जाए।। १ ।। हे प्रभु, हमें स्वयं ही अपने से मिला क्योंकि शब्द-गुरु के माध्यम से ही सच्चे नाम में लीन हुआ जाता है।। १ ।। रहाउ।। यदि मन खिला हुआ है तो सभी लोक हरे-भरे दिखाई देते हैं। प्रभु-नाम में ही फलने-फूलने से सुख प्राप्त होता है।। २ ।। शब्द-गुरु के चिंतन से और प्रभु-नाम को हृदय में धारण किए रहने से सदैव बसंत का मौसम ही बना रहता है।। ३ ।। जिनके मन में बसंत ऋतु खिली हुई है उनका तन मन हरा-भरा बना रहता है। हे नानक, ऐसा व्यक्ति इस शरीर को वृक्ष मानते हुए राम-नाम का फल प्राप्त करता है।। ४ ।। ३ ।। १५।। बसंतु महला ३ ।। बसंतु का फलना-फूलना उन्हीं के लिए हैं जो प्रभु के गुण गाते हैं और पूर्ण भाग्य के कारण ही प्रभु उनसे भक्ति करवाता है।। १ ।। जब यह मन द्वैतभाव में जलता रहता है तो इसे आन्तरिक और बाहरी बसंत दोनों का ही पता भी नहीं चलता।। १ ।। रहाउ।। यह मन तो धन्धों के बन्धन में बँधा कर्म करता रहता है और प्रपंचों में लुटा सदैव चीख-पुकार, लगाए रहता है।। २ ।। सच्चे-गुरु से मिलाप हो जाए तो यह मन बन्धन मुक्त हो जाता है और फिर इसे यम काल की चोटें नहीं सहनी पड़ती।। ३ ।। हे नानक, शब्द के माध्यम से जब माया मोह को जला दिया जाता है तो यह मन छुटकारा पा लेता है और वास्तव में गुरु ही इसे छुड़वाता है।। ४ ।। ४ ।। १६ ।। बसंत महला ३ ।। जैसे बसंत की ऋतु आने से सारी वनस्पति खिल उठती है इसी प्रकार प्रभु में चित्त लगाने से जीव-जन्तु भी खिल

लाइ ॥ १ ॥ इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ॥ हरि हरि नामु जपै दिनु राती गुरमुखि हउमै कढै धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर बाणी सबदु सुणाए ॥ इहु जगु हरिआ सतिगुर भाए ॥ २ ॥ फल फूल लागे जां आपे लाए ॥ मूलि लगै तां सतिगुरु पाए ॥ ३ ॥ आपि बसंतु जगतु सभु वाड़ी ॥ नानक पूरै भागि भगति निराली ॥ ४ ॥ ५ ॥ १७ ॥

बसंतु हिंडोल महला ३ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुर की बाणी विटहु वारिआ भाई गुर सबद विटहु बलि जाई ॥ गुरु सालाही सद अपणा भाई गुर चरणी चितु लाई ॥ १ ॥ मेरे मन राम नामि चितु लाइ ॥ मनु तनु तेरा हरिआ होवै इकु हरि नामा फलु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि राखे से उबरे भाई हरि रसु अंम्रितु पीआइ ॥ विचहु हउमै दुखु उठि गइआ भाई सुखु वुठा मनि आइ ॥ २ ॥ धुरि आपे जिन्हा नो बखसिओनु भाई सबदे लइअनु मिलाइ ॥ धूड़ि तिन्हा की अघुलीऐ भाई सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ ३ ॥ आपि कराए करे आपि भाई जिनि हरिआ कीआ सभु कोइ ॥ नानक मनि तनि सुखु वसै भाई सबदि मिलावा होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ १८ ॥ १२ ॥ १८ ॥ ३० ॥

रागु बसंतु महला ४ घरु १ इक तुके १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिउ पसरी सूरज किरणि जोति ॥ तिउ घटि घटि रमईआ ओति पोति ॥ १ ॥ एको हरि रविआ स्रब थाइ ॥ गुर सबदी मिलीऐ मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि अंतरि एको हरि सोइ ॥ गुरि मिलिऐ इकु प्रगटु होइ ॥ २ ॥ एको एकु रहिआ भरपूरि ॥ साकत नर लोभी जाणहि दूरि ॥ ३ ॥ एको एकु वरतै हरि लोइ ॥ नानक हरि एको करे सु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ बसंतु महला ४ ॥ रैणि दिनसु दुइ सदे पए ॥ मन हरि सिमरहु अंति सदा रखि लए ॥ १ ॥ हरि हरि चेति सदा मन मेरे ॥ सभु आलसु दूख भंजि प्रभु पाइआ गुरमति गावहु गुण प्रभ केरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख फिरि फिरि हउमै मुए ॥

उठते हैं ।। १ ।। यदि जीव गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का दिन रात जाप करते हुए अहंकार को अपने अन्दर से धोकर बाहर निकाल दे तो इस विधि से यह मन हरा-भरा हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। सच्चे गुरु ने शब्द के माध्यम से यह उपदेश रूपी वाणी सुनाई है कि यह सारा संसार सच्चे गुरु के आदेश में चलकर ही हरा-भरा हो जाता है।। २ ।। प्रभु जब स्वयं ही लगाता है तो इस संसार रूपी वृक्ष को फल-फूल लगते हैं क्योंकि मनुष्य के जीवन रूपी वृक्ष की जड़ प्रभु स्वयं ही है और इस वृक्ष के मूल प्रभु से प्रेम लगाने पर ही उस सच्चे गुरु प्रभु की प्राप्ति होती है।। ३ ।। इस संसार रूपी उद्यान में वह स्वयं ही बसंत रूप में दिखाई देता है और हे नानक, पूर्ण भाग्य से ही उसकी निराली भक्ति प्राप्त होती है।। ४ ।। ५ ।। १७।।

बसंतु हिंडोल महला ३ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मैं गुरु की वाणी पर कुर्बान हूँ और हे भाई, शब्द-गुरु पर भी मैं बलिहारी जाता हूँ। मैं अपने गुरु का सदैव गुणानुवाद करता हूँ और गुरु के चरणों में ही चित्त लगाता हूँ।। १ ।। हे मेरे मन, तू राम नाम में ही अपना ध्यान लगा। ऐसा करने से हे जीव, तेरा तन और मन हरा-भरा हो जाएगा और एक प्रभु-नाम का फल तुझे प्राप्त हो जाएगा।। १ ।। रहाउ।। हे भाई, जिन्हें गुरु ने बचा लिया है उनका प्रभु रस रूपी अमृत पीने से उद्धार हो गया है। उनके अन्तर्मन से अहंकार का कष्ट मिट गया है और हे भाई, सुख उनके मन में आ बसा है।। २ ।। जिन पर प्रभु ने प्रारम्भ से ही स्वयं कृपा कर दी है उनको शब्द के माध्यम से वह अपने से मिला लेता है। हे भाई, उनकी चरणधूलि के कारण बन्धन मुक्त हुआ जाता है और उनकी सत्संगति के माध्यम से प्रभु से मिलाप होता है।। ३ ।। हे भाई, जिसने सब कुछ हरा-भरा कर दिया है वह स्वयं ही सब कुछ करता कराता है। हे नानक, शब्द के माध्यम से उससे मिलाप होता है और सदा के लिए मन तन में सुख बस जाता है।। ४ ।। १।। १८।। १२।। १८।। ३०।।

रागु बसंतु महला ४ घरु १ एक पंक्ति वाला १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जिस प्रकार सूर्य की किरण की ज्योति सब ओर पसरी हुई है उसी प्रकार घट-घट में वह प्रभु ओत-प्रोत बना हुआ है।। १ ।। वह एक प्रभु ही सर्वत्र व्याप्त है और हे मेरी माँ, शब्द-गुरु के माध्यम से ही उसे मिला जाता है।। १ ।। रहाउ।। घट-घट में वह एक ही प्रभु है और गुरु के मिलाप से ही वह एक प्रभु प्रकट होता है।। २ ।। वह एक ही सबमें व्याप्त है परन्तु प्रभु से टूटा हुआ लोभी व्यक्ति उसे बहुत दूर मानता है।। ३ ।। वह एक प्रभु ही इस लोक में कार्यशील बना हुआ है और हे नानक, वह एक प्रभु ही जो कुछ करता है वही होता है।।४ ।।१ ।।बसंतु महला ४ ।। रात और दिन दोनों हमें यहाँ से चलने की आवाज़ देते रहते हैं। हे मन, प्रभु का सुमिरन करो जो अन्त में सदैव रक्षा कर लेता है।। १ ।। हे मेरे मन, सदैव प्रभु का सुमिरन कर। सभी प्रकार के आलस्य और दुखों का नाश करने वाला प्रभु हमने प्राप्त कर लिया है इसलिए गुरमति के माध्यम से प्रभु के गुण गाते रहो।। १ ।। रहाउ।। मनमुख व्यक्ति तो अपने अहंकार में बार-बार मरते रहते हैं;

कालि दैति संघारे जम पुरि गए ॥ २ ॥ गुरमुखि हरि हरि हरि लिव लागे ॥ जनम मरण दोऊ दुख भागे ॥ ३ ॥ भगत जना कउ हरि किरपा धारी ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥ ४ ॥ २ ॥

बसंतु हिंडोल महला ४ घरु २ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

राम नामु रतन कोठड़ी गड़ मंदरि एक लुकानी ॥ सतिगुरु मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी ॥ १ ॥ माधो साधू जन देहु मिलाइ ॥ देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र परम पदु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच चोर मिलि लागे नगरीआ राम नाम धनु हिरिआ ॥ गुरमति खोज परे तब पकरे धनु साबतु रासि उबरिआ ॥ २ ॥ पाखंड भरम उपाव करि थाके रिद अंतरि माइआ माइआ ॥ साधू पुरखु पुरखपति पाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥ ३ ॥ जगंनाथ जगदीस गुसाई करि किरपा साधु मिलावै ॥ नानक सांति होवै मन अंतरि नित हिरदै हरि गुण गावै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ४ हिंडोल ॥ तुम्ह वड पुरख वड अगम गुसाई हम कीरे किरम तुमनछे ॥ हरि दीन दइआल करहु प्रभ किरपा गुर सतिगुर चरण हम बनछे ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि करि क्रिपछे ॥ जनम जनम के किलविख मलु भरिआ मिलि संगति करि प्रभ हनछे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरा जनु जाति अविजाता हरि जपिओ पतित पवीछे ॥ हरि कीओ सगल भवन ते ऊपरि हरि सोभा हरि प्रभ दिनछे ॥ २ ॥ जाति अजाति कोई प्रभ धिआवै सभि पूरे मानस तिनछे ॥ से धंनि वडे वड पूरे हरि जन जिन्ह हरि धारिओ हरि उरछे ॥ ३ ॥ हम ढींढे ढीम बहुतु अति भारी हरि धारि क्रिपा प्रभ मिलछे ॥ जन नानक गुरु पाइआ हरि तूठे हम कीए पतित पवीछे ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ मेरा इकु खिनु मनूआ रहि न सकै नित हरि हरि नाम रसि गीधे ॥ जिउ बारिकु रसकि परिओ थनि माता थनि काढे बिलल बिलीधे ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ मेरे मन तन नाम हरि बीधे ॥ वडै भागि गुरु

काल रूपी दैत्य उनका संहार करता है और वे यमपुरी को चले जाते हैं।। २ ।। गुरमुख व्यक्तियों की पूर्ण रूप से प्रभु में लौ लगी रहती है और उनके जन्म-मरण के दोनों ही दुख भाग खड़े होते हैं।। ३ ।। भक्तजनों पर प्रभु ने कृपा की है जिससे गुरु नानक प्रसन्न हुआ और हमें प्रभु मिल गया है।। ४ ।। २ ।।

बसंतु हिंडोल महला ४ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हृदय रूपी किले के मंदिर में राम नाम की एक अमूल्य कोठरी छिपी हुई है। सच्चा गुरु यदि मिल जाए तो इस कोठरी को खोजा जाता है और इसको पाने से जीव की ज्योति उस परम ज्योति में मिल जाती है।। १ ।। हे प्रभु, हमें साधुजनों से मिला दो, जिन्हें देखकर सभी पाप भाग खड़े होते हैं और पवित्र परम पद प्राप्त हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। पाँचों चोर मिलकर इस शरीर रूपी नगरी में चोरी करने के लिए आ लगे हैं और राम नाम रूपी धन को इन्होंने चुरा लिया है। गुरु की मति के अनुरूप जब हमने खोज की तो उन्हें पकड़ लिया गया और प्रभु-नाम रूपी धन की हमारी रास पूँजी पूरी की पूरी बच गई है।। २ ।। अनेकों पाखण्ड, भ्रम और उपाय करके हम थक गए हैं परन्तु हृदय में माया का प्रपंच बना ही हुआ है। जब पुरुषों के स्वामी प्रभु की कृपा से हमने साधु रूपी समर्थ गुरु-पुरुष को प्राप्त कर लिया तो हमारे अज्ञान का अंधेरा नष्ट हो गया है।। ३ ।। सारे संसार का स्वामी और धरती का मालिक प्रभु कृपा करके गुरु से जब मिलाता है तो हे नानक, मन में शान्ति आ जाती है और जीव सदैव हृदय में प्रभु के गुण गाता रहता है।। ४ ।। १ ।। ३ ।। बसंतु महला ४ हिंडोल।। हे प्रभु, तुम महान, सर्वव्यापक, अगम्य और धरती के स्वामी हो; हम तो तुम्हारे छोटे से फकीर हैं। हमने तो सच्चे गुरु के चरणों की ही कामना की है, अतः हे दीनदयालु प्रभु, तुम कृपा कर हमें प्रदान करो।। १ ।। हे प्रभु, कृपा करके सत्संगति से मिला दो। हमारे हृदय में तो जन्मों-जन्तान्तरों के पापों की मल भरी है और संगत से मिलाप करके प्रभु तुम उसे अच्छा बना दो।। १ ।। रहाउ।। जाति, विजाति के सेवकों को भी प्रभु-नाम का जाप पवित्र करने वाला है। ऐसे सेवक को प्रभु सभी लोकों के उपर स्थित कर देता है और अपनी शोभा उसे प्रदान कर देता है।। २ ।। तथाकथित अच्छी बुरी जाति वाला जो कोई भी प्रभु का सुमिरन करता है, प्रभु उन सबकी मनोकामनाएँ पूरी करता है। ऐसे प्रभु के सेवक धन्य हैं; बड़े हैं एवं पूर्ण हैं जिन्होंने हृदय में प्रभु को धारण किया है।। ३ ।। हम तो बहुत ही नीची श्रेणी के मिट्टी जैसी मति वाले बहुत भारी मूर्ख हैं; हे प्रभु, कृपा करके हमसे आ मिलो। हे नानक, जब तेरे सेवकों ने गुरु को पा लिया तो प्रभु प्रसन्न हो उठा और हम पतितों को उसने पवित्र कर दिया है।। ४ ।। २ ।। ४ ।। बसंतु हिंडोल महला ४ ।। सदैव प्रभु-नाम के रस को चखने की आदत बनाए रखने वाला मन उस प्रभु के नाम के बिना एक क्षण भर भी नहीं रह सकता। जैसे बच्चे को अपनी माँ के स्तन से प्रेम बना रहता है और दूध पिलाने के लिए स्तन को निकालते ही वह और भी जोर-जोर से चिल्लाने लगता है।। १ ।। उसी प्रकार हे प्रभु, मेरा मन-तन हरि नाम में बिंध गया है। बड़े भाग्य से

सतिगुरु पाइआ विचि काइआ नगर हरि सीधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन के सास सास है जेते हरि बिरहि प्रभू हरि बीधे ॥ जिउ जल कमल प्रीति अति भारी बिनु जल देखे सुकलीधे ॥ २ ॥ जन जपिओ नामु निरंजनु नरहरि उपदेसि गुरू हरि प्रीधे ॥ जनम जनम की हउमै मलु निकसी हरि अंम्रिति हरि जलि नीधे ॥ ३ ॥ हमरे करम न बिचरहु ठाकुर तुम्ह पैज रखहु अपनीधे ॥ हरि भावै सुणि बिनउ बेनती जन नानक सरणि पवीधे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईऐ ॥ गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि आणि वसाईऐ ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ ॥ हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ ॥ जिउ ओडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु लहाईऐ ॥ २ ॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते ध्रिगु ध्रिगु नर जीवाईऐ ॥ जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईऐ ॥ ३ ॥ मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईऐ ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥ बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ आवण जाणु भइआ दुखु बिखिआ देह मनमुख सुंञी सुंञु ॥ राम नामु खिनु पलु नही चेतिआ जमि पकरे कालि सलुंञु ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ बिखु हउमै ममता मुंञु ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी मिलि संगति हरि रसु भुंञु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगति साध दइआ करि मेलहु सरणागति साधू पंञु ॥ हम डुबदे पाथर काढि लेहु प्रभ तुम्ह दीन दइआल दुख भंञु ॥ २ ॥ हरि उसतति धारहु रिद अंतरि सुआमी सतसंगति मिलि बुधि लंञु ॥ हरि नामै हम प्रीति लगानी हम हरि विटहु घुमि वंञु ॥ ३ ॥ जन के पूरि मनोरथ हरि प्रभ हरि नामु देवहु हरि लंञु ॥ जन नानक मनि तनि अनदु भइआ है गुरि मंत्रु दीओ हरि भंञु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ १२ ॥ १८ ॥ ७ ॥ ३७ ॥

मुझे सच्चा गुरु-प्रभु इस शरीर रूपी नगरी में ही मिल गया है।। १ ।। रहाउ।। इस सेवक के जितने भी श्वास हैं वे सब प्रभु के प्रेम से भरे हुए वियोग में ही बिंधे हुए हैं। यह वैसे ही है जैसे कमल की जल से प्रीति अत्यन्त गहरी होती है और जल को देखे बिना कमल सूख जाता है।। २ ।। गुरु के उपदेश के फलस्वरूप प्रभु प्रत्यक्ष अनुभव हो गया है और उसके सेवक ने तो प्रभु के नाम का ही जाप किया है। जन्मों-जन्मान्तरों की मैल उस समय उतर गई जब प्रभु रूपी समुद्र में से प्रभु-नाम रूपी अमृत हमें प्राप्त हो गया। हे प्रभु, तुम हमारे कर्मों का विचार मत करो और अपने नाम का बिरद सम्भालो अर्थात हम पतितों का उद्धार करो। दास नानक तो इसीलिए शरण में पड़ा है कि मेरी विनती सुनकर शायद प्रभु को अच्छी लग जाए और वह मुझ पर कृपा कर दे।। ४ ।। ३ ।। ५ ।। बसंतु हिंडोल महला ४ ।। भ्रमों में भटकता हुआ मन प्रति क्षण इधर-उधर दौड़ता रहता है और तिल मात्र भी अपने मूल स्वरूप में निवास नहीं करता। जब शब्द-गुरु का अंकुश इसके सिर पर रखा जाता है तो फिर यह अपने हृदय रूपी मंदिर में ही आकर स्थित हो जाता है।। १ ।। हे प्रभु, हमें सत्संगति से मिला दो ताकि हम प्रभु का सुमिरन करते रहें। प्रभु में स्वाभाविक सहज समाधि लगाने से हमारे अहंकार का रोग चला गया है और हमने सुख प्राप्त कर लिया है।। १ ।। रहाउ।। हृदय रूपी घर में ही बहुत से रत्न माणिक और लाल भरे पड़े हैं परन्तु यदि मन भटकता रहा तो वे रत्न खोजे नहीं जा सकते। जिस प्रकार धरती में पानी खोज लेने वाला (खोजा) धरती में छुपे हुए कुएँ को क्षण भर में जान लेता है इसी प्रकार सच्चे गुरु के माध्यम से प्रभु-नाम रूपी पदार्थ पाया जाता है।। २ ।। जिन्होंने ऐसा सच्चा गुरु और साधु पुरुष प्राप्त नहीं किया है उन व्यक्तियों के जीवन को बार-बार धिक्कार है। पुण्यों के फल के रूप में यह जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ प्राप्त किया जाता है लेकिन प्रभु के सुमिरन के बिना यह कौड़ियों के भाव ही चला जाता है।। ३ ।। हे प्रभु, तुम हम पर कृपा धारण करो और कृपा करके हमें गुरु से मिला दो। हे नानक, तेरे सेवकों ने तो निर्वाण पद प्राप्त कर लिया हैं।। ४ ।। ४ ।। ६ ।। बसंतु हिंडोल महला ४ ।। मनमुख व्यक्ति का शरीर नाम से विहीन बना रहने के कारण उसके जीवन को सूना ही बनाए रखता है। उसका जन्म मरण और विषयों का दुख सदैव बना ही रहता है। उसने क्षण भर के लिए भी प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया इसलिए यम उसे केशों से पकड़कर ले चलता है।। १ ।। हे प्रभु, विष रूपी हमारी ममता और हमारे अहंकार को काट दो। हे जीव, गुरु-प्रभु की सत्संगति ही प्यारी है और संगत के माध्यम से तू प्रभु के नाम रस का आनन्द ले।। १ ।। रहाउ।। साधुपुरुषों की सत्संगति को दया पूर्वक हमसे मिला दो क्योंकि हम तो साधु रूपी गुरु की शरण में पड़े हैं। हे प्रभु, हम डूबते हुए पत्थरों को बाहर निकाल ले क्योंकि तुम ही दीनदयालु हो और दुखों का भंजन करने वाले हो।। २ ।। हे स्वामी, प्रभु की स्तुति को ही हमारे हृदय में धारण करा दो ताकि सत्संगति से मिलकर हम अपनी बुद्धि को प्रकाशित कर सकें। प्रभु-नाम में ही हमने प्रीति लगाई है और हम बार-बार प्रभु पर ही बलिहारी होते रहें।। ३ ।। हे प्रभु, इस सेवक के मनोरथ पूरे कर दो और इस सेवक के हृदय को प्रकाशित करने के लिए इसे प्रभु का नाम प्रदान करो। हे नानक, जब गुरु ने प्रभु का सुमिरन करने का रहस्य तेरे सेवकों को बता दिया तो उनका मन-तन आनन्दित हो उठा है।। ४ ।। ५ ।। ७ ।। १२ ।। १८।। ७।। ३७।।

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुके ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ आजु हमारै मंगलचार ॥ आजु हमारै महा अनंद ॥ चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥ १ ॥ आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥ गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आजु हमारै बने फाग ॥ प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥ होली कीनी संत सेव ॥ रंगु लागा अति लाल देव ॥ २ ॥ मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥ सूकै नाही छाव धूप ॥ सगली रूती हरिआ होइ ॥ सद बसंत गुर मिले देव ॥ ३ ॥ बिरखु जमिओ है पारजात ॥ फूल लगे फल रतन भांति ॥ त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥ जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥ ४ ॥ १ ॥ बसंतु महला ५ ॥ हटवाणी धन माल हाटु कीतु ॥ जूआरी जूए माहि चीतु ॥ अमली जीवै अमलु खाइ ॥ तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइ ॥ १ ॥ अपनै रंगि सभु को रचै ॥ जितु प्रभि लाइआ तितु तितु लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेघ समै मोर निरतिकार ॥ चंद देखि बिगसहि कउलार ॥ माता बारिक देखि अनंद ॥ तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद ॥ २ ॥ सिंघ रुचै सद भोजनु मास ॥ रणु देखि सूरे चित उलास ॥ किरपन कउ अति धन पिआरु ॥ हरि जन कउ हरि हरि आधारु ॥ ३ ॥ सरब रंग इक रंग माहि ॥ सरब सुखा सुख हरि कै नाइ ॥ तिसहि परापति इहु निधानु ॥ नानक गुरु जिसु करे दानु ॥ ४ ॥ २ ॥ बसंतु महला ५ ॥ तिसु बसंतु जिसु प्रभु क्रिपालु ॥ तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआलु ॥ मंगलु तिस कै जिसु एकु कामु ॥ तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु ॥ १ ॥ ग्रिहि ता के बसंतु गनी ॥ जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीति पारब्रहम मउलि मना ॥ गिआनु कमाईऐ पूछि जनां ॥ सो तपसी जिसु साधसंगु ॥ सद धिआनी जिसु गुरहि रंगु ॥ २ ॥ से निरभउ जिन्ह भउ पइआ ॥ सो सुखीआ जिसु भ्रमु गइआ ॥ सो इकांती जिसु रिदा थाइ ॥ सोई निहचलु साच ठाइ ॥ ३ ॥ एका खोजै एक प्रीति ॥ दरसन परसन हीत चीति ॥ हरि रंग रंगा सहजि माणु ॥ नानक दास तिसु जन

बसंतु महला ५ घरु १ दो पंक्तियों वाले   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मैं प्रणाम करता हुआ गुरु का सुमिरन करता हूँ जिससे आज हमारे यहाँ मंगल पूर्ण अवसर बन गया है। आज हमारे यहां महा आनन्द बन गया है क्योंकि प्रभु के मिलाप से हमारी सभी चिन्ताएं समाप्त हो गई हैं।। १ ।। आज हमारे हृदय रूपी घर में बसंत ही बसंत खिली है क्योंकि हे अनन्त प्रभु, हमने तुम्हारा गुणानुवाद किया है।। १ ।। रहाउ।। आज हमारे यहाँ होली जैसा उत्सव बना हुआ है और प्रभु के सत्संगी सब मिल बैठकर होली खेल रहे हैं। शान्तपुरुषों की सेवा ही वास्तव में होली बनाई गई है क्योंकि उनकी सेवा से प्रेम का अत्यन्त लाल रंग जीभ को लग जाता है।। २ ।। अनुपम बनकर मन-तन खिल उठता है और अब व्यक्ति धूप-छाँव अर्थात सुख-दुख में एक जैसा ही बना रहता है। वह सारी ऋतुओं में हरा-भरा ही बना रहता है और क्योंकि उसे प्रभु-गुरु मिल जाता है इसलिए सदैव बसंत का मौसम ही बना रहता है।। ३ ।। मनोकामनाएँ पूरी करने वाला पारिजात वृक्ष उत्पन्न हो गया है जिसे रत्नों के समान फल-फूल लगे हुए हैं। प्रभु का गुण गाने वाले सभी जीव तृप्त और सन्तुष्ट हो गए हैं और हे नानक, तेरे सेवक तो सदैव हरि-हरि का ही सुमिरन करते रहते हैं।। ४ ।। १ ।। बसंतु महला ५ ।। जिस प्रकार दुकानदार धनमाल की दुकान करता है, जुआरी का चित्त हमेशा जुए में लगा रहता है और नशा करने वाला नशा खाकर ही जीवित बना रहता है उसी प्रकार प्रभु के सेवक प्रभु का सुमिरन करके ही जिन्दा बने रहते हैं।। १ ।। सब कोई अपने अपने रंग में ही रंगा है और जिधर भी प्रभु ने लगाया है जीव वहीं-वहीं लगे हुए हैं।। १ ।। रहाउ।। बादल को देखकर मोर नृत्य करता है और चन्द्रमा को देखकर कमल खिल उठता है। जैसे बच्चे को देखकर माँ आनन्दपूर्ण हो जाती है उसी प्रकार प्रभु का सुमिरन करते हुए ही प्रभु के सेवक जीवित बने रहते हैं।। २ ।। माँस खाकर शेर प्रसन्न बना रहता है और युद्ध को देखकर शूरवीर का हृदय उत्साह से भर जाता है। जिस प्रकार कंजूस व्यक्ति को धन के साथ अत्यन्त प्यार होता है उसी प्रकार प्रभु के सेवक को केवल एक प्रभु का ही आसरा होता है।। ३ ।। उस एक प्रभु के रंग में ही सभी रंग शामिल हैं और सभी सुखों का सुख प्रभु के नाम में ही निहित है। हे नानक, गुरु जिसको यह दान देता है उसी को ही यह खज़ाना प्राप्त होता है।। ४ ।। २ ।। बसंतु महला ५ ।। इसी के लिए बसंतु है जिस पर प्रभु कृपालु होता है। वही बसंत में आनन्दित होता है जिस पर गुरु दयालु होता है। उसी के यहाँ मंगल गीत गूँजते हैं जिसको केवल एक प्रभु का ही आसरा होता है और बसंत उसी के लिए होती है जिसके हृदय में प्रभु-नाम का निवास होता है।। १ ।। हम तो उसके घर में बसंत होना मानते हैं जहां प्रभु की धुन और उसकी कीर्ति का गायन होता रहता है।। १ ।। रहाउ।। हे मन, प्रभु से प्रीति करके तू हरा-भरा हो जा और प्रभु के सेवकों से पूछकर तू ज्ञान की कमाई कर ले। जो साधसंगत में है वही तपस्वी है और जो गुरु से प्रेम बनाए रहता है वह सदैव ही ध्यानी बना रहता है।। २ ।। जिन्हें प्रभु का भय है वे ही निर्भय हैं और जिनका भ्रम समाप्त हो गया है वे ही वास्तव में सुखी हैं। एकान्ती भी वही है जिसने अपने हृदय में अपना स्थान बना लिया है क्योंकि वही अटल और सच्चा स्थान है।। ३ ।। वह एक प्रभु में ही प्रीति लगाकर उस एक को ही खोजता है और उसके हृदय में प्रभु के दर्शन और उसकी अनुभूति की लालसा बनी रहती है। वह सभी रंगों में विशेष प्रभु रंग स्वाभाविक रूप से ही भोगता है और दास नानक तो प्रभु के ऐसे सेवक पर कुर्बान

कुरबाणु ॥ ४ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ५ ॥ जीअ प्राण तुम्ह पिंड दीन्ह ॥ मुगध सुंदर धारि जोति कीन्ह ॥ सभि जाचिक प्रभ तुम्ह दइआल ॥ नामु जपत होवत निहाल ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम कारण करण जोग ॥ हउ पावउ तुम ते सगल थोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु जपत होवत उधार ॥ नामु जपत सुख सहज सार ॥ नामु जपत पति सोभा होइ ॥ नामु जपत बिघनु नाही कोइ ॥ २ ॥ जा कारणि इह दुलभ देह ॥ सो बोलु मेरे प्रभू देहि ॥ साधसंगति महि इहु बिस्रामु ॥ सदा रिदै जपी प्रभ तेरो नामु ॥ ३ ॥ तुझ बिनु दूजा कोइ नाहि ॥ सभु तेरो खेलु तुझ महि समाहि ॥ जिउ भावै तिउ राखि ले ॥ सुखु नानक पूरा गुरु मिले ॥ ४ ॥ ४ ॥ बसंतु महला ५ ॥ प्रभ प्रीतम मेरै संगि राइ ॥ जिसहि देखि हउ जीवा माइ ॥ जा कै सिमरनि दुखु न होइ ॥ करि दइआ मिलावहु तिसहि मोहि ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम प्रान अधार मन ॥ जीउ प्रान सभु तेरो धन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ खोजहि सुरि नर देव ॥ मुनि जन सेख न लहहि भेव ॥ जा की गति मिति कही न जाइ ॥ घटि घटि घटि घटि रहिआ समाइ ॥ २ ॥ जा के भगत आनंद मै ॥ जा के भगत कउ नाही खै ॥ जा के भगत कउ नाही भै ॥ जा के भगत कउ सदा जै ॥ ३ ॥ कउन उपमा तेरी कही जाइ ॥ सुखदाता प्रभु रहिओ समाइ ॥ नानकु जाचै एकु दानु ॥ करि किरपा मोहि देहु नामु ॥ ४ ॥ ५ ॥ बसंतु महला ५ ॥ मिलि पाणी जिउ हरे बूट ॥ साधसंगति तिउ हउमै छूट ॥ जैसी दासे धीर मीर ॥ तैसे उधारन गुरह पीर ॥ १ ॥ तुम दाते प्रभ देनहार ॥ निमख निमख तिसु नमसकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसहि परापति साधसंगु ॥ तिसु जन लागा पारब्रहम रंगु ॥ ते बंधन ते भए मुकति ॥ भगत अराधहि जोग जुगति ॥ २ ॥ नेत्र संतोखे दरसु पेखि ॥ रसना गाए गुण अनेक ॥ त्रिसना बूझी गुर प्रसादि ॥ मनु आघाना हरि रसहि सुआदि ॥ ३ ॥ सेवकु लागो चरण सेव ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥ सगल उधारण तेरो नामु ॥ नानक पाइओ इहु निधानु ॥ ४ ॥ ६ ॥ बसंतु महला ५ ॥ तुम बड दाते दे रहे ॥ जीअ प्राण महि रवि रहे ॥ दीने सगले भोजन खान ॥ मोहि निरगुन इकु गुनु न जान ॥ १ ॥ हउ कछू

जाता है।। ४ ।। ३ ।। बसंतु महला ५ ।। हे प्रभु, तुमने ही यह शरीर, प्राण और जीव मुझे प्रदान किया है और अपनी ज्योति मुझमें स्थित करके मुझ मूर्ख को सुन्दर बना दिया है। हे प्रभु, तुम दयालु हो और हम सब तेरे याचक हैं; तेरे नाम का जाप करते हुए ही हम आनन्दित बने रहते हैं।। १ ।। हे सब कुछ करने कराने योग्य प्रियतम प्रभु, मैं तो सब कुछ तुम्हीं से प्राप्त करता हूँ।। १ ।। रहाउ।। प्रभु-नाम के सुमिरन से जीव का उद्धार होता है और प्रभु-नाम के जाप से ही सहज सुख का रहस्य समझ में आता है। नाम के जाप से ही सम्मान और शोभा मिलती है और प्रभु-नाम के सुमिरन से ही कोई विघ्न सामने नहीं आता।। २ ।। जिस शब्द अभ्यास वाले बोलों के कारण यह दुर्लभ देही प्राप्त होती हैं, हे मेरे प्रभु, वे बोल मुझे प्रदान कर। साधसंगत में मुझे ऐसा ठिकाना दे दे कि हे प्रभु, मैं सदैव हृदय में तेरे नाम का जाप करता रहूँ।।३।। तेरे बिना दूसरा कोई नहीं है और संसार में सब तेरा ही खेल है जो फिर तुझमें ही लीन हो जाता है। तुझे जैसा भी अच्छा लगे, हमें बचा ले और हे नानक, पूर्ण सुख तो गुरु से ही प्राप्त होता है।। ४ ।। ४ ।। बसंतु महला ५ ।। प्रभु प्रियतम मेरे साथ बना रहता है और उसी को देखकर हे मेरी माँ, मैं जीवित बना रहता हूँ। जिसके सुमिरन से दुख नहीं होता, मुझ पर दया करके मुझे उससे मिला दो।। १ ।। हे मेरे प्राणों और मन के आसरा प्रियतम, यह जीव और प्राण सब तेरी ही सम्पत्ति है।। १ ।। रहाउ।। जिसे देवता, मनुष्य आदि सभी खोजते हैं उसके रहस्य को मुनिजन और शेषनाग जैसे भी नहीं जान पाते। जिसकी गति और सीमा का वर्णन नहीं किया जा सकता वह प्रत्येक घट-घट में समाया हुआ है।। २ ।। उसके भक्त आनन्दमय बने रहते हैं और उसके भक्त को कभी भी हानि नहीं होती। उसके भक्त को कोई भय नहीं हैं और उसके भक्त की सदैव जय-जयकार होती रहती है।।३।। तेरी महानता और सुन्दरता ऐसी है कि उसे कहा नहीं जा सकता; सुखों को देने वाला वह प्रभु सबमें समाया हुआ है। नानक तो केवल एक ही दान माँगता है कि हे प्रभु, कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान करो॥४॥५॥बसंतु महला ५ ।। जैसे पानी मिलने से पौधे हरे-भरे हो जाते हैं उसी प्रकार साधुसंगत में अहंकार समाप्त हो जाता है और व्यक्ति प्रसन्न बना रहता है। जैसे सेवक को मालिक का बहुत बड़ा हौसला होता है उसी प्रकार गुरु भी अपने सेवक की पीड़ा से उसे बचा लेता है।। १ ।। हे प्रभु, तुम देने वाले दाता हो और प्रत्येक क्षण मैं तुम्हारे जैसे दाता को प्रणाम करता हूँ।। १ ।। रहाउ।। जिसे साधसंगत प्राप्त हो जाती है उस सेवक को परब्रह्म प्रभु से प्यार हो जाता है। ऐसे सेवक बन्धन मुक्त हो जाते हैं और इस प्रकार के भक्त प्रभु के साथ जुड़ने की युक्ति को अपना कर उसकी आराधना करते हैं।। २ ।। उस प्रभु के दर्शन करके नेत्र सन्तुष्ट बने रहते हैं और जीभ उसके अनेकों गुणों का गायन करती रहती है। गुरु की कृपा से तृष्णा समाप्त हो जाती है और प्रभु रूपी रस का स्वाद लेता हुआ मन अघा जाता है।। ३ ।। सेवक तो चरणों की सेवा करता रहता है और वह सर्वव्यापक आदि पुरुष प्रभु ही अपरम्पर देव है। तेरा नाम ही सबका उद्धार करने वाला है और नानक ने उस भण्डार को प्राप्त कर लिया है।।४॥६॥बसंतु महला ५ ।। तुम बड़े दाता बनकर सबको दे रहे हो और सबके जीव और प्राणों में रमण कर रहे हो। तुम्हीं ने सभी प्रकार के भोजन खाने के लिए दिए हैं फिर भी मैं गुण विहीन तेरे एक भी गुण को नहीं जानता अर्थात तेरा धन्यवाद नहीं करता।। १ ।। मैं तेरे महत्व को कुछ भी

न जानउ तेरी सार ॥ तू करि गति मेरी प्रभ दइआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप न ताप न करम कीति ॥ आवै नाही कछू रीति ॥ मन महि राखउ आस एक ॥ नाम तेरे की तरउ टेक ॥ २ ॥ सरब कला प्रभ तुम्ह प्रबीन ॥ अंतु न पावहि जलहि मीन ॥ अगम अगम ऊचह ते ऊच ॥ हम थोरे तुम बहुत मूच ॥ ३ ॥ जिन तू धिआइआ से गनी ॥ जिन तू पाइआ से धनी ॥ जिनि तू सेविआ सुखी से ॥ संत सरणि नानक परे ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ५ ॥ तिसु तू सेवि जिनि तू कीआ ॥ तिसु अराधि जिनि जीउ दीआ ॥ तिस का चाकरु होहि फिरि डानु न लागै ॥ तिस की करि पोतदारी फिरि दूखु न लागै ॥ १ ॥ एवड भाग होहि जिसु प्राणी ॥ सो पाए इहु पदु निरबाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजी सेवा जीवनु बिरथा ॥ कछू न होई है पूरन अरथा ॥ माणस सेवा खरी दुहेली ॥ साध की सेवा सदा सुहेली ॥ २ ॥ जे लोड़हि सदा सुखु भाई ॥ साधू संगति गुरहि बताई ॥ ऊहा जपीऐ केवल नाम ॥ साधू संगति पारगराम ॥ ३ ॥ सगल तत महि ततु गिआनु ॥ सरब धिआन महि एकु धिआनु ॥ हरि कीरतन महि ऊतम धुना ॥ नानक गुर मिलि गाइ गुना ॥ ४ ॥ ८ ॥ बसंतु महला ५ ॥ जिसु बोलत मुखु पवितु होइ ॥ जिसु सिमरत निरमल है सोइ ॥ जिसु अराधे जमु किछु न कहै ॥ जिस की सेवा सभु किछु लहै ॥ १ ॥ राम राम बोलि राम राम ॥ तिआगहु मन के सगल काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के धारे धरणि अकासु ॥ घटि घटि जिस का है प्रगासु ॥ जिसु सिमरत पतित पुनीत होइ ॥ अंत कालि फिरि फिरि न रोइ ॥ २ ॥ सगल धरम महि ऊतम धरम ॥ करम करतूति कै ऊपरि करम ॥ जिस कउ चाहहि सुरि नर देव ॥ संत सभा की लगहु सेव ॥ ३ ॥ आदि पुरखि जिसु कीआ दानु ॥ तिस कउ मिलिआ हरि निधानु ॥ तिस की गति मिति कही न जाइ ॥ नानक जन हरि हरि धिआइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ बसंतु महला ५ ॥ मन तन भीतरि लागी पिआस ॥ गुरि दइआलि पूरी मेरी आस ॥ किलविख काटे साधसंगि ॥ नामु जपिओ हरि नाम रंगि ॥ १ ॥ गुर परसादि बसंतु बना ॥ चरन कमल हिरदै उरि धारे सदा सदा हरि जसु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥

नहीं जानता और हे प्रभु, तू दयालु बनकर मुझे मुक्त कर दे।। १ ।। रहाउ।। मैंने जाप, तप आदि कोई भी कर्म नहीं किया है और मुझे कोई भी कर्मकाण्ड करना भी नहीं आता है। मैं तो केवल तुझ एक की ही मन में आशा लगाए रहता हूँ और तेरे नाम के आसरे से ही मैं पार उतरूंगा।। २ ।। हे प्रभु, तुम सभी कलाओं में प्रवीण हो और जैसे मछलियां जल का ओर-छोर नहीं पा सकती वही तुम्हारे संदर्भ में हमारी स्थिति है। तुम अगम्य और ऊँचे से भी ऊँचे हो; हम तो बहुत छोटे से हैं परन्तु तुम बहुत बड़े हो।। ३ ।। जिन्होंने तेरा सुमिरन किया है उनकी गिनती ही बड़े लोगों में होती है और जिसने तुझे प्राप्त कर लिया है, वे ही धनवान हैं। जिन्होंने तेरा सुमिरन किया है वे ही सुखी हैं और हे नानक, सन्तजन तो तेरी शरण में पड़े हुए हैं।। ४ ।। ७ ।। बसंतु महला ५ ।। हे जीव, तू उसका सुमिरन कर जिसने तुझे बनाया है, उसी की आराधना कर जिसने तुझे प्राण दिए हैं। यदि तू उसका सेवक बन जाए तो फिर तुझे कोई दण्ड नहीं देना पड़ेगा। यदि तू उसकी दी हुई चीजों का अपने आपको मात्र खजांची ही समझे तो फिर तुझे कोई भी दुख नहीं लगेगा।। १ ।। जिस प्राणी का इस प्रकार का भाग्य हो जाए वही निर्वाण पद प्राप्त करता है।। १ ।। रहाउ।। किसी अन्य की सेवा करना तो जीवन को व्यर्थ बनाना ही है। उससे कोई भी काम पूरा नहीं होगा। व्यक्ति की सेवा बहुत ही दुखदायी सिद्ध होती है परन्तु साधुपुरुष की सेवा सदैव सुख प्रदान करने वाली होती है।। २ ।। हे भाई, यदि सदैव सुख ही चाहते हो तो उसके लिए गुरु ने साधसंगत का ठिकाना बताया है। वहाँ केवल प्रभु-नाम का ही जाप होता है और साधुसंगत में ही पारगमन अर्थात मुक्त हुआ जाता है।। ३ ।। सभी प्रकार के सार तत्वों में से ज्ञान तत्व ही श्रेष्ठ है। सब प्रकार के ध्यान में से केवल एक प्रभु का ध्यान ही श्रेष्ठ है। प्रभु के कीर्तन में ही उत्तम धुन विद्यमान रहती है और हे नानक, तू गुरु से मिलकर उसके गुण गाता रह।। ४ ।। ८ ।। बसंतु महला ५ ।। जिसके बोलने से मन पवित्र हो जाता है, जिसके सुमिरन से शोभा निर्मल हो जाती है, जिसकी आराधना से यम कुछ नहीं कहता और जिसकी सेवा में सब कुछ प्राप्त हो जाता है।। १ ।। हे जीव, तू ऐसे प्रभु ने नाम का बार-बार उच्चारण करता रह और मन की समस्त कामनाओं को त्याग दे।। १ ।। रहाउ।। उस प्रभु ने ही यह धरती और आकाश धारण किए हुए हैं और घट-घट में उसी का प्रकाश है। उसका सुमिरन करने से पतित जीव भी पवित्र हो जाते हैं और अन्तकाल में फिर बार-बार रोना नहीं पड़ता।। २ ।। प्रभु का सुमिरन ही सभी धर्मों में श्रेष्ठ धर्म है और सभी प्रकार के कर्मों से श्रेष्ठ कर्म उसकी सेवा ही है। जिसे देवताओं जैसे मनुष्य और देवतागण भी चाहते रहते हैं उस सन्त सभा की सेवा में लगे रहो।।३।। जिसे उस आदि पुरुष प्रभु ने दान दे दिया है उसे तो प्रभु-नाम का खजाना ही मिल गया है। उसकी गति और सीमा के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। हे नानक, प्रभु के सेवक तो प्रभु का ही सुमिरन करते रहते हैं।। ४ ।। ६ ।। बसंतु महला ५ ।। मेरे मन-तन में उसकी प्यास लगी हुई है और जब गुरु दयालु हो गया तो मेरी आशाएँ पूरी हो गई हैं। साधुसंगत ने मेरे पापों को काट दिया है और मैंने प्रभु के नाम में रंगकर प्रभु के नाम का सुमिरन किया है।। १ ।। गुरु की कृपा से बसंत मेरे चारों ओर बना है। इस ऋतु में मैंने प्रभु के चरण कमलों को हृदय में धारण किया है और सदैव प्रभु यश को सुना है।। १ ।। रहाउ।।

समरथ सुआमी कारण करण ॥ मोहि अनाथ प्रभ तेरी सरण ॥ जीअ जंत तेरे आधारि ॥ करि किरपा प्रभ लेहि निसतारि ॥ २ ॥ भव खंडन दुख नास देव ॥ सुरि नर मुनि जन ता की सेव ॥ धरणि अकासु जा की कला माहि ॥ तेरा दीआ सभि जंत खाहि ॥ ३ ॥ अंतरजामी प्रभ दइआल ॥ अपणे दास कउ नदरि निहालि ॥ करि किरपा मोहि देहु दानु ॥ जपि जीवै नानकु तेरो नामु ॥ ४ ॥ १० ॥ बसंतु महला ५ ॥ राम रंगि सभ गए पाप ॥ राम जपत कछु नही संताप ॥ गोबिंद जपत सभि मिटे अंधेर ॥ हरि सिमरत कछु नाहि फेर ॥ १ ॥ बसंतु हमारै राम रंगु ॥ संत जना सिउ सदा संगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जनी कीआ उपदेसु ॥ जह गोबिंद भगतु सो धंनि देसु ॥ हरि भगतिहीन उदिआन थानु ॥ गुर प्रसादि घटि घटि पछानु ॥ २ ॥ हरि कीरतन रस भोग रंगु ॥ मन पाप करत तू सदा संगु ॥ निकटि पेखु प्रभु करणहार ॥ ईत ऊत प्रभ कारज सार ॥ ३ ॥ चरन कमल सिउ लगो धिआनु ॥ करि किरपा प्रभि कीनो दानु ॥ तेरिआ संत जना की बाछउ धूरि ॥ जपि नानक सुआमी सद हजूरि ॥ ४ ॥ ११ ॥ बसंतु महला ५ ॥ सचु परमेसरु नित नवा ॥ गुर किरपा ते नित चवा ॥ प्रभ रखवाले माई बाप ॥ जा कै सिमरणि नही संताप ॥ १ ॥ खसमु धिआई इक मनि इक भाइ ॥ गुर पूरे की सदा सरणाई साचै साहिबि रखिआ कंठि लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणे जन प्रभि आपि रखे ॥ दुसट दूत सभि भ्रमि थके ॥ बिनु गुर साचे नही जाइ ॥ दुखु देस दिसंतरि रहे धाइ ॥ २ ॥ किरतु ओन्हा का मिटसि नाहि ॥ ओइ अपणा बीजिआ आपि खाहि ॥ जन का रखवाला आपि सोइ ॥ जन कउ पहुचि न सकसि कोइ ॥ ३ ॥ प्रभि दास रखे करि जतनु आपि ॥ अखंड पूरन जा को प्रतापु ॥ गुण गोबिंद नित रसन गाइ ॥ नानकु जीवै हरि चरण धिआइ ॥ ४ ॥ १२ ॥ बसंतु महला ५ ॥ गुर चरण सरेवत दुखु गइआ ॥ पारब्रहमि प्रभि करी मइआ ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ जपि जीवै नानकु राम नाम ॥ १ ॥ सा रुति सुहावी जितु हरि चिति आवै ॥ बिनु सतिगुर दीसै बिललांती साकतु फिरि फिरि आवै

वह समर्थ स्वामी प्रभु ही सब कुछ का कारण और सब कुछ करने वाला है। हे प्रभु, मुझ अनाथ को तो तेरी शरण का ही आसरा है। जीव जन्तुओं को तेरा ही आधार है और हे प्रभु, कृपा करके उनको पार उतार ले।। २ ।। तू संसार के बन्धनों को तोड़ने वाला और दुखों का नाश करने वाला प्रभु है। देवता, मनुष्य, मुनिजन सब उसी की सेवा में लगे रहते हैं। धरती और आकाश सब तेरी शक्ति के अन्तर्गत ही हैं और हे प्रभु, तेरा दिया हुआ ही सभी जीव जन्तु खाते हैं।। ३ ।। हे अन्तर्यामी दयालु प्रभु, अपने दास को अपनी कृपा दृष्टि से आनन्दित कर दो। कृपा करके मुझे यह दान दो कि नानक तेरे नाम का जाप करता हुआ ही जीवित बना रहे।। ४ ।। १० ।। बसंतु महला ५ ।। प्रभु में प्रेम लगाने से सभी पाप भाग खड़े होते हैं और प्रभु के जाप से कुछ भी दुख नहीं बचता। प्रभु के सुमिरन से सभी अंधकार मिट जाते हैं और प्रभु का सुमिरन करते हुए फिर आवागमन नहीं होता।। १ ।। प्रभु के रंग में रंगा रहना ही हमारे लिए बसंत है और उसके प्रेम के कारण ही सन्तजनों के साथ हमारी संगत सदैव बनी रहती है।। १ ।। रहाउ।। सन्तजनों ने तो हमें यही उपदेश दिया है कि जहाँ प्रभु के भक्त हैं वही स्थान धन्य है। प्रभु की भक्ति से विहीन रहने वालों को निर्जन और उजाड़ स्थान प्राप्त होता है और गुरु की कृपा से ही घर-घर में उस प्रभु की पहचान होती है।। २ ।। प्रभु का कीर्तन ही तेरे लिए रस रंग को भोगने जैसा हो और हे जीव, पाप करते हुए तू सदैव झिझकता रहे। उस प्रभु को अपने पास ही देख क्योंकि यहां और वहाँ वह प्रभु ही हमारा काम करने वाला है।। ३ ।। प्रभु ने कृपा करके मुझे यह दान दिया है कि उसके चरण कमलों में ही मेरा ध्यान लग गया है। तेरे सन्तजनों की मैं चरण धूलि चाहता हूँ और हे नानक, उस प्रभु का सुमिरन करके ही उसे सदैव प्रत्यक्ष अनुभव किया जाता है।। ४ ।। ११ ।। बसंतु महला ५ ।। सत्य परमेश्वर सदैव नवीन बना रहता है और गुरु की कृपा से मैं उसका सदैव सुमिरन करता हूँ। प्रभु ही हमारा रखवाला और माई-बाप है तथा उसके सुमिरन से कोई भी दुख नहीं रहता।। १ ।। मैं उस प्रभु को एक मन और एक निरन्तर लौ के साथ उसका सुमिरन करूं। मैं उस पूर्ण गुरु की शरण में सदैव पड़ा रहता हूँ और मुझे उस सच्चे साहिब ने अपने गले से लगाकर रखा है।। १ ।। रहाउ।। अपने सेवकों की स्वयं प्रभु ने रक्षा की है और दुष्ट दूत सभी भटक-भटक कर थक गए हैं। सच्चे गुरु ने बिना कही भी ठिकाना नहीं मिला और देश-देशान्तरों में भटकते हुए जीव दुख उठाते रहे हैं।। २ ।। उनके कर्मों का फल मिट नहीं पाता और वे अपना बोया हुआ आप ही खाते हैं। सेवक का तो प्रभु स्वयं रखवाला है और उस सेवक तक तो कोई भी नहीं पहुँच पाता।। ३ ।। दासों को प्रभु ने स्वयं प्रयत्नपूर्वक बचा लिया है; और उस प्रभु का प्रताप अखण्ड एवं पूर्ण है। प्रभु के गुणों को सदैव अपनी जीभ से गाता हुआ नानक उस प्रभु के चरणों की आराधना करता हुआ जीवित बना हुआ है।। ४ ।। १२ ।। बसंतु महला ५ ।। गुरु के चरणों का सुमिरन करते हुए हमारा दुख चला गया है और परब्रह्म प्रभु ने हम पर कृपा कर दी है। सभी मनोरथों और कामनाओं को पूरा करने वाला प्रभु-नाम है जिसका जाप करते हुए नानक जीवित बना रहता है।। १ ।। वही मौसम सुहावना है जिसमें प्रभु हृदय में याद आता रहे। सच्चे गुरु के बिना यह सारी दुनिया रोती हुई दिखाई देती है और प्रभु से टूटा हुआ व्यक्ति

जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ से धनवंत जिन हरि प्रभु रासि ॥ काम क्रोध गुर सबदि नासि ॥ भै बिनसे निरभै पदु पाइआ ॥ गुर मिलि नानकि खसमु धिआइआ ॥ २ ॥ साधसंगति प्रभि कीओ निवास ॥ हरि जपि जपि होई पूरन आस ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ ॥ गुर मिलि नानकि हरि हरि कहिआ ॥ ३ ॥ असट सिधि नव निधि एह ॥ करमि परापति जिसु नामु देह ॥ प्रभ जपि जपि जीवहि तेरे दास ॥ गुर मिलि नानक कमल प्रगास ॥ ४ ॥ १३ ॥

बसंतु महला ५ घरु १ इक तुके १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सगल इछा जपि पुंनीआ ॥ प्रभि मेले चिरी विछुंनिआ ॥ १ ॥ तुम रवहु गोबिंदै रवण जोगु ॥ जितु रविऐ सुख सहज भोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ ॥ अपणा दासु आपि सम्हालिआ ॥ २ ॥ सेज सुहावी रसि बनी ॥ आइ मिले प्रभ सुख धनी ॥ ३ ॥ मेरा गुणु अवगणु न बीचारिआ ॥ प्रभ नानक चरण पूजारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥ बसंतु महला ५ ॥ किलबिख बिनसे गाइ गुना ॥ अनदिनु उपजी सहज धुना ॥ १ ॥ मनु मउलिओ हरि चरन संगि ॥ करि किरपा साधू जन भेटे नित रातौ हरि नाम रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रगटे गोपाल ॥ लड़ि लाइ उधारे दीन दइआल ॥ २ ॥ इहु मनु होआ साध धूरि ॥ नित देखै सुआमी हजूरि ॥ ३ ॥ काम क्रोध त्रिसना गई ॥ नानक प्रभ किरपा भई ॥ ४ ॥ २ ॥ १५ ॥ बसंतु महला ५ ॥ रोग मिटाए प्रभू आपि ॥ बालक राखे अपने कर थापि ॥ १ ॥ सांति सहज ग्रिहि सद बसंतु ॥ गुर पूरे की सरणी आए कलिआण रूप जपि हरि हरि मंतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोग संताप कटे प्रभि आपि ॥ गुर अपुने कउ नित नित जापि ॥ २ ॥ जो जनु तेरा जपे नाउ ॥ सभि फल पाए निहचल गुण गाउ ॥ ३ ॥ नानक भगता भली रीति ॥ सुखदाता जपदे नीत नीति ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६ ॥ बसंतु महला ५ ॥ हुकमु करि कीन्हे निहाल ॥ अपने सेवक कउ भइआ दइआलु ॥ १ ॥ गुरि पूरै सभु पूरा कीआ ॥ अंम्रित नामु रिद महि दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करमु धरमु मेरा

बार-बार आवागमन में पड़ा रहता है।। १ ।। रहाउ।। जिनके पास प्रभु रूपी रासपूंजी है वे ही धनवान हैं और उन्होंने ही शब्द-गुरु के माध्यम से काम और क्रोध को नष्ट कर दिया है। उनका भय समाप्त हो गया है तथा उन्होंने निर्भय पद प्राप्त कर लिया है। नानक ने तो गुरु से मिलकर अपने मालिक का सुमिरन किया है।। २ ।। प्रभु ने मेरा निवास साधसंगत में बना दिया है जहां प्रभु का सुमिरन करते हुए मैंने अपनी आशा पूरी कर ली है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष में वह प्रभु ही व्याप्त है और गुरु से मिलकर नानक ने तो बार-बार प्रभु का ही उच्चारण किया है।। ३ ।। कृपा द्वारा प्राप्ति के माध्यम से जिसे प्रभु-नाम प्रदान करता है उसके लिए यही आठों सिद्धियाँ और नौ निधियाँ है। हे प्रभु, तेरे दास तो तेरा सुमिरन करते हुए जीवित बने रहते हैं और हे नानक, गुरु से मिलकर हृदय रूपी कमल खिल उठता है।। ४ ।। १३ ।।

बसंतु महला ५ घरु १ एक पंक्ति वाले   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु का जाप करके सभी इच्छाएँ पूरी हो गई और प्रभु ने लम्बे समय से बिछुड़े हुओं को अपने साथ मिला लिया है।। १ ।। तुम प्रभु का सुमिरन करो जो वास्तव में सुमिरन के योग्य है और जिसके सुमिरन से पूर्ण सुख का आनन्द लिया जाता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु ने कृपा करके अपनी दृष्टि डालकर मुझे निहाल कर दिया और अपने सेवक को स्वयं ही सम्भाल लिया है।। २ ।। हृदय रूपी सेज सुहावनी बन गई है क्योंकि सुख देने वाला मेरा मालिक प्रभु मुझे आ मिला है।। ३ ।। उसने मेरे गुण-अवगुण पर ध्यान नहीं दिया और हे नानक, हमने प्रभु के चरणों की पूजा की है।। ४ ।। १ ।। १४ ।। बसंतु महला ५ ।। उसका गुण गाने से हमारे पाप नष्ट हो गए हैं और अब प्रतिदिन सहज सुख की धुन उत्पन्न होने लगी है।। १ ।। प्रभु चरणों की संगत में मेरा मन खिल उठा है। प्रभु ने कृपा की और हमारा मिलाप साधु पुरुषों से हो गया जिससे हम प्रभु-नाम के रंग में सदा के लिए लीन हो गए हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु कृपा करके प्रकट हो गया है और उस दीनदयालु ने हमें अपने साथ लगाकर हमारा उद्धार कर दिया है।। २ ।। मेरा यह मन साधु पुरुषों की चरणधूलि बनकर सदैव प्रभु को प्रत्यक्ष देखता रहता है।। ३ ।। हे नानक, जब प्रभु की कृपा हो गई तो हमारा काम, क्रोध और तृष्णा आदि सभी समाप्त हो गए हैं।। ४ ।। २ ।। १५ ।। बसंतु महला ५ ।। अपने हाथों का सहारा देकर प्रभु ने हम बच्चों को बचा लिया है और स्वयं हमारे रोग और शोक को मिटा दिया है।। १।। अब हमारे घर में शान्ति स्वाभाविकता और सदैव बसंत बना रहता है। हम पूर्ण गुरु की शरण में आ गए हैं और कल्याण रूप प्रभु के उपदेश की सदैव याद बनाए रहते हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु ने ही हमारे शोक और संताप काट दिए हैं और हम सदैव अपने गुरु का सुमिरन करते रहते हैं।। २ ।। हे प्रभु, जो तेरे नाम का सुमिरन करता है वह तेरे अटल गुणों को गाता हुआ सब प्रकार के फलों को प्राप्त कर लेता है।। ३ ।। हे नानक, भक्तों की ये भली परम्परा है कि वे सदैव सुखदाता प्रभु का जाप करते रहते हैं।। ४ ।। ३ ।। १६ ।। बसंतु महला ५ ।। उसने अपना हुकुम करके हमें निहाल कर दिया है और वह अपने सेवक कर दयालु हो गया है।। १ ।। पूर्ण गुरु ने सब कुछ पूरा ही किया है और अमृत नाम को हमारे हृदय में धारण करा दिया है।। १ ।। रहाउ।। मेरे धर्म-कर्म का

कछु न बीचारिओ ॥ बाह पकरि भवजलु निसतारिओ ॥ २ ॥ प्रभि काटि मैलु निरमल करे ॥ गुर पूरे की सरणी परे ॥ ३ ॥ आपि करहि आपि करणैहारे ॥ करि किरपा नानक उधारे ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७ ॥

बसंतु महला ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

देखु फूल फूल फूले ॥ अहं तिआगि तिआगे ॥ चरन कमल पागे ॥ तुम मिलहु प्रभ सभागे ॥ हरि चेति मन मेरे ॥ रहाउ ॥ सघन बासु कूले ॥ इकि रहे सूकि कठूले ॥ बसंत रुति आई ॥ परफूलता रहे ॥ १ ॥ अब कलू आइओ रे ॥ इकु नामु बोवहु बोवहु ॥ अन रूति नाही नाही ॥ मतु भरमि भूलहु भूलहु ॥ गुर मिले हरि पाए ॥ जिसु मसतकि है लेखा ॥ मन रुति नाम रे ॥ गुन कहे नानक हरि हरे हरि हरे ॥ २ ॥ १८ ॥

बसंतु महला ५ घरु २ हिंडोल १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥ १ ॥ इन्ह बिधि पासा ढालहु बीर ॥ गुरमुखि नामु जपहु दिनु राती अंत कालि नह लागै पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम धरम तुम्ह चउपड़ि साजहु सतु करहु तुम्ह सारी ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पिआरी ॥ २ ॥ उठि इसनानु करहु परभाते सोए हरि आराधे ॥ बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ॥ ३ ॥ हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचनु रचाइआ ॥ जन नानक गुरमुखि जो नरु खेलै सो जिणि बाजी घरि आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥ बसंतु महला ५ हिंडोल ॥ तेरी कुदरति तूहै जाणहि अउरु न दूजा जाणै ॥ जिस नो क्रिपा करहि मेरे पिआरे सोई तुझै पछाणै ॥ १ ॥ तेरिआ भगता कउ बलिहारा ॥ थानु सुहावा सदा प्रभ तेरा रंग तेरे आपारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी सेवा तुझ ते होवै अउरु न दूजा करता ॥ भगतु तेरा सोई तुधु भावै जिस नो

उसने कुछ भी विचार नहीं किया और बाँह से पकड़कर हमें संसार सागर से पार उतार दिया है।। २ ।। जब हम पूर्ण गुरु की शरण में आ गए तो प्रभु ने हमारी मैल काटकर हमें निर्मल बना दिया है।। ३ ।। वह स्वयं ही कर्ता है क्योंकि वह स्वयं ही सब कुछ करने योग्य है। नानक पर कृपा करके उसने उसका उद्धार कर दिया है।। ४ ।। ४ ।। १७ ।।

बसंतु महला ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

अहंकार को पूरी तरह से त्यागकर हे जीव, तू देख कि चारों ओर फूलों पर बहार ही बहार है। तुम्हारे चरणों के साथ हम लिपटे हुए हैं और हे भाग्य विधाता प्रभु, तुम हमें मिल जाओ। हे मेरे मन, तू प्रभु का सुमिरन करता रह।। रहाउ।। कोमल वृक्षों में गहरी सुगन्ध है और कई ऐसे भी हैं जो सूखकर कठोर बने हुए हैं। नाम बोकर खिलने वाली बसंत ऋतु आ गई है जिससे आत्मा रूपी बन फला-फूला रहता है।। १ ।। हे भाई, अब कलियुग आ गया हैं इसलिए एक प्रभु के नाम का ही बीज बोओ। अन्य दूसरा कोई भी मौसम ठीक नहीं है। तुम भ्रम में मत भूलो और यह जान लो जिसके मस्तक पर लेख लिखे हुए हैं वही गुरु से मिलकर प्रभु को प्राप्त करता है। हे मन, यह प्रभु के नाम का सुमिरन करने की ऋतु है और नानक तो उस प्रभु के गुणों का गायन करता रहता है।। २ ।। १८ ।।

बसंतु महला ५ घरु २ हिंडोल १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे भाई, सब इकट्ठे होकर आपस में मिलो और प्रभु में लौ लगाकर दुविधा को दूर कर लो। प्रभु-नाम का सुमिरन करने वालों के जोड़ीदार बनो और गुरमुख बनकर जीवन रूपी चौपड़ की बिसात को बिछा लो।। १ ।। हे मेरे भाई, इस प्रकार संसार रूपी चौपड़ की बाजी को खेलो और अपने अच्छे कर्मों का पासा फेंकों। गुरमुख बनकर दिन रात प्रभु के नाम का सुमिरन करो जिससे अंतिम समय में तुम्हें पीड़ा नहीं झेलनी पड़ेगी।। १ ।। रहाउ।। तुम धर्म वाले कर्मों की चौपड़ बनाओ और दया त्याग की गोटियाँ बना लो। जीवन प्रभु का ऐसा प्यारा खेल है कि इसमें तुम काम, क्रोध, लोभ, मोह को जीत लो।। २ ।। सुबह उठकर स्नान करके उस प्रभु की आराधना करो क्योंकि संसार रूपी खेल में कई विकट अवसरों पर वह सच्चा गुरु पार उतार देता है और व्यक्ति स्वाभाविक रूप से सुखी बना हुआ वापस अपने घर जाता है।। ३ ।। प्रभु स्वयं ही खेलता है स्वयं ही देखता है और उसने स्वयं ही यह रचना बनाई है। हे नानक, जो प्रभु का सेवक गुरमुख बनकर इस खेल को खेलता है वह जीवन की बाजी जीतकर वापस अपने घर पहुँच जाता है।। ४ ।। १ ।। १९ ।। बसंतु महला ५ हिंडोल।। तेरी शक्ति और कला को हे प्रभु, तू ही जानता है, दूसरा कोई उसे नहीं जानता। हे मेरे प्यारे, जिस पर तू कृपा करता है वही तुझे पहचानता है।। १ ।। तेरे भक्तों पर मैं बलिहारी जाता हूँ; हे प्रभु, तेरा स्थान सदैव सुहावना बना रहता है और तेरे कौतुक अपरम्पार है।। १ ।। रहाउ।। तेरी सेवा तो तुझ से ही होती है, दूसरा कोई भी तेरी सेवा नहीं कर सकता। तेरा वही भक्त तुझे अच्छा लगता है

तू रंगु धरता ॥ २ ॥ तू वड दाता तू वड दाना अउरु नही को दूजा ॥ तू समरथु सुआमी मेरा हउ किआ जाणा तेरी पूजा ॥ ३ ॥ तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे बिखमु तेरा है भाणा ॥ कहु नानक ढहि पइआ दुआरै रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥ बसंतु हिंडोल महला ५ ॥ मूलु न बूझै आपु न सूझै भरमि बिआपी अहं मनी ॥ १ ॥ पिता पारब्रहम प्रभ धनी ॥ मोहि निसतारहु निरगुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओपति परलउ प्रभ ते होवै इह बीचारी हरि जनी ॥ २ ॥ नाम प्रभू के जो रंगि राते कलि महि सुखीए से गनी ॥ ३ ॥ अवरु उपाउ न कोई सूझै नानक तरीऐ गुर बचनी ॥ ४ ॥ ३ ॥ २१ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥ साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥ या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥ संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥ १ ॥ उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥ जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥ २ ॥ १ ॥ बसंतु महला ९ ॥ पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥ मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी जंगम अरु संनिआस ॥ सभ ही परि डारी इह फास ॥ १ ॥ जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥ ते भव सागर उतरे पारि ॥ २ ॥ जन नानक हरि की सरनाइ ॥ दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥ ३ ॥ २ ॥ बसंतु महला ९ ॥ माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥ मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥ लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥ १ ॥ जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥ त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥ २ ॥ जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि की संपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥ ३ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ९ ॥ मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥ तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु धूए का पहार ॥

जिसको तू प्रेम करता है।। २ ।। तू ही बड़ा दाता और बड़ा सयाना है; अन्य कोई भी दूसरा तेरे जैसा नहीं है। तू ही मेरा समर्थ स्वामी है और मैं भला क्या जान सकता हूँ कि तेरी वन्दना कैसे होती है।। ३ ।। हे मेरे प्यारे, तेरा ठिकाना हमारी इन्द्रियों की पहुँच से परे हैं और तेरा हुकुम भी बहुत विषम है। नानक कहता है कि हे प्रभु, मैं तुम्हारे द्वार पर आ गया हूँ और मुझ अनजान मूर्ख को बचा लो।। ४ ।। २ ।। २० ।। बसंत हिंडोल महला ५ ।। भ्रम में होने के कारण अहंकार का ऐसा प्रभाव बन गया है कि व्यक्ति अपने मूल स्वरूप प्रभु को नहीं समझता और अपने आपको भी नहीं जानता है।। १ ।। जो अपने आपको समझ लेता है वह तो यही कहता है कि वह परब्रह्म प्रभु ही हमारा मालिक और पिता है तथा मुझ गुण विहीन को हे प्रभु, पार उतार लो।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के सेवक यही सोचते और मानते हैं कि उत्पत्ति और प्रलय सब करने वाला वह प्रभु ही है।। २ ।। कलियुग में जो प्रभु-नाम के रंग में रंगे रहते हैं उन्हें ही सुखी लोगों में गिना जाता है।। ३ ।। अन्य उपाय तो कोई नहीं दिखता और हे नानक, गुरु के उपदेश के माध्यम से ही पार उतरा जा सकता है।। ४ ।। ३ ।। २१ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। राग़ु बसंतु हिंडोल महला ६।।

हे साधु पुरुषो, इस तन को तो नष्ट होने वाला ही झूठा पदार्थ समझो परन्तु इसके भीतर जो प्रभु बस रहा है उस सच्चे प्रभु को ही पहचानो।। १ ।। रहाउ।। यह संसार तो स्वप्न में मिली हुई सम्पत्ति के समान है; तुम ऐसी सम्पत्ति को देखकर क्यों अंहकार से भरे हुए हो। इसमें से कुछ भी तुम्हारे साथ नहीं चलेगा फिर तुम इस सबसे क्यों लिपटे हो।। १ ।। प्रशंसा और निन्दा दोनों को त्यागकर प्रभु के गुणानुवाद को तुम हृदय में धारण करो। हे दास नानक, वह एक सर्वव्यापक प्रभु ही सबमें पूर्ण रूप से व्याप्त है।। २ ।। १ ।। बसंतु महला ६ ।। पापी व्यक्ति के हृदय में काम बसा रहता है और इसलिए यह चंचल मन उसकी पकड़ में नहीं आता।। १ ।। रहाउ।। जोगी, जंगम और संन्यासी आदि सब पर ही यह काम ने अपना फन्दा डाल रखा है।। १ ।। जिस जिसने भी प्रभु-नाम को हृदय में संभाला है वे सभी संसार-सागर से पार उतर गए हैं।। २ ।। हे नानक, प्रभु के सेवक तो प्रभु की शरण में ही पड़े रहते हैं और वे तुम्हारे गुण गा रहे हैं इसलिए उन्हें अपने नाम का दान दे दो।।३ ।।२ ।।बसंतु महला ६ ।। हे माँ, मैंने प्रभु-नाम रूपी धन प्राप्त कर लिया है; अब मेरा मन दौड़ने से बच गया है और विश्राम अवस्था में आकर स्थिर हो गया है।। १ ।। रहाउ।। तन से माया, ममता भाग खड़ी हुई है और पवित्र ज्ञान उत्पन्न हो गया है। जबसे मैंने प्रभु की भक्ति को पकड़ा है तब से लोभ और मोह मेरा स्पर्श भी नहीं कर पाते।। १ ।। जब प्रभु का नाम रूपी रत्न मैंने पा लिया तो जन्मों-जन्मान्तरों का मेरा भय नष्ट हो गया है। अब मेरे मन से सारी तृष्णा समाप्त हो गई है और मैं अब अपनी आत्मा के सुख में ही लीन हो गया हूँ।। २ ।। कृपा का खजाना वह प्रभु जिस पर दयालु हो जाए वही प्रभु के गुण गाता है। नानक का कथन है कि इस प्रकार की सम्पत्ति कोई गुरमुख ही प्राप्त करता है।। ३ ।। ३ ।। बसंतु महला ६ ।। हे मन, तूने राम नाम को क्यों भुला दिया है। जब यह शरीर नष्ट हो जाता है तो हमारा वास्ता यम से पड़ता है।। १ ।। रहाउ।। यह संसार तो धुएँ का पहाड़ है,

ते साचा मानिआ किह बिचारि ॥ १ ॥ धनु दारा संपति ग्रेह ॥ कछु संगि न चालै समझ लेह ॥ २ ॥ इक भगति नाराइन होइ संगि ॥ कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥ ३ ॥ ४ ॥ बसंतु महला ९ ॥ कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥ कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सम सुपनै के इहु जगु जानु ॥ बिनसै छिन मै साची मानु ॥ १ ॥ संगि तेरै हरि बसत नीत ॥ निस बासुर भजु ताहि मीत ॥ २ ॥ बार अंत की होइ सहाइ ॥ कहु नानक गुन ता के गाइ ॥ ३ ॥ ५ ॥

बसंतु महला १ असटपदीआ घरु १ दुतुकीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जगु कऊआ नामु नही चीति ॥ नामु बिसारि गिरै देखु भीति ॥ मनूआ डोलै चीति अनीति ॥ जग सिउ तूटी झूठ परीति ॥ १ ॥ कामु क्रोधु बिखु बजरु भारु ॥ नाम बिना कैसे गुन चारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरु बालू का घूमन घेरि ॥ बरखसि बाणी बुदबुदा हेरि ॥ मात्र बूंद ते धरि चकु फेरि ॥ सरब जोति नामै की चेरि ॥ २ ॥ सरब उपाइ गुरू सिरि मोरु ॥ भगति करउ पग लागउ तोर ॥ नामि रतो चाहउ तुझ ओरु ॥ नामु दुराइ चलै सो चोरु ॥ ३ ॥ पति खोई बिखु अंचलि पाइ ॥ साच नामि रतो पति सिउ घरि जाइ ॥ जो किछु कीन्हसि प्रभु रजाइ ॥ भै मानै निरभउ मेरी माइ ॥ ४ ॥ कामनि चाहै सुंदरि भोगु ॥ पान फूल मीठे रस रोग ॥ खीलै बिगसै तेतो सोग ॥ प्रभ सरणागति कीन्हसि होग ॥ ५ ॥ कापड़ु पहिरसि अधिकु सीगारु ॥ माटी फूली रूपु बिकारु ॥ आसा मनसा बांधो बारु ॥ नाम बिना सूना घरु बारु ॥ ६ ॥ गाछहु पुत्री राज कुआरि ॥ नामु भणहु सचु दोतु सवारि ॥ प्रिउ सेवहु प्रभ प्रेम अधारि ॥ गुर सबदी बिखु तिआस निवारि ॥ ७ ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोहि ॥ गुर कै सबदि पछाना तोहि ॥ नानक ठाढे चाहहि प्रभू दुआरि ॥ तेरे नामि संतोखे किरपा धारि ॥ ८ ॥ १ ॥ बसंतु महला १ ॥ मनु भूलउ भरमसि आइ जाइ ॥ अति लुबध लुभानउ बिखम माइ ॥ नह असथिरु दीसै एक भाइ ॥ जिउ मीन कुंडलीआ कंठि पाइ ॥ १ ॥ मनु भूलउ समझसि साच नाइ ॥ गुर सबदु बीचारे सहज भाइ ॥

तूने क्या सोचकर इसे सच्चा मान लिया है।। १ ।। इस बात को अच्छी तरह से समझ ले कि धन, स्त्री, सम्पत्ति, घर इत्यादि में से कुछ भी साथ नहीं चलेगा।। २ ।। केवल एक प्रभु की भक्ति ही साथ देगी और हे नानक, तू एक रस प्रेम से उसका सुमिरन करता रह।। ३ ।। ४ ।। बसंतु महला ९ ।। झूटे लोभ में लगकर हे जीव, तू किन भ्रमों में भूला हुआ है। तू अभी भी सावधान हो जा क्योंकि अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है।। १ ।। रहाउ।। इस संसार को एक सपने के समान समझो और इस बात को सच्चा मान लो कि यह क्षण भर में विनष्ट हो जाता है।। १ ।। प्रभु सदैव तेरे साथ ही बसता है इसलिए हे मित्र, दिन रात तू उसी का सुमिरन कर।। २ ।। अंतिम अवसर पर जो सहायता करने वाला है, हे नानक, तू उसी के गुण गाता रह।। ३ ।। ५ ।।

बसंतु महला १ अष्टपदियाँ घरु १ दो पंक्तियों वाले १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु का नाम हृदय में ना धारण करने के कारण यह संसार उस कौए के समान बना हुआ है जो प्रभु को भुलाकर विकारों के चुग्गे पर गिरता रहता है। जब चित्त में बुरे विचार होते हैं तो यह मन डोलता ही रहता है। यह सब देखकर हमारी तो इस संसार से झूठी प्रीति ही टूट चुकी है।। १ ।। जीव ने काम, क्रोध और विषय-विकारों का बहुत ही कठोर भार अपने पर लाद रक्खा है परन्तु प्रभु-नाम के बिना गुणों वाला आचरण कैसे बन सकता है।। १ ।। रहाउ।। यह शरीर रूपी घर बालू का बना हुआ है और सांसारिक लहरों के चक्कर में फँसा हुआ है। इसका जीवन वर्षा में बुलबुले के समान है। हे जीव, तू इस बात को अच्छी तरह देख ले। बूंद मात्र से ही इसे बढ़ाकर इस शरीर की रचना कर दी है परन्तु सब प्रकार की शक्तियां प्रभु-नाम की ही दासियाँ है।। २ ।। सब को उत्पन्न करके सबका शिरोमणि मालिक हे प्रभु, तू ही है और मैं तो तेरे चरणों मे लगा हुआ तेरी ही भक्ति किए जा रहा हूँ। नाम में लीन होकर मैं तेरे पक्ष को ही चाहता हूँ और यह मानता हूँ कि जो प्रभु-नाम को छिपा कर अर्थात भूलकर इस संसार में चलता है वह चोर ही है।। ३ ।। अपने आँचल में विकारों के विष को बाँधने पर सम्मान खो दिया जाता है। जो सच्चे नाम में लीन होता है वही सम्मानपूर्वक वापस अपने घर अर्थात परमात्मा के पास जाता है। जो कुछ भी किया हुआ है, वह प्रभु ने अपनी रज़ा में ही किया हुआ है और हे मेरी माँ, जो प्रभु के भय को मानता है वहीं निर्भय हो जाता है।। ४ ।। स्त्री चाहती है कि मैं सुन्दरी बनी रहूँ और भोग का आनन्द लेती रहूँ। मीठे रस, पान और फूल आदि सभी रोगों के ही रूप हैं और वह जितनी भी साँसारिक भोगों में लीन होकर खुश होती और खिली रहती है उतना ही उसे शोक सहना पड़ता है। परन्तु जो प्रभु की शरण में है वह जीव-स्त्री जो भी करना चाहती है वही हो जाता है।। ५ ।। वह वस्त्र धारण करके जब अधिक शृंगार करती है। तो ऐसी ही लगती है कि जैसे मिट्टी फूली हुई होकर विकार रूप में बदल गई हो। उसकी आशाओं और मनोकामनाओं ने परमात्मा का द्वार उसके लिए बंद किया है और प्रभु-नाम के बिना उसका घर बार सब सूना ही पड़ा रहता है।। ६।। जाओ, हे राजकुमारी पुत्रियो, जाओ और अमृत बेला अर्थात भोर के समय को सम्भालकर सच्चे प्रभु के नाम का सुमिरन करो। प्रभु के प्रेम को आधार बनाकर उस प्रियतम का सुमिरन करती रहो और शब्द-गुरु को अपनाकर विषय विकारों की प्यास को दूर कर लो।। ७ ।। हे मोहन प्रभु, तूने मेरा मन मोह लिया है; मैंने शब्द-गुरु के माध्यम से तुझे पहचाना है। हे नानक, हम तो खड़े हुए सभी प्रभु के द्वार की कामना करते हैं; तू यह कृपा कर कि तेरे नाम से हम सन्तुष्ट हो जाएँ।। ८ ।। १ ।। बसंतु महला १ ।। भ्रमों में भूला मन आवागमन में पड़ा रहता है। अत्यन्त लालची बनकर यह विषय रूपी माया के लिए ललचा रहा है। एक प्रभु के प्यार में यह ही स्थिर नहीं होता और मछली की तरह अपने गले में कुंडी फँसाए रहता है।। १ ।। भूला हुआ मन सच्चे नाम के कारण समझदार हो सकता है यदि यह स्वाभाविक रूप से शब्द-गुरु का चिंतन करता रहे

१ ॥ रहाउ ॥ मनु भूलउ भरमसि भवर तार ॥ बिल बिरथे चाहै बहु बिकार ॥ मैगल जिउ फाससि कामहार ॥ कड़ि बंधनि बाधिओ सीस मार ॥ २ ॥ मनु मुगधौ दादरु भगतिहीनु ॥ दरि भ्रसट सरापी नाम बीनु ॥ ता कै जाति न पाती नाम लीन ॥ सभि दूख सखाई गुणह बीन ॥ ३ ॥ मनु चलै न जाई टाकि राखु ॥ बिनु हरि रस राते पति न साखु ॥ तू आपे सुरता आपि राखु ॥ धरि धारण देखै जाणै आपि ॥ ४ ॥ आपि भुलाए किसु कहउ जाइ ॥ गुरु मेले बिरथा कहउ माइ ॥ अवगण छोडउ गुण कमाइ ॥ गुर सबदी राता सचि समाइ ॥ ५ ॥ सतिगुर मिलिऐ मति ऊतम होइ ॥ मनु निरमलु हउमै कढै धोइ ॥ सदा मुकतु बंधि न सकै कोइ ॥ सदा नामु वखाणै अउरु न कोइ ॥ ६ ॥ मनु हरि कै भाणै आवै जाइ ॥ सभ महि एको किछु कहणु न जाइ ॥ सभु हुकमो वरतै हुकमि समाइ ॥ दूख सूख सभ तिसु रजाइ ॥ ७ ॥ तू अभुलु न भूलौ कदे नाहि ॥ गुर सबदु सुणाए मति अगाहि ॥ तू मोटउ ठाकुरु सबद माहि ॥ मनु नानक मानिआ सचु सलाहि ॥ ८ ॥ २ ॥ बसंतु महला १ ॥ दरसन की पिआस जिसु नर होइ ॥ एकतु राचै परहरि दोइ ॥ दूरि दरदु मथि अंम्रितु खाइ ॥ गुरमुखि बूझै एक समाइ ॥ १ ॥ तेरे दरसन कउ केती बिललाइ ॥ विरला को चीनसि गुर सबदि मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद वखाणि कहहि इकु कहीऐ ॥ ओहु बेअंतु अंतु किनि लहीऐ ॥ एको करता जिनि जगु कीआ ॥ बाझु कला धरि गगनु धरीआ ॥ २ ॥ एको गिआनु धिआनु धुनि बाणी ॥ एकु निरालमु अकथ कहाणी ॥ एको सबदु सचा नीसाणु ॥ पूरे गुर ते जाणै जाणु ॥ ३ ॥ एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥ गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ अनहदि राता एक लिव तार ॥ ओहु गुरमुखि पावै अलख अपार ॥ ४ ॥ एको तखतु एको पातिसाहु ॥ सरबी थाई वेपरवाहु ॥ तिस का कीआ त्रिभवण सारु ॥ ओहु अगमु अगोचरु एकंकारु ॥ ५ ॥ एका मूरति साचा नाउ ॥ तिथै निबड़ै साचु निआउ ॥ साची करणी पति परवाणु ॥ साची दरगह पावै माणु ॥ ६ ॥ एका भगति एको है भाउ ॥ बिनु भै भगती आवउ जाउ ॥ गुर ते समझि रहै मिहमाणु ॥

।। १ ।। रहाउ।। भूला हुआ मन भँवरे की तरह भटकता है और नौ गोलक अर्थात इन्द्रियाँ बहुत से व्यर्थ विकारों को चाहती रहती हैं। यह कामातुर हाथी की तरह फंसा रहता है। इसे तो सिर पर प्रभु-नाम के अंकुश की मार से ही बाँधा जाता है।। २ ।। भक्ति-विहीन मन मूर्ख मेंढक की तरह है और वह प्रभु के द्वार से शापित हुआ रहता है। ऐसे लोगों की ना कोई जाति है, ना कोई सम्मान है और ना ही कोई उनका नाम लेता है। गुण-विहीन होने के कारण दुख ही उनके साथी बनते हैं।। ३ ।। मन भागता ही रहता है और रुकता नहीं। प्रभु के नाम रस में लीन हुए बिना ना तो इसका सम्मान है और ना कोई विश्वास है। हे प्रभु, तु स्वयं ही हमारा ध्यान रखकर हमारी रक्षा करने वाला है और सृष्टि को धारण करके तू स्वयं ही उसे देखता जानता है।। ४ ।। जब तू स्वयं ही भुला देता है तो फिर मैं किससे जाकर कहूँ। हे माँ, यदि मुझे गुरु मिल जाए तो मैं उसे अपने मन की व्यथा कहूँ। अवगुण छोड़कर गुणों को कमाकर शब्द-गुरु में रंगकर मैं सत्य में लीन हो जाऊँ।। ५ ।। सच्चे गुरु के मिलाप से मति उत्तम हो जाती है, अंहकार को धोकर निकाल दिया जाता है और मन निर्मल हो जाता है। जीव सदा के लिए मुक्त हो जाता है और फिर उसे कोई नहीं बाँध सकता तथा वह अन्य किसी को ना जानकर सदैव प्रभु-नाम का ही उच्चारण करता है।। ६ ।। प्रभु के हुकुम में ही मन आता जाता है परन्तु सबमें तो वह एक प्रभु ही है इसलिए कुछ भी नहीं कहा जा सकता। सब ओर हुकुम ही कार्यशील है और सब हुकुम में ही समा जाते हैं तथा यह दुख और सुख सब उस प्रभु की ही रज़ा है।। ७ ।। हे मालिक, तू कभी भी गलती ना करने वाला और ना भूलने वाला है। जिनको तू गुरु का शब्द सुना देता है उनकी मति अगाध (विशाल) हो जाती है। तू महान प्रभु शब्द में ही निहित है और हे नानक, उस सत्य के गुणानुवाद से ही यह मन सन्तुष्ट हो जाता है।। ८ ।। २ ।। बसंतु महला १ ।। जिस व्यक्ति को प्रभु दर्शन की प्यास होती है वह द्वैतभाव को त्यागकर उस एक प्रभु में ही लीन बना रहता है। अमृत का मंथन करके वह खाता है और उसकी सभी पीड़ाएं दूर हो जाती है। वह गुरमुख बनकर उस परमात्मा को जान लेता है और उस एक प्रभु में ही लीन हो जाता है।। १ ।। हे प्रभु, तेरे दर्शन के लिए कितने ही लोग चीखते-पुकारते रहते हैं परन्तु कोई बिरला ही इस बात को जानता है कि शब्द-गुरु तुझसे मिलाता है।। १ ।। रहाउ।। वेद भी इसी बात का बखान करते हैं कि एक प्रभु का ही सुमिरन करना है, वही अनन्त है और उसकी सीमा भला कौन पा सका है। संसार को बनाने वाला वह एक ही कर्ता है जिसने बिना किसी सहारे के आकाश को धारण करके उसे स्थिर बनाया हुआ है।। २ ।। प्रभु की वाणी की धुन ही ज्ञान-ध्यान है और वह एक प्रभु ही अलिप्त है जिसकी वार्ता अकथनीय है। एक शब्द ही उस प्रभु का सच्चा चिन्ह है और हे जीव, तू पूर्ण गुरु से ही उस जानने योग्य प्रभु को जान ले।। ३ ।। सत्य को हृदय में पक्का बनाए रखना ही वास्तविक धर्म है और जो ऐसा करता है वह गुरमति के माध्यम से युगों-युगों में सफल बना रहता है। वही उस प्रभु के अनहद नाद में एक रस होकर अपनी लौ लगाए रहता है और वही गुरमुख बनकर उस अदृष्ट और अपार प्रभु को पा जाता है।। ४ ।। वह परमात्मा एक ही सम्राट है और उसका सिंहासन भी एक ही है अर्थात सबका हृदय उसका सिंहासन है। सभी स्थानों पर वह बेपरवाह बना रहता है। तीनों लोकों का सार-सारांश भी उसी का बनाया हुआ है और वही अगम्य, अगोचर और एक ओअंकार है।। ५ ।। उसका सच्चा नाम ही उसका अस्तित्व है और सच्चे नाम के माध्यम से ही वह सच्चा न्याय करता है। जिनका आचरण सच्चा है उनका सम्मान सफल होता है और वे ही उसके सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करते हैं।। ६।। उस प्रभु की भक्ति भी एक ही है और उसका प्रेम रूपी भाव भी एक ही है। उसके भय और भक्ति से विहीन बनकर व्यक्ति आवागमन में पड़ा ही रहता है। यदि गुरु से समझ-बूझ कर जीव यहां मेहमान की तरह रहता रहे

हरि रसि राता जनु परवाणु ॥ ७ ॥ इत उत देखउ सहजे रावउ ॥ तुझ बिनु ठाकुर किसै न भावउ ॥ नानक हउमै सबदि जलाइआ ॥ सतिगुरि साचा दरसु दिखाइआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ बसंतु महला १ ॥ चंचलु चीतु न पावै पारा ॥ आवत जात न लागै बारा ॥ दूखु घणो मरीऐ करतारा ॥ बिनु प्रीतम को करै न सारा ॥ १ ॥ सभ ऊतम किसु आखउ हीना ॥ हरि भगती सचि नामि पतीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउखध करि थाकी बहुतेरे ॥ किउ दुखु चूकै बिनु गुर मेरे ॥ बिनु हरि भगती दूख घणेरे ॥ दुख सुख दाते ठाकुर मेरे ॥ २ ॥ रोगु वडो किउ बांधउ धीरा ॥ रोगु बुझै सो काटै पीरा ॥ मै अवगण मन माहि सरीरा ॥ ढूढत खोजत गुरि मेले बीरा ॥ ३ ॥ गुर का सबदु दारू हरि नाउ ॥ जिउ तू राखहि तिवै रहाउ ॥ जगु रोगी कह देखि दिखाउ ॥ हरि निरमाइलु निरमलु नाउ ॥ ४ ॥ घर महि घरु जो देखि दिखावै ॥ गुर महली सो महलि बुलावै ॥ मन महि मनूआ चित महि चीता ॥ ऐसे हरि के लोग अतीता ॥ ५ ॥ हरख सोग ते रहहि निरासा ॥ अंम्रितु चाखि हरि नामि निवासा ॥ आपु पछाणि रहै लिव लागा ॥ जनमु जीति गुरमति दुखु भागा ॥ ६ ॥ गुरि दीआ सचु अंम्रितु पीवउ ॥ सहजि मरउ जीवत ही जीवउ ॥ अपणो करि राखहु गुर भावै ॥ तुमरो होइ सु तुझहि समावै ॥ ७ ॥ भोगी कउ दुखु रोग विआपै ॥ घटि घटि रवि रहिआ प्रभु जापै ॥ सुख दुख ही ते गुर सबदि अतीता ॥ नानक रामु रवै हित चीता ॥ ८ ॥ ४ ॥ बसंतु महला १ इक तुकीआ ॥ मतु भसम अंधूले गरबि जाहि ॥ इन बिधि नागे जोगु नाहि ॥ १ ॥ मूढ़े काहे बिसारिओ तै राम नाम ॥ अंत कालि तेरै आवै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूछि तुम करहु बीचारु ॥ जह देखउ तह सारिगपाणि ॥ २ ॥ किआ हउ आखा जां कछू नाहि ॥ जाति पति सभ तेरै नाइ ॥ ३ ॥ काहे मालु दरबु देखि गरबि जाहि ॥ चलती बार तेरो कछू नाहि ॥ ४ ॥ पंच मारि चितु रखहु थाइ ॥ जोग जुगति की इहै पांइ ॥ ५ ॥ हउमै पैखड़ु तेरे मनै माहि ॥ हरि न चेतहि मूड़े मुकति जाहि ॥ ६ ॥ मत हरि विसरिऐ जम वसि पाहि ॥ अंत कालि मूड़े चोट खाहि ॥ ७ ॥

तो इस प्रकार प्रभु के प्रेम में लीन वह सेवक स्वीकृत हो जाता है।। ७।। मैं इधर उधर देखता हूँ और स्वाभाविक रूप से ही तेरा सुमिरन करता हूँ। हे प्रभु, तेरे बिना मैं किसी को भी नहीं चाहता। हे नानक, शब्द के माध्यम से जब मैंने अहंकार को जला दिया तो सच्चे गुरु परम सत्य प्रभु ने मुझे अपना दर्शन दे दिया।। ८ ।। ३ ।। बसंतु महला १ ।। चंचल बने रहने वाला मन उसका रहस्य नहीं जान पाता और वह बार-बार इस संसार में आवागमन बनाए रहता है। हे कर्ता प्रभु, अत्यधिक दुख होने के कारण मरते रहना पड़ता है क्योंकि प्रियतम प्रभु के बिना हमारी खोज खबर लेने वाला कोई नहीं हैं।। १ ।। सभी उत्तम हैं, किसे हीन कहा जाए परन्तु व्यक्ति का मन प्रभु की भक्ति और सच्चे नाम में ही सन्तुष्ट बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। अनेकों औषधियाँ लेती-लेती मैं थक चुकी हूँ परन्तु मेरे गुरु के बिना भला मेरा दुख कैसे नष्ट हो सकता है। प्रभु की भक्ति के बिना अनेकों दुख लगे रहते हैं परन्तु दुख और सुख देने वाला वह मेरा प्रभु ही है।। २ ।। मेरा रोग बहुत बड़ा है और मैं कैसे धैर्य रखूँ। वह प्रभु जो मेरे रोग को जानता है वही उसकी पीड़ा को नष्ट कर सकता है। मेरे मन में अवगुण भरे हुए हैं परन्तु हे भाई, ढूँढने खोजने से ही गुरु से मिलाप होगा जो मेरे अवगुणों की पीड़ा दूर कर देने वाला है।। ३ ।। शब्द-गुरु रूपी प्रभु का नाम ही मेरे दुखों की औषधि है और हे प्रभु, तू जैसे हमें रखता है हम वैसे ही रहते हैं। सारा संसार ही रोगी है इसलिए मैं किसे अपना रोग दिखाऊं। केवल प्रभु ही निर्मल है और उसी का नाम पवित्र है।। ४ ।। हृदय में ही जो प्रभु के निवास का ठिकाना देख लेता है और दिखा देता है वही गुरु रूपी घर के द्वारा जीव को प्रभु के ठिकाने पर बुला लेता है। प्रभु के सेवक ऐसे वैराग्यवान होते हैं कि अपने मन और चित्त में वास्तविक मन (ज्योति स्वरूप मन) को ढूँढ लेते हैं और अपने मन की प्रसन्नता अपने अन्दर से ही प्राप्त कर लेते हैं।। ५ ।। वे सुख और दुख से अतीत बने रहते हैं और प्रभु-नाम के अमृत को चखकर उसी में निवास बनाए रहते हैं। वे अपने आपको पहचान कर अपनी लौ को प्रभु में ही लगाए रहते हैं; उन्होंने इस जीवन को जीत लिया होता है और गुरमति के माध्यम से उनका दुख भाग खड़ा होता है।। ६ ।। गुरु का दिया हुआ सत्य रूपी अमृत पी लो और इस प्रकार सहज रूप में विकारों की ओर से मरकर जीवित बने रहो। यदि गुरु को अच्छा लगे तो हे प्रभु, तुम मुझे अपना बनाकर रखो; जो तुम्हारा होता है वह तुझमें ही लीन बना रहता है।। ७ ।। भोगी व्यक्ति को दुख और रोग प्रभावित करते रहते हैं और जिन्होंने प्रभु का जाप किया है उन्हें वह घट-घट में बसा हुआ दिखाई देता है। शब्द-गुरु के माध्यम से ऐसा व्यक्ति सुख दुख से उपर उठ जाता है और हे नानक, चित्त में प्रेम पूर्ण होकर वह प्रभु-नाम का सुमिरन करता रहता है।। ८ ।। ४ ।। बसंतु महला १ एक पंक्ति वाला।। हे भस्म लगाने वाले अंधे तू भस्म लगाने के अहंकार में भूला मत रह; हे नग्न बने रहने वाले योगी, योग इस तरह नहीं होता।। १ ।। हे मूर्ख, तूने राम नाम को क्यों भुला दिया क्योंकि अन्त समय में तो यही काम आने वाला है।। १ ।। रहाउ।। गुरु से पूछकर तुम यह समझ लो कि जहां भी देखा जाता है वह प्रभु ही दिखाई देता है।। २ ।। मैं क्या कहूँ जब अन्य कुछ है ही नहीं और मेरी जाति, मेरा सम्मान, हे प्रभु, सब तेरा नाम ही है।। ३ ।। तू धन दौलत को देखकर अहंकार क्यों करता है क्योंकि चलते समय इसमें से कुछ भी तेरा नहीं होगा।। ४ ।। पाँचों विकारों में मार कर अपने चित्त को टिकाए रक्खो क्योंकि योग की युक्ति की यही नींव है ।। ५ ।। अहंकार का बन्धन तेरे मन में पड़ा हुआ है और हे मूर्ख, तू प्रभु का सुमिरन नहीं करता जिससे तुझे मुक्ति प्राप्त होगी।। ६।। प्रभु को मत भुलाओ नहीं तो यम के वश में होना पड़ेगा और इस प्रकार हे मूर्ख, तू अन्तिम समय में चोटें खाता रहेगा।। ७ ।।

गुर सबदु बीचारहि आपु जाइ ॥ साच जोगु मनि वसै आइ ॥ ८ ॥ जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु चेतहि नाहि ॥ मड़ी मसाणी मूड़े जोगु नाहि ॥ ९ ॥ गुण नानकु बोलै भली बाणि ॥ तुम होहु सुजाखे लेहु पछाणि ॥ १० ॥ ५ ॥ बसंतु महला १ ॥ दुबिधा दुरमति अधुली कार ॥ मनमुखि भरमै मझि गुबार ॥ १ ॥ मनु अंधुला अंधुली मति लागै ॥ गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि अंधुले गुरमति न भाई ॥ पसू भए अभिमानु न जाई ॥ २ ॥ लख चउरासीह जंत उपाए ॥ मेरे ठाकुर भाणे सिरजि समाए ॥ ३ ॥ सगली भूलै नही सबदु अचारु ॥ सो समझै जिसु गुरु करतारु ॥ ४ ॥ गुर के चाकर ठाकुर भाणे ॥ बखसि लीए नाही जम काणे ॥ ५ ॥ जिन कै हिरदै एको भाइआ ॥ आपे मेले भरमु चुकाइआ ॥ ६ ॥ बेमुहताजु बेअंतु अपारा ॥ सचि पतीजै करणैहारा ॥ ७ ॥ नानक भूले गुरु समझावै ॥ एकु दिखावै साचि टिकावै ॥ ८ ॥ ६ ॥ बसंतु महला १ ॥ आपे भवरा फूल बेलि ॥ आपे संगति मीत मेलि ॥ १ ॥ ऐसी भवरा बासु ले ॥ तरवर फूले बन हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे कवला कंतु आपि ॥ आपे रावे सबदि थापि ॥ २ ॥ आपे बछरू गऊ खीरु ॥ आपे मंदरु थंम्हु सरीरु ॥ ३ ॥ आपे करणी करणहारु ॥ आपे गुरमुखि करि बीचारु ॥ ४ ॥ तू करि करि देखहि करणहारु ॥ जोति जीअ असंख देइ अधारु ॥ ५ ॥ तू सरु सागरु गुण गहीरु ॥ तू अकुल निरंजनु परम हीरु ॥ ६ ॥ तू आपे करता करण जोगु ॥ निहकेवलु राजन सुखी लोगु ॥ ७ ॥ नानक ध्रापे हरि नाम सुआदि ॥ बिनु हरि गुर प्रीतम जनमु बादि ॥ ८ ॥ ७ ॥

बसंतु हिंडोलु महला १ घरु २   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नउ सत चउदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली ॥ चारे दीवे चहु हथि दीए एका एका वारी ॥ १ ॥ मिहरवान मधुसूदन माधौ ऐसी सकति तुम्हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धरमु करे सिकदारी ॥ धरती देग मिलै इक वेरा भागु तेरा भंडारी ॥ २ ॥ ना साबूरु होवै फिरि

जो अभिमान को गँवाकर शब्द-गुरु का चिंतन करते हैं, उन्हीं के मन में सच्चा योग बसा होता है।। ८ ।। जिसने यह प्राण और शरीर दिया है उसका तू सुमिरन नहीं करता परन्तु हे मूर्ख, योग का स्थान शमशान भूमि आदि नहीं है॥६॥ नानक तो गुणों वाली अच्छी बात यह कहता है कि तुम ज्ञान की आँखों वाले बन जाओ और उस प्रभु को पहचान लो।। १० ।। ५ ।। बसंतु महला १ ।। दुविधा और दुर्मति अज्ञान की स्थिति है और मनमुख व्यक्ति इनके घोर अंधकार में ही भटकता रहता है।। १ ।। अंधा मन अज्ञानपूर्ण मति में ही लीन होता है परन्तु गुरु की हुई कृपा के बिना भ्रम दूर नहीं होता।। १ ।। रहाउ।। अज्ञानी मनमुख को गुरु की मति अच्छी नहीं लगती, वह पशु समान हो जाता है और उसका अभिमान समाप्त नहीं होता।। २ ।। चौरासी लाख जीव योनियाँ उसने उत्पन्न की हैं परन्तु मेरे प्रभु को जब अच्छा लगता है वह इनकी सृजना कर देता है और जब अच्छा लगता है वे उसी में लीन हो जाते हैं।। ३ ।। जिनके पास ना तो शब्द है और ना उस पर आचरण करने की विधि है, वे सभी भटकते ही रहते हैं। इस रहस्य को केवल वही समझता है जिसका गुरु वह कर्ता प्रभु हो जाता है।। ४ ।। गुरु के सेवक उस प्रभु की रज़ा में रहते हैं; उन्हें प्रभु बचा लेता है और उन्हें यम का भय नहीं रहता।। ५ ।। जिनके हृदय में केवल एक ही प्रभु अच्छा लगने लगा है वह भ्रमों को चुका कर स्वयं उन्हें अपने से मिला लेता है।। ६ ।। वह प्रभु अनन्त, अपार और किसी का मोहताज नहीं है परन्तु वह कर्ता-प्रभु सत्य के माध्यम से ही प्रसन्न होता है।। ७ ।। हे नानक, भूले-भटके लोगों को गुरु ही समझाता है और वह एक ही प्रभु की अनुभूति जगाता है और व्यक्ति को सत्य में स्थिर कर देता है।। ८ ।। ६ ।। बसंतु महला १ ।। वह स्वयं ही भँवरा है, फूल है और फूल की बेल है। मित्र बनकर वह संगत के माध्यम से स्वयं ही अपने से मिला लेता है।। १।। गुरमुख रूपी भँवरा बनकर तू इस प्रकार की सुगन्ध का आनन्द ले कि तेरे लिए सभी वृक्ष, वन, फले-फूलें और हरे-भरे बन जाएँ।। १ ।। रहाउ।। तू स्वयं ही माया है और स्वयं ही मायापति है। शब्द के माध्यम से स्थित होकर तू स्वयं ही सबमें रमण करता रहता है।। २ ।। तू स्वयं ही बछड़ा, गाय और दूध है और स्वयं ही शरीर रूपी घर को सम्भाले रहने वाला स्तम्भ है।। ३ ।। तू स्वयं ही कार्य और कार्य करने वाला है और स्वयं ही गुरमुख बनकर तू चिंतन करता रहता है।। ४ ।। हे सब कुछ करने वाले प्रभु, तू ही सब कुछ कर करके उसे सम्भालता रहता है और तू ही असंख्य जीवों की ज्योति को आसरा देता है।। ५ ।। तुम गहरे गुणों के गहरे समुद्र हो और हे प्रभु, तुम कुलातीत निरंजन रूप में सबसे उत्तम हीरे के समान हो।। ६ ।। तू स्वयं ही कर्ता है और सब कुछ करने योग्य है तथा हे राजन, तू सब ओर से स्वतन्त्र है और तेरी प्रजा सुखी है।। ७ ।। नानक तो प्रभु-नाम के स्वाद से ही सन्तुष्ट होता है और प्रभु गुरु प्रियतम के बिना यह जीवन ही व्यर्थ है।। ८ ।। ७ ।।

बसंतु हिंडोल महला १ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे प्रभु, नौखण्ड, सातों द्वीप, चौदह भुवन, तीनों लोक और चारों युगों को बनाकर तूने इन्हें अपने-अपने ठिकानों पर स्थित कर दिया है। चारों ज्ञान के दीपक (वेद), चारों युगों के हाथ में देकर उनको एक एक युग का अवसर दिया है।। १ ।। हे मधुसूदन और कृपालु माधव, तुम्हारी शक्ति इस प्रकार की है।। १ ।। रहाउ।। हर शरीर और हर घर में तेरी ज्योति रूपी अग्नि है और यही तेरा लश्कर है तथा धर्मराज इस सब पर सरदारी करता है। धरती ऐसी विशाल देग है जिससे एक बार में ही सब कुछ मिल जाता है परन्तु इस भण्डारी से अपने कर्मों के अनुरूप भाग ही मिलता है।। २ ।। जिसे सन्तोष नहीं होता वह फिर बार-बार

मंगै नारदु करे खुआरी ॥ लबु अधेरा बंदीखाना अउगण पैरि लुहारी ॥ ३ ॥ पूंजी मार पवै नित मुदगर पापु करे कुोटवारी ॥ भावै चंगा भावै मंदा जैसी नदरि तुम्हारी ॥ ४ ॥ आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखां आई वारी ॥ देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥ ५ ॥ कूजा बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥ घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ ६ ॥ जे तू मीर महीपति साहिबु कुदरति कउण हमारी ॥ चारे कुंट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति तुम्हारी ॥ ७ ॥ तीरथ सिंम्रिति पुंन दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई मेका घड़ी सम्हाली ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

बसंतु हिंडोलु घरु २ महला ४ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

कांइआ नगरि इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई ॥ अनिक उपाव जतन करि थाके बारं बार भरमाई ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर बालकु इकतु घरि आणु ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ भजु राम नामु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मिरतकु मड़ा सरीरु है सभु जगु जितु राम नामु नही वसिआ ॥ राम नामु गुरि उदकु चुआइआ फिरि हरिआ होआ रसिआ ॥ २ ॥ मै निरखत निरखत सरीरु सभु खोजिआ इकु गुरमुखि चलतु दिखाइआ ॥ बाहरु खोजि मुए सभि साकत हरि गुरमती घरि पाइआ ॥ ३ ॥ दीना दीन दइआल भए है जिउ क्रिसनु बिदर घरि आइआ ॥ मिलिओ सुदामा भावनी धारि सभु किछु आगै दालदु भंजि समाइआ ॥ ४ ॥ राम नाम की पैज वडेरी मेरे ठाकुरि आपि रखाई ॥ जे सभि साकत करहि बखीली इक रती तिलु न घटाई ॥ ५ ॥ जन की उसतति है राम नामा दह दिसि सोभा पाई ॥ निंदकु साकतु खवि न सकै तिलु अपणै घरि लूकी लाई ॥ ६ ॥ जन कउ जनु मिलि सोभा पावै गुण महि गुण परगासा ॥ मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे जो होवहि दासनि दासा ॥ ७ ॥ आपे जलु अपरंपरु करता आपे मेलि मिलावै ॥ नानक गुरमुखि सहजि मिलाए जिउ जलु

माँगता ही रहता है और नारद की तरह एक स्थान पर ना बैठ पाने के कारण ख्वार होता रहता है। लोभ, अंधेरा बन्दीखाना है और जीव के पैरों में अवगुणों की बेड़ियाँ पड़ी हुई हैं।। ३ ।। रासपूंजी यही है कि इस अंधेरे बन्दीखाने में सदैव मुगदर से मार पड़ती रहती है और पाप यहाँ कोतवाल का काम करता है। चाहे अच्छा हो या बुरा यह सब तुम्हारी कृपादृष्टि पर ही आधारित है।। ४ ।। आदि पुरुष परमात्मा को शेखों के प्रभाव के कारण अल्लाह कहा जाने लगा है और इस प्रकार का आचरण चल पड़ा है कि मन्दिरों और देवताओं पर भी कर लगाया जा रहा है।। ५ ।। वह प्रभु अब सबको बाँग, नमाज़ और नमाज़ पढ़ने की चटाई के साथ-साथ नीले रूप में दिखाई देने लग गया है। घर-घर में अब सब लोगों को मियाँ जी-मियाँ जी कहा जाने लगा है; तुम लोगों की तो बोली ही और हो गई है।। ६ ।। यदि तुम मालिक धरती के स्वामी और सबके साहिब हो, तो हमारी शक्ति तुम्हारे सामने भला क्या है। तुझे चारों दिशाएं प्रणाम करेंगी और घर-घर में तुम्हारी ही प्रशंसा होती रहेगी।। ७ ।। तीर्थ, स्मृतियों का पठन-पाठन और पुण्यदान से जो दिन भर में लाभ प्राप्त होता था हे नानक, एक घड़ी भर तेरा सुमिरन करने से तेरे नाम के कारण वह बड़प्पन प्राप्त हो जाता है।। ८ ।। १ ।। ८ ।।

बसंतु हिंडोल घरु २ महला ४ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

शरीर रूपी नगरी में एक मन रूपी बालक बसता है जो क्षण भर भी स्थिर नहीं रहता। उसके लिए अनेकों उपाय करके हम थक गए हैं पर वह बार-बार भटकता ही रहता है। हे मेरे मालिक, इस बालक मन को एकाग्रता के घर में लाकर स्थिर कर दे। सच्चा गुरु मिले तो वह पूर्ण प्रभु पाया जाता है और प्रभु के नाम सुमिरन से वह प्रकट रूप में प्रत्यक्ष हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। यदि इसमें प्रभु-नाम नहीं बसा है तो यह शरीर जो सारे संसार का छोटा सा रूप है केवल एक मुर्दा ढेरी के समान है। जब गुरु ने इसमें प्रभु-नाम का पानी दे दिया तो यह फिर हरा-भरा होकर रस पूर्ण हो गया है।। २।। मैंने देख परखकर इस सम्पूर्ण शरीर को खोजा है परन्तु प्रभु-गुरु ने मुझे प्रत्यक्ष एक कौतुक दिखाया है कि बाहर खोजते हुए तो सभी पदार्थवादी लोग मर खप गए हैं परन्तु गुरु की मति में चलते हुए हमने उसे घर में ही पा लिया है।। ३ ।। दीनों से भी दीन पर प्रभु उसी प्रकार दयालु हुआ कि मानो विदुर के घर कृष्ण आ पहुँचा हो। सुदामा को भी वह पूरी भावना के साथ आगे पहुँच कर मिला और उसकी गरीबी को नष्ट करके उसने समाप्त कर दिया।। ४ ।। प्रभु-नाम की महिमा बहुत बड़ी है और मेरे ठाकुर ने उस महिमा की रक्षा स्वयं की है। प्रभु से टूटे हुए सभी लोग भी यदि उस की महिमा की निन्दा करते रहें तब भी वह तिल मात्र भी नहीं घटती।। ५ ।। प्रभु के सेवक की प्रशंसा प्रभु-नाम का सुमिरन ही है और उसी से उसने दसों दिशाओं में शोभा प्राप्त की है। निन्दक व्यक्ति पदार्थवादी बनकर उसे सहार नहीं सकता और अपने ही घर में अनेक प्रकार की पीड़ाओं की अग्नि को जलाए रखता है।।६।। प्रभु के सेवकों को उसका सेवक मिलकर शोभा प्राप्त करता है और गुणों में रहता हुआ ही गुणों के कारण प्रभु का प्रकाश प्राप्त करता रहता है। जो प्रभु के सेवकों के भी सेवक बन जाते हैं वे सेवक ही मेरे ठाकुर प्रियतम के प्यारे होते हैं।। ७ ।। वह अपरम्पर कर्ता प्रभु स्वयं ही जल रूपी जीवन है और वह स्वयं ही जीव का मेल अपने से करता है। हे नानक, जैसे जल में जल समा जाता है ऐसे ही गुरमुख बने व्यक्ति को भी वह स्वाभाविक रूप से अपने

जलहि समावै ॥ ८ ॥ १ ॥ ९ ॥

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुकीआ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

सुणि साखी मन जपि पिआर ॥ अजामलु उधरिआ कहि एक बार ॥ बालमीकै होआ साधसंगु ॥ ध्रू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥ १ ॥ तेरिआ संता जाचउ चरन रेन ॥ ले मसतकि लावउ करि क्रिपा देन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गनिका उधरी हरि कहै तोत ॥ गजइंद्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥ बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥ रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥ २ ॥ बधिकु उधारिओ खमि प्रहार ॥ कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ बिदरु उधारिओ दासत भाइ ॥ रे मन तू भी हरि धिआइ ॥ ३ ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ रे मन सेवि तू परहि पार ॥ ४ ॥ धंनै सेविआ बाल बुधि ॥ त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥ बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥ रे मन तू भी होहि दासु ॥ ५ ॥ जैदेव तिआगिओ अहंमेव ॥ नाई उधरिओ सैनु सेव ॥ मनु डीगि न डोलै कहूं जाइ ॥ मन तू भी तरसहि सरणि पाइ ॥ ६ ॥ जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥ से तैं लीने भगत राखि ॥ तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥ इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥ ७ ॥ कबीरि धिआइओ एक रंग ॥ नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥ रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ गुर नानक देव गोविंद रूप ॥ ८ ॥ १ ॥

बसंतु महला ५ ॥ अनिक जनम भ्रमे जोनि माहि ॥ हरि सिमरन बिनु नरकि पाहि ॥ भगति बिहूना खंड खंड ॥ बिनु बूझे जमु देत डंड ॥ १ ॥ गोबिंद भजहु मेरे सदा मीत ॥ साच सबद करि सदा प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतोखु न आवत कहूं काज ॥ धूंम बादर सभि माइआ साज ॥ पाप करंतौ नह संगाइ ॥ बिखु का माता आवै जाइ ॥ २ ॥ हउ हउ करत बधे बिकार ॥ मोह लोभ डूबौ संसार ॥ कामि क्रोधि मनु वसि कीआ ॥ सुपनै नामु न हरि लीआ ॥ ३ ॥ कब ही राजा कब मंगनहारु ॥ दूख सूख बाधौ संसार ॥ मन उधरण का साजु नाहि ॥ पाप बंधन नित पउत जाहि ॥ ४ ॥ ईठ मीत कोऊ सखा नाहि ॥ आपि

बसंतु महला ५ घरु १ दो पंक्तियों वाला 　　　　१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

में मिला लेता है।। ८ ।। १ ।। ६ ।। हे मन, कथाओं-वार्ताओं को सुनकर प्रेम सहित उनको याद रख। केवल एक बार प्रभु के नाम के उच्चारण से अजामिल जैसा पापी पार उतर गया। वाल्मीकि को भी साधसंगत प्राप्त होने से वह ऋषि रूप बन गया। इसी प्रकार ध्रुव को भी प्रभु खुले रूप से आकर मिला।। १ ।। तेरे शान्त पुरुषों की चरण धूलि की मैं कामना करता हूँ। उसे मैं लेकर मस्तक पर लगाऊँ, इसलिए कृपा करके मुझे प्रदान कर।। १ ।। रहाउ।। गणिका (वेश्या) तोते को हरिनाम पढ़ाती हुई पार उतर गई और इसी प्रकार जब गजराज ने प्रभु का सुमिरन किया तो प्रभु ने उसे घड़ियाल से मुक्ति दे दी। सुदामा ब्राह्मण की दरिद्रता को उसने नष्ट कर दिया, इसलिए हे मन, तू भी प्रभु का सुमिरन कर।। २ ।। तीर के साथ मार डालने वाले बधिक का भी प्रभु ने उद्धार कर दिया और अंगूठे पर अपने चरणों को टिका कर उसने कुब्जा का भी उद्धार कर दिया। विदुर को भी उसने उसके दास भाव से उपर उठा दिया, इसलिए हे मन, तू भी प्रभु का ध्यान कर।। ३ ।। प्रहलाद का सम्मान भी प्रभु ने स्वयं बचाया और इसी तरह वस्त्रों को छीने जाने पर द्रौपदी की भी उस प्रभु ने ही लाज बचाई। जिन्होंने भी उसे अन्तिम समय में याद किया, उनका उद्धार हो गया। इसलिए हे मेरे मन, तू उस प्रभु का सुमिरन कर ताकि तू पार उतर सके।। ४ ।। धन्ना भक्त ने बच्चे जैसी निर्दोष बुद्धि से उसका सुमिरन किया और त्रिलोचन ने भी गुरु से मिलकर सिद्धियाँ (सफलता) प्राप्त कर ली। गुरु ने वाणी से अन्तर्मन में भी प्रकाश कर दिया इसलिए हे मन, तू भी उस प्रभु का सेवक बन जा।। ५ ।। जयदेव ने भी अहंकार को त्याग दिया और सैन नाई भी उसका सुमिरन करने से पार उतर गया। उसका मन फिर नहीं डोला और कहीं भी इधर-उधर नहीं भटका ; इसलिए हे मन, तू भी उस प्रभु की शरण में जाने की आकांक्षा बनाए रख।। ६ ।। जिस पर स्वयं कृपा की है हे प्रभु, उन सब भक्तों को तुमने खुद बचा लिया है। उनके गुणों, अवगुणों का तुमने कोई भी विचार नहीं किया और इस प्रकार यह सब देखकर हमारा मन भी सुमिरन में लग गया है।। ७ ।। कबीर ने भी एक रस उसका सुमिरन किया और नामदेव के साथ भी प्रभु ने अपना निवास बनाए रखा। रविदास ने भी अनुपम प्रभु का सुमिरन किया और हे नानक, गुरु ही देवों का देव प्रभु रूप है।। ८ ।। १ ।। बसंत महला ५ ।। हम अनेकों जन्मों में विभिन्न योनियों में भटकते रहे हैं और प्रभु के सुमिरन के बिना नरक में ही जाते रहे हैं। भक्ति से विहीन जीव खण्ड-खण्ड हो जाता है और प्रभु को ना समझने से यम दण्ड लगाता है।। १ ।। हे मेरे मित्रो, सदैव उस प्रभु का भजन करते रहो और सदैव सच्चे शब्द में प्रीति बनाए रखो।। १ ।। रहाउ।। किसी काम से भी सन्तुष्टि प्राप्त नहीं होती क्योंकि माया का यह सारा प्रपंच धुएँ के बादल के समान है। जीव पाप करते हुए जरा सा भी नहीं शर्माता और विकारों के विष में मस्त बना हुआ आवागमन में पड़ा रहता है।। २ ।। मैं-मैं करते हुए व्यक्ति के विकार बढ़ते ही जाते हैं और यह सारा संसार लोभ और मोह में डूबा चला जाता है। काम, क्रोध ने ऐसा मन को वश में किया है कि जीव सपने में भी प्रभु-नाम को याद नहीं करता।। ३ ।। दुख और सुख में बंधा हुआ संसार कभी तो राजा बन जाता है और कभी भिखारी हो जाता है। मन के उद्धार का तो कोई संयोग नहीं बनता क्योंकि पापों के बन्धन इसको सदैव पड़ते ही जाते हैं।। ४ ।। यहां कोई भी इष्ट मित्र अथवा साथी नहीं है और व्यक्ति जो भी

बीजि आपे ही खांहि ॥ जा कै कीन्है होत बिकार ॥ से छोडि चलिआ खिन महि गवार ॥ ५ ॥ माइआ मोहि बहु भरमिआ ॥ किरत रेख करि करमिआ ॥ करणैहारु अलिपतु आपि ॥ नही लेपु प्रभ पुंन पापि ॥ ६ ॥ राखि लेहु गोबिंद दइआल ॥ तेरी सरणि पूरन क्रिपाल ॥ तुझ बिनु दूजा नही ठाउ ॥ करि किरपा प्रभ देहु नाउ ॥ ७ ॥ तू करता तू करणहारु ॥ तू ऊचा तू बहु अपारु ॥ करि किरपा लड़ि लेहु लाइ ॥ नानक दास प्रभ की सरणाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

बसंत की वार महलु ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंते पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥ १ ॥ पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥ ३ ॥ १ ॥

बसंतु बाणी भगतां की ॥ कबीर जी घरु १ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

मउली धरती मउलिआ अकासु ॥ घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥ १ ॥ राजा रामु मउलिआ अनत भाइ ॥ जह देखउ तह रहिआ समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुतीआ मउले चारि बेद ॥ सिंम्रिति मउली सिउ कतेब ॥ २ ॥ संकरु मउलिओ जोग धिआन ॥ कबीर को सुआमी सभ समान ॥ ३ ॥ १ ॥ पंडित जन माते पढ़ि पुरान ॥ जोगी माते जोग धिआन ॥ संनिआसी माते अहंमेव ॥ तपसी माते तप कै भेव ॥ १ ॥ सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घरु मुसन लाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जागै सुकदेउ अरु अकूरु ॥

बोता है वह स्वयं ही खाता है। जिनको इकट्ठा करते रहने से विकार पैदा होते रहे, यह मूर्ख जीव उन सबको छोड़कर क्षण भर में ही यहाँ से चल देता है। माया-मोह के भ्रम में पड़ा हुआ किए हुए कर्मों के लेख के अनुसार ही यह जीव कार्य करता रहता है। वह करने वाला प्रभु स्वयं अलिप्त है और उस प्रभु को पाप-पुण्य कुछ भी प्रभावित नहीं करते।। ६ ।। हे दयालु प्रभु, हमें बचा लो क्योंकि हे पूर्ण एवं दयालु प्रभु, हम तेरी शरण में पड़े हुए हैं। तेरे बिना हमारे लिए दूसरा कोई ठिकाना नही है और हे प्रभु, कृपा करके तुम हमें अपना नाम प्रदान करो।। ७ ।। तू ही कर्ता है और वास्तव में तू ही सब कुछ करने योग्य है; तू ही ऊँचा है और तू ही अपरम्पार है। कृपा करके हमें अपने आँचल से लगा लो क्योंकि हे नानक, प्रभु के दास तो प्रभु की शरण में ही पड़े रहते हैं।। ८ ।। २ ।।

बसंतु की वार महला ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु के नाम का सुमिरन करके हे भाई, तू हरा-भरा हो जा। यह सुहावना मौसम अर्थात नाम सुमिरन का अवसर तुझे लिखे हुए भाग्य-लेखों के अनुसार ही प्राप्त हुआ है। सम्पूर्ण वन और तीनों लोक खिल उठें हैं ओर उन्होंने इस अमृत फल को प्राप्त कर लिया है। साधु पुरुषों से मिलकर सुख उत्पन्न होता है और सारी मैल उतर जाती है। नानक तो केवल एक प्रभु-नाम का ही सुमिरन करता है जिसके कारण फिर जन्म मरण में दौड़ना नहीं पड़ता।। १ ।। जिन्होंने सत्य को ही आसरा बना लिया है उन्होंने पाँचों महाबली विकारों को बांधकर काबू में कर लिया है। प्रभु उनमें प्रकाशित और स्थित होकर अपने चरणों का जाप कराता है। ऐसे व्यक्तियों के रोग, शोक सभी मिट जाते हैं और वे सदैव सब प्रकार से स्वस्थ बने रहते हैं। जो दिन रात उस प्रभु-नाम का सुमिरन करता है उसे मौत के जाल में नही फँसना पड़ता। हे नानक, ऐसा व्यक्ति जिस प्रभु से उत्पन्न होता है फिर उसी के जैसा ही हो जाता है।। २।। यह जीव कहाँ से पैदा होता है, कहाँ रहता है और अन्त में किसमें समाहित हो जाता है। वे जीव जन्तु सभी उस परमात्मा के ही हैं और उस परमात्मा के मूल्य को कौन आँक सकता है। उसके वे भक्त ही शोभायुक्त बने रहते हैं जो उसके बारे में कहते हैं, सुनते हैं और उसका सुमिरन करते हैं। वह प्रभु ही अगम्य एवं अगोचर है और दूसरा तो उसके पास भी नहीं पहुँच सकता। पूर्ण गुरु ने सत्य का उपदेश दिया है जिसे नानक कह कर सुना रहा है।। ३ ।। १ ।।

बसंतु वाणी भक्तों की।। कबीर जी घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सारी धरती और सारा आकाश खिल उठा है और घर-घर में आत्मा के प्रकाश के रूप में वह प्रभु खिला हुआ है।। १ ।। प्रभु सबके अन्दर अनेकों रंगों में खिलकर प्रकट हो रहा है और मैं जिधर भी देखता हूँ वह उधर ही समाया हुआ दिखाई देता है।। १ ।। रहाउ।। दूसरी बात यह भी है कि चारों वेद भी उसके प्रकाश से खिले हुए हैं और स्मृतियाँ तथा सामी धर्म पुस्तक कतेब आदि भी उस प्रभु के नाम के कारण खिली रहती हैं।। २ ।। योग में ध्यान लगाए शंकर भी प्रसन्न बने हुए हैं और कबीर का स्वामी प्रभु तो सबमें एक जैसा ही लीन बना हुआ है।। ३ ।। १ ।। पंडितजन पुराणों को पढ़ने में मस्त हैं; योगी योग के ध्यान में मस्त है, संन्यासी अपने अहंकार में मस्त हैं और तपस्वी अपनी तपस्या के रहस्यों में लीन बने हुए हैं।। १ ।। माया के नशे में सभी मस्त हैं और कोई भी सावधान नहीं बना हुआ है; इसीलिए साथ ही साथ विकार रूपी चोर घर को लूटने में भी लगे हुए हैं।। १ ।। रहाउ।। शुकदेव और कृष्ण-भक्त अक्रूर सावधान बने रहने वाले थे

हणवंतु जागै धरि लंकूरु ॥ संकरु जागै चरन सेव ॥ कलि जागे नामा जैदेव ॥ २ ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरमुखि जागै सोई सारु ॥ इसु देही के अधिक काम ॥ कहि कबीर भजि राम राम ॥ ३ ॥ २ ॥ जोइ खसमु है जाइआ ॥ पूति बापु खेलाइआ ॥ बिनु स्रवणा खीरु पिलाइआ ॥ १ ॥ देखहु लोगा कलि को भाउ ॥ सुति मुकलाई अपनी माउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पगा बिनु हुरीआ मारता ॥ बदनै बिनु खिर खिर हासता ॥ निद्रा बिनु नरु पै सोवै ॥ बिनु बासन खीरु बिलोवै ॥ २ ॥ बिनु असथन गऊ लवेरी ॥ पैडे बिनु बाट घनेरी ॥ बिनु सतिगुर बाट न पाई ॥ कहु कबीर समझाई ॥ ३ ॥ ३ ॥ प्रहलाद पठाए पड़न साल ॥ संगि सखा बहु लीए बाल ॥ मो कउ कहा पढ़ावसि आल जाल ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु स्री गोपाल ॥ १ ॥ नही छोडउ रे बाबा राम नाम ॥ मेरो अउर पढ़न सिउ नही कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संडै मरकै कहिओ जाइ ॥ प्रहलाद बुलाए बेगि धाइ ॥ तू राम कहन की छोडु बानि ॥ तुझु तुरतु छडाऊ मेरो कहिओ मानि ॥ २ ॥ मो कउ कहा सतावहु बार बार ॥ प्रभि जल थल गिरि कीए पहार ॥ इकु रामु न छोडउ गुरहि गारि ॥ मो कउ घालि जारि भावै मारि डारि ॥ ३ ॥ काढि खड़गु कोपिओ रिसाइ ॥ तुझ राखनहारो मोहि बताइ ॥ प्रभ थंभ ते निकसे कै बिसथार ॥ हरनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥ ४ ॥ ओइ परम पुरख देवाधि देव ॥ भगति हेति नरसिंघ भेव ॥ कहि कबीर को लखै न पार ॥ प्रहलाद उधारे अनिक बार ॥ ५ ॥ ४ ॥ इसु तन मन मधे मदन चोर ॥ जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर ॥ मै अनाथु प्रभ कहउ काहि ॥ को को न बिगूतो मै को आहि ॥ १ ॥ माधउ दारुन दुखु सहिओ न जाइ ॥ मेरो चपल बुधि सिउ कहा बसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सनक सनंदन सिव सुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रहमादि ॥ कबि जन जोगी जटाधारि ॥ सभ आपन अउसर चले सारि ॥ २ ॥ तू अथाहु मोहि थाह नाहि ॥ प्रभ दीना नाथ दुखु कहउ काहि ॥ मोरो जनम मरन दुखु आथि धीर ॥ सुख सागर गुन रउ कबीर ॥ ३ ॥ ५ ॥ नाइकु एकु बनजारे पाच ॥ बरध पचीसक संगु काच ॥ नउ बहीआं दस गोनि आहि ॥ कसनि बहतरि लागी ताहि ॥ १ ॥

और लम्बी, पूंछ को धारण करने वाले हनुमान भी सदैव जगे रहने वाले कहे जाते हैं। प्रभु के चरणों की सेवा करके शिव भी चेतन बने रहते हैं और कलियुग में नामदेव और जयदेव जैसे भक्त भी जागृत अवस्था वाले हुए हैं।। २ ।। जागना और सोना अनेकों प्रकार का है परन्तु जो गुरमुख बनकर जागता है वही श्रेष्ट है। इस शरीर के अधिक काम आने वाली बात यह है कि हे कबीर, तू राम नाम का सुमिरन कर ले।। ३ ।। २ ।। स्त्री ने अपने पति को पैदा किया अर्थात माया रूपी स्त्री ने अपने मन रूपी पति को पैदा किया है जो उसको भोगता है। पुत्र रूपी मन यहाँ अपने बाप रूपी आत्मा को खेलाता है और यह मन आनन्द रूप स्तनों के बिना ही जीवात्मा को विकारों का दूध पिला रहा है।। १ ।। हे लोगो, कलियुग का प्रताप देखो कि मन रूपी पुत्र ने माया रूपी माँ से विवाह कर लिया है।। १ ।। रहाउ।। यह पाँव के बिना ही लम्बी-लम्बी छलाँगे मारता है और मुँह के बगैर ही खिलखिला कर हँसता रहता है। यह निद्रा के बिना ही अर्थात ज्योति स्वरूप होने के कारण अज्ञान की नींद के बिना ही व्यक्ति के शरीर में आकर लम्बी तानकर सोता रहता है और बिना बर्तन के ही दूध को बिलोने का व्यर्थ काम करता रहता है।। २ ।। यहाँ तो स्तनों के बिना ही माया रूपी गाय दूध देती रहती है और इस मन के सामने कोई लम्बा रास्ता तय करने के लिए नहीं है अर्थात सब कुछ इस मन के अन्दर ही स्थित है परन्तु इसने व्यर्थ ही भागदौड़ मचाकर अपने रास्ते को लम्बा किया है। कबीर समझा कर इस बात को कहता है कि सच्चे गुरु के बिना कोई भी सीधा रास्ता प्राप्त नहीं कर सकता।। ३ ।। ३ ।। प्रहलाद को पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा गया जहाँ उसने अपने साथ बहुत से बच्चों और मित्रों को भी ले लिया। वह अध यापक से कहने लगा कि मुझे यह घरेलू जंजालों की बातें क्या पढ़ाते हो; मेरी पट्टी पर तो तुम केवल श्री प्रभु का ही नाम लिख दो।। १ ।। अरे बाबा, मैं राम नाम (प्रभु) को नहीं छोड़ूँगा और मेरा अन्य कुछ भी पढ़ने से कोई वास्ता नहीं है।। १ ।। रहाउ।। षण्ड और अमरक (अध्यापकों) ने जाकर हिरण्यकश्यपु से कहा और शीघ्र ही दौड़कर प्रहलाद को राजा के सामने बुला लिया गया। तू यह राम कहने का स्वभाव छोड़ दे और मेरा कहना मान ले; मैं तुरन्त तुझे छोड़ दूंगा।। २ ।। प्रहलाद ने कहा कि मुझे बार-बार क्यों तंग करते हो क्योंकि जल-स्थल और पहाड़ों को बनाने वाला केवल वह प्रभु ही है। मैं एक प्रभु के नाम को नहीं छोडूंगा क्योंकि यदि मैं ऐसा करता हूँ तो मेरे गुरु (प्रभु) को गाली लगती है। तुम चाहो तो मुझे जला दो और चाहो तो मुझे मार डालो।। ३ ।। खड़ग को निकाल कर और अत्यन्त क्रोधित होकर हिरण्यकश्यपु ने कहा कि बता तेरी रक्षा करने वाला कौन और कहाँ है। विशाल रूप धारण करके प्रभु खम्भे में से ही निकल आए और हिरण्यकश्यपु को अपने नाखूनों से ही छेदकर उन्होंने मार डाला।। ४ ।। वह प्रभु ही परम-पुरुष देवताओं का भी इष्ट है। भक्त के लिए ही उसने नरसिंह का रूप धारण किया। कबीर कहता है कि उसकी सीमा को कोई नहीं जान सकता और प्रहलाद की तरह उसने अनेकों बार अपने भक्तों का उद्धार किया है।। ५ ।। ४ ।। इस शरीर और मन में ही कामदेव जैसा चोर बसा हुआ है जिसने मेरे ज्ञान रूपी रत्न को चुरा लिया है। हे प्रभु, मैं अनाथ किसके सामने पुकार लगाऊं। इस काम के कारण कौन-कौन नष्ट नहीं हुआ है फिर इसके सामने भला मैं क्या हूँ।। १ ।। हे प्रभु, इसका भीषण दुख सहा नहीं जाता। मेरी अस्थिर बुद्धि वाले व्यक्ति की उसके सामने भला क्या बिसात है।। १ ।। रहाउ।। सनक सनन्दन, शिव, योगी, जटाधारी आदि सभी अपना समय व्यतीत करके यहाँ से चले गए हैं।। २ ।। एक तू ही अथाह है और मुझे तेरे ओर-छोर का कोई पता नहीं लगता। हे दीनानाथ प्रभु, तेरे सिवा मैं अपना दुख किससे कहूं। मुझे जन्म-मरण के दुख में धैर्य मिलता रहे और हे कबीर, मैं सुखों के सागर प्रभु के गुणों का सुमिरन करता रहूं।। ३ ।। ५ ।। साहूकार तो केवल एक मन ही है परन्तु आगे इसके विकार रूपी पाँच व्यापारी हैं। पच्चीस प्रकृतियाँ (गुण) बैल रूप में इसके साथ हैं। इसके नौ (गोलकों के रूप में) सामान उठाने वाले लचकीले डंडे हैं। दस इन्द्रियाँ इसकी गाँठे हैं और बहत्तर नाड़ियाँ इसके अन्य सामान को कसने वाली रस्सियां हैं।। १ ।।

मोहि ऐसे बनज सिउ नहीन काजु ॥ जिह घटै मूलु नित बढै बिआजु ॥ रहाउ ॥ सात सूत मिलि बनजु कीन ॥ करम भावनी संग लीन ॥ तीनि जगाती करत रारि ॥ चलो बनजारा हाथ झारि ॥ २ ॥ पूंजी हिरानी बनजु टूट ॥ दह दिस टांडो गइओ फूटि ॥ कहि कबीर मन सरसी काज ॥ सहज समानो त भरम भाज ॥ ३ ॥ ६ ॥

बसंतु हिंडोलु घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

माता जूठी पिता भी जूठा जूठे ही फल लागे ॥ आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे ॥ १ ॥ कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ॥ जहां बैसि हउ भोजनु खाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहबा जूठी बोलत जूठा करन नेत्र सभि जूठे ॥ इंद्री की जूठि उतरसि नाही ब्रहम अगनि के लूठे ॥ २ ॥ अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइआ ॥ जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइआ ॥ ३ ॥ गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥ कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

रामानंद जी घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥ मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ पूजन चाली ब्रहम ठाइ ॥ सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ॥ १ ॥ जहा जाईऐ तह जल पखान ॥ तू पूरि रहिओ है सभ समान ॥ बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥ ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥ २ ॥ सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥ जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ॥ गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥ ३ ॥ १ ॥

बसंतु बाणी नामदेउ जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥ चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥ १ ॥ तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ॥ चरन कमल मेरे हीअरे बसैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु मांडै ॥ तैसे संत जनां राम नामु न छाडैं ॥ २ ॥ गंगा गइआ गोदावरी

मुझे ऐसे व्यापार से कुछ भी लेना देना नहीं है जिसमें मूलधन तो घटता जाता है और व्याज सदैव बढ़ता ही जाता है।। रहाउ।। इन व्यापारियों ने मिलकर कई प्रकार के सूतों अर्थात विषय-विकारों का व्यापार किया और किए हुए कर्मों के संस्कार अपने साथ ले लिए हैं। कर लेने वाले तीनों गुण भी इनसे झगड़ा मचाए रहते हैं और अन्त में ये व्यापारी हाथ झाड़कर यहाँ से चल पड़ते हैं।। २ ।। इसकी साँस रूपी पूंजी समाप्त हो गई और इसका व्यापार भी बिखर गया । व्यक्ति का काफिला अर्थात शरीर भी दसों दिशाओं में भागने के फलस्वरूप खण्ड-खण्ड हो गया। कबीर कहता है कि हे मन, तेरा काम तभी बनेगा यदि तू सहज भाव में अर्थात अपने मूल पवित्र स्वरूप में लीन होगा; ऐसा होने से ही तेरे भ्रम भाग खड़े होंगे।। ३ ।। ६।।

बसंतु हिंडोलु घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जब माता और पिता जूठे हैं तो उनको फल भी जूठन जैसा ही लगेगा अर्थात उनका परिवार भी अपवित्र ही होगा। आने वाले जाने वाले सभी जूठे हैं और विकारों की जूठन में पड़े हुए ये अभागे जीव मरते रहते हैं।। १ ।। अरे पंडित, यह तो बता कि पवित्र स्थान कौन सा है जहाँ बैठकर मैं भोजन खाऊँ।। १ ।। रहाउ।। जीभ झूठ बोलती है और इसी प्रकार कान और नेत्र सबका व्यवहार जूठन में ही है। ब्राह्मण होने के अहंकार की अग्नि में तू जल रहा है परन्तु तुझसे इन्द्रियों की जूठन तो छोड़ी नहीं जाती।। २ ।। दरअसल अग्नि, पानी और बैठकर पकाने वाले सभी जूठन में ही लीन हैं। परोसने वाली कलछुल भी जूठी है और बैठकर खाने वाले लोग भी जूठन से भरे हैं।। ३ ।। गोबर-चौका और उस पर लगाई हुई लकीरें सभी अपवित्र ही हैं। कबीर कहता है कि केवल वे व्यक्ति ही शुद्ध और पवित्र हैं जिनके हृदय में सच्चे विचार निवास बनाए रहते हैं।। ४ ।। १ ।। ७ ।।

रामानन्द जी घरु १ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हम इधर-उधर क्यों जाएँ जब घर में ही मौज बनी हुई है। मेरा चित्त अब चलायमान नहीं होता और मेरा मन लँगड़ा होकर स्थिर हो गया है।। १ ।। रहाउ।। मेरे मन में एक दिन ऐसी उमंग उठी कि इत्र, चन्दन और अनेक प्रकार की सुगन्धियों को घिसकर मैं जिस प्रभु की पूजा करने के लिए ठाकुरद्वारे (मन्दिर) में पहुँची, उस प्रभु का स्थान तो गुरु ने मुझे मेरे मन में ही समझा दिया है।। १ ।। हम उसे ढूँढने के लिए जल वाले तीर्थों और पत्थरों वाले ठाकुरद्वारों पर जाते हैं परन्तु हे प्रभु, तू तो सर्वत्र समानभाव से भरपूर बना हुआ है। सभी वेदों, पुराणों को हमने खोजकर यह पाया है कि वहाँ तो तब जाया जाए यदि वह यहाँ ही हमारे हृदय में स्थित ना हो।। २ ।। हे सच्चे गुरु, मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ जिसने मेरे सभी भ्रम और व्याकुलताएँ समाप्त कर दी हैं। हे रामानन्द, वह स्वामी ब्रह्म तो सबमें रमण कर रहा है तथा वास्तव में शब्द-गुरु ही करोड़ों कर्मकाण्डों के सँस्कारों को नाश करने वाला है।। ३ ।। १ ।।

बसंतु वाणी नामदेव जी की १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

यदि मालिक संकट में डाल दे और सेवक भाग जाए तो वह बहुत समय तक जीवित नहीं रहता और उसे तथा उसके वंश को लज्जित होना पड़ता है।। १ ।। हे प्रभु, मैं तेरी भक्ति को नहीं छोड़ूंगा बेशक लोग मुझ पर हँसते रहें। तेरे चरण कमल मेरे हृदय में सदैव बसते रहें।। १ ।। रहाउ।। जैसे अपने धन को बचाने के लिए प्राणी मरने मारने की ठान लेता है उसी प्रकार सन्तजन भी

संसार के कामा ॥ नाराइणु सुप्रसंन होइ त सेवकु नामा ॥ ३ ॥ १ ॥ लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥ काइआ डूबै केसवा ॥ १ ॥ संसारु समुंदे तारि गोबिंदे ॥ तारि लै बाप बीठुला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥ तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥ २ ॥ होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥ पारि उतारे केसवा ॥ ३ ॥ नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥ मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥ ४ ॥ २ ॥ सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥ पीछै तिनका लै करि हांकती ॥ १ ॥ जैसे पनकत थ्रूटिटि हांकती ॥ सरि धोवन चाली लाडुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धोबी धोवै बिरह बिराता ॥ हरि चरन मेरा मनु राता ॥ २ ॥ भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥ अपने भगत पर करि दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

बसंतु बाणी रविदास जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥ पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥ गरबवती का नाही ठाउ ॥ तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥ १ ॥ तू कांइ गरबहि बावली ॥ जैसे भादउ खूंबराजु तू तिस ते खरी उतावली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु ॥ तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु ॥ अप तन का जो करे बीचारु ॥ तिसु नही जमकंकरु करे खुआरु ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥ ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥ ३ ॥ साधू की जउ लेहि ओट ॥ तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ कहि रविदास जुो जपै नामु ॥ तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ४ ॥ १ ॥

बसंतु कबीर जीउ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुरह की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूंछट ऊपरि झमक बाल ॥ १ ॥ इस घर महि है सु तू ढूंढि खाहि ॥ अउर किस ही के तू मति ही जाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥ चाकी का चीथरा कहां लै जाहि ॥ २ ॥ छीके पर तेरी बहुतु डीठि ॥ मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥ ३ ॥ कहि कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट ढेम ॥ ४ ॥ १ ॥

राम-नाम को नहीं छोड़ते।। २ ।। गंगा, गया, गोदावरी के स्नान के लिए जाना ये सब साँसारिक कर्मकाण्ड हैं। हे नामदेव, यदि प्रभु प्रसन्न हो जाए तो तभी यह प्राणी उसका सच्चा सेवक कहला सकता है।। ३ ।। १ ।। हे प्रभु, लोभ की लहरें भयानक रूप से मेरे अन्दर गरज-गरज कर उठ रही हैं और मेरा शरीर इनमें डूबता जा रहा है।। १ ।। हे प्रभु, यह संसार एक समुद्र है मुझे इससे पार उतार दो और हे प्रभु, तू ही मेरा पिता है तुम मुझे पार लगा दो।। १ ।। रहाउ।। मेरा जीवन का बेड़ा हवा के थपेड़ों में फँसा हुआ है जिसे मैं खेकर आगे नहीं ले जा पा रहा हूँ। हे प्रभु, मैंने तेरे रहस्य को नहीं जाना है।। २ ।। दयालु होकर तू मुझे सच्चे गुरु से मिला दे और हे प्रभु, मुझे पार उतार दे।। ३ ।। नामदेव कहता है कि मैं तो तैरना भी नहीं जानता इसलिए हे प्रभु, मुझे अपनी बाँह का सहारा दे।। ४ ।। २ ।। पहले तो धूल की लदी हुई गाड़ी अर्थात पापों से भरी शरीर की गाड़ी सत्संग रूपी सरोवर की ओर धीर-धीरे चली है परन्तु पीछे से प्रेरणा और उत्साह रूपी डंडा जब जीव के शरीर को लगा कर उसे हाँका गया तो वह आगे चल पड़ी।। १ ।। जैसे-जैसे वह गुरु रूपी जल के सरोवर की तरफ थर-थर की आवाज के साथ हाँकी जाती है तो जीव-स्त्री भी उस सरोवर पर अपने कर्मों के संस्कारों को धोने के लिए तैयार हो जाती है।। १ ।। रहाउ।। वह प्रभु रूपी धोबी विरह में विरक्त बना हुआ सबकी मैल धोता है और कहता है कि हे सबमें व्याप्त प्रभु, अपने भक्त पर दया कर।। ३ ।। ३ ।।

बसंतु वाणी रविदास जी   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

तुझे कुछ भी पता नहीं चल रहा और तू अपने पहरावे के ठाट-बाट को देखकर ही अकड़ रहा है। अहंकार वाले व्यक्ति को कोई ठिकाना नहीं मिलता और काल रूपी कौआ तेरी गर्दन पर ही मँडराता रहता है।। १ ।। हे बावली, तू क्यों अभिमान कर रही है। भादों के महीने में कुकुरमुत्ता उगता है और जल्दी ही थोड़ा बड़ा होकर सड़ जाता है; हे जीव रूपी स्त्री, तू तो उससे भी ज्यादा उतावली में है।। १ ।। रहाउ।। हिरन अपने अन्दर की कस्तूरी का रहस्य नहीं जान पाता और अपने ही तन की सुगन्धि को दूसरे स्थानों पर ढूँढता फिरता है। जो अपने शरीर की उपयोगिता के बारे में चिंतन करता है उसे यमदूत ख्वार नहीं करता।। २ ।। तू पुत्रों, स्त्रियों का अहंकार करता है परन्तु तेरे सिर पर लेखा माँगने वाला मालिक बना रहता है। किए हुए कर्मों का दुख तो जीव को सहना ही पड़ेगा, फिर तू बाद में अपना प्यारा-प्यारा कह कर किसे पुकारेगा।। ३ ।। यदि तू साधु-पुरुषों की शरण में आ जाए तो तेरे करोड़ों पाप मिट जाएंगे। रविदास कहता है कि जो प्रभु के नाम का सुमिरन करता है उसे फिर जाति, जन्म और योनि से कोई भी वास्ता नहीं रह जाता।। ४ ।। १ ।।

बसंतु कबीर जी   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

(कुत्ते को देखकर कबीर जी कहते हैं) तेरी चाल तो सुरभि (कामनापूर्ण करने वाली गाय) जैसी है और तेरी पूंछ पर भी बाल चमक रहे हैं।। १ ।। जो कुछ इस घर में है तू ढूंढ कर खा ले और अन्य किसी के पास तू मत जा।। १ ।। रहाउ।। चक्की का आटा तू चाटकर खा ले लेकिन चक्की के पास पड़े हुए चिथडे को तू कहाँ ले जा रहा है।। २ ।। तूने छीके पर भी अपनी नज़र गड़ा रखी है; कहीं ऐसा न हो कि लकड़ी का डंडा तेरी पीठ पर पड़ जाए।। ३ ।। कबीर कहता है कि भली प्रकार से खाकर आनन्द ले लिया है अतः अब आराम से चले जाओ कहीं कोई ईंट-पत्थर ही ना तुझे मार दे।। ४ ।। १ ।। (कुत्ते के रूपक के माध्यम से जीव की उस भावना का भी वर्णन कबीर जी करते हैं जिस भावना का बंधा हुआ जीव सांसारिक पदार्थों का लोभ करता है और अपनी नज़र को सदैव उपर की ओर ही गड़ाए रहता है। पदार्थों को भोगने के बाद भी उसकी सन्तुष्टि नहीं होती और उसका अन्त बुरा होता है।)

राागु सारग चउपदे महला १ घरु १

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥ चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥ मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥ १ ॥ मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे ॥ जब की राम रंगीलै राती राम जपत मन धीरे ॥ २ ॥ हउमै छोडि भई बैरागनि तब साची सुरति समानी ॥ अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ विसरी लाज लुोकानी ॥ ३ ॥ भूर भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ दुखु बिआपै ॥ जिहवा सादु न फीकी रस बिनु बिनु प्रभ कालु संतापै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु दरसु न परसै प्रीतम तब लगु भूख पिआसी ॥ दरसनु देखत ही मनु मानिआ जल रसि कमल बिगासी ॥ १ ॥ ऊनवि घनहरु गरजै बरसै कोकिल मोर बैरागै ॥ तरवर बिरख बिहंग भुइअंगम घरि पिरु धन सोहागै ॥ २ ॥ कुचिल कुरूपि कुनारि कुलखनी पिर का सहजु न जानिआ ॥ हरि रस रंगि रसन नही त्रिपती दुरमति दूख समानिआ ॥ ३ ॥ आइ न जावै ना दुखु पावै ना दुख दरदु सरीरे ॥ नानक प्रभ ते सहज सुहेली प्रभ देखत ही मनु धीरे ॥ ४ ॥ २ ॥ सारग महला १ ॥ दूरि नाही मोरो प्रभु पिआरा ॥ सतिगुर बचनि

रागु सारग चौपदे महला १ घरु १

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

मैं तो अपने ठाकुर की दासी हूँ; संसार के जीवन प्रभु के मैंने चरण पकड़ लिए हैं और अहंकार को मारकर समाप्त कर दिया है।। १ ।। रहाउ।। हमारे प्राणों के प्यारे परमेश्वर तुम पूर्ण और परम ज्योति स्वरूप हो। मोहन बनकर तुमने मेरा मन मोह लिया है परन्तु मन तुझे शब्द के चिंतन के फलस्वरूप ही समझता है।। १ ।। मनमुख व्यक्ति हीन, ओछी और झूठी मति वाला होता है और उसके शरीर तथा मन में पीड़ा ही पीड़ा बनी रहती है। मैं तो जबसे उस रंगीले प्रभु में लीन हो गई हूँ तबसे प्रभु का सुमिरन करते हुए मेरे मन को धीरज आ गया है।। २ ।। जब अहंकार को छोड़कर मैं जगत के झूठे सम्बन्धों के संदर्भ में वैराग्यवान हो गई हूँ तभी मैं सच्ची सुरति के माध्यम से उस प्रभु में लीन हो गई हूँ। कुलातीत और कालिमा विहीन उस प्रभु के साथ मेरा मन लग गया है और मुझे अब लोक लाज भूल गई है।। ३।। भूत और भविष्य में हमारे प्राणों का आधार हे मेरे प्रियतम, कोई भी नहीं है। हे नानक, जीव स्त्री सुहागिन बनकर प्रभु के नाम में लीन हो गई है और प्रभु ही उसका पति बन गया है।। ४ ।। १ ।। सारंग महला १ ।। प्रभु बिना कैसे रहें क्योंकि दुख सताता रहता है। प्रभु-नाम के रस के बिना जीभ का स्वाद भी फीका हो गया है और प्रभु के बिना काल भी दुख देता रहता है।। १ ।। रहाउ।। जब तक प्रभु प्रियतम के दर्शन नहीं होते तब तक मैं भूखी प्यासी ही बनी रहूँगी। उसके दर्शन को देखते ही मन इस प्रकार प्रसन्न हो उठा जैसे जल में डूब कर कमल खिल उठता है।। १ ।। बादल झुककर गरज और बरस रहे हैं और कोयल तथा मोर के हृदय में प्रेम उत्पन्न कर रहे हैं। पेड़, पक्षी, सर्प आदि जल के बरसने से खुश होते हैं उसी प्रकार जिस सुहागिन के घर में पति है वह स्त्री आनन्द का उपभोग करती है।। २ ।। कुलक्षणा स्त्री गन्दी और कुरूप होती है जिसने प्रियतम के स्वभाव को नहीं जाना है। जिसकी जीभ प्रभु के प्रेम में सन्तुष्ट नहीं हुई वह दुर्मति के कारण दुखों में पड़ी रहती है।। ३ ।। हे नानक, प्रभु को देखते ही स्वाभाविक रूप से ही सुहागिन स्त्री के मन में धैर्य और सुख आ जाता है और वह फिर ना तो आवागमन में पड़ती है, ना दुखी होती है और ना उसके शरीर को दुख-दर्द सताता है ।। ४ ।। २ ।। सारग महला १ ।। मेरा प्यारा प्रभु दूर नहीं है। सच्चे गुरु के

मेरो मनु मानिआ हरि पाए प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इन बिधि हरि मिलीऐ वर कामनि धन सोहागु पिआरी ॥ जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी ॥ १ ॥ जिसु मनु मानै अभिमानु न ता कउ हिंसा लोभु विसारे ॥ सहजि रवै वरु कामणि पिर की गुरमुखि रंगि सवारे ॥ २ ॥ जारउ ऐसी प्रीति कुटंब सनबंधी माइआ मोह पसारी ॥ जिसु अंतरि प्रीति राम रसु नाही दुबिधा करम बिकारी ॥ ३ ॥ अंतरि रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी ॥ नानक गुरमुखि नामु अमोलकु जुगि जुगि अंतरि धारी ॥ ४ ॥ ३ ॥

सारंग महला ४ घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि के संत जना की हम धूरि ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ आतम रामु रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु संतु मिलै सांति पाईऐ किलविख दुख काटे सभि दूरि ॥ आतम जोति भई परफूलित पुरखु निरंजनु देखिआ हजूरि ॥ १ ॥ वडै भागि सतसंगति पाई हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीआ सतसंगति पग नाए धूरि ॥ २ ॥ दुरमति बिकार मलीन मति होछी हिरदा कुसुधु लागा मोह कूरु ॥ बिनु करमा किउ संगति पाईऐ हउमै बिआपि रहिआ मनु झूरि ॥ ३ ॥ होहु दइआल क्रिपा करि हरि जी मागउ सतसंगति पग धूरि ॥ नानक संतु मिलै हरि पाईऐ जनु हरि भेटिआ रामु हजूरि ॥ ४ ॥ १ ॥ सारंग महला ४ ॥ गोबिंद चरनन कउ बलिहारी ॥ भवजलु जगतु न जाई तरणा जपि हरि हरि पारि उतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै प्रतीति बनी प्रभ केरी सेवा सुरति बीचारी ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै सरब कला गुणकारी ॥ १ ॥ प्रभु अगम अगोचरु रविआ स्रब ठाई मनि तनि अलख अपारी ॥ गुर किरपाल भए तब पाइआ हिरदै अलखु लखारी ॥ २ ॥ अंतरि हरि नामु सरब धरणीधर साकत कउ दूरि भइआ अहंकारी ॥ त्रिसना जलत न कबहू बूझहि जूऐ बाजी हारी ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि गुन गावहि गुरि किंचत किरपा धारी ॥ नानक जिन

उपदेश में मेरा मन तृप्त हो गया है और उसने प्राणों के आधार प्रभु को पा लिया है।। १ ।। रहाउ।। हे सुन्दर स्त्री, इस प्रकार प्रभु से मिलाप होता है और वह अपने सुहाग प्रभु की प्यारी बनी रहती है। गुरमति के माध्यम से शब्द का विचार करते हुए हमारी जाति, वर्ण और कुल का भय एवं अभिमान समाप्त हो गया।। १ ।। जिसका मन मान गया है उसे अभिमान नहीं होता तथा वह हिंसा और लोभ को भूल जाता है। सुहागिन स्त्री अपने प्रभु रूपी वर का स्वाभाविक रूप से ही आनन्द लेती है और गुरु के माध्यम से अपने आपको प्रेम के साथ सँवार लेती है।। २ ।। मैं कुटुम्ब, सम्बन्धी और माया-मोह के अन्य प्रसारों वाली प्रीति को जला डालूँ जिसके अन्तर्गत प्रभु-नाम के रस में प्रेम नहीं लगता और विकारों वाले दुविधा पूर्ण कर्म होते रहते हैं।। ३ ।। जिसके अन्तर्मन में प्रेम पदार्थ रूपी रत्न है वह छिपा नहीं रह पाता अर्थात सभी उसे जान जाते हैं। हे नानक, युगों-युगों में उसके अन्तर्मन में प्रभु का अमूल्य नाम बसा रहता है क्योंकि वह गुरमुख बन चुकी होती है।। ४ ।। ३ ।।

सारंग महला ४ घरु १ ੧ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु के सन्तजनों की तो हम चरणधूलि हैं। सत्संगति से मिलकर हमने परम पद को प्राप्त कर लिया है और जान लिया है कि वह प्रभु ही सब ओर व्याप्त है।। १ ।। रहाउ।। सच्चा गुरु रूपी सन्त यदि प्राप्त हो जाए तो शान्ति मिलती है और वह पापों के दुखों को नष्ट करके दूर कर देता है। उस प्रभु को जब प्रत्यक्ष रूप से हृदय में देख लिया तो हमारी आत्मा की ज्योति और अधिक प्रज्जवलित हो उठी।। १ ।। बड़े भाग्य से हमने सत्संगति प्राप्त की है और जाना है कि प्रभु का नाम ही भरपूर रूप से सर्वत्र व्याप्त है। सत्संगत की चरणधूलि में स्नान करके तो हमने अड़सठ तीर्थों के स्नान का फल पा लिया है।। २ ।। हमारी विकारों में मलीन दुर्मति ओछी है और हमारे अशुद्ध हृदय में झूठा मोह लगा हुआ है। बिना भाग्य के संगति कहाँ प्राप्त होती है क्योंकि हमारे मन में अहंकार भरा पड़ा है और हमें पछतावा बना हुआ है।। ३ ।। हे प्रभु, दयालु होकर कृपा करो, मैं तुमसे सत्संगत की चरणधूलि माँगता हूँ। हे नानक, जब शान्त पुरुष से मिलाप होता है तो प्रभु को प्राप्त कर लिया जाता है और प्रभु का सेवक उस प्रभु से प्रत्यक्ष रूप में मिल लेता है।। ४ ।। १ ।। सारंग महला ४।। प्रभु के चरणों पर मैं बलिहारी जाता हूँ। यह संसार सागर तैरा नहीं जा सकता, इसे तो केवल प्रभु का सुमिरन करके ही पार किया जा सकता है।। १ ।। रहाउ।। जब सुरति में उसकी सेवा का विचार किया गया तब हृदय में उस प्रभु की प्रीति बन गई। हे जीव, अब तू हृदय में राम-नाम का जाप कर क्योंकि वही सर्वशक्तिमान और गुणों वाला है।। १ ।। अगम्य, अगोचर प्रभु सभी स्थानों में रमण कर रहा है और मन तन में भी वही अदृष्ट और अपरम्पर प्रभु है। जब गुरु कृपा करता है तभी वह अदृष्ट प्रभु हृदय में देख लिया जाता है।। २ ।। प्रभु-नाम जो सारी धरती को धारण करने वाला है वह तो अन्दर ही है परन्त अहंकारी और प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति के लिए वह बहुत दूर हो गया है। तृष्णा में जलते हुए उसने कभी भी इसे नहीं समझा है और जुए में ही जीवन की बाजी को हार दिया है।। ३ ।। उठते-बैठते हुए यह तब प्रभु के गुण गाता है जब गुरु इस पर थोड़ी सी कृपा कर देता है। हे नानक,

कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥ ४ ॥ २ ॥ सारग महला ४ ॥ हरि हरि अंम्रित नामु देहु पिआरे ॥ जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ जिन के काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जन दीन भए गुर आगै तिन के दूख निवारे ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ॥ १ ॥ हिरदै नामु अंम्रित रसु रसना रसु गावहि रसु बीचारे ॥ गुर परसादि अंम्रित रसु चीन्हिआ ओइ पावहि मोख दुआरे ॥ २ ॥ सतिगुरु पुरखु अचलु अचला मति जिसु द्रिड़ता नामु अधारे ॥ तिसु आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥ ३ ॥ मनमुख भ्रमि दूजै भाइ लागे अंतरि अगिआन गुबारे ॥ सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरवारि न पारे ॥ ४ ॥ सरबे घटि घटि रविआ सुआमी सरब कला कल धारे ॥ नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे ॥ ५ ॥ ३ ॥ सारग महला ४ ॥ गोबिद की ऐसी कार कमाइ ॥ जो किछु करे सु सति करि मानहु गुरमुखि नामि रहहु लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति मीठी अवर विसरि सभ जाइ ॥ अनदिनु रहसु भइआ मनु मानिआ जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ जब गुण गाइ तब ही मनु त्रिपतै सांति वसै मान आइ ॥ गुर किरपाल भए तब पाइआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ २ ॥ मति प्रगास भई हरि धिआइआ गिआनि तति लिव लाइ ॥ अंतरि जोति प्रगटी मनु मानिआ हरि सहजि समाधि लगाइ ॥ ३ ॥ हिरदै कपटु नित कपटु कमावहि मुखहु हरि हरि सुणाइ ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइ ॥ ४ ॥ जब सुप्रसंन भए प्रभ मेरे गुरमुखि परचा लाइ ॥ नानक नाम निरंजनु पाइआ नामु जपत सुखु पाइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ सारग महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि मनु मानी ॥ मेरै हीअरै सतिगुरि प्रीति लगाई मनि हरि हरि कथा सुखानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल होवहु जन ऊपरि जन देवहु अकथ कहानी ॥ संत जना मिलि हरि रसु पाइआ हरि मनि तनि मीठ लगानी ॥ १ ॥ हरि कै रंगि रते बैरागी जिन्ह गुरमति नामु पछानी ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ सुखु पाइआ सभ चूकी आवण जानी ॥ २ ॥ नैणी बिरहु देखा प्रभ

जिन पर उस प्रभु की कृपा दृष्टि हो गई है, प्रभु ने उनकी इज़्ज़त को बचा लिया है।। ४ ।। २ ।। सारग महला ४ ।। हे प्यारे प्रभु, मुझे अपना अमृत नाम प्रदान करो। जिन गुरमुख बने हुओं पर प्रभु का मन प्रसन्न हो गया, उनके सभी काम वह सँवार देता है।। १ ।। रहाउ।। जो सेवक गुरु के सामने विनम्र बने रहते हैं वह उनके दुख दूर कर देता है। वह दिन-रात गुरु के सामने भक्ति भाव से बने रहते हैं और शब्द-गुरु के माध्यम से उनके काम सँवर जाते हैं।। १।। उनके हृदय में अमृत नाम का रस होता है, वे जीभ से प्रभु के नाम रस का गुणानुवाद करते हैं और उसी के रस का चिंतन करते रहते हैं। गुरु की कृपा से उन्होंने अमृत रस को पहचान लिया होता है और वे मोक्ष के द्वार को पा जाते हैं।। २ ।। सच्चा गुरु-पुरुष अटल है, अटल मति वाला है जिसने दृढ़ता पूर्वक प्रभु-नाम को आधार बनाया होता है। मैं उसको अपने प्राण अर्पण करूं और मैं उस सच्चे गुरु पर ही बलिहारी जाता हूँ।। ३ ।। मनमुख व्यक्ति द्वैतभाव में लगे हुए भटकते हैं और उनके अन्तर्मन में अज्ञान का अंधकार बना रहता है। वह दाता सच्चा गुरु अदृष्ट है और उसका कोई भी ओर-छोर नहीं है।। ४ ।। सबके घट-घट में सारी कलाओं को धारण करके वह प्रभु ही समाया हुआ है। तेरे दासों का दास नानक कहता है कि हे प्रभु, कृपा करके मेरा उद्धार कर दो।। ५ ।। ३ ।। सारग महला ६ ।। प्रभु की ऐसी सेवा करो कि वह जो कुछ भी करे उसे सत्य समझों तथा गुरमुख बनकर उसने नाम में अपनी लौ लगाए रखो।। १ ।। रहाउ।। उस प्रभु की ऐसी मीठी प्रीति लगी है कि बाकी सब कुछ भूल गया है। अपनी ज्योति का उसकी परम ज्योति में मिलाकर मुझे प्रत्येक दिन आनन्द बना रहता है और मेरा मन सन्तुष्ट बना रहता है।। १ ।। जब उसके गुणों का गायन किया गया तभी मन तृप्त हो गया और मेरे मन में शान्ति स्थापित हो गई। प्रभु के चरणों में चित्त लगाने से गुरु ने कृपा की और तभी हमने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है।। २ ।। तत्व ज्ञान में सुरति को लीन करके जब हमारी मति प्रकाशित हो उठी तो हमने प्रभु की आराधना की है। अन्तर्मन में ज्योति प्रकट होने से और प्रभु में स्वाभाविक रूप से ही समाधि लगाने से मन सन्तुष्ट हो गया।। ३ ।। जीव मुख से तो प्रभु-नाम का उच्चारण करता है परन्तु हृदय में कपट धारण करता है तथा सदैव कपटपूर्ण आचरण ही करता रहता है। अन्तर्मन में लोभ का महा अंधकार है और वह खोखले छिलकों को ही कूटने के समान व्यर्थ में ही कार्य करता हुआ दुख उठाता रहता है।। ४ ।। जब मेरे प्रभु प्रसन्न हो उठे तो उन्होंने गुरमुख गुरु के साथ मेरा सम्बन्ध बना दिया और हे नानक निरंजन नाम मुझे प्राप्त हो गया और नाम का सुमिरन करते हुए ही मुझे सुख मिल गया है।। ५ ।। ४ ।। सारग महला ४ ।। मेरा मन राम नाम में सन्तुष्ट हो गया है। सच्चे गुरु ने मेरे हृदय में प्रभु की प्रीति लगा दी है और मन को अब प्रभु की कथा अच्छी लगने लगी है।। १ ।। रहाउ।। हे दीनदयालु प्रभु, तुम हम दीनों पर कृपा करो और अपने सेवकों को अपनी अकथनीय कथा का रहस्य प्रदान कर दो। सन्तजनों के साथ मिलाप करके हमने हरि-रस प्राप्त किया है और अब प्रभु हमारे मन तन में मीठा लगने लगा है।। १ ।। जिन्होंने गुरमति के माध्यम से प्रभु-नाम को पहचान लिया है वह प्रभु के रंग मे रंगकर वास्तविक रूप से वैराग्यवान हो गए हैं। पुरुषों का भी पुरुष वह प्रभु जब हमें मिल गया तो हमने सुख प्राप्त किया है और हमारा आवागमन समाप्त हो गया है।। २ ।। मेरी आँखों में प्रभु को मिलने की ललक

सुआमी रसना नामु वखानी ॥ स्रवणी कीरतनु सुनउ दिनु राती हिरदै हरि हरि भानी ॥ ३ ॥ पंच जना गुरि वसगति आणे तउ उनमनि नामि लगानी ॥ जन नानक हरि किरपा धारी हरि रामै नामि समानी ॥ ४ ॥ ५ ॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन राम नामु पढु सारु ॥ राम नाम बिनु थिरु नही कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ लीजै किआ तजीऐ बउरे जो दीसै सो छारु ॥ जिसु बिखिआ कउ तुम्ह अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु सिरि भारु ॥ १ ॥ तिलु तिलु पलु पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गवारु ॥ सो किछु करै जि साथि न चालै इहु साकत का आचारु ॥ २ ॥ संत जना कै संगि मिलु बउरे तउ पावहि मोख दुआरु ॥ बिनु सतसंग सुखु किनै न पाइआ जाइ पूछहु बेद बीचारु ॥ ३ ॥ राणा राउ सभै कोऊ चालै झूठु छोडि जाइ पासारु ॥ नानक संत सदा थिरु निहचलु जिन राम नामु आधारु ॥ ४ ॥ ६ ॥

सारग महला ४ घरु ३ दुपदा १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥ जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु धन का तुम गरबु करत हउ सो धनु किसहि न आप ॥ खिन महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ लागै पछुताप ॥ १ ॥ जो तुमरे प्रभ होते सुआमी हरि तिन के जापहु जाप ॥ उपदेसु करत नानक जन तुम कउ जउ सुनहु तउ जाइ संताप ॥ २ ॥ १ ॥ ७॥

सारग महला ४ घरु ५ दुपदे पड़ताल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन जगंनाथ जगदीसरो जगजीवनो मनमोहन सिउ प्रीति लागी मै हरि हरि हरि टेक सभ दिनसु सभ राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की उपमा अनिक अनिक अनिक गुन गावत सुक नारद ब्रहमादिक तव गुन सुआमी गनिन न जाति ॥ तू हरि बेअंतु तू हरि बेअंतु तू हरि सुआमी आपे ही जानहि आपनी भांति ॥ १ ॥ हरि कै निकटि निकटि हरि निकट ही बसते ते हरि के जन साधू हरि भगात ॥ ते हरि के

बनी हुई है कि मैं उस प्रभु को देखूं और अपनी जीभ से उसके नाम का सुमिरन करूं। कानों से दिन रात उसकी कीर्ति का गायन सुनूं और हृदय में उस प्रभु को चाहता रहूं।। ३ ।। गुरु ने पाँचों सेवकों (विकारों) को जब वश में ला दिया है तो मन उनमनी अवस्था में आकर अर्थात् त्रिगुणातीत बनकर नाम में लीन हो गया है। हे नानक, सेवकों पर प्रभु ने कृपा धारण की है और वे प्रभु के नाम में ही लीन हो गए हैं।। ४ ।। ५ ।। सारग महला ४ ।। हे मन, राम नाम को ही याद रख क्योंकि यही सार तत्व है। प्रभु-नाम के बिना कोई भी स्थिर नहीं है तथा अन्य सारा विस्तार व्यर्थ ही है।। १ ।। रहाउ।। हे बावले, यहां से क्या लिया जाए और क्या छोड़ा जाए क्योंकि जो कुछ भी दिखाई देता है सब मिट्टी है। जिस विष रूपी धन-सम्पदा को तुम अपनी जानते मानते हो, उसे उसी प्रकार त्याग दो जैसे सिर के बोझ को फेंक दिया जाता है।। १ ।। हे मूर्ख व्यक्ति, तू क्यों नहीं जान पाता कि प्रत्येक पल तिल तिल करके आयु लगातार घटती जा रही है। प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति का यही आचरण है कि वह वही करता है जो साथ में जाने वाला नहीं होता।। २ ।। हे पागल, तू सन्तजनों के साथ जब मिलाप कर लेगा तभी तुझे मोक्ष का द्वार प्राप्त होगा। तुम वेदों के विचार से ही पूछ लो कि सत्संग के बिना कोई भी सुख नहीं पा सका है।। ३ ।। राजा, सम्राट सभी झूठ के इस प्रसार को छोड़कर यहां से चले जाते हैं। हे नानक, शान्त पुरुष, जिन्हें प्रभु-नाम का ही आसरा होता है वे सदैव अटल बने रहते हैं।। ४ ।। ६ ।।

सारग महला ४ घरु ३ दोपदा 　　 १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे पुत्र, तू अपने पिता रूपी परमात्मा से क्यों झगड़ रहा है। जिसके पैदा किए हुए तुम बड़े हुए हो उससे झगड़ना और वाद-विवाद करना पाप है अर्थात उसकी आज्ञा मानना ही श्रेष्ठ है।। १ ।। रहाउ।। जिस धन का तुम अभिमान करते हो वह धन किसी का अपना नहीं है। जब क्षण भर में इस विष रूपी धन को छोड़ जाना होता है तब फिर पछतावा बना रहता है।। १ ।। जो प्रभु तुम सबका स्वामी है केवल उसी का ही सुमिरन करते रहो। दास नानक तो तुम सबको यही उपदेश देता है; यदि इसे सुनोगे तो तुम्हारे अन्तर्मन का दुख समाप्त हो जाएगा।। २ ।। १ ।। ७।।

सारग महला ४ घरु ५ दोपदे पड़ताल 　　 १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मन, संसार के मालिक प्रभु के नाम का सुमिरन करता रह क्योंकि ऐसा करने से उस मनमोहन प्रभु से प्रेम बन जाता है। मुझे तो सारा दिन सारी रात उस परमात्मा का ही सहारा है।। १ ।। रहाउ।। हे भाई, परमात्मा की अनेकों विशेषताएँ हैं। हे प्रभु, शुकदेव, नारद, ब्रह्मा आदि तेरे ही गुण गाते रहते हैं परन्तु फिर भी तेरे गुणों को गिना नहीं जा सकता। हे स्वामी, तू अनन्त है, अनन्त है और अपनी इस अवस्था को तू स्वयं ही जानता है।। १ ।। जो व्यक्ति परमात्मा के पास और सदैव परमात्मा के समीप ही बसते हैं वे व्यक्ति परमात्मा के सेवक साधु हैं; परमात्मा के

जन हरि सिउ रलि मिले जैसे जन नानक सलले सलल मिलाति ॥ २ ॥ १ ॥ ८ ॥ सारंग महला ४ ॥ जपि मन नरहरे नरहर सुआमी हरि सगल देव देवा स्री राम राम नामा हरि प्रीतमु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु ग्रिहि गुन गावते हरि के गुन गावते राम गुन गावते तितु ग्रिहि वाजे पंच सबद वड भाग मथोरा ॥ तिन्ह जन के सभि पाप गए सभि दोख गए सभि रोग गए कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु गए तिन्ह जन के हरि मारि कढे पंच चोरा ॥ १ ॥ हरि राम बोलहु हरि साधू हरि के जन साधू जगदीसु जपहु मनि बचनि करमि हरि हरि आराधू हरि के जन साधू ॥ हरि राम बोलि हरि राम बोलि सभि पाप गवाधू ॥ नित नित जागरणु करहु सदा सदा आनंदु जपि जगदीसुोरा ॥ मन इछे पावहु सभै फल पावहु धरमु अरथु काम मोखु जन नानक हरि सिउ मिले हरि भगत तोरा ॥ २ ॥ २ ॥ ९ ॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन माधो मधुसूदनो हरि स्रीरंगो परमेसरो सति परमेसरो प्रभु अंतरजामी ॥ सभ दूखन को हंता सभ सूखन को दाता हरि प्रीतम गुन गाओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि घटि घटे घटि बसता हरि जलि थले हरि बसता हरि थान थानंतरि बसता मै हरि देखन को चाओ ॥ कोई आवै संतो हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जनु संतो मोहि मारगु दिखलावै ॥ तिसु जन के हउ मलि मलि धोवा पाओ ॥ १ ॥ हरि जन कउ हरि मिलिआ हरि सरधा ते मिलिआ गुरमुखि हरि मिलिआ ॥ मेरै मनि तनि आनंद भए मै देखिआ हरि राओ ॥ जन नानक कउ किरपा भई हरि की किरपा भई जगदीसुर किरपा भई ॥ मै अनदिनो सद सद सदा हरि जपिआ हरि नाओ ॥ २ ॥ ३ ॥ १० ॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन निरभउ ॥ सति सति सदा सति ॥ निरवैरु अकाल मूरति ॥ आजूनी संभउ ॥ मेरे मन अनदिनुो धिआइ निरंकारु निराहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि दरसन कउ हरि दरसन कउ कोटि कोटि तेतीस सिध जती जोगी तट तीरथ परभवन करत रहत निराहारी ॥ तिन जन की सेवा थाइ पई जिन्ह कउ किरपाल होवतु बनवारी ॥ १ ॥ हरि के हो संत भले ते ऊतम भगत भले जो भावत हरि राम मुरारी ॥ जिन्ह का अंगु करै

भक्त हैं। हे दास नानक, जैसे पानी-पानी में लीन हो जाता है, परमात्मा के वे सेवक परमात्मा के साथ एक रस हो जाते हैं।। २ ।। १ ।। ८ ।। सारंग महला ४ ।। हे मेरे मन, तू सबके मालिक प्रभु के नाम का सुमिरन कर; वह प्रभु ही सभी देवताओं का देवता है और वह प्रभु ही मेरा प्रियतम है।। १ ।। रहाउ।। जिसके हृदय रूपी घर में परमात्मा के गुण गाए जाते हैं; प्रभु के गुण गाए जाते हैं, राम के गुण गाए जाते हैं, उस घर में तो मानो पांचों ही प्रकार के वाद्य बज उठते हैं और आनन्द बना रहता है। ऐसे लोगों के सभी पाप दूर हो जाते हैं; इनके सभी दुख, रोग, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान समाप्त हो जाते हैं और इस पाँचों विकार रूपी चोरों को प्रभु अपने सेवकों के अन्तर्मन से बाहर निकाल देता है।। १ ।। हे साधु पुरुषो, परमात्मा हरि का नाम बोलते रहा करो। हे प्रभु के सन्तो, जगत के स्वामी प्रभु के नाम का जाप करते रहा करो। अपने मन से, वचन से और कर्मों के माध्यम से प्रभु की आराधना किया करो। प्रभु-नाम सुमिरन से तुम सभी पापों को गँवा लोगे। हे सन्तजनों, सदैव ही सावधान बने रहो क्योंकि उस जगदीश्वर के नाम सुमिरन से सदैव आनन्द बना रहता है। इस प्रकार तुम सभी मनोवांछित फल पा लोगे और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि सबको प्राप्त कर लोगे। हे दास नानक, जो व्यक्ति प्रभु के चरणों में लीन बने रहते हैं, हे प्रभु, वे ही तेरे भक्त हैं।। २ ।। २ ।। ६ ।। सारग महला ४ ।। हे मेरे मन, तू उस अन्तर्यामी प्रभु के नाम का सुमिरन किया कर क्योंकि वही माधव, मधुसूदन और सब प्रकार की धन सम्पदा का स्वामी, सबसे बड़ा मालिक और सदैव स्थित बना रहने वाला है। उस प्रियतम के गुण गाओ जो सभी दुखों का नाश करने वाला और सभी सुखों का देने वाला है।। १ ।। रहाउ।। वह प्रभु घट-घट में बसता है, जल, थल एवं प्रत्येक स्थान में रमा रहता है और मेरे अन्दर उसी प्रभु के दर्शन की आकांक्षा है। कोई शान्त पुरुष, कोई प्रभु का सन्त, कोई मेरा प्यारा सन्त-सेवक मुझे आ मिले और मुझे प्रभु मिलाप का मार्ग दिखा दे तो मैं उसके चरणों को मल-मल कर धोता रहूँ।। १ ।। हे भाई, परमात्मा अपने किसी सेवक को उसकी श्रद्धा भावना के कारण मिलता है और उसके गुरमुख बन जाने पर ही उसे प्राप्त होता है। मैंने प्रभु का दर्शन किया तो मेरे तन-मन में आनन्द ही आनन्द उत्पन्न हो गया है। हे भाई, दास नानक पर उस प्रभु की, उस जगत के स्वामी की कृपा हुई है और अब मैं हर समय सदैव उसी प्रभु के नाम का जाप कर रहा हूँ।। २ ।। ३ ।। १० ।। सारग महला ४ ।। हे मेरे मन, तू उस निर्भय, सदैव सत्य रूप, निरवैर (शत्रु भाव से परे रहने वाले) कालातीत प्रभु के स्वरूप का सुमरिन कर। वह अयोनि और स्वयं प्रकाशित है; हे मेरे मन, तू उस निराहार और निराकार प्रभु का प्रतिदिन सुमिरन किया कर।। १ ।। रहाउ।। उस प्रभु के दर्शन के लिए, उस प्रभु को देखने के लिए तैंतीस करोड़ देवता, सिद्ध, यति और योगी निराहार रह कर अनेकों तीर्थों पर भ्रमण करते हुए घूमते रहते हैं। हे मेरे मन, उन्हीं भाग्यशालियों की सेवा स्वीकृत होती है जिन पर परमात्मा स्वयं कृपा करता है।। १ ।। प्रभु के वे शान्त पुरुष ही भले हैं; प्रभु के वे भक्त ही श्रेष्ट हैं जो दुष्टों को मारने वाले परमात्मा को प्यारे लगते हैं। हे नानक, मेरा मालिक जिन व्यक्तियों का पक्ष लेता है

मेरा सुआमी तिन्ह की नानक हरि पैज सवारी ॥ २ ॥ ४ ॥ ११ ॥ सारग महला ४ पड़ताल ॥ जपि मन गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु सभ स्रिसटि का प्रभो मेरे मन हरि बोलि हरि पुरखु अबिनासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का नामु अंम्रितु हरि हरि हरे सो पीऐ जिसु रामु पिआसी ॥ हरि आपि दइआलु दइआ करि मेले जिसु सतिगुरू सो जनु हरि हरि अंम्रित नामु चखासी ॥ १ ॥ जो जन सेवहि सद सदा मेरा हरि हरे तिन का सभु दूखु भरमु भउ जासी ॥ जनु नानकु नामु लए तां जीवै जिउ चात्रिकु जलि पीऐ त्रिपतासी ॥ २ ॥ ५ ॥ १२ ॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन सिरी रामु ॥ राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥ बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिआ सरबगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रामु आपे आपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥ जिसु आपि क्रिपा करे मेरा राम राम राम राइ सो जनु राम नाम लिव लागे ॥ १ ॥ राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जनां की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥ जन नानक का अंगु कीआ मेरै राम राइ दुसमन दूख गए सभि भगे ॥ २ ॥ ६ ॥ १३ ॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर मूरति कउ बलि जाउ ॥ अंतरि पिआस चात्रिक जिउ जल की सफल दरसनु कदि पांउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु भगति वछलु हरि नाउ ॥ जा कउ कोइ न राखै प्राणी तिसु तू देहि असराउ ॥ १ ॥ निधरिआ धर निगतिआ गति निथाविआ तू थाउ ॥ दह दिस जांउ तहां तू संगे तेरी कीरति करम कमाउ ॥ २ ॥ एकसु ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाउ ॥ तू बेअंतु तेरी मिति नही पाईऐ सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥ ३ ॥ साधन का संगु साध सिउ गोसटि हरि साधन सिउ लिव लाउ ॥ जन नानक पाइआ है गुरमति हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥ ४ ॥ १ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जीउ अंतरजामी जान ॥ करत बुराई मानुख ते छपाई साखी भूत पवान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैसनौ नामु करत खट करमा अंतरि लोभ जूठान ॥ संत सभा की निंदा करते डूबे सभ

उनके सम्मान की वह इस लोक और परलोक दोनों में रक्षा करता है।। २ ।। ४ ।। ११ ।। सारग महला ४ पड़ताल।। हे मन, प्रभु के नाम का जाप कर, वह सभी गुणों का भण्डार है, सृष्टि का मालिक हैं, सर्वव्यापक है और अविनाशी है; इसलिए तू प्रभु-नाम का ही उच्चारण करता रह।। १ ।। रहाउ।। हे मन, प्रभु-नाम आध्यात्मिक अमृत रूपी जल देने वाला है और यह जल वही पीता है जिसे प्रभु स्वयं पिलाता है। दयालु प्रभु कृपा करके जिस व्यक्ति को गुरु से मिला देता है वही व्यक्ति इस अमृत नाम रूपी जल को चखता है।। १ ।। जो सेवक सदैव मेरे प्रभु का सुमिरन करते रहते हैं उनका सारा दुख, भ्रम और भय समाप्त हो जाता है। दास नानक प्रभु के नाम का सुमिरन करके उसी प्रकार जीवित बना रहता है जैसे चातक (स्वांति नक्षत्र की वर्षा का) जल पीकर तृप्त हो जाता है।। २ ।। ५ ।। १२ ।। सारग महला ४ ।। हे मन, तू श्री राम के नाम का जाप कर जो सर्वत्र व्यापक है और सदैव सत्य स्वरूप में स्थित बना रहने वाला है।। १ ।। रहाउ।। वह परमात्मा सब स्थानों में आप ही आप है, आप ही सब कुछ पैदा करने वाला और सारे संसार में आप ही व्याप्त है। हे भाई, जिस पर वह मेरा प्यारा प्रभु राम कृपा करता है वह व्यक्ति राम के नाम की लगन मे लीन बना रहता है।। १ ।। हे सन्तजनों, उस परमात्मा के नाम की महिमा को देखो जो इस घोर कलियुग की अग्नि में भी अपने भक्तों के सम्मान की रक्षा करता रहता है। हे नानक, मेरे सम्राट प्रभु ने अपने सेवक का पक्ष लिया और उसके शत्रु एवं दुख भाग खड़े हुए हैं।। २ ।। ६ ।। १३ ।।

सारग महला ५ चौपदे घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सच्चे गुरु के आचरण के रूप पर मैं बलिहारी जाता हूँ। मेरे हृदय में चातक के जल की प्यास की तरह उस सच्चे गुरु के दर्शनों की तड़प बनी हुई है परन्तु पता नहीं मैं कब उसके फलदायक दर्शन पा सकूँगा।। १ ।। रहाउ।। सबका पालनहार और अनाथों का नाथ वह प्रभु है और उस प्रभु का नाम ही भक्तवत्सल अर्थात भक्ति को प्रेम करने वाला है। जिसे कोई भी प्राणी आसरा नहीं देता हे प्रभु, तू ही उसे आसरा प्रदान करता है।। १ ।। निराश्रितों का तू ही आसरा है, निर्बलों का तू ही बल है और जिन्हें कोई ठौर-ठिकाना नहीं है उनका आसरा भी तू ही है। दसों दिशाओं में जहाँ भी मैं जाता हूँ वहाँ तू ही मेरे साथ बना रहता है और मैं तो तेरे गुणानुवाद का कर्म करता रहता हूँ।। २ ।। एक से ही तू लाखों हो जाता है और उन लाखों में तू एक ही बना रहता है; मैं तेरी शक्ति और सीमा के बारे में कुछ भी नहीं कह सकता। हे प्रभु, तू अनन्त है, तेरे ओर छोर को नहीं पाया जा सकता और संसार का यह दिखाई देने वाला खेल सब तेरा ही है।। ३ ।। साधु पुरुषों की संगत साधु पुरुषों से विचार चर्चा और हे प्रभु, साधु व्यक्तियों के साथ ही मेरा प्रेम बनाए रखो। हे नानक, प्रभु के सेवकों ने तो उसे मति के अनुरूप चल कर पा लिया है और अब हे प्रभु, मेरे मन में भी ऐसा चाव है; तू मुझे अपना दर्शन दे।। ४ ।। १ ।। सारग महला ५ ।। वह प्रभु अन्तर्यामी और सब कुछ जानने वाला है। बुराई करते हुए व्यक्ति मनुष्य से तो छिपा सकता है परन्तु वह प्रभु तो वायु की तरह सब स्थानों में साक्षी है।। १ ।। रहाउ।। व्यक्ति ने अपना नाम तो वैष्णव रखा हुआ है, वह षटकर्म भी करता है परन्तु उसके मन में लोभ की जूठन भरी हुई है। वह सन्त सभा की

अगिआन ॥ १ ॥ करहि सोम पाकु हिरहि पर दरबा अंतरि झूठ गुमान ॥ सासत्र बेद की बिधि नही जाणहि बिआपे मन कै मान ॥ २ ॥ संधिआ काल करहि सभि वरता जिउ सफरी दंफान ॥ प्रभू भुलाए ऊझड़ि पाए निहफल सभि करमान ॥ ३ ॥ सो गिआनी सो बैसनौ पढ़िआ जिसु करी क्रिपा भगवान ॥ ओनि सतिगुरु सेवि परम पदु पाइआ उधरिआ सगल बिस्वान ॥ ४ ॥ किआ हम कथह किछु कथि नही जाणह प्रभ भावै तिवै बोलान ॥ साधसंगति की धूरि इक मांगउ जन नानक पइओ सरान ॥ ५ ॥ २ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो नाचनो रहो ॥ लालु रगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो ॥ जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइओ तब मुखु काजि लजो ॥ १ ॥ जिउ कनिको कोठारी चड़िओ कबरो होत फिरो ॥ जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो ॥ २ ॥ जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो ॥ बजावनहारो ऊठि सिधारिओ तब फिरि बाजु न भइओ ॥ ३ ॥ जैसे कुंभ उदक पूरि आनिओ तब ओहु भिंन द्रिसटो ॥ कहु नानक कुंभु जलै महि डारिओ अंभै अंभ मिलो ॥ ४ ॥ ३ ॥ सारग महला ५ ॥ अब पूछे किआ कहा ॥ लैनो नामु अंम्रित रसु नीको बावर बिखु सिउ गहि रहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ जनमु चिरंकाल पाइओ जातउ कउडी बदलहा ॥ काथूरी को गाहकु आइओ लादिओ कालर बिरख जिवहा ॥ १ ॥ आइओ लाभु लाभन कै ताई मोहनि ठागउरी सिउ उलझि पहा ॥ काच बादरै लालु खोई है फिरि इहु अउसरु कदि लहा ॥ २ ॥ सगल पराध एकु गुणु नाही ठाकुरु छोडह दासि भजहा ॥ आई मसटि जड़वत की निआई जिउ तसकरु दरि सांन्हिहा ॥ ३ ॥ आन उपाउ न कोऊ सूझै हरि दासा सरणी परि रहा ॥ कहु नानक तब ही मन छुटीऐ जउ सगले अउगन मेटि धरहा ॥ ४ ॥ ४ ॥ सारग महला ५ ॥ माई धीरि रही प्रिअ बहुतु बिरागिओ ॥ अनिक भांति आनूप रंग रे तिन्ह सिउ रुचै न लागिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निसि बासुर प्रिअ प्रिअ मुखि टेरउ नींद पलक नही जागिओ ॥ हार कजर बसत्र अनिक सीगार रे बिनु पिर सभै बिखु लागिओ

निन्दा करते हुए ही अज्ञान में डूबा रहता है।। १ ।। वह स्वयं अपने हाथों से भोजन पकाता है परन्तु दूसरों के धन को चुराता है और उसके अन्तर्मन में झूठ का अभिमान भरा रहता है। वह शास्त्र और वेदों की विधि को तो जानता नहीं और मन के अभिमान में ही लीन बना रहता है।। २ ।। संध्या के समय वैसे ही इधर-उधर भटकता है जैसे कोई मदारी अपने पाखण्ड का तमाशा दिखाता घूमता है। जिसे प्रभु ने भुलाकर कुमार्ग पर डाल दिया है उसके सभी कर्म निष्फल हो जाते हैं।। ३ ।। जिस पर प्रभु ने कृपा की है, वही वास्तव में ज्ञानी, वैष्णव और पढ़ने-लिखने वाला माना जाता है। ऐसे व्यक्तियों ने ही सच्चे प्रभु का सुमिरन करके परमपद प्राप्त किया होता है और उन्हीं के पीछे चलकर सारे संसार का उद्धार हो जाता है।। ४ ।। हम क्या कहें क्योंकि हम कुछ भी कहना नहीं जानते; जो प्रभु को भाता है वही हमसे बुलवाता है। दास नानक तो साधसंगत की चरण-धूलि माँगता है और प्रभु की शरण में आ पड़ा है।। ५ ।। २ ।। सारग महला ५ ।। अब मेरा इधर-उधर भटकना बन्द हो गया है। मुझे सच्चे गुरु का उपदेश मिल गया है और स्वाभाविक रूप से ही मैने उस रंगीले लाल प्रभु को प्राप्त कर लिया है।। १ ।। रहाउ।। कुँआरी कन्या सहेलियों के साथ उपहास में प्रियतम की बातें करती रहती है परन्तु जैसे ही उसका भला पुरुष अर्थात् पति घर के अन्दर आता है तब वह लज्जा के मारे अपना मुंह ढक लेती है।। १ ।। जैसे सोना कुठाली में पड़कर पागलों की तरह इधर-उधर दौड़ता रहता है उसी प्रकार जीव भी व्यर्थ में ही व्यर्थ के काम करता रहता है। जब वह पूर्ण शुद्ध हो जाता है तब वह एक स्थान पर स्थिर हो जाता है। इसी प्रकार जीव भी अन्तर्मन से शुद्ध होकर स्थिर अवस्था प्राप्त कर लेता है।। २ ।। जब तक दिन-रात हैं घड़ियाल हर घड़ी, पल, मुहूर्त बजता ही रहता है परन्तु जब इसे बजाने वाला जीव उठकर चल देता है तब फिर इसका बजना सम्भव नहीं होता ।। ३ ।। जिस प्रकार घड़ा जल से भरकर जब ले आया जाता है तब उसका रूप कुछ अन्य ही होता है। नानक कहता है कि जब उस जल के भरे हुए घड़े को फिर जल में ही गिरा दिया जाता है तो वह जल जल में ही मिलकर एक रूप हो जाता है।। ४ ।। ३ ।। सारग महला ५ ।। अब पूछने पर भला मैं क्या बताऊं क्योंकि लेना तो अमृत रस वाला सुन्दर प्रभु का नाम था परन्तु पागल व्यक्ति विष को ही पकड़े रहता है।। १ ।। रहाउ।। इसने दुर्लभ मानव जन्म बहुत समय के बाद प्राप्त किया परन्तु इसका यह जीवन कौड़ी के बदले नष्ट हो रहा है। यह बनकर तो कस्तूरी का ग्राहक आया था लेकिन इसने बैल बनकर अपने पर मिट्टी ही लाद ली है।। १ ।। यह आया तो लाभ कमाने के लिए था परन्तु यह मोहिनी माया में ही उलझकर रह गया। कांच के बदले में इसने हीरे-लाल को खो दिया है और अब यह अवसर भला इसे कब मिलेगा।। २ ।। सारे अपराध इसमें हैं और एक भी गुण इसमें नहीं हैं क्योंकि यह मालिक को छोड़कर उसकी दासी माया का सुमिरन करता रहता है। जैसे चोर चोरी करते हुए दरवाजे में फँसकर बेहोश हो जाता है उसी प्रकार माया के चक्कर में फँसा व्यक्ति जड़ बना रहता है।। ३ ।। हमें तो अन्य कोई भी उपाय नहीं सूझता और हम तो प्रभु के सेवकों की शरण में पड़े हुए हैं। नानक का कथन है कि जब सभी अवगुणों को मिटाकर रख दिया जाए तब ही यह मन माया से मुक्त होता है।। ४ ।। ४ ।। सारंग महला ५ ।। हे माँ, मेरा धैर्य समाप्त हो गया है और मुझे प्यारे प्रभु के प्रति बहुत वैराग्य अर्थात प्रेम भावना का अनुभव होता है। हे मेरे मन, अनेकों प्रकार के अनुपम रंगों में अब मेरी रुचि नहीं रह गई है।। १ ।। रहाउ।। दिन रात मैं अपने मुँह से प्रियतम के नाम का उच्चारण करती रहती हूँ और मुझे पल भर भी नींद नहीं आती तथा मैं जागती ही रहती हूँ। गले का हार, काजल वस्त्र और अनेकों प्रकार के शृंगार उस प्रियतम के बिना सभी विष के समान लगते हैं

॥ १ ॥ पूछउ पूछउ दीन भांति करि कोऊ कहै प्रिअ देसांगिओ ॥ हींओ देंउ सभु मनु तनु अरपउ सीसु चरण परि राखिओ ॥ २ ॥ चरण बंदना अमोल दासरो देंउ साधसंगति अरदागिओ ॥ करहु क्रिपा मोहि प्रभू मिलावहु निमख दरसु पेखागिओ ॥ ३ ॥ द्रिसटि भई तब भीतरि आइओ मेरा मनु अनदिनु सीतलागिओ ॥ कहु नानक रसि मंगल गाए सबदु अनाहदु बाजिओ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सारग महला ५ ॥ माई सति सति सति हरि सति सति सति साधा ॥ बचनु गुरू जो पूरै कहिओ मै छीकि गांठरी बाधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा ॥ गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा ॥ १ ॥ अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा ॥ चारि बिनासी खटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा ॥ २ ॥ राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी बेनाधा ॥ द्रिसटिमान है सगल बिनासी इकि साध बचन आगाधा ॥ ३ ॥ आपे आपि आप ही आपे सभु आपन खेलु दिखाधा ॥ पाइओ न जाई कही भांति रे प्रभु नानक गुर मिलि लाधा ॥ ४ ॥ ६ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि बासिबो गुर गोबिंद ॥ जहां सिमरनु भइओ है ठाकुर तहां नगर सुख आनंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जहां बीसरै ठाकुरु पिआरो तहां दूख सभ आपद ॥ जह गुन गाइ आनंद मंगल रूप तहां सदा सुख संपद ॥ १ ॥ जहा स्रवन हरि कथा न सुनीऐ तह महा भइआन उदिआनद ॥ जहां कीरतनु साधसंगति रसु तह सघन बास फलांनद ॥ २ ॥ बिनु सिमरन कोटि बरख जीवै सगली अउध ब्रिथानद ॥ एक निमख गोबिंद भजनु करि तउ सदा सदा जीवानद ॥ ३ ॥ सरनि सरनि सरनि प्रभ पावउ दीजै साधसंगति किरपानद ॥ नानक पूरि रहिओ है सरब मै सगल गुणा बिधि जांनद ॥ ४ ॥ ७ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि राम भरोसउ पाए ॥ जो जो सरणि परिओ करुणानिधि ते ते भवहि तराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखि सोइओ अरु सहजि समाइओ सहसा गुरहि गवाए ॥ जो चाहत सोई हरि कीओ मन बांछत फल पाए ॥ १ ॥ हिरदै जपउ नेत्र धिआनु लावउ स्रवनी

।। १ ।। मैं दीन की तरह बनकर पूछती हूँ, मुझे कोई उस प्रियतम के देश के बारे में बता दे। मैं उसे अपना हृदय, मन, तन अर्पण करके अपना सिर उसके चरणों पर रख दूंगी।। २ ।। मैं उसकी चरण-वन्दना करती हुई बिना दाम के ही उसकी दासी हूँ और साधसंगत के माध्यम से उसके सामने अरदास करती हूँ। हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि एक क्षण भर के लिए मैं तुम्हारा दर्शन देख सकूं।। ३ ।। प्रभु की कृपा दृष्टि हुई तो वह मेरे अन्दर आ बसा और मेरा मन सदा के लिए शीतल हो गया है। नानक का कथन है कि अब मैंने रसपूर्ण मंगल गीतों का गायन किया है और अनहद शब्द मेरे अन्तर्मन में बज उठा है।। ४ ।। ५ ।। सारग महला ५ ।। हे माँ, वह प्रभु सत्य है और उसके साधु-पुरुष भी सत्य ही सत्य हैं। पूर्ण गुरु ने मुझे जो उपदेश दिया, मैंने उसे कसकर गांठ में बांध लिया है।। १ ।। रहाउ।। दिन रात और तारागण विनष्ट हो जांएगे तथा सूर्य और चन्द्रमा भी नाश हो जाएँगे। पर्वत, धरती, जल, पवन आदि सभी यहाँ से चले जाएँगे परन्तु एक साधु व्यक्ति का वचन ही अटल बना रहेगा।। १ ।। अण्डज, उदभिज और माँ के पेट से पैदा होने वाले जीव नष्ट हो जाएँगे। चारों वेद छः शास्त्र भी सदैव इसी रूप में नहीं बने रहेंगे परन्तु साधु-पुरुषों का उपदेश अटल बना रहेगा।। २ ।। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण आदि सभी विनष्ट हो जाँएगे; दृष्टमान जो कुछ भी है वह सभी नष्ट हो जाएगा, केवल साधु-पुरुष का वाक्य अथाह रूप से बना रहेगा।। ३ ।। वह सब कुछ अपने आप ही है और उसने सब अपना ही खेल दिखाया हुआ है। उस प्रभु को किसी प्रकार भी पाया नहीं जा सकता परन्तु हे नानक, गुरु से मिलकर ही प्रभु को प्राप्त किया जाता है।। ४ ।। ६ ।। सारग महला ५ ।। मेरे मन में तो गुरु रूपी प्रभु ही बसता है। जहाँ उस प्रभु का सुमिरन होता है वहाँ सदैव सुख और आनन्द बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। प्यारा प्रभु जहाँ भूला रहता है वहाँ सभी दुख और आपदाएं घेरे रहती हैं। जहाँ उसके आनन्द मंगल रूप गुण गाए जाते हैं वहाँ सदैव सुख और सम्पदा (ऐश्वर्य) बने रहते हैं।। १ ।। जहाँ कानों से प्रभु की कथा नहीं सुनी जाती वह स्थान तो भयानक जंगल के समान है। जहाँ प्रभु की कीर्ति का गायन साधसंगत के माध्यम से होता है वहाँ सब प्रकार का रस और गहरी सुगन्धि और फलों का आनन्द बना रहता है।। २ ।। प्रभु सुमिरन से विहीन होकर बेशक करोड़ों वर्षों तक व्यक्ति जीवित बना रहे तब भी उसकी सारी आयु व्यर्थ ही मानी जाती है। एक क्षण भर के लिए भी यदि प्रभु का सुमिरन कर लिया जाए तो व्यक्ति सदैव जीवित बना रहता है।। ३ ।। साधसंगत के माध्यम से हे प्रभु, मुझे कृपा करके अपनी शरण में ही बनाए रखो। हे नानक, वह सबमें भरपूर रूप से समाया हुआ है और सभी गुणों वाला वह सभी प्रकार की विधियों को जानता है।। ४ ।। ७ ।। सारग महला ५ ।। मैं तो अब प्रभु के भरोसे में पड़ा हुआ हूँ; जो जो भी उस दयालुता के भण्डार प्रभु की शरण में पड़ा है वह संसार सागर से पार उतार लिया गया है।। १ ।। रहाउ।। गुरु के माध्यम से अपनी शंका और भय को गँवाकर मैं सुखपूर्वक सोता हुआ पूर्ण आनन्द की अवस्था में लीन हो गया हूँ। मैं जो चाहता था प्रभु ने वही कर दिया और मैंने मनोवांछित फल पा लिए हैं।। १ ।। मैं हृदय में उसका जाप करता हूँ, नेत्रों से उस पर ध्यान लगाता हूँ और कानों से

कथा सुनाए ॥ चरणी चलउ मारगि ठाकुर कै रसना हरि गुण गाए ॥ २ ॥ देखिओ द्रिसटि सरब मंगल रूप उलटी संत कराए ॥ पाइओ लालु अमोलु नामु हरि छोडि न कतहू जाए ॥ ३ ॥ कवन उपमा कउन बडाई किआ गुन कहउ रीझाए ॥ होत क्रिपाल दीन दइआ प्रभ जन नानक दास दसाए ॥ ४ ॥ ८ ॥ सारग महला ५ ॥ ओइ सुख का सिउ बरनि सुनावत ॥ अनद बिनोद पेखि प्रभ दरसन मनि मंगल गुन गावत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसम भई पेखि बिसमादी पूरि रहे किरपावत ॥ पीओ अंम्रित नामु अमोलक जिउ चाखि गूंगा मुसकावत ॥ १ ॥ जैसे पवनु बंध करि राखिओ बूझ न आवत जावत ॥ जा कउ रिदै प्रगासु भइओ हरि उआ की कही न जाइ कहावत ॥ २ ॥ आन उपाव जेते किछु कहीअहि तेते सीखे पावत ॥ अचिंत लालु ग्रिह भीतरि प्रगटिओ अगम जैसे परखावत ॥ ३ ॥ निरगुण निरंकार अबिनासी अतुलो तुलिओ न जावत ॥ कहु नानक अजरु जिनि जरिआ तिस ही कउ बनि आवत ॥ ४ ॥ ९ ॥ सारग महला ५ ॥ बिखई दिनु रैनि इव ही गुदारै ॥ गोबिंदु न भजै अहंबुधि माता जनमु जूऐ जिउ हारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु अमोला प्रीति न तिस सिउ पर निंदा हितकारै ॥ छापरु बांधि सवारै त्रिण को दुआरै पावकु जारै ॥ १ ॥ कालर पोट उठावै मूंडहि अंम्रितु मन ते डारै ॥ ओढै बसत्र काजर महि परिआ बहुरि बहुरि फिरि झारै ॥ २ ॥ काटै पेडु डाल परि ठाढौ खाइ खाइ मुसकारै ॥ गिरिओ जाइ रसातलि परिओ छिटी छिटी सिर भारै ॥ ३ ॥ निरवैरै संगि वैरु रचाए पहुचि न सकै गवारै ॥ कहु नानक संतन का राखा पारब्रहमु निरंकारै ॥ ४ ॥ १० ॥ सारग महला ५ ॥ अवरि सभि भूले भ्रमत न जानिआ ॥ एकु सुधाखरु जा कै हिरदै वसिआ तिनि बेदहि ततु पछानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परविरति मारगु जेता किछु होईऐ तेता लोग पचारा ॥ जउ लउ रिदै नही परगासा तउ लउ अंध अंधारा ॥ १ ॥ जैसे धरती साधै बहु बिधि बिनु बीजै नही जांमै ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई है तुटै नाही अभिमानै ॥ २ ॥ नीरु बिलोवै अति स्रमु पावै नैनू कैसे रीसै ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न काहू मिलत

उसकी कथा सुनता हूँ। पांव से मैं ठाकुर के मार्ग पर चलता हूँ और जीभ से उस प्रभु का गुणानुवाद करता रहता हूँ।। २ ।। सब प्रकार के मंगल का रूप वह प्रभु मैंने अपनी आँखों से देख लिया है और सन्तजनों ने मेरी वृत्ति संसार की ओर से उलटा दी है। मैंने ऐसा अमूल्य लाल रूपी प्रभु का नाम पा लिया है कि वह अब मुझे छोड़कर कहीं भी नहीं जाता।। ३ ।। उसकी कैसी महिमा है, कितना बड़प्पन हैं मैं कैसे बताऊँ कि वह मुझसे प्रसन्न हो जाए। वह दीनदयालु प्रभु तो हे नानक, अपने दासों के दास पर भी कृपा करता है।। ४ ।। ८ ।। सारग महला ५ ।। उसके सुखों का वर्णन किसे कह कर सुनाया जाए। उस प्रभु के आनन्द और विनोदों को देखकर मन उसके मंगलगीत गाता है।। १ ।। रहाउ।। उस प्रभु की पूर्ण कृपा हो गई है और उस आश्चर्य रूप प्रभु को देखकर मैं आश्चर्य से भर उठी हूँ। जैसे किसी पदार्थ को चखकर गूंगा मुस्कुराता है इसी प्रकार मैंने उस प्रभु के अमूल्य नाम रूपी अमृत का पान किया है।। १ ।। जैसे शरीर में श्वास रूपी पवन को बाँधकर रखा है और आते जाते उसका कुछ पता नहीं चलता, उसी प्रकार जिसके हृदय में प्रभु-नाम का प्रकाश हो गया है उसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता है।। २ ।। मैंने अन्य सभी उपाय सीखे और कर लिए हैं परन्तु अब वह प्यारा प्रभु स्वाभाविक रूप से ही अन्दर आ बसा है अर्थात प्रयत्नों से कुछ नहीं हो सका और उसने अपनी कृपा से ही यह अवस्था प्रदान कर दी।। ३ ।। गुणातीत वह निराकार अविनाशी प्रभु तौला नहीं जा सकता। नानक का कथन है कि जिसने उस असह्य प्रभु को बल पूर्वक अन्तर्मन में धारण किया है उसी की ही मित्रता उससे बन जाती है।। ४ ।। ९ ।। सारग महला ५ ।। विषय-विकारों में फँसा व्यक्ति दिन-रात ऐसे ही गुजारता है। अहंकार में मस्त होकर वह प्रभु का सुमिरन नहीं करता और अपने जीवन को जुए में ही हार जाता है।। १ ।। रहाउ।। अमूल्य नाम से तो उसकी प्रीति होती नहीं है और पराई निन्दा को ही वह पसन्द करता रहता है। छप्पर बाँधकर वह तिनकों को तो सजाता सँवारता हैं परन्तु उसके द्वार पर माया की अग्नि भी जलाए रहता है।। १ ।। सिर पर मिट्टी की पोटली तो उठा लेता है परन्तु हृदय से अमृत को बाहर निकाल फेंकता है। काजल में लिपटे वस्त्रों को पहनता है और बार-बार उन्हें ही झाड़ता रहता है।। २ ।। जिस पेड़ की डाल पर यह खड़ा होकर मुस्कुराता रहता है उसी डाल को यह काटता भी रहता है। यह सिर के बल नीचे गिरकर खण्ड-खण्ड हो जाता है और रसातल में पहुँच जाता है।। ३ ।। यह गँवार प्रभु तक नहीं पहुँच सकता क्योंकि यह शत्रु भाव से विहीन लोगों के साथ शत्रुता बनाए रहता है। नानक का कथन है कि निराकार परब्रह्म प्रभु ही सन्तजनों का रक्षक है।। ४ ।। १० ।। सारग महला ५ ।। अन्य सभी तो भूले हुए भटकते हैं और उन्होंने प्रभु को नहीं जाना है। एक ही शुद्ध अक्षर अर्थात प्रभु का नाम जिसके हृदय में बस गया उसने वेदों के सार तत्व को जान लिया है।। १ ।। रहाउ।। संसार में लीन होने का जो भी मार्ग है वह सब लोक व्यवहार ही है। जब तक व्यक्ति के हृदय में प्रभु-नाम का प्रकाश नहीं होता तब तक सब कुछ घोर अंधकार ही है।। १ ।। बेशक धरती को अनेकों प्रकार से तैयार किया जाए परन्तु उसमें बीज ना बोने से कुछ उग नहीं सकता। प्रभु-नाम के बिना मुक्ति नहीं होती और व्यक्ति के मन का अभिमान नष्ट नहीं होता।। २ ।। बहुत परिश्रम करके पानी को बिलोया जाए तो भला उसमें से मक्खन कैसे बाहर निकल आएगा। गुरु से मिलाप के बिना ना तो किसी को मुक्ति मिलती है और

नही जगदीसै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत इहै बीचारिओ सरब सुखा हरि नामा ॥ कहु नानक तिसु भइओ परापति जा कै लेखु मथामा ॥ ४ ॥ ११ ॥ सारग महला ५ ॥ अनदिनु राम के गुण कहीऐ ॥ सगल पदारथ सरब सूख सिधि मन बांछत फल लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवहु संत प्रान सुखदाते सिमरह प्रभु अबिनासी ॥ अनाथह नाथु दीन दुख भंजन पूरि रहिओ घट वासी ॥ १ ॥ गावत सुनत सुनावत सरधा हरि रसु पी वडभागे ॥ कलि कलेस मिटे सभि तन ते राम नाम लिव जागे ॥ २ ॥ कामु क्रोधु झूठु तजि निंदा हरि सिमरनि बंधन तूटे ॥ मोह मगन अहं अंध ममता गुर किरपा ते छूटे ॥ ३ ॥ तू समरथु पारब्रहम सुआमी करि किरपा जनु तेरा ॥ पूरि रहिओ सरब महि ठाकुरु नानक सो प्रभु नेरा ॥ ४ ॥ १२ ॥ सारग महला ५ ॥ बलिहारी गुरदेव चरन ॥ जा कै संगि पारब्रहमु धिआईऐ उपदेसु हमारी गति करन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूख रोग भै सगल बिनासे जो आवै हरि संत सरन ॥ आपि जपै अवरह नामु जपावै वड समरथ तारन तरन ॥ १ ॥ जा को मंत्रु उतारै सहसा ऊणे कउ सुभर भरन ॥ हरि दासन की आगिआ मानत ते नाही फुनि गरभ परन ॥ २ ॥ भगतन की टहल कमावत गावत दुख काटे ता के जनम मरन ॥ जा कउ भइओ क्रिपालु बीठुला तिनि हरि हरि अजर जरन ॥ ३ ॥ हरि रसहि अघाने सहजि समाने मुख ते नाही जात बरन ॥ गुर प्रसादि नानक संतोखे नामु प्रभू जपि जपि उधरन ॥ ४ ॥ १३ ॥ सारग महला ५ ॥ गाइओ री मै गुण निधि मंगल गाइओ ॥ भले संजोग भले दिन अउसर जउ गोपालु रीझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह चरन मोरलो माथा ॥ हमरे मसतकि संत धरे हाथा ॥ १ ॥ साधह मंत्रु मोरलो मनूआ ॥ ता ते गतु होए त्रै गुनीआ ॥ २ ॥ भगतह दरसु देखि नैन रंगा ॥ लोभ मोह तूटे भ्रम संगा ॥ ३ ॥ कहु नानक सुख सहज अनंदा ॥ खोल्हि भीति मिले परमानंदा ॥ ४ ॥ १४ ॥

सारग महला ५ घरु २ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई ॥ दरसन पिआस प्रिअ प्रीति मनोहर मनु न रहै बहु बिधि उमकाई

ना ही परमात्मा से मिलाप होता है ।। ३ ।। खोजते-खोजते हुए मैंने यही समझा है कि प्रभु-नाम में ही सभी सुख विद्यमान बने रहते हैं। नानक का कथन है कि यह उसी को प्राप्त होता है जिसके माथे पर लेख लिखे हुए हों।। ४ ।। ११ ।। सारग महला ५ ।। प्रतिदिन प्रभु के गुणों का ही गायन करते रहना चाहिए क्योंकि यही सभी पदार्थों और सभी सफलताओं को देने वाला है और इसी के माध्यम से मनोवांछित फल प्राप्त किया जाता है।। १ ।। रहाउ।। हे प्राणों को सुख देने वाले सन्त पुरुषो, तुम आओ और उस अविनाशी प्रभु का सुमिरन किया जाए। दीनों के दुख का नाश करने वाला अनाथों का नाथ वह प्रभु सबके हृदय में समाया हुआ है।। १ ।। हे भाग्यशाली व्यक्ति, उसका गुणानुवाद करते हुए, उसकी महिमा सुनते सुनाते हुए तू श्रद्धा पूर्वक प्रभु रूपी रस का पान कर। राम नाम में लौ लग जाने से इस तन के सभी झगड़े और दुख मिट जाते हैं।। २ ।। काम, क्रोध और झूठ, निन्दा को त्यागते हुए प्रभु के सुमिरन के माध्यम से बन्धन टूट जाते हैं। गुरु की कृपा से ही व्यक्ति मोह की लीनता और अहंकार तथा ममता से छूट जाता है।। ३ ।। हे स्वामी तू परब्रह्म और समर्थ है, मुझ पर कृपा कर क्योंकि मैं तेरा सेवक हूँ। वह मालिक प्रभु सबमें समाया हुआ है और हे नानक, वह प्रभु पास ही है।। ४ ।। १२ ।। सारग महला ५ ।। मैं गुरु प्रभु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ जिनके संग परब्रह्म की आराधना की जाती है और जिनका उपदेश हमारी मुक्ति करने वाला है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु-सन्त की शरण में जो भी आ जाता है उसके सभी दुख रोग और भय नष्ट हो जाते हैं। वह स्वयं तो प्रभु-नाम का सुमिरन करता ही है और साथ ही साथ पार उतारने वाले बड़े समर्थ प्रभु का नाम दूसरों से भी सुमिरन करवाता है।। १ ।। उसका उपदेश भय को दूर कर देता है और खाली हो चुके हृदय रूपी तालाबों को पूरी तरह भर देता है। जो प्रभु के सेवकों की आज्ञा मान लेते हैं वे फिर गर्भ योनि में नहीं पड़ते।। २ ।। जो भक्तों की सेवा करते हुए उस प्रभु के गुण गाते हैं उनके जन्म-मरण के दुख कट जाते हैं। वह प्रभु जिस पर कृपालु हो जाए वह उस असहय प्रभु को अपने हृदय में धारण कर लेता है।। ३ ।। जो प्रभु के नाम रस में सन्तुष्ट हो गए हैं वे सहजभाव में लीन हो गए हैं और इस मुंह से उनकी महिमा का वर्णन नहीं हो सकता। हे नानक, गुरु की कृपा से ही वे प्रभु-नाम का जाप कर के सन्तुष्ट हो गए हैं और उसका सुमिरन करते हुए ही पार उतर गए हैं।। ४ ।। १३ ।। सारग महला ५ ।। हे सखी, मैंने गुणों के भण्डार उस प्रभु का मंगलगीत गाया है। वही भला संयोग, भला दिन और भला अवसर है जब उस प्रभु को प्रसन्न कर लिया जाता है।। १ ।। रहाउ।। शान्त पुरुषों के चरण मेरे माथे हैं और हमारे मस्तक पर सन्तजनों ने अपना हाथ रख दिया है।। १ ।। अब मेरा मन उनके उपदेश की साधना करता है अर्थात उसे जीवन में उतारता है जिससे तीनों गुण मुझसे दूर चले गए अर्थात मैं चौथी अवस्था में पहुँच गया हूँ।। २ ।। भक्तों का दर्शन करके नयनों में प्रभु प्रेम का रंग लग गया है और साथ ही साथ लोभ, मोह और भ्रम नष्ट हो गए हैं।। ३ ।। नानक का कथन है कि स्वाभाविक सुख और आनन्द बन गया है और अज्ञान की दीवार हटाकर हम परम आनन्द प्रभु में मिल गए हैं।। ४ ।। १४ ।।

सारग महला ५ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मैं अपने हृदय की वेदना कैसे कहूँ। मनोहर प्रियतम का प्रेम और दर्शन की प्यास बनी हुई है ; मेरा मन मानता नहीं और अनेकों विधियों से उमंगपूर्ण बना रहता है

॥ १ ॥ रहाउ ॥ चितवनि चितवउ प्रिअ प्रीति बैरागी कदि पावउ हरि दरसाई ॥ जतन करउ इहु मनु नही धीरै कोऊ है रे संतु मिलाई ॥ १ ॥ जप तप संजम पुंन सभि होमउ तिसु अरपउ सभि सुख जांई ॥ एक निमख प्रिअ दरसु दिखावै तिसु संतन कै बलि जांई ॥ २ ॥ करउ निहोरा बहुतु बेनती सेवउ दिनु रैनाई ॥ मानु अभिमानु हउ सगल तिआगउ जो प्रिअ बात सुनाई ॥ ३ ॥ देखि चरित्र भई हउ बिसमनि गुरि सतिगुरि पुरखि मिलाई ॥ प्रभ रंग दइआल मोहि ग्रिह महि पाइआ जन नानक तपति बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ सारग महला ५ ॥ रे मूढ़े तू किउ सिमरत अब नाही ॥ नरक घोर महि उरध तपु करता निमख निमख गुण गांही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जनम भ्रमतौ ही आइओ मानस जनमु दुलभाही ॥ गरभ जोनि छोडि जउ निकसिओ तउ लागो अन टांही ॥ १ ॥ करहि बुराई ठगाई दिनु रैनि निहफल करम कमाही ॥ कणु नाही तुह गाहण लागे धाइ धाइ दुख पांही ॥ २ ॥ मिथिआ संगि कूड़ि लपटाइओ उरझि परिओ कुसमांही ॥ धरमराइ जब पकरसि बवरे तउ काल मुखा उठि जाही ॥ ३ ॥ सो मिलिआ जो प्रभू मिलाइआ जिसु मसतकि लेखु लिखांही ॥ कहु नानक तिन्ह जन बलिहारी जो अलिप रहे मन मांही ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ सारग महला ५ ॥ किउ जीवनु प्रीतमु बिनु माई ॥ जा के बिछुरत होत मिरतका ग्रिह महि रहनु न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ हीअ प्रान को दाता जा कै संगि सुहाई ॥ करहु क्रिपा संतहु मोहि अपुनी प्रभ मंगल गुण गाई ॥ १ ॥ चरन संतन के माथे मेरे ऊपरि नैनहु धूरि बांछाई ॥ जिह प्रसादि मिलीऐ प्रभ नानक बलि बलि ता कै हउ जाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १७ ॥ सारग महला ५ ॥ उआ अउसर कै हउ बलि जाई ॥ आठ पहर अपना प्रभु सिमरनु वडभागी हरि पांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भलो कबीरु दासु दासन को ऊतमु सैनु जनु नाई ॥ ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणि आई ॥ १ ॥ जीउ पिंडु तनु धनु साधन का इहु मनु संत रेनाई ॥ संत प्रतापि भरम सभि नासे नानक मिले गुसाई ॥ २ ॥ ४ ॥ १८ ॥ सारग महला ५ ॥ मनोरथ

।। १।। राहउ ।। प्रभु के प्रेम में वैराग्यवान बनी हुई हृदय में सोचती रहती हूँ कि कब उस प्रभु का दर्शन होगा। कोई ऐसा सन्त-पुरुष है जो मुझे उससे मिला दे क्योंकि मैं अनेकों यत्न करती हूँ परन्तु मेरे मन को धैर्य नहीं आता।। १ ।। मैं उस शान्त पुरुष के लिए अपना सारा जप, तप, संयम, पुण्य तथा सारा सुख कुर्बान करते हुए उसे अर्पण कर दूँगी। मैं उस शान्त पुरुष पर बहिलारी जाऊँगी जो एक निमिष भर के लिए भी मुझे प्रभु का दर्शन करा दे।। २ ।। मैं बहुत ही मिन्नत और विनती करती हुई दिन रात उसका सुमिरन करती हूँ। जो मुझे प्रियतम की कोई बात सुना दे तो मैं अपना सारा मान-अभिमान उसके लिए त्याग दूं।। ३ ।। गुरु के माध्यम से उस सच्चे सर्वव्यापक गुरु से जब मैं मिल गई तो इस कौतुक को देखकर मैं आश्चर्य से भर उठी। उस दयालु और आनन्दपूर्ण प्रभु को मैंने अपने हृदय रूपी घर में ही पा लिया और दास नानक की अग्नि का ताप शीतल हो गया है।। ४ ।। १ ।। ५ ।। सारग महला ५ ।। हे मूर्ख, तू अब उसका सुमिरन क्यों नहीं करता क्योंकि घोर नरक में पड़ा हुआ तो तू उलटा लटक कर तपस्या करता था और हर क्षण उस प्रभु के ही गुण गाता रहता था।। १ ।। रहाउ।। अनेकों जन्मों में भटकता हुआ तू आया है और यह दुर्लभ मानव जीवन तूने प्राप्त किया है। गर्भ योनि को छोड़कर जैसे ही तू बाहर निकला है तो तेरा ध्यान अन्य स्थानों पर लग गया है।। १ ।। तू ठगबाजी और दित-रात बुराई करता रहता है और इस प्रकार व्यर्थ के कामों में लगा रहता है। तू तो बगैर दाने वाली खेती की गहाई करने में लगा हुआ है और दौड़ते भागते हुए तू दुख ही प्राप्त कर रहा है।। २।। तू व्यर्थ ही झूठ के साथ लिपटा हुआ है और कच्चे रंग वाले कुसुम्भ के फूल में ही लीन बना हुआ है। हे पागल, जब तुझे धर्मराज पकड़ लेगा तब तू अपना काला मुंह लेकर यहाँ से उठकर चल देगा।। ३ ।। प्रभु से वही मिलता है जिसे प्रभु ही मिलाता है और जिसके माथे पर भाग्यलेख लिखा होता है। नानक का कथन है कि मैं उन सेवकों पर बलिहारी जाता हूँ जो मन से अलिप्त बने रहते हैं।। ४ ।। २ ।। १६ ।। सारग महला ५ ।। हे माँ, जिससे बिछुड़ने पर मैं मिट्टी हो जाता हूँ और घर में टिक नहीं पाता उस प्रियतम के बिना भला मेरा जीवन क्या है।। १ ।। रहाउ।। प्राण, हृदय का दाता जिनके साथ शोभायमान बना रहता है, हे सन्तजनों, मुझ पर अपनी कृपा करो ताकि मैं उस प्रभु के मंगलगीत गाता रहूँ।। १ ।। सन्तजनों के चरण मेरे माथे पर रहें और आँखों से उनकी चरणधूलि में बने रहने की मैं मनोकामना करता हूँ। हे नानक, जिसकी कृपा से उस प्रभु को मिला जा सकता है मैं उस पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ।। २ ।। ३ ।। १७ ।। सारग महला ५ ।। मैं उस अवसर पर बलिहारी जाता हूँ जिसमें मैं आठों प्रहर अपने प्रभु का सुमिरन करता हुआ बड़े भाग्य से उस प्रभु को पा जाता हूँ।। १ ।। रहाउ।। दासों का दास कबीर और प्रभु का सेवक सैन उत्तम भक्त हैं। समदर्शी नामदेव ऊँचे से ऊँचा है और रविदास की प्रभु के साथ खूब बनी हुई थी।। १ ।। यह शरीर, प्राण, धन सब साधु पुरुषों का है और यह मन सन्तजनों की चरणधूलि है। शान्त पुरुषों के प्रताप से ही सभी भ्रम भाग खड़े होते हैं और हे नानक, धरती का स्वामी वह प्रभु मिल जाता है।। २ ।। ४ ।। १८ ।। सारग महला ५ ।। उस सच्चे गुरु प्रभु ने मेरे सभी मनोरथ

पूरे सतिगुर आपि ॥ सगल पदारथ सिमरनि जा कै आठ पहर मेरे मन जापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि आगै दरगह होइ खलास ॥ १ ॥ सरनि तुमारी आइओ करते पारब्रहम पूरन अबिनास ॥ करि किरपा तेरे चरन धिआवउ नानक मनि तनि दरस पिआस ॥ २ ॥ ५ ॥ १९ ॥

सारग महला ५ घरु ३ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

मन कहा लुभाईऐ आन कउ ॥ ईत ऊत प्रभु सदा सहाई जीअ संगि तेरे काम कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु प्रिअ प्रीति मनोहर इहै अघावन पांन कउ ॥ अकाल मूरति है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ ॥ १ ॥ बाणी मंत्रु महा पुरखन की मनहि उतारन मांन कउ ॥ खोजि लहिओ नानक सुख थानां हरि नामा बिस्राम कउ ॥ २ ॥ १ ॥ २० ॥ सारग महला ५ ॥ मन सदा मंगल गोबिंद गाइ ॥ रोग सोग तेरे मिटहि सगल अघ निमख हीऐ हरि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई साधू सरणी जाइ पाइ ॥ जउ होइ क्रिपालु दीन दुख भंजन जम ते होवै धरम राइ ॥ १ ॥ एकस बिनु नाही को दूजा आन न बीओ लवै लाइ ॥ मात पिता भाई नानक को सुखदाता हरि प्रान साइ ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन सगल उधारे संग के ॥ भए पुनीत पवित्र मन जनम जनम के दुख हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मारगि चले तिन्ही सुखु पाइआ जिन्ह सिउ गोसटि से तरे ॥ बूडत घोर अंध कूप महि ते साधू संगि पारि परे ॥ १ ॥ जिन्ह के भाग बडे है भाई तिन्ह साधू संगि मुख जुरे ॥ तिन्ह की धूरि बांछै नित नानकु प्रभु मेरा किरपा करे ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन राम राम राम धिआंए ॥ एक पलक सुख साध समागम कोटि बैकुंठह पांए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ देह जपि होत पुनीता जम की त्रास निवारै ॥ महा पतित के पातिक उतरहि हरि नामा उरि धारै ॥ १ ॥ जो जो सुनै राम जसु निरमल ता का जनम मरण दुखु नासा ॥ कहु नानक पाईऐ वडभागी मन तन होइ बिगासा

पूरे कर दिए हैं। जिसके सुमिरन से सभी पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं; हे मेरे मन, तू आठों प्रहर उसका सुमिरन करता रह।। १ ।। रहाउ।। हे स्वामी, तेरा नाम ऐसा अमृत है कि इसे जो भी पीता है वह तृप्त हो जाता है। उसके जन्मों-जन्मों के पाप भाग खड़े होते हैं और आगे प्रभु के दरबार में भी उसको मुक्ति मिल जाती है।। १ ।। हे पूर्ण, परब्रह्म, अविनाशी प्रभु, मैं तो तुम्हारी शरण में आ गया हूँ। मुझ पर कृपा कर ताकि मैं तेरे चरणों की आराधना करता रहूँ और नानक के मन तथा तन में तेरे दर्शनों की प्यास ही बनी हुई हैं।। २ ।। ५ ।। १६ ।।

सारग महला ५ घरु ३ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मन, अब तू किसी अन्य के लालच में मत पड़ क्योंकि इस लोक और उस लोक में वह प्रभु तेरे प्राणों के साथ बना रहकर तेरे काम आने वाला सदैव सहायक है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का अमृत नाम और उसकी मनोहर प्रीति ही तुझे सन्तुष्ट करने वाली है। साधसंगत ही उस कालातीत रूप वाले प्रभु पर ध्यान लगाने के लिए सुन्दर स्थान है।। १ ।। मन का अभिमान उतारने के लिए महा पुरुषों की वाणी ही महामन्त्र है। नानक ने तो प्रभु का नाम ही सुख के स्थान के रूप में आराम करने के लिए ढूँढ निकाला है।। २ ।। १ ।। २० ।। सारग महला ५ ।। हे मन, तू सदैव प्रभु के मंगल गीत गाता रह। तू निमिष मात्र के लिए ही हृदय में प्रभु-नाम का सुमिरन करेगा तो तेरे सारे पाप, रोग और शोक नष्ट हो जाएँगे।। १ ।। रहाउ।। तू अधिक चतुराई और सयानेपन को छोड़कर साधु पुरुषों की शरण में जा पड़। जब वह दीनों के दुख को नष्ट करने वाला प्रभु कृपालु हो जाए तो मौत का दूत ही धर्मराज बन जाता है अर्थात घोर दण्ड देने की बजाए न्याय पूर्ण व्यवहार करता है।। १ ।। एक प्रभु के बिना दूसरा कोई नहीं है और अन्य कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता। सुखदाता और प्राणों का आश्रय वह प्रभु ही नानक का माता पिता तथा भाई है।। २ ।। २ ।। २१ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु ने अपने सारे सत्संगी सेवकों का उद्धार कर दिया। वे अब शुद्ध एवं पवित्र मन वाले हो गए हैं और उनके जन्मों-जन्मों के दुख दूर हो गए हैं।। १ ।। रहाउ।। जो सीधे मार्ग पर चले हैं उन्होंने ही सुख प्राप्त किया है और संगत रूप में जिनसे उनकी विचार चर्चा हुई है वे भी पार उतर गए हैं। जो अज्ञान के अंधेरे कुँए में डूबे हुए थे वे भी साधसंगत में पार उतर गए हैं।। १ ।। हे भाई, जिनके अच्छे भाग्य है; उनके मुख ही साधुसंगत में एक दूसरे के आमने-सामने बने रहते हैं। मेरा प्रभु मुझ पर कृपा करे और नानक तो सदैव उनकी चरण धूलि की कामना ही करता है।। २ ।। ३ ।। २२ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु के सेवक बार-बार प्रभु का ही सुमिरन करते हैं क्योंकि साधसंगत में एक पलक झपकने जितना सुख ही करोड़ों बैकुण्ठों के सुख के बराबर प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ।। उसका सुमिरन करने से यह दुर्लभ शरीर पवित्र हो जाता है और यह यम के भय को भी दूर कर देता है। महा पतितों के पाप भी तब उतर जाते हैं जब वे प्रभु-नाम को हृदय में धारण कर लेते हैं।। १ ।। जो जो भी प्रभु के निर्मल यश को सुनता है उसका जन्म-मरण का दुख नष्ट हो जाता है। नानक का कथन है कि प्रभु का निर्मल यश बड़े भाग्य से ही प्राप्त होता है और जब प्राप्त हो जाता है तो मन तन खिल उठता है

॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥

सारग महला ५ दुपदे घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मोहन घरि आवहु करउ जोदरीआ ॥ मानु करउ अभिमानै बोलउ भूल चूक तेरी प्रिअ चिरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि सुनउ अरु पेखउ नाही भरमि भरमि दुख भरीआ ॥ होइ क्रिपाल गुर लाहि पारदो मिलउ लाल मनु हरीआ ॥ १ ॥ एक निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोटि दिनस लख बरीआ ॥ साधसंगति की भीर जउ पाई तउ नानक हरि संगि मिरीआ ॥ २ ॥ १ ॥ २४ ॥ सारग महला ५ ॥ अब किआ सोचउ सोच बिसारी ॥ करणा सा सोई करि रहिआ देहि नाउ बलिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चहु दिस फूलि रही बिखिआ बिखु गुर मंत्रु मूखि गरुड़ारी ॥ हाथ देइ राखिओ करि अपुना जिउ जल कमला अलिपारी ॥ १ ॥ हउ नाही किछु मै किआ होसा सभ तुम ही कल धारी ॥ नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु संत सदकारी ॥ २ ॥ २ ॥ २५ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि सरब उपाव बिरकाते ॥ करण कारण समरथ सुआमी हरि एकसु ते मेरी गाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखे नाना रूप बहु रंगा अन नाही तुम भांते ॥ देंहि अधारु सरब कउ ठाकुर जीअ प्रान सुखदाते ॥ १ ॥ भ्रमतौ भ्रमतौ हारि जउ परिओ तउ गुर मिलि चरन पराते ॥ कहु नानक मै सरब सुखु पाइआ इह सूखि बिहानी राते ॥ २ ॥ ३ ॥ २६॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि लबधिओ है हरि टेका ॥ गुर दइआल भए सुखदाई अंधुलै माणिकु देखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काटे अगिआन तिमर निरमलीआ बुधि बिगास बिबेका ॥ जिउ जल तरंग फेनु जल होई है सेवक ठाकुर भए एका ॥ १ ॥ जह ते उठिओ तह ही आइओ सभ ही एकै एका ॥ नानक द्रिसटि आइओ स्रब ठाई प्राणपती हरि समका ॥ २ ॥ ४ ॥ २७ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरा मनु एकै ही प्रिअ मांगै ॥ पेखि आइओ सरब थान देस प्रिअ रोम न समसरि लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै नीरे अनिक भोजन बहु बिंजन तिन सिउ द्रिसटि न करै रुचांगै ॥ हरि रसु चाहै प्रिअ प्रिअ मुखि टेरै जिउ अलि कमला लोभांगै

।। २ ।। ४ ।। २३ ।।

सारग महला ५ दोपदे घरु ४ ੧ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मोहन प्रभु, मैं विनती करती हूँ कि मेरे हृदय रूपी घर में आ जाओ। मैं गर्व करती हूँ और अभिमान में बोलती हूँ परन्तु इस भूल चुक के बावजूद हे प्यारे, मैं तेरी ही दासी हूँ।। १ ।। रहाउ।। मैं सुनती हूँ कि तू पास ही है परन्तु मैं तुझे देख नहीं पाती और भटक-भटक कर दुखों से भरी रहती हूँ। गुरु ही कृपा करके मेरे और तेरे बीच का पर्दा नष्ट कर देता है और फिर मैं जब प्यारे प्रभु से मिलती हूँ तो मेरा मन हरा-भरा हो उठता है।। १ ।। यदि एक क्षण भर के लिए भी वह मुझे भूल जाता है तो वह क्षण ही मुझे करोड़ों दिन और लाखों वर्षों जैसा लगने लगता है। जब साधसंगत के समूह को मैंने प्राप्त कर लिया तब हे नानक, मुझे प्रभु का साथ मिल गया है।। २ ।। १ ।। २४ ।। सारग महला ५ ।। अब मैं क्या सोचूं, मैंने तो सारी चिन्ता छोड़ दी है। प्रभु ने जो करना था वह कर रहा है और हे प्रभु, मुझे अपना नाम प्रदान कर क्योंकि मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। रहाउ।। चारों ओर माया का विष फल-फूल रहा है परन्तु मेरे मुख में तो गुरु का उपदेश ही गारुड़ी मंत्र है जो विष का नाश करने वाला है। जैसे जल में रहता हुआ कमल अलिप्त रहकर नष्ट नहीं होता, इसी तरह हे प्रभु, तुमने अपना हाथ देकर मुझे बचाया हुआ है।। १ ।। मैं कुछ नहीं हूँ और मैं हो भी क्या सकता हूँ; तुमने ही अपने बल को सबमें कार्यशील बना रखा है। नानक तो प्रभु के पीछे भाग कर ही लग गया है और हे प्रभु, तू शान्तपुरुषों के कारण ही मेरी रक्षा कर ले।। २ ।। २ ।। २५ ।। सारग महला ५ ।। अब मैंने सभी उपायों को त्याग दिया है क्योंकि करने कराने वाला वह समर्थ स्वामी एक प्रभु ही है और उसी में ही मेरी गति है।। १ ।। रहाउ।। मैंने अनेकों रूपों-रंगों को देखा है परन्तु हे प्रभु, तेरे जैसा अन्य कोई नहीं हैं। हे सबके मालिक और मेरे प्राणों को सुख देने वाले प्रभु, मुझे अपना आसरा प्रदान कर दे।। १ ।। भटकता-भटकता जब मैं हारकर गिर पड़ा तब गुरु से मिलकर मैंने तुम्हारे चरणों को पहचाना है। नानक का कथन है कि तब मैंने सम्पूर्ण सुख प्राप्त कर लिया और मेरी यह जीवन रूपी रात्रि सुखपूर्वक व्यतीत हो गई है।। २ ।। ३ ।। २६ ।। अब मुझे प्रभु का आसरा मिल गया है। सुखदाता गुरु दयालु हो गया है और इस अन्धे अज्ञानी ने भी प्रभु-नाम रूपी माणिक को जान लिया है।। १ ।। रहाउ।। उसने मेरे अज्ञान के अंधेरे को काट दिया है और निर्मल विवेक बुद्धि को प्रकाशित कर दिया है। जैसे जल की लहर और उन लहरों की झाग पुनः जल में ही मिलकर जल बन जाती है वैसे ही अब यह सेवक और मालिक प्रभु एक हो गए हैं। जिससे यह निकला था फिर उसी में आ पहुँचा है और सारा कुछ फिर एक ही एक हो गया है। हे नानक, अब वह सबके प्राणों का स्वामी प्रभु समान भाव से सभी सयानों पर दृष्टिगोचर हो उठा है।। २ ।। ४ ।। २७ ।। सारग महला ५ ।। अब मेरा मन एक प्रियतम रूपी रस की ही माँग करता रहता है। मैं सभी स्थानों और देशों को देख आया हूँ परन्तु ये सभी उस प्रिय प्रभु के एक रोम के बराबर भी नहीं हैं।। १ ।। रहाउ।। अनेकों प्रकार के भोजन और व्यंजन मैंने इस मन के सामने परोसे हैं परन्तु इन पदार्थों को ना तो अब यह देखता हैं और ना ही इनमें इसकी रुची बनती है। यह तो अब भँवरे की तरह केवल कमल के फूल के लिए ही ललचाता है, प्रभु का नाम रूपी रस चाहता है और मुख से प्रिय-प्रिय का उच्चारण करता रहता है।

॥ १ ॥ गुण निधान मनमोहन लालन सुखदाई सरबांगै ॥ गुरि नानक प्रभ पाहि पठाइओ मिलहु सखा गलि लागै ॥ २ ॥ ५ ॥ २८ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो ठाकुर सिउ मनु मानां ॥ साध क्रिपाल दइआल भए है इहु छेदिओ दुसटु बिगाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही सुंदर तुमहि सिआने तुम ही सुघर सुजाना ॥ सगल जोग अरु गिआन धिआन इक निमख न कीमति जानां ॥ १ ॥ तुम ही नाइक तुम्हहि छत्रपति तुम पूरि रहे भगवाना ॥ पावउ दानु संत सेवा हरि नानक सद कुरबानां ॥ २ ॥ ६ ॥ २९ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि चीति आए प्रिअ रंगा ॥ बिसरिओ धंधु बंधु माइआ को रजनि सबाई जंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि सेवउ हरि रिदै बसावउ हरि पाइआ सतसंगा ॥ ऐसो मिलिओ मनोहरु प्रीतमु सुख पाए मुख मंगा ॥ १ ॥ प्रिउ अपना गुरि बसि करि दीना भोगउ भोग निसंगा ॥ निरभउ भए नानक भउ मिटिआ हरि पाइओ पाटंगा ॥ २ ॥ ७ ॥ ३० ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जीउ के दरसन कउ कुरबानी ॥ बचन नाद मेरे स्रवनहु पूरे देहा प्रिअ अंकि समानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छूटरि ते गुरि कीई सोहागनि हरि पाइओ सुघड़ सुजानी ॥ जिह घर महि बैसनु नही पावत सो थानु मिलिओ बासानी ॥ १ ॥ उन्ह कै बसि आइओ भगति बछलु जिनि राखी आन संतानी ॥ कहु नानक हरि संगि मनु मानिआ सभ चूकी काणि लोकानी ॥ २ ॥ ८ ॥ ३१ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मेरो पंचा ते संगु तूटा ॥ दरसनु देखि भए मनि आनद गुर किरपा ते छूटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखम थान बहुत बहु धरीआ अनिक राख सूरूटा ॥ बिखम गार्ह करु पहुचै नाही संत सानथ भए लूटा ॥ १ ॥ बहुतु खजाने मेरै पालै परिआ अमोल लाल आखूटा ॥ जन नानक प्रभि किरपा धारी तउ मन महि हरि रसु घूटा ॥ २ ॥ ९ ॥ ३२ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मेरो ठाकुर सिउ मनु लीना ॥ प्रान दानु गुरि पूरै दीआ उरझाइओ जिउ जल मीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर इह अरपि सगल दानु कीना ॥ मंत्रु द्रिड़ाइ हरि अउखधु गुरि दीओ तउ मिलिओ सगल प्रबीना ॥ १ ॥ ग्रिहु तेरा तू

।। १ ।। वह मनमोहन प्रभु गुणों का भण्डार है और सब प्रकार से सुख देने वाला है। हे नानक, गुरु ने मुझे प्रभु के पास भेजा है ताकि मैं उसे अपना मित्र बनाकर उसके गले लग जाऊँ।।२ ॥५ ॥२८ ॥सारग महला ५ ।। मेरा मन तो अब प्रभु में सन्तुष्ट हो गया हैं। साधु-पुरुष मुझ पर कृपालु और दयालु हो गए हैं और उन्होंने मेरे अन्दर का द्वैतभाव नष्ट कर दिया है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तुम ही सुन्दर हो, तुम ही सयाने हो, तुम ही सब विधियों को जानने वाले सर्वव्यापक और सुजान हो। सब प्रकार के योग, ज्ञान और ध्यान एक क्षण भर के लिए भी उस प्रभु के महत्व को नहीं जान पाए हैं।। १ ।। तुम ही हमारे नायक, छत्रपति राजा और तुम ही सर्वत्र समाए हुए भगवान हो। हे नानक, मैं शान्त पुरुषों की सेवा का दान पा जाऊँ तो उस प्रभु पर सदैव बलिहारी जाता रहूंगा॥२ ॥६ ॥२६ ॥सारग महला ५ ।। मेरे मन में उस प्रियतम के विनोदपूर्ण कौतुक बस गए हैं जिससे माया के धन्धे और बन्धन पीछे रह गए हैं और मेरी जीवन रुपी सम्पूर्ण रात्रि विकारों से युद्ध करने में ही सफलतापूर्वक व्यतीत हो गई है।। १ ।। रहाउ।। मैं प्रभु की सेवा करता हूँ और उसे हृदय में बसाता हूँ और मैंने सत्संगति में ही उस प्रभु को प्राप्त किया है। मुझे तो वह मनोहर प्रियतम ऐसा मिल गया है कि मैंने सभी माँगे हुए सुख प्राप्त कर लिए हैं।। १ ।। गुरु ने मुझे वह प्रियतम मेरे वश में कर दिया है जिससे अब मैं निश्चिंत होकर सभी पदार्थों का और उसकी संगत का आनन्द लेता हूँ। हे नानक, प्रभु ने अब ऐसा पाठ पढ़ा दिया है कि सभी प्रकार के भय मिट गए हैं और हम पूर्ण रूप से निर्भय हो गए हैं।। २ ।। ७ ।। ३० ।। सारग महला ५ ।। मैं प्रभु के दर्शन कर कुर्बान जाती हूँ। उसके वचनों की सुरीली ध्वनियां मेरे कानों में भर रही हैं और मेरा शरीर उस प्रियतम की गोदी में समाया हुआ है।। १ ।। रहाउ।। छोड़ी हुई स्त्री से गुरु ने फिर मुझे सुहागिन बना दिया है जिससे मैंने उस सुन्दर, सुजान प्रभु को पा लिया है। जिस हृदय रूपी घर में मुझे बैठना नसीब नहीं होता था वह स्थान अब स्थिरता से निवास करने के लिए मुझे प्राप्त हो गया है।। १ ।। जिन्होंने वास्तविक संतपन की आन को बचाए रखा है वह भक्तवत्सल प्रभु उनके वश में बना रहता है। नानक का कथन है कि जब मेरा मन प्रभु के साथ सन्तुष्ट हो गया तब मेरी सारी लोक लाज और मोहताजी समाप्त हो गई है।। २ ।। ८ ।। ३१ ।। सारग महला ५ ।। अब तो पाँचों विकारों से मेरी संगत समाप्त हो गई है। गुरु की कृपा से मैं उससे मुक्त हो गया हूँ और प्रभु का दर्शन करके मैं मन में आनन्दित हो उठा हूँ।। १ ।। रहाउ।। शरीर रूपी ठिकाना बहुत विषम स्थान है जिसके रहस्य को जानना इसलिए भी कठिन है क्योंकि इसकी रखवाली करने वाले काम, क्रोध आदि पाँच शूरवीर हैं। इसके चारों ओर भयानक खाई हैं जिससे इस तक हाथ नहीं पहुँच पाता; शान्त पुरुषों का साथ होने से ही मैंने इस शरीर को तथा इसके रखवालों को लूटा है।। १ ।। अब मेरे पल्ले (हाथ) अनेकों खजाने, अमूल्य और अक्षय लालों का भण्डार आ गया है। हे दास नानक, जब प्रभु ने कृपा की तभी इस मन को प्रभु-नाम के रस के घूँट प्राप्त हो गए हैं।। २ ।। ६ ।। ३२ ।। सारग महला ५ ।। मेरा मन अब उस प्रभु में लीन हो गया है। पूर्ण गुरु ने इसे प्राणों का दान दिया है और इसे इस प्रकार अपने प्रेम में लीन कर लिया है जैसे मछली पानी में ही लीन बनी रहती है।। १ ।। रहाउ।। काम, क्रोध, लोभ, अभिमान, ईर्ष्या आदि सब को मैंने लुटा दिया है। जब गुरु ने अपना उपदेश देकर प्रभु-नाम की औषधि मुझे दी तो सभी गुणों में प्रवीण प्रभु मुझे प्राप्त हो गया है।। १ ।। हे प्रभु, तू मेरा मालिक है और यह शरीर रूपी घर तेरा ही है ;

ठाकुरु मेरा गुरि हउ खोई प्रभु दीना ॥ कहु नानक मै सहज घरु पाइआ हरि भगति भंडार खजीना ॥ २ ॥ १० ॥ ३३ ॥ सारग महला ५ ॥ मोहन सभि जीअ तेरे तू तारहि ॥ छुटहि संघार निमख किरपा ते कोटि ब्रहमंड उधारहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करहि अरदासि बहुतु बेनंती निमख निमख साम्हारहि ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन हाथ देइ निसतारहि ॥ १ ॥ किआ ए भूपति बपुरे कहीअहि कहु ए किस नो मारहि ॥ राखु राखु राखु सुखदाते सभु नानक जगतु तुम्हारहि ॥ २ ॥ ११ ॥ ३४ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि धनु पाइओ हरि नामा ॥ भए अचिंत त्रिसन सभ बुझी है इहु लिखिओ लेखु मथामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी फिरि आइओ देह गिरामा ॥ गुरि क्रिपालि सउदा इहु जोरिओ हथि चरिओ लालु अगामा ॥ १ ॥ आन बापार बनज जो करीअहि तेते दूख सहामा ॥ गोबिद भजन के निरभै वापारी हरि रासि नानक राम नामा ॥ २ ॥ १२ ॥ ३५ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि मिसट लगे प्रिअ बोला ॥ गुरि बाह पकरि प्रभ सेवा लाए सद दइआलु हरि ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ तू ठाकुरु सरब प्रतिपालकु मोहि कलत्र सहित सभि गोला ॥ माणु ताणु सभु तूहै तूहै इकु नामु तेरा मै ओल्हा ॥ १ ॥ जे तखति बैसालहि तउ दास तुम्हारे घासु बढावहि केतक बोला ॥ जन नानक के प्रभ पुरख बिधाते मेरे ठाकुर अगह अतोला ॥ २ ॥ १३ ॥ ३६ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना राम कहत गुण सोहं ॥ एक निमख ओपाइ समावै देखि चरित मन मोहं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सुणिऐ मनि होइ रहसु अति रिदै मान दुख जोहं ॥ सुखु पाइओ दुखु दूरि पराइओ बणि आई प्रभ तोहं ॥ १ ॥ किलविख गए मन निरमल होई है गुरि काढे माइआ द्रोहं ॥ कहु नानक मै सो प्रभु पाइआ करण कारण समरथोहं ॥ २ ॥ १४ ॥ ३७ ॥ सारग महला ५ ॥ नैनहु देखिओ चलतु तमासा ॥ सभ हू दूरि सभ हू ते नेरै अगम अगम घट वासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अभूलु न भूलै लिखिओ न चलावै मता न करै पचासा ॥ खिन महि साजि सवारि बिनाहे भगति वछल गुणतासा ॥ १ ॥ अंध कूप महि दीपकु बलिओ गुरि रिदै कीओ

सबके पास भी है, वह अगम्य भी है और प्रत्येक हृदय में निवास करने वाला भी है।। १ ।। रहाउ।। वह भूल ना करने वाला है, अपने हुकुम को लिख लिखकर लोगों तक नहीं पहुँचाता और साँसारिक राजाओं से इस बात में भी विलक्षण है कि कोई कार्य करने के लिए वह पचासों लोगों से सलाह नहीं होता। गुणों का भण्डार वह भक्तवत्सल भी है और क्षण भर में जीवों को उत्पन्न करके उनकी सम्भाल करके उन्हें विनष्ट भी कर देता है।। १ ।। हमारे हृदय रूपी अंधेरे कुँए में ज्ञान रूपी दीपक तब जलता है जब गुरु हमारे हृदय को गुरु ने मेरे अहंकार को दूर कर दिया है और प्रभु मुझे मिला दिया है। नानक का कथन है कि मैंने प्रभु की भक्ति के भण्डार को स्वाभाविक रूप से ही अपने हृदय रूपी घर में ही पा लिया है।। २ ।। १० ।। ३३ ।। सारग महला ५ ।। हे मनमोहन प्रभु, ये सब जीव तेरे ही हैं और तूने ही इन्हें पार उतारा है। तेरी क्षण भर की कृपा से सभी प्रकार के युद्धों के संहार समाप्त हो जाते हैं और तू करोड़ों ब्रह्माण्डों का उद्धार कर देता है।। १ ।। रहाउ।। अनेकों जीव तेरे सामने अरदास और अनेकों प्रकार से विनती करते हैं तथा हर क्षण तेरा सुमिरन करते रहते हैं, इसलिए हे दीनों के दुखों को नष्ट करने वाले प्रभु, कृपा करो और अपना हाथ देकर इन्हें पार उतार लो।। १ ।। इन बेचारे राजाओं के बारे में क्या कहा जाए। भला बताओ, क्या ये किसी को मार सकते हैं अर्थात जिसे प्रभु की सुरक्षा प्राप्त हो, उसे कोई भी मार नहीं सकता। नानक का कथन है कि हे सुखदाता प्रभु, सबकी रक्षा कर। क्योंकि सारा संसार तेरा ही है।। २ ।। ११ ।। ३४ ।। सारग महला ५ ।। अब मुझे प्रभु-नाम रूपी धन प्राप्त हो गया है। मैं अब चिन्तामुक्त हो गया हूँ, मेरी तृष्णा समाप्त हो गई है क्योंकि मेरे भाग्य का लेख ऐसा ही मेरे मस्तक पर लिखा गया है।। १ ।। रहाउ।। मैं शरीर रूपी गाँव में घूम फिर कर प्रभु को खोजता-खोजता वैराग्यवान हो उठा हूँ। गुरु की कृपा से कुछ ऐसा सौदा बन गया कि वह अगम्य और अमूल्य माणिक रूपी प्रभु मेरे हाथ लग गया है।। १ ।। अन्य जितने भी प्रकार के सौदे और व्यापार किए जाते हैं उनसे उतने ही प्रकार के दुख सहने पड़ते हैं। हे नानक, प्रभु का सुमिरन करने वाले व्यपारी निर्भय होते हैं और प्रभु क नाम ही उनकी रास-पूंजी होती है।। २ ।। ११ ।। ३५ ।। सारग महला ५ ।। उस प्रियतम प्रभु के बोल मेरे मन को मीठे लगते हैं। गुरु ही बाँह से पकड़कर उस सदैव दयालु बने रहने वाले प्रभु-प्रियतम की सेवा में लगाता है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तू ही हमारा मालिक और सबका पालनहार है और हम सब स्त्रियों समेत तेरे सेवक हैं। हमारा सम्मान और बल सब तू ही तू है और मुझे तो एक तेरे नाम का ही आसरा है।। १ ।। तू सिंहासन पर बैठा दे तब भी हम तेरे दास हैं और यदि तू हमसे घास कटवा ले तब भी भला हम क्या कह सकते हैं। दास नानक का प्रभु तो विधाता एवं सर्वव्यापक है और वह मेरा मालिक अथाह और अतुलनीय है।। २ ।। १३ ।। ३६ ।। सारंग महला ५ ।। यह जीभ उस प्रभु का गुणानुवाद करती हुई शोभायमान बनती है। वह एक क्षण में उत्पन्न करके नष्ट कर देता है और उसके इस कौतुक को देखकर मेरा मन मोहित हो उठा है।। १ ।। रहाउ।। उसका नाम सुनने से मन अत्यन्त आनन्दित होता है और हृदय का अभिमान तथा दुख भाग खड़े होते हैं। हे प्रभु, जब से तेरे साथ हमारी बन गई है तो हमने सुख को प्राप्त कर लिया है तथा हमारा दुख दूर हो गया है ; गुरु ने माया के छल कपट को हमारे अन्दर से निकाल दिया है। नानक का कथन है कि मैंने वह प्रभु पा लिया है जो सब कुछ करने कराने में समर्थ हैं।। २ ।। १४ ।। ३७ ।। सारग महला ५ ।। मैंने अपनी आँखों से इस कौतुक के तमाशे को देखा है कि वह प्रभु सबसे दूर भी है,

परगासा ॥ कहु नानक दरसु पेखि सुखु पाइआ सभ पूरन होई आसा ॥ २ ॥ १५ ॥ ३८॥ सारग महला ५ ॥ चरनह गोबिंद मारगु सुहावा ॥ आन मारग जेता किछु धाईऐ तेतो ही दुखु हावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे हसत पुनीत टहलावा ॥ रिदा पुनीत रिदै हरि बसिओ मसत पुनीत संत धूरावा ॥ १ ॥ सरब निधान नामि हरि हरि कै जिसु करमि लिखिआ तिनि पावा ॥ जन नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सुखि सहजे अनद बिहावा ॥ २ ॥ १६ ॥ ३९ ॥ सारग महला ५ ॥ धिआइओ अंति बार नामु सखा ॥ जह मात पिता सुत भाई न पहुचै तहा तहा तू रखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंध कूप ग्रिह महि तिनि सिमरिओ जिसु मसतकि लेखु लिखा ॥ खूल्हे बंधन मुकति गुरि कीनी सभ तूहै तुही दिखा ॥ १ ॥ अंम्रित नामु पीआ मनु त्रिपतिआ आघाए रसन चखा ॥ कहु नानक सुख सहजु मै पाइआ गुरि लाही सगल तिखा ॥ २ ॥ १७ ॥ ४० ॥ सारग महला ५ ॥ गुर मिलि ऐसे प्रभू धिआइआ ॥ भइओ क्रिपालु दइआलु दुख भंजनु लगै न ताती बाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते सास सास हम लेते तेते ही गुण गाइआ ॥ निमख न बिछुरै घरी न बिसरै सद संगे जत जाइआ ॥ १ ॥ हउ बलि बलि बलि बलि चरन कमल कउ बलि बलि गुर दरसाइआ ॥ कहु नानक काहू परवाहा जउ सुख सागरु मै पाइआ ॥ २ ॥ १८ ॥ ४१ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि सबदु लगो गुर मीठा ॥ खुल्हिओ करमु भइओ परगासा घटि घटि हरि हरि डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहम आजोनी संभउ सरब थान घट बीठा ॥ भइओ परापति अंम्रित नामा बलि बलि प्रभ चरणीठा ॥ १ ॥ सतसंगति की रेणु मुखि लागी कीए सगल तीरथ मजनीठा ॥ कहु नानक रंगि चलूल भए है हरि रंगु न लहै मजीठा ॥ २ ॥ १९ ॥ ४२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरि नामु दीओ गुरि साथे ॥ निमख बचनु प्रभ हीअरै बसिओ सगल भूख मेरी लाथे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा निधान गुण नाइक ठाकुर सुख समूह सभ नाथे ॥ एक आस मोहि तेरी सुआमी अउर दुतीआ आस बिराथे ॥ १ ॥ नैण

प्रकाशित कर देता है। नानक का कथन है कि उसका दर्शन देखकर मैंने सुख पाया है और मेरी आशा पूरी हो गई है।। २ ।। १५ ।। ३८ ।। सारग महला ५ ।। इन पैरों के लिए प्रभु का मार्ग ही सुहावना है। अन्य जितने मार्गों पर भी हम दौड़ते हैं उतने ही दुख और जलन प्राप्त होती है।। १ ।। रहाउ।। उसका दर्शन देखकर आँखें पवित्र हो जाती हैं और उसकी सेवा करके हाथ पवित्र हो जाते हैं। हृदय में प्रभु बस जाने से वह हृदय पवित्र हो जाता है और शान्त पुरुषों की चरण धूलि से व्यक्ति का मस्तक पवित्र हो जाता है।। १ ।। प्रभु के नाम के माध्यम से ही सभी प्रकार के खजाने प्राप्त हो जाते हैं परन्तु यह मिलते उनको ही हैं जिनके भाग्य में ऐसा लिखा होता है। दास नानक का तो पूर्ण गुरु से मिलाप हो गया है और उसकी जीवन रूपी रात्रि सहज स्वाभाविक सुख और आनन्द में ही व्यतीत होती है।। २ ।। १६ ।। ३६ ।। सारग महला ५ ।। अंतिम समय में सहायक बनने वाले प्रभु-नाम का मैंने सुमिरन किया है। जहाँ माता-पिता, पुत्र और भाई भी नहीं पहुँच पाते, हे प्रभु, तूने वहाँ- वहाँ हमारी रक्षा की है।। १ ।। रहाउ।। जिसके माथे पर ऐसे लेख लिखे हैं उन्होंने हृदय रूपी अन्धे कुँए में भी तेरा ही सुमिरन किया है। ऐसा करते हुए उनके बन्धन खुल गए हैं; गुरु के माध्यम से उन्हें मुक्ति मिल गई है और सब ओर तू ही तू दिखाई देने लग गया है। तेरे अमृत-नाम को पीकर मन तृप्त हो गया है और हमारी जीभ तथा आँखें पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो गई हैं। नानक का कथन है कि मैंने आनन्द प्राप्त कर लिया है।। २ ।। १७ ।। ४० ।। सारग महला ५ ।। गुरु से मिलकर हमने ऐसे प्रभु का सुमिरन किया है कि वह दुखों को नष्ट करने वाला प्रभु कृपालु और हम पर दयालु हो उठा है तथा अब हमें तो गर्म हवा तक नही छू पाती अर्थात हमारा कोई भी नुक्सान नहीं होता।। १ ।। रहाउ।। हम जितने भी सांस लेते हैं उतने ही उसके गुण गाते हैं। वह क्षण भर और घड़ी भर के लिए भी हमसे बिछुड़ता नहीं; हम जिधर भी जाते हैं वह सदैव हमारे साथ बना रहता है।। १ ।। मैं बार-बार उसके चरण कमलों पर बलिहारी जाता हूँ और गुरु के दर्शनों पर भी बार-बार कुर्बान होता हूँ। नानक का कथन है कि जब मैंने सुखों के सागर उस प्रभु को पा लिया है तो फिर भला मुझे किसकी परवाह है।। २ ।। १८ ।। ४१ ।। सारग महला ५ ।। शब्द-गुरु मेरे मन को मीठा लगता है क्योंकि उसके माध्यम से मेरा भाग्य खुल गया है, मेरा हृदय प्रकाशित हो उठा है और मुझे प्रत्येक जीव में प्रभु दिखाई देता है।। १ ।। रहाउ।। वह परब्रह्म प्रभु योनियों में ना आने वाला स्वयंभू अर्थात स्वतः प्रकाशित है तथा सभी स्थानों और हृदयों में निवास बनाए रखता है। उसका अमृत नाम हमें प्राप्त हो गया है और हम प्रभु के चरणों पर बार-बार बलिहारी जाते हैं।। १ ।। सत्संगत की चरण धूलि हमारे मस्तक पर लगने से हमने सभी तीर्थों के स्नान का फल पा लिया है। नानक का कथन है कि हम अब प्रभु के गाढ़े लाल रंग में रंग कर लाल हो गए हैं और प्रभु का यह रंग मजीठ का पक्का रंग है जो कभी नहीं उतरता।। २ ।। १६ ।। ४२ ।। सारग महला ५ ।। गुरु ने हमारे साथ के लिए प्रभु का नाम हमें प्रदान कर दिया है। उसका थोड़ा सा ही उपदेश मेरे हृदय में बसा है जिससे मेरी सारी भूख समाप्त हो गई है।। १ ।। रहाउ।। वह प्रभु कृपा का भण्डार, गुणों का मालिक और सभी सुखों के समूहों का स्वामी है। हे प्रभु, मुझे तो एक तुझसे ही आशा है क्योंकि दूसरी सभी आशाएं तो व्यर्थ हैं।। १ ।।

त्रिपतासे देखि दरसावा गुरि कर धारे मेरै माथे ॥ कहु नानक मै अतुल सुखु पाइआ जनम मरण भै लाथे ॥ २ ॥ २० ॥ ४३ ॥ सारग महला ५ ॥ रे मूढ़े आन काहे कत जाई ॥ संगि मनोहरु अंम्रितु है रे भूलि भूलि बिखु खाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ सुंदर चतुर अनूप बिधाते तिस सिउ रुच नही राई ॥ मोहनि सिउ बावर मनु मोहिओ झूठि ठगउरी पाई ॥ १ ॥ भइओ दइआलु क्रिपालु दुख हरता संतन सिउ बनि आई ॥ सगल निधान घरै महि पाए कहु नानक जोति समाई ॥ २ ॥ २१ ॥ ४४ ॥ सारग महला ५ ॥ ओअं प्रिअ प्रीति चीति पहिलरीआ ॥ जो तउ बचनु दीओ मेरे सतिगुर तउ मै साज सीगरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम भूलह तुम सदा अभूला हम पतित तुम पतित उधरीआ ॥ हम नीच बिरख तुम मैलागर लाज संगि संगि बसरीआ ॥ १ ॥ तुम गंभीर धीर उपकारी हम किआ बपुरे जंतरीआ ॥ गुर क्रिपाल नानक हरि मेलिओ तउ मेरी सूखि सेजरीआ ॥ २ ॥ २२ ॥ ४५ ॥ सारग महला ५ ॥ मन ओइ दिनस धंनि परवानां ॥ सफल ते घरी संजोग सुहावे सतिगुर संगि गिआनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धंनि सुभाग धंनि सोहागा धंनि देत जिनि मानां ॥ इहु तनु तुम्हरा सभु ग्रिहु धनु तुमरा हींउ कीओ कुरबानां ॥ १ ॥ कोटि लाख राज सुख पाए इक निमख पेखि द्रिसटानां ॥ जउ कहहु मुखहु सेवक इह बैसीऐ सुख नानक अंतु न जानां ॥ २ ॥ २३ ॥ ४६ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो सहसा दूखु गइआ ॥ अउर उपाव सगल तिआगि छोडे सतिगुर सरणि पइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब सिधि कारज सभि सवरे अहं रोग सगल ही खइआ ॥ कोटि पराध खिन महि खउ भई है गुर मिलि हरि हरि कहिआ ॥ १ ॥ पंच दास गुरि वसगति कीने मन निहचल निरभइआ ॥ आइ न जावै न कत ही डोलै थिरु नानक राजइआ ॥ २ ॥ २४ ॥ ४७ ॥ सारग महला ५ ॥ प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई ॥ मनमोहनु मेरे जीअ को पिआरो कवन कहा गुन गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खेलि खिलाइ लाड लाडावै सदा सदा अनदाई ॥ प्रतिपालै बारिक की निआई जैसे मात पिताई ॥ १ ॥ तिसु बिनु निमख नही रहि सकीऐ बिसरि न कबहू

गुरु के द्वारा मेरे माथे पर हाथ रखने के फलस्वरूप मेरी आँखें तुम्हारा दर्शन करके तृप्त हो गई हैं। नानक का कथन है कि मेरा जन्म और मरण का भय समाप्त हो गया है और मैंने अपार सुख प्राप्त कर लिया है।। २ ।। २० ।। ४३ ।। सारग महला ५ ।। हे मूर्ख, तू अन्य कहीं क्यों जाता है। मनोहर अमृत तेरे साथ है परन्तु तू भूला हुआ विष ही खाता चला जाता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु सुन्दर-चतुर, अनुपम और विधाता है, तुझे उसके साथ जरा सा भी प्रेम नहीं है। तूने झूठी ठगबूटी पा ली है और तेरा मन उस मोहिनी माया के साथ ही पागल बना हुआ है।। १ ।। जब सन्तजनों के साथ मिलाप हो गया तो दुखों को दूर करने वाला दयालु प्रभु कृपालु हो गया है। नानक का कथन है कि अब सभी खजाने हमने अपने हृदय रूपी घर में ही प्राप्त कर लिए है और हमारी ज्योति उस प्रभु में लीन हो गई है।। २ ।। २१ ।। ४४ ।। सारग महला ५ ।। ओअंकार रूप प्रभु प्यारे की प्रीति तो मेरे हृदय में प्रारम्भ और पहले से ही लगी हुई है। हे मेरे सच्चे गुरु, जबसे तूने मुझे उपदेश दिया है मैंने तभी से साज-शृंगार उस प्रभु से मिलने के लिए किया हुआ है।। १ ।। रहाउ।। हम भूलने वाले हैं और तुम सदैव कभी भी ना भूलने वाले बने रहते हो। हम पतित हैं और तुम पतितों का उद्धार करने वाले हो। हम तो बहुत ही घटिया वृक्ष हैं परन्तु तुम मलयगिरि पर्वत के समान सुगन्धित हो; मैं तेरे साथ बस रहा हूँ, तू अपने साथ रहते हुए की लाज रख।। १ ।। तुम गम्भीर, धैर्यवान और उपकारी हो परन्तु हम बेचारे जीव तुम्हारे सामने क्या हैं। हे नानक, गुरु के कृपालु होने पर मुझे उसने प्रभु से मिला दिया है और अब मेरी हृदय रूपी सेज सुखदायक हो गई है।। २ ।। २२ ।। ४५।। सारंग महला ५ ।। हे मन, वही दिन स्वीकृत और धन्य है, वही घड़ी सफल और संयोग का अवसर भला है जिसमें सच्चे गुरु के साथ ज्ञान प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ।। मेरा सौभाग्य धन्य है, मेरा सुहाग (प्रभु) धन्य है और वे भी धन्य हैं जिन्हें तुम सम्मान देते हो। यह तन, यह घर, यह धन-सम्पदा सब तुम्हारे हैं और तुम पर मैंने अपना हृदय कुर्बान कर दिया है।। १ ।। एक पल के लिए तेरे दर्शन करके लोगों ने लाखों-करोड़ों राजसुखों को प्राप्त कर लिया है। यदि तू मुंह से कह दे कि हे सेवक, यहाँ बैठ जाना है तो यह सुख भी मेरे लिए इतना बड़ा है कि हे नानक, मैं उसके रहस्य को नहीं जान सकता।। २ ।। २३ ।। ४६ ।। सारग महला ५।। अब मेरा भ्रम और दुख समाप्त हो गया है; मैंने अन्य सभी उपाय त्याग दिए और सच्चे गुरु की शरण में आ गया हूँ।। १ ।। रहाउ।। मुझे सभी सिद्धियां मिल गई हैं; मेरे सभी कार्य बन गए है और अहंकार का रोग पूरी तरह ही नष्ट हो गया है। जब गुरु से मिलकर मैंने प्रभु-नाम का उच्चारण किया तो क्षण भर में मेरे करोड़ों अपराध नष्ट हो गए।। १ ।। गुरु ने पाँचों सेवकों (विकारों) को वश में कर दिया है और अब मेरा मन निर्भय होकर स्थिर हो गया है। वह अब कहीं आता जाता नहीं और ना ही कहीं भागता है और हे नानक, अब उसका राज स्थिर हो गया है।। २ ।। २४ ।। ४७ ।। सारग महला ५ ।। मेरा प्रभु इस लोक और उस लोक में सदैव सहायक बना रहता है। वह मनमोहन मेरे प्राणों का प्यारा है और उसके गुणों का मैं कितना और कैसे बखान करूँ।। १ ।। रहाउ।। वह सदैव आनन्द देने वाला प्रभु मुझे खेल खेलाता है और लाड़-प्यार करता है। वह माता-पिता की तरह मुझको बच्चा मानकर मेरा पालन-पोषण करता है।। १ ।। इसके बिना तो क्षण भर भी नहीं रहा जा सकता इसलिए वह मुझे कभी भी ना भूले।

जाई ॥ कहु नानक मिलि संतसंगति ते मगन भए लिव लाई ॥ २ ॥ २५ ॥ ४८ ॥ सारग महला ५ ॥ अपना मीतु सुआमी गाईऐ ॥ आस न अवर काहू की कीजै सुखदाता प्रभु धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख मंगल कलिआण जिसहि घरि तिस ही सरणी पाईऐ ॥ तिसहि तिआगि मानुखु जे सेवहु तउ लाज लोनु होइ जाईऐ ॥ १ ॥ एक ओट पकरी ठाकुर की गुर मिलि मति बुधि पाईऐ ॥ गुण निधान नानक प्रभु मिलिआ सगल चुकी मुहताईऐ ॥ २ ॥ २६ ॥ ४९ ॥ सारग महला ५ ॥ ओट सताणी प्रभ जीउ मेरै ॥ द्रिसटि न लिआवउ अवर काहू कउ माणि महति प्रभ तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै काढि लीआ बिखु घेरै ॥ अंम्रित नामु अउखधु मुखि दीनो जाइ पइआ गुर पैरै ॥ १ ॥ कवन उपमा कहउ एक मुख निरगुण के दातेरै ॥ काटि सिलक जउ अपुना कीनो नानक सूख घनेरै ॥ २ ॥ २७ ॥ ५० ॥ सारग महला ५ ॥ प्रभ सिमरत दूख बिनासी ॥ भइओ क्रिपालु जीअ सुखदाता होई सगल खलासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवरु न कोऊ सूझै प्रभ बिनु कहु को किसु पहि जासी ॥ जिउ जाणहु तिउ राखहु ठाकुर सभु किछु तुम ही पासी ॥ १ ॥ हाथ देइ राखे प्रभि अपुने सद जीवन अबिनासी ॥ कहु नानक मनि अनदु भइआ है काटी जम की फासी ॥ २ ॥ २८ ॥ ५१ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरो मनु जत कत तुझहि सम्हारै ॥ हम बारिक दीन पिता प्रभ मेरे जिउ जानहि तिउ पारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब भूखौ तब भोजनु मांगै अघाए सूख सघारै ॥ तब अरोग जब तुम संगि बसतौ छुटकत होइ रवारै ॥ १ ॥ कवन बसेरो दास दासन को थापिउ थापनहारै ॥ नामु न बिसरै तब जीवनु पाईऐ बिनती नानक इह सारै ॥ २ ॥ २९ ॥ ५२ ॥ सारग महला ५ ॥ मन ते भै भउ दूरि पराइओ ॥ लाल दइआल गुलाल लाडिले सहजि सहजि गुन गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर बचनाति कमात क्रिपा ते बहुरि न कतहू धाइओ ॥ रहत उपाधि समाधि सुख आसन भगति वछलु ग्रिहि पाइओ ॥ १ ॥ नाद बिनोद कोड आनंदा सहजे सहजि समाइओ ॥ करना आपि करावन आपे

नानक का कथन है कि सन्तपुरुषों की संगत में मिल बैठकर हम उस प्रभु में लौ लगाकर उसमें लीन हो गए हैं।। २ ।। २५ ।। ४८ ।। सारग महला ५ ।। अपने मित्र प्रभु का गुणानुवाद करते रहना चाहिए अन्य किसी से भी आशा नहीं रखनी चाहिए और सुखदाता उस प्रभु का सुमिरन करते रहना चाहिए।। १ ।। रहाउ।। जिसके स्थान पर सुख मंगल और कल्याण होता है उसी की शरण में पड़े रहना चाहिए। उसे त्यागकर यदि किसी व्यक्ति की पूजा और सुमिरन किया जाए तो लज्जा के मारे नमक जैसा होकर गल जाना पड़ता है।। १ ।। हमने उस एक प्रभु का ही आसरा पकड़ा है क्योंकि गुरु से मिलकर हमें यही मति और बुद्धि प्राप्त हुई है। हे नानक, गुणों का खजाना प्रभु जब मुझे मिल गया तो मेरी सारी मोहताजी समाप्त हो गई है।। २ ।। २६ ।। ४६ ।। सारग महला ५ ।। मेरे प्रभु का आसरा बहुत बलवान है। तेरे सम्मान और बड़प्पन के कारण मैं किसी को भी अपनी आँखों के नीचे नहीं लाता अर्थात मैं किसी अन्य को नहीं देखता।। १।। रहाउ।। प्रभु ने मुझे अंगीकार करके विषय-विकारों के घेरे से बाहर निकाल लिया है। जब मैं गुरु के चरणों में जा पड़ा तो उसने प्रभु के अमृत नाम की औषधि मेरे मुख में डाल दी है।। १ ।। हे मुझ गुणविहीन के दाता प्रभु, मैं तेरी अपने एक मुख से भला क्या प्रशंसा कर सकता हूँ। जब मेरे बन्धनों को काटकर तूने मुझे अपना बना लिया तो हे नानक, मुझे बहुत ही गहरे सुख की अनुभूति हुई है।। २ ।। २७ ।। ५० ।। सारग महला ५ ।। प्रभु के सुमिरन के फलस्वरूप दुख नष्ट हो गया। प्राणों को सुख देने वाला दाता प्रभु कृपालु हो गया है और मैं पूर्ण रूप से बन्धन मुक्त हो गया हूँ।। १ ।। रहाउ।। मुझे तो प्रभु के बिना अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता जिसकी शरण में मैं जा सकूं। हे मालिक, तुम जैसे भी हो, मेरी रक्षा कर लो क्योंकि मेरा तो सब कुछ तुम्हारे पास ही है।। १ ।। सदैव जीवन देने वाले अविनाशी प्रभु ने हाथ देकर मुझे बचा लिया है। नानक का कथन है कि मन अब आनन्दित हो गया है और यम की फाँसी कट गई है।। २ ।। २८ ।। ५१ ।। सारग महला ५ ।। मेरा मन यहाँ-वहाँ अर्थात सदैव तेरा ही सुमिरन करता रहता है। हे मेरे पिता प्रभु, हम बच्चे तो दीन हैं; तुझसे जैसे भी बन पड़े हमें पार उतार ले।। १ ।। रहाउ।। हम जब भूखे होते हैं तब भोजन माँगते हैं और तुम हमको सन्तुष्ट करके सभी सुख देते रहते हो। जब हम तुम्हारे साथ होते हैं तभी हम निरोग बने रहते हैं और तुमसे दूर होते ही हम मिट्टी की तरह हो जाते हैं।। १ ।। तुम्हारे दासों के दास हम लोगों का क्या ठिकाना हैं; हे पैदा करने वाले प्रभु, हमें भी तुमने ही उत्पन्न किया है। नानक तो यही विनती सब तक पहुँचाता है कि जब तक हमें प्रभु का नाम नहीं भूलता तब तक ही हमारा आध्यात्मिक जीवन बना रहता है अन्यथा हम शरीरिक रूप से जीवित रहते हुए भी मरे हुए ही होते हैं।। २ ।। २६ ।। ५२ ।। सारग महला ५ ।। अब मेरे मन से भय दूर हो गया है क्योंकि मैंने उस प्रेम के लाल रंग वाले प्यारे प्रभु के गुणों का स्वाभाविक रूप से ही गान किया है।। १ ।। रहाउ।। जब मैं गुरु के उपदेश को गुरु की कृपा से ही आचरण में उतारता हूँ तो फिर मुझे इधर-उधर दौड़ना नहीं पड़ता। मेरे सभी भ्रम और दुख दूर हो गए हैं और मुझे सुख की समाधि में ही ठिकाना और ठहराव मिल गया है और अपने हृदय में ही मैंने उस भक्त वत्सल प्रभु को पा लिया है।। १ ।। नाद, विनोद और आनन्द देने वाले कौतुक देखता हुआ मैं सहज भाव में ही स्वाभाविक रूप से उस प्रभु रूपी परम सहज अवस्था में लीन हो गया हूँ। नानक का कथन है कि वह स्वयं ही कर्ता है, स्वयं ही गुरु की कृपा से ही आचरण में उतारता हूँ तो फिर मुझे इधर-उधर दौड़ना नहीं पड़ता। मेरे सभी भ्रम और दुख दूर हो गए हैं और मुझे सुख की समाधि में ही ठिकाना और ठहराव मिल गया है ; अपने हृदय में ही मैंने उस भक्त वत्सल प्रभु को पा लिया है।। १ ।। नाद, विनोद और आनन्द देने वाले कौतुक देखता हुआ मैं सहज भाव में ही स्वाभाविक रूप से उस प्रभु रूपी परम सहज अवस्था में लीन हो गया हूँ। नानक का कथन है कि वह स्वयं ही कर्ता है, स्वयं ही

कहु नानक आपि आपाइओ ॥ २ ॥ ३० ॥ ५३ ॥ सारग महला ५ ॥ अंम्रित नामु मनहि आधारो ॥ जिनि दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूझी त्रिसना सहजि सुहेला कामु क्रोधु बिखु जारो ॥ आइ न जाइ बसै इह ठाहर जह आसनु निरंकारो ॥ १ ॥ एकै परगटु एकै गुपता एकै धुंधूकारो ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई कहु नानक साचु बीचारो ॥ २ ॥ ३१ ॥ ५४ ॥ सारग महला ५ ॥ बिनु प्रभ रहनु न जाइ घरी ॥ सरब सूख ताहू कै पूरन जा कै सुखु है हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंगल रूप प्रान जीवन धन सिमरत अनद घना ॥ वड समरथु सदा सद संगे गुन रसना कवन भना ॥ १ ॥ थान पवित्रा मान पवित्रा पवित्र सुनन कहनहारे ॥ कहु नानक ते भवन पवित्रा जा महि संत तुम्हारे ॥ २ ॥ ३२ ॥ ५५ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना जपती तूही तूही ॥ मात गरभ तुम ही प्रतिपालक म्रित मंडल इक तुही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमहि पिता तुम ही फुनि माता तुमहि मीत हित भ्राता ॥ तुम परवार तुमहि आधारा तुमहि जीअ प्रानदाता ॥ १ ॥ तुमहि खजीना तुमहि जरीना तुम ही माणिक लाला ॥ तुमहि पारजात गुर ते पाए तउ नानक भए निहाला ॥ २ ॥ ३३ ॥ ५६ ॥ सारग महला ५ ॥ जाहू काहू अपुनो ही चिति आवै ॥ जो काहू को चेरो होवत ठाकुर ही पहि जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपने पहि दूख अपने पहि सूखा अपुने ही पहि बिरथा ॥ अपुने पहि मानु अपुने पहि ताना अपने ही पहि अरथा ॥ १ ॥ किन ही राज जोबनु धन मिलखा किन ही बाप महतारी ॥ सरब थोक नानक गुर पाए पूरन आस हमारी ॥ २ ॥ ३४ ॥ ५७ ॥ सारग महला ५ ॥ झूठो माइआ को मद मानु ॥ ध्रोह मोह दूरि करि बपुरे संगि गोपालहि जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ राज जोबन अरु उमरे मीर मलक अरु खान ॥ मिथिआ कापर सुगंध चतुराई मिथिआ भोजन पान ॥ १ ॥ दीन बंधरो दास दासरो संतह की सारान ॥ मांगनि मांगउ होइ अचिंता मिलु नानक के हरि प्रान ॥ २ ॥ ३५ ॥ ५८ ॥ सारग महला ५ ॥ अपुनी इतनी कछू न सारी ॥ अनिक काज अनिक धावरता उरझिओ आन जंजारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिउस चारि के दीसहि

कराने वाला है और वह अपना रूप स्वयं ही है॥२॥३०॥५३॥सारग महला ५ ।। प्रभु का अमृत नाम ही मेरे मन का आसरा है। जिसने यह दिया है मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ और ऐसे पूर्ण गुरु को प्रणाम करता हूँ।। १ ।। रहाउ।। सुख देने वाला स्वाभाविक सहज मुझे मिल गया है जिससे मेरी तृष्णा बुझ गई है और काम, क्रोध के विष को जला दिया गया है। वह निराकार प्रभु ऐसे ठिकाने और आसन पर स्थिर बना रहता है कि वहां से उसे कहीं भी आना जाना नहीं होता।। १ ।। वह एक प्रभु स्वयं ही प्रकट बना रहता है, स्वयं ही गुप्त बना रहता है और वह स्वयं ही गुणातीत बना हुआ गहरी धुन्ध के रूप में स्थित रहता है। नानक का कथन है कि सच्चा विचार यही है कि वह प्रभु ही आदि में, मध्य में और अन्त में स्थिर बना रहता है।। २ ।। ३१ ।। ५४ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु के बिना एक घड़ी भर भी नहीं रहा जा सकता। जिन्होंने प्रभु को ही अपना सुख माना है वास्तव में उन्हीं के सारे सुख पूर्ण और सफल होते हैं।। १ ।। रहाउ।। जीवन के धन और मंगल रूप उस प्रभु का सुमिरन करने से अत्यन्त आनन्द बना रहता है। वह समर्थ, महान प्रभु सदैव साथ ही बना रहता है, मैं अपनी जीभ से उसके किन गुणों का बखान करूं।। १ ।। तेरा स्थान भी पवित्र है, तुझे मानने वाले भी पवित्र हैं और तेरा यश सुनने और कहने वाले की पावन-पवित्र हैं। नानक का कथन है कि जिस घर में तुम्हारे सन्तजन निवास करते हैं वह घर भी पवित्र होता है।। २ ।। ३२ ।। ५५ ।। सारग महला ५ ।। मेरी जीभ सदैव तेरा ही जाप करती रहती है। माँ के गर्भ में तुम ही पालनहार हो और इस मृत्युलोक में भी एक तुम ही स्थिर बने रहने वाले हो।। १ ।। रहाउ।। तुम ही हमारे पिता, माता, मित्र, हितैशी और भाई हो। तुम ही हमारे परिवार, हमारा आसरा और तुम ही हमें जीवन और प्राण देने वाले दाता प्रभु हो।। १ ।। तुम ही खजाना हो, तुम ही धन-सम्पत्ति हो और तुम ही रत्न-जवाहिर इत्यादि हो। तुम वह पारिजात वृक्ष हो जिसे जब गुरु से प्राप्त किया जाता है तो हे नानक, तो हम निहाल हो जाते है।। २ ।। ३३ ।। ५६ ।। सारग महला ५ ।। जहाँ कहीं भी हो सुख, दुख सबमें कोई अपना ही चित्त में याद आता है। इसी प्रकार जो जिसका सेवक होता है वह अपने उस मालिक के पास ही जाता है। प्रभु सबका है अतः दुख सुख में उसी को याद करना चाहिए।। १ ।। रहाउ।। दुख-सुख और मन की व्यथा किसी अपने के सामने ही रखी जाती है। अपने पर ही गर्व किया जाता है और किसी अपने के बल को ही अपना बल समझा जाता है तथा जरूरत के समय किसी अपने के पास ही जाया जाता है।। १ ।। किसी का आसरा राज, किसी का यौवन, किसी का धन-सम्पदा और किसी का आसरा माँ-बाप हैं परन्तु हे नानक, हमने तो सब कुछ गुरु से ही प्राप्त कर लिया है और हमारी आशाएँ पूरी हो गई हैं।। २ ।। ३४ ।। ५७ ।। सारग महल ५ ।। माया के अभिमान को झूठा समझा जाना चाहिए। हे बेचारे जीव, तू छल-कपट और मोह को दूर कर ले तथा प्रभु को सदैव अपने साथ ही समझ।। १ ।। रहाउ।। जितने ही उमराव, अमीर, मालिक, खान बहादुर, राज और यौवन वाले लोग हैं उन सबको तू झूठा ही समझ। कपड़े, सुगन्ध, चतुराई, भोजन और पान इत्यादि सब क्षणिक और झूठे हैं।। १ ।। हे दीन बन्धु, मैं तेरे दासों का दास हूँ और तेरे शान्त-पुरुषों की शरण में हूँ। मैं जो कुछ भी माँगता हूँ निश्चिंत होकर तुझसे माँगता हूँ और हे नानक के प्राणों के प्रभु, मुझसे आ मिल।। २ ।। ३५ ।। ५८।। सारग महला ५ ।। इस जीव ने अपना तो कुछ भी नहीं संवारा; यह अन्य जंजालों में ही उलझ कर अनेकों दिशाओं में भागता रहा और व्यर्थ के कामों में लगा रहा है।। १ ।। रहाउ।। जो चार दिन के संगी-साथी दिखाई

संगी ऊहां नाही जह भारी ॥ तिन सिउ राचि माचि हितु लाइओ जो कामि नही गावारी ॥ १ ॥ हउ नाही नाही किछु मेरा ना हमरो बसु चारी ॥ करन करावन नानक के प्रभ संतन संगि उधारी ॥ २ ॥ ३६ ॥ ५९ ॥ सारग महला ५ ॥ मोहनी मोहत रहै न होरी ॥ साधिक सिध सगल की पिआरी तुटै न काहू तोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खटु सासत्र उचरत रसनागर तीरथ गवन न थोरी ॥ पूजा चक्र बरत नेम तपीआ ऊहा गैलि न छोरी ॥ १ ॥ अंध कूप महि पतित होत जगु संतहु करहु परम गति मोरी ॥ साधसंगति नानकु भइओ मुकता दरसनु पेखत भोरी ॥ २ ॥ ३७ ॥ ६० ॥ सारग महला ५ ॥ कहा करहि रे खाटि खाटुली ॥ पवनि अफार तोर चामरो अति जजरी तेरी रे माटुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊही ते हरिओ ऊहा ले धरिओ जैसे बासा मास देत झाटुली ॥ देवनहारु बिसारिओ अंधुले जिउ सफरी उदरु भरै बहि हाटुली ॥ १ ॥ साद बिकार बिकार झूठ रस जह जानो तह भीर बाटुली ॥ कहु नानक समझु रे इआने आजु कालि खुल्है तेरी गांठुली ॥ २ ॥ ३८ ॥ ६१ ॥ सारग महला ५ ॥ गुर जीउ संगि तुहारै जानिओ ॥ कोटि जोध उआ की बात न पुछीऐ तां दरगह भी मानिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन मूलु प्रानी का कहीऐ कवन रूपु द्रिसटानिओ ॥ जोति प्रगास भई माटी संगि दुलभ देह बखानिओ ॥ १ ॥ तुम ते सेव तुम ते जप तापा तुम ते ततु पछानिओ ॥ करु मसतकि धरि कटी जेवरी नानक दास दसानिओ ॥ २ ॥ ३९ ॥ ६२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरि दीओ सेवक कउ नाम ॥ मानसु का को बपुरो भाई जा को राखा राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि महा जनु आपे पंचा आपि सेवक कै काम ॥ आपे सगले दूत बिदारे ठाकुर अंतरजाम ॥ १ ॥ आपे पति राखी सेवक की आपि कीओ बंधान ॥ आदि जुगादि सेवक की राखै नानक को प्रभु जान ॥ २ ॥ ४० ॥ ६३ ॥ सारग महला ५ ॥ तू मेरे मीत सखा हरि प्रान ॥ मनु धनु जीउ पिंडु सभु तुमरा इहु तनु सीतो तुमरै धान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही दीए अनिक प्रकारा तुम ही दीए मान ॥ सदा सदा तुम ही पति राखहु अंतरजामी जान ॥ १ ॥

देते हैं वे वहाँ साथ नहीं देते जहाँ भारी मुसीबत सिर पर आ पड़ती है। इस जीव ने उन लोगों के साथ लीन होकर प्रेम लगाया है जो मूर्ख किसी काम के भी नहीं होते।। १ ।। मैं कुछ भी नहीं हूँ, मेरा कुछ भी नहीं है और ना ही मेरा कोई वश अथवा ढंग काम आता है। हे नानक के प्रभु, तुम्हीं सब करने कराने वाले हो और इन शान्त पुरुषों की संगत में मेरा भी उद्धार कर दो।। २ ।। ३६ ।। ५६।। सारग महला ५ ।। मोहिनी माया सबको मोहित किए रहती है और किसी के भी रोके रुकती नहीं। साधक सिद्ध आदि सबकी यह प्यारी है और किसी से तोड़ी हुई यह टूटती नहीं।। १ ।। रहाउ।। छः शास्त्रों का जीभ से उच्चारण करने पर और तीर्थों पर जाकर कर्मकाण्ड करने के बावजूद भी इसका प्रपंच मन में थोड़ा भी कम नहीं होता। पूजा, तिलक, व्रत, नियम और तपस्या करने वाले तपस्वियों का भी यह पीछा नहीं छोड़ती।।१।। हे सन्तजनों यह सारा संसार तो अज्ञान के अंधेरे कुएं में गिर रहा है, तुम मुझे परम गति प्रदान करो। नानक तो, साधसंगत में प्रभु का थोड़ा सा दर्शन करके ही मुक्त हो गया है।। २ ।। ३७ ।। ६० ।। सारग महला ५ ।। हे भाई, यहां कमाई करके तू क्या कर रहा है। तेरा शरीर रूपी चमड़ा हवा के साथ भरकर फूल गया है और तेरे शरीर की मिट्टी भी जर्जर अर्थात पुरानी हो गई है।। १ ।। रहाउ।। तू बाशा, पक्षी द्वारा लालच में माँस को झपटने और मारने की तरह इधर से चोरी करता है और दूसरी जगह जाकर धन-सम्पदा को रख देता है। तूने उस देने वाले प्रभु को अज्ञानी बनकर भुला दिया है और तू उस यात्री की तरह ही बना हुआ है जो दुकान पर बैटकर भोजन तो खा लेता है फिर इधर-उधर दौड़ता रहता है तथा उस दुकानदार को याद नहीं रखता।। १ ।। तू विकारों के स्वाद और झूठे रस में ही मस्त बना हुआ है और यह नहीं जानता कि अन्त में जहाँ जाना है वहां मार्ग बहुत कठिन है और तंग है।। १ ।। नानक का कहना है कि हे अनजान जीव, तू इस बात को समझ ले कि तेरे प्राणों की पोटली आज-कल में ही खुलने वाली है अर्थात मौत सदैव तेरे सिर पर है।। २ ।। ३८ ।। ६१।। सारग महला ५ ।। हे गुरु जी, मैंने तुम्हारी संगत में ही प्रभु को जाना है। करोड़ों योद्धागण भटक रहे हैं परन्तु उनकी कोई भी परवाह नहीं करता; प्रभु दरबार में तूने ही हमारा सम्मान बना दिया है।। १ ।। रहाउ।। प्राणी का मूल स्वरूप क्या है और अब यह किस स्वरूप में दृष्टिगोचर हो रहा है इसके बारे में भला क्या बखान किया जाए। इस मिट्टी के शरीर में जब प्रभु ज्योति प्रकाशित हुई तभी इस शरीर को दुर्लभ शरीर कहा जाने लगा है।। १ ।। हे प्रभु, तुम्हीं से सुमिरन, तुम्हीं से जप तप और तुम्हारे कारण ही हमने संसार के सार तत्व को पहचाना है। तुमने हमारे माथे पर हाथ रखाकर हमारे बन्धनों की रस्सियां काट दी हैं और नानक को अपने दासों का दास बना लिया है।। २ ।। ३६।। ६१ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु ने अपने सेवक को अपना नाम दान दिया है। जिसका रक्षक वह प्रभु है मनुष्य बेचारा उसका क्या कर सकता है।। १ ।। रहाउ।। वह स्वयं ही मुखिया है, स्वयं ही पंच है और स्वयं ही सेवकों के काम करने वाला है। उस अन्तर्यामी प्रभु ने स्वयं ही सभी दुष्टों को मार डाला है।। १ ।। अपने सेवक की लाज भी उसने स्वयं ही रखी है और स्वयं ही उसे स्थिरता प्रदान की। वह अपने सेवकों की स्वयं ही लाज बचाता आया है। हे नानक, तू ऐसे प्रभु को जानता और मानता रह।। २ ।। ४० ।। ६३ ।। सारग महला ५ ।। हे प्रभु, तू ही मेरा मित्र, सहायक और प्राण है ; धन, मन, प्राण, शरीर सब कुछ तुम्हारा ही है और यह तन तुम्हारे ही दिए हुए दान के फलस्वरूप बना है।। १ ।। रहाउ।। तुमने अनेकों प्रकार के पदार्थ दिए हैं और तुम्हीं ने हमें मान-सम्मान भी दिया है। हे अन्तर्यामी प्रभु, तुम ही सदैव हमारे सम्मान की रक्षा करते रहो।। १ ।।

जिन संतन जानिआ तू ठाकुर ते आए परवान ॥ जन का संगु पाईऐ वडभागी नानक संतन कै कुरबान ॥ २ ॥ ४१ ॥ ६४ ॥ सारग महला ५ ॥ करहु गति दइआल संतहु मोरी ॥ तुम समरथ कारन करना तूटी तुम ही जोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के बिखई तुम तारे सुमति संगि तुमारै पाई ॥ अनिक जोनि भ्रमते प्रभ बिसरत सासि सासि हरि गाई ॥ १ ॥ जो जो संगि मिले साधू कै ते ते पतित पुनीता ॥ कहु नानक जा के वडभागा तिनि जनमु पदारथु जीता ॥ २ ॥ ४२ ॥ ६५ ॥ सारग महला ५ ॥ ठाकुर बिनती करन जनु आइओ ॥ सरब सूख आनंद सहज रस सुनत तुहारो नाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा निधान सूख के सागर जसु सभ महि जा को छाइओ ॥ संतसंगि रंग तुम कीए अपना आपु द्रिसटाइओ ॥ १ ॥ नैन्हु संगि संतन की सेवा चरन झारी केसाइओ ॥ आठ पहर दरसनु संतन का सुखु नानक इहु पाइओ ॥ २ ॥ ४३ ॥ ६६ ॥ सारग महला ५ ॥ जा की राम नाम लिव लागी ॥ सजनु सुरिदा सुहेला सहजे सो कहीऐ बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रहित बिकार अलप माइआ ते अहंबुधि बिखु तिआगी ॥ दरस पिआस आस एकहि की टेक हीऐं प्रिअ पागी ॥ १ ॥ अचिंत सोइ जागनु उठि बैसनु अचिंत हसत बैरागी ॥ कहु नानक जिनि जगतु ठगाना सु माइआ हरि जन ठागी ॥ २ ॥ ४४ ॥ ६७ ॥ सारग महला ५ ॥ अब जन ऊपरि को न पुकारै ॥ पूकारन कउ जो उदमु करता गुरु परमेसरु ता कउ मारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरवैरै संगि वैरु रचावै हरि दरगह ओहु हारै ॥ आदि जुगादि प्रभ की वडिआई जन की पैज सवारै ॥ १ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै ॥ गुर कै बचनि जपिओ नाउ नानक प्रगट भइओ संसारै ॥ २ ॥ ४५ ॥ ६८ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन छोडिआ सगला आपु ॥ जिउ जान्हु तिउ रखहु गुसाई पेखि जीवां परतापु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसि साध की संगति बिनसिओ सगल संतापु ॥ मित्र सत्र पेखि समतु बीचारिओ सगल संभाखन जापु ॥ १ ॥ तपति बुझी सीतल आघाने सुनि अनहद बिसम भए बिसमाद ॥ अनदु भइआ नानक

हे प्रभु, जिन सन्तजनों ने तुझे जान लिया है उन्हीं का इस संसार में आना सफल हैं। तेरे सेवकों की संगत तो बड़े भाग्य से प्राप्त होती है और नानक इन शान्त पुरुषो पर बलिहारी जाता है।। २ ।। ४१ ।। ६४ ।। सारग महला ५ ।। हे दयालु शान्त पुरुषों, मेरी मुक्ति कर दो। तुम्हीं सब कुछ करने कराने में समर्थ हो और प्रभु से टूटी हुई मेरी प्रेम की डोरी को तुम्हीं ने जोड़ा है।। १ ।। रहाउ।। जन्मों-जन्मों से विकार मुक्त बने हुए लोगों को तुमने पार उतार दिया है और तुम्हारी संगत में ही हमने सुमति प्राप्त की है। जो कई जन्मों से प्रभु को भुलाकर भटक रहे थे अब वे तुम्हारी कृपा से प्रत्येक श्वास के साथ प्रभु का गुणानुवाद करते हैं।। १ ।। जिनका मिलाप साधु-पुरुष के साथ हो गया वे पतित से पवित्र हो गए। नानक का कथन है कि जिनके बड़े भाग्य हैं उन्होंने ही इस जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को पाकर इसे जीत लिया है अर्थात इसे उत्तम बना लिया है।। २ ।। ४२ ।। ६५ ।। सारग महला ५ ।। हे प्रभु, तेरा सेवक तुम्हारे पास प्रार्थना करने आया है। तुम्हारा नाम सुनकर ही सभी सुख, आनन्द और स्वाभाविक रस हमें प्राप्त होते हैं।। १ ।। रहाउ।। जिसका यश सबमें व्याप्त है, हे कृपानिधान प्रभु, वह तुम ही सुखों के सागर हो। सन्तों की संगत में तुम्हीं क्रीड़ा करते हो और अपने आपको प्रकट करते हो।। १ ।। मैं आँखों से तो सन्तों की सेवा करता हूँ और अपने केशों से उनके चरणों को झाड़ता हूँ। नानक को तो यही सुख प्राप्त हुआ है कि वह आठों प्रहर शान्त पुरुषों का दर्शन करता रहता है।। २ ।। ४३ ।। ६६ ।। सारग महला ५ ।। जिसकी प्रभु के नाम में लौ लग गई है वही सज्जन है, सुहृदय है, सुखी है और स्वाभाविक रूप में ही उसे बड़ा भाग्यशाली कहा जाता है।। १ ।। रहाउ।। वह विकार रहित है, माया से अलिप्त है और अहंकार वाली बुद्धि का विष उसने त्याग दिया है। उस एक प्रभु के दर्शनों की प्यास की ही मुझे आस है और प्रियतम के प्रेम में रंगी हुई को हृदय में केवल एक प्रभु का ही आसरा है।। १ ।। अब निश्चिंत होकर सोना, जागना, उठना और बैठना होता है और बिना किसी चिन्ता के अब हम हँसते और वैराग्यवान होते हैं। नानक का कथन है कि जिस माया ने सारे संसार को ठगा हुआ था उस माया को प्रभु के सेवकों ने ठग लिया है।। २ ।। ४४ ।। ६६ ।। सारग महला ५ ।। अब तुम्हारे सेवक के विरोध में कोई पुकार नहीं लगाता। पुकार अथवा शिकायत करने का जो कोई भी प्रयत्न करता है परमेश्वर गुरु उसे नष्ट कर डालता है।। १ ।। रहाउ।। जो शत्रुभाव से रहित लोगों के साथ शत्रुता करता है वह प्रभु के दरबार में हार जाता है। आदि-युगादि से प्रभु की ही शोभा है और वह ही अपने सेवक के सम्मान को बचाता है।। १ ।। प्रभु के चरण कमलों का आसरा होने से हमारा सारा भय मिट गया है और हम निर्भय हो गए हैं। गुरु के उपदेश के माध्यम से हे नानक, हमने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है और वह प्रभु-नाम संसार में प्रकट हो चुका है।। २ ।। ४५ ।। ६८।। सारग महला ५ ।। प्रभु के सेवक ने अपना सम्पूर्ण अहं-भाव त्याग दिया है। हे प्रभु, जैसे भी हो हमारी रक्षा करो क्योंकि मैं तो तुम्हारे प्रताप को देखकर ही जीवित बना रहता हूँ।। १ ।। रहाउ।। गुरु के उपदेश और साधसंगत के माध्यम से हमारा सारा संताप विनष्ट हो गया है। अब मैं मित्र और शत्रु को देखकर उन्हें बराबर समझता हूँ और अब मेरा संसार संभाषण अर्थात बोलचाल उस प्रभु का जाप ही होता है।। १ ।। हमारी जलन बुझ गई है और हम शीतल होकर सन्तुष्ट हो गए हैं तथा उसके अनहद नाद को सुनकर हम आश्चर्यपूर्ण हो गए हैं। हे नानक,

मनि साचा पूरन पूरे नाद ॥ २ ॥ ४६ ॥ ६९ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै गुरि मोरो सहसा उतारिआ ॥ तिसु गुर कै जाईऐ बलिहारी सदा सदा हउ वारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का नामु जपिओ दिनु राती गुर के चरन मनि धारिआ ॥ गुर की धूरि करउ नित मजनु किलविख मैलु उतारिआ ॥ १ ॥ गुर पूरे की करउ नित सेवा गुरु अपना नमसकारिआ ॥ सरब फला दीन्हे गुरि पूरै नानक गुरि निसतारिआ ॥ २ ॥ ४७ ॥ ७० ॥ सारग महला ५ ॥ सिमरत नामु प्रान गति पावै ॥ मिटहि कलेस त्रास सभ नासै साधसंगि हितु लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि मनि आराधे रसना हरि जसु गावै ॥ तजि अभिमानु काम क्रोधु निंदा बासुदेव रंगु लावै ॥ १ ॥ दामोदर दइआल आराधहु गोबिंद करत सुोहावै ॥ कहु नानक सभ की होइ रेना हरि हरि दरसि समावै ॥ २ ॥ ४८ ॥ ७१ ॥ सारग महला ५ ॥ अपुने गुर पूरे बलिहारै ॥ प्रगट प्रतापु कीओ नाम को राखे राखनहारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख बिदारै ॥ आन उपाव तिआगि जन सगले चरन कमल रिद धारै ॥ १ ॥ प्रान अधार मीत साजन प्रभ एकै एकंकारै ॥ सभ ते ऊच ठाकुरु नानक का बार बार नमसकारै ॥ २ ॥ ४९ ॥ ७२ ॥ सारग महला ५ ॥ बिनु हरि है को कहा बतावहु ॥ सुख समूह करुणा मै करता तिसु प्रभ सदा धिआवहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सूति परोए जंता तिसु प्रभ का जसु गावहु ॥ सिमरि ठाकुरु जिनि सभु किछु दीना आन कहा पहि जावहु ॥ १ ॥ सफल सेवा सुआमी मेरे की मन बांछत फल पावहु ॥ कहु नानक लाभु लाहा लै चालहु सुख सेती घरि जावहु ॥ २ ॥ ५० ॥ ७३ ॥ सारग महला ५ ॥ ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ॥ उतरि गइओ मेरे मन का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ ॥ दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥ १ ॥ बाह पकरि कढि लीने अपुने ग्रिह अंध कूप ते माइआ ॥ कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ २ ॥ ५१ ॥ ७४ ॥

जब पूर्ण नाद सुनाई पड़ा है तो मन सत्य रूप हो गया है और खिल उठा है।। २ ।। ४६ ।। ६६।। सारग महला ५।। मेरे गुरु ने मेरे भय को समाप्त कर दिया है और ऐसे गुरु पर मैं बलिहारी जाता हूँ और सदैव उस पर कुर्बान होता हूँ।। १ ।। रहाउ।। मैंने दिन रात गुरु के नाम का सुमिरन किया है और गुरु के चरणों को मन में धारण किया है। मैं गुरु की चरण-धूलि में सदैव स्नान करता रहता हूँ जिसने मेरे पापों की मैल को उतार दिया है।। १ ।। मैं अपने गुरु को प्राणाम करता हूँ और उस पूर्ण गुरु की सदैव सेवा करता हूँ। पूर्ण गुरु ने मुझे सभी फल प्रदान कर दिए हैं और हे नानक, गुरु के माध्यम से ही मेरा पार उतारा हुआ है।। २ ।। ४७ ।। ७०।। सारग महला ५ ।। प्रभु का नाम सुमिरन करने से मेरे प्राणों को गति प्राप्त होती है; मेरे दुख और भय सभी मिटकर नष्ट हो जाते हैं और साधसंगत में मेरा प्रेम लग जाता है।। १ ।। रहाउ।। मेरा मन बार-बार प्रभु की आराधना करता है और मेरी जीभ हरि यश का गायन करती है। अभिमान, काम, क्रोध और निन्दा को त्यागकर मेरा प्रभु में प्रेम लग जाता है।। १ ।। दयालु प्रभु की आराधना की जानी चाहिए और जीव प्रभु का नाम लेता हुआ ही सुन्दर लगता है। नानक का कथन है कि सब की चरण धूलि बनने से प्रभु के दर्शनों के माध्यम से उसमें लीन हुआ जाता है।। २ ।। ४८ ।। ७१ ।। सारग महला ५ ।। मैं अपने पूर्ण गुरु पर बलिहारी जाता हूँ; उस रक्षक ने हमें बचा लिया है और प्रभु-नाम के प्रताप को संसार में प्रकट कर दिया है।। १।। रहाउ।। अपने सेवकों और दासों को उसने निर्भय बनाकर उसके सभी दुखों को नष्ट कर दिया है। प्रभु के सेवकों ने तो अन्य सभी उपायों को त्याग कर प्रभु के चरण-कमलों को हृदय में धारण कर लिया है।। १ ।। वह साजन, मित्र और प्राणों का आधार प्रभु एक ही है और एक ही है। नानक का स्वामी तो सबसे ऊँचा है और उसे ही बार-बार नमस्कार किया जाता है।। २ ।। ४६ ।। ७२ ।। सारग महला ५ ।। कोई बताओ कि प्रभु के बिना कोई है और कहां है। वह कर्ता प्रभु जो सुखों का भण्डार और करुणामय है, सदैव उसका सुमिरन करते रहो।। १ ।। रहाउ।। जिस सूत्र रूपी प्रभु में सभी जीव पिरोए हुए हैं उस प्रभु का यश ही गाते रहो। जिसने सब कुछ दिया है उस प्रभु का सुमिरन करते रहो; तुम अन्य किसके पास जाते हो।। १ ।। मेरे स्वामी की सेवा फलदायक है और उसे करते हुए मनोवांछित फल प्राप्त करके यहां से चल दो और सुखपूर्वक अपने वास्तविक घर में चले जाओ।। २ ।। ५० ।। ७३ ।। सारग महला ५ ।। हे प्रभु, मैं तेरी शरण में आ गया हूँ। जबसे मैंने तुम्हारा दर्शन पा लिया है, मेरे मन का संशय समाप्त हो गया है।। १।। रहाउ।। मेरे ना बोलने पर भी तूने मेरी व्यथा को जान लिया है और अपने नाम का सुमिरन मुझसे कराया है। मेरे दुख भाग खड़े हुए है; हम स्वाभाविक सुख में लीन हो गए हैं और आनन्दित बने हुए मैंने तुम्हारा गुणानुवाद किया है।। १ ।। माया के अन्धे कुएं में से बाँह पकड़कर बाहर निकाल कर अपने वास्तविक घर में तुमने मुझे पहुँचा दिया है। नानक का कथन है कि गुरु के माध्यम से बन्धन कट गए हैं और उसने मुझ बिछुड़े हुए को अपने से मिला लिया है।। २ ।। ५१ ।। ७४ ।।

सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की गति ठांढी ॥ बेद पुरान सिम्रिति साधू जन खोजत खोजत काढी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव बिरंच अरु इंद्र लोक ता महि जलतौ फिरिआ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी भए सीतल दूखु दरदु भ्रमु हिरिआ ॥ १ ॥ जो जो तरिओ पुरातनु नवतनु भगति भाइ हरि देवा ॥ नानक की बेनंती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ॥ २ ॥ ५२ ॥ ७५ ॥ सारग महला ५ ॥ जिहवे अंम्रित गुण हरि गाउ ॥ हरि हरि बोलि कथा सुनि हरि की उचरहु प्रभ को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु रतन धनु संचहु मनि तनि लावहु भाउ ॥ आन बिभूत मिथिआ करि मानहु साचा इहै सुआउ ॥ १ ॥ जीअ प्रान मुकति को दाता एकस सिउ लिव लाउ ॥ कहु नानक ता की सरणाई देत सगल अपिआउ ॥ २ ॥ ५३ ॥ ७६ ॥ सारग महला ५ ॥ होती नही कवन कछु करणी ॥ इहै ओट पाई मिलि संतह गोपाल एक की सरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच दोख छिद्र इआ तन महि बिखै बिआधि की करणी ॥ आस अपार दिनस गणि राखे ग्रसत जात बलु जरणी ॥ १ ॥ अनाथह नाथ दइआल सुख सागर सरब दोख भै हरणी ॥ मनि बांछत चितवत नानक दास पेखि जीवा प्रभ चरणी ॥ २ ॥ ५४ ॥ ७७ ॥ सारग महला ५ ॥ फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ अंम्रित रसु कीरतनु हरि गाईऐ अहिनिसि पूरन नाद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सांति महा सुखु पाईऐ मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ हरि हरि लाभु साधसंगि पाईऐ घरि लै आवहु लादि ॥ १ ॥ सभ ते ऊच ऊच ते ऊचो अंतु नही मरजाद ॥ बरनि न साकउ नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥ २ ॥ ५५ ॥ ७८ ॥ सारग महला ५ ॥ आइओ सुनन पड़न कउ बाणी ॥ नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समझु अचेत चेति मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी ॥ लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी ॥ १ ॥ उदमु सकति सिआणप तुम्हरी देहि त नामु वखाणी ॥ सेई भगत भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी ॥ २ ॥ ५६ ॥ ७९ ॥ सारग महला ५ ॥ धनवंत नाम के वणजारे ॥ सांझी करहु नाम धनु खाटहु गुर का

सारग महला ५ ।। प्रभु के नाम की शक्ति शीतलता देने वाली है। वेद, पुराण, स्मृति आदि को खोजते-खोजते साधु पुरुषों ने यह तथ्य ढूंढ निकाला है।। १ ।। रहाउ।। शिव, ब्रह्मा और इन्द्र लोक के निवासी तमस गुण में जलते हुए भटकते रहे हैं। उस प्रभु का सुमिरन करके वे सभी शीतल बने हैं और उनका दुख-दर्द तथा भ्रम दूर हो गया है।। १ ।। प्राचीन और इस युग में भी जो-जो पार उतरा है वह प्रभु की भक्ति भावना के कारण ही उतरा है। हे प्रभु, नानक की तो यही विनती है कि उसे सन्तपुरुषों की सेवा का अवसर मिलता रहे।। २ ।। ५२ ।। ७५ ।। सारग महला ५ ।। हे मेरी जीभ, तू प्रभु के अमृत गुणों का गान कर। तू हरि-हरि बोलती रह और प्रभु की कथा सुनते हुए प्रभु के नाम का उच्चारण करती रह।। १ ।। रहाउ।। राम नाम के रत्न रूपी धन को इकट्ठा करो और मन तन में उस प्रभु के प्रेम को लगाए रखो। अन्य सभी विभूतियों को झूठा समझो और राम-नाम रूपी धन ही वास्तव में जीवन का सच्चा लाभ है।। १ ।। वह एक ही प्रभु जीव के प्राणों को मुक्ति दिलाने वाला है और उस एक में ही लौ को लगाए रखो। नानक कहता है कि मैं तो उसी की शरण में हूँ जो सबको भोजन प्रदान करता है।। २ ।। ५३ ।। ७६।। सारग महला ५ ।। हमसे कुछ भी करना कराना नहीं होता; शान्त पुरुषों से मिलकर हमने प्रभु की शरण में पड़े रहने का ही आसरा लिया है।। १ ।। रहाउ।। इस शरीर के पाँचों दोष इसके लिए कलंक हैं और ये सब रोग विषयों के कारण ही उत्पन्न हुए हैं। आशाएं तो हमारी बहुत हैं परन्तु दिन हमारे पास गिनती के ही बचे हैं; यह बुढ़ापा बल को खाये जा रहा है।। १ ।। अनाथों के नाथ हे दयालु और सुखों के सागर प्रभु, तुम ही सभी दोषों और भय को हर ले वाले हो। दास नानक तो यही कामना करता है कि आपके चरणों को देख-देखकर जीता रहूँ।। २ ।। ५४ ।। ७७।। सारग महला ५ ।। प्रभु के नाम से विहीन सभी स्वाद फीके हैं। प्रभु का अमृत के समान रसपूर्ण कीर्ति गायन करते रहने से दिन-रात आनन्द के नाद बजते रहेंगे।। १ ।। रहाउ।। उसके सुमिरन से महासुख और शान्ति प्राप्त होती है तथा सभी क्लेश मिट जाते हैं। साधसंगत में प्रभु रूपी लाभ प्राप्त होता है और हे जीव, तुम उसे लाद पर घर ले आओ।। १ ।। वह सबसे ऊँचा, ऊँचे से भी ऊँचा है और उसकी सीमा का कोई अन्त नहीं। हे नानक, उसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता और मैं उसे देखकर आश्चर्य विभोर बना रहता हूँ।। २ ।। ५५ ।। ७८ ।। सारग महला ५ ।। हे जीव, तू यहाँ प्रभु की वाणी को ही सुनने और पढ़ने के लिए आया है। प्रभु के नाम को भुलाकर तू अन्य लालचों में लगा हुआ है और हे प्राणी, तूने जीवन को व्यर्थ बना लिया है।। १ ।। रहाउ।। हे मेरे मन, जो सन्तपुरुषों ने प्रभु की अकथनीय कथा का वर्णन किया है तू उसको समझकर अपनी अचेतावस्था से जागकर सावधान हो जा। हृदय में प्रभु की आराधना का लाभ प्राप्त कर ताकि तू आवागमन से छूट जाए।। १ ।। यदि तुम मुझे उद्यम शक्ति और सयानापन प्रदान करो तो मैं तुम्हारे नाम का बखान करता रहूँ। हे नानक, जो प्रभु को भा जाते हैं वे ही भक्ति में लगते हैं और वे ही भक्त कहलाते है।।२ ।।५६ ।।७९ ।।सारग महला ५ ।। प्रभु-नाम के व्यापारी ही वास्तव में धनवान हैं। शब्द-गुरु का चिंतन करते हुए उनके साथ साझेदारी करो और प्रभु-नाम रूपी धन की कमाई

सबदु वीचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडहु कपटु होइ निरवैरा सो प्रभु संगि निहारे ॥ सचु धनु वणजहु सचु धनु संचहु कबहू न आवहु हारे ॥ १ ॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही अगनत भरे भंडारे ॥ कहु नानक सोभा संगि जावहु पारब्रहम के दुआरे ॥ २ ॥ ५७ ॥ ८० ॥ सारग महला ५ ॥ प्रभ जी मोहि कवनु अनाथु बिचारा ॥ कवन मूल ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्राण सरब के दाते गुण कहे न जाहि अपारा ॥ सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक सरब घटां आधारा ॥ १ ॥ कोइ न जाणै तुमरी गति मिति आपहि एक पसारा ॥ साध नाव बैठावहु नानक भव सागरु पारि उतारा ॥ २ ॥ ५८ ॥ ८१ ॥ सारग महला ५ ॥ आवै राम सरणि वडभागी ॥ एकस बिनु किछु होरु न जाणै अवरि उपाव तिआगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन बच क्रम आराधै हरि हरि साधसंगि सुखु पाइआ ॥ अनद बिनोद अकथ कथा रसु साचै सहजि समाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा जो अपुना कीनो ता की ऊतम बाणी ॥ साधसंगि नानक निसतरीऐ जो राते प्रभ निरबाणी ॥ २ ॥ ५९ ॥ ८२ ॥ सारग महला ५ ॥ जा ते साधू सरणि गही ॥ सांति सहजु मनि भइओ प्रगासा बिरथा कछु न रही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होहु क्रिपाल नामु देहु अपुना बिनती एह कही ॥ आन बिउहार बिसरे प्रभ सिमरत पाइओ लाभु सही ॥ १ ॥ जह ते उपजिओ तही समानो साई बसतु अही ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइओ जोती जोति समही ॥ २ ॥ ६० ॥ ८३ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना राम को जसु गाउ ॥ आन सुआद बिसारि सगले भलो नाम सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल बसाइ हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ साधसंगति होहि निरमलु बहुड़ि जोनि न आउ ॥ १ ॥ जीउ प्रान अधारु तेरा तू निथावे थाउ ॥ सासि सासि सम्हालि हरि हरि नानक सद बलि जाउ ॥ २ ॥ ६१ ॥ ८४ ॥ सारग महला ५ ॥ बैकुंठ गोबिंद चरन नित धिआउ ॥ मुकति पदारथु साधू संगति अंम्रितु हरि का नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतम कथा सुणीजै स्रवणी मइआ करहु भगवान ॥ आवत जात दोऊ पख पूरन पाईऐ सुख बिस्राम ॥ १ ॥

कर लो।। १ ।। रहाउ।। उस प्रभु को अपने साथ ही देखते हुए कपट को छोड़ दो और शत्रु भाव से रहित हो जाओ। तुम सत्यरूपी धन का व्यापार करो, सत्यरूपी धन को ही इकट्ठा करो तो तुम कभी भी नहीं हारोगे।। १ ।। खाते और खर्चते हुए इस धन में कोई भी कमी नहीं आती और इसके अनगिनत भण्डार भरे ही रहते हैं। नानक का कथन है कि इस प्रकार हे जीव, तू प्रभु के द्वार पर शोभायुक्त होकर जा पहुँचोगे।। २ ।। ५७ ।। ८०।। सारग महला ५ ।। हे प्रभु, मैं अनाथ बेचारा तुम्हारे सामने कौन हूँ। किस मूल से तूने मुझे मानव बनाया है, यह तुम्हारा ही प्रताप है।। १ ।। रहाउ।। हे जीवों के प्राणों और सबके दाता प्रभु, तुम्हारे अपार गुणों को कहा नहीं जा सकता। तुम सबके प्रियतम हो, सबके पालनहार हो और सबके हृदय का आसरा भी हो।। १ ।। तुम्हारी गति और सीमा को कोई नहीं जानता और तुझ एक का ही चारों ओर विस्तार है। साधसंगत रूपी नाव में नानक, को बैठा लो क्योंकि इसी में बैठकर संसार-सागर से पार उतारा होगा।। २ ।। ५८ ।। ८१ ।। सारग महला ५ ।। बड़े भाग्यवाला ही प्रभु की शरण में आता है और वह अन्य उपायों को त्यागकर उस एक प्रभु के बिना अन्य किसी को ना ही जानता है ना ही मानता है।। १ ।। रहाउ।। जो मन, वचन और कर्म से प्रभु की आराधना करता है वहीं साधसंगत में बना रहकर सुख प्राप्त करता है। वही सच्चे प्रभु के ऐसे पूर्णज्ञान में लीन हो जाता है जिसमें अकथनीय रस वाले आनन्द और खुशियाँ होती है।। १ ।। जिस पर कृपा करके प्रभु ने अपना बना लिया है उसकी वाणी उत्तम होती है। जो निर्वाण अवस्था प्रदान करने वाले प्रभु में लीन हो जाते हैं हे नानक, साधसंगत में रहते हुए वे पार उतर जाते हैं।। २ ।। ५६ ।। ८२ ।। सारग महला ५ ।। जबसे साधु-पुरुष की शरण पकड़ ली है तबसे शान्ति और सहजभाव में मन प्रकाशित हो उठा है और कुछ भी पीड़ा अब बाकी नहीं बची है।। १ ।। रहाउ।। हमने तो यही विनती की है कि हम पर कृपा करो और हे प्रभु, अपना नाम प्रदान कर दो। प्रभु का सुमिरन करते ही अन्य सभी व्यवहार हमें भूल गए हैं और हमने वास्तविक लाभ प्राप्त कर लिया है।। १।। जहाँ से हम पैदा हुए थे वही समा गए हैं और वही पर बस रहे हैं। नानक का कथन है कि गुरु के माध्यम से हमने भ्रम को खो दिया है और हमारी ज्योति उस परम ज्योति में समा गई है।। २ ।। ६० ।। ८३ ।। सारग महला ५ ।। हे जीभ, तुम प्रभु के यश का गायन करो। तू अन्य सभी स्वाद भूल जा क्योंकि नाम का स्वाद ही सबसे अच्छा है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के चरण कमलों को हृदय में बसाकर एक में ही लौ लगाए रखो तथा साधसंगत में बने रहकर पवित्र हो जाओ तथा फिर योनि के मत आओ।। १ ।। मेरे जीव और प्राणों को तेरा ही आसरा है और तू ही मुझ निराश्रित का ठिकाना है। प्रत्येक श्वास के साथ तू उस प्रभु को याद रख और हे नानक, उस पर सदैव बलिहारी जाते रहो।। २ ।। ६१ ।। ८४ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु के चरणों की सदैव आराधना ही मेरे लिए बैकुण्ठ है। साधसंगत ही मेरे लिए मुक्ति रूपी पदार्थ है और प्रभु का नाम ही मेरे लिए अमृत है।। १।। रहाउ।। हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि मैं अपने कानों से तुम्हारी उत्तम कथा को सुनता रहूँ। जीवन और मरण दोनों ही पक्ष तुम्हारी कथा सुनने से पूर्ण होकर समाप्त हो जाते हैं और फिर विश्राम का सुख प्राप्त किया जाता है।। १ ।।

सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी ॥ कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि ऊरी ॥ २ ॥ ६२ ॥ ८५ ॥ सारग महला ५ ॥ साचे सतिगुरू दातारा ॥ दरसनु देखि सगल दुख नासहि चरन कमल बलिहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सति परमेसरु सति साध जन निहचलु हरि का नाउ ॥ भगति भावनी पारब्रहम की अबिनासी गुण गाउ ॥ १ ॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाईऐ सगल घटा आधारु ॥ नानक वाहु वाहु कहु ता कउ जा का अंतु न पारु ॥ २ ॥ ६३ ॥ ८६ ॥ सारग महला ५ ॥ गुर के चरन बसे मन मेरै ॥ पूरि रहिओ ठाकुरु सभ थाई निकटि बसै सभ नेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि राम लिव लाई संतसंगि बनि आई ॥ जनमु पदारथु भइओ पुनीता इछा सगल पुजाई ॥ १ ॥ जा कउ क्रिपा करहु प्रभ मेरे सो हरि का जसु गावै ॥ आठ पहर गोबिंद गुन गावै जनु नानकु सद बलि जावै ॥ २ ॥ ६४ ॥ ८७ ॥ सारग महला ५ ॥ जीवनु तउ गनीऐ हरि पेखा ॥ करहु क्रिपा प्रीतम मनमोहन फोरि भरम की रेखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहत सुनत किछु सांति न उपजत बिनु बिसास किआ सेखां ॥ प्रभू तिआगि आन जो चाहत ता कै मुखि लागै कालेखा ॥ १ ॥ जा कै रासि सरब सुख सुआमी आन न मानत भेखा ॥ नानक दरस मगन मनु मोहिओ पूरन अरथ बिसेखा ॥ २ ॥ ६५ ॥ ८८ ॥ सारग महला ५ ॥ सिमरन राम को इकु नाम ॥ कलमल दगध होहि खिन अंतरि कोटि दान इसनान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन जंजार ब्रिथा स्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ॥ जनम मरन संकट ते छूटै जगदीस भजन सुख धिआन ॥ १ ॥ तेरी सरनि पूरन सुख सागर करि किरपा देवहु दान ॥ सिमरि सिमरि नानक प्रभ जीवै बिनसि जाइ अभिमान ॥ २ ॥ ६६ ॥ ८९ ॥ सारग महला ५ ॥ धूरतु सोई जि धुर कउ लागै ॥ सोई धुरंधरु सोई बसुंधरु हरि एक प्रेम रस पागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलबंच करै न जानै लाभै सो धूरतु नही मूढ़ा ॥ सुआरथु तिआगि असारथि रचिओ नह सिमरै प्रभु रूड़ा ॥ १ ॥ सोई चतुरु सिआणा पंडितु सो सूरा सो दानां ॥ साधसंगि जिनि हरि हरि जपिओ नानक सो परवाना ॥ २ ॥ ६७ ॥ ९० ॥

खोजते-खोजते यही तत्व की बात सामने आई है कि भक्ति ही सब प्रकार से श्रेष्ठ और पूर्ण कर्म है। नानक का कथन है कि एक राम नाम के बिना अन्य सभी विधियां अपूर्ण हैं।। २ ।। ६२ ।। ८५।। सारग महला ५ ।। हे सच्चे, सत्य स्वरूप गुरु, तुम ही सबके दाता हो। तुम्हारा दर्शन करके हमारे सभी दुख नष्ट हो जाते हैं; मैं तुम्हारे चरण कमलों पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। रहाउ।। परमेश्वर सत्य है, उसके साधुजन सत्य हैं और प्रभु का नाम सदैव अटल बना रहने वाला है। परब्रह्म की ही भक्ति भावना बनाए रख कर उस अविनाशी प्रभु के गुण गाते रहना चाहिए।। १ ।। उस अगम्य, अगोचर प्रभु की सीमा को नहीं जाना जा सकता और वही सबके हृदय का आसरा है। हे नानक, उस प्रभु को ही तू वाह-वाह कहता रह जिसका ना तो कोई रहस्य जान सकता है और ना ही उसकी सीमा को जान सकता है।। २ ।। ६३ ।। ८६ ।। सारग महला ५ ।। गुरु के चरण मेरे मन में बस गए हैं और मैंने जान लिया है कि वह प्रभु ही सब स्थानों में व्याप्त है, पास ही में बसता है और सबसे निकट ही है।। १ ।। रहाउ।। जब सन्तपुरुषों की संगत के साथ मेरा प्रेम बन गया तो बन्धनों को तोड़कर मैंने परमात्मा में लौ लगा ली है। मेरी सारी इच्छाएं पूरी हो गई हैं और यह अमूल्य जीवन रूपी पदार्थ अब पवित्र बन गया है।। १ ।। हे प्रभु, तू जिस पर कृपा करता है वही हरि यश का गायन करता रहता है। वही आठों प्रहर परमात्मा के गुण गाता रहता है और दास नानक सदैव उस पर बलिहारी जाता है।। २ ।। ६४ ।। ८७।। सारग महला ५ ।। इस जीवन की गणना तो तभी होगी यदि प्रभु को देख लिया जाए। हे मनमोहन प्रियतम, तुम कृपा करो और भ्रम की रेखा को नष्ट कर दो।। १ ।। रहाउ।। कहते सुनते हुए यदि कुछ भी शान्ति नहीं मिलती तो बिना उस पर भरोसा किए भला मैं क्या सीख सकता हूँ। प्रभु को छोड़कर जो कोई भी अन्य कुछ चाहता है तो उसके मुख पर कालिख ही लगती हैं।। १ ।। सभी सुखों का स्वामी प्रभु जिसकी रास पूँजी है वह अन्य किसी भी पाखण्ड को नहीं मानता है। हे नानक, उसके दर्शनों में लीन मेरा मन मोहित बना हुआ है और विशेष तौर से मेरी सभी आवश्यकताएं पूर्ण हो गई हैं।। २ ।। ६५ ।। ८८।। सारग महला ५ ।। प्रभु के एक नाम का ही सुमिरन करने से क्षण भर में ही पाप नष्ट हो जाते हैं और यह नाम ही करोड़ों दान और स्थानों के तुल्य हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। व्यक्ति अन्य जंजालों के लिए व्यर्थ ही परिश्रम करता है क्योंकि प्रभु के बिना अन्य सभी ज्ञान खोखला ज्ञान ही बना रहता है। परमात्मा के सुमिरन में सुखपूर्वक ध्यान लगाने से जीव जन्म-मरण के संकट से छूट जाता है।। १ ।। हे सुखों के पूर्ण सागर प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ, तू कृपा करके मुझे अपने सुमिरन का दान प्रदान कर दे। हे प्रभु, नानक तो तुम्हारा सुमिरन करते हुए ही जीवित बना रहे और उसका अभिमान विनष्ट हो जाए।। २ ।। ६६ ।। ८९ ।। सारग महला ५ ।। वास्तविक धूर्त तो उसे कहा जा सकता है जो धुर अन्दर बसे हुए प्रभु से प्रेम लगा ले। धूल को शरीर में लगाने वाला और विभिन्न प्रकार के वस्त्र धारण करने वाला वास्तव में वही है जो एक ही प्रभु के प्रेम के रस में मग्न बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। जो ठगी भी करता है और वास्तविक लाभ को नहीं जान पाता वह धूर्त नहीं दरअसल मूर्ख है। वह अपने असली स्वार्थ (लाभ) को त्यागकर घाटे वाले पदार्थों के साथ लीन बना हुआ है और उस सुन्दर प्रभु का सुमिरन नहीं करता।। १ ।। वही चतुर और सयाना पंडित है, वही शूरवीर है और वही सम्मानित व्यक्ति है जिसने साधसंगत में प्रभु के नाम का सुमिरन किया है और हे नानक, ऐसा व्यक्ति ही सफल और स्वीकृत होता है।। २ ।। ६७।। ९० ।।

सारग महला ५ ॥ हरि हरि संत जना की जीवनि ॥ बिखै रस भोग अंम्रित सुख सागर राम नाम रसु पीवनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संचनि राम नाम धनु रतना मन तन भीतरि सीवनि ॥ हरि रंग रांग भए मन लाला राम नाम रस खीवनि ॥ १ ॥ जिउ मीना जल सिउ उरझानो राम नाम संगि लीवनि ॥ नानक संत चात्रिक की निआई हरि बूंद पान सुख थीवनि ॥ २ ॥ ६८ ॥ ९१ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नामहीन बेताल ॥ जेता करन करावन तेता सभि बंधन जंजाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु प्रभ सेव करत अन सेवा बिरथा काटै काल ॥ जब जमु आइ संघारै प्रानी तब तुमरो कउनु हवाल ॥ १ ॥ राखि लेहु दास अपुने कउ सदा सदा किरपाल ॥ सुख निधान नानक प्रभु मेरा साधसंगि धन माल ॥ २ ॥ ६९ ॥ ९२ ॥ सारग महला ५ ॥ मनि तनि राम को बिउहारु ॥ प्रेम भगति गुन गावन गीधे पोहत नह संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रवणी कीरतनु सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ चरन कमल असथिति रिद अंतरि पूजा प्रान को आधारु ॥ १ ॥ प्रभ दीन दइआल सुनहु बेनंती किरपा अपनी धारु ॥ नामु निधानु उचरउ नित रसना नानक सद बलिहारु ॥ २ ॥ ७० ॥ ९३ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नामहीन मति थोरी ॥ सिमरत नाहि सिरीधर ठाकुर मिलत अंध दुख घोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम सिउ प्रीति न लागी अनिक भेख बहु जोरी ॥ तूटत बार न लागै ता कउ जिउ गागरि जल फोरी ॥ १ ॥ करि किरपा भगति रसु दीजै मनु खचित प्रेम रस खोरी ॥ नानक दास तेरी सरणाई प्रभ बिनु आन न होरी ॥ २ ॥ ७१ ॥ ९४ ॥ सारग महला ५ ॥ चितवउ वा अउसर मन माहि ॥ होइ इकत्र मिलहु संत साजन गुण गोबिंद नित गाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु हरि भजन जेते काम करीअहि तेते बिरथे जांहि ॥ पूरन परमानंद मनि मीठो तिसु बिनु दूसर नाहि ॥ १ ॥ जप तप संजम करम सुख साधन तुलि न कछूऐ लाहि ॥ चरन कमल नानक मनु बेधिओ चरनह संगि समाहि ॥ २ ॥ ७२ ॥ ९५ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरा प्रभु संगे अंतरजामी ॥ आगै कुसल पाछै खेम

सारग महला ५ ।। प्रभु ही शान्त पुरुषों का जीवन है। वे विषय-विकारों के रसों को भोगने के स्थान पर सुखों के सागर राम-नाम के अमृत रस का पान करते हैं।। १ ।। रहाउ।। राम नाम रूपी धन के रत्नों को वे इकट्ठा करते हैं और उन्हें तन मन के अन्दर स्थित किए रहते हैं। प्रभु के रंग में रंगकर उनके मन प्रभु प्रेम में लाल हो गए हैं और वे राम नाम के रस में ही भावविभोर बने रहते हैं।। १ ।। जिस प्रकार मछली जल में ही उलझी रहती है उसी प्रकार सन्तजन भी राम नाम की संगत में लीन बने रहते हैं। हे नानक, सन्तजन तो उस चातक की तरह हैं जो प्रभु रूपी बूंद का पान करके सुखी बने रहते हैं।। २ ।। ६८।। ६१।। सारग महला ५ ।। प्रभु-नाम से विहीन व्यक्ति प्रेत बने रहते हैं उनका जो कुछ भी करना-कराना होता है वह सब उनके लिए बन्धन और जँजाल बनता जाता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु की सेवा के बिना वे अन्य (देवी-देवताओं आदि) की सेवा करते हैं और अपने समय को व्यर्थ ही नष्ट करते रहते हैं। हे प्राणी, जब यम आकर तुझे मार डालेगा तब तेरा क्या हाल होगा।। १ ।। हे सदैव कृपा करने वाले प्रभु, तुम अपने दास को बचा लो। हे नानक, मेरा प्रभु तो सुखों का भण्डार है और मेरी धन-सम्पदा साधसंगत ही है।। २ ।। ६६।। ६२।। सारग महला ५ ।। तन-मन से यदि प्रभुमय व्यवहार चलता रहे तो प्रेम, भक्ति और गुणानुवाद करने से प्रभु रीझ जाता है और फिर इस संसार के झंझट स्पर्श भी नहीं कर पाते।। १।। रहाउ।। साधु-पुरुष का यही आचरण है कि वह प्रभु का सुमिरन करता है और कानों से उनकी कीर्ति सुनता रहता है। प्रभु के चरण कमल उसके हृदय में स्थित बने रहते हैं और प्रभु की वन्दना उसके प्राणों का आसरा बनी रहती है।। १ ।। हे दीन दयालु प्रभु, कृपा को धारण करके मेरी विनती सुन लो कि अपनी जीभ से मैं सदैव तुम्हारे नाम रूपी खजाने का सुमिरन करता रहूँ और हे नानक, इस प्रकार सदैव बलिहारी जाता रहूँ।। २ ।। ७० ।। ६३ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु के नाम से विहीन जीव की बुद्धि अल्प हो जाती है। वह सभी ऐश्वर्यों के स्वामी प्रभु का सुमिरन नहीं करता और उसे घोर दुख मिलते रहते हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के नाम से प्रीति ना लगाकर ऐसे व्यक्ति ने अनेक पाखण्डों में अपना प्रेम लगाया है परन्तु जैसे फूटी हुई गागर में जल नहीं ठहरता उसी प्रकार उसके प्रेम को टूटते हुए भी देर नहीं लगती।। १ ।। हे प्रभु, कृपा करके मुझे भक्तिरस प्रदान कर दो ताकि मेरा मन प्रेम रस की मस्ती में लीन बना रहे। सेवक नानक तो तेरी शरण में है और उसके लिए प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है।। २ ।। ७१ ।। ६४ ।। सारग महला ५ ।। मैं उस अवसर पर मन का ध्यान लगाए रहता हूँ कि जब शान्त पुरुष इकट्ठे हों और सदैव उस प्रभु प्रियतम के गुणों का गान चलता रहे।। १ ।। रहाउ।। प्रभु सुमिरन से विहीन बनकर जितने भी काम किए जाते हैं वे सभी व्यर्थ ही जाते हैं। वह पूर्ण परमानन्द प्रभु मन को मीठा लगता है और उसके बिना तो दूसरा कोई भी नहीं है।। १ ।। जप, तप, संयम, कर्मों के सुख साधन लाभ के हिसाब से उस प्रभु के मुकाबले में कुछ भी नहीं हैं। हे नानक, उसके चरण कमलों में मेरा मन बिंधा हुआ है और सदैव चरणों में ही लीन बना रहता है।। २ ।। ७२ ।। ६५।। सारग महला ५ ।। अन्तर्यामी प्रभु मेरे साथ ही बसा रहता है। उस मालिक प्रभु के नाम का सुमिरन करने से आगे भी जीव कुशलता पूर्वक सुखी

सूखा सिमरत नामु सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजन मीत सखा हरि मेरै गुन गुोपाल हरि राइआ ॥ बिसरि न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा राखे दास अपने जीअ जंत वसि जा कै ॥ एका लिव पूरन परमेसुर भउ नही नानक ता कै ॥ २ ॥ ७३ ॥ ९६ ॥ सारग महला ५ ॥ जा कै राम को बलु होइ ॥ सगल मनोरथ पूरन ताहू के दूखु न बिआपै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु भगतु दासु निजु प्रभ का सुणि जीवां तिसु सोइ ॥ उदमु करउ दरसनु पेखन कौ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ गुर परसादी द्रिसटि निहारउ दूसर नाही कोइ ॥ दानु देहि नानक अपने कउ चरन जीवां संत धोइ ॥ २ ॥ ७४ ॥ ९७ ॥ सारग महला ५ ॥ जीवतु राम के गुण गाइ ॥ करहु क्रिपा गोपाल बीठुले बिसरि न कब ही जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु धनु सभु तुमरा सुआमी आन न दूजी जाइ ॥ जिउ तू राखहि तिव ही रहणा तुम्हरा पैन्है खाइ ॥ १ ॥ साधसंगति कै बलि बलि जाई बहुड़ि न जनमा धाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई जिउ भावै तिवै चलाइ ॥ २ ॥ ७५ ॥ ९८ ॥ सारग महला ५ ॥ मन रे नाम को सुख सार ॥ आन काम बिकार माइआ सगल दीसहि छार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रिहि अंध कूप पतित प्राणी नरक घोर गुबार ॥ अनिक जोनी भ्रमत हारिओ भ्रमत बारं बार ॥ १ ॥ पतित पावन भगति बछल दीन किरपा धार ॥ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै साधसंगि उधार ॥ २ ॥ ७६ ॥ ९९ ॥ सारग महला ५ ॥ बिराजित राम को परताप ॥ आधि बिआधि उपाधि सभ नासी बिनसे तीनै ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिसना बुझी पूरन सभ आसा चूके सोग संताप ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी मन तन आतम ध्राप ॥ १ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर साधू कै संगि खाप ॥ भगति वछल भै काटनहारे नानक के माई बाप ॥ २ ॥ ७७ ॥ १०० ॥ सारग महला ५ ॥ आतुरु नाम बिनु संसार ॥ त्रिपति न होवत कूकरी आसा इतु लागो बिखिआ छार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ जनमत बारो बार ॥ हरि का सिमरनु निमख न सिमरिओ जमकंकर करत खुआर ॥ १ ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन तेरिआ संतह की रावार

बना रहता है और पीछे इस लोक में भी सुख बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। मेरा प्रभु, मेरा प्रियतम, मित्र और सखा है और धरती के पालनहार राजा रूपी उस प्रभु के गुण ही वास्तविक गुण हैं। पूर्ण गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है और हे प्रभु, तु क्षण भर के लिए भी हृदय से भूल मत जाना ।। १ ।। सभी जीव-जन्तु जिसके वश में हैं उसने कृपा करके एक ही पूर्ण परमेश्वर में अपनी लौ लगा रखी है उसे किसी प्रकार का भी भय नहीं होता।। २ ।। ६३ ।। ६६ ।। सारग महला ५ । जिसके पास परमात्मा का बल होता है उसके सभी उद्देश्य पूरे हो जाते हैं और उसे किसी प्रकार का भी दुख प्रभावित नहीं करता।। १ ।। रहाउ ।। जो व्यक्ति प्रभु का सेवक और भक्त है मैं तो उसी की शोभा सुनकर जीवित बना रहता हूँ। उसी के दर्शन करने के लिए मैं प्रयत्न करता हूँ परन्तु उसका दर्शन उसकी कृपा से ही प्राप्त होता है।। १ ।। गुरु की कृपा से मैं केवल उसी को देखूं और अन्य किसी को ना निहारूं। अपने नानक को हे प्रभु, यह दान दे कि मैं शान्त पुरुषों के चरणों को धोकर जीवित बना रहूँ।। २ ।। ७५ ।। ६७ ।। सारग महला ५ ।। राम के गुणों का गायन करके ही मैं जीवित बना रहता हूँ और हे प्रभु, मुझ पर कृपा बनाए रखो ताकि तेरे गुणों के गायन को मैं कभी भी ना भूलूं ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, मेरा मन, तन, और धन सब तुम्हारा ही है और मेरे लिए अन्य कोई ठिकाना नहीं है। तू जैसे रखता है हमें वैसे ही रहना है और तुम्हारा ही दिया हुआ पहनना और खाना है ।। १ ।। साधसंगत पर मैं बार-बार बलिहारी जाता हूँ क्योंकि इसमें बने रहने से फिर जन्मों में भटकना नहीं पड़ता। सेवक नानक तो तेरी शरण में है इसीलिए हे प्रभु, तू जैसा चाहे उसे वैसा ही चलाता रह ।। २ ।। ७५ ।। ६८ ।। सारग महला ५ ।। हे मन, सभी सुखों का सारतत्व प्रभु-नाम ही है अन्य सभी कार्य माया के ही विकार हैं और इसीलिए यह सब कुछ राख के समान व्यर्थ दिखाई देता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्राणी का हृदय रूपी घर अन्धा कुंआ अर्थात घोर अज्ञानी बनकर पतित होकर घोर नरक के अंधकार में डूबा हुआ है। इसलिए यह जीव बार-बार अनेकों योनियों में भटकता हुआ भ्रमों में पड़ा है ।। १ ।। हे पतितपावन, भक्त वत्सल प्रभु, तू हम जैसे दीनों पर कृपा कर। नानक तो हाथ जोड़कर यही दान माँगता है कि साधसंगत के माध्यम से मेरा उद्धार कर दे ।। २ ।। ७६ ।। ६ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु का प्रताप ही चारों ओर विद्यमान है। उसी के कारण हमारे शरीर, मन और आध्यात्मिकता के सभी रोग भाग खड़े हुए हैं और तीनों प्रकार की पीड़ा विनष्ट हो गई है ।। १ ।। रहाउ ।। हमारी प्यास बुझ गई है, सभी आशाएं पूरी हो गई हैं तथा सभी शोक और संताप समाप्त हो गए हैं। उस अटल और अविनाशी प्रभु का गुणानुवाद करते हुए हमारे मन, तन और आत्मा सन्तुष्ट हो गए हैं।। १ ।। साधु-पुरुषों की संगत में काम क्रोध, लोभ, अभिमान और ईर्ष्या सभी समाप्त हो गए हैं। नानक के माई-बाप प्रभु, तुम ही भक्त वत्सल हो और भय का नाश करने वाले हो ।। २ ।। ७७ ।। १०० ।। सारग महला ५ ।। प्रभु-नाम के बिना सारा संसार व्याकुल है। विषयों की मिट्टी जैसी माया में लगे रहने से इसकी कुत्तों जैसी आशाएं कभी पूरी नहीं होती ।। १ ।। रहाउ ।। ठगबूटी को पाकर लोगों को ठगता हुआ यह स्वयं ही भटक गया है और बार-बार जन्म लेता रहता है। इसने क्षण भर के लिए भी प्रभु का सुमिरन नहीं किया इसलिए इसे यम का दूत ख्वार करता रहता है ।। १ ।। दीनों के दुखों को नष्ट करने वाले प्रभु, तुम कृपा करो क्योंकि हम तो तेरे शान्त पुरुषों की चरणधूलि हैं।

॥ नानक दासु दरसु प्रभ जाचै मन तन को आधार ॥ २ ॥ ७८ ॥ १०१ ॥ सारग महला ५ ॥ मैला हरि के नाम बिनु जीउ ॥ तिनि प्रभि साचै आपि भुलाइआ बिखै ठगउरी पीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमतौ बहु भांती थिति नही कतहू पाई ॥ पूरा सतिगुरु सहजि न भेटिआ साकतु आवै जाई ॥ १ ॥ राखि लेहु प्रभ संम्रिथ दाते तुम प्रभ अगम अपार ॥ नानक दास तेरी सरणाई भवजलु उतरिओ पार ॥ २ ॥ ७९ ॥ १०२ ॥ सारग महला ५ ॥ रमण कउ राम के गुण बाद ॥ साधसंगि धिआईऐ परमेसरु अंम्रित जा के सुआद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत एकु अचुत अबिनासी बिनसे माइआ माद ॥ सहज अनद अनहद धुनि बाणी बहुरि न भए बिखाद ॥ १ ॥ सनकादिक ब्रहमादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद ॥ पीवत अमिउ मनोहर हरि रसु जपि नानक हरि बिसमाद ॥ २ ॥ ८० ॥ १०३ ॥ सारग महला ५ ॥ कीन्हे पाप के बहु कोट ॥ दिनसु रैनी थकत नाही कतहि नाही छोट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बजर बिख बिआधी सिरि उठाई पोट ॥ उघरि गईआं खिनहि भीतरि जमहि ग्रासे झोट ॥ १ ॥ पसु परेत उसट गरधभ अनिक जोनी लेट ॥ भजु साधसंगि गोबिंद नानक कछु न लागै फेट ॥ २ ॥ ८१ ॥ १०४ ॥ सारग महला ५ ॥ अंधे खावहि बिसू के गटाक ॥ नैन स्रवन सरीरु सभु हुटिओ सासु गइओ तत घाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथ रञाणि उदरु ले पोखहि माइआ गईआ हाटि ॥ किलबिख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छांटि ॥ १ ॥ निंदकु जमदूती आइ संघारिओ देवहि मूंड उपरि मटाक ॥ नानक आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना कीनो फाट ॥ २ ॥ ८२ ॥ १०५ ॥ सारग महला ५ ॥ टूटी निंदक की अध बीच ॥ जन का राखा आपि सुआमी बेमुख कउ आइ पहूची मीच ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उस का कहिआ कोइ न सुणई कही न बैसणु पावै ॥ ईहां दुखु आगै नरकु भुंचै बहु जोनी भरमावै ॥ १ ॥ प्रगटु भइआ खंडी ब्रहमंडी कीता अपणा पाइआ ॥ नानक सरणि निरभउ करते की अनद मंगल गुण गाइआ ॥ २ ॥ ८३ ॥ १०६ ॥ सारग महला ५ ॥ त्रिसना चलत

दास नानक तो प्रभु का दर्शन चाहता है क्योंकि प्रभु ही जीव के मन और तन का आसरा है ।। २ ।। ७८ ।। १०१।। सांरग महला ५ ।। यह जीव प्रभु-नाम के बिना मैला है। उस सच्चे प्रभु ने विषय-विकारों की ठगबूटी पिलाकर इसे स्वयं ही भटका रखा है ।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों प्रकार से यह करोड़ों जन्मों में भटकता रहा है परन्तु कहीं भी पक्का ठिकाना नहीं पा सका। पूर्ण सच्चे गुरु को स्वाभाविक रूप से यह नहीं मिल सका और सांसारिक शक्ति का पुजारी बना हुआ यह आवागमन में पड़ा रहता है ।। १ ।। हे समर्थ दाता प्रभु, तुम अगम्य एवं अपार हो ; तुम हमें बचा लो। दास नानक तो तेरी शरण में आकर ही संसार सागर से पार उतर गया है ।। २ ।। ७६ ।। १०२ ।। साधसंगत में अमृत के स्वाद वाला प्रभु का सुमिरन करते रहना चाहिए ।। १ ।। रहाउ ।। उस एक अटल अविनाशी प्रभु का सुमिरन करते ही माया का अभिमान नष्ट हो जाता है। स्वाभाविक आनन्द उसकी वाणी की अनहद धुन से प्राप्त हो जाता है और फिर कभी भी विवाद और झगड़े पैदा नहीं होते ।। १ ।। सनक, सनन्दन, ब्रह्मा आदि उसका गुणानुवाद करते है और शुकदेव तथा प्रहलाद भी उसी के गुणों का गायन करते रहते हैं। हे नानक, आश्चर्य स्वरूप प्रभु का सुमिरन करके और उसका जाप करके अमृतरूपी उसके मनोहर रस का वे पान करते रहते हैं ।। २ ।। ८० ।। १०३ ।। सारग महला ५ ।। जीव ने पापों के अनेकों ही किले बना लिए हैं यह दिन रात थकता नहीं परन्तु इसका कहीं भी छुटकारा नहीं होगा ।। १ ।। रहाउ ।। इसने बहुत से विषय विकारों की कठोर गठरी को सिर पर उठा रखा है। जब यम ने इसे बालों से पकड़ लिया तो क्षण भर में ही उसकी ये गठरियाँ खुल गई हैं ।। १ ।। फिर यह पशु, प्रेत, ऊँट, गधे आदि की अनेकों योनियों में पड़वा गया है। हे नानक, तू साधसंगत में प्रभु का सुमिरन कर ; तुझे कही से भी चोट और धक्का नहीं लगेगा ।। २ ।। ८१ ।। १०४ ।। सारग महला ५।। अन्धे अज्ञानी लोग विष के गोले ही गटकते रहते हैं। आँख, कान, और शरीर सब प्रकार से निर्बल हो जाते हैं और श्वास रूपी सारतत्व भी धीमा पड़ जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। जो गरीबों को दुख देकर अपना पेट भरते जाते हैं यह माया अर्थात धन-सम्पदा उनका साथ छोड़ जाती है। पाप करते-करते वे पछताते रहते हैं परन्तु कभी भी पापों को छोड़ नहीं पाते ।। १ ।। निन्दक को यमदूत आकर मार डालते हैं और उसके सिर पर चटाक से चोट करते हैं। हे नानक, जीव ने अपने बुरे कर्मों की कटार से अपने आपको मार लिया है और अपने मन को घायल कर लिया है ।। २ ।। ८२ ।। १०५ ।। सारग महला ५ ।। निन्दक व्यक्तियों की बीच रास्ते में ही जीवन की डोरी टूट जाती है। अपने सेवक का तो प्रभु स्वयं रक्षक बनता है परन्तु प्रभु से विमुख व्यक्ति के सामने मौत आ पहुँचती है ।। १ ।। रहाउ ।। अब उसका कहा हुआ कोई नहीं सुनता और वह कहीं भी बैठने का स्थान नहीं पाता। उसे यहाँ तो दुख मिलता ही है वह आगे भी नरक भोगता है और अनेकों योनियों में भटकता रहता है ।। १।। वह सारे संसार में कुख्यात रूप से प्रसिद्ध हो जाता है और अपने किए हुए का फल उसने प्राप्त कर लिया होता है। नानक तो उस निर्भय कर्ता-प्रभु की शरण में है और उसने सदैव आनन्द के मंगल गीतों के माध्यम से उस प्रभु का गुणानुवाद किया है ।। २ ।। ८३ ।। १०६ ।। सारग महला ५ ।। तृष्णा अनेकों रूपों में

बहु परकारि ॥ पूरन होत न कतहु बातहि अंति परती हारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांति सूख न सहजु उपजै इहै इसु बिउहारि ॥ आप पर का कछु न जानै काम क्रोधहि जारि ॥ १ ॥ संसार सागरु दुखि बिआपिओ दास लेवहु तारि ॥ चरन कमल सरणाइ नानक सद सदा बलिहारि ॥ २ ॥ ८४ ॥ १०७ ॥ सारग महला ५ ॥ रे पापी तै कवन की मति लीन ॥ निमख घरी न सिमरि सुआमी जीउ पिंडु जिनि दीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीवत सवंत सुखीआ नामु सिमरत खीन ॥ गरभ उदर बिललाट करता तहां होवत दीन ॥ १ ॥ महा माद बिकार बाधा अनिक जोनि भ्रमीन ॥ गोबिंद बिसरे कवन दुख गनीअहि सुखु नानक हरि पद चीन्ह ॥ २ ॥ ८५ ॥ १०८ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री चरनह ओट गही ॥ दरसनु पेखि मेरा मनु मोहिओ दुरमति जात बही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगह अगाधि ऊच अबिनासी कीमति जात न कही ॥ जलि थलि पेखि पेखि मनु बिगसिओ पूरि रहिओ स्रब मही ॥ १ ॥ दीन दइआल प्रीतम मनमोहन मिलि साधह कीनो सही ॥ सिमरि सिमरि जीवत हरि नानक जम की भीर न फही ॥ २ ॥ ८६ ॥ १०९ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री मनु मेरो मतवारो ॥ पेखि दइआल अनद सुख पूरन हरि रसि रपिओ खुमारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल भए ऊजल जसु गावत बहुरि न होवत कारो ॥ चरन कमल सिउ डोरी राची भेटिओ पुरखु अपारो ॥ १ ॥ करु गहि लीने सरबसु दीने दीपक भइओ उजारो ॥ नानक नामि रसिक बैरागी कुलह समूहां तारो ॥ २ ॥ ८७ ॥ ११० ॥ सारग महला ५ ॥ माई री आन सिमरि मरि जांहि ॥ तिआगि गोबिदु जीअन को दाता माइआ संगि लपटाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु बिसारि चलहि अन मारगि नरक घोर महि पाहि ॥ अनिक सजांई गणत न आवै गरभै गरभि भ्रमाहि ॥ १ ॥ से धनवंते से पतिवंते हरि की सरणि समाहि ॥ गुर प्रसादि नानक जगु जीतिओ बहुरि न आवहि जांहि ॥ २ ॥ ८८ ॥ १११ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि काटी कुटिलता कुठारि ॥ भ्रम बन दहन भए खिन भीतरि राम नाम परहारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध निंदा परहरीआ काढे साधू कै संगि मारि ॥

चलती रहती है ; यह किसी बात से भी पूरी नहीं होती और अन्त में हार जाती है ।। १ ।। रहाउ ।। इससे ना तो शान्ति मिलती है ना इससे सुख प्राप्त होता है और ना ही इससे सहज भाव उत्पन्न होता है ; इसका व्यवहार ऐसा ही है। जीव काम और क्रोध में ऐसा जला रहता है कि इसे अपने पराए की भी पहचान नहीं रहती ।। १ ।। संसार-सागर का दुख सब ओर छाया हुआ है। हे प्रभु, तू अपने दासो को पार उतार ले। नानक तो तेरे चरण कमलों की शरण में है और सदैव उन पर बलिहारी जाता रहता है ।। २ ।। ८४ ।। १०७ ।। सारग महला ५ ।। रे पापी, तूने किसकी मति ली है कि तू निमिष भर और घड़ी भर के लिए भी उस स्वामी का सुमिरन नहीं करता जिसने तुझे प्राण और शरीर दिया है ।। १ ।। रहाउ ।। तू खाता पीता और सोता हुआ तो सुखी बना रहता है परन्तु प्रभु-नाम के सुमिरन के समय दुखी और व्याकुल हो जाता है। माँ के गर्भ में तो तू चीख-पुकार मचाए रहता था और बहुत दीन अवस्था में पड़ा हुआ था ।। १ ।। माया की मस्ती में तथा विकारों में बंधा हुआ तू अनेकों योनियों में भटकता रहता है। प्रभु भूल जाने से तो दुखों की गिनती ही नहीं रहती तथा हे नानक, सुख तो प्रभु की अवस्था की अनुभूति को समझने में ही है ।। २ ।। ८५।। १०८ ।। सारग महला ५ ।। हे माँ, मैंने प्रभु के चरणों का आसरा पकड़ लिया है। उसका दर्शन करके मेरा मन मोहित हो उठा है और मेरी दुर्मति बह गई है ।। १ ।। रहाउ ।। वह अविनाशी प्रभु अथाह और ऊँचा है, उसके मूल्य को आँका नहीं जा सकता। जल, धरती और सारी दुनिया में उसे व्याप्त देखकर मेरा मन खिल उठा है ।। १ ।। उस दीनदयालु मनमोहन प्रियतम को साधु-पुरुषों के साथ मिलकर मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है। उसका सुमिरन करते हुए ही नानक जीवित बना हुआ है और यम के संकट में अब वह नहीं फँसता ।। २ ।। ८६ ।। १०९ ।। सारग महला ५ ।। हे माँ, मेरा मन मतवाला बना हुआ है। वह सुखपूर्ण आनन्ददायक और दयालु को देखकर हरि-रस में लीन होकर पूरी तरह मस्त हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। उसके उज्जवल यश का गायन करते हुए हम निर्मल हो गए हैं और फिर काले नहीं होते। हमने अपने प्रेम की डोरी उसके चरण कमलों से बाँध ली है और हमें वह अपरम्पर, सर्वव्यापक प्रभु मिल गया है ।। १ ।। उसने अपने हाथ से हमे पकड़ लिया है, हमें सब कुछ दे दिया है और उसके ज्ञान के दीपक से हमारे अन्तर्मन में उजाला हो गया है। हे नानक, जो वैराग्यवान प्रभु-नाम का रस लेने वाला है वह अपने समस्त कुलों को संसार सागर से पार उतार देता है ।। २ ।। ८७ ।। ११० ।। सारग महला ५ ।। हे माँ, किसी अन्य का सुमिरन करने से तो मैं मर ही जाउँगा। जीवों के दाता उस प्रभु को छोड़कर मैं माया के साथ लिपटा हुआ हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। जो प्रभु का नाम भुलाकर अन्य मार्गों पर चलते हैं वे घोर नरक में पड़े रहते हैं। उनकी अनेकों सज़ाओं की गिनती नहीं की जा सकती और वे एक गर्भयोनि से दूसरे गर्भ में भटकते रहते हैं।। १ ।। जो प्रभु की शरण में लीन हो जाते हैं वे ही धनवान और सम्मानपूर्ण कहे जाते हैं। हे नानक, गुरु की कृपा से उन्होंने संसार को जीत लिया होता है और फिर उनका आवागमन नहीं होता ।। २ ।। ८८ ।। १११ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु ने अपनी कुल्हाड़ी से हमारे मन की कुटिलता को काट डाला है। भ्रमों के अन्दर बने हुए जंगल प्रभु-नाम की चोट में क्षणभर में ही जलकर राख हो गए हैं ।। १ ।। रहाउ ।। काम, क्रोध और निन्दा को साधसंगत में मारकर बाहर निकालकर उन्होंने त्याग दिया है।

जनमु पदारथु गुरमुखि जीतिआ बहुरि न जूऐ हारि ॥ १ ॥ आठ पहर प्रभ के गुण गावह पूरन सबदि बीचारि ॥ नानक दासनि दासु जनु तेरा पुनह पुनह नमसकारि ॥ २ ॥ ८९ ॥ ११२ ॥ सारग महला ५ ॥ पोथी परमेसर का थानु ॥ साधसंगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रहम गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधिक सिध सगल मुनि लोचहि बिरले लागै धिआनु ॥ जिसहि क्रिपालु होइ मेरा सुआमी पूरन ता को कामु ॥ १ ॥ जा कै रिदै वसै भै भंजनु तिसु जानै सगल जहानु ॥ खिनु पलु बिसरु नही मेरे करते इहु नानकु मांगै दानु ॥ २ ॥ ९० ॥ ११३ ॥ सारग महला ५ ॥ वूठा सरब थाई मेहु ॥ अनद मंगल गाउ हरि जसु पूरन प्रगटिओ नेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि कुंट दह दिसि जल निधि ऊन थाउ न केहु ॥ क्रिपा निधि गोबिंद पूरन जीअ दानु सभ देहु ॥ १ ॥ सति सति हरि सति सुआमी सति साधसंगेहु ॥ सति ते जन जिन परतीति उपजी नानक नह भरमेहु ॥ २ ॥ ९१ ॥ ११४ ॥ सारग महला ५ ॥ गोबिद जीउ तू मेरे प्रान अधार ॥ साजन मीत सहाई तुम ही तू मेरो परवार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारिओ मेरै माथै साधसंगि गुण गाए ॥ तुमरी क्रिपा ते सभ फल पाए रसकि राम नाम धिआए ॥ १ ॥ अबिचल नीव धराई सतिगुरि कबहू डोलत नाही ॥ गुर नानक जब भए दइआरा सरब सुखा निधि पांही ॥ २ ॥ ९२ ॥ ११५ ॥ सारग महला ५ ॥ निबही नाम की सचु खेप ॥ लाभु हरि गुण गाइ निधि धनु बिखै माहि अलेप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल संतोखे आपना प्रभु धिआइ ॥ रतन जनमु अपार जीतिओ बहुड़ि जोनि न पाइ ॥ १ ॥ भए क्रिपाल दइआल गोबिद भइआ साधू संगु ॥ हरि चरन रासि नानक पाई लगा प्रभ सिउ रंगु ॥ २ ॥ ९३ ॥ ११६ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री पेखि रही बिसमाद ॥ अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप है सोई मनि हरि को अहिलाद ॥ साधसंगि गाए गुन गोबिंद बिनसिओ सभु परमाद ॥ १ ॥ डोरी लपटि रही चरनह संगि भ्रम भै सगले खाद ॥ एकु अधारु नानक जन कीआ बहुरि न

जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को गुरमुख बनकर जीत लिया है और फिर इसे जुए में नहीं हारा है।। १ ।। आठों प्रहर पूर्ण शब्द का चिन्तन करते हुए अब हम प्रभु के गुण गाते हैं और हे प्रभु, नानक तो तेरे दासों का दास है और तेरा ही सेवक है, यह तुझे बार-बार प्रणाम करता है।। २ ।। ८९ ।। ११२ ।। सारग महला ५ ।। ज्ञान स्वरूप यह धार्मिक पोथी परमेश्वर के बसने का स्थान है। इस स्थान पर जो साधसंगत में प्रभु का गुणानुवाद करते हैं उन्हें ही पूर्ण ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है ।। १ ।। रहउ ।। साधक, सिद्ध और मुनिजन उस स्थान की कामना करते हैं परन्तु किसी बिरले का ही ध्यान उसमें लगता है। मेरा स्वामी प्रभु जिस पर कृपालु हो जाए, उसका काम ही पूर्ण हो जाता है ।। १ ।। भय को नाश करने वाला प्रभु, जिसके हृदय में बस जाता है उसे सारा संसार जान जाता है। नानक तो यही दान माँगता है कि हे मेरे कर्ता प्रभु, मैं एक क्षण और पल भर के लिए भी तुझे ना भूलूं ।। २ ।। ९० ।। ११३ ।। सारग महला ५ ।। सभी स्थानों पर आध्यात्मिक आनन्द की वर्षा हुई है। वह प्रेम स्वरूप-प्रभु पूर्णरूप से प्रकट हो उठा है इसलिए आओ अब आनन्द और मंगल-गीत गाऐं ।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रेम-जल का सागर प्रभु चारों तरफ और दसों दिशाओं में पूर्ण रूप से व्याप्त है और कही भी कम नहीं है। कृपा का समुद्र वह परमात्मा पूर्ण है और सबको प्राणों का दान देता है ।। १ ।। वह प्रभु सत्य है, सत्य है और सत्य स्वरूप स्वामी है तथा साधसंगत में भी वह सत्यरूप में ही विद्यमान रहता है। हे नानक, जिसकी उस सत्य के साथ प्रीति लग गई है वह फिर कभी भटकता नहीं है।। २ ।। ९१ ।। ११४ ।। सारग महला ५ ।। हे प्रभु जी, तुम ही मेरे प्राणों का आसरा हो, तुम ही मेरे प्रियतम मित्र, सहायक हो और तुम ही मेरा परिवार हो ।। १ ।। रहाउ।। जब तुमने मेरे माथे पर अपना हाथ रख दिया तो मैंने साधसंगत में बैठकर तुम्हारा गुणानुवाद किया है। तुम्हारी ही कृपा से मैंने सभी फल प्राप्त किए हैं और रस ले लेकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया है ।। १ ।। सच्चे गुरु ने मेरे जीवन की अटल आध्यात्मिक नींव रख दी है जिससे अब मैं कभी भी अस्थिर नहीं होता। हे नानक, जब गुरु दयालु हो गया तो मैंने सभी सुखों के खज़ानों को पा लिया है ।। २ ।। ९२ ।। ११५ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु-नाम के सच्चे व्यवहार की हमारी लादी हुई खेप सफल हो गई है। प्रभु के गुणों के गायन का लाभ रूपी धन का खज़ाना हमें मिल गया है और अब हम विषय-विकारों से अलिप्त हो गए हैं ।। १ ।। रहाउ ।। अपने प्रभु का सुमिरन करके सभी प्राणी सन्तुष्ट हो गए हैं। उन्होंने इस जीवन रूपी महान रत्न को जीत लिया है और वे अब फिर योनियों में नहीं आते ।। १ ।। साधु-पुरुषों की संगत मिलने से दयालु प्रभु हम पर कृपालु हो गए हैं। हे नानक, प्रभु से अब प्रेम लग गया है और प्रभु के चरणों की रासपूंजी अब हमें प्राप्त हो गई है ।। २ ।। ९३ ।। ११६ ।। सारग महला ५ ।। हे माँ, मैं तो उसे देखकर आश्चर्यविभोर हो उठी हूँ। उसकी अनहद धुन ने मेरा मन मोह लिया है और उस धुन का रस विस्मयकारक है ।। १ ।। रहाउ ।। माता-पिता और बन्धु वही है और मेरे मन में प्रभु का आनन्द भर गया है। साधसंगत में जब प्रभु के गुण हमने गाए हैं तो हमारा सारा अहंकार विनष्ट हो गया ।। १ ।। हमारे प्रेम की डोरी उसके चरणों के साथ लिपटी हुई है जिससे हमारे भ्रम एवं सम्पूर्ण भय समाप्त हो गए हैं। हे नानक, तेरे सेवकों ने तुझ एक को अपना आसरा बना लिया है इसलिए वे अब

जोनि भ्रमाद ॥ २ ॥ ९४ ॥ ११७ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री माती चरण समूह ॥ एकसु बिनु हउ आन न जानउ दुतीआ भाउ सभ लूह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिआगि गोपाल अवर जो करणा ते बिखिआ के खूह ॥ दरस पिआस मेरा मनु मोहिओ काढी नरक ते धूह ॥ १ ॥ संत प्रसादि मिलिओ सुखदाता बिनसी हउमै हूह ॥ राम रंगि राते दास नानक मउलिओ मनु तनु जूह ॥ २ ॥ ९५ ॥ ११८ ॥ सारग महला ५ ॥ बिनसे काच के बिउहार ॥ राम भजु मिलि साधसंगति इहै जग महि सार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईत ऊत न डोलि कतहू नामु हिरदै धारि ॥ गुर चरन बोहिथ मिलिओ भागी उतरिओ संसार ॥ १ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिओ सरब नाथ अपार ॥ हरि नामु अंम्रितु पीउ नानक आन रस सभि खार ॥ २ ॥ ९६ ॥ ११९ ॥ सारग महला ५ ॥ ता ते करण पलाह करे ॥ महा बिकार मोह मद मातौ सिमरत नाहि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि जपते नाराइण तिन के दोख जरे ॥ सफल देह धंनि ओइ जनमे प्रभ कै संगि रले ॥ १ ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि सभ ऊपरि साध भले ॥ नानक दास धूरि जन बांछै उधरहि लागि पले ॥ २ ॥ ९७ ॥ १२० ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम के जन कांखी ॥ मनि तनि बचनि एही सुखु चाहत प्रभ दरसु देखहि कब आखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू बेअंतु पारब्रहम सुआमी गति तेरी जाइ न लाखी ॥ चरन कमल प्रीति मनु बेधिआ करि सरबसु अंतरि राखी ॥ १ ॥ बेद पुरान सिम्रिति साधू जन इह बाणी रसना भाखी ॥ जपि राम नामु नानक निसतरीऐ होरु दुतीआ बिरथी साखी ॥ २ ॥ ९८ ॥ १२१ ॥ सारग महला ५ ॥ माखी राम की तू माखी ॥ जह दुरगंध तहा तू बैसहि महा बिखिआ मद चाखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितहि असथानि तू टिकनु न पावहि इह बिधि देखी आखी ॥ संता बिनु तै कोइ न छाडिआ संत परे गोबिद की पाखी ॥ १ ॥ जीअ जंत सगले तै मोहे बिनु संता किनै न लाखी ॥ नानक दासु हरि कीरतनि राता सबदु सुरति सचु साखी ॥ २ ॥ ९९ ॥ १२२ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री काटी जम की फास ॥ हरि हरि जपत सरब सुख पाए बीचे ग्रसत उदास

योनियों में नहीं भटकते फिरते ।। २ ।। ६४ ।। ११७ ।। सारग महला ५ ।। हे माँ मैं तो पूरी की पूरी प्रभु के चरणों में लीन हो गई हूँ। मैंने द्वैत भावना पूर्ण रूप से जला दी है और अब उस एक प्रभु के बिना मैं अन्य किसी को भी नहीं जानती।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु को छोड़कर अन्य जो कुछ भी किया जाता है वह तो विष रूपी माया के अन्धे कुँए में गिरने के समान है। उस प्रभु के दर्शनों की प्यास ने मेरे मन को अपनी ओर लगा रखा है और मुझे नरक में से खींचकर बाहर निकाल लिया है ।। १ ।। शान्त पुरुषों की कृपा से मुझे सुखदाता प्रभु मिल गया है और मेरे अहंकार की चीख-पुकार नष्ट हो गई है। हे नानक, प्रभु के सेवक प्रभु के प्रेम में लीन बने रहते हैं और उनका जंगल रूपी मन और तन खिल उठा है ।। २ ।। ६५ ।। ११८ ।। सारग महला ५ ।। अब सभी कच्चे व्यवहार और सम्बन्ध विनष्ट हो गए हैं। हे जीव, तू साधसंगत में मिलकर प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि यही सारे संसार में श्रेष्ठ है ।। १ ।। रहाउ।। तू हृदय में प्रभु-नाम को धारण कर और इधर-उधर भटकता मत रह। बड़े भाग्य से गुरु के चरण रूपी जहाज तुम्हें मिला है जिससे तू इस संसार से पार उतर सकता है ।। १ ।। सबका मालिक वह अपरम्पर प्रभु, जल, स्थल और अन्तरिक्ष में पूर्ण रूप से व्याप्त है। हे नानक, प्रभु-नाम के अमृत रस का ही पान करो क्योंकि बाकी सभी रस फीके हैं ।। २ ।। ६६ ।। ११६ ।। सारग महला ५ ।। यह जीव इसीलिए चीख-पुकार और अन्त में मिन्नतें करता है तथा प्रभु का सुमिरन नहीं करता ।। १ ।। रहाउ ।। जो साधसंगत में प्रभु का सुमिरन करते हैं उनके सभी दोष जलकर नष्ट हो जाते हैं। प्रभु के साथ लीन बने हुए ऐसे व्यक्तियों का शरीर भी धन्य है और उनका जन्म भी सफल माना जाता है ।। १ ।। चारों पदार्थों (पुरुषार्थों), अठारहों सिद्धियों में से साधु-पुरुष उपर ही बने रहते हैं और वे ही भले लोग हैं। हे नानक, यह दास तो प्रभु के सेवकों की चरण धूलि की कामना करता है ताकि उसे प्राप्त करके इसका उद्धार हो जाए ।। २ ।। ६७ ।। १२० ।। सारग महला ५ ।। प्रभु के सेवक प्रभु के नाम का ही आकांक्षा करने वाले होते हैं। मन, तन और वचन से वे इसी सुख को चाहते रहते हैं कि इन आँखों से कब उस प्रभु का दर्शन होगा ।। १ ।। रहाउ ।। हे परब्रह्म प्रभु, तू अनन्त है तेरी गति को समझा नहीं जा सकता। तेरे चरण कमलों की प्रीति में मेरा मन बिंधा हुआ है और उस प्रीति को ही मैंने अपना सब कुछ समझकर अपने अन्तर्मन में सम्भाला हुआ है ।। १ ।। वेद, पुराण, स्मृतियों और साधुजनों ने अपनी जीभ से यही कहा है कि हे नानक, प्रभु-नाम के सुमिरन से ही पार उतरा जाता है तथा अन्य सभी बातें व्यर्थ हैं ।। २ ।। ६८ ।। १२१ ।। सारग महला ५ ।। हे माया रूपी मक्खी तू भी उस प्रभु की ही मक्खी है। जहाँ दुर्गन्ध होती है तू वहीं बैठती है और अत्यन्त भीषण, अभिमान रूपी विष वाले रस को तू चखती रहती है ।। १ ।। रहाउ ।। तुझे जब भी देखा है तो यही देखा है कि तू एक स्थान पर टिक नहीं पाती। शान्त पुरुषों के बिना तूने किसी को भी नहीं छोडा है और ये सन्त पुरुष प्रभु की ओर ही लीन बने रहते हैं।। १ ।। सभी जीवों को तूने मोहित कर रखा है परन्तु शान्त पुरुषों के बिना तुझे कोई नहीं समझ सका है। दास नानक तो प्रभु की कीर्ति में लीन बना हुआ है और सुरति में शब्द को टिका कर सत्य स्वरूप प्रभु को साक्षात रूप से देखता है ।। २ ।। ६६ ।। १२२ ।। सारग महला ५ ।। हे माँ, मैंने तो यम के फन्दे को काट दिया है। गृहस्थी में सांसारिकता से अलिप्त बना रहकर मैंने प्रभु का सुमिरन करते हुए सभी सुख प्राप्त कर लिए हैं।।

॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा लीने करि अपुने उपजी दरस पिआस ॥ संतसंगि मिलि हरि गुण गाए बिनसी दुतीआ आस ॥ १ ॥ महा उदिआन अटवी ते काढे मारगु संत कहिओ ॥ देखत दरसु पाप सभि नासे हरि नानक रतनु लहिओ ॥ २ ॥ १०० ॥ १२३ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री अरिओ प्रेम की खोरि ॥ दरसन रुचित पिआस मनि सुंदर सकत न कोई तोरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान मान पति पित सुत बंधप हरि सरबसु धन मोर ॥ ध्रिगु सरीरु असत बिसटा क्रिम बिनु हरि जानत होर ॥ १ ॥ भइओ क्रिपाल दीन दुख भंजनु परा पूरबला जोर ॥ नानक सरणि क्रिपा निधि सागर बिनसिओ आन निहोर ॥ २ ॥ १०१ ॥ १२४ ॥ सारग महला ५ ॥ नीकी राम की धुनि सोइ ॥ चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चितवता गोपाल दरसन कलमला कढु धोइ ॥ जनम मरन बिकार अंकुर हरि काटि छाडे खोइ ॥ १ ॥ परा पूरबि जिसहि लिखिआ बिरला पाए कोइ ॥ रवण गुण गोपाल करते नानका सचु जोइ ॥ २ ॥ १०२ ॥ १२५ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की मति सार ॥ हरि बिसारि जु आन राचहि मिथन सभ बिसथार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगमि भजु सुआमी पाप होवत खार ॥ चरनाबिंद बसाइ हिरदै बहुरि जनम न मार ॥ १॥ करि अनुग्रह राखि लीने एक नाम अधार ॥ दिन रैनि सिमरत सदा नानक मुख ऊजल दरबारि ॥ २ ॥ १०३ ॥ १२६ ॥ सारग महला ५ ॥ मानी तूं राम कै दरि मानी ॥ साधसंगि मिलि हरि गुन गाए बिनसी सभ अभिमानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु अपुनी करि लीनी गुरमुखि पूर गिआनी ॥ सरब सूख आनंद घनेरे ठाकुर दरस धिआनी ॥ १ ॥ निकटि वरतनि सा सदा सुहागनि दह दिस साई जानी ॥ प्रिअ रंग रंगि रती नाराइन नानक तिसु कुरबानी ॥ २ ॥ १०४ ॥ १२७ ॥ सारग महला ५ ॥ तुअ चरन आसरो ईस ॥ तुमहि पछानू साकु तुमहि संगि राखनहार तुमै जगदीस ॥ रहाउ ॥ तू हमरो हम तुमरे कहीऐ इत उत तुम ही राखे ॥ तू बेअंतु अपरंपरु सुआमी गुर किरपा कोई लाखै ॥ १ ॥ बिनु बकने बिनु कहन कहावन अंतरजामी जानै ॥ जा कउ मेलि लए

१ ।। रहाउ ।। प्रभु ने कृपापूर्वक हमें अपना बना लिया है और हमारे हृदय में प्रभु के दर्शन की प्यास उत्पन्न हो गई है। शान्त पुरुषों की संगत में हमने जब प्रभु का गुणानुवाद किया तो हमारी अन्य सभी इच्छाएं स्वतः ही नष्ट हो गई हैं।। १ ।। गुरु रूपी शान्त पुरुष ने हमें उजाड़ जंगल रूपी सांसारिकता से निकाल कर सही मार्ग बता दिया है। गुरु दर्शन करते ही हमारे सभी पाप भाग खड़े हुए हैं और हे नानक, हमने प्रभु रूपी रत्न को पा लिया है ।। २ ।। १०० ।। १२३ ।। सारग महला ५ ।। हे माँ, मेरा मन अब प्रभु के प्रेम की कुण्डी में फँस गया है अर्थात उसमें लीन हो गया है। मेरे मन में उसी के दर्शनों की सुन्दर लगन लगी हुई है जिसे अब कोई नहीं तोड़ सकता।। १ ।। रहाउ ।। वह मेरा प्राण, मान-सम्मान, पिता, पुत्र, बन्धु अर्थात वह प्रभु मेरा सर्वस्व और धनरूप है। जो प्रभु के बिना किसी अन्य को मानता है, हड्डियो, विष्ठा और कीड़ों से भरा हुआ उसका यह शरीर धिक्कार योग्य है ।। १ ।। पूर्वजन्मों के कर्मों के बल के कारण दीनों के दुखों का नाश करने वाला वह प्रभु कृपालु हो उठा है। नानक तो जबसे कृपा के भण्डार और सागर उस प्रभु की शरण में आ गया है तो उसकी अन्य सब पर मोहताज़ी समाप्त हो गई है।। २ ।। १०१ ।। १२४ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु-नाम की धुन ही सबसे अच्छी है। उस प्रभु के चरण कमल अनुपम हैं और उनका सुमिरन करके व्यक्ति साधुभाव को प्राप्त हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। ऐसा व्यक्ति प्रभु का सुमिरन करता है और उसके दर्शनों के माध्यम से पापों को धोकर बाहर निकाल देता है। जन्म-मरण रूपी विकारों के अंकुर को प्रभु ने काटकर नष्ट कर दिया है ।। १ ।। पहले से ही जिसके भाग्य में लिखा होता है ऐसा कोई बिरला व्यक्ति ही उस प्रभु को प्राप्त करता है। हे नानक, उस कर्ता प्रभु के गुणों में रमण करते रहने के सत्य को तू खोज निकाल ।। २ ।। १०२ ।। १२५ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु के नाम का सुमिरन वाले की बुद्धि श्रेष्ठ होती है। प्रभु को भूलकर जो अन्यों में लीन बने रहते हैं उनके किए हुए विस्तार अन्ततः झूठे ही साबित होते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हे जीव, तू साधसंगत में उस स्वामी प्रभु का सुमिरन कर ताकि तेरे पाप नष्ट हो जाएँ। अपने हृदय में उसके चरण कमलों को बसा ताकि तुझे फिर जन्मों की मार को ना झेलना पडे।। १ ।। केवल एक प्रभु के नाम का आसरा लेने से प्रभु ने कृपा करके हमें बचा लिया है। हे नानक, जो दिन-रात प्रभु का सुमिरन करते हैं, प्रभु के दरबार में उनके मुख उज्जवल बने रहते हैं ।। २ ।। १०३ ।। १२६ ।। सारग महला ५ ।। तुझे प्रभु के द्वार पर सम्मान मिल गया है क्योंकि साधसंगत में मिलकर तुमने प्रभु का गुणानुवाद किया है और अब तुम्हारा अभिमान नष्ट हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने कृपा धारण करके तुझे अपना बना लिया है और गुरमुख बनके तुम पूर्ण ज्ञानवान हो गई हो। मालिक प्रभु के दर्शनों में ध्यान लगाए रखने से तुझे सभी सुख और बहुत से आनन्द प्राप्त हो गए हैं ।। १ ।। जो प्रभु के पास ही बनी रहने वाली हैं उन्हें ही सदा सुहागिन कहा जाता है और वे ही दसों दिशाओं में जानी जाती है। नानक तो उस पर कुर्बान जाता है जो अपने प्रियतम रूपी प्रभु के रंग में रंगी रहती है ।। २ ।। १०४ ।। १२७ ।। सारग महला ५ ।। हे प्रभु, मुझे तुम्हारे ही चरणों का आसरा है। तुम ही मेरे पहचान वाले, तुम्हीं मेरे सम्बन्धी, और हे प्रभु, तुम ही मुझे अपने में लीन बनाए रखने वाले हो ।। रहाउ ।। तुम हमारे हो, हम तुम्हारे कहे जाते हैं और इस लोक तथा परलोक में तुम ही हमारे रक्षक हो। हे स्वामी, तू अनन्त और अपरम्पार है परन्तु इस तथ्य को गुरु की कृपा से कोई-कोई ही जान पाता है ।। १ ।। हमारे कुछ भी ना बोलने के बावजूद वह अन्तर्यामी प्रभु, सब कुछ जानता रहता है। हे नानक, जिनको प्रभु स्वयं मिला लेता है वे

प्रभु नानकु से जन दरगह माने ॥ २ ॥ १०५ ॥ १२८ ॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि भजि आन करम बिकार ॥ मान मोहु न बुझत त्रिसना काल ग्रस संसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीवत हसत सोवत अउध बिती असार ॥ नरक उदरि भ्रमंत जलतो जमहि कीनी सार ॥ १ ॥ पर द्रोह करत बिकार निंदा पाप रत कर झार ॥ बिना सतिगुर बूझ नाही तम मोह महां अंधार ॥ २ ॥ बिखु ठगउरी खाइ मूठो चिति न सिरजनहार ॥ गोबिंद गुपत होइ रहिओ निआरो मातंग मति अहंकार ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ संत राखे चरन कमल अधार ॥ कर जोरि नानकु सरनि आइओ गुोपाल पुरख अपार ॥ ४ ॥ १ ॥ १२९ ॥

सारग महला ५ घरु ६ पड़ताल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥ किंकरी बिकार ॥ देखु री बीचार ॥ गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥ हरि संगि रंग करती महा केल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुपन री संसारु ॥ मिथनी बिसथारु ॥ सखी काइ मोहि मोहिली प्रिअ प्रीति रिदै मेल ॥ १ ॥ सरब री प्रीति पिआरु ॥ प्रभु सदा री दइआरु ॥ कांएं आन आन रुचीऐ ॥ हरि संगि संगि खचीऐ ॥ जउ साधसंग पाए ॥ कहु नानक हरि धिआए ॥ अब रहे जमहि मेल ॥ २ ॥ १ ॥ १३० ॥ सारग महला ५ ॥ कंचना बहु दत करा ॥ भूमि दानु अरपि धरा ॥ मन अनिक सोच पवित्र करत ॥ नाही रे नाम तुलि मन चरन कमल लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि बेद जिहव भने ॥ दस असट खसट स्रवन सुने ॥ नही तुलि गोबिद नाम धुने ॥ मन चरन कमल लागे ॥ १ ॥ बरत संधि सोच चार ॥ क्रिआ कुंटि निराहार ॥ अपरस करत पाकसार ॥ निवली करम बहु बिसथार ॥ धूप दीप करते हरि नाम तुलि न लागे ॥ राम दइआर सुनि दीन बेनती ॥ देहु दरसु नैन पेखउ जन नानक नाम मिसट लागे ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥ सारग महला ५ ॥ राम राम राम

ही उसके दरबार में आदर सम्मान प्राप्त करते हैं ।। २ ।। १०५ ।। १२८ ।।

सारंग महला ५ चौपदे घरु ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे जीव, प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि अन्य सभी कर्म व्यर्थ हैं। मान और मोह में पड़े रहने से तृष्णाएँ समाप्त नहीं होती और काल इस संसार को खाता रहता है।। १ ।। रहाउ ।। खाते-पीते, हँसते-सोते व्यर्थ के कामों में ही यह आयु व्यतीत हो गई है। पेट की अग्नि के नरक में तू जलता हुआ भटकता रहा और अन्त में यम ने ही तेरी खोज खबर ली है अर्थात यम तुझे बार-बार मारता रहा है।। १ ।। अन्य सब कामों से हाथ झाड़कर तू छल-कपट में पड़कर निन्दा आदि विकारों में लीन बना रहता है और पाप कर्मो में लगा रहता है। इस घोर अंधकार और मोह के घने अज्ञान में पड़े हुए तुझको सच्चे गुरु के बिना समझ नहीं पड़ती ।। २ ।। विषयों की ठगबूटी खाकर तू लूटा जा रहा है परन्तु तेरे मन में वह सृजनहार प्रभु कभी भी याद नहीं आता। तू हाथी की तरह अपनी मति के अहंकार में ही ग्रस्त रहा और तूने उस प्रभु को नहीं पहचाना जो गुप्त रूप में सबके अन्दर कार्यशील है ।। ३ ।। प्रभु ने अपने चरण-कमलों का आसरा देकर कृपापूर्वक सन्तपुरुषों को बचा लिया है। नानक तो दोनों हाथ जोड़कर उस परमात्मा और अपरम्पार सर्वव्यापक धरती के पालक प्रभु की शरण में आ गया है ।। ४ ।। १ ।। १२६।।

सारग ५ घरु ६ पड़ताल   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे जीव स्त्री, तू अमूल्य गुणों वाले शुभ वचनों का उच्चारण कर। तू भला क्यों विकार युक्त कार्य ही करती जा रही है। तू इस तथ्य को विचार कर देख। तू शब्द-गुरु का सुमिरन कर और प्रभु-पति के महल को प्राप्त कर ले। इस प्रकार तू प्रभु के रंग में लीन होकर केलि-क्रीड़ा करती रहेगी।। १ ।। रहाउ ।। यह संसार सपने की तरह झूठा है और इसका विस्तार भी सदा बना रहने वाला नहीं है। हे सखी, तू इसके मोह में क्यों मोहित बनी हुई है ; प्रियतम के प्रेम को तू हृदय में बसा ।। १ ।। सबसे ही प्रेम और प्रीति बनाए रख जिससे प्रभु सदैव ही दयालु बना रहेगा। दूसरों-दूसरों मे भला क्यों मन को लगाए रहती है ; प्रभु की संगत में ही लीन बने रहना चाहिए। नानक का कथन है कि जब साधसंगत प्राप्त हो जाती है तब ही प्रभु का सुमिरन किया जाता है और यम के मिलने का भय समाप्त हो जाता है ।। २ ।। १ ।। १३० ।। सारग महला ५ ।। जीव बहुत सा सोना दान देता है, भूमि के दान को अर्पण करता है और अनेक प्रकार से स्वच्छता को अपनाता हुआ मन को पवित्र करता रहता है परन्तु यह सब प्रभु के नाम रूपी चरण-कमलों में लगे हुए मन के सामने कहीं भी बराबर नहीं टिकते ।। १ ।। रहाउ ।। चारों वेदों का जीभ से उच्चारण करना, अठारह पुराणों, छः शास्त्रों का सुनना प्रभु-नाम भी धुन के और प्रभु के चरण कमलों में लगे हुए मन की तुलना में कुछ भी नहीं हैं ।। १ ।। व्रत संध्या और शुद्धि क्रियाएं, निराहार होकर चारों दिशाओं की तीर्थ-यात्रा, पवित्र बने रहकर रसोई बनाना, न्योलि कर्म जैसे अन्य अनेकों कर्मों का करना तथा धूप दीप आरती आदि करते रहना भी प्रभु-नाम सुमिरन के समान नहीं हो सकते। हे दयालु प्रभु, इस दीन की विनती सुन; तू दर्शन दे, मैं तुझे आँखों से देखूँ क्योंकि हे नानक तेरे सेवकों को तो प्रभु का नाम ही मीठा लगता है ।। २ ।। २ ।। १३१ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु के नाम के

जापि रमत राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन के चरन लागे काम क्रोध लोभ तिआगे गुर गोपाल भए क्रिपाल लबधि अपनी पाई ॥ १ ॥ बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर नह कोऊ बैराई ॥ सुआमी सुप्रसंन भए जनम मरन दोख गए संतन के चरन लागि नानक गुन गाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरे हरि मुखहु बोलि हरि हरे मनि धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रवन सुनन भगति करन अनिक पातिक पुनहचरन ॥ सरन परन साधू आन बानि बिसारे ॥ १ ॥ हरि चरन प्रीति नीत नीति पावना महि महा पुनीत ॥ सेवक भै दूरि करन कलिमल दोख जारे ॥ कहत मुकत सुनत मुकत रहत जनम रहते ॥ रांम राम सार भूत नानक ततु बीचारे ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥ सारग महला ५ ॥ नाम भगति मागु संत तिआगि सगल कामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीति लाइ हरि धिआइ गुन गुोबिंद सदा गाइ ॥ हरि जन की रेन बांछु दैनहार सुआमी ॥ १ ॥ सरब कुसल सुख बिस्राम आनदा आनंद नाम जम की कछु नाहि त्रास सिमरि अंतरजामी ॥ एक सरन गोबिंद चरन संसार सगल ताप हरन ॥ नाव रूप साधसंग नानक पारगरामी ॥ २ ॥ ५ ॥ १३४ ॥ सारग महला ५ ॥ गुन लाल गावउ गुर देखे ॥ पंचा ते एकु छूटा जउ साधसंगि पग रउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ द्रिसटउ कछु संगि न जाइ मानु तिआगि मोहा ॥ एकै हरि प्रीति लाइ मिलि साधसंगि सोहा ॥ १ ॥ पाइओ है गुण निधानु सगल आस पूरी ॥ नानक मनि अनंद भए गुरि बिखम गार्ह तोरी ॥ २ ॥ ६ ॥ १३५ ॥ सारग महला ५ ॥ मनि बिरागैगी ॥ खोजती दरसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संतन सेवि कै प्रिउ हीअरै धिआइओ ॥ आनंद रूपी पेखि कै हउ महलु पावउगी ॥ १ ॥ काम करी सभ तिआगि कै हउ सरणि परउगी ॥ नानक सुआमी गरि मिले हउ गुर मनावउगी ॥ २ ॥ ७ ॥ १३६ ॥ सारग महला ५ ॥ ऐसी होइ परी ॥ जानते दइआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मातर पितर तिआगि कै मनु संतन पाहि बेचाइओ ॥ जाति जनम कुल खोईऐ हउ गावउ हरि हरी ॥ १ ॥ लोक कुटंब ते टूटीऐ प्रभ किरति किरति करी ॥ गुरि मो कउ उपदेसिआ नानक

सुमिरन के माध्यम से ही प्रभु सहायक बनता है ।। १ ।। रहाउ ।। शान्त पुरुषों के चरणों में लगकर काम, क्रोध, लोभ को त्यागकर प्रभु-गुरु कृपालु होते हैं और व्यक्ति अपने भाग्य लेखों के अनुसार सब कुछ प्राप्त करता रहता है ।। १ ।। भ्रम और मोह विनष्ट हो जाते हैं। माया के अन्धे बन्धन टूट जाते हैं, सर्वत्र वही पूर्ण प्रभु अनुभव होता है और फिर कोई भी शत्रु नहीं लगता। स्वामी प्रभु प्रसन्न होते हैं, जन्म मरण के दुख दूर हो जाते हैं इसलिए हे नानक, शान्त पुरुषों के चरणों में लगकर प्रभु के गुण गाए जाते हैं ।। २ ।। ३ ।। १३२ ।। सारग महला ५ ।। प्रभु को मन में धारण करते हुए मुख से प्रभु-नाम का उच्चारण करते रहो।। १ ।। रहाउ ।। कानों से उसकी वाणी को सुनना और उसकी भक्ति करते रहना अनेकों पापों के प्रायश्चित के समान है। अब हम साधु-पुरुषों की शरण में आ गए हैं और हमने अन्य आदतों को भुला दिया है ।। १ ।। सदैव प्रभु के चरणों में प्रीति बनाए रखना पवित्र से भी पवित्र वह कार्य है जो सेवक के भय को दूर करता है और उसके पापों और दोषों को जला डालता है। जो उसका गुणानुवाद करते हैं, सुनते हैं वे मुक्त हो जाते हैं और उसके गुणों को आचरण में उतारने वाले जन्म मरण में जाने से बच जाते हैं। हे नानक, विचार का सार तत्व यही है कि प्रभु-नाम ही इस सारे संसार का वास्तविक सार है ।। २ ।। ४ ।। १३३ ।। सारग महला ५ ।। हे सन्त-पुरुष, तू प्रभु-नाम की भक्ति माँग और समस्त कामनाओं का त्याग कर दे ।। १ ।। रहाउ ।। तू प्रेम लगाकर प्रभु का सुमिरन कर और सदैव प्रभु का गुणानुवाद करता रह। तू प्रभु के सेवकों की चरणधूलि को माँग। वह देने वाला स्वामी तुझे देगा ।। १ ।। प्रभु से तू सभी प्रकार के सुख और स्थिरता प्राप्त करना हुआ उसके नाम में आनन्दित बना रहेगा। तू उस अन्तर्यामी प्रभु का सुमिरन कर तुझे यम का कुछ भी भय नहीं रहेगा। सारे संसार के दुखों को हर लेने वाले प्रभु के चरण मात्र एक ही शरण स्थल हैं। साधसंगत नाव स्वरूप है और हे नानक, वह प्रभु पार उतारने वाला है ।। २ ।। ५ ।। १३४ ।। सारग महला ५ ।। गुरु के दर्शन करने के साथ मैं प्यारे प्रभु के गुण गाने लगता हूँ। यदि मैं साधसंगत के चरणों को पकड़ लूं तो मेरा यह एक मन पाँचों विकारों के बन्धन से छूट जाएगा ।। १ ।। रहाउ ।। हे जीव, तू अभिमान और मोह का त्याग कर दे क्योंकि दृष्टमान संसार के पदार्थों में से कुछ भी साथ नही जाएगा। साधसंगत में शोभायमान बना रहकर हे जीव, तू एक प्रभु में ही प्रीति लगाए रख ।। १ ।। उस गुणनिधान प्रभु को पाने से मेरी सभी आशाएँ पूरी हो गई हैं और हे नानक, मेरा मन आनन्दित हो गया है तथा गुरु ने मेरे भ्रमों के विषम किले को तोड़ दिया है ।। २ ।। ६ ।। १३५ ।। सारग महला ५ ।। मन में वास्तविक वैराग्य को जब तू धारण कर लेगी तो उसके दर्शनों की खोज में लीन हो जाएगी ।। १।। रहाउ ।। साधु और शान्त पुरुषों की सेवा करके मैंने हृदय में प्रियतम प्रभु का सुमिरन किया है। अब उस आनन्द स्वरूप प्रभु को देखकर मैं उसका ठिकाना पा जाऊँगी ।। १ ।। सभी कामनाओं को त्यागकर मैं उसकी शरण में पड़ी रहूँगी और अपने गुरु को इस प्रकार प्रसन्न करूँगी कि हे नानक, वह प्रभु मुझे गले से लगा ले ।। २ ।। ७ ।। १३६ ।। सारग महला ५ ।। वह दयालु प्रभु जानते हैं कि हमारी हालत कैसी हो गई है ।। १ ।। रहाउ ।। हमने तो माता-पिता के झूठे मोह को त्यागकर अपना मन शान्त-पुरुषों के पास बेच दिया है। हमने तो प्रभु का गुणानुवाद करते हुए अपनी जाति, अपना जन्म और वंश परम्परा आदि सब कुछ खो दिए हैं ।। १ ।। लोक लाज और कुटुम्ब के अभिमान से जब हम दूर हो गए हैं तो प्रभु ने हमें पूर्ण रूप से निहाल कर दिया है। गुरु ने मुझे यही उपदेश दिया है कि हे नानक,

सेवि एक हरी ॥ २ ॥ ८ ॥ १३७ ॥ सारग महला ५ ॥ लाल लाल मोहन गोपाल तू ॥ कीट हसति पाखाण जंत सरब मै प्रतिपाल तू ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह दूरि पूरि हजूरि संगे ॥ सुंदर रसाल तू ॥ १ ॥ नह बरन बरन नह कुलह कुल ॥ नानक प्रभ किरपाल तू ॥ २ ॥ ९ ॥ १३८ ॥ सारग मः ५ ॥ करत केल बिखै मेल चंद्र सूर मोहे ॥ उपजता बिकार दुंदर नउपरी झुनंतकार सुंदर अनिग भाउ करत फिरत बिनु गोपाल धोहे ॥ रहाउ ॥ तीनि भउने लपटाइ रही काच करमि न जात सही उनमत अंध धंध रचित जैसे महा सागर होहे ॥ १ ॥ उधरे हरि संत दास काटि दीनी जम की फास पतित पावन नामु जा को सिमरि नानक ओहे ॥ २ ॥ १० ॥ १३९ ॥ ३ ॥ १३ ॥ १५५ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सारंग महला ९ ॥ हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥ कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥ तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥ १ ॥ दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥ नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥ २ ॥ १ ॥ सारंग महला ९ ॥ कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥ या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कां को तनु धनु संपति कां की का सिउ नेहु लगाही ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥ १ ॥ तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥ २ ॥ २ ॥ सारंग महला ९ ॥ कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥ माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥ जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥ १ ॥ मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ॥ जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥ २ ॥ ३ ॥ सारंग महला ९ ॥ मन करि कबहू न हरि

केवल एक प्रभु का ही सुमिरन करता रह ।। २ ।। ८ ।। १३६ ।। सारग महला ५ ।। हे प्यारे मोहन, तू ही धरती का पालनहार है। चींटी में, हाथी में, पत्थर में और जीवों में अर्थात सबमें विद्यमान होकर तू सबका पालन पोषण करने वाला है ।। १ ।। रहाउ ।। तू दूर नहीं अपितु सबमें व्याप्त है और सदैव साथ में और सामने प्रत्यक्ष बना रहने वाला है। तू ही रसों का घर और सुन्दर है ।। १ ।। वर्णों में तेरा कोई भी वर्ण नहीं है और कुलों में तेरा कोई कुल नहीं है। हे नानक के प्रभु, तू ही कृपालु है।। २ ।। ६ ।। १३८ ।। सारग महला ५ ।। विषयों के साथ मिली हुई माया केलि-क्रीड़ा करती है और इसने चन्द्र-सूर्य तक को मोहित किया हुआ है। इसके घुंघरुओं की झंकार के साथ द्वन्द मचाने वाले विकार पैदा होते हैं और उनके फलस्वरूप व्यक्ति में अनेकों ऐसे हाव-भाव उत्पन्न होते हैं कि यह उनके माध्यम से प्रभु-विहीन लोगों को ठगती-फिरती है ।। रहाउ ।। तीनों लोक इसमें लिपटे हुए हैं और छोटे मोटे उपाय इसके प्रभाव से बचा नहीं पाते। धन्धों में लीन बने लोग इसमें मस्त होकर ऐसे धक्के खाते हैं जैसे महासागर के थपेडे होते हैं ।। १ ।। प्रभु के शान्त पुरुष और सेवक जिनकी यम की फाँसी कट गई है उन्हीं का उद्धार होता है इसलिए हे नानक, उसी का सुमिरन कर जिसका नाम पतितों को पवित्र बना देने वाला है ।। २ ।। १० ।। १३६ ।। ३ ।। १३ ।। १५५ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि   रागु सारंग महला ६ ।।

हे जीव, प्रभु के बिना तेरी सहायता करने वाला कोई नहीं है। माता-पिता, पुत्र, स्त्री यहाँ किसके हैं और हे भाई, यहाँ कौन किसका है अर्थात कोई किसी का नहीं है।। १ ।। रहाउ ।। धन, धरती और सारी सम्पत्ति जिसे तूने अपना मान रखा है ; शरीर के छूटते ही इनमें से कुछ भी साथ नहीं चलता इसलिए तू क्यों इन सबके साथ लिपटा हुआ है ।। १ ।। दुखों का नाश करने वाले दीनदयालु प्रभु के साथ तू कभी भी अपना प्रेम नहीं बढ़ाता। नानक का कथन है कि जैसे रात का सपना झूठा होता है वैसे ही यह संसार भी सदा स्थिर बना रहने वाला नहीं है ।। २ ।। १ ।। सारंग महला ६ ।। हे मन, तू विषय-विकारों के विष के साथ क्यों उलझा हुआ है। इस संसार में कोई भी स्थायी रूप से नहीं रह पाता ; यहाँ एक आता है और एक चला जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। यह तन, धन और सम्पति यहाँ किसकी होकर रही है और किसके साथ तू प्रेम लगाए बैठा है। यहाँ जो भी दिखाई देता है वह सारा उसी प्रकार विनाशशील है जैसे बादल की छाया सदैव नहीं बनी रहती ।। १ ।। तू अभिमान को त्यागकर सन्तजनों की शरण पकड ले और क्षणभर में मुक्त हो जा। हे प्रभु के सेवक नानक, प्रभु के भजन के बिना सपने में भी सुख नहीं मिल सकता ।। २ ।। २ ।। सारंग महला ६ ।। हे मानव, तू अपना जन्म क्यों खो रहा है। तू माया की मस्ती में और विषय-विकारों के स्वादों में लीन बना हुआ है और तू प्रभु की शरण में नही आता।। १ ।। रहाउ ।। यह सारा संसार एक सपने की तरह है, तू इसे देखकर क्यों लोभ कर रहा है। यहाँ जो भी पैदा होता है वह सारा नाशवान है तथा यहाँ कोई भी रह नहीं पाता ।। १ ।। तूने इस झूठे शरीर को सदैव बना रहने वाला सत्य माना है और इस प्रकार तूने अपने आपको केवल इसी के साथ बाँध रखा है। हे सेवक नानक, वही व्यक्ति यहाँ मुक्त होता है जो प्रभु के सुमिरन में अपना चित्त लगाता है ।। २ ।। ३ ।। सारंग महला ६ ।। हे जीव, तूने मन लगाकर कभी भी प्रभु के

गुन गाइओ ॥ बिखिआसकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइओ ॥ पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइओ ॥ १ ॥ कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥ कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३ ॥ १३९ ॥ १५९ ॥

रागु सारग असटपदीआ महला १ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥ जै जगदीस तेरा जसु जाचउ मै हरि बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की पिआस पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥ स्रीधर नाथ मेरा मनु लीना प्रभु जानै पीर पराई ॥ १ ॥ गणत सरीरि पीर है हरि बिनु गुर सबदी हरि पांई ॥ होहु दइआल क्रिपा करि हरि जीउ हरि सिउ रहां समाई ॥ २ ॥ ऐसी रवत रवहु मन मेरे हरि चरणी चितु लाई ॥ बिसम भए गुण गाइ मनोहर निरभउ सहजि समाई ॥ ३ ॥ हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै न कीमति पाई ॥ बिनु नावै सभु कोई निरधनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ४ ॥ प्रीतम प्रान भए सुनि सजनी दूत मुए बिखु खाई ॥ जब की उपजी तब की तैसी रंगुल भई मनि भाई ॥ ५ ॥ सहज समाधि सदा लिव हरि सिउ जीवां हरि गुन गाई ॥ गुर कै सबदि रता बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥ ६ ॥ सुध रस नामु महा रसु मीठा निज घरि ततु गुसांई ॥ तह ही मनु जह ही तै राखिआ ऐसी गुरमति पाई ॥ ७ ॥ सनक सनादि ब्रहमादि इंद्रादिक भगति रते बनि आई ॥ नानक हरि बिनु घरी न जीवां हरि का नामु वडाई ॥ ८ ॥ १ ॥ सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ धीरै मनु मेरा ॥ कोटि कलप के दूख बिनासन साचु द्रिड़ाइ निबेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रोधु निवारि जले हउ ममता प्रेमु सदा नउ रंगी ॥ अनभउ बिसरि गए प्रभु जाचिआ हरि निरमाइलु संगी ॥ १ ॥ चंचल मति तिआगि भउ भंजनु पाइआ एक सबदि लिव लागी ॥ हरि रसु चाखि त्रिखा निवारी हरि मेलि लए बडभागी ॥ २ ॥ अभरत

गुण नहीं गाए हैं। तू रात दिन विषयों में लीन बना रहा है और जो तुझे अच्छा लगता रहा है तूने वही किया है ।। १ ।। रहाउ ।। कानों से तूने गुरु के उपदेश को नहीं सुना और पराई स्त्री के साथ ही तू लिपटा रहा है। पराई निन्दा के कारण तू अनेकों प्रकार से भागता-दौड़ता रहा है और समझाने के बावजूद तू समझ नहीं सका है ।। १ ।। मैं अपनी करनी की क्या बात कहूँ कि मैंने कैसे इस जन्म को गँवा दिया है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, मेरे में सभी अवगुण हैं, मुझे तू अपनी शरण में ले ले ।। २ ।। ४ ।। ३ ।। १३ ।। १३६ ।। १५६ ।।

रागु सारग अष्टपदियाँ महला १ घरु १ 　　 १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरी माँ, मैं प्रभु के बिना कैसे जीवित रहूँ। हे संसार के स्वामी प्रभु, तेरी जय हो ; मैं मेरे यश की कामना करता हूँ और तुझ प्रभु के बिना मुझसे रहा नहीं जाता ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के दर्शन की प्यासी मैं जीव स्त्री सारी रात तुझे देखती रहती हूँ। उस प्रभु और सबके नाथ ने मेरे मन को अपने वश में कर लिया है ; वह प्रभु ही पराई पीड़ा को जानने वाला है ।। १ ।। प्रभु के बिना पीड़ा से मुक्त यह शरीर चिन्ताओं में पड़ा हुआ गणनाएं करता रहता है परन्तु प्रभु को शब्द-गुरु के माध्यम से ही पाया जाता है। दयालु होकर हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि मैं प्रभु में ही लीन बना रहूँ ।। २ ।। हे मेरे मन, ऐसी विधि को अपनाओ कि मेरा चित प्रभु के चरणों में लगा रहे। उसके मनोहर गुणों का गायन करके हम विस्मयपूर्ण आनन्द से भर गए हैं और निर्मम होकर पूर्ण स्थिरता की स्थिति में समा गए हैं ।। ३ ।। हमारे हृदय में प्रभु-नाम की अटल धुन बजती रहती है जो ना तो घटती है और ना उसके मूल्य को आँका जा सकता है। सच्चे गुरु ने हमें यह रहस्य समझा दिया है कि प्रभु-नाम से विहीन हर व्यक्ति निर्धन ही है ।। ४ ।। हे सखी, तू सुन, मेरे प्राण मेरा प्रियतम ही बन गए हैं और काम, क्रोध आदि दूत तो अपना ही विष खाकर मर गए हैं अर्थात समाप्त हो गए हैं। जबसे हमें तुम्हारे साथ जितनी प्रीति लगी है वह उतनी की उतनी बनी हुई है और हे भाई, मेरा मन, तेरे प्रेम से रंगा हुआ है ।। ५ ।। प्रभु के साथ लौ लगाए हुए मैं सदैव सहज समाधि में लीन बना हुआ हूँ और प्रभु का गुणानुवाद करके जीवित बना रहता हूँ। शब्द-गुरु में लीन होकर मैं वैराग्यपूर्ण हो गया हूँ और मैंने अपने वास्तविक स्वरूप में ध्यान लगा लिया है ।। ६ ।। अब मुझे शुद्ध रस वाला प्रभु-नाम मीठा महारस लग रहा है और इसके साथ मुझे अपने हृदय में ही सार तत्व रूपी प्रभु मिल गया है। तूने जहाँ हमारे मन को रखा है वह वहीं टिका हुआ है क्योंकि हमने गुरु की ओर से इसी प्रकार की बुद्धि प्राप्त की है।। ७ ।। सनक-सनन्दन, ब्रह्मा, इन्द्र आदि जब भक्ति में लीन हुए तभी उनका प्रेम प्रभु के साथ लगा है। हे नानक, मैं प्रभु के बिना तो घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकता क्योंकि प्रभु का नाम ही सबसे ऊँचे बड़प्पन वाला है ।। ८ ।। १ ।। सारग महला १ ।। प्रभु के बिना मेरे मन को कैसे धैर्य आ सकता है। करोड़ों कल्पों के दुखों का नाश करने वाला वह प्रभु जब सत्य को हृदय में दृढ़ कराता है तभी हमें मुक्ति प्राप्त होती है ।। १ ।। रहाउ ।। क्रोध को दूर करके मेरा अहंकार और ममता जलकर नष्ट हो गए हैं और इनके स्थान पर सदैव नवीन बना रहने वाला प्रेम स्थापित हो गया है। जब प्रभु से हमने याचना की तो हमारे अन्य सभी भय दूर हो गए हैं और वह निर्मल प्रभु हमें अपने साथ ही बना रहने वाला अनुभव हुआ है ।। १ ।। एक शब्द में लौ लगाकर हमने चंचल मति का त्याग किया है और फिर भय को नाश करने वाले उस प्रभु को पाया है। प्रभु-नाम के रस को चखकर हमने अपनी प्यास दूर की है और हमारे बड़े भाग्य से प्रभु ने हमें अपने साथ मिला लिया है ।। २ ।। खाली

सिंचि भए सुभर सर गुरमति साचु निहाला ॥ मन रति नामि रते निहकेवल आदि जुगादि दइआला ॥ ३ ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोरा बडै भाग लिव लागी ॥ साचु बीचारि किलविख दुख काटे मनु निरमलु अनरागी ॥ ४ ॥ गहिर गंभीर सागर रतनागर अवर नही अन पूजा ॥ सबदु बीचारि भरम भउ भंजनु अवरु न जानिआ दूजा ॥ ५ ॥ मनूआ मारि निरमल पदु चीनिआ हरि रस रते अधिकाई ॥ एकस बिनु मै अवरु न जानां सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ६ ॥ अगम अगोचरु अनाथु अजोनी गुरमति एको जानिआ ॥ सुभर भरे नाही चितु डोलै मन ही ते मनु मानिआ ॥ ७ ॥ गुर परसादी अकथउ कथीऐ कहउ कहावै सोई ॥ नानक दीन दइआल हमारे अवरु न जानिआ कोई ॥ ८ ॥ २ ॥

सारग महला ३ असटपदीआ घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मन मेरे हरि कै नामि वडाई ॥ हरि बिनु अवरु न जाणा कोई हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदि भउ भंजनु जमकाल निखंजनु हरि सेती लिव लाई ॥ हरि सुखदाता गुरमुखि जाता सहजे रहिआ समाई ॥ १ ॥ भगतां का भोजनु हरि नाम निरंजनु पैन्हणु भगति बडाई ॥ निज घरि वासा सदा हरि सेवनि हरि दरि सोभा पाई ॥ २ ॥ मनमुख बुधि काची मनूआ डोलै अकथु न कथै कहानी ॥ गुरमति निहचलु हरि मनि वसिआ अंम्रित साची बानी ॥ ३ ॥ मन के तरंग सबदि निवारे रसना सहजि सुभाई ॥ सतिगुर मिलि रहीऐ सद अपुने जिनि हरि सेती लिव लाई ॥ ४ ॥ मनु सबदि मरै ता मुकतो होवै हरि चरणी चितु लाई ॥ हरि सरु सागरु सदा जलु निरमलु नावै सहजि सुभाई ॥ ५ ॥ सबदु वीचारि सदा रंगि राते हउमै त्रिसना मारी ॥ अंतरि निहकेवलु हरि रविआ सभु आतम रामु मुरारी ॥ ६ ॥ सेवक सेवि रहे सचि राते जो तेरै मनि भाणे ॥ दुबिधा महलु न पावै जगि झूठी गुण अवगण न पछाणे ॥ ७ ॥ आपे मेलि लए अकथु कथीऐ सचु सबदु सचु बाणी ॥ नानक साचे सचि समाणे हरि का नामु वखाणी ॥ ८ ॥ १ ॥ सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि का नामु अति

हो चुके हृदय रूपी सरोवर पूरी तरह से भर गए हैं और गुरमति के माध्यम से हमने उस सत्य का दर्शन किया है। जब नाम में मन लीन हो गया तो वह शुद्ध हरि के प्रेम में रंगा गया है और वह प्रभु सदा से ही दयालु बना रहने वाला है।। ३ ।। उस मोहन ने मेरे मन को मोह लिया है और बड़े भाग्य से मेरी उसमें लौ लग गई है। सत्य का चिन्तन करने से सभी पाप और दुख कट गए हैं और यह मन अब निर्मल होकर प्रेमपूर्ण हो गया है।। ४ ।। वह प्रभु गहरा, गम्भीर, सागर, रत्नों की खान है और उसके बिना मैं अन्य किसी की पूजा नहीं करता। शब्द-गुरु का चिन्तन करके मैंने भ्रम और भय को नष्ट करने वाले प्रभु को पहचाना है और अब मैं अन्य किसी को भी नहीं जानता हूँ ।। ५ ।। इस मन की वासनाओं को समाप्त करके मैंने निर्मल पद को पहचान लिया है और अब हम अत्यधिक रूप से प्रभु के नाम रस में लीन हो गए हैं। सच्चे गुरु ने ही मुझे वास्तविक रहस्य को समझाया है और अब मैं एक प्रभु के बिना अन्य किसी को भी नहीं जानता ।। ६ ।। उस अगम्य, अगोचर और सबके नाथ अयोनि एक ही प्रभु को मैंने गुरमति के माध्यम से जाना है। मेरे हृदय का सरोवर भर गया है और अब मेरा चित्त भटकता नहीं क्योंकि मेरा मन अपने मूल रूप को पहचान कर मन से ही सन्तुष्ट हो उठा है ।। ७ ।। गुरु की कृपा से उस अकथनीय प्रभु का कथन किया जाता है और जो कुछ भी वह प्रभु कहलाता है मैं वह कहता हूँ। हे नानक, हमारा तो वह दीनदयालु प्रभु ही है और हमने अन्य किसी को भी नहीं जाना है ।। ८ ।। २ ।।

सारग महला ३ अष्टपदियाँ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे मन, प्रभु के नाम की ही सारी शोभा है। प्रभु के बिना मैं अन्य किसी को नहीं जानता और प्रभु के नाम के माध्यम से ही मैंने मुक्ति और गति प्राप्त की है ।। १ ।। रहाउ ।। भय-भंजन और यमकाल को भी मिटा देने वाले प्रभु में मैंने शब्द के माध्यम से लौ लगाई है। गुरमुख बनकर ही मैंने सुख देने वाले उस प्रभु को जाना है और सहज स्वाभाविक रूप से मैं उसमें लीन बना हुआ हूँ ।। १ ।। निरंजन प्रभु का नाम ही भक्तों का भोजन है और उनकी भक्ति की महिमा ही उनका पहरावा है। ऐसे भक्त सदैव प्रभु का सुमिरन करते हुए अपने मूल स्वरूप रूपी घर में निवास बनाए रहते हैं और प्रभु के द्वार पर शोभा प्राप्त करते रहते हैं।। २ ।। मनमुख व्यक्ति की बुद्धि बच्ची होती है, उसका मन भटकता रहता है और वह कभी भी प्रभु की अकथनीय कथा वार्ता को नहीं जानता। गुरमति के माध्यम से ही वह अटल प्रभु मन में आ बसा है और उसकी वाणी सच्ची तथा अमृत के समान है ।। ३ ।। मन की लहरों को हमने शब्द के माध्यम से शान्त किया है और हमारी जीभ भी अब शान्त स्वभाव वाली बन गई है। सदैव उस सच्चे गुरु से मिले रहना चाहिए जिसने हमारी लौ प्रभु में लगा दी है।। ४ ।। जब मन शब्द में लीन होकर विकारों की ओर से मर जाता है तब व्यक्ति प्रभु के चरणों में चित्त को लगाता हुआ मुक्त हो जाता है। प्रभु ऐसा समुद्र है जिसका नाम रूपी जल सदैव निर्मल बना रहता है और जो इसमें स्नान करता है वह भी शान्त स्वभाव वाला हो जाता है ।। ५ ।। अहंकार और तृष्णा को मारकर शब्द के चिन्तन के माध्यम से हम सदैव उसके प्रेम में लीन बने हुए हैं। अब हमारे हृदय में वह शुद्ध हरि रमण कर रहा है और हमें सभी आत्माओं में वह प्रभु ही दिखाई दे रहा है ।। ६ ।। सत्य में लीन होकर वही सेवक तेरा सुमिरन कर रहे हैं जो तेरे मन को भा जाते हैं। द्वैतभाव वाली जीव स्त्री अपने प्रभु-पति का साक्षात्कार प्राप्त नहीं कर सकती क्योंकि उसे गुण और अवगुण की पहचान नहीं होती। इसीलिए वह संसार में सबके सामने झूठी ही बनी रहती है ।। ७ ।। जब वह स्वयं अपने से मिला लेता है तो फिर उसकी अकथनीय कथा उसके सच्चे शब्द और सच्ची वाणी के माध्यम से कथन की जाती है। हे नानक, सच्चे लोग प्रभु के नाम का बखान करके ही उस सत्य में लीन हो जाते हैं।। ८ ।। १ ।। सारग महला ३ ।। हे मेरे मन, प्रभु का नाम अत्यन्त

मीठा ॥ जनम जनम के किलविख भउ भंजन गुरमुखि एको डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि कोटंतर के पाप बिनासन हरि साचा मनि भाइआ ॥ हरि बिनु अवरु न सूझै दूजा सतिगुरि एकु बुझाइआ ॥ १ ॥ प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ सहजे रहे समाई ॥ सबदि रते से रंगि चलूले राते सहजि सुभाई ॥ २ ॥ रसना सबदु वीचारि रसि राती लाल भई रंगु लाई ॥ राम नामु निहकेवलु जाणिआ मनु त्रिपतिआ सांति आई ॥ ३ ॥ पंडित पढ़ि पढ़ि मोनी सभि थाके भ्रमि भेख थके भेखधारी ॥ गुर परसादि निरंजनु पाइआ साचै सबदि वीचारी ॥ ४ ॥ आवा गउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ ५ ॥ साचै सबदि सहज धुनि उपजै मनि साचै लिव लाई ॥ अगम अगोचरु नामु निरंजनु गुरमुखि मंनि वसाई ॥ ६ ॥ एकस महि सभु जगतो वरतै विरला एकु पछाणै ॥ सबदि मरै ता सभु किछु सूझै अनदिनु एको जाणै ॥ ७ ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु बूझै होरु कहणा कथनु न जाई ॥ नानक नामि रते सदा बैरागी एक सबदि लिव लाई ॥ ८ ॥ २ ॥ सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि की अकथ कहाणी ॥ हरि नदरि करे सोई जनु पाए गुरमुखि विरलै जाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गहिर गंभीरु गुणी गहीरु गुर कै सबदि पछानिआ ॥ बहु बिधि करम करहि भाइ दूजै बिनु सबदै बउरानिआ ॥ १ ॥ हरि नामि नावै सोई जनु निरमलु फिरि मैला मूलि न होई ॥ नाम बिना सभु जगु है मैला दूजै भरमि पति खोई ॥ २ ॥ किआ द्रिड़ां किआ संग्रहि तिआगी मै ता बूझ न पाई ॥ होहि दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ नामो होइ सखाई ॥ ३ ॥ सचा सचु दाता करम बिधाता जिसु भावै तिसु नाइ लाए ॥ गुरू दुआरै सोई बूझै जिस नो आपि बुझाए ॥ ४ ॥ देखि बिसमादु इहु मनु नही चेते आवा गउणु संसारा ॥ सतिगुरु सेवे सोई बूझै पाए मोख दुआरा ॥ ५ ॥ जिन्ह दरु सूझै से कदे न विगाड़हि सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ सचु संजमु करणी किरति कमावहि आवण जाणु रहाई ॥ ६ ॥ से दरि साचै साचु कमावहि जिन गुरमुखि साचु

मीठा है। यह जन्म-जन्म के पापों और भय को नष्ट करने वाला है और गुरमुख बनकर ही इस एक नाम रूपी प्रभु का दर्शन किया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। करोड़ों जन्मों के पापों को नष्ट करने वाला सच्चा प्रभु मेरे मन को भा गया है। सच्चे गुरु ने मुझे उस एक प्रभु का ऐसा रहस्य समझाया है कि प्रभु के बिना मुझे अन्य कोई भी सूझता नहीं है ।। १ ।। जिनके हृदय में प्रेम रूपी पदार्थ बस गया है वे सहज और शान्त अवस्था में टिके रहते हैं। जो शब्द में लीन हो गए हैं उन पर प्रेम का गाढ़ा लाल रंग चढ़ गया है और वे स्वाभाविक रूप से ही शान्ति में लीन हो गए हैं।।२।। मेरी जीभ शब्द के चिन्तन के रस में रंगकर लाल हो गई है और उस प्रभु के रंग में रंगी गई है। प्रभु-नाम के माध्यम से उस शुद्ध परमात्मा को जब मैंने जान लिया है तो मेरा मन तृप्त हो गया है और मुझे शान्ति प्राप्त हो गई है।। ३ ।। पण्डित पढ़-पढ़ कर मैनी मौन रह-रहकर थक गए हैं और अनेकों वेशों को धारण करने वाले वेश बनाकर भ्रमण करते हुए थक गए हैं। उस प्रभु को गुरु की कृपा से और सच्चे शब्द के चिन्तन के माध्यम से ही पाया जाता है।। ४ ।। सच्चा शब्द जिनके मन को भा गया है वे आवागमन को त्यागकर सत्य में लीन बने रहते हैं। उस सच्चे गुरु का सुमिरन करके सदैव सुख पाया जाता है जिसने हमारे अन्तर्मन में से हमारे अहंकार भाव को दूर कर दिया है ।। ५ ।। सच्चे शब्द के माध्यम से ही हृदय में वह स्वाभाविक धुन उत्पन्न होती है जिससे मन की लौ उस सच्चे प्रभु में ही लग जाती है। उस निरंजन प्रभु का नाम अगम्य और मन इन्द्रियों आदि से परे है जिसे गुरमुख बनकर ही मन में बसाया जाता है ।। ६ ।। कोई बिरला ही इस बात को पहचान पाता है कि उस एक प्रभु में ही सारा संसार कार्यशील बना हुआ है। जब वासनाओं को छोड़कर जीव शब्द में ही लीन होकर विकारों की ओर से मर जाता है तो उसे सारे रहस्यों का पता लग जाता है तथा फिर वह प्रत्येक दिन उस एक प्रभु को ही जानने पहचानने लग जाता है ।। ७ ।। जिस सेवक पर वह कृपादृष्टि करता है वही उसे जान पाता है अन्य कोई भी उसके बारे में कथन नहीं कर सकता। हे नानक, जो प्रभु-नाम में लीन हैं वे सदैव वैराग्यवान बने रहते हैं और उनकी लौ एक शब्द में ही लगी रहती है ।। ८ ।। २ ।। सारग महला ३ ।। हे मेरे मन, प्रभु की कहानी का कथन नहीं किया जा सकता। प्रभु जिसपर कृपादृष्टि करता है वही सेवक उसे प्राप्त करता है और किसी बिरले गुरमुख ने ही उसकी अकथनीय कहानी को जाना है ।। १।। रहाउ ।। प्रभु गहरा, गम्भीर और गुणों का भण्डार है ; उसे शब्द-गुरु के माध्यम से ही पहचाना जाता है। द्वैतभाव में लगा हुआ जीव अनेकों प्रकार के कर्म करता है परन्तु शब्द की शक्ति से विहीन बना हुआ वह पागल बना रहता है ।। १ ।। प्रभु के नाम में जो स्नान करता है वही सेवक पवित्र होता है और फिर कभी मैला नहीं होता। प्रभु-नाम के बिना सारा संसार मैला है और द्वैतभाव में भटकता हुआ अपने सम्मान को गंवाता रहता है ।। २ ।। क्या याद करूँ, किस पदार्थ का संग्रह करुं और किसे त्याग दूं, मुझे तो कुछ भी समझ नहीं है। हे प्रभु, दयालु होकर कृपा करो ताकि प्रभु-नाम ही मेरा सखा बना रहे ।। ३ ।। वह सच्चा दाता और कर्मों का विधाता प्रभु जिसे चाहता है उसी को प्रभु-नाम में लगाता है। गुरु के द्वार पर पहुँचकर भी वही उसके रहस्य को जान पाता है जिसे वह स्वयं समझाता है ।। ४ ।। इस आश्चर्य रूपी संसार को देखकर भी मन यही नहीं जान पाता कि यह संसार आवागमन ही है। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करता है वही इस तथ्य को बूझता है और मोक्ष के द्वार को प्राप्त करता है ।। ५ ।। जिनको प्रभु के द्वार की समझ आ जाती है उन्हें सच्चे गुरु ने ऐसी रहस्य की बात समझा दी है कि वे फिर उस द्वार से कभी भी अपना सम्बन्ध नहीं बिगाड़ते। वे सत्य और समय का आचरण करते हुए अपनी जीविका का अर्जन करते हैं और उनका आवागमन समाप्त हो जाता है ॥६॥ गुरमुखों ने सत्य का आसरा प्राप्त कर लिया है; वे प्रभु के द्वार पर भी सच्चे होते हैं और सत्य की ही कमाई करते हैं।

अधारा ॥ मनमुख दूजै भरमि भुलाए ना बूझहि वीचारा ॥ ७ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे करि करि वेखै ॥ नानक से जन थाइ पए है जिन की पति पावै लेखै ॥ ८ ॥ ३ ॥

सारग महला ५ असटपदीआ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुसाई परतापु तुहारो डीठा ॥ करन करावन उपाइ समावन सगल छत्रपति बीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राणा राउ राज भए रंका उनि झूठे कहणु कहाइओ ॥ हमरा राजनु सदा सलामति ता को सगल घटा जसु गाइओ ॥ १ ॥ उपमा सुनहु राजन की संतहु कहत जेत पाहूचा ॥ बेसुमार वड साह दातारा ऊचे ही ते ऊचा ॥ २ ॥ पवनि परोइओ सगल अकारा पावक कासट संगे ॥ नीरु धरणि करि राखे एकत कोइ न किस ही संगे ॥ ३ ॥ घटि घटि कथा राजन की चालै घरि घरि तुझहि उमाहा ॥ जीअ जंत सभि पाछै करिआ प्रथमे रिजकु समाहा ॥ ४ ॥ जो किछु करणा सु आपे करणा मसलति काहू दीन्ही ॥ अनिक जतन करि करह दिखाए साची साखी चीन्ही ॥ ५ ॥ हरि भगता करि राखे अपने दीनी नामु वडाई ॥ जिनि जिनि करी अवगिआ जन की ते तैं दीए रुढ़ाई ॥ ६ ॥ मुकति भए साधसंगति करि तिन के अवगन सभि परहरिआ ॥ तिन कउ देखि भए किरपाला तिन भव सागरु तरिआ ॥ ७ ॥ हम नान्हे नीच तुम्हे बड साहिब कुदरति कउण बीचारा ॥ मनु तनु सीतलु गुर दरस देखे नानक नामु अधारा ॥ ८ ॥ १ ॥

सारग महला ५ असटपदी घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥ पारब्रहम की अचरज सभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सदा सतिगुर नमसकार ॥ गुर किरपा ते गुन गाइ अपार ॥ मन भीतरि होवै परगासु ॥ गिआन अंजनु अगिआन बिनासु ॥ १ ॥ मिति नाही जा का बिसथारु ॥ सोभा ता की अपर अपार ॥ अनिक रंग जा के गने न जाहि ॥ सोग हरख दुहहू महि नाहि ॥ २ ॥ अनिक ब्रहमे जा के बेद धुनि करहि ॥ अनिक महेस बैसि

द्वैतभाव के भ्रमों में भूले हुए मनमुख इस विचार को नहीं समझ पाते ।। ७ ।। वह प्रभु स्वयं ही गुरमुख है अर्थात मुख्य गुरु है जो स्वयं ही देता है और स्वयं ही कर करके देखता रहता है। हे नानक, वे सेवक ही स्वीकृत होते हैं जिनका सम्मान किसी गिनती में होता है अर्थात जो यहाँ और वहाँ भी सम्मानित बने रहते हैं ।। ८ ।। ३ ।।

सारग महला ५ अष्टपदियाँ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

हे धरती के स्वामी प्रभु, मैंने तुम्हारे प्रताप को देखा है। तुम ही सब कुछ करने कराने वाले हो, पैदा करके नष्ट करने वाले हो और सारी रचना पर एक छत्रपति सम्राट की तरह बैठे हुए हो ।। १ ।। रहाउ ।। ये सांसारिक राजा तो कंगाल हो जाते हैं और झूठे दावे ही करते रहते हैं परन्तु हमारा राजन प्रभु तो सदैव बना रहने वाला है और सभी लोग उसके यश का गायन करते रहते हैं ।। १ ।। हे सन्तजनों, उस राजा की, मेरी पहुँच के मुताबिक शोभा का वर्णन सुनो। वह महानतम साहूकार अनन्त रूप से दान देने वाला है और ऊँचे से भी ऊँचा है ।। २ ।। सभी आकारों में तूने श्वासों को पिरो रखा है और अग्नि को तूने लकड़ी में स्थित किया हुआ है। पानी और धरती को तूने एक ही स्थान पर रखा है परन्तु फिर भी ये एक दूसरे के भिन्न हैं अर्थात पानी धरती को डुबोता नहीं ।। ३ ।। उस प्रभु सम्राट की कथा तो घर-घर में चलती रहती है और हर एक को तुझे प्राप्त करने का उत्साह बना रहता है। जीव-जन्तुओं को उत्पन्न तो तू बाद में करता है परन्तु उनकी रोज़ी-रोटी का प्रबन्ध पहले ही कर देता है। ४ ।। उसे भला कौन सलाह देता है क्योंकि जो कुछ भी करना होता है वह स्वयं ही करता है। हम सभी अनेकों प्रकार के यत्न करते हुए दिखावे करते हैं परन्तु तेरे सार तत्व की समझ तो सच्ची शिक्षा के द्वारा ही आती है ।। ५ ।। प्रभु ने अपने भक्तों को सदैव बचाया है और उन्हें नाम की महिमा प्रदान की है। तेरे सेवक का जिस-जिसने भी निरादर किया है तूने उनको हे प्रभु, नष्ट ही कर दिया है ।। ६ ।। जो साधसंगत करते हुए बन्धन मुक्त हो गए हैं तूने उनके सभी अवगुणों को दूर कर दिया है। तू उन्हें देखकर कृपालु हो जाता है और वास्तव में ऐसे लोगों ने ही संसार सागर को पार कर लिया होता है ।। ७ ।। हम तो बहुत ही नीच और छोटे हैं, तुम बहुत बड़े साहिब हो। तुम्हारी शक्तियों के बारे में हम क्या सोच सकते हैं। गुरु का दर्शन देखकर हमारा मन-तन शीतल हो गया है और हे नानक, हमें तो केवल प्रभु-नाम का ही आसरा है ।। ८ ।। १ ।।

सारग महला ५ अष्टपदी घरु ६   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे प्रभु के सेवको, उस अगम्य और अथाह की वार्ता को सुनो कि उस परब्रह्म की सभा आश्चर्य रूप है।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु को सदैव प्रणाम है क्योंकि गुरु की कृपा से ही उस अनन्त प्रभु के गुण गाए जाते हैं। मन के भीतर प्रकाश खिल उठता है और ज्ञान के अंजन से अज्ञान रूपी अंधकार का विनाश हो जाता है ।। १ ।। उसके विस्तार की कोई सीमा नहीं है और उसकी शोभा अपरम्पर है। उसके रंग अनेक हैं जिनको गिना नहीं जा सकता। वह शोक और हर्ष दोनों से ही परे रहता है ।। २ ।। अनेकों ब्रह्मा उसके लिए वेदों अर्थात ज्ञान का उच्चारण करते रहते हैं तथा अनेकों

धिआनु धरहि ॥ अनिक पुरख अंसा अवतार ॥ अनिक इंद्र ऊभे दरबार ॥ ३ ॥ अनिक पवन पावक अरु नीर ॥ अनिक रतन सागर दधि खीर ॥ अनिक सूर ससीअर नखिआति ॥ अनिक देवी देवा बहु भांति ॥ ४ ॥ अनिक बसुधा अनिक कामधेन ॥ अनिक पारजात अनिक मुखि बेन ॥ अनिक अकास अनिक पाताल ॥ अनिक मुखी जपीऐ गोपाल ॥ ५ ॥ अनिक सासत्र सिम्रिति पुरान ॥ अनिक जुगति होवत बखिआन ॥ अनिक सरोते सुनहि निधान ॥ सरब जीअ पूरन भगवान ॥ ६ ॥ अनिक धरम अनिक कुमेर ॥ अनिक बरन अनिक कनिक सुमेर ॥ अनिक सेख नवतन नामु लेहि ॥ पारब्रहम का अंतु न तेहि ॥ ७ ॥ अनिक पुरीआ अनिक तह खंड ॥ अनिक रूप रंग ब्रहमंड ॥ अनिक बना अनिक फल मूल ॥ आपहि सूखम आपहि असथूल ॥ ८ ॥ अनिक जुगादि दिनस अरु राति ॥ अनिक परलउ अनिक उतपाति ॥ अनिक जीअ जा के ग्रिह माहि ॥ रमत राम पूरन स्रब ठांइ ॥ ९ ॥ अनिक माइआ जा की लखी न जाइ ॥ अनिक कला खेलै हरि राइ ॥ अनिक धुनित ललित संगीत ॥ अनिक गुपत प्रगटे तह चीत ॥ १० ॥ सभ ते ऊच भगत जा कै संगि ॥ आठ पहर गुन गावहि रंगि ॥ अनिक अनाहद आनंद झुनकार ॥ उआ रस का कछु अंतु न पार ॥ ११ ॥ सति पुरखु सति असथानु ॥ ऊच ते ऊच निरमल निरबानु ॥ अपुना कीआ जानहि आपि ॥ आपे घटि घटि रहिओ बिआपि ॥ क्रिपा निधान नानक दइआल ॥ जिनि जपिआ नानक ते भए निहाल ॥ १२ ॥ १ ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥

सारग छंत महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ घटि घटि पूरन है अलिपाता ॥ घटि घटि पूरनु करि बिसथीरनु जल तरंग जिउ रचनु कीआ ॥ हभि रस माणे भोग घटाणे आन न बीआ को थीआ ॥ हरि रंगी इक रंगी ठाकुरु संतसंगि प्रभु जाता ॥ नानक दरसि लीना जिउ जल मीना सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ १ ॥ कउन उपमा देउ कवन बडाई ॥ पूरन पूरि रहिओ स्रब ठाई ॥ पूरन मनमोहन घट घट सोहन

शिव बैठकर उसमें ध्यान लगाए रहते हैं। अनेकों व्यक्ति उसके अंशावतार हैं तथा अनेकों इन्द्र उसके दरबार में खड़े रहते हैं ।। ३ ।। उसकी अनेकों हवाएं, अग्नियाँ और जल है तथा उसके दूध, दही और रत्नों के सागर हैं। अनेकों ही उसके सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र हैं और विभिन्न प्रकार के देवी-देवता भी अनेकों ही हैं ।। ४ ।। अनेकों ही धरतियाँ और अनेकों ही कामधेनु हैं। अनेकों ही पारिजात वृक्ष हैं और उसके अनेकों ही जीव मुख से बासुँरी बजा रहे हैं। उसके अनेकों ही आकाश और अनेकों ही पाताल हैं तथा अनेकों ही मुखों से धरती के स्वामी उस प्रभु का सुमिरन किया जाता है ।। ५ ।। अनेकों ही शास्त्र, स्मृतियाँ और पुराण हैं तथा अनेकों ही विधियों से उस प्रभु का बखान हो रहा है। अनेकों ही श्रोतागण सुखों के भण्डार प्रभु के यश को सुनते हैं और वह पूर्ण प्रभु सभी में लीन बना हुआ है ।। ६ ।। अनेकों ही धर्मराज और धन के देवता कुबेर आदि हैं। अनेकों ही वरुण आदि और अनेकों ही सोने के बने हुए सुमेरु पर्वत हैं। अनेकों ही शेषनाग उसके प्रणव नाम का सुमिरन करते हैं परन्तु फिर भी वे परब्रह्म प्रभु के रहस्य को नहीं जान पाते ।। ७ ।। अनेकों ही लोक हैं और अनेकों ही उनके और खण्ड हैं। अनेकों की रूपों रंगों वाले ब्रह्माण्ड हैं। अनेकों ही वन और उसमें उगने वाली जड़ें तथा फल हैं। वह स्वयं ही सूक्ष्म है और स्वयं ही स्थूल (जगत रूप) है ।। ८ ।। अनेकों ही युग, दिन और रात आदि हैं। अनेकों ही बार प्रलय हुई है और अनेकों ही बार उसने फिर उत्पत्ति की है। उस प्रभु के घर में अनन्त जीव-जन्तु हैं और वह पूर्ण प्रभु सभी स्थानों में व्याप्त बना रहता है ।। ६ ।। अनेकों प्रकार की उसकी माया है जिसे देखा और समझा नहीं जा सकता और वह प्रभु राजन अनेकों विधियों से अपने खेल खेलता रहता है। अनेकों ही सुन्दर संगीत के माध्यम से उसकी सुन्दर धुनों को गाते रहते हैं और उसके पास चित्रगुप्त जैसी अनेकों शक्तियाँ विद्यमान बनी रहती हैं ।। १० ।। इसके भक्त सबसे ऊँचे हैं जिनके साथ वह बना रहता है और ये भक्तजन प्रेम में रंगकर आठों प्रहर उसके गुण गाते रहते हैं। अनेकों प्रकार के अनहद शब्द और आनन्द की झंकार बजती रहती हैं और इन सबके रस की कोई भी सीमा नहीं बाँधी जा सकती ।। ११ ।। वह सर्वव्यापक प्रभु सच्चा है और उसका स्थान भी सत्यरूप में सदैव अटल बना रहने वाला है। वह ऊँचे से ऊँचा निर्मल और दुखों से परे बना रहता है। अपनी रचना के बारे में केवल वह स्वयं ही जानता है और वह स्वयं ही घर-घर में समाया हुआ है। हे नानक, वह दयालु प्रभु, कृपा का भण्डार है और जिस जिसने भी उसका सुमिरन किया है, हे नानक, वे निहाल हो गए हैं ।। १२ ।। १ ।। २ ।। २ ।। ३ ।। ७ ।।

सारग छन्द महला ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

निर्भय पद देने वाला प्रभु मैं सब ओर देखता हूँ; वह घर-घर में व्याप्त है परन्तु फिर भी अलिप्त बना रहता है। वह घर-घर में अपना विस्तार करके उसी प्रकार पूर्ण रूप से व्याप्त है जैसे जल और तरंगों की रचना की गई है अर्थात सभी तरंगों में जल विद्यमान रहता है। वह सभी शरीरों को भोगता हुआ सभी रसों का आनन्द लेता है और उसके बिना दूसरा कोई नहीं हो सका है। कई रंगों रूपों वाला उस प्रभु को जाना जाता है। जल में मछली की तरह नानक ने उसका दर्शन किया है और अब सब ओर अभय का दान देने वाला वह प्रभु ही दिखाई देता है ।। १ ।। मैं उसकी क्या महिमा करूं और उसकी तुलना किसके साथ करूँ। वह पूर्ण प्रभु तो सभी स्थानों में समाया हुआ है। वह पूर्ण मनमोहन घट-घट में शोभायमान बना रहता है तथा

जब खिंचै तब छाई ॥ किउ न अराधहु मिलि करि साधहु घरी मुहतक बेला आई ॥ अरथु दरबु सभु जो किछु दीसै संगि न कछहू जाई ॥ कहु नानक हरि हरि आराधहु कवन उपमा देउ कवन बडाई ॥ २ ॥ पूछउ संत मेरो ठाकुरु कैसा ॥ हीउ अरापउं देहु सदेसा ॥ देहु सदेसा प्रभ जीउ कैसा कह मोहन परवेसा ॥ अंग अंग सुखदाई पूरन ब्रहमाई थान थानंतर देसा ॥ बंधन ते मुकता घटि घटि जुगता कहि न सकउ हरि जैसा ॥ देखि चरित नानक मनु मोहिओ पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा ॥ ३ ॥ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ धंनि सु रिदा जिह चरन बसाइआ ॥ चरन बसाइआ संत संगाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥ भइआ प्रगासु रिदै उलासु प्रभु लोड़ीदा पाइआ ॥ दुखु नाठा सुखु घर महि वूठा महा अनंद सहजाइआ ॥ कहु नानक मै पूरा पाइआ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

सारंग की वार महला ४ राइ महमे हसने की धुनि १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला २ ॥ गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥ नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥ १ ॥ महला १ ॥ न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ न भीजै रूपी माली रंगि ॥ न भीजै तीरथि भविऐ नंगि ॥ न भीजै दाती कीतै पुंनि ॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥ २ ॥ महला १ ॥ नव छिअ खट का करे बीचारु ॥ निसि दिन उचरै भार अठार ॥ तिनि भी अंतु न पाइआ तोहि ॥ नाम बिहूण मुकति किउ होइ ॥ नाभि वसत ब्रहमै अंतु न जाणिआ ॥ गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ ॥ आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण आपि सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ॥ गुर परसादी उबरे जिन भाणा भाइआ ॥ नानक सचु वरतदा

जब वह अपनी शक्ति खींच लेता है तो हम राख हो जाते हैं। घड़ी आधी घड़ी में अंतिम समय आने वाला है इसलिए साधु पुरुषों के साथ मिलकर क्यों ना उसकी आराधना की जाए। धन और सम्पत्ति जो भी सब कुछ दिखाई देता है इनमें से कुछ भी साथ नहीं जाता। नानक का कथन है कि उस प्रभु की किससे तुलना की जाए और उसका गुणानुवाद कैसे किया जाए ; इसलिए उस प्रभु का सुमिरन ही करते रहना चाहिए ।। २ ।। मैं शान्त पुरुषों से पूछता हूँ कि मेरा प्रभु कैसा है। मुझे उसके बारे में कोई खबर दो; मैं तो उसपर प्राण न्यौछावर कर दूंगा। प्रभु कैसा है मुझे यह बताओ और यह भी समझाओ कि उस प्रभु का प्रवेश अर्थात ठिकाना कहाँ है। सुखदायक होकर केवल ब्रह्मरूप में ही वह अंग-अंग, सभी स्थानों और देशों में व्याप्त है। घर-घर में हर एक के साथ जुड़ा हुआ वह सभी बन्धनों से मुक्त है और जैसा वह प्रभु है मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं कह सकता। उसके आश्चर्यपूर्ण कार्यों को देखकर नानक तो मन में मोहित होकर यही दीनतापूर्वक पूछता है कि वह मेरा स्वामी प्रभु कैसा है ।। ३ ।। वह कृपा करके स्वयं ही आता है और वह हृदय धन्य है जिसमें उसके चरण बसे हुए हैं। शान्त पुरुषों की संगत में ही उसके चरणों का निवास है और वहीं अज्ञान का अंधकार दूर होता है। वहीं पर हृदय खिलकर प्रकाशित हो उठता है और सदा चाहा जाने वाला प्रभु प्राप्त हो जाता है। दुख अब भाग खड़ा होता है और सुख इस हृदय रूपी घर में आ बसता है तथा पूर्ण शान्ति और स्थिरता की हालत बन जाती है। नानक का कथन है कि मैंने उस पूर्ण को पा लिया है और कृपा करके वह स्वयं ही मेरे अन्दर आ बसा है ।। ५ ।। १ ।।

सारंग की वार महला ४
राय महमे हसने की धुन ॥ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्लोक महला २ ।। मन रूपी मकान में यह तन उसकी छत है और इस मकान को माया का ताला लगा है जिसकी कुंजी गुरु है। हे नानक, गुरु के बिना मन का दरवाजा नहीं खुलता और यह कुंजी अन्य किसी के हाथ में नहीं है ।। १ ।। महला १ ।। रागु, नाद और वेदों के पठन-पाठन से भी वह प्रभु प्रसन्न नहीं होता। वह योग के ज्ञान और समाधियों में लीनता से भी नहीं पसीजता। वह रोज़ शोकाकुल बने रहने से भी प्रभावित नहीं होता। रूप सौंदर्य, धन माल और मौज-मेला करते रहने से भी वह राज़ी नहीं होता। नंगे होकर तीर्थों पर भटकने से भी वह प्रसन्न नहीं होता और ना ही दान-पुण्य करने से वह रीझता है। निर्विकल्प समाधि में बैठे रहने से भी वह प्रसन्न नहीं होता। शूरवीर बनकर युद्धों में भिड़ते हुए मर जाने से भी उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और मिट्टी से लिपटे रहने पर भी वह प्रसन्न नहीं होता। वास्तविक लेखा तो मन की अवस्था के अनुरूप ही लिखा जाता है और हे नानक, सच्चे नाम में लीन होने पर ही वह प्रभु प्रसन्न होता है ।। २ ।। महला १ ।। व्यक्ति नौ व्याकरण, छः शास्त्र और षटकर्मों का चिन्तन करता है और दिन-रात अठारह पर्वो वाला अर्थात महाभारत ग्रन्थ पढ़ता रहता है। हे प्रभु, फिर भी ये सब तेरे रहस्य को नहीं जान पाए हैं और प्रभु-नाम से विहीन होकर भला इनकी मुक्ति कैसे होगी। कमल की नाभि में बसे रहने वाले ब्रह्मा ने भी उसका रहस्य नहीं समझा परन्तु हे नानक, गुरमुख बने व्यक्ति ने उस प्रभु के नाम को पहचान लिया है ।। ३ ।। पउड़ी ।। दोषों से मुक्त वह प्रभु स्वयं ही है जिसने स्वयं ही सब कुछ उत्पन्न किया है। उसी ने सारे संसार के खेल की रचना की है। तीनों गुणों की सृजना भी उसी ने की है और माया मोह आदि का विस्तार किया है। जिनको प्रभु का हुकुम भा गया है गुरु की कृपा से उनका उद्धार हो गया है। हे नानक, वह सत्य रूप में कार्यशील बना रहता है

सभ सचि समाइआ ॥ १ ॥ सलोक महला २ ॥ आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ॥ मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥ सभना साहिबु एकु है वेखै धंधै लाइ ॥ किसै थोड़ा किसै अगला खाली कोई नाहि ॥ आवहि नंगे जाहि नंगे विचे करहि विथार ॥ नानक हुकमु न जाणीऐ अगै काई कार ॥ १ ॥ महला १ ॥ जिनसि थापि जीआं कउ भेजै जिनसि थापि लै जावै ॥ आपे थापि उथापै आपे एते वेस करावै ॥ जेते तीअ फिरहि अउधूती आपे भिखिआ पावै ॥ लेखै बोलणु लेखै चलणु काइतु कीचहि दावे ॥ मूलु मति परवाणा एहो नानकु आखि सुणाए ॥ करणी उपरि होइ तपावसु जे को कहै कहाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि चलतु रचाइओनु गुण परगटी आइआ ॥ गुरबाणी सद उचरै हरि मंनि वसाइआ ॥ सकति गई भ्रमु कटिआ सिव जोति जगाइआ ॥ जिन कै पोतै पुंनु है गुरु पुरखु मिलाइआ ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि नामि समाइआ ॥ २ ॥ सलोक महला २ ॥ साह चले वणजारिआ लिखिआ देवै नालि ॥ लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि ॥ वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ ॥ केई लाहा लै चले इकि चले मूलु गवाइ ॥ थोड़ा किनै न मंगिओ किसु कहीऐ साबासि ॥ नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥ १ ॥ महला १ ॥ जुड़ि जुड़ि विछुड़े विछुड़ि जुड़े ॥ जीवि जीवि मुए मुए जीवे ॥ केतिआ के बाप केतिआ के बेटे केते गुर चेले हूऐ ॥ आगै पाछै गणत न आवै किआ जाती किआ हुणि हूए ॥ सभु करणा किरतु करि लिखीऐ करि करि करता करे करे ॥ मनमुखि मरीऐ गुरमुखि तरीऐ नानक नदरी नदरि करे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुखि दूजा भरमु है लोभाइआ ॥ कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ो आलाइआ ॥ पुत्र कलत्रु मोहु हेतु है सभु दुखु सबाइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि भरमहि भरमाइआ ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ नानक हरि भाइआ ॥ ३ ॥ सलोक महला २ ॥ जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥ नानक अंम्रितु एकु है दूजा अंम्रितु नाहि ॥ नानक अंम्रितु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥ तिन्ही पीता रंग सिउ

और सभी सत्य के माध्यम से उसमें समा जाते हैं ।। १ ।। श्लोक महला २ ।। हे नानक, वह सबको पैदा करता है परन्तु सबको अलग-अलग ही रखता है। जब सबका मालिक वह एक प्रभु ही है तो फिर भला किसे बुरा कहा जाए। सबका साहिब वह एक प्रभु ही है और सबको धन्धों में लगाकर यह उन्हें देखता रहता है। किसी को थोड़ा मिलता है और किसी को अधिक परन्तु उस प्रभु की शक्ति से खाली कोई भी नहीं है। जीव नंगे ही आते हैं नंगे ही जाते हैं और इसी दौरान अनेकों प्रकार के आडम्बरों का विस्तार करते रहते हैं। हे नानक, उसके हुकुम को नहीं जाना जा सकता क्योंकि पता नहीं वह आगे हमें किस काम में लगा देगा ।। १ ।। महला १ ।। भाँति-भाँति के शरीर बनाकर उनमें भाँति-भाँति के जीवों को यहाँ भेजकर वह स्थापित करता है और फिर उन्हें यहाँ से ले भी जाता है। वह स्वयं ही स्थापित करता है और स्वयं ही नाश करते हुए अनेकों प्रकार के वेश धारण करवाता रहता है। जितने भी अवधूत बने लोग भ्रमण करते रहते हैं उन्हें भिक्षा भी यह स्वयं ही देता है। उसके लेखों के अनुसार ही बोलना और चलना संभव होता है इसलिए हम क्यों बड़ी-बड़ी डींगे मारते रहें। वास्तविक जो स्वीकृत तथ्य है वह यही है जिसे नानक कहकर सुना रहा है कि कहता कहाता जो कोई कुछ भी कहे परन्तु वास्तविक न्याय तो उसके आचरण पर ही आधारित होगा ।। २ ।। पउड़ी ।। गुरमुख ने आश्चर्यजनक कौतुक की रचना की है कि सभी गुण प्रकट हो उठे हैं। गुरमुख सदैव गुरु की वाणी का उच्चारण करता है और प्रभु को मन में बसाए रहता है। माया का प्रपंच उससे दूर हो जाता है, उसका भ्रम कट जाता है और उसके अन्तर्मन में प्रभु की ज्योति जल उठती है। जिनके खज़ाने में पुण्य जमा है प्रभु ने उन्हें गुरु से मिला दिया होता है। हे नानक, ऐसे ही व्यक्ति स्वाभाविक रूप से उस प्रभु से मिले रहकर प्रभु-नाम में लीन बने रहते हैं ।। २ ।। श्लोक महला ।। २ ।। व्यापारी जीव प्रभु रूपी साहूकार के पास से चल पड़े हैं और प्रभु ने उन्हें अपनी साख का आलेख-पत्र भी दिया है। उस लिखे हुए के अनुसार ही अन्तर्मन पर आदेश चलता है और अच्छी या बुरी वस्तुओं को खरीद लिया जाता है। इस प्रकार जीव रूपी व्यापारियों ने पदार्थों को खरीद कर उन्हें बाँध लिया है। अब इनमें से कई तो लाभ कमा कर चल पड़े है और कई अपना मूलधन भी गँवा कर यहाँ से जा रहे हैं। लाभ लेने वाले और मूल को गँवाने वाले दोनों में से किसे ने भी कम तो माँगा ही नहीं है अर्थात एक ने प्रभु का नाम और दूसरे ने धन दौलत कम नहीं माँगी। हे नानक, प्रभु की कृपा दृष्टि उन पर ही होती है जो जीवन के वास्तविक उद्देश्य की रासपूँजी को पूरी की पूरी बचाकर वापस ले आते हैं ।। १ ।। महला १ ।। जीव मिलते हैं बिछुड़ते हैं फिर बिछुड़कर मिलते हैं। जीव जीते हैं, मरते हैं और फिर जीवित होते हैं। कितनों के बाप, कितनों के बेटे और कितने ही गुरु और चेले हुए हैं। आगे पीछे की भी गिनती नहीं की जा सकती और यह भी नहीं जाना जा सकता कि कितने वर्तमान में पैदा हो रहे हैं। सब अपने किए हुए कर्मों के अनुसार काम करते चले जा रहे हैं और कर्ता प्रभु इनसे काम करवाता जा रहा है। वास्तव में यहाँ मनमुख व्यक्ति आध्यात्मिक मौत मरते रहते हैं और गुरमुख पार उतरते जाते हैं तथा हे नानक, वह प्रभु ही इन पर कृपादृष्टि बनाए रहता है।। २ ।। पउड़ी ।। मनमुख व्यक्ति द्वैतभाव में बना रहकर द्वैत में ही लोभ बनाए रखता है। ऐसे व्यक्ति झूठ और कपट का आचरण करते हैं और झूठ ही बोलते हैं। इनके मोह का कारण पुत्र और स्त्री होते हैं जो सब इन्हें दुख देते हैं। यम के द्वार पर इनको बाँधकर मारा जाता है और ये भ्रमों में भटकते रहते हैं। मनमुख व्यक्ति जीवन को गँवा देता है और हे नानक, प्रभु को शायद ऐसा ही अच्छा लगता है।। ३ ।। श्लोक महला २ ।। जिनके पास तेरे नाम की शोभा है वे मन से उसमें लीन बने रहते हैं। हे नानक, एक प्रभु का नाम ही अमृत है और द्वैतभाव को अमृत नहीं कहा जाता। हे नानक, अमृत तो मन में ही है जिसे गुरु की कृपा से प्राप्त किया जाता है।

जिन्ह कउ लिखिआ आदि ॥ १ ॥ महला २ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥ नानक एकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥ करता सो सालाहीऐ जिनि कीता आकारु ॥ दाता सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ नानक आपि सदीव है पूरा जिसु भंडारु ॥ वडा करि सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का नामु निधानु है सेविऐ सुखु पाई ॥ नामु निरंजनु उचरां पति सिउ घरि जांई ॥ गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ मति पंखेरू वसि होइ सतिगुरू धिआई ॥ नानक आपि दइआलु होइ नामे लिव लाई ॥ ४ ॥ सलोक महला २ ॥ तिसु सिउ कैसा बोलणा जि आपे जाणै जाणु ॥ चीरी जा की ना फिरै साहिबु सो परवाणु ॥ चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥ जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥ जिन्हा चीरी चलणा हथि तिन्हा किछु नाहि ॥ साहिब का फुरमाणु होइ उठी करलै पाहि ॥ जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि ॥ घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥ १ ॥ महला २ ॥ सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार ॥ कुंजी जिन कउ दितीआ तिन्हा मिले भंडार ॥ जह भंडारी हू गुण निकलहि ते कीअहि परवाणु ॥ नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु निरंजनु निरमला सुणिऐ सुखु होई ॥ सुणि सुणि मंनि वसाईऐ बूझै जनु कोई ॥ बहदिआ उठदिआ न विसरै साचा सचु सोई ॥ भगता कउ नाम अधारु है नामे सुखु होई ॥ नानक मनि तनि रवि रहिआ गुरमुखि हरि सोई ॥ ५ ॥ सलोक महला १ ॥ नानक तुलीअहि तोल जे जीउ पिछै पाईऐ ॥ इकसु न पुजहि बोल जे पूरे पूरा करि मिलै ॥ वडा आखणु भारा तोलु ॥ होर हउली मती हउले बोल ॥ धरती पाणी परबत भारु ॥ किउ कंडै तोलै सुनिआरु ॥ तोला मासा रतक पाइ ॥ नानक पुछिआ देइ पुजाइ ॥ मूरख अंधिआ अंधी धातु ॥ कहि कहि कहणु कहाइनि आपु ॥ १ ॥ महला १ ॥ आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि ॥ इकि आखि आखहि सबदु भाखहि अरध उरध दिनु राति ॥ जे किहु होइ त किहु दिसै जापै रूपु न जाति ॥ सभि कारण करता करे घट अउघट घट

प्रारम्भ से ही जिनके लेखों में लिखा है उन्होंने ही प्रेमपूर्वक इसका पान किया है ।। १ ।। महला २ ।। इस रचना की क्या प्रशंसा की जाए; जिसने यह रचना रची है उसका गुणानुवाद करो। हे नानक, उस एक प्रभु के बिना दूसरा दाता कोई भी नहीं है। उस कर्ता का ही गुणानुवाद करते रहना चाहिए जिसने ये सारी रचना बनाई है और उसी दाता प्रभु के यश का गायन करना चाहिए जो सबको आसरा देता है। हे नानक, वह प्रभु स्वयं ही सदा बना रहने वाला है और उसी का भण्डार पूर्णरूप से भरा रहता है। उसे ही बड़ा मानकर उसका गुणगान करते रहना चाहिए जिसका कोई भी ओर-छोर नहीं हैं।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु का नाम सुखों का घर है जिसका सुमिरन करने से सुख मिलता है। उस निरंजन प्रभु के नाम सुमिरन से व्यक्ति सम्मान सहित अपने मूल स्वरूप में निवास करता है। परमात्मा रूपी मुख्य गुरु की वाणी ही उसके नाम का स्वरूप और इस नाम को हृदय में बसाना चाहिए। इसी से पक्षी रूपी बुद्धि वश में रहकर सच्चे गुरु का सुमिरन करती है और हे नानक, वह प्रभु स्वयं ही दयालु हो जाता है और हमारी लौ नाम में लग जाती है ।। ४।। श्लोक महला २ ।। उसके आगे भला क्या कहा जा सकता है जो स्वयं ही सब कुछ जानता है। वही साहिब सबको स्वीकृत होता है जिसके हुकुम को कोई भी मोड़ नहीं सकता। उसके हुकुम में सबको चलना है और वही हमारा सरदार, मालिक और फौज़दार माना जा सकता है। हे नानक, जो उसको अच्छा लगता है वही काम भला समझा जाता है। जिन्होंने उसके हुकुम में चलना होता है उनके अपने हाथ में कुछ नहीं होता। जैसा उस साहिब का आदेश होता है जीव वैसे ही उठकर उसके बताए मार्ग पर चल पड़ते हैं। उसकी चिट्ठी अथवा सन्देश में जो कुछ भी लिखा होता है जीव उसके किए हुए हुकुम के अनरूप ही आचरण करता है। हे नानक, वह उसी का भेजा हुआ यहाँ आता है और उसी के बुलाने पर उठकर यहाँ से चल देता है ।। १ ।। महला २ ।। जिन्हें प्रभु के गुणानुवाद का दान मिला होता है वास्तव में वे ही खज़ानची माने जाते हैं। उन्हें ही प्रभु अपने नाम रूपी खजाने की कुंजी देता है और उन्हें ही वह भण्डार प्राप्त होता है। जिन भण्डारों अर्थात हृदयों में से प्रभु के गुण निकलते रहते हैं उन्हें ही वह प्रभु सफल बना देता है। हे नानक, जिनके माथे पर प्रभु-नाम का चिन्ह अंकित होता है उन पर ही प्रभु की कृपादृष्टि बनी रहती है।। २ ।। पउड़ी ।। कालिमा विहीन प्रभु का नाम निर्मल है जिसे सुनकर सुख प्राप्त होता है। इसे सुन सुनकर मन में बसाया जाना चाहिए और इस रहस्य को कोई बिरला सेवक ही जान पाता है। बैठते उठते हुए वह सच्चा प्रभु विस्मृत नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रभु-नाम ही भक्तों का आसरा है और प्रभु-नाम से ही उन्हें सुख प्राप्त होता है। हे नानक, गुरमुख व्यक्तियों के तन, मन में वह प्रभु ही समाया रहता है।। ५ ।। श्लोक महला १ ।। हे नानक, यदि हृदय अथवा उस की अन्दर की निर्मल भावना को एक पलड़े में रखा जाए तो फिर प्रभु के साथ तौल पूरी बैठ सकती है अर्थात कर्मकाण्डों से उसे तोला नहीं जा सकता। प्रभु के गुणानुवाद के बराबर कोई नहीं पहुँच सकता क्योंकि यह गुणानुवाद ही पूर्ण प्रभु के साथ पूरी तरह मिला देता है। उसका गुणानुवाद करना बड़ा गुण है और इसका तौल भी भारी होता है। अन्य सब कुछ तो हलका ही है और चतुराई के बोल तो उसके सामने हलके ही साबित होते हैं। गुणानुवाद का वज़न धरती पानी और पर्वत के भार जैसा होता है और सुनार के छोटे से तराजू पर अर्थात कर्मकाण्ड के तराजू पर उसे नहीं तौला जा सकता। कर्मकाण्ड तो तोले, माशे और रत्ती के समान हल्के हैं परन्तु हे नानक, कर्मकाण्डी व्यक्ति सुनार की तरह बातें बनाकर साधारण व्यक्ति को समझा-बुझा देता है। मूर्ख अज्ञानी व्यक्ति की भाग-दौड़ भी अन्धी ही होती है और वह अपने बारे में ही कह कहकर अपने तथाकथित बड़प्पन को प्रकट करते रहते हैं ।। १ ।। महला १ ।। कहना और सुनना बहुत कठिन है और केवल कह कह ही प्रभु की अनुभूति प्राप्त नहीं होती। अनेकों ही दिन-रात उल्टे-सीधे होकर अनेकों प्रकार के वचन कहते रहते हैं। उस प्रभु का यदि कोई स्वरूप हो तबतो वह इन बाहरी आँखों से दिखाई दे परन्तु उसका रूप और कोई जाति नहीं है। वह शरीर रूपी घर और सभी स्थानों को स्वयं ही उत्पन्न करता हुआ उन सभी के कारण का कर्ता बना रहता है।

थापि ॥ आखणि अउखा नानका आखि न जापै आखि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ मनु रहसीऐ नामे सांति आई ॥ नाइ सुणिऐ मनु त्रिपतीऐ सभ दुख गवाई ॥ नाइ सुणिऐ नाउ ऊपजै नामे वडिआई ॥ नामे ही सभ जाति पति नामे गति पाई ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ नानक लिव लाई ॥ ६ ॥ सलोक महला १ ॥ जूठि न रागीं जूठि न वेदीं ॥ जूठि न चंद सूरज की भेदी ॥ जूठि न अंनी जूठि न नाई ॥ जूठि न मीहु वर्हिऐ सभ थाई ॥ जूठि न धरती जूठि न पाणी ॥ जूठि न पउणै माहि समाणी ॥ नानक निगुरिआ गुणु नाही कोइ ॥ मुहि फेरिऐ मुहु जूठा होइ ॥ १ ॥ महला १ ॥ नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥ सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥ ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥ राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥ पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥ पाणी पिता जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ सभ सिधि है रिधि पिछै आवै ॥ नाइ सुणिऐ नउ निधि मिलै मन चिंदिआ पावै ॥ नाइ सुणिऐ संतोखु होइ कवला चरन धिआवै ॥ नाइ सुणिऐ सहजु ऊपजै सहजे सुखु पावै ॥ गुरमती नाउ पाईऐ नानक गुण गावै ॥ ७ ॥ सलोक महला १ ॥ दुख विचि जंमणु दुखि मरणु दुखि वरतणु संसारि ॥ दुखु दुखु अगै आखीऐ पढ़ि पढ़ि करहि पुकार ॥ दुख कीआ पंडा खुल्हीआ सुखु न निकलिओ कोइ ॥ दुख विचि जीउ जलाइआ दुखीआ चलिआ रोइ ॥ नानक सिफती रतिआ मनु तनु हरिआ होइ ॥ दुख कीआ अगी मारीअहि भी दुखु दारू होइ ॥ १ ॥ महला १ ॥ नानक दुनीआ भसु रंगु भसू हू भसु खेह ॥ भसो भसु कमावणी भी भसु भरीऐ देह ॥ जा जीउ विचहु कढीऐ भसू भरिआ जाइ ॥ अगै लेखै मंगिऐ होर दसूणी पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ सुचि संजमो जमु नेड़ि न आवै ॥ नाइ सुणिऐ घटि चानणा आन्हेरु गवावै ॥ नाइ सुणिऐ आपु बुझीऐ लाहा नाउ पावै ॥ नाइ सुणिऐ पाप कटीअहि निरमल सचु पावै ॥ नानक नाइ सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुखि धिआवै ॥ ८ ॥ सलोक महला १ ॥ घरि नाराइणु सभा नालि ॥

हे नानक उसके बारे में कहना अत्यन्त कठिन है और कुछ भी नहीं कहा जा सकता ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु-नाम सुनकर मन स्थिर होता है और प्रभु-नाम से ही शान्ति प्राप्त होती है। प्रभु-नाम को सुनकर ही मन सन्तुष्ट होता है और सभी दुख नष्ट हो जाते हैं। प्रभु का नाम सुनने से ही व्यक्ति का नाम प्रसिद्ध होता है और वास्तविक महिमा प्रभु-नाम की ही होती है। नाम से ही विशेष वर्ग और सम्मान तथा गति प्राप्त होती है। हे नानक, गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन करना चाहिए और उसी में ही लौ लगानी चाहिए ।। ६ ।। श्लोक महला १ ।। राग और ज्ञान में किसी प्रकार का जूटापन नहीं होता। चाँद और सूरज के कारण मौसमों के फर्क पड़ जाने में भी कोई बुराई नहीं है। अन्न और स्नान आदि में भी कोई जूठन वाली बात नहीं है। वर्षा सब स्थानों पर होती है इसलिए उसमें भी अपवित्रता वाली कोई बात नहीं है। धरती और पानी में भी कोई अपवित्रता नहीं है और इसी प्रकार सब ओर समाई हुई पवन में भी किसी प्रकार का जूटापन नहीं है। हे नानक, गुरु विहीन लोगों के पास कोई गुण नहीं होता और प्रभु की ओर से मुख फेर लेने के कारण उनके मुख में जूठन अर्थात अपवित्रता ही बसी रहती है ।। १ ।। महला १ ।। हे नानक, बहुत से चुल्लू सच्चे हैं यदि कोई उन्हें भरने की विधि जानता हो। सयाने पण्डित का चुल्लू तो यही है कि वह ज्ञान का चिंतन करता रहे और योगी का चुल्लू इसी में है कि वह काम वासना से बचा रहे। ब्राह्मण का चुल्लू सन्तोष है और गृहस्थी का चुल्लू पुण्यकर्म तथा दान है। न्याय ही राजा का चुल्लू है और विद्वान का चुल्लू सत्य और निरन्तर ध्यान है। यह पानी हृदय को शुद्ध नहीं कर सकता हालाकि इसको पीने से प्यास जरूर चली जाती है। पानी को ही इस रचना का पिता कहा जाता है और अन्त में पानी ही सारी रचना को खा लेगा। इस प्रकार सभी जीवों को खा लेने वाला पानी भी सामान्य गणना के हिसाब से अपवित्र ही है। इन पंक्तियों में वास्तव में भ्रमों में ना पड़ने की सलाह दी गई है।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु के नाम को सुनने में ही सभी सिद्धियाँ और ऋद्धियाँ पीछे-पीछे दौड़ती आती हैं। प्रभु का नाम सुनने से नवनिधियाँ मिल जाती हैं और व्यक्ति मनोवाछित पदार्थ पा जाता है। प्रभु का नाम सुनने से ही सन्तोष मिलता है और माया भी व्यक्ति के चरणों में बैठकर सुमिरन करती है। नाम के सुनने से ही स्वाभाविक सुख उत्पन्न होता है और व्यक्ति शान्ति प्राप्त करता है। गुरु की मति में चलने से ही नाम प्राप्त होता है और इसीलिए नानक प्रभु के गुण गाता रहता है।। ७ ।। श्लोक महला १ ।। दुख में ही जीव जन्मता है, दुख में ही मरता है और दुखी बना हुआ ही संसार के कार्य व्यापार में लगा रहता है। पढ़-पढ़कर भी वह दुख को ही सामने रखता है और चीखता-चिल्लाता रहता है। जब दुख की गठरियाँ खुल जाती हैं तो फिर उनमें से कोई भी सुख नहीं निकलता। दुख में ही इस जीव को जलाया जाता है और दुख में ही रोता हुआ वह यहाँ से चल देता है। हे नानक, प्रभु के गुणानुवाद में ही लीन होकर जीव का तन,मन, हरा-भरा बना रहता है। जीव दुखों की अग्नियों में मरता रहता है परन्तु इसके दुखों की वास्तविक औषधि भी दुख ही होता है।। १ ।। महला १ ।। हे नानक, दुनिया राख जैसी है और यह वास्तव में राख और मिट्टी ही है। इस राख से राख ही पैदा होती है और इस शरीर को हम मिट्टी जैसी निरर्थक चीज़ों से ही भरते जाते हैं जब इसमें से जीवात्मा निकाल ली जाती है तो राख से भरा हुआ यह शरीर ही बचता है। आगे जाकर जब इसका लेखा जोखा होता है तो उसे दस गुना और अधिक राख ही मिलती है ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु-नाम को सुनना ही पवित्रता और संयम और इसी से यम पास नहीं आता। प्रभु-नाम सुनने से हृदय प्रकाशित हो उठता है और अज्ञान का अंधकार समाप्त हो जाता है। प्रभु-नाम सुनने से ही स्वयं को जाना जाता है और नाम के कारण ही लाभ प्राप्त होता है। प्रभु-नाम सुनने से ही पाप कटते हैं और निर्मल सत्य की प्राप्ति होती है। हे नानक, प्रभु-नाम सुनने से ही मुख उज्जवल होता है और गुरमुख बनकर ही नाम का सुमिरन किया जाता है ।। ८ ।। श्लोक महला १ ।। पण्डित अपने घर में देवताओं की सभा के साथ ठाकुर की मूर्ति रखता है,

पूज करे रखै नावालि ॥ कुंगू चंनणु फुल चड़ाए ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाए ॥ माणूआ मंगि मंगि पैन्है खाइ ॥ अंधी कंमी अंध सजाइ ॥ भुखिआ देइ न मरदिआ रखै ॥ अंधा झगड़ा अंधी सथै ॥ १ ॥ महला १ ॥ सभे सुरती जोग सभि सभे बेद पुराण ॥ सभे करणे तप सभि सभे गीत गिआन ॥ सभे बुधी सुधि सभि सभि तीरथ सभि थान ॥ सभि पातिसाहीआ अमर सभि सभि खुसीआ सभि खान ॥ सभे माणस देव सभि सभे जोग धिआन ॥ सभे पुरीआ खंड सभि समे जीअ जहान ॥ हुकमि चलाए आपणै करमी वहै कलाम ॥ नानक सचा सचि नाइ सचु सभा दीबानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ सुखु ऊपजै नामे गति होई ॥ नाइ मंनिऐ पति पाईऐ हिरदै हरि सोई ॥ नाइ मंनिऐ भवजलु लंघीऐ फिरि बिघनु न होई ॥ नाइ मंनिऐ पंथु परगटा नामे सभ लोई ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई ॥ ९ ॥ सलोक मः १ ॥ पुरीआ खंडा सिरि करे इक पैरि धिआए ॥ पउणु मारि मनि जपु करे सिरु मुंडी तलै देइ ॥ किसु उपरि ओहु टिक टिकै किस नो जोरु करेइ ॥ किस नो कहीऐ नानका किस नो करता देइ ॥ हुकमि रहाए आपणै मूरखु आपु गणेइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ है है आखां कोटि कोटि कोटी हू कोटि कोटि ॥ आखूं आखां सदा सदा कहणि न आवै तोटि ॥ ना हउ थकां न ठाकीआ एवड रखहि जोति ॥ नानक चसिअहु चुख बिंद उपरि आखणु दोसु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ कुलु उधरै सभु कुटंबु सबाइआ ॥ नाइ मंनिऐ संगति उधरै जिन रिदै वसाइआ ॥ नाइ मंनिऐ सुणि उधरे जिन रसन रसाइआ ॥ नाइ मंनिऐ दुख भुख गई जिन नामि चितु लाइआ ॥ नानक नामु तिनी सालाहिआ जिन गुरू मिलाइआ ॥ १० ॥ सलोक मः १ ॥ सभे राती सभि दिह सभि थिंती सभि वार ॥ सभे रुती माह सभि सभि धरंती सभि भार ॥ सभे पाणी पउण सभि सभि अगनी पाताल ॥ सभे पुरीआ खंड सभि सभि लोअ लोअ आकार ॥ हुकमु न जापी केतड़ा कहि न सकीजै कार ॥ आखहि थकहि आखि आखि करि सिफती वीचार ॥ त्रिणु न पाइओ बपुड़ी नानकु कहै गवार ॥ १ ॥ मः १ ॥ अखी परणै जे फिरां देखां सभु आकारु ॥ पुछा

उसकी पूजा करता है और उसे स्नान कराता है। वह केसर, चन्दन और फूल आदि उसे अर्पण करता है और उसके चरणों में गिर-गिर कर उसे प्रसन्न करने की कोशिश करता है। घर में प्रभु के होने पर भी वह लोगों से माँग-माँग कर पहनना खाता है और अपने अज्ञान पूर्ण कामों के लिए उसे अज्ञानपूर्ण सजा मिलती रहती है। यह मूर्ति वाला ठाकुर ना तो भूखे को खाने को दे सकता है ना ही जीव को मरने से बचा सकता है। जीव वास्तव में अज्ञान की चौपाल में बैठकर अज्ञान का ही वाद-विवाद करता रहता है ।। १ ।। महला १ ।। सभी वेद, पुराण और सभी प्रकार के सुरति के योग, सभी तपस्याएँ और सभी गीत ज्ञान, सभी प्रकार की बुद्धि और सभी प्रकार के तीर्थ तथा स्नान उस प्रभु के हुकुम में ही चलने वाले हैं। सभी प्रकार के हुकुम, सभी प्रकार की खुशियाँ, सभी प्रकार के भोजन, सभी मनुष्य देवता और योग के ध्यान, सभी पुरियाँ, खण्ड और संसार के सभी जीव प्रभु अपने हुकुम में ही चलाता है और जीवों के कर्मों के अनुरूप ही उनके भाग्य लेखों को लिखने वाली कलम चलती रहती है। हे नानक, वह प्रभु सच्चा है, उसका न्याय सच्चा है और उसकी कचहरी भी सच्ची है ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु के नाम का मनन करने से ही सुख उत्पन्न होता है और प्रभु के नाम में ही गति प्राप्त होती है। प्रभु-नाम के मनन से ही सम्मान मिलता है और हृदय में वह प्रभु बस जाता है। प्रभु-नाम के चिन्तन मनन से ही संसार सागर को पार किया जाता है और फिर कोई रुकावट सामने नहीं आती। प्रभु-नाम के चिन्तन मनन से ही जीवन का सही मार्ग प्रकट हो उठता है और नाम ही सबको आलोकित कर देता है। हे नानक, प्रभु के नाम के मनन के फलस्वरूप ही सच्चे गुरु से मिलाप होता है और यह नाम जिसे वह चाहता है उसे ही देता है।।९।। श्लोक महला १ ।। बेशक जीव पुरियों और संसार के खण्डों में सिर के बल चलकर और एक पैर पर खड़ा होकर परमात्मा के सुमिरन का प्रपंच करता रहे। पवन जैसे चंचल मन को मारकर जप करे और अपनी गर्दन को चाहे उतार कर रख दे। यह किस पर टेक लगाए रहता है और किसके आसरे पर ध्यान लगाए रहता है अर्थात ये सब तुच्छ हैं। हे नानक, यह कुछ नहीं कहा जा सकता कि वह कर्ता प्रभु किसको अपना दान देगा। जो अपने मन के हुकुम में चलता रहता हुआ अपनी ही डींग मारता रहता है वह वास्तव में मूर्ख ही कहा जाता है ।। १ ।। मैं यदि करोड़ों बार कहता रहूँ कि प्रभु है, प्रभु है ; मुँह के साथ सदैव कहता रहूँ और मेरे कहने में कभी भी कोई कमी ना आए। तू मुझे इतनी शक्ति दे कि ना तो मैं कहता हुआ थकूँ और ना किसी के रोके रुकूँ, तब भी हे नानक, तुझे बहुत ही कम बताया जा सकता है और वास्तव में जो कहता है कि मैंने थोड़े से थोड़ा सा अधिक कहा है वह वास्तव में दोषी ही है ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु-नाम के मनन से सारा कुल और कुटुम्ब पार उतर जाता है। प्रभु-नाम के मनन से उनका उद्धार हो जाता है जिन्होंने संगत के माध्यम से उस प्रभु को हृदय में बसाया होता है। नाम का मनन करने से और उसे सुनने से जिन्होंने अपनी जीभ को उसका सुमिरन करते हुए रसपूर्ण बना लिया है उनका भी उद्धार जो जाता है। प्रभु-नाम के मनन से और उसे चित में बसाने से व्यक्ति के दुख और भूख समाप्त हो जाते हैं। हे नानक, जिन्हें गुरु ने मिला दिया होता है वे ही प्रभु-नाम का गुणानुवाद करते रहते हैं ।। १० ।। श्लोक महला १ ।। सभी रात और दिन, सभी तिथियाँ और सभी वार, सभी ऋतुएँ और महीने, सभी धरतियाँ और सभी पहाड़ सभी प्रकार के जल, पवन, अग्नियाँ और पाताल, सभी पुरियाँ, खण्ड, सभी लोक और सभी प्रकार के आकार तेरे हुकुम की विशालता-महानता के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते। तेरे गुणों का चिन्तन करते और कहते हुए वे थक जाते हैं। मन्द बुद्धि नानक कहता है कि इन सब बेचारों ने तिनका मात्र भी उसके रहस्य को नहीं जाना है ।। १ ।। महला १ ।। यदि आँखों के बल घूमकर मैं सभी रचनाओं को देखूँ,

गिआनी पंडितां पुछा बेद बीचार ॥ पुछा देवां माणसां जोध करहि अवतार ॥ सिध समाधी सभि सुणी जाइ देखां दरबारु ॥ अगै सचा सचि नाइ निरभउ भै विणु सारु ॥ होर कची मती कचु पिचु अंधिआ अंधु बीचारु ॥ नानक करमी बंदगी नदरि लंघाए पारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी आइआ ॥ नाउ मंनिऐ हउमै गई सभि रोग गवाइआ ॥ नाइ मंनिऐ नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइआ ॥ नाइ मंनिऐ सांति ऊपजै हरि मंनि वसाइआ ॥ नानक नामु रतंनु है गुरमुखि हरि धिआइआ ॥ ११ ॥ सलोक मः १ ॥ होरु सरीकु होवै कोई तेरा तिसु अगै तुधु आखां ॥ तुधु अगै तुधै सालाही मै अंधे नाउ सुजाखा ॥ जेता आखणु साही सबदी भाखिआ भाइ सुभाई ॥ नानक बहुता एहो आखणु सभ तेरी वडिआई ॥ १ ॥ मः १ ॥ जां न सिआ किआ चाकरी जां जंमे किआ कार ॥ सभि कारण करता करे देखै वारो वार ॥ जे चुपै जे मंगिऐ दाति करे दातारु ॥ इकु दाता सभि मंगते फिरि देखहि आकारु ॥ नानक एवै जाणीऐ जीवै देवणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ सुरति ऊपजै नामे मति होई ॥ नाइ मंनिऐ गुण उचरै नामे सुखि सोई ॥ नाइ मंनिऐ भ्रमु कटीऐ फिरि दुखु न होई ॥ नाइ मंनिऐ सालाहीऐ पापां मति धोई ॥ नानक पूरे गुर ते नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई ॥ १२ ॥ सलोक मः १ ॥ सासत्र बेद पुराण पड़्हंता ॥ पूकारंता अजाणंता ॥ जां बूझै तां सूझै सोई ॥ नानकु आखै कूक न होई ॥ १ ॥ मः १ ॥ जां हउ तेरा तां सभु किछु मेरा हउ नाही तू होवहि ॥ आपे सकता आपे सुरता सकती जगतु परोवहि ॥ आपे भेजे आपे सदे रचना रचि रचि वेखै ॥ नानक सचा सची नांई सचु पवै धुरि लेखै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु निरंजन अलखु है किउ लखिआ जाई ॥ नामु निरंजन नालि है किउ पाईऐ भाई ॥ नामु निरंजन वरतदा रविआ सभ ठांई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै देइ दिखाई ॥ नानक नदरी करमु होइ गुर मिलीऐ भाई ॥ १३ ॥ सलोक मः १ ॥ कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥ कूड़ु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥ जिन जीवंदिआ पति नही मुइआ मंदी सोइ

वेद का विचार करने वाले ज्ञानी और पण्डितों से पूछूँ ; देवताओं, मनुष्यों, योद्धाओं और अवतारों से उस प्रभु के बारे में पूछूँ ; सिद्धों की समाधियों में उनके वार्तालाप को सुनुं और उनके दरबार में पहुँच जाऊँ तब भी मैं उसके बारे में नहीं जान सकता। आगे तो भय से रहित और सबसे श्रेष्ठ सच्चा प्रभु का निर्भय नाम ही है अन्य सब तो यहाँ कच्चा और उथला है और अज्ञानियों का अज्ञानपूर्ण विचार ही है। हे नानक, उसकी कृपा से ही उसकी बन्दगी मिलती है और उसकी कृपा दृष्टि ही हमें पार उतार देती है।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु के नाम के मनन से दुर्गति दूर हो गई और वह बुद्धि में प्रकाशमान हो उठा है। प्रभु-नाम के चिंतन मनन से अहंकार चला गया और सभी रोग नष्ट हो गए हैं। नाम के मनन और उसके अनुरूप आचरण करने से प्रभु-नाम का भण्डार और बढ़ता है और पूर्ण शान्त अवस्था में स्थित होकर सुख प्राप्त किया जाता है। प्रभु-नाम के मनन चिन्तन से शान्ति उत्पन्न होती है और प्रभु मन में आ बसता है। हे नानक, प्रभु-नाम ऐसा रत्न है जिसका सुमिरन गुरमुख बनकर ही किया जाता है।। ११ ।। श्लोक महला १ ।। तेरे बराबर यदि कोई और हो तो उसी के सामने मैं तेरी बात करूँ । मैं तो तेरे सामने तेरा ही गुणानुवाद करता हूँ और मुझ अन्धे का नाम नयनसुख (आँखों के सुख वाला) कहा जाता है। जो कुछ भी कहना होता है वह शब्दों के माध्यम से ही कहा जाता है और कहा भी अपने-अपने स्वभाव के अनुसार जाता है परन्तु हे नानक, यही अधिक कहना बनता है कि हे प्रभु, सब तेरी ही महिमा है ।। १ ।। महला १ ।। जब जीव का अस्तित्व ही नहीं था तो यह भला किसकी नौकरी करता था और जब यह पैदा हुआ तो भला अपनी मर्जी से कौन सा काम कर सकता है। वह कर्ता प्रभु ही सभी कार्यों का कारण बनता है और सब कुछ करके उसकी बार-बार देखभाल भी करता है। चाहे हम चुप रहें और चाहे माँगते रहे परन्तु वह दाता अपनी इच्छा से ही दान देता है। वह दाता प्रभु तो एक ही है और तू सारी सृष्टि को घूम फिर कर देख ले तुझे यही पता लगेगा कि बाकी सब केवल माँगने वाले भिखारी ही हैं। हे नानक, केवल इतना ही पता लगता है कि वह देने वाला दाता सदैव अटल रूप से जीवित बना रहता है ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु-नाम का मनन करने से ऊँची सुरति पैदा होती है और नाम से ही बुद्धि कार्यशील होती है। नाम के मनन से ही गुणों का उच्चारण होता है और नाम से ही व्यक्ति सुख की नींद सोता है। नाम को मानने से ही भ्रम कटते हैं और फिर दुख नहीं होता। प्रभु के नाम के मनन से ही प्रभु का गुणानुवाद होता है जिससे पापों वाली मति धुल कर स्वच्छ हो जाती है। हे नानक, पूर्ण गुरु के माध्यम से प्रभु-नाम का मनन-चिन्तन होता है और केवल वे ही उसे माँगते हैं जिन्हें प्रभु यह गुण देता है।। १२ ।। श्लोक महला १ ।। व्यक्ति, शास्त्र, वेद, कुरान पढ़ता है ; इनके ज्ञान को चिल्ला-चिल्ला कर कहता रहता है परन्तु वास्तव में इन्हें नहीं जानता। यदि इनके रहस्य को जान ले तो फिर प्रभु के बारे में जान जाता है और हे नानक, फिर इसे चीख-पुकार नहीं लगानी पड़ती ।। १ ।। महला १ ।। जब मैं तेरा हो जाता हूँ तो सब कुछ मेरा हो जाता है परन्तु जब मैं नहीं भी होता तो तू तब भी होता है। तू स्वयं ही शक्तिमान हैं, स्वयं ही समाधि लगाने वाला है और तूने ही अपनी शक्ति में सारे संसार को पिरो रखा है। तू स्वयं ही जीव को भेजता है, उसे वापस बुला लेता है और रचना को रच-रचकर स्वयं ही उसकी देखभाल करता है। हे नानक, उस सच्चे प्रभु का नाम सच्चा है और वास्तव में अन्त में सत्य ही है उसे कैसे देखा जा सकता है। निरंजन प्रभु का नाम तो हमारे साथ ही है परन्तु हे भाई, उसको कैसे अनुभव किया जाए। निरंजन प्रभु का नाम ही सबमें व्याप्त है और सभी स्थानों में विद्यमान है। पूर्ण गुरु से ही उसे प्राप्त किया जाता है और वही इसे हमारे हृदय में दिखा देता है ।। १३ ।। श्लोक महला १ ।। कलियुग के लोगों का मुँह लालची कुत्ते की तरह को गया है और इनका भोजन रिश्वत और हराम की निर्जीव वस्तुएँ बन गया है। यह झूठ बोल-बोलकर भौंकते रहते है और धर्म-अधर्म का विचार समाप्त हो गया है। जीवित रहते हुए जिनका स्वाभिमान (सम्मान) नहीं है मरने के बाद भी उनकी प्रसिद्धि बुरी ही होगी।

॥ लिखिआ होवै नानका करता करे सु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥ सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥ सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥ नानक सचा एकु है अउरु न सचा भालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी ॥ खिंथा झोली बहु भेख करे दुरमति अहंकारी ॥ साहिब सबदु न ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥ अंतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥ नानक नामु न चेतई जूऐ बाजी हारी ॥ १४ ॥ सलोक मः १ ॥ लख सिउ प्रीति होवै लख जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ ॥ विछुड़िआ विसु होइ विछोड़ा एक घड़ी महि जाइ ॥ जे सउ वर्हिआ मिठा खाजे भी फिरि कउड़ा खाइ ॥ मिठा खाधा चिति न आवै कउड़तणु धाइ जाइ ॥ मिठा कउड़ा दोवै रोग ॥ नानक अंति विगुते भोग ॥ झखि झखि झखणा झगड़ा झाख ॥ झखि झखि जाहि झखहि तिन्ह पासि ॥ १ ॥ मः १ ॥ कापड़ु काठु रंगाइआ रांगि ॥ घर गच कीते बागे बाग ॥ साद सहज करि मनु खेलाइआ ॥ तै सह पासहु कहणु कहाइआ ॥ मिठा करि कै कउड़ा खाइआ ॥ तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइआ ॥ जे फिरि मिठा पेड़ै पाइ ॥ तउ कउड़तणु चूकसि माइ ॥ नानक गुरमुखि पावै सोइ ॥ जिस नो प्रापति लिखिआ होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन कै हिरदै मैलु कपटु है बाहरु धोवाइआ ॥ कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ु परगटी आइआ ॥ अंदरि होइ सु निकलै नह छपै छपाइआ ॥ कूड़ै लालचि लगिआ फिरि जूनी पाइआ ॥ नानक जो बीजै सो खावणा करतै लिखि पाइआ ॥ १५ ॥ सलोक मः २ ॥ कथा कहाणी बेदीं आणी पापु पुंनु बीचारु ॥ दे दे लैणा लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥ उतम मधिम जातीं जिनसी भरमि भवै संसारु ॥ अंम्रित बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई ॥ गुरमुखि आखी गुरमुखि जाती सुरतीं करमि धिआई ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि रखै हुकमै अंदरि वेखै ॥ नानक अगहु हउमै तुटै तां को लिखीऐ लेखै ॥ १ ॥ मः १ ॥ बेदु पुकारे पुंनु पापु सुरग नरक का बीउ ॥ जो बीजै सो उगवै खांदा जाणै जीउ ॥ गिआनु सलाहे वडा करि सचो सचा नाउ ॥ सचु बीजै सचु

हे नानक, माथे पर लिखा हुआ लेख ही प्रकट होता है और जो वह कर्ता प्रभु करता है वही होता है ।। १ ।। महला १ ।। यहाँ संयम और विनम्रता को बनाए रखने वाली स्त्रियाँ मूर्ख होकर (विरोध करने की बजाए) शिकारी अर्थात ज़ालिम पुरुषों के अत्याचार को सह रही हैं। शील, संयम और पवित्रता भाग खड़े हुए हैं तथा खाद्य-अखाद्य सब कुछ खाया जा रहा है। श्रम अर्थात उद्यम भी अपना डेरा उठाकर यहाँ से अपने घर चला गया है और उसके साथ ही व्यक्ति का सम्मान भी उठ गया है। हे नानक, केवल एक प्रभु ही सच्चा है और अब तू किसी और सच्चे की खोज मत कर ।। २ ।। पउड़ी ।। बाहर तो व्यक्ति भस्म का लेप लगाए रहता है परन्तु उसके अन्तर्मन में घोर अंधकार है। योगियों के रूप में वह गुदड़ी, झोली आदि को धारण करके अनेकों वेश बनाए रहता है तथा अपनी दुर्बुद्धि के कारण अहंकारी बना रहता है। प्रभु के नाम का वह सुमिरन नहीं करता और माया मोह के प्रसार में लीन बना रहता है। लालच और भ्रम उसके अन्दर है और वह मूर्ख बनकर भटकता रहता है। हे नानक, वह प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता और इस जीवन की बाज़ी को जुए में हार जाता है ।। १४ ।। श्लोक महला १ ।। लाखों लोगों से प्रेम हो, लाखों वर्षों तक जीवित बने रहना हो तो फिर भी भला यह कैसी खुशी है और कैसा चाव है क्योंकि इनसे बिछुड़ते ही यह घड़ी भर में ही सभी विष के समान हो जाते हैं अर्थात व्यक्ति दुखी का दुखी ही बना रहता है बेशक सौ साल तक व्यक्ति मीठे पदार्थों का भोग करता रहे परन्तु फिर भी अन्ततः उसे कड़वा खाना पड़ता है अर्थात दुखी होना ही पड़ता है। मीठा खाया तो याद नहीं रहता परन्तु जीवन के अन्त का कड़वापन बार-बार याद आता रहता है। मीठा और कड़वा दोनों ही रोग हैं और हे नानक, इनको भोगने के कारण ही जीव अन्ततः भटकते रहते हैं। ये सभी झख मारने के तुल्य हैं और व्यर्थ का विवाद हैं परन्तु फिर भी लोग इन विषय विकारों की तरफ झख मारने के लिए जाते रहते हैं ।। १ ।। महला १ ।। कपड़े और लकड़ी के सामान को सुन्दर रंगों से रंगा गया, घर को सफेदी की गई जिससे वह सफेद ही सफेद हो गया। स्वादों में लगकर स्वाभाविक रूप से ही मन को खेलाते रहे और उस प्रभु से हमें फटकार खानी पड़ी है। कड़वे विषय-विकारों को भी मीठा मानकर हम खाते रहे और उन कड़वे विकारों ने इस शरीर में रोग का डेरा जमा दिया। यदि फिर प्रभु के मीठे नाम का सेवन किया जाए तो हे माँ, विषय-विकारों का कड़वापन दूर हो जाता है। हे नानक, वह गुरमुख बनकर ही उस प्रभु को प्राप्त करता है और वह प्राप्त भी उसी को होता है जिसके भाग्य लेख में ऐसा लिखा होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। जिनके हृदय में मैल और कपट है परन्तु वे बाहर से धुले हुए बने रहते हैं वे झूठ और कपट का आचरण करते हैं और उनका झूठ उजागर भी हो जाता है। जो कुछ अन्दर होता है वह छिपाने से भी नहीं छिपता और अन्ततः बाहर निकल आता है। झूठे लालच में पड़ा जीव कई योनियों में डाल दिया जाता है और हे नानक, कर्ता प्रभु ने ऐसा विधान लिखकर जीव के अन्दर ही डाल दिया है कि वह जो कुछ बोता है उसे उसको खाना ही पड़ता है ।। १५ ।। श्लोक महला २ ।। कथा-कहानियों को और पाप-पुण्य के विचार को वेदों के माध्यम से स्थापित किया गया है। उन्हीं में लेकर देना और देकर लेना तथा नरक-स्वर्ग में आने की बातें कही गई हैं। उसी में ही उत्तम और मध्यम अर्थात ऊंची और नीची जातियों और जीवों के भ्रमों के कारण संसार में भटकने की बात कही गई हैं। दूसरी ओर गुरु की अमृतवाणी सार तत्व का बखान करती है क्योंकि यह ज्ञान और ध्यान की अवस्था में प्राप्त की गई है। गुरमुख गुरु ने ही इसे कहा है और गुरमुख व्यक्ति ने ही इसे जाना है तथा प्रभु की कृपा से सुरति वाले व्यक्तियों ने ही इसका सुमिरन किया है। प्रभु अपने हुकुम में ही उत्पन्न करता है, हुकुम में ही देखभाल करता है और हुकुम में ही जीवों को बनाए रखता है। हे नानक, पहले यदि जीव का अहंकार टूट जाए तभी उसे किसी गिनती में रखा जा सकता है ।। १ ।। महला १ ।। वेद, स्वर्ग और नरक के बीज रूप में पुण्य और पाप की बात कहता है। व्यक्ति जो बोता है वही पैदा होता है और वही जीव को खाना होता है। उस सच्चे प्रभु के सच्चे नाम के माध्यम से उसमें ज्ञान की महिमा गाई गई है। यदि सत्य को बोया जाए तो सत्य ही

उगवै दरगह पाईऐ थाउ ॥ बेदु वपारी गिआनु रासि करमी पलै होइ ॥ नानक रासी बाहरा लदि न चलिआ कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ निंमु बिरखु बहु संचीऐ अंम्रित रसु पाइआ ॥ बिसीअरु मंत्रि विसाहीऐ बहु दूधु पीआइआ ॥ मनमुखु अभिंनु न भिजई पथरु नावाइआ ॥ बिखु महि अंम्रितु सिंचीऐ बिखु का फलु पाइआ ॥ नानक संगति मेलि हरि सभ बिखु लहि जाइआ ॥ १६ ॥ सलोक मः १ ॥ मरणि न मूरतु पुछिआ पुछी थिति न वारु ॥ इकन्ही लदिआ इकि लदि चले इकन्ही बधे भार ॥ इकन्हा होई साखती इकन्हा होई सार ॥ लसकर सणै दमामिआ छुटे बंक दुआर ॥ नानक ढेरी छारु की भी फिरि होई छार ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक ढेरी ढहि पई मिटी संदा कोटु ॥ भीतरि चोरु बहालिआ खोटु वे जीआ खोटु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन अंदरि निंदा दुसटु है नक वढे नक वढाइआ ॥ महा करूप दुखीए सदा काले मुह माइआ ॥ भलके उठि नित पर दरबु हिरहि हरि नामु चुराइआ ॥ हरि जीउ तिन की संगति मत करहु रखि लेहु हरि राइआ ॥ नानक पइऐ किरति कमावदे मनमुखि दुखु पाइआ ॥ १७ ॥ सलोक मः ४ ॥ सभु कोई है खसम का खसमहु सभु को होइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का ता सचु पावै कोइ ॥ गुरमुखि आपु पछाणीऐ बुरा न दीसै कोइ ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सभना दाता आपि है आपे मेलणहारु ॥ नानक सबदि मिले न विछुड़हि जिना सेविआ हरि दातारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि हिरदै सांति है नाउ उगवि आइआ ॥ जप तप तीरथ संजम करे मेरे प्रभ भाइआ ॥ हिरदा सुधु हरि सेवदे सोहहि गुण गाइआ ॥ मेरे हरि जीउ एवै भावदा गुरमुखि तराइआ ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु हरि दरि सोहाइआ ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥ धनवंता इव ही कहै अवरी धन कउ जाउ ॥ नानकु निरधनु तितु दिनि जितु दिनि विसरै नाउ ॥ १ ॥ मः १ ॥ सूरजु चड़ै विजोगि सभसै घटै आरजा ॥ तनु मनु रता भोगि कोई हारै को जिणै ॥ सभु को भरिआ फूकि आखणि कहणि न थंम्हीऐ ॥ नानक वेखै आपि फूक कढाए ढहि पवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतसंगति नामु निधानु है जिथहु हरि

पैदा होता है और प्रभु के दरबार में ठिकाना मिल जाता है। वेद तो वास्तव में व्यापारी है परन्तु वास्तविक पदार्थ तो ज्ञान है जिसे वेद अपनी पूंजी के तौर पर व्यवहार में लाता है और यह व्यवहार और ज्ञान प्रभु की कृपा से ही प्राप्त होता है। हे नानक, प्रभु के नाम की रासपूंजी से विहीन होकर यहाँ से कोई भी कुछ भी लाद कर नहीं ले जा सका है ।। २ ।। पउड़ी ।। नीम के वृक्ष को अमृत के समान मीठे रस के अनेकों बार सींचा जाए तब भी वह रस व्यर्थ ही जाता है अर्थात नीम कड़वी ही रहती है। मन्त्र के माध्यम से यदि साँप पर भरोसा करके उसे दूध भी पिलाया जाए तो फिर भी वह अपना स्वभाव नहीं छोडता। मनमुख व्यक्ति कोरे का कोरा उसी प्रकार रहता है जैसे पत्थर को नहलाने के बावजूद वह सूखा ही बना रहता है। विष में यदि अमृत डाला जाए तो विष का फल ही प्राप्त होता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, मेरा मिलाप संगत से करा दे। जिससे मेरा सारा विष उतर जाएगा।। १६ ।। श्लोक महला १ ।। मौत कभी भी मुहूर्त, तिथि और दिन नहीं पूछती और इसी प्रकार यहाँ से कई लाद कर जाने के लिए खड़े हैं, कई कर्मो के संस्कार लादकर यहाँ से चले गए हैं और कई बोझ को बाँधे हुए खड़े हैं। कई घोड़ों को तैयार करके चलने के लिए तैयार हैं और कई यहाँ अपने धन माल की सम्भाल कर रहें हैं। आखिर में फौजों और नगरों समेत घर के ये सुन्दर दरवाजें यहीं छूट जाते हैं। हे नानक, यह सब पहले भी मिट्टी ही था और अब फिर मिट्टी की तरह ही व्यर्थ हो गया है।। १ ।। महला १ ।। हे नानक, मिट्टी के इस शरीर रूपी किले की मिट्टी अब एक ढेरी बन गई है क्योंकि इस किले में मन रूपी चोर को बिठा रखा था और हे जीव, यह सब शुद्ध धोखा-ही-धोखा था अर्थात यदि कुछ स्थिर रहने वाला इसमें होता तभी वह स्थिर रह सकता था ।। २ ।। पउड़ी ।। जिनके अन्दर निन्दा रूपी दुष्ट है वे दूसरों का भी नाक काटते हैं और अपना भी कटवाते हैं। वे सदैव दुखी बने रहने वाले महाकुरूप होते हैं और माया के कारण उनका मुँह काला बना रहता है। वे सदैव सुबह उठकर पराई धन सम्पत्ति का हरण करते हैं और प्रभु-नाम की ओर से अपना मुँह चुराते रहते हैं। हे प्रभु, मेरी रक्षा करो और मुझे उनकी संगत में मत डालो। हे नानक, मनमुख व्यक्ति दुख ही प्राप्त करते रहते हैं और अपने अन्दर डाले हुए संस्कारों के अनुरूप ही आचरण करते रहते हैं ।। १७ ।। श्लोक महला ४ ।। सब कुछ उस मालिक का है और उस मालिक से ही सब कुछ पैदा होता है। जो कोई उस मालिक के हुकुम को जान जाता है, वही सत्य को प्राप्त करता है। जब गुरमुख बनकर अपने आपको पहचाना जाता है तो फिर कोई भी बुरा दिखाई नहीं देता। हे नानक, गुरमुख बनकर यदि प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाए तो इस जीवन में आना सफल और सहज हो जाता है।। १ ।। महला ५ ।। सबका दाता प्रभु वह स्वयं है और वह स्वयं ही अपने से मिला लेने वाला है। हे नानक, जिन्होंने उस दाता प्रभु का सुमिरन शब्द के माध्यम से किया है वे फिर उससे मिले हुए कभी बिछुड़ते नहीं ।। २ ।। पउड़ी ।। जिनके हृदय में प्रभु-नाम का अंकुर फूट निकला है उन गुरमुखों के हृदय में शान्ति बनी रहती है। उनके किए हुए जप, तप, तीर्थ और संयम आदि मेरे प्रभु को अच्छे लगते हैं क्योंकि वे शुद्ध हृदय से प्रभु का सुमिरन करते हैं और उसके गुण हुए शोभायमान बने रहते हैं। मेरे प्रभु को यही अच्छा लगता है और वह गुरमुखों को पार उतार देता है। हे नानक, वह गुरमुखों को मिला लेता है और ये प्रभु के द्वार पर शोभायमान बने रहते हैं ।। १८ ।। श्लोक महला १ ।। धनवान व्यक्ति यही कहता है कि मैं और धन प्राप्त करने के लिए दौड़ता रहूँ परन्तु नानक तो अपने आपको उस दिन निर्धन समझता है जिस दिन उसे प्रभु का नाम भूल जाता है ।। १ ।। महला १ ।। सूर्य के उदय और अस्त होने के समय तक अर्थात प्रत्येक दिन आयु घटती रहती है। जीव का यह तन और मन भोगों में लगा रहता है और यहाँ कोई जीतता है और कोई हारता है। सब कोई यहाँ अहंकार में फूला रहता है और समझाने से भी नहीं रुकता। हे नानक, वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ देखता है और जब इसके श्वासों को निकाल लेता है तो अपने अभिमान समेत यह धरती पर गिर पड़ता है ।। २ ।। पउड़ी ।। सत्संगति ही प्रभु-नाम का वह भण्डार है जहाँ से प्रभु

पाइआ ॥ गुर परसादी घटि चानणा आन्हेरु गवाइआ ॥ लोहा पारसि भेटीऐ कंचनु होइ आइआ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाईऐ मिलि नामु धिआइआ ॥ जिन्ह कै पोतै पुंनु है तिन्ही दरसनु पाइआ ॥ १९ ॥ सलोक मः १ ॥ ध्रिगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥ खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दादि ॥ अकलि एह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ॥ अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ अकली पढ़ि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ नानकु आखै राहु एहु होरि गलां सैतानु ॥ १ ॥ मः २ ॥ जैसा करै कहावै तैसा ऐसी बनी जरूरति ॥ होवहि लिंङ झिंङ नह होवहि ऐसी कहीऐ सूरति ॥ जो ओसु इछे सो फलु पाए तां नानक कहीऐ मूरति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु अंम्रित बिरखु है अंम्रित रसि फलिआ ॥ जिसु परापति सो लहै गुर सबदी मिलिआ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै हरि सेती रलिआ ॥ जमकालु जोहि न सकई घटि चानणु बलिआ ॥ नानक बखसि मिलाइअनु फिरि गरभि न गलिआ ॥ २० ॥ सलोक मः १ ॥ सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥ दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥ जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ ॥ भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ ॥ १ ॥ महला ३ ॥ नउमी नेमु सचु जे करै ॥ काम क्रोधु त्रिसना उचरै ॥ दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ॥ दुआदसी पंच वसगति करि राखै तउ नानक मनु मानै ॥ ऐसा वरतु रहीजै पाडे होर बहुतु सिख किआ दीजै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भूपति राजे रंग राइ संचहि बिखु माइआ ॥ करि करि हेतु वधाइदे पर दरबु चुराइआ ॥ पुत्र कलत्र न विसहहि बहु प्रीति लगाइआ ॥ वेखदिआ ही माइआ धुहि गई पछुतहि पछुताइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि नानक हरि भाइआ ॥ २१ ॥ सलोक मः १ ॥ गिआन विहूणा गावै गीत ॥ भुखे मुलां घरे मसीति ॥ मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥ फकरु करे होरु जाति गवाए ॥ गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ १ ॥

प्राप्त किया जाता है। गुरु की कृपा से जब हृदय में प्रकाश हो जाता है तो अंधकार समाप्त हो जाता है। जीव रूपी लोहा, प्रभु रूपी पारस से मिलकर सोना बन जाता है और हे नानक, सच्चे गुरु से मिलकर ही प्रभु-नाम की प्राप्ति होती है और उससे मिलकर ही प्रभु-नाम की आराधना होती है। जिनके अपने खज़ाने में पुण्य संचित हैं उन्हीं को प्रभु का दर्शन होता है।। १६ ।। श्लोक महला १ ।। उनका जीना धिक्कार है जो प्रभु के नाम को लिख-लिख कर बेचते हैं। जो साथ ही साथ अपनी खेती को उजाड़ते रहते हैं तो उनके खलिहान में भला क्या होगा अर्थात नाम सुमिरन से जो उन्हें लाभ होना था, वो तो नाम को बेचने के कारण साथ ही साथ नष्ट होता गया। सत्य और परिश्रम के बिना परमात्मा के सामने उनकी कोई भी पूछ नहीं होगी। जिस बुद्धि को बाद-विवादों में ही नष्ट किया जाता है उसे बुद्धि नहीं कहा जा सकता है। बुद्धिमतापूर्वक सुमिरन करना चाहिए और विवेक बुद्धि से ही सम्मान प्राप्त करना चाहिए। बुद्धि से ही पठन करके रहस्य को समझना चाहिए तथा दान देने समय भी बुद्धि को ही काम में लाना चाहिए। नानक का कथन है कि वास्तविक मार्ग तो यही है अन्य सभी बातें तो शैतान का कर्म हैं ।। १ ।। महला २ ।। आवश्यकता इस बात की है कि जो जैसा आचरण करता है वह अपने आपको वैसा ही कहलाए। सुन्दर सूरत वही है जो गुण रूपी अंगों वाली है और जो अवगुणों को लेकर अंगहीन ना बनी हुई हो। वास्तविक सम्मान योग्य हस्ती वही है कि जो प्रभु को ऐसा प्रसन्न कर ले कि जो उसकी इच्छा हो हे नानक, उसे वही मिलता जाए ।। २ ।। पउड़ी ।। सच्चा गुरु अमृत का वृक्ष है जिसमें अमृत रस वाले फल लगते हैं। जिसे वह प्राप्त होता है वही उन फलों को लेता है और शब्द-गुरु के माध्यम से उससे मिलाप बनाए रखता है। जो सच्चे गुरु की रज़ा में चलता है वह प्रभु में ही लीन हो जाता है। यम काल उसे देख भी नहीं पाता और उसका हृदय प्रकाशित हो उठता है। हे नानक, उस पर कृपा करके प्रभु उसे अपने से मिला लेता है और वह फिर आवागमन में पड़कर मरता खपता नहीं ।। २० ।। श्लोक महला १ ।। सत्य ही व्रत है, सन्तोष ही तीर्थ है और ज्ञान ध्यान ही हमारा तीर्थों का स्नान है। जो व्यक्ति दया को ही देवता मानते हैं और क्षमा को जपने वाली माला बनाते हैं, वे व्यक्ति ही वास्तव में प्रमुख व्यक्ति होते हैं। उनकी युक्ति ही उनकी धोती होती है, सुरति चौका होती है और उनका शुभ-आचरण उनका तिलक होता है। हे नानक, प्रेम उनका भोजन होता है और कोई बिरला ही ऐसा व्यक्ति होता है ।। १ ।। महला ३ ।। नवमी तिथि को व्यक्ति सत्य को अपना नियम बना ले तथा काम, क्रोध और तृष्णा को समाप्त कर दे। दसवीं तिथि को दसों इन्द्रियों को रोके और एकादशी को केवल उस एक प्रभु को ही जाने। हे नानक, यदि वह द्वादशी को पाँचों विकारों को वश में बनाए रखे तो उसका मन प्रसन्न बना रहेगा। हे पण्डित, यदि इस प्रकार का व्रत रखा जाए तो फिर भला अन्य किसी शिक्षा की क्या जरूरत है ।। २ ।। पउड़ी ।। धरती के स्वामी, राजा और कंगाल सभी माया रूपी विष को इक्ट्ठा कर रहे हैं। माया का संचय कर करके उससे प्रीति बढ़ाते हैं और पराए धन-सम्पदा को चुराते रहते हैं। युग और स्त्री पर भी भरोसा नहीं करते क्योंकि माया के साथ उसकी प्रीति बहुत अधिक होती है। देखते ही देखते वह धन-सम्पदा ठग लिए जाते हैं और जीव पछताता ही रह जाता है। हे नानक, यम के द्वार पर ऐसे व्यक्तियों को बाँधकर मारा जाता है और प्रभु को भी यही अच्छा लगता है ।। २१ ।। श्लोक महला १ ।। ज्ञान से विहीन व्यक्ति उस प्रभु के गीत गाते रहते हैं और भूखा मुल्ला घर को ही मस्जिद बना लेता है ताकि चढ़ावा आदि आता रहे। कामचोर होकर व्यक्ति कानों को फड़वा कर जोगी हो जाते हैं और इस प्रकार की फकीरी करने वाले अपना सब कुछ गँवा कर ही यहाँ से जाते हैं। जो अपने आपको गुरु पीर कहलाता है और घर घर माँगने भी जाता है ऐसे व्यक्ति के तो कभी भी चरण नहीं छूने चाहिए। जो मेहनत करके खाता है और अपनी कमाई में से कुछ दान भी देता है, हे नानक, ऐसे व्यक्ति ही वास्तव में अपने ठीक रास्ते को पहचानने वाले होते हैं ।। १ ।।

मः १ ॥ मनहु जि अंधे कूप कहिआ बिरदु न जाणन्ही ॥ मनि अंधै ऊंधै कवलि दिसन्हि खरे करूप ॥ इकि कहि जाणहि कहिआ बुझहि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इकना नाद न बेद न गीअ रसु रस कस न जाणंति ॥ इकना सुधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ नानक से नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सभ पवितु है धनु संपै माइआ ॥ हरि अरथि जो खरचदे देंदे सुखु पाइआ ॥ जो हरि नामु धिआइदे तिन तोटि न आइआ ॥ गुरमुखां नदरी आवदा माइआ सुटि पाइआ ॥ नानक भगतां होरु चिति न आवई हरि नामि समाइआ ॥ २२ ॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ सचै सबदि जिन्हा एक लिव लागी ॥ गिरह कुटंब महि सहजि समाधी ॥ नानक नामि रते से सचे बैरागी ॥ १ ॥ मः ४ ॥ गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥ सबदै सादु न आइओ सचि न लगो भाउ ॥ सतिगुरु पिआरा न लगई मनहठि आवै जाइ ॥ जे इक विख अगाहा भरे तां दस विखां पिछाहा जाइ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ आपु गवाइ सतिगुरू नो मिलै सहजे रहै समाइ ॥ नानक तिन्हा नामु न वीसरै सचे मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ खान मलूक कहाइदे को रहणु न पाई ॥ गढ़ मंदर गच गीरीआ किछु साथि न जाई ॥ सोइन साखति पउण वेग ध्रिगु ध्रिगु चतुराई ॥ छतीह अंम्रित परकार करहि बहु मैलु वधाई ॥ नानक जो देवै तिसहि न जाणन्ही मनमुखि दुखु पाई ॥ २३ ॥ सलोक मः ३ ॥ पढ़ि पढ़ि पंडित मोनी थके देसंतर भवि थके भेखधारी ॥ दूजै भाइ नाउ कदे न पाइनि दुखु लागा अति भारी ॥ मूरख अंधे त्रै गुण सेवहि माइआ कै बिउहारी ॥ अंदरि कपटु उदरु भरण कै ताई पाठ पड़हि गावारी ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिन हउमै विचहु मारी ॥ नानक पड़णा गुनणा इकु नाउ है बूझै को बीचारी ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नांगे आवणा नांगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै ॥ जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ॥ गुरमुखि होवै सु भाणा मंने सहजे हरि रसु पीजै ॥ नानक सुखदाता सदा सलाहिहु रसना रामु

महला १ ।। जिनका मन अन्धे कुएँ के समान है वे अपनी कही हुई बात की लाज नहीं रखते। ऐसे अन्धे मन वालों के हृदय-कमल उलटे हो चुके होते हैं और वे खड़े हुए कुरूप दिखाई देते हैं। कई ऐसे भी होते हैं जिनको बात करने का ढंग होता है और वे दूसरे की कही हुई बात का वास्तविक मर्म भी समझते हैं ; ऐसे व्यक्ति सुन्दर स्वरूप वाले कहे जाते हैं। कई ऐसे भी हैं जो ना तो नाद को समझते हैं, ना वेद अर्थात ज्ञान को जानते हैं, ना गीत के रस को अनुभव कर पाते हैं और खाद्‌य तथा अखाद्‌य की अच्छाई-बुराई भी नहीं जानते। कई ऐसे भी है जिनको ना तो कोई समझ है, ना उनमें बुद्धि है, ना ही उन्हें किसी की खबर होती है और ना ही वे अक्षर-ज्ञान के रहस्य को जानते हैं। हे नानक, इन सब गुणों के ना होने पर भी जो अभिमान से भरे रहते हैं वे वास्तव में गधे ही होते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। गुरमुख बने हुए व्यक्ति के लिए धन, सम्पति और माया सब कुछ पवित्र है। जो प्रभु के कामों के लिए खर्च करते हैं उन्हें देते हुए भी सुख प्राप्त होता है। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं उन्हें कोई भी कमी नहीं आती। गुरमुख व्यक्तियों को प्रभु दिखाई देता है और वे माया को दूर फेंक देते हैं। हे नानक, भक्तजनों को अन्य कोई याद नहीं रहता और वे प्रभु के नाम में ही लीन बने रहते हैं ।। २२ ।। श्लोक महला ४ ।। सच्चे गुरु का सुमिरन करने वाले वे लोग भाग्यशाली हैं जिनकर सच्चे शब्द के माध्यम से एक प्रभु में ही लौ लगी रहती है। गृहस्थी और कुटुम्ब में रहते हुए भी वे पूर्ण स्थिर अवस्था में ध्यान लगाए रहते हैं और हे नानक, जो इस प्रकार प्रभु के नाम में लीन बने रहते हैं वे ही सच्चे बैरागी कहलाते हैं ।। १ ।। महला ४ ।। हिसाब-किताबों में लाकर गणना करते रहने से सेवा सफल नहीं होती और किया हुआ उद्यम स्वीकार नहीं होता। ऐसे व्यक्तियों को ना तो शब्द का स्वाद लगा होता है और ना ही सत्य के साथ उनका प्रेम लगा होता है। सच्चा गुरु उन्हें प्यारा नहीं लगता और मन के हठ के पीछे लगकर वे आवागमन में पड़े रहते हैं। यदि वे एक कदम आगे उठाते हैं तो दस कदम पीछे चले जाते हैं। सच्चे गुरु की रज़ा में चलना ही सच्चे गुरु की सेवा और उसकी चाकरी है। जो अभिमान को गँवाकर सच्चे गुरु से मिलते हैं वे ही शान्त अवस्था में लीन बने रहते हैं। हे नानक, प्रभु का नाम उन्हें भूलता नहीं और उस सच्चे प्रभु से उनका मेल मिलाप बना रहता है ।। २ ।। पउड़ी ।। खान और बादशाह कहलाने वालों में से कोई भी यहाँ टिका नहीं रह सकेगा। चूने से बने हुए विशाल भवन और किलों में से कुछ भी साथ नहीं जाएगा। सोने की पेटी घोड़े की पूँछ में डालकर यदि पवन के वेग की तरह व्यक्ति जाता हो तो उसकी इस कुशलता और बहादुरी को धिक्कार है। छत्तीस प्रकार के अमृत के समान भोजन करने पर प्रभु-नाम से विहीन बना रहने वाला व्यक्ति केवल अपने शरीर में विष्ठा को ही बढ़ाता है। हे नानक, ऐसा मनमुख व्यक्ति उसे देने वाले को तो जानता नहीं है और दुख ही पाता रहता है ।। २ ।। श्लोक महला ३ ।। पण्डित और मौनी लोग पढ़ पढ़कर थक जाते हैं और विभिन्न प्रकार के वेश धारण करके देश-देशान्तरों में घूमने वाले लोग भी थक जाते हैं। द्वैतभाव में पड़े रहकर उन्हें प्रभु-नाम कभी भी नही मिलता और भारी दुख उनके साथ लगा रहता है। वे अन्धे, मूर्ख माया के व्यापारी बनकर तीनों गुणों की ही याद बनाए रखते हैं। उनके हृदय में तो कपट होता है लेकिन वे गँवार पेट भरने के लिए ही पाठ-पूजा करते हैं। अन्तर्मन से अहंकार को नष्ट कर देने वाले सच्चे गुरु प्रभु का जो सुमिरन करता है वही सुख प्राप्त करता है। हे नानक, इस बात को कोई बिरला विचारवान ही बूझता है कि केवल एक प्रभु के नाम को ही पढ़ना और उसी का मनन करना चाहिए ।। १ ।। महला ३ ।। नंगे ही यहाँ आने और यहाँ से जाने का हुकुम प्रभु ने दिया है तो भला जीव अब क्या कर सकता है। जिसकी वस्तु है वही ले जाएगा। इसलिए किसी पर भला क्यों क्रोधित हुआ जाए। जो गुरमुख होता है वही प्रभु की रज़ा को मानता है ; स्वाभाविक रूप से ही प्रभु-नाम के रस को पीता रहता है। हे नानक, सदैव उस सुखदाता प्रभु की प्रशंसा करते रहो और अपनी जीभ से प्रभु का

रवीजै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गढ़ि काइआ सीगार बहु भांति बणाई ॥ रंग परंग कतीफिआ पहिरहि धर माई ॥ लाल सुपेद दुलीचिआ बहु सभा बणाई ॥ दुखु खाणा दुखु भोगणा गरबै गरबाई ॥ नानक नामु न चेतिओ अंति लए छडाई ॥ २४ ॥ सलोक मः ३ ॥ सहजे सुखि सुती सबदि समाइ ॥ आपे प्रभि मेलि लई गलि लाइ ॥ दुबिधा चूकी सहजि सुभाइ ॥ अंतरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ से कंठि लाए जि भंनि घड़ाइ ॥ नानक जो धुरि मिले से हुणि आणि मिलाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ किआ जपु जापहि होरि ॥ बिसटा अंदरि कीट से मुठे धंधै चोरि ॥ नानक नामु न वीसरै झूठे लालच होरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु सलाहनि नामु मंनि असथिरु जगि सोई ॥ हिरदै हरि हरि चितवै दूजा नही कोई ॥ रोमि रोमि हरि उचरै खिनु खिनु हरि सोई ॥ गुरमुखि जनमु सकारथा निरमलु मलु खोई ॥ नानक जीवदा पुरखु धिआइआ अमरा पदु होई ॥ २५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ॥ नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ संन्ही उपरि चोर ॥ १ ॥ मः ५ ॥ धरति सुहावड़ी आकासु सुहंदा जपंदिआ हरि नाउ ॥ नानक नाम विहूणिआ तिन्ह तन खावहि काउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु सलाहनि भाउ करि निज महली वासा ॥ ओइ बाहुड़ि जोनि न आवनी फिरि होहि न बिनासा ॥ हरि सेती रंगि रवि रहे सभ सास गिरासा ॥ हरि का रंगु कदे न उतरै गुरमुखि परगासा ॥ ओइ किरपा करि कै मेलिअनु नानक हरि पासा ॥ २६ ॥ सलोक मः ३ ॥ जिचरु इहु मनु लहरी विचि है हउमै बहुतु अहंकारु ॥ सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ॥ सेवा थाइ न पवई तिस की खपि खपि होइ खुआरु ॥ नानक सेवकु सोई आखीऐ जो सिरु धरे उतारि ॥ सतिगुर का भाणा मंनि लए सबदु रखै उर धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सो जपु तपु सेवा चाकरी जो खसमै भावै ॥ आपे बखसे मेलि लए आपतु गवावै ॥ मिलिआ कदे न वीछुड़ै जोती जोति मिलावै ॥ नानक गुर परसादी सो बुझसी जिसु आपि बुझावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु को लेखे विचि है मनमुखु अहंकारी ॥ हरि नामु कदे न चेतई जमकालु

र्गमग्न करते रहो ।। २ ।। पउड़ी ।। इस शरीर रूपी किले को अनेकों प्रकार से सजाकर बनाया गया है। रंग-बिरंगे कपड़ों को माया में लीन यह जीव पहनता रहता है। लाल, सफेद गद्दों को बिछाकर वह सुन्दर महफिल सजाता है और अहंकार में पड़ा हुआ दुख ही खाता और दुख ही भोगता रहता है। हे नानक, अन्त समय में छुड़ा लेने वाले प्रभु-नाम का सुमिरन वह नहीं करता है।। २४ ।। श्लोक कहला ३ ।। शब्द में लीन होकर मैं स्वाभाविक रूप से सुखी हो गई हूँ और निश्चिन्त हो गई है। प्रभु ने मुझे गले से लगाकर स्वयं ही अपने से मिला लिया है। स्वाभाविक रूप से ही अब मेरी दुविधा समाप्त हो गई है और मेरे अन्तर्मन में प्रभु का नाम आ बसा है। जिन्होंने मन को तोड़कर नया रूप दे दिया है उन्हें वह गले से लगा लेता है। हे नानक, जो प्रारंभ से ही उससे मिले हुए हैं उसने उन्हें फिर अपने में मिला लिया है ।। १ ।। महला ३ ।। जिन्होंने प्रभु-नाम को भुला दिया है उनके अन्य सभी जाप भला किस काम के हैं। वे साँसारिक धन्धों में पड़े हुए और लुटे हुए ऐसे लगते हैं जैसे विष्ठा में पड़े हुए कीड़े हों। हे नानक, मुझे प्रभु-नाम ना भूले क्योंकि वाकी सभी लालच तो झूठे ही हैं ।। २ ।। जो प्रभु के नाम का गुणानुवाद करते हुए प्रभु के नाम को मन में बसाते हैं इस संसार में वे ही सदैव स्थिर बने रहते हैं। वे अपने हृदय में केवल प्रभु-नाम का ही सुमिरन करते हैं अन्य किसी का नहीं करते। वे प्रत्येक क्षण रोम-रोम में प्रभु-नाम का ही उच्चारण करते हैं। गुरमुख बनकर वे अपने जीवन को सार्थक करते हैं और विकारों की मैल को त्याग कर निर्मल हो जाते हैं। हे नानक, वे जीवन्त एवं सर्वव्यापक प्रभु का ही सुमिरन करते हैं और अमर पदवी को प्राप्त कर लेते हैं ।। २५ ।। श्लोक महला ३ ।। जिन्होंने प्रभु-नाम को भुला दिया है और अन्य कर्मकाण्डों में लगे हुए हैं हे नानक, उन्हें यमपुरी में बाँधकर वैसे ही मारा जाता है जैसे चोरी करने वाले चोर को पकड़कर पीटा जाता है ।। १ ।। महला ५ ।। प्रभु के नाम का सुमिरन करते रहने से धरती और आकाश सुहावने अनुभव होते रहते हैं। हे नानक, जो प्रभु-नाम से विहीन हैं उनके शरीर को तो चील कौवे ही खाते रहते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। जो प्रेमपूर्वक प्रभु के नाम का गुणानुवाद करते हैं उन्हें अपने वास्तविक ठिकाने अर्थात प्रभु के सम्मुख निवास मिल जाता है। वे फिर योनियों में नहीं भटकते और बार-बार उनका विनाश नहीं होता। वे सदैव श्वास और ग्रास के साथ प्रभु के प्रेम में लीन बने रहते हैं और गुरमुख बनकर ज्ञान से प्रकाशित हो चुके हैं। ऐसे व्यक्तियों पर से प्रभु के नाम का रंग कभी भी नहीं उतरता। हे नानक, प्रभु उनपर कृपा करके उन्हें अपने साथ मिला लेता है ॥२६॥श्लोक महला ३।। जब तक यह मन साँसारिक प्रपंचों की लहरों में पड़ा हुआ है तब तक इसमें अहंकार ही अहंकार भरा रहता है। इसे ना तो शब्द में रस मिलता है और ना ही प्रभु-नाम के साथ इसका प्यार लगता है। इसकी हुई सेवा भी सफल नहीं होती और वह मरता-खपता हुआ ख्वार होता रहता है। हे नानक, सेवक उसे ही कहा जाता है जो अपने सिर को उतार कर अर्थात अपने ममता और अहंकार को अपने मन से निकाल कर एक तरफ रख दे। वह ही सेवक है जो सच्चे गुरु की रज़ा को मान लेता है और शब्द अथवा प्रभु-नाम को हृदय में धारण किए रहता है ।। १ ।। महला ३ ।। वास्तविक जाप, तपस्या, सुमिरन और चाकरी वही है जो प्रभु को अच्छी लगती है। व्यक्ति यदि अहम् भाव को मिटा दे तो वह स्वयं ही उस पर कृपा करके उसे अपने से मिला लेता है। प्रभु से मिला हुआ वह फिर उससे बिछुड़ता नहीं और प्रभु उसकी ज्योति को अपनी ज्योति में मिला लेता है। हे नानक, गुरु की कृपा से इस रहस्य को वही जान पाता है जिसे वह स्वयं समझा देता है ।। २ ।। पउड़ी ।। अहंकार में लीन मनमुख का सब कुछ किया हुआ उसके लेखे में जुड़ता जाता है। वह कभी भी प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता इसलिए उसके सिर पर खड़ा हुआ यमकाल

सिरि मारी ॥ पाप बिकार मनूर सभि लदे बहु भारी ॥ मारगु बिखमु डरावणा किउ तरीऐ तारी ॥ नानक गुरि राखे से उबरे हरि नामि उधारी ॥ २७ ॥ सलोक मः ३ ॥ विणु सतिगुर सेवे सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥ मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजे भाइ विकार ॥ इकि गुर परसादी उबरे तिसु जन कउ करहि सभि नमसकार ॥ नानक अनदिनु नामु धिआइ तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर ॥ १ ॥ मः ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ सचु मरणा हरि नामु ॥ धंधा करतिआ जनमु गइआ अंदरि दुखु सहामु ॥ नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ जिन्ह पूरबि लिखिआ करामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ लेखा पड़ीऐ हरि नामु फिरि लेखु न होई ॥ पुछि न सकै कोइ हरि दरि सद ढोई ॥ जमकालु मिलै दे भेट सेवकु नित होई ॥ पूरे गुर ते महलु पाइआ पति परगटु लोई ॥ नानक अनहद धुनी दरि वजदे मिलिआ हरि सोई ॥ २८ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥ गुर की करणी भउ कटीऐ नानक पावहि पारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ ॥ गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ि न आवणु होइ ॥ नानक नामि विसारिऐ आवण जाणा दोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मंगत जनु जाचै दानु हरि देहु सुभाइ ॥ हरि दरसन की पिआस है दरसनि त्रिपताइ ॥ खिनु पलु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरां माइ ॥ सतिगुरि नालि दिखालिआ रवि रहिआ सभ थाइ ॥ सुतिआ आपि उठालि देइ नानक लिव लाइ ॥ २९ ॥ सलोक मः ३॥ मनमुख बोलि न जाणन्ही ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ थाउ कुथाउ न जाणनी सदा चितवहि बिकार ॥ दरगह लेखा मंगीऐ ओथै होहि कूड़िआर ॥ आपे स्रिसटि उपाईअनु आपि करे बीचारु ॥ नानक किस नो आखीऐ सभु वरतै आपि सचिआरु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हरि गुरमुखि तिन्ही अराधिआ जिन्ह करमि परापति होइ ॥ नानक हउ बलिहारी तिन्ह कउ जिन्ह हरि मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आस करे सभु लोकु बहु जीवणु जाणिआ ॥ नित जीवण कउ चितु गढ़ मंडप सवारिआ ॥ वलवंच करि उपाव माइआ हिरि आणिआ ॥ जमकालु निहाले सास

उसे बार-बार मारता रहता है। ऐसे व्यक्ति ने पापों और विकारों का सड़े गले हुए लोहे के भारी गट्ठरों को अपने पर लादा होता है। उसका मार्ग बहुत ही कठिन और डरावना होता है और भला वह कैसे संसार को तैर कर पार कर सकता है। हे नानक, प्रभु का नाम ही व्यक्ति का उद्धार करने वाला है और जिन्हें गुरु बचाता है वे ही संसार सागर से पार उतरते हैं ।। २७ ।। श्लोक महला ३ ।। सच्चे गुरु प्रभु के सुमिरन के बिना सुख नहीं मिलता और जीव बार-बार मरता-जन्मता रहता है। द्वैतभाव के अनेकों विकारों से बनी हुई मोह की ठगबूटी जीव खाते रहते हैं और भटकते रहते हैं। गुरु की कृपा से जिनका उद्धार हो जाता है ऐसे व्यक्तियों को सभी प्रणाम करते हैं। हे नानक, तू प्रत्येक दिन अन्तर्मन में प्रभु के नाम का सुमिरन कर ताकि तू मोक्ष के द्वार को प्राप्त कर सके ।। १ ।। महला ३ ।। माया के मोह में पड़े हुए जीव ने प्रभु के नाम, सत्य और मौत को भुला दिया है। संसार के प्रपंच करते हुए ही उसका जीवन समाप्त हो जाता है और वह अन्दर ही अन्दर अनेकों दुख सहता रहता है। हे नानक, सच्चे गुरु का सुमिरन करने से उन्होंने ही सुख प्राप्त किया है जिनके भाग्य में पहले से ही ऐसा लिखा हुआ है ।। २ ।। पउड़ी प्रभु के नाम का लेखा यदि पढ़ा जाए तो फिर माथे पर लिखे हुए लेख दोबारा नहीं लिखे जाते अर्थात व्यक्ति मुक्त हो जाता है; फिर उसकी जाँच-पड़ताल कोई नहीं कर सकता और उसे सदा के लिए प्रभु के द्वार पर ठिकाना मिल जाता है। फिर तो यमकाल भी उसे सेवक बनकर और भेंट अर्पण करके सदैव आदरपूर्वक मिलता रहता है। पूर्ण गुरु से ही वास्तविक ठिकाना प्राप्त होता है और सारे संसार में व्यक्ति का सम्मान प्रकट हो उठता है। हे नानक, उस प्रभु के द्वार पर अनहद नाद की धुन बजती है और वह प्रभु प्राप्त हो जाता है ।। २८ ।। श्लोक महला ३ ।। गुरु के कहे हुए के अनुरूप जो आचरण करता है उसे श्रेष्ठ सुख मिलते हैं और वह सुखी बना रहता है। हे नानक, गुरु के कथनानुसार चलने से भय कट जाता है और व्यक्ति पार उतर जाता है ।। १ ।। महला ३ ।। सत्य कभी पुराना नहीं होता और प्रभु का नाम कभी भी मैला नहीं होता। गुरु की रज़ा में जो कार्यशील बने रहते हैं उन्हें फिर इस संसार में नहीं आना पड़ता। हे नानक, प्रभु के नाम को भुलाने से इस संसार में आना और जाना दोनों ही बने रहते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, यह भिखारी सेवक तुझ से दान माँग रहा है, तू प्रेमपूर्वक इसे दे दे। प्रभु के दर्शनों की ही मुझे प्यास है और उसके दर्शन से ही मैं सन्तुष्ट होता हूँ। हे माँ, मैं उसे देखे बिना क्षण, पल और घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकता। सच्चे गुरु ने मुझे वह मेरे साथ ही रहता हुआ दिखा दिया है और वह प्रभु ही सभी स्थानों में रमण कर रहा है। हे नानक, वही हमें सोते हुओं को स्वयं उठा देता है और वही हमारी अपने में लौ लगाता है ।। २६ ।। श्लोक महला ३ ।। मनमुख व्यक्ति तो बोलना भी नहीं जानते क्योंकि उनके अन्दर काम, क्रोध और अहंकार भरा होता है। वे अच्छी और बुरी जगह को भी नहीं पहचान पाते और सदैव विकारों की ही याद बनाए रहते हैं। जब प्रभु के दरबार में उनसे लेखा माँगा जाता है तो वे झूठे साबित होते हैं। वह प्रभु स्वयं ही सृष्टि उत्पन्न करता है और स्वयं ही वह उसके बारे में सोचता है। हे नानक अब किस अन्य से कुछ भी कहा जाए क्योंकि वह सच्चा प्रभु तो स्वयं ही सब ओर व्याप्त है।। १ ।। महला ३ ।। उन गुरमुख व्यक्तियों ने ही प्रभु की आराधना की होती है जिनको अच्छे भाग्य की प्राप्ति हो चुकी होती है। हे नानक, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ जिनके मन में वह प्रभु बसा हुआ है ।। २ ।। पउड़ी ।। इस जीवन को बहुत लम्बा समझकर लोग अनेकों आशाएं लगाए रहते हैं और मन में सदैव जीवित बने रहने की लालसा लेकर किले और द्वारों को सजाते-सँवारते रहते हैं। छल-कपट के अनेकों उपायों को करते हुए वे धन-सम्पदा को चुरा कर लाते रहते हैं। यम उनके श्वास गिनता रहता है

आव घटै बेतालिआ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे हरि गुर रखवालिआ ॥ ३० ॥ सलोक मः ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणदे माइआ मोह सुआइ ॥ दूजै भाइ नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ जिन्हि कीते तिसै न सेवन्ही देदा रिजकु समाइ ॥ जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवहि जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सतिगुरु मिलिआ तिन आइ ॥ अनदिनु नामु धिआइदे नानक सचि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सचु वणजहि सचु सेवदे जि गुरमुखि पैरी पाहि ॥ नानक गुर कै भाणै जे चलहि सहजे सचि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आसा विचि अति दुखु घणा मनमुखि चितु लाइआ ॥ गुरमुखि भए निरास परम सुखु पाइआ ॥ विचे गिरह उदास अलिपत लिव लाइआ ॥ ओना सोगु विजोगु न विआपई हरि भाणा भाइआ ॥ नानक हरि सेती सदा रवि रहे धुरि लए मिलाइआ ॥ ३१ ॥ सलोक मः ३ ॥ पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥ गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ ॥ अंन्हे वसि माणकु पइआ घरि घरि वेचण जाइ ॥ ओना परख न आवई अढु न पलै पाइ ॥ जे आपि परख न आवई तां पारखीआ थावहु लइओ परखाइ ॥ जे ओसु नालि चितु लाए तां वथु लहै नउ निधि पलै पाइ ॥ घरि होदै धनि जगु भुखा मुआ बिनु सतिगुर सोझी न होइ ॥ सबदु सीतलु मनि तनि वसै तिथै सोगु विजोगु न कोइ ॥ वसतु पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु गणाए ॥ नानक बिनु बूझे किनै न पाइओ फिरि फिरि आवै जाए ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनि अनदु भइआ मिलिआ हरि प्रीतमु सरसे सजण संत पिआरे ॥ जो धुरि मिले न विछुड़हि कबहू जि आपि मेले करतारे ॥ अंतरि सबदु रविआ गुरु पाइआ सगले दूख निवारे ॥ हरि सुखदाता सदा सलाही अंतरि रखां उर धारे ॥ मनमुखु तिन की बखीली कि करे जि सचै सबदि सवारे ॥ ओना दी आपि पति रखसी मेरा पिआरा सरणागति पए गुर दुआरे ॥ नानक गुरमुखि से सुहेले भए मुख ऊजल दरबारे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इसतरी पुरखै बहु प्रीति मिलि मोहु वधाइआ ॥ पुत्रु कलत्रु नित वेखै विगसै मोहि माइआ ॥ देसि परदेसि धनु चोराइ

और इस वेताल रूपी मनुष्य की आयु प्रतिदिन घटती ही जाती है। हे नानक, गुरु की शरण में ही उद्धार होता है और प्रभु गुरु ही सच्चा रक्षक है ।। ३० ।। श्लोक महला ३ ।। माया और मोह के लालच में पण्डित जन पढ-पढ़कर वाद-विवाद करते रहते हैं। द्वैतभाव में लगकर प्रभु के नाम को भुला लिया जाता है और मन से मूर्ख ऐसे व्यक्तियों को सज़ा मिलती है। जिसने इन्हें बनाया है और जो इन्हें रोज़ी पहुँचाता है ये उसका सुमिरन नहीं करते हैं। जिनके भाग्य में पहले से ही लिखा होता है सच्चा गुरु स्वयं उन्हें आकर मिलता है। वे प्रतिदिन प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं और हे नानक, सत्य में लीन हो जाते हैं ।। १ ।। महला ३ ।। जो गुरमुख बनकर प्रभु के चरणों में आ जाते हैं वे ही सत्य का सुमिरन करते हैं और सत्य का ही व्यापार करते हैं। हे नानक, गुरु की रज़ा में जो चलते हैं वे स्वाभाविक रूप से ही सत्य में लीन हो जाते हैं ।। २ ।। पउड़ी।। आशाओं में और इच्छाओं में बहुत दुख मिलता है परन्तु मनमुख व्यक्ति अपना चित्त उन्हीं में लगाए रहता है। गुरमुख व्यक्ति आशाओं से परे रहता है और इसीलिए वह परम सुख को प्राप्त करता है। वह गृहस्थ में बना रहकर भी इच्छाओं के प्रति उदासीन बना रहता है तथा साँसारिकता से अलिप्त बना रहकर प्रभु में लौ लगाए रहता है। ऐसे व्यक्तियों को शोक और वियोग प्रभावित नहीं करते और उन्हें प्रभु की रज़ा ही अच्छी लगती है। हे नानक, वे सदैव प्रभु में ही लीन बने रहते हैं और वह अपनी ओर से ही इन्हें अपने में मिला लेता है ।। ३१ ।। श्लोक महला ३ ।। पराई अमानत को क्यों रखा जाए, इसे तो वापस देने में ही सुख मिलता है। शब्द रूपी गुरु, गुरु के अन्तर्मन में ही टिकता है और यह किसी अन्य स्थान पर अथवा व्यक्ति में प्रकट नहीं हो पाता। अन्धे व्यक्ति के हाथ में माणिक आ जाने से वह घर-घर उसे बेचने के लिए जाता है। साधारण व्यक्तियों को उस रत्न की कोई पहचान नहीं होती और वे उसे आधी कौड़ी भी नहीं देते। यदि व्यक्ति को स्वयं परख ना हो तो उसे चाहिए कि वह परख करने वालों से उसकी जाँच-पड़ताल करवा ले। यदि ऐसे पारखी लोगों के साथ वह प्रेम बनाए रखे तो उसे वास्तविक पदार्थ प्राप्त हो जाता है और नवनिधियाँ उसे मिल जाती हैं। अपने हृदय रूपी घर में ही प्रभु का नाम रूपी धन होते हुए भी संसार भूखा मर रहा है ; इसे सच्चे गुरु के बिना इस रहस्य का पता नहीं लगता। जहाँ प्रभु का शीतल नाम तन, मन में बस जाता है वहाँ शोक और वियोग नहीं होता। जीव के पास वस्तुएँ तो पराई हैं परन्तु यह अभिमान स्वयं करता रहता है और मूर्ख बनकर अपने आपको जताता रहता है। हे नानक, बिना इस रहस्य को समझे कोई भी उस प्रभु को नहीं पा सकता और बार-बार संसार में आता जाता रहता है ।। १ ।। महला ३ ।। प्रियतम प्रभु के मिलने से मन आनन्दित हो गया और मेरे सज्जन तथा प्यारे शान्त पुरुष हरे-भरे हो उठे हैं। जो प्रारम्भ से ही उस प्रभु से मिले हुए हैं और जिन्हें उस कर्ता प्रभु ने स्वयं ही अपने से मिलाया हुआ है वे फिर कभी उससे बिछुड़ते नहीं। उन्होंने गुरु को प्राप्त कर लिया होता है, उनके अन्तर्मन में प्रभु-नाम रमण कर रहा होता है और उनके सभी दूख दूर हो चुके होते हैं। सुखदाता उस प्रभु का मैं सदैव गुणानुवाद करता रहूँ और उसे हृदय में धारण किए रहूँ। मनमुख व्यक्ति भला उनकी निन्दा क्या कर सकता है जो प्रभु के सच्चे नाम के माध्यम से संवर गए हैं। मेरा प्यारा प्रभु उनकी लाज स्वयं रखता है क्योंकि वे गुरु के द्वार पर शरणागत के रूप में पहुँच चुके होते हैं। हे नानक, ऐसे गुरमुख व्यक्ति ही सुन्दर और सुखी बने रहते हैं और प्रभु के दरबार में उन्हीं का मुख उज्जवल होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। स्त्री-पुरुष परस्पर मिलकर बहुत प्रेम करते हैं और अपने मोह को बढ़ाते जाते हैं। व्यक्ति पुत्रों और स्त्री को देखकर सदैव खुश होता रहता है और उनके प्रपंचों में ही मोहित बना रहता है। देशों-परदेशों से धन चुराकर वह

आणि मुहि पाइआ ॥ अंति होवै वैर विरोधु को सकै न छडाइआ ॥ नानक विणु नावै ध्रिगु मोहु जितु लगि दुखु पाइआ ॥ ३२ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि अंम्रितु नामु है जितु खाधै सभ भुख जाइ ॥ त्रिसना मूलि न होवई नामु वसै मनि आइ ॥ बिनु नावै जि होरु खाणा तितु रोगु लगै तनि धाइ ॥ नानक रस कस सबदु सलाहणा आपे लए मिलाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जीआ अंदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा होइ ॥ बिनु सबदे जगि आन्हेरु है सबदे परगटु होइ ॥ पंडित मोनी पड़ि पड़ि थके भेख थके तनु धोइ ॥ बिनु सबदे किनै न पाइओ दुखीए चले रोइ ॥ नानक नदरी पाईऐ करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इसत्री पुरखै अति नेहु बहि मंदु पकाइआ ॥ दिसदा सभु किछु चलसी मेरे प्रभ भाइआ ॥ किउ रहीऐ थिरु जगि को कढहु उपाइआ ॥ गुर पूरे की चाकरी थिरु कंधु सबाइआ ॥ नानक बखसि मिलाइअनु हरि नामि समाइआ ॥ ३३ ॥ सलोक मः ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ गुर का भउ हेतु अपारु ॥ लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ॥ गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह मोख दुआरु ॥ नानक आपे मेलि लए आपे बखसणहारु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥ २ ॥ मः ४ ॥ सावणु आइआ झिम झिमा हरि गुरमुखि नामु धिआइ ॥ दुख भुख काड़ा सभु चुकाइसी मीहु वुठा छहबर लाइ ॥ सभ धरति भई हरीआवली अंनु जंमिआ बोहल लाइ ॥ हरि अचिंतु बुलावै क्रिपा करि हरि आपे पावै थाइ ॥ हरि तिसहि धिआवहु संत जनहु जु अंते लए छडाइ ॥ हरि कीरति भगति अनंदु है सदा सुखु वसै मनि आइ ॥ जिन्हा गुरमुखि नामु अराधिआ तिना दुख भुख लहि जाइ ॥ जन नानकु त्रिपतै गाइ गुण हरि दरसनु देहु सुभाइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ गुर पूरे की दाति नित देवै चड़ै सवाईआ ॥ तुसि देवै आपि दइआलु न छपै छपाईआ ॥ हिरदै कवलु प्रगासु उनमनि लिव लाईआ ॥ जे को करे उस दी रीस सिरि छाई पाईआ ॥ नानक अपड़ि कोइ न सकई पूरे सतिगुर की वडिआईआ

उनके मुँह में डालता रहता है परन्तु अन्त में धन की कमी के कारण ऐसे बैर-विरोध उत्पन्न होते हैं कि फिर उनसे कोई भी छुटकारा नहीं दिला पाता। हे नानक, प्रभु-नाम से विहीन मोह को धिक्कार है जिसमें लीन होकर व्यक्ति दुख प्राप्त करता रहता है।। ३२ ।। श्लोक महला ३ ।। गुरमुख के लिए प्रभु का नाम ही अमृत है जिससे सारी भूख समाप्त हो जाती है। जब नाम मन में आ बसता है तो फिर ज़रा सी भी तृष्णा नहीं रहती। प्रभु-नाम के बिना और जो कुछ भी खाया जाता है उससे तो शरीर को दौड़-दौडकर रोग ही लगते हैं। हे नानक, शब्द का गुणानुवाद ही यदि रस और नीरस भोजन समझा जाए, तब प्रभु स्वयं जीव को अपने आप से मिला लेता है ।। १ ।। महला ३ ।। जीवों के अन्दर शब्द ही उनके जीवन का सारतत्व है जिसके माध्यम से उस मालिक प्रभु से मिलाप होता है। शब्द के बिना यह सारा संसार अंधकार ही अंधकार है और शब्द के माध्यम से ही यह प्रकट होता है। मौनी और पण्डितगण विद्याओं को पढ़-पढ़कर थक चुके हैं और विभिन्न वेश बनाने वाले योगीगण तीर्थों पर तन को धो धोकर थक चुके हैं। शब्द के बिना किसी ने भी प्रभु को नहीं पाया है और जीव यहाँ से दुखी होकर रोते हुए ही चले जाते हैं। हे नानक, उसकी कृपादृष्टि से ही इसकी प्राप्ति होती है ।। २ ।। पउड़ी ।। स्त्री, पुरुष एक दूसरे से अत्यन्त प्रेम करते हैं और इकट्ठे बैठकर बुरे विषय-विकारों को और पक्का करते रहते हैं। यहाँ दिखाई देता हुआ सब कुछ चलायमान है और मेरे प्रभु को ऐसा ही अच्छा लगता है। कोई इस प्रकार का उपाय निकालो जिससे इस संसार में स्थिर बना रहा जा सके। यदि पूर्ण गुरु की सेवा की जाए तो सारा जीवन सदा के लिए अमर हो जाता है। हे नानक, वह कृपा करके अपने से मिला लेता है और जीव प्रभु-नाम में लीन हो जाता है ।। ३३ ।। श्लोक महला ३ ।। माया और मोह ने गुरु के भय और अपार प्रेम को भुला दिया है। लोभ की लहरों में धंसे हुए जीव की विवेक बुद्धि नष्ट हो जाती है और सत्य के साथ उसका प्रेम नहीं लगता। जिनके मन में शब्द (नाम) बसता है वे गुरमुख प्रभु के दरबार में मोक्ष के द्वार को पा जाते हैं। हे नानक, वह कृपालु प्रभु स्वयं ही उन्हें अपने आपसे मिला लेता है ।। १ ।। महला ४ ।। हे नानक, जिसके बिना एक घड़ी भर के लिए भी जीवित नहीं रहा जा सकता और जिसको भूल जाने से क्षण भर के लिए भी हमारा काम नहीं चलता उससे हे मन, क्यों रूठा जाए जिसे हमारी चिन्ता लगी ही रहती है ।। २ ।। महला ४ ।। एकरस बरसने वाला सावन अर्थात नाम सुमिरन की शीतल अवस्था आ पहुँची है और गुरमुख व्यक्ति प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं। प्रभु-नाम की घनघोर वर्षा में दुख भूख और पछतावे आदि सब कुछ समाप्त हो जाते हैं। अब हृदय रूपी धरती हरी-भरी हो उठती है और गुणरूपी अन्न के अंकुर फुट निकलते हैं तथा गुणों के ढेर लग जाते हैं। प्रभु कृपा करके बिना कहे ही अपने से मिला लेता है और स्वयं ही जीव को सही ठिकाना दे देता है। हे सन्तजनों, उस प्रभु का सुमिरन करो जो अन्त में हमें छुडा लेता है। प्रभु की कीर्ति और भक्ति ही वास्तविक आनन्द है जिससे सदैव मन में सुख बसता रहता है। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु-नाम की आराधना की है उनके दुख और भूख समाप्त हो जाते हैं। दास नानक तो उसके गुणानुवाद से ही सन्तुष्ट होता है और हे प्रभु, तुम प्रेमपूर्वक उसे दर्शन दो ।। ३ ।। पउड़ी ।। पूर्ण गुरु का दिया हुआ दान सदैव बढ़ता ही रहता है। वह दयालु प्रभु प्रसन्न होकर स्वयं ही देता है और फिर यह दान छिपाने से भी नहीं छिपता। हृदय रूपी कमल खिल उठता है और दिव्य विद्या में हमारी लौ लग जाती है। ऐसे व्यक्ति की यदि कोई नकल करे अथवा उससे ईर्ष्या करे तो उसके सिर पर मिट्टी ही पड़ती है। हे नानक, पूर्ण सच्चे गुरु की महिमा को कोई भी नहीं जान सकता

॥ ३४ ॥ सलोक मः ३ ॥ अमरु वेपरवाहु है तिसु नालि सिआणप न चलई न हुजति करणी जाइ ॥ आपु छोडि सरणाइ पवै मंनि लए रजाइ ॥ गुरमुखि जम डंडु न लगई हउमै विचहु जाइ ॥ नानक सेवकु सोई आखीऐ जि सचि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ दाति जोति सभ सूरति तेरी ॥ बहुतु सिआणप हउमै मेरी ॥ बहु करम कमावहि लोभि मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी ॥ नानक आपि कराए करता जो तिसु भावै साई गल चंगेरी ॥ २ ॥ पउड़ी मः ५ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु नामु अधारु ॥ गुरि पूरै मेलाइआ प्रभु देवणहारु ॥ भागु पूरा तिन जागिआ जपिआ निरंकारु ॥ साधू संगति लगिआ तरिआ संसारु ॥ नानक सिफति सलाह करि प्रभ का जैकारु ॥ ३५ ॥ सलोक मः ५ ॥ सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥ अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥ अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥ लेवहु कंठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥ नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ वुठे मेघ सुहावणे हुकमु कीता करतारि ॥ रिजकु उपाइओनु अगला ठांढि पई संसारि ॥ तनु मनु हरिआ होइआ सिमरत अगम अपार ॥ करि किरपा प्रभ आपणी सचे सिरजणहार ॥ कीता लोड़हि सो करहि नानक सद बलिहार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडा आपि अगंमु है वडी वडिआई ॥ गुर सबदी वेखि विगसिआ अंतरि सांति आई ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे है भाई ॥ आपि नाथु सभ नथीअनु सभ हुकमि चलाई ॥ नानक हरि भावै सो करे सभ चलै रजाई ॥ ३६ ॥ १ ॥ सुधु ॥

रागु सारंग बाणी भगतां की ॥ कबीर जी ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कहा नर गरबसि थोरी बात ॥ मन दस नाजु टका चारि गांठी ऐंडौ टेढौ जातु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुतु प्रतापु गांउ सउ पाए दुइ लख टका बरात ॥ दिवस चारि की करहु साहिबी जैसे बन हर पात ॥ १ ॥ ना कोऊ लै आइओ इहु धनु ना कोऊ लै जातु ॥ रावन हूं ते अधिक छत्रपति खिन महि गए बिलात

।। ३४ ।। श्लोक महला ३ ।। प्रभु का हुकुम बेपरवाह है और उसके साथ कोई भी चतुराई तथा हुज्जत (दलीलबाजी) नहीं चल सकती। जीव को चाहिए कि वह अपना अभिमान छोड़कर उसकी शरण में आ जाए और उसकी रज़ा को मान ले। गुरमुख होने से यम का डण्डा नहीं लगता और अहंकार टूट जाता है। हे नानक, उसी को सेवक कहा जाता है जो सत्य में लौ लगाए रहता है।। १।। महला ३।। तेरी ज्योति का दान और सारा सौंदर्य तो हे प्रभु, तेरा ही है और मेरी तो बहुत सी चतुराइयाँ तथा अभिमान है। लोभ मोह में लीन होने से व्यक्ति अनेकों प्रकार के कर्म करता रहता है और अहंकार में पड़े हुए ऐसे व्यक्ति का आवागमन कभी भी समाप्त नहीं होता। हे नानक, वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करवाता है और जो उसे अच्छी लगती है वही बात अच्छी है।। २।। पउड़ी महला ५।। सत्य ही हमारा खाना है, सत्य ही हमारा पहरावा है और सच्चे नाम का ही हमें आसरा है। पूर्ण गुरु ने हमें मिला दिया है और वह प्रभु ही सब कुछ देने में समर्थ है। उनका पूर्ण भाग्योदय हो जाता है जो उस निराकार प्रभु का सुमिरन करते हैं। साधु पुरुषों की संगत में बने रहने से संसार सागर को तैर लिया जाता है। हे नानक, तू प्रभु की जय-जयकार करता हुआ उसका गुणानुवाद कर ।। ३५।। श्लोक महला ५।। हे प्रभु, अपनी कृपा कर और सभी जीवों को सम्भाल ले। अन्न और पानी अधिक उत्पन्न कर दे और लोगों के दुखः और उनकी दरिद्रता को नष्ट करके उन्हें पार उतार दे। दाता प्रभु ने हमारी अरदास सुनी तो सारी सृष्टि शान्त हो गई। हे प्रभु हमारे सारे दुखों को दूर करके हमें अपने गले से लगा लो। हे नानक, तू प्रभु के नाम का समिरन कर क्योंकि प्रभु का घर ही फल देने वाला है ।। १ ।। महला ५ ।। प्रभु ने हुकुम किया और सुखों के सुन्दर बादल बरस उठे। अब बहुत अधिक अन्न, धन पैदा हो गया और सारा संसार शान्त हो गया। उस अगम्य, अपार प्रभु का सुमिरन करते ही हमारा तन-मन हरा-भरा हो उठा। हे सच्चे सृजनहार प्रभु, तू हम पर अपनी कृपा कर। जो तू करना चाहता है तू वही करता है और नानक तो सदैव तुझ पर बलिहारी जाता रहता है ।। २।। पउड़ी।। वह अगम्य प्रभु बहुत बड़ा है और उसकी महिमा भी बड़ी है। शब्द-गुरु के माध्यम से उसका दर्शन करके जीव खिल उठा है और उसके अन्तर्मन में शान्ति स्थापित हो गई है। वह स्वयं ही सब में कार्यशील है और हे भाई, वह स्वयं ही सब कुछ है। वह स्वयं नाथ है जिसने सबको अपने हुकुम की नकेल डाल रखी है और सब उसके हुकुम में ही चलते हैं। हे नानक, जो प्रभु को अच्छा लगता है वह वही करता है और सब उसकी रज़ा में ही चलते हैं।। ३६।। १।। शुद्ध अर्थात मूल के साथ मिलान किया हुआ।

रागु सारंग वाणी भक्तों की।। कबीर जी।। १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मानव, तू थोड़ी सी बात का क्यों इतना अहंकार करता है। दस मन अनाज और चार टके यदि तेरी गाँठ में हों तो तू अकड़कर और टेढ़ा होकर चलता रहता है।। १ ।। रहाउ।। यदि बहुत वैभव मिला तो यही है कि सौ गांव या दो लाख टके की जागीर तुझे मिल जाती है। जैसे जंगल के हरे पत्ते कुछ समय के लिए होते हैं ऐसे ही यह तेरी मालिकी भी चार दिनों की है।। १।। यह धन ना तो कोई लेकर आता है और ना ही यहां से कोई लेकर जाता है। रावण से भी बड़े छत्रपति यहां क्षण भर में ही नष्ट हो गए हैं

॥ २ ॥ हरि के संत सदा थिरु पूजहु जो हरि नामु जपात ॥ जिन कउ क्रिपा करत है गोबिदु ते सतसंगि मिलात ॥ ३ ॥ मात पिता बनिता सुत संपति अंति न चलत संगात ॥ कहत कबीरु राम भजु बउरे जनमु अकारथ जात ॥ ४ ॥ १ ॥ राजास्रम मिति नही जानी तेरी ॥ तेरे संतन की हउ चेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हसतो जाइ सु रोवतु आवै रोवतु जाइ सु हसै ॥ बसतो होइ होइ सुो ऊजरु ऊजरु होइ सु बसै ॥ १ ॥ जल ते थल करि थल ते कूआ कूप ते मेरु करावै ॥ धरती ते आकासि चढावै चढे अकासि गिरावै ॥ २ ॥ भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥ खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥ ३ ॥ नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥ कहु कबीर साधू को प्रीतमु तिसु मूरति बलिहारी ॥ ४ ॥ २ ॥

सारंग बाणी नामदेउ जी की ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥ भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे मीनु पानी महि रहै ॥ काल जाल की सुधि नही लहै ॥ जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥ ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह ॥ १ ॥ जिउ मधु माखी संचै अपार ॥ मधु लीनो मुखि दीनी छारु ॥ गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥ गला बांधि दुहि लेइ अहीरु ॥ २ ॥ माइआ कारनि स्रमु अति करै ॥ सो माइआ लै गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नही मूढ़ ॥ धनु धरती तनु होइ गइओ धूड़ि ॥ ३ ॥ काम क्रोध त्रिसना अति जरै ॥ साधसंगति कबहू नही करै ॥ कहत नामदेउ ता ची आणि ॥ निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥ ४ ॥ १ ॥ बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥ ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेल परिओ है तो सिउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥ १ ॥ आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥ कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥ २ ॥ २ ॥ दास अनिंन मेरो निज रूप ॥ दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत ग्रिह कूप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी बांधी

।। २ ।। सदैव स्थिर बने रहने वाले प्रभु के सन्तजनों की पूजा करो जो प्रभु के नाम का सुमिरन कराते हैं। जिन पर प्रभु कृपा करता है वे ही सत्संगत में मिल बैठते हैं।। ३।। माता, पिता, स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति आदि अन्त समय में साथ नहीं चलते। कबीर का कथन है कि हे बावले जीव, तू प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि तेरा जीवन व्यर्थ ही जा रहा है।। ४।। १।। हे राजन प्रभु, तेरे आश्रम रूपी संसार ने तेरी महिमा को नहीं जाना है। मैं तो तेरे सन्तजनों की मामूली सेविका हूं।। १।। रहाउ।। जो यहां से हँसता हुआ अर्थात सुखों में लीन जाता है वह वास्तव में तेरे पास रोता हुआ पहुंचता है और जो यहां से रोता हुआ अर्थात अलिप्त और त्यागी बना रहकर जाता है वह वास्तव में आनन्दित बना रहता है। जिसने यहां पूरी तरह से सदा बसे रहने का मन बना लिया है वह तो वास्तव में उजड़ ही जाता है और जो वास्तव में त्यागी होकर उजड़ा सा अनुभव होता है वह सुखपूर्वक बसता रहता है।। १।। वह प्रभु जल से सूखी धरती बना देता है और सूखी धरती से कुंआ बना सकता है और कुएं में से पहाड़ पैदा कर सकता है। वह चाहे तो व्यक्ति को धरती से उठाकर आकाश पर चढ़ा दे और यदि चाहे तो आकाश की ऊंचाईयों तक चढ़े हुए व्यक्ति को नीचे गिरा दे।। २।। वह भिखारी से व्यक्ति को राजा भी बना देता है और राजा बने हुए को भिखारी बना देता है। वह दुष्ट और मूर्ख व्यक्ति को विद्वान बना सकता है और बड़े-बड़े विद्वानों को मूर्ख बना सकता है।। ३।। स्त्री से ही वह पुरुष पैदा करता है और पुरुषों के कारण ही स्त्रियां पैदा होती हैं। कबीर कहता है कि वह प्रभु साधु पुरुषों का प्रियतम है और उसके सुन्दर रूप पर मैं बलिहारी जाता हूं।। ५।। २।।

सारंग वाणी नामदेव जी की   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मन, तू क्यों विषय-विकारों के जंगल में घुसा हुआ है और ठगबूटी को खाकर तू क्यों भटक रहा है।। १।। रहाउ।। जैसे मछली पानी में रहती है परन्तु उसे काल के जाल की जरा भी चिन्ता नहीं होती वह जीभ के स्वाद की मारी हुई लोहे की कुण्डी को निगल जाती है और फंस जाती है इसी प्रकार मनुष्य सोने और स्त्री के मोह में बंधकर फंसा रहता है।। १।। जैसे मधुमक्खी अपार शहद का संचय करती है परन्तु व्यक्ति शहद तो ले लेता है और मक्खी के मुंह में राख ही डाल देता है अर्थात उसे कुछ भी नहीं मिलता। गाय बछड़े के लिये दूध इकट्ठा करती है परन्तु ग्वाला उसका गला बाँधकर उसका दूध दुह लेता है।। २।। जीव धन-सम्पदा के लिये बहुत मेहनत करता है, वह धन को लाता है और धरती में गाड़ देता है। बहुत सा धन इकट्ठा करता हुआ वह मूर्ख यह नहीं समझता कि धन तो धरती में गड़ा रह जाता है और यह शरीर भी मिट्टी बन जाता है।। ३।। यह काम, क्रोध और तृष्णा में पड़ा हुआ बुरी तरह जलता रहता है और कभी भी साधसंगत में नहीं जाता। नामदेव कहता है कि उस प्रभु की शरण में जब यह आ जाता है तभी यह निर्भय होकर भगवान का सुमिरन करता है।। ५।। १।। हे प्रभु, तू मेरे साथ एक शर्त लगा ले। शर्त यह है कि यदि हम दास ना हों तो तू मालिक बन के दिखा दे अर्थात तुम मुझसे अलग नहीं हो और हम दोनों एक ही खेल के खिलाड़ी हैं।। १।। रहाउ।। तू स्वयं ही देवता है, यह मन्दिर भी तेरा ही है और तू ही हमें पूजा में लगाता है। कहने-सुनने के लिए ही तुझे और हमें दूसरा कहा जाता है वैसे हम तो वैसे ही हैं जैसे ही जल से लहर है और लहरों से ही जल का अस्तित्व है ।। १ ।। तू आप दाता है, आप ही नाचता है और आप ही तू शहनाईयाँ बजाता है। नामदेव का कथन है कि हे प्रभु, तू मेरा मालिक है, तेरा यह सेवक तो अपूर्ण है और तू ही पूरा है।। २।। २।। परमात्मा कहता है कि मेरा अनन्य भक्त वास्तव में मेरा ही रूप है। उसके दर्शन से क्षण भर में तीनों ताप मिट जाते हैं और उसके स्पर्श से गृहस्थी के झंझटों के कुएं से जीव आज़ाद हो जाता है।। १।। रहाउ।। मेरे बांधे हुए को तो मेरा

भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि ॥ एक समै मो कउ गहि बांधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ ॥ १ ॥ मै गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥ नामदेव जा के जीअ ऐसी तैसो ता कै प्रेम प्रगास ॥ २ ॥ ३ ॥

सारंग ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥ अनपावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥ पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ १ ॥ बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥ जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साधी ॥ २ ॥ हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥ परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥ ३ ॥ १ ॥ ६ ॥

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥

सारंग महला ५ सूरदास ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि के संग बसे हरि लोक ॥ तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखि भए निरबिखई पाए है सगले थोक ॥ आन बसतु सिउ काजु न कछूऐ सुंदर बदन अलोक ॥ १ ॥ सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥ सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ॥ २ ॥ १ ॥ ८ ॥

सारंग कबीर जीउ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥ मात पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सभ फन का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगे कउ किछु तुलहा बांधहु किआ भरवासा धन का ॥ कहा बिसासा इस भांडे का इतनकु लागै ठनका ॥ १ ॥ सगल धरम पुंन फल पावहु धूरि बांछहु सभ जन का ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु इहु मनु उडन पंखेरू बन का ॥ २ ॥ १ ॥ ९ ॥

भक्त छुड़ा लेता है परन्तु भक्त के द्वारा बांधा हुआ मुझसे नहीं छुड़ाया जाता। किसी समय भक्त यदि मुझे पकड़कर बांध ले तो मैं भी उसे कोई उत्तर नहीं दे सकता।। १।। गुणों का खींचा हुआ मैं सबका जीवन हूं परन्तु मेरा जीवन मेरे भक्त हैं। हे नामदेव, जिसके हृदय में यह बात जितनी बैठ जाए उतना ही उसके हृदय में प्रभु प्रेम का प्रकाश हो जाता है।। २।। ३।।

सारंग ।। १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मानव, तूने पुराण आदि की कथा सुनकर भी क्या कर लिया। कभी नष्ट ना होने वाली भक्ति तेरे हृदय में उत्पन्न नहीं हुई और किसी भूखे व्यक्ति को भी तूने कभी कोई दान नहीं दिया।। १ ।। रहाउ ।। पाप को तू भुला नहीं सका, क्रोध को तू त्याग नहीं सका और हे भाई, लोभ तेरा छूट नहीं सका। पराई निन्दा भी तेरे मुँह से समाप्त नहीं हो पाई और इस प्रकार तेरी सारी सेवा निष्फल हो गई है ।। १ ।। रास्ते में डाका मारकर और बेगाने घरों को लूटकर तू अपराधी बनकर पेट भर रहा है। परलोक में जाकर जिससे अपयश प्राप्त होता है तूने उसी मूर्खता की जीवन भर साधना की है ।। २ ।। हे भक्त परमानन्द, साधसंगत में मिल बैठकर तूने कभी पवित्र कथा वार्ता को भी नहीं सुना है ।। ३।। १।। ६।।

हे मन तू प्रभू से विमुख हो चुके लोगों की संगत को छोड़ दे।।

सारंग महला ५ सूरदास (लखनऊ के पास संडीला का हाकिम जो वैराग्यवान होकर त्यागी हो गया था)

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु के साथ तो प्रभु के लोग ही बसते हैं। वे तन, मन अर्पण करके सब कुछ न्यौछावर कर देते हैं और आनन्दित बने रहकर खुशी में स्वाभाविक झूमते रहते हैं ।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का दर्शन करके ये लोग विषय-विकारों से दूर हो जाते हैं और इन्होंने सब कुछ प्राप्त कर लिया होता है। इन्हें अब अन्य किसी पदार्थ से कोई काम नहीं रहता और इनके मुख सुन्दर दिखाई देते हैं।। १ ।। इस श्याम सुन्दर प्रभु को छोड़कर जो अन्य की चाहना कहते हैं वे कुष्ठ के रोगी के तन पर लगकर मर जाने वाली जोंक के समान होते हैं अर्थात ये लोग अन्य कामों में ही मर-खप जाते हैं। हे सूरदास, इस मन को प्रभु ने अपने हाथ में ले लिया है और फल के रूप में मुझे परलोक का सुख दे दिया है।। २ ।। १ ।। ८।।

सारंग कबीर जी १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

इस मन का प्रभु के बिना कौन सहायक है। माता-पिता, भाई, पुत्र, स्त्री आदि सबके साथ लगा हुआ प्रेम छल अथवा धोखा ही है।। १ ।। रहाउ ।। आगे पार उतरने के लिये कुछ बेड़ा आदि तैयार करो क्योंकि इस धन का क्या भरोसा है। इस शरीर रूपी बर्तन का क्या विश्वास है जो थोड़ी सी ठोकर लगने पर ही टूट जाता है।। १ ।। प्रभु के सेवकों की चरणधूलि की कामना करो तभी तुम सारे धर्मों का पुण्य और फल प्राप्त कर लोगे। कबीर का कथन है कि हे सन्तजनों, इस बात को सुन लो कि यह मन जंगल में उड़ने वाला पक्षी है जो कभी एक ठिकाने पर नहीं बैठता।। २ ।। १ ।। ६ ।।

रागु मलार चउपदे महला १ घरु १

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥ खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नही रहणा ॥ १ ॥ प्राणी एको नामु धिआवहु ॥ अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधनो सेवहि तुझु किआ देवहि मांगहि लेवहि रहहि नही ॥ तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदरि जीउ तुही ॥ २ ॥ गुरमुखि धिआवहि सि अंम्रितु पावहि सेई सूचे होही ॥ अहिनिसि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥ ३ ॥ जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥ नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला १ ॥ करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वरु आणि मिलावै ॥ सुणि घन घोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै ॥ १ ॥ बरसु घना मेरा मनु भीना ॥ अंम्रित बूंद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि सुखी वर कामणि पिआरी जिसु गुर बचनी मनु मानिआ ॥ हरि वरि नारि भई सोहागणि मनि तनि प्रेमु सुखानिआ ॥ २ ॥ अवगण तिआगि भई बैरागनि असथिरु वरु सोहागु हरी ॥ सोगु विजोगु तिसु कदे न विआपै हरि प्रभि अपणी किरपा करी ॥ ३ ॥ आवण जाणु नही मनु निहचलु पूरे गुर की ओट गही ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि धनु सोहागणि सचु सही ॥ ४ ॥ २ ॥ मलार महला १ ॥ साची सुरति नामि नही त्रिपते हउमै करत

राग मलार चौपदे महला १ घर १

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

खाना, पीना, हँसना और सोना ही याद है परन्तु मरना तो जीव को भूल ही गया है। उस प्रभु मालिक को भूलकर यह बहुत इधर-उधर भटका है ; सदा न बने रहने वाले जीवन को तो धिक्कार है।। १।। हे प्राणी, तू एक प्रभु के नाम का ही सुमिरन कर और अपने सम्मान सहित अपने वास्तविक घर अर्थात प्रभु के सम्मुख जा।। १।। रहाउ।। हे प्रभु, यह प्राणी जो तेरा सुमिरन करते हैं भला तुझे क्या देते हैं तथा उलटा तुझसे मांग लेने में कभी नहीं चूकते। तू ही सभी जीवों को देने वाला दाता है और सभी जीवों का प्राण तू ही है।। २।। जो गुरमुख बनकर तेरा सुमिरन करते हैं वे ही अमृत रूपी नाम को प्राप्त करते हैं और वे ही पवित्र बने रहते हैं। इसलिये हे प्राणी, तू दिन रात प्रभु-नाम का सुमिरन करता रह क्योंकि इससे मलीन बुद्धि वाले भी सुन्दर बन जाते हैं।। ३।। जैसा मौसम होता है इस शरीर को उसी प्रकार का सुख मिलता है और व्यक्ति की देह वैसी ही बन जाती है। हे नानक, प्रभु-नाम के बिना किसी भी ऋतु में कोई सौन्दर्य नहीं है और वही ऋतु सुहावनी होती है जिसमें प्रभु के नाम का सुमिरन होता है।। ४।। १।। मलार महला १।। मैं अपने गुरु से विनती करती हूं कि मुझे मेरे प्रियतम प्रभु रूपी वर से मिला दे। बादल की आवाज जैसा गुरु का उपदेश सुनकर मेरा मन शीतल हो जाता है और मेरी जीभ उसके प्रेम में लीन बनी हुई उसके गुण गाती है।। १।। हे बादल, तू घनघोर रूप से बरस क्योंकि मेरा मन अब भीग उठा है। तेरी अमृत की बूंद मेरे हृदय में सुन्दर रूप से स्थित हो गई है और गुरु ने मेरे मन को मोह लिया है जिससे मेरा मन प्रभु के रस में लीन हो गया है।। १ ।। रहाउ।। गुरु के उपदेश में जिसका मन लग गया है वही सुन्दर स्त्री स्वाभाविक रूप से सुखी बनी रहने वाली है। प्रभु को वर रूप में प्राप्त करके जीव स्त्री सुहागिन बन गई है और अब इसके मन तन को प्रभु का प्रेम सुख देने वाला बन गया है।। २।। अटल वर और प्रभु रूपी सुहाग को पाकर तथा अवगुणों को त्यागकर यह जीव स्त्री वैराग्यवान हो उठी है। प्रभु ने अब इस पर कृपा कर दी है और शोक तथा दुख अब इसे कभी भी प्रभावित नहीं करते।। ३ ।। पूर्ण गुरु की शरण लेने से अब इसका मन स्थिर हो गया है और इसका आवागमन समाप्त हो गया है। हे नानक, गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का जाप करने वाली ही वास्तविक रूप से धन्य है और सुहागिन है ।। ४ ।। २ ।। मलार महला १।। जीव की सुरति सच्ची होकर प्रभु-नाम मे ना लगकर सन्तुष्ट नहीं हुई और अहंकार करते हुए ही

गवाइआ ॥ पर धन पर नारी रतु निंदा बिखु खाई दुखु पाइआ ॥ सबदु चीनि भै कपट न छूटे मनि मुखि माइआ माइआ ॥ अजगरि भारि लदे अति भारी मरि जनमे जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ मनि भावै सबदु सुहाइआ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि भेख बहु कीन्हे गुरि राखे सचु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथि तेजु निवारि न न्हाते हरि का नामु न भाइआ ॥ रतन पदारथु परहरि तिआगिआ जत को तत ही आइआ ॥ बिसटा कीट भए उत ही ते उत ही माहि समाइआ ॥ अधिक सुआद रोग अधिकाई बिनु गुर सहजु न पाइआ ॥ २ ॥ सेवा सुरति रहसि गुण गावा गुरमुखि गिआनु बीचारा ॥ खोजी उपजै बादी बिनसै हउ बलि बलि गुर करतारा ॥ हम नीच होते हीणमति झूठे तू सबदि सवारणहारा ॥ आतम चीनि तहा तू तारण सचु तारे तारणहारा ॥ ३ ॥ बैसि सुथानि कहां गुण तेरे किआ किआ कथउ अपारा ॥ अलखु न लखीऐ अगमु अजोनी तूं नाथां नाथणहारा ॥ किसु पहि देखि कहउ तू कैसा सभि जाचक तू दातारा ॥ भगतिहीणु नानकु दरि देखहु इकु नामु मिलै उरि धारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला १ ॥ जिनि धन पिर का सादु न जानिआ सा बिलख बदन कुमलानी ॥ भई निरासी करम की फासी बिनु गुर भरमि भुलानी ॥ १ ॥ बरसु घना मेरा पिरु घरि आइआ ॥ बलि जावां गुर अपने प्रीतम जिनि हरि प्रभु आणि मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नउतन प्रीति सदा ठाकुर सिउ अनदिनु भगति सुहावी ॥ मुकति भए गुरि दरसु दिखाइआ जुगि जुगि भगति सुभावी ॥ २ ॥ हम थारे त्रिभवण जगु तुमरा तू मेरा हउ तेरा ॥ सतिगुरि मिलिऐ निरंजनु पाइआ बहुरि न भवजलि फेरा ॥ ३ ॥ अपुने पिर हरि देखि विगासी तउ धन साचु सीगारो ॥ अकुल निरंजन सिउ सचि साची गुरमति नामु अधारो ॥ ४ ॥ मुकति भई बंधन गुरि खोल्हे सबदि सुरति पति पाई ॥ नानक राम नामु रिद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ४ ॥ महला १ मलार ॥ पर दारा पर धनु पर लोभा हउमै बिखै बिकार ॥ दुसट भाउ तजि निंद पराई कामु क्रोधु चंडार ॥ १ ॥ महल महि बैठे अगम अपार ॥ भीतरि अंम्रितु सोई जनु पावै जिसु

उसने जीवन गंवा लिया है। पराया धन, परायी स्त्री से प्रेम और निन्दा आदि का विष खाते हुए यह भारी दुख उठाता रहा है। शब्द को पहचान कर इसका भय और कपट समाप्त नहीं हुआ और इसके मन में और मुख में माया-माया (धन-सम्पदा) ही बसती रहती है। इसने बहुत बड़े बोझ अपने पर लाद लिए हैं ; यह मरकर जन्म लेता रहता है और जीवन को गंवाता रहता है।। १।। जब प्रभु का नाम इसे मन में भाने लगा तो इसका जीवन सुहावना बन जाता है। योनियों में भटक-भटककर इसने बहुत से वेश धरण किए परन्तु जब गुरु ने इसकी रक्षा की है तभी वह सत्य को प्राप्त कर सका है।। १।। रहाउ।। तीर्थों पर भी तमोगुण अर्थात क्रोध को भूलकर स्नान नहीं किया गया और ना ही इस जीव को प्रभु का नाम अच्छा लगा है। रत्न जैसे नाम रूपी पदार्थ को इसने अपने से दूर करके उसे त्यागा हुआ है और इसीलिए यह जैसा आया था वैसा ही यहां से जाकार आवागमन में पड़ा रहता है। इसी कारण अर्थात बुरी इच्छाओं के कारण ऐसे जीव मैल के कीड़े बने थे और अन्त में गर्भ की मल में ही इनका निवास बना रहता है। अनेकों स्वादों में पड़े रहने से इसे अनेकों रोग लग गए हैं और गुरु के बिना यह अपने स्वाभाविक रूप को प्राप्त नहीं होता।। २।। मैं अपनी सुरति को सेवा में लगाकर मन की स्थिरता के साथ गुरमुख बन कर उसका गुणानुवाद करूं और गुरु से प्राप्त ज्ञान का चिन्तन करूँ। सार्थक खोज करने वाला तो सदैव बड़ा बनता जाता है परन्तु विवादी व्यक्ति सदैव नष्ट ही होता रहता है, मैं तो उस कर्ता गुरु (प्रभु) पर बलिहारी जाता हूं। हे प्रभु, हम तो नीच हैं, मतिहीन और झूठे हैं तथा तू ही शब्द के माध्यम से हमारे जीवन को संवारने वाला है। जहां आत्मा को पहचाना जाता है, हे सच्चे पार उतारने वाले प्रभु, वहीं तू लोगों को पार उतार देता है।। ६।। मैं अच्छे स्थान पर बैठ कर तेरे गुणों का तो कथन करूं परन्तु तू अपरम्पार है और तेरे कौन-कौन से गुणों का मैं कथन करूं। तू अदृष्ट, अगम्य, अयोनि और इन आँखो से ना समझा जाने वाला प्रभु बड़े-बड़े नाथों को भी अपने वश में रखने वाला है। किसको देखकर मैं बताऊं कि तू कैसा है; हे प्रभु, तू दाता है और सभी तेरे याचक है। भक्ति से विहीन नानक तेरे द्वार पर है, तू इसकी ओर देख ताकि मुझे तेरा एक नाम प्राप्त हो जाए और मैं उसे हृदय में धारण किए रहूं।। ५ ।। ३ ।। मलार महला १ ।। जिस स्त्री ने अपने प्रियतम के आनन्द का उपभोग नहीं किया वह मुख पर व्याकुलता लिए हुए मुर्झाई सी बनी रहती है। कर्मों में फंसी हुई वह निराश बनी रहती है और गुरु से विहीन होकर वह भ्रमों में भूली रहती है।। १ ।। हे बादल रूपी गुरु, तू बरस क्योंकि मेरा प्रियतम मेरे हृदय रूपी घर में आ बैठा है। मैं प्यारे गुरु पर से बलिहारी जाऊँ जिसने मुझे मेरा प्रभु मेरे सामने लाकर मिला दिया है।। १।। रहाउ।। सदैव उसकी भक्ति अच्छी लगती है। गुरु का दर्शन देखने से हम मुक्त हो गए हैं और युगों-युगों में उस प्रभु की भक्ति शोभायमान बनी रहती है।। २ ।। हम तेरे हैं, तीनों लोक और यह सारा संसार तेरा है और हे प्रभु, तू मेरा है और मैं तेरा हूं। सच्चे गुरु के मिलाप से हमने प्रभु को पा लिया है और अब इस संसार सागर में हमें फिर चक्कर नहीं लगाना है ।। ३ ।। अपने प्रभु रूपी, प्रियतम को देखकर जब जीव स्त्री खिल उठती है तभी उसका सिंगार सच्चा होता है। वह कुलातीत प्रभु के साथ सत्य रूप में मिलकर सत्य हो जाती है और गुरु की मति और प्रभु का नाम उसका आसरा बन जाता है।। ४।। गुरु ने बन्धन खोल दिए हैं जिससे वह मुक्त हो गई है और शब्द के माध्यम से उसने सुरति और सम्मान को प्राप्त कर लिया है। हे नानक, जब राम-नाम हृदय में हो तो जीवात्मा गुरमुख बनकर उस प्रभु से मिल जाती है।। ५ ।। ४ ।। महला १ मलार ।। पराई स्त्री, पराया धन, लोभ, अहंकार, विषय-विकार, दुष्टता का भाव और पराई निन्दा तथा चाण्डाल, काम क्रोध को हे जीव, तू त्याग दे ।। १ ।। तेरे इस शरीर रूपी महल में ही वह अनन्त और अगम्य प्रभु बैठा हुआ है परन्तु इस भीतर के अमृत को वही सेवक प्राप्त करता है जो

गुर का सबदु रतनु आचारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख सुख दोऊ सम करि जानै बुरा भला संसार ॥ सुधि बुधि सुरति नामि हरि पाईऐ सतसंगति गुर पिआर ॥ २ ॥ अहिनिसि लाहा हरि नामु परापति गुरु दाता देवणहारु ॥ गुरमुखि सिख सोई जनु पाए जिस नो नदरि करे करतारु ॥ ३ ॥ काइआ महलु मंदरु घरु हरि का तिसु महि राखि जोति अपार ॥ नानक गुरमुखि महलि बुलाईऐ हरि मेले मेलणहार ॥ ४ ॥ ५ ॥

मलार महला १ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पवणै पाणी जाणै जाति ॥ काइआं अगनि करे निभरांति ॥ जंमहि जीअ जाणै जे थाउ ॥ सुरता पंडितु ता का नाउ ॥ १ ॥ गुण गोबिंद न जाणीअहि माइ ॥ अणडीठा किछु कहणु न जाइ ॥ किआ करि आखि वखाणीऐ माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊपरि दरि असमानि पइआलि ॥ किउ करि कहीऐ देहु वीचारि ॥ बिनु जिहवा जो जपै हिआइ ॥ कोई जाणै कैसा नाउ ॥ २ ॥ कथनी बदनी रहै निभरांति ॥ सो बूझै होवै जिसु दाति ॥ अहिनिसि अंतरि रहै लिव लाइ ॥ सोई पुरखु जि सचि समाइ ॥ ३ ॥ जाति कुलीनु सेवकु जे होइ ॥ ता का कहणा कहहु न कोइ ॥ विचि सनातीं सेवकु होइ ॥ नानक पण्हीआ पहिरै सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ मलार महला १ ॥ दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख ॥ इकु दुखु सकतवार जमदूत ॥ इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ ॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥ १ ॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥ दरदु होवै दुखु रहै सरीर ॥ ऐसा दारू लगै न बीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खसमु विसारि कीए रस भोग ॥ तां तनि उठि खलोए रोग ॥ मन अंधे कउ मिलै सजाइ ॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥ २ ॥ चंदन का फलु चंदन वासु ॥ माणस का फलु घट महि सासु ॥ सासि गइऐ काइआ ढलि पाइ ॥ ता कै पाछै कोइ न खाइ ॥ ३ ॥ कंचन काइआ निरमल हंसु ॥ जिसु महि नामु निरंजन अंसु ॥ दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥ नानक छूटसि साचै नाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥ मलार महला १ ॥ दुख महुरा मारण हरि नामु ॥ सिला

शब्द-गुरु रूपी रत्न के अनुकूल अपना आचरण बनाता है।। १ ।। रहाउ।। वह दुख और सुख दोनों को समान जानता है और इस संसार में भलाई-बुराई को भी समान भाव से देखता है। सत्संगत और गुरु के प्रेम से ही सुरति, बुद्धि, प्रभु का नाम और प्रभु को पाया जाता है।। २।। फिर दिन-रात प्रभु नाम का लाभ प्राप्त होता रहता है जिसे देने वाला दाता वह गुरु ही है। उस गुरमुख सेवक को ही यह शिक्षा प्राप्त होती है जिस पर वह कर्ता प्रभु कृपा दृष्टि डालता है।। ३ ।। यह शरीर रूपी महल प्रभु का घर है और इसमें उसने अपनी अपार ज्योति को स्थित किया हुआ है। हे नानक, गुरमुख बने हुए व्यक्ति को ही इस महल के अन्दर बुलाया जाता है और प्रभु जो मिलाने वाला है अपने से स्वयं ही मिला लेता है।। ४।। ५।।

मलार महला १ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हवा और पानी से उत्पत्ति जानी जाती है और इस शरीर को निःसंदेह अग्नि भी बनाने में योगदान देती है। परन्तु इस शरीर के जन्म लेने के मूल स्थान को अर्थात परमात्मा को यह जीवात्मा जान जाए तो ऐसे जानने वाले का नाम ऊँची सुरति वाला पंडित हो सकता है।। १।। हे माँ, हम उस प्रभु के गुणों को नहीं जानते और उसे देखे बिना उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अब क्या कहकर उसका बखान किया जाए।। १।। रहाउ।। ऊपर-नीचे, आकाश और पाताल में सब जगह प्रभु व्याप्त है। अब बताओ उसके बारे में कुछ भी भला कैसे कहा जाए। बिना जीभ चलाए जो हृदय में उसके नाम का सुमिरन करता है ऐसा कोई बिरला ही जानता है कि उस प्रभु का नाम कैसा आनन्द देने वाला है।। २।। कहने-कहाने से तो वह पूर्ण रूप से परे ही बना रहता है। वही उसको जानता है जिस पर प्रभु ने कृपा करके उसे समझ का दान दिया है। जो दिन रात उसे अपनी लौ लगाकर हृदय में धारण किए रहता है वही वास्तविक व्यक्ति है जो सत्य में लीन बना रहता है।। ३।। किसी भी जाति और कुल का व्यक्ति यदि उस प्रभु का सेवक बन जाए तो उसकी महिमा का वर्णन कोई नहीं कर सकता। तथाकथित छोटी जाति का भी यदि कोई प्रभु का सेवक है तो हे नानक, वह भी मेरे शरीर के चमड़े के जूते पहनने के योग्य है।। ४ ।। १।। ६।। मलार महला १ ।। किसी को बिछुड़ने का दुख है और कोई भूख से दुखी है। किसी को शक्तिशाली यमदूत का दुख है किसी को शरीर के रोग का दुख लगा हुआ है। इसलिए हे भोले वैद्य, तुम औषधि मत दो क्योंकि तुम्हें दुख का पता ही नहीं है।। १।। हे भोले वैद्य, तुम अपनी औषधि का प्रयोग मत करो। जब दर्द होता है तो शरीर में दुख बना ही रहता है और हे मेरे भाई, फिर यह सांसारिक औषधियां काम नहीं करती।। १ ।। रहाउ।। मालिक को भुला कर जब रसों और भोगों को भोगा जाता है तो शरीर में अनेकों प्रकार के रोग उठ खड़े होते हैं। फिर अन्धे मन को सज़ा मिलती है इसलिये हे भोले वैद्य, तू अपनी औषधि का प्रयोग मत कर।। २ ।। चन्दन का सार तत्त्व चन्दन की सुगन्ध है और मानव तभी तक लाभदायक है जब तक उसके शरीर में श्वास चलता रहता है। श्वास के समाप्त हो जाने से काया गिर पड़ती है और बाद में इसका कोई भी उपयोग नहीं रहता।। ३ ।। जब आत्मा निर्मल होती है तो यह शरीर भी सोने जैसा हो जाता है जिसमें प्रभु के नाम के अंश की अनुभूति होने लगती है। फिर सभी दुख और रोग नष्ट होकर चले जाते हैं और हे नानक, उस प्रभु के सच्चे नाम के माध्यम से ही मुक्ति और रोगों से छुटकारा प्राप्त होता है।। ४ ।। २ ।। ७।। मलार महला १।। दुख एक ऐसा कुश्ता है जिसे प्रभु-नाम रुपी मसाला ही मारता है अर्थात दुख मर कर सुख की दवा के रूप में बदल जाता है। इसे

संतोख पीसणु हथि दानु ॥ नित नित लेहु न छीजै देह ॥ अंत कालि जमु मारै ठेह ॥ १ ॥ ऐसा दारू खाहि गवार ॥ जितु खाधै तेरे जाहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु जोबनु सभु छांव ॥ रथि फिरंदै दीसहि थाव ॥ देह न नाउ न होवै जाति ॥ ओथै दिहु ऐथै सभ राति ॥ २ ॥ साद करि समधां त्रिसना घिउ तेलु ॥ कामु क्रोधु अगनी सिउ मेलु ॥ होम जग अरु पाठ पुराण ॥ जो तिसु भावै सो परवाण ॥ ३ ॥ तपु कागदु तेरा नामु नीसानु ॥ जिन कउ लिखिआ एहु निधानु ॥ से धनवंत दिसहि घरि जाइ ॥ नानक जननी धंनी माइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ८ ॥ मलार महला १ ॥ बागे कापड़ बोलै बैण ॥ लंमा नकु काले तेरे नैण ॥ कबहूं साहिबु देखिआ भैण ॥ १ ॥ ऊडां ऊडि चड़ां असमानि ॥ साहिब संम्रिथ तेरै ताणि ॥ जलि थलि डूंगरि देखां तीर ॥ थान थनंतरि साहिबु बीर ॥ २ ॥ जिनि तनु साजि दीए नालि खंभ ॥ अति त्रिसना उडणै की डंझ ॥ नदरि करे तां बंधां धीर ॥ जिउ वेखाले तिउ वेखां बीर ॥ ३ ॥ न इहु तनु जाइगा न जाहिगे खंभ ॥ पउणै पाणी अगनी का सनबंध ॥ नानक करमु होवै जपीऐ करि गुरु पीरु ॥ सचि समावै एहु सरीरु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९ ॥

मलार महला ३ चउपदे घरु १ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

निरंकारु आकारु है आपे आपे भरमि भुलाए ॥ करि करि करता आपे वेखै जितु भावै तितु लाए ॥ सेवक कउ एहा वडिआई जा कउ हुकमु मनाए ॥ १ ॥ आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ ॥ एहा सकति सिवै घरि आवै जीवदिआ मरि रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेद पड़ै पड़ि वादु वखाणै ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ एह त्रिगुण माइआ जिनि जगतु भुलाइआ जनम मरण का सहसा ॥ गुर परसादी एको जाणै चूकै मनहु अंदेसा ॥ २ ॥ हम दीन मूरख अवीचारी तुम चिंता करहु हमारी ॥ होहु दइआल करि दासु दासा का सेवा करी तुमारी ॥ एकु निधानु देहि तू अपणा अहिनिसि नामु वखाणी ॥ ३ ॥ कहत नानकु गुर परसादी बूझहु कोई ऐसा करे वीचारा ॥ जिउ जल ऊपरि फेनु

सन्तोष की शिला पर पीसा जाता है और फिर हाथों से इसे दान रूप में दिया जाता है। यदि तू सदैव इस प्रकार की औषधि ले तो तेरा शरीर निर्बल नहीं होगा और अन्तकाल में यह औषधि काल को भी तत्काल मारने वाली साबित होगी ।। १ ।। मूर्ख, तू इस प्रकार की औषधि खा जिसके खाने से तेरे विकार चले जाएँगे ।। १ ।। रहाउ ।। राज, माल, यौवन, सभी परछाईयाँ हैं और सूर्य का रथ निकलते ही सभी स्थान दिखाई देने लग जाते हैं अर्थात परछाई या अंधकार में भ्रम बना रहता है परन्तु ज्ञान के सूर्य के कारण वास्तविकता का पता चलता है। शरीर, नाम और जाति आदि आगे कुछ भी कीमत नहीं रखते क्योंकि वहाँ तो दिन की तरह सब कुछ साफ है परन्तु यहाँ अज्ञान की रात है जिससे जीवों को कुछ भी सुझाई नहीं पड़ता।। २ ।। स्वादों को तो लकड़ियाँ बना ले, तृष्णाओं को घी और तेल बना ले और काम क्रोध की अग्नि में इन सबको मिला कर जला दे। इस प्रकार तेरा लोभ, यज्ञ और पुराण पाठ पूरा हो जाएगा। हे जीव, जो प्रभु को भाता है वास्तव में वही सफल होता है।। ३।। तपस्या रूपी कागज पर हे प्रभु तेरे नाम का चिन्ह अंकित है और जिनके भाग्यलेख में लिखा होता है उन्हें ही यह भण्डार प्राप्त होता है। ऐसे धनवान व्यक्ति ही अपने मूल घर प्रभु के पास जाते हुए दिखाई देते हैं और हे नानक, उनको पैदा करने वाली उनकी माँ धन्य है।। ४ ।। ३ ।। ८।। मलार महला १ ।। तेरे वस्त्र सफेद हैं और तू सुन्दर बातें करती है ; तेरा नाक भी लम्बा है और तेरी आंखें भी काली हैं परन्तु हे बहन, तूने कभी अपने मालिक प्रभु को भी देखा है।। १ ।। मैं उड़ती हुई आसमान पर भी जा चढूं तब भी मैं यही मानूंगी कि हे समर्थ प्रभु, मैं तेरे बल से ही ऐसा कर सकी हूँ। जलस्थल पर्वतों और नदियों के किनारे पर तथा सभी स्थानों और स्थानान्तरों में हे भाई, प्रभु ही विराजमान है ।। २ ।। जिसने शरीर की रचना करके उसके साथ श्वासों के पंख लगाए हैं उसी ने ही अत्यन्त तृष्णाओं के कारण भटकते रहने की प्यास भी लगाई है। हे प्रभु यदि तू औपा दृष्टि करे तो मैं धीरज बाँधे रहूँ और हे भाई, तू मुझे जो भी दिखलाएगा, मैं उसे देखता रहूंगा।। ३।। ना तो यह तन यहां से जाएगा और ना ही इसके श्वास साथ जाएंगे क्योंकि यह तो पवन, पानी और अग्नि का परस्पर सम्बन्ध था जो यहीं पर समाप्त हो जाएगा। हे नानक, यदि उसकी कृपा हो जाए तो उस प्रभु को ही गुरु और पीर मानकर उसका सुमिरन किया जाता है और फिर यह शरीर सत्य में लीन बना रहता है।। ४ ।। ४ ।। ६ ।।

मलार महला ३ चौपदे घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

आकृति विहीन वह प्रभु निराकार है और वह स्वयं भी जीवों को भ्रमों में डालकर भटकाता रहता है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ उत्पन्न करके स्वयं ही उसकी खोज खबर रखता है और जिसे जहां चाहता है वहां लगा देता है। जिसको अपना हुकुम मनवा लेता है उस सेवक के लिए उसका हुकुम मानना ही बड़प्पन है ।। १।। अपनी रज़ा को वह खुद ही जानता है और केवल गुरु की कृपा से उसे समझा जा सकता है। जब व्यक्ति जीवन में ही विषयों की ओर से मर जाता है तो प्रभु की शक्ति माया प्रभु में ही लीन होकर समाप्त हो जाती है ।। १ ।। रहाउ ।। व्यक्ति वेदों का पाठ करता है, पढ़-पढ़कर वाद-विवाद करता है तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि से सम्बंधित कार्यों के झगड़े खड़े करता रहता है। वास्तव में तो यह त्रिगुणात्मक माया ही है जिसने सारे संसार को भ्रम में डाला हुआ है और जन्म-मरण का भय बना ही रहता है। गुरु की कृपा से व्यक्ति जब केवल एक ही प्रभु को जान जाता है तो उसके मन की शंकाएं समाप्त हो जाती हैं।। २।। हे प्रभु, हम दीन मूर्ख और विचारहीन हैं तुम हमारी चिन्ता करो। दयालु होकर हमें अपने दासों का दास बना लो ताकि हम तुम्हारी सेवा करते रहें। तुम मुझे अपना सुखों का भण्डार दे दो जिससे मैं रात-दिन तुम्हारे नाम का बखान करता रहूं।। ३।। नानक का कथन है कि गुरु की कृपा से उसके रहस्य को जानने को ऐसा विचार समझो कि जैसे जल के ऊपर

बुदबुदा तैसा इहु संसारा ॥ जिस ते होआ तिसहि समाणा चूकि गइआ पासारा ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला ३ ॥ जिनी हुकमु पछाणिआ से मेले हउमै सबदि जलाइ ॥ सची भगति करहि दिनु राती सचि रहे लिव लाइ ॥ सदा सचु हरि वेखदे गुर कै सबदि सुभाइ ॥ १ ॥ मन रे हुकमु मंनि सुखु होइ ॥ प्रभ भाणा अपणा भावदा जिसु बखसे तिसु बिघनु न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण सभा धातु है ना हरि भगति न भाइ ॥ गति मुकति कदे न होवई हउमै करम कमाहि ॥ साहिब भावै सो थीऐ पइऐ किरति फिराहि ॥ २ ॥ सतिगुर भेटिऐ मनु मरि रहै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ चउथै पदि वासा होइआ सचै रहै समाइ ॥ ३ ॥ मेरा हरि प्रभु अगमु अगोचरु है कीमति कहणु न जाइ ॥ गुर परसादी बुझीऐ सबदे कार कमाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि हरि दरि सोभा पाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ मलार महला ३ ॥ गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि करेइ ॥ गुर बिनु दाता कोई नाही बखसे नदरि करेइ ॥ गुर मिलिऐ सांति ऊपजै अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि अंम्रित नामु धिआइ ॥ सतिगुरु पुरखु मिलै नाउ पाईऐ हरि नामे सदा समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख सदा विछुड़े फिरहि कोइ न किस ही नालि ॥ हउमै वडा रोगु है सिरि मारे जमकालि ॥ गुरमति सतसंगति न विछुड़हि अनदिनु नामु सम्हालि ॥ २ ॥ सभना करता एकु तू नित करि देखहि वीचारु ॥ इकि गुरमुखि आपि मिलाइआ बखसे भगति भंडार ॥ तू आपे सभु किछु जाणदा किसु आगै करी पूकार ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु अंम्रितु है नदरी पाइआ जाइ ॥ अनदिनु हरि हरि उचरै गुर कै सहजि सुभाइ ॥ नानक नामु निधानु है नामे ही चितु लाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला ३ ॥ गुरु सालाही सदा सुखदाता प्रभु नाराइणु सोई ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ वडी वडिआई होई ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे सचि समावै सोई ॥ १ ॥ मन रे गुरमुखि रिदै वीचारि ॥ तजि कूड़ु कुटंबु हउमै बिखु त्रिसना चलणु रिदै सम्हालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु दाता राम नाम का होरु दाता

झाग का बुलबुला क्षणिक होता है वैसा ही यह संसार है। जिससे यह उत्पन्न हुआ जब उसी में यह लीन हो जाता है तो इसके सभी प्रसार समाप्त हो जाते हैं ।। ४ ।। १ ।। मलार महला ३।। जिन्होंने प्रभु के हुकुम को पहचान लिया है उन्होंने अहंकार को शब्द के माध्यम से जलाकर उस प्रभु से मिलाप कर लिया है। वे दिन रात सच्ची भक्ति करते रहते हैं और सत्य में अपनी लौ लगाए रहते हैं। शब्द-गुरु के माध्यम से स्वाभाविक रूप में ही वे सदैव सच्चे प्रभु का दर्शन करते रहते हैं ।। १ ।। हे माँ, तू उसका हुकुम मान, तुझे इसी में सुख मिलेगा। प्रभु को अपनी रज़ा भली लगती है और इसका रहस्य वह जिसे प्रदान कर देता है उसके मार्ग में फिर कोई रुकावट नहीं आती ।। १ ।। रहाउ।। तीनों गुणों की अवस्था केवल भटकना ही भटकना है जिसमें ना तो प्रभु की भक्ति होती है और ना ही उससे प्रेम लगता है। तीनों गुणों में पड़े हुए व्यक्ति की कभी भी गति और मुक्ति इनसे नहीं होती और अहंकार में पड़ा रहकर ही वह कर्म करता रहता है। जो प्रभु को भाता है वही होता है और अपने पैदा किये हुए संस्कारों के अन्तर्गत ही जीव भटकते फिरते हैं ।। २ ।। सच्चे गुरु के मिलाप से यह दुर्गुणों के प्रति मर जाता है और प्रभु नाम मन में आ बसता है। उस प्रभु के मूल्य को कोई नहीं आंक सकता और उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। जीव का अब चौथे पद में अर्थात पूर्ण स्थिरता वाली स्थिति में निवास हो जाता है और वह सत्य में लीन बना रहता है ।। ३ ।। मेरा प्रभु अगम्य एवं अगोचर है उसका मूल्य बताया नहीं जा सकता। गुरु की छाया से ही उसे जाना जाता है और शब्द के अनुरूप अपना आचरण बनाया जाता है। हे नानक, तू प्रभु के नाम का ही गुणानुवाद कर और ऐसा करने से तू प्रभु के द्वार पर शोभा प्राप्त कर लेगा ।। ४ ।। २ ।। मलार महला ३ ।। कोई बिरला गुरमुख जिस पर प्रभु की कृपा दुष्टि हो जाती है उसके रहस्य को जान पाता है। गुरु के बिना अन्य कोई भी दाता नहीं है जो कृपादृष्टि करके हमें बचा सकता है। गुरु को मिलने से शान्ति उत्पन्न होती है और व्यक्ति सदैव प्रभु नाम का सुमिरन करता रहता है ।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु के अमृत नाम का सुमिरन कर। उस सच्चे गुरु को मिलकर ही प्रभु नाम प्राप्त होता है और व्यक्ति सदैव प्रभु नाम में ही लीन बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। मनमुख व्यक्ति सदा के लिये बिछुड़ कर भटकते रहते हैं और इनमें से कोई भी किसी के साथ नहीं होता। इन्हें अहंकार का सबसे बड़ा रोग लगा रहता है और यम इन्हे सिर के बल पटककर मारता है। गुरु की मति ग्रहण करने से और सत्संगत में रहने से जीव प्रभु से बिछुड़ता नहीं और प्रत्येक दिन प्रभु नाम का सुमिरन करता रहता है।। २ ।। हे प्रभु, तू एक ही सबका कर्ता है और तू सदैव जीवों के बारे में सोचता हुआ उनकी सम्भाल करता रहता है। गुरमुख व्यक्ति को ही तू स्वयं मिलाता है और उसे भक्ति के भण्डार प्रदान कर देता है। मैं किसके आगे चीख-पुकार लगाऊं क्योंकि तू तो स्वयं ही सब कुछ जानता है।। ३ ।। प्रभु का नाम ऐसा अमृत है जो उसकी कृपादृष्टि से ही प्राप्त किया जाता है। प्राप्त करने वाला व्यक्ति गुरु के सरल स्वभाव में चलता हुआ हर दिन प्रभु का सुमिरन करता रहता है। हे नानक, प्रभु का नाम ही सुखों का भण्डार है इसलिये तू प्रभु नाम में ही चित्त लगा ।। ४ ।। ३ ।। मलार महला ३ ।। मैं सदैव सुख देने वाले गुरु का यश गाता हूं क्योंकि प्रभु और नारायण ही वह गुरु है। गुरु की कृपा से ही मैंने परमपद प्राप्त कर लिया है और उसी के कारण मेरी बड़ी महिमा हो गई है। जो हर रोज़ उस सच्चे प्रभु के गुण गाता है वही सत्य में लीन हो जाता है ।। १ ।। हे माँ, गुरमुख बनकर हृदय में चिन्तन करते रहो। झूठ, कुटुम्ब का मोह और अभिमान तथा तृष्णा रूपी विष को त्याग दे और इस बात की याद बनाए रख कि यहां से चलना ही है ।। १ ।। रहाउ ।। सच्चा गुरु ही प्रभु का नाम दाता है अन्य कोई भी देने वाला

कोई नाही ॥ जीअ दानु देइ त्रिपतासे सचै नामि समाही ॥ अनदिनु हरि रविआ रिद अंतरि सहजि समाधि लगाही ॥ २ ॥ सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ॥ मेरा प्रभु अलखु न जाई लखिआ गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंगपाणी ॥ ३ ॥ आवण जाणा बहुड़ि न होवै गुरमुखि सहजि धिआइआ ॥ मन ही ते मनु मिलिआ सुआमी मन ही मंनु समाइआ ॥ साचे ही सचु साचि पतीजै विचहु आपु गवाइआ ॥ ४ ॥ एको एकु वसै मनि सुआमी दूजा अवरु न कोई ॥ एको नामु अंम्रितु है मीठा जगि निरमल सचु सोई ॥ नानक नामु प्रभु ते पाईऐ जिन कउ धुरि लिखिआ होई ॥ ५ ॥ ४ ॥ मलार महला ३ ॥ गण गंधरब नामे सभि उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ हउमै मारि सद मंनि वसाइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ अनदिनु बाणी सबदे गांवै साचि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ मन मेरे खिनु खिनु नामु सम्हालि ॥ गुर की दाति सबद सुखु अंतरि सदा निबहै तेरै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख पाखंडु कदे न चूकै दूजै भाइ दुखु पाए ॥ नामु विसारि बिखिआ मनि राते बिरथा जनमु गवाए ॥ इह वेला फिरि हथि न आवै अनदिनु सदा पछुताए ॥ मरि मरि जनमै कदे न बूझै विसटा माहि समाए ॥ २ ॥ गुरमुखि नामि रते से उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ मनु तनु निरमलु निरमल मति ऊतम ऊतम बाणी होई ॥ एको पुरखु एकु प्रभु जाता दूजा अवरु न कोई ॥ ३ ॥ आपे करे कराए प्रभु आपे आपे नदरि करेइ ॥ मनु तनु राता गुर की बाणी सेवा सुरति समेइ ॥ अंतरि वसिआ अलख अभेवा गुरमुखि होइ लखाइ ॥ नानक जिसु भावै तिसु आपे देवै भावै तिवै चलाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ मलार महला ३ दुतुके ॥ सतिगुर ते पावै घरु दरु महलु सु थानु ॥ गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥ १ ॥ जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि नामु ॥ अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह पावहि मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की बिधि सतिगुर ते जाणै

नहीं है। वही जीवन दान देकर सन्तुष्ट करता है और उसी के कारण सच्चे नाम मे लीन बना जाता है। प्रभु सदैव हृदय में रमण करता रहता है और उसी के कारण स्वाभाविक रूप से समाधि लगी रहती है ।। २ ।। सच्चे गुरु के शब्द ने इस मन को भेद कर इसे समझदार बनाया है और हृदय में प्रभु की सच्ची वाणी का निवास हो गया है। मेरा प्रभु अदृष्ट है, उसे देखा नहीं जा सकता परन्तु गुरमुख बनकर उसकी अकथनीय कहानी को समझा जा सकता है। जब वह सुखदाता सच्चा गुरु अपनी दया करता है तभी उस प्रभु का सुमिरन किया जाता है ।। ३ ।। जब गुरमुख बन कर स्वाभाविक रूप से सुमिरन किया जाता है तो फिर आवागमन नहीं रहता। अब मन मन से ही सन्तुष्ट हो चुका होता है और मन की इच्छाएं मन में ही लीन होकर समाप्त हो जाती हैं। वास्तव में सत्य ही सत्य से सन्तुष्ट होता है और अन्तर्मन से अहंकार गंवा दिया जाता है ।। ४ ।। वह स्वामी और एक ही एक प्रभु जब मन में आ बसता है तो फिर दूसरा कोई नहीं होता। एक प्रभु का नाम ही अमृत के समान मीठा है और यही सत्य संसार में सबसे पवित्र है। हे नानक, प्रभु से नाम उन्हीं को प्राप्त होता है जिनके भाग्य लेख में प्रारम्भ से ही लिखा होता है ।। ५ ।। ४ ।। मलार महला ३ ।। शब्द-गुरु का चिन्तन करके नाम के माध्यम से गण गंधर्व आदि सबका उद्धार हो गया है। जिन्होंने अहंकार को मारकर सदैव उसे मन में बसाया है और प्रभु को हृदय में बनाए रखा है उन सबका भी पार उतारा हो जाता है। जिसे वह प्रभु मिलाता है वही उससे मिलता है और जिसे अपना रहस्य समझाता है वही उसे बूझ पाता है। ऐसा व्यक्ति ही प्रतिदिन शब्द के माध्यम से उसकी वाणी का गायन करता है और सत्य में लौ लगाए रहता है ।। १ ।। हे मेरे मन, हर क्षण उस प्रभु के नाम को मन में सम्भाले रख। गुरु का दान शब्द सदैव अन्तर्मन में सुख देने वाला है और सदैव तेरे साथ अन्त तक चलने वाला है ।। १ ।। रहाउ ।। मनमुख व्यक्तियों के पाखण्ड कभी समाप्त नहीं होते और द्वैतभाव में वे दुख पाते रहते हैं। प्रभु नाम को भूलकर उनके मन विष रूपी माया में लीन बने रहते हैं और वे अपने जीवन को व्यर्थ ही गंवा देते है। जीवन का यह अवसर फिर उनके हाथ नहीं आता और फिर वे सदैव पछताते रहते हैं। वे मर मरकर जन्मते रहते हैं और कभी भी प्रभु के रहस्य को ना समझकर गन्दगी में लीन बने रहते हैं ।। २ ।। शब्द-गुरु को विचार कर नाम में लीन बने गुरमुख भवसागर से पार उतर जाते हैं। उन्होंने जीवन मुक्त बनकर प्रभु नाम का सुमिरन किया होता है और प्रभु को हृदय में धारण किया होता है। उनका मन तन निर्मल, उनकी मति निर्मल और उनकी वाणी भी उत्तम होती है। वे उस एक ही सर्वव्यापक प्रभु को जानते हैं और उनके लिये अब दूसरा कोई नहीं होता ।। ३।। वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता कराता है और स्वयं ही कृपा दृष्टि करता है। उनका मन तन गुरु की वाणी में रंगा रहता है और उनकी सुरति उस प्रभु की सेवा में लीन बनी रहती है। वह अदृष्ट और रहस्यातीत प्रभु हृदय में बसा रहता है परन्तु जो गुरमुख होता है वह उसे ही अनुभव में दृष्टिगोचर होता है। हे नानक, जो उसे अच्छा लगता है वह स्वयं उसे ही देता है और उसे जैसे भाता है वह जीवों को वैसे ही चलाता है ।।४ ।।५ ।। मलार महला ३ दो पंक्तियों वाले ।। सच्चे गुरु से ही प्रभु का घर, द्वार, महल और उसका ठिकाना जाना जाता है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही व्यक्ति का अभिमान नष्ट होता है ।। १ ।। जिनके माथे पर प्रारम्भ से ही प्रभु नाम लिखा होता है वे सदैव प्रभु-नाम का ही सुमिरन करते रहते हैं और प्रभु के सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करते रहते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु से ही वे मन को वश में रखने का ढ़ंग जानते हैं और

अनदिनु लागै सद हरि सिउ धिआनु ॥ गुर सबदि रते सदा बैरागी हरि दरगह साची पावहि मानु ॥ २ ॥ इहु मनु खेलै हुकम का बाधा इक खिन महि दह दिस फिरि आवै ॥ जां आपे नदरि करे हरि प्रभु साचा तां इहु मनु गुरमुखि ततकाल वसि आवै ॥ ३ ॥ इसु मन की बिधि मन हू जाणै बूझै सबदि वीचारि ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू भव सागरु जितु पावहि पारि ॥ ४ ॥ ६ ॥ मलार महला ३ ॥ जीउ पिंडु प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ॥ एकसु बिनु मै अवरु न जाणा सतिगुरि दीआ बुझाई ॥ १ ॥ मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ॥ अदिसटु अगोचरु अपरंपरु करता गुर कै सबदि हरि धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु भीजै एक लिव लागै सहजे रहे समाई ॥ गुर परसादी भ्रमु भउ भागै एक नामि लिव लाई ॥ २ ॥ गुर बचनी सचु कार कमावै गति मति तब ही पाई ॥ कोटि मधे किसहि बुझाए तिनि राम नामि लिव लाई ॥ ३ ॥ जह जह देखा तह एको सोई इह गुरमति बुधि पाई ॥ मनु तनु प्रान धरी तिसु आगै नानक आपु गवाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ मलार महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा दूख निवारणु सबदे पाइआ जाई ॥ भगती राते सद बैरागी दरि साचै पति पाई ॥ १ ॥ मन रे मन सिउ रहउ समाई ॥ गुरमुखि राम नामि मनु भीजै हरि सेती लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु अति अगम अगोचरु गुरमति देइ बुझाई ॥ सचु संजमु करणी हरि कीरति हरि सेती लिव लाई ॥ २ ॥ आपे सबदु सचु साखी आपे जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ देही काची पउणु वजाए गुरमुखि अंम्रितु पाई ॥ ३ ॥ आपे साजे सभ कारै लाए सो सचु रहिआ समाई ॥ नानक नाम बिना कोई किछु नाही नामे देइ वडाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ मलार महला ३ ॥ हउमै बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर भारी ॥ गरुड़ु सबदु मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी ॥ १ ॥ मन रे हउमै मोहु दुखु भारी ॥ इहु भवजलु जगतु न जाई तरणा गुरमुखि तरु हरि तारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ मोहु पसारा सभ वरतै आकारी ॥ तुरीआ गुणु सतसंगति पाईऐ नदरी पारि उतारी ॥ २ ॥ चंदन गंध सुगंध है बहु

उनका ध्यान प्रतिदिन प्रभु में ही लगा रहता है। शब्द-गुरु में लीन बने हुए वे सदैव अलिप्त बने रहते हैं और प्रभु के उस सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करते हैं ।। २ ।। हुकुम का बंधा हुआ यह मन खेल खेलता रहता है और एक क्षण भर में दसों दिशाओं में यह घूम आता है। यदि सच्चा प्रभु अपनी कृपा दृष्टि कर दे तो व्यक्ति गुरमुख बनता है और यह मन तुरन्त ही उसके वश में आ जाता है ।। ३ ।। शब्द के चिन्तन के फलस्वरूप यह समझ प्राप्त होती है कि इस मन को वश में रखने की विधि वास्तव में मन ही जानता है। हे नानक, तू सदैव प्रभु नाम का सुमिरन कर जिससे तू इस संसार सागर से पार उतर जाए ।। ४ ।। ६ ।। मलार महला ३ ।। यह आत्मा, शरीर और प्राण सब उस प्रभु के हैं जो घट-घट में समाया हुआ है। सच्चे गुरु ने मुझे यह समझा दिया है और अब मैं उस एक प्रभु के बिना किसी दूसरे को नहीं जानता ।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु के नाम में सुरति लगाए रख। उस अदृष्ट, अगोचर एवं अपरम्पार कर्ता-प्रभु को शब्द-गुरु के माध्यम से याद करता रह ।। १ ।। रहाउ ।। जब मन, तन एक प्रभु में लौ लगाने से भीग उठता है तो व्यक्ति अपने स्वाभाविक रूप में लीन हो जाता है। गुरु की कृपा से एक प्रभु के नाम में लौ लगाने से भ्रम और भय भाग खड़े होते हैं ।। २ ।। जब व्यक्ति गुरु के उपदेश के फल स्वरूप सच्चा आचरण बना लेता है तब प्रभु की सूझ बुद्धि प्राप्त होती है। करोड़ों में वह किसी ऐसे बिरले को ही यह रहस्य समझाता है जिसने राम नाम में अपनी सुरति को लीन किया होता है। ।। ३ ।। गुरमति के माध्यम से हमने यह समझ प्राप्त की है कि हम जहां-जहां भी देखते हैं वह एक ही प्रभु हमें दिखाई देता है। हे नानक, हम अपने अहंकार को गंवाकर मन तन और प्राण उस प्रभु के आगे अर्पण करते हैं। ।। ४ ।। ७ ।। मलार महला ३ ।। मेरा प्रभु सच्चा और दुखों को दूर करने वाला है तथा उसे शब्द के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। जो प्रभु के प्रेम में लीन बने रहते हैं वे संसार के आकर्षणों के प्रति तटस्थ बने रहते हैं और वे ही सच्चे प्रभु के द्वार पर सम्मान प्राप्त करते हैं ।। १ ।। हे मेरे मन, तू अपने वास्तविक ज्योति स्वरूप में लीन बना रह। गुरमुख बनकर ही राम नाम में मन सन्तुष्ट होता है और उस प्रभु में लौ लगती है ।। १ ।। रहाउ ।। मेरा प्रभु अत्यन्त अगम्य और अगोचर है, गुरु मति ही उसका रहस्य समझा सकती है; तत्पश्चात आचरण सत्यशील हो जाता है और प्रभु का यश ही वास्तविक कर्म बन जाता है ।। २ ।। वह प्रभु स्वयं ही शब्द है, सत्य रूप में साक्षी है और वह वही है जिसने हमारी ज्योति को अपनी ज्योति में मिला लिया है। इस कच्चे शरीर को श्वास चलाते-बजाते रहते हैं और गुरमुख बनकर ही अमृत प्राप्त किया जाता है ।। ३ ।। सत्य रूप में वह प्रभु सब ओर इस तरह समाया है कि उसने स्वयं ही सबकी रचना की है और सबको काम धन्धों में लगाया है। हे नानक, प्रभु नाम के बिना कोई भी कुछ नहीं है और प्रभु नाम ही हमें बड़प्पन प्रदान करता है ।। ४ ।। ८ ।। मलार महला ३ ।। अहंकार के विष में यह मन मोहित बना हुआ है और इसने अपने आपको बहुत बड़े अजगर के भार से लाद रखा है। जब गारुड़ी मन्त्र जैसा प्रभु का नाम रूपी शब्द जीव के मुँह में पड़ गया तो प्रभु इसके अहंकार का विष उतार देता है ।। १ ।। हे मन, अहंकार और मोह का दुख बहुत भारी होता है। इस संसार सागर को पार नहीं किया जा सकता परन्तु हे जीव, तू गुरमुख बनकर प्रभु के माध्यम से इसको पार कर जा ।। १ ।। रहाउ ।। सारी सृष्टि में त्रिगुणात्मक माया के मोह का प्रपंच व्याप्त बना रहता है। सत्संगत के माध्यम से ही तीनों गुणों से ऊँची तुरीय अवस्था को प्राप्त किया जाता है और हे नानक, उसकी कृपादृष्टि से ही जीव पार उतरता है ।। २ ।। चन्दन की गन्ध ऐसी सुगन्धित है कि वह सब तरफ

बासना बहकारि ॥ हरि जन करणी ऊतम है हरि कीरति जगि बिसथारि ॥ ३ ॥ क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मेरे हरि हरि हरि उर धारि ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ मनि जपिआ नामु मुरारि ॥ ४ ॥ ९ ॥

मलार महला ३ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी ॥ कि इहु मनु अवरनु सदा अविनासी ॥ कि इहु मनु चंचलु कि इहु मनु बैरागी ॥ इसु मन कउ ममता किथहु लागी ॥ १ ॥ पंडित इसु मन का करहु बीचारु ॥ अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ ममता करतै लाई ॥ एहु हुकमु करि स्रिसटि उपाई ॥ गुर परसादी बूझहु भाई ॥ सदा रहहु हरि की सरणाई ॥ २ ॥ सो पंडितु जो तिहां गुणा की पंड उतारै ॥ अनदिनु एको नामु वखाणै ॥ सतिगुर की ओहु दीखिआ लेइ ॥ सतिगुर आगै सीसु धरेइ ॥ सदा अलगु रहै निरबाणु ॥ सो पंडितु दरगह परवाणु ॥ ३ ॥ सभनां महि एको एकु वखाणै ॥ जां एको वेखै तां एको जाणै ॥ जा कउ बखसे मेले सोइ ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु होइ ॥ ४ ॥ कहत नानकु कवन बिधि करे किआ कोइ ॥ सोई मुकति जा कउ किरपा होइ ॥ अनदिनु हरि गुण गावै सोइ ॥ सासत्र बेद की फिरि कूक न होइ ॥ ५ ॥ १ ॥ १० ॥ मलार महला ३ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि मनमुख भरमाई ॥ जमकालु मारे नित पति गवाई ॥ सतिगुर सेवा जम की काणि चुकाई ॥ हरि प्रभु मिलिआ महलु घरु पाई ॥ १ ॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जनमु पदारथु दुबिधा खोइआ कउडी बदलै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा गुरमुखि लगै पिआरु ॥ अंतरि भगति हरि हरि उरि धारु ॥ भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ दरि साचै दिसै सचिआरु ॥ २ ॥ बहु करम करे सतिगुरु नही पाइआ ॥ बिनु गुर भरमि भूले बहु माइआ ॥ हउमै ममता बहु मोहु वधाइआ ॥ दूजै भाइ मनमुखि दुखु पाइआ ॥ ३ ॥ आपे करता अगम अथाहा ॥ गुर सबदी जपीऐ सचु लाहा ॥ हाजरु हजूरि हरि वेपरवाहा ॥

अपनी महक बिखेर देती है। प्रभु के सेवकों का आचरण उत्तम है और वे भी प्रभु की कीर्ति को सारे संसार में फैलाते रहते हैं ।। ३ ।। हे मेरे ठाकुर, तू कृपा कर और तू प्रभु को मेरे हृदय में धारण करा दे। हे नानक, मैंने सच्चा गुरु पा लिया है और अब मेरां मन उस प्रभु नाम का ही सुमिरन करता रहता है ।। ४ ।। ६ ।।

मलार महला ३ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

यह मन गृहस्थी है कि यह मन उदासीन है। क्या यह मन वर्ण-आश्रम से ऊपर उठकर सदैव अविनाशी बना रहता है? क्या यह मन चंचल है अथवा बैरागी है? यह बताया जाए कि इस मन को मैं मेरी का भाव कहां से लगा है? ।। १ ।। हे पंडित, इस मन के बारे में ही चिन्तन करो और अन्य बहुत कुछ पढ़कर भार मत उठाए रखो ।। १।। रहाउ ।। यह माया और ममता उस कर्ता ने ही जीव को लगाई है और अपने हुकुम के अन्तर्गत ही उसने यह सृष्टि उत्पन्न की है। गुरु की कृपा से हे भाई, इस रहस्य को बूझ लो और सदैव प्रभु की शरण में बने रहो ।। २ ।। पंडित वही है जो तीनों गुणों की गठरी को सिर से उतार कर रख देता है और प्रत्येक दिन केवल एक प्रभु के नाम का ही बखान करता है। सच्चे गुरु से ही वह दीक्षा लेता है और सच्चे गुरु के सामने अपना शीश अर्पण कर देता है। वह सदैव अलग बना रहकर अलिप्त भाव में स्थित रहता है और ऐसा पंडित ही प्रभु के दरबार में स्वीकृत होता है ।। ३ ।। सब में वह केवल एक प्रभु को ही स्थित कहता है और फिर जब वह एक को ही देखता है तो उस एक प्रभु को ही जानता है। जिस पर कृपा करता है उसी को वह अपने से मिला लेता है और उसी व्यक्ति को यहां और वहां सदैव सुख प्राप्त होता है ।। ४ ।। नानक कहता है कि मुक्ति का सुख प्राप्त करने के लिये कोई कौन सी विधि अपना सकता है। मुक्त वही होता है जिस पर इस प्रभु की कृपा होती है। वही प्रत्येक दिन प्रभु के गुण गाता है और वेदों, शास्त्रों की पाबन्दी उससे दूर हट जाती है ।। ५ ।। १ ।। १० ।। मलार महला ३ ।। योनियों में भटकता हुआ मनमुख व्यक्ति भ्रमों में पड़ा रहता है। यमकाल उसे मारता रहता है और वह सदैव अपने सम्मान को गंवाता रहता है। सच्चे गुरु की सेवा से यम की मोहताजी दूर हो जाती है और प्रभु को हृदय रूपी महल में ही प्राप्त कर लिया जाता है ।। १ ।। हे प्राणी, गुरमुख बनकर प्रभु के नाम का सुमिरन कर। तूने इस जीवन रूपी पदार्थ को दुविधा में पड़कर खो दिया है और यह कौड़ियों के भाव तेरे हाथ से जा रहा है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, कृपा कर ताकि हम गुरमुख बनें और तुझसे हमारा प्रेम लग जाए। हमारे हृदय में तेरी भक्ति बनी रहे और प्रभु को हम अपने अन्तर्मन में बसाए रखें। इस संसार सागर से शब्द ही पार उतारने वाला है और जिन्होंने प्रभु को हृदय में धारण कर लिया है वे उसके सच्चे द्वार पर साकार रूप में दिखाई देते हैं ।। २ ।। अनेकों कर्मकाण्ड करता रहता है इसलिए यह जीव सच्चे गुरु को प्राप्त नहीं कर पाता। गुरु से विहीन बनकर जीव माया के प्रपंचों में और भ्रमों में भटकता रहता है। अहंकार और ममता के साथ वह अपने मोह को बढ़ाता जाता है और द्वैतभाव में लीन मनमुख दुख प्राप्त करता रहता है ।। ३ ।। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही अगम्य और अथाह है। शब्द-गुरु के माध्यम से उसका सुमिरन करके सच्चा लाभ प्राप्त किया जाता है। वह बेपरवाह प्रभु सदैव प्रत्यक्ष बना रहता है और

नानक गुरमुखि नामि समाहा ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ मलार महला ३ ॥ जीवत मुकत गुरमती लागे ॥ हरि की भगति अनदिनु सद जागे ॥ सतिगुरु सेवहि आपु गवाइ ॥ हउ तिन जन के सद लागउ पाइ ॥ १ ॥ हउ जीवां सदा हरि के गुण गाई ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु अगिआनु गुबारु ॥ मनमुख मोहे मुगध गवार ॥ अनदिनु धंधा करत विहाइ ॥ मरि मरि जंमहि मिलै सजाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि राम नामि लिव लाई ॥ कूड़ै लालचि ना लपटाई ॥ जो किछु होवै सहजि सुभाइ ॥ हरि रसु पीवै रसन रसाइ ॥ ३ ॥ कोटि मधे किसहि बुझाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ जो धुरि मिलिआ सु विछुड़ि न जाई ॥ नानक हरि हरि नामि समाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मलार महला ३ ॥ रसना नामु सभु कोई कहै ॥ सतिगुरु सेवे ता नामु लहै ॥ बंधन तोड़े मुकति घरि रहै ॥ गुर सबदी असथिरु घरि बहै ॥ १ ॥ मेरे मन काहे रोसु करीजै ॥ लाहा कलजुगि राम नामु है गुरमति अनदिनु हिरदै रवीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ ॥ बिनु पिर देखे नींद न पाइ ॥ इहु वेछोड़ा सहिआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै तां मिलै सुभाइ ॥ २ ॥ नामहीणु बिनसै दुखु पाइ ॥ त्रिसना जलिआ भूख न जाइ ॥ विणु भागा नामु न पाइआ जाइ ॥ बहु बिधि थाका करम कमाइ ॥ ३ ॥ त्रै गुण बाणी बेद बीचारु ॥ बिखिआ मैलु बिखिआ वापारु ॥ मरि जनमहि फिरि होहि खुआरु ॥ गुरमुखि तुरीआ गुणु उरि धारु ॥ ४ ॥ गुरु मानै मानै सभु कोइ ॥ गुर बचनी मनु सीतलु होइ ॥ चहु जुगि सोभा निरमल जनु सोइ ॥ नानक गुरमुखि विरला कोइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ९ ॥ १३ ॥ २२ ॥

रागु मलार महला ४ घरु १ चउपदे १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

अनदिनु हरि हरि धिआइओ हिरदै मति गुरमति दूख विसारी ॥ सभ आसा मनसा बंधन तूटे हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥ १ ॥ नैनी हरि हरि लागी तारी ॥ सतिगुरु देखि मेरा मनु बिगसिओ जनु

हे नानक, केवल गुरमुख ही प्रभु-नाम में समाया रहता है ।। ४ ।। २ ।। ११ ।। मलार महला ३ ।। जो गुरु की शिक्षा में चलते हैं वे जीवन में ही मुक्त हो जाते हैं। वे प्रभु की भक्ति के माध्यम से सदैव जाग्रत बने रहते हैं। वे अहंकार भाव को गँवा कर सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं और मैं सदैव ऐसे सेवकों के चरणों का स्पर्श करता हूँ।। १।। प्रभु के गुणों का गायन गा के ही मैं सदैव जीवित बना रहता हूँ। शब्द-गुरु का महारस अत्यन्त मीठा है और प्रभु के नाम के माध्यम से ही मुक्ति और गति प्राप्त होती है।। १ ।। ।। माया और मोह अज्ञान का घोर अंधकार है और घोर मूर्ख तथा गँवार बनकर मनमुख व्यक्ति इसी में लीन बने रहते हैं। धन्धों के प्रपंच करते हुए उनका प्रत्येक दिन बीतता जाता है तथा वे मर मरकर जन्मते रहतें हैं और उन्हें सजा मिलती रहती है।। २ ।। जो गुरमुख बन जाता है उसकी लौ राम नाम में लग जाती है और वह झूठे लालच में नहीं लिपटता। इस संसार में जो कुछ भी होता है वह स्वाभाविक रूप से ही होता है तथा इस रहस्य को जानने वाला अपनी रसपूर्ण जीभ से प्रभु के रस का पान करता है ।। ३ ।। करोड़ों में किसी एक को ही प्रभु यह रहस्य समझाता है और स्वयं ही उसे बड़प्पन प्रदान करके कृतार्थ कर देता है। जो प्रारम्भ से ही प्रभु से मिला हुआ है वह फिर उससे बिछुड़ता नहीं और हे नानक, वह प्रभु के नाम में लीन बना रहता है ।। ४ ।। ३ ।। १२ ।। मलार महला ३ ।। केवल जीभ से तो सब कोई प्रभु के नाम का उच्चारण करते हैं परन्तु यदि वास्तव में सच्चे गुरु का सुमिरन करे तो जीव प्रभु नाम को समझ पाता है। वह बन्धनों को तोड़कर मुक्ति पद में निवास कर लेता है और शब्द-गुरु के माध्यम से सदा अटल बने रहने वाले प्रभु के घर में स्थित हो जाता है ।। १।। हे मेरे मन, तू क्यों गुस्सा करता है। प्रभु का नाम ही कलियुग में सबसे बड़ा लाभ है और गुरु की शिक्षा के माध्यम से तू हर रोज़ हृदय में उसका सुमिरन करता रह ।। १ ।। रहाउ ।। पपीहा प्रत्येक क्षण पुकार लगाए रहता है और प्रियतम को देखे बगैर उसे नींद नहीं पड़ती। यह वियोग उससे सहा नहीं जाता परन्तु सच्चा गुरु तो सहज स्वाभाविक रूप से ही मिलता है; ज्यादा चीखने-चिल्लाने से वह प्राप्त नहीं होता ।। २ ।। प्रभु नाम से विहीन होकर वह दुख पाता हुआ नष्ट हो जाता है और वह तृष्णा में जलता रहता है तथा उसकी भूख नहीं जाती। भाग्य लेखों के बिना प्रभु नाम पाया नहीं जाता और जीव अनेकों विधियां और कर्मकाण्ड करता हुआ थक जाता है ।। ३ ।। त्रिगुणात्मक गुणों वाली वेद वाणी का वह विचार करके यह जान जाता है कि यह तो विषय-विकारों का ही लेन-देन है और यह विषयों का ही व्यापार है। वह मरकर जन्म लेता और बार-बार ख्वार होता रहता है। व्यक्ति गुरमुख बनकर चौथी अवस्था तुरीय के गुणों को हृदय में धारण कर पाता है ।। ४ ।। जो गुरु को मानता है सब उसका आदर और सम्मान करते हैं। गुरु के उपदेश से ही मन शीतल होता है। चारों युगों में सेवक की निर्मल महिमा बनी रहती है और हे नानक, गुरमुख इस संसार में कोई बिरला ही होता है ।। ५ ।। ४ ।। १३ ।। ६ ।। १३ ।। २२ ।।

रागु मलार महला ४ घरु १ चौपदे १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जब प्रत्येक दिन हृदय में प्रभु का सुमिरन किया जाता है तो गुरु की शिक्षा में चलते हुए दुख दूर हो जाते हैं। जब प्रभु कृपा करता है तो आशाओं, इच्छाओं के सभी बन्धन टूट जाते हैं ।। १ ।। आँखों में उस प्रभु की समाधि लगी रहती है। सच्चे गुरु को देखकर मेरा मन खिल उठा है और प्रभु के इस सेवक ने

हरि भेटिओ बनवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि ऐसा नामु विसारिआ मेरा हरि हरि तिस कै कुलि लागी गारी ॥ हरि तिस कै कुलि परसूति न करीअहु तिसु बिधवा करि महतारी ॥ २ ॥ हरि हरि आनि मिलावहु गुरु साधू जिसु अहिनिसि हरि उरि धारी ॥ गुरि डीठै गुर का सिखु बिगसै जिउ बारिकु देखि महतारी ॥ ३ ॥ धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला ४ ॥ गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई ॥ किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई ॥ १ ॥ तीरथि अठसठि मजनु नाई ॥ सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाहरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई ॥ कांसी क्रिसनु चरावत गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई ॥ २ ॥ जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई ॥ हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिस की धूरि मुखि लाई ॥ ३ ॥ जितनी स्रिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई ॥ नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि लंघाई ॥ ४ ॥ २ ॥ मलार महला ४ ॥ तिसु जन कउ हरि मीठ लगाना जिसु हरि हरि क्रिपा करै ॥ तिस की भूख दूख सभि उतरै जो हरि गुण हरि उचरै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि हरि निसतरै ॥ गुर के बचन करन सुनि धिआवै भव सागरु पारि परै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन के हम हाटि बिहाझे जिसु हरि हरि क्रिपा करै ॥ हरि जन कउ मिलिआं सुखु पाईऐ सभ दुरमति मैलु हरै ॥ २ ॥ हरि जन कउ हरि भूख लगानी जनु त्रिपतै जा हरि गुन बिचरै ॥ हरि का जनु हरि जल का मीना हरि बिसरत फूटि मरै ॥ ३ ॥ जिनि एह प्रीति लाई सो जानै कै जानै जिसु मनि धरै ॥ जनु नानकु हरि देखि सुखु पावै सभ तन की भूख टरै ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला ४ ॥ जितने जीअ जंत प्रभि कीने तितने सिरि कार लिखावै ॥ हरि जन कउ हरि दीन्ह वडाई हरि जनु हरि कारै लावै ॥ १ ॥ सतिगुरु हरि हरि नामु द्रिड़ावै ॥

उस प्रभु से मिलाप कर लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। जिसने मेरे प्रभु के इस तरह के नाम को भुला दिया है इसके कुल को बदनामी ही मिलती है। हे प्रभु, ऐसे कुल में तो बच्चे का जन्म ही मत देना और वहां माँ को विध्वा ही कर दे ताकि बच्चा ना हो सके ।। २ ।। हे प्रभु, मुझे साधु गुरु से मिला लो जिससे मैं दिन रात प्रभु को हृदय में धारण किए रहूँ। जैसे माँ को देखकर बच्चा प्रसन्न होता है इसी प्रकार गुरु का सिक्ख गुरु का दर्शन करके खिल उठता है ।। ३ ।। वास्तव में जीव रूपी स्त्री और परमात्मा रूपी पति का निवास तो एक ही स्थान (हृदय) में है परन्तु इन दोनों के बीच जीव के अहंकार की मजबूत दीवार है जिससे जीव स्त्री प्रियतम प्रभु को देख नहीं पाती। पूर्ण गुरु अहंकार की इस दीवार को तोड़ देता है और हे नानक, इस सेवक का उस प्रभु से मिलाप हो जाता है ।। ४ ।। १ ।। मलार महला ४ ।। गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती आदि तीर्थ स्थानों वाली नदियाँ भी साधु पुरुषों की चरण-धूलि के लिये प्रयत्न करती रहती हैं। नदियों का कथन है कि हमारे अन्दर पापों की मैल भरी रहती और हमारी ये मैल साधु पुरुषों की चरण धूलि में मिलकर नष्ट हो जाती है ।। १ ।। बेशक हम अड़सठ तीर्थों पर स्नान करते रहें परन्तु जब सत्संगत की चरण धूलि उड़कर हमारी आँखों पर लगती है तो हमारी सारी दुर्मति और मन की मैल दूर होती है ।। १ ।। रहाउ ।। जाह्नवी अर्थात गंगा को तपस्वी भगीरथ नीचे लेकर आया था और शिवजी ने केदार तीर्थ की स्थापना की थी। काशी ने और जहां कृष्ण ने गायें चराई थीं इन सभी ने प्रभु के सेवकों से मिलकर ही शोभा प्राप्त की है ।। २ ।। देवी-देवताओं ने जितने भी तीर्थों की स्थापना की है सभी साधु पुरुषों की चरण धूलि की कामना करते हैं। हे नानक, जिसके माथे पर लेख लिखा हो प्रभु उसे साधु पुरुषों की चरण धूलि प्रदान कर पार उतार देता है ।। ४ ।। २ ।। मलार महला ४ ।। प्रभु जिस सेवक पर कृपा करता है उसे ही प्रभु अच्छा लगता है। वह प्रभु के गुणों का गायन करता रहता है। उसकी सारी भूख और सभी दुख उतर जाते हैं ।। १ ।। हे मन, प्रभु का सुमिरन कर करके ही तू पार उतर सकेगा। जो गुरु के उपदेश को कानों से सुनकर उन्हें याद रखता है (और जीवन में उतारता है) वह भवसागर से पार उतर जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। ऐसे सेवक के लिए हम बाजार में बिके हुए हैं जिस पर प्रभु ने कृपा की होती है। प्रभु के सेवक को मिलने से सुख प्राप्त होता है और दुर्मति की सारी मैल दूर हो जाती है।। २ ।। प्रभु के सेवक को प्रभु ने ही प्रेम की भूख लगाई होती है और यह सेवक तभी सन्तुष्ट होता है जब यह प्रभु के गुणों का उच्चारण करते हुए उनमें विचरण करता रहता है अर्थात अपने जीवन को उन्हीं गुणों के अनुरूप ढ़ालता है। प्रभु का सेवक तो प्रभु रूपी जल की मछली है जो प्रभु को भूलते ही टूकड़े-टुकड़े होकर मर जाती है ।। ३ ।। जिस प्रभु ने यह प्रेम लगाया होता है वही इसे जानता है अथवा वह व्यक्ति जानता है जिसके हृदय में वह प्रभु इस प्रेम को स्थिर करता है। दास नानक प्रभु को देखकर ही सुख प्राप्त करता है और इसके शरीर की सारी भूख दूर हो जाती है ।। ४ ।। ३ ।। मलार महला ४ ।। प्रभु ने जितने भी जीव-जन्तु उत्पन्न किए हैं वे सभी अपने माथे पर प्रभु के हुकुम रूपी कार्यों को लिखाकर ही लाते हैं। प्रभु के सेवक को प्रभु बड़प्पन प्रदान करता है और प्रभु ही अपने सेवक को कार्यशील बनाए रहता है ।। १ ।। सच्चा गुरु प्रभु के नाम को हृदय में पक्का करवाता रहता है।

हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजलु जगतु तरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो गुर कउ जनु पूजे सेवे सो जनु मेरे हरि प्रभ भावै ॥ हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि किरपा आपि तरावै ॥ २ ॥ भरमि भूले अगिआनी अंधुले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ॥ निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै ॥ ३ ॥ ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै ॥ तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर बहु बिधि सति करि मुखि संचहु तिसु पुंन की फिरि तोटि न आवै ॥ ४ ॥ सतिगुरु देउ परतखि हरि मूरति जो अंम्रित बचन सुणावै ॥ नानक भाग भले तिसु जन के जो हरि चरणी चितु लावै ॥ ५ ॥ ४ ॥ मलार महला ४ ॥ जिन्ह कै हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भांति ॥ तिन्ह देखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सद बलि जांत ॥ १ ॥ गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ॥ तिन्ह की त्रिसना भूख सभ उतरी जो गुरमति राम रसु खांति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ लहि जाइ भरांति ॥ जिउ जल दुध भिंन भिंन काढै चुणि हंसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधू हउमै ताति ॥ २ ॥ जिन कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमांति ॥ तिन कउ किआ कोई देइ खवालै ओइ आपि बीजि आपे ही खांति ॥ ३ ॥ हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जन महि आपु रखांति ॥ धनु धंनु गुरू नानकु समदरसी जिनि निंदा उसतति तरी तरांति ॥ ४ ॥ ५ ॥ मलार महला ४ ॥ अगमु अगोचरु नामु हरि ऊतमु हरि किरपा ते जपि लइआ ॥ सतसंगति साध पाई वडभागी संगि साधू पारि पइआ ॥ १ ॥ मेरै मनि अनदिनु अनदु भइआ ॥ गुर परसादि नामु हरि जपिआ मेरे मन का भ्रमु भउ गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन हरि गाइआ जिन हरि जपिआ तिन संगति हरि मेलहु करि मइआ ॥ तिन का दरसु देखि सुखु पाइआ दुखु हउमै रोगु गइआ ॥ २ ॥ जो अनदिनु हिरदै नामु धिआवहि सभु जनमु तिना का सफलु भइआ ॥ ओइ आपि तरे स्रिसटि सभ तारी सभु कुलु भी पारि पइआ ॥ ३ ॥ तुधु आपे आपि उपाइआ सभु जगु तुधु

हे मेरे भाई और गुरु के सिक्खो, प्रभु का सुमिरन करो क्योंकि प्रभु ही संसार रूपी सागर से पार उतारता है ।। १ ।। रहाउ ।। जो सेवक गुरु की वन्दना और उसका सुमिरन करता है वह सेवक मेरे प्रभु को अच्छा लगता है। सच्चे गुरु की वन्दना ही प्रभु की सेवा है और सच्चा गुरु ही कृपा करके स्वयं जीव को पार उतार देता है ।। २ ।। भ्रमों में भूले हुए अन्धे अज्ञानी इधर-उधर भटक कर पूजा आदि के लिए फल तोड़ते रहते हैं। बेजान पत्थरों की ये पूजा-अर्चना करते हैं और इस प्रकार अपने सारे परिश्रम को व्यर्थ ही गंवा देते हैं ।। ३ ।। जो ब्रह्म को जानता है उसे ही सच्चा गुरु कहा जाता है और वही प्रभु की कथा वार्ता सुनाता रहता है। उस गुरु के पास वस्त्र भोजन और अनेकों प्रकार के रेशमी कपड़े होते हैं इसलिए हे भाई, इसे ही सत्य मानकर इसकी ओर मुख बनाए रखो और इस पुण्य कार्य के कारण तुम्हें फिर कोई भी कमी नहीं रहेगी ।। ४ ।। सच्चा गुरु ही प्रत्यक्ष प्रभु का रूप है जो अमृत वचनों को सुनाता रहता है। हे नानक, उस सेवक के भाग्य लेख भले हैं जो प्रभु के चरणों में चित्त लगाए रहता है ।। ४ ।। ४ ।। मलार महला ४ ।। जिनके हृदय में मेरे सच्चे गुरु ने निवास कर लिया है वही शान्त-पुरुष भली प्रकार से भले हैं। उन्हें देखकर मेरा मन खिल उठता है और मैं सदैव उनपर बलिहारी जाता हूं ।। १ ।। हे ज्ञानवान पुरुषो, दिन-रात प्रभु का सुमिरन करते रहो। जो गुरु की शिक्षा के माध्यम से प्रभु नाम के रस को पीते रहते हैं उनकी सारी तृष्णा और भूख उतर जाती है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के सेवक साधु-पुरुषों के और प्रभु के अन्य सेवकों के मित्र होते हैं और उन्हें मिलकर सभी भ्रम नष्ट हो जाते हैं। जैसे हंस जल में से दूध को अलग निकाल लेता है इसी प्रकार साधु पुरुष इस शरीर में से अहंकार की पीड़ा को निकाल लेता है ।। २ ।। जिनके हृदय में प्रभु की प्रीति नहीं होती वे कपटी व्यक्ति सदैव कपट ही कमाते रहते हैं। उन्हें भला कोई क्या देगा और क्या खिलाएगा क्योंकि वे जो बोते हैं उसे स्वयं ही खाते रहते हैं ।। ३ ।। जो प्रभु का लक्षण है वही प्रभु के सेवकों का चिन्ह है और प्रभु स्वयं अपने आपको सेवक में स्थित करता है। समदर्शी गुरु नानक धन्य है जिसने निन्दा और स्तुति से अलिप्त होकर अन्यों को भी उसी तरह का बना कर पार उतार दिया है ।। ४ ।। ५ ।। मलार महला ४ ।। अगम्य अगोचर प्रभु का नाम सर्वोत्तम है जिसका सुमिरन हमने प्रभु की कृपा से कर लिया है। बड़े भाग्य से हमने साधु पुरुषों की सत्संगत प्राप्त की है और उन साधु पुरुषों के साथ ही हम पार उतर गए हैं ।। १ ।। मेरे मन में अब प्रतिदिन आनन्द बना रहता है। गुरु की कृपा से मैनें जब प्रभु-नाम का सुमिरन किया तो मेरे मन का भ्रम और भय नष्ट हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, मुझे कृपा करके उन्हीं की संगत में बनाए रखो जिन्होंने प्रभु का गायन और सुमिरन किया हुआ है। उन्हीं का दर्शन देखकर मैंने सुख प्राप्त किया है और अहंकार के रोग का दुख अब मेरे पास से चला गया है ।। २ ।। जो प्रत्येक दिन अपने हृदय में प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं उन सबका जीवन सफल हो जाता है। वे स्वयं पार उतरते हैं, सारी सृष्टि को पार उतारते हैं और उनका वंश भी पार उतर जाता है ।। ३ ।। यह सारा संसार तूने स्वयं ही उत्पन्न किया है और स्वयं तूने ही इसे

आपे वसि करि लइआ ॥ जन नानक कउ प्रभि किरपा धारी बिखु डुबदा काढि लइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ मलार महला ४ ॥ गुर परसादी अंम्रितु नही पीआ त्रिसना भूख न जाई ॥ मनमुख मूढ़ जलत अहंकारी हउमै विचि दुखु पाई ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई ॥ जिस ते उपजे तिसहि न चेतहि ध्रिगु जीवणु ध्रिगु खाई ॥ १ ॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआई ॥ हरि हरि क्रिपा करे गुरु मेले हरि हरि नामि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख जनमु भइआ है बिरथा आवत जात लजाई ॥ कामि क्रोधि डूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥ तिन सिधि न बुधि भई मति मधिम लोभ लहरि दुखु पाई ॥ गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे बिललाई ॥ २ ॥ हरि का नामु अगोचरु पाइआ गुरमुखि सहजि सुभाई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना हरि गुण गाई ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती एक सबदि लिव लाई ॥ नामु पदारथु सहजे पाइआ इह सतिगुर की वडिआई ॥ ३ ॥ सतिगुर ते हरि हरि मनि वसिआ सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ मनु तनु अरपि रखउ सभु आगै गुर चरणी चितु लाई ॥ अपणी क्रिपा करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई ॥ हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लंघाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

मलार महला ४ पड़ताल घरु ३ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जन बोलत स्रीराम नामा मिलि साधसंगति हरि तोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि धनु बनजहु हरि धनु संचहु जिसु लागत है नही चोर ॥ १ ॥ चात्रिक मोर बोलत दिनु राती सुनि घनिहर की घोर ॥ २ ॥ जो बोलत है म्रिग मीन पंखेरू सु बिनु हरि जापत है नही होर ॥ ३ ॥ नानक जन हरि कीरति गाई छूटि गइओ जम का सभ सोर ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ मलार महला ४ ॥ राम राम बोलि बोलि खोजते बडभागी ॥ हरि का पंथु कोऊ बतावै हउ ता कै पाइ लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हमारो मीतु सखाई हम

अपने वश में करके रखा है। हे नानक, तूने अपने सेवकों पर कृपा धारण की है और इन्हें विषय-विकारों में डूबते हुओं को बाहर निकाल लिया है ।। ४।। ६ ।। मलार महला ४ ।। गुरु की कृपा से यदि तूने अमृत का पान नहीं किया तो तेरी तृष्णा और भूख समाप्त नहीं होगी। मूर्ख मनमुख व्यक्ति अहंकार में जलता रहता है और अपनी मैं-मैं में ही दुख उठाता रहता है। आवागमन में पड़े हुए उसने अपने जीवन को व्यर्थ में गंवा दिया है और दुख में पड़ा हुआ वह पछताता रहता है। जिससे वह उत्पन्न हुआ उसने उस प्रभु का सुमिरन नहीं किया इसलिये उसका जीवन और उसका खाना-पीना सब धिक्कार योग्य है ।। १ ।। हे प्राणी, गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन कर। प्रभु ही कृपा करता है तो गुरु से मिलाप होता है और जीव प्रभु के नाम में लीन हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। मनमुख का जीवन व्यर्थ हो जाता है और आवागमन में पड़ा हुआ वह सदैव लज्जित होता रहता है। अभिमानी बने हुए मनमुख व्यक्ति काम, क्रोध में डूबे रहते हैं और अपनी मैं-मैं में ही जलते रहते हैं। उनके पास ना तो कोई कार्य कुशलता होती है ना ही बुद्धि होती है और नीच मति के कारण लोभ की लहरों में पड़े हुए वे दुख पाते रहते हैं। गुरु से विहीन बने हुए ऐसे लोग महा दुख पाते रहते हैं और जब यम इन्हें आकर पकड़ता है तो ये चीख-पुकार लगाते रहते हैं ।। २ ।। गुरमुख बनकर व्यक्ति सहज स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के अगोचर नाम को प्राप्त कर लेता है ; प्रभु-नाम का यह भण्डार उसके हृदय में बस जाता है और वह अपनी जीभ से अपने अन्तर्मन में ही प्रभु के गुण गाता रहता है। सच्चे गुरु का यही बड़प्पन है कि उसके संग बने रहने से प्रभु नाम रूपी पदार्थ स्वाभाविक रूप से ही प्राप्त हो जाता है ।। ३ ।। सच्चे गुरु से ही प्रभु मन में बसा है इसलिए मैं सच्चे गुरु पर सदैव बलिहारी जाता रहता हूं। मैं अपना मन तन पूर्ण रूप से अर्पण करके उसके सामने रखता हूं और गुरु के चरणों में अपना ध्यान लगाए रहता हूं। हे पूर्ण, गुरु मुझ पर अपनी कृपा करो और स्वयं ही मुझे अपने से मिला लो। हे नानक, हम लोहे हैं और गुरु वह नाव और बड़ा जहाज है जिसके साथ लोहा भी पार उतर जाता है ।। ४ ।। ७ ।।

मलार महला ४ पड़ताल घरु ३   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे प्रभु, तेरी साधसंगत से मिलकर हम प्रभु के सेवक श्री राम (प्रभु नाम) का उच्चारण करते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु रूपी धन का व्यापार करो, प्रभु रूपी धन को ही एकत्र करो क्योंकि इसे चोर नही चुरा सकता ।। १ ।। बादल की गर्जना को सुनकर चातक और मोर आदि दिन रात बोलते ही रहते हैं ।। २ ।। इसी प्रकार जो जानवर, मछलियां और पक्षी आदि बोलते हैं वे भी प्रभु के बिना अन्य किसी का सुमिरन नहीं करते ।। ३ ।। हे नानक, सेवकों ने जव अपने प्रभु की कीर्ति का गायन किया तो उनके चारों ओर से भी यम का शोर-शराबा नष्ट हो गया है ।। ४ ।। १ ।। ८ ।। मलार महला ४ ।। भाग्यशाली लोग राम राम बोलते हुए उस प्रभु को खोजते रहते हैं। कोई मुझे उस प्रभु का मार्ग बता दे तो मैं उसके चरणों में लगा रहूं ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ही हमारा मित्र और सखा और हमारी

हरि सिउ प्रीति लागी ॥ हरि हम गावहि हरि हम बोलहि अउरु दुतीआ प्रीति हम तिआगी ॥ १ ॥ मनमोहन मोरो प्रीतम रामु हरि परमानंदु बैरागी ॥ हरि देखे जीवत है नानकु इक निमख पलो मुखि लागी ॥ २ ॥ २ ॥ ९ ॥ ९ ॥ १३ ॥ ९ ॥ ३१ ॥

रागु मलार महला ५ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किआ तू सोचहि किआ तू चितवहि किआ तूं करहि उपाए ॥ ता कउ कहहु परवाह काहू की जिह गोपाल सहाए ॥ १ ॥ बरसै मेघु सखी घरि पाहुन आए ॥ मोहि दीन क्रिपा निधि ठाकुर नव निधि नामि समाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन बहु कीए बहु बिंजन मिसटाए ॥ करी पाकसाल सोच पवित्रा हुणि लावहु भोगु हरि राए ॥ २ ॥ दुसट बिदारे साजन रहसे इहि मंदिर घर अपनाए ॥ जउ ग्रिहि लालु रंगीओ आइआ तउ मै सभि सुख पाए ॥ ३ ॥ संत सभा ओट गुर पूरे धुरि मसतकि लेखु लिखाए ॥ जन नानक कंतु रंगीला पाइआ फिरि दूखु न लागै आए ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला ५ ॥ खीर अधारि बारिकु जब होता बिनु खीरै रहनु न जाई ॥ सारि सम्हालि माता मुखि नीरै तब ओहु त्रिपति अघाई ॥ १ ॥ हम बारिक पिता प्रभु दाता ॥ भूलहि बारिक अनिक लख बरीआ अन ठउर नाही जह जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंचल मति बारिक बपुरे की सरप अगनि कर मेलै ॥ माता पिता कंठि लाइ राखै अनद सहजि तब खेलै ॥ २ ॥ जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिसु बारिक भूख कैसी ॥ नव निधि नामु निधानु ग्रिहि तेरै मनि बांछै सो लैसी ॥ ३ ॥ पिता क्रिपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि मांगै सो देना ॥ नानक बारिकु दरसु प्रभ चाहै मोहि ह्रिदै बसहि नित चरना ॥ ४ ॥ २ ॥ मलार महला ५ ॥ सगल बिधी जुरि आहरु करिआ तजिओ सगल अंदेसा ॥ कारजु सगल अरंभिओ घर का ठाकुर का भारोसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनीऐ बाजे बाज सुहावी ॥ भोरु भइआ मै प्रिअ मुख पेखे ग्रिहि मंगल सुहलावी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनूआ लाइ सवारे थानां पूछउ संता जाए ॥ खोजत खोजत मै पाहुन

प्रीति तो प्रभु के साथ ही लगी हुई है। हम तो हरि का ही गायन करते हैं, हरि के नाम का ही उच्चारण करते हैं तथा हमने द्वैतभाव की प्रीति को त्याग दिया है ।। १ ।। राम ही मेरा मनमोहन और प्रियतम है और वही प्रभु परम आनन्द और वैराग्य का स्वरूप है। यदि एक पल के लिए भी प्रभु का दर्शन हो जाए तो नानक उस प्रभु को देखकर ही जीवित बना रहता है ।। २ ।। २ ।। ६ ।। ६ ।। १३ ।। ६ ।। ३१ ।।

रागु मलार महला २ चौपदे घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

तू क्या सोचता है क्या मन में बिठाए रहता है और तू अब कौन से उपायों में लगा हुआ है। जिसका प्रभु सहायक है उसे भला किसी की क्या परवाह हो सकती है ।। १ ।। हे सखी, हृदय रूपी घर में प्रभु रूपी मेहमान आ गए हैं और उनके उपदेश रूपी बादल बरस रहे हैं। हे कृपा के समुद्र मेरे मालिक, मुझ दीन पर कृपा बनाए रखो और नवनिधियों के भण्डार नाम में मुझे लीन कर लो ।। १ ।। रहाउ ।। मैंने अच्छे आचरण के अनेकों प्रकार के भोजन, व्यंजन और मिठाईयाँ बनाई हैं; मैंने अपनी हृदय रूपी रसोई को स्वच्छ और पवित्र बना लिया है इसलिये हे प्रभु, अब तुम मुझे ग्रहण कर लो ।। २ ।। मेरे शरीर को अपना घर बना कर तुमने दुष्टों का नाश कर दिया है और सज्जन पुरुषों को आनन्द प्रदान किया है। जब मेरे हृदय रूपी घर में रंगीला प्रियतम आन बसा है तब मुझे सभी सुख प्राप्त हो गए हैं ।। ३ ।। प्रारम्भ से ही माथे पर लेख लिखे होने के कारण ही शान्त पुरुषों की सभा और पूर्ण गुरु का आसरा प्राप्त होता है। दास नानक ने प्रेमी प्रियतम प्रभु रूपी मालिक पा लिया है और अब दुख उसके पास भी नहीं आता ।। ४ ।। १ ।। मलार महला ४ ।। जब बच्चा दूध के आसरे में ही पलता है तब वह दूध के बिना रह नहीं पाता। उसकी माँ ही उसकी सम्भाल करती है और उसके मुख में जब उसका भोजन उसे देती है तभी वह तृप्त और प्रसन्न होता है ।। १ ।। हम बच्चे हैं और दाता प्रभु पिता है। लाखों बार हम बालक भूलें करते हैं परन्तु फिर भी हमें अन्य कोई ठिकाना नहीं है जहाँ हम जाएं ।। १ ।। रहाउ ।। बेचारे बालक की बुद्धि इतनी अल्प और चंचल होती है कि वह साँप और आग दोनों को ही हाथ डाल लेता है। जब माता-पिता उसे गले से लगा कर रखते हैं तभी वह आनन्दित होकर स्वाभाविक रूप से ही खेल खेलता रहता है ।। २ ।। हे मालिक, जिसका पिता तू है उस बच्चे को कैसी भूख बनी रहेगी ।। १ ।। निधियों का रूप, नाम का भण्डार तेरे घर में ही है और पिता ने भी यह आज्ञा कर दी है कि यह बालक जो भी मुख से मांगे उसे दे दिया जाए। हे नानक, बालक तो सदैव प्रभु का दर्शन चाहते हुए यही कहता है कि मेरे हृदय में प्रभु के चरण सदैव बसते रहें ।। ४ ।। २ ।। मलार महला ५ ।। सभी विधियों को सोच विचार कर हमने यही काम किया है कि सभी भ्रमों और भयों को त्याग दिया है। प्रभु पर विश्वास करके ही हमने अपने हृदय रूपी घर में उससे मिलाप का कार्य प्रारम्भ किया है ।। १ ।। वाद्यों की सुन्दर धुन अब सुनाई पड़ रही है अर्थात आनन्द प्राप्त हो रहा है। दिन निकल आया है अर्थात ज्ञान प्राप्त हो गया है और मैंने उस प्रियतम का दर्शन कर लिया है जिससे मेरे घर में खुशियों के मंगल-गीत शुरू हो गए हैं ।। १ ।। रहाउ ।। मन लगाकर मैंने प्रेम से सभी स्थानों को संवारा है और सन्त पुरुषों से जाकर पूछती हूं कि मेरा प्रियतम कहां है। खोजते-खोजते मुझे प्रियतम

मिलिओ भगति करउ निवि पाए ॥ २ ॥ जब प्रिअ आइ बसे ग्रिहि आसनि तब हम मंगलु गाइआ ॥ मीत साजन मेरे भए सुहेले प्रभु पूरा गुरू मिलाइआ ॥ ३ ॥ सखी सहेली भए अनंदा गुरि कारज हमरे पूरे ॥ कहु नानक वरु मिलिआ सुखदाता छोडि न जाई दूरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला ५ ॥ राज ते कीट कीट ते सुरपति करि दोख जठर कउ भरते ॥ क्रिपा निधि छोडि आन कउ पूजहि आतम घाती हरते ॥ १ ॥ हरि बिसरत ते दुखि दुखि मरते ॥ अनिक बार भ्रमहि बहु जोनी टेक न काहू धरते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिआगि सुआमी आन कउ चितवत मूड़ मुगध खल खर ते ॥ कागर नाव लंघहि कत सागरु ब्रिथा कथत हम तरते ॥ २ ॥ सिव बिरंचि असुर सुर जेते काल अगनि महि जरते ॥ नानक सरनि चरन कमलन की तुम्ह न डारहु प्रभ करते ॥ ३ ॥ ४ ॥

रागु मलार महला ५ दुपदे घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभ मेरे ओइ बैरागी तिआगी ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सकउ प्रीति हमारी लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन कै संगि मोहि प्रभु चिति आवै संत प्रसादि मोहि जागी ॥ सुनि उपदेसु भए मन निरमल गुन गाए रंगि रांगी ॥ १ ॥ इहु मनु देइ कीए संत मीता क्रिपाल भए बडभागी ॥ महा सुखु पाइआ बरनि न साकउ रेनु नानक जन पागी ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥ मलार महला ५ ॥ माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥ सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घरि लालु बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि अवगन प्रभु सदा दइआला मोहि निरगुनि किआ चतुराई ॥ करउ बराबरि जो प्रिअ संगि रांती इह हउमै की ढीठाई ॥ १ ॥ भई निमाणी सरनि इक ताकी गुर सतिगुर पुरख सुखदाई ॥ एक निमख महि मेरा सभु दुखु काटिआ नानक सुखि रैनि बिहाई ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥ मलार महला ५ ॥ बरसु मेघ जी तिलु बिलमु न लाउ ॥ बरसु पिआरे मनहि सधारे होइ अनदु सदा मनि चाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम तेरी

पति मिल गया है और अब मैं उसके चरणों में झुककर उसकी भक्ति करती हूं ।। २ ।। जैसे ही प्रियतम ने मेरे हृदय रूपी घर में आसन लगाकर अपना निवास बना लिया है तो हमने खुशी के गीत गाए हैं। मेरे मित्र सज्जन सभी सुखी हो उठे क्योंकि प्रभु रूपी पूर्ण गुरु से हम मिल गए हैं ।। ३ ।। गुरु के माध्यम से हमारे सभी कार्य पूरे हो गए हैं तथा सखी सहेलियों के रूप में हमारे सत्संगी आनन्दित हो उठे हैं। नानक का कथन है कि सुखदाता प्रभु रूपी वर हमें मिल गया है और उसे छोड़कर हम उससे कभी दूर नहीं होंगे ।। ४ ।। ३ ।। मलार महला ५ ।। राजा से चींटी तक और चींटी से देवताओं के स्वामी इन्द्र तक सभी छोटे-बड़े पापों के कारण जन्मते-मरते रहते हैं। कृपा के समुद्र प्रभु को छोड़कर जो अन्य की पूजा करते हैं वे आत्मघाती और चोर होते हैं ।। १ ।। प्रभु को भुलाकर वे दुखी होकर मरते रहते हैं। वे अनेकों बार बहुत सी योनियों में भटकते रहते हैं और उन्हें कहीं भी कोई आसरा नहीं मिलता ।। १ ।। रहाउ ।। अपने मालिक को त्यागकर जो अन्यों पर ध्यान लगाते हैं वे मूर्ख है, दुष्ट हैं और गधे हैं। कागज की नाव पर समुद्र को कैसे पार किया जा सकता है और लोग तो व्यर्थ में ही कहते हैं कि हम पार उतर गए हैं ।। २ ।। शिव, ब्रह्मा, राक्षस, देवता आदि जितने भी हैं वे काल की अग्नि में जलते रहते हैं। हे नानक, तुम्हें तो प्रभु के चरण कमलों की ही शरण है अतः हे कर्ता प्रभु, तुम हमें दूर मत फेंको ।। ३ ।। ४ ।।

रागु मलार महला ५ दोपदे घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जो वैरागी और त्यागी पुरुष मेरे प्रभु के हैं उनके साथ हमारी प्रीति लगी हुई है और मैं एक क्षण भर के लिये भी उनके बिना रह नहीं सकता ।। १ ।। रहाउ ।। उन्हीं के साथ मुझे प्रभु चित्त में याद आता रहता है और उन सन्त पुरुषों की कृपा से ही मैं ज्ञान में जग कर सावधान हो गया हूँ। उनका उपदेश सुनकर मन निर्मल हो गया है और उनके प्रेम में रंग कर हमने प्रभु के गुण गाए हैं ।। १ ।। इस मन को अर्पण करके हमने शान्त पुरुषों को मित्र बनाया है और हमारे बड़े भाग्य से प्रभु कृपालु बन गए हैं। हे नानक, प्रभु के सेवकों की चरण धूलि से मैंने ऐसा महान सुख प्राप्त किया है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता ।। २ ।। १ ।। ५ ।। मलार महला ५ ।। हे माँ, मुझे उस प्रियतम प्रभु से मिला दो। जिनके हृदय रूपी घर में वह प्यारा प्रभु बसता है मेरी वे सभी सहेलियाँ सुखों में भरी हुई निश्चिंत सो रही हैं ।। १ ।। रहाउ ।। मुझ में तो अवगुण हैं, प्रभु सदैव दयालु बना रहता है तथा मुझ गुण विहीन में कोई भी चतुराई नहीं है। प्रियतम के प्रेम में लीन बनी जीव स्त्रियों के साथ यदि मैं अपनी बराबरी करूं तो यह मेरे अहंकार का ढीठपन है ।। १ ।। विनम्र होकर मैंने सच्चे गुरु की सुखदायक एक ही शरण पर ध्यान लगाया है। हे नानक, उस प्रभु ने एक ही क्षण में मेरा सारा दुख नष्ट कर दिया है और मेरी जीवन रूपी रात्रि सुखमय व्यतीत हुई है ।। २ ।। २ ।। ६ ।। मलार महला ५ ।। हे बादल रूपी गुरु, अपने उपदेश की वर्षा कर दो और क्षण भर भी देरी मत लगाओ। हे मेरे मन के आसरा प्यारे प्रभु, तुम बरसो जिससे हम आनन्दित हों तथा सदैव हमारे मन में उत्साह बना रहे ।। १ ।। रहाउ ।। हे स्वामी, हमें तो तेरा ही

धर सुआमीआ मेरे तू किउ मनहु बिसारे ॥ इसत्री रूप चेरी की निआई सोभ नही बिनु भरतारे ॥ १ ॥ बिनउ सुनिओ जब ठाकुर मेरै बेगि आइओ किरपा धारे ॥ कहु नानक मेरो बनिओ सुहागो पति सोभा भले अचारे ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥ मलार महला ५ ॥ प्रीतम साचा नामु धिआइ ॥ दूख दरद बिनसै भव सागरु गुर की मूरति रिदै बसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुसमन हते दोखी सभि विआपे हरि सरणाई आइआ ॥ राखनहारै हाथ दे राखिओ नामु पदारथु पाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा किलविख सभि काटे नामु निरमलु मनि दीआ ॥ गुण निधानु नानक मनि वसिआ बाहुड़ि दूख न थीआ ॥ २ ॥ ४ ॥ ८ ॥ मलार महला ५ ॥ प्रभ मेरे प्रीतम प्रान पिआरे ॥ प्रेम भगति अपनो नामु दीजै दइआल अनुग्रहु धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम रिदै तुहारी आसा ॥ संत जना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा ॥ १ ॥ बिछुरत मरनु जीवनु हरि मिलते जन कउ दरसनु दीजै ॥ नाम अधारु जीवन धनु नानक प्रभ मेरे किरपा कीजै ॥ २ ॥ ५ ॥ ९ ॥ मलार महला ५ ॥ अब अपने प्रीतम सिउ बनि आई ॥ राजा रामु रमत सुखु पाइओ बरसु मेघ सुखदाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु पलु बिसरत नही सुख सागरु नामु नवै निधि पाई ॥ उदौतु भइओ पूरन भावी को भेटे संत सहाई ॥ १ ॥ सुख उपजे दुख सगल बिनासे पारब्रहम लिव लाई ॥ तरिओ संसारु कठिन भै सागरु हरि नानक चरन धिआई ॥ २ ॥ ६ ॥ १० ॥ मलार महला ५ ॥ घनिहर बरसि सगल जगु छाइआ ॥ भए क्रिपाल प्रीतम प्रभ मेरे अनद मंगल सुख पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटे कलेस त्रिसन सभ बूझी पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ साधसंगि जनम मरन निवारे बहुरि न कतहू धाइआ ॥ १ ॥ मनु तनु नामि निरंजनि रातउ चरन कमल लिव लाइआ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि अपनै नानक दास सरणाइआ ॥ २ ॥ ७ ॥ ११ ॥ मलार महला ५ ॥ बिछुरत किउ जीवे ओइ जीवन ॥ चितहि उलास आस मिलबे की चरन कमल रस पीवन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ पिआस तुमारी प्रीतम तिन कउ अंतरु नाही ॥ जिन कउ बिसरै मेरो

आसरा है और तूने क्यों हमें मन से भुला दिया है। हम तो विनम्र और कोमल भाव के रूप में तेरी दासी की तरह हैं और प्रभु पति के बिना हमें शोभा प्राप्त नहीं होती ॥ १ ॥ मेरे मालिक ने मेरी विनती को सुना तो कृपा को धारण करते हुए वह शीघ्र ही आ पहुंचा। नानक का कथन है कि मेरा सुहाग बन गया और मेरे भले आचरण के कारण मुझे पति रूपी शोभा प्राप्त हो गई है ॥२॥३॥७॥मलार महला ५ ॥ उस सच्चे प्रियतम के नाम का ही सुमिरन करो जिससे भवसागर के दुख और दर्द विनष्ट हो जाते हैं और गुरु का निराकार स्वरूप (ज्ञान) हृदय में बस जाता है ॥ १ ॥ रहाउ॥ जब मैं प्रभु की शरण में आ गया तो मेरे सभी शत्रु मारे गए और मुझे दुख देने वाले भी सभी विपदाओं में पड़ गए। उस रक्षक प्रभु ने अपना हाथ देकर मुझे बचा लिया और मैंने उसका नाम रूपी अमूल्य पदार्थ प्राप्त कर लिया॥ १ ॥ उसने कृपा करके मेरे सभी पापों को नष्ट कर दिया और अपना निर्मल नाम मेरे मन को प्रदान कर दिया। हे नानक, गुणों का भण्डार वह प्रभु मन में आ बसा इसलिए फिर मुझे कभी भी दुख नहीं मिला है ॥ २ ॥ ४ ॥ ८ ॥ मलार महला ५ ॥ मेरा प्रियतम प्रभु मेरे प्राणों को प्यारा है। हे दयालु, कृपा करके मुझे अपनी प्रेम भक्ति और नाम प्रदान करो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रियतम, मैं तुम्हारे चरणों का सुमिरन करता हूँ और मेरे हृदय में तुम्हारी ही आशा बनी हुई है। मैं सन्तजनों के पास यही विनती करता हूँ कि मेरे मन में तेरे दर्शनों की प्यास है ॥ १ ॥ तुझसे बिछुड़ने पर तो मौत है और हे प्रभु, तेरे मिलाप में ही जीवन है इसलिए अपने सेवक को दर्शन दो। नानक का जीवन धन और आसरा प्रभु-नाम ही है इसलिए हे मेरे प्रभु, मुझ पर कृपा करो ॥ २ ॥ ५ ॥ ८ ॥ मलार महला ५ ॥ मेरी प्रीति तो अब अपने प्रियतम के साथ लग गई है। उस राजा राम रूपी प्रभु के साथ रमण करते हुए मैंने सुख प्राप्त किया है इसलिए हे बादल, तू सुखदायक बनकर बरसता रह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक क्षण भर के लिए भी वह सुखसागर प्रभु भूलता नहीं और उसके नाम के कारण ही हम नवनिधियों को प्राप्त करते हैं। जब शान्त पुरुषों से मिलाप हो गया तो उन्होंने ऐसी सहायता की कि प्रभु की रज़ा का पूर्ण प्रकाश हमारे अन्दर हो गया है ॥ १ ॥ परब्रह्म प्रभु में हमने लौ लगा ली है, हमारे अन्दर सुख उत्पन्न हो गए हैं और सभी दुखों का नाश हो गया है। हे नानक, प्रभु के चरणों का सुमिरन करके कठिन और भयानक संसार रूपी सागर को हमने तैर कर पार कर लिया है ॥ २ ॥ ६ ॥ १०॥ मलार महला ५ ॥ हे बादलो, सारे संसार में छाकर पूरी तरह बरस जाओ। मेरा प्रियतम प्रभु कृपालु हो गया है और हमने आनन्द मंगल का सुख प्राप्त कर लिया है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परब्रह्म प्रभु का मन में सुमिरन करने से सब प्रकार के क्लेश और तृष्णाएँ समप्त हो गई हैं। साधसंगत में हमने जन्म-मरण को त्याग दिया है और अब हम कहीं भी भटकते नहीं हैं ॥ १ ॥ चरण कमलों में लौ लगाने से हमारा तन मन प्रभु के नाम में लीन हो गया है। हे नानक, प्रभु ने हमारा पक्ष लिया है और हम उसके दास बनकर उसकी शरण में आ गए हैं ॥ २ ॥ ७ ॥ ११ ॥ मलार महला ५ ॥ उससे बिछुड़कर इस जीवन को भला क्यों जिया जाए। हमारे चित्त में उससे मिलने की आशा में उत्साह बना हुआ है और हमें उसके चरण कमलों का रस पीना है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे प्रीतम, जिनको तुम्हारे दर्शनों की प्यास है उनके लिए तो किसी ओर भी कोई अलगाव अथवा अन्तर नहीं है। जिन्हें मेरा प्यारा

रामु पिआरा से मूए मरि जांहीं ॥ १ ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगदीसुर पेखत सदा हजूरे ॥ नानक रवि रहिओ सभ अंतरि सरब रहिआ भरपूरे ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥ मलार महला ५ ॥ हरि कै भजनि कउन कउन न तारे ॥ खग तन मीन तन म्रिग तन बराह तन साधू संगि उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देव कुल दैत कुल जख्य किंनर नर सागर उतरे पारे ॥ जो जो भजनु करै साधू संगि ता के दूख बिदारे ॥ १ ॥ काम करोध महा बिखिआ रस इन ते भए निरारे ॥ दीन दइआल जपहि करुणा मै नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ९ ॥ १३ ॥ मलार महला ५ ॥ आजु मै बैसिओ हरि हाट ॥ नामु रासि साझी करि जन सिउ जांउ न जम कै घाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहमि राखे भ्रम के खुल्हे कपाट ॥ बेसुमार साहु प्रभु पाइआ लाहा चरन निधि खाट ॥ १ ॥ सरनि गही अचुत अबिनासी किलबिख काढे है छांटि ॥ कलि कलेस मिटे दास नानक बहुरि न जोनी माट ॥ २ ॥ १० ॥ १४ ॥ मलार महला ५ ॥ बहु बिधि माइआ मोह हिरानो ॥ कोटि मधे कोऊ बिरला सेवकु पूरन भगतु चिरानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इत उत डोलि डोलि स्रमु पाइओ तनु धनु होत बिरानो ॥ लोग दुराइ करत ठगिआई होतौ संगि न जानो ॥ १ ॥ म्रिग पंखी मीन दीन नीच इह संकट फिरि आनो ॥ कहु नानक पावन प्रभ तारहु साधसंगति सुख मानो ॥ २ ॥ ११ ॥ १५ ॥ मलार महला ५ ॥ दुसट मुए बिखु खाई री माई ॥ जिस के जीअ तिन ही रखि लीने मेरे प्रभ कउ किरपा आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी सभ महि वरतै तां भउ कैसा भाई ॥ संगि सहाई छोडि न जाई प्रभु दीसै सभनी ठाईं ॥ १ ॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजन आपि लीए लड़ि लाई ॥ हरि की ओट जीवहि दास तेरे नानक प्रभ सरणाई ॥ २ ॥ १२ ॥ १६ ॥ मलार महला ५ ॥ मन मेरे हरि के चरन रवीजै ॥ दरस पिआस मेरो मनु मोहिओ हरि पंख लगाइ मिलीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत मारगु पाइओ साधू सेव करीजै ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे नामु महा रसु पीजै ॥ १ ॥ त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ॥ करु गहि लेहु दास अपुने कउ नानक अपुनो

प्रभु भूला हुआ है वे बेचारे तो निश्चित रूप से मर ही जाएंगे ।। १ ।। वह जगदीश्वर प्रभु मन तन में रमण कर रहा है और सदैव प्रत्यक्ष दिखाई देता रहता है। हे नानक, वह सबके अन्तर्मन में रमण करता रहता है और सब में व्याप्त बना रहता है ।। २ ।। ८ ।। १२ ।। मलार महला ५ ।। प्रभु के सुमिरन के कारण भला कौन-कौन नहीं पार उतारा गया अर्थात सभी पार उतर गए। हंसावतार जैसे मत्स्य अवतार जैसे, हिरण का रूप धरण करने वाले ऋंगी ऋषि जैसे, वाराह का रूप धारण करने वाले आदि सभी साधु पुरुषों के साथ पार उतर गए ।। १ ।। रहाउ ।। देव कुल के, दैत्य कुल के, यक्ष, किन्नर, मानव और सागर आदि सभी पार उतर गए। साधु-पुरुषों की संगत में जो-जो भी प्रभु का सुमिरन करते हैं उन सबके दुखों को प्रभु ने नष्ट कर दिया है ।। १ ।। ऐसे लोग काम, क्रोध और महा विषय-विकारों के रसों से अलग ही बने रहते हैं। हे नानक, उस करुणामय दीनों पर दयालु प्रभु को जपकर नानक तो सदैव उस पर बलिहारी जाता रहता है ।। २ ।। ९ ।। १३ ।। मलार महला ५ ।। आज तो मैं प्रभु के बाजार अर्थात साधसंगत में बैठा हूँ। मैं अब प्रभु-नाम की रासपूंजी प्रभु के सेवकों के साथ सांझी करने से कभी भी यम के रास्ते पर नहीं जाऊँगा ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने कृपा करके हमारी रक्षा की है और अब हमारे भ्रम के कपाट खुल गए हैं। उस अनन्त साहूकार प्रभु को हमने पा लिया है और लाभ यह कमाया है कि सभी सुखों का रूप उस प्रभु के चरण हमें प्राप्त हो गए हैं ।। १।। उस अविनाशी और अटल प्रभु की शरण हमने पकड़ ली है और अब अपने पापों को छाँट-छाँट कर हमने बाहर निकाल दिया है। दास नानक के सभी मन और शरीर के दुख मिट गए हैं और अब उसे योनियों के माध्यम से अन्यं शरीरों में फिर नहीं आना पड़ेगा ।। २ ।। १० ।। १४ ।। मलार महला ५ ।। माया और मोह से तो जीव कई प्रकार से ठगे गए हैं। करोड़ों में से कोई बिरला सेवक ही होता है जो चिरन्तन काल से पूर्ण भक्त के रूप में जाना जाता है ।। १।। रहाउ ।। इधर-उधर भटक-भटक कर जीव ने परिश्रम किया है और अब इसका तन और धन बेगाना हो गया है। लोगों से छिपकर धन को ठगकर रखा गया परन्तु प्रभु जो सदैव ही साथ था जीव ने उसे नहीं जाना ।। १ ।। फलस्वरूप जानवर, पक्षी, मछली, दीन और नीच बनकर योनियों के संकट में यह जीव बार-बार घूमता रहा है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, इस पत्थर को भी पार उतार दो ताकि मैं भी साधसंगत में सुख प्राप्त कर सकूं ।। २ ।। ११ ।। १५ ।। मलार महला ५ ।। हे माँ, दुष्ट लोग तो विकारों के विष को खाकर मरते जा रहे हैं। जिसके पैदा किए हुए यह जीव थे उसी ने इनकी रक्षा की है और मेरे प्रभु के मन में कृपा का भाव आ गया है ।। १ ।। रहाउ ।। जब वह अन्तर्यामी प्रभु सबमें कार्यशील है तो हे भाई, फिर भला हमें कैसा भय हो सकता है। वह प्रभु हमारे साथ ही हमारा सहायक बना रहता है और कहीं भी हमें छोड़कर नहीं जाता तथा सभी स्थानों में दिखाई देता रहता है ।। १ ।। अनाथों के नाथ और दीनों के दुखों को नष्ट करने वाले उस प्रभु ने स्वयं ही हमें अपने आँचल में ले लिया है। प्रभु के आसरे में ही हे प्रभु, तेरे दास जीवित बने रहते हैं और नानक तो प्रभु की ही शरण में पड़ा हुआ है ।। २ ।। १२ ।। १६ ।। मलार महला ५ ।। हे मेरे मन, प्रभु के चरणों का ही सुमिरन करना चाहिए। प्रभु के दर्शनों की प्यास ने मेरे मन को ऐसे मोहित कर रखा है कि मैं किसी तरह भी पंख लगाकर अपने प्रभु से जा मिलूं ।। १ ।। रहाउ ।। खोजते-खोजते मैंने एक रास्ता खोजा है कि साधु-पुरुषों की सेवा करनी चाहिए। हे मेरे स्वामी, तुम कृपा करो ताकि हम प्रभु-नाम के महारस को पी सकें ।। १ ।। हम तो त्राहिमाम्-त्राहिमाम् करते हुए तुम्हारी शरण में आए हैं, तुम हम जलते हुओं पर कृपा कर दो। अपने दासों का हाथ पकड़ लो और हे नानक, उन्हे अपना

कीजै ॥ २ ॥ १३ ॥ १७ ॥ मलार मः ५ ॥ प्रभ को भगति बछलु बिरदाइओ ॥ निंदक मारि चरन तल दीने अपुनो जसु वरताइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जै कारु कीनो सभ जग महि दइआ जीअन महि पाइओ ॥ कंठि लाइ अपुनो दासु राखिओ ताती वाउ न लाइओ ॥ १ ॥ अंगीकारु कीओ मेरे सुआमी भ्रमु भउ मेटि सुखाइओ ॥ महा अनंद करहु दास हरि के नानक बिस्वासु मनि आइओ ॥ २ ॥ १४ ॥ १८ ॥

राागु मलार महला ५ चउपदे घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि दीसै ब्रहम पसारु ॥ गुरमुखि त्रै गुणीआं बिसथारु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ बिनु गुर पूरे घोर अंधारु ॥ १ ॥ मेरे मन गुरु गुरु करत सदा सुखु पाईऐ ॥ गुर उपदेसि हरि हिरदै वसिओ सासि गिरासि अपणा खसमु धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण विटहु बलि जाउ ॥ गुर के गुण अनदिनु नित गाउ ॥ गुर की धूड़ि करउ इसनानु ॥ साची दरगह पाईऐ मानु ॥ २ ॥ गुरु बोहिथु भवजल तारणहारु ॥ गुरि भेटिऐ न होइ जोनि अउतारु ॥ गुर की सेवा सो जनु पाए ॥ जा कउ करमि लिखिआ धुरि आए ॥ ३ ॥ गुरु मेरी जीवनि गुरु आधारु ॥ गुरु मेरी वरतणि गुरु परवारु ॥ गुर मेरा खसमु सतिगुर सरणाई ॥ नानक गुरु पारब्रहमु जा की कीम न पाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥ मलार महला ५ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाए ॥ अपने सेवक कउ लए प्रभु लाइ ॥ ता की कीमति कही न जाइ ॥ १ ॥ करि किरपा पूरन सुखदाते ॥ तुम्हरी क्रिपा ते तूं चिति आवहि आठ पहर तेरै रंगि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावणु सुनणु सभु तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो साचि समाणा ॥ जपि जपि जीवहि तेरा नांउ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही थाउ ॥ २ ॥ दुख सुख करते हुकमु रजाइ ॥ भाणै बखस भाणै देइ सजाइ ॥ दुहां सिरिआं का करता आपि ॥ कुरबाणु जांई तेरे परताप ॥ ३ ॥ तेरी कीमति तूहै जाणहि ॥ तू आपे बूझहि सुणि आपि वखाणहि ॥ सेई भगत जो तुधु

बना लो ।। २ ।। १३ ।। १७ ।। मलार महला ५ ।। भक्त वत्सल होना प्रभु का बिरद है। निन्दकों को मारकर तूने अपने चरणों के नीचे दबा लिया है और अपने यश को सब ओर प्रसारित कर दिया है ।। १ ।। रहाउ ।। जब तुझे इस संसार के जीवों पर दया आ गई तो सारे संसार में तेरी जय-जयकार हो उठी है। अपने दास को तूने अपने गले से लगाकर रख लिया है और उसे दुख की गर्म हवा तक भी स्पर्श नहीं कर सकी ।। १ ।। मेरे प्रभु ने जब मेरा पक्ष ले लिया तो मेरे भ्रम और भय को नष्ट करके उसने मुझे सुख दे दिया है। हे प्रभु के सेवको, तुम महा आनन्दित बने रहो तथा नानक के मन में भी उसका विश्वास पक्का हो गया है ।। २ ।। १४ ।। १८ ।।

रागु मलार महला ५ चौपदे घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

गुरमुख व्यक्ति को चारों ओर ब्रह्म ही फैला हुआ दृष्टिगोचर होता है। गुरमुख व्यक्ति को यह संसार तीन गुणों का ही मात्र विस्तार दिखाई देता है। गुरमुख व्यक्ति नाद और वेद की खोज करके उसका चिन्तन करता है और जानता है कि पूर्ण गुरु के बिना सब ओर घोर अंधकार ही है ।। १ ।। हे मेरे मन, गुरु-गुरु करते रहने से सदैव सदा सुख पाया जाता है। गुरु के उपदेश से ही प्रभु हृदय में बसा रहता है इसलिए हर श्वास और ग्रास के साथ अपने मालिक का सुमिरन करते रहना चाहिए ।। १ ।। रहाउ ।। गुरु के चरणों पर बलिहारी जाते रहो और प्रत्येक दिन गुरु के गुणों का गायन करते रहो। गुरु की चरण धूलि में स्नान करो क्योंकि प्रभु के सच्चे दरबार में तभी सम्मान प्राप्त किया जाता है ।। २ ।। गुरु वह जहाज है जो संसार सागर से पार उतारता है। गुरु से मिलाप होने पर विभिन्न योनियों में जन्म नहीं लेना पड़ता। गुरु की सेवा उसी सेवक को प्राप्त होती है जिसके भाग्य में प्रारम्भ से ही ऐसा लिखा हुआ होता है।। ३ ।। गुरु ही मेरी जीवन विधि है और गुरु ही मेरा आसरा है। गुरु ही मेरा व्यवहार है और गुरु ही मेरा परिवार है। गुरु मेरा मालिक है और मैं सच्चे गुरु की शरण में हूँ तथा हे नानक, गुरु परब्रह्म है जिसके मूल्य को आँका नहीं जा सकता ।। ४ ।। १ ।। १९ ।। मलार महला ५ ।। जब गुरु के चरणों को हृदय में बसा लिया जाता है तो प्रभु कृपा करके स्वयं ही उससे मिला देता है। अपने जिस सेवक को प्रभु अपने से मिला लेता है उसकी महिमा तो कही ही नहीं जा सकती ।। १ ।। हे पूर्ण सुखदायक प्रभु, तुम कृपा करो क्योंकि तुम्हारी कृपा से ही तुम चित्त में याद रहते हो और हम आठों प्रहर तेरे प्रेम में लीन बने रहते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। तेरा गायन और तेरा यश सुनना सब तेरी ही रज़ा है। जो व्यक्ति प्रभु के हुकुम को बूझ लेता है वही सत्य में लीन हो जाता है। वही तेरे नाम का सुमिरन करता हुआ आध्यात्मिक तौर से जीवित बना रहता है और तेरे बिना उसका दूसरा कोई ठिकाना नहीं होता ।। २ ।। दुख और सुख उस कर्ता प्रभु का हुकुम और रज़ा है। वह अपने आनन्द में ही क्षमा कर देता है और यदि उसे ठीक लगता है तो सज़ा भी देता है। लोक और परलोक दोनों का कर्ता वह प्रभु स्वयं है और हे प्रभु, मैं तेरे वैभव पर कुर्बान जाता हूँ ।। ३ ।। अपने महत्व को तू ही जानता है, तू स्वयं ही समझता है, सुनता है और स्वयं ही बखान करता है। भक्तजन वे ही हैं जो तुझे

भाणे ॥ नानक तिन कै सद कुरबाणे ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥ मलार महला ५ ॥ परमेसरु होआ दइआलु ॥ मेघु वरसै अंम्रित धार ॥ सगले जीअ जंत त्रिपतासे ॥ कारज आए पूरे रासे ॥ १ ॥ सदा सदा मन नामु सम्हालि ॥ गुर पूरे की सेवा पाइआ ऐथै ओथै निबहै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु भंना भै भंजनहार ॥ आपणिआ जीआ की कीती सार ॥ राखनहार सदा मिहरवान ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबान ॥ २ ॥ कालु गवाइआ करतै आपि ॥ सदा सदा मन तिस नो जापि ॥ द्रिसटि धारि राखे सभि जंत ॥ गुण गावहु नित नित भगवंत ॥ ३ ॥ एको करता आपे आप ॥ हरि के भगत जाणहि परताप ॥ नावै की पैज रखदा आइआ ॥ नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २१ ॥ मलार महला ५ ॥ गुर सरणाई सगल निधान ॥ साची दरगहि पाईऐ मानु ॥ भ्रमु भउ दूखु दरदु सभु जाइ ॥ साधसंगि सद हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुरु पूरा सालाहि ॥ नामु निधानु जपहु दिनु राती मन चिंदे फल पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु सोइ ॥ जनम मरण दूख ते राखै ॥ माइआ बिखु फिरि बहुड़ि न चाखै ॥ २ ॥ गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ गुरु परमेसरु साचै नाइ ॥ सचु संजमु करणी सभु साची ॥ सो मनु निरमलु जो गुर संगि राची ॥ ३ ॥ गुरु पूरा पाईऐ वड भागि ॥ कामु क्रोधु लोभु मन ते तिआगि ॥ करि किरपा गुर चरण निवासि ॥ नानक की प्रभ सचु अरदासि ॥ ४ ॥ ४ ॥ २२ ॥

रागु मलार महला ५ पड़ताल घरु ३   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुर मनारि प्रिअ दइआर सिउ रंगु कीआ ॥ कीनो री सगल सीगार ॥ तजिओ री सगल बिकार ॥ धावतो असथिरु थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसे रे मन पाइ कै आपु गवाइ कै करि साधन सिउ संगु ॥ बाजे बजहि म्रिदंग अनाहद कोकिल री राम नामु बोलै मधुर बैन अति सुहीआ ॥ १ ॥ ऐसी तेरे दरसन की सोभ अति अपार प्रिअ अमोघ तैसे ही संगि संत बने ॥ भव उतार नाम भने ॥ राम राम

भाते हैं तथा हे नानक, हम तो सदैव उन पर बलिहारी जाते हैं ।। ४ ।। २ ।। २० ।। मलार महला ५ ।। प्रभु दयालु हुआ है और जीव जन्तु तृप्त हो गए तथा सभी कार्य पूर्ण रूप से सिद्ध हो गए हैं ।। १ ।। हे मन, सदैव प्रभु के नाम का सुमिरन करता रह। यह नाम पूर्ण गुरु की सेवा से ही पाया जाता है और यही यहाँ और वहां साथ निभाता है ।। १ ।। रहाउ ।। भय को नष्ट करने वाले ने दुखों को नष्ट कर दिया है और अपने जीवों की खोज खबर लेकर उस प्रभु ने उन्हें सम्भाला हुआ है। वह रक्षक प्रभु सदैव मेहरबान बना रहता है और हम तो सदैव उस पर कुर्बान होते रहते हैं ।। २ ।। जिस कर्ता प्रभु ने काल का भय दूर कर दिया है, हे मन, तू सदैव उसका सुमिरन करता रह। उसने अपनी कृपा-दृष्टि धरण करके सभी जीवों को सम्भाला है इसलिए ऐसे प्रभु के गुण सदैव गाते रहो ।। ३ ।। वह एक ही कर्ता प्रभु स्वयं ही है और उस प्रभु के भक्त ही उसके बल वैभव को जानते हैं। वह अपने नाम की लाज सदैव रखता आया है और यह नानक तो उसी का बोलाया हुआ बोल बोलता है ।। ४ ।। ३ ।। २१ ।। मलार महला ५ ।। गुरु की शरण में ही सभी सुखों के भण्डार हैं और प्रभु के सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त किया जाता है। उसकी शरण में ही सभी भ्रम, भय, दुख और दर्द दूर हो जाते हैं और साधसंगत में व्यक्ति सदैव प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है। हे मेरे मन, उस पूर्ण गुरु (प्रभु) का गुणानुवाद कर, दिन रात उसके सुखदायक नाम का सुमिरन करो तथा मनोवांछित फल प्राप्त करते रहो ।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु जैसा दूसरा कोई भी नहीं है। गुरु परब्रह्म और वही परमेश्वर है। वह जीवन मरण और दुखों से बचाता है और व्यक्ति फिर माया रूपी विष का स्वाद नहीं चखता ।। २ ।। गुरु की महिमा का कथन नहीं किया जा सकता और गुरु ही सच्चे नाम का रूप होने से परमेश्वर ही है। वही मन निर्मल होता है जो गुरु के साथ लीन बना रहता है ।। ३ ।। बड़े भाग्य से ही उस पूर्ण गुरु को पाया जाता है और काम, क्रोध, लोभ आदि को मन से त्यागा जाता है। हे प्रभु, नानक की तो सच्ची अरदास यही है कि कृपा करके मेरा निवास गुरु के चरणों में बनाए रख ।। ४ ।। ४ ।। २२ ।।

रागु मलार महला ५ पड़ताल घरु ३ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे सखी, मैंने गुरु को मनाकर दयालु प्रभु के साथ रासरंग (मिलाप) किया है। हे सखी मैंने पूरा सिंगार किया है; सारे विकारों को त्याग दिया है और दौड़ते हुए मन को मैंने स्थिर कर लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। हे मन, इस प्रकार अहंकार गँवाकर उस प्रभु के नाम को पाकर तू साधु पुरुषों की संगत कर। इस प्रकार मृदंग आदि वाद्य अनहद नाद के रूप में बजते रहते हैं और कोयल रूपी जीभ राम नाम का उच्चारण करती हुई सुन्दर और मीठे वचन बोलती रहती है ।। १ ।। हे प्यारे प्रभु, हे अनन्त प्रभु, तेरे दर्शन की महिमा सफलता के लक्ष्य से कभी चूकती नहीं। संसार सागर से पार उतारने वाले तेरे नाम का सुमिरन

राम माल ॥ मनि फेरते हरि संगि संगीआ ॥ जन नानक प्रिउ प्रीतमु थीआ ॥ २ ॥ १ ॥ २३ ॥ मलार महला ५ ॥ मनु घनै भ्रमै बनै ॥ उमकि तरसि चालै ॥ प्रभ मिलबे की चाह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुन माई मोहि आई कहंउ बेदन काहि ॥ १ ॥ आन उपाव सगर कीए नहि दुख साकहि लाहि ॥ भजु सरनि साधू नानका मिलु गुन गोबिंदहि गाहि ॥ २ ॥ २ ॥ २४ ॥ मलार महला ५ ॥ प्रिअ की सोभ सुहावनी नीकी ॥ हाहा हूहू गंध्रब अपसरा अनंद मंगल रस गावनी नीकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुनित ललित गुनग्य अनिक भांति बहु बिधि रूप दिखावनी नीकी ॥ १ ॥ गिरि तर थल जल भवन भरपुरि घटि घटि लालन छावनी नीकी ॥ साधसंगि रामईआ रसु पाइओ नानक जा कै भावनी नीकी ॥ २ ॥ ३ ॥ २५ ॥ मलार महला ५ ॥ गुर प्रीति पिआरे चरन कमल रिद अंतरि धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसु सफलिओ दरसु पेखिओ गए किलबिख गए ॥ मन निरमल उजीआरे ॥ १ ॥ बिसम बिसमै बिसम भई ॥ अघ कोटि हरते नाम लई ॥ गुर चरन मसतकु डारि पही ॥ प्रभ एक तूंही एक तुही ॥ भगत टेक तुहारे ॥ जन नानक सरनि दुआरे ॥ २ ॥ ४ ॥ २६ ॥ मलार महला ५ ॥ बरसु सरसु आगिआ ॥ होहि आनंद सगल भाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत संगे मनु परफड़ै मिलि मेघ धर सुहाग ॥ १ ॥ घन घोर प्रीति मोर ॥ चितु चात्रिक बूंद ओर ॥ ऐसो हरि संगे मन मोह ॥ तिआगि माइआ धोह ॥ मिलि संत नानक जागिआ ॥ २ ॥ ५ ॥ २७ ॥ मलार महला ५ ॥ गुन गुोपाल गाउ नीत ॥ राम नाम धारि चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडि मानु तजि गुमानु मिलि साधूआ कै संगि ॥ हरि सिमरि एक रंगि मिटि जांहि दोख मीत ॥ १ ॥ पारब्रहम भए दइआल ॥ बिनसि गए बिखै जंजाल ॥ साध जनां कै चरन लागि ॥ नानक गावै गोबिंद नीत ॥ २ ॥ ६ ॥ २८ ॥ मलार महला ५ ॥ घनु गरजत गोबिद रूप ॥ गुन गावत सुख चैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि चरन सरन तरन सागर धुनि अनहता रस बैन ॥ १ ॥ पथिक पिआस चित सरोवर आतम जलु लैन ॥ हरि दरस प्रेम जन नानक करि किरपा प्रभ दैन ॥ २ ॥ ७ ॥ २९ ॥

करते हुए तेरे सन्तजन तेरे चरणों में लीन होकर तेरे ही जैसे बन जाते हैं। हे नानक, जो सेवक प्रभु नाम की सुन्दर माला अपने मन में फेरते रहते हैं वे प्रभु के साथी बन जाते हैं और प्रभु उन्हें प्यारा लगने लग जाता है ॥२॥१॥२३॥ मलार महला ५ ।। हे भाई, यह मन संसार रूपी घने जंगल में भटकता रहता है परन्तु परमात्मा को मिलने की तीव्र इच्छा के उत्साह से भरकर यह आनन्दपूर्वक अपनी चाल में चलता रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, तीनों गुणों वाली माया मुझ पर भी हमला करती है, मैं भला किससे यह अपनी वेदना कहूं। हे नानक, मैंने अन्य सभी उपाय किए परन्तु ये सभी उपाय मेरे दुखों को दूर नहीं कर सकते। हे भाई, माया से बचने के लिए गुरु का शरणगत बना रह और प्रभु के गुणों में लीन होकर प्रभु में ही मिला रह ।। २ ।। २ ।। २४ ।। मलार महला ५ ।। प्रिय प्रभु की शोभा ही सुन्दर और सुखदायी लगती है और ऐसा लगता है मानो गंधर्व और स्वर्ग की मनमोहिनी स्त्रियाँ भी आनन्ददायक और रसदायक सुन्दर गीतों का गायन कर रही हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, प्रभु का गुणानुवाद ऐसा अच्छा लगता है कि मानो गुणवान व्यक्ति अनेकों विधियों से मीठे स्वरों के माध्यम से अनेकों सुन्दर रूप दिखा रहे हों ।। १ ।। हे भाई, वह प्रभु पहाड़, वृक्ष, धरती, पानी अर्थात चौदह भुवनों में पूर्ण रूप से व्याप्त है। प्रत्येक शरीर में उस प्यारे प्रियतम का सुन्दर निवास बना हुआ है परन्तु हे नानक, श्रद्धावान व्यक्ति साधसंगत में स्थिर होकर उस सुन्दर प्रभु के आनन्द का उपभोग करता है ।। २ ।। ३ ।। २५ ।। मलार महला ४ ।। हे प्यारे भाई, सच्चे गुरु की कृपा से मैंने प्रभु के सुन्दर चरण अपने हृदय में बसा लिए हैं ।। १ ।। रहाउ ।। गुरु का दर्शन सदैव फलदायक होता है और उसका दर्शन करने वाला प्रभु का दर्शन भी कर लेता है तथा उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। उसका मन पवित्र हो जाता है और उसका मन निर्मल और उज्जवल हो जाता है ।। १ ।। परमात्मा के नाम का सुमिरन करने से करोड़ों पाप दूर हो जाते हैं और ऐसी आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है जो पूर्ण आश्चर्य ही आश्चर्य का साक्षात स्वरूप होती है। जो गुरु के चरणों पर मस्तक रखकर गिर पड़ते हैं, हे प्रभु, उन्हें केवल एक तेरा ही सहारा होता है। उन भक्तों की टेक तुझ पर ही होती है और हे प्रभु, तेरे सेवक तेरे ही द्वार पर तेरी शरण में पड़े रहते हैं ।। २ ।। ४ ।। २६ ।। मलार महला ५ ।। हे प्रभु, तू अपनी ही रज़ा में आनन्दपूर्वक नाम रूपी जल की वर्षा कर दे जिससे सर्वत्र आध्यात्मिक आनन्द बना रहे ।। १ ।। रहाउ ।। जिस प्रकार बादलों की वर्षा से धरती का भाग्य जाग जाता है वैसे ही गुरु की संगत में व्यक्ति का मन खिल उठता है ।। १ ।। जिस प्रकार मोर की प्रीति बादलों की गरज के साथ है, पपीहे का मन स्वाति नक्षत्र की बूंद की ओर लगा रहता है, हे जीव, तू भी उसी प्रकार अपने मन की प्रीति परमात्मा के साथ लगाए रह। हे नानक, शान्त पुरुषों से मिलकर माया के कपट को दूर करके व्यक्ति का मन मोह की निद्रा से जाग जाता है ॥२॥५॥२७॥ मलार महला ५ ।। सदैव प्रभु का गुणानुवाद करो और हृदय में राम नाम को धारण किए रहो ।। १ ।। रहाउ ।। साधु-पुरुषों की संगत करके मान और अभिमान का त्याग कर दो। हे मित्र, तेरे सभी पाप मिट जाएंगे, तू एक रस लवलीन होकर प्रभु का सुमिरन करता रह ।। १ ।। परब्रह्म प्रभु ने दया की है और विषय-विकारों के सभी जंजाल विनष्ट हो गए हैं। साधु पुरुषों के चरणों में लगकर नानक तो सदैव प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है ॥२॥६॥२८॥ जब बादल प्रभु के उपदेश रूप में गरजकर नाम जल की वर्षा करता है तभी प्रभु के गुण गाते हुए सुख और चैन प्राप्त होता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के चरणों की शरण संसार सागर से पार उतारने वाला जहाज है और वही अनहद धुन को उत्पन्न करने वाला रसपूर्ण उपदेश है ।। १ ।। जब आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले जीव के हृदय में उस प्रभु को मिलने की प्यास पैदा होती है तो उसका चित्त नाम रूपी जल के सरोवर की तरफ जाता है। हे नानक, प्रभु के दर्शनों के प्रेम की कामना को प्रभु कृपा करके पूरा करता है ॥२॥७॥२९॥

मलार महला ५ ॥ हे गोबिंद हे गोपाल हे दइआल लाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ १ ॥ हे सम्रथ अगम पूरन मोहि मइआ धारि ॥ २ ॥ अंध कूप महा भइआन नानक पारि उतार ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चकवी नैन नींद नहि चाहै बिनु पिर नींद न पाई ॥ सूरु चर्है प्रिउ देखै नैनी निवि निवि लागै पांई ॥ १ ॥ पिर भावै प्रेमु सखाई ॥ तिसु बिनु घड़ी नही जगि जीवा ऐसी पिआस तिसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरवरि कमलु किरणि आकासी बिगसै सहजि सुभाई ॥ प्रीतम प्रीति बनी अभ ऐसी जोती जोति मिलाई ॥ २ ॥ चात्रिकु जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै बिललाई ॥ घनहर घोर दसौ दिसि बरसै बिनु जल पिआस न जाई ॥ ३ ॥ मीन निवास उपजै जल ही ते सुख दुख पुरबि कमाई ॥ खिनु तिलु रहि न सकै पलु जल बिनु मरनु जीवनु तिसु तांई ॥ ४ ॥ धन वांढी पिरु देस निवासी सचे गुर पहि सबदु पठाईं ॥ गुण संग्रहि प्रभु रिदै निवासी भगति रती हरखाई ॥ ५ ॥ प्रिउ प्रिउ करै सभै है जेती गुर भावै प्रिउ पाईं ॥ प्रिउ नाले सद ही सचि संगे नदरी मेलि मिलाई ॥ ६ ॥ सभ महि जीउ जीउ है सोई घटि घटि रहिआ समाई ॥ गुर परसादि घर ही परगासिआ सहजे सहजि समाई ॥ ७ ॥ अपना काजु सवारहु आपे सुखदाते गोसांईं ॥ गुर परसादि घर ही पिरु पाइआ तउ नानक तपति बुझाई ॥ ८ ॥ १ ॥ मलार महला १ ॥ जागतु जागि रहै गुर सेवा बिनु हरि मै को नाही ॥ अनिक जतन करि रहणु न पावै आचु काचु ढरि पांही ॥ १ ॥ इसु तन धन का कहहु गरबु कैसा ॥ बिनसत बार न लागै बवरे हउमै गरबि खपै जगु ऐसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जगदीस प्रभु रखवारे राखै परखै सोई ॥ जेती है तेती तुझ ही ते तुम्ह सरि अवरु न कोई ॥ २ ॥ जीअ उपाइ जुगति वसि कीनी आपे गुरमुखि अंजनु ॥ अमरु अनाथ सरब सिरि मोरा काल बिकाल

मलार महला ५ ।। धरती के स्वामी और हे दयालु प्यारे प्रियतम, तुम ही सबका पालन करने वाले हो ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्राणों के नाथ और अनाथों के सहायक प्रभु, तू दीनों के कष्टों का निवारण कर ।। १ ।। हे समर्थ, अगम्य और पूर्ण प्रभु, मुझ पर कृपा धारण करो ।। २ ।। हे नानक, यह संसार अज्ञान रूपी अंधकार की तरह विशाल कुँआ है अतः हे प्रभु, हमें पार उतार लो ।। ३ ।। ८ ।। ३० ।।

मलार महला १ अष्टपदियाँ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

चकवी अपने प्रियतम की आकांक्षा में सोना नहीं चाहती और वास्तव में उसे अपने प्रियतम के बिना नींद प्राप्त भी नहीं होती। सूरज के निकलने पर वह प्रियतम को अपनी आँखो से देखती है और झुक-झुक कर उसके चरणों का स्पर्श करती है ।। १ ।। प्रियतम का सहायता करने वाला प्रेम अच्छा लगता है। उसके दर्शन की प्यास की मैं इतनी प्यासी हूँ कि मैं उसके बिना इस संसार में घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकती ।। १ ।। रहाउ ।। कमल सरोवर में है और सूर्य की किरण आकाश में है परन्तु फिर भी किरणों के पड़ने पर कमल स्वाभाविक रूप से खिल उठता है। मेरे हृदय में उस प्रियतम प्रभु की ऐसी प्रीति लग गई है कि मेरी हृदय की ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो गई है ।। २ ।। पपीहा भी जल के बिना प्रिय-प्रिय बोलता हुआ विलाप करता रहता है। बादल बेशक दसों दिशाओं में घनघोर रूप से बरसता है परन्तु पपीहे की प्यास स्वाति बूंद की बिना दूर नहीं होती। इसी तरह भक्तों को भी प्रभु के नाम के बिना शान्ति नहीं मिलती ।। ३ ।। मछली का निवास जल ही में रहता है और पूर्व कर्मों के अधीन उसका दुख सुख जल में ही होता है। वह जल के बिना क्षण भर के लिए भी जीवित नहीं रह सकती और जल ही उसका जीवन और मरण है ।। ४ ।। प्रियतम देश में है और जीव रूपी स्त्री परदेश में बैठी हुई सच्चे गुरु के माध्यम से उसे अपना सन्देशा भेजती है। गुणों का संग्रह करती हुई प्रभु का निवास अपने हृदय में बनाती है और उसकी भक्ति में लीन हुई प्रसन्न बनी रहती है ।। ५ ।। प्रिय- प्रिय की पुकार तो सभी लगाते हैं परन्तु जब गुरु को भा जाते हैं तभी जीव-स्त्रियां प्रियतम को प्राप्त करती हैं। वह प्रियतम प्रभु सदैव ही सत्य स्वरूप में साथ बना रहता है और गुरु की कृपादृष्टि से ही गुरु अपने से मिलाकर जीव को प्रभु से मिला देता है ।। ६ ।। सबमें सभी जीवों का प्राण वह प्रभु ही है जो घट-घट में समाया हुआ है। गुरु की कृपा से प्रभु हृदय में ही प्रत्यक्ष हो गया है और जीव स्वाभाविक रूप से पूर्ण स्थिर अवस्था में समा गया है ।। ७ ।। हे पृथ्वी के मालिक प्रभु, तुम अपने काम को स्वयं ही संवार लो। गुरु की कृपा से जब हृदय में ही उस प्रियतम को पा लिया है तो हे नानक, हमारे हृदय की पीड़ा शान्त हो गई है ।। ८ ।। १ ।। मलार महला १ ।। गुरु की सेवा में सावधान बना रहने वाला व्यक्ति यह जानता है कि प्रभु के बिना मेरा अन्य कोई नहीं है। जिस प्रकार आँच पर पड़ा हुआ काँच ढल जाता है इसी प्रकार अनेकों यत्न करने के बावजूद शरीर वैसे का वैसा नहीं बना रहता और ढल जाता है ।। १ ।। इस तन और धन का भला कैसा अभिमान है क्योंकि इसे विनष्ट होते हुए देर नहीं लगती और हे बावले, अहंकार में संसार ऐसे ही क्षण भर में नष्ट हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। उस रक्षक प्रभु की जय-जयकार होती है क्योंकि वही जीव को बचाता है और परखता रहता है। जितनी भी सृष्टि है वह तुझसे ही पैदा होती है और तुम्हारे समान दूसरा कोई नहीं है ।। २ ।। उसने जीवों को उत्पन्न करके उनकी सभी जीवन विधियों को अपने वश में किया हुआ है और वह स्वयं ही वह ज्ञान रूपी अंजन है जो गुरमुख बनने से प्राप्त होता है। वह काल का भी काल है, भ्रम और भय को नष्ट करने वाला है और सबसे सिरमौर अमर ऐसा प्रभु है जिसका कोई

भरम भै खंजनु ॥ ३ ॥ कागद कोटु इहु जगु है बपुरो रंगनि चिहन चतुराई ॥ नान्ही सी बूंद पवनु पति खोवै जनमि मरै खिनु ताईं ॥ ४ ॥ नदी उपकंठि जैसे घरु तरवरु सरपनि घरु घर माही ॥ उलटी नदी कहां घरु तरवरु सरपनि डसै दूजा मन मांही ॥ ५ ॥ गारुड़ गुर गिआनु धिआनु गुर बचनी बिखिआ गुरमति जारी ॥ मन तन हेंव भए सचु पाइआ हरि की भगति निरारी ॥ ६ ॥ जेती है तेती तुधु जाचै तू सरब जीआं दइआला ॥ तुम्हरी सरणि परे पति राखहु साचु मिलै गोपाला ॥ ७ ॥ बाधी धंधि अंध नही सूझै बधिक करम कमावै ॥ सतिगुर मिलै त सूझसि बूझसि सच मनि गिआनु समावै ॥ ८ ॥ निरगुण देह साच बिनु काची मै पूछउ गुरु अपना ॥ नानक सो प्रभु प्रभू दिखावै बिनु साचे जगु सुपना ॥ ९ ॥ २ ॥ मलार महला १ ॥ चात्रिक मीन जल ही ते सुखु पावहि सारिंग सबदि सुहाई ॥ १ ॥ रैनि बबीहा बोलिओ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रिअ सिउ प्रीति न उलटै कबहू जो तै भावै साई ॥ २ ॥ नीद गई हउमै तनि थाकी सच मति रिदै समाई ॥ ३ ॥ रूखीं बिरखीं ऊडउ भूखा पीवा नामु सुभाई ॥ ४ ॥ लोचन तार ललता बिललाती दरसन पिआस रजाई ॥ ५ ॥ प्रिअ बिनु सीगारु करी तेता तनु तापै कापरु अंगि न सुहाई ॥ ६ ॥ अपने पिआरे बिनु इकु खिनु रहि न सकंउ बिन मिले नींद न पाई ॥ ७ ॥ पिरु नजीकि न बूझै बपुड़ी सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ ८ ॥ सहजि मिलिआ तब ही सुखु पाइआ त्रिसना सबदि बुझाई ॥ ९ ॥ कहु नानक तुझ ते मनु मानिआ कीमति कहनु न जाई ॥ १० ॥ ३ ॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अखली ऊंडी जलु भर नालि ॥ डूगरु ऊचउ गड़ु पातालि ॥ सागरु सीतलु गुर सबदि वीचारि ॥ मारगु मुकता हउमै मारि ॥ १ ॥ मै अंधुले नावै की जोति ॥ नाम अधारि चला गुर कै भै भेति ॥ १ ॥

भी नाथ नहीं है ।। ३ ।। यह बेचारा संसार तो कागज का एक किला है और इस किले का रंग-रोगन सांसारिक चतुराई ही है; परन्तु एक छोटी सी बूंद अथवा पवन के चलने से उस कागज के किले की सारी शोभा समाप्त हो जाती है ।। ४ ।। यदि नदी के किनारे वृक्ष अथवा घर हो और उस घर में सर्पिणी का निवास हो परन्तु यदि नदी ही उछल कर टकरा जाए तो फिर वह घर अथवा वृक्ष कहां रह सकता है अर्थात सब कुछ उखड़ जाता है और वह सर्पिणी बेघर होकर द्वैतभाव के रूप में व्यक्ति को आ डसती है अर्थात हृदय में बसता हुआ द्वैतभाव सर्पिणी के रूप में सदैव मौत का भय दिखाता रहता है ।। ५ ।। गारुड़ी मन्त्र रूपी गुरु का ज्ञान और ध्यान माया के विष को जला देता है। सत्य को प्राप्त करके मन, तन बर्फ की तरह शान्त हो जाता है और प्रभु की निराली भक्ति में लीन हो जाता है।। ६ ।। जितनी भी यह सृष्टि है सब तुझी से माँगती है और तू ही सभी जीवों पर दया करने वाला है। तुम्हारी शरण में हम पड़े हुए हैं तुम हमारा सम्मान बचा लो और हे सच्चे प्रभु, हमें मिल जाओ ।। ७ ।। धन्धों में बंधी हुई सृष्टि अन्धी बनी हुई है और इसे कुछ भी नहीं सूझता तथा यह बंधी हुई काम करती रहती है। जब सच्चा गुरु मिले तभी इसे समझ पड़ती है और सत्य रूप में ज्ञान इसके मन में समा जाता है ।। ८ ।। मैंने अपने गुरु से पूछा है और उसने हमें बताया है कि सत्य और गुणों से विहीन यह शरीर कच्चा ही है जो जल्दी ही नष्ट हो जाने वाला है। हे नानक, वह प्रभु ही प्रभु-गुरु का दर्शन कराता है और उस सच्चे गुरु के बिना यह संसार सपना ही है ।। ६ ।। २ ।। मलार महला १ ।। चातक और मछली जल में ही सुख पाते हैं और हिरण को नाद ही अच्छा लगता है ।। १ ।। मेरी जीवन रूपी रात्रि में प्यासा पपीहा अब बोल उठा है ।। १ ।। रहाउ ।। अपने प्रियतम से अब इसकी प्रीति कभी नहीं टूटती परन्तु प्रीति भी वही है हे प्रभु, जो तुझे अच्छी लगे ।। २ ।। हमारी तो नींद उड़ गई है और अहंकार के कारण जब हमारा तन थक गया है तो सत्य की शिक्षा हमारे हृदय में समा गई है ।। ३ ।। यदि वृक्षों और जंगलों पर मैं उड़ता भी रहता हूँ तो फिर भी भूखा ही बना रहता हूँ। जब प्रेम पूर्वक मैं अमृत नाम का पान करता हूँ तभी मैं सन्तुष्ट होता हूँ ।। ४ ।। मेरी आँखों की टिकटिकी बंधी हुई है और जीभ दर्शन की प्यास दूर करने के लिए मिन्नतें कर रही हैं ।। ५ ।। प्रियतम के बिना मैं जितना भी सिंगार करती हूँ मेरे तन में उतनी ही पीड़ा होती है और वस्त्र मेरे अंगों को जरा भी अच्छे नहीं लगते ।। ६ ।। अपने प्यारे प्रभु के बिना मैं एक क्षण भर भी नहीं रह सकती और उसे मिले बिना मुझे नींद नहीं आती ।। ७ ।। प्रियतम तो पास ही है और यह बेचारी जीव स्त्री इस रहस्य को नहीं जानती ; सच्चे गुरु ने इसे वह प्रियतम दिखा दिया है ।। ८ ।। जब स्वाभाविक रूप से वह प्रभु मिल गया तब ही हमें वह सुख प्राप्त हुआ और शब्द के माध्यम से हमारी तृष्णा बुझ गई है ।। ६ । नानक का कथन है कि हे प्रभु, तुझसे ही हमारा मन सन्तुष्ट हुआ है और तेरे महत्व को कहा नहीं जा सकता ।। १० ।। ३ ।।

मलार महला १ अष्टपदियां घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सारी धरती जल के भार के कारण झुकी हुई है। पर्वत ऊँचा है और खाई पाताल तक है। शब्द-गुरु के चिन्तन के माध्यम से यह संसार रूपी सागर शीतल और सुखदायक हो जाता है तथा अहंकार को मार डालने से इस पर से पार ले जाने वाला मार्ग चौड़ा हो जाता है ।। १ ।। मुझ अज्ञानी अन्धे के लिए तो प्रभु-नाम का ही प्रकाश सहायक है। गुरु के भय और बताए हुए रहस्य के आसरे से ही प्रभु-नाम के इस मार्ग पर चला जा सकता है ।। १ ।।

रहाउ ॥ सतिगुर सबदी पाधरु जाणि ॥ गुर कै तकीऐ साचै ताणि ॥ नामु सम्हालसि रूड़ी बाणि ॥ थैं भावै दरु लहसि पिराणि ॥ २ ॥ ऊडां बैसा एक लिव तार ॥ गुर कै सबदि नाम आधार ॥ ना जलु डूंगरु न ऊची धार ॥ निज घरि वासा तह मगु न चालणहार ॥ ३ ॥ जितु घरि वसहि तूहै बिधि जाणहि बीजउ महलु न जापै ॥ सतिगुर बाझहु समझ न होवी सभु जगु दबिआ छापै ॥ करण पलाव करै बिललातउ बिनु गुर नामु न जापै ॥ पल पंकज महि नामु छडाए जे गुर सबदु सिञापै ॥ ४ ॥ इकि मूरख अंधे मुगध गवार ॥ इकि सतिगुर कै भै नाम अधार ॥ साची बाणी मीठी अंम्रित धार ॥ जिनि पीती तिसु मोख दुआर ॥ ५ ॥ नामु भै भाइ रिदै वसाही गुर करणी सचु बाणी ॥ इंदु वरसै धरति सुहावी घटि घटि जोति समाणी ॥ कालरि बीजसि दुरमति ऐसी निगुरे की नीसाणी ॥ सतिगुर बाझहु घोर अंधारा डूबि मुए बिनु पाणी ॥ ६ ॥ जो किछु कीनो सु प्रभू रजाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ एक सबदि राचै सचि समाइ ॥ ७ ॥ चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं ॥ सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं ॥ जांमणु मरणा दीसै सिरि ऊभौ खुधिआ निद्रा कालं ॥ नानक नामु मिलै मनि भावै साची नदरि रसालं ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ मलार महला १ ॥ मरण मुकति गति सार न जानै ॥ कंठे बैठी गुर सबदि पछानै ॥ १ ॥ तू कैसे आड़ि फाथी जालि ॥ अलखु न जाचहि रिदै सम्हालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक जीअ कै जीआ खाही ॥ जलि तरती बूडी जल माही ॥ २ ॥ सरब जीअ कीए प्रतपानी ॥ जब पकड़ी तब ही पछुतानी ॥ ३ ॥ जब गलि फास पड़ी अति भारी ॥ ऊडि न साकै पंख पसारी ॥ ४ ॥ रसि चूगहि मनमुखि गावारि ॥ फाथी छूटहि गुण गिआन बीचारि ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवि तूटै जमकालु ॥ हिरदै साचा सबदु सम्हालु ॥ ६ ॥ गुरमति साची सबदु है सारु ॥ हरि का नामु रखै उरि धारि ॥ ७ ॥ से दुख आगै जि भोग बिलासे ॥ नानक मुकति नही बिनु नावै साचे ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥

रहाउ ।। सच्चे गुरु के उपदेश के माध्यम से, गुरु के आसरे और सत्य के बल से ही इस रास्ते को जाना जाता है। जीव अब प्रभु की सुन्दर वाणी के द्वारा उसके नाम को हृदय में सँभालता है और यदि तुझे भा जाए तो तेरे द्वार को पहचान लेता है ।। २ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से नाम को आसरा बनाकर मैं पक्षी की तरह उड़ता बैठता हुआ उस एक ही प्रभु में यदि लौ लगाए रहूं तो फिर जल, पर्वत और ऊँची धाराओं की कठिनाईयाँ नहीं आती और जीव दरअसल अपने हृदय में ही स्थिर हो जाते हैं और उन्हें फिर आवागमन का रास्ता चलना नहीं पड़ता ।। ३ ।। जिसके हृदय में तू बसता है वही तेरी विधि जानता है और दूसरे किसी को भी तेरे ठिकाने का पता नहीं लगता। सच्चे गुरु के बिना समझ नहीं पड़ती और सारा संसार अज्ञान के रोग में दबा हुआ है। वह अनेकों प्रकार से हाथ पाँव मारता हुआ चीख पुकार लगाता है परन्तु गुरु के बिना उसे प्रभु नाम का अनुभव नहीं होता। आँख झपकने जितने समय में ही प्रभु-नाम छुड़ा लेता है यदि जीव को गुरु के शब्द की समझ आ जाए ।। ४ ।। कई मूर्ख अन्धे और गँवार हैं और कई प्रभु-नाम का आसरा लेकर सच्चे गुरु के भय में स्थित बने रहते हैं। गुरु की सच्ची वाणी अमृत की धारा के समान मीठी है और जिसने उसे पी लिया है उसे मोक्ष का द्वार मिल जाता है ।। ५ ।। भय और प्रेम में रहते हुए यदि व्यक्ति नाम को हृदय में बसाए और गुरु की सच्ची वाणी के अनुरूप अपने आचरण को बनाए तो शब्द-गुरु रूपी बादल बरसता है और धरती सुन्दर लगती है। मनमुख व्यक्ति की यही निशानी है और उसकी बुद्धि ऐसी खोटी होती है कि वह बंजर धरती में ही बीज डालता जाता है। सच्चे गुरु के बिना घोर अंधकार है और प्रभु के नाम के जल के बिना मनमुख व्यक्ति डूबकर मरते रहते हैं ।। ६ ।। जो कुछ भी किया गया है वह प्रभु की ही रज़ा है और जो उसने प्रारम्भ से ही लिख दिया है उसे मिटाया नहीं जा सकता। हुकुम में बंधा हुआ जीव कामों में लगा रहता है और जब एक शब्द के साथ प्रेम लगा लेता है तो सत्य में समा जाता है ।। ७ ।। हे प्रभु, तेरा हुकुम चारों दिशाओं में कार्यशील है और चारों दिशाओं तथा पातालों को भी तेरे नाम का आसरा है। हे प्रभु, सबमें तेरा शब्द ही कार्यशील है और तेरी कृपा से ही स्थिर घर वाला प्रभु मिलता है। जन्मना, मरना, भूख और नींद तथा काल सिर पर ही खड़े रहते हैं। हे नानक, यदि सच्चे प्रभु की सुख देने वाली सच्ची कृपादृष्टि हो जाए तो मन को भाने वाला प्रभु नाम प्राप्त हो जाता है ।। ८ ।। १ ।। ४ ।।

मलार महला १ ।। डूब मरने की, मुक्ति की और गति के खेल को तू नहीं जानती। तू किनारे पर बैठी हुई है परन्तु शब्द-गुरु के माध्यम से तू अपने आपको पहचान सकती है। हे जीव रूपी बगुले जैसी तू किस प्रकार के जाल में फँस गई है। वास्तव में तू उस अदृष्ट प्रभु को हृदय में संभालने का ढ़ंग नहीं जानती ।। १ ।। रहाउ ।। अपने एक जीव को पालने के लिए तू अन्य जीवों को खाती रहती है। वैसे तो तू इस जल में तैरती रहती है परन्तु माया मोह के जल में तू डूबी हुई है ।। २ ।। सभी जीवों को तूने बहुत दुखी किया है परन्तु अब जब तू पकड़ी गई है तो तुझे पछतावा हो रहा है ।। ३ ।। माया मोह का भारी फँदा जब तेरे गले में पड़ गया है तो फिर तू पंखों को पसार कर स्वतन्त्रता पूर्वक नहीं उड़ सकती ।। ४ ।। हे मनमुख रूपी गँवार, तू रस ले लेकर चुग्गा चुग रही है ; प्रभु के गुणों और ज्ञान का विचार करने से ही तू फन्दे से छूट सकती है ।। ५ ।। सच्चे गुरु का सुमिरन करने से ही यमकाल नष्ट हो जाता है इसलिए तू हृदय में सच्चे शब्द को सम्भाले रख ।। ६ ।। जिसने गुरु की सच्ची शिक्षा और श्रेष्ठ शब्द को धारण किया है वही प्रभु के नाम को हृदय में धारण किए रहता है ।। ७ ।। जो भोग-विलासों में पड़े रहते हैं उन्हें ही आगे जाकर दुख भोगने पड़ते हैं। हे नानक, प्रभु के सच्चे नाम के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती ।। ८ ।। २ ।। ५ ।।

मलार महला ३ असटपदीआ घरु १ ॥ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥
करमु होवै ता सतिगुरु पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलिऐ कंचनु होईऐ जां हरि की होइ रजाइ ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि नामि चितु लाइ ॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ साचा हरि सिउ रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर ते गिआनु ऊपजै तां इह संसा जाइ ॥ सतिगुर ते हरि बुझीऐ गरभ जोनी नह पाइ ॥ २ ॥ गुर परसादी जीवत मरै मरि जीवै सबदु कमाइ ॥ मुकति दुआरा सोई पाए जि विचहु आपु गवाइ ॥ ३ ॥ गुर परसादी सिव घरि जंमै विचहु सकति गवाइ ॥ अचरु चरै बिबेक बुधि पाए पुरखै पुरखु मिलाइ ॥ ४ ॥ धातुर बाजी संसारु अचेतु है चलै मूलु गवाइ ॥ लाहा हरि सतसंगति पाईऐ करमी पलै पाइ ॥ ५ ॥ सतिगुर विणु किनै न पाइआ मनि वेखहु रिदै बीचारि ॥ वडभागी गुरु पाइआ भवजलु उतरे पारि ॥ ६ ॥ हरि नामां हरि टेक है हरि हरि नामु अधारु ॥ क्रिपा करहु गुरु मेलहु हरि जीउ पावउ मोख दुआरु ॥ ७ ॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि मेटणा न जाइ ॥ नानक से जन पूरन होए जिन हरि भाणा भाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ मलार महला ३ ॥ बेद बाणी जगु वरतदा त्रै गुण करे बीचारु ॥ बिनु नावै जम डंडु सहै मरि जनमै वारो वार ॥ सतिगुर भेटे मुकति होइ पाए मोख दुआरु ॥ १ ॥ मन रे सतिगुरु सेवि समाइ ॥ वडै भागि गुरु पूरा पाइआ हरि हरि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपणै भाणै स्रिसटि उपाई हरि आपे देइ अधारु ॥ हरि आपणै भाणै मनु निरमलु कीआ हरि सिउ लागा पिआरु ॥ हरि कै भाणै सतिगुरु भेटिआ सभु जनमु सवारणहारु ॥ २ ॥ वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ आपे बखसे मेलि लए करमि परापति होइ ॥ ३ ॥ साचा साहिबु माहरो सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ अंम्रितु वरसै मनु संतोखीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ हरि कै नाइ सदा

मलार महला ३ अष्टपदियाँ घरु १ ੧ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु की कृपा हो तो सच्चा गुरु प्राप्त होता है और बिना उसकी कृपा के उसे पाया नहीं जा सकता। जब प्रभु की रज़ा होती है तभी सच्चे गुरु से मिलकर व्यक्ति विशुद्ध सोना बन जाता है ।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु-नाम में अपने चित्त को लगा। सच्चे गुरु से ही सच्चे प्रभु को पाया जाता है और व्यक्ति प्रभु में लीन बना रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु के उपदेश से ही ज्ञान उत्पन्न होता है और तभी यह दुविधा भी दूर होती है। सच्चे गुरु से ही प्रभु को जाना जाता है और फिर गर्भ योनियों में नहीं पड़ना पड़ता ।। २ ।। गुरु की कृपा से जो अहंकार आदि के संदर्भ में मरकर जीवित बना रहे और शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण बनाकर नया जीवन प्राप्त करे वही अन्तर्मन से अभिमान को गँवाकर मुक्ति का द्वार प्राप्त करता है ।। ३ ।। गुरु की कृपा से ही जीव प्रभु रूपी चेतना के घर में जन्म लेता है और अन्तर्मन में से माया को दूर कर देता है। वह ना खाए जा सकने वाले विकारों को खाकर नष्ट कर देता है, विवेक बुद्धि प्राप्त करता है और सर्वव्यापक गुरु के माध्यम से उस सर्वत्र रमण करने वाले प्रभु से मिलाप कर लेता है ।। ४ ।। भागते रहने वाला नाशवान यह संसार एक खेल है परन्तु इसमें असावधान एवं भूखे व्यक्ति अपने मूलधन को भी गँवाकर चले जाते हैं। प्रभु की सत्संगत में स्थित बने रहने से ही लाभ प्राप्त होता है और भाग्यशाली होने से ही यह लाभ मिलता है ।। ५ ।। हे जीव, तू अपने मन में देख ले और हृदय में इस बात का विचार कर ले कि सच्चे गुरु से विहीन होकर कोई भी उस प्रभु को नहीं पा सका है। बड़े भाग्य से ही गुरु को प्राप्त किया जाता है और संसार सागर से पार उतारा होता है ।। ६ ।। प्रभु का नाम ही सच्ची टेक है और प्रभु का नाम ही हमारा आसरा है। हे गुरु, कृपा करो, प्रभु से मिला दो ताकि मैं मोक्ष के द्वार को पा सकूं ।। ७ ।। प्रभु ने जो प्रारम्भ से ही माथे पर भाग्यलेख लिख दिया है उसे मिटाया नहीं जा सकता। हे नानक, जिन्हें प्रभु की रज़ा से प्रेम हो जाता है वे सेवक ही परिपूर्ण बन जाते हैं ।। ८ ।। १ ।। मलार महला ३ ।। इस संसार में वेद वाणी ही कार्यशील होने से यह संसार केवल तीनों गुणों का ही विचार करता रहता है। प्रभु के नाम के बिना यह संसार यम का दंड सहन करता रहता है और बार-बार जन्मता मरता रहता है। सच्चे गुरु से यदि इसका मिलाप हो जाए तो मोक्ष का द्वार पाकर इसकी मुक्ति हो जाती है।।१।। हे मन, तू सच्चे गुरु का सुमिरन करते हुए उसमें लीन हो जा। बड़े भाग्य से पूर्ण गुरु प्राप्त किया है इसलिए तू प्रभु के नाम का ही सुमिरन करता रह ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने अपनी इच्छा से यह सृष्टि उत्पन्न की है और प्रभु स्वयं ही इसे आसरा देता है। प्रभु ने अपनी रज़ा में ही जीव के मन को पवित्र किया है और जीव का प्रेम प्रभु से लग गया है। प्रभु की इच्छा में ही सच्चा गुरु मिलता है जो सारे जीवन को सँवारने के योग्य होता है ।। २ ।। यह आश्चर्य स्वरूप वाणी सत्य है परन्तु कोई गुरमुख बनकर ही इसे जान पाता है। भावविभोर होकर वाह-वाह करते हुए उस प्रभु का गुणानुवाद किया जाए क्योंकि उसके जैसा अन्य कोई नहीं है। वह स्वयं ही कृपा करके अपने से मिला लेता है और उसकी कृपा से ही वह प्राप्ति उपलब्ध होती है ।। ३ ।। वह सच्चा साहिब प्रभु ही सबका प्रधान मालिक है जिसका दर्शन सच्चे गुरु ने दिखा दिया है। अब अमृत बरसता है तो मन सन्तुष्ट बना रहता है और तन मन में सदैव हरियाली

हरीआवली फिरि सुकै ना कुमलाइ ॥ ४ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ मनि वेखहु को पतीआइ ॥ हरि किरपा ते सतिगुरु पाईऐ भेटै सहजि सुभाइ ॥ मनमुख भरमि भुलाइआ बिनु भागा हरि धनु न पाइ ॥ ५ ॥ त्रै गुण सभा धातु है पड़ि पड़ि करहि वीचारु ॥ मुकति कदे न होवई नहु पाइन्हि मोख दुआरु ॥ बिनु सतिगुर बंधन न तुटही नामि न लगै पिआरु ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके बेदां का अभिआसु ॥ हरि नामु चिति न आवई नह निज घरि होवै वासु ॥ जमकालु सिरहु न उतरै अंतरि कपट विणासु ॥ ७ ॥ हरि नावै नो सभु को परतापदा विणु भागां पाइआ न जाइ ॥ नदरि करे गुरु भेटीऐ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ नानक नामे ही पति ऊपजै हरि सिउ रहां समाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

मलार महला ३ असटपदी घरु २ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि क्रिपा करे गुर की कारै लाए ॥ दुखु पल्हरि हरि नामु वसाए ॥ साची गति साचै चितु लाए ॥ गुर की बाणी सबदि सुणाए ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि सेवि निधानु ॥ गुर किरपा ते हरि धनु पाईऐ अनदिनु लागै सहजि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु पिर कामणि करे सीगारु ॥ दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु ॥ मनमुख का इहु बादि आचारु ॥ बहु करम द्रिड़ावहि नामु विसारि ॥ २ ॥ गुरमुखि कामणि बणिआ सीगारु ॥ सबदे पिरु राखिआ उर धारि ॥ एकु पछाणै हउमै मारि ॥ सोभावंती कहीऐ नारि ॥ ३ ॥ बिनु गुर दाते किनै न पाइआ ॥ मनमुख लोभि दूजै लोभाइआ ॥ ऐसे गिआनी बूझहु कोइ ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न होइ ॥ ४ ॥ कहि कहि कहणु कहै सभु कोइ ॥ बिनु मन मूए भगति न होइ ॥ गिआन मती कमल परगासु ॥ तितु घटि नामै नामि निवासु ॥ ५ ॥ हउमै भगति करे सभु कोइ ॥ ना मनु भीजै न सुखु होइ ॥ कहि कहि कहणु आपु जाणाए ॥ बिरथी भगति सभु जनमु गवाए ॥ ६ ॥ से भगत सतिगुर मनि भाए ॥ अनदिनु नामि रहे लिव लाए ॥ सद ही

बनी रहती है और यह हरियाली ना तो सूखती है और ना ही मुरझाती है ।। ४ ।। मन में इस बात को निर्णयपूर्वक जान लो कि सच्चे गुरु के बिना कोई भी उस प्रभु को नहीं पा सका है। प्रभु की कृपा से सच्चा गुरु प्राप्त होता है और यह स्वाभाविक रूप से ही मिल भी जाता है। मनमुख व्यक्ति भ्रमों में भूला रहता है और भाग्य लेखों के बिना प्रभु रूपी धन प्राप्त नहीं किया जा सकता ।। ५ ।। तीनों गुण माया का ही रूप हैं जिन पर लोग तथाकथित ज्ञान की पुस्तकें पढ़-पढ़कर विचार करते रहते है। उन्हें ना तो कभी मुक्ति प्राप्त होती है और ना ही मोक्ष का द्वार दिखाई देता है। सच्चे गुरु के बिना बन्धन टूटते नहीं और प्रभु नाम में भी प्रेम नहीं लगता ।। ६ ।। वेदों के पठन-पाठन का अभ्यास करते हुए पंडित और मौनी पुरुष थक जाते हैं परन्तु जब तक प्रभु का नाम हृदय में स्थित नहीं होता तो उनका अपने मूल ज्योतिस्वरूप घर में निवास नहीं हो पाता। यमकाल उनके सिर पर मंडराता ही रहता है और अन्तर्मन में कपट होने से वे विनाश को प्राप्त होते हैं ।। ७ ।। प्रभु के नाम की चाहत तो सभी बनाए रखते हैं परन्तु भाग्य के बिना इसे पाया नहीं जाता। प्रभु कृपा दृष्टि करे तो गुरु से मिलाप होता है और प्रभु-नाम मन में आ बसता है। हे नानक, नाम से ही स्वः सम्मान उत्पन्न होता है और मैं प्रभु में लीन बना रहता हूँ ।। ८ ।। २ ।।

मलार महला ३ अष्टपदी घरु २ ।। १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु कृपा करे तो गुरु द्वारा बताए आचरण में जीव को लगा देता है और दुखों को दूर कर प्रभु-नाम को हृदय में बसा देता है। सत्य में चित्त लगाने से गुरु की वाणी और शब्द को सुनने से सच्ची गति प्राप्त होती है ।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु-नाम का सुमिरन कर जो सुखों का घर है। गुरु की कृपा से ही प्रभु रूपी धन प्राप्त होता है और लगातार स्वाभाविक अवस्था में ही ध्यान लगा रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रियतम से विहीन सुन्दर स्त्री जब सिंगार करती है तो उसे दुराचारिणी कहा जाता है और वह सदैव इधर-उधर भटकती रहती है। मनमुख का आचरण वास्तव में बुरा और व्यर्थ ही होता है क्योंकि प्रभु-नाम को भुलाकर वह अनेकों प्रकार के कर्मकाण्ड मन में पक्के किए रहता है ।। २।। गुरमुख बनी हुई जीव स्त्री जब सिंगार करती है, शब्द के माध्यम से प्रियतम को हृदय में धारण किए रहती है और अपने अहंकार को समाप्त करके केवल एक ही प्रियतम प्रभु को पहचानती है तो ऐसी स्त्री को शोभायुक्त और सुन्दर स्त्री कहा जाता है ।। ३ ।। दाता गुरु के बिना कोई भी प्रभु को नहीं पा सका है और मनमुख लोभ में ही द्वैतभाव में लीन बने रहते हैं। इस प्रकार के लोगों को कोई ज्ञानवान व्यक्ति ही समझा पाता है कि गुरु से मिलाप के बिना मुक्ति नहीं होती ।। ४ ।। कहने के लिए तो सब लोग कुछ ना कुछ कहते रहते हैं परन्तु मन को मारे बिना अर्थात् उसे काबू में लाए बिना भक्ति नहीं होती। यदि जीव की बुद्धि ज्ञान वाली हो जाए तो उसका हृदय कमल खिल उठता है और उस हृदय में प्रभु-नाम होने के कारण जीव को प्रभु-नाम में ही निवास प्राप्त हो जाता है ।। ५ ।। सब लोग वास्तव में अपने अहंकार के वश में होकर ही भक्ति करते हैं जिससे ना तो उनका मन सन्तुष्ट होता है और ना ही उन्हें सुख प्राप्त होता है। वे बार-बार कई कुछ कहते हुए केवल अपने आपको ही लोगों में जनवाते रहते हैं। ऐसे लोगों की भक्ति व्यर्थ होती है और वे पूरा जीवन ही गँवा देते हैं ।। ६ ।। ऐसे भक्त सच्चे गुरु के मन को भा जाते हैं जो सदैव

नामु वेखहि हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥ ७ ॥ आपे बखसे देइ पिआरु ॥ हउमै रोगु वडा संसारि ॥ गुर किरपा ते एहु रोगु जाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ ५ ॥ ८ ॥

रागु मलार छंत महला ५ ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रीतम प्रेम भगति के दाते ॥ अपने जन संगि राते ॥ जन संगि राते दिनसु राते इक निमख मनहु न वीसरै ॥ गोपाल गुण निधि सदा संगे सरब गुण जगदीसरै ॥ मनु मोहि लीना चरन संगे नाम रसि जन माते ॥ नानक प्रीतम क्रिपाल सदहूं किनै कोटि मधे जाते ॥ १ ॥ प्रीतम तेरी गति अगम अपारे ॥ महा पतित तुम्ह तारे ॥ पतित पावन भगति वछल क्रिपा सिंधु सुआमीआ ॥ संतसंगे भजु निसंगे रंउ सदा अंतरजामीआ ॥ कोटि जनम भ्रमंत जोनी ते नाम सिमरत तारे ॥ नानक दरस पिआस हरि जीउ आपि लेहु सम्हारे ॥ २ ॥ हरि चरन कमल मनु लीना ॥ प्रभ जल जन तेरे मीना ॥ जल मीन प्रभ जीउ एक तूहै भिंन आन न जानीऐ ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु तउ प्रसादी मानीऐ ॥ भजु साधसंगे एक रंगे क्रिपाल गोबिद दीना ॥ अनाथ नीच सरणाइ नानक करि मइआ अपुना कीना ॥ ३ ॥ आपस कउ आपु मिलाइआ ॥ भ्रम भंजन हरि राइआ ॥ आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुण निधि पिआरिआ ॥ महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ ॥ मिलि संगि सोहे देखि मोहे पुरबि लिखिआ पाइआ ॥ बिनवंति नानक सरनि तिन की जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

वार मलार की महला १ राणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ३ ॥ गुरि मिलिऐ मनु रहसीऐ जिउ वुठै धरणि सीगारु ॥ सभ दिसै हरीआवली सर भरे सुभर ताल ॥ अंदरु रचै सच रंगि जिउ मंजीठै लालु ॥ कमलु विगसै सचु मनि गुर कै सबदि

प्रभु-नाम में ही अपनी लौ लगाए रहते हैं। वे सदैव प्रभु को नाम रूप में प्रत्यक्ष देखते रहते हैं और शब्द-गुरु के माध यम से वे उसे परिपूर्ण रूप से व्याप्त मानते रहते हैं ।। ७ ।। वह स्वयं ही कृपा करके अपना प्रेम प्रदान करता है परन्तु इस संसार में सबसे बड़ा रोग अहंकार का रोग है जो प्रेम को प्राप्त नहीं होने देता। गुरु की कृपा से ही यह रोग नष्ट होता है और हे नानक, यह जीव सच्चा बनकर उस सत्य में ही लीन हो जाता है ।। ८ ।। १ ।। ३ ।। ५ ।। ८ ।।

रागु मलार छन्द महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

भक्ति और प्रेम के दाता प्रियतम प्रभु हैं जो सेवकों में लीन बने हुए हैं। वे सेवकों में दिन रात समाए रहते हैं; एक क्षण के लिए भी वह मन से भूल ना जाए। गुणों का भण्डार वह प्रभु सभी गुणों और संसार का मालिक सदैव साथ ही बना रहता है। उसके चरणों की संगत में मेरा मन मोहित हो गया है और उसके सेवक उसके नाम के रस में मस्त हो गए हैं। हे नानक, करोड़ों में किसी बिरले ने ही जाना है कि वह प्रियतम प्रभु सदैव कृपालु बना रहता है ।। १ ।। हे प्रियतम, तेरी महिमा अगम्य और अपार है और तूने ही महा पतित लोगों को भी पार उतार दिया है। तुम पतित पावन भक्तवत्सल और कृपा के समुद्र सबके स्वामी हो। शान्त पुरुषों की संगत में निःसंकोच भाव से तेरा सुमिरन करके हे अन्तर्यामी प्रभु, मैं सदैव तुझमें ही लीन बना रहूं। जो करोड़ों जन्मों तक योनियों में भ्रमण कर रहे थे, नाम का सुमिरन करने से ही तूने उन्हें पार उतार दिया है। नानक को तो प्रभु के दर्शनों की प्यास है और हे प्रभु, तू स्वयं ही उसकी सम्भाल कर ले ।। २ ।। प्रभु के चरण कमलों में मन उसी प्रकार लीन हो गया है जैसे प्रभु रूपी जल में सेवक रूपी मछलियाँ आनन्दित बनी रहती हैं। हे प्रभु, जल और मछली स्वयं एक तू ही है इसलिए तूझसे भिन्न कुछ भी नहीं जाना जाता। तुम बाँह पकड़कर हमें प्रभु-नाम का दान दो क्योंकि तेरी कृपा से ही हमें सम्मान प्राप्त होता है। उस कृपालु और दीनों के प्रभु का एक प्रेम रंग में रंगकर साधु पुरुषों की संगत में सुमिरन करते रहो। अनाथ और नीच रूप में शरण पड़े हुए नानक को प्रभु ने कृपा करके अपना बना लिया है ।। ३ ।। अपने आपको प्रभु ने अपने आप से मिला दिया और वह प्रभु ही भ्रमों का नाश करने वाला है। आश्चर्यरूप वाला वह अन्तर्यामी मालिक गुणों का भण्डार जब मिल जाता है तो महामंगल और सुख उत्पन्न होते हैं और फिर उस प्रभु के गुणों का सदैव सुमिरन किया जाता है। पूर्व रूप में ही लिखे हुए भाग्य लेख के कारण उसे प्राप्त किया जाता है; उससे मिलकर शोभा युक्त बना जाता है और उसे देखकर उसी पर मोहित हुआ जाता है। नानक विनती करता है कि मै तो उन लोगों की शरण में हूं जिन्होंने बार-बार प्रभु-नाम का सुमिरन किया है ।। ४ ।। १ ।।

वार मलार की महला १
राणा कैलाश तथा मालदेव की धुन पर गायन करना है   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

श्लोक महला ३ ।। गुरु को मिलने से मन उसी प्रकार खिल उठता है जैसे जल बरसने से धरती का सिंगार हो जाता है। सभी ओर तालाब ऊपर तक भर जाते हैं तथा सब ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। हृदय भी सत्य के रंग में रंग कर मजीठ के रंग की तरह लाल हो जाता है। सच्चा मन कमल की तरह खिल उठता है और शब्द-गुरु के माध्यम से

निहालु ॥ मनमुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहालि ॥ फाही फाथे मिरग जिउ सिरि दीसै जमकालु ॥ खुधिआ त्रिसना निंदा बुरी कामु क्रोधु विकरालु ॥ एनी अखी नदरि न आवई जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ तुधु भावै संतोखीआं चूकै आल जंजालु ॥ मूलु रहै गुर सेविऐ गुर पउड़ी बोहिथु ॥ नानक लगी ततु लै तूं सचा मनि सचु ॥ १ ॥ महला १ ॥ हेको पाधरु हेक दरु गुर पउड़ी निज थानु ॥ रूड़उ ठाकुरु नानका सभि सुख साचउ नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ ॥ अंबरु धरति विछोड़ि चंदोआ ताणिआ ॥ विणु थंम्हा गगनु रहाइ सबदु नीसाणिआ ॥ सूरजु चंदु उपाइ जोति समाणिआ ॥ कीए राति दिनंतु चोज विडाणिआ ॥ तीरथ धरम वीचार नावण पुरबाणिआ ॥ तुधु सरि अवरु न कोइ कि आखि वखाणिआ ॥ सचै तखति निवासु होर आवण जाणिआ ॥ १ ॥ सलोक मः १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु ओमाहा होइ ॥ नागां मिरगां मछीआं रसीआं घरि धनु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु वेछोड़ा होइ ॥ गाई पुता निरधना पंथी चाकरु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा सचिआरु जिनि सचु वरताइआ ॥ बैठा ताड़ी लाइ कवलु छपाइआ ॥ ब्रहमै वडा कहाइ अंतु न पाइआ ॥ ना तिसु बापु न माइ किनि तू जाइआ ॥ ना तिसु रूपु न रेख वरन सबाइआ ॥ ना तिसु भुख पिआस रजा धाइआ ॥ गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ॥ सचे ही पतीआइ सचि समाइआ ॥ २ ॥ सलोक मः १ ॥ वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह ॥ भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥ १ ॥ मः २ ॥ वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलां रोगु पछाणु ॥ ऐसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥ जितु दारू रोग उठिअहि तनि सुखु वसै आइ ॥ रोगु गवाइहि आपणा त नानक वैदु सदाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु देव उपाइआ ॥ ब्रहमे दिते बेद पूजा लाइआ ॥ दस अवतारी रामु राजा आइआ ॥ दैता मारे धाइ हुकमि सबाइआ ॥ ईस महेसुरु सेव तिन्ही अंतु न पाइआ ॥ सची कीमति पाइ तखतु रचाइआ ॥ दुनीआ धंधे लाइ आपु छपाइआ ॥

निहाल हो जाता है। अच्छी तरह से नज़र गड़ाकर देख लो कि मनमुख व्यक्ति इस सबसे उलटी दिशा में ही बना रहता है। फन्दे में फंसे हुए मृग की तरह उसे सदैव सिर पर मंडराता हुआ काल ही दिखाई देता रहता है। यह भूख, यह तृष्णा, निन्दा बुरी है तथा काम, क्रोध विकराल रूप वाले हैं। जब तक वह शब्द का चिन्तन नहीं करता ये सब मनमुख व्यक्ति को आँखों से दिखाई नहीं देते। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तो व्यक्ति सन्तुष्ट हो जाता है और उसके व्यर्थ के जंजाल नष्ट हो जाते हैं। गुरु का सुमिरन करने से जीव की जड़ सत्य में पक्की बनी रहती है और गुरु ही प्रभु नाम के जहाज पर चढ़ने के लिए सीढ़ी है। हे नानक, यह सीढ़ी ज़िसकी भी तरफ लगी हुई है वह स्वयं भी सच्चा हो जाता है और उसका मन भी सत्य स्वरूप हो जाता है ।। १ ।। महला १ ।। प्रभु तक पहुंचने का मार्ग और द्वार एक ही है और गुरु उस स्थान तक पहुंचने के लिए सीढ़ी है। हे नानक, वह प्रभु सुन्दर है और सभी सुख उसके सच्चे नाम में स्थित हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु ने स्वयं ही सृष्टि की रचना करके अपने आपको प्रकट किया है। आकाश को धरती से दूर करके आकाश को मानो एक विशाल तम्बू की तरह फैला दिया है। शब्द को अपने चिन्ह के तौर पर प्रकट किया है और आकाश को बिना किसी स्तम्भ के सहारे के स्थित बनाए रक्खा है। सूर्य और चन्द्रमा उसने बनाए हैं जिन्होंने सब ओर अपनी ज्योति फैलाई हुई है। उसके आश्चर्यपूर्ण कौतुक हैं कि उसने रात और दिन भी बना दिए हैं तथा साथ ही साथ तीर्थों, धर्मों के विचार और स्नान आदि के पर्वों की भी रचना कर दी है। तुझे क्या कहकर तेरा बखान किया जाए क्योंकि तेरे समान अन्य कोई नहीं है। हे सच्चे प्रभु, सत्य के सिंहासन पर तेरा ही वास स्थायी है; अन्य सभी तो आवागमन में ही पड़े रहते हैं ।। १ ।। श्लोक महला १ ।। हे नानक, जब सावन की वर्षा होती है तो चार प्रकार के जीवों को प्रसन्नता प्राप्त होती है। सर्पों को छोटे-छोटे मेंढ़कों के रूप में उनका खाना मिलने से, पशुओं और मृगों को गर्मी के बाद मौसम में आई ठंडक से, मछलियों को जल के बढ़ जाने से और धनवान रसिकों को विलासता के साधनों के कारण आनन्द प्राप्त होता है ।। १ ।। महला १ ।। हे नानक, सावन की बरसात में इसी प्रकार चार लोगों को दुखी भी होना पड़ता है। गाय के बैलों को अब धरती जोतनी पड़ती है इसलिए कष्ट होता है, निर्धन व्यक्ति को भी समुचित प्रबन्ध ना होने के कारण दुखी होना पड़ता है, पथिकों को रास्ते खराब हो जाने के कारण परेशानी होती है और घर के नौकर को भी तकलीफ उठानी पड़ती है क्योंकि बाहर के सारे कामों के लिए नौकर को ही दौड़ाया जाता है ।। २।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तू ही सच्चा है, तू ही सत्यशील बना रहने वाला है जिसने सत्य को ही सब ओर कार्यशील किया हुआ है। तू सबके मूल के रूप में प्रसन्न होकर समाधि में लीन बैठा हुआ है। अपने आपको बड़ा कहलाने के बावजूद ब्रह्मा भी तेरा अन्त नहीं जान सका। तेरा कोई माता पिता नहीं है और तुझे वास्तव में किसने पैदा किया है कुछ पता नहीं। तेरी कोई भी रूप रेखा नहीं है और सभी वर्णों में से तेरा कोई भी वर्ण नहीं है। तुझे कोई भूख प्यास नहीं लगती और तू सदैव सन्तुष्ट बना रहकर इधर-उधर जीवों के लिए भागता-दौड़ता रहता है। गुरु में अपने-आपको लीन करके तूने शब्द रूप में हुकुम को सर्वत्र कार्यशील किया हुआ है। तू सत्य के माध्यम से ही प्रसन्न होता है और सत्य रूप में ही सबमें समाया रहता है ।। २ ।। श्लोक महला १ ।। मुझे बीमार समझकर दवाई देने के लिए वैद्य को बुलाया गया जो कि मेरी बाँह को पकड़कर मेरी नाड़ी आदि को खोज और समझ रहा है। यह भोला वैद्य यह नहीं जानता कि मेरे शरीर को कुछ नहीं हुआ है और वास्तविक पीड़ा तो मेरे हृदय में है ।। १ ।। महला २ ।। हे अच्छे वैद्य, तू वास्तविक वैद्य बनकर पहले आन्तरिक रोग की पहचान कर; फिर तू इस प्रकार की औषधि को ढूंढ़ जिससे सभी रोगों का समूह नष्ट हो जाए। जिस औषधि से रोग दूर हो जाए और शरीर में सुख आकर बस जाए तू ऐसी औषधि दे। नानक का कथन है कि पहले तू अपने रोग को दूर कर और फिर अपने आपको वैद्य कहला ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु नें ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं को उत्पन्न करके ब्रह्मा को वेद देते हुए उसे पूजा पाठ में लगा दिया। दस अवतारों में से राजा राम भी आए और उन्होंने प्रभु के हुकुम के अन्तर्गत आगे होकर दैत्यों को मार डाला। शिव भी ईश्वर के रूप में तेरा सुमिरन करते हुए भी तेरे रहस्य को नहीं जान पाए। तूने सच्चे मूल्यों को प्रकट कर इस संसार रूपी सिंहासन की रचना की है और इस संसार को विभिन्न धन्धों और प्रपंचों में लगाकर स्वयं को इसमें छिपा लिया है।

धरमु कराए करम धुरहु फुरमाइआ ॥ ३ ॥ सलोक मः २ ॥ सावणु आइआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥ नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन्ह अवरी लागा नेहु ॥ १ ॥ मः २ ॥ सावणु आइआ हे सखी जलहरु बरसनहारु ॥ नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन्ह सह नालि पिआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे छिंझ पवाइ मलाखाड़ा रचिआ ॥ लथे भड़थू पाइ गुरमुखि मचिआ ॥ मनमुख मारे पछाड़ि मूरख कचिआ ॥ आपि भिड़ै मारे आपि आपि कारजु रचिआ ॥ सभना खसमु एकु है गुरमुखि जाणीऐ ॥ हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीऐ ॥ सतसंगति मेलापु जिथै हरि गुण सदा वखाणीऐ ॥ नानक सचा सबदु सलाहि सचु पछाणीऐ ॥ ४ ॥ सलोक मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ अवरि करेंदा वंन ॥ किआ जाणा तिसु साह सिउ केव रहसी रंगु ॥ रंगु रहिआ तिन्ह कामणी जिन्ह मनि भउ भाउ होइ ॥ नानक भै भाइ बाहरी तिन तनि सुखु न होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै नीरु निपंगु ॥ नानक दुखु लागा तिन्ह कामणी जिन्ह कंतै सिउ मनि भंगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ दोवै तरफा उपाइ इकु वरतिआ ॥ बेद बाणी वरताइ अंदरि वादु घतिआ ॥ परविरति निरविरति हाठा दोवै विचि धरमु फिरै रैबारिआ ॥ मनमुख कचे कूड़िआर तिन्ही निहचउ दरगह हारिआ ॥ गुरमती सबदि सूर है कामु क्रोधु जिन्ही मारिआ ॥ सचै अंदरि महलि सबदि सवारिआ ॥ से भगत तुधु भावदे सचै नाइ पिआरिआ ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा तिन्हा विटहु हउ वारिआ ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै लाइ झड़ी ॥ नानक भाणै चलै कंत कै सु माणे सदा रली ॥ १ ॥ मः ३ ॥ किआ उठि उठि देखहु बपुड़ें इसु मेघै हथि किछु नाहि ॥ जिनि एहु मेघु पठाइआ तिसु राखहु मन मांहि ॥ तिस नो मंनि वसाइसी जा कउ नदरि करेइ ॥ नानक नदरी बाहरी सभ करण पलाह करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो हरि सदा सरेवीऐ जिसु करत न लागै वार ॥ आडाणे आकास करि खिन महि ढाहि उसारणहार ॥ आपे जगतु उपाइ कै कुदरति करे वीचार ॥ मनमुख अगै लेखा मंगीऐ बहुती होवै

धर्मराज के रूप में न्याय कर्ता का तू प्रारम्भ से ही कहा हुआ कर्म, सदैव करता रहता है ।। ३ ।। श्लोक महला २ ।। हे सखी, सावन की ऋतु आ पहुंची है इसलिए अब तू अपने प्रियतम को हृदय में याद करती रह। हे नानक, वे सुहागिन जीव स्त्रियाँ जिनका किसी अन्य के साथ प्रेम लगा होता है पछताती हुई मरती रहती हैं ।। १ ।। महला २ ।। हे सखी, सावन में बादल बरसते हैं परन्तु हे नानक, वही सुहागिन जीव स्त्रियां सुख से सोती हैं जिन्हें अपने प्रभु-पति के साथ प्यार होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। स्वयं ही कुश्तियों का डंका बजाकर तूने स्वयं ही संसार रूप में पहलवानों का अखाड़ा बना दिया है। यहाँ विभिन्न प्रकार के मल्ल चीखते गरजते हुए अखाड़े में उतरे हैं परन्तु गुरमुख व्यक्ति यहाँ प्रसन्न बने रहते हैं। मूर्ख और कच्चे व्यक्ति मनमुखों को मारकर यहाँ पछाड़ दिया जाता है। प्रभु स्वयं ही भिड़ता है, स्वयं ही मारता है और स्वयं ही इस सारे कार्य व्यापार की रचना करता है। गुरमुख बनकर ही यह जाना जाता है कि सब जीवों का मालिक वह एक प्रभु ही है। वही कलम और दवात के बिना ही सबके माथे पर अपने हुकुम के लेख लिख देता है। उससे मिलाप सत्संगत में ही होता है जहाँ सदैव प्रभु के गुणों का ही बखान होता रहता है। हे नानक, सच्चे शब्द के गुणानुवाद के माध्यम से उस सत्य प्रभु को पहचाना जाता है ।। ४ ।। श्लोक महला ३ ।। बादल के रूप में झुक-झुककर मेरा प्रियतम आया है और वह कई प्रकार के रंग बनाता रहता है। मुझे पता नहीं कि उस साहूकार प्रभु के साथ मेरा प्रेम किस प्रकार चलता रहेगा। उसी जीव स्त्री के हृदय में उसका रंग चढ़ता है जिसके मन में उसका भय और प्रेम विद्यमान हो। हे नानक, जो उसके अनुशासन रूपी भय और प्रेम की भावना से विहीन बनी रहती है उसके शरीर को कभी भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता ।। १ ।। महला ३ ।। बादल के रूप में झुका हुआ वह शुद्ध अमृत जल को बरसाता है परन्तु हे नानक, ऐसी जीव स्त्रियां फिर भी दुखी बनी रहती हैं जिनका मन अपने प्रियतम की ओर से टूटा हुआ होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। सांसारिक और त्यागी के रूपों वाले दोनों पक्षों की रचना करके वह एक प्रभु ही उनमें कार्यशील बना रहता है। वेद-वाणी का प्रसार करके उसने इन दोनों पक्षों में ही वाद-विवाद उत्पन्न किया हुआ है। वास्तव में प्रवृत्ति (सांसारिकता) और निवृत्ति (संसार का त्याग) ये दोनों एक दूसरे के विरोधी सिरे हैं परन्तु इन दोनों का सुखद मेल कराने वाला धर्म इन दोनों को आपस में मिलाता है। मनमुख कच्चे और झूठे होते हैं और प्रभु के दरबार में वे निश्चित रूप से हारे हुए होते हैं। गुरु की शिक्षा लेने वाले वे व्यक्ति शब्द के माध्यम से शूरवीर बने रहते हैं जिन्होंने काम, क्रोध इत्यादि को समाप्त कर डाला है। सच्चे व्यक्ति के अन्तर्मन में ही प्रभु का वह ठिकाना है जिसे शब्द के माध्यम से संवर कर प्राप्त किया जाता है। जो सच्चे प्रभु के नाम से प्रेम करते हैं वे भक्तजन ही तुझे अच्छे लगते हैं। जो अपने सच्चे गुरु का सुमिरन करते रहते हैं मैं उन पर बलिहारी जाता रहता हूं ।। ५ ।। श्लोक महला ३ ।। बादल के रूप में झुका हुआ वह प्रियतम आया है और घनघोर वर्षा के रूप में बरस रहा है। हे नानक, जो अपने प्रियतम की रज़ा में चलती हैं वे ही सदैव उसके आनन्द का उपभोग करती रहती हैं ।। १ ।। महला ३ ।। हे मूर्ख, तू इस दिखने वाले बादल को क्या उठ-उठकर देख रहा है क्योंकि इस बादल के हाथ में तो कुछ भी नहीं है। जिसने इस बादल को भेजा है तू उस प्रभु को ही अपने मन में स्थित बनाए रख। जिस पर वह प्रभु कृपा दृष्टि करता है उसके मन में ही वह अपने आपको बसाता है और हे नानक, जो उसकी कृपा दृष्टि से बाहर है वे सभी चीख पुकार लगाए रहते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। जिसे यह रचना करने में जरा सी भी देर नहीं लगती सदैव उस प्रभु का सुमिरन करते रहना चाहिए। वह क्षण भर में चारों ओर तने हुए आकाश की रचना करता है और उसे फिर नष्ट भी कर देता है। संसार को स्वयं ही उत्पन्न करके वह अपनी शक्ति का लेखा जोखा भी करता रहता है। मनमुख व्यक्ति से परलोक में भी लेखा माँगा जाता है और कुकर्मों के कारण उसे बहुत

मार ॥ गुरमुखि पति सिउ लेखा निबड़ै बखसे सिफति भंडार ॥ ओथै हथु न अपड़ै कूक न सुणीऐ पुकार ॥ ओथै सतिगुरु बेली होवै कढि लए अंती वार ॥ एना जंता नो होर सेवा नही सतिगुरु सिरि करतार ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा जिस नो तू पूकारदा तिस नो लोचै सभु कोइ ॥ अपणी किरपा करि कै वससी वणु त्रिणु हरिआ होइ ॥ गुर परसादी पाईऐ विरला बूझै कोइ ॥ बहदिआ उठदिआ नित धिआईऐ सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक अंम्रितु सद ही वरसदा गुरमुखि देवै हरि सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ कलमलि होइ मेदनी अरदासि करे लिव लाइ ॥ सचै सुणिआ कंनु दे धीरक देवै सहजि सुभाइ ॥ इंद्रै नो फुरमाइआ वुठा छहबर लाइ ॥ अनु धनु उपजै बहु घणा कीमति कहणु न जाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू सभना जीआ देदा रिजकु संबाहि ॥ जितु खाधै सुखु ऊपजै फिरि दूखु न लागै आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु तू सचे लैहि मिलाइ ॥ दूजै दूजी तरफ है कूड़ि मिलै न मिलिआ जाइ ॥ आपे जोड़ि विछोड़िऐ आपे कुदरति देइ दिखाइ ॥ मोहु सोगु विजोगु है पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जो हरि चरणी रहै लिव लाइ ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतु है ऐसी बणत बणाइ ॥ से सुखीए सदा सोहणे जिन्ह विचहु आपु गवाइ ॥ तिन्ह सोगु विजोगु कदे नही जो हरि कै अंकि समाइ ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ तिसै सरेविहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि हरि प्रभु मनि वसै तां सदा सदा सुखु होइ ॥ सहसा मूलि न होवई सभ चिंता विचहु जाइ ॥ जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ सचा साहिबु मनि वसै तां मनि चिंदिआ फलु पाइ ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ अंम्रितु सदा वरसदा बूझनि बूझणहार ॥ गुरमुखि जिन्ही बुझिआ हरि अंम्रितु रखिआ उरि धारि ॥ हरि अंम्रितु पीवहि सदा रंगि राते हउमै त्रिसना मारि ॥ अंम्रितु हरि का नामु है वरसै किरपा धारि ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि आतम रामु मुरारि ॥ २ ॥

मार सहनी पड़ती है। गुरमुख व्यक्ति का सम्मान पूर्वक सभी लेन देन निपट जाता है और वह प्रभु प्रशंसा का भण्डार उसे सौंप देता है। उस प्रभु तक किसी का हाथ नहीं पहुंचता और वहां व्यर्थ का प्रलाप अर्थात चीख पुकार नहीं सुने जाते। वहां सच्चा गुरु ही सहायक होता है और अन्त में जीव को संसार सागर से बाहर निकाल लेता है। सच्चे गुरु के रूप में जिनके सिर पर कर्ता प्रभु है उन दीनों को अन्य किसी की भी सेवा करने की आवश्यकता नहीं होती है ।।६।। श्लोक महला ३ ।। हे पपीहे, जिसके लिए तू पुकार लगा रहा है सब उसी को ही चाहते हैं। वह अपनी कृपा करते हुए ही बरसेगा जिससे इस संसार रूपी जंगल का तिनका-तिनका हरा भरा हो उठेगा। यह कोई बिरला ही जान पाता है कि गुरु की कृपा से ही उसे प्राप्त किया जाता है। उठते बैठते सदैव उसका स्मरण बनाए रखने से ही सदा सुख प्राप्त होता है। हे नानक, उस प्रभु का अमृत रूपी जल तो सदैव ही बरसता रहता है परन्तु वह प्रभु देता केवल गुरमुखों को ही है ।। १ ।। महला ३ ।। दुखों और क्लेशों में व्याकुल बनी हुई धरती एक मन होकर अरदास करती है। सच्ची अरदास को उस सच्चे प्रभु ने कान से सुना और स्वाभाविक रूप से ही धरती को धैर्य प्रदान किया। अपनी रचना बादल को उस प्रभु ने ही आदेश दिया जो घनघोर रूप से धरती पर बरस उठा। जीवों के लिए अन्न और धन विशाल रूप में उत्पन्न हो गया; उस प्रभु की महिमा का कथन नहीं किया जा सकता। हे नानक, तू उस प्रभु के नाम का ही गुणानुवाद कर जो सब को रोज़ी, रोटी देता रहता है। उसका दिया हुआ खाने से वास्तविक आनन्द उत्पन्न होता है और फिर दुख तो स्पर्श भी नहीं कर पाता ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तू सत्य ही सत्य है और जो सत्यशील अर्थात सचिआर होते हैं उन्हें तू अपने से मिला लेता है। जो द्वैतभाव वाले हैं उनका पक्ष सत्य से दूर दूसरी ओर है क्योंकि झूठ ना तो सत्य में मिलता है और ना ही उसे मिलाया जा सकता है। वह स्वयं ही मिलाता है, दूर कर देता है और स्वयं ही अपनी शक्ति का ऐहसास भी करा देता है। मोह और शोक वियोग के ही नाम हैं और पहले से ही लिखे लेख के कारण ये बने रहते हैं। मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ जो प्रभु के चरणें में लौ लगाए रहते हैं। वे जल में कमल की तरह अलिप्त बने रहने का ढंग और संयोग बना लेते हैं। जिन्होंने अपने अन्तर्मन से अहंकार को गँवा दिया है वे ही सुखी हैं और सदैव सुन्दर बने रहने वाले हैं। जो प्रभु की गोदी में समाए रहते हैं उनको कभी भी शोक और वियोग प्रभावित नहीं करता ।। ७ ।। श्लोक महला ३ ।। हे नानक, उसका गुणानुवाद करो जिसके वश में सब कुछ है। हे प्राणियों, उसकी पूजा, अर्चना करो जिस प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है। गुरमुख बनकर जब प्रभु को मन में बसाया जाता है तो सदैव सुख ही सुख प्राप्त होता है, फिर किसी प्रकार का भी भय नहीं रहता और अन्तर्मन की चिन्ता समाप्त हो जाती है। वास्तव में जो कुछ भी होना होता है स्वाभाविक रूप से ही होना होता है। उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। जब सच्चा साहिब मन में आ बसता है तो मनोवांछित फल प्राप्त हो जाता है। हे नानक, जिनको वह अपने हिसाब में लिख लेता है अर्थात अपना बना लेता है उनका कहा हुआ फिर वह स्वयं सुनता है (और उसे पूरा करता है) ।। १ ।। महला ३ ।। अमृत तो सदैव वरसता है परन्तु इसका रहस्य कोई जानकार ही जान पाता है। गुरमुख बनकर जिन्होंने इसको जान लिया है उन्होंने प्रभु रूपी अमृत को हृदय में धारण कर लिया होता है। प्रभु के रंग में रंगकर तथा अहंकार-तृष्णा को मारकर जो प्रभु के नाम का अमृतपान करते हैं, प्रभु-नाम का अमृत कृपापूर्वक उन पर बरसता रहता है। हे नानक, गुरमुख बनकर ही वह प्रभु आत्मा का सम्राट बनकर काम-क्रोध आदि दैत्यों को मारने वाले के रूप में हृदय में दृष्टिगोचर होने लगता है।। २ ।।

पउड़ी ॥ अतुलु किउ तोलीऐ विणु तोले पाइआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि वीचारीऐ गुण महि रहै समाइ ॥ अपणा आपु आपि तोलसी आपे मिलै मिलाइ ॥ तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ हउ बलिहारी गुर आपणे जिनि सची बूझ दिती बुझाइ ॥ जगतु मुसै अंम्रितु लुटीऐ मनमुख बूझ न पाइ ॥ विणु नावै नालि न चलसी जासी जनमु गवाइ ॥ गुरमती जागे तिन्ही घरु रखिआ दूता का किछु न वसाइ ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा ना बिललाइ ना तरसाइ एहु मनु खसम का हुकमु मंनि ॥ नानक हुकमि मंनिऐ तिख उतरै चड़ै चवगलि वंनु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बाबीहा जल महि तेरा वासु है जल ही माहि फिराहि ॥ जल की सार न जाणही तां तूं कूकण पाहि ॥ जल थल चहु दिसि वरसदा खाली को थाउ नाहि ॥ एतै जलि वरसदै तिख मरहि भाग तिना के नाहि ॥ नानक गुरमुखि तिन सोझी पई जिन वसिआ मन माहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाथ जती सिध पीर किनै अंतु न पाइआ ॥ गुरमुखि नामु धिआइ तुझै समाइआ ॥ जुग छतीह गुबारु तिस ही भाइआ ॥ जला बिंबु असरालु तिनै वरताइआ ॥ नीलु अनीलु अगंमु सरजीतु सबाइआ ॥ अगनि उपाई वादु भुख तिहाइआ ॥ दुनीआ कै सिरि कालु दूजा भाइआ ॥ रखै रखणहारु जिनि सबदु बुझाइआ ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ इहु जलु सभ तै वरसदा वरसै भाइ सुभाइ ॥ से बिरखा हरीआवले जो गुरमुखि रहे समाइ ॥ नानक नदरी सुखु होइ एना जंता का दुखु जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ भिंनी रैणि चमकिआ वुठा छहबर लाइ ॥ जितु वुठै अनु धनु बहुतु ऊपजै जां सहु करे रजाइ ॥ जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ जीआं जुगति समाइ ॥ इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे जाइ ॥ गिआनीआ का धनु नामु है सद ही रहै समाइ ॥ नानक जिन कउ नदरि करे तां इहु धनु पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ आपे लेखा मंगसी आपि कराए कार ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ हुकमु करे गावारु ॥ आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥ आपे वेखै सुणे आपि सभसै दे आधारु ॥ सभ महि एकु वरतदा

पउड़ी ।। उस अतुलनीय प्रभु को कैसे जाँचा परखा जाए और बिना उसे तौले अर्थात जाने उसे पाया नहीं जा सकता। शब्द-गुरु के माध्यम से उसका चिन्तन किया जाता है और उसके गुणों मे लीन हुआ जाता है। वह अपने नाप तौल के बारे में आप ही जानता है और स्वयं ही वह आ मिलता है और अपने से मिला लेता है। उसके मूल्य को नहीं आँका जा सकता और उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूं जिसने मुझे सच्ची बात समझा दी है। संसार तो ठगा जा रहा है परन्तु हम अमृत को लूट रहे हैं और मनमुख व्यक्ति इसको नहीं जान पा रहा है। प्रभु-नाम के बिना कुछ भी साथ नहीं चलता और व्यक्ति अपना जीवन गँवा कर यहाँ से चला जाता है। गुरु की शिक्षा में चेतनापूर्ण बने हुए लोगों की प्रभु ने उनके घर में ही रक्षा कर रखी है और यमदूतों का उन पर कुछ भी वश नहीं चलता ।। ८ ।। श्लोक महला ३ ।। हे पपीहा बने हुए मेरे मन, तू विलाप ना कर और ना ही लालच कर; तू अपने मालिक के हुकुम को मान। हे नानक, प्रभु के हुकुम को मानने से प्यास उतर जाती है और व्यक्ति के तन मन में चार गुना रंग चढ़ जाता है ।। १ ।। महला ३ ।। हे पपीहे, तेरा निवास जल में ही है और जल में ही तू घूमता फिरता रहता है परन्तु जल के महत्व को तू नहीं जानता और इसीलिए चीख-पुकार लगाए रहता है। चारों दिशओं में और जल-स्थल में सभी जगह वह प्रभु रूपी बादल बरसता रहता है तथा कोई भी स्थान उससे खाली नहीं छूटता। जल की इतनी बरसात होते हुए भी जो प्यासे मरते हैं वे भाग्यहीन हैं। हे नानक, जिनके मन में प्रभु बस गया है उन गुरमुखों को इस तथ्य की समझ आ गई है ।। २ ।। पउड़ी ।। नाथ, यति सिद्ध और पीरों आदि किसी ने भी उसके रहस्य को नहीं जाना है। गुरमुख व्यक्ति नाम का सुमिरन करते हुए तुझमें समा जाता है। छत्तीस युगों का घोर अंधकार भी उस प्रभु को ही अच्छा लगा है और उस समय का भयानक जल ही जल उस प्रभु ने ही फैलाया हुआ था। बहुत अधिक गिनती अर्थात नील, अनील और अनन्त जीवों का सृजनहार वह प्रभु ही है। उसी ने ही अग्नि, भूख, प्यास और वाद-विवाद पैदा किए हैं। इस दुनिया में जो द्वैतभाव में लगा रहता है उसके सिर पर काल मंडराता ही रहता है। शब्द के माध्यम से जिन्हें समझ आ गई है वह बचाने वाला प्रभु उनकी रक्षा करता रहता है ।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। यह जल तो सब स्थानों पर बरसता है और अच्छे भाव के साथ बरसता रहता है परन्तु इसमें जीव रूपी वही वृक्ष हरे भरे रहते हैं जो गुरमुख बनकर उस प्रभु में लीन बने रहते हैं। हे नानक, उस प्रभु की कृपा दृष्टि से सुख मिलता है और इन जीवों का दुख समाप्त हो जाता है ।। १ ।। महला ३ ।। भीगी हुई रात में वह बादल बनकर चमक उठा और घनघोर रूप से बरस रहा है। यदि वह मालिक की इच्छा हो तो उसके बरसने से अन्न धन बहुत उत्पन्न होता है। उसे खाने से मन तृप्त होता है और जीवों के जीवन की युक्ति इस जल में ही समाई हुई है। यह धन तो उस कर्ता प्रभु का खेल है जो कभी आ जाता है और कभी चला जाता है। ज्ञानवान पुरुषों का धन तो प्रभु-नाम है जिसमें वे सदैव ही लीन बने रहते हैं। हे नानक, जिन पर वह कृपा दृष्टि करता है उन्हें ही यह धन प्राप्त होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। वह स्वयं ही सब कुछ कर्ता कराता है इसलिए मैं किसके आगे पुकार लगाऊँ। वह स्वयं ही काम करवाता है और स्वयं ही किए हुए का हिसाब माँगता है। मूर्ख व्यक्ति तो यूं ही हुकुम चलाता रहता है क्योंकि होता वही है जो उसे भाता है। वह स्वयं ही क्षमाशील है और उसके छुड़ाने से ही मुक्त हुआ जाता है। वह स्वयं ही देखता है, सुनता है और स्वयं ही सबको आसरा देता है। सब में वह एक ही प्रभु कार्यशील है

सिरि सिरि करे बीचारु ॥ गुरमुखि आपु वीचारीऐ लगै सचि पिआरु ॥ नानक किस नो आखीऐ आपे देवणहारु ॥ १० ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा एहु जगतु है मत को भरमि भुलाइ ॥ इहु बाबींहा पसू है इस नो बूझणु नाहि ॥ अंम्रितु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ नानक गुरमुखि जिन्ह पीआ तिन्ह बहुड़ि न लागी आइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ सांति होइ ॥ हरि जीउ अपणी क्रिपा करे तां वरतै सभ लोइ ॥ वुठै जीआ जुगति होइ धरणी नो सीगारु होइ ॥ नानक इहु जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ ॥ गुर परसादी को विरला बूझै सो जनु मुकतु सदा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥ तू सभु किछु आपे आपि दूजे किसु गणी ॥ माणस कूड़ा गरबु सची तुधु मणी ॥ आवा गउणु रचाइ उपाइ मेदनी ॥ सतिगुरु सेवे आपणा आइआ तिसु गणी ॥ जे हउमै विचहु जाइ त केही गणत गणी ॥ मनमुख मोहि गुबारि जिउ भुला मंझि वणी ॥ कटे पाप असंख नावै इक कणी ॥ ११ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा खसमै का महलु न जाणही महलु देखि अरदासि पाइ ॥ आपणै भाणै बहुता बोलहि बोलिआ थाइ न पाइ ॥ खसमु वडा दातारु है जो इछे सो फल पाइ ॥ बाबीहा किआ बपुड़ा जगतै की तिख जाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बाबीहा भिंनी रैणि बोलिआ सहजे सचि सुभाइ ॥ इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ ॥ गुर सबदी जलु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी सो सतिगुरि दीआ मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ खंड पताल असंख मै गणत न होई ॥ तू करता गोविंदु तुधु सिरजी तुधै गोई ॥ लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥ इकि राजे खान मलूक कहहि कहावहि कोई ॥ इकि साह सदावहि संचि धनु दूजै पति खोई ॥ इकि दाते इक मंगते सभना सिरि सोई ॥ विणु नावै बाजारीआ भीहावलि होई ॥ कूड़ निखुटे नानका सचु करे सु होई ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा गुणवंती महलु पाइआ अउगणवंती दूरि ॥ अंतरि तेरै हरि वसै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ कूक पुकार न होवई नदरी नदरि निहाल ॥ नानक नामि रते सहजे

और वह प्रत्येक की चिन्ता करता रहता है। गुरमुख बनकर यदि अपने आपके बारे में चिन्तन किया जाए तो सत्य के साथ प्रेम लग जाता है। हे नानक, किसको कहा जाए क्योंकि देने वाला तो वह प्रभु स्वयं ही है ।। १० ।। श्लोक महला ३ ।। हे पपीहे, इस संसार में रहते हुए किसी को भी भ्रमों में भटकना नहीं चाहिए परन्तु यह जीव रूपी पपीहा पशु बना हुआ है और इसको कोई समझ नहीं आती। प्रभु का नाम अमृत के समान है जिसे पीने से प्यास उतर जाती है। हे नानक, गुरमुख बनकर जिन्होंने इस अमृत नाम का पान किया है उन्हें फिर दुबारा प्यास नहीं लगती ।। १ ।। महला ३ ।। मलार एक शीतल राग है और वास्तविक शान्ति प्रभु की आराधना से ही प्राप्त होती है। यदि प्रभु कृपा करे तो यह शान्ति सारे संसार में व्याप्त हो सकती है। जल के बरसने से जीवन की युक्ति अर्थात शक्ति प्राप्त होती है और धरती का सिंगार होता है। हे नानक, यह संसार सब जल ही जल है और वास्तव में सारा कुछ जल ही से उत्पन्न होता है। गुरु की कृपा से कोई बिरला ही इस तथ्य को जान पाता है और ऐसा सेवक सदैव मुक्त बना रहता है ।।२।। पउड़ी ।। तू एक ही मालिक है जो सच्चा और बेपरवाह है। तू स्वयं ही सब कुछ है और किसी दूसरे को भला मैं कैसे गिनती में लाऊँ। व्यक्ति का अभिमान तो झूठा है और तेरी शोभा ही सच्ची है। तूने ही आवागमन को बनाकर धरती को उत्पन्न किया है। जो अपने सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं, संसार में आना उन्हीं का सफल माना जाता है। यदि अहंकार अन्तर्मन से दूर हो जाए तो फिर भला कैसे अपने आपको कर्ता के रूप में गिना अथवा जाना जा सकता है। मनमुख व्यक्ति मोह के घोर अंधकार में ऐसे ही भटकता है जैसे कोई भूला हुआ व्यक्ति वनों में भटकता रहता है। प्रभु-नाम का एक कण असंख्य पापों को काट देता है ।। ११ ।। श्लोक महला ३ ।। हे पपीहे रूपी जीव, तू अपने मालिक का पता ठिकाना तो जानता नहीं परन्तु यदि तू सच्चे मन से अरदास करे तो तू उस ठिकाने को जान जाएगा। अपनी इच्छा के अनुसार ही तू बहुत प्रलाप करता रहता है परन्तु तेरे बहुत कुछ बोले हुए की कोई कीमत नहीं है। वह मालिक प्रभु ही सबसे बड़ा दाता है और व्यक्ति उसी से जो चाहता है वह फल प्राप्त कर लेता है। पपीहा रूपी एक जीव क्या उस प्रभु से तो सारे संसार की प्यास बुझ जाती है ।। १ ।। महला ३ ।। अपने सहज और सत्य स्वभाव को पहचान कर रसपूर्ण अवस्था में जीव रूपी पपीहा बोलने लगा कि यह प्रभु रूपी जल ही मेरी आत्मा है और इस जल के बिना मुझसे रहा नहीं जाता। मन का अहंकार गँवाकर शब्द-गुरु के माध्यम से ही प्रभु रूपी जल को प्राप्त किया जाता है। हे नानक, जिस प्रभु रूपी जल के बिना एक क्षण भर भी जीवित नहीं रहा जा सकता, वह प्रभु रूपी जल सच्चे गुरु ने मिला दिया है ।। २ ।। पउड़ी ।। विश्व के खण्ड और पाताल असंख्य हैं जिन्हें मैं गिन नहीं सकता। हे प्रभु तू ही कर्ता है जिसने सारी सृष्टि पैदा की है और तूने ही इसका नाश भी किया है। चौरासी लाख योनियों वाली यह धरती भी तूने ही पैदा की है। यहाँ कई अपने आपको राजा, खान और मुल्कों के बादशाह कहलाते हैं। धन को इकट्ठा करके कई यहाँ अपने आपको वड़े-बड़े साहूकार कहलवाते हैं परन्तु द्वैतभाव में पड़े हुए वे अपने सम्मान को गँवाते रहते हैं। कई यहाँ दाता है, कई भिखारी हैं परन्तु सबके सिर पर प्रभु ही है। प्रभु-नाम से विहीन बने हुए ये बाजारू व्यक्ति भयभीत बने रहते हैं। हे नानक, झूठ का नाश होता है और सत्य रूप में जो कुछ किया जाता है वास्तव में वही होता है ।। २२ ।। श्लोक महला ३ ।। हे पपीहे रूपी जीव, गुणवानों ने तो उस प्रभु का ठिकाना पा लिया है और अवगुणों वाले लोग उस प्रभु से दूर बने रहते हैं। तेरे अन्दर ही प्रभु का निवास और गुरमुख बने हुए व्यक्ति के सामने वह प्रत्यक्ष बना रहता है। बाहर चीखने- चिल्लाने से कुछ नहीं होता और सुख केवल उस प्रभु की कृपा दृष्टि से ही प्राप्त होता है। हे नानक, प्रभु-नाम में लीन व्यक्ति शब्द-गुरु के मार्ग दर्शन में परिश्रम करके स्वाभाविक

मिले सबदि गुरू कै घाल ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बाबीहा बेनती करे करि किरपा देहु जीअ दान ॥ जल बिनु पिआस न ऊतरै छुटकि जांहि मेरे प्रान ॥ तू सुखदाता बेअंतु है गुणदाता नेधानु ॥ नानक गुरमुखि बखसि लए अंति बेली होइ भगवानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइ कै गुण अउगण करे बीचारु ॥ त्रै गुण सरब जंजालु है नामि न धरे पिआरु ॥ गुण छोडि अउगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥ जूऐ जनमु तिनी हारिआ कितु आए संसारि ॥ सचै सबदि मनु मारिआ अहिनिसि नामि पिआरि ॥ जिनी पुरखी उरि धारिआ सचा अलख अपारु ॥ तू गुणदाता निधानु हहि असी अवगणिआर ॥ जिसु बखसे सो पाइसी गुर सबदी वीचारु ॥ १३ ॥ सलोक मः ५ ॥ राति न विहावी साकतां जिन्हा विसरै नाउ ॥ राती दिनस सुहेलीआ नानक हरि गण गांउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ रतन जवेहर माणका हभे मणी मथंनि ॥ नानक जो प्रभि भाणिआ सचै दरि सोहंनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा सतिगुरु सेवि सचु सम्हालिआ ॥ अंति खलोआ आइ जि सतिगुर अगै घालिआ ॥ पोहि न सकै जमकालु सचा रखवालिआ ॥ गुर साखी जोति जगाइ दीवा बालिआ ॥ मनमुख विणु नावै कूड़िआर फिरहि बेतालिआ ॥ पसू माणस चंमि पलेटे अंदरहु कालिआ ॥ सभो वरतै सचु सचै सबदि निहालिआ ॥ नानक नामु निधानु है पूरै गुरि देखालिआ ॥ १४ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहै हुकमु पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ मेघु वरसै दइआ करि गूड़ी छहबर लाइ ॥ बाबीहे कूक पुकार रहि गई सुखु वसिआ मनि आइ ॥ नानक सो सालाहीऐ जि देंदा सभनां जीआ रिजकु समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ चात्रिक तू न जाणही किआ तुधु विचि तिखा है कितु पीतै तिख जाइ ॥ दूजै भाइ भरंमिआ अंम्रित जलु पलै न पाइ ॥ नदरि करे जे आपणी तां सतिगुरु मिलै सुभाइ ॥ नानक सतिगुर ते अंम्रित जलु पाइआ सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि वण खंडि बैसहि जाइ सदु न देवही ॥ इकि पाला ककरु भंनि सीतलु जलु हेंवही ॥ इकि भसम चढ़ावहि अंगि मैलु न धोवही ॥ इकि जटा बिकट

रूप से ही उस प्रभु से मिल जाते हैं ।। १ ।। महला ३ ।। पपीहा रूपी जीव विनती करता है कि हे प्रभु, कृपा करके मुझे प्राण दान दो। जल के बिना मेरी प्यास दूर नहीं होती और मेरे प्राण छूट जाएँगे। तू सुखों का खजाना सुखदाता और अनन्त गुणों को देने वाला है। हे नानक, गुरमुखों को वह बचा लेता है और प्रभु अन्त में उनका सहायक बन जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। संसार को स्वयं ही उत्पन्न करके वह प्रभु इसके गुण अवगुणों का विचार करता रहता है। सब तरह का जंजाल तीनों गुण ही हैं जिनके कारण जीव प्रभु-नाम में प्रेम नहीं लगाता। जो गुणों को छोड़कर अवगुणों वाला आचरण करते हैं वे प्रभु के दरबार में इधर से उधर भटकते रहते हैं। वे भला संसार में क्या करने आए हैं क्योंकि उन्होंने अपना जीवन सांसारिक प्रपंचों के जुए में हार दिया होता है। सच्चे शब्द के माध्यम से मन को मारने के कारण दिन रात प्रभु-नाम से प्रेम लगा रहता है। जिन व्यक्तियों ने उस सच्चे अदृष्ट और अपार प्रभु को हृदय में धारण कर लिया है वे जान जाते हैं कि हे प्रभु, तू गुणदाता और सुखों का भण्डार है और हम सब अवगुणों से भरे हुए हैं। जिसको वह देता है वही शब्द-गुरु के चिन्तन के माध्यम से गुणों को प्राप्त करता है ।। ३ ।। श्लोक महला ५ ।। प्रभु से टूटे हुए जिन लोगों ने प्रभु के नाम को भुलाया हुआ है उनकी यह जीवन रूपी रात्रि गुजरती नहीं। हे नानक, प्रभु के गुण गाते हुए यह दिन और रात दोनों ही सुखदायक बन जाते हैं ।। १ ।। महला ५ ।। रत्न, जवाहिर, माणिक आदि सभी प्रकार की मणियां माथे पर शोभायमान हैं परन्तु हे नानक, जो प्रभु को अच्छे लगते हैं वे ही प्रभु के सच्चे दरबार में शोभायमान रहते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। सच्चे गुरु का सुमिरन करके सत्य को हृदय में सम्भाला जाता है। जो सच्चे गुरु के साथ और सामने परिश्रम किया गया था वही अन्तिम समय में सहायक के रूप में सामने आ खड़ा होता है। उस सच्चे रक्षक के कारण यमकाल तो स्पर्श भी नहीं कर पाता। गुरु के जीवन की कथावार्ता को अपने जीवन में प्रकाश करने के लिए दीपक की तरह जलाया जाता है। मनमुख व्यक्ति प्रभु-नाम से विहीन होने के कारण झूठे होते हैं और भूत प्रेतों की तरह भटकते रहते हैं। वे मानव की चमड़ी लपेटे हुए पशु हैं और उनका अन्तर्मन काला होता है। सच्चे शब्द के माध्यम से यह देखा और समझा गया कि सभी स्थानों में सच्चा प्रभु ही व्याप्त है। हे नानक, प्रभु-नाम ऐसा भण्डार है जिसे पूरा गुरु ही दिखाता है ।। १४ ।। श्लोक महला ३ ।। गुरु के सरल स्वभाव के माध्यम से जीव रूपी पपीहे ने प्रभु के हुकुम को पहचान लिया है। प्रभु की दया का बादल घनघोर रूप से बरस उठा है। पपीहे की चीख पुकार समाप्त हो गई है और मन में सुख का निवास हो गया है। हे नानक, उस प्रभु की स्तुति की जानी चाहिए जो सभी जीवों को उनकी रोज़ी पहुंचा कर देता है ।। १ ।। महला ३ । हे चातक, तू नहीं जानता कि तुझे कैसी प्यास लगी हुई है और क्या पीने से तेरी प्यास दूर होगी। तू द्वैतभाव में भटकता रहता है और अमृत जल को प्राप्त नहीं करता है। यदि प्रभु अपनी कृपादृष्टि करे तो स्वाभाविक रूप से ही सच्चा गुरु मिल जाता है। हे नानक, सच्चे गुरु से ही अमृत रूपी जल प्राप्त किया जाता है और व्यक्ति सहज और शान्त भाव में लीन हो जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। कई वनों में जाकर बैठ जाते हैं और मौन बने रहकर किसी को भी पुकारते नहीं। कई भीष्ण सर्दी की परवाह ना करके टंडे पानी में ही स्थित बने रहते हैं। कई अंगों पर भस्म लगाकर मैल को नहीं धोते हैं, कई विकराल जटाओं को

बिकराल कुलु घरु खोवही ॥ इकि नगन फिरहि दिनु राति नींद न सोवही ॥ इकि अगनि जलावहि अंगु आपु विगोवही ॥ विणु नावै तनु छारु किआ कहि रोवही ॥ सोहनि खसम दुआरि जि सतिगुरु सेवही ॥ १५ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबीहा अंम्रित वेलै बोलिआ तां दरि सुणी पुकार ॥ मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जिनी सचु रखिआ उरि धारि ॥ नानक नामे सभ हरीआवली गुर कै सबदि वीचारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बाबीहा इव तेरी तिखा न उतरै जे सउ करहि पुकार ॥ नदरी सतिगुरु पाईऐ नदरी उपजै पिआरु ॥ नानक साहिबु मनि वसै विचहु जाहि विकार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि जैनी उझड़ पाइ धुरहु खुआइआ ॥ तिन मुखि नाही नामु न तीरथि न्हाइआ ॥ हथी सिर खोहाइ न भदु कराइआ ॥ कुचिल रहहि दिन राति सबदु न भाइआ ॥ तिन जाति न पति न करमु जनमु गवाइआ ॥ मनि जूठै वेजाति जूठा खाइआ ॥ बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥ गुरमुखि ओअंकारि सचि समाइआ ॥ १६ ॥ सलोक मः ३ ॥ सावणि सरसी कामणी गुर सबदी वीचारि ॥ नानक सदा सुहागणी गुर कै हेति आपारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सावणि दझै गुण बाहरी जिसु दूजै भाइ पिआरु ॥ नानक पिर की सार न जाणई सभु सीगारु खुआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा अलख अभेउ हठि न पतीजई ॥ इकि गावहि राग परीआ रागि न भीजई ॥ इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥ इकि अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥ त्रिसना होई बहुतु किवै न धीजई ॥ करम वधहि कै लोअ खपि मरीजई ॥ लाहा नामु संसारि अंम्रितु पीजई ॥ हरि भगती असनेहि गुरमुखि घीजई ॥ १७ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिनु मनु तनु सीतलु होइ ॥ गुर सबदी एकु पछाणिआ एको सचा सोइ ॥ मनु तनु सचा सचु मनि सचे सची सोइ ॥ अंदरि सची भगति है सहजे ही पति होइ ॥ कलिजुग महि घोर अंधारु है मनमुख राहु न कोइ ॥ से वडभागी नानका जिन गुरमुखि परगटु होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ इंदु वरसै करि दइआ लोकां मनि उपजै चाउ ॥ जिस कै हुकमि इंदु

धारण करके घर-बार और कुल को छोड़ देते हैं, कई दिन रात नंगे भटकते हैं ; और सोते नहीं हैं। कई अपने अंगों को अग्नि में जलाकर अपने आपको खराब कर लेते हैं। तू क्या कहकर हे जीव, रोएगा क्योंकि प्रभु-नाम से विहीन यह तन तो अन्त में राख हो जाएगा। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वे ही उस मालिक के द्वार पर शोभायमान बने रहते हैं ।। १५ ।। श्लोक महला ३ ।। जब पपीहा रूपी जीव अमृत बेला में प्रभु के दरबार में पुकार लगाता है तो प्रभु उसकी पुकार को सुनता है। अब गुरु रूपी मेघ को आदेश होता है कि कृपा धारण करके शब्द की वर्षा कर दो। हे नानक, प्रभु के नाम में शब्द-गुरु के विचार के माध्यम से सब कुछ हरा-भरा बना रहता है ।। १ ।। महला ३ ।। हे पपीहे रूपी जीव, तेरी प्यास ऐसे नहीं उतरेगी बेशक तू सैंकड़ो बार पुकार लगाता रह। उसकी कृपादृष्टि के कारण ही सच्चा गुरु प्राप्त होता है और उसकी कृपा दृष्टि से ही प्रेम उत्पन्न होता है। हे नानक, जब अन्तर्मन से विकार चले जाते हैं तो वह सच्चा मालिक मन में आ बसता है ।। २ ।। पउड़ी ।। अनेकों ऐसे जैनी लोग हैं जिन्हे परमात्मा ने प्रारम्भ से ही मार्ग से भटकाया होता है। उनके मुँह में प्रभु का नाम भी नहीं होता और ना वे तीर्थों पर स्नान करते हैं। वे बाल मुंडवाते नहीं अपितु हाथों से उन्हें खींचते हैं। प्रभु का नाम उन्हें अच्छा नहीं लगता और दिन रात वे मैले बने रहते हैं। जाति सम्मान और कर्म आदि को वे नहीं मानते और जीवन को व्यर्थ ही व्यतीत कर लेते हैं। मन से अपवित्र बने रहते हैं और अपवित्रता रूपी भोजन ही खाते रहते हैं। हे भाई, शब्द-गुरु से विहीन बने रहकर कोई भी अच्छे आचरण को नहीं पा सका है और केवल गुरु के सम्मुख बना रहने वाला व्यक्ति उस सदैव स्थिर बने रहने वाले ओअंकार में लीन हो जाता है ।। १६ ।। श्लोक महला ३ ।। जीव रूपी स्त्री शब्द-गुरु के चिन्तन के माध्यम से रसपूर्ण हो गई है। हे नानक, जिसका अपार प्रेम गुरु के साथ लगा हुआ है वह जीव स्त्री ही सदा सुहागिन बनी रहती है ।। १ ।। महला ३ ।। गुण विहीन बनी रहने वाली और द्वैतभाव में प्रेम बनाए रखने वाली जीव स्त्री सावन में भी जलती ही रहती है। हे नानक, वह प्रियतम के महत्व को नहीं जानती इसलिए उसके सभी सिंगार भटकाने वाले ही होते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। वह सच्चा अदृष्ट और रहस्यातीत प्रभु हठ करने से भी प्रसन्न नहीं होता। कई राग-रागिनियों का गायन करते हैं परन्तु वह रागों से भी प्रसन्न नहीं होता। कई अनेक प्रकार के तालों पर नाचते हैं परन्तु भक्ति इस तरह नहीं की जाती। उन भूखों का क्या किया जाए जो अन्न ही नहीं खाते हैं। उनकी तृष्णा तो बहुत बढ़ी हुई होती है जिसे किसी प्रकार भी धैर्य नहीं दिया जा सकता। कई लोग कर्मकाण्डों में बंधे हुए मरते खपते रहते हैं। इस संसार में प्रभु-नाम के अमृत पीने का ही लाभ होता है। प्रभु की भक्ति के प्रेम का आनन्द गुरमुख बनकर ही लिया जा सकता है ।। ७ ।। श्लोक महला ३ ।। गुरमुख बनकर जो मलार राग का अभ्यास करते हैं उनका मन तन शीतल हो जाता है। शब्द-गुरु के माध्यम से उन्होंने उस एक सच्चे प्रभु को पहचान लिया होता है। उनका मन तन सच्चा होता है और उनके मन में उस सच्चे प्रभु की शोभा ही स्थित बनी रहती है। जिनके अन्तर्मन में सच्ची भक्ति है उन्हें स्वाभाविक रूप से ही सम्मान मिलता है। कलियुग में अज्ञान का घोर अंधकार है और मनमुख व्यक्ति को इसमें कोई भी रास्ता दिखाई नहीं देता। हे नानक, वे भाग्यशाली हैं जिन गुरमुखों के अन्तर्मन में वह प्रभु प्रकट हो उठा है ।। १ ।। महला ३ ।। जब दया करके बादल बरसता है तो लोगों के मन में प्रसन्नता उत्पन्न हो जाती है। जिसके आदेश से यह बादल बरसता है

वरसदा तिस कै सद बलिहारै जांउ ॥ गुरमुखि सबदु सम्हालीऐ सचे के गुण गाउ ॥ नानक नामि रते जन निरमले सहजे सचि समाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पूरा सतिगुरु सेवि पूरा पाइआ ॥ पूरै करमि धिआइ पूरा सबदु मंनि वसाइआ ॥ पूरै गिआनि धिआनि मैलु चुकाइआ ॥ हरि सरि तीरथि जाणि मनूआ नाइआ ॥ सबदि मरै मनु मारि धंनु जणेदी माइआ ॥ दरि सचै सचिआरु सचा आइआ ॥ पुछि न सकै कोइ जां खसमै भाइआ ॥ नानक सचु सलाहि लिखिआ पाइआ ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥ कुलहां देंदे बावले लैंदे वडे निलज ॥ चूहा खड न मावई तिकलि बंन्है छज ॥ देन्हि दुआई से मरहि जिन कउ देनि सि जाहि ॥ नानक हुकमु न जापई किथै जाइ समाहि ॥ फसलि अहाड़ी एकु नामु सावणी सचु नाउ ॥ मै महदूदु लिखाइआ खसमै कै दरि जाइ ॥ दुनीआ के दर केतड़े केते आवहि जांहि ॥ केते मंगहि मंगते केते मंगि मंगि जाहि ॥ १ ॥ मः १ ॥ सउ मणु हसती घिउ गुड़ु खावै पंजि सै दाणा खाइ ॥ डकै फूकै खेह उडावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधी फूकि मुई देवानी ॥ खसमि मिटी फिरि भानी ॥ अधु गुल्हा चिड़ी का चुगणु गैणि चड़ी बिललाइ ॥ खसमै भावै ओहा चंगी जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ सकता सीहु मारे सै मिरिआ सभ पिछै पै खाइ ॥ होइ सताणा घुरै न मावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधा किस नो बुकि सुणावै ॥ खसमै मूलि न भावै ॥ अक सिउ प्रीति करे अक तिडा अक डाली बहि खाइ ॥ खसमै भावै ओहो चंगा जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई ॥ गला वाले हैनि घणेरे छडि न सकै कोई ॥ मखीं मिठै मरणा ॥ जिन तू रखहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अगम अगोचरु तू धणी सचा अलख अपारु ॥ तू दाता सभि मंगते इको देवणहारु ॥ जिनी सेविआ तिनी सुखु पाइआ गुरमती वीचारु ॥ इकना नो तुधु एवै भावदा माइआ नालि पिआरु ॥ गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ॥ विणु प्रीती भगति न होवई विणु सतिगुर न लगै पिआरु ॥ तू प्रभु सभि तुधु सेवदे इक ढाढी करे पुकार ॥ देहि दानु संतोखीआ

मैं सदैव उस पर बलिहारी जाता हूं। गुरमुख बनकर ही शब्द को उस सच्चे गुरु का गुणानुवाद करके हृदय में सम्भाला जाता है। हे नानक, जो सेवक प्रभु-नाम में लीन बने हुए हैं वे ही निर्मल हैं और स्वाभाविक रूप से ही सत्य में समाए रहते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। पूर्ण सच्चे गुरु की सेवा करके उस पूर्ण प्रभु को पा लिया जाता है। पूर्ण भाग्य से उसका सुमिरन करके उसके पूर्ण नाम को मन में बसाया जाता है। पूर्ण ज्ञान ध्यान के माध्यम से ही मैल को दूर किया जाता है। प्रभु रूपी सरोवर के तीर्थ को पहचान कर मन उसमें स्नान करता है। जो मन को मारकर शब्द में लीन होकर मरे रहते हैं उन्हें जन्म देने वाली उनकी माँ धन्य है। उस सच्चे प्रभु के द्वार पर सच्चा बना रहने वाला सचिआर व्यक्ति ही पहुंचता है। जो उस मालिक प्रभु को भा जाता है उससे फिर कोई भी पूछताछ नहीं करता। हे नानक, तू उस सत्य की ही प्रशंसा कर और यदि तू ऐसा करता है तो तूने भाग्य लेख में जो लिखा हुआ था उसे पा लिया है ।। १८ ।। श्लोक महला १ ।। जो तथाकथित धार्मिक लोग सेली और टोपी देकर अपना उत्तराधिकारी बनाते हैं वे वास्तव में पागल हैं और उसे लेने वाले चेले भी बहुत बड़े निर्ल्लज हैं क्योंकि ये सांसारिकता में लीन पाखण्डी गुरु बने हुए लोग स्वयं तो पार उतरने योग्य नहीं है परन्तु ये अन्यों को पार उतारने का बीड़ा उठाकर उन्हें पार उतारने की घोषणा उसी प्रकार करते हैं जैसे एक चूहा स्वयं तो अपने बिल में जा ना सकता हो परन्तु घोषणा यह कर दे कि मैं सूप को अपनी कमर के साथ बाँधकर बिल में प्रवेश कर जाऊंगा। ऐसे गुरु जिन चेलों को आशीर्वाद देते हैं वे नष्ट हो जाते हैं और जिन्हें ये सेली और टोपी इत्यादि देते हैं वे भी कुछ समय बाद भाग खड़े होते हैं। हे नानक, इन्हें प्रभु के हुकुम का तो कुछ भी पता नहीं होता इसलिए ये कहां गायब हो जाते हैं इनका पता भी नहीं चलता। आषाड़ के महीने की फसल तो केवल एक प्रभु का नाम ही है, इसी प्रकार सावन के महीने में बोई जाने वाली फसल भी केवल प्रभु का सच्चा नाम ही है अर्थात रबी और खरीफ की वास्तविक फसलें प्रभु नाम की ही होती हैं। मैंने तो प्रभु के द्वार पर जाकर ऐसी फसल के लिए पक्का पट्टा लिखा लिया है। इस संसार में अनेकों प्रकार के आने जाने वाले दरवाजों में कितने भी लोग आते हैं और कितने ही यहाँ से चले जाते हैं इनका कोई पता नहीं चलता। यहाँ कितने ही भिखारी हैं जो माँग-माँग कर ही खाते और जाते रहते हैं।। १ ।। महला १ ।। कई मन घी गुड़ और दाना खाने वाला हाथी घास को फूँक मार-मारकर मिट्टी उड़ाता है, परन्तु जब उसका श्वास निकल जाता है तो फिर वह अपनी निर्बलता पर अन्त में पछताता रह जाता है। धन के अभिमान में अन्धी और पागल बनी हुई दुनिया भी हाथी की तरह फुँकारें मारती हुई मरती रहती है परन्तु यदि वह अहंकार मिटाकर उस मालिक प्रभु में लीन हो जाए तभी वह उस प्रभु को अच्छी लगती है। चिड़िया का चुग्गा केवल आधा दाना है जिसे वह चुगकर आकाश में उड़ती है और बोलती रहती हैं परन्तु यदि वह उस मालिक प्रभु को याद करती रहती है तो तभी उसे भाती है और वास्तव में फुँकार मारने वाले बड़े हाथी से कहीं अच्छी है। एक शक्तिशाली शेर सैंकड़ों पशुओं को मारता है और उस शेर के पीछे कई अन्य पशु भी अपना पेट भरते हैं। वह बलशाली बना हुआ शेर अपनी शक्ति के अभिमान में अपनी माँद में नहीं समा पाता परन्तु जब उसका श्वास निकल जाता है तो उसका पछतावा भी प्रारम्भ हो जाता है। यह अन्धा भला दहाड़-दहाड़ कर किसे सुनाता है ; मालिक प्रभु को तो ऐसी अभिमान पूर्ण दहाड़ बिल्कुल अच्छी नही लगती। आक का टिड्डा आक के पौधे के साथ ही प्रेम करता है और यदि मालिक प्रभु को याद रखता है तो वह छोटा सा जीव भी शेर की अपेक्षा प्रभु को अच्छा लगता है। हे नानक, यह संसार तो चार दिनों का है इसमें मौज मस्ती करते रहने से अन्त में दुखी ही होना पड़ता है। यहाँ मौखिक ज्ञान की बातें करने वाले तो बहुत हैं पर इस संसार की मौज मस्ती को छोड़ भी कोई नहीं पाता। मक्खियां ही इस सांसारिक मिठास पर मरती रहती हैं परन्तु हे प्रभु, जिन्हें तू बचा लेता है वे मिठास के पास भी नहीं आती और ऐसे जीव ही संसार सागर से पार उतर जाते हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। तू अगम्य और अदृष्ट मालिक है और तू ही सच्चा, अपरम्पार और रहस्यातीत है। तू दाता है जीव सभी भिखारी हैं और उन्हें देने वाला केवल एक तू ही है। गुरु की शिक्षा पर सोच विचार करके जिन्होंने तेरा सुमिरन किया है उन्होंने ही सुख प्राप्त किया है। कईयों के लिए तुझे यही अच्छा लगता है कि वे धन सम्पदा से ही प्यार करते रहें। अन्तर्मन में यदि वास्तविक प्रेम हो तो शब्द-गुरु के माध्यम से उस प्रभु का गुणानुवाद किया जाता है। आन्तरिक प्रीति के बिना भक्ति नहीं होती और सच्चे गुरु के बिना उस भक्ति में प्रेम नहीं लगता। तेरा एक ग्रामीण गायक यह पुकार कर कह रहा है कि हे प्रभु, तू ही सबसे बड़ा है और सब तेरा ही सुमिरन करते हैं। हे सन्तुष्टि देने वाले प्रभु, मुझे भी सन्तोष का दान दे ताकि प्रभु का

सचा नामु मिलै आधारु ॥ १९ ॥ सलोक मः १ ॥ राती कालु घटै दिनि कालु ॥ छिजै काइआ होइ परालु ॥ वरतणि वरतिआ सरब जंजालु ॥ भुलिआ चुकि गइआ तप तालु ॥ अंधा झखि झखि पइआ झेरि ॥ पिछै रोवहि लिआवहि फेरि ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही ॥ मोइआ रोंहि रोंदे मरि जांही ॥ नानक खसमै एवै भावै ॥ सेई मुए जिन चिति न आवै ॥ १ ॥ मः १ ॥ मुआ पिआरु प्रीति मुई मुआ वैरु वादी ॥ वंनु गइआ रूपु विणसिआ दुखी देह रुली ॥ किथहु आइआ कह गइआ किहु न सीओ किहु सी ॥ मनि मुखि गला गोईआ कीता चाउ रली ॥ नानक साचे नाम बिनु सिर खुर पति पाटी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंम्रित नामु सदा सुखदाता अंते होइ सखाई ॥ बाझु गुरू जगतु बउराना नावै सार न पाई ॥ सतिगुरु सेवहि से परवाणु जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ सो साहिबु सो सेवकु तेहा जिसु भाणा मंनि वसाई ॥ आपणै भाणै कहु किनि सुखु पाइआ अंधा अंधु कमाई ॥ बिखिआ कदे ही रजै नाही मूरख भुख न जाई ॥ दूजै सभु को लगि विगुता बिनु सतिगुर बूझ न पाई ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिस नो किरपा करे रजाई ॥ २० ॥ सलोक मः १ ॥ सरमु धरमु दुइ नानका जे धनु पलै पाइ ॥ सो धनु मित्रु न कांढीऐ जितु सिरि चोटां खाइ ॥ जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर ॥ जिन्ह कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर ॥ १ ॥ मः १ ॥ दुखी दुनी सहेड़ीऐ जाइ त लगहि दुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ रूपी भुख न उतरै जां देखां तां भुख ॥ जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख ॥ २ ॥ मः १ ॥ अंधी कंमी अंधु मनु मनि अंधै तनु अंधु ॥ चिकड़ि लाइऐ किआ थीऐ जां तुटै पथर बंधु ॥ बंधु तुटा बेड़ी नही ना तुलहा ना हाथ ॥ नानक सचे नाम विणु केते डुबे साथ ॥ ३ ॥ मः १ ॥ लख मण सुइना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह ॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोड़ी पातिसाह ॥ जिथै साइरु लंघणा अगनि पाणी असगाह ॥ कंधी दिसि न आवई धाही पवै कहाह ॥ नानक ओथै जाणीअहि साह केई पातिसाह ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ इकना गलीं जंजीर बंदि रबाणीऐ ॥ बधे छुटहि सचि सचु पछाणीऐ ॥

सच्चा नाम मेरा आसरा बन जाए ।। १६ ।। श्लोक महला १ ।। रात और दिन में समय बीतता ही जाता है और यह शरीर टूट कर क्षीण होता जाता है। जीव सभी जंजालों में ही व्यवहार करता रहा; यह भटकता रहा और वास्तविक तपस्या का आनन्द देने वाला ताल देने में यह चूक गया। यह अज्ञानी झख मारता हुआ ही आवागमन के झगड़े में पड़ा रहा। मरने पर दरअसल इसे रोने वाले ही इसे वापस जन्म-मरण में ले आते हैं। बिना इस रहस्य को जाने उन्हें वास्तविकता का पता नहीं लगता। वे मरते हुओं के लिए रोते हैं और स्वयं रोते-रोते मर जाते हैं। हे नानक, इस मालिक को शायद यही अच्छा लगता है परन्तु जिन्हें वह प्रभु हृदय में याद नहीं आता वास्तव में वही लोग मुर्दे के समान हैं ।। १ ।। महला १ ।। मौत के साथ ही मोह, प्यार, बैर और विरोध आदि समाप्त हो जाते हैं। मरने के बाद रंग बदल जाता है, रूप नष्ट हो जाता है और यह दुखी शरीर मिट्टी में मिला हुआ इधर-उधर रौंदा जाता है। मरने के बाद मनुष्य कहां से आया और कहां चला गया आदि बातें चलती हैं। यह भी कहा जाता है कि क्या यह वास्तव में था भी अथवा यह कुछ था ही नहीं। मन और मुख से जीवन में यही बातें होती रहती हैं और मौज मस्ती फिर भी चलती रहती है। हे नानक, उस सच्चे नाम के बिना सिर से पैर तक का सम्मान खण्ड-खण्ड हो जाता है ।। २ ।। पउड़ी ।। सदैव सुख देने वाला प्रभु का अमृत नाम ही अन्त में मददगार बनता है। गुरु के बिना यह संसार बौराया हुआ है और इसे प्रभु-नाम के महत्व का पता नहीं चलता। जिन्होंने परमात्मा के साथ अपनी जीवन ज्योति को मिला लिया है वे ही सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं और उन्हीं का इस संसार में आना सफल होता है। जिसे प्रभु अपनी रज़ा मन में बसा देता है वही प्रभु का सेवक अपने साहिब जैसा हो जाता है। अपने मन की रज़ा में ही भला बताओ किसने सुख प्राप्त किया है क्योंकि अज्ञानी और अन्धा बना व्यक्ति तो अज्ञान ही पैदा करता जाता है। माया रूपी विषय-विकारों से कभी भी सन्तुष्टि नहीं होती और इस मूर्ख जीव की कभी भूख समाप्त नहीं होती। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वे ही सुख प्राप्त करते हैं और सुख उन्हें ही मिलता है जिन पर रज़ा में रखने वाले प्रभु की कृपा होती है ।। २० ।। श्लोक महला १ ।। हे नानक, यदि नाम का धन व्यक्ति के पास है तो वही मेहनत और धर्म दोनों का वास्तविक अर्थ समझता है। ऐसे सांसारिक धन को मित्र नहीं कहा जा सकता जिसके कारण बाद में सज़ा सहन करनी पड़े। जिनके पास यह सांसारिक धन है वास्तव में उनका नाम तो कंगाल फकीर कहा जाता है। हे प्रभु, जिनके हृदय में तू बसता है वास्तव में वे ही गुणों के भण्डार (और धनी) हैं ।। २ ।। महला १ ।। दुखों में पड़े हुए ही हम दुनिया के साथ कार्य व्यवहार करते हुए धन सम्पदा इकट्ठी करते हैं और जब यह सम्पदा चली जाती है तो हमें इसके जाने का दुख भी लगता है। हे नानक, वास्तव में प्रभु के सच्चे नाम के बिना किसी की भी भूख समाप्त नहीं होती। रूप-सौंदर्य को देखने से भी भूख नहीं उतरती क्योंकि इसे जितना देखा जाता है उतनी ही भूख बढ़ती जाती है। वास्तव में इस शरीर के लिए जितने भी रस हैं उतने ही इसे दुख भी लगे रहते हैं ।। १ ।। महला १ ।। अन्धे अज्ञानी मन से जो भी काम किया जाता है वह मन और तन को अन्धा और अज्ञानी बनाने वाला ही होता है। जहाँ पत्थर का बना हुआ बाँध भी टूट जाए वहां भला कीचड़ की लीपा-पोती करने से क्या होगा। जब बाँध टूट जाए, नाव और बाँसों का बेड़ा भी ना हो और ना ही यह पता हो कि पानी कितने हाथ गहरा है तो हे नानक, प्रभु के उस सच्चे नाम से विहीन बना व्यक्ति अनेकों को साथ लेकर डूब जाता है ।। ३।। महला १ ।। लाखों मन सोना, चाँदी और लाखों साहूकारों का साहूकार व्यक्ति हो, लाखों की फौज, लाखों वाद्य, भाले और लाखों घुड़सवारों का बादशाह हो परन्तु इन सबने जिस समुद्र से आगे जाना है उसमें आग भी है और उसका पानी भी अथाह है। उसका किनारा भी नज़र नहीं आता और हाय-हाय का भीषण शोर-शराबा भी सुनाई पड़ता है। हे नानक, वहां पर ही यह जाना जाएगा कि वास्तविक साहूकार और बादशाह कौन है ।। ४ ।। पउड़ी ।। कईयों के गले में प्रभु की बन्दगी की जंज़ीर पड़ी हुई है। ऐसे बंधे हुए लोग सत्य को पहचानकर सत्य के माध्यम से मुक्त बने रहते हैं।

लिखिआ पले पाइ सो सचु जाणीऐ ॥ हुकमी होइ निबेड़ु गइआ जाणीऐ ॥ भउजल तारणहारु सबदि पछाणीऐ ॥ चोर जार जूआर पीड़े घाणीऐ ॥ निंदक लाइतबार मिले हड़वाणीऐ ॥ गुरमुखि सचि समाइ सु दरगह जाणीऐ ॥ २१ ॥ सलोक मः २ ॥ नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥ अंधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥ इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ कलि का एहु निआउ ॥ १ ॥ मः १ ॥ हरणां बाजां तै सिकदारां एन्हा पढ़िआ नाउ ॥ फांधी लगी जाति फहाइनि अगै नाही थाउ ॥ सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिन्ही कमाणा नाउ ॥ पहिलो दे जड़ अंदरि जंमै ता उपरि होवै छांउ ॥ राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥ चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥ रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ जिथै जीआं होसी सार ॥ नकीं वढी लाइतबार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपि उपाए मेदनी आपे करदा सार ॥ भै बिनु भरमु न कटीऐ नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुर ते भउ ऊपजै पाईऐ मोख दुआर ॥ भै ते सहजु पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ भै ते भैजलु लंघीऐ गुरमती वीचारु ॥ भै ते निरभउ पाईऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥ मनमुख भै की सार न जाणनी त्रिसना जलते करहि पुकार ॥ नानक नावै ही ते सुखु पाइआ गुरमती उरि धार ॥ २२ ॥ सलोक मः १ ॥ रूपै कामै दोसती भुखै सादै गंढु ॥ लबै मालै घुलि मिलि मिचलि ऊंघै सउड़ि पलंघु ॥ भंउकै कोपु खुआरु होइ फकड़ु पिटे अंधु ॥ चुपै चंगा नानका विणु नावै मुहि गंधु ॥ १ ॥ मः १ ॥ राजु मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ॥ एनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥ एना ठगन्हि ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥ नानक करमा बाहरे होरि केते मुठे जाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ ॥ विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ ॥ अउघट रुधे राह गलीआं रोकीआं ॥ सचा वेपरवाहु सबदि संतोखीआं ॥ गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई ॥ मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ न छुटसी ॥ पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीऐ ॥ हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ ॥ २३ ॥

लिखे हुए को पढ़कर उसके अर्थ को समझकर जो उसे पल्ले बाँध लेता है वास्तव में उसे ही सच्चा जाना जाता है। प्रभु के हुकुम के अन्दर ही उसका निपटारा होगा और उसे पार उतर गया ही समझा जाता है। शब्द को ही संसार सागर से पार उतारने वाला जानना चाहिए और यह भी जान लेना चाहिए कि चोरों व्यभिचारियों और जुआरियों को घानी में पड़ें हुए तिलों की तरह पेरा जाता है। निन्दक और चुगलखोर व्यक्ति को तो वास्तव में हथकड़ी ही लगती है। जो गुरमुख बनकर सत्य में लीन बना होता है उसे ही प्रभु के दरबार में जाना माना जाता है ।। २१ ।। श्लोक महला २ ।। कलियुग के समय में सब कुछ उल्टा पुलटा ही है। व्यक्ति है तो धन-सम्पदा वाला बादशाह परन्तु उसका नाम फकीरों जैसा होता है; व्यक्ति होता तो मूर्ख है परन्तु अपने नाम के साथ पंडित लगाता है। कलियुग में इस तरह की ही बातें होती हैं कि अन्धे अर्थात अज्ञानी व्यक्ति को परख करने वाला कहकर बुलाया जाता है। जो तमाम किस्म की इल्लतें और शरारतें करने वाला होता है उसको चौधरी के नाम से जाना जाता है तथा यदि स्त्री झूठी है तो वह आगे हो होकर जगह घेरती है अर्थात प्रधान बनती है। हे नानक, गुरमुख बनकर ही जाना जाता है कि कलियुग का न्याय ऐसा ही है ।। १ ।। महला १ ।। हिरणों, बाज पक्षियों और सरकारी अहलकारों को विशेष शिक्षा दी जाती है और ऐसे सुशिक्षित जीवों को अपने वर्ग में सयाना माना जाता है। परन्तु ये तथकथित सुशिक्षित जीव अपनी जाति के जीवों को ही फन्दे में डालकर फँसाते रहते हैं अर्थात हिरण दूसरे हिरणों को बाज दूसरे पक्षियों को और सरकारी कर्मचारी दूसरे आदमियों को घेर कर अपने मालिक के लिए ले आते हैं। फन्दे में इस प्रकार फंसाने वालों को परलोक में कोई ठिकाना नहीं मिलता। वास्तव में सुशिक्षित पंडित और सयाना वही है जिसने प्रभु-नाम के अनुरूप अपना आचरण बनाया हुआ है। पहले धरती में पौधे की जड़ स्थित होती है और तब वृक्ष उगकर छाया देता है। यहाँ राजा तो शेर की तरह सबको मार डालने वाला है और उसके कर्मचारी ऐसे कुत्ते हैं जो सोते, बैठे हुए व्यक्ति को जाकर तंग करते हैं। राजा के नौकर कुत्तों की तरह अपने नाखूनों से घायल करते हैं और लोगों का खून चाटते और पीते रहते हैं। जहाँ इन जीवों की छानबीन होगी वहाँ इन चुगलखोरों और निन्दको के नाक काट लिए जाएंगे अर्थात ये बेइज्जत होंगे ।। २ ।। पउड़ी ।। वह स्वयं ही सृष्टि को उत्पन्न करता है और प्रभु स्वयं ही उसकी सम्भाल करता है। अनुशासन और भय के बिना भ्रम का नाश नहीं होता और प्रभु-नाम से प्यार नहीं लगता। सच्चे गुरु से ही अनुशासन अथवा भय उत्पन्न होता है और मोक्ष का द्वार प्राप्त किया जाता है। अपनी ज्योति को उसकी अपार ज्योति के साथ मिलाकर ही भय और संयम के साथ स्वाभाविक शान्त अवस्था प्राप्त होती है। गुरु की शिक्षा के विचार के बाद संयम में रहते हुए भवसागर को पार किया जाता है। उसके भय में रहकर ही निर्भय प्रभु पाया जाता है जिसका कोई भी ओर छोर नहीं होता। मनमुख लोग भय के महत्व को नहीं जानते और तृष्णा में जलते हुए चीख-पुकार लगाए रहते हैं। गुरु की शिक्षा को हृदय में धारण करके हे नानक, प्रभु-नाम के माध्यम से ही सुख प्राप्त किया जाता है ।। २२ ।। श्लोक महला १ ।। काम वासना का रूप सौंदर्य के साथ और भूख का स्वाद के साथ पक्का रिश्ता है। लोभ वाला व्यक्ति धन माल के साथ घुल मिलकर उसी का रूप बन गया होता है और नींद से ऊंघने वाले को छोटा सा स्थान भी अच्छा खासा पलंग नजर आता है। क्रोध भौंकता है अर्थात क्रोध की बकवास के साथ दोस्ती होती है, वह ख्वार होता है और अन्धा होकर बहुत बड़ी बकवास करता रहता है। हे नानक, चुप रहकर ही भला है क्योंकि प्रभु-नाम विहीन मुख से तो दुर्गन्ध ही आती है ।। १ ।। महला १ ।। राज, माल, रूप, जाति और जवानी ये पाँचों ठग हैं। इन ठगों ने बिना किसी की शर्म माने हुए सारे संसार को ठग रखा है। इन ठगों को वे ही ठगते हैं जो गुरु के चरणों में लीन बने रहते हैं। हे नानक, अच्छे भाग्य के बिना अनेकों ही लोग इनसे लुटे जा रहे हैं ।। २ ।। पउड़ी ।। पढ़ा लिखा व्यक्ति देनदार अथवा जिम्मेदार व्यक्ति होता है। प्रभु-नाम से विहीन व्यक्ति झूठा होता है और सदैव तंगहाल ही बना रहता है। उसने अपने सभी रास्ते और गलियों में रुकावटें डाली होती हैं परन्तु सच्चा व्यक्ति बेपरवाह होता है और शब्द के माध्यम से सन्तुष्ट बना रहता है। प्रभु गहरा, गम्भीर और अथाह है; उसका रहस्य नहीं जाना जा सकता। गुरु के बिना किसी का छुटकारा नहीं होता और मुँह पर चोटें खानी पड़ती हैं। प्रभु के नाम का बखान करते हुए ही जीव सम्मान सहित अपने घर जाता है और वह जान जाता है कि हमारे श्वास और ग्रास वह प्रभु अपने हुकुम में ही देता है ।। २३ ।।

सलोक मः १ ॥ पउणै पाणी अगनी जीउ तिन किआ खुसीआ किआ पीड़ ॥ धरती पाताली आकासी इकि दरि रहनि वजीर ॥ इकना वडी आरजा इकि मरि होहि जहीर ॥ इकि दे खाहि निखुटै नाही इकि सदा फिरहि फकीर ॥ हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे महि लख ॥ सभु को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ ॥ वरना चिहना बाहरा लेखे बाझु अलखु ॥ किउ कथीऐ किउ आखीऐ जापै सचो सचु ॥ करणा कथना कार सभ नानक आपि अकथु ॥ अकथ की कथा सुणेइ ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ अजरु जरै त नउ कुल बंधु ॥ पूजै प्राण होवै थिरु कंधु ॥ कहां ते आइआ कहां एहु जाणु ॥ जीवत मरत रहै परवाणु ॥ हुकमै बूझै ततु पछाणै ॥ इहु परसादु गुरू ते जाणै ॥ होंदा फड़ीअगु नानक जाणु ॥ ना हउ ना मै जूनी पाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पढ़ीऐ नामु सालाह होरि बुधीं मिथिआ ॥ बिनु सचे वापार जनमु बिरथिआ ॥ अंतु न पारावारु न किन ही पाइआ ॥ सभु जगु गरबि गुबारु तिन सचु न भाइआ ॥ चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥ बलदी अंदरि तेलु दुबिधा घतिआ ॥ आइआ उठी खेलु फिरै उवतिआ ॥ नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥ २४ ॥ सलोक मः १ ॥ पहिलां मासहु निंमिआ मासै अंदरि वासु ॥ जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चंमु तनु मासु ॥ मासहु बाहरि कढिआ मंमा मासु गिरासु ॥ मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ॥ वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइआ मासु ॥ मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥ सतिगुरि मिलिऐ हुकमु बुझीऐ तां को आवै रासि ॥ आपि छुटे नह छूटीऐ नानक बचनि बिणासु ॥ १ ॥ मः १ ॥ मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नही जाणै ॥ कउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु महि पाप समाणे ॥ गैंडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे ॥ मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे ॥ फड़ु करि लोकां नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै ॥ नानक अंधे सिउ किआ कहीऐ कहै न कहिआ बूझै ॥ अंधा सोइ जि अंधु कमावै तिसु रिदै सि लोचन नाही ॥ मात पिता की रकतु निपंने मछी मासु न

श्लोक महला १ ।। पवन, पानी, अग्नि और प्राणों को मिलाकर जीव बना दिया जाता है जिसे अनेकों खुशियाँ और अनेकों पीड़ाएं होती हैं। उनमें से कई धरती पर, कई पातालों में और कई आकाश में रहते हैं तथा अनेकों के द्वार पर उनके वज़ीर भी खड़े रहते हैं। कईयों की बड़ी लम्बी आयु होती है और कई मरते हुए भी कंगाल बने रहते हैं। कईयों के पास तो कभी भी खाने की कमी नहीं आती और एक ऐसे भी होते हैं जो सदैव फकीर बनकर घूमते हैं। एक क्षण भर मे लाखों को वह अपने हुकुम में ही बना देता है और हुकुम में ही नष्ट कर देता है। सबको उसने अपने हुकुम की रस्सी के साथ नापा हुआ है और जब वह कृपा करता है तभी इस नकेल को तोड़ता है। वह प्रभु वर्णों, चिन्हों, गणनाओं आदि से परे रहने वाला अदृष्ट है। उसका क्या कथन किया जाए और कैसे उसके बारे में बताया जाए क्योंकि वह तो पूर्ण सत्य के रूप में ही अनुभव किया जाता है। करना और कहना सब उसी का ही कार्य है परन्तु हे नानक, वह स्वयं अकथनीय है। यदि उस अकथनीय की वार्ता को सुना जाए तो व्यक्ति को ऋद्धियां, बुद्धि, सिद्धियां और ज्ञान प्राप्त होकर सदा सुख मिलता रहता है ।। १ ।। महला १ ।। जब आत्मरस जैसे असह्य पदार्थ को धारण किया जाता है तो शरीर के नौ द्वार बँध जाते हैं अर्थात वे गलत काम नहीं करते। यदि प्राणों के साथ उसका सुमिरन किया जाए तो यह शरीर रूपी दीवार स्थिर हो जाती है। कहां से आना है और कहां जाना है यह विवाद तथा जन्म-मरण समाप्त हो जाता है और व्यक्ति प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो जाता है। जो हुकुम को बूझ लेता है वही सार तत्व को पहचान लेता है और यह प्रसाद उसे गुरु से ही प्राप्त होता है। हे नानक, जो मैं को जताता हुआ अहंकारी बना रहता है वही पकड़ा जाता है। यदि अहंकार ना हो तो मैं भी नहीं होती तथा योनियों में भी नहीं पड़ना पड़ता ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु की प्रशंसा करने वाला नाम ही पढ़ना चाहिए क्योंकि अन्य सब प्राकर की बुद्धि तो झूठी ही होती है। सच्चे व्यापार के बिना यह जीवन व्यर्थ ही है। उस प्रभु का रहस्य, ओर-छोर कोई भी नहीं पा सका है। सारा संसार अभिमान के घोर अंधकार में पड़ा रहता है और उसे सत्य अच्छा नहीं लगता। जो प्रभु-नाम को भुलाकर यहाँ से चले जाते हैं उन्हें कड़ाही में तपना पड़ता है। वे स्वयं ही जलती हुई कड़ाही में दुविधा का तेल डालते हैं। ऐसा व्यक्ति बुरे रूप में ही आता है, खेल खेलकर यहाँ से उठ जाता है और बुरे रूप में ही योनियों में भटकता रहता है। हे नानक, जिसका मिलाप सत्य के साथ हो गया वही सत्य में लीन बना रहता है ।। २४ ।। श्लोक महला १ ।। पहले जीव माँस में से ही वीर्य रूप में पेट में टिकता है और उसका निवास माँस में ही बना रहता है। जब उसमें जान पड़ती है तो उसे माँस का ही मुँह मिलता है, हड्डी मिलती है, चमड़ी मिलती है और माँस का ही शरीर मिलता है। जब पेट के माँस में से वह बाहर निकाला जाता है अर्थात वह जन्म लेता है तो माँस का बना हुआ माँ का स्तन उसका ग्रास बनता है। उसका मुँह भी माँस का, जीभ भी माँस की होती है और वह माँस मे ही सांस लेता रहता है। बड़ा होकर जब उसका विवाह होता है तो स्त्री के रूप में वह माँस से ही विवाह करके उसे घर ले आता है। मांस से ही मांस उत्पन्न होता है और मांस से ही सभी सम्बन्ध और रिश्ते बनते हैं। सच्चे गुरु से मिलकर ही उस प्रभु के हुकुम को जाना जाता है और तब कहीं बात बनती है। अपने प्रयत्नों से जीव को छुटकारा नहीं मिलता और हे नानक, गुरु के उपदेश से ही आना जाना नष्ट होता है ।। १ ।। महला १ ।। ये माँस-माँस की बात करते हुए मूर्ख लोग ही झगड़ते हैं और वास्तविक ज्ञान और वास्तविक ध्यान को नहीं जानते। मांस किसे कहा जाए और वास्तव में साग कौन कहलाता है और पाप किसमें लगता है इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। स्वाभाविक ही यह माना जाता है कि मांस पर रीझना देवताओं का स्वभाव है इसीलिए यज्ञों में गैंडे के मांस की आहुति देते हैं। जो मांस खाना छोड़ देते हैं और मांस की गंध के सामने नाक पकड़ लेते हैं वे ही रात में पर्दे के पीछे पूरे के पूरे आदमी को खा जाने में नहीं हिचकिचाते अर्थात मनुष्य को लूटकर और मोहताज बनाकर उसे मार डालने में नहीं झिझकते। पाखण्ड करके यह लोगों को दिखाते हैं और ज्ञान ध्यान के बारे में इन्हें कुछ भी पता नहीं होता। हे नानक, अन्धे अज्ञानी व्यक्ति से क्या कहा जाए क्योंकि वह ना तो कहना जानता है और ना ही कहे हुए को समझ पाता है। अन्धा वही है जो अज्ञानी के समान आचरण करता है और उसके पास हृदय की आँखे नहीं होती। वह माता और पिता के रक्त से पैदा तो हुआ है परन्तु मछली और मांस को नहीं

खांही ॥ इसत्री पुरखै जां निसि मेला ओथै मंधु कमाही ॥ मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे ॥ बाहर का मासु मंदा सुआमी घर का मासु चंगेरा ॥ जीअ जंत सभि मासहु होए जीइ लइआ वासेरा ॥ अभखु भखहि भखु तजि छोडहि अंधु गुरू जिन केरा ॥ मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे ॥ मासु पुराणी मासु कतेबीं चहु जुगि मासु कमाणा ॥ जजि काजि वीआहि सुहावै ओथै मासु समाणा ॥ इसत्री पुरख निपजहि मासहु पातिसाह सुलतानां ॥ जे ओइ दिसहि नरकि जांदे तां उन्ह का दानु न लैणा ॥ देंदा नरकि सुरगि लैदे देखहु एहु धिङाणा ॥ आपि न बूझै लोक बुझाए पांडे खरा सिआणा ॥ पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपंना ॥ तोइअहु अंनु कमादु कपाहां तोइअहु त्रिभवणु गंना ॥ तोआ आखै हउ बहु बिधि हछा तोऐ बहुतु बिकारा ॥ एते रस छोडि होवै संनिआसी नानकु कहै विचारा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ किआ आखा इक जीभ तेरा अंतु न किन ही पाइआ ॥ सचा सबदु वीचारि से तुझ ही माहि समाइआ ॥ इकि भगवा वेसु करि भरमदे विणु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ देस दिसंतर भवि थके तुधु अंदरि आपु लुकाइआ ॥ गुर का सबदु रतंनु है करि चानणु आपि दिखाइआ ॥ आपणा आपु पछाणिआ गुरमती सचि समाइआ ॥ आवा गउणु बजारीआ बाजारु जिनी रचाइआ ॥ इकु थिरु सचा सालाहणा जिन मनि सचा भाइआ ॥ २५ ॥ सलोक मः १ ॥ नानक माइआ करम बिरखु फल अंम्रित फल विसु ॥ सभ कारण करता करे जिसु खवाले तिसु ॥ १ ॥ मः २ ॥ नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥ एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिरि सिरि होइ निबेड़ु हुकमि चलाइआ ॥ तेरै हथि निबेड़ु तूहै मनि भाइआ ॥ कालु चलाए बंनि कोइ न रखसी ॥ जरु जरवाणा कंन्हि चड़िआ नचसी ॥ सतिगुरु बोहिथु बेड़ु सचा रखसी ॥ अगनि भखै भड़हाड़ु अनदिनु भखसी ॥ फाथा चुगै चोग हुकमी छुटसी ॥ करता करे सु होगु कूड़ु निखुटसी ॥ २६ ॥

खाता है। स्त्री-पुरुष जब रात में मिलते हैं तो वहाँ भी मांस के साथ ही भोग करते हुए बुरा काम ही करते हैं (परन्तु उसे कोई बुरा नहीं कहता)। हम मांस से ही बने हैं, मांस से ही पैदा हुए हैं और हम मांस के ही शरीर वाले हैं। हे पंडित, तुझे ज्ञान ध्यान तो कुछ भी आता नहीं और तू अपने आपको बहुत चतुर कहलाता है। बाहर से लाया हुआ बकरे आदि का मांस तो तू बुरा कहता है परन्तु घर में जो मांस पाल रहा है वह सब तेरे लिए अच्छा है। जीव जन्तु सभी मांस से ही उत्पन्न हुए हैं और प्राणों ने मांस में ही डेरा लगाया हुआ है। जिनका गुरु अन्धा है वे ना खाने वाली चीज़ अर्थात हराम का माल तो खाते हैं परन्तु खाने वाली वस्तु मांस आदि को छोड़ देते हैं। हम मांस से ही बने हैं, मांस से ही पैदा हुए हैं और हमारा शरीर रूपी बर्तन भी मांस से ही बना है। हे पंडित, तुझे ज्ञान ध्यान तो कुछ भी नहीं सूझता और तू अपने आपको चतुर कहलाता फिरता है। पुराण-ग्रन्थों और किताबों में और वास्तव में चारों युगों में मांस का प्रयोग होता रहा है। यज्ञ और विवाह आदि सुहावने कार्यों में भी मांस का प्रयोग होता आया है। स्त्री, पुरुष, बादशाह, सुलतान मांस से ही पैदा हुए यदि तुम्हें नरक में जाते हुए दिखाई देते हैं तो फिर उनका दिया हुआ दान तो नहीं लेना चाहिए। देखो यह कैसी जोर जबरदस्ती है कि दान देने वाला तो नरक में जाएगा और लेने वाला स्वर्ग में जाएगा। पंडित स्वयं तो कुछ जानता नहीं और इसकी चतुराई देखो कि यह लोगों को समझाता रहता है। हे पंडित, तू तो जानता ही नहीं कि यह मांस पैदा कहां से हुआ है। पानी से ही अन्न, गन्ना, कपास और पानी से ही तीनों लोक उत्पन्न हुए माने जाते हैं। पानी यदि यह कहे कि वह अनेकों प्रकार से अच्छा है तो अपना रूप बदल कर अनेकों प्रकार के रस बन जाता है और मांस आदि सभी वस्तुएं इसी से बनी हैं। इसलिए इन सभी पदार्थों को त्यागकर ही वास्तव में त्यागी (वैष्णो) हुआ जा सकता है जोकि असम्भव है। इसलिए पंडित का कथन और पक्ष गलत है। नानक का यही चिन्तन है कि सभी रसों का पूर्णत्या त्याग करके ही संन्यासी हुआ जा सकता है अन्यथा बाकी सब पाखण्ड और भ्रम हैं ।। २ ।। पउड़ी।। मैं अपनी एक जीभ से तेरे बारे में क्या कहूं क्योंकि तेरे रहस्य को तो कोई भी नहीं जान सका है। जो सच्चे शब्द का चिन्तन करते हैं वे तुझमें ही लीन हो जाते हैं। कई भगवा वेश धारण कर भटकते रहते हैं परन्तु सच्चे गुरु के बिना कोई भी प्रभु को नहीं पा सका है। ये देश-देशान्तरों में भटककर थक चुके हैं परन्तु तूने तो अपने आपको इनके अन्तर्मन में छिपाया हुआ है। शब्द-गुरु का रत्न ऐसा है जिसे प्रकाशित करके तू स्वयं ही दिखाता है। इस प्रकार जीव अपने आपको पहचान लेता है और गुरु की शिक्षा में चलता हुआ सत्य में लीन हो जाता है। उन बाजारू लोगों के लिए आवागमन का बन्धन है जिन्होंने पाखण्ड का बाजार लगा रखा है। जिनके मन में सच्चा प्रभु अच्छा लगता है वे स्थिर होकर उस एक ही सच्चे प्रभु का गुणानुवाद करते हैं ।। २५ ।। श्लोक महला १ ।। हे नानक, सांसारिक कर्म एक वृक्ष के रूप में है जिसे अमृत और विष रूपी फल लगे रहते हैं। वह कर्ता प्रभु ही सब कुछ का कारण है और जिसे जो खिलाता है वह वही खाता है ।। १ ।। महला २ ।। हे नानक, सांसारिक बड़प्पन और प्रशंसाओं को तो आग में जला देना चाहिए क्योंकि इन जली कटी वस्तुओं के कारण ही प्रभु-नाम भूला है और इनमें से एक भी साथ नहीं चली है ।। २ ।। पउड़ी ।। हर एक का निर्णय उसी के अनुसार होना है और प्रभु हर एक को अपने हुकुम में चलाता है। हे प्रभु, सब निर्णय तेरे ही हाथ में हैं। तू ही मेरे मन को अच्छा लगता है। जब काल बाँध कर चला लेता है तो फिर कोई भी नहीं रख पाता। ज़ालिम बुढ़ापा कंधे पर चढ़कर नाचता है। सच्चा गुरु ही जीव का जहाज है और उसे सच्चा प्रभु ही बचाता है। विषय-विकारों की अग्नि की ज्वालाएं जल रही हैं और जीव सदैव उनमें जला कर खाया जा रहा है। कर्मों का बंधा हुआ यह अपना चुग्गा चुगता जाता है और इसका छुटकारा प्रभु के हुकुम में ही होता है। जो कर्ता प्रभु करता है वही होता है और अन्ततः झूठ का नाश हो जाता है ।। २६ ।।

सलोक मः १ ॥ घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥ पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु ॥ दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरानु ॥ तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु ॥ सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ ॥ अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ ॥ उलटि कमलु अंम्रिति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ ॥ अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ ॥ सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु ॥ सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु ॥ १ ॥ मः १ ॥ चिलिमिलि बिसीआर दुनीआ फानी ॥ कालूबि अकल मन गोर न मानी ॥ मन कमीन कमतरीन तू दरीआउ खुदाइआ ॥ एकु चीजु मुझै देहि अवर जहर चीज न भाइआ ॥ पुराब खाम कूजै हिकमति खुदाइआ ॥ मन तुआना तू कुदरती आइआ ॥ सग नानक दीबान मसताना नित चड़ै सवाइआ ॥ आतस दुनीआ खुनक नामु खुदाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी नवी मः ५ ॥ सभो वरतै चलतु चलतु वखाणिआ ॥ पारब्रहमु परमेसरु गुरमुखि जाणिआ ॥ लथे सभि विकार सबदि नीसाणिआ ॥ साधू संगि उधारु भए निकाणिआ ॥ सिमरि सिमरि दातारु सभि रंग माणिआ ॥ परगटु भइआ संसारि मिहर छावाणिआ ॥ आपे बखसि मिलाए सद कुरबाणिआ ॥ नानक लए मिलाइ खसमै भाणिआ ॥ २७ ॥ सलोक मः १ ॥ धंनु सु कागदु कलम धंनु धनु भांडा धनु मसु ॥ धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥ १ ॥ मः १ ॥ आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं ॥ एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥ तुधु बिनु दूजा को नही तू रहिआ समाई ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणदा तुधु कीमति पाई ॥ तू अलख अगोचरु अगमु है गुरमति दिखाई ॥ अंतरि अगिआनु दुखु भरमु है गुर गिआनि गवाई ॥ जिसु क्रिपा करहि तिसु मेलि लैहि सो नामु धिआई ॥ तू करता पुरखु अगंमु है रविआ सभ ठाई ॥ जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाई ॥ २८ ॥ १ ॥ सुधु

श्लोक महला १ ।। जो हृदय रूपी घर में ही प्रभु का निवास दिखा दे वही सर्वव्यापक, सुजान, सच्चा गुरु है। उसी के हृदय में पाँचों प्रकार के शब्दों की धुन बजती रहती है और शब्द का नगाड़ा भी बजता रहता है। ऐसी अवस्था वाले को देखकर सभी द्वीप, लोक पाताल और खण्ड तथा मण्डल आश्चर्य से भर उठते हैं। वहाँ वाद्य घनघोर रूप से बजते रहते हैं और उस के हृदय रूपी सिंहासन पर सत्य स्वरूप सुल्तान प्रभु बैठा रहता है। सुषुम्ना के घर में अर्थात इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के संगम स्थल में प्रभु के राग को सुनकर हे जीव, तू शून्य मण्डल में अपनी लौ लगा ले अर्थात निर्विकल्प हो जा। जब उसकी अकथनीय कथा का विचार करके उसे समझा जाता है तो मन की सभी इच्छाएं मन में ही समाप्त हो जाती हैं। जब माया की ओर से उलटा हुआ हृदय रूपी सहस्रार कमल अमृत से भर जाता है तो फिर यह मन इधर-उधर नहीं भटकता। फिर उस प्रभु का अजपा जाप इसे भूलता नहीं और यह उस आदि-युगादि प्रभु में लीन हो जाता है। सत्य, सन्तोष, दया, धर्म, धैर्य आदि पाँचों शुभ गुण इन्द्रिय रूपी सखियों को अब मिल जाते हैं तथा गुरमुख बने व्यक्ति का अपने वास्तविक घर में निवास हो जाता है। जो शब्द को खोजकर अपने हृदय में प्रभु निवास को देख लेता है नानक तो उसका ही दास है ।। १ ।। महला १ ।। दुनिया इस बिजली की चमक की तरह एक बहुत बड़ा चमत्कार है परन्तु है यह फानी अर्थात शीघ्र नष्ट हो जाने वाला; फिर भी व्यक्ति की उलटी बुद्धि ने नाशवानता को कभी भी नहीं माना है। यह मन कमीना और सबसे घटिया है परन्तु हे प्रभु, तू बहुत बड़ा समुद्र है। तू मुझे केवल एक प्रभु-नाम का ही पदार्थ दे दे क्योंकि विष जैसी अन्य वस्तुएं मुझे अच्छी नहीं लगती। यह शरीर रूपी कच्चा घड़ा पानी के साथ भरा हुआ है। हे खुदा, यह तेरा ही चमत्कार है। मैं भी तेरी शक्ति के कारण ही कुछ कर सकने के योग्य होता हूं। नानक तो तेरे द्वार का कुकुर (कुत्ता) है और बावला है; इस पर तेरी मस्ती सदैव बढ़ती ही जाती है। हे खुदा, यह दुनिया तो आग है परन्तु यहाँ तेरा नाम ही ठंडक देने वाला है ।। २ ।। पउड़ी नई महला ५ ।। प्रभु सारे कार्य व्यापार में विद्यमान होकर कार्यशील है और उसे एक कौतुक के रूप में ही बयान किया जा सकता है। परब्रह्म परमेश्वर प्रभु को गुरमुख बनकर ही जाना जाता है और शब्द रूपी नगाड़े की धुन अन्दर बजने से ही सभी विकार समाप्त हो जाते हैं। साधु-पुरुषों की संगत में उद्धार हो जाता है और व्यक्ति किसी पर मोहताज़ नहीं रहता। हमने तो उस दाता प्रभु का बार-बार सुमिरन करके ही सभी प्रकार के आनन्द का उपभोग किया है। उसकी कृपा का विशाल तम्बू ऐसा तना है कि वह सारे संसार में प्रकट हो उठा है। वह स्वयं ही कृपा करके अपने से मिलाता है और मैं सदैव उस पर कुर्बान जाता हूं। हे नानक, जब उस मालिक को भा जाए तभी वह अपने से मिला लेता है ।। २७ ।। श्लोक महला १ ।। वह कागज और कलम धन्य है और वह स्याही और दवात भी धन्य हैं। हे नानक, वह लेखक भी धन्य हैं जिसने प्रभु के सच्चे नाम का लेखन कार्य किया है ।। १ ।। महला १ ।। तू स्वयं ही पट्टी है, स्वयं ही कलम है और हे प्रभु उस पर लिखा हुआ लेख भी तू ही है। हे नानक, उस पर एक प्रभु का ही बखान करना चाहिए और उस एक के रहते हुए फिर भला दूसरा कोई क्या करेगा ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु, तूने स्वयं ही यह रचना बनाई है और तू स्वयं ही उसमें स्थित होकर कार्यशील बना रहता है। तेरे बिना दूसरा कोई भी नहीं है और तू ही सब में समाया हुआ है। तेरी गति और सीमा तो तू ही जानता है और वास्तव में तू ही अपना मूल्य आँक सकता है। तू अदृष्ट है, मन इन्द्रियों से परे अगम्य है और गुरु की शिक्षा के फलस्वरूप ही तुझे देखा जाता है। अन्तर्मन के अज्ञान, दुख और भ्रम को गुरु द्वारा दिया हुआ ज्ञान ही दूर करता है। जिस पर कृपा करता है प्रभु उसे अपने से मिला लेता है और वही प्रभु के नाम का सुमिरन करता रहता है। हे प्रभु, तू ही सर्वव्यापक, कर्ता और अगम्य है और तू ही सभी स्थानों में रमण करता रहता है। हे सच्चे प्रभु, तू जिधर लगाता है व्यक्ति उसी ओर लगा रहता है और हे नानक, तू उसके गुण गाता रह ।। २८ ।। १ ।। शुद्ध अर्थात मूल के साथ मिलान किया हुआ।।

राগु मलार बाणी भगत नामदेव जीउ की ॥ ੧ओं सतिगुर पसादि ॥
सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥ भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जां चै घरि दिग दिसै सराइचा बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥ जां चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े कउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करा सिरी ॥ सु ऐसा राजा स्री नरहरी ॥ १ ॥ जां चै घरि कुलालु ब्रहमा चतुर मुखु डांवड़ा जिनि बिस्व संसारु राचीले ॥ जां कै घरि ईसरु बावला जगत गुरू तत सारखा गिआनु भाखीले ॥ पापु पुंनु जां चै डांगीआ दुआरै चित्र गुपतु लेखीआ ॥ धरम राइ परुली प्रतिहारु ॥ सुो ऐसा राजा स्री गोपालु ॥ २ ॥ जां चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै ॥ सरब सासत्र बहु रूपीआ अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछे ॥ चउर ढूल जां चै है पवणु ॥ चेरी सकति जीति ले भवणु ॥ अंड टूक जा चै भसमती ॥ सुो ऐसा राजा त्रिभवण पती ॥ ३ ॥ जां चै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥ अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणीहारीआ ॥ नख प्रसेव जा चै सुरसरी ॥ सपत समुंद जां चै घड़थली ॥ एते जीअ जां चै वरतणी ॥ सुो ऐसा राजा त्रिभवण धणी ॥ ४ ॥ जां चै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रहलादु अंबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥ एते जीअ जां चै हहि घरी ॥ सरब बिआपिक अंतर हरी ॥ प्रणवै नामदेउ तां ची आणि ॥ सगल भगत जा चै नीसाणि ॥ ५ ॥ १ ॥ मलार ॥ मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि ॥ तू न बिसारे रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला ॥ सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥ १ ॥ मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥ ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला ॥ २ ॥ तू जु दइआलु क्रिपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइओ अपारला ॥ फेरि दीआ देहुरा नामे

राग मलार वाणी भक्त नामदेव जी की   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

उस कुलातीत निरंजन और धरती के पालनहार प्रभु का सुमिरन और पूजन करते रहो। सन्तजन भी यही कामना करते हैं कि हे प्रभु, हमें भक्ति का दान प्रदान करो ।। १ ।। रहाउ ।। उस सबसे बड़े राजा प्रभु के घर पर चारों दिशाओं के रूप में शामियाना लगा हुआ है तथा सारा बैकुण्ठ उसकी चित्रशाला है और सारे ही संसार में वह समान रूप से व्याप्त है। उसके घर में सदा युवती बनी रहने वाली लक्ष्मी निवास करती है और ये चाँद सूरज उसके छोटे-छोटे से दीपक हैं। जिस काल से कोतवाल से डरने की तरह सभी जीव डरते हैं वह काल बेचारा उस प्रभु के निवास पर मानों एक खिलौने के समान है। जीवों का राजा वह प्रभु ऐसा महान है ।। १ ।। जिस ब्रह्मा ने सारे संसार को पैदा किया है, चार मुँह वाला वह ब्रह्मा भी उस प्रभु के घर में शरीर रूपी बर्तन बनाने वाला एक कुम्हार ही है। लोगों की नजरों में शिव ही जगत का आदि गुरु है जिसने समझ सकने योग्य सारतत्व का ज्ञान दिया है अर्थात मौत के सत्य का सन्देश वही सबको देता है। यह शिव भी उस परमात्मा के घर में एक बावले के समान ही है। जिस चित्रगुप्त का भय प्रत्येक जीव को लगा हुआ है वह चित्रगुप्त उस प्रभु के घर का एक मामूली सा मुनीम है और प्रलय ले आने वाला धर्मराज उस प्रभु के द्वार का मामूली सा प्रतिहारी (दरबान) है। इस प्रकार के ऐश्वर्य वाला वह राजा प्रभु है ।। २ ।। उस प्रभु के घर पर गण, गन्धर्व, ऋषि और बेचारे गायक उसके गुणों का गान करते रहते हैं। सभी शास्त्र, स्वाँग भरने वाले हैं और यह संसार उनका एक छोटा सा अखाड़ा है। सभी सांसारिक राजागण उस प्रभु की हाँ में हाँ मिलाते हैं और उसकी प्रशंसा में सुन्दर वचन बोलते रहते हैं। वह प्रभु एक ऐसा महान राजा है कि उसके द्वार पर पवन चँवर डुलाता रहता है, सारे संसार को जीत लेने वाली माया उसकी दासी है और यह धरती मानो उसका चूल्हा है ।। ३ ।। विष्णु का कच्छप अवतार उसके घर में पलंग के समान है और हजारों फनों वाला शेषनाग उसकी सेज की रस्सियाँ हैं। जगत की सारी वनस्पति उसकी मालिन हैं और छयान्वे करोड़ बादलों की मेघमाला उसका पानी भरने वाले नौकर हैं। गंगा उसके द्वार पर उसके नाखूनों का पसीना मात्र है और सातों समुद्र उसके लिए मात्र घडथली (घड़े को टिका कर रखने वाला लकड़ी का आकार) है। संसार के सभी जीव जन्तु उसके बर्तन हैं। इस प्रकार तीनों लोकों का मालिक वह राजा प्रभु है ।। ४ ।। अर्जुन, प्रहलाद, नारद, सिद्ध, बुद्ध गण, गन्धर्व, बावन वीर आदि उसके अत्यन्त निकट बने रहने वाले सेवक हैं। ये सभी जीव उस प्रभु के घर में ही हैं और वह प्रभु सर्वव्यापक है। नामदेव विनती करता है कि मुझे तो उस परमात्मा का ही आसरा है जिसके झंडे के नीचे सभी भक्तजन आनन्दित बने रहते हैं ।। ५ ।। १ ।। मलार ।। हे प्रभु, तू मुझे मत भुला और मुझे कभी भी ना भुला ।। १ ।। रहाउ ।। इन श्रेष्ठ पंडितों को यह भ्रम है कि ये ऊँची जाति वाले हैं और इसीलिए ये मुझ पर क्रोधित हुए हैं। इन्होंने ही शूद्र-शूद्र कहकर मुझे मारपीट कर मन्दिर से उठा दिया है। हे मेरे विट्ठल पिता इन सबके सामने मुझ अकेले का कोई जोर नहीं चलता; मैं क्या करूं ।। १ ।। मरे हुए को जब मुक्ति दोगे तो तेरी दी हुई मुक्ति को कोई भी नहीं जान पाएगा। ये पंडित मुझे नीच कह रहे हैं और इस प्रकार तो तेरा अपना सम्मान ही घट रहा है ।। २ ।। हे प्रभु, तू तो सब पर दयालु और कृपालु बना रहने वाला और लम्बी भुजाओं वाला अनन्त बलशाली कहा जाता है। नामदेव की

कउ पंडीअन कउ पिछवारला ॥ ३ ॥ २ ॥

मलार बाणी भगत रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥ १ ॥ तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥ भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥ २ ॥ मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोंवता नितहि बानारसी आस पासा ॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥ ३ ॥ १ ॥ मलार ॥ हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥ बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥ १ ॥ जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥ २ ॥ जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥ आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥ ३ ॥ २ ॥

मलार ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥ साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥ मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥ आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥ १ ॥ जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥ झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥ २ ॥ कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥ जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

विनती को सुनकर प्रभु ने उस मंदिर का मुँह घुमा कर पंडितों की ओर अपनी पीठ कर दी अर्थात प्रभु भक्तों पर तो वह कृपालु होता है पाखण्डी पंडितों पर नहीं ।। ३ ।। २ ।।

मलार वाणी भक्त रविदास जी की   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे नगर के रहने वालो, मेरी जाति चमार (चर्मकार) प्रसिद्ध है। मैं हृदय में प्रभु के गुणों का सुमिरन करता हूं ।। १ ।। रहाउ ।। यदि गंगाजल में बनी हुई शराब हो तो भी सन्तजन उसको पीते नहीं हैं। अपवित्र शराब अथवा कोई अन्य अशुद्ध चीज गंगा जल से मिलकर कोई दूसरी नहीं होती अर्थात गंगा ही हो जाती है ।। १ ।। जैसे ताड़ का वृक्ष अपवित्र माना जाता है परन्तु जब कागज के रूप में आता है तो उस पर लिखी हुई प्रभु की भक्ति को लोग माथा टेकते हैं ।। २ ।। मेरी जाति के चमार अभी भी बनारस के आस पास मरे हुए जानवरों को ढ़ो रहे हैं परन्तु तेरे नाम की शरण में आए रविदास नामक सेवक को अब प्रधान ब्राह्मण भी दण्डवत होकर प्रणाम करते हैं ।। ३ ।। १ ।। मलार।। जो लोग प्रभु के चरण कमलों को पूजते हैं उनके समान अन्य कोई नहीं है। वह एक ही अनेक रूपों में होकर फैला हुआ है। हे जीव, तू उसको अपने हृदय में भरपूर रूप से लाकर बसा ले ।। रहाउ ।। जिसके घर में प्रभु के गुण लिखे जाते हैं तथा अन्य किसी को नहीं देखा जाता वह अस्पर्शनीय छीपी (नामदेव) है। व्यास और सनक सनन्दन इत्यादि के ग्रन्थों में बताई हुई इस प्रभु-नाम की शोभा सातों द्वीपों में बिखरी पड़ी है ।। १ ।। जिसके कुल में ईद-बकरीद पर गौ का वध होता था और शेखों पीरों और शहीदों की पूजा होती थी; जिसका पिता तो यह कुछ करता था (और उसे कोई नहीं जानता था) उसके पुत्र ने कुछ ऐसा किया कि तीनों लोकों में कबीर के नाम से प्रसिद्ध हो गया ।। २ ।। जिसके कुटुम्ब के तथाकथित सभी नीच लोग अभी भी बनारस के आस पास जानवरों को ढ़ोते फिर रहे हैं उन तथाकथित नीचों की औलाद प्रभु के दासों के दास रविदास को अब कर्मकाण्डी पंडित भी सम्मान सहित प्रणाम करते हैं ।। ३ ।। २ ।।

मलार   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्राणों का नाथ वह प्यारा प्रभु किस प्रकार की भक्ति से मिलता है। साधसंगत में ही वास्तव में परमगति पाई जाती है ।। रहाउ ।। निन्दा करके लोगों के मैले कपड़े कब तक धोता रहूंगा और अज्ञान की नींद में भला मैं कहां तक सोता रहूंगा ।। १ ।। जो-जो मैंने कुकर्मों का लेख इकट्ठा किया था वह सब फट गया है और झूठे व्यापार की मेरी दुकान अब तो उठ ही गई है ।। २ ।। रविदास का कथन है कि जब लेखा-जोखा होता है वही सब कुछ सामने आकर दिखाई देता है जो कुछ किया हुआ होता है ।। ३ ।। १ ।। ३ ।।

रागु कानड़ा चउपदे महला ४ घरु १

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

मेरा मनु साध जनां मिलि हरिआ ॥ हउ बलि बलि बलि बलि साध जनां कउ मिलि संगति पारि उतरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी हम साध जनां पग परिआ ॥ धनु धनु साध जिन हरि प्रभु जानिआ मिलि साधू पतित उधरिआ ॥ १ ॥ मनूआ चलै चलै बहु बहु बिधि मिलि साधू वसगति करिआ ॥ जिउं जल तंतु पसारिओ बधकि ग्रसि मीना वसगति खरिआ ॥ २ ॥ हरि के संत संत भल नीके मिलि संत जना मलु लहीआ ॥ हउमै दुरतु गइआ सभु नीकरि जिउ साबुनि कापरु करिआ ॥ ३ ॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि गुर सतिगुर चरन उर धरिआ ॥ सभु दालदु दूख भंज प्रभु पाइआ जन नानक नामि उधरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु संत जना पग रेन ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति मनु कोरा हरि रंगि भेन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम अचित अचेत न जानहि गति मिति गुरि कीए सुचित चितेन ॥ प्रभि दीन दइआलि कीओ अंगीक्रितु मनि हरि हरि नामु जपेन ॥ १ ॥ हरि के संत मिलहि मन प्रीतम कटि देवउ हीअरा तेन ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ हम कीए पतित पवेन ॥ २ ॥ हरि के जन ऊतम जगि कहीअहि जिन मिलिआ

रागु कानड़ा चौपदे महला ४ घरु १

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।

साधुजनों से मिलकर मेरा मन हरा-भरा हो गया है। मैं साधुजनों पर बार-बार बलिहारी जाता हूं क्योंकि उनकी संगत को पाकर मैं पार उतर गया हूं ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, हम पर अपनी कृपा करो क्योंकि हम तो अब साधुजनों के चरणों में आ गिरे हैं। वे साधु पुरुष धन्य हैं जिन्होंने प्रभु को जान लिया है और ऐसे साधु पुरुषों को मिलकर अनेकों पतित पार उतर गए हैं ।। १ ।। यह मन अनेकों विधियों से बहुत इधर-उधर भागता है और इसे साधु पुरुषों से मिलकर वश में लाया जाता है। यह उसी प्रकार है जैसे शिकारी ने जल में जाल फैला दिया हो और वह मछली को पकड़कर अपने वश में करके ले गया हो ।। २ ।। प्रभु के सन्तजन भले और अच्छे हैं और उन सन्तजनों को मिलकर ही हमारी मैल उतरती है। हमारा अहंकार और दुर्मति आदि उसी प्रकार साफ हो गए हैं जैसे साबुन कपड़े को साफ कर देता है ।। ३ ।। परमात्मा ने प्रारम्भ से ही माथे पर लेख लिख दिया है और सच्चे गुरु के चरणों को हमने हृदय में धारण कर लिया है। सब दुखों और दरिद्रताओं को नष्ट करने वाला प्रभु मैंने पा लिया है और हे नानक, तेरे सेवक प्रभु-नाम के माध्यम से पार हो गए हैं ।। ४ ।। १ ।। कानड़ा महला ४ ।। मेरा मन सन्तजनों की चरण धूलि है। साधसंगत में मिलकर हमने प्रभु की कथा को सुना और हमारा कोरा मन प्रभु के रंग में भीग गया है ।। १ ।। रहाउ ।। हम भूले हुए मूर्ख, प्रभु की गति और सीमा नहीं जानते परन्तु गुरु ने हमें सयाने और सावधान बना दिया है। दीनदयालु प्रभु ने हमें अंगीकार कर लिया है और अब हमारा मन प्रभु-नाम का जाप करता रहता है ।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु के प्यारे सन्त पुरुषों से यदि मेरा मिलाप हो जाए तो मैं उन्हें हृदय काट कर अर्पण कर दूं। प्रभु के शान्त पुरुषों को मिलने से ही हमें प्रभु मिला है और उसने हम पतितों को पावन कर दिया है ।। २ ।। इस संसार में प्रभु के सेवकों को उत्तम कहा जाता है जिनसे मिलकर

पाथर सेन ॥ जन की महिमा बरनि न साकउ ओइ ऊतम हरि हरि केन ॥ ३ ॥ तुम्ह हरि साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे रासि देन ॥ जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन ॥ ४ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम परगास ॥ हरि के संत मिलि प्रीति लगानी विचे गिरह उदास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम हरि हिरदै जपिओ नामु नरहरि प्रभि क्रिपा करी किरपास ॥ अनदिनु अनदु भइआ मनु बिगसिआ उदम भए मिलन की आस ॥ १ ॥ हम हरि सुआमी प्रीति लगाई जितने सास लीए हम ग्रास ॥ किलबिख दहन भए खिन अंतरि तूटि गए माइआ के फास ॥ २ ॥ किआ हम किरम किआ करम कमावहि मूरख मुगध रखे प्रभ तास ॥ अवगनीआरे पाथर भारे सतसंगति मिलि तरे तरास ॥ ३ ॥ जेती स्रिसटि करी जगदीसरि ते सभि ऊच हम नीच बिखिआस ॥ हमरे अवगुन संगि गुर मेटे जन नानक मेलि लीए प्रभ पास ॥ ४ ॥ ३ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरै मनि राम नामु जपिओ गुर वाक ॥ हरि हरि क्रिपा करी जगदीसरि दुरमति दूजा भाउ गइओ सभ झाक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना रूप रंग हरि केरे घटि घटि रामु रविओ गुपलाक ॥ हरि के संत मिले हरि प्रगटे उघरि गए बिखिआ के ताक ॥ १ ॥ संत जना की बहुतु बहु सोभा जिन उरि धारिओ हरि रसिक रसाक ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ जैसे गऊ देखि बछराक ॥ २ ॥ हरि के संत जना महि हरि हरि ते जन ऊतम जनक जनाक ॥ तिन हरि हिरदै बासु बसानी छूटि गई मुसकी मुसकाक ॥ ३ ॥ तुम्हरे जन तुम्ह ही प्रभ कीए हरि राखि लेहु आपन अपनाक ॥ जन नानक के सखा हरि भाई मात पिता बंधप हरि साक ॥ ४ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरे मन हरि हरि राम नामु जपि चीति ॥ हरि हरि वसतु माइआ गढ़ि वेढ़ी गुर कै सबदि लीओ गड़ु जीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ भरमि भरमि बहु भ्रमिआ लुबधो पुत्र कलत्र मोह प्रीति ॥ जैसे तरवर की तुछ छाइआ खिन महि बिनसि जाइ देह भीति ॥ १ ॥ हमरे प्रान प्रीतम जन ऊतम जिन मिलिआ मनि होइ प्रतीति ॥ परचै रामु रविआ घट अंतरि

पत्थर भी भीग उठते हैं। सेवकों की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता क्योंकि प्रभु ने उन्हें उत्तम बना दिया होता है ।। ३ ।। हे स्वामी प्रभु, तुम बड़े साहूकार हो और हम व्यापारी हैं, तुम हमें रासपूंजी प्रदान करो। हे प्रभु, दास नानक पर दया धारण करो ताकि हम प्रभु-नाम का सौदा लादकर ले जाएँ ।। ४ ।। २ ।। कानड़ा महला ४ ।। हे मन, प्रकाश रूप प्रभु-नाम का जाप करते रहो। प्रभु के सन्तों से मिलकर हमने प्रेम लगाया है और अब गृहस्थ में रहते हुए ही हम तटस्थ भाव में बने रहते हैं ।। २ ।। रहाउ ।। प्रभु ने कृपालु होकर कृपा की है और हमने उस प्रभु का नाम हृदय में याद किया है। अब सदैव आनन्द हो गया है, मन खिल उठा है और कुछ ऐसा प्रयत्न हो गया है कि प्रभु से मिलने की आशा बन गई है ।। १ ।। हमने तो जितने भी श्वास और ग्रास लिए हैं उतनी बार ही उस स्वामी प्रभु से अपनी प्रीति को लगाया है। क्षण भर में ही हमारे पाप जल गए हैं और माया के फन्दे टूट गए हैं ।। २ ।। हम कीड़े-मकोड़े भला तुम्हें मिलने के लिए कौन सा कर्म कर सकते हैं ; उस प्रभु ने तो मूर्ख और बावलों की भी रक्षा की है। अवगुणों वाले हम पत्थरों की तरह भारी हैं और सत्संगत से मिलकर हम तैरे और तैराए गए हैं ।। ३ ।। प्रभु ने जितनी भी सृष्टि बनाई है उसके सभी जीव ऊँचे हैं और विषयों में फँसे हुए हम नीच हैं। गुरु की संगत में हमारे सभी अवगुण मिट गए हैं और हे नानक, अपने सेवकों को प्रभु ने अपने साथ मिला लिया है ।। ४ ।। ३ ।। कानड़ा महला ४ ।। मेरे मन ने गुरु के वाक्य के रूप में राम नाम का सुमिरन किया है। संसार के स्वामी प्रभु ने कृपा की है और हमारी दुर्मति, द्वैतभाव और सब प्रकार की आशाएं भाग खड़ी हुई हैं ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के अनेकों रंग रूप हैं और घट-घट में गुप्त रूप से वह प्रभु ही रमण कर रहा है। प्रभु के शान्त पुरुषों से जब मिलाप हुआ तो प्रभु प्रकट हुए तथा विषय-विकारों के सभी दरवाजे खुल गए हैं अर्थात अब अन्दर विषय-विकार नहीं बचे हैं ।। १ ।। उन शान्त पुरुषों की शोभा अनन्त है जिन्होंने हृदय में उस रसिक प्रभु को रसपूर्ण होकर धारण कर लिया है। जिस प्रकार गाय को देखकर उसका बछड़ा उससे आ मिलता है उसी प्रकार संतों के माध्यम से प्रभु से मिलाप हो जाता है ।। २ ।। प्रभु का निवास सन्तजनों में ही है और प्रभु के ऐसे सेवक उत्तम लोगों से भी उत्तम होते हैं। उन्होंने अपने हृदय में प्रभु की ऐसी सुगन्ध बसाई होती है कि सब प्रकार की दुर्गन्ध समाप्त हो जाती है ।।३।।हे प्रभु, अपने सेवकों को तुमने ही बनाया है और अब उन्हें अपना बनाकर उनकी रक्षा करो। दास नानक के सखा-भाई, माता-पिता, बन्धु-सम्बन्धी आदि सब कुछ प्रभु ही है ।।४।।४।। कानड़ा महला ४ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु के नाम का जाप अपने अन्दर करता रह। प्रभु रूपी पदार्थ माया के किले में घिरा हुआ है और शब्द-गुरु के माध्यम से उस किले को जीत लिया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। झूठे भ्रमों में पड़कर मैं बहुत भटका हूँ और पुत्र, स्त्री के मोह में ही लीन बना रहा हूँ। जैसे वृक्ष की छाया थोड़ी सी ही होती है इसी प्रकार क्षण भर में ही यह शरीर रूपी दीवार विनष्ट हो जाती है ।। १ ।। वे उत्तम सेवक हमारे प्राण प्यारे होते हैं जिनके मिलाप से मन में प्रभु की प्रीति पैदा होती है। उनकी संगत में हृदय में रमण करता हुआ प्रभु प्रसन्न होता है और व्यक्ति

असथिरु रामु रविआ रंगि प्रीति ॥ २ ॥ हरि के संत संत जन नीके जिन मिलिआं मनु रंगि रंगीति ॥ हरि रंगु लहै न उतरै कबहू हरि हरि जाइ मिलै हरि प्रीति ॥ ३ ॥ हम बहु पाप कीए अपराधी गुरि काटे कटित कटीति ॥ हरि हरि नामु दीओ मुखि अउखधु जन नानक पतित पुनीति ॥ ४ ॥ ५ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम जगंनाथ ॥ घूमन घेर परे बिखु बिखिआ सतिगुर काढि लीए दे हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुआमी अभै निरंजन नरहरि तुम्ह राखि लेहु हम पापी पाथ ॥ काम क्रोध बिखिआ लोभि लुभते कासट लोह तरे संगि साथ ॥ १ ॥ तुम्ह वड पुरख बड अगम अगोचर हम ढूढि रहे पाई नही हाथ ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी तू आपन जानहि आपि जगंनाथ ॥ २ ॥ अद्रिसटु अगोचर नामु धिआए सतसंगति मिलि साधू पाथ ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति हरि हरि जपिओ अकथ कथ काथ ॥ ३ ॥ हमरे प्रभ जगदीस गुसाई हम राखि लेहु जगंनाथ ॥ जन नानकु दासु दास दासन को प्रभ करहु क्रिपा राखहु जन साथ ॥ ४ ॥ ६ ॥

कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५ ॥ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

मन जापहु राम गुपाल ॥ हरि रतन जवेहर लाल ॥ हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल ॥ हरि हो हो किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरे गुन अगम अगोचर एक जीह किआ कथै बिचारी राम राम राम राम लाल ॥ तुमरी जी अकथ कथा तू तू तू ही जानहि हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ हमरे हरि प्रान सखा सुआमी हरि मीता मेरे मनि तनि जीह हरि हरे हरे राम नाम धनु माल ॥ जा को भागु तिनि लीओ री सुहागु हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति हउ बलि बले हउ बलि बले जन नानक हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ हरि गुन गावहु जगदीस ॥ एका जीह कीचै लख बीस ॥ जपि हरि हरि सबदि जपीस ॥ हरि हो हो किरपीस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि किरपा करि सुआमी हम लाइ हरि सेवा हरि जपि जपे हरि जपि जपे जपु जापउ जगदीस ॥ तुमरे

उस स्थिर प्रभु के रंग और प्रीति में टिक जाता है ।। २ ।। प्रभु के सन्त भले सेवक होते हैं जिनको मिलने से मन प्रभु प्रेम में रंग जाता है। प्रभु का रंग ना तो दूर होता है और ना ही कभी उतरता है और व्यक्ति प्रभु से प्रीति बनाकर उस प्रभु से मिल जाता है ।। ३ ।। हम अपराधियों ने तो बहुत से पाप किए हैं परन्तु गुरु के माध्यम से वे सभी पाप कट गए हैं। प्रभु ने अपने नाम की औषधि हमारे मुख में डाल दी है और हे दास नानक, पापी भी उससे पवित्र हो गए हैं ।। ४ ।। ५ ।। कानड़ा महला ४ ।। हे मन, जगत के नाथ उस प्रभु के नाम का सुमिरन कर। विषय-विकारों के भँवर में तू भटक रहा है परन्तु सच्चे गुरु ने तुझे हाथ देकर बाहर निकाल लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। वह स्वामी प्रभु, कालिमाओं से परे है और हे प्रभु, तुम हम पापी पत्थरों को बचा लो। काम, क्रोध और विषयों के लोभ में हम मगन बने हुए हैं परन्तु लकड़ी के साथ लोहा भी तैर जाता है; इसलिए हे प्रभु, तुम हमारी रक्षा कर लो ।। १ ।। तुम महान सत्ता वाले बड़े, अगम्य और अगोचर पुरुष हो, हम तुम्हें ढूंढ़ रहे हैं परन्तु तुम्हारे रहस्य को हम नहीं जान सके हैं। हे अपरम्पार स्वामी, तू परे से परे है और जगत के नाथ प्रभु अपने आपको तो केवल तुम स्वयं ही जानते हो ।। २ ।। अदृष्ट, अगोचर प्रभु-नाम का सुमिरन करने से सत्संगत में मिलकर साधु पुरुषों का मार्ग प्राप्त किया जाता है। संगत में मिलकर अब हमने प्रभु की कथावार्ता सुनी है और उस अकथनीय कथा वाले प्रभु का हमने सुमिरन किया है ।। ३।। हे संसार के ईश्वर प्रभु, हमारी रक्षा करो। सेवक नानक तो दासों का भी दास है और हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो और मुझे अपने सेवकों के साथ ही बनाए रखो ।। ४ ।। ६ ।।

कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मन, धरती के पालक उस राम का जाप करो क्योंकि वह प्रभु ही रत्न, जवाहिर और माणिक है। प्रभु का नाम भी गुरमुखों की संगत रूपी टकसाल में गढ़ा जाता है। हे प्रभु, हम पर कृपा करो ।। १ ।। रहाउ ।। हे राम, हे प्रभु, तुम्हारे गुण अगम्य एवं अगोचर हैं; इनका यह बेचारी एक जीभ क्या कथन कर सकती है। तुम्हारी यह अकथनीय कथा हे प्रभु, तू ही जानता है और मैं तो प्रभु का सुमिरन करके निहाल, निहाल, निहाल हो गई हूँ ।। १ ।। हे हमारे प्राण सखा और मित्र प्रभु स्वामी, मेर मन तन और जीभ हरि हरे और राम के नाम को सारा धन माल मानकर उसी का सुमिरन करते हैं। जिसके माथे पर भाग्य लेख है उसी ने प्रभु को सुहाग रूप में पाया है और गुरु की शिक्षा के अनुरूप वही प्रभु के गुण गाती है। मैं तो उस पर बार-बार बलिहारी जाती हूँ और हे दास नानक, मैं तो प्रभु का सुमिरन करके अत्यन्त निहाल, निहाल और निहाल हो गई हूँ ।। २ ।। १ ।। ७ ।। कानड़ा महला ४ ।। एक जीभ को बीस लाख बनाकर हे जीव, तू प्रभु के गुणों का गायन कर। तू सुमिरन करने योग्य उस प्रभु का शब्द के माध्यम से सुमिरन कर। हे प्रभु, हम पर कृपालु बने रहो ।। १ ।। रहाउ ।। हे स्वामी प्रभु, कृपा करके हमें प्रभु की सेवा में ही लगा लो और प्रभु का जाप करके हम संसार के स्वामी उस प्रभु का ही सुमिरन करते रहें। तुम्हारे

जन रामु जपहि ते ऊतम तिन कउ घुमि घुमे घुमि घुमि जीस ॥ १ ॥ हरि तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करहि जि तुधु भावीस ॥ जन नानक अंम्रितु पीआ गुरमती धनु धंनु धनु धंनु धंनु गुरू साबीस ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ भजु रामो मनि राम ॥ जिसु रूप न रेख वडाम ॥ सतसंगति मिलु भजु राम बड हो हो भाग मथाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु ग्रिहि मंदरि हरि होतु जासु तितु घरि आनदो आनंदु भजु राम राम राम ॥ राम नाम गुन गावहु हरि प्रीतम उपदेसि गुरू गुर सतिगुरा सुखु होतु हरि हरे हरि हरे हरे भजु राम राम राम ॥ १ ॥ सभ सिसटि धार हरि तुम किरपाल करता सभु तू तू तू राम राम राम ॥ जन नानको सरणागती देहु गुरमती भजु राम राम राम ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ सतिगुर चाटउ पग चाट ॥ जितु मिलि हरि पाधर बाट ॥ भजु हरि रसु रस हरि गाट ॥ हरि हो हो लिखे लिलाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खट करम किरिआ करि बहु बहु बिसथार सिध साधिक जोगीआ करि जट जटा जट जाट ॥ करि भेख न पाईऐ हरि ब्रहम जोगु हरि पाईऐ सतसंगती उपदेसि गुरू गुर संत जना खोलि खोलि कपाट ॥ १ ॥ तू अपरंपरु सुआमी अति अगाहु तू भरपुरि रहिआ जल थले हरि इकु इको इक एकै हरि थाट ॥ तू जाणहि सभ बिधि बूझहि आपे जन नानक के प्रभ घटि घटे घटि घटे घटि हरि घाट ॥ २ ॥ ४ ॥ १० ॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन गोबिद माधो ॥ हरि हरि अगम अगाधो ॥ मति गुरमति हरि प्रभु लाधो ॥ धुरि हो हो लिखे लिलाधो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ संचि बहु चितै बिकार सुखु पाईऐ हरि भजु संत संत संगती मिलि सतिगुरू गुरु साधो ॥ जिउ छुहि पारस मनूर भए कंचन तिउ पतित जन मिलि संगती सुध होवत गुरमती सुध हाधो ॥ १ ॥ जिउ कासट संगि लोहा बहु तरता तिउ पापी संगि तरे साध साध संगती गुर सतिगुरू गुर साधो ॥ चारि बरन चारि आस्रम है कोई मिलै गुरू गुर नानक सो आपि तरै कुल सगल तराधो ॥ २ ॥ ५ ॥ ११ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ हरि जसु गावहु भगवान ॥ जसु गावत पाप लहान ॥ मति गुरमति सुनि जसु कान ॥ हरि हो हो किरपान ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सेवक जो प्रभु का नाम जपते हैं वे उत्तम हैं और मैं उन पर घूम-घूम कर बार-बार बलिहारी जाता हूँ ।। १ ।। हे प्रभु, तुम बड़े हो, बड़ों से भी बड़े ऊँचे हो और तुम वही करते हो जो तुम्हें अच्छा लगता है। दास नानक ने गुरु की शिक्षा का अमृतपान किया है और वह गुरु धन्य-धन्य है तथा उसे शाबाश है ।। २ ।। २ ।। ८ ।। कानड़ा महला ४ ।। हे जीव, मन में उस प्रभु का ही बार-बार सुमिरन करो जो बड़ा है और जिसकी कोई रूप रेखा नहीं है। सत्संगत में मिलकर प्रभु का सुमिरन करो जिससे तेरे माथे के भाग्य लेख महान हो जाएँगे ।। १ ।। रहाउ ।। जिस हृदय रूपी घर अथवा मकान में प्रभु का यश होता रहता है उस घर में प्रभु-नाम के सुमिरन के कारण आनन्द ही आनन्द बना रहता है। राम नाम के माध्यम से गुरु के उपदेश द्वारा उस प्रभु के गुण गाते रहो। हे सच्चे गुरु, प्रभु के सुमिरन और राम नाम के भजन से ही सुख प्राप्त होता है। हे कर्ता और कृपालु प्रभु, तुमने ही सारी सृष्टि को धारण किया हुआ है और हे प्रभु, सब जीवों में तू ही तू समाया हुआ है। दास नानक तो तेरी शरण में आया है; इसे गुरु की शिक्षा प्रदान करो ताकि यह प्रभु का भजन ही करता रहे ।। २ ।। ३ ।। ६ ।। कानड़ा महला ४ ।। सच्चे गुरु के चरणों को मैं स्पर्श करता हूँ जिनके मिलाप से प्रभु को मिलने का रास्ता साफ और समतल हो जाता है। प्रभु का सुमिरन करो और प्रभु के नाम रस को गट-गट करके पीते रहो। प्रभु ने ही ऐसा भाग्य लेख लिखा होता है ।। १ ।। रहाउ ।। षटकर्मों वाली हठयोग की क्रियाएं और जटाओं आदि का अनेक प्रकार से विस्तार सिद्ध, साधक और योगियों ने किया हुआ है। हरि ब्रह्म का मिलाप वेशों के कारण प्राप्त नहीं होता है अपितु सत्संगत में गुरु के उपदेश के माध्यम से प्रभु मिलता है और सत्संगत में ही गुरु और सन्तजन हमारे मन के दरवाजों को खोल-खोलकर दिखाते हैं ।। १ ।। तू अपरम्पार स्वामी और अत्यन्त अथाह है; एक ही रूप में तू एक ही प्रभु जल, स्थल आदि सभी तरफ समाया हुआ है। दास नानक के प्रभु, तू स्वयं सभी विधियों को जानता और बूझता है और हे प्रभु, तू ही घट-घट में अपना ठिकाना बनाए हुए है ।। २ ।। ४ ।। १० ।। कानड़ा महला ४ ।। हे मन, तू धरती के स्वामी उस प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि वह हरि ही अगम्य और अगाध है। गुरु की शिक्षा के अनुरूप अपनी बुद्धि को बनाकर ही प्रभु को पाया जाता है। उसके लिए आरम्भ से ही माथे पर भाग्य लेख लिखा होता है ।। १ ।। रहाउ ।। जीव धन सम्पदा के विष को इकट्ठा करके बहुत से विकारों में ध्यान लगाए रहता है परन्तु सच्चे गुरु रूपी साधु और सन्त-पुरुषों की संगत में प्रभु का सुमिरन करके ही सुख प्राप्त किया जाता है। जिस प्रकार घटिया लोहा भी पारस को स्पर्श करके सोना हो जाता है उसी प्रकार साधसंगत से मिलकर और गुरु की शिक्षा के अनुरूप मति बनकर पतित व्यक्ति भी शुद्ध और पवित्र हो जाता है। जैसे लकड़ी के साथ लोहा भी तैर जाता है उसी प्रकार साधसंगत और सच्चे गुरु के साथ रहकर पापी व्यक्ति भी पार उतर जाते हैं। हे नानक, चारों वर्णों, चारों आश्रमों में से बेशक कोई भी महान गुरु को आकर मिल ले तो वह स्वयं भी पार उतर जाता है और अपने सारे वंश को भी पार उतार लेता है ।। २ ।। ५ ।। ११ ।। कानड़ा महला ४ ।। उस प्रभु के यश का गायन करते रहो क्योंकि उसके गुणनुवाद से पाप उतर जाते हैं। गुरु की शिक्षा के अनुरूप मति बनाकर तुम प्रभु के यश को अपने कानों से सुनते रहो। हे प्रभु, तुम हम पर कृपालु बने रहो ।। १ ।। रहाउ ।।

तेरे जन धिआवहि इक मनि इक चिति ते साधू सुख पावहि जपि हरि हरि नामु निधान ॥ उसतति करहि प्रभ तेरीआ मिलि साधू साध जना गुर सतिगुरू भगवान ॥ १ ॥ जिन कै हिरदै तू सुआमी ते सुख फल पावहि ते तरे भव सिंधु ते भगत हरि जान ॥ तिन सेवा हम लाइ हरे हम लाइ हरे जन नानक के हरि तू तू तू तू तू भगवान ॥ २ ॥ ६ ॥ १२ ॥

कानड़ा महला ५ घरु २   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गाईऐ गुण गोपाल क्रिपा निधि ॥ दुख बिदारन सुखदाते सतिगुर जा कउ भेटत होइ सगल सिधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत नामु मनहि साधारै ॥ कोटि पराधी खिन महि तारै ॥ १ ॥ जा कउ चीति आवै गुरु अपना ॥ ता कउ दूखु नही तिलु सुपना ॥ २ ॥ जा कउ सतिगुरु अपना राखै ॥ सो जनु हरि रसु रसना चाखै ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि कीनी मइआ ॥ हलति पलति मुख ऊजल भइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ आराधउ तुझहि सुआमी अपने ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सासि सासि सासि हरि जपने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता कै हिरदै बसिओ नामु ॥ जा कउ सुआमी कीनो दानु ॥ १ ॥ ता कै हिरदै आई सांति ॥ ठाकुर भेटे गुर बचनांति ॥ २ ॥ सरब कला सोई परबीन ॥ नाम मंत्रु जा कउ गुरि दीन ॥ ३ ॥ कहु नानक ता कै बलि जाउ ॥ कलिजुग महि पाइआ जिनि नाउ ॥ ४ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनां ॥ अनिक बार करि बंदन संतन ऊहां चरन गोबिंद जी के बसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक भांति करि दुआरु न पावउ ॥ होइ क्रिपालु त हरि हरि धिआवउ ॥ १ ॥ कोटि करम करि देह न सोधा ॥ साधसंगति महि मनु परबोधा ॥ २ ॥ त्रिसन न बूझी बहु रंग माइआ ॥ नामु लैत सरब सुख पाइआ ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब भए दइआल ॥ कहु नानक तउ छूटे जंजाल ॥ ४ ॥ ३ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी मांगु गोबिद ते ॥ टहल संतन की संगु साधू का हरि नामां जपि परम गते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा चरना ठाकुर सरना ॥ सोई कुसलु जु प्रभ जीउ करना ॥ १ ॥ सफल होत इह

जो तेरे सेवक एक मन और एक चित्त से तेरा सुमिरन करते हैं ऐसे साधु पुरुष प्रभु-नाम के सुखों के भण्डार का सुमिरन करते करते सुख प्राप्त करते रहते हैं। वे साधु-पुरुषों, सच्चे गुरु, प्रभु के सेवकों के साथ मिलकर हे प्रभु, तेरी महिमा कर गुणगान करते रहते हैं ।। १ ।। हे स्वामी, जिनके हृदय में तू बसता है वे ही सुखों के फल को प्राप्त करते हैं, संसार सागर को तैरकर पार कर जाते हैं और प्रभु के भक्त जाने जाते हैं। हे प्रभु, हमें उनकी सेवा में लगाए रख और दास नानक के प्रभु, तू ही सबके भाग्यों को सँवारने वाला प्रभु है ।। २ ।। ६ ।। १२ ।।

कानड़ा महला ५ घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

उस कृपा के भण्डार प्रभु के गुण गाने चाहिए क्योंकि वही दुखों का नाश करने वाला सुखदाता सच्चा गुरु है जिसके मिलाप से सभी प्रकार की सिद्धियां (सफलताएं) प्राप्त हो जाती हैं ।। १ ।। रहाउ ।। उसका नाम याद करने से ही वह मन को एक सुन्दर आधार और सहारा प्रदान करता है तथा उसने ही करोड़ों अपराधियों को क्षण भर में ही पार उतार दिया है ।। १ ।। जिसके हृदय में अपने गुरु की याद बनी रहती है उसको सपने में भी तिल मात्र भी दुख प्राप्त नहीं होता ।। २ ।। जिसकी रक्षा सच्चा गुरु करता है वह सेवक प्रभु नाम के रस को अपनी जीभ से चखता रहता है ।। ३ ।। नानक का कथन है कि जब गुरु ने कृपा कर दी तो इस लोक और परलोक दोनों में ही हमारा मुख उज्जवल हो गया है ।। ४ ।। १ ।। कानड़ा महला ५ ।। हे मेरे स्वामी, मैं तेरी ही आराधना करता हूँ और उठते-बैठते सोते जागते हर श्वास के साथ प्रभु का सुमिरन करता हूं ।। १ ।। रहाउ ।। उसके हृदय में ही प्रभु का नाम बसता है जिसे उस प्रभु स्वामी ने दान रूप में उसे दिया होता है ।। १ ।। उसी ने हृदय में शान्ति से मिलाप किया होता है जिसने गुरु के वचनों को हृदय में धारण करके प्रभु से मिलाप किया होता है ।। २ ।। वही व्यक्ति सभी कलाओं में निपुण है जिसे गुरु ने प्रभु-नाम रूपी मन्त्र प्रदान कर दिया है ।। ३ ।। नानक का कथन है कि उसी पर बलिहारी जाते रहो जिसने इस कलियुग में भी प्रभु-नाम प्राप्त कर लिया है ।। ४ ।। २ ।। कानड़ा महला ५ ।। हे मेरी जीभ, तू प्रभु की कीर्ति का गायन करती रह। अनेकों बार तू सन्तजनों की वन्दना कर क्योंकि प्रभु के चरणों का निवास उन्हीं के पास होता है ।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों विधियां अपनाने पर भी प्रभु का द्वार प्राप्त नहीं होता परन्तु यदि वह कृपालु हो जाए तो मैं प्रभु का सुमिरन करता रहता हूं ।। १ ।। करोड़ों कर्मकाण्ड करने पर भी यह शरीर पवित्र नहीं होता परन्तु इस बात का ज्ञान इस मन को साधसंगत में ही होता है ।। २ ।। माया के अनेक रंगों में भी इस जीव की तृष्णा बुझती नहीं परन्तु प्रभु का नाम लेते ही यह सभी सुख प्राप्त कर लेता है ।। ३ ।। जब प्रभु दयालु हो गया तो नानक का कथन है तब सभी सांसारिक जंजालों से छुटकारा मिल गया अर्थात मैं उनसे अलिप्त हो गया हूं ।। ४ ।। ३ ।। कानड़ा महला ५ ।। प्रभु के सामने यही माँग रखनी चाहिए कि वह सन्तजनों की सेवा और साधु पुरुषों की संगत प्रदान करे ताकि प्रभु नाम का सुमिरन करते हुए परम गति को प्राप्त किया जा सके ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु की शरण और प्रभु के चरणों की पूजा आदि में तभी सुख प्राप्त होता है जब प्रभु स्वयं वह सुख प्रदान करने का उपक्रम करता है। जिस पर सच्चा गुरु कृपा कर देता है उसका

दुरलभ देही ॥ जा कउ सतिगुरु मइआ करेही ॥ २ ॥ अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥ जा कै हिदै बसहि गुर पैरा ॥ ३ ॥ साधसंगि रंगि प्रभु धिआइआ ॥ कहु नानक तिनि पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ भगति भगतन हूं बनि आई ॥ तन मन गलत भए ठाकुर सिउ आपन लीए मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावनहारी गावै गीत ॥ ते उधरे बसे जिह चीत ॥ १ ॥ पेखे बिंजन परोसनहारै ॥ जिह भोजनु कीनो ते त्रिपतारै ॥ २ ॥ अनिक स्वांग काछे भेखधारी ॥ जैसो सा तैसो द्रिसटारी ॥ ३ ॥ कहन कहावन सगल जंजार ॥ नानक दास सचु करणी सार ॥ ४ ॥ ५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ तेरो जनु हरि जसु सुनत उमाहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनहि प्रगासु पेखि प्रभ की सोभा जत कत पेखउ आहिओ ॥ १ ॥ सभ ते परै परै ते ऊचा गहिर गंभीर अथाहिओ ॥ २ ॥ ओति पोति मिलिओ भगतन कउ जन सिउ परदा लाहिओ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि गावै गुण नानक सहज समाधि समाहिओ ॥ ४ ॥ ६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ संतन पहि आपि उधारन आइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन भेटत होत पुनीता हरि हरि मंत्रु द्रिड़ाइओ ॥ १ ॥ काटे रोग भए मन निरमल हरि हरि अउखधु खाइओ ॥ २ ॥ असथित भए बसे सुख थाना बहुरि न कतहू धाइओ ॥ ३ ॥ संत प्रसादि तरे कुल लोगा नानक लिपत न माइओ ॥ ४ ॥ ७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ १ ॥ जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥ २ ॥ सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥ ३ ॥ ८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥ मानु महतु तुम्हारै ऊपरि तुम्हरी ओट तुम्हारी सरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी आस भरोसा तुम्हरा तुमरा नामु रिदै लै धरना ॥ तुमरो बलु तुम संगि सुहेले जो जो कहहु सोई सोई करना ॥ १ ॥ तुमरी दइआ मइआ सुखु पावउ होहु क्रिपाल त भउजलु तरना ॥ अभै दानु नामु हरि पाइओ सिरु डारिओ नानक संत चरना ॥ २ ॥ ९ ॥

यह दुर्लभ शरीर सफल हो जाता है ।। २ ।। जिसके हृदय में गुरु के चरण बस जाते हैं उसका अज्ञान, भ्रम और दुखों के झुण्ड विनष्ट हो जाते हैं ।। ३ ।। साधसंगत में प्रेम-पूर्वक जिसने प्रभु का सुमिरन किया है, नानक का कथन है कि उसने उस पूर्ण प्रभु को पा लिया है ।। ४ ।। ४ ।। कानड़ा महला ५ ।। भक्तजनों की शोभा तो उनकी भक्ति ही है। उनका तन मन प्रभु में लीन होकर मस्त हो जाता है और वह प्रभु स्वयं ही उन्हें अपनाकर अपने से मिला लेता है ।। १ ।। रहाउ ।। वैसे तो सारी सृष्टि ही उसके गीत गाती है परन्तु पार वे ही उतरते हैं जिनके चित्त में प्रभु बसा रहता है ।। १ ।। भोजन परोसने वाला अनेक प्रकार के व्यञ्जनों को देखता तो है परन्तु वास्तविक सन्तुष्टि भोजन करने वाले को ही प्राप्त होती है ।। २ ।। स्वाँग रचाने वाला अनेकों प्रकार के वेश धारण करता है और अन्ततः नज़र वही आता है जो उसका असली रूप होता है ।। ३ ।। यह कहना कहाना सब कुछ जंजाल और बन्धन ही है। हे दास नानक, वास्तविक सारतत्व तो सत्य पर आचरण (सत्याचरण) ही है ।। ४ ।। ५ ।। कानड़ा महला ५ ।। हे प्रभु, तेरा सेवक तो तेरे यश को सुनते ही प्रसन्न हो उठा है ।। १ ।। रहाउ ।। यश सुनने के फलस्वरूप उसने प्रभु की शोभा को मन में प्रकाशित होते हुए देख लिया है और अब वह जिधर भी देखता है उधर उसके सामने प्रभु ही होता है ।। १ ।। तू सबसे परे है, ऊँचा, गहरा, गम्भीर और अथाह है ।। २ ।। भक्तों में ओत प्रोत होकर वह हमसे मिला है और अपने सेवक से अब वह कुछ भी पर्दे में नहीं रखता ।। ३ ।। हे नानक, उसका भक्त गुरु की कृपा से उसके गुण गाता है और स्वाभाविक रूप में ही समाधि में लीन बना रहता है ।। ४ ।। ६ ।। कानड़ा महला ५ ।। जीवों का उद्धार करने मे लिए प्रभु स्वयं सन्तजनों के पास आता है ।। १ ।। रहाउ ।। गुरु के दर्शन करने से व्यक्ति पवित्र होता है और गुरु ही प्रभु-नाम का मन्त्र याद करवाता है ।। १ ।। प्रभु नाम की औषधि खाने से रोग कट जाते हैं और मन निर्मल हो जाता है ।। २ ।। अब जीव सुख के स्थान में बस कर स्थिर हो जाते हैं और फिर इधर-उधर दौड़ते भागते नहीं ।। ३ ।। सन्तजनों की कृपा से सभी लोग पार उतर जाते हैं और हे नानक, फिर वे माया में लिप्त नहीं होते ।। ४ ।। ७ ।। कानड़ा महला ५ ।। जब से मैंने साधसंगत प्राप्त कर ली है तो मेरी दूसरों के प्रति ईर्ष्या और जलन सभी समाप्त हो गई हैं ।। १ ।। रहाउ ।। मेरा कोई भी शत्रु नहीं; और मेरे लिए कोई भी बेगाना नहीं सभी लोगों के साथ हमारा मित्रभाव स्थापित हो गया है ।। १ ।। प्रभु ने जो भी किया है उसे मैं भला और अच्छा मानता हूँ परन्तु यह सुमति मैंने गुरु रूपी साधु से ही प्राप्त की है ।। २ ।। सब में वह एक प्रभु ही रमण कर रहा है, इस तथ्य को देखकर नानक प्रसन्न बना रहता है ।। ३ ।। ८ ।। कानड़ा महला ५ ।। हे ठाकुर प्रभु, मुझे तुम्हारा ही आसरा है। मेरा मान, महत्व सब तुम पर ही आश्रित हैं और मैं तुम्हारी शरण में हूँ तथा मुझे केवल तुम्हारा ही आसरा है ।। १ ।। रहाउ ।। तुझ पर ही मुझे भरोसा और आशा है और तुम्हारे ही नाम को मैं हृदय में धारण किए रहता हूँ। तुम्हारा ही बल मुझमें है और तुम्हारे साथ ही मैं सुखी हूँ तथा हे प्रभु, तुम जो जो कहते हो मुझे वही-वही करना होता है ।। १ ।। तुम्हारी दया और तुम्हारी कृपा से ही मैं सुख पाता हूँ और तुम्हीं कृपालु बनोगे तो मैं संसार सागर से पार उतर सकूंगा। नानक ने तो सन्त पुरुषों के चरणों में अपने सिर को डाल लिया है और प्रभु के नाम के रूप में अभयदान प्राप्त कर लिया है ।। २ ।। ६ ।।

कानड़ा महला ५ ॥ साध सरनि चरन चितु लाइआ ॥ सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मंत्रु सतिगुरू द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह त्रिपतानो राज जोबनि धनि बहुरि बहुरि फिरि धाइआ ॥ सुखु पाइआ त्रिसना सभ बुझी है सांति पाई गुन गाइआ ॥ १ ॥ बिनु बूझे पसू की निआई भ्रमि मोहि बिआपिओ माइआ ॥ साधसंगि जम जेवरी काटी नानक सहजि समाइआ ॥ २ ॥ १० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ हरि के चरन हिरदै गाइ ॥ सीतला सुख सांति मूरति सिमरि सिमरि नित धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल आस होत पूरन कोटि जनम दुखु जाइ ॥ १ ॥ पुंन दान अनेक किरिआ साधू संगि समाइ ॥ ताप संताप मिटे नानक बाहुड़ि कालु न खाइ ॥ २ ॥ ११ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कथीऐ संतसंगि प्रभ गिआनु ॥ पूरन परम जोति परमेसुर सिमरत पाईऐ मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत जात रहे स्रम नासे सिमरत साधू संगि ॥ पतित पुनीत होहि खिन भीतरि पारब्रहम कै रंगि ॥ १ ॥ जो जो कथै सुनै हरि कीरतनु ता की दुरमति नास ॥ सगल मनोरथ पावै नानक पूरन होवै आस ॥ २ ॥ १ ॥ १२ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साधसंगति निधि हरि को नाम ॥ संगि सहाई जीअ कै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत रेनु निति मजनु करै ॥ जनम जनम के किलबिख हरै ॥ १ ॥ संत जना की ऊची बानी ॥ सिमरि सिमरि तरे नानक प्रानी ॥ २ ॥ २ ॥ १३ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साधू हरि हरे गुन गाइ ॥ मान तनु धनु प्रान प्रभ के सिमरत दुखु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईत ऊत कहा लोभावहि एक सिउ मनु लाइ ॥ १ ॥ महा पवित्र संत आसनु मिलि संगि गोबिदु धिआइ ॥ २ ॥ सगल तिआगि सरनि आइओ नानक लेहु मिलाइ ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ पेखि पेखि बिगसाउ साजन प्रभु आपना इकांत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनदा सुख सहज मूरति तिसु आन नाही भांति ॥ १ ॥ सिमरत इक बार

कानड़ा महला ५ ।। हमने तो साधु-पुरुषों की शरण में आकर उनके चरणों में चित्त लगा दिया है। संसार को सुना तो था कि यह सपना है परन्तु जब गुरु ने प्रभु-नाम का उपदेश दिया तो इस तथ्य को हमने देख भी लिया है कि यह वास्तव में सपना ही है ।। १ ।। रहाउ ।। राज, यौवन, धन के लिए बार-बार भागने दौड़ने के बावजूद यह जीव सन्तुष्ट नहीं होता। प्रभु-नाम के मन्त्र के कारण हमारी सभी तृष्णाएं बुझ गई हैं, हमने सुख पा लिया है और उस प्रभु का गुणानुवाद करते हुए हमें शान्ति प्राप्त हो गई है ।। १ ।। उसे जाने बिना हम पशु की तरह थे और माया, भ्रम और मोह हममें पूरी तरह व्याप्त था। हे नानक, साधसंगत में हमने इनके फन्दे को काट दिया और सहज भाव में हम लीन हो गए हैं ।। २ ।। १० ।। कानड़ा महला ५ ।। प्रभु के चरणों का हृदय में गुणानुवाद करो। ये ठंडक पहुँचाने वाले और सुख शान्ति की मूर्ति हैं इसलिए इनको याद रखते हुए सदैव इनकी आराधना करो ।। १ ।। रहाउ ।। इन्हीं से सभी आशाएँ पूरी होती हैं और करोड़ों जन्मों के दुख दूर हो जाते हैं ।। १ ।। साधु-पुरुषों की संगत में लीन बने रहना ही दान-पुण्य जैसे अनेकों कर्मों के समान हैं। हे नानक, इस प्रकार शरीर और मन में सभी ताप एवं संताप मिट जाते हैं और फिर काल व्यक्ति को मार कर समाप्त नहीं कर सकता ।। २ ।। ११ ।।

कानड़ा महला ५ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सन्त-पुरुषों की संगत में प्रभु-ज्ञान का कथन करते रहना चाहिए। वह परमेश्वर पूर्ण एवं परम ज्योति है जिसका सुमिरन करते रहने से सम्मान प्राप्त होता है ।। १ ।। रहाउ ।। साधसंगत में प्रभु-नाम का सुमिरन करने से आवागमन समाप्त हो जाता है और विकारों से लदे हुए मन की थकावट दूर हो जाती है। प्रभु के प्रेम के माध्यम से क्षण भर में ही पापी और पतित लोग पवित्र हो जाते हैं ।। १ ।। जो भी प्रभु के कीर्तन को सुनता है और उसकी कीर्ति का बयान करता है उसकी दुर्मति नष्ट हो जाती है। हे नानक, वह सारे उद्देश्यों को प्राप्त कर लेता है और उसकी आशाएँ पूरी हो जाती हैं ।। २ ।। १ ।। १२ ।। कानड़ा महला ५ ।। साधसंगत ही प्रभु के नाम का खजाना है और यही खजाना व्यक्ति के साथ सहायक होता है और आत्मा के काम आता है ।। १ ।। रहाउ ।। जो सन्त पुरुषों की चरण धूलि में सदैव स्नान करता है उसके जन्मों जन्मान्तरों के पाप दूर हो जाते हैं ।। १ ।। सन्तजनों की वाणी अत्यन्त ऊँची होती है और हे नानक, उसका सुमिरन करते हुए प्राणी पार उतर जाते हैं ।। २ ।। २ ।। १३ ।। कानड़ा महला ५ ।। साधु-पुरुष प्रभु के ही गुण गाते हैं। यह मान-सम्मान तन-धन और प्राण सब प्रभु के ही हैं और प्रभु के सुमिरन से ही दुख समाप्त होता है ।। १ ।। रहाउ ।। तू इधर-उधर क्यों लालच में दौड़ा रहता है, तू केवल एक प्रभु में ही अपना मन लगा ।। १ ।। महा पवित्र सन्तजनों को उनके ठिकाने पर ही मिलकर उनके साथ प्रभु का सुमिरन कर ।। २ ।। मैं सब कुछ त्यागकर हे प्रभु, तेरी शरण में आ गया हूँ, तू नानक को अपने से मिला ले ।। ३ ।। ३ ।। १४ ।। कानड़ा महला ५ ।। मैं अपने एक ही साजन प्रभु को देख-देखकर खिला रहता हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। वह आनन्द और सहज सुख की मूर्ति है और उसे सुमिरन के सिवा अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता ।। १ ।। एक बार प्रभु का सुमिरन कर

हरि हरि मिटि कोटि कसमल जांति ॥ २ ॥ गुण रमंत दूख नासहि रिद भइअंत सांति ॥ ३ ॥ अंम्रिता रसु पीउ रसना नानक हरि रंगि रात ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साजना संत आउ मेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनदा गुन गाइ मंगल कसमला मिटि जाहि परेरै ॥ १ ॥ संत चरन धरउ माथै चांदना ग्रिहि होइ अंधेरै ॥ २ ॥ संत प्रसादि कमलु बिगसै गोबिंद भजउ पेखि नेरै ॥ ३ ॥ प्रभ क्रिपा ते संत पाए वारि वारि नानक उह बेरै ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन गोपाल तेरी ॥ मोह मान धोह भरम राखि लीजै काटि बेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूडत संसार सागर ॥ उधरे हरि सिमरि रतनागर ॥ १ ॥ सीतला हरि नामु तेरा ॥ पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥ २ ॥ दीन दरद निवारि तारन ॥ हरि क्रिपा निधि पतित उधारन ॥ ३ ॥ कोटि जनम दूख करि पाइओ ॥ सुखी नानक गुरि नामु द्रिड़ाइओ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ धनि उह प्रीति चरन संगि लागी ॥ कोटि जाप ताप सुख पाए आइ मिले पूरन बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि अनाथु दासु जनु तेरा अवर ओट सगली मोहि तिआगी ॥ भोर भरम काटे प्रभ सिमरन गिआन अंजन मिलि सोवत जागी ॥ १ ॥ तू अथाहु अति बडो सुआमी क्रिपा सिंधु पूरन रतनागी ॥ नानकु जाचकु हरि हरि नामु मांगै मसतकु आनि धरिओ प्रभ पागी ॥ २ ॥ ७ ॥ १८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कुचिल कठोर कपट कामी ॥ जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू समरथु सरनि जोगु तू राखहि अपनी कल धारि ॥ १ ॥ जाप ताप नेम सुचि संजम नाही इन बिधे छुटकार ॥ गरत घोर अंध ते काढहु प्रभ नानक नदरि निहारि ॥ २ ॥ ८ ॥ १९ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाराइन नरपति नमसकारै ॥ ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ आपि मुकतु मोहि तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन कवन कवन गुन कहीऐ अंतु नही कछु पारै ॥ लाख लाख लाख कई कोरै को है ऐसो

लेने से करोड़ों पाप मिट जाते हैं ।। २ ।। प्रभु के गुणों के सुमिरन से दुख भाग खड़े होते हैं और हृदय शान्त हो जाता है ।। ३ ।। हे जीभ, प्रभु के प्रेम में अपने आपको रंग कर तू प्रभु नाम का मीठा रस पीती रह ।। ४ ।। ४ ।। १५।। कानड़ा महला ५ ।। हे सन्त रूपी मेरे साजन, मेरे पास आ जाओ ।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु के आनन्द देने वाले मंगल गीत गाकर पाप मिट कर दूर हो जाते हैं ।। १ ।। शान्त पुरुषों के चरण माथे पर धारण करने पर अंधकार से भरे हुए मेरे हृदय रूपी घर में प्रकाश हो जाता है ।। २ ।। सन्त पुरुषों की कृपा से हृदय कमल खिल उठता है और प्रभु को पास ही देखकर उसका सुमिरन किया जाता है ।। ३ ।। प्रभु की कृपा से ही सन्त पुरुषों को प्राप्त किया जाता है और नानक तो प्राप्ति के उस क्षण पर बार-बार बलिहारी जाता है ।। ४ ।। ५ ।। १६ ।। कानड़ा महला ५ ।। हे प्रभु, मैं तेरे चरणों की शरण में हूं। मोह, मान, धोखा और भ्रमों की मेरी बेड़ी को काटकर तू मुझे बचा ले ।। १ ।। रहाउ ।। इस संसार सागर में हम डूबते हुए रत्नों के भण्डार उस प्रभु का सुमिरन करके पार उतर गए हैं ।। १ ।। हे प्रभु, तेरा नाम शीतलता देने वाला है और हे मेरे प्रभु, तू ही सब ओर परिपूर्ण रूप से व्याप्त है ।। २ ।। दीनों के दुखों का निवारण कर उन्हें पार उतारने वाला कृपा का भण्डार और पतितों का उद्धार करने वाला वह प्रभु ही है ।। ३ ।। करोड़ों जन्मों में दुखों को प्राप्त कर मैंने यह प्राप्ति की है कि हे नानक, गुरु के माध्यम से प्रभु-नाम का सुमिरन करके मैं सुखी हो गया हूँ ।। ४ ।। ६ ।। १७ ।। कानड़ा महला ५ ।। वह प्रेम और प्रीति धन्य है जो प्रभु के चरणों में लगी हुई है। उसके कारण मैंने करोड़ों जप और तपस्याओं के सुख पा लिए हैं और मेरे बड़े भाग्य से मुझे पूर्ण गुरु आ मिला है ।। १ ।। रहाउ ।। मैं अनाथ, दास और तेरा सेवक हूँ तथा हे प्रभु, मैंने बाकी के सभी आश्रयों को छोड़ दिया है। ज्ञान का अंजन प्राप्त होने से मैं सोता जग गया हूँ और प्रभु के सुमिरन से मेरा जो थोड़ा बहुत भ्रम बाकी था वह भी दूर हो गया है ।। १ ।। तू सबसे बड़ा स्वामी अथाह कृपा का समुद्र और रत्नों की भरी हुई खान है। याचक नानक तो प्रभु से हरि नाम ही माँगता है और उसने अपना मस्तक प्रभु के चरणों में धर दिया है ।। २ ।। ७ ।। १८ ।। कानड़ा महला ५ ।। मैं गन्दा, ज़ालिम, कपटी और व्यभिचारी हूँ ; हे स्वामी प्रभु, तुझसे जैसे भी बन पड़े मुझे पार उतार ले ।। १ ।। रहाउ ।। तू समर्थ है, रक्षा करने के योग्य है और तू अपनी शक्ति को कार्यशील करके हमें बचाता रहता है।। १ ।। जाप, तपस्या, नियम, शौच, संयम आदि की विधियों से छुटकारा नहीं होता। हे प्रभु, अपनी कृपा दृष्टि से देखकर नानक को गहरे और अन्धकार पूर्ण गर्त से निकाल लो ।। २ ।। ८ । १६ ।।

कानड़ा महला ५ घरु ४ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जो राजा प्रभु को प्रणाम करता रहता है मैं ऐसे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जो स्वयं तो मुक्त होता ही है और मुझे भी पार उतार देता है ।। १ ।। रहाउ ।। उसके किस-किस गुण का बखान किया जाए क्योंकि उसके रहस्य का कोई ओर-छोर नहीं है। लाखों और कई करोड़ों में से कौन ऐसा है जो उसको

बीचारै ॥ १ ॥ बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै ॥ कहु नानक संतन रसु आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ॥ २ ॥ १ ॥ २० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ न जानी संतन प्रभ बिनु आन ॥ ऊच नीच सभ पेखि समानो मुखि बकनो मनि मान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि पूरि रहे सुख सागर भै भंजन मेरे प्रान ॥ मनहि प्रगासु भइओ भ्रमु नासिओ मंत्रु दीओ गुर कान ॥ १ ॥ करत रहे क्रतग्य करुणा मै अंतरजामी ग्यान ॥ आठ पहर नानक जसु गावै मांगन कउ हरि दान ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कहन कहावन कउ कई केतै ॥ ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत जोग कउ बेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु नाही सभु सुखु ही है रे एकै एकी नेतै ॥ बुरा नही सभु भला ही है रे हार नही सभ जेतै ॥ १ ॥ सोगु नाही सदा हरखी है रे छोडि नाही किछु लेतै ॥ कहु नानक जनु हरि हरि हरि है कत आवै कत रमतै ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ हीए को प्रीतमु बिसरि न जाइ ॥ तन मन गलत भए तिह संगे मोहनी मोहि रही मोरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जै पहि कहउ ब्रिथा हउ अपुनी तेऊ तेऊ गहे रहे अटकाइ ॥ अनिक भांति की एकै जाली ता की गंठि नही छोराइ ॥ १ ॥ फिरत फिरत नानक दासु आइओ संतन ही सरनाइ ॥ काटे अगिआन भरम मोह माइआ लीओ कंठि लगाइ ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ आनद रंग बिनोद हमारै ॥ नामो गावनु नामु धिआवनु नामु हमारे प्रान अधारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामो गिआनु नामु इसनाना हरि नामु हमारे कारज सवारै ॥ हरि नामो सोभा नामु बडाई भउजलु बिखमु नामु हरि तारै ॥ १ ॥ अगम पदारथ लाल अमोला भइओ परापति गुर चरनारै ॥ कहु नानक प्रभ भए क्रिपाला मगन भए हीअरै दरसारै ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साजन मीत सुआमी नेरो ॥ पेखत सुनत सभन कै संगे थोरै काज बुरो कह फेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना जेतो लपटाइओ कछू नही नाही कछु तेरो ॥ आगै द्रिसटि आवत सभ परगट ईहा मोहिओ भरम अंधेरो ॥ १ ॥ अटकिओ सुत बनिता संग माइआ देवनहारु दातारु

विचार कर जान सकता है ।। १ ।। यह सारी सृष्टि उसके ही गाढ़े प्रेम के लाल रंग में रंग कर आश्चर्य विभोर होती रहती है। नानक का कथन है कि सन्तजनों को उसके नाम रस का वैसा ही स्वाद आता है जैसे गूंगा मिठाई को चखकर मुस्कुराता रहता है परन्तु उसके स्वाद का बयान नहीं कर सकता ।। २ ।। १ ।। २० ।। कानड़ा महला ५ ।। सन्त पुरुषों ने तो प्रभु के बिना अन्य किसी को भी नहीं जाना है। वे ऊँचे नीचे सब में उस प्रभु को एक समान ही देखते हैं तथा मन में उसे मानते हुए फिर मुख से उसका वर्णन करते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हे भय को नाश करने वाले मेरे प्राण रूपी प्रभु, तुम सुखों के सागर के रूप में घर-घर में व्याप्त बने हुए हो। गुरु ने मुझे मेरे काम में प्रभु-नाम का ऐसा मन्त्र दिया है कि मेरा भ्रम भाग खड़ा हुआ है और मेरा मन प्रकाशित हो उठा है ।। १ ।। ज्ञान स्वरूप अन्तर्यामी दया से भरकर हमें कृतज्ञ (कृतार्थ) करते रहते हैं। नानक तो प्रभु से दान प्राप्त करने के लिए आठों प्रहर उसके यश का गायन करता रहता है ।। २ ।। २ ।। २१ ।। कानड़ा महला ५ ।। कहने कहाने वाले तो अनेकों हैं। ऐसा सेवक कोई बिरला ही है जो प्रभु से मिलाप के तत्व का ज्ञाता हो ।। १ ।। रहाउ ।। ऐसे सेवक उस एक प्रभु को ही आँखों में बसाकर यह मानते हैं कि सब सुख ही सुख हैं दुख कहीं भी नहीं है। बुरा कुछ नहीं है सब भला ही है और हमारी हार नहीं होती; वास्तव में जब हम हारते हैं तो प्रभु को जीत लेते हैं ।। १ ।। उनके लिए शोक नहीं सदैव हर्ष ही बना रहता है और वे प्रभु के आनन्द को छोड़कर अन्य कुछ भी नहीं लेते। नानक का कथन है कि प्रभु का सेवक तो प्रभु ही है फिर भला यह कहां आता है और कहां भटकता है अर्थात यह इस आवागमन से परे ही बना रहता है ।। २ ।। ३ ।। २२।। कानड़ा महला ५ ।। मेरे हृदय से वह प्रियतम कहीं भूल ना जाए। मेरा तो मन तन उसी में मस्त है और उसी की माया ने हमें मोहित बना रखा है ।। १ ।। रहाउ ।। जिस जिसके पास भी मैं अपनी व्यथा कहता हूँ उन सब को यह माया पकड़कर अटका लेती है। माया का जाल अनेकों प्रकार का है और उसकी माया की गाँठ टूटती नहीं ।। १ ।। भटकता-भटकता दास नानक सन्तजनों की शरण में आ गया है। उन्होंने मेरे अज्ञान, भ्रमों, मोह और माया को काट दिया है तथा मुझे अपने गले से लगा लिया है ।। २ ।। ४ ।। २३ ।। कानड़ा महला ५ ।। हमारे यहाँ तो आनन्द प्रेम और विनोद पूर्ण वातावरण बना हुआ है। हम तो नाम का ही गायन करते हैं, नाम का ही सुमिरन करते हैं और नाम ही हमारे प्राणों का आधार है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु-नाम ही हमारा ज्ञान और स्नान है तथा प्रभु-नाम ने ही हमारे कामों को सँवारा है। प्रभु-नाम से ही शोभा और बड़प्पन प्राप्त होता है और प्रभु के नाम ने ही हमें विषम संसार सागर से पार उतार दिया है ।। १ ।। वह अगम्य, अमूल्य रत्न पदार्थ रूपी प्रभु-नाम हमें गुरु के चरणों में ही प्राप्त हुआ है। नानक का कथन है कि प्रभु हम पर कृपालु हो गए हैं और हृदय में ही उसका दर्शन करके हम उसमें लीन हो गए हैं ।। २ ।। ५ ।। २४ ।। कानड़ा महला ५ ।। वह साजन, मित्र और स्वामी प्रभु हमारे पास ही है। वह सबके साथ ही देखता और सुनता है इसलिए हे जीव, तू थोड़ी सी आयु वाला होकर बुरे काम क्यों करता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु-नाम के बिना जितने भी पदार्थों से तू लिपटा हुआ है इनमें से कुछ भी तेरा नहीं है। आगे जाकर तेरा सब कुछ प्रकट हो जाएगा कि तू किस प्रकार भ्रमों के अन्धेरे में लीन वना रहा है।। १ ।। तू पुत्र स्त्री और धन संपत्ति में ही अटका रहा तथा देने वाले उस दाता प्रभु को तूने

बिसेरो ॥ कहु नानक एकै भारोसउ बंधन काटनहारु गुरु मेरो ॥ २ ॥ ६ ॥ २५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिखै दलु संतनि तुम्हरै गाहिओ ॥ तुमरी टेक भरोसा ठाकुर सरनि तुम्हारी आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के महा पराछत दरसनु भेटि मिटाहिओ ॥ भइओ प्रगासु अनद उजीआरा सहजि समाधि समाहिओ ॥ १ ॥ कउनु कहै तुम ते कछु नाही तुम समरथ अथाहिओ ॥ क्रिपा निधान रंग रूप रस नामु नानक लै लाहिओ ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ बूडत प्रानी हरि जपि धीरै ॥ बिनसै मोहु भरमु दुखु पीरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरउ दिनु रैनि गुर के चरना ॥ जत कत पेखउ तुमरी सरना ॥ १ ॥ संत प्रसादि हरि के गुन गाइआ ॥ गुर भेटत नानक सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ८ ॥ २७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ सिमरत नामु मनहि सुखु पाईऐ ॥ साध जना मिलि हरि जसु गाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रभ रिदै बसेरो ॥ चरन संतन कै माथा मेरो ॥ १ ॥ पारब्रहम कउ सिमरहु मनां ॥ गुरमुखि नानक हरि जसु सुनां ॥ २ ॥ ९ ॥ २८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ मेरे मन प्रीति चरन प्रभ परसन ॥ रसना हरि हरि भोजनि त्रिपतानी अखीअन कउ संतोखु प्रभ दरसन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करननि पूरि रहिओ जसु प्रीतम कलमल दोख सगल मल हरसन ॥ पावन धावन सुआमी सुख पंथा अंग संग काइआ संत सरसन ॥ १ ॥ सरनि गही पूरन अबिनासी आन उपाव थकित नही करसन ॥ करु गहि लीए नानक जन अपने अंध घोर सागर नही मरसन ॥ २ ॥ १० ॥ २९ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कुहकत कपट खपट खल गरजत मरजत मीचु अनिक बरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहं मत अन रत कुमित हित प्रीतम पेखत भ्रमत लाख गरीआ ॥ १ ॥ अनित बिउहार अचार बिधि हीनत मम मद मात कोप जरीआ ॥ करुण क्रिपाल गोपाल दीन बंधु नानक उधरु सरनि परीआ ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ जीअ प्रान मान दाता ॥ हरि बिसरते ही हानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद तिआगि आन लागहि अंम्रितो डारि भूमि पागहि ॥ बिखै रस सिउ आसकत मूड़े काहे सुख मानि

भुला दिया है। नानक का कथन है कि मुझे तो एक ही भरोसा है कि मेरा गुरु प्रभु मेरे बन्धनों को काट देने वाला है।। २ ।। ६।। २५ ।। कानड़ा महला ५ ।। मैंने माया के विषय-विकारों के दल को तुम्हारे सन्तजनों के माध्यम से कुचल डाला है। हे प्रभु, मुझे तुम्हारा ही आसरा और भरोसा है तथा मैं तुम्हारी शरण में आ गया हूँ ।। १ ।। रहाउ।। जन्मों-जन्मों के बड़े-बड़े पाप मैंने तुम्हारा दर्शन करके मिटा दिए हैं। आनन्द के उजाले से मैं प्रकाशित हो उठा हूँ और सहज समाधि में लीन हो गया हूँ।। १ ।। कौन कहता है कि तुमसे कुछ नहीं होता; तुम तो अथाह रुप से समर्थ हो। हे कृपा के भण्डार प्रभु, तुम्हारा नाम जब लाभ के तौर पर मैंने याद किया तो सभी रंग, रस तथा रूप सौन्दर्य आदि सब कुछ मुझे मिल गया है ।। २ ।। ७ ।। २६ ।। कानड़ा महला ५ ।। डूबते हुए प्राणी को प्रभु का सुमिरन करके ही धैर्य आता है तथा उसका मोह, भ्रम और दुख की पीड़ा विनष्ट हो जाती है ।। १ ।। रहाउ ।। मैं दिन-रात गुरु के चरणों का सुमिरन करता हूँ और जहाँ कहीं भी देखता हूँ मैं अपने आपको तुम्हारी ही शरण में पाता हूँ ।। १ ।। शान्त-पुरुषों की कृपा से मैंने प्रभु का गुणानुवाद किया और हे नानक, गुरु से मिलाप होते ही मैंने सुख प्राप्त कर लिया है ।।२ ।।८ ।।२७।। कानड़ा महला ५ ।। प्रभु का नाम सुमिरन करते रहने से मन में सुख प्राप्त होता है। अब साधुजनों के साथ मिलकर प्रभु के यश का गायन किया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, कृपा करके मेरे हृदय में निवास करो क्योंकि सन्तजनों के चरणों पर मेरा मस्तक टिका हुआ है ।। १ ।। हे मन, परब्रह्म प्रभु का सुमिरन करो और हे नानक, गुरमुख बनकर प्रभु के यश को सुनते रहो ।। २ ।। ६ ।। २८ ।। कानड़ा महला ५ ।। मेरे मन की प्रीति प्रभु के चरण स्पर्श करने के लिए है। मेरी जीभ प्रभु नाम के भोजन से तृप्त हो गई है और ये आँखें प्रभु का दर्शन करके सन्तुष्ट हो गई हैं ।। १ ।। रहाउ ।। मेरे कानों में उस प्रियतम प्रभु का यश भर रहा है जिससे मेरे पाप, दोष और सब प्रकार के मल दूर हो रहे हैं। पैर अब प्रभु के सुखदायक रास्ते की तरफ दौड़ते हैं और शरीर के अंग सन्त पुरुषों की संगत के माध यम से सरस अर्थात हरे-भरे बने रहते हैं ।। १ ।। हमने तो पूर्ण अविनाशी प्रभु की शरण पकड़ ली है और अब हम अन्य उपायों में व्यर्थ में ही थकते नहीं रहते । हे नानक, प्रभु ने अपने सेवकों को अपने हाथ से पकड़ लिया है और वे अब भयानक संसार सागर में डूबकर नहीं मरते ।। २ ।। १० ।। २६ ।। कानड़ा महला ५ ।। जिनके हृदय में नाश कर देने वाले कपट विकराल रूप से चीखते रहते हैं और विकारों के दुष्ट गर्जते रहते हैं उन्हें अनेकों बार मौत का सामना करना पड़ता है अर्थात वे जीवन में भी दुष्कर्म करते हुए अनेकों बार अपनी आत्मा को अथवा अपनी सात्विकता को मारते रहते हैं और फिर आवागमन में पड़कर भी जन्मते मरते रहते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। मैं अहंकार में और अनेकों अन्य रसों में लीन होकर बुरे लोगों के साथ मित्रता बनाए रखता हूँ। हे प्रियतम, तुम तो देख ही रहे हो कि मैं लाखों गलियों में भटकता हुआ घूम रहा हूँ ।। १ ।। मेरा व्यवहार क्षणिक होकर क्षणिक लाभ के लिए ही है तथा मेरा आचरण भी विधिहीन अर्थात बेढंगा ही है ; मैं मेरी के नशे में मदमस्त होने के कारण मैं क्रोध की अग्नि में जलता ही रहता हूँ। हे करुणामय, कृपालु और दीनबन्धु प्रभु, नानक का कथन है कि शरण पड़े हुए का उद्धार कर दे ।। २ ।। ११ ।। ३० ।। कानड़ा महला ५ ।। वह प्रभु जीवों का प्राणदाता और सम्मानदाता है; उस प्रभु को भुलाते ही हानि ही हानि होती है ।। १ ।। रहाउ ।। लोग प्रभु को त्यागकर अन्यों के पीछे लग जाते हैं और अमृत को फेंककर खाक छानते फिरते हैं। विषयों के रसों में लीन हे मूर्ख, तुझे कैसे सुख मिल सकता है

॥ १ ॥ कामि क्रोधि लोभि बिआपिओ जनम ही की खानि ॥ पतित पावन सरनि आइओ उधरु नानक जानि ॥ २ ॥ १२ ॥ ३१ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ अविलोकउ राम को मुखारबिंद ॥ खोजत खोजत रतनु पाइओ बिसरी सभ चिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल रिदै धारि ॥ उतरिआ दुखु मंद ॥ १ ॥ राज धनु परवारु मेरै सरबसो गोबिंद ॥ साधसंगमि लाभु पाइओ नानक फिरि न मरंद ॥ २ ॥ १३ ॥ ३२ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभ पूजहो नामु अराधि ॥ गुर सतिगुर चरनी लागि ॥ हरि पावहु मनु अगाधि ॥ जगु जीतो हो हो गुर किरपाधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक पूजा मै बहु बिधि खोजी सा पूजा जि हरि भावासि ॥ माटी की इह पुतरी जोरी किआ एह करम कमासि ॥ प्रभ बाह पकरि जिसु मारगि पावहु सो तुधु जंत मिलासि ॥ १ ॥ अवर ओट मै कोइ न सूझै इक हरि की ओट मै आस ॥ किआ दीनु करे अरदासि ॥ जउ सभ घटि प्रभू निवास ॥ प्रभ चरनन की मनि पिआस ॥ जन नानक दासु कहीअतु है तुम्हरा हउ बलि बलि सद बलि जास ॥ २ ॥ १ ॥ ३३ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जगत उधारन नाम प्रिअ तेरै ॥ नव निधि नामु निधानु हरि केरै ॥ हरि रंग रंग रंग अनूपेरै ॥ काहे रे मन मोहि मगनेरै ॥ नैनहु देखु साध दरसेरै ॥ सो पावै जिसु लिखतु लिलेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवउ साध संत चरनेरै ॥ बांछउ धूरि पवित्र करेरै ॥ अठसठि मजनु मैलु कटेरै ॥ सासि सासि धिआवहु मुखु नही मोरै ॥ किछु संगि न चालै लाख करोरै ॥ प्रभ जी को नामु अंति पुकरोरै ॥ १ ॥ मनसा मानि एक निरंकेरै ॥ सगल तिआगहु भाउ दूजेरै ॥ कवन कहां हउ गुन प्रिअ तेरै ॥ बरनि न साकउ एक टुलेरै ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै ॥ मिलु नानक देव जगत गुर केरै ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥

।। १ ।। काम, क्रोध और लोभ से भरे रहना ही तेरे जन्म मरण का मूल कारण है। हे नानक, तू पतित पावन प्रभु की शरण में आ गया है इसलिए अब तू अपने आपको पार उतरा हुआ ही समझ ।। २ ।। १२ ।। ३१ ।। कानड़ा महला ५ ।। अब मैं प्रभु के मुख कमल को देखता रहता हूँ। खोजते-खोजते मैंने ऐसे रत्न पदार्थ को पा लिया है कि मेरी सारी चिन्ता दूर हो गई है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के चरण कमलों को हृदय में धारण करके मुझे बुरा बनाने वाला मेरा दुख समाप्त हो गया है ।। १ ।। राज, धन और परिवार तथा मेरा सर्वस्व वह प्रभु ही है। साधसंगत में मैंने लाभ प्राप्त किया है और हे नानक, अब मैं फिर मरता नहीं हूँ ।। २ ।। १३ ।। ३२ ।।

कानड़ा महला ५ घरु ५ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु नाम का सुमिरन करते हुए प्रभु का पूजन करो और यह करने के लिए सच्चे गुरु के चरणों में जा लगो। प्रभु को अपने अगाध मन में ही प्राप्त कर लो और गुरु की कृपा के माध्यम से संसार को जीत लो ।। १ ।। रहाउ ।। पूजा, अर्चना की अनेकों विधियों को मैंने खोजा है परन्तु वास्तविक पूजा वही है जो प्रभु को भाती है। मिट्टी की पुतली यह देही भला अपनी शक्ति से कौन सा कर्म कर सकती है। हे प्रभु, जिस जीव को बाँह पकड़कर तू सही मार्ग पर डाल देता है वह जीव ही तुझसे आ मिलता है ।। १ ।। मुझे अन्य कोई भी आसरा दिखाई नहीं देता और मैं तो केवल एक प्रभु के आसरे पर ही आशा लगाए रहता हूँ। जब सभी हृदयों में प्रभु का ही निवास है तो फिर यह दीन भला क्या अरदास कर सकता है अर्थात वह प्रभु तो अन्तर्यामी है और बिना कहे ही सब कुछ जानता है। प्रभु के चरणों की मेरे मन में प्यास बनी हुई है। हे प्रभु, दास नानक तो तेरा दास कहा जाता है तू इसकी लाज रख। हे प्रभु, मैं सदैव तुझ पर बलिहारी जाता हूँ ।। २ ।। १ ।। ३३ ।।

कानड़ा महला ५ घरु ६ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

संसार का उद्धार करने वाला तेरा नाम तुझमें ही है अर्थात तेरे ही हाथ में है। हे भाई, प्रभु के नाम का भण्डार नवनिधियों के समान है। इस संसार में सुन्दर प्रभु के अनेकों ही रंग और तमाशे हैं परन्तु हे मन, तू इन रंगों के मोह में क्यों मस्त हो रहा है। तू अपनी आँखों से गुरु का दर्शन करता रह परन्तु यह दर्शन भी वही पाता है जिसके माथे पर इस दर्शन का लेख लिखा होता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, मैं साधु सन्त पुरुषों के चरणों की सेवा करता हूँ और सबको पवित्र करने वाली उनकी चरणधूलि की कामना करता हूँ। यही अड़सठ तीर्थों के समान मेरी मैल को नष्ट करने वाली है। मैं इसका हर श्वास के साथ सुमिरन करता हूँ और इससे कभी मुख नहीं मोड़ता। यहाँ के लाखों करोड़ों में से कुछ भी साथ नहीं चलता और अन्त में केवल प्रभु का नाम ही हमारी खोज खबर लेकर हमें सम्भालता है ।। १।। एक निरंकार प्रभु के लिए ही अपने मन की इच्छा को सुदृढ़ कर लो तथा सब प्रकार के द्वैतभावों को त्याग दो। हे प्रिय प्रभु, मैं तेरे कितने गुणों का वर्णन करूं क्योंकि मैं तो तेरे एक गुण का भी वर्णन नहीं कर सकता। मेरे मन में तेरे दर्शनों की प्यास बहुत अधिक बनी हुई है और हे जगत के गुरु प्रभु, मुझ नानक को आ मिलो ।। २ ।। १ ।। ३४ ।।

कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी कउन बिधे दरसन परसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस पिआस सफल मूरति उमगि हीउ तरसना ॥ १ ॥ दीन लीन पिआस मीन संतना हरि संतना ॥ हरि संतना की रेन ॥ हीउ अरपि देन ॥ प्रभ भए है किरपेन ॥ मानु मोहु तिआगि छोडिओ तउ नानक हरि जीउ भेटना ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ रंगा रंग रंगन के रंगा ॥ कीट हसत पूरन सभ संगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरत नेम तीरथ सहित गंगा ॥ जलु हेवत भूख अरु नंगा ॥ पूजाचार करत मेलंगा ॥ चक्र करम तिलक खाटंगा ॥ दरसनु भेटे बिनु सतसंगा ॥ १ ॥ हठि निग्रहि अति रहत बिटंगा ॥ हउ रोगु बिआपै चुकै न भंगा ॥ काम क्रोध अति त्रिसन जरंगा ॥ सो मुकतु नानक जिसु सतिगुरु चंगा ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ७   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तिख बूझि गई गई मिलि साध जना ॥ पंच भागे चोर सहजे सुखैनो हरे गुन गावती गावती गावती दरस पिआरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी करी प्रभ मो सिउ मो सिउ ऐसी हउ कैसे करउ ॥ हीउ तुम्हारे बलि बले बलि बले बलि गई ॥ १ ॥ पहिले पै संत पाइ धिआइ धिआइ प्रीति लाइ ॥ प्रभ थानु तेरो केहरो जितु जंतन करि बीचारु ॥ अनिक दास कीरति करहि तुहारी ॥ सोई मिलिओ जो भावतो जन नानक ठाकुर रहिओ समाइ ॥ एक तूही तूही तूही ॥ २ ॥ १ ॥ ३७ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ८   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तिआगीऐ गुमानु मानु पेखता दइआल लाल हां हां मन चरन रेन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि संत मंत गुपाल गिआन धिआन ॥ १ ॥ हिरदै गोबिंद गाइ चरन कमल प्रीति लाइ दीन दइआल मोहना ॥ क्रिपाल दइआ मइआ धारि ॥ नानकु मागै नामु दानु ॥ तजि मोहु भरमु सगल अभिमानु ॥ २ ॥ १ ॥ ३८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ प्रभ कहन मलन दहन लहन गुर मिले आन नही उपाउ

कानड़ा महला ५ ।। ऐसी कौन सी विधि है जिसके माध्यम से प्रभु का दर्शन प्राप्त हो जाए ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, सभी जीवों को मनोवांछित पदार्थ देने वाले प्रभु के दर्शन की प्यास मेरे अन्दर है और उसको मिलने की उमंग में मेरा ह्दय अब तरस रहा है ।। १ ।। यदि विनम्र होकर सन्तजनों के चरणों पर गिर पड़ें और जैसे मछली को पानी की तड़प होती है उसी प्रकार का हम आचरण बनाते हुए सन्त पुरुषों के चरणों की धूलि के लिए अपने ह्दय को अर्पण करदें तो हे भाई, प्रभु कृपालु होता है और हे नानक, जब अन्तर्मन से अहंकार और मोह को त्याग दिया जाता है तभी प्रभु से मिलाप होता है ।। २।। २ ।। ३५ ।। कानड़ा महला ५ ।। वह प्रभु कई प्रकार के रंगों को रंग देने वाला है। और वह कीड़े और हाथी दोनों में ही समान और पूर्ण रूप से साथ बना रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। लोग, व्रत, नियम, गंगा तीर्थ आदि पर अभ्यास करते हैं, भूखे और नंगे रहकर अपने आपको बर्फ में भी गला देते हैं, आसन लगाकर पूजा अर्चना भी करते हैं। तिलक आदि लगाकर षटचक्र भेदन आदि कर्म भी करते हैं परन्तु बिना सत्संगत के ये सभी व्यर्थ ही हैं और प्रभु का दर्शन नहीं करा पाते ।। १ ।। अनेकों हठपूर्वक इन्द्रियों को रोकने के लिए सिर के बल होकर शीर्षासन करते हैं। इस तरह तो अहंकार का रोग और बल पकड़ता है और अन्दर की कमी पूरी नहीं होती। काम, क्रोध और तृष्णा में जीव जलते रहते हैं। हे नानक, इन सब रोगों से वही जीव बचा रहता है जिसे सच्चा गुरु प्राप्त हो जाता है ।। २ ।। ३ ।। ३६ ।।

कानड़ा महला ५ घरु ७ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

साधु-पुरुषों से मिलकर मेरी प्यास बुझ गई है। हे प्रभु, अब स्वाभाविक रूप से ही पाँचों विकार रूपी चोर भाग खड़े हुए हैं और तेरे गुण गाती-गाती ही मेरे ह्दय में तेरे दर्शनों के लिए प्यार बन गया है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तूने जैसी कृपा मुझ पर की है वैसा भला मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूँ। हे प्रभु, मेरा ह्दय तुम्हारे पर बार-बार बलिहारी जाता है ।। १ ।। हे प्रभु, पहले मैंने सन्तजनों के चरणों में पड़कर तेरे नाम का सुमिरन करके तेरे साथ अपनी प्रीति लगाई है। हे प्रभु, तेरा वह स्थान कैसा है जहाँ तू बैठकर इन जीव-जन्तुओं की सम्भाल का विचार करता रहता है। तेरे अनेकों दास तेरी कीर्ति का गायन करते रहते हैं। दास नानक का कथन है कि हे प्रभु, तुझे वही मिल पाता है जो सेवक तुझे अच्छा लगता है। हे प्रभु, तू सबमें समाया हुआ है और एक तू ही और केवल एक तू ही सर्वत्र व्याप्त है ।। २ ।। १ ।। ३७ ।।

कानड़ा महला ५ घरु ८ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मन, अपना अभिमान और अहंकार दूर कर देना चाहिए क्योंकि वह दयालु प्रभु हमारे प्रत्येक कार्य को देख रहा है। हे मन, तू सबकी चरणधूलि बना रह ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, प्रभु के सन्तजनों के उपदेश के ज्ञान में तू ध्यान टिकाए रख ।। १ ।। गोविन्द प्रभु के गुणों का ह्दय से गायन करते हुए दीनों पर दया करने वाले मोहन प्रभु के चरण कमलों में प्रीति लगाए रख। हे कृपालु प्रभु, मुझ पर दया और कृपा कर। मोह, भ्रम और पूरे अभिमान को त्यागकर नानक तुझसे तेरे नाम का दान माँगता है ।। २ ।। १ ।। ३८ ।। कानड़ा महला ५ ।। प्रभु का यश गायन पाप रूपी मल को जला देने वाला है। यह गुरु को मिलकर ही प्राप्त होता है और इसके लिए अन्य कोई उपाय नहीं है।

॥ १ ॥ रहाउ ॥ तटन खटन जटन होमन नाही डंडधार सुआउ ॥ १ ॥ जतन भांतन तपन भ्रमन अनिक कथन कथते नही थाह पाई ठाउ ॥ सोधि सगर सोधना सुखु नानका भजु नाउ ॥ २ ॥ २ ॥ ३९ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ९ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पतित पावनु भगति बछलु भै हरन तारन तरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैन तिपते दरसु पेखि जसु तोखि सुनत करन ॥ १ ॥ प्रान नाथ अनाथ दाते दीन गोबिद सरन ॥ आस पूरन दुख बिनासन गही ओट नानक हरि चरन ॥ २ ॥ १ ॥ ४० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन दइआल ठाकुर आन नाही जाइ ॥ पतित पावन बिरदु सुआमी उधरते हरि धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सैसार गार बिकार सागर पतित मोह मान अंध ॥ बिकल माइआ संगि धंध ॥ करु गहे प्रभ आपि काढहु राखि लेहु गोबिंद राइ ॥ १ ॥ अनाथ नाथ सनाथ संतन कोटि पाप बिनास ॥ मनि दरसनै की पिआस ॥ प्रभ पूरन गुनतास ॥ क्रिपाल दइआल गुपाल नानक हरि रसना गुन गाइ ॥ २ ॥ २ ॥ ४१ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ वारि वारउ अनिक डारउ ॥ सुखु प्रिअ सुहाग पलक रात ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक मंदर पाट सेज सखी मोहि नाहि इन सिउ तात ॥ १ ॥ मुकत लाल अनिक भोग बिनु नाम नानक हात ॥ रूखो भोजनु भूमि सैन सखी प्रिअ संगि सूखि बिहात ॥ २ ॥ ३ ॥ ४२ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ अहं तोरो मुखु जोरो ॥ गुरु गुरु करत मनु लोरो ॥ प्रिअ प्रीति पिआरो मोरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रिहि सेज सुहावी आगनि चैना तोरो री तोरो पंच दूतन सिउ संगु तोरो ॥ १ ॥ आइ न जाइ बसे निज आसनि ऊंध कमल बिगसोरो ॥ छुटकी हउमै सोरो ॥ गाइओ री गाइओ प्रभ नानक गुनी गहेरो ॥ २ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ कानड़ा मः ५ घरु ९ ॥ तां ते जापि मना हरि जापि ॥ जो संत बेद कहत पंथु गाखरो मोह मगन अहं ताप ॥ रहाउ ॥ जो राते माते संगि बपुरी माइआ मोह संताप ॥ १ ॥ नामु जपत सोऊ जनु उधरै जिसहि उधारहु आप ॥ बिनसि जाइ

।। १ ।। तीर्थ स्नान, योग, के षटकर्म, जटाएं धारण करना, होम-यज्ञ आदि करना, योगियों की तरह डंडा लिये घूमना आदि कोई भी अर्थ नहीं रखते ।। १ ।। विभिन्न प्रकार के प्रयत्न, तपस्याएँ, भ्रमण और अनेकों प्रकार की बातें करते हुए कोई भी उस प्रभु की थाह और ठिकाना नहीं पा सका है। सभी अन्य साधनों की भी जाँच पड़ताल करने पर हमने जाना है कि हे नानक, सुख के लिए तो केवल प्रभु के नाम का ही सुमिरन करते रहो ।। २ ।। २ ।। ३९ ।।

कानड़ा महला ५ घरु ६ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु पतित पावन, भक्तवत्सल, भय को दूर करने वाला और स्वयं ही तैरने और पार उतारने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। उसका दर्शन देखकर मेरी आँखें तृप्त हो गई हैं और कान उसके यश को सुनकर सन्तुष्ट हो गए हैं ।। १।। हे प्राणों के नाथ प्रभु, हम अनाथ तुझ दाता की शरण में आए हैं; तू ही आशाओं को पूरा करने वाला और दुखों का नाश करने वाला है इसलिए हे नानक, हमने प्रभु के चरणों का आश्रय ही पकड़ लिया है ।। २ ।। १ ।। ४० ।। कानड़ा महला ५ ।। उस दयालु प्रभु के चरणों की शरण में हम हैं और इस शरण के अतिरिक्त हमारा कोई अन्य ठिकाना नहीं है। उस स्वामी प्रभु का स्वभाव पतितों को पवित्र करना है और उसका सुमिरन करते हुए जीवों का उद्धार हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। यह संसार विकारों के कीचड़ का सागर है। जीव माया के व्याकुल करने वाले धन्धों के कारण मोह और अभिमान में अन्धा होकर इसमें गिरा हुआ है। हे प्रभु, हाथ पकड़कर हमें स्वयं निकाल ले और हे धरती के सम्राट प्रभु, हमारी रक्षा करो ।। १ ।। अनाथों के नाथ, सन्तजनों के स्वामी, तुम करोड़ों पापों का विनाश कर देते हो। मेरे मन में तेरे दर्शनों की प्यास है क्योंकि हे प्रभु, पूर्ण गुणों का भण्डार तू ही है। हे कृपालु, दयालु और संसार के पालनहार प्रभु, नानक तो अपनी जीभ से प्रभु के ही गुण गाता है। ।। २ ।। २ ।। ४१ ।। कानड़ा महला ५ ।। इस जीवन रूपी रात्रि में उस प्रियतम प्रभु के एक क्षण भर के सुहाग सुख पर मैं अनेक सुखों को कुर्बान कर दूं ।। १ ।। रहाउ ।। सोना, मकान, वस्त्र, रेशम के वस्त्र और हे सखी, सेज आदि से मुझे कोई भी प्रेम और प्रयोजन नहीं है ।। १ ।। हे नानक, प्रभु-नाम के बिना सभी नाशवान हैं। रूखा-सूखा भोजन और धरती पर सोना, पति प्रभु की संगत में यह सभी कुछ सुखदायक ही है ।। २ ।। ३ ।। ४२ ।। कानड़ा महला ५ ।। हे जीव, अपने अहंकार को नष्ट करके अपने मुख को परमात्मा की ओर कर लो तथा यह जान लो कि गुरु-गुरु करते रहना ही मन की आवश्यकता है अर्थात प्रभु-गुरु का सुमिरन करते ही रहना है। इस प्रकार मेरे उस प्रियतम प्यारे से प्रीति बनी रहती है ।। १ ।। रहाउ ।। हे सखी, पाँचों विकारों की संगत को प्रयत्न पूर्वक छोड़ दो क्योंकि इसी से तुम्हारा हृदय रूपी घर उसकी सुहावनी सेज बन जाएगी और आना जाना ना होकर तुम अपने मूल स्वरूप में निवास बना लोगे और तुम्हारा हृदय रूपी औंधा कमल (सहस्रार) खिल उठेगा। तुम्हारे अहंकार की चीख-पुकार छूट जाएगी। हे नानक, हमने तो उस भारी और गहरे गुणों वाले प्रभु का ही गुणानुवाद किया है ।। २ ।। ४ ।। ४३ ।। कानड़ा महला ५ घरु ६ ।। हे मन, तू मोह और अहंकार में मस्त है परन्तु तेरा रास्ता बड़ा कठिन है। यह तथ्य सन्तपुरुष और वेद आदि ज्ञान के ग्रन्थ बताते हैं इसलिए इस मोह को छोड़कर तू प्रभु-नाम का सुमिरन कर ।। रहाउ ।। जो बेचारी माया मे ही लीन बने रहते हैं उनको इसके मोह का दुख बना ही रहता है ।। १ ।। प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए भी उसी सेवक का उद्धार होता है जिसका प्रभु स्वयं उद्धार करता है। हे नानक, शान्त पुरुषों की संगत के प्रताप से

मोह भै भरमा नानक संत प्रताप ॥ २ ॥ ५ ॥ ४४ ॥

कानड़ा महला ५ घरु १० ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो दानु देहु जी संतहु जात जीउ बलिहारि ॥ मान मोही पंच दोही उरझि निकटि बसिओ ताकी सरनि साधूआ दूत संगु निवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम जोनि भ्रमिओ हारि परिओ दुआरि ॥ १ ॥ किरपा गोबिंद भई मिलिओ नामु अधारु ॥ दुलभ जनमु सफलु नानक भव उतारि पारि ॥ २ ॥ १ ॥ ४५ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ११ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

सहज सुभाए आपन आए ॥ कछू न जानौ कछू दिखाए ॥ प्रभु मिलिओ सुख बाले भोले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संजोगि मिलाए साध संगाए ॥ कतहू न जाए घरहि बसाए ॥ गुन निधानु प्रगटिओ इह चोलै ॥ १ ॥ चरन लुभाए आन तजाए ॥ थान थनाए सरब समाए ॥ रसकि रसकि नानकु गुन बोलै ॥ २ ॥ १ ॥ ४६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ गोबिंद ठाकुर मिलन दुराईं ॥ परमिति रूपु अगंम अगोचर रहिओ सरब समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहनि भवनि नाही पाइओ पाइओ अनिक उकति चतुराई ॥ १ ॥ जतन जतन अनिक उपाव रे तउ मिलिओ जउ किरपाई ॥ प्रभू दइआर क्रिपार क्रिपा निधि जन नानक संत रेनाई ॥ २ ॥ २ ॥ ४७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ माई सिमरत राम राम राम ॥ प्रभ बिना नाही होरु ॥ चितवउ चरनारबिंद सासन निसि भोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाइ प्रीति कीन आपन तूटत नही जोरु ॥ प्रान मनु धनु सरबसो हरि गुन निधे सुख मोर ॥ १ ॥ ईत ऊत राम पूरनु निरखत रिद खोरि ॥ संत सरन तरन नानक बिनसिओ दुखु घोर ॥ २ ॥ ३ ॥ ४८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ जन को प्रभु संगे असनेहु ॥ साजनो तू मीतु मेरा ग्रिहि तेरै सभु केहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु मांगउ तानु मांगउ धनु लखमी सुत देह ॥ १ ॥ मुकति जुगति भुगति पूरन परमानंद परम निधान ॥

मोह, भय और भ्रम नष्ट हो जाते हैं ।। २ ।। ५ ।। ४४ ।।

कानड़ा महला ५ घरु १० १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे सन्तजनों, मुझे ऐसा दान दो जिस पर से मेरे प्राण बलिहारी जाते हैं। अपने अभिमान में लीन हो रही और पाँचों विकारों की ठगी हुई उनमें फँसकर मैं उन्हीं के पास बसी हुई थी परन्तु अब मैंने इन पाँच विकारों की संगत से बचने के लिए साधु-पुरुषों की शरण ढूंढ़ ली है ।। १ ।। रहाउ ।। मेरा यह जीव करोड़ों जन्मों तक योनियों में भटकता रहा और अब थक हारकर प्रभु के द्वार पर आन पड़ा है ।। १ ।। उस प्रभु की कृपा हुई और मुझे उसके नाम का आधार (आसरा) प्राप्त हो गया है। हे नानक, यह दुर्लभ जीवन सफल हो गया है और प्रभु-नाम ने भवसागर से पार उतार लिया है ।। २ ।। १ ।। ४५ ।।

कानड़ा महला ५ घरु ११ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मुझे नहीं पता कि वह प्रभु स्वयं ही सहज स्वाभाविक रूप में ही कैसे आ मिला है क्योंकि मैं ना तो कुछ जानता हूँ और ना ही उसे मैंने कुछ करके दिखाया है। प्रभु के मिलने से मुझे स्वाभाविक सरल रूप में ही सुख प्राप्त हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। भाग्य के लेखों के कारण ही मेरा साधसंगत से मिलाप हो गया है और अब मेरा मन कहीं ना भटक कर अपने मूल स्वरूप में ही स्थित हो गया है। गुणों का भण्डार वह प्रभु इस शरीर में ही प्रकट हो गया है ।। १ ।। उसके चरणों के लोभ में मैंने अन्य सबको त्याग दिया और यह जान लिया है कि सभी स्थानों में वह प्रभु ही समाया हुआ है। अब तो नानक पूर्ण रस लेता हुआ उस प्रभु का गुणानुवाद करता है ।। २ ।। १ ।। ४६ ।। कानड़ा महला ५ ।। उस मालिक प्रभु से मिलना अत्यन्त कठिन है। वह प्रभु किसी भी अनुमान से परे रहने वाला अगम्य एवं अगोचर सौंदर्य वाला है और सबमें समाया हुआ है ।। १ ।। रहाउ ।। उसका कथन करने से, तीर्थों पर भ्रमण करने से और अनेक प्रकार की युक्तियों और चतुराईयों से भी उसे नहीं पाया जाता ।। १ ।। व्यक्ति अनेकों प्रकार के यत्न और उपाय करते हैं परन्तु जब उसकी कृपा होती है वह तभी मिलता है। प्रभु दयालु, कृपालु और कृपा का भण्डार है तथा दास नानक सन्तजनों की मात्र चरण-धूलि ही है ।। २ ।। २ ।। ४७ ।। कानड़ा महला ५ ।। हे माँ, मैं तो केवल बार-बार प्रभु का ही सुमिरन करता हूँ क्योंकि प्रभु के बिना मेरा अन्य कोई नहीं है। मैं उसके चरण कमलों का हर श्वास के साथ दिन रात सुमिरन करता रहता हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु ने अपनी प्रीति लगाकर हमें अपना बना लिया है और अब ज़ोर लगाने से भी यह प्रेम का बन्धन टूटता नहीं। मेरा प्राण, मन, धन अर्थात सर्वस्व वह मुझे सुख देने वाला गुणों का भण्डार प्रभु ही है ।। १ ।। यहाँ वहाँ वह पूर्ण प्रभु ही व्याप्त है और वह हमारे हृदय की गुफा में भी झांकता रहता है। हे नानक, पार उतार देने वाली सन्त पुरुषों की शरण मे आने से हमारा घोर दुख समाप्त हो गया है ।।२ ।।३ ।।४८ ।।कानड़ा महला ५ ।। प्रभु के सेवकों का तो प्रभु के साथ ही प्रेम बना हरता है। हे प्रियतम प्रभु, तू मेरा मित्र है और तेरे घर में सब कुछ ही है ।। १ ।। रहाउ ।। मैं मान, सम्मान, बल, धन, लक्ष्मी, पुत्र और इस शरीर के लिए सब कुछ वांछित पदार्थ तुझी से माँगता हूँ ।। १ ।। वह प्रभु ही पूर्ण रूप से मुक्ति देने वाला, जीवन ढ़ंग सिखाने वाला और भूख को पूरी तरह मिटाने वाला परम भण्डार और परम आनन्द देने वाला है।

भै भाइ भगति निहाल नानक सदा सदा कुरबान ॥ २ ॥ ४ ॥ ४९ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ करत करत चरच चरच चरचरी ॥ जोग धिआन भेख गिआन फिरत फिरत धरत धरत धरचरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहं अहं अहै अवर मूड़ मूड़ मूड़ बवरई ॥ जति जात जात जात सदा सदा सदा सदा काल ईह ॥ १ ॥ मानु मानु मानु तिआगि मिरतु मिरतु निकटि निकटि सदा हई ॥ हरि हरे हरे भाजु कहतु नानकु सुनहु रे मूड़ बिनु भजन भजन भजन अहिला जनमु गई ॥ २ ॥ ५ ॥ ५० ॥ १२ ॥ ६२ ॥

कानड़ा असटपदीआ महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन राम नामु सुखु पावैगो ॥ जिउ जिउ जपै तिवै सुखु पावै सतिगुरु सेवि समावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जनां की खिनु खिनु लोचा नामु जपत सुखु पावैगो ॥ अन रस साद गए सभ नीकरि बिनु नावै किछु न सुखावैगो ॥ १ ॥ गुरमति हरि हरि मीठा लागा गुरु मीठे बचन कढावैगो ॥ सतिगुर बाणी पुरखु पुरखोतम बाणी सिउ चितु लावैगो ॥ २ ॥ गुरबाणी सुनत मेरा मनु द्रविआ मनु भीना निज घरि आवैगो ॥ तह अनहत धुनी बाजहि नित बाजे नीझर धार चुआवैगो ॥ ३ ॥ राम नामु इकु तिल तिल गावै मनु गुरमति नामि समावैगो ॥ नामु सुणै नामो मनि भावै नामे ही त्रिपतावैगो ॥ ४ ॥ कनिक कनिक पहिरे बहु कंगना कापरु भांति बनावैगो ॥ नाम बिना सभि फीक फिकाने जनमि मरै फिरि आवैगो ॥ ५ ॥ माइआ पटल पटल है भारी घरु घूमनि घेरि घुलावैगो ॥ पाप बिकार मनूर सभि भारे बिखु दुतरु तरिओ न जावैगो ॥ ६ ॥ भउ बैरागु भइआ है बोहिथु गुरु खेवटु सबदि तरावैगो ॥ राम नामु हरि भेटीऐ हरि रामै नामि समावैगो ॥ ७ ॥ अगिआनि लाइ सवालिआ गुर गिआनै लाइ जगावैगो ॥ नानक भाणै आपणै जिउ भावै तिवै चलावैगो ॥ ८ ॥ १ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु तरावैगो ॥ जो जो जपै सोई गति पावै जिउ ध्रू प्रहिलादु समावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥

हे नानक, तू अनुशासन, प्रेम और भक्ति से निहाल बना रह और सदैव उस पर कुर्बान होता रह ।। २ ।। ४ ।। ४६।। कानड़ा महला ५ ।। योगी, ज्ञानवान, ध्यानी और वेशों को धारण करने वाले धरती पर घूमते-घूमते भटकते भटकते केवल प्रभु की चर्चा ही चर्चा करते घूम रहे हैं ।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों अहंकारी बने घूमते हैं और अनेकों बावले होकर मूर्ख बने हुए हैं। वे जहाँ-जहां भी जाते हैं काल सदैव उन्हें मारता ही रहता है ।। १ ।। हे जीव, तू अपने मान, अभिमान सबको त्यागकर यह जान ले कि मृत्यु सदैव निकट ही बनी रहती है (इसलिए किसी क्षण को भी व्यर्थ ना गँवा)। नानक कहता है कि हे मूर्ख, तू सुन ले कि प्रभु के भजन के बिना जीवन निष्फल होता जा रहा है इसलिए तू प्रभु का ही सुमिरन बार-बार करता रह ।। २ ।। ५ ।। ५० ।। १२ ।। ६२ ।।

कानड़ा अष्टपदियां महला ४ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मन, तू प्रभु के नाम का जाप कर इसे तुझे सुख प्राप्त होगा। तू जैसे-जैसे सुमिरन करेगा तुझे आनन्द मिलता जाएगा और सच्चे गुरु का सुमिरन करते हुए तू उसी में लीन हो जाएगा ।। १ ।। रहाउ ।। भक्तजनों की तो हर क्षण यही इच्छा बनी रहती है कि नाम के सुमिरन से ही सुख प्राप्त होगा। भक्तजनों के अन्तर्मन से अन्य सभी प्रकार के स्वाद निकल जाते हैं और प्रभु-नाम के बिना उन्हें कुछ भी सुखदायक नहीं लगता ।। १ ।। गुरु की शिक्षा के माध्यम से प्रभु मन को मीठा लगने लगा है और इसलिए गुरु अन्दर से मीठे वचन ही बुलवाता है। सच्चे गुरु की वाणी ही सर्वव्यापक पुरुषोत्तम प्रभु है और तेरा उस वाणी के साथ ही चित्त लगा रहेगा ।। २ ।। गुरु की वाणी को सुनकर मेरा द्रवित होकर भीगा हुआ मन अब अपने मूल घर प्रभु के समक्ष आ जाएगा। वहाँ अनहद धुन एक रस में सदैव बजती रहती है और एक रस अमृत की धारा बहती रहती है ।। ३ ।। एक क्षण भर के लिए भी राम नाम का गायन करने से यह मन गुरु की शिक्षा के अनुरूप चलकर प्रभु नाम में लीन हो जाता है। फिर वह प्रभु-नाम को ही सुनता है, प्रभु-नाम ही उसे अच्छा लगता है और प्रभु-नाम ही उसे तृप्ति प्रदान करता है ।। ४ ।। व्यक्ति सोने के आभूषण और कंगन तथा अनेकों प्रकार के वस्त्र बनाता और पहनता है परन्तु प्रभु-नाम के बिना ये सभी फीके ही रहते हैं और व्यक्ति जन्म मरण में आता जाता रहता है ।। ५ ।। माया का पर्दा बहुत मोटा और भारी है और यह जीव को भँवरों में ही डालकर नष्ट करता रहता है। पापों वाले विकारों ने जीव को निकम्मे लोहे की तरह भारी कर दिया है और इससे अब यह विषय-विकारों वाला संसार सागर तैरा नहीं जा सकता ।। ६ ।। प्रभु के भय को तथा वैराग्य भाव को जहाज बनाकर और गुरु को खेवट बनाते हुए शब्द के माध्यम से इस संसार को तैरा जाता है। यदि प्रभु-नाम की भेंट लेकर प्रभु को मिला जाए तो फिर प्रभु-नाम मे ही लीन हो जाया जाता है ।। ७ ।। जीव को अज्ञान में लगाकर उसे सुला दिया गया है परन्तु गुरु ही ज्ञान उसे देकर उसको जगाता है। हे नानक, वह प्रभु अपनी ही रज़ा में रहता है और जैसे चाहता है इस जीव को चलाता रहता है ।। ८ ।। १ ।। कानड़ा महला ४ ।। हे मन, प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि प्रभु का नाम ही पार उतारने वाला है। जिस प्रकार ध्रुव और प्रहलाद प्रभु में लीन हो गए उसी प्रकार जो जो भी प्रभु का जाप करता है वही परम पद को प्राप्त कर लेता है ।। १ ।। रहाउ ।।

क्रिपा क्रिपा क्रिपा करि हरि जीउ करि किरपा नामि लगावैगो ॥ करि किरपा सतिगुरू मिलावहु मिलि सतिगुर नामु धिआवैगो ॥ १ ॥ जनम जनम की हउमै मलु लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो ॥ जिउ लोहा तरिओ संगि कासट लगि सबदि गुरू हरि पावैगो ॥ २ ॥ संगति संत मिलहु सतसंगति मिलि संगति हरि रसु आवैगो ॥ बिनु संगति करम करै अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावैगो ॥ ३ ॥ भगत जना के हरि रखवारे जन हरि रसु मीठ लगावैगो ॥ खिनु खिनु नामु देइ वडिआई सतिगुर उपदेसि समावैगो ॥ ४ ॥ भगत जना कउ सदा निवि रहीऐ जन निवहि ता फल गुन पावैगो ॥ जो निंदा दुसट करहि भगता की हरनाखस जिउ पचि जावैगो ॥ ५ ॥ ब्रहम कमल पुतु मीन बिआसा तपु तापन पूज करावैगो ॥ जो जो भगतु होइ सो पूजहु भरमन भरमु चुकावैगो ॥ ६ ॥ जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगीं लगि धिआवैगो ॥ जूठन जूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न डुलावैगो ॥ ७ ॥ जनक जनक बैठे सिंघासनि नउ मुनी धूरि लै लावैगो ॥ नानक क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मै दासनि दास करावैगो ॥ ८ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु गुरमति रसि गुन गावैगो ॥ जिहवा एक होइ लख कोटी लख कोटी कोटि धिआवैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस फनी जपिओ सेखनागै हरि जपतिआ अंतु न पावैगो ॥ तू अथाहु अति अगमु अगमु है मति गुरमति मनु ठहरावैगो ॥ १ ॥ जिन तू जपिओ तेई जन नीके हरि जपतिअहु कउ सुखु पावैगो ॥ बिदर दासी सुतु छोक छोहरा क्रिसनु अंकि गलि लावैगो ॥ २ ॥ जल ते ओपति भई है कासट कासट अंगि तरावैगो ॥ राम जना हरि आपि सवारे अपना बिरदु रखावैगो ॥ ३ ॥ हम पाथर लोह लोह बड पाथर गुर संगति नाव तरावैगो ॥ जिउ सतसंगति तरिओ जुलाहो संत जना मनि भावैगो ॥ ४ ॥ खरे खरोए बैठत ऊठत मारगि पंथि धिआवैगो ॥ सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो ॥ ५ ॥ सासनि सासि सासि बलु पाई है निहसासनि नामु धिआवैगो ॥ गुर परसादी हउमै बूझै तौ गुरमति नामि

हे प्रभु, कृपा करो क्योंकि तुम कृपा करके ही अपने नाम में हमारी सुरति लगाते हो। कृपा करके हमें सच्चा गुरु मिला दो क्योंकि सच्चे गुरु से ही मिलकर मैं प्रभु-नाम का सुमिरन करता रहूंगा ।। १ ।। जन्मों जन्मान्तरों से मुझे अहंकार की मैल लगी हुई है परन्तु अब संगत से मिलकर मेरा मल उतर जाएगा। जैसे लकड़ी के साथ लोहा पार उतर जाता है उसी प्रकार शब्द-गुरु में लीन होकर हम प्रभु को प्राप्त करते हैं ।। २ ।। सन्त-पुरुषों की संगत तथा सत्संगति में मिलकर बैठो क्योंकि संगत में मिलने से प्रभु-नाम का रस आएगा। जो बिना संगत के अभिमानी बनकर अकेला ही कर्म करता जाता है वह वास्तव में अपने शुभ गुणों रूपी पानी में अभिमान पूर्ण कर्मों का कीचड़ डालता जाता है ।। ३ ।। प्रभु भक्तजनों के रक्षक हैं और उसके सेवकों को हरिरस ही मीठा लगता है। वह अपना नाम प्रदान करके हर क्षण जीव को बड़प्पन देता रहता है और जीव सच्चे गुरु के उपदेश के माध्यम से उसमें लीन हो जाता है ।। ४ ।। भक्तजनों के सामने सदैव विनम्र ही बने रहना चाहिए क्योंकि जो सेवक विनम्र होता है वही अच्छे गुणों का फल प्राप्त करता है। जो दुष्ट भक्तजनों की निन्दा करता है वह हिरण्यकश्यपु की तरह नष्ट हो जाता है ।। ५ ।। नाभिकमल से निकले ब्रह्मा कमल पुत्र के रूप में और मत्स्य कुल के मछोदरी के पुत्र व्यास ने तपस्या करके ही अपनी पूजा कराई। जो-जो भी भक्त हो चुके हैं उनको प्रणाम करो क्योंकि वे इधर-उधर भटकने का भ्रम चुका देते हैं ।। ६ ।। अच्छी जाति और तथाकथित नीच जाति को देखकर भ्रम में मत पड़ो। लोगों ने विदेह होने के कारण जनक के भी चरणों में प्रणाम किया है और समान भाव में बने रहने वाले शुकदेव के चरणों में भी लगकर प्रभु का सुमिरन किया है। जनक ने यज्ञ के समय शुकदेव को द्वार पर ही प्रतीक्षा में खड़ा रहने को कहा और इतना ही नहीं अन्दर से उसके सिर पर जूठन भी फेंकी गई परन्तु वह अडिग बना रहा और क्षण भर के लिए भी उसका मन विचलित नहीं हुआ ।। ७ ।। सिंहासन पर राजा बनकर बैठे हुए जनक ने नौ मुनियों मरीचि, पुलस्त्य, भृगु, वसिष्ठ आदि की चरणधूलि को अपने माथे पर लगाया है। हे ठाकुर प्रभु, तू नानक पर कृपा कर और मुझे तेरे दासों का भी दास बना दे ।। ८ ।। २ ।। कानड़ा महला ४ ।। यह मन गुरु की शिक्षा का रस लेकर ही प्रभु के गुण गाता है। एक जीभ से यदि वह लाखों करोड़ों भी हो जाएं तो करोड़ों बार उस प्रभु का ही सुमिरन किया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। शेषनाग ने अपने हजारों फनों के साथ उसका सुमिरन किया परन्तु उसका सुमिरन करके भी उसका रहस्य नहीं जाना जा सका। हे प्रभु, तू अथाह और अत्यन्त अगम्य है। हमारा मन तो गुरु की शिक्षापूर्ण मति को लेकर ही स्थिर होता है ।। १ ।। जिसने तेरा सुमिरन किया है वे सेवक ही उत्तम और भले हैं और वे ही प्रभु का सुमिरन करते हुए सुख प्राप्त करते रहते हैं। दासी पुत्र अछूत विदुर को कृष्ण ही अपने गले से लगाते हैं ।। २ ।। लकड़ी जल से ही उत्पन्न हुई है और जल में ही रहकर वह उस पर तैरती रहती है। इसी प्रकार प्रभु के सेवक प्रभु के द्वारा ही सफल बनाए जाते हैं और प्रभु अपने स्वभाव की स्वयं ही लाज रखते हैं ।। ३ ।। हम पत्थर बहुत बड़े लोहे जैसे और वास्तव में भारी पत्थर है, परन्तु गुरु की संगत रूपी नाव में हम पार हो जाएंगे। जिस प्रकार जुलाहा कबीर सत्संगत में बैठ कर पार उतर गया उसी प्रकार हम भी अपने अच्छे कर्म करके सन्तजनों को अच्छे लगने लग जाएंगे ।। ४ ।। खड़े हुए, बैठकर, उठकर, मार्ग में चलते हुए भी हम प्रभु का सुमिरन करते रहेंगे। सच्चा गुरु ही उपदेश है और उसकी वाणी ही वास्तव में सच्चा गुरु है जो हमें मुक्ति का मार्ग बताते हैं।। ५ ।। सच्चे गुरु के अनुशासन के अन्तर्गत प्रत्येक श्वास के साथ नाम सुमिरन करके बल प्राप्त किया जाता है और अब हम निर्भय होकर प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं। गुरु की कृपा से यदि हमारा अहंकार समाप्त हो जाए तो गुरु की शिक्षा में चलते हुए हम प्रभु-नाम

समावैगो ॥ ६ ॥ सतिगुरु दाता जीअ जीअन को भागहीन नही भावैगो ॥ फिरि एह वेला हाथि न आवै परतापै पछुतावैगो ॥ ७ ॥ जे को भला लोड़े भल अपना गुर आगै ढहि ढहि पावैगो ॥ नानक दइआ दइआ करि ठाकुर मै सतिगुर भसम लगावैगो ॥ ८ ॥ ३ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु हरि रंगि राता गावैगो ॥ भै भै त्रास भए है निरमल गुरमति लागि लगावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रंगि राता सद बैरागी हरि निकटि तिना घरि आवैगो ॥ तिन की पंक मिलै तां जीवा करि किरपा आपि दिवावैगो ॥ १ ॥ दुबिधा लोभि लगे है प्राणी मनि कोरै रंगु न आवैगो ॥ फिरि उलटिओ जनमु होवै गुर बचनी गुरु पुरखु मिलै रंगु लावैगो ॥ २ ॥ इंद्री दसे दसे फुनि धावत त्रै गुणीआ खिनु न टिकावैगो ॥ सतिगुर परचै वसगति आवै मोख मुकति सो पावैगो ॥ ३ ॥ ओअंकारि एको रवि रहिआ सभु एकस माहि समावैगो ॥ एको रूपु एको बहु रंगी सभु एकतु बचनि चलावैगो ॥ ४ ॥ गुरमुखि एको एकु पछाता गुरमुखि होइ लखावैगो ॥ गुरमुखि जाइ मिलै निज महली अनहद सबदु बजावैगो ॥ ५ ॥ जीअ जंत सभ सिसटि उपाई गुरमुखि सोभा पावैगो ॥ बिनु गुर भेटे को महलु न पावै आइ जाइ दुखु पावैगो ॥ ६ ॥ अनेक जनम विछुड़े मेरे प्रीतम करि किरपा गुरू मिलावैगो ॥ सतिगुर मिलत महा सुखु पाइआ मति मलीन बिगसावैगो ॥ ७ ॥ हरि हरि क्रिपा करहु जगजीवन मै सरधा नामि लगावैगो ॥ नानक गुरू गुरू है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि मिलावैगो ॥ ८ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मन गुरमति चाल चलावैगो ॥ जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि कुंडे गुर अंकसु सबदु द्रिड़ावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चलतौ चलै चलै दह दह दिसि गुरु राखै हरि लिव लावैगो ॥ सतिगुरु सबदु देइ रिद अंतरि मुखि अंम्रितु नामु चुआवैगो ॥ १ ॥ बिसीअर बिसू भरे है पूरन गुरु गरुड़ सबदु मुखि पावैगो ॥ माइआ भुइअंग तिसु नेड़ि न आवै बिखु झारि झारि लिव लावैगो ॥ २ ॥ सुआनु लोभु नगर महि सबला गुरु खिन महि मारि कढावैगो ॥ सतु संतोखु धरमु आनि राखे

में ही लीन हो जाएंगे ।। ६ ।। सभी जीवों का दाता वह सच्चा गुरु है परन्तु भाग्यहीनों को वह अच्छा नहीं लगता। मानव जीवन का यह अवसर फिर हाथ नहीं आता और यह जीव संतप्त होता हुआ पछताता रहता है ।। ७ ।। यदि कोई अपनी भलाई चाहता है तो वह गुरु के सामने गिरकर ही उस भलाई को प्राप्त कर पाएगा। हे प्रभु, नानक पर दया करो क्योंकि मैं तो सच्चे गुरु को भस्म की तरह तन मन में धारण कर लूंगा ।। ८ ।। ३ ।। कानड़ा महला ४ ।। प्रभु के रंग में रंगा हुआ मन ही उसका गुणानुवाद करता है। गुरु के भय में रहकर अब हम निर्मल हो गए हैं और अब हमें गुरु की मति का जामन (स्पर्श) प्राप्त हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के रंग में रंगा हुआ व्यक्ति सदैव ही वैराग्यवान कहा जाता है और पास ही बसा हुआ प्रभु उसके हृदय में स्थित हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों की चरणधूलि मिले तो मैं जीवित बना रहता हूं और कृपा करके वह प्रभु यह स्वयं ही दिलाता है ।। १ ।। दुविधा और लोभ में लगे हुए प्राणी के कठोर और कोरे मन पर प्रभु का रंग नहीं चढ़ सकेगा परन्तु जब गुरु ने उपदेश के माध्यम से वह अपने जीवन ढ़ंग को उलटा कर अच्छा बना लेगा तो बलशाली सर्वत्र व्याप्त गुरु को मिलकर ही उस पर प्रभु प्रेम का रंग चढ़ेगा ।। २ ।। दसों इन्द्रियाँ दसों दिशाओं में बार-बार दौड़ती रहती हैं और तीनों गुणों से प्रभावित होकर मन एक क्षण भर के लिए भी स्थिर नहीं होता। सच्चे गुरु के प्रसन्न होने के साथ ये सभी वश में आ जाते हैं और ऐसा व्यक्ति फिर पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर लेता है ।। ३ ।। ओअंकार रूप में वह एक प्रभु ही सब ओर बसा हुआ है और सभी उस एक में ही लीन हो जाएँगे। वह एक रूप वाला ही अनेकों रूपों और रंगों में व्याप्त है और अपनी इस अनेकता में एकता को वह अपने हुकुम के अन्तर्गत ही कार्यशील कर रहा है ।। ४ ।। गुरमुख व्यक्ति ही इस अनेकता में एकता की पहचान करते हैं और केवल गुरमुख होकर ही इस रहस्य को जाना जाता है। गुरमुख व्यक्ति ही अपने वास्तविक ठिकाने अर्थात प्रभु के समक्ष होकर उसे जा मिलता है और उसके हृदय में ही अनहद शब्द बजने लग जाता है ।। ५ ।। जीव जन्तुओं की यह सारी सृष्टि तो परमात्मा ने उत्पन्न की है परन्तु गुरमुख बनकर ही यहाँ शोभा और सम्मान प्राप्त किया जाता है। गुरु से भेंट किए बिना कोई भी प्रभु का ठिकाना नहीं पा सकता और आवागमन में पड़ा हुआ वह दुख ही प्राप्त करता रहेगा ।। ६ ।। हे मेरे प्रीतम, हम अनेकों जन्मों से तुमसे बिछुड़े हुए हैं, अब गुरु ही कृपा करके हमें तुझसे मिलाएगा। सच्चे गुरु के मिलाप से महान सुख प्राप्त होता है और हमारी मलीन मति भी सुन्दर होकर खिल उठती है। हे संसार के प्राण प्रभु, मुझ पर कृपा करो और मुझे श्रद्धापूर्ण बनाकर नाम में लीन कर लो। हे नानक, वास्तविक गुरु तो वह सच्चा गुरु प्रभु ही है और मैं सच्चे गुरु की शरण में पड़कर ही उसमें लीन बना रहूंगा ।। ८ ।। ४ ।। कानड़ा महला ४ ।। हे मन, तू गुरु की मति के अनुरूप चाल बनाकर इस संसार में चलता रह। जिस प्रकार मस्त हाथी को अंकुश के नीचे रखा जाता है इसी प्रकार गुरु, शब्द के अंकुश से बार-बार मन को सावधान बनाए रखता है ।। १ ।। रहाउ ।। यह मन दसों दिशाओं में चलता और भटकता रहता है परन्तु गुरु ही इसे रोककर इसकी लौ प्रभु में लगाता है। सच्चा गुरु ही शब्द को हृदय में धारण कराता है और मुख में अमृत नाम की धारा का प्रवेश कराता है ।। १ ।। वासनाओं के अनेकों सर्प पूरी तरह से विष से भरे हुए इसमें बने रहते हैं परन्तु गुरु शब्द रूपी गारुड़ी मन्त्र इसके मुख में देकर उसको दृढ़ बनाए रखता है। माया का सर्प उसके पास नहीं आता जो वासनाओं के विष को दूर कर अपनी लौ प्रभु में लगाए रहता है ।। २ ।। इस शरीर रूपी नगर में लोभ रूपी कुत्ता बहुत बलवान है परन्तु गुरु इसे क्षण भर में मारकर भगा देता है। इस प्रभु की नगरी में सत्य, सन्तोष, धर्म आदि को टिकाया गया है

हरि नगरी हरि गुन गावैगो ॥ ३ ॥ पंकज मोह निघरतु है प्रानी गुरु निघरत काढि कढावैगो ॥ त्राहि त्राहि सरनि जन आए गुरु हाथी दे निकलावैगो ॥ ४ ॥ सुपनंतरु संसारु सभु बाजी सभु बाजी खेलु खिलावैगो ॥ लाहा नामु गुरमति लै चालहु हरि दरगह पैधा जावैगो ॥ ५ ॥ हउमै करै करावै हउमै पाप कोइले आनि जमावैगो ॥ आइआ कालु दुखदाई होए जो बीजे सो खवलावैगो ॥ ६ ॥ संतहु राम नामु धनु संचहु लै खरचु चले पति पावैगो ॥ खाइ खरचि देवहि बहुतेरा हरि देदे तोटि न आवैगो ॥ ७ ॥ राम नाम धनु है रिद अंतरि धनु गुर सरणाई पावैगो ॥ नानक दइआ दइआ करि दीनी दुखु दालदु भंजि समावैगो ॥ ८ ॥ ५ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु सतिगुर सरनि धिआवैगो ॥ लोहा हिरनु होवै संगि पारस गुनु पारस को होइ आवैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु महा पुरखु है पारसु जो लागै सो फलु पावैगो ॥ जिउ गुर उपदेसि तरे प्रहिलादा गुरु सेवक पैज रखावैगो ॥ १ ॥ सतिगुर बचनु बचनु है नीको गुर बचनी अंम्रितु पावैगो ॥ जिउ अंबरीकि अमरा पद पाए सतिगुर मुख बचन धिआवैगो ॥ २ ॥ सतिगुर सरनि सरनि मनि भाई सुधा सुधा करि धिआवैगो ॥ दइआल दीन भए है सतिगुर हरि मारगु पंथु दिखावैगो ॥ ३ ॥ सतिगुर सरनि पए से थापे तिन राखन कउ प्रभु आवैगो ॥ जे को सरु संधे जन ऊपरि फिरि उलटो तिसै लगावैगो ॥ ४ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि सरु सेवहि तिन दरगह मानु दिवावैगो ॥ गुरमति गुरमति गुरमति धिआवहि हरि गलि मिलि मेलि मिलावैगो ॥ ५ ॥ गुरमुखि नादु बेदु है गुरमुखि गुर परचै नामु धिआवैगो ॥ हरि हरि रूपु हरि रूपो होवै हरि जन कउ पूज करावैगो ॥ ६ ॥ साकत नर सतिगुरु नही कीआ ते बेमुख हरि भरमावैगो ॥ लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु माइआ करंगि लगावैगो ॥ ७ ॥ राम नामु सभ जग का तारकु लगि संगति नामु धिआवैगो ॥ नानक राखु राखु प्रभ मेरे सतसंगति राखि समावैगो ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

और प्रभु की नगरी में इनके माध्यम से जीव प्रभु के गुण गाता रहता है ।। ३ ।। मोह के कीचड़ में प्राणी का पतन होता रहता है परन्तु उस गिरते हुए जीव को गुरु उठाकर बाहर निकाल लेता है। त्राहिमाम-त्राहिमाम करते हुए प्रभु के सेवक प्रभु की शरण में जाते हैं और गुरु अपना हाथ देकर उन्हें बचा लेता है ।। ४ ।। यह सारा संसार सपने का खेल है और वह प्रभु ही यह खेल खेलाता रहता है। गुरु की शिक्षा के माध्यम से प्रभु-नाम का लाभ हे प्राणी, तुम प्राप्त कर लो और प्रभु के दरबार में सम्मानपूर्वक तुम पहुँच जाओगे ।। ५ ।। अहंकार ही सब कुछ व्यक्ति से करता करवाता है और पापों के रूप में ईंधन इकट्ठा करता रहता है। जब अंतिम समय दुखदाई बनकर आ जाता है तो जीव ने जो बोया है परमात्मा उसे वही खिलाता है ।। ६ ।। हे सन्तजनों, प्रभु-नाम रूपी धन को इकट्ठा करके यदि खर्चने के लिए साथ लेकर चलोगे तो तभी तुम्हें सम्मान प्राप्त हो सकेगा। तुम प्रभु-नाम के धन को जितना भी खाओगे, खर्चोगे वह और अधिक देता रहेगा और देते हुए उस प्रभु के पास कोई कमी नहीं आएगी ।। ७ ।। प्रभु-नाम का धन तो हृदय के अन्दर ही है परन्तु इसकी पहचान और प्राप्ति गुरु की शरण में आने पर ही होती है। हे नानक, प्रभु ने दया करके जिसे भी गुरु की शरण प्रदान कर दी वह दुखों और दरिद्रताओं को नष्ट करके उस प्रभु में लीन हो जाता है ।। ८ ।। ५ ।। कानड़ा महला ४ ।। यह मन सच्चे गुरु की शरण का ही जब ध्यान करेगा तो जैसे लोहा पारस के साथ मिलकर सोना हो जाता है वह भी सच्चे गुरु से मिलकर पारस के गुणों वाला ही बन जाएगा ।। १ ।। रहाउ ।। वह महान सर्वव्यापक सच्चा गुरु ऐसा पारस है कि उसको जो भी स्पर्श करता है वह पूर्ण फल को प्राप्त करता है। जैसे गुरु के उपदेश के कारण प्रहलाद पार उतर गया उसी प्रकार गुरु भी अपने सेवक के सम्मान को बचाता है ।। १ ।। सच्चे गुरु का उपदेश उत्तम है और गुरु की वाणी से ही अमृत प्राप्त किया जाता है। जिस प्रकार अम्बरीष ने अमर पद प्राप्त कर लिया उसी प्रकार हम भी सच्चे गुरु की वाणी पर ध्यान लगाए रखेंगे। सच्चा गुरु ही दीन दयालु होता है और प्रभु का मार्ग जीव को दिखाता रहता है ।। ३ ।। जो सच्चे गुरु की शरण में आ गए वे सभी सदा के लिए स्थित हो गए हैं और प्रभु स्वयं उनकी रक्षा करने के लिए चला आता है। प्रभु के सेवकों पर यदि कोई बाण का निशाना लगाता है तो वह बाण उल्टा उसी को आ लगता है ।। ४ ।। जिसने भी प्रभु रूपी सरोवर का सुमिरन किया है और उसमें स्नान किया है प्रभु के दरबार में उसे ही सम्मान दिलाया जाता है। गुरु की शिक्षा के अनुरूप चलकर जो गुरु की मति को सदैव हृदय में धारण किए रहता है प्रभु उनके गले से मिलकर उन्हें मिलता रहता है ।। ५ ।। उन गुरमुखों के लिए गुरु का मुख ही नाद और वेद है और गुरु में सन्तुष्ट बने रहकर ही वे प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं। वे प्रभु के रूप में लीन होकर प्रभु रूप ही हो जाते हैं और ऐसे प्रभु के सेवकों की वन्दना वह प्रभु स्वयं करवाता है ।। ६ ।। प्रभु से टूटे हुए लोगों ने सच्चे गुरु को नहीं अपनाया है और प्रभु भी ऐसे विमुख लोगों को भटकाता रहता है। कुत्ते जैसे लोभ की लहरों की संगत में ऐसे व्यक्तियों को माया के विषय-विकारों रूपी मुर्दा शरीरों से ही लिपटाए रक्खा जाता है ।। ७ ।। राम का नाम अर्थात प्रभु का नाम ही सारे संसार को पार उतारने वाला है और संगत में लीन होकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है। हे मेरे प्रभु, नानक का कथन है कि उसकी रक्षा कर लो और सत्संगत मे ही उसे रखकर अपने में लीन बनाए रखो ।। ८ ।। ६ ।। छठवाँ १ ।।

कानड़ा छंत महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

से उधरे जिन राम धिआए ॥ जतन माइआ के कामि न आए ॥ राम धिआए सभि फल पाए धनि धंनि ते बडभागीआ ॥ सतसंगि जागे नामि लागे एक सिउ लिव लागीआ ॥ तजि मान मोह बिकार साधू लगि तरउ तिन कै पाए ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी बडभागि दरसनु पाए ॥ १ ॥ मिलि साधू नित भजह नाराइण ॥ रसकि रसकि सुआमी गुण गाइण ॥ गुण गाइ जीवह हरि अमिउ पीवह जनम मरणा भागए ॥ सतसंगि पाईऐ हरि धिआईऐ बहुड़ि दूखु न लागए ॥ करि दइआ दाते पुरख बिधाते संत सेव कमाइण ॥ बिनवंति नानक जन धूरि बांछहि हरि दरसि सहजि समाइण ॥ २ ॥ सगले जंत भजहु गोपालै ॥ जप तप संजम पूरन घालै ॥ नित भजहु सुआमी अंतरजामी सफल जनमु सबाइआ ॥ गोबिदु गाईऐ नित धिआईऐ परवाणु सोई आइआ ॥ जप ताप संजम हरि हरि निरंजन गोबिंद धनु संगि चालै ॥ बिनवंति नानक करि दइआ दीजै हरि रतनु बाधउ पालै ॥ ३ ॥ मंगलचार चोज आनंदा ॥ करि किरपा मिले परमानंदा ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखहगामी इछ मन की पुंनीआ ॥ बजी बधाई सहजे समाई बहुड़ि दूखि न रुंनीआ ॥ ले कंठि लाए सुख दिखाए बिकार बिनसे मंदा ॥ बिनवंति नानक मिले सुआमी पुरख परमानंदा ॥ ४ ॥ १ ॥

कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ राम नामु निधानु हरि गुरमति रखु उर धारि ॥ दासन दासा होइ रहु हउमै बिखिआ मारि ॥ जनमु पदारथु जीतिआ कदे न आवै हारि ॥ धनु धनु वडभागी नानका जिन गुरमति हरि रसु सारि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ गोविंदु गोविदु गोविदु हरि गोविदु गुणी निधानु ॥ गोविदु

कानड़ा छन्द महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जिन्होंने प्रभु की आराधना की है उन्हीं का उद्धार होता हैं सांसारिक प्रंपचों के लिए किए हुए सभी प्रयत्न उनके किसी काम नहीं आ सके हैं। धन्य हैं वे बड़े भाग्यशाली लोग जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया है और सभी फल प्राप्त कर लिए हैं। उनकी एक प्रभु में ही लौ लगी रहती है और वे सत्संगति में सावधान बने हुए प्रभु-नाम के माध्यम से ही प्रभु में लीन बने रहते हैं। मान, मोह और विकारों को त्यागकर तथा साधु पुरुषों की संगत में लीन होते हुए उनके चरणों में गिरकर मैं पार उतर जाता हूँ। नानक विनती करता है कि मैं उस प्रभु की शरण में हूँ और बड़े भाग्य से मैंने साधु पुरुषों के दर्शन प्राप्त किए हैं ।। १ ।। साधु पुरुषों से मिलाप करके सदैव प्रभु का सुमिरन किया जाता है और रसपूर्वक उस प्रभु के गुण गाए जाते हैं। गुणानुवाद करके और प्रभु-नाम का अमृत पी कर जीवित रहा जाता है तथा जन्म-मरण भाग खड़ा होता है। सत्संगत में ही प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए प्रभु को प्राप्त किया जाता है और फिर दुबारा दुख स्पर्श नहीं करता। हे विधाता एवं सर्वव्यापक प्रभु, तू हम पर दया कर ताकि हम सन्तजनों की सेवा करते रहें। नानक विनती करता है और तेरे सेवकों की चरण-धूलि की कामना करता है क्योंकि इन्हीं के माध्यम से प्रभु के दर्शन करते हुए अपने मूल रूप में स्वाभाविक ही लीन हुआ जाता है ।। २ ।। सभी जीव प्रभु का सुमिरन करें क्योंकि यह सुमिरन ही जप, तप, संयम और पूर्ण कमाई है। उस अन्तर्यामी प्रभु का सदैव सुमिरन करो जिससे पूर्ण रूप में जीवन सफल हो जाता है। जो प्रभु के गुण गाता हुआ सदैव उसका सुमिरन करता है उसी का संसार में आना सफल होता है। जप, तपस्या और संयम आदि वह प्रभु ही है और वह प्रभु रूपी धन ही अन्त में साथ चलने वाला होता है। नानक विनती करता है कि प्रभु-नाम रूपी रत्न को मुझे दयापूर्वक प्रदान करो ताकि मैं उसे अपने पल्ले बाँध लूँ ।। ३ ।। मंगल गीत विभिन्न प्रकार के कौतुक और आनन्द का स्वरूप वह परम आनन्द प्रभु कृपा करके मुझसे आ मिला है। सुख देने वाला वह स्वामी प्रभु मुझसे मिला है और मेरे मन की इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। मेरे हृदय में बधाई के गीत बज उठे हैं और मेरी उसमें लीनता अपने स्वाभाविक रूप में हो गई है और अब मुझे फिर कोई दुख और रोना-धोना नहीं रहता। प्रभु ने मुझे अपने साथ मिलाकर गले से लगा लिया है, मुझे सभी सुख प्रदान कर दिए हैं और मेरे सभी बुरे विकार विनष्ट हो गए हैं। नानक विनती करता है कि वह परमानन्द और सर्वत्र व्यापक प्रभु मुझे प्राप्त हो गया है ।।४ ।।१।।

कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुन पर गायन-आदेश   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

राम नाम प्रभु का भण्डार है और हे जीव, तू गुरु की शिक्षा में चलकर उसे हृदय में धारण किए रह। अहंकार और विषय विकारों को मारकर तू प्रभु के दासों का दास बना रह। इस जीवन रूपी पदार्थ को इसी प्रकार जीता जा सकेगा और तू कभी भी हारकर वापिस नहीं लौटेगा। हे नानक, वे बड़े भाग्य वाले और धन्य हैं जिन्होंने गुरु की शिक्षा में चलकर प्रभु रूपी रस को सम्भाला हुआ है ।। १ ।। महला ४ ।। वह गोविन्द प्रभु सारे संसार को जानने वाला है और वही गुणों का भण्डार है। गुरु की शिक्षा में चलते हुए यदि उस अन्तर्यामी

गोविदु गुरमति धिआईऐे ता दरगह पाईऐ मानु ॥ गोविदु गोविदु गोविदु जपि मुखु ऊजला परधानु ॥ नानक गुरु गोविंदु हरि जितु मिलि हरि पाइआ नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूं आपे ही सिध साधिको तू आपे ही जुग जोगीआ ॥ तू आपे ही रस रसीअड़ा तू आपे ही भोग भोगीआ ॥ तू आपे आपि वरतदा तू आपे करहि सु होगीआ ॥ सतसंगति सतिगुर धंनु धनो धंन धंन धनो जितु मिलि हरि बुलग बुलोगीआ ॥ सभि कहहु मुखहु हरि हरि हरे हरि हरि हरे हरि बोलत सभि पाप लहोगीआ ॥ १ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ हउमै ममता नासु होइ दुरमति कढै धोइ ॥ नानक अनदिनु गुण उचरै जिन कउ धुरि लिखिआ होइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि आपे आपि दइआलु हरि आपे करे सु होइ ॥ हरि आपे आपि वरतदा हरि जेवडु अवरु न कोइ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ जो हरि प्रभु करे सु होइ ॥ कीमति किनै न पाईआ बेअंतु प्रभू हरि सोइ ॥ नानक गुरमुखि हरि सालाहिआ तनु मनु सीतलु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ जोति तेरी जगजीवना तू घटि घटि हरि रंग रंगना ॥ सभि धिआवहि तुधु मेरे प्रीतमा तू सति सति पुरख निरंजना ॥ इकु दाता सभु जगतु भिखारीआ हरि जाचहि सभ मंग मंगना ॥ सेवकु ठाकुरु सभु तूहै तूहै गुरमती हरि चंग चंगना ॥ सभि कहहु मुखहु रिखीकेसु हरे रिखीकेसु हरे जितु पावहि सभ फल फलना ॥ २ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ जो इछहि सो फलु पाइसी गुर सबदी लगै धिआनु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि हरि नामु पवितु है नामु जपत दुखु जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन मनि वसिआ आइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिन दालदु दुखु लहि जाइ ॥ आपणै भाणै किनै न पाइओ जन वेखहु मनि पतीआइ ॥ जनु नानकु दासन दासु है जो सतिगुर लागे पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥

प्रभु का सुमिरन किया जाए तो उसके समक्ष सम्मान प्राप्त होता है। उस अन्तर्यामी प्रभु का सुमिरन करने से व्यक्ति का मुख उज्जवल बना रहता है और वह शिरोमणि पुरुष समझा जाता है। हे नानक, वह प्रभु ही गुरु है जिसे मिलकर प्रभु नाम (सारतत्व) की प्राप्ति होती है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तू स्वयं ही सिद्ध और साधक है और तू स्वयं ही अपने से जोड़ने वाला योगी है। तू स्वयं ही रस है, रसिक है और तू स्वयं ही भोग भोगने वाला है। तू स्वयं ही सब ओर कार्यशील है और तू स्वयं ही जो करता है वही होता है। सच्चे गुरु की सत्संगत धन्य है जिसे मिलकर प्रभु के बोलों को बोला जाता है। सभी अपने मुख से हरि-हरि, हरि-हरि बोलते रहो क्योंकि प्रभु का नाम बोलने से सभी पाप उतर जाते हैं ।। १ ।। श्लोक महला ४ ।। वह प्रभु और उसका नाम एक ही है और कोई बिरला गुरमुख ही उसे प्राप्त करता है। प्रभु-नाम अहंकार ममता का नाश करके दुर्मति को धोकर बाहर निकाल देता है। हे नानक, वे ही दिन रात (सदैव) उस प्रभु के गुणों का उच्चारण करते हैं जिनके माथे पर प्रभु की ओर से ही ऐसा लिखा होता है ।। १ ।। महला ४।। प्रभु स्वयं ही दयालु है और प्रभु जो स्वयं करता है वही होता है। प्रभु स्वयं ही सब ओर व्याप्त है और प्रभु जैसा अन्य कोई नहीं है। जो प्रभु को भाता है वही होता है और जो प्रभु करता है वही क्रिया रूप में सामने आता है। उसके मूल्य को कोई नहीं आँक सका क्योंकि वह प्रभु अनन्त है। हे नानक, गुरमुख बनकर जिन्होंने प्रभु का गुणानुवाद किया है उन्हीं का तन मन शीतल बना रहता है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे जगत के जीवन प्रभु, सब में तेरी ही ज्योति है और सभी शरीरों को तू ही प्रभु रंग में रंगने वाला है। हे मेरे प्रियतम, सभी तेरा सुमिरन करते हैं क्योंकि तू ही सदैव स्थिर बना रहने वाला कालिमाओं से रहित सर्वव्यापक परमात्मा है। तू एक ही दाता है और यह सारा संसार भिखारी बनकर अपनी सभी माँगे तुझसे ही माँगते हैं। सेवक और मालिक सब तू ही है और गुरु की शिक्षा के फलस्वरूप तू ही अच्छा लगता है। हे भाईयो, सभी मुख से इन्द्रियों के स्वामी प्रभु का बार-बार सुमिरन करो जिससे सभी फलों की प्राप्ति होती है ।। २ ।। श्लोक महला ४ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु के नाम का सुमिरन कर ताकि तुझे प्रभु के समक्ष सम्मान मिल सके। जब शब्द-गुरु में तेरा ध्यान लग जाएगा तो तू जिस पदार्थ की भी इच्छा करेगा फल रूप में उसे प्राप्त कर लेगा। तेरे सभी क्लेश और पाप कट जाएँगे और तेरा अभिमान और गर्व भी समाप्त हो जाएगा। गुरमुख वनकर तेरा हृदय रूपी कमल खिल जाएगा और सभी आत्माओं में तू उस ब्रह्म को पहचान लेगा। हे प्रभु, तू अपने सेवकों पर कृपा बनाए रख तथा हे नानक, तू प्रभु-नाम का ही सुमिरन करता रह ।। १ ।। महला ४ ।। प्रभु का नाम ही पवित्र है और प्रभु-नाम के जाप से ही दुख समाप्त होता है। प्रभु की ओर से ही जिसके लिए लिखा होता है उन्हीं के मन में वह प्रभु आ बसता है। सच्चे गुरु प्रभु की रज़ा में जो चलते हैं उनकी दरिद्रता और सभी दुख समाप्त हो जाते हैं। अपने हठ में रहते हुए कोई भी नहीं पा सका है, इसे चाहे कोई भी मन में सोच विचार कर देख ले। दास नानक तो उन दासों का भी दास है जो सच्चे गुरु के चरणों में आ लगे हैं ।। २ ।। पउड़ी ।।

तूं थान थनंतरि भरपूरु हहि करते सभ तेरी बणत बणावणी ॥ रंग परंग सिसटि सभ साजी बहु बहु बिधि भांति उपावणी ॥ सभ तेरी जोति जोती विचि वरतहि गुरमती तुधै लावणी ॥ जिन होहि दइआलु तिन सतिगुरु मेलहि मुखि गुरमुखि हरि समझावणी ॥ सभि बोलहु राम रमो स्री राम रमो जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जावणी ॥ ३ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि अंम्रितु नाम रसु हरि अंम्रितु हरि उर धारि ॥ विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥ मनि हरि हरि नामु धिआइआ बिखु हउमै कढी मारि ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ तिन जूऐ जनमु सभु हारि ॥ गुरि तुठै हरि चेताइआ हरि नामा हरि उर धारि ॥ जन नानक ते मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि कीरति उतमु नामु है विचि कलिजुग करणी सारु ॥ मति गुरमति कीरति पाईऐ हरि नामा हरि उरि हारु ॥ वडभागी जिन हरि धिआइआ तिन सउपिआ हरि भंडारु ॥ बिनु नावै जि करम कमावणे नित हउमै होइ खुआरु ॥ जलि हसती मलि नावालीऐ सिरि भी फिरि पावै छारु ॥ हरि मेलहु सतिगुरु दइआ करि मनि वसै एकंकारु ॥ जिन गुरमुखि सुणि हरि मंनिआ जन नानक तिन जैकारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ राम नामु वखरु है ऊतमु हरि नाइकु पुरखु हमारा ॥ हरि खेलु कीआ हरि आपे वरतै सभु जगतु कीआ वणजारा ॥ सभ जोति तेरी जोती विचि करते सभु सचु तेरा पासारा ॥ सभि धिआवहि तुधु सफल से गावहि गुरमती हरि निरंकारा ॥ सभि चवहु मुखहु जगंनाथु जगंनाथु जगजीवनो जितु भवजल पारि उतारा ॥ ४ ॥ सलोक मः ४ ॥ हमरी जिहबा एक प्रभ हरि के गुण अगम अथाह ॥ हम किउ करि जपह इआणिआ हरि तुम वड अगम अगाह ॥ हरि देहु प्रभू मति ऊतमा गुर सतिगुर कै पगि पाह ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हम पापी संगि तराह ॥ जन नानक कउ हरि बखसि लैहु हरि तुठै मेलि मिलाह ॥ हरि किरपा करि सुणि बेनती हम पापी किरम तराह ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि करहु क्रिपा जगजीवना गुरु सतिगुरु मेलि दइआलु ॥ गुर सेवा हरि

हे प्रभु, तू सभी स्थानों और स्थानान्तरों में व्याप्त है तथा हे कर्ता प्रभु, यह सारी रचना तेरी ही बनाई हुई है। तूने अनेकों रंगों वाली इस सृष्टि की रचना की है और अनेकों विधियों से इसे उत्पन्न किया है। सभी ज्योतियों में तेरा ही प्रकाश कार्यशील है और तू ही सृष्टि को गुरु की मति में अर्थात ज्ञान की शिक्षा में लगाता है। जिन पर तू दयालु होता है उन्हें तू सच्चे गुरु से मिला देता है और गुरमुख बने हुए ऐसे व्यक्ति को प्रभु के बारे में समझा देता है। सभी सबमें रमण करने वाले उस प्रभु का गुणनुवाद करो, समृद्धि के स्वामी उस प्रभु में ही रमण करते रहो जिसके कारण दरिद्रता, दुख और सभी प्रकार की भूख समाप्त हो जाएगी ।। ३ ।। श्लोक महला ४ ।। प्रभु का अमृत नाम ही अमृत रस है जिसे हे जीव, तू अपने हृदय में धारण किए रह। वह प्रभु संगत में ही व्याप्त है और वहीं शब्द के चिन्तन के माध्यम से इस रहस्य को जान लो। मन जब प्रभु के नाम का सुमिरन करता है तो यह नाम अहंकार के विषय को मन से बाहर निकाल देता है। जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया है उन्होंने अपने जीवन को जुए की बाजी की तरह हार दिया है। गुरु ने प्रसन्न होकर प्रभु की चेतना हमें देते हुए प्रभु-नाम को हमारे हृदय में टिका दिया है। हे नानक, ऐसे सेवकों के उस प्रभु के सच्चे दरबार में मुख उज्जवल बने रहते हैं ।। १ ।। महला ४ ।। इस कलियुग में श्रेष्ठ आचरण प्रभु के उत्तम नाम का कीर्ति गायन ही है। गुरु की शिक्षा के माध्यम से यह मति प्राप्त होती है और प्रभु-नाम को हृदय में धारण करके उस प्रभु की कीर्ति को समझा जाता है। बड़े भाग्य से जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया है प्रभु ने उन्हें ही अपने नाम का भण्डार सौंप दिया होता है। प्रभु-नाम से विहीन होकर जितने भी कर्म किए जाते हैं उनमें पड़े रहना तो अहंकार में भटकते रहना ही होता है। ये सभी कर्म ऐसे ही हैं जैसे हाथी को जल में नहलाया जाए तो फिर भी वह अपने सिर पर मिट्टी ही डालता रहता है। हे प्रभु, दया करके सच्चा गुरु मिला दो जिससे हमारे मन में वह एक ओअंकार प्रभु ही बसता रहे। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु के बारे में सुना है और प्रभु को माना है, हे नानक, ऐसे सेवकों की जय-जयकार होती है ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु-नाम ही उत्तम पदार्थ है और प्रभु ही हमारा सर्वव्यापक नायक और मालिक है। उसने स्वयं ही यह सारा खेल रचाया है, स्वयं ही वह सर्वत्र व्याप्त है और स्वयं ही उसने सारे संसार को व्यापारी बनाया हुआ है। सब की ज्योतियों में हे कर्ता प्रभु, तेरा ही प्रकाश है और तेरा ही सत्य रूप में सब ओर प्रसार और विस्तार है। जो तेरा सुमिरन करते हैं वे ही सब ओर सफल होते हैं और गुरु की शिक्षा में चलते हुए उस निराकार प्रभु का गुणानुवाद करते हैं। सब अपने मुख से जगन्नाथ, जगत के जीवन के नाम का उच्चारण करते रहो जो संसार सागर से पार उतारने वाला है ।। ४ ।। श्लोक महला ४ ।। हे प्रभु, हमारी जीभ तो एक ही है और तेरे गुण अगम्य और अथाह हैं। तुम अत्यन्त विशाल, अगम्य और अथाह हो तथा हम अनजान बच्चे भला पूरी तरह तुम्हारा सुमिरन कैसे कर सकते हैं। हे प्रभु, हमें उत्तम मति प्रदान करो और सच्चे गुरु के चरणों में हमें डाल दो। हे प्रभु, हमें सत्संगत से मिला दो ताकि हम पापी भी उसके साथ पार उतर जाएँ। हे प्रभु, प्रसन्न होकर हमें उससे मिला दो और दास नानक को क्षमा कर दो। हे प्रभु, कृपा करके हमारी विनती सुन लो और हम पापी कीड़ों-मकोड़ों को भी पार उतार दो ।। १ ।। महला ४ ।। हे प्रभु, और जगत को जीवन देने वाले, हम पर कृपा करके दयालु सच्चे गुरु से हमारा मिलाप करा दो। हमें गुरु रूपी प्रभु की सेवा ही

हम भाईआ हरि होआ हरि किरपालु ॥ सभ आसा मनसा विसरी मनि चूका आल जंजालु ॥ गुरि तुठै नामु द्रिड़ाइआ हम कीए सबदि निहालु ॥ जन नानकि अतुटु धनु पाइआ हरि नामा हरि धनु मालु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि तुम्ह वड वडे वडे वड ऊचे सभ ऊपरि वडे वडौना ॥ जो धिआवहि हरि अपरंपरु हरि हरि हरि धिआइ हरे ते होना ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी तिन काटे पाप कटोना ॥ तुम जैसे हरि पुरख जाने मति गुरमति मुखि वड वड भाग वडोना ॥ सभि धिआवहु आदि सते जुगादि सते परतखि सते सदा सदा सते जनु नानकु दासु दसोना ॥ ५ ॥ सलोक मः ४ ॥ हमरे हरि जगजीवना हरि जपिओ हरि गुर मंत ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि हरि मिलिआ आइ अचिंत ॥ हरि आपे घटि घटि वरतदा हरि आपे आपि बिअंत ॥ हरि आपे सभ रस भोगदा हरि आपे कवला कंत ॥ हरि आपे भिखिआ पाइदा सभ सिसटि उपाई जीअ जंत ॥ हरि देवहु दानु दइआल प्रभ हरि मांगहि हरि जन संत ॥ जन नानक के प्रभ आइ मिलु हम गावह हरि गुण छंत ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु नामु हरि मै मनि तनि नामु सरीरि ॥ सभि आसा गुरमुखि पूरीआ जन नानक सुणि हरि धीर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि ऊतमु हरिआ नामु है हरि पुरखु निरंजनु मउला ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन सेवे चरन नित कउला ॥ नित सारि सम्हाले सभ जीअ जंत हरि वसै निकटि सभ जउला ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाइसी जिसु सतिगुरु पुरखु प्रभु सउला ॥ सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गावत गुणी समउला ॥ ६ ॥ सलोक मः ४ ॥ सुतिआ हरि प्रभु चेति मनि हरि सहजि समाधि समाइ ॥ जन नानक हरि हरि चाउ मनि गुरु तुठा मेले माइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि इकसु सेती पिरहड़ी हरि इको मेरै चिति ॥ जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पंचे सबद वजे मति गुरमति वडभागी अनहदु वजिआ ॥ आनद मूलु रामु सभु देखिआ गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥ आदि जुगादि वेसु हरि एको मति गुरमति हरि प्रभु भजिआ ॥ हरि

अच्छी लगती है और प्रभु हम पर कृपालु हो उठा है। मन की सभी आशाएँ और इच्छाएँ हमें भूल गई हैं और हमारे मन का जंजाल समाप्त हो गया है। सच्चे गुरु ने प्रसन्न होकर हमें प्रभु-नाम का सुमिरन पक्का कर दिया है तथा शब्द के माध्यम से हम निहाल हो गए हैं। दास नानक ने तो अक्षय धन वह प्रभु का नाम प्राप्त कर लिया है जो वास्तव में सब प्रकार का धन और माल है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तुम बहुत बड़े हो, बहुत ऊँचे हो और सबसे ऊपर बने रहने वाले महान हो। जो उस अपरम्पार प्रभु का सुमिरन करते हैं वे प्रभु का सुमिरन करते हुए प्रभु ही हो जाते हैं। हे स्वामी प्रभु, जो तेरा यश गाते और सुनते हैं उनके करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं गुरु की शिक्षा और उसकी दी हुई बुद्धि के माध्यम से तुम्हारे जैसे सर्वव्यापी प्रभु को जाना जाता है और हे प्रभु, हमने उन व्यक्तियों को तुम्हारे जैसे प्रभु रूप में ही देखा है। सभी उस प्रभु का सुमिरन करो जो आरम्भ में भी सत्य था, युगों के प्रारम्भ में भी वह सच्चा था और जो प्रत्यक्ष में भी सत्य है और जो सदैव सत्य बना रहने वाला है; सेवक नानक तो उसके दासों का भी दास है ।। ५।। श्लोक महला ४ ।। हमने हमारे उस संसार को जीवन देने वाले प्रभु का गुरु के उपदेश के माध्यम से सुमिरन किया है। वह प्रभु अगम्य एवं अगोचर है और बिना प्रयत्न किए हुए स्वाभाविक रूप से ही आ मिला है। वह स्वयं ही प्रत्येक हृदय में कार्यशील बना रहता है और वह स्वयं ही अनन्त रूप में है। वह स्वयं ही सभी रसों का भोग करने वाला है और स्वयं ही मायापति प्रभु है। उस प्रभु ने ही सारी सृष्टि और जीवों को उत्पन्न किया है और वह स्वयं ही सब को दान भी देता रहता है। प्रभु के सेवक सन्तजन एक दान माँगते हैं; हे प्रभु, तुम दयालु होकर वह दान प्रदान करो। सेवक नानक के प्रभु, हमसे आ मिलो ताकि हम प्रभु के गुणों के गीतों का गायन करते रहें ।। १ ।। महला ४ ।। प्रभु और प्रभु का नाम मेरा सज्जन और प्रिय है; मेरे मन और तन में उस प्रभु का नाम ही स्थित बना हुआ है। गुरमुख व्यक्ति की सभी आशाएँ पूरी हो जाती हैं और प्रभु का नाम सुनकर सेवक नानक को धैर्य मिलता है ।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु का नाम हरा-भरा है और कालिमारहित सर्वव्यापक प्रभु चारों ओर खिला हुआ बना रहता है। जो दिन रात प्रभु का सुमिरन करते हैं माया सदैव उनके चरणों का सुमिरन करती रहती है। वह प्रभु सभी जीवों की सम्भाल करता है और सभी जीवों के पास ही बना रहकर उनसे अलिप्त भी है। जिसे वह रहस्य समझाता है वही समझता है और वही समझता है जिस पर सच्चा गुरु सर्वव्यापक प्रभु प्रसन्न होता है। सभी उस प्रभु के गुणों का गायन करो, बार-बार गायन करो क्योंकि उसके गुण गाते हुए ही उस गुणवान प्रभु में समाया जाता है ।। ६ ।। श्लोक महला ४ ।। सोते हुए भी हे मन, तू प्रभु को याद रख और प्रभु की सहज समाधि में लीन हो जा। हे नानक, प्रभु के सेवकों के मन में तो प्रभु के लिए ही चाव बना रहता है और हे माँ, गुरु ही प्रसन्न होकर उससे मिलाता है ।। १ ।। महला ४ ।। मुझे एक प्रभु से ही प्यार है और वह एक प्रभु ही मेरे मन में बसता है। दास नानक का तो वह प्रभु ही एक आसरा है और उस एक प्रभु के कारण ही उसकी मुक्ति और उसका सम्मान बना हुआ है ।। २ ।। पउड़ी ।। गुरु की शिक्षा के माध्यम और उसकी मति को प्राप्त करने पर ही पाँचों प्रकार के शब्द बज उठते हैं और बड़े भाग्य से अनहद धुन बज उठती है। आनन्द के स्रोत उस प्रभु को ही सब ओर देखा जाता है और अब शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु अन्तर्मन में प्रकट हो उठा है। आदि-युगादि में उस प्रभु का एक ही स्वरूप बना रहता है और गुरु की मति और शिक्षा के माध्यम से ही उस प्रभु का सुमिरन किया जाता है। हे प्रभु,

देवहु दानु दइआल प्रभ जन राखहु हरि प्रभ लजिआ ॥ सभि धंनु कहहु गुरु सतिगुरू गुरु सतिगुरू जितु मिलि हरि पड़दा कजिआ ॥ ७ ॥ सलोकु मः ४ ॥ भगति सरोवरु उछलै सुभर भरे वहंनि ॥ जिना सतिगुरु मंनिआ जन नानक वड भाग लहंनि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि हरि नाम असंख हरि हरि के गुन कथनु न जाहि ॥ हरि हरि अगमु अगाधि हरि जन कितु बिधि मिलहि मिलाहि ॥ हरि हरि जसु जपत जपंत जन इकु तिलु नही कीमति पाइ ॥ जन नानक हरि अगम प्रभ हरि मेलि लैहु लड़ि लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि किउ करि हरि दरसनु पिखा ॥ किछु वखरु होइ सु वरनीऐ तिसु रूपु न रिखा ॥ जिसु बुझाए आपि बुझाइ देइ सोई जनु दिखा ॥ सतसंगति सतिगुर चटसाल है जितु हरि गुण सिखा ॥ धनु धंनु सु रसना धंनु कर धंनु सु पाधा सतिगुरू जितु मिलि हरि लेखा लिखा ॥ ८ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि हरि नामु अंम्रितु है हरि जपीऐ सतिगुर भाइ ॥ हरि हरि नामु पवितु है हरि जपत सुनत दुखु जाइ ॥ हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ हरि दरगह जन पैनाईअनि जिन हरि मनि वसिआ आइ ॥ जन नानक ते मुख उजले जिन हरि सुणिआ मनि भाइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि हरि नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ जिन धुरि मसतकि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ तनु मनु सीतलु होइआ सांति वसी मनि आइ ॥ नानक हरि हरि चउदिआ सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ वारिआ तिन कउ सदा सदा जिना हरि सतिगुरु मेरा पिआरा देखिआ ॥ तिन कउ मिलिआ मेरा सतिगुरू जिन कउ धुरि मसतकि लेखिआ ॥ हरि अगमु धिआइआ गुरमती तिसु रूपु नही प्रभ रेखिआ ॥ गुर बचनि धिआइआ जिना अगमु हरि ते ठाकुर सेवक रलि एकिआ ॥ सभि कहहु मुखहु नर नरहरे नर नरहरे नर नरहरे हरि लाहा हरि भगति विसेखिआ ॥ ९ ॥ सलोक मः ४ ॥ राम नामु रमु रवि रहे रमु रामो रामु रमीति ॥ घटि घटि आतम रामु है प्रभि खेलु कीओ रंगि रीति ॥ हरि निकटि वसै जगजीवना परगासु कीओ

दयालु होकर हमें सुमिरन का दान दो और अपने सेवक की इज्ज़त को बचा लो। सभी उस सच्चे गुरु को धन्य-धन्य कहो जिसके मिलाप से प्रभु ने हमारे अवगुणों पर पर्दा डाले रखा है ॥ ७ ॥ श्लोक महला ४ ॥ जब भक्ति का सरोवर गुरु की कृपा से उछलता है तो संगत में बैठे सिक्ख रूपी छोटे-छोटे सरोवर भी पूरी तरह भरकर बह निकलते हैं। हे नानक, जिन्होंने सच्चे गुरु को माना है उन सेवकों को बड़े भाग्य प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥ महला ४ ॥ प्रभु के अनेकों ही नाम हैं और प्रभु के गुणों का कथन नहीं किया जा सकता। वह प्रभु अगम्य एवं अथाह है परन्तु हे प्रभु, तेरे सेवक तेरे साथ कैसे मिलते हैं और अन्यों को मिला देते हैं। प्रभु के सेवक प्रभु के यश का जाप करते कराते हैं परन्तु उस प्रभु का तिल मात्र भी महत्व नहीं समझ पाते। हे दास नानक, वह प्रभु अगम्य है और हे प्रभु, तू हमें अपने से मिलाकर अपने आसरे में ले लो ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु अगम्य अगोचर है ; कैसे उस प्रभु के दर्शन को किया जाए। वह यदि कोई पदार्थ हो तो उसका वर्णन किया जाए परन्तु उसकी तो कोई रूप रेखा ही नहीं है। वह जिसे समझाता है वही व्यक्ति समझ पाता है और वही व्यक्ति उसको देख भी पाता है। सत्संगत सच्चे गुरु की पाठशाला है जहाँ प्रभु के गुणों की शिक्षा मिलती है। वह जीभ धन्य है, वे हाथ धन्य हैं, वह अध्यापक सच्चा गुरु धन्य है जिसे मिलकर प्रभु का लेखा जोखा जाना और लिखा जाता है ॥ ८ ॥ श्लोक महला ४ ॥ प्रभु का नाम अमृत है और सच्चे गुरु के प्रेम के माध्यम से ही प्रभु का सुमिरन किया जाता है। प्रभु का नाम पवित्र है और प्रभु का जाप करते और सुनते रहने से सभी दुख समाप्त हो जाते हैं। प्रभु-नाम की आराधना वे ही करते हैं जिनके माथे पर प्रभु की ओर से ही लिखा होता है। प्रभु के दरबार में उन सेवकों की प्रशंसा होती है जिनके मन में प्रभु स्वयं आ बसता है। हे दास नानक, उन लोगों के मुख उज्जवल बने रहते हैं जिन्होंने मन के प्रेम के माध्यम से प्रभु-नाम को सुना है ॥ १ ॥ महला ४ ॥ प्रभु का नाम वह भण्डार है जिसे गुरमुख बनकर ही प्राप्त किया जाता है। जिनके माथे पर प्रभु की ओर से ही लिखा रहता है उन्हीं को सच्चा गुरु आ मिलता है। उनका तन मन शीतल हो जाता है और उनके मन में शान्ति बस जाती है। हे नानक, प्रभु-नाम का उच्चारण करते हुए सब प्रकार की दरिद्रता और दुख समाप्त हो जाते हैं ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मैं सदैव उन पर बलिहारी जाता हूँ जिन्होंने मेरा प्यारा सच्चा गुरु देखा है। जिनके माथे पर भाग्य लेख लिखा हुआ है उन्हें ही मेरा सच्चा गुरु आ मिलता है। उन्होंने ही उस अगम्य प्रभु का गुरु की शिक्षा में चलते हुए सुमिरन किया है तथा उस प्रभु की कोई भी रूप रेखा नहीं होती। गुरु के उपदेश का जिन्होंने सुमिरन किया है वे सेवक और ठाकुर आपस में मिलकर एक हो गए हैं। सभी अपने मुख से उस प्रभु का बार-बार उच्चारण करो क्योंकि प्रभु की भक्ति ही विशिष्ट लाभ देने वाली है ॥ ६ ॥ श्लोक महला ४ ॥ उस प्रभु-नाम का सुमिरन करो जो राम नाम के स्वरूप में सब में रमण कर रहा है। प्रत्येक घर में वह प्रभु ही निवास कर रहा है और प्रभु ही आनन्द के रंग में रंगकर खेल कर रहा है। मित्र रूपी गुरु ने ऐसा ज्ञान का प्रकाश दिया है कि वह संसार का जीवन प्रभु अब पास में ही बसता हुआ दिखाई

गुर मीति ॥ हरि सुआमी हरि प्रभु तिन मिले जिन लिखिआ धुरि हरि प्रीति ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुर बचनि जपिओ मनि चीति ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु भागि वसै वडभागि ॥ गुरि पूरै देखालिआ नानक हरि लिव लागि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सुहावी सफल घड़ी जितु हरि सेवा मनि भाणी ॥ हरि कथा सुणावहु मेरे गुरसिखहु मेरे हरि प्रभ अकथ कहाणी ॥ किउ पाईऐ किउ देखीऐ मेरा हरि प्रभु सुघड़ु सुजाणी ॥ हरि मेलि दिखाए आपि हरि गुर बचनी नामि समाणी ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ जो जपदे हरि निरबाणी ॥ १० ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि प्रभ रते लोइणा गिआन अंजनु गुरु देइ ॥ मै प्रभु सजणु पाइआ जन नानक सहजि मिलेइ ॥ १ ॥ मः ४ ॥ गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ नामु चितवै नामो पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ चिंता गई बिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै त्रिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे वसगति कीता ॥ इकि मनमुख करि हाराइअनु इकना मेलि गुरू तिना जीता ॥ हरि ऊतमु हरि प्रभ नामु है गुर बचनि सभागै लीता ॥ दुखु दालदु सभो लहि गइआ जां नाउ गुरू हरि दीता ॥ सभि सेवहु मोहनो मनमोहनो जगमोहनो जिनि जगतु उपाइ सभो वसि कीता ॥ ११ ॥ सलोक मः ४ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु वञाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥ १ ॥ मः ४ ॥ मनु तनु तामि सगारवा जां देखा हरि नैणे ॥ नानक सो प्रभु मै मिलै हउ जीवा सदु सुणे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जगंनाथ जगदीसर करते अपरंपर पुरखु अतोलु ॥ हरि नामु धिआवहु मेरे गुरसिखहु हरि ऊतमु हरि नामु अमोलु ॥ जिन धिआइआ हिरदै दिनसु राति ते मिले नही हरि रोलु ॥ वडभागी संगति मिलै गुर सतिगुर पूरा बोलु ॥ सभि धिआइहु नर नाराइणो नाराइणो जितु चूका जम झगड़ु झगोलु ॥ १२ ॥ सलोक मः ४ ॥ हरि जन हरि हरि चउदिआ सरु संधिआ गावार ॥ नानक हरि जन हरि लिव उबरे जिन संधिआ

देता है। वह स्वामी प्रभु उन्हीं को मिलता है जिनके भाग्य में प्रारम्भ से ही प्रभु की ओर से प्रेम करना लिखा होता है। दास नानक ने उस प्रभु के नाम का सुमिरन किया है और गुरु के वचनों के माध्यम से मन और चित से उसका जाप किया है ।। १ ।। महला ४ ।। अपने बड़े भाग्य से ही वह भाग्यशाली प्रभु हृदय में बसता है, हे जीव, तू ऐसे सज्जन प्रभु को खोज ले। प्रभु में लौ लगाने से हे नानक, पूर्ण गुरु उस प्रभु को दिखा देता है ।। २ ।। पउड़ी ।। वह घड़ी सुहावनी, सफल और धन्य है जिसमें प्रभु की सेवा मन को अच्छी लगती है। हे गुरु के सिक्खो, मेरे प्रभु की अकथनीय कथा को मुझे सुनाओ। मुझे यह भी बताओ कि सुघड़ और उस सुजान प्रभु को किस प्रकार देखा और पाया जा सकता है। गुरु के वचनों से ही उसके नाम में लीन हुआ जाता है और गुरु ही प्रभु से मिलाकर उसे जीव को दिखा देता है। नानक ने तो उन पर अपने आपको कुर्बान कर दिया है जो निर्वाण अवस्था को देने वाले प्रभु का सुमिरन करते हैं ।। १० ।। श्लोक महला ४ ।। गुरु ने ऐसा ज्ञान अंजन दिया है कि आँखे प्रभु के रंग में लीन हो गई हैं। मैंने प्रभु सज्जन को पा लिया है और दास नानक को वह स्वाभाविक रूप से ही सहज अवस्था में मिल गया है ।। १ ।। महला ४ ।। तन मन में नाम समा जाने से गुरमुख का अन्तर्मन शान्त हो जाता है। अब व्यक्ति नाम का ही सुमिरन करता है, नाम का ही अध्ययन करता है और नाम में ही लौ लगाए रहता है। जब नाम पदार्थ प्राप्त हो जाता है तो चिन्ता दूर हो जाती है। सच्चे गुरु के मिलाप से हृदय में नाम उत्पन्न होता है और तृष्णा तथा भूख सब समाप्त हो जाते हैं। हे नानक, नाम में लीन बने हुए व्यक्ति के लिए प्रभु नाम ही उसका आसरा होता है ।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तूने स्वयं ही जगत को उत्पन्न करके स्वयं ही उसे अपने वश में किया हुआ है। कईयों को मनमुख बनाकर तू हरा देता है और कईयों को गुरु से मिलाकर उनकी जीत करवा देता है। प्रभु का नाम ही सर्वोत्तम है और सौभग्य से गुरु के उपदेश के द्वारा ही उसे प्राप्त किया जाता है। दुख और गरीबी सभी समाप्त हो जाते हैं जब गुरु प्रभु-नाम प्रदान कर देता है। सब उस मनमोहन जगमोहन प्रभु का सुमिरन करो जिसने सारा संसार उत्पन्न करके अपने वश में किया हुआ है ।। ११ ।। श्लोक महला ४ ।। जो मनमुख दुर्जन बनकर भ्रमों में भूले हुए हैं उनके मन में अहंकार का रोग है। हे नानक, तू सच्चे गुरु और साधु-सज्जनों से मिलकर अपने रोग को दूर कर दे ।। १ ।। महला ४ ।। मन और तन सभी सुन्दर और सिंगार वाला लगता है जब प्रभु को अपनी आँखों से देखा जाता है। हे नानक, मुझे वह प्रभु मिल जाए जिसकी आवाज को मैं सदैव सुनता रहता हूँ ।। २ ।। पउड़ी ।। हे जगन्नाथ, जगदीश्वर, अपरम्पर कर्ता प्रभु, तुम ही सर्वव्यापक और अतुलनीय हो। हे मेरे गुरु के सिक्खो, तुम उस प्रभु के नाम का सुमिरन करो जो उत्तम और अमूल्य है। जिन्होंने दिन रात हृदय में प्रभु का सुमिरन किया है वे प्रभु को मिलते हैं और उन्हें प्रभु के बारे में कोई भी भ्रम नहीं रहता। बड़े भाग्य से संगत प्राप्त होती है और वहीं पर सच्चे गुरु का पूर्ण उपदेश प्राप्त होता है। सभी उस नारायण प्रभु का सुमिरन करो जिससे यम का झगड़ा और विवाद समाप्त हो जाता है ।। २ ।। श्लोक महला ४ ।। प्रभु के नाम का सुमिरन करने वाले प्रभु के सेवक को जिसने भी नफरत और ईर्ष्या का तीर मारा है वह मूर्ख ही है क्योंकि हे नानक, प्रभु में लौ लगाने वाले सेवक का तो उद्धार हो जाता है परन्तु यह तीर जिसने चलाया होता है

तिसु फिरि मार ॥ १ ॥ मः ४ ॥ अखी प्रेमि कसाईआ हरि हरि नामु पिखंन्हि ॥ जे करि दूजा देखदे जन नानक कढि दिचंन्हि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जलि थलि महीअलि पूरनो अपरंपरु सोई ॥ जीअ जंत प्रतिपालदा जो करे सु होई ॥ मात पिता सुत भ्रात मीत तिसु बिनु नही कोई ॥ घटि घटि अंतरि रवि रहिआ जपिअहु जन कोई ॥ सगल जपहु गोपाल गुन परगटु सभ लोई ॥ १३ ॥ सलोक मः ४ ॥ गुरमुखि मिले सि सजणा हरि प्रभ पाइआ रंगु ॥ जन नानक नामु सलाहि तू लुडि लुडि दरगहि वंञु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ हरि तूहै दाता सभस दा सभि जीअ तुम्हारे ॥ सभि तुधै नो आराधदे दानु देहि पिआरे ॥ हरि दातै दातारि हथु कढिआ मीहु वुठा सैसारे ॥ अंनु जंमिआ खेती भाउ करि हरि नामु सम्हारे ॥ जनु नानकु मंगै दानु प्रभ हरि नामु अधारे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इछा मन की पूरीऐ जपीऐ सुख सागरु ॥ हरि के चरन अराधीअहि गुर सबदि रतनागरु ॥ मिलि साधू संगि उधारु होइ फाटै जम कागरु ॥ जनम पदारथु जीतीऐ जपि हरि बैरागरु ॥ सभि पवहु सरनि सतिगुरू की बिनसै दुख दागरु ॥ १४ ॥ सलोक मः ४ ॥ हउ ढूंढेंदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥ जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि सचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै को उचरि सुनावै ॥ जनम जनम की मलु उतरै मन चिंदिआ पावै ॥ आवणु जाणा मेटीऐ हरि के गुण गावै ॥ आपि तरहि संगी तराहि सभ कुटंबु तरावै ॥ जनु नानकु तिसु बलिहारणै जो मेरे हरि प्रभ भावै ॥ १५ ॥ १ ॥ सुधु ॥

रागु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥ जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसै घटा घट लीप न छीपै ॥ बंधन मुकता जातु न दीसै ॥ १ ॥ पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥ नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥ २ ॥ १ ॥

फिर उसी को ही मार डालता है ।। १ ।। महला ४ ।। प्रभु के प्रेम में आँखे खिंची-खिंची रहती हैं और प्रभु-नाम को ही देखती रहती हैं। हे नानक, यदि इन आँखों से किसी अन्य को देखा जाए तो इन आँखों को निकाल देना चाहिए ।। २ ।। पउड़ी ।। जल, स्थल और अन्तरिक्ष में वह अपरम्पार प्रभु पूर्ण रूप से व्याप्त है। वही जीव-जन्तु आदि का पालन पोषण करता है और वह जो करता है वही होता है। वही माता-पिता, पुत्र, भाई, मित्र आदि है और उसके बिना अन्य कोई नहीं है। वही घट-घट में समाया हुआ है और उसका कोई बिरला सेवक ही सुमिरन करता है। हे सभी लोगो, सभी इस धरती के स्वामी प्रभु के गुणों का सुमिरन करो क्योंकि वही सभी लोकों में प्रकट रूप से विद्यमान है ।। १३ ।। श्लोक महला ४ ।। जो गुरमुख होकर परस्पर मिलते हैं वे ही सज्जन पुरुष हैं और उन्होंने ही प्रभु के प्रेम को पा लिया होता है। हे दास नानक, तू भी उसके नाम का गुणानुवाद कर और प्रसन्नता पूर्वक उसके दरबार में चला जा ।। १ ।। महला ४ ।। हे प्रभु, तू ही सबका दाता है और सभी जीव तुम्हारे ही है। सब तेरी ही आराधना करते हैं और हे प्यारे प्रभु, तू इस आराधना का दान ही इन्हें देता रह। उस दाता दानी प्रभु ने अपना कृपा का हाथ बाहर निकाला और सारे संसार में उसकी कृपा की वर्षा होने लगी। प्रेम की खेती करने वाले के अन्तर्मन रूपी खेत में प्रभु-नाम रूपी अन्न का अंकुर फूट निकला है और उसने प्रभु-नाम को अपने हृदय में सम्भाल लिया है। हे प्रभु, दास नानक तो यही दान माँगता है कि उसे प्रभु नाम का आसरा मिला रहे ।। २ ।। पउड़ी ।। सुखों के सागर उस प्रभु का नाम सुमिरन करने से मन की इच्छाएँ पूरी होती है। शब्द-गुरु रूपी रत्नों के भण्डार प्रभु के चरणों की आराधना की जाती है। साधु पुरुषों की संगत में रहने से उद्धार होता है और यम के लेखे जोखे वाला कागज फट जाता है। इस प्रकार उस परम वैराग्यवान प्रभु का सुमिरन करने से इस जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को जीत लिया जाता है। सभी सच्चे गुरु की शरण में आ जाओ जिससे दुखों के सभी दाग (कलंक) नष्ट हो जाते हैं ।। १४ ।। श्लोक महला ४ ।। मैं अपने प्रियतम सज्जन प्रभु को ढूँढ़ती भटक रही हूँ परन्तु वह सज्जन तो मेरे साथ ही है। हे दास नानक, उस अदृष्ट प्रभु को देखा नहीं जाता परन्तु गुरमुख पुरुष हमें उसका प्रत्यक्ष साक्षात्कार करा देते हैं ।। १ ।। महला ४ ।। नानक ने तो उस सच्चे से प्रीति लगा ली है और अब उसके बिना रहा नहीं जाता। सच्चा गुरु मिले तो पूर्ण प्रभु प्राप्त होता है और जीभ प्रभु के रस में रसपूर्ण हो जाती है ।। २ ।। पउड़ी ।। कोई गाता है, कोई सुनता है और कोई उसके नाम का उच्चारण करते हुए अन्यों को सुनाता है। इन सबकी जन्मों-जन्मों की मैल उतर जाती है और ये मनोवांछित फल प्राप्त कर लेते हैं। प्रभु का गुणानुवाद करने से आवगमन मिट जाता है और इस प्रकार व्यक्ति स्वयं तो पार उतरता ही है सारे कुटुम्ब को भी पार उतार लेता है। दास नानक तो उस पर बलिहारी जाता है जो मेरे प्रभु को अच्छा लगता है ।। १५ ।। १।। शुद्ध अर्थात मूल के साथ मिलान किया हुआ।

रागु कानड़ा वाणी नामदेव जी की   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

वह अन्तर्यामी प्रभु ऐसा है जैसे दर्पण में प्रत्यक्ष चेहरा दिखाई देता है ।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रत्येक हृदय में बसता है परन्तु उस पर कोई भी माया का लेप अथवा छाया (दाग) नहीं है। वह बन्धनों से मुक्त है और जाता हुआ भी दिखाई नहीं देता ।। १ ।। जिस प्रकार पानी में अपना ही मुख देखा जाता है, नामदेव का स्वामी विट्ठल प्रभु वैसा ही है अर्थात वह ही हम सब में समाया हुआ है ।। २ ।। १ ।।

रागु कलिआन महला ४

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रामा रम रामै अंतु न पाइआ ॥ हम बारिक प्रतिआरे तुमरे तू बड पुरखु पिता मेरा माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम असंख अगम हहि अगम अगम हरि राइआ ॥ गुणी गिआनी सुरति बहु कीनी इकु तिलु नही कीमति पाइआ ॥ १ ॥ गोबिद गुण गोबिद सद गावहि गुण गोबिद अंतु न पाइआ ॥ तू अमिति अतोलु अपरंपर सुआमी बहु जपीऐ थाह न पाइआ ॥ २ ॥ उसतति करहि तुमरी जन माधौ गुन गावहि हरि राइआ ॥ तुम्ह जल निधि हम मीने तुमरे तेरा अंतु न कतहू पाइआ ॥ ३ ॥ जन कउ क्रिपा करहु मधसूदन हरि देवहु नामु जपाइआ ॥ मै मूरख अंधुले नामु टेक है जन नानक गुरमुखि पाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कलिआनु महला ४ ॥ हरि जनु गुन गावत हसिआ ॥ हरि हरि भगति बनी मति गुरमति धुरि मसतकि प्रभि लिखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के पग सिमरउ दिनु राती मनि हरि हरि हरि बसिआ ॥ हरि हरि हरि कीरति जगि सारी घसि चंदनु जसु घसिआ ॥ १ ॥ हरि जन हरि हरि हरि लिव लाई सभि साकत खोजि पइआ ॥ जिउ किरत संजोगि चलिओ नर निंदकु पगु नागनि छुहि जलिआ ॥ २ ॥ जन के तुम्ह हरि राखे सुआमी तुम्ह जुगि जुगि जन रखिआ ॥ कहा भइआ दैति करी बखीली सभ करि करि झरि परिआ ॥ ३ ॥ जेते जीअ जंत प्रभि कीए सभि कालै मुखि ग्रसिआ ॥ हरि जन हरि हरि हरि प्रभि राखे जन नानक सरनि पइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ कलिआन महला ४ ॥

राग कलिआन महला ४

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

उस सर्वव्यापक प्रभु के रहस्य को कोई नहीं जान पाया है। हम तो तुम्हारे द्वारा ही पालित एवं पोषित बालक हैं; तू ही महान और सर्वव्यापक हमारी माता और पिता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के नाम तो असंख्य और पहुँच से परे बने रहने वाले हैं और वह राजा प्रभु भी असंख्य और अगम्य ही बना रहता है। गुणीजनों, ज्ञानी पुरुषों ने उसका बहुत चिंतन किया परन्तु एक तिल मात्र भी उसके महत्व को नहीं जान सके ।। १ ।। जो सदैव उस गोविन्द प्रभु के गुण गाते रहते हैं वे भी उस प्रभु के गुणों के रहस्य को नहीं जान पाते। हे प्रभु, तू सीमातीत, अतुलनीय, अपरम्पार और हमारे मालिक हो; तुम्हारा बहुत सुमिरन करने से भी तुम्हारी गहराई को नहीं जाना जा सकता है ।। २ ।। हे प्रभु, तुम्हारे सेवक तुम्हारी ही स्तुति करते हैं और सम्राट प्रभु के ही गुण गाते हैं। तुम समुद्र हो और हम तुम्हारी मछलियां हैं परन्तु इस रहस्य को हम कभी भी नहीं जान पाए हैं ।। ३ ।। हे प्रभु, इस सेवक पर कृपा करो और मुझे यह दान दो कि मैं तुम्हारे नाम का जाप करता रहूँ। मुझ मूर्ख और अन्धे व्यक्ति का आसरा तो केवल एक तेरा नाम ही है और हे दास नानक, उसे गुरमुख बनकर ही प्राप्त किया जाता है ।। ४ ।। १ ।। कलिआन महला ४ ।। प्रभु का सेवक उसके गुण गाते हुए खिल उठा है। जैसा कि प्रभु ने अपनी ओर से ही हमारे माथे पर लिख दिया था गुरु के उपदेश के माध्यम से अब प्रभु की भक्ति हमसे बन पड़ी है ।। १ ।। रहाउ ।। अब गुरु के चरणों का सुमिरन दिन रात होता है और मन में वह प्रभु आन बसा है। जिस प्रकार चन्दन को घिसकर सुगन्धि को फैलाया जाता है उसी प्रकार प्रभु के यश की कीर्ति सारे संसार में फैली हुई है ।। १ ।। प्रभु के सेवकों ने जब प्रभु में अपनी लौ लगा ली तो प्रभु से टूटे हुए लोग हमारी निन्दा के लिए हमारी खोज करने लगे। ऐसे निन्दक व्यक्ति अपने संस्कारों के अनुरूप बने स्वभाव के अनुसार दौड़ भाग करते रहे परन्तु इसी उपक्रम में माया नागिन से स्पर्श हो जाने के कारण उसके विष के प्रभाव से उनका पैर जल गया ।। २ ।। हे स्वामी, तुम अपने सेवकों के रक्षक हो और हर युग में तुमने अपने सेवकों की रक्षा की है। क्या हुआ यदि दैत्य हिरण्यकश्यपु ने तुम्हारी निन्दा की; इस प्रकार के सभी लोग निन्दा करते हुए ही मर खप गए हैं ।। ३ ।। प्रभु ने जितने भी जीव जन्तु उत्पन्न किए हैं काल ने उन सबको खा लिया है। प्रभु के सेवकों को प्रभु ने स्वयं बचाया है और दास नानक तो प्रभु की शरण में ही आ पड़ा है ।। ४ ।। २ ।। कलिआनु महला ४ ।।

मेरे मन जपु जपि जगंनाथे ॥ गुर उपदेसि हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख दुख लाथे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना एक जसु गाइ न साकै बहु कीजे बहु रसुनथे ॥ बार बार खिनु पल सभि गावहि गुन कहि न सकहि प्रभ तुमनथे ॥ १ ॥ हम बहु प्रीति लगी प्रभ सुआमी हम लोचह प्रभु दिखनथे ॥ तुम बड दाते जीअ जीअन के तुम जान्हु हम बिरथे ॥ २ ॥ कोई मारगु पंथु बतावै प्रभ का कहु तिन कउ किआ दिनथे ॥ सभु तनु मनु अरपउ अरपि अरापउ कोई मेलै प्रभ मिलथे ॥ ३ ॥ हरि के गुन बहुत बहुत बहु सोभा हम तुछ करि करि बरनथे ॥ हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै जन नानक के प्रभ समरथे ॥ ४ ॥ ३ ॥ कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि गुन अकथ सुनथई ॥ धरमु अरथु सभु कामु मोखु है जन पीछै लगि फिरथई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो हरि हरि नामु धिआवै हरि जनु जिसु बडभाग मथई ॥ जह दरगहि प्रभु लेखा मागै तह छुटै नामु धिआइथई ॥ १ ॥ हमरे दोख बहु जनम जनम के दुखु हउमै मैलु लगथई ॥ गुरि धारि क्रिपा हरि जलि नावाए सभ किलबिख पाप गथई ॥ २ ॥ जन कै रिद अंतरि प्रभु सुआमी जन हरि हरि नामु भजथई ॥ जह अंती अउसरु आइ बनतु है तह राखै नामु साथई ॥ ३ ॥ जन तेरा जसु गावहि हरि हरि प्रभ हरि जपिओ जगंनथई ॥ जन नानक के प्रभ राखे सुआमी हम पाथर रखु बुडथई ॥ ४ ॥ ४ ॥ कलिआन महला ४ ॥ हमरी चितवनी हरि प्रभु जानै ॥ अउरु कोई निंद करै हरि जन की प्रभु ता का कहिआ इकु तिलु नही मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउर सभ तिआगि सेवा करि अचुत जो सभ ते ऊच ठाकुरु भगवानै ॥ हरि सेवा ते कालु जोहि न साकै चरनी आइ पवै हरि जानै ॥ १ ॥ जा कउ राखि लेइ मेरा सुआमी ता कउ सुमति देइ पै कानै ॥ ता कउ कोई अपरि न साकै जा की भगति मेरा प्रभु मानै ॥ २ ॥ हरि के चोज विडान देखु जन जो खोटा खरा इक निमख पछानै ॥ ता ते जन कउ अनदु भइआ है रिद सुध मिले खोटे पछुतानै ॥ ३ ॥ तुम हरि दाते समरथ सुआमी इकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥ जन नानक कउ हरि क्रिपा करि दीजै सद बसहि

हे मेरे मन, तू उस जगन्नाथ प्रभु का सुमिरन कर। गुरु के उपदेश के माध्यम से जब प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है तब सभी पाप और दुख समाप्त हो जाते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हमारी एक जीभ तो तुम्हारे यश का गायन नहीं कर सकती इसलिए हमें अनेकों जीभों वाला बना दो। ये अनेकों जीभें यदि बार-बार प्रत्येक क्षण तुम्हारे गुण गाती रहें तो फिर भी तुम्हारे गुणों का वर्णन नहीं कर सकतीं ।। १ ।। हमारी प्रीति अनेकों प्रकार से उस प्रभु से लगी हुई है और उस प्रभु के दर्शन की इच्छा हम मन में पाले हुए हैं। हे प्रभु, तुम ही सभी जीवों के महान दाता हो और तुम ही हमारे हृदय की व्यथा को जानते हो ।। २ ।। जो कोई मुझे प्रभु का मार्ग बता दे, मुझे बताओ भला मैं उसे क्या अर्पण करूं। जो कोई भी मुझे प्रभु से मिला दे मैं उसे तन मन और अपना सब कुछ अर्पण कर दूंगा ।। ३ ।। प्रभु के गुण और उसकी शोभा बहुत-बहुत अधिक है; हमारा वर्णन तो बहुत तुच्छ सा है। हे सेवक नानक के समर्थ प्रभु, हमारी मति तो सब तुम्हारे ही वश में है ।। ५ ।। ३ ।। कलिआन महला ४ ।। हे मेरे मन, उस प्रभु का सुमिरन कर जिसके गुणों को अकथनीय सुना जाता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि तो उस प्रभु के सेवक के पीछे-पीछे चलते रहते हैं ।। १।। रहाउ ।। प्रभु का वही सेवक प्रभु के नाम का सुमिरन करता है जिसके माथे पर बड़ा भाग्य लेख लिखा होता है। जब प्रभु के दरबार में जीवन का लेखा-जोखा माँगा जाता है तो वहाँ नाम सुमिरन के कारण ही छुटकारा होता है ।। १ ।। अनेकों जन्मों के दोष हममें विद्यमान हैं और उन्हीं से हमें दुख और अहंकार की मैल लगी हुई है। गुरु ने कृपा धारण करके प्रभु रूपी जल में हमें स्नान कराया है और हमारे सभी क्लेश और पाप चले गए हैं ।। २ ।। हे स्वामी प्रभु, तेरे सेवक के हृदय में तू मालिक बनकर बसा हुआ है इसलिए तेरे सेवक प्रभु-नाम का ही सुमिरन करते रहते हैं। जब अन्तिम समय आ बनता है तो वहाँ प्रभु-नाम ही साथी बनकर हमारी रक्षा करता है ।। ३ ।। तेरे सेवक ने तेरे ही यश का गायन करते हुए उस जगत के स्वामी प्रभु का सुमिरन किया है। दास नानक के रक्षक प्रभु, हमारी रक्षा कर लो और हम डूबते हुए पत्थरों को बचा लो ।।४ ।।४ ।।कलिआन महला ४ ।। हमारे हृदय के भाव को वह प्रभु अच्छी तरह जानता है। अन्य कोई भी प्रभु के सेवक की निन्दा करे तो प्रभु उस निन्दक का कहा हुआ तिल मात्र भी नहीं मानता ।। १।। रहाउ ।। तू अन्य सब को त्यागकर उस अटल प्रभु की सेवा कर जो सबसे ऊँचा ठाकुर प्रभु है। प्रभु की सेवा से काल भी व्यक्ति को ढूंढ नहीं पाता क्योंकि जीव प्रभु के चरणों में आकर पड़ा हुआ होता है ।। १ ।। जिसे मेरा प्रभु बचा लेता है वास्तव में वह उसके कानों में ही सुबुद्धि का मन्त्र दे देता है। जिस की भक्ति को मेरा प्रभु मान्यता देता है उस व्यक्ति की शोभा तक को कोई भी पहुँच नहीं पाता ।।२ ।।हे प्रभु के सेवक, तू प्रभु के कौतुक और बड़प्पन को देख ले। वह खोटे और खरे को एक क्षण में पहचान लेता है। इसी कारण सेवक का हृदय आनन्दित हो गया है क्योंकि उस प्रभु से शुद्ध हृदय वाले ही मिलते हैं और खोटे व्यक्ति पछताते रह जाते हैं ।। ३ ।। हे दाता प्रभु, तुम समर्थ स्वामी हो और मैं तुझसे एक दान माँगता हूँ। दास नानक को कृपा करके यह दान दो कि मेरे हृदय में सदैव प्रभु के चरण बसते

रिदै मोहि हरि चरानै ॥ ४ ॥ ५ ॥ कलिआन महला ४ ॥ प्रभ कीजै क्रिपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावाहिगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥ १ ॥ जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥ २ ॥ जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥ जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥ ३ ॥ हरि आपे होइ क्रिपालु आपि लिव लावहिगे ॥ जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

कलिआनु भोपाली महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पारब्रहमु परमेसुरु सुआमी दूख निवारणु नाराइणे ॥ सगल भगत जाचहि सुख सागर भव निधि तरण हरि चिंतामणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल जगदीस दमोदर हरि अंतरजामी गोबिंदे ॥ ते निरभउ जिन स्रीरामु धिआइआ गुरमति मुरारि हरि मुकंदे ॥ १ ॥ जगदीसुर चरन सरन जो आए ते जन भव निधि पारि परे ॥ भगत जना की पैज हरि राखै जन नानक आपि हरि क्रिपा करे ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

रागु कलिआनु महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हमारै एह किरपा कीजै ॥ अलि मकरंद चरन कमल सिउ मनु फेरि फेरि रीझै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन जला सिउ काजु न कछूऐ हरि बूंद चात्रिक कउ दीजै ॥ १ ॥ बिनु मिलबे नाही संतोखा पेखि दरसनु नानकु जीजै ॥ २ ॥ १ ॥ कलिआन महला ५ ॥ जाचिकु नामु जाचै जाचै ॥ सरब धार सरब के नाइक सुख समूह के दाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केती केती मांगनि मागै भावनीआ सो पाईऐ ॥ १ ॥ सफल सफल सफल दरसु रे परसि परसि गुन गाईऐ ॥ नानक तत तत सिउ मिलीऐ हीरै हीरु बिधाईऐ ॥ २ ॥ २ ॥

रहें ।। ४ ।। ५ ।। कलिआन महला ४ ।। हे कृपा निधान प्रभु, हम पर कृपा करो कि हम आपके गुण गाते रहें। मैं तो सदैव तुझ पर ही आशा लगाए रहता हूँ कि प्रभु मुझे कब अपने गले लगाऐंगे ।। १ ।। रहाउ ।। हम मूर्ख और अनजान बालक हैं परन्तु पिता प्रभु हमें समझाते रहते हैं। पुत्र तो प्रत्येक क्षण भूल करते हुए कुछ ना कुछ बिगाड़ता ही रहता है परन्तु सारे संसार के पिता प्रभु को वह फिर भी अच्छा ही लगता है ।। १ ।। हे स्वामी प्रभु, जो तुम दोगे हम वही प्राप्त कर सकेंगे। मेरे पास तो कोई दूसरा ठिकाना भी नहीं है जिसके पास हम जा सकेंगे ।। २ ।। जिन भक्तों को प्रभु की भक्ति भाती है वास्तव में उन्हीं को ही प्रभु अच्छा लगता है। वे अपनी ज्योति को प्रभु की ज्योति में मिलाकर परम ज्योति में लीन हो जाते हैं ।। ३ ।। प्रभु जब स्वयं ही कृपालु हो तभी हम अपनी लौ उसमें लगा सकेंगे। दास नानक तो प्रभु के द्वार पर पहुँच कर प्रभु की ओर ही लगा हुआ है और प्रभु की ओर लगने से उसकी रक्षा होती है ।। ४ ।। ६ ।। छका १ ।।

कलिआनु भोपाली महला ४   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

वह स्वामी परमेश्वर परब्रह्म है और दुखों को दूर करने वाला नारायण है। सभी भक्त सुखों के सागर उस प्रभु की कामना करते हैं जो संसार सागर की नाव के रूप में मन में चिन्तन करने के साथ ही मुँह माँगी मुराद देने वाला प्रभु है ।। १ ।। रहाउ ।। यह दीनदयालु जगदीश्वर, दामोदर और अन्तर्यामी प्रभु है। जिन्होंने श्री राम अर्थात प्रभु का सुमिरन किया है वे निर्भय हो जाते हैं और गुरु की शिक्षा के माध्यम से मुरारी और मुकन्द प्रभु को जान जाते हैं ।। १ ।। जगदीश्वर प्रभु के चरणों की शरण में जो आ गए हैं प्रभु के वे सेवक संसार सागर से पार उतर जाते हैं। भक्तजनों की इज़्ज़त प्रभु स्वयं बचाता है और हे दास नानक, प्रभु स्वयं ही कृपा करता है ।। २ ।। १ ।। ७ ।।

रागु कलिआनु महला ५ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु हमारे पर यह कृपा करो कि जैसे भँवरा मकरन्द पर आसक्त बना रहता है उसी प्रकार मेरा मन भी बार-बार तुम्हारे चरण कमलों से लगा रहे ।। १ ।। रहाउ ।। मुझे अन्य किसी प्रकार के जल से कुछ भी लेना देना नहीं है; मुझ चातक को प्रभु-नाम रूपी बूंद प्रदान करो ।। १ ।। तुमसे मिले बिना सन्तोष नहीं आता और नानक तो तुम्हारा दर्शन देखकर जीवित बना रहता है ।। २ ।। १ ।। कलिआन महला ५ ।। यह याचक तो बार-बार प्रभु-नाम की ही याचना करता है। हे प्रभु, तुम सबको धारण करने वाले, सबके नायक और सुखों के भण्डार के दाता हो ।। १ ।। रहाउ ।। सारी सृष्टि कितनी ही चीजों को माँगती है परन्तु जिसकी भावना प्रभु में लीन बनी रहती है वही प्राप्त करता है ।। १।। उसका दर्शन सफल कर देने वाला है और हम उसके स्पर्श को पाकर उसके गुण गाते रहे हैं। हे नानक, उस परम तत्व से मिलाप किया जाए और प्रभु रूपी हीरे से अपने मन रूपी हीरे को बींधा जाए ।। २ ।। २ ।।

कलिआन महला ५ ॥ मेरे लालन की सोभा ॥ सद नवतन मन रंगी सोभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा भगति दानु जसु मंगी ॥ १ ॥ जोग गिआन धिआन सेखनागै सगल जपहि तरंगी ॥ कहु नानक संतन बलिहारै जो प्रभ के सद संगी ॥ २ ॥ ३ ॥

कलिआन महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तेरै मानि हरि हरि मानि ॥ नैन बैन स्रवन सुनीऐ अंग अंगे सुख प्रानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इत उत दह दिसि रविओ मेर तिनहि समानि ॥ १ ॥ जत कता तत पेखीऐ हरि पुरख पति परधान ॥ साधसंगि भ्रम भै मिटे कथे नानक ब्रहम गिआन ॥ २ ॥ १ ॥ ४ ॥ कलिआन महला ५ ॥ गुन नाद धुनि अनंद बेद ॥ कथत सुनत मुनि जना मिलि संत मंडली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआन धिआन मान दान मन रसिक रसन नामु जपत तह पाप खंडली ॥ १ ॥ जोग जुगति गिआन भुगति सुरति सबद तत बेते जपु तपु अखंडली ॥ ओति पोति मिलि जोति नानक कछू दुखु न डंडली ॥ २ ॥ २ ॥ ५ ॥ कलिआनु महला ५ ॥ कउनु बिधि ता की कहा करउ ॥ धरत धिआनु गिआनु ससत्रगिआ अजर पदु कैसे जरउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसन महेस सिध मुनि इंद्रा कै दरि सरनि परउ ॥ १ ॥ काहू पहि राजु काहू पहि सुरगा कोटि मधे मुकति कहउ ॥ कहु नानक नाम रसु पाईऐ साधू चरन गहउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥ कलिआन महला ५ ॥ प्रानपति दइआल पुरख प्रभ सखे ॥ गरभ जोनि कलि काल जाल दुख बिनासनु हरि रखे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम धारी सरनि तेरी ॥ प्रभ दइआल टेक मेरी ॥ १ ॥ अनाथ दीन आसवंत ॥ नामु सुआमी मनहि मंत ॥ २ ॥ तुझ बिना प्रभ किछू न जानू ॥ सरब जुग महि तुम पछानू ॥ ३ ॥ हरि मनि बसे निसि बासरो ॥ गोबिंद नानक आसरो ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥ कलिआन महला ५ ॥ मनि तनि जापीऐ भगवान ॥ गुर पूरे सुप्रसंन भए सदा सूख कलिआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब कारज सिधि भए गाइ गुन गुपाल ॥ मिलि साधसंगति प्रभू सिमरे नाठिआ दुख काल ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ मेरिआ करउ दिनु रैनि

कलिआन महला ५ ।। मेरे प्यारे प्रभु की शोभा सदैव नई और मन को रंगने वाली है ।। १ ।। रहाउ ।। ब्रह्मा, महेश, सिद्ध, मुनि, इन्द्र आदि सभी तुम्हारे यश और भक्ति का दान माँगते हैं ।। १ ।। योगी ज्ञान में और शेषनाग अपने ध्यान में कौतुक करने वाले प्रभु का ही जाप करते हैं। नानक का कथन है कि वह तो सन्तजनों पर बलिहारी जाता है जो सदैव प्रभु की संगत में ही बने रहते हैं ।। २ ।। ३ ।।

कलिआन महला ५ घरु २ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे प्रभु तुझे मानने से ही हम सम्मान वाले बनते हैं। नैनों के साथ देखने से, जीभ के साथ बोलने से और कानों के साथ उसका नाम सुनने से अंग अंग में और श्वास-श्वास में प्राणों को सुख मिलता है ।। १ ।। रहाउ ।। इधर-उधर दसों दिशाओं में पर्वत और तिनके में वह एक समान होकर कार्यशील है ।। १ ।। जिधर कहीं भी देखा जाता है वह पति रूपी प्रभु पुरुष प्रमुख बना हुआ दिखाई देता है। साधसंगत में भ्रम और भय मिट जाते हैं और हे नानक, ब्रह्मज्ञान का तात्पर्य यही है ।। २ ।। १ ।। ४ ।। कलिआन महला ५ ।। शब्द की धुन और आनन्द देने वाले वेद (ज्ञान) मुनि लोग सन्त सभा में चिंतन करते और सुनते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। वे मन और जीभ के साथ रसपूर्ण होकर प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं और पापों का खण्डन करते हैं ।। १ ।। योग की युक्ति के साथ ज्ञान के भोजन के साथ सुरति को सबमें लीन करके तत्ववेत्ता लगातार जप और तप कर रहे हैं। उस परम ज्योति से मिलकर वे उसी में ओत-प्रोत हो जाते हैं और हे नानक, उन्हें फिर कोई दुख और दण्ड नहीं मिलता ।। २ ।। २ ।। ५ ।। कलिआनु महला ५ ।। उसको मिलने की कौन सी विधि है और मैं उसके लिए क्या करूं। कई ध्यान लगाते हैं, शास्त्रों के ज्ञाता ज्ञान की बातें करते हैं परन्तु मैं इस असह्य अवस्था को कैसे सहन करूं अर्थात किस प्रकार प्रभु से मिलूं ।। १ ।। रहाउ ।। विष्णु, महेश, सिद्ध, मुनि, इन्द्र आदि में से किसके द्वार पर जाकर उनकी शरण में पड़ूं क्योंकि ये सब मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते ।। १ ।। कोई राज देने वाला और कोई स्वर्ग देने वाला बनता है परन्तु मुक्ति करोड़ों में से किसी के पास ही है। नानक का कथन है कि मैं अब साधु पुरुषों के ही चरण पकड़ता हूँ क्योंकि उन्हीं से प्रभु-नाम के रस को प्राप्त किया जाता है ।। २ ।। ३ ।। ६ ।। कलिआन महला ५ ।। प्राणों के पति दयालु एवं सर्वव्यापक प्रभु, तुम्हीं मेरे साथी हो। हे प्रभु, तू ही आवागमन और कलियुग की कालिमा और बन्धनों के दुख काटने वाला सच्चा रक्षक है ।। १ ।। रहाउ।। मैं नाम का सुमिरन करता हूँ और तेरी शरण में आया हूँ क्योंकि दयालु प्रभु ही मेरा आसरा है ।। १ ।। मैं अनाथ और दीन तुझ पर आशा लगाए हुए हूँ और प्रभु-नाम ही मेरे मन में मन्त्र के समान है ।। २ ।। हे प्रभु, तेरे बिना मैं किसी को भी नहीं जानता और सभी युगों में केवल तुझे ही पहचानता हूँ ।। ३ ।। दिन रात प्रभु ही मेरे मन में बसता है और प्रभु ही नानक का आसरा है ।। ४ ।। ४ ।। ७ ।। कलिआन महला ५ ।। तन मन से उस प्रभु का सुमिरन किया जाना चाहिए। जब पूर्ण गुरु सुप्रसन्न हो जाता है तो सदैव सुख और सकुशलता बनी रहती है ।। १ ।। रहाउ।। उस प्रभु का गुणानुवाद करने से सभी कार्य सिद्ध हो गए है। साधसंगत से मिलकर जब हमने प्रभु का सुमिरन किया तो मौत का दुख भाग खड़ा हुआ है ।। १ ।। हे मेरे प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि मैं दिन रात

सेव ॥ नानक दास सरणागती हरि पुरख पूरन देव ॥ २ ॥ ५ ॥ ८ ॥ कलिआनु महला ५ ॥ प्रभु मेरा अंतरजामी जाणु ॥ करि किरपा पूरन परमेसर निहचलु सचु सबदु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि बिनु आन न कोई समरथु तेरी आस तेरा मनि ताणु ॥ सरब घटा के दाते सुआमी देहि सु पहिरणु खाणु ॥ १ ॥ सुरति मति चतुराई सोभा रूपु रंगु धनु माणु ॥ सरब सुख आनंद नानक जपि राम नामु कलिआणु ॥ २ ॥ ६ ॥ ९ ॥ कलिआनु महला ५ ॥ हरि चरन सरन कलिआन करन ॥ प्रभ नामु पतित पावनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि जपि निसंग जमकालु तिसु न खावनो ॥ १ ॥ मुकति जुगति अनिक सूख हरि भगति लवै न लावनो ॥ प्रभ दरस लुबध दास नानक बहुड़ि जोनि न धावनो ॥ २ ॥ ७ ॥ १० ॥

कलिआन महला ४ असटपदीआ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामा रम रामो सुनि मनु भीजै ॥ हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कासट महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै ॥ राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै ॥ १ ॥ नउ दरवाज नवे दर फीके रसु अंम्रितु दसवे चुईजै ॥ क्रिपा क्रिपा किरपा करि पिआरे गुर सबदी हरि रसु पीजै ॥ २ ॥ काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै ॥ रतन लाल अमोल अमोलक सतिगुर सेवा लीजै ॥ ३ ॥ सतिगुरु अगमु अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै ॥ क्रिपा क्रिपा करि दीन हम सारिंग इक बूंद नामु मुखि दीजै ॥ ४ ॥ लालनु लालु लालु है रंगनु मनु रंगन कउ गुर दीजै ॥ राम राम राम रंगि राते रस रसिक गटक नित पीजै ॥ ५ ॥ बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु काढि धरीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै ॥ ६ ॥ साकत नर प्रानी सद भूखे नित भूखन भूख करीजै ॥ धावतु धाइ धावहि प्रीति माइआ लख कोसन कउ बिथि दीजै ॥ ७ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किआ उपमा तिन्ह दीजै ॥

तुम्हारी ही सेवा करता रहूँ। दास नानक तो उस सर्वव्यापक पूर्ण प्रभु की शरण में आ गया है ।। २ ।। ५ ।। ८ ।। कलिआनु महला ५ ।। मेरा प्रभु अन्तर्यामी सब कुछ जानने वाला है। हे पूर्ण परमेश्वर, कृपा करो ताकि सच्चा शब्द अटल रूप से मुझे प्रत्यक्ष हो जाए ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के बिना अन्य कोई भी समर्थ नहीं है इसलिए हे प्रभु, हमें तुझसे ही आशा है और मन में तुम्हारा ही बल है। सभी शरीरों को देने वाले दाता स्वामी तू ही सब को खाने पहनने के लिए देने वाला है ।। १ ।। सुरति, मति, चतुराई, शोभा, रूप रंग, धन, मान-सम्मान और सभी प्रकार से सुख आनन्द हे नानक, प्रभु-नाम के जाप और सुमिरन के द्वारा ही कल्याणकारी बनते हैं ।। २ ।। ६ ।। ९ ।। कलिआन महला ५।। प्रभु के चरणों का आसरा मोक्ष देने वाला है। प्रभु-नाम ही पतितों को पवित्र करने वाला है ।। १ ।। रहाउ ।। साधसंगत में जबनिर्भय होकर प्रभु का नाम जपा जाता है तो ऐसे व्यक्ति को यमकाल नहीं मार पाता ।। १ ।। मुक्ति, अनेकों मुक्तियाँ और सुख प्रभु की भक्ति के बराबर नहीं पहुँच पाते; दास नानक तो प्रभु के दर्शनों की आकांक्षा करता है ताकि फिर योनियों में ना भटकना पड़े ।। २ ।। ७ ।। १० ।।

कलिआन महला ४ अष्टपदियाँ   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सर्वत्र व्यापक प्रभु का नाम सुनकर यह मन प्रसन्न होता है। हे जीव, प्रभु का नाम अमृत रस के समान मीठा है और उसे गुरु की शिक्षा के माध्यम से स्वाभाविक रूप से ही पी लिया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। लकड़ी में ही जैसे अग्नि होती है और उसे विधिपूर्वक निकाल लिया जाता है उसी प्रकार सब में प्रभु-नाम की तत्त्वज्योति विद्यमान बनी हुई है जिसे गुरु की शिक्षा में चलकर ही बाहर निकाल कर कार्यशील किया जाता है ।। १ ।। शरीर के नौ द्वार हैं और उन द्वारों के स्वाद फीके हैं; अमृत रस तो दशम द्वार पर टपकता है। हे प्यारे प्रभु, कृपा करो ताकि हम शब्द-गुरु के माध्यम से हरि रस का पान करते रहें ।। २ ।। यह शरीर रूपी नगरी बड़ी सुन्दर है परन्तु इसमें प्रभु के रस का सौदा किया जाना चाहिए। सच्चे गुरु की सेवा करके इसमें से बहुमूल्य नाम रूपी रत्न और जवाहिर प्राप्त किए जाते हैं ।। १ ।। सच्चा गुरु अगम्य ठाकुर है जो सागर की तरह भरा हुआ है। हमें सदैव उसी की भक्ति करते रहना चाहिए। हम दीन पपीहे जैसे हैं। हे प्रभु, हम पर कृपा करो और अपने नाम की एक बूंद हमारे मुख में डाल दो ।। ५ ।। मेरा प्यारा प्रभु लाल है और रंगने वाली मटकी भी लाल है। अब इस मन को रंगने के लिए इसे गुरु को अर्पण कर दिया जाना चाहिए। प्रभु के प्रेम के रंग में रंगे हुए प्रभु के प्रेम रस को स्वादपूर्वक रस लेकर सदैव गटागट पीते रहना चाहिए ।। ५ ।। यह धरती, सातों द्वीप और यह विशाल सागर फैला हुआ है। इसमें कंचन जैसा अमूल्य पदार्थ है जिसे बाहर निकालकर उपयोगी बनाना चाहिए। परन्तु मेरे ठाकुर के सेवक इन सबको नहीं चाहते, वे तो केवल प्रभु से हरि रस माँगते हैं; हे प्रभु, इन्हें यह रस प्रदान करो ।। ६ ।। प्रभु से टूटे हुए लोग सदैव भूखे बने रहते हैं और हमेशा भूख-भूख ही चिल्लाते रहते हैं। धन के लिए ये दौड़ते-भागते हुए लाखों कोसों के फासले पर भी पहुँच जाते हैं ।। ७ ।। प्रभु के सेवक ही सबसे उत्तम हैं; उनकी तुलना भला किसके साथ की जाए।

राम नाम तुलि अउर न उपमा जन नानक क्रिपा करीजै ॥ ८ ॥ १ ॥
कलिआन महला ४ ॥ राम गुरु पारसु परसु करीजै ॥ हम निरगुणी मनूर
अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग मुकति बैकुंट
सभि बांछहि निति आसा आस करीजै ॥ हरि दरसन के जन मुकति न मांगहि
मिलि दरसन त्रिपति मनु धीजै ॥ १ ॥ माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख
दाग लगीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन अलिपत है मुकते जिउ मुरगाई पंकु न
भीजै ॥ २ ॥ चंदन वासु भुइअंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदनु लीजै ॥ काढि
खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै ॥ ३ ॥ आनि आनि समधा
बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै ॥ महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि
साधू लूकी दीजै ॥ ४ ॥ साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥
परस निपरसु भए साधू जन जनु हरि भगवानु दिखीजै ॥ ५ ॥ साकत सूतु
बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥ तंतु सूतु किछु निकसै नाही
साकत संगु न कीजै ॥ ६ ॥ सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु
रवीजै ॥ अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै ॥ ७ ॥ मेरा ठाकुरु
वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै ॥ नानक मेलि मिलाए
गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै ॥ ८ ॥ २ ॥ कलिआनु महला ४ ॥ रामा रम
रामो रामु रवीजै ॥ साधू साध साध जन नीके मिलि साधू हरि रंगु कीजै ॥ १ ॥
रहाउ ॥ जीअ जंत सभु जगु है जेता मनु डोलत डोल करीजै ॥ क्रिपा क्रिपा
करि साधु मिलावहु जगु थंमन कउ थंमु दीजै ॥ १ ॥ बसुधा तलै तलै सभ
ऊपरि मिलि साधू चरन रुलीजै ॥ अति ऊतम अति ऊतम होवहु सभ सिसटि
चरन तल दीजै ॥ २ ॥ गुरमुखि जोति भली सिव नीकी आनि पानी सकति
भरीजै ॥ मैन दंत निकसे गुर बचनी सारु चबि चबि हरि रसु पीजै ॥ ३ ॥
राम नाम अनुग्रहु बहु कीआ गुर साधू पुरख मिलीजै ॥ गुन राम नाम बिसथीरन
कीए हरि सगल भवन जसु दीजै ॥ ४ ॥ साधू साध साध मनि प्रीतम बिनु
देखे रहि न सकीजै ॥ जिउ जल मीन जलं जल प्रीति है खिनु जल बिनु फूटि

राम नाम के समान अन्य कुछ भी नहीं है और हे प्रभु, दास नानक पर कृपा बनाए रखो ।। ८ ।। १ ।। कलिआन महला ४ ।। हे राम, मुझे पारस गुरु से स्पर्श कर दो। हम गुण विहीन निकम्मे लोहे की तरह बुरे हैं, हमें सच्चे गुरु से मिलाकर पारस बना दो ।। १ ।। रहाउ ।। स्वर्ग, मुक्ति, बैकुण्ठ आदि सभी माँगते हुए उनकी आशा लगाए रखते हैं। प्रभु के दर्शन चाहने वाले सेवक मुक्ति नहीं माँगते क्योंकि प्रभु का दर्शन करके ही उनका मन सन्तुष्ट होता है ।। १ ।। माया, मोह बहुत बलवान है और यह मोह पाप रूपी कालिमा के दाग लगा देता है। मेरे ठाकुर के सेवक उसी प्रकार अलिप्त और मुक्त बने रहते हैं जैसे मुर्गाबी पानी में रहते हुए भी अपने पंखों को भीगने नहीं देती ।। २ ।। इस चन्दन रूपी शरीर को वासनाओं के सर्पों ने जकड़ रखा है; हम कैसे मिलें और अन्तर-आत्मा के चन्दन को प्राप्त करें। गुरु के ज्ञान का कठोर खड़ग निकालकर विषय विकारों को काट-काट कर उस प्रभु-नाम का अमृत रस पीया जाता है ।। ३ ।। अनेकों प्रकार के बड़े पापों की मैंने लकड़ियां इकट्ठी की हुई हैं जिसे ज्ञान रूपी अग्नि पल भर में ही भस्म कर देती है। प्रभु से टूटे व्यक्ति ने महा उग्र पाप किए हुए हैं; अब उसे साधु पुरुषों के साथ मिलकर पापों की लकड़ियों में ज्ञान की चिंगारी लगा देनी चाहिए ।। ४ ।। साधना करने वाले साधु पुरुष अच्छे हैं जिन्होंने अन्तर्मन में प्रभु-नाम धारण किया हुआ है। जब साधु पुरुषों के चरण स्पर्श किए गए तो व्यक्ति सभी स्पर्शों से उपर उठ जाता है और उसे तो मानो प्रभु के दर्शन हो जाते हैं ।। ५ ।। प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति का जीवन-सूत्र उलझनों से भरा हुआ है, उसका ताना-बाना भला कैसे तना जाएगा। उसकी उलझनों वाले सूत्रों में से कुछ भी काम का नहीं निकल पाता इसलिए प्रभु से टूटे व्यक्ति की संगत नहीं की जानी चाहिए ।। ६ ।। सच्चे गुरु की साधसंगत अच्छी होती है और उस संगत में मिल बैठ कर प्रभु-नाम का सुमिरन करते रहना चाहिए। व्यक्ति के अन्दर ही नाम रूपी रत्न, जवाहिर और माणिक हैं; इन्हें गुरु की कृपा से ही प्राप्त करना चाहिए ।। ७ ।। मेरा ठाकुर स्वामी प्रभु बड़े से बड़ा है। हमारा मिलाप उससे कैसे हो सकेगा। हे नानक, पूर्ण गुरु ही मेल मिलाता है और वह प्रभु अपने सेवक को पूर्णता का पद प्रदान करता है ।। ८ ।। २ ।। कलिआन महला ४ ।। सबमें व्याप्त प्रभु का सुमिरन करना चाहिए। प्रभु के साधक साधुजन सुन्दर हैं। उन साधु पुरुषों से मिलकर प्रभु के साथ आनन्द उपभोग किया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। यह मन, संसार के सभी जीव-जन्तुओं में रहता हुआ डोलता रहता है। हे प्रभु, कृपा करके कोई आसरा प्रदान करों ।। १ ।। धरती सबके नीचे होती है और चरण-धूलि बनकर सबसे उपर चली जाती है इसलिए हम भी साधुजनों के चरणों में लोटते रहें। इस प्रकार अत्यन्त उत्तम बनते हुए सबसे श्रेष्ठ बन जाओ और सारी सृष्टि को अपने पाँव तले कर लो ।। २ ।। गुरमुखों की अन्तर-ज्योति सुन्दर भली और कल्याणकारी होती है तथा माया शक्ति भी आकर उनका पानी भरती है। गुरु के उपदेश के माध्यम से ऐसे मोम के दाँत निकल आए हैं जिनसे विकारों के लोहे को चबाकर हरि रस का पान किया जाता है ।। ३ ।। राम नाम ने हम पर बहुत कृपा की है जिससे सर्वव्यापक गुरु रूपी साधु पुरुष हमें मिल गया है। इस राम नाम ने गुणों का प्रसार किया है और यह समस्त लोकों में प्रभु का यश प्रदान करता है ।। ४ ।। वह प्रभु रूपी साधु साधक बनकर मेरे मन का प्रियतम रूप बना हुआ है जिसे देखे बिना रहा नहीं जा सकता। यह उसी प्रकार है जैसे जल की मछली जल से ही प्रीति बनाए रखती है और जल के बिना क्षण भर में ही फूट-फूटकर

मरीजै ॥ ५ ॥ महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूरि न पीजै ॥ तिना तिसना जलत जलत नही बूझहि डंडु धरम राइ का दीजै ॥ ६ ॥ सभि तीरथ बरत जग्य पुंन कीए हिवै गालि गालि तनु छीजै ॥ अतुला तोलु राम नामु है गुरमति को पुजै न तोल तुलीजै ॥ ७ ॥ तव गुन ब्रहम ब्रहम तू जानहि जन नानक सरनि परीजै ॥ तू जल निधि मीन हम तेरे करि किरपा संगि रखीजै ॥ ८ ॥ ३ ॥ कलिआन महला ४ ॥ रामा रम रामो पूज करीजै ॥ मनु तनु अरपि धरउ सभु आगै रसु गुरमति गिआनु द्रिड़ीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम नाम गुण साख तरोवर नित चुनि चुनि पूज करीजै ॥ आतम देउ देउ है आतमु रसि लागै पूज करीजै ॥ १ ॥ बिबेक बुधि सभ जग महि निरमल बिचरि बिचरि रसु पीजै ॥ गुर परसादि पदारथु पाइआ सतिगुर कउ इहु मनु दीजै ॥ २ ॥ निरमोलकु अति हीरो नीको हीरै हीरु बिधीजै ॥ मनु मोती सालु है गुर सबदी जितु हीरा परखि लईजै ॥ ३ ॥ संगति संत संगि लगि ऊचे जिउ पीप पलास खाइ लीजै ॥ सभ नर महि प्रानी ऊतमु होवै राम नामै बासु बसीजै ॥ ४ ॥ निरमल निरमल करम बहु कीने नित साखा हरी जड़ीजै ॥ धरमु फुलु फलु गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ बहकार बासु जगि दीजै ॥ ५ ॥ एक जोति एको मनि वसिआ सभ ब्रहम द्रिसटि इकु कीजै ॥ आतम रामु सभ एकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥ ६ ॥ नाम बिना नकटे नर देखहु तिन घसि घसि नाक वढीजै ॥ साकत नर अहंकारी कहीअहि बिनु नावै ध्रिगु जीवीजै ॥ ७ ॥ जब लगु सासु सासु मन अंतरि ततु बेगल सरनि परीजै ॥ नानक क्रिपा क्रिपा करि धारहु मै साधू चरन पखीजै ॥ ८ ॥ ४ ॥ कलिआन महला ४ ॥ रामा मै साधू चरन धुवीजै ॥ किलबिख दहन होहि खिन अंतरि मेरे ठाकुर किरपा कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंगल जन दीन खरे दरि ठाढे अति तरसन कउ दानु दीजै ॥ त्राहि त्राहि सरनि प्रभ आए मो कउ गुरमति नामु द्रिड़ीजै ॥ १ ॥ काम करोधु नगर महि सबला नित उठि उठि जूझु करीजै ॥ अंगीकारु करहु रखि लेवहु गुर पूरा काढि कढीजै ॥ २ ॥ अंतरि अगनि सबल

मर जाती है ।। ५ ।। जो घोर रूप से भाग्यहीन हैं उन्हें साधु पुरुषों की चरण-धूलि प्राप्त नहीं होती। उनकी तृष्णा की प्रचंड रूप से जलती हुई अग्नि बुझती नहीं और उन्हें ही धर्मराज का दण्ड झेलना पड़ता है ।। ६ ।। सभी तीर्थों पर व्रत, यज्ञ, पुण्य करना एवं बर्फ में तन को गला-गला कर नष्ट करना आदि उस अतुलनीय राम नाम और गुरु की शिक्षा के बराबर नहीं पहुँच सकते और ना ही इन सब की प्रभु-नाम से तुलना की जा सकती है ।। ७ ।। तेरे गुणों को हे परमात्मा केवल तू ही जानता है। दास नानक तो तेरी शरण में ही पड़ा है। तू जल का विशाल सागर है और हम तेरी मछलियां हैं। तू कृपा करके हमें अपने साथ बनाए रख ।। ८ ।। ३ ।। सर्वव्यापक प्रभु की ही पूजा करनी चाहिए। तन मन उसी के सामने अर्पण किया जाता है और गुरु की शिक्षा के माध्यम से उस नाम रस से उत्पन्न ज्ञान को अच्छी तरह समझा जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का नाम यह वृक्ष है जिसकी शाखाएँ सभी प्रकार के गुण हैं इसलिए सावधानीपूर्वक उस प्रभु की ही वन्दना करनी चाहिए। आत्मा ही वन्दना करने योग्य परमात्मा है और परमात्मा ही आत्मा रूप में जीव में स्थित है इसलिए इसके प्रेम में लगकर इसकी पूजा की जानी चाहिए ।। १ ।। नीर क्षीर की पहचान करने वाली विवेक बुद्धि ही इस संसार में सबसे निर्मल है इसलिए सबका आदर करते हुए विचार पूर्वक उस प्रभु-नाम के रस का पान करते रहना चाहिए। गुरु की कृपा से ही यह नाम रस रूपी पदार्थ प्राप्त होता है इसलिए यह मन सच्चे गुरु को अर्पण कर देना चाहिए ।। २ ।। प्रभु-नाम ही अत्यन्त सुन्दर और अमूल्य हीरा है तथा उस हीरे के साथ मन रूपी हीरे को बींधा जाता है। मन रूपी मोती शब्द-गुरु के द्वारा स्वयं ही जौहरी बन जाता है और फिर वह प्रभु-नाम रूपी हीरे को परख कर प्राप्त कर लेता है ।। ३ ।। जैसे पीपल का वृक्ष पलाश के वृक्ष को खाकर अपने में लीन कर लेता है उसी प्रकार सन्तजनों की संगत में लीन होकर व्यक्ति ऊँचा बन जाता है। सभी जीवों में व्यक्ति रूपी प्राणी उत्तम होता है जिसमें प्रभु-नाम की सुगन्ध बसी रहती है ।। ४ ।। वह बहुत से निर्मल कर्म करता है और इसीलिए उसके कार्य व्यवहार की शाखाएँ हरी भरी बनी रहती हैं। गुरु ने यही विस्तारपूर्वक समझाया है कि धर्म ही उस वृक्ष का फूल है और ज्ञान उसका फल है, इसलिए उसकी सुगन्ध को सारे संसार में फैलाना चाहिए ।। ५ ।। वह एक ही परम ज्योति के रूप में सबके मन में बसा हुआ है इसलिए ब्रह्म दृष्टि को धारण करते हुए सबको एक जैसा ही समझना चाहिए। आत्मा रूपी प्रभु सबमें फैला हुआ देखकर सबके चरणों पर अपना सिर टिकाए रखना चाहिए ।। ६ ।। प्रभु-नाम के बिना लोगों को नकटे के रूप में देखा जाता है क्योंकि वास्तव में उन्होंने दिखावे और प्रपंचों में ही अपनी नाक को घिस-घिस कर स्वयं ही काट लिया होता है। प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति अहंकारी कहे जाते हैं और प्रभु-नाम के बिना उनका जीव धिक्कार योग्य होता है ।। ७ ।। जब तक शरीर और मन में श्वास बना हुआ है तब तक शीघ्र ही दौड़कर प्रभु की शरण में आ पड़ना चाहिए। हे प्रभु, नानक पर कृपा धारण करो ताकि मैं साधु पुरुषों के चरणों को धोता रहूं ।। ८ ।। ४ ।। कलिआन महला ४ ।। हे प्रभु, मैं साधु पुरुषों के चरणों को धोता रहूं। हे प्रभु, कृपा करो जिससे मेरे पाप क्षण भर में ही नष्ट हो जाएं ।। १ ।। रहाउ ।। दीन भिखारी तेरे सेवक तेरे द्वार पर खड़े हैं और इन तरसते हुए लोगों को दान दीजिए। त्राहिमाम्-त्राहिमाम् कहते हुए हे प्रभु हम तुम्हारी शरण में आए हैं हमें गुरु की शिक्षा के माध्यम से अपने नाम का सुमिरन करवाते रहो ।। १ ।। इस शरीर रूपी नगर में काम-क्रोध अत्यन्त बलवान हैं और सदैव उठ-उठकर हमसे जूझते रहते हैं। हे प्रभु, हमारे पक्ष में होकर हमें बचा लो और पूर्ण गुरु के रूप में हमें इनसे बाहर निकाल लो ।। २ ।। अन्तर्मन में अत्यन्त बलवान विषय-विकारों की अग्नि है

अति बिखिआ हिव सीतलु सबदु गुर दीजै ॥ तनि मनि सांति होइ अधिकाई रोगु काटै सूखि सवीजै ॥ ३ ॥ जिउ सूरजु किरणि रविआ सरब ठाई सभ घटि घटि रामु रवीजै ॥ साधू साध मिले रसु पावै ततु निज घरि बैठिआ पीजै ॥ ४ ॥ जन कउ प्रीति लगी गुर सेती जिउ चकवी देखि सूरीजै ॥ निरखत निरखत रैनि सभ निरखी मुखु काढै अंम्रितु पीजै ॥ ५ ॥ साकत सुआन कहीअहि बहु लोभी बहु दुरमति मैलु भरीजै ॥ आपन सुआइ करहि बहु बाता तिना का विसाहु किआ कीजै ॥ ६ ॥ साधू साध सरनि मिलि संगति जितु हरि रसु काढि कढीजै ॥ परउपकार बोलहि बहु गुणीआ मुखि संत भगत हरि दीजै ॥ ७ ॥ तू अगम दइआल दइआ पति दाता सभ दइआ धारि रखि लीजै ॥ सरब जीअ जगजीवनु एको नानक प्रतिपाल करीजै ॥ ८ ॥ ५ ॥ कलिआनु महला ४ ॥ रामा हम दासन दास करीजै ॥ जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरु नारदु सेखनाग मुनि धूरि साधू की लोचीजै ॥ भवन भवन पवितु होहि सभि जह साधू चरन धरीजै ॥ १ ॥ तजि लाज अहंकारु सभु तजीऐ मिलि साधू संगि रहीजै ॥ धरम राइ की कानि चुकावै बिखु डुबदा काढि कढीजै ॥ २ ॥ भरमि सूके बहु उभि सुक कहीअहि मिलि साधू संगि हरीजै ॥ ता ते बिलमु पलु ढिल न कीजै जाइ साधू चरनि लगीजै ॥ ३ ॥ राम नाम कीरतन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥ जो बचनु गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै ॥ ४ ॥ संतहु सुनहु सुनहु जन भाई गुरि काढी बाह कुकीजै ॥ जे आतम कउ सुखु सुखु नित लोड़हु तां सतिगुर सरनि पवीजै ॥ ५ ॥ जे वड भागु होइ अति नीका तां गुरमति नामु द्रिड़ीजै ॥ सभु माइआ मोहु बिखमु जगु तरीऐ सहजे हरि रसु पीजै ॥ ६ ॥ माइआ माइआ के जो अधिकाई विचि माइआ पचै पचीजै ॥ अगिआनु अंधेरु महा पंथु बिखड़ा अहंकारि भारि लदि लीजै ॥ ७ ॥ नानक राम रम रमु रम रम रामै ते गति कीजै ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु द्रिड़ाए राम नामै रलै मिलीजै ॥ ८ ॥ ६ ॥ छक १ ॥

इसलिए हमें बर्फ के समान शीतल शब्द-गुरु प्रदान करो। हमारा तन मन अत्यन्त शान्त हो जाएगा, हमारा रोग कट जाएगा और हम सुख की नींद सो सकेंगे ।। ३ ।। जिस प्रकार सूर्य की किरणें सभी स्थानों में पहुँची रहती हैं इसी प्रकार घट-घट में प्रभु रमण करता रहता है। जब साधु पुरुष मिल जाता है तो प्रभु-नाम रस प्राप्त होता है ।। ४ ।। सेवक की उस गुरु-प्रभु के प्रति वैसी ही प्रीति लगी हुई है जैसी चकवी के लिए सूर्य को देखने की प्रीति होती है। सारी रात देखती-देखती वह देखती ही रहती है और जब सूर्य मुँह दिखाता है तो वह उसके रूप के अमृत का पान करती है ।। ५ ।। प्रभु से टूटा हुआ जीव कुत्ते की तरह बहुत लोभी हो जाता है और घोर दुर्मति की मैल उसमें भर जाती है। वह अपने स्वार्थ के लिए बहुत सी बातें करता है परन्तु उसकी बातों पर भला क्यों भरोसा करना चाहिए ।। ६ ।। साधु और साधकों की शरण में परस्पर मिलकर संगत रूप में बने रहना चाहिए ताकि प्रभु-नाम के रस को प्राप्त किया जा सके। अनेकों गुणवान परोपकार की बातें करते हैं ; और हमें अपना मुँह प्रभु के सन्तों और भक्तों की ओर लगाए रखना चाहिए ।। ७ ।। हे प्रभु, तू अगम्य, दयालु और दाता है, तुम दया धारण करके हमारी रक्षा कर लो। तू ही सभी जीवों का इस संसार में जीवन है इसलिए हे प्रभु, तू नानक का पालन पोषण करता रह ।। ८ ।। ५ ।। कलिआनु महला ४।। हे प्रभु, हमें अपने दासों के दास बना लो। जब तक हमारे अन्तर्मन में श्वास चलता रहे हम साधु पुरुषों की चरण धूलि का पान करते रहें ।। १ ।। रहाउ ।। शिव, नारद, शेषनाग और मुनिजन सभी साधु पुरुषों की चरणधूलि की कामना करते हैं। वे सभी स्थान जहाँ साधुजन अपने चरण रखते हैं पवित्र हो जाते हैं ।। १ ।। लाज, अहंकार और सब कुछ को त्यागकर साधु पुरुषों के संग मिले रहना चाहिए। साधु ही धर्मराज के भय को व्यक्ति के मन से दूर करता है और विषय-विकारों में डूबते हुए प्राणी को बाहर निकाल लेता है ।। २ ।। जो भ्रमों में भटकते हुए सूख जाते हैं और जो खड़े-खड़े भी सूख जाते हैं वे साधु पुरुष के मिलाप से हरे-भरे हो जाते हैं। इसलिए एक पल और क्षणभर की भी देरी किए बिना साधु पुरुषों के चरणों में जा लगना चाहिए ।। ३ ।। राम नाम की कीर्ति का गायन रूपी बहुमूल्य रत्न पदार्थ प्रभु ने साधु पुरुषों के पास ही रखा है। जो गुरु के उपदेश को सत्य रूप में जानते हुए उसे मानता है उसके आगे गुरु प्रभु-नाम रूपी पदार्थ निकाल कर रख देता है ।। ४ ।। हे भाई, सेवको और सन्तजनों, इस बात को ध्यानपूर्वक सुन लो कि गुरु बाँह उठाकर पुकार-पुकार कर यह कह रहा है कि यदि आत्मा का सुख सदैव अपने पास बनाए रखना चाहते हो तो सच्चे गुरु (प्रभु) की शरण में आन पड़ो ।। ५ ।। जब अत्यन्त सुन्दर और बड़ा भाग्य होता है तभी गुरु की शिक्षा के माध्यम से प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है। तभी माया-मोह के इस विषम संसार सागर को तैरा जाता है और स्वाभाविक रूप से ही हरि रस का पान किया जाता है ।। ६ ।। जो धन-सम्पदा और माया को ही चाहने वाले हैं वे धन-सम्पदा में ही मरते खपते रहते हैं। व्यक्ति के सामने अज्ञान के अंधकार वाला बहुत ही दुर्गम मार्ग है और उस पर उसने अहंकार का भार भी अपने ऊपर लादा हुआ है ।। ७ ।। हे नानक, सर्वव्यापक उस राम का सुमिरन करने से ही वास्तविक मुक्ति प्राप्त होती है। सच्चा गुरु जब मिलता है तो वही प्रभु-नाम का सुमिरन कराता है और व्यक्ति प्रभु-नाम में ही लीन हो जाता है ।। ८ ।। ६ ।। छका १ ।।

੧ਓ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

राग परभाती बिभास महला १ चउपदे घरु १ ॥

नाइ तेरै तरणा नाइ पति पूज ॥ नाउ तेरा गहणा मति मकसूदु ॥ नाइ तेरै नाउ मंने सभ कोइ ॥ विणु नावै पति कबहु न होइ ॥ १ ॥ अवर सिआणप सगली पाजु ॥ जै बखसे तै पूरा काजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाउ तेरा ताणु नाउ दीबाणु ॥ नाउ तेरा लसकरु नाउ सुलतानु ॥ नाइ तेरै माणु महत परवाणु ॥ तेरी नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ २ ॥ नाइ तेरै सहजु नाइ सालाह ॥ नाउ तेरा अंम्रितु बिखु उठि जाइ ॥ नाइ तेरै सभि सुख वसहि मनि आइ ॥ बिनु नावै बाधी जम पुरि जाइ ॥ ३ ॥ नारी बेरी घर दर देस ॥ मन कीआ खुसीआ कीचहि वेस ॥ जां सदे तां ढिल न पाइ ॥ नानक कूड़ु कूड़ो होइ जाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला १ ॥ तेरा नामु रतनु करमु चानणु सुरति तिथै लोइ ॥ अंधेरु अंधी वापरै सगल लीजै खोइ ॥ १ ॥ इहु संसारु सगल बिकारु ॥ तेरा नामु दारू अवरु नासति करणहारु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाताल पुरीआ एक भार होवहि लाख करोड़ि ॥ तेरे लाल कीमति

रागु परभाती बिभास महला १ चौपदे घरु १ ॥

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥

तेरे नाम के द्वारा ही व्यक्ति का सम्मान होता है और वह पूजनीय बनता है। तेरा नाम ही गहन गम्भीर है और उसी से ज्ञान का मकसद पूरा होता है। सभी तेरे ही नाम हैं और सभी तेरे ही नाम को मानते हैं अन्यथा प्रभु-नाम से विहीन होकर कभी भी सम्मान प्राप्त नहीं होता ॥ १ ॥ अन्य सभी चतुराईयाँ दिखावा मात्र हैं परन्तु प्रभु जिसे नाम प्रदान कर देता है उसका कार्य पूर्ण और सफल हो जाता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा नाम ही हमारा बल है और तेरा नाम ही अपनी व्यथा सुनाने के लिए हमारा आसरा है। तेरा नाम ही सब प्रकार की सेनाएं है और तेरा नाम ही वास्तव में सुल्तान है। तेरे नाम के माध्यम से ही सम्मान, महत्व और सफलता प्राप्त होती है। तेरी कृपा दृष्टि से ही तेरी स्वीकृति और कृपा का चिन्ह हम पर अंकित हो जाता है ॥ २ ॥ तेरे नाम के माध्यम से ही स्वाभाविक ज्ञान और गुणानुवाद प्राप्त होता है और तेरे अमृत नाम से ही हमारा विष समाप्त हो जाता है। तेरे नाम के कारण ही सभी सुख मन में आ बसते हैं और नाम से विहीन बनी यह सारी सृष्टि बाँधकर यमपुरी में ले जाई जाती है ॥ ३ ॥ स्त्री में आसक्ति, घर, देश, विदेश आदि में मन की खुशियों के लिए विचरण करते रहा जाता है। उस समय जब वह प्रभु अपने पास बुला लेता है तो तुरन्त जाना पड़ता है। हे नानक, सभी झूठ ही झूठ हो जाता है अर्थात इनमें से कुछ भी साथ नहीं जाता ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला १ ॥ तेरा नाम रूपी रत्न तेरी कृपा है और जिस सुरति में प्रभु-नाम है वहाँ प्रकाश ही प्रकाश है। अज्ञान के अंधकार में अन्धी बनी हुई सृष्टि में अंधकार ही बना रहता है जिसमें व्यक्ति सब कुछ गँवा लेता है ॥ १ ॥ यह संसार विकारों से भरा हुआ है इनसे हे कर्त्तार अपार प्रभु, केवल तेरा नाम ही औषधि है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाताल और सभी पुरियाँ यदि तराजू के एक ओर रख दिए जाएं और इनसे भी लाखों-करोड़ों गुना हो जाएं तब भी हे प्रभु, तेरे मूल्य को

ता पवै जां सिरै होवहि होरि ॥ २ ॥ दूखा ते सुख ऊपजहि सूखी होवहि दूख ॥ जितु मुखि तू सालाहीअहि तितु मुखि कैसी भूख ॥ ३ ॥ नानक मूरखु एकु तू अवरु भला सैसारु ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै से तन होहि खुआर ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला १ ॥ जै कारणि बेद ब्रहमै उचरे संकरि छोडी माइआ ॥ जै कारणि सिध भए उदासी देवी मरमु न पाइआ ॥ १ ॥ बाबा मनि साचा मुखि साचा कहीऐ तरीऐ साचा होई ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेड़ै हरि मति पावै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि बिंब पवणै की बाणी तीनि नाम के दासा ॥ ते तसकर जो नामु न लेवहि वासहि कोट पंचासा ॥ २ ॥ जे को एक करै चंगिआई मनि चिति बहुतु बफावै ॥ एते गुण एतीआ चंगिआईआ देइ न पछोतावै ॥ ३ ॥ तुधु सालाहनि तिन धनु पलै नानक का धनु सोई ॥ जे को जीउ कहै ओना कउ जम की तलब न होई ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला १ ॥ जा कै रूपु नाही जाति नाही नाही मुखु मासा ॥ सतिगुरि मिले निरंजनु पाइआ तेरै नामि है निवासा ॥ १ ॥ अउधू सहजे ततु बीचारि ॥ जा ते फिरि न आवहु सैसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै करमु नाही धरमु नाही नाही सुचि माला ॥ सिव जोति कंनहु बुधि पाई सतिगुरू रखवाला ॥ २ ॥ जा कै बरतु नाही नेमु नाही नाही बकबाई ॥ गति अवगति की चिंत नाही सतिगुरू फुरमाई ॥ ३ ॥ जा कै आस नाही निरास नाही चिति सुरति समझाई ॥ तंत कउ परम तंतु मिलिआ नानका बुधि पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला १ ॥ ता का कहिआ दरि परवाणु ॥ बिखु अंम्रितु दुइ सम करि जाणु ॥ १ ॥ किआ कहीऐ सरबे रहिआ समाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रगटी जोति चूका अभिमानु ॥ सतिगुरि दीआ अंम्रित नामु ॥ २ ॥ कलि महि आइआ सो जनु जाणु ॥ साची दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥ कहणा सुनणा अकथ घरि जाइ ॥ कथनी बदनी नानक जलि जाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला १ ॥ अंम्रितु नीरु गिआनि मन मजनु अटसटि तीरथ संगि गहे ॥ गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सुो खोजि लहै ॥ १ ॥ गुर समानि तीरथु नही कोइ ॥ सरु संतोखु तासु गुरु होइ

तभी जाना जाता है जब दूसरी ओर पलड़ा बराबर करने के लिए कुछ अन्य पदार्थ डालने पड़ते हैं अर्थात उधर गुणों को डालना पड़ता क्योंकि तेरे बड़प्पन को तौलने के लिए प्रभु-नाम के गुण ही समर्थ हो सकते हैं ।। २ ।। दुख से ही सुख उत्पन्न होता है और अत्यधिक सुख से फिर दुख पैदा होते हैं परन्तु जिसके मुख से तेरा गुणानुवाद होता रहता है उसको भला फिर कौन सी भूख लगी रह सकती है ।। ३ ।। हे नानक, केवल तू ही एक मूर्ख है बाकी तो सारा संसार भला ही भला है। जिस शरीर में नाम का अंकुर नहीं फूटता वह शरीर हमेशा ख्वार ही होता रहता है ।। ४ ।। २ ।। प्रभाती महला १ ।। जिस प्रभु से मिलने के लिए ब्रह्मा ने वेदों का उच्चारण किया और शिव ने दुनिया की मोह-माया का त्याग कर दिया ; जिस प्रभु को प्राप्त करने के लिए सिद्ध पुरुष विरक्त बने रहे और देवी-देवताओं ने भी उसके गुणों का रहस्य नहीं जाना वह प्रभु अनन्त और अथाह है ।। १ ।। हे बाबा, अपने मन में स्थिर बने रहने वाले परमात्मा को बसा कर मुँह से यदि उस सत्य प्रभु का गुणानुवाद करते रहें तो तभी सत्यशील बनकर विकारो की लहरों से पार उतरा जाता है। प्रभु का सुमिरन करने वाले ऐसे बिरले व्यक्ति के पास कोई दुख और शत्रु नहीं आ पाता ।। १ ।। रहाउ।। यह सारा संसार अग्नि, जल और पवन का ही प्रपंच है परन्तु ये तीनों ही गुण प्रभु-नाम के दास हैं। वे चोर जो प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करते वे तो वास्तव में विकार रूपी शेरों की माँद में ही बसते रहते हैं ।। २ ।। यदि कोई व्यक्ति कोई एक भी अच्छा काम कर लेता है तो अपने मन और चित्त में वह बड़ी-बड़ी बातें सोचकर अभिमानी बना रहता है। प्रभु में तो इतने गुण और अच्छाइयाँ हैं जिनका कोई अन्त नहीं है और वह उन गुणों को जीवों को देता हुआ भी पछताता नहीं है ।। ३ ।। हे प्रभु, जो तेरा गुणानुवाद करते हैं वास्तविक धन तो उन्हीं के पास है और नानक का धन भी वही नामधन है। यदि कोई नाम धन वालों को आदर-सत्कार देता है तो यमराज भी उनसे कोई लेखा-जोख नहीं पूछता ।। ४ ।। ३ ।। प्रभाती महला १ ।। जिसके रूप नहीं, कोई जाति नहीं और ना ही सुन्दर चेहरा है, वह भी सच्चे गुरु को मिलकर निरंजन प्रभु को पा जाता हे और उसका निवास तेरे नाम में बना रहता है ।। १ ।। हे अवधूत योगी, तू सहज तत्व का चिंतन कर जिससे तुझे फिर इस संसार में ना आना पड़े ।। १ ।। रहाउ ।। जिस व्यक्ति का ना तो कोई कर्म है ना धर्म है और ना ही उसकी चौके की पवित्रता और गले में तुलसी आदि की माला है; जब गुरु उसका रक्षक बन गया तो उसे कल्याण रूपी प्रभु ज्योति के पास से विवेक बुद्धि प्राप्त हो जाती है ।। २ ।। जिन्होंने व्रत नहीं किया, अन्य कोई नियम नहीं अपनाया और शास्त्र चर्चा आदि की चतुराई वाले बोल भी जिन्होंने नहीं बोले परन्तु यदि उन्हें गुरु का उपदेश मिल गया तो मुक्ति और नरक की उनकी चिन्ता समाप्त हो जाती है ।। ३ ।। जिसके पास धन पदार्थ की आशा-निराशा नहीं और जिसके चित्त की सुरति को इन की व्यर्थता की समझ आ जाती है तो हे नानक, उसे ऐसी बुद्धि प्राप्त हो जाती है कि उसकी आत्मा परमात्मा में मिल जाती है ।। ४ ।। ४ ।। प्रभाती महला १ ।। ऐसे लोगों का किया हुआ कथन प्रभु के द्वार पर स्वीकार होता है। वे विष और अमृत अर्थात दुख और सुख के समान जानते हैं ।। १ ।। उसका क्या कथन किया जाए वह तो सब ओर समाया हुआ है। जो कुछ भी हो रहा है हे प्रभु, सब तेरी ही रज़ा है ।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु ने हमें अमृत नाम दिया है जिससे हमारा अभिमान समाप्त हो गया है और प्रभु की ज्योति हमारे अन्दर प्रकट हो उठी है ।। २ ।। ऐसा व्यक्ति ही कलियुग में इस संसार में आया हुआ सफल जाना जाता है और वही प्रभु के सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करता है ।। ३ ।। उसका कहना सुनना उस अकथनीय प्रभु के घर में निवास बनाए रखना ही है अन्यथा हे नानक, व्यर्थ का बोलना तो जल जाने के समान ही है ।। ४ ।। ५ ।। प्रभाती महला १ ।। प्रभु-नाम के अमृत जल में ज्ञान के माध्यम से जब मन स्नान करता है तो वह अड़सठ तीर्थो को साथ ही लिए घूमता है। गुरु के उपदेश में अमूल्य गुण भरे पड़े हैं जिन्हें हर सिक्ख खोजकर ढूंढ़ सकता है ।। १ ।। गुरु के समान अन्य कोई तीर्थ नहीं है क्योंकि सन्तोष रूपी सरोवर वह गुरु ही है

॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै ॥ सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥ २ ॥ रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ ॥ जा की वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ ॥ ३ ॥ गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ ॥ गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला १ ॥ गुर परसादी विदिआ वीचारै पड़ि पड़ि पावै मानु ॥ आपा मधे आपु परगासिआ पाइआ अंम्रितु नामु ॥ १ ॥ करता तू मेरा जजमानु ॥ इक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच तसकर धावत राखे चूका मनि अभिमानु ॥ दिसटि बिकारी दुरमति भागी ऐसा ब्रहम गिआनु ॥ २ ॥ जतु सतु चावल दइआ कणक करि प्रापति पाती धानु ॥ दूधु करमु संतोखु घीउ करि ऐसा मांगउ दानु ॥ ३ ॥ खिमा धीरजु करि गऊ लवेरी सहजे बछरा खीरु पीऐ ॥ सिफति सरम का कपड़ा मांगउ हरि गुण नानक रवतु रहै ॥ ४ ॥ ७ ॥ प्रभाती महला १ ॥ आवतु किनै न राखिआ जावतु किउ राखिआ जाइ ॥ जिस ते होआ सोई परु जाणै जां उस ही माहि समाइ ॥ १ ॥ तूहै है वाहु तेरी रजाइ ॥ जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करणा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे हरहट की माला टिंड लगत है इक सखनी होर फेर भरीअत है ॥ तैसो ही इहु खेलु खसम का जिउ उस की वडिआई ॥ २ ॥ सुरती कै मारगि चलि कै उलटी नदरि प्रगासी ॥ मनि वीचारि देखु ब्रहम गिआनी कउनु गिरही कउनु उदासी ॥ ३ ॥ जिस की आसा तिस ही सउपि कै एहु रहिआ निरबाणु ॥ जिस ते होआ सोई करि मानिआ नानक गिरही उदासी सो परवाणु ॥ ४ ॥ ८ ॥ प्रभाती महला १ ॥ दिसटि बिकारी बंधनि बांधै हउ तिस कै बलि जाई ॥ पाप पुंन की सार न जाणै भूला फिरै अजाई ॥ १ ॥ बोलहु सचु नामु करतार ॥ फुनि बहुड़ि न आवण वार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचा ते फुनि नीचु करतु है नीच करै सुलतानु ॥ जिनी जाणु सुजाणिआ जगि ते पूरे परवाणु ॥ २ ॥ ता कउ समझावण जाईऐ जे को भूला होई ॥

।। १ ।। रहाउ ।। गुरु ऐसा दरिया है जिसका जल सदैव निर्मल होता है और जिसे मिलने पर दुर्मति की मैल दूर हो जाती है। सच्चे गुरु को पाकर ही पूर्ण स्नान होता है और वह गुरु ही पशु, प्रेत को देवता समान बना देता है ।। २ ।। जिसका हृदय अन्दर की तह तक प्रभु-नाम में लीन बना रहता है उसे ही सुवासित करने वाला गुरु कहा जाता है। जिसकी सुगन्धि से वनस्पति भी सुगन्धित हो जाती है उसके चरणों में ही अपनी लौ लगाए रखना चाहिए ।। ३ ।। गुरमुख बने व्यक्ति में ही प्राणों की लहर चलती रहती है और गुरमुख ही कल्याणकारी घर में निवास करता है। हे नानक, गुरमुख बनकर ही सत्य में लीन हुआ जाता है और गुरमुख व्यक्ति ही अपने मूल स्वरूप को प्राप्त करता है ।। ४ ।। ६ ।। प्रभाती महला १ ।। गुरु की कृपा से ब्रह्म विद्या का चिंतन किया जाता है और व्यक्ति उसे पढ़-पढ़ कर सम्मान प्राप्त करता है। अमृत नाम को प्राप्त करके जीव अपने अन्दर ही उस प्रभु को प्रकाशित अनुभव करता है ।। १ ।। हे कर्ता प्रभु, मेरा यजमान तो तू ही है। एक दक्षिणा मैं तुझसे माँगता हूँ कि तू मुझे अपना नाम प्रदान कर ।। १ ।। रहाउ ।। तेरा ब्रह्मज्ञान ऐसा है कि विकारों वाली दृष्टि और दुर्मति भाग खड़ी हुई है, दौड़ भाग करते हुए कामादिक पाँचों चोर स्थित हो गए हैं और मेरे मन का अभिमान समाप्त हो गया है ।। २ ।। मैं संयम, सत्य के चावल, दया की गेहूं और तेरी प्राप्ति रूपी धान को पत्तल के रूप में, शुभ कर्मों को दूध के रूप में और सन्तोष को घी के रूप में दान माँगता हूँ ।। ३ ।। क्षमा और धैर्य दुधारु गाय हो और मन रूपी बछड़ा सहज अवस्था में दूध पीने वाला हो; तेरे गुणानुवाद के उद्यम का मैं वस्त्र माँगता हूँ जिससे नानक प्रभु के गुणों का सुमिरन करता रहे ।। ४ ।। ७ ।। प्रभाती महला १ ।। जीव को संसार मे आने से भी नहीं रोका जा सकता तो फिर भला उसे यहाँ से जाने (मरने) से कौन रोक सकता है। वह जिससे उत्पन्न होता है वही उसे अच्छी तरह जानता है और वह उसी में ही लीन हो जाता है ।। १ ।। हे प्रभु, तू ही धन्य है और तेरी रज़ा भी धन्य है। तू जो करता है वह अवश्य होता है अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता ।। १ ।। रहाउ ।। जैसे रहट की माला में लगे हुए बर्तन चलते हैं और उनमें से कई खाली होते हैं और फिर भंरते रहते हैं ।। २ ।। उस मालिक का खेल भी वैसा ही है जैसे उसका बड़प्पन महान है ।। २ ।। सुरति अर्थात ज्ञान के मार्ग पर चलकर सृष्टि की ओर से पल्टी हुई हमारी दृष्टि प्रकाशमान हो उठी है, इसलिए हे ब्रह्मज्ञानी, तू मन में विचार कर देख ले कि वास्तविक गृहस्थी कौन है और सच्चे रूप में विरक्त कौन है अर्थात जो मन से घरवारी अथवा त्यागी है वही वास्तविक रूप में गृहस्थी और सच्चा त्यागी है ।। ३ ।। जिस प्रभु ने आशाएं पैदा की हैं उन्हें उसी को सौंप कर यह जीव दुख रहित निर्वाण अवस्था वाला हो जाता है। हे नानक, यह जीव जिससे उत्पन्न हुआ है उसी को ही जब इसने पूर्ण रूप से मान लिया है तो फिर वह घरबारी होता हुआ भी विरक्त के रूप में स्वीकृत होता है ।। ४ ।। ८ ।। प्रभाती महला १ ।। विकारों वाली दृष्टि को जो बाँध देता है मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। व्यक्ति पाप पुण्य के रहस्य को नहीं जानता और व्यर्थ ही भटकता फिरता है ।। १ ।। उस कर्ता के सच्चे नाम का उच्चारण करो इससे तुम्हें फिर आना नहीं पड़ेगा ।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु ऊँचे व्यक्ति को नीच बना देता है और नीच को वह सुलतान बना देता है। जिन्होंने अन्तर्यामी प्रभु को अच्छी तरह जान लिया है वे ही इस संसार में पूरी तरह स्वीकृत और सफल होते हैं ।। २ ।। समझाया तो उसे जाए यदि कोई भूला हुआ हो।

आपे खेल करे सभ करता ऐसा बूझै कोई ॥ ३ ॥ नाउ प्रभातै सबदि धिआईऐ छोडहु दुनी परीता ॥ प्रणवति नानक दासनि दासा जगि हारिआ तिनि जीता ॥४ ॥ ९ ॥ प्रभाती महला १ ॥ मनु माइआ मनु धाइआ मनु पंखी आकासि ॥ तसकर सबदि निवारिआ नगरु वुठा साबासि ॥ जा तू राखहि राखि लैहि साबतु होवै रासि ॥ १ ॥ ऐसा नामु रतनु निधि मेरै ॥ गुरमति देहि लगउ पगि तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु जोगी मनु भोगीआ मनु मूरखु गावारु ॥ मनु दाता मनु मंगता मन सिरि गुरु करतारु ॥ पंच मारि सुखु पाइआ ऐसा ब्रहमु वीचारु ॥ २ ॥ घटि घटि एकु वखाणीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ खोटो पूठो रालीऐ बिनु नावै पति जाइ ॥ जा तू मेलहि ता मिलि रहां जां तेरी होइ रजाइ ॥ ३ ॥ जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥ सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥ जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥ ४ ॥ १० ॥ प्रभाती महला १ ॥ जागतु बिगसै मूठो अंधा ॥ गलि फाही सिरि मारे धंधा ॥ आसा आवै मनसा जाइ ॥ उरझी ताणी किछु न बसाइ ॥ १ ॥ जागसि जीवण जागणहारा ॥ सुख सागर अंम्रित भंडारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहिओ न बूझै अंधु न सूझै भोंडी कार कमाई ॥ आपे प्रीति प्रेम परमेसुरु करमी मिलै वडाई ॥ २ ॥ दिनु दिनु आवै तिलु तिलु छीजै माइआ मोहु घटाई ॥ बिनु गुर बूडो ठउर न पावै जब लग दूजी राई ॥ ३ ॥ अहिनिसि जीआ देखि सम्हालै सुखु दुखु पुरबि कमाई ॥ करमहीणु सचु भीखिआ मांगै नानक मिलै वडाई ॥ ४ ॥ ११ ॥ प्रभाती महला १ ॥ मसटि करउ मूरखु जगि कहीआ ॥ अधिक बकउ तेरी लिव रहीआ ॥ भूल चूक तेरै दरबारि ॥ नाम बिना कैसे आचार ॥ १ ॥ ऐसे झूठि मुठे संसारा ॥ निंदकु निंदै मुझै पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु निंदहि सोई बिधि जाणै ॥ गुर कै सबदे दरि नीसाणै ॥ कारण नामु अंतरगति जाणै ॥ जिस नो नदरि करे सोई बिधि जाणै ॥ २ ॥ मै मैलौ ऊजलु सचु सोइ ॥ ऊतमु आखि न ऊचा होइ ॥ मनमुखु खूल्हि महा बिखु खाइ ॥ गुरमुखि होइ सु राचै नाइ ॥ ३ ॥ अंधौ बोलौ

कोई बिरला ही जान पाता है कि वह कर्ता प्रभु सब अपने ही खेल खेल रहा है ।। ३ ।। प्रभात बेला में शब्द के माध्यम से प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए दुनिया की झूठी प्रीति को त्याग देना चाहिए। प्रभु के दासों का दास नानक, विनती करता है कि जो इस संसार से हार गया है अर्थात जो यहाँ विनम्र बन गया है उसी ने ही यहाँ जीत प्राप्त की है ।। ४ ।। ६ ।। प्रभाती महला १ ।। मन ही माया है मन ही दौड़ने वाला है और मन ही आकाश का पक्षी है। शब्द से काम, क्रोध आदि चोरों को दूर भगा दिया है और अब यह शरीर रूपी नगर सुखपूर्वक बस रहा है तथा हमें शाबाश प्राप्त हुई है। जिसे तू बचा लेता है उसकी ही इस जीवन में रासपूंजी सुरक्षित बची रहती है ।। १ ।। प्रभु-नाम रूपी रत्न का मेरे पास खज़ाना है। हे प्रभु, मुझे गुरु की शिक्षा प्रदान कर जिससे मैं तेरे चरणों में लगा रहूँ ।। १ ।। रहाउ ।। यह मन योगी है, भोगी है, मूर्ख है और गँवार है। यह मन दाता है, भिखारी है और कभी-कभी यह भी जानता है कि मेरे सिर पर कर्ता प्रभु-गुरु है। काम, क्रोध आदि पाँचो को मारकर सुख पाया जाता है ऐसा ब्रह्म विचार भी इसे बना रहता है ।। २ ।। घट-घट में वह एक प्रभु ही बताया जाता है परन्तु किसी के कहने मात्र से उसे देखा नहीं जाता। खोटे व्यक्तियों को गर्भयोनी में उलटे लटका कर फेंका जाता है और प्रभु-नाम से विहीन बने रहने वालों का सम्मान नष्ट हो जाता है। हे प्रभु, यदि तेरी रज़ा हो और यदि तू अपने से मिला ले तो मैं तुझसे मिला रहता हूँ ।। ३ ।। प्रभु के दरबार में जाति और जन्म को नहीं पूछा जाता इसलिए सच्चे घर का पता पूछते रहना चाहिए अर्थात उत्तम जीवन का ढंग सीखते रहना चाहिए। व्यक्ति जैसे कर्म करता है वे कर्म ही उसकी जाति और सम्मान का निर्धारण करते हैं। हे नानक, प्रभु के नाम के माध्यम से ही जन्म-मरण का दुख काटा जाता है और व्यक्ति मुक्त होता है ।। ४ ।। १० ।। प्रभाती महला १ ।। यह जीव सावधान अवस्था में बना रहकर खिला रहता है परन्तु अन्धा अज्ञानी बनकर यह सदैव लुटता ही जाता है। इसके गले में धन्धों और प्रपंचो का पड़ा हुआ फन्दा इसे मार डालता है। यह आशाओं में आता है परन्तु मन में इच्छाएँ लेकर ही यहाँ से चला जाता है। इसके जीवन का ताना-बाना उलझा रहता है और उस पर इसका कोई भी बस नहीं चलता ।। १ ।। सबका जीवन वह प्रभु सदैव जगता अर्थात सावधान बना रहता है; वही सुखों का सगर और अमृत का भण्डार है ।। १ ।। रहाउ ।। यह जीव कुछ भी नहीं समझता और इस अज्ञानी अन्धे को बुरे कर्म करते हुए कुछ भी सुझाई नहीं पड़ता। वह प्रभु ही स्वयं अपने में प्रीति लगाता है और अच्छे कर्मों के कारण ही जीव को शोभा प्राप्त होती है ।। २ ।। जीवन के दिन आते जाते रहते हैं। जीव प्रत्येक क्षण नष्ट होता रहता है क्योंकि इसके हृदय में माया का मोह बना रहता है। जब तक इसमें जरा सा भी द्वैतभाव है यह गुरु विहीन होकर डूबता रहता है और इसको कोई भी ठौर ठिकाना नहीं मिलता ।। ३ ।। प्रभु दिन रात जीवों की देखभाल करता रहता है और उनकी पिछली कमाई के अनुरूप उन्हें सुखदुख देता रहता है। मैं अभागा सत्य की भीख माँगता हूँ कि नानक को भी शोभा प्राप्त हो जाए ।। ४ ।। ११ ।। प्रभाती महला १ ।। यदि मैं चुप रहता हूं तो संसार मुझे मूर्ख कहता है, यदि मैं अधिक बोलता हूं तो तुझमें लगी हुई लौ छूट जाती है। भूल चूक तो हे प्रभु, तेरे दरबार में ही परखी जाती है। मै तो यही जानता हूं कि प्रभु-नाम के बिना भला आचरण कैसा हो सकता है ।। १ ।। ऐसे झूठ ने संसार को लूट लिया है। निन्दक इसकी निन्दा करता है मुझे तो वही प्यारा लगता है ।। १ ।। रहाउ ।। जिसकी निन्दा की जाती है वास्तव में वही जीवन की विधि को जानने वाला होता है और शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु द्वार पर उसे विशिष्ट रूप से अंकित किया जाता है। वही सबके मूल कारण नाम को अपने अन्तर्मन में जानता है परन्तु हे प्रभु, जिस पर तू कृपा दृष्टि करता है वही इस विधि को पहचानता है ।। २ ।। सत्यता उज्जवल है और मैं मैला हूँ। मैं केवल अपने आपको उत्तम कहलवाकर ऊँचा नहीं हो सकता। मनमुख तो खुलकर विकारों के विष को खाता रहता है परन्तु जो गुरमुख बन जाता है वह ही सच्चे नाम मे लीन बना रहता है ।। ३ ।।

मुगधु गवारु ॥ हीणो नीचु बुरो बुरिआरु ॥ नीधन कौ धनु नामु पिआरु ॥ इहु धनु सारु होरु बिखिआ छारु ॥ ४ ॥ उसतति निंदा सबदु वीचारु ॥ जो देवै तिस कउ जैकारु ॥ तू बखसहि जाति पति होइ ॥ नानकु कहै कहावै सोइ ॥ ५ ॥ १२ ॥ प्रभाती महला १ ॥ खाइआ मैलु वधाइआ पैधै घर की हाणि ॥ बकि बकि वादु चलाइआ बिनु नावै बिखु जाणि ॥ १ ॥ बाबा ऐसा बिखम जालि मनु वासिआ ॥ बिबलु झागि सहजि परगासिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥ जम दरि बाधे मारीअहि छूटसि साचै नाइ ॥ २ ॥ जिव आइआ तिव जाइसी कीआ लिखि लै जाइ ॥ मनमुखि मूलु गवाइआ दरगह मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ जगु खोटौ सचु निरमलौ गुर सबदीं वीचारि ॥ ते नर विरले जाणीअहि जिन अंतरि गिआनु मुरारि ॥ ४ ॥ अजरु जरै नीझरु झरै अमर अनंद सरूप ॥ नानकु जल कौ मीनु सै थे भावै राखहु प्रीति ॥ ५ ॥ १३ ॥ प्रभाती महला १ ॥ गीत नाद हरख चतुराई ॥ रहस रंग फुरमाइसि काई ॥ पैन्हणु खाणा चीति न पाई ॥ साचु सहजु सुखु नामि वसाई ॥ १ ॥ किआ जानां किआ करै करावै ॥ नाम बिना तनि किछु न सुखावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोग बिनोद स्वाद आनंदा ॥ मति सत भाइ भगति गोबिंदा ॥ कीरति करम कार निज संदा ॥ अंतरि रवतौ राज रविंदा ॥ २ ॥ प्रिउ प्रिउ प्रीति प्रेमि उर धारी ॥ दीना नाथु पीउ बनवारी ॥ अनदिनु नामु दानु ब्रतकारी ॥ त्रिपति तरंग ततु बीचारी ॥ ३ ॥ अकथौ कथउ किआ मै जोरु ॥ भगति करी कराइहि मोर ॥ अंतरि वसै चूकै मै मोर ॥ किसु सेवी दूजा नही होरु ॥ ४ ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा ॥ ऐसा अंम्रितु अंतरि डीठा ॥ जिनि चाखिआ पूरा पदु होइ ॥ नानक ध्रापिओ तनि सुखु होइ ॥ ५ ॥ १४ ॥ प्रभाती महला १ ॥ अंतरि देखि सबदि मनु मानिआ अवरु न रांगनहारा ॥ अहिनिसि जीआ देखि समाले तिस ही की सरकारा ॥ १ ॥ मेरा प्रभु रांगि घणौ अति रूड़ौ ॥ दीन दइआलु प्रीतम मनमोहनु अति रस लाल सगूड़ौ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊपरि कूपु गगन पनिहारी अंम्रितु पीवणहारा ॥ जिस की

मूर्ख और बदज़बान अज्ञान की बातें ही करता है और हीन तथा नीच व्यक्ति बुरे से भी बुरा होता है। निर्धन के लिए यही धन है कि वह प्रभु नाम को प्यार करे क्योंकि यही धन सारतत्व है तथा अन्य सब तो विषय-विकारों की राख ही है ।। ४ ।। किसी को गुणानुवाद की, किसी को निन्दा और किसी को शब्द चिन्तन आदि जो भी वह देता है उसकी वैसी ही रज़ा है और उसी की ही जय-जयकार है। हे प्रभु, यदि तू कृपा करके दे तो जाति का तथाकथित सम्मान स्वयं ही मिल जाता है, नानक कहता है कि वह स्वयं ही सब कुछ कहलवाता है ।। ५ ।। १२ ।। प्रभाती महला १ ।। व्यक्ति बहुत खा पीकर केवल अपने अन्दर गन्दगी ही बढ़ाता है और अनेक प्रकार के वस्त्र पहनकर अपने घर की अर्थात अपने मूल स्वरूप की हानि ही करता है। व्यर्थ बोल-बोल कर झगड़े खड़े करता रहता है; ऐसे प्रभु-नाम से विहीन व्यक्ति के कार्य कलापों के विष के समान ही जानना चाहिए ।। १ ।। हे भाई, इस प्रकार के विषम जाल में जकड़ा हुआ मन झाग जैसे अस्थिर प्रपंचो में से पार होकर अब स्वतः ही उज्जवल हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। विष खाना, विकारों के विष को बोलना और विकार रूपी विषपूर्ण आचरण करने वाला यम के द्वार पर बाँधकर मारा जाता है। उसकी मुक्ति केवल सच्चे प्रभु के नाम के माध्यम से ही होती है ।। २ ।। जीव जैसा गुण विहीन पैदा होता है वैसा ही यहाँ से चला जाता है और किए हुए कर्मों का लेखा लिखकर साथ ले जाता है। इस स्वेच्छाचारी जीव में तो जो इसके पास थोड़ा बहुत अच्छापन भी था वह इसने इस संसार में गँवा दिया है और अब इसको प्रभु के दरबार में सज़ा मिलती है ।। ३।। शब्द-गुरु के चिन्तन से यह अनुभव हो जाता है कि जगत धोखा है और यहाँ सत्य ही निर्मल है। ऐसे लोग बिरले ही होते हैं जिनके अन्तर्मन में प्रभु का ज्ञान स्थित बना रहता है ।। ४ ।। यदि ज्ञान की असह्यनीय अवस्था को पचा कर सहन कर लिया जाए तो चिरन्तन बने रहने वाले आनन्द रूपी रस का प्रवाह अन्दर चल पड़ता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, जैसे मछली के लिए जल है वैसे ही नानक तुझे चाहता है; यदि तुझे अच्छा लगे तो तुम भी अपनी प्रीति मुझसे बनाए रखो ।। ५ ।। १३ ।। प्रभाती महला १ ।। गायन, नाद, हर्ष, चतुराई, रंग राग और कई फरमाइशें तथा खाना-पहनना आदि चित्त को कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वास्तविक और स्वाभाविक सच्चा सुख प्रभु-नाम में ही बसा रहता है ।। १ ।। मैं नहीं जानता कि वह प्रभु क्या करता करवाता है परन्तु प्रभु-नाम से विहीन मेरे इस तन को कुछ भी अच्छा नहीं लगता ।। १ ।। रहाउ ।। मेरी मति सत्य में स्थिर होकर प्रभु में लगी हुई है और इसी में मुझे योग से उत्पन्न होने वाले कौतुक और आनन्दों का अनुभव होता है। मेरा अपना कर्म तो अब उस प्रभु की कीर्ति को गायन करना ही है और अब मेरे अन्तर्मन में सूर्य और चन्द्र के समान सर्वत्र रमण करने वाला प्रभु शोभायमान हो उठा है ।। २ ।। उस प्रीतम की प्रीति प्रेमपूर्वक मैंने हृदय में धारण की है और वह प्रभु ही मेरे लिए दीनानाथ और सबसे प्यारा है। प्रत्येक दिन अपने नाम का दान करना ही उसका व्रत है अर्थात उसका प्रमुख कार्य है। मैं उसके सारतत्व का चिंतन करके विषय विकारों की लहरों के संदर्भ में तृप्त हो गया हूँ ।। ३ ।। मेरे में कौन सा बल है जो मैं उस अकथनीय प्रभु का कथन कर सकूं। वह ही यदि मुझसे कराएगा तो मैं भक्ति कर सकता हूँ। मैं और मेरी की भावना समाप्त होने पर ही वह अन्तर्मन में बसेगा और हे प्रभु, मैं किसका सुमिरन करूं क्योंकि तेरे बिना दूसरा कोई नहीं है ।। ४ ।। शब्द-गुरु का महा रस अत्यन्त मीठा है और ऐसे अमृत को मैंने अन्तर्मन में ही देख लिया है। जिसने भी इसको चख लिया है वह पूर्ण अवस्था को प्राप्त हो जाता है और हे नानक, वह पूर्ण रूप से तृप्त हो जाता है तथा उसका तन भी सुखी हो जाता है ।। ५ ।। १४ ।। प्रभाती महला १ ।। उस प्रभु को शब्द रूप में अपने अन्दर ही देखकर मेरा मन जो किसी के प्रेम में भी नहीं लगता था अब उसे मानकर तृप्त हो गया है। दिन रात वह प्रभु ही जीवों को सम्भालता है और सब ओर उसी की सरकार है ।। १ ।। मेरा प्रभु प्रेम के गहरे रंग वाला अत्यन्त सुन्दर है; वह दीनदयालु, मनमोहन प्रीतम अत्यन्त ही गहरे रंग वाला है ।। १ ।। रहाउ ।। ऊपर आकाश में कुँआ है और जीव पनिहारी बनकर

रचना सो बिधि जाणै गुरमुखि गिआनु वीचारा ॥ २ ॥ पसरी किरणि रसि कमल बिगासे ससि घरि सूरु समाइआ ॥ कालु बिधुंसि मनसा मनि मारी गुर प्रसादि प्रभु पाइआ ॥ ३ ॥ अति रसि रंगि चलूलै राती दूजा रंगु न कोई ॥ नानक रसनि रसाए राते रवि रहिआ प्रभु सोई ॥ ४ ॥ १५ ॥ प्रभाती महला १ ॥ बारह महि रावल जावहि चहु छिअ महि संनिआसी ॥ जोगी कापड़ीआ सिरखूथे बिनु सबदै गलि फासी ॥ १ ॥ सबदि रते पूरे बैरागी ॥ अउहठि हसत महि भीखिआ जाची एक भाइ लिव लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमण वादु पड़हि करि किरिआ करणी करम कराए ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही मनमुखु विछुड़ि दुखु पाए ॥ २ ॥ सबदि मिले से सूचाचारी साची दरगह माने ॥ अनदिनु नामि रतनि लिव लागे जुगि जुगि साचि समाने ॥ ३ ॥ सगले करम धरम सुचि संजम जप तप तीरथ सबदि वसे ॥ नानक सतिगुर मिलै मिलाइआ दूख पराछत काल नसे ॥ ४ ॥ १६ ॥ प्रभाती महला १ ॥ संता की रेणु साध जन संगति हरि कीरति तरु तारी ॥ कहा करै बपुरा जमु डरपै गुरमुखि रिदै मुरारी ॥ १ ॥ जलि जाउ जीवनु नाम बिना ॥ हरि जपि जापु जपउ जपमाली गुरमुखि आवै सादु मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेस साचु सुखु जा कउ किआ तिसु उपमा कहीऐ ॥ लाल जवेहर रतन पदारथ खोजत गुरमुखि लहीऐ ॥ २ ॥ चीनै गिआनु धिआनु धनु साचौ एक सबदि लिव लावै ॥ निरालंबु निरहारु निहकेवलु निरभउ ताड़ी लावै ॥ ३ ॥ साइर सपत भरे जल निरमलि उलटी नाव तरावै ॥ बाहरि जातौ ठाकि रहावै गुरमुखि सहजि समावै ॥ ४ ॥ सो गिरही सो दासु उदासी जिनि गुरमुखि आपु पछानिआ ॥ नानकु कहै अवरु नही दूजा साच सबदि मनु मानिआ ॥ ५ ॥ १७ ॥

रागु प्रभाती महला ३ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ॥ नामि रते सदा सुखु पावै साचि रहै लिव लाई

उसके अमृत जल को पीने वाला है अर्थात शरीर में ही दशम द्वार रूपी कुँए के जल को जीव द्वारा पीया जाता है। गुरमुख बनकर यही ज्ञान और चिंतन उत्पन्न होता है कि जिस प्रभु की यह सारी रचना है वह ही इसकी सारी विधियों को जानता है ।। २ ।। जब गुरु के ज्ञान रूपी किरण फैली तो हृदय कमल खिल उठा है तथा ठण्डे और जड़ बने हुए हृदय में क्रियाशील बनाने वाले सूर्य अर्थात ज्ञान का प्रकाश हो गया है। अब काल को नष्ट करके इच्छाओं को मन मे ही समाप्त करते हुए गुरु की कृपा से प्रभु को पा लिया गया है ।। ३ ।। अब मैं उसके गहरे लाल रंग में रंग गई हूँ और अब दूसरा कोई भी रंग मुझ पर नहीं चढ़ता। हे नानक, जीभ को रसपूर्ण बनाकर अब हम उसके रंग में रंग गए हैं और हमें सर्वत्र वह प्रभु ही व्याप्त दिखाई देता है ।। ४ ।। १५ ।। प्रभाती महला १ ।। बारह सम्प्रदायों में योगी और दस सम्प्रदायों में बँटे हुए संन्यासी अन्ततः समाप्त हो जाएँगे। अनेकों योगी विभिन्न वेशों वाले और सिर को मुंडाकर घूमने वाले सभी लोगों के गले में नाम से विहीन बने रहने पर फन्दा पड़ा ही रहेगा ।। १ ।। जो शब्द में लीन हैं वे ही पूरे बैरागी हैं। वे अपने हृदय रूपी हाथ में भिक्षा लेते हैं और एक प्रभु के सुमिरन में एक रस लीन होकर लौ लगाए रहते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। ब्राह्मण अनेकों क्रियाओं को करता रहता है। उस प्रभु को जाने बिना इसे कुछ भी पता नहीं चलता और स्वेच्छाचारी बना हुआ यह प्रभु से बिछुड़ कर दुख पाता रहता है ।। २ ।। शब्द के माध्यम से जो उससे मिल जाते हैं वे ही पवित्र आचरण वाले हैं और सच्चे दरबार में उन्हीं का सम्मान होता है। जिनकी लौ सदैव प्रभु-नाम रूपी रत्न में लगी रहती है वे प्रत्येक युग में सत्य में ही लीन बने रहते हैं ।। ३ ।। समस्त धर्म कर्म, पवित्रताएं, संयम, जप, तप, तीर्थ आदि शब्द में ही बसते हैं। हे नानक, जब सच्चा गुरु मिल जाता है और प्रभु से मिला देता है तो दुख, पाप और काल आदि भाग खड़े होते हैं ।। ४ ।। १६ ।। प्रभाती महला १ ।। सन्त पुरुषों की चरणधूलि, साधु व्यक्तियों की संगत और प्रभु कीर्ति में बना रहकर हे जीव, तू संसार सागर को तैर कर पार कर जा। गुरमुख बने हुए व्यक्ति के हृदय में प्रभु का निवास होने से डरता हुआ बेचारा यम भी व्यक्ति का क्या बिगाड़ सकता है ।। १ ।। मुझे जीवन देने वाले नाम से विहीन होकर तो मैं जल ही जाता। प्रभु का सुमिरन करके ही मैं उसी की माला जब फेरता हूँ तो गुरमुख बनकर मेरा नाम में पूरा आनन्द बन जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। जिसके पास गुरु के उपदेश का सच्चा सुख है उसकी भला प्रशंसा कैसे की जाए। गुरमुख बनकर ही व्यक्ति लाल, जवाहिर और प्रभु-नाम रूपी रत्न पदार्थ को खोजकर प्राप्त कर लेता है ।। २ ।। व्यक्ति अब ज्ञान ध्यान रूपी सच्चे धन को पहचान जाता है और शब्द के माध्यम से उस एक प्रभु में ही लौ लगाता है। अब वह निरालम्ब, निराहार और शुद्ध तथा निर्भय प्रभु में ही अपनी समाधि लगाता है ।। ३ ।। अब वह पाँचो इन्द्रियों, मन और बुद्धि के सातों सरोवरों को निर्मल जल से भरकर उसमें माया की ओर से उलटाई हुई जीवन रूपी नाव को तैराता है। बाहर भागते मन के वह रोक लेता है और इस प्रकार गुरमुख बनकर अपने मूल स्वभाव में स्वाभाविक रूप से ही लीन हो जाता है ।। ४ ।। जिसने गुरमुख बनकर अपने आपको पहचान लिया है वही वास्तविक घरबारी, प्रभु का सेवक और विरक्त भाव से रहने वाला माना जाता है। नानक का कथन है जब सच्चे शब्द में मन लीन हो जाता है तो फिर अन्य दूसरा कुछ भी नहीं बचता अर्थात प्रभु ही प्रभु सब ओर बना रहता है ।। ५ ।। १७ ।।

रागु प्रभाती महला ३ चौपदे　　१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

कोई बिरला ही इस बात को गुरमुख बनकर समझता है कि प्रभु शब्द-गुरु में ही समाया हुआ है। ऐसे बिरले व्यक्ति प्रभु-नाम में रंगकर सदैव सुख पाते हैं और सत्य में लौ लगाए रहते हैं

॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु जन भाई ॥ गुर प्रसादि मनु असथिरु होवै अनदिनु हरि रसि रहिआ अघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग का लाहा भाई ॥ सदा जन निरमल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई ॥ २ ॥ सुखु सीगारु सतिगुरू दिखाइआ नामि वडी वडिआई ॥ अखुट भंडार भरे कदे तोटि न आवै सदा हरि सेवहु भाई ॥ ३ ॥ आपे करता जिस नो देवै तिसु वसै मनि आई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ निरगुणीआरे कउ बखसि लै सुआमी आपे लैहु मिलाई ॥ तू बिअंतु तेरा अंतु न पाइआ सबदे देहु बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ तुधु विटहु बलि जाई ॥ तनु मनु अरपी तुधु आगै राखउ सदा रहां सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपणे भाणे विचि सदा रखु सुआमी हरि नामो देहि वडिआई ॥ पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिनु सहजि समाई ॥ २ ॥ तेरै भाणै भगति जे तुधु भावै आपे बखसि मिलाई ॥ तेरै भाणै सदा सुखु पाइआ गुरि त्रिसना अगनि बुझाई ॥ ३ ॥ जो तू करहि सु होवै करते अवरु न करणा जाई ॥ नानक नावै जेवडु अवरु न दाता पूरे गुर ते पाई ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि सालाहिआ जिंना तिन सलाहि हरि जाता ॥ विचहु भरमु गइआ है दूजा गुर कै सबदि पछाता ॥ १ ॥ हरि जीउ तू मेरा इकु सोई ॥ तुधु जपी तुधै सालाही गति मति तुझ ते होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सालाहनि से सादु पाइनि मीठा अंम्रितु सारु ॥ सदा मीठा कदे न फीका गुर सबदी वीचारु ॥ २ ॥ जिनि मीठा लाइआ सोई जाणै तिसु विटहु बलि जाई ॥ सबदि सलाही सदा सुखदाता विचहु आपु गवाई ॥ ३ ॥ सतिगुरु मेरा सदा है दाता जो इछै सो फलु पाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुर सबदी सचु पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन तू राखन जोगु ॥ तुधु जेवडु मै अवरु न सूझै ना को होआ न होगु ॥ १ ॥ हरि जीउ सदा तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु मेरे सुआमी एह तेरी वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन की

।। १ ।। हे भाई, प्रभु के सेवक बनकर प्रभु-नाम का जाप करो। गुरु की कृपा से मन स्थिर हो जाता है और फिर वह सदैव प्रभु रस में तृप्त बना रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, इस युग का यही लाभ है कि दिन रात भक्ति करते रहो। जिन्होंने सच्चे नाम को हृदय में धारण कर लिया है वे सेवक सदैव निर्मल बने रहते हैं ।। २ ।। प्रभु-नाम की महिमा महान है और सच्चा गुरु ही प्रभु-नाम रूपी सुख के सिंगार करने की विधि बताता है। हे भाई, सदैव प्रभु का सुमिरन करने से भण्डार अक्षय हो जाते हैं और उनमें कभी कमी नहीं आती ।। ३ ।। वह कर्ता प्रभु जिसे स्वयं यह प्रदान करता है उसी के मन में उसका निवास होता है। हे नानक, सच्चे गुरु ने अब उसके दर्शन करा दिए हैं इसलिए तू सदैव उसके नाम का सुमिरन करता रह ।। ४ ।। १ ।। प्रभाती महला ३ ।। हे स्वामी, तू मुझ गुण विहीन को क्षमा कर दे और स्वयं ही अपने से मिला ले। तू अनन्त है, तेरे रहस्य को मैंने नहीं जाना है और तू शब्द के माध्यम से मुझे इस रहस्य को समझा दे ।। १ ।। हे प्रभु, मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। मैं तुझे तन मन अर्पण करके तेरे सामने रखता हूँ ताकि मैं सदैव तुम्हारी शरण में ही बना रहूँ ।। १ ।। रहाउ ।। हे स्वामी, तू सदैव मुझे अपनी ही रज़ा में रख और प्रभु-नाम के माध्यम से ही मुझे बड़प्पन प्रदान कर। पूर्ण गुरु से ही रज़ा की समझ आती है और व्यक्ति सदैव सहजभाव मे लीन बना रहता है। तेरी रज़ा में ही यदि तुझे अच्छा लगे तो भक्ति होती है और तू स्वयं ही सम्भाल कर हमें अपने से मिला लेता है। तेरी रज़ा में ही हमने सदैव सुख प्राप्त किया है और गुरु के माध्यम से तृष्णा रूपी अग्नि को बुझा दिया है ।। ३ ।। हे कर्ता प्रभु, जो तू करता है वही होता है, अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता। हे नानक, प्रभु-नाम जैसा अन्य दाता कोई नहीं है और यह पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है ।। ४ ।। २ ।। प्रभाती महला ३ ।। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु का यशगान किया है उन्होंने ही वास्तव में प्रभु के गुणानुवाद के ढंग को जान लिया है। उनके अन्तर्मन से द्वैतभाव का भ्रम समाप्त हो जाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से वे प्रभु को पहचान लेते हैं ।। १ ।। हे प्रभु, मेरे तो एक तुम ही हो। मैं तेरा ही जाप और गुणानुवाद करता हूँ और मेरी गति और मुक्ति तुझसे ही होती है ।।१।। रहाउ।। गुरमुख बनकर जो प्रभु का गुणानुवाद करते हैं वे ही श्रेष्ठ नाम अमृत का मीठा स्वाद प्राप्त करते हैं। शब्द-गुरु के चिंतन से वे जान जाते हैं कि नाम रस सदैव मीठा ही रहता है कभी फीका नहीं होता ।। २ ।। जिस प्रभु ने इस मीठे की ओर हमें लगा लिया है वही इसके रहस्य को जानता है और मैं तो उस पर बलिहारी जाता हूँ। मैं शब्द के माध्यम से सदैव उस प्रभु का गुणानुवाद करता हूँ जिससे मेरे अन्तर्मन का अहंकार नष्ट हो जाता है ।। ३ ।। सच्चा गुरु-प्रभु मेरा सदा बना रहने वाला दाता है और व्यक्ति जो भी कामना करता है उसके फल को पा जाता है। हे नानक, प्रभु-नाम का बड़प्पन जिसे प्राप्त हो जाए वह शब्द-गुरु के माध्यम से सत्य को पा लेता है ।।४ ।।३ ।।प्रभाती महला ३ ।। हे प्रभु, जो तेरी शरण में हैं तुम उन सबकी रक्षा करने के योग्य हो। तेरे जैसा मुझे अन्य कोई भी समझ में नहीं आता; तेरे जैसा ना तो कोई हुआ है और ना ही होगा ।। १ ।। हे प्रभु, मैं तो सदैव तेरी ही शरण में हूँ। अब तुझे जैसे अच्छा लगे तू मुझे रख क्योंकि हे मेरे स्वामी, यह सब तेरी ही शोभा है ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, जो तेरी शरण में हैं तू उनकी

करहि प्रतिपाल ॥ आपि क्रिपा करि राखहु हरि जीउ पोहि न सकै जमकालु ॥ २ ॥ तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना ओह घटै न जाइ ॥ जो हरि छोडि दूजै भाइ लागै ओहु जंमै तै मरि जाइ ॥ ३ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहि ॥ नानक नामु सलाहि सदा तू सचै सबदि समाहि ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीअ परान ॥ गुर सबदी मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥ सफलु जनमु तिसु प्रानी केरा हरि कै नामि समान ॥ १ ॥ मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥ हरि का नामु सदा सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूलु पछाणनि तिन निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासिआ हउमै दुरमति खोई ॥ सभना महि एको सचु वरतै विरला बूझै कोई ॥ २ ॥ गुरमती मनु निरमलु होआ अंम्रितु ततु वखानै ॥ हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि मन ही मनु मानै ॥ सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जितु आतम रामु पछानै ॥ ३ ॥ मानस जनमि सतिगुरू न सेविआ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नदरि करे तां सतिगुरु मेले सहजे सहजि समाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरै भागि धिआइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ आपे भांति बणाए बहु रंगी सिसटि उपाइ प्रभि खेलु कीआ ॥ करि करि वेखै करे कराए सरब जीआ नो रिजकु दीआ ॥ १ ॥ कली काल महि रविआ रामु ॥ घटि घटि पूरि रहिआ प्रभु एको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ ॥ नामु रतनु तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पइआ ॥ २ ॥ इंद्री पंच पंचे वसि आणै खिमा संतोखु गुरमति पावै ॥ सो धनु धनु हरि जनु वड पूरा जो भै बैरागि हरि गुण गावै ॥ ३ ॥ गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ करि आचार बहु संपउ संचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥ ४ ॥ एको सबदु एको प्रभु वरतै सभ एकसु ते उतपति चलै ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाए गुरमुखि हरि हरि जाइ रलै ॥ ५ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ मेरे मन गुरु अपणा

पूर्ग सम्भाल करता है। स्वयं कृपा करके तू जिन्हें बचा लेता है हे प्रभु, यमकाल तो उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाता ।। २ ।। हे प्रभु, तेरी शरण ही सच्ची है क्योंकि उसमें कुछ भी घटता-बढ़ता नहीं। परन्तु जो प्रभु को छोड़कर द्वैतभाव में लीन बने रहते हैं वे जन्मते-मरते रहते हैं ।। ३ ।। हे प्रभु जो तेरी शरण में हैं उन्हें किसी प्रकार का भी दुख और भूख नहीं रहती। इसलिए हे नानक, तू सदैव प्रभु-नाम का गुणानुवाद कर ताकि तू सच्चे शब्द में लीन बना रहे ।।४ ।।४ ।।प्रभाती महला ३ ।। जब तक जीवन और प्राण हैं गुरमुख बनकर सदैव प्रभु का सुमिरन करते रहो। शब्द-गुरु से ही मन निर्मल होता है और मन का अभिमान समाप्त हो जाता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सफल हो जाता है और वह प्रभु के नाम में ही समा जाता है ।। १ ।। हे मेरे मन, गुरु की शिक्षा को सुन। प्रभु का नाम सदैव सुख देने वाला है और तू स्वाभाविक रूप से ही प्रभु रस का पान करता रह ।। १ ।। रहाउ ।। जिन्होंने अपने मूल स्वरूप को पहचान लिया है उनका अपने स्वरूप में ही निवास हो जाता है और स्वाभाविक रूप से ही उन्हें सुख प्राप्त होता है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही उनकी अहंकार वाली कुबुद्धि नष्ट होती है और हृदय कमल खिल उठता है। सबमें वह एक सत्य (प्रभु) ही कार्यशील है इस तथ्य को कोई बिरला ही समझता है ।। २ ।। गुरु की शिक्षा से मन निर्मल होकर अमृत रूपी नाम तत्व का ही उच्चारण करता है। अब सदा के लिए प्रभु का नाम ही मन में बस जाता है और मन मन के माध्यम से ही सन्तुष्ट हो जाता है। मैं अपने गुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूँ जिसने आत्मा में बसे हुए प्रभु को पहचाना हुआ है ।। ३ ।। इस मानव जीवन में जिसने सच्चे गुरु का सुमिरन नहीं किया उसने तो अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा दिया है, परन्तु यदि प्रभु कृपा दृष्टि करे तो वह सच्चे गुरु से मिला देता है और इस प्रकार स्वाभाविक रूप में ही शान्त अवस्था में लीन हो जाता है। हे नानक, प्रभु-नाम से ही शोभा प्राप्त होती है और पूर्ण भाग्य के माध्यम से ही प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है ।। ४ ।। ५ ।। प्रभाती महला ३ ।। प्रभु स्वयं ही अनेकों प्रकारों और रंग रूपों वाली सृष्टि उत्पन्न करके अपना खेल खेलता रहता है। वह सब कुछ बनाकर देखता और करता रहता है और सभी जीवों को जीवनयापन का साधन भी देता है ।। १ ।। कलियुग में तो सर्वव्यापक प्रभु का ही आसरा है वही घट-घट में परिपूर्ण है और गुरमुख बनने पर ही वह प्रभु-नाम के रूप में प्रकट होता है ।। १ ।। रहाउ ।। कलियुग में भी प्रभु-नाम ही गुप्तरूप से सबमें कार्यशील है और प्रभु ही घर-घर में समाया रहने वाला है। जो गुरु की शरण में भाग कर आ गए हैं प्रभु-नाम रूपी रत्न उनके हृदय में ही प्रकट होता है ।। २ ।। गुरु की शिक्षा के माध्यम से ही पाँचों इन्द्रियां, पाँचों विकार वश में आते हैं तथा क्षमा और सन्तोष की प्राप्ति होती है। प्रभु का वही सेवक धन्य है और महान है जो प्रभु के भय और प्रेम में बना रहकर प्रभु के गुण गाता है ।। ३ ।। जो गुरु से मुँह फेर लेता है और गुरु के कहे हुए शब्द को चित्त में धारण नहीं करता है तथा अनेकों प्रकार के आचरण (कर्मकाण्ड) करता हुआ धन-सम्पति का ही संचय करता रहता है उसका यह सब कुछ किया हुआ नरक में डालने वाला ही होता है ।। ४ ।। एक प्रभु का ही एक हुकुम सबमें कार्यशील है और उस एक से ही सारी उत्पत्ति का सिलसिला चलता रहता है। हे नानक, गुरमुख बनने पर ही वह प्रभु मेल मिलाता है और गुरमुख ही प्रभु से मिलकर उसमें लीन हो जाता है ।।५ ।।६ ।।प्रभाती महला ३ ।। हे मेरे मन, तू अपने गुरु (प्रभु)

सालाहि ॥ पूरा भागु होवै मुखि मसतकि सदा हरि के गुण गाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु भोजनु हरि देइ ॥ कोटि मधे कोई विरला लेइ ॥ जिस नो अपणी नदरि करेइ ॥ १ ॥ गुर के चरण मन माहि वसाइ ॥ दुखु अन्हेरा अंदरहु जाइ ॥ आपे साचा लए मिलाइ ॥ २ ॥ गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ॥ ऐथै ओथै एहु अधारु ॥ आपे देवै सिरजनहारु ॥ ३ ॥ सचा मनाए अपणा भाणा ॥ सोई भगतु सुघड़ु सोजाणा ॥ नानकु तिस कै सद कुरबाणा ॥ ४ ॥ ७ ॥ १७ ॥ ७ ॥ २४ ॥

प्रभाती महला ४ बिभास १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रसकि रसकि गुन गावह गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥ अंम्रितु रसु पीआ गुर सबदी हम नाम विटहु कुरबान ॥ १ ॥ हमरे जगजीवन हरि प्रान ॥ हरि ऊतमु रिद अंतरि भाइओ गुरि मंतु दीओ हरि कान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि नामु वखान ॥ कितु बिधि किउ पाईऐ प्रभु अपुना मो कउ करहु उपदेसु हरि दान ॥ २ ॥ सतसंगति महि हरि हरि वसिआ मिलि संगति हरि गुन जान ॥ वडै भागि सतसंगति पाई गुरु सतिगुरु परसि भगवान ॥ ३ ॥ गुन गावह प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाइ रहे हैरान ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी हरि नामु दीओ खिन दान ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ उगवै सूरु गुरमुखि हरि बोलहि सभ रैनि सम्हालहि हरि गाल ॥ हमरै प्रभि हम लोच लगाई हम करह प्रभू हरि भाल ॥ १ ॥ मेरा मनु साधू धूरि रवाल ॥ हरि हरि नामु द्रिड़ाइओ गुरि मीठा गुर पग झारह हम बाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत कउ दिनु रैनि अंधारी मोहि फाथे माइआ जाल ॥ खिनु पलु हरि प्रभु रिदै न वसिओ रिनि बाधे बहु बिधि बाल ॥ २ ॥ सतसंगति मिलि मति बुधि पाई हउ छूटे ममता जाल ॥ हरि नामा हरि मीठ लगाना गुरि कीए सबदि निहाल ॥ ३ ॥ हम बारिक गुर अगम गुसाई गुर करि किरपा प्रतिपाल ॥ बिखु भउजल डुबदे काढि लेहु प्रभ गुर नानक बाल गुपाल ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ इकु

का गुणानुवाद कर। यदि तू सदैव प्रभु के गुण गाता रहे तो तेरे मुख और माथे पर अंकित भाग्य का पूर्ण उदय हो जाएगा ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ही अमृत नाम रूपी भोजन देता है परन्तु करोड़ों में कोई वह बिरला ही उसे प्राप्त करता है जिसपर प्रभु अपनी कृपा दृष्टि करता है ।। १ ।। जब गुरु के चरणों को मन में बसाया जाता है तो अन्दर से दुख और अज्ञान का अंधकार समाप्त हो जाता है तथा वह सच्चा प्रभु स्वयं ही अपने से मिला लेता है ।। २ ।। गुरु की वाणी से प्रेम लग जाता है और वह प्रेम ही इस लोक और परलोक में व्यक्ति का आसरा बनता है। यह प्रेम वह सृजनहार प्रभु स्वयं ही प्रदान करता है ।। ३।। वह सच्चा प्रभु ही अपनी रज़ा को मानने का बल जीव को देता है और ऐसा भक्त ही सुन्दर और सुजान होता है। नानक तो ऐसे भक्त पर सदैव कुर्बान जाता है ।। ४ ।। ७ ।। १७ ।। ७ ।। २४ ।।

प्रभाती महला ४ बिभास (विभास=प्रकाश) १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

गुरु की शिक्षा के माध्यम से रस ले लेकर प्रभु के गुण गाने से जीव की लौ सहज भाव में ही प्रभु-नाम में लग गई है। शब्द-गुरु के माध्यम से हमने अमृत रस पी लिया है और प्रभु के नाम पर हम बलिहारी जाते हैं ।। १ । संसार को जीवन देने वाले प्रभु ही हमारे प्राण हैं। गुरु ने जब हमें हमारे कान में जीवन के रहस्य को समझा दिया तो हमारे हृदय में प्रभु सर्वोत्तम लगने लगा है ।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरे भाई सन्त पुरुषो, आओ मिलकर प्रभु-नाम का बखान करें। प्रभु को मिलाने वाला उपदेश मुझे दो और बताओ किस विधि से उस प्रभु को प्राप्त किया जाए ।। २ ।। वह प्रभु सत्संगत में ही बसा हुआ है इसलिए संगत में मिल बैठकर प्रभु के गुणों को जान लो (और वैसे ही बन जाओ)। बड़े भाग्य से सत्संगत पाई जाती है और वहीं सच्चे गुरु-प्रभु का स्पर्श प्राप्त होता है ।। ३ ।। जब हम उस अगम्य प्रभु के गुण गाते हैं तो उसके गुणों को गाते हए हैरान हो जाते हैं। गुरु ने इस सेवक नानक पर कृपा की है और मुझे थोड़ा सा प्रभु-नाम का दान दिया है ।। ४ ।। १ ।। प्रभाती महला ४ ।। जब ज्ञान का सूर्य उदित हो जाता है तो गुरमुख प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं और जीवन रूपी रात्रि में प्रभु की बातें ही याद करते रहते हैं। हमारे प्रभु ने ही हमारे अन्दर यह इच्छा जगाई है और हम प्रभु की ही अब खोज करते हैं। मेरा मन तो साधु पुरुषों की चरण-धूलि का एक कण मात्र है। गुरु ने मुझे प्रभु का मीठा नाम याद करवाया है इसलिए मैं अपने केशों से गुरु के चरणों को झाड़ता पोंछता हूं ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु से टूटे हुए और मोह के माया जाल में फंसे व्यक्ति के लिए दिन और रात अर्थात जीवन और मरण सब कुछ अंधकार पूर्ण ही है। क्षण भर के लिए भी उसके हृदय में प्रभु-नाम नहीं बसा होता है और उसका बाल-बाल ऋण में फंसा रहता है ।। २ ।। सत्संगत से मिलाप होने पर जब मति और विवेक बुद्धि प्राप्त होती है तो अहंकार और ममता का जाल नष्ट हो जाता है। गुरु ने अपने उपदेश से हमें निहाल कर दिया है और प्रभु का नाम तथा प्रभु हमें अच्छा लगने लगा है ।। ३ ।। हे गुरु, तुम अगम्य और धरती के मालिक प्रभु हो; हम बच्चे हैं तुम कृपा करके हमारा पालन पोषण करते रहो। हे प्रभु गुरु, विष से भरे हुए संसार सागर में हम डूबते हुओं को निकाल लो; नानक का कथन है कि हे प्रभु, हम तो तेरे छोटे-छोटे से बच्चे ही हैं ।। ४ ।। २ ।। प्रभाती महला ४ ।।

खिनु हरि प्रभि किरपा धारी गुन गाए रसक रसीक ॥ गावत सुनत दोऊ भए मुकते जिना गुरमुखि खिनु हरि पीक ॥ १ ॥ मेरै मनि हरि हरि राम नामु रसु टीक ॥ गुरमुखि नामु सीतल जलु पाइआ हरि हरि नामु पीआ रसु झीक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन हरि हिरदै प्रीति लगानी तिना मसतकि ऊजल टीक ॥ हरि जन सोभा सभ जग ऊपरि जिउ विचि उडवा ससि कीक ॥ २ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न वसिओ तिन सभि कारज फीक ॥ जैसे सीगारु करै देह मानुख नाम बिना नकटे नक कीक ॥ ३ ॥ घटि घटि रमईआ रमत राम राइ सभ वरतै सभ महि ईक ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी गुर बचन धिआइओ घरी मीक ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ अगम दइआल क्रिपा प्रभि धारी मुखि हरि हरि नामु हम कहे ॥ पतित पावन हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख पाप लहे ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु रवि रहे ॥ दीन दइआलु दुख भंजनु गाइओ गुरमति नामु पदारथु लहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि नगरि हरि बसिओ मति गुरमति हरि हरि सहे ॥ सरीरि सरोवरि नामु हरि प्रगटिओ घरि मंदरि हरि प्रभु लहे ॥ २ ॥ जो नर भरमि भरमि उदिआने ते साकत मूड़ मुहे ॥ जिउ म्रिग नाभि बसै बासु बसना भ्रमि भ्रमिओ झार गहे ॥ ३ ॥ तुम वड अगम अगाधि बोधि प्रभ मति देवहु हरि प्रभ लहे ॥ जन नानक कउ गुरि हाथु सिरि धरिओ हरि राम नामि रवि रहे ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ मनि लागी प्रीति राम नाम हरि हरि जपिओ हरि प्रभु वडफा ॥ सतिगुर बचन सुखाने हीअरै हरि धारी हरि प्रभ क्रिपफा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नाम हरि निमखफा ॥ हरि हरि दानु दीओ गुरि पूरै हरि नामा मनि तनि बसफा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि वसिओ घरि मंदरि जपि सोभा गुरमुखि करपफा ॥ हलति पलति जन भए सुहेले मुख ऊजल गुरमुखि तरफा ॥ २ ॥ अनभउ हरि हरि हरि लिव लागी हरि उर धारिओ गुरि निमखफा ॥ कोटि कोटि के दोख सभ जन के हरि दूरि कीए इक पलफा ॥ ३ ॥ तुमरे जन तुम ही ते जाने प्रभ जानिओ जन ते मुखफा ॥ हरि हरि आपु धरिओ हरि जन

प्रभु ने एक क्षण भर के लिए हम पर कृपा की तो हमने रस ले लेकर उसका गुणानुवाद किया है। जिन गुरमुख व्यक्तियों ने क्षण भर के लिए भी प्रभु रस का पान किया है वे उसके गाने और गुण सुनने वाले सभी मुक्त हो गए हैं ।। १ ।। हे प्रभु, मेरे मन को प्रभु के नाम रस में टिका दो। गुरमुख बनकर ही हमने शीतल नाम रूपी जल प्राप्त किया है और प्रभु-नाम को एक ही घूँट में लगातार पी लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। जिन्होंने अपने हृदय में प्रेम लगा लिया है उनके माथे पर तो उज्जवल टीका लगा हुआ है। प्रभु के सेवकों की सारे संसार में वैसी ही उत्तम शोभा है जैसे तारागणों में चन्द्रमा को स्थित किया हुआ है ।। २ ।। जिनके हृदय में प्रभु-नाम का निवास नहीं होता उनके सभी कार्य फीके ही होते हैं अर्थात अच्छे नहीं होते। प्रभु-नाम से विहीन लोग वैसे ही हैं जैसे सिंगार किया हुआ मानव शरीर नाक कटी होने पर नकटा बना दिया जाता है ।। ३ ।। प्रत्येक घट में वह प्रभु रमण करता रहता है और वह एक ही सबमें कार्यशील बना रहता है। दास नानक पर प्रभु ने कृपा धारण की है और उसने एक घड़ी भर के लिए गुरु के वचनों का सुमिरन किया है ।। ४ ।। ३ ।। प्रभाती महला ४ ।। जब अगम्य दयालु प्रभु ने कृपा धारण की तो हमने अपने मुख से प्रभु-नाम का उच्चारण किया है। पतित पावन उस प्रभु-नाम का हमने सुमिरन किया है और हमारे सभी पाप तथा क्लेश नष्ट हो गए हैं ।। १ ।। हे मन, तू सब में रमण करने वाले प्रभु-नाम का सुमिरन करता रह। जिसने भी दीनदयालु और दुखों को नष्ट करने वाले प्रभु का गुणगान किया है, गुरु की शिक्षा के माध्यम से उसने अमूल्य नाम पदार्थ को पा लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। इस शरीर रूपी नगरी में प्रभु का निवास बना हुआ है परन्तु गुरु की शिक्षा ने ही उसको वास्तव में प्रकट किया है। शरीर रूपी सरोवर में प्रभु-नाम प्रकट हुआ है और इस हृदय रूपी मंदिर में ही प्रभु का दर्शन कर लिया जाता है ।। २ ।। जो व्यक्ति जंगलों में प्रभु प्राप्ति के लिए भटकते रहते हैं वे वास्तव में मूर्ख और प्रभु से टूटे हुए वे लोग हैं जो लुटते चले जा रहे हैं। वे उसी मृग के समान हैं जिसकी नाभि में सुगन्धित कस्तूरी बसती है परन्तु वह इधर-उधर दौड़-दौड़ कर कस्तूरी को पाने के लिए वृक्षों, झाड़ियों को टटोलता फिरता है ।। ३ ।। हे प्रभु, तुम सबसे बड़े, अगम्य और अथाह ज्ञान वाले हो; तुम ही हमें ऐसी बुद्धि प्रदान करो कि हम प्रभु को पा जाएँ। दास नानक के सिर पर गुरु ने हाथ रखा और हम प्रभु-नाम में लीन हो गए हैं ।। ४ ।। ४ ।। प्रभाती महला ४ ।। हमारे मन में राम नाम की प्रीति लग गई है और अब हमने उस महान प्रभु का सुमिरन किया है। प्रभु ने हम पर कृपा धारण की और सच्चे गुरु के वचन हमारे हृदय को सुख दे रहे हैं ।। १ ।। हे मेरे मन, तुम क्षण भर के लिए ही प्रभु-नाम का सुमिरन कर लो। पूर्ण गुरु ने मुझे ऐसा दान दिया है कि प्रभु-नाम मेरे मन तन में बस गया है ।। १ ।। रहाउ ।। अब मेरी शरीर रूपी नगरी और घर रूपी मंदिर में प्रभु आ बसा है और गुरु की ओर मुख कर के अब हम उस प्रभु का सुमिरन और उसका गुणानुवाद करते हैं। इस लोक और उस लोक में प्रभु के सेवक सुखी हो गए हैं और गुरमुख बने ऐसे लोग उज्जवल मुख को लेकर पार उतर गए हैं ।। २ ।। निर्भय प्रभु में हमने लौ लगा ली है और गुरु के माध्यम से क्षण भर के लिए प्रभु को अपने हृदय में धारण कर लिया है। प्रभु ने एक पल भर में अपने सेवक के करोड़ों दुखों और दोषों को दूर कर दिया है ।। ३ ।। हे प्रभु, तुम्हारे भक्त तुम्हारे द्वारा ही जाने जाते हैं अर्थात तुम्हारी भक्ति के कारण ही प्रसिद्ध होते हैं और तू अपने भक्तों का मुखिया अथवा श्रेष्ठ रूप में जाना जाता है। प्रभु ने अपने सेवकों में अपने प्रभुपन को स्वयं ही टिकाया है और दास

महि जन नानकु हरि प्रभु इकफा ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ गुर सतिगुरि नामु द्रिड़ाइओ हरि हरि हम मुए जीवे हरि जपिभ ॥ धनु धंनु गुरु सतिगुरु पूरा बिखु डुबदे बाह देइ कढिभा ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु अरधांभा ॥ उपजंपि उपाइ न पाईऐ कतहू गुरि पूरै हरि प्रभु लाभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु रसु राम रसाइणु रसु पीआ गुरमति रसभा ॥ लोह मनूर कंचनु मिलि संगति हरि उर धारिओ गुरि हरिभा ॥ २ ॥ हउमै बिखिआ नित लोभि लुभाने पुत कलत मोहि लुभिभा ॥ तिन पग संत न सेवे कबहू ते मनमुख भूंभर भरभा ॥ ३ ॥ तुमरे गुन तुम ही प्रभ जानहु हम परे हारि तुम सरनभा ॥ जिउ जानहु तिउ राखहु सुआमी जन नानकु दासु तुमनभा ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन हरि हरि नामु निधान ॥ हरि दरगह पावहि मान ॥ जिनि जपिआ ते पारि परान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनि मन हरि हरि नामु करि धिआनु ॥ सुनि मन हरि कीरति अठसठि मजानु ॥ सुनि मन गुरमुखि पावहि मानु ॥ १ ॥ जपि मन परमेसुरु परधानु ॥ खिन खोवै पाप कोटान ॥ मिलु नानक हरि भगवान ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

प्रभाती महला ५ बिभास १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मनु हरि कीआ तनु सभु साजिआ ॥ पंच तत रचि जोति निवाजिआ ॥ सिहजा धरति बरतन कउ पानी ॥ निमख न विसारहु सेवहु सारिगपानी ॥ १ ॥ मन सतिगुरु सेवि होइ परम गते ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा तां तू पावहि प्रानपते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कापड़ भोग रस अनिक भुंचाए ॥ मात पिता कुटंब सगल बनाए ॥ रिजकु समाहे जलि थलि मीत ॥ सो हरि सेवहु नीता नीत ॥ २ ॥ तहा सखाई जह कोइ न होवै ॥ कोटि अप्राध इक खिन महि धोवै ॥ दाति करै नही पछोतावै ॥ एका बखस फिरि

नानक तथा प्रभु अब एक रूप ही हो गए हैं ।। ४ ।। ५ ।। प्रभाती महला ४ ।। सच्चे गुरु ने प्रभु-नाम का सुमिरन कराया और प्रभु-नाम का जाप करके हम मुर्दा हो चुके अब जीवित हो गए हैं। वह सच्चा गुरु प्रभु धन्य है जिसने विष रूपी सागर में डूबते हुए को अपनी बाँह पकड़ाकर हमें बाहर निकाल लिया है ।। १ ।। हे मन, सुमिरन करने योग्य प्रभु-नाम का सुमिरन करो। हर रोज नए-नए उपाय करने से वह कभी भी प्राप्त नहीं होता, पूर्ण गुरु के माध्यम से ही हरि प्रभु पा लिया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु-नाम का रस ऐसे रसों का घर है जिसे गुरु की शिक्षा के माध्यम से रसपूर्वक पीया जाता है। संगत में मिलकर यह लोहे की राख जैसा बना हुआ मन सोना हो जाता है और प्रभु की ज्योति गुरु के माध्यम से हृदय में धारण हो जाती है ।। २ ।। अहंकार विषयों आदि के तथा पुत्र, स्त्री के मोह में जीव सदा लोभ और मोह बनाए रहते हैं। उन्होंने कभी भी सन्तजनों के चरणों की वन्दना नहीं की होती और ऐसे मनमुख राख के ढेर के रूप में तृष्णा से भरे हुए मनमुख बने रहते हैं ।। ३ ।। हे प्रभु, तुम्हारे गुणों को केवल तुम ही जानते हो हम तो हार कर तुम्हारी शरण में आ पड़े हैं। हे स्वामी, तुम जैसे भी हो हमें बचा लो क्योंकि सेवक नानक तो तुम्हारा ही है ।। ४ ।। ६ ।। छका १ ।।

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे मेरे मन, सुखों के घर प्रभु-नाम का जाप कर, इसी से तू प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करेगा। जिन्होंने प्रभु-नाम का जाप किया है वे पार उतर गए हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हे मन, तू ध्यानपूर्वक प्रभु के नाम को सुन। तू प्रभु की कीर्ति को सुनता रह, इसी में अड़सट तीर्थों का स्नान आ जाता है। हे मन, तू गुरमुख बनकर उसका नाम सुन तुझे तभी सम्मान मिलेगा ।। १ ।। हे मन, तू सर्वोपरि बने रहने वाले परमेश्वर का जाप कर क्योंकि प्रभु का सुमिरन ही क्षण भर के करोड़ों पापों का नाश कर देता है। हे नानक, इस प्रकार उस प्रभु से मिलाप कर ले ।। २ ।। १ ।। ७ ।।

प्रभाती महला ५ बिभास   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु ने ही मन और तन अर्थात सबकी रचना की है और पाँचों तत्वों से इसे बनाकर इसे प्राण रूपी ज्योति देकर नवाजा है। बिछौने के रूप में धरती दी है और काम में लाने के लिए पानी दिया है इसलिए हे जीव, तू क्षण भर के लिए भी प्रभु को मत बिसार और उस प्रभु का सुमिरन करता रह ।। १ ।। हे मन, सच्चे गुरु प्रभु का सुमिरन करने से ही परम गति प्राप्त होती है। जब तू हर्ष और शोक से अलिप्त बना रहता है तभी तू प्राणपति उस प्रभु को प्राप्त करता है ।। १ ।। रहाउ ।। वस्त्रों और अनेक भोगों के रस तुझे दिलाता-खिलाता है और उसी ने ही सभी माता-पिताओं और कुटुम्बों की रचना की है। वह मित्र बनकर जल-स्थल अर्थात सर्वत्र सबको रोज़ी पहुँचाता है इसलिए सदैव उस प्रभु का सुमिरन करते रहो ।। २ ।। जहाँ कोई भी सहायक साथी नहीं बनता वह प्रभु करोड़ों अपराधों को एक क्षण भर में ही माफ कर देता है। वह दान देता है परन्तु पछताता नहीं। वह एक ही बार में सब कुछ प्रदान कर देता है और फिर

बहुरि न बुलावै ॥ ३ ॥ किरत संजोगी पाइआ भालि ॥ साधसंगति महि बसे गुपाल ॥ गुर मिलि आए तुमरै दुआर ॥ जन नानक दरसनु देहु मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ प्रभ की सेवा जन की सोभा ॥ काम क्रोध मिटे तिसु लोभा ॥ नामु तेरा जन कै भंडारि ॥ गुन गावहि प्रभ दरस पिआरि ॥ १ ॥ तुमरी भगति प्रभ तुमहि जनाई ॥ काटि जेवरी जन लीए छडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु राता प्रभ कै रंगि ॥ तिनि सुखु पाइआ प्रभ कै संगि ॥ जिसु रसु आइआ सोई जानै ॥ पेखि पेखि मन महि हैरानै ॥ २ ॥ सो सुखीआ सभ ते ऊतमु सोइ ॥ जा कै हिदै वसिआ प्रभु सोइ ॥ सोई निहचलु आवै न जाइ ॥ अनदिनु प्रभ के हरि गुण गाइ ॥ ३ ॥ ता कउ करहु सगल नमसकारु ॥ जा कै मनि पूरनु निरंकारु ॥ करि किरपा मोहि ठाकुर देवा ॥ नानकु उधरै जन की सेवा ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुन गावत मनि होइ अनंद ॥ आठ पहर सिमरउ भगवंत ॥ जा कै सिमरनि कलमल जाहि ॥ तिसु गुर की हम चरनी पाहि ॥ १ ॥ सुमति देवहु संत पिआरे ॥ सिमरउ नामु मोहि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि गुरि कहिआ मारगु सीधा ॥ सगल तिआगि नामि हरि गीधा ॥ तिसु गुर कै सदा बलि जाईऐ ॥ हरि सिमरनु जिसु गुर ते पाईऐ ॥ २ ॥ बूडत प्रानी जिनि गुरहि तराइआ ॥ जिसु प्रसादि मोहै नही माइआ ॥ हलतु पलतु जिनि गुरहि सवारिआ ॥ तिसु गुर ऊपरि सदा हउ वारिआ ॥ ३ ॥ महा मुगध ते कीआ गिआनी ॥ गुर पूरे की अकथ कहानी ॥ पारब्रहम नानक गुरदेव ॥ वडै भागि पाईऐ हरि सेव ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सगले दूख मिटे सुख दीए अपना नामु जपाइआ ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाए सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ हम बारिक सरनि प्रभ दइआल ॥ अवगण काटि कीए प्रभि अपुने राखि लीए मेरै गुर गोपालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताप पाप बिनसे खिन भीतरि भए क्रिपाल गुसाई ॥ सासि सासि पारब्रहमु अराधी अपुने सतिगुर कै बलि जाई ॥ २ ॥ अगम अगोचरु बिअंतु सुआमी ता का अंतु न पाईऐ ॥ लाहा खाटि होईऐ

बार-बार नहीं बुलाता ।। ३ ।। किए हुए कर्मों के अनुसार अच्छे भाग्य से मैंने ये खोज लिया है कि वह प्रभु साधसंगत में ही बसता है। हे गुरुदेव, हम मिलकर तेरे द्वार पर आ पहुँचे हैं। अपने सेवकों सहित हे प्रभु, नानक को भी दर्शन प्रदान करो ।। ४ ।। १ ।। प्रभाती महला ५ ।। प्रभु की सेवा करने से सेवक को शोभा प्राप्त होती है और उसका काम, क्रोध, लोभ आदि मिट जाते हैं। तेरा नाम ही हे प्रभु, तेरे सेवक का खजाना है और तेरे सेवक हे प्रभु, तेरे दर्शनों के प्रेम में ही तेरा गुणानुवाद करते रहते हैं ।। १ ।। हे प्रभु, अपनी भक्ति तुमने स्वयं ही अनुभव कराई है और बन्धनों की रस्सी को काटकर तूने अपने सेवकों को छुड़ा लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। जो सेवक उस प्रभु के रंग में रंग गया उसने प्रभु के साथ बने रहकर सुख ही सुख पाया है। जिसे प्रभु के रंग का रस मिला है वही इसके बारे में जानता है और वह सब ओर प्रभु को ही देख देखकर मन में हैरान बना रहता है ।। २ ।। जिसके हृदय में प्रभु बस जाता है वही सबसे सुखी और सबसे उत्तम होता है। वही अटल बना रहता है और कभी आवागमन में नहीं पड़ता, वही सदैव प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है ।। ३ ।। सभी उसी को प्रणाम करो जिसके मन में पूर्ण निराकार प्रभु बसा हुआ है। हे मेरे मालिक प्रभु, तुम मुझ पर कृपा करो ताकि नानक तेरे सेवकों की सेवा करते हुए पार उतर जाए ।। ४ ।। २ ।। प्रभाती महला ५ ।। आठों प्रहर प्रभु का सुमिरन करो ताकि उसके गुण गाते हुए मन आनन्दित बना रहे। जिसके सुमिरन से पाप उतर जाते हैं हम उस गुरु कें चरणों में आ पड़े हैं ।। १ ।। हे सन्तजनों, हमें सुमति प्रदान करो ताकि हम प्रभु-नाम का सुमिरन करें और हमारा पार उतारा हो जाए ।। १ ।। रहाउ ।। जिस गुरु ने हमें सीधा मार्ग बताया और हमने सब कुछ त्यागकर प्रभु-नाम को अपना स्वभाव बना लिया उस गुरु पर सदैव हम बलिहारी जाते हैं क्योंकि उसी गुरु से हम प्रभु का सुमिरन प्राप्त करते हैं ।। २ ।। जिस गुरु ने डूबते हुए प्राणी को तैराकर पार उतार लिया है, जिसकी कृपा से माया मोहित नहीं कर पाती, जिस गुरु ने हमारा यह लोक और परलोक संवार दिया है मैं सदैव उस गुरु पर अपने आपको कुर्बान करता रहता हूँ ।। ३ ।। महामूर्ख से जिसने मुझे ज्ञानवान बना दिया है उस पूर्ण गुरु की कथा अकथनीय है। हे नानक, परब्रह्म ही गुरुदेव है और बड़े भाग्य से ही उस प्रभु का सुमिरन प्राप्त होता है ।। ४ ।। ३ ।। प्रभाती महला ५ ।। प्रभु ने अपने नाम का सुमिरन कराया तो हमारे सारे दुख मिट गए हैं और प्रभु ने सभी सुख दे दिए हैं। अपनी कृपा करके ही उसने अपनी सेवा में लगाया है और हमारा सारा पाप मिटा दिया है ।। १ ।। हम तो उस दयालु प्रभु की शरण में आए हुए बालक हैं, हमारे अवगुणों को समाप्त करके प्रभु ने हमें अपना बना लिया है और उस प्रभु गुरु ने हमें बचा लिया है ।। १ ।। रहाउ ।। धरती का स्वामी प्रभु, जब कृपालु हुआ तो हमारे सभी संताप और पाप क्षण भर में ही विनष्ट हो गए। अब हम प्रत्येक श्वास के साथ परब्रह्म की आराधना करते हैं और अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाते हैं ।। २ ।। वह प्रभु अगम्य, अगोचर एवं अनन्त है। उसके रहस्य को नहीं जाना जा सकता। उस प्रभु का लाभ उठाकर ही

धनवंता अपुना प्रभू धिआईऐ ॥ ३ ॥ आठ पहर पारब्रहमु धिआई सदा सदा गुन गाइआ ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ पारब्रहमु गुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि नासे ॥ सचु नामु गुरि दीनी रासे ॥ प्रभ की दरगह सोभावंते ॥ सेवक सेवि सदा सोहंते ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ सगले रोग दोख सभि बिनसहि अगिआनु अंधेरा मन ते जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरन गुरि राखे मीत ॥ हरि के नाम सिउ लागी प्रीति ॥ कोटि जनम के गए कलेस ॥ जो तिसु भावै सो भल होस ॥ २ ॥ तिसु गुर कउ हउ सद बलि जाई ॥ जिसु प्रसादि हरि नामु धिआई ॥ ऐसा गुरु पाईऐ वडभागी ॥ जिसु मिलते राम लिव लागी ॥ ३ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ आठ पहर अपुनी लिव लाइ ॥ जनु नानकु प्रभ की सरनाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ करि किरपा अपुने प्रभि कीए ॥ हरि का नामु जपन कउ दीए ॥ आठ पहर गुन गाइ गुबिंद ॥ भै बिनसे उतरी सभ चिंद ॥ १ ॥ उबरे सतिगुर चरनी लागि ॥ जो गुरु कहै सोई भल मीठा मन की मति तिआगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि वसिआ हरि प्रभु सोई ॥ कलि कलेस किछु बिघनु न होई ॥ सदा सदा प्रभु जीअ कै संगि ॥ उतरी मैलु नाम कै रंगि ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागो पिआरु ॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ प्रभ मिलन का मारगु जानां ॥ भाइ भगति हरि सिउ मनु मानां ॥ ३ ॥ सुणि सजण संत मीत सुहेले ॥ नामु रतनु हरि अगह अतोले ॥ सदा सदा प्रभु गुण निधि गाईऐ ॥ कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ से धनवंत सेई सचु साहा ॥ हरि की दरगह नामु विसाहा ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मीत ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी निरमल पूरन रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाइआ लाभु वजी वाधाई ॥ संत प्रसादि हरि के गुन गाई ॥ २ ॥ सफल जनमु जीवन परवाणु ॥ गुर परसादी हरि रंगु माणु ॥ ३ ॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ नानक गुरमुखि उतरहि पारि ॥ ४ ॥ ७ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुरु पूरा पूरी ता की कला ॥

हम धनवान हो सकते हैं और यह लाभ प्रभु सुमिरन से प्राप्त होता है ।। ३ ।। आठों प्रहर हमने उस परब्रह्म का सुमिरन किया और निरन्तर उसके गुणों का गायन किया है। नानक का कथन है कि मेरे सभी उद्‌देश्य पूरे हो गए हैं और परब्रह्म गुरु को मैंने पा लिया है ।। ४ ।। ४ ।। प्रभाती महला ५ ।। प्रभु के नाम का सुमिरन करने से सभी पाप भाग खड़े हुए हैं और गुरु ने प्रभु का सच्चा नाम हमें रास पूंजी के तौर पर दे दिया है। प्रभु के दरबार में प्रभु के सेवक उसका सुमिरन करके सुन्दर और शोभायुक्त बने रहते हैं ।। १ ।। हे मेरे भाई, प्रभु के नाम का सुमिरन करो जिससे तुम्हारे सभी रोग और दुख नष्ट हो जाएंगे और अज्ञान का अंधेरा मन से दूर हो जाएगा ।। १ ।। रहाउ ।। मित्र गुरु ने हमारे जन्म और मरण को रोक लिया है क्योंकि अब प्रभु के नाम में हमारी प्रीति लग गई है। करोड़ों जन्मों के हमारे दुख दूर हो गए हैं और जो उस प्रभु को अच्छा लगता है वही हमारे लिए भला होता है ।। २ ।। उस गुरु पर मैं सदैव बलिहारी जाता हूं जिसकी कृपा से मैं प्रभु-नाम का सुमिरन करता हूँ। बड़े भाग्य से ही ऐसा गुरु प्राप्त होता है जिसके मिलाप से प्रभु में सुरति लीन हो जाती है ।। ३ ।। हे स्वामी परब्रह्म प्रभु, हम पर कृपा कर क्योंकि तू ही सबके हृदय की बात जानने वाला अन्तर्यामी है। आठों प्रहर हमारी लौ तुम अपने में ही लगाए रखो क्योंकि दास नानक तो अब प्रभु की ही शरण में आ पहुँचा है ।। ४ ।। ५ ।। प्रभाती महला ५ ।। प्रभु ने कृपा करके हमें अपना बना लिया और प्रभु-नाम सुमिरन करने के लिए हमें दे दिया। हमने आठों प्रहर प्रभु का गुणानुवाद किया जिससे हमारे भय विनष्ट हो गए और सभी चिन्ताएँ समाप्त हो गई हैं ।। १ ।। सच्चे गुरु के चरणों में लगकर हमारा उद्धार हो गया इसलिए हम तो यह जानते हैं कि जो गुरु कहता है वही भला और मीठा होता है। हे जीव, तू मन की चतुराईयों वाली मति को त्याग दे ।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु ही हमारे मन तन में बसा है और इसलिए हमें मन तन के क्लेश और विघ्न अटका (रोक) नहीं पाते। वह प्रभु सदैव जीव के साथ ही बना रहता है और प्रभु-नाम के रंग के माध्यम से ही हमारे मन की मैल उतर गई है ।। २ ।। उसके चरण कमलों से हमारा प्यार लग गया है तथा काम, क्रोध, अहंकार आदि विनष्ट हो गए हैं। प्रभु से मिलने का मार्ग हमने जान लिया है और उसकी प्रेमा भक्ति के माध्यम से हमारा मन प्रभु में लीन होकर सन्तुष्ट हो गया है ।। ३ ।। हे मित्र, सन्त, सज्जन और सुख देने वाले सभी लोग, सुन लो कि प्रभु-नाम रूपी रत्न अगाध और अतुलनीय है। गुणों के भण्डार उस प्रभु के गुण सदैव गाते रहना चाहिए और नानक का कथन है कि बड़े भाग्य से उस प्रभु को पाया जाता है ।। ४ ।। ६ ।। प्रभाती महला ५ ।। वे ही धनवान और सच्चे साहूकार हैं जिन्होंने प्रभु के दरबार के लिए प्रभु-नाम का भरोसा मन में बनाए रखा है ।। १ ।। हे मित्र मन, प्रभु-नाम का ही सुमिरन करते रहो। बड़े भाग्य से निर्मल और पूर्ण मर्यादा सिखाने वाले पूर्ण गुरु को प्राप्त किया जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। जब हमने लाभ प्राप्त कर लिए तो बधाई के बाजे बजने लगे। शान्त-पुरुषों की कृपा से अब हमने प्रभु के गुण गाए हैं ।। २ ।। ऐसे सभी व्यक्तियों का जन्म और जीवन सफल तथा स्वीकृत माना जाता है जो प्रभु की कृपा से प्रभु के नाम के रंग का आनन्द लेते हैं ।। ३ ।। उनका काम, क्रोध, अहंकार विनष्ट हो जाता है और हे नानक, वे गुरमुख बनकर पार उतर जाते हैं ।। ४ ।। ७ ।। प्रभाती महला ५ ।। पूर्ण गुरु की शक्ति भी पूर्ण होती है

गुर का सबदु सदा सद अटला ॥ गुर की बाणी जिसु मनि वसै ॥ दूखु दरदु सभु ता का नसै ॥ १ ॥ हरि रंगि राता मनु राम गुन गावै ॥ मुकतो साधू धूरी नावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी उतरे पारि ॥ भउ भरमु बिनसे बिकार ॥ मन तन अंतरि बसे गुर चरना ॥ निरभै साध परे हरि सरना ॥ २ ॥ अनद सहज रस सूख घनेरे ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेरे ॥ गुरि पूरै अपुने करि राखे ॥ हरि नामु जपत किलबिख सभि लाथे ॥ ३ ॥ संत साजन सिख भए सुहेले ॥ गुरि पूरै प्रभ सिउ लै मेले ॥ जनम मरन दुख फाहा काटिआ ॥ कहु नानक गुरि पड़दा ढाकिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सतिगुरि पूरै नामु दीआ ॥ अनद मंगल कलिआण सदा सुखु कारजु सगला रासि थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल गुर के मनि वूठे ॥ दूख दरद भ्रम बिनसे झूठे ॥ १ ॥ नित उठि गावहु प्रभ की बाणी ॥ आठ पहर हरि सिमरहु प्राणी ॥ २ ॥ घरि बाहरि प्रभु सभनी थाई ॥ संगि सहाई जह हउ जाई ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ सदा जपे नानकु गुणतासु ॥ ४ ॥ ९ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु सुघड़ सुजाणु ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किलबिख मेटे सबदि संतोखु ॥ नामु अराधन होआ जोगु ॥ साधसंगि होआ परगासु ॥ चरन कमल मन माहि निवासु ॥ १ ॥ जिनि कीआ तिनि लीआ राखि ॥ प्रभु पूरा अनाथ का नाथु ॥ जिसहि निवाजे किरपा धारि ॥ पूरन करम ता के आचार ॥ २ ॥ गुण गावै नित नित नित नवे ॥ लख चउरासीह जोनि न भवे ॥ ईहां ऊहां चरण पूजारे ॥ मुखु ऊजलु साचे दरबारे ॥ ३ ॥ जिसु मसतकि गुरि धरिआ हाथु ॥ कोटि मधे को विरला दासु ॥ जलि थलि महीअलि पेखै भरपूरि ॥ नानक उधरसि तिसु जन की धूरि ॥ ४ ॥ १० ॥ प्रभाती महला ५ ॥ कुरबाणु जाई गुर पूरे अपने ॥ जिसु प्रसादि हरि हरि जपु जपने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित बाणी सुणत निहाल ॥ बिनसि गए बिखिआ जंजाल ॥ १ ॥ साच सबद सिउ लागी प्रीति ॥ हरि प्रभु अपुना आइआ चीति ॥ २ ॥ नामु जपत होआ

तथा शब्द-गुरु सदैव अटल बना रहने वाला होता है। जिस मन में गुरु की वाणी बस जाती है उसके सभी दुख दर्द भाग खड़े होते हैं ।। १ ।। प्रभु के रंग में लीन मन प्रभु के ही गुण गाता है और वही व्यक्ति मुक्त माना जाता है जो साधु पुरुषों की चरणधूलि में स्नान करता रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। गुरु की कृपा से वह पार उतर जाता है और उसके भय, भ्रम तथा विकार नष्ट हो जाते हैं। उसके मन, तन में गुरु के चरण बसे रहते हैं और वह निर्भय होकर प्रभु साधु की शरण में आ पड़ता है ।। २ ।। उसे जीवन का स्वाभाविक रस, आनन्द और अनेकों सुख मिल जाते हैं तथा शत्रु और दुख उसके पास नहीं आते। पूर्ण गुरु ने उन्हें अपना बनाकर उनकी रक्षा की होती है और प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए उनके सभी पाप समाप्त हो जाते हैं ।। ३ ।। प्रभु के शान्त-पुरुष, सज्जन पुरुष और सिक्ख सुखी हो जाते हैं और पूर्ण गुरु के माध्यम से वे प्रभु से मिल जाते हैं। आवागमन के दुख का फन्दा कट जाता है और नानक का कथन है कि गुरु व्यक्ति के पापों पर पर्दा ही डाले रहता है ।। ४ ।। ८ ।। प्रभाती महला ५ ।। पूर्ण सच्चे गुरु ने अपना नाम हमें दिया है जिससे सदा बना रहने वाला सुख, आनन्द-मंगल और कल्याण हमें प्राप्त हो गया है तथा हमारा सारा कार्य सफल हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के चरण कमल हमारे मन में बस गए हैं जिससे दुख दर्द और झूटे भ्रम विनष्ट हो गए हैं ।। १ ।। हे प्राणी, सदैव उठकर प्रभु की वाणी का गायन करो और आठों प्रहर प्रभु का सुमिरन करते रहो ।। २ ।। घर बाहर सर्वत्र प्रभु ही है और मैं जहाँ भी जाता हूँ वह मेरे संग बना रहकर मेरी सहायता करता है ।। ३ ।। मैं दोनों हाथ जोड़कर यही अरदास करता हूँ कि नानक तो गुणों के भण्डार प्रभु का ही सदैव जाप करता रहे ।। ४ ।। ९ ।। प्रभाती महला ५ ।। परब्रह्म प्रभु ही सुन्दर और सुजान है। पूर्ण गुरु बड़े भाग्य से ही पाया जाता है और उसके दर्शन पर तो मैं बलिहारी जाता हूँ ।। १ ।। रहाउ ।। शब्द के माध्यम से सन्तोष करके सभी पाप दूर कर दिए हैं और मैं अब प्रभु-नाम के सुमिरन के योग्य हो गया हूँ। साधसंगत में मेरा अन्तर्मन प्रकाशित हो उठा है और प्रभु के चरण कमलों का मेरे मन में निवास हो गया है ।। १ ।। जिसने हमें बनाया है उसी ने ही हमारी रक्षा भी की है। अनाथों का नाथ वह प्रभु सब प्रकार से पूर्ण है; कृपा धारण करके वह जिसे नवाजता है उसी के कर्म और आचरण गुणों से पूर्ण होते हैं ।। २ ।। वही सदैव प्रभु के नित्य नवीन गुणों का गायन करता रहता है तथा चौरासी लाख योनियों में भटकता नहीं हैं। इस लोक और परलोक में वह प्रभु के चरणों की ही वन्दना करता रहता है और इसलिए प्रभु के सच्चे दरबार में उसका मुख उज्जवल बना रहता है ।। ३ ।। गुरु ने जिसके माथे पर हाथ रख दिया करोड़ों में ऐसा दास कोई बिरला ही है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष में वह प्रभु को पूर्ण रूप से व्याप्त देखता है और हे नानक, ऐसे सेवक की चरणधूलि से सभी का उद्धार होता है ।। ४ ।। १० ।। प्रभाती महला ५ ।। जिस की कृपा से हम प्रभु का बार-बार सुमिरन करते हैं हम उस अपने पूर्ण गुरु पर बलिहारी जाते हैं ।। १ ।। रहाउ ।। उसकी अमृत वाणी को सुनकर हम निहाल हो जाते हैं तथा विषय विकारों के हमारे जंजाल विनष्ट हो जाते हैं ।। १ ।। प्रभु के सच्चे शब्द में हमारी प्रीति लग गई है और प्रभु अब हमारे चित्त में आ बसा है ।। २ ।। प्रभु-नाम के सुमिरन से हमारा अन्तर्मन

परगासु ॥ गुर सबदे कीना रिदै निवासु ॥ ३ ॥ गुर समरथ सदा दइआल ॥ हरि जपि जपि नानक भए निहाल ॥ ४ ॥ ११ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ ॥ दीन दइआल भए किरपाला अपणा नामु आपि जपाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतसंगति मिलि भइआ प्रगास ॥ हरि हरि जपत पूरन भई आस ॥ १ ॥ सरब कलिआण सूख मनि वूठे ॥ हरि गुण गाए गुर नानक तूठे ॥ २ ॥ १२ ॥

प्रभाती महला ५ घरु २ बिभास   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अवरु न दूजा ठाउ ॥ नाही बिनु हरि नाउ ॥ सरब सिधि कलिआन ॥ पूरन होहि सगल काम ॥ १ ॥ हरि को नामु जपीऐ नीत ॥ काम क्रोध अहंकारु बिनसै लगै एकै प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामि लागै दूखु भागै सरनि पालन जोगु ॥ सतिगुरु भेटै जमु न तेटै जिसु धुरि होवै संजोगु ॥ २ ॥ रैनि दिनसु धिआइ हरि हरि तजहु मन के भरम ॥ साधसंगति हरि मिलै जिसहि पूरन करम ॥ ३ ॥ जनम जनम बिखाद बिनसे राखि लीने आपि ॥ मात पिता मीत भाई जन नानक हरि हरि जापि ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥

प्रभाती महला ५ बिभास पड़ताल   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रम राम राम राम जाप ॥ कलि कलेस लोभ मोह बिनसि जाइ अहं ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि संत चरन लागि मनु पवितु जाहि पाप ॥ १ ॥ नानकु बारिकु कछू न जानै राखन कउ प्रभु माई बाप ॥ २ ॥ १ ॥ १४ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ चरन कमल सरनि टेक ॥ ऊच मूच बेअंतु ठाकुरु सरब ऊपरि तुही एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान अधार दुख बिदार दैनहार बुधि बिबेक ॥ १ ॥ नमसकार रखनहार मनि अराधि प्रभू मेक ॥ संत रेनु करउ मजनु नानक पावै सुख अनेक ॥ २ ॥ २ ॥ १५ ॥

प्रकाशित हो उठा है और शब्द-गुरु ने हमारे ह्रदय में निवास बना लिया है ।। ३ ।। समर्थ गुरु प्रभु सदैव दयालु बना रहता है और हे नानक, हम तो उस प्रभु का बार-बार सुमिरन करके निहाल हो गए हैं ।। ४ ।। ११ ।। प्रभाती महला ५ ।। गुरु प्रभु का बार-बार सुमिरन करने से हमने सदैव सुख प्राप्त किया है। दीनदयालु प्रभु हम पर कृपालु हो गए हैं और अपने नाम का सुमिरन उन्होंने हमसे स्वयं ही कराया है ।। १ ।। रहाउ ।। शान्त पुरुषों की संगत के मिलाप से हमारे अन्दर प्रकाश उत्पन्न हो गया है और प्रभु का बार-बार सुमिरन करने से हमारी आशाएँ पूरी हो गई हैं ।। १ ।। सब प्रकार से कुशलक्षेम बनी हुई है और सुख मन में बस गए हैं। हे नानक, गुरु के प्रसन्न होने से ही हमने प्रभु का गुणानुवाद किया है ।। २ ।। १२ ।।

प्रभाती महला ५ घरु २ बिभास   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

प्रभु के नाम के बिना हमें दूसरा कोई भी ठिकाना नहीं है। प्रभु-नाम में ही सर्व सिद्धियाँ और सफलताएँ प्राप्त होती हैं तथा सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं ।। १ ।। प्रभु-नाम का सदैव सुमिरन करना चाहिए क्योंकि इससे काम, क्रोध, अहंकार विनष्ट होता है और उस एक ही प्रभु में प्रीति बनी रहती है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु-नाम में लौ लगाने से दुख भाग खड़ा होता है और यह प्रभु का नाम ही शरण में आए हुए का पालन पोषण करता है। जिसका प्रभु की ओर से ही ऐसा संयोग लिखा होता है वही सच्चे गुरु से मिलाप करता है और उसे यम की ताड़ना भी नहीं सहन करनी पड़ती ।। २ ।। दिन रात प्रभु का सुमिरन करते हुए मन के भ्रमों का निवारण कर दो परन्तु साधसंगत में भी उसे ही प्रभु प्राप्त होता है जिस पर प्रभु की पूर्ण कृपा होती है ।। ३ ।। जन्मों-जन्मों के क्लेश मिट गए हैं और प्रभु ने हमें स्वयं बचा लिया है। हे दास नानक, सदैव परमात्मा के नाम का ही सुमिरन करता रह क्योंकि परमात्मा ही हमारी माता, पिता, मित्र और भाई है ।। ४ ।। १ ।। १३ ।।

प्रभाती महला ५ बिभास पड़ताल   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सर्वव्यापक उस प्रभु का ही बार-बार सुमिरन कर, इससे कलह-क्लेश, लोभ, मोह और अहंकार का संताप विनष्ट हो जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। अहंकार को त्यागकर शान्त पुरुषों के चरणो में लगने से पाप समाप्त हो जाते हैं और मन पवित्र हो जाता है ।। १ ।। बालक नानक तो कुछ भी नहीं जानता, इसकी रक्षा करने वाला तो इसका माई-बाप प्रभु ही है ।। २ ।। १ ।। १४ ।। प्रभाती महला ५ ।। मुझे तो प्रभु के चरण कमलों की शरण का ही आसरा है। हे मेरे मालिक प्रभु, तू ही सबसे ऊँचा और बड़ा है, तू ही अनन्त है और सबके उपर एक तू ही है ।। १ ।। रहाउ ।। तू ही हमारे प्राणों का आसरा है, दुखों को नष्ट करने वाला है और विवेक बुद्धि प्रदान करने वाला है ।। १ ।। हे हमारे रक्षक प्रभु, तुम्हें प्रणाम है और मैं तो मन में केवल उस एक प्रभु की ही आराधना करता हूँ। शान्त पुरुषों की चरणधूलि में मैं स्नान करता हूँ और इस प्रकार नानक अनेक सुखों को प्राप्त करता है ।। २ ।। २ ।। १५ ।।

प्रभाती असटपदीआ महला १ बिभास १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा बउरी मनु बउराइआ ॥ झूठै लालचि जनमु गवाइआ ॥ लपटि रही फुनि बंधु न पाइआ ॥ सतिगुरि राखे नामु द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ ना मनु मरै न माइआ मरै ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै सबदु वीचारि भउ सागरु तरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ संचि राजे अहंकारी ॥ माइआ साथि न चलै पिआरी ॥ माइआ ममता है बहु रंगी ॥ बिनु नावै को साथि न संगी ॥ २ ॥ जिउ मनु देखहि पर मनु तैसा ॥ जैसी मनसा तैसी दसा ॥ जैसा करमु तैसी लिव लावै ॥ सतिगुरु पूछि सहज घरु पावै ॥ ३ ॥ रागि नादि मनु दूजै भाइ ॥ अंतरि कपटु महा दुखु पाइ ॥ सतिगुरु भेटै सोझी पाइ ॥ सचै नामि रहै लिव लाइ ॥ ४ ॥ सचै सबदि सचु कमावै ॥ सची बाणी हरि गुण गावै ॥ निज घरि वासु अमर पदु पावै ॥ ता दरि साचै सोभा पावै ॥ ५ ॥ गुर सेवा बिनु भगति न होई ॥ अनेक जतन करै जे कोई ॥ हउमै मेरा सबदे खोई ॥ निरमल नामु वसै मनि सोई ॥ ६ ॥ इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥ बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥ सबदे नामु रखै उरि धारि ॥ सबदे गति मति मोख दुआरु ॥ ७ ॥ अवरु नाही करि देखणहारो ॥ साचा आपि अनूपु अपारो ॥ राम नाम ऊतम गति होई ॥ नानक खोजि लहै जनु कोई ॥ ८ ॥ १ ॥ प्रभाती महला १ ॥ माइआ मोहि सगल जगु छाइआ ॥ कामणि देखि कामि लोभाइआ ॥ सुत कंचन सिउ हेतु वधाइआ ॥ सभु किछु अपना इकु रामु पराइआ ॥ १ ॥ ऐसा जापु जपउ जपमाली ॥ दुख सुख परहरि भगति निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधान तेरा अंतु न पाइआ ॥ साच सबदि तुझ माहि समाइआ ॥ आवा गउणु तुधु आपि रचाइआ ॥ सेई भगत जिन सचि चितु लाइआ ॥ २ ॥ गिआनु धिआनु नरहरि निरबाणी ॥ बिनु सतिगुर भेटे कोइ न जाणी ॥ सगल सरोवर जोति समाणी ॥ आनद रूप विटहु कुरबाणी ॥ ३ ॥ भाउ भगति गुरमती पाए ॥ हउमै विचहु सबदि जलाए ॥

प्रभाती अष्टपदियां महला १ बिभास   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

इस पगली दुविधा ने तो मेरे मन को भी बावला कर दिया है। झूठे लालचों में लगकर ही हमने जीवन को गँवा दिया है। यह इस प्रकार से लिपट गई है कि फिर कोई इसे रोक नहीं सकता। नाम का सुमिरन हृदय में पक्का करवा कर सच्चा गुरु ही इससे हमारी रक्षा करता है ।। १ ।। ना तो मन के संकल्प-विकल्प समाप्त होते हैं और ना ही माया का नाश होता है। जिस प्रभु ने इन सबकी रचना की है वही इसके बारे में जानता है। जीव तो शब्द का चिंतन करते हुए ही भवसागर से पार उतरता है ।। १ ।। रहाउ ।। अहंकारी राजागण धन सम्पदा इकट्ठी करते हैं परन्तु प्यारी लगने वाली यह माया साथ नहीं चलती। इस माया और ममता के अनेकों ही रंग हैं परन्तु प्रभु-नाम के बिना वास्तविक संगी साथी कोई भी नहीं बनता ।। २ ।। व्यक्ति का अपना मन जैसा होता है वैसे ही उसे अन्यों का मन भी दिखाई देता है। व्यक्ति की मन की इच्छाएँ जैसी होती हैं वैसी ही उसकी दशा बन जाती है और जिस प्रकार के उसके कर्म होते हैं वैसी ही उसकी सुरति अर्थात संस्कार बन जाते हैं। पूर्णशान्ति वाली अवस्था तो वह सच्चे गुरु से ही जानकर प्राप्त कर पाता है ।। ३ ।। दुनिया के प्रेम और दुनिया की धुनों में लगा हुआ मन द्वैतभाव में ही भटकता रहता है तथा अपने अन्दर कष्ट को धारण किए हुए महा दुख पाता रहता है। यदि सच्चे गुरु से मिलाप हो जाए तो उसे समझाने वाली बुद्धि प्राप्त होती है और फिर वह प्रभु के सच्चे नाम में ही अपनी सुरति को लगाए रहता है ।। ४ ।। सच्चे शब्द के माध्यम से वह सत्य का आचरण करता है और सच्ची वाणी के माध्यम से प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है। वह अपने मूल स्वरूप में निवास करता हुआ अमर पद प्राप्त कर लेता है तथा इस प्रकार उस सच्चे प्रभु के द्वार पर शोभा प्राप्त करता है ।। ५ ।। गुरु की सेवा के बिना भक्ति नहीं होती बेशक कोई अनेकों यत्न करके देख ले। शब्द के माध्यम से ही अहंकार और मैं मेरी का भाव समाप्त होता है और मन में प्रभु के निर्मल नाम का निवास होता है ।। ६ ।। इस संसार में शब्द के अनुरूप किया हुआ आचरण ही सर्वश्रेष्ठ है और प्रभु-नाम के बिना अन्य सब कुछ मोह का ही घोर अहंकार है। शब्द के माध्यम से ही प्रभु-नाम को हृदय में धारण करके रखा जाता है और शब्द के द्वारा ही गतिशीलता, मति और मोक्ष का द्वार प्राप्त होता है ।। ७ ।। प्रभु के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है जो रचना करके उसकी सम्भाल भी करता हो। केवल वह ही अनुपम अपार और सच्चा प्रभु है जो स्वयं सब कुछ करता है। हे नानक, कोई भी इस बात को खोज ले वह जान लेगा कि प्रभु-नाम ही सर्वोत्तम गति प्रदान करने वाला है ।।८ ।।१ ।।प्रभाती महला १।। माया और मोह इस सारे संसार में छाया हुआ है। कामी पुरुष यहाँ सुन्दर स्त्री को देखकर उसके लोभ में पड़ जाता है, पुत्र और सोना आदि में वह अपनी वासना को बढ़ाता ही जाता है और इसी प्रक्रिया में उसे यह सारी धन-सम्पदा तो अपनी लगने लगी है परन्तु वह प्रभु उसके लिए पराया हो जाता है ।। १ ।। अपनी माला के माध्यम से ऐसा सुमिरन करो और इस प्रकार की निराली भक्ति को अपनाओ की सभी दुखों और सुखों से परे चले जाओ ।।१ ।। रहाउ ।। हे गुणों के भण्डार प्रभु, तेरे रहस्य को नहीं जाना जा सका है। केवल सच्चे शब्द के माध्यम से ही तुझमें लीन हुआ जाता है। आवागमन की रचना तूने स्वयं ही की है परन्तु तेरे सच्चे भक्त वे ही हैं जिन्होंने सत्य में अपना चित्त लीन किया हुआ है और आवागमन से परे हो गए हैं ।।२ ।।निर्वाण प्रभु का ज्ञान ध्यान सच्चे गुरु के मिलाप के बिना कोई नहीं जान सकता। हृदय रूपी सभी सरोवरों में उस प्रभु की ज्योति ही समाई हुई है और उस प्रभु के आनन्द स्वरूप पर मैं कुर्बान जाता हूँ ।।३ ।।गुरु की शिक्षा से ही प्रेम भक्ति को प्राप्त कर शब्द के माध्यम से अन्तर्मन का अहंकार जलाया जाता है।

धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सचा नामु मंनि वसाए ॥ ४ ॥ बिसम बिनोद रहे परमादी ॥ गुरमति मानिआ एक लिव लागी ॥ देखि निवारिआ जल महि आगी ॥ सो बूझै होवै वडभागी ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ अनदिनु जागै सचि लिव लाए ॥ एको जाणै अवरु न कोइ ॥ सुखदाता सेवे निरमलु होइ ॥ ६ ॥ सेवा सुरति सबदि वीचारि ॥ जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥ जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥ सची रहत सचा सुखु पाए ॥ ७ ॥ सुखदाता दुखु मेटणहारा ॥ अवरु न सूझसि बीजी कारा ॥ तनु मनु धनु हरि आगै राखिआ ॥ नानकु कहै महा रसु चाखिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ प्रभाती महला १ ॥ निवली करम भुअंगम भाठी रेचक पूरक कुंभ करै ॥ बिनु सतिगुर किछु सोझी नाही भरमे भूला बूडि मरै ॥ अंधा भरिआ भरि भरि धोवै अंतर की मलु कदे न लहै ॥ नाम बिना फोकट सभि करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै ॥ १ ॥ खटु करम नामु निरंजनु सोई ॥ तू गुण सागरु अवगुण मोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ धंधा धावणी दुरमति कार बिकार ॥ मूरखु आपु गणाइदा बूझि न सकै कार ॥ मनसा माइआ मोहणी मनमुख बोल खुआर ॥ मजनु झूठा चंडाल का फोकट चार सींगार ॥ २ ॥ झूठी मन की मति है करणी बादि बिबादु ॥ झूठे विचि अहंकरणु है खसम न पावै सादु ॥ बिनु नावै होरु कमावणा फिका आवै सादु ॥ दुसटी सभा विगुचीऐ बिखु वाती जीवण बादि ॥ ३ ॥ ए भ्रमि भूले मरहु न कोई ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु होई ॥ बिनु सतिगुर मुकति किनै न पाई ॥ आवहि जांहि मरहि मरि जाई ॥ ४ ॥ एहु सरीरु है त्रै गुण धातु ॥ इस नो विआपै सोग संतापु ॥ सो सेवहु जिसु माई न बापु ॥ विचहु चूकै तिसना अरु आपु ॥ ५ ॥ जह जह देखा तह तह सोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ हिरदै सचु एह करणी सारु ॥ होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥ ६ ॥ दुबिधा चूकै तां सबदु पछाणु ॥ घरि बाहरि एको करि जाणु ॥ एहा मति सबदु है सारु ॥ विचि दुबिधा माथै पवै छारु ॥ ७ ॥ करणी कीरति गुरमति सारु ॥ संत सभा गुण गिआनु बीचारु ॥ मनु मारे जीवत मरि जाणु ॥ नानक नदरी नदरि पछाणु ॥ ८ ॥ ३ ॥

सच्चे नाम को मन में बसाकर दौड़ते हुए मन को रोक लिया जाता है ।। ४ ।। प्रमाद पैदा करने वाले विस्मयकारी कौतुक अब छूट जाते हैं। गुरु की शिक्षा में सन्तुष्ट होकर मन की लौ उस एक प्रभु में लग जाती है। प्रभु को देखकर अब वह प्रभु-नाम रूपी जल से तृष्णा रूपी अग्नि को दूर कर लेता है। इस रहस्य को जो बूझ लेता है वह बड़ा भाग्यशाली होता है ।। ५ ।। सच्चे गुरु का सुमिरन ही भ्रमों को दूर करता है तथा व्यक्ति सदैव सावधान बना रहकर सत्य में लौ लगा लेता है। वह अब केवल एक प्रभु को ही जानता है अन्य किसी को नहीं तथा सुखदाता प्रभु का सुमिरन करता हुआ पवित्र हो जाता है ।। ६ ।। जब शब्द का चिंतन करने के फलस्वरूप व्यक्ति की सुरति सेवा में लग जाती है तो उसके अहंकार का नाश हो जाता है तथा यह प्रक्रिया ही उसके लिए जप तप और संयम बन जाती है। शब्द को सुनने से ही वह जीवन मुक्त हो जाता है और सच्चे आचरण में रहता हुआ वह सच्चा सुख प्राप्त कर लेता है ।। ७ ।। वह प्रभु सुखदाता और दुख को मिटाने वाला है और मुझे उसके सिवा अन्य कोई भी सुझाई नहीं पड़ता। जब हमने तन मन और धन प्रभु के आगे रख दिया तो नानक का कथन है कि हमने उसके प्रेम के महारस को चख लिया है ।। ८ ।। २ ।। प्रभाती महला १ ।। न्योली कर्म, कुण्डलिनी रूपी उर्जा को जगाना, प्राणायाम के रेचक पूरक और कुम्भक आदि कर्मों को करते रहने पर भी सच्चे गुरु प्रभु के बिना कुछ भी समझ नहीं पड़ता। अंधा व्यक्ति शरीर को जल से भर-भर कर तो धोता है परन्तु उसके अन्तर्मन की मैल कभी भी नहीं छूटती। प्रभु-नाम के बिना यह सभी कर्म उसी प्रकार व्यर्थ हैं जैसे जादूगर का भ्रम जाल भुलावा देने वाला और झूठा होता है ।। १ ।। प्रभु का पवित्र नाम ही योग के षटकर्म हैं। हे प्रभु, तू तो गुणों का सागर है और मुझ में अवगुण ही अवगुण हैं ।। १ ।। रहाउ ।। मायावी धन्धों में दौड़ भाग वास्तव में दुर्मति का ही व्यर्थ का कार्य व्यवहार है। इसमें पड़ा हुआ मूर्ख अपने आपको तो अन्यों से अच्छा मानता रहता है परन्तु वास्तव में भक्ति के आचरण को समझ नहीं पाता। मोहित करने वाली उसकी मायावी वासनाएं उभर जाती हैं और उसके बोल मनमुखों के ख्वार करने वाले बोलों के समान हो जाते हैं। ऐसे चाण्डाल का स्नान भी झूठा और सुन्दर सिंगार भी व्यर्थ ही होता है ।। २ ।। उसके मन की मति भी झूठी होती है और उसका आचरण भी वाद-विवादों से घिरा रहता है। उसका अन्तःकरण भी झूठ में ही लीन बना रहता है और वह अपने मालिक प्रभु के आनन्द को नहीं जान पाता। प्रभु-नाम से विहीन अन्य सभी आचराणें का रस फीका ही फीका (घटिया) होता है। बुरी संगत मे तो बरबाद ही हुआ जाता है क्योंकि उसमें बोल-चाल भी विष के समान हानिकारक होती है और जीवन व्यर्थ बराबर ही हो जाता है ।। ३ ।। हे भाई, भ्रमों में भूलकर मत मरते रहो ; सच्चे गुरु प्रभु का सुमिरन करो क्योंकि उसी से सदैव बना रहने वाला सुख प्राप्त होता है। सच्चे गुरु के बिना कोई भी मुक्ति नहीं पा सका है और उस प्रभु-नाम के बिना सभी आवागमन में पड़े हुए मरते रहते हैं ।। ४ ।। यह शरीर तो त्रिगुणात्मक माया रूपी धातु से बना है और इसे सदैव शोक और संताप सताते रहते हैं। उस प्रभु का सुमिरन करो जिसका कोई भी माता पिता नहीं है अर्थात वह स्वयंभू है। उसी का सुमिरन करने से अन्तर्मन की तृष्णा और अहंकार समाप्त होते हैं ॥५॥ मैं जहाँ-जहां देखता हूँ वहाँ-वहां वह प्रभु ही दिखाई देता है; सच्चे गुरु प्रभु से मिलाप के बिना मुक्ति नहीं हो सकती। हृदय में सत्य को धारण करना ही सर्वश्रेष्ठ कर्म है तथा अन्य सभी प्रकार की पूजा विधियाँ पाखण्ड वाली और भटकाने वाली हैं ॥६॥ दुविधा को समाप्त करके ही शब्द की पहचान होती है और शरीर में तथा बाहर उस एक प्रभु को ही जाना जाता है। यही सर्वश्रेष्ठ मति है और यही सब कुछ कहने का सारांश है कि दुविधा-ग्रस्त के माथे पर तो राख ही पड़ती है ।। ७ ।। गुरु की शिक्षा का सारतत्व यही है कि उत्तम आचरण को ही प्रभु की कीर्ति माना जाए तथा शान्त-पुरुषों की संगत में ज्ञान के चिन्तन को आचरण का गुण बनाया जाए। मन की वासनाओं को मारकर जीवित रहते हुए जब मरने के रहस्य को जान लिया जाता है तो हे नानक, उस प्रभु की कृपा दृष्टि से उसकी कृपा को पहचान लिया जाता है ।। ८ ।। ३ ।।

प्रभाती महला १ दखणी ॥ गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्रु लुभाइआ ॥ सहस सरीर चिहन भग हूए ता मनि पछोताइआ ॥ १ ॥ कोई जाणि न भूलै भाई ॥ सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिनि हरी चंदि प्रिथमी पति राजै कागदि कीम न पाई ॥ अउगणु जाणै त पुंन करे किउ किउ नेखासि बिकाई ॥ २ ॥ करउ अढाई धरती मांगी बावन रूपि बहानै ॥ किउ पइआलि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछानै ॥ ३ ॥ राजा जनमेजा दे मतीं बरजि बिआसि पढ़ाइआ ॥ तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ ॥ ४ ॥ गणत न गणीं हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई ॥ जो किछु वरतै तुधै सलाही सभ तेरी वडिआई ॥ ५ ॥ गुरमुखि अलिपतु लेपु कदे न लागै सदा रहै सरणाई ॥ मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखि लागै पछुताई ॥ ६ ॥ आपे करे कराए करता जिनि एह रचना रचीऐ ॥ हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ ॥ ७ ॥ भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै ॥ नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै ॥ ८ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला १ ॥ आखणा सुनणा नामु अधारु ॥ धंधा छुटकि गइआ वेकारु ॥ जिउ मनमुखि दूजै पति खोई ॥ बिनु नावै मै अवरु न कोई ॥ १ ॥ सुणि मन अंधे मूरख गवार ॥ आवत जात लाज नही लागै बिनु गुर बूडै बारो बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु मन माइआ मोहि बिनासु ॥ धुरि हुकमु लिखिआ तां कहीऐ कासु ॥ गुरमुखि विरला चीन्है कोई ॥ नाम बिहूना मुकति न होई ॥ २ ॥ भ्रमि भ्रमि डोलै लख चउरासी ॥ बिनु गुर बूझे जम की फासी ॥ इहु मनूआ खिनु खिनु ऊभि पइआलि ॥ गुरमुखि छूटै नामु सम्हालि ॥ ३ ॥ आपे सदे ढिल न होइ ॥ सबदि मरै सहिला जीवै सोइ ॥ बिनु गुर सोझी किसै न होइ ॥ आपे करै करावै सोइ ॥ ४ ॥ झगड़ु चुकावै हरि गुण गावै ॥ पूरा सतिगुरु सहजि समावै ॥ इहु मनु डोलत तउ ठहरावै ॥ सचु करणी करि कार कमावै ॥ ५ ॥ अंतरि जूठा किउ सुचि होइ ॥ सबदी धोवै विरला कोइ ॥ गुरमुखि कोई सचु कमावै ॥ आवणु जाणा ठाकि रहावै

प्रभाती महला १ (प्रभाती का दक्षिणी स्वरूप)।। गौतम तपस्वी की सुन्दर स्त्री अहल्या को देखकर इन्द्र उस पर मोहित हो गया परन्तु जब हजारों भग के चिन्ह उसके शरीर पर बन गए तो वह अपने कुकर्म के लिए पछताने लगा ।। १ ।। हे भाई, कोई भी बेचारा जीव जान-बूझकर नहीं भूलता। वह प्रभु ही जिसे भटकाता है वह भटक जाता है और जिसे समझा देता है वह समझ जाता है ।। १ ।। रहाउ ।। हरिशचन्द्र सारी पृथ्वी के राजा ने कर्म रूपी आलेख के महत्व को नहीं समझा क्योंकि यदि वह तथाकथित पुण्य कमाने को एक अवगुण के रूप में जानता तो वह भला क्यों मण्डी में बिकने के लिए जाता ।। २ ।। वामन रूप बनाकर राजा बलि से ढाई कदम धरती माँग ली गई परन्तु यदि बलि प्रभु को पहचान सका होता तो पाताल मे जाने के लिए वह क्यों चला जाता ।। ३ ।। व्यास ने अनेकों प्रकार की चतुराईयाँ सिखाकर राजा जनमेजय को शिक्षा दी और अनेकों वर्जनाएँ बताईं परन्तु अन्ततः उसने भी उन वर्जनाओं पर ध्यान ना देकर अठारह ब्राह्मणों को मार डाला; कर्मों से बने हुए भाग्य लेख टलते नहीं हैं ।। ४ ।। मैं तो गिनती नहीं गिन सकता कि ऐसे कितने लोग हुए हैं; तेरे हुकुम को पहचानता हुआ मैं तो सहज स्वाभाविक रूप से ही यह सब बता रहा हूँ। जो कुछ भी यहाँ होता है सब तेरा ही गुणानुवाद है और हे प्रभु, सब तेरा ही बड़प्पन है ।। ५ ।। गुरमुख सदैव अलिप्त बने रहते हैं और उन्हें कोई भी मोह नहीं लगता तथा वे सदैव प्रभु की शरण में बने रहते हैं। मूर्ख, स्वेच्छाचारी व्यक्ति आगे के लिए सावधान नहीं होते और दुखी होने पर पछताते रहते हैं ।। ६ ।। जिसने यह रचना बनाई है वह कर्ता प्रभु ही सब कुछ करता कराता है। यदि प्रभु के प्रेम का अभिमान भी हृदय से नहीं जाता तो उस अभिमान में ही पड़कर व्यक्ति मरता-खपता रहता है ।। ७ ।। उस प्रभु ने सबको भूल करने वाले के रूप में पैदा किया है परन्तु वह कर्ता प्रभु स्वयं कभी भूल नहीं करता। हे नानक, सच्चे नाम से ही व्यक्ति का उद्धार होता है और गुरु की कृपा से ही कोई बन्धनों से छूटता है ।। ८ ।। ४ ।। प्रभाती महला १ ।। अब प्रभु-नाम का आचरण और प्रभु-नाम का सुनना ही जीवन का आसरा बन गया है और व्यर्थ के कर्मों का धन्धा छूट गया है। जैसे मनमुख द्वैतभाव में पड़कर अपने सम्मान को गँवाता ही रहता है पर फिर भी द्वैतभाव छोड़ता नहीं इसी प्रकार मैंने भी प्रभु-नाम के अतिरिक्त अन्य किसी को भी आसरा नहीं बनाया है ।। १ ।। हे मूर्ख, गँवार और अन्धे मन, तू ध्यानपूर्वक सुन ले, तुझे आवागमन में पड़े हुए जरा भी लज्जा नहीं लगती और तू गुरु विहीन होकर बार-बार डूबता रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। यह मन माया मोह में पड़ा हुआ विनष्ट होता रहता है परन्तु जब प्रारम्भ से ही ऐसा हुकुम लिखा हुआ है तो फिर भला किसे कहा जाए। कोई बिरला गुरमुख ही तथ्य को पहचानता है कि प्रभु-नाम से विहीन बने रहकर मुक्ति नहीं होती ।। २ ।। जीव चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता हुआ भटकता रहता है और गुरु को जाने बिना इसके लिए यम का फन्दा तैयार ही रहता है। यह मन प्रत्येक क्षण कभी आकाश और कभी पाताल में दौड़ता रहता है परन्तु इसका छुटकारा गुरमुख बनकर और प्रभु-नाम का सुमिरन करके ही होता है ।। ३ ।। जब प्रभु स्वयं बुला लेता है तो फिर यह देरी नहीं लगा सकता परन्तु यदि यह शब्द के माध्यम से विकारों के प्रति मर जाए तो इसका जीवन सुखपूर्ण हो जाता है। सच्चे गुरु के बिना कोई भी इस रहस्य को नहीं जानता और प्रभु ही सब कुछ करने कराने वाला है ।। ४ ।। जब यह प्रभु के गुण गाता है तो सभी झगड़े समाप्त हो जाते हैं और पूर्ण सच्चा गुरु इसे सहजभाव में बनाए रखता है। भटकता हुआ मन तभी स्थिर होता है जब यह सत्य के अनुरूप आचरण करता हुआ कार्यशील बना रहता है ।। ५ ।। जब यह अन्दर से झूठा है तो बाहर स्नान आदि से भला यह पवित्र कैसे होगा। कोई बिरला ही इस मन को शब्द अर्थात नाम रूपी जल से धोता है। कोई गुरमुख ही सत्य पर आचरण करता है और अपने आवागमन को रोक लेता है

॥ ६ ॥ भउ खाणा पीणा सुखु सारु ॥ हरि जन संगति पावै पारु ॥ सचु बोलै बोलावै पिआरु ॥ गुर का सबदु करणी है सारु ॥ ७ ॥ हरि जसु करमु धरमु पति पूजा ॥ काम क्रोध अगनी महि भूंजा ॥ हरि रसु चाखिआ तउ मनु भीजा ॥ प्रणवति नानकु अवरु न दूजा ॥ ८ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला १ ॥ राम नामु जपि अंतरि पूजा ॥ गुर सबदु वीचारि अवरु नही दूजा ॥ १ ॥ एको रवि रहिआ सभ ठाई ॥ अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु आगै जीअड़ा तुझ पासि ॥ जिउ भावै तिउ रखहु अरदासि ॥ २ ॥ सचु जिहवा हरि रसन रसाई ॥ गुरमति छूटसि प्रभ सरणाई ॥ ३ ॥ करम धरम प्रभि मेरै कीए ॥ नामु वडाई सिरि करमां कीए ॥ ४ ॥ सतिगुर कै वसि चारि पदारथ ॥ तीनि समाए एक क्रितारथ ॥ ५ ॥ सतिगुरि दीए मुकति धिआनां ॥ हरि पदु चीन्हि भए परधाना ॥ ६ ॥ मनु तनु सीतलु गुरि बूझ बुझाई ॥ प्रभु निवाजे किनि कीमति पाई ॥ ७ ॥ कहु नानक गुरि बूझ बुझाई ॥ नाम बिना गति किनै न पाई ॥ ८ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला १ ॥ इकि धुरि बखसि लए गुरि पूरै सची बणत बणाई ॥ हरि रंग राते सदा रंगु साचा दुख बिसरे पति पाई ॥ १ ॥ झूठी दुरमति की चतुराई ॥ बिनसत बार न लागै काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख कउ दुखु दरदु विआपसि मनमुखि दुखु न जाई ॥ सुख दुख दाता गुरमुखि जाता मेलि लए सरणाई ॥ २ ॥ मनमुख ते अभ भगति न होवसि हउमै पचहि दिवाने ॥ इहु मनूआ खिनु ऊभि पइआली जब लगि सबद न जाने ॥ ३ ॥ भूख पिआसा जगु भइआ तिपति नही बिनु सतिगुर पाए ॥ सहजै सहजु मिलै सुखु पाईऐ दरगह पैधा जाए ॥ ४ ॥ दरगह दाना बीना इकु आपे निरमल गुर की बाणी ॥ आपे सुरता सचु वीचारसि आपे बूझै पदु निरबाणी ॥ ५ ॥ जलु तरंग अगनी पवनै फुनि त्रै मिलि जगतु उपाइआ ॥ ऐसा बलु छलु तिन कउ दीआ हुकमी ठाकि रहाइआ ॥ ६ ॥ ऐसे जन विरले जग अंदरि परखि खजानै पाइआ ॥ जाति वरन ते भए अतीता ममता लोभु चुकाइआ ॥ ७ ॥ नामि रते तीरथ से निरमल दुखु हउमै मैलु चुकाइआ ॥ नानकु तिन के चरन पखालै

।। ६ ।। प्रभु का भय ही खाना पीना और सुखों का सार है तथा प्रभु के सेवकों की संगत ही जीव को पार उतारती है। प्रभु का सेवक प्यार के अधीन होकर सत्य बोलता है और यह जानता है कि शब्द-गुरु ही सबसे श्रेष्ठ है ।। ७ ।। जिसने प्रभु के यश को ही कर्मकाण्ड, सम्मान और पूजा आदि समझ लिया है उसने वास्तव में काम, क्रोध को ज्ञान की अग्नि में जला दिया है। प्रभु रस को चखने से ही मन रसपूर्ण हो जाता है और नानक विनती करता है कि फिर प्रभु के सिवा किसी अन्य दूसरे का अस्तित्व नहीं रह जाता ।। ८ ।। ५ ।। प्रभाती महला १ ।। प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए अन्तर्मन की पूजा जब की जाती है तब शब्द-गुरु के चिंतन के माध्यम से अन्य किसी का भी विचार नहीं आता ।। १ ।। जब एक प्रभु ही सब स्थानों पर रमण कर रहा है और अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता तो फिर भला मैं कर्मकाण्डी पूजा अर्चना किसको अर्पण करूं ।। १ ।। रहाउ ।। हमारा मन और शरीर तथा हृदय भी हे प्रभु, तुझे ही अर्पण है। हमारी तो यही अरदास है कि तुम्हें जैसे भी अच्छा लगे तुम जैसा भी हमें रखना चाहो रखो ।। २ ।। सत्य ने ही जीभ को हरि रस प्रदान करके रसपूर्ण बना दिया है और जीव गुरु की शिक्षा में और प्रभु की शरण में आकर ही मुक्त होता है ।। ३ ।। प्रभु ने मुझे धर्म, कर्म आदि भी दिए हैं परन्तु नाम के बड़प्पन को सभी कर्मों से ऊपर रखा है ।।४ ।।चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) उस सच्चे गुरु के ही पास हैं। इन चारों में से तीन तो यहीं समाप्त हो जाते हैं परन्तु चौथा अर्थात मोक्ष ही पूर्णतया कृतार्थ करता है ।। ५ ।। सच्चा गुरु मुक्ति की ओर ध्यान दिलाता है और व्यक्ति प्रभु के चरणों को पहचान कर विशिष्ट व्यक्ति बन जाता है। गुरु के समझाने पर ही मन और तन शीतल होता है और जिनको प्रभु ने इस शीतलता से नवाजा है उनके महत्व को भला कौन समझ सकता है ।। ७ ।। नानक का कथन है कि गुरु ने हमें यही समझाया है कि प्रभु-नाम के बिना कोई भी बन्धन-मुक्त अवस्था नहीं पा सका है ।।८ ।।६ ।। प्रभाती महला १ ।। कईयों को तो पूर्ण गुरु ने सच्चा संयोग बनाकर प्रारम्भ से ही बचा लिया होता है। वे प्रभु के रंग में रंगे हुए सदैव उसके सच्चे प्रेम में लीन बने रहते हैं, उनके दुख दूर हो जाते हैं और वे सम्मान प्राप्त करते हैं ।।१।। दुर्मति वाली चतुराई झूठी होती है जिसे नष्ट होते हुए जरा भी देर नहीं लगती ।। १ ।। रहाउ ।। मनमुख को दुख और कष्ट प्रभावित करते ही रहते हैं और उसका दुख कभी समाप्त नहीं होता। सुख-दुख को देने वाला प्रभु गुरमुख बनकर ही जाना जाता है और गुरु की शरण में आए हुए जीव को वह अपने से मिला लेता है ।। २ ।। हृदय की भक्ति मनमुख व्यक्तियों से नहीं होती और वे बावले बनकर अहंकार में ही नष्ट हो जाते हैं। जब तक प्रभु के नाम (शब्द) को यह मन नहीं जानता तब तक यह प्रत्येक क्षण आकाश, पाताल की दौड़ लगाए रहता है ।। ३ ।। सारा संसार भूखा और प्यासा बना हुआ है और सच्चे गुरु को प्राप्त किए बिना यह सन्तुष्ट नहीं होता। स्वाभाविक रूप में बने रहने से इसे शान्त अवस्था प्राप्त होती है, यह सुख प्राप्त करता है और सम्मानपूर्वक प्रभु के दरबार में जाता है ।। ४ ।। प्रभु ही उस दरबार में जानने और देखने वाला सयाना होता है और उस प्रभु गुरु की वाणी ही निर्मल होती है। वह महान सुरति वाला स्वयं ही सत्य का चिन्तन करता है और स्वयं ही निर्वाण पद के रहस्य को जानने वाला होता है ।। ५ ।। जल की लहरों, अग्नि और पवन इन तीनों को मिलाकर संसार उत्पन्न किया है। उसने इन तीनों को पूर्ण बल और छल प्रदान किया है परन्तु ये तीनों उस प्रभु के हुकुम में ही बँधे हुए रहते हैं ।। ६ ।। ऐसे सेवक इस संसार में बिरले ही हैं जिनको परखकर और खरे समझकर प्रभु अपने भण्डार में शामिल कर लेता है। ये जाति और वर्ण व्यवस्था से परे जा चुके होते हैं और इनकी ममता तथा लोभ समाप्त हो चुके होते हैं ।।७ ।। प्रभु-नाम में रंगे हुए जो तीर्थों पर जाते हैं वे ही निर्मल होते हैं और अहंकार की मैल का उनका दुख समाप्त हो चुका होता है। नानक तो उनके चरणों को धोता है

जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥ ८ ॥ ७ ॥

प्रभाती महला ३ बिभास ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर परसादी वेखु तू हरि मंदरु तेरै नालि ॥ हरि मंदरु सबदे खोजीऐ हरि नामो लेहु सम्हालि ॥ १ ॥ मन मेरे सबदि रपै रंगु होइ ॥ सची भगति सचा हरि मंदरु प्रगटी साची सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ ॥ २ ॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ रखिआ हुकमि सवारि ॥ धुरि लेखु लिखिआ सु कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ ३ ॥ सबदु चीन्हि सुखु पाइआ सचै नाइ पिआर ॥ हरि मंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार ॥ ४ ॥ हरि मंदरु एहु जगतु है गुर बिनु घोरंधार ॥ दूजा भाउ करि पूजदे मनमुख अंध गवार ॥ ५ ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै देह जाति न जाइ ॥ साचि रते से उबरे दुखीए दूजै भाइ ॥ ६ ॥ हरि मंदर महि नामु निधानु है ना बूझहि मुगध गवार ॥ गुर परसादी चीन्हिआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ ७ ॥ गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ॥ पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ ॥ ८ ॥ हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ॥ तिसु विचि सउदा एकु नामु गुरमुखि लैनि सवारि ॥ ९ ॥ हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ ॥ पारसि भेटिऐ कंचनु भइआ कीमति कही न जाइ ॥ १० ॥ हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥ नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा सउदा होइ ॥ ११ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ भै भाइ जागे से जन जाग्रण करहि हउमै मैलु उतारि ॥ सदा जागहि घरु अपणा राखहि पंच तसकर काढहि मारि ॥ १ ॥ मन मेरे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जितु मारगि हरि पाईऐ मन सेई करम कमाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सहज धुनि ऊपजै दुखु हउमै विचहु जाइ ॥ हरि नामा हरि मनि वसै सहजे हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ गुरमती मुख सोहणे हरि राखिआ उरि धारि ॥ ऐथै ओथै सुखु घणा जपि हरि हरि उतरे पारि

जिन्हें गुरमुख बनकर वह प्रभु अच्छा लगता है ।। ८ ।।७ ।।

प्रभाती महला ३ बिभास १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे जीव, प्रभु का घर तो तेरे साथ अन्दर ही है, तू गुरु की कृपा से इसे देख ले। शब्द के माध्यम से ही प्रभु के घर को खोजा जाता है इसलिए तू प्रभु के नाम का सुमिरन करता रह ।। १ ।। हे मेरे मन, यदि शब्द के माध्यम से अपने आपको रंगा जाए तब ही रंग चढ़ता है। प्रभु की भक्ति और प्रभु का निवास सभी कुछ सत्य स्वरूप है और उसी से प्रभु की महिमा प्रकट होती है ।। १ ।। रहाउ ।। यह शरीर ही प्रभु का घर है और ज्ञान रत्न ही प्रकाश देकर इसे प्रकट करता है। मनमुख व्यक्ति इस मूल तथ्य को नहीं जानते और मानते हैं कि व्यक्ति के अन्दर प्रभु का निवास नहीं होता ।। २।। प्रभु के घर की रचना भी प्रभु ने ही की है और अपने हुकुम के अन्तर्गत ही उसे सजाया संवारा है। व्यक्ति के प्रारम्भ से ही जो लेख उसके लिए लिखे होते हैं वह उन्हीं के अनुरूप आचरण करता है क्योंकि उन लेखों को मिटाने वाला कोई नहीं है ।। ३ ।। प्रभु के सच्चे नाम से प्यार करके और शब्द के रहस्य को पहचान कर ही सुख पाया जाता है और यह जान लिया जाता है कि शब्द से प्रकाशित प्रभु का निवास स्थान अत्यन्त सुन्दर है और वह सोने के किले के समान अपार शोभा वाला है ।। ४ ।। यह संसार भी प्रभु का घर है जिसमें गुरु के बिना घोर अंधकार बना हुआ है। यहाँ जो द्वैतभाव में पड़कर एक प्रभु के बिना अन्यों की पूजा अर्चना करते रहते हैं वे मनमुख अन्धे, अज्ञानी और गँवार हैं ।। ५ ।। जहाँ भी उनसे कोई लेखा जोखा माँगा जाता है वहाँ वे कुछ भी नहीं दे पाते। यहाँ जो सत्य में लीन हैं उन्हीं का उद्धार होता है और द्वैतभाव में पड़े मनमुख दुखी बने रहते हैं ।। ६ ।। प्रभु के निवास इस हृदय में ही प्रभु-नाम का खजाना है जिसे मूर्ख व्यक्ति नहीं जान पाते। गुरु की कृपा से ही इस तथ्य को जाना जाता है और प्रभु को हृदय में बनाए रखा जाता है ।। ७ ।। गुरु की वाणी को गुरु से ही जाना जाता है यदि प्रेम पूर्वक शब्द में लीन होकर अपने आपको प्रेम मे रंग लिया जाए। ऐसे सेवक निर्मल और पवित्र बने रहते हैं जो प्रभु के नाम में समाए रहते हैं ।। ८ ।। प्रभु का निवास तो प्रभु के उस बाजार की तरह है जिसे शब्द के माध्यम से सजाया सँवारा जाता है। इस बाजार में केवल एक नाम रूपी सौदा ही होता है जिसे गुरमुख व्यक्ति सम्भाल कर ले लेते हैं ।। ९ ।। प्रभु के घर में ही यह लोहे जैसा मन भी है जो द्वैतभाव में लीन बना रहता है परन्तु जब यह प्रभु-नाम रूपी पारस से मिलता है तो यह कंचन हो जाता है और फिर इसके मूल्य को कहा नहीं जा सकता अर्थात यह अमूल्य बन जाता है ।। १० ।। प्रभु के निवास इस हृदय में प्रभु बसता है और वही प्रभु सदैव सबमें बसता रहता है। हे नानक, गुरमुख बनकर यदि यहाँ प्रभु-नाम का व्यापार किया जाए तो वास्तव में यही सच्चा सौदा होता है ।। ११ ।। १ ।। प्रभाती महला ३ ।। जो प्रभु के नाम और प्रेम में सावधान बने रहते हैं और वे ही अहंकार की मैल को उतार कर जागरण करने वाले होते हैं। वे सदैव सावधान बने रहकर अपने हृदय रूपी घर की रक्षा करते हैं और पाँचों चोरों (काम, क्रोध) आदि को मारकर बाहर निकाल देते हैं ।। १ ।। हे मेरे मन, गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन कर। जिस मार्ग पर चलकर प्रभु प्राप्त होता है, हे मन, तू वैसा ही आचरण कर ।। १ ।। रहाउ ।। गुरमुख बनने पर ही अन्तर्मन में शान्त भाव की धुनें उत्पन्न होती हैं तथा अहंकार का दुख अन्तर्मन से समाप्त हो जाता है। प्रभु का गुणानुवाद स्वाभाविक रूप से ही करते रहने पर प्रभु-नाम का निवास मन में हो जाता है ।। २ ।। गुरु की शिक्षा में चलने पर ही मुख उज्ज्वल होता है और प्रभु को हृदय में धारण किया जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए यहाँ और वहाँ सुख ही सुख होता है और वह प्रभु-नाम का सुमिरन करता हुआ पार उतर जाता है

॥ ३ ॥ हउमै विचि जाग्रणु न होवई हरि भगति न पवई थाइ ॥ मनमुख दरि ढोई ना लहहि भाइ दूजै करम कमाइ ॥ ४ ॥ ध्रिगु खाणा ध्रिगु पैन्हणा जिन्हा दूजै भाइ पिआरु ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा राते मरि जंमहि होहि खुआरु ॥ ५ ॥ जिन कउ सतिगुरु भेटिआ तिना विटहु बलि जाउ ॥ तिन की संगति मिलि रहां सचे सचि समाउ ॥ ६ ॥ पूरै भागि गुरु पाईऐ उपाइ कितै न पाइआ जाइ ॥ सतिगुर ते सहजु ऊपजै हउमै सबदि जलाइ ॥ ७ ॥ हरि सरणाई भजु मन मेरे सभ किछु करणै जोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो किछु करै सु होगु ॥ ८ ॥ २ ॥ ७ ॥ २ ॥ ९ ॥

बिभास प्रभाती महला ५ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मात पिता भाई सुतु बनिता ॥ चूगहि चोग अनंद सिउ जुगता ॥ उरझि परिओ मन मीठ मोहारा ॥ गुन गाहक मेरे प्रान अधारा ॥ १ ॥ एकु हमारा अंतरजामी ॥ धर एका मै टिक एकसु की सिरि साहा वड पुरखु सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छल नागनि सिउ मेरी टूटनि होई ॥ गुरि कहिआ इह झूठी धोही ॥ मुखि मीठी खाई कउराइ ॥ अंम्रित नामि मनु रहिआ अघाइ ॥ २ ॥ लोभ मोह सिउ गई विखोटि ॥ गुरि क्रिपालि मोहि कीनी छोटि ॥ इह ठगवारी बहुतु घर गाले ॥ हम गुरि राखि लीए किरपाले ॥ ३ ॥ काम क्रोध सिउ ठाटु न बनिआ ॥ गुर उपदेसु मोहि कानी सुनिआ ॥ जह देखउ तह महा चंडाल ॥ राखि लीए अपुनै गुरि गोपाल ॥ ४ ॥ दस नारी मै करी दुहागनि ॥ गुरि कहिआ एह रसहि बिखागनि ॥ इन सनबंधी रसातलि जाइ ॥ हम गुरि राखे हरि लिव लाइ ॥ ५ ॥ अहंमेव सिउ मसलति छोडी ॥ गुरि कहिआ इहु मूरखु होडी ॥ इहु नीघरु घरु कही न पाए ॥ हम गुरि राखि लीए लिव लाए ॥ ६ ॥ इन लोगन सिउ हम भए बैराई ॥ एक ग्रिह महि दुइ न खटांई ॥ आए प्रभ पहि अंचरि लागि ॥ करहु तपावसु प्रभु सरबागि ॥ ७ ॥ प्रभ हसि बोले कीए निआंएं ॥ सगल दूत मेरी सेवा लाए ॥ तूं ठाकुरु इहु ग्रिहु सभु तेरा ॥ कहु नानक गुरि कीआ निबेरा ॥ ८ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ५ ॥

।। ३ ।। अहंकार में किया हुआ जागरण (जगराता आदि) सफल नहीं होता और प्रभु की भक्ति भी वास्तविक रूप से नहीं होती। मनमुख व्यक्तियों को प्रभु के द्वार पर आसरा नहीं मिलता क्येंकि वे द्वैतभाव में पड़कर आचरण करते रहते हैं ।। ४ ।। जिन्हें द्वैतभाव का मोह ही बना रहता है उनके खाने और पहनने को धिक्कार है। वे गन्दगी के कीड़े गन्दगी में ही लीन बने रहते हैं तथा मरते-जन्मते हुए भटकते रहते हैं ।। ५ ।। जिन्हें सच्चा गुरु-प्रभु मिल गया है मैं उनपर बलिहारी जाता हूँ। मैं तो उन्हीं की संगत में बना रहूं और सत्य के माध्यम से सत्य में ही लीन हो जाऊँ ।। ६ ।। विधि विधानों और कर्मकाण्डों के उपायों से इस प्रभु को नहीं पाया जाता और उस गुरु-प्रभु को तो पूर्ण भाग्य होने से ही प्राप्त किया जाता है। अहंकार को शब्द के माध्यम से जलाकर सच्चे गुरु से ही पूर्ण ज्ञान की शान्त और सहज अवस्था उत्पन्न और प्राप्त होती है ।। ७ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु की शरण मे भागकर आ जा क्योंकि वही सब कुछ करने योग्य है। हे नानक, मुझे उस प्रभु का नाम ना भूले ; वह प्रभु जो जो कुछ भी करता है वही होना होता है ।। ८ ।। २ ।। ७ ।। २ ।। ६ ।।

बिभास प्रभाती महला ५ अष्टपदियाँ   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

माता-पिता, भाई, पुत्र और स्त्री आदि आनन्द मे लीन होकर सुखों के चुग्गे को चुगते रहते हैं अर्थात भोगों को भोगते रहते हैं। यह मन भी मीठे मोह में फँसा हुआ है परन्तु मेरे प्राणों का आधार वह गुण ग्राहक प्रभु ही है ।। १ ।। वह हमारा एक प्रभु ही अन्तर्यामी है। मुझे उस एक प्रभु की ही टेक, उस एक का ही आसरा है और वह महान सर्वव्यापक स्वामी सबसे बड़ा सम्राट है ।। १ ।। रहाउ ।। छलने वाली माया रूपी नागिन से मेरी सुरति टूट गई है क्योंकि गुरु ने मुझे बता दिया है कि यह झूठी और दगाबाज़ है। यह मुख में तो मीठी लगती है परन्तु इसे स्वादपूर्वक खाने से यह कड़वी हो जाती है अर्थात हानिकारक हो जाती है। हमारा मन तो प्रभु के अमृत नाम के माध्यम से ही सन्तुष्ट बना हुआ है ।। २ ।। यह लोभ और मोह के कारण नष्ट करके जाने वाली है परन्तु कृपालु गुरु ने मुझे इससे छुड़ा लिया है। इस ठगिनी ने बहुत से घरों को बरबाद कर डाला है परन्तु गुरु ने कृपा करके हमें बचा लिया है ।। ३ ।। गुरु के उपदेश को अपने कानों से सुनने पर मेरा काम, क्रोध आदि के साथ मेल मिलाप बना नहीं सका है। जिधर भी देखता हूं ये महा चाण्डाल दिखाई देते है परन्तु मेरे प्रभु-गुरु ने मुझे इनसे बचाए रखा है ।। ४ ।। दसों इन्द्रियों को मैंने दुहागिन समझ कर छोड़ दिया है क्योंकि गुरु ने मुझे बता दिया कि इनके रस विषय-विकारों की अग्नि ही हैं। इनसे सम्बन्ध बनाए रखने वाला रसातल में जाता है परन्तु प्रभु में लौ लगाए रहने से हमें गुरु ने बचा लिया है ।। ५ ।। अहंकार के साथ परामर्श आदि करने को हमने छोड़ दिया है क्योंकि गुरु ने हमें बताया है कि यह मूर्ख अहंकार बहुत जिद्दी होता है। घर से निकाला हुआ यह अहंकार अब बेघर हो गया है और प्रभु में लौ लगाने के कारण गुरु ने हमें बचा लिया है ।। ६ ।। इन लोगों के लिए हम बेगाने हो गए हैं क्योंकि एक ही घर में इन्द्रिय रस, अहंकार और हम रह नहीं सकते। प्रभु के आँचल से लगकर हम प्रभु के पास आ गए हैं और हे सर्वज्ञ प्रभु, अब तुम ही हमारा न्याय करो ।। ७ ।। हँसते हुए प्रभु ने न्याय करते हुए कहा कि इन सभी दुष्टों को उलट कर मेरी सेवा में लगा दो। इस हृदय रूपी घर का तू ही मालिक है और यह घर तेरे लिए है इन विषय-विकारों के लिए नहीं। नानक का कथन है कि इस प्रकार गुरु-प्रभु ने हमारा झगड़ा निपटा दिया है ।। ८ ।। १ ।। प्रभाती महला ५ ।।

मन महि क्रोधु महा अहंकारा ॥ पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥ करि इसनानु तनि चक्र बणाए ॥ अंतर की मलु कब ही न जाए ॥ १ ॥ इतु संजमि प्रभु किन ही न पाइआ ॥ भगउती मुद्रा मनु मोहिआ माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाप करहि पंचां के बसि रे ॥ तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे ॥ बहुरि कमावहि होइ निसंक ॥ जम पुरि बांधि खरे कालंक ॥ २ ॥ घूघर बाधि बजावहि ताला ॥ अंतरि कपटु फिरहि बेताला ॥ वरमी मारी सापु न मूआ ॥ प्रभु सभ किछु जानै जिनि तू कीआ ॥ ३ ॥ पूंअर ताप गेरी के बसत्रा ॥ अपदा का मारिआ ग्रिह ते नसता ॥ देसु छोडि परदेसहि धाइआ ॥ पंच चंडाल नाले लै आइआ ॥ ४ ॥ कान फराइ हिराए टूका ॥ घरि घरि मांगै त्रिपतावन ते चूका ॥ बनिता छोडि बद नदरि पर नारी ॥ वेसि न पाईऐ महा दुखिआरी ॥ ५ ॥ बोलै नाही होइ बैठा मोनी ॥ अंतरि कलप भवाईऐ जोनी ॥ अंन ते रहता दुखु देही सहता ॥ हुकमु न बूझै विआपिआ ममता ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाई परम गते ॥ पूछहु सगल बेद सिंम्रिते ॥ मनमुख करम करै अजाई ॥ जिउ बालू घर ठउर न ठाई ॥ ७ ॥ जिस नो भए गुोबिंद दइआला ॥ गुर का बचनु तिनि बाधिओ पाला ॥ कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ ॥ नानकु तिन कै संगि तराइआ ॥ ८ ॥ जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ ॥ आपि तरै सभु कुटंबु तराईऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि काटे ॥ धरम राइ के कागर फाटे ॥ साधसंगति मिलि हरि रसु पाइआ ॥ पारब्रहमु रिद माहि समाइआ ॥ १ ॥ राम रमत हरि हरि सुखु पाइआ ॥ तेरे दास चरन सरनाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चूका गउणु मिटिआ अंधिआरु ॥ गुरि दिखलाइआ मुकति दुआरु ॥ हरि प्रेम भगति मनु तनु सद राता ॥ प्रभू जनाइआ तब ही जाता ॥ २ ॥ घटि घटि अंतरि रविआ सोइ ॥ तिसु बिनु बीजो नाही कोइ ॥ बैर बिरोध छेदे भै भरमां ॥ प्रभि पुंनि आतमै कीने धरमा ॥ ३ ॥ महा तरंग ते काढै लागा ॥ जनम जनम का टूटा गांढा ॥ जपु तपु संजमु नामु सम्हालिआ ॥ अपुनै ठाकुरि नदरि निहालिआ ॥ ४ ॥ मंगल सूख

मन में बसा हुआ क्रोध और महा अहंकार अनेकों विस्तार वाले कर्मकाण्डों के माध्यम से पूजा अर्चना करते रहते हैं। ये स्नान आदि करके शरीर पर चन्द्र आदि बनाते हैं परन्तु इनके अन्दर की मैल कभी नहीं जाती ।। १ ।। इस प्रकार के संयमों और विधियों से किसी ने भी प्रभु प्राप्त नहीं किया है क्योंकि शरीर पर तो वैष्णव पूजा के चिन्ह लगाए होते हैं लेकिन मन को मायावी प्रपंचों ने मोहित किया होता है ।। १ ।। रहाउ ।। व्यक्ति पाँच विकारों के वश में होकर पाप कर्म करता है और तीर्थों पर स्नान करता है कि सभी पाप उतर गए हैं। वह फिर बिना किसी भ्रम के पाप कमाने मे जुट जाता है परन्तु ऐसे कलंकित लोगों को बाँधकर यम पुरी ले जाया जाता है ।। २ ।। पाँव में घुंघरु बांधकर जो तालियां बजाते हुए उस प्रभु की भक्ति का ढ़ोंग करते हैं उनके अन्तर्मन में कपट होता है और वे जीवन में बेसुरे और बेताले होकर भटकते रहते हैं। वे साँप की बाँबी को तो पीटते रहते हैं परन्तु वासनाओं का सर्प उनसे मरता नहीं। हे जीव, जिस परमात्मा ने तुझे बनाया है वह प्रभु सब कुछ जानता है ।। ३ ।। गेरुए वस्त्र धारण करके धूनी को तापने वाला वास्तव में दुखों का मारा हुआ घर से भागता है। वह अपने देश को छोड़कर परदेशों में पाँच चाण्डाल रूपी विकारों को साथ लेकर ही दौड़ता भागता रहता है ।। ४ ।। व्यक्ति कान तो योगी बनने के लिए फड़वाता है परन्तु घरों से रोटी के टुकड़ों की ओर देखता रहता है। जो इस प्रकार घर-घर माँगता है वह अपने आपको सन्तुष्ट करने से दूर भटक गया है। अपनी स्त्री को छोड़कर वह पराई स्त्री पर नज़र गड़ाए रहता है। ऐसे व्यक्ती को विभिन्न प्रकार के वेश धारण करने से प्रभु नहीं मिलता अपितु ये महादुखी बने रहते हैं ।। ५ ।। व्यक्ति मौन होकर बैठा है और बोलता नहीं परन्तु अन्तर्मन में संकल्पों-विकल्पों की कल्पनाएँ चलते रहने से उसे योनियों में भटकाया जाता है। अन्न को त्यागकर तो वह शरीर के कष्ट को ही सहता रहता है और ममता अर्थात मैं-मेरी से भरकर वह प्रभु के हुकुम को नहीं बूझ पाता ।। ६ ।। सच्चे गुरु के बिना किसी ने भी परमगति नहीं पाई है इस तथ्य को बेशक तुम सारे वेदों और स्मृतियों से पूछकर देख लो। मनमुख व्यक्ति व्यर्थ के ही काम करता रहता है और उसके ये कार्य रेत के घर की तरह ही होते है जिनका कोई ठौर ठिकाना नहीं होता ।। ७ ।। जिस पर धरती का स्वामी वह प्रभु दयालु हो जाता है वह गुरु के उपदेश को अपने पल्ले से बाँध लेता है। करोड़ों में ही कोई एक शान्त पुरुष (सन्त) दिखाई पड़ता है और नानक तो ऐसे व्यक्तियों की संगत में पार उतर गया है ।। ८ ।। यदि भाग्य में हो तो ऐसे पुरुषों का दर्शन प्राप्त किया जाता है तथा स्वयं पार उतर कर अपने परिवार को भी पार उतारा जाता है ।। १ ।। रहाउ २ ।। प्रभाती महला ५ ।। प्रभु के नाम सुमिरन से सभी पाप कट जाते हैं और लेखे-जोखे वाला धर्मराज का कागज फट जाता है। साधसंगत में मिल बैठकर ही प्रभु रस प्राप्त होता है तथा परब्रह्म हृदय में लीन हो जाता है ।। १ ।। सब में रमण करने वाले परमात्मा का सुमिरन करके सुख प्राप्त किया जाता है और हे प्रभु, तेरे सेवक तो तेरे चरणों की शरण में पड़े हुए हैं ।। १ ।। रहाउ ।। अज्ञान का अंधकार मिट जाता है और आवागमन छूट जाता है क्योंकि गुरु ने मुक्ति का द्वार दिखा दिया होता है। प्रभु के प्रेम और भक्ति में सदैव मन तन लीन बना रहता है और प्रभु ही जब जनवाता है तभी उसे जाना जाता है ।। २ ।। घट-घट में वही रमण कर रहा है और उसके बिना अन्य कोई भी नहीं है। शत्रुता, विरोध, भय और भ्रम कट गए हैं और पुण्यात्मा प्रभु ने अपने बिरद का पालन किया है ।। ३ ।। संसार सागर की भयानक लहरों से बचकर मैं किनारे पर आ लगा हूँ और जन्मों-जन्मों से प्रभु से टूटा हुआ मैं फिर उससे जुड़ गया हूँ। अब मैंने फिर सुमिरन साधना और मन इन्द्रियों के अनुशासन तथा प्रभु-नाम को अपने हृदय में धारण कर लिया है। उस प्रभु ने अब मुझे अपनी कृपादृष्टि से निहाल कर दिया है ।। ४ ।। प्रभु के सेवक जहाँ बसते हैं उसी स्थान पर मंगल, सुख

कलिआण तिथाईं ॥ जह सेवक गोपाल गुसाई ॥ प्रभ सुप्रसंन भए गोपाल ॥ जनम जनम के मिटे बिताल ॥ ५ ॥ होम जग उरध तप पूजा ॥ कोटि तीरथ इसनानु करीजा ॥ चरन कमल निमख रिदै धारे ॥ गोबिंद जपत सभि कारज सारे ॥ ६ ॥ ऊचे ते ऊचा प्रभ थानु ॥ हरि जन लावहि सहजि धिआनु ॥ दास दासन की बांछउ धूरि ॥ सरब कला प्रीतम भरपूरि ॥ ७ ॥ मात पिता हरि प्रीतमु नेरा ॥ मीत साजन भरवासा तेरा ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ जपि जीवै नानकु गुणतास ॥ ८ ॥ ३ ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥

बिभास प्रभाती बाणी भगत कबीर जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मरन जीवन की संका नासी ॥ आपन रंगि सहज परगासी ॥ १ ॥ प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥ राम रतनु पाइआ करत बीचारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह अनंदु दुखु दूरि पइआना ॥ मनु मानकु लिव ततु लुकाना ॥ २ ॥ जो किछु होआ सु तेरा भाणा ॥ जो इव बूझै सु सहजि समाणा ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु किलबिख गए खीणा ॥ मनु भइआ जगजीवन लीणा ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती ॥ अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥ हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥ १ ॥ अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ तू करि मिहरामति साई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दखन देसि हरी का बासा पछिमि अलह मुकामा ॥ दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ॥ २ ॥ ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥ गिआरह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना ॥ ३ ॥ कहा उडीसे मजनु कीआ किआ मसीति सिरु नांएं ॥ दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जांएं ॥ ४ ॥ एते अउरत मरदा साजे ए सभ रूप तुम्हारे ॥ कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥ ५ ॥ कहतु कबीरु सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥ केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥ ६ ॥ २ ॥ प्रभाती ॥ अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥ एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे

और कल्याण बना रहता है। जब प्रभु हम पर प्रसन्न हो गए हैं तो हमारे जन्मों-जन्मों का बेसुरापन समाप्त हो गया है ।। ५ ।। होम, यज्ञ, उलटे लटक कर तप और पूजा करना तथा करोड़ों तीर्थों पर स्नान करना आदि उतना सार्थक नहीं है जितना क्षण भर के लिए प्रभु के चरण कमलों को हृदय में धारण करना है। प्रभु के सुमिरन से सभी कार्य संवर जाते हैं ।। ६ ।। प्रभु का स्थान ही ऊँचे से ऊँचा है और प्रभु के सेवक ही उस शान्त अवस्था में ध्यान लगाते हैं। वह प्रियतम सभी शक्तियों सहित सर्वत्र व्याप्त है और हम तो उसके दास के दासों की भी चरणधूलि चाहते हैं ।। ७ ।। वह प्रियतम ही माता-पिता है जो बिल्कुल ही पास हैं। हे मेरे मित्र और सज्जन प्रभु, मुझे तेरा ही भरोसा है। अपने सेवकों के प्रभु ने हाथ पकड़ लिए हैं और नानक तो गुणों के भण्डार उस प्रभु का ही सुमिरन करके आध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहता है ।। ८ ।। ३ ।। २ ।। ७ ।। १२ ।।

बिभास प्रभाती वाणी भक्त कबीर जी की   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सहज स्वभाव रूप प्रभु अपने रंग में ही प्रकट हो उठा है और अब जीने मरने का हमारा भय तथा चिन्ता भाग खड़े हुए हैं ।। १ ।। प्रभु रूपी रत्न हमने चिन्तन करते हुए प्राप्त कर लिया है जिससे हमारे हृदय की ज्योति प्रकट हो उठी है तथा अंधकार समाप्त हो गया है ।। १ ।। रहाउ ।। जहाँ आनन्द होता है दुख वहाँ से दूर भाग जाते हैं और यह मन रूपी माणिक प्रभु रूपी परम तत्व की लौ में लीन हो जाता है ।। २ ।। जो कुछ भी होता है वह तेरी रज़ा में ही होता है और जो इस प्रकार समझ जाता है वह सहजभाव में लीन हो जाता है ।। ३ ।। कबीर का कथन है कि अब सभी पाप नष्ट हो गए हैं तथा मन जगत के जीवन प्रभु में लीन हो गया है ।। ४ ।। १ ।। प्रभाती ।। यदि अल्लाह एक मस्जिद में ही बसता है तो यह बाकी का देश किसका है। हिन्दू भी इसी प्रकार प्रभु को मूर्ति और उसके नाम में ही बसा हुआ मानते हैं परन्तु इन दोनों ने ही मूल तत्व को नहीं पहचाना है ।। १ ।। हे अल्लाह और राम, मै तो तेरे नाम के आधार पर ही जीता हूँ; अतः हे मालिक, तू कृपा कर ।। १ ।। रहाउ ।। हिन्दू दक्षिण देश अर्थात बनारस के दक्षिण में जगन्नाथ पुरी में ही हरि का निवास मानते हैं और ऐसे ही मुसलमान पश्चिम की ओर अल्लाह का घर समझते हैं। हे व्यक्ति, तू दिल में ही खोज और बार-बार हृदय में ही खोजता रह क्योंकि प्रभु का वास्तविक ठिकाना यही है ।। २ ।। वर्ष भर में ब्राह्मण चौबीस एकादशी के व्रत रखते हैं और काज़ी लोग रमज़ान में पूरा महीना रोज़ा रखते हैं। वे बाकी ग्यारह महीनों को तो एक तरफ रख देते हैं और सुखों के भण्डार प्रभु को केवल इस महीने में ही प्राप्त करने का समय समझते हैं ।। ३ ।। उड़ीसा में जगन्नाथ के मंदिर पर स्नान करने से और मस्ज़िद में सिर झुकाने से क्या हो जाएगा यदि दिल में कपट है और व्यक्ति नमाज़ गुजारता है और हज़ के लिए काबा में जाता है ।। ४ ।। हे प्रभु, तूने जितने औरतों और मर्दों की रचना की है ये सब तुम्हारे ही रूप हैं। कबीर तो राम और अल्लाह दोनों का ही पुत्र है और ये सभी हमारे गुरु और पीर हैं ।। ५ ।। हे नारियो और पुरुषो, कबीर के कथन को सुनो और केवल एक प्रभु की ही शरण में आ जाओ। हे प्राणी, तुम केवल एक नाम का ही सुमिरन करो तभी तुम निश्चित रूप से पार उतर सकोगे ।। ६ ।। २ ।। प्रभाती ।। सबसे पहले परमात्मा (अल्लाह) ने अपनी परम ज्योति अर्थात नूर को उत्पन्न किया और अपनी शक्ति के माध्यम से सभी बंदों (लोगों) की रचना की। जब एक ही नूर से सारा संसार उत्पन्न हुआ है तो फिर भला इसमें कौन अच्छा है और कौन बुरा हो सकता है

॥ १ ॥ लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥ खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥ ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै ॥ २ ॥ सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥ हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥ ३ ॥ अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥ कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती ॥ बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ॥ जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै ॥ १ ॥ मुलां कहहु निआउ खुदाई ॥ तेरे मन का भरमु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि कीआ ॥ जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ ॥ २ ॥ किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ ॥ जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै जाइआ ॥ ३ ॥ तूं नापाकु पाकु नही सूझिआ तिस का मरमु न जानिआ ॥ कहि कबीर भिसति ते चूका दोजक सिउ मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती ॥ सुंन संधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥ सिध समाधि अंतु नही पाइआ लागि रहे सरनाई ॥ १ ॥ लेहु आरती हो पुरख निरंजन सतिगुर पूजहु भाई ॥ ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै अलखु न लखिआ जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥ जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥ २ ॥ पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥ कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥ ३ ॥ ५ ॥

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥ अंतरजामी रामु रवांई मै डरु कैसे चहीऐ ॥ १ ॥ बेधीअले गोपाल गोसाई ॥ मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥ मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥ २ ॥ गुर कै सबदि एहु मनु राता

।। १ ।। हे भाई, व्यर्थ के भ्रमों में मत भटकते रहो। वह खालिक (सृष्टा) इस सारी खलकत (सृष्टि) में है और सारी सृष्टि में वह सृष्टि कर्ता सभी स्थानों में पूर्ण रूप से व्याप्त है ।। १ ।। रहाउ ।। उस बनाने वाले ने एक ही मिट्टी से अनेकों प्रकार की रचना बनाई है। ना तो उस मिट्टी के बर्तन में दोष है और ना ही बनाने वाले कुम्हार (परमात्मा) में कोई दोष है ।। २ ।। वह एक ही सच्चा प्रभु सब में लीन है और उसका किया हुआ सब कुछ होता है। जो उस प्रभु के हुकुम को पहचानता और हृदय से जान लेता है वास्तव में वही उसका बंदा (सेवक) कहा जाता है ।। ३ ।। उस अदृष्ट प्रभु को देखा समझा नहीं जा सकता और गुरु ने तो मुझ गूंगे को प्रभु रूप में गुड़ दे दिया है जिसका स्वाद मैं बता नहीं सकता। कबीर का कथन है कि मेरे संदेह और चिन्ताएँ सभी भाग खड़े हुए हैं क्योंकि अब मैंने सर्वत्र उस प्रभु को ही देख लिया है ।। ४ ।। ३ ।। प्रभाती ।। वेदों और कतेबों को झूठा मत कहो, झूठा तो वह है जो इनका भली प्रकार से विचार नहीं करता। जब सब में एक खुदा ही बसता हुआ कहा जाता है तो फिर भला तू मुर्गी क्यों मारता है ।। १ ।। हे मुल्ला, तू बता कि क्या यह खुदा का न्याय है; वास्तव में तेरे मन का भ्रम जा ही नहीं सकेगा ।। १ ।। रहाउ ।। जीव को पकड़कर लाया, उसकी देह को नष्ट कर दिया तथा अब उसकी मिट्टी को बिस्मिल्लाह कह कर तूने हलाल कर दिया। तू ही देख उस जीव की ज्योति तो उस अमर प्रभु में मिल जाती है फिर भला तूने हलाल किसे किया है ।। २ ।। वजू की क्रिया करके अर्थात हाथ पाँव धोकर तूने अपने को पवित्र किया तथा मस्जिद में सिर को झुकाया परन्तु यह सब व्यर्थ है क्योंकि यदि हृदय में कपट है और तू नमाज गुजारता है तो तेरा काबा में हज के लिए जाना भी व्यर्थ है ।। ३ ।। तू अन्दर से अपवित्र है और तूने उस पवित्र अल्लाह को नहीं समझा और उसके रहस्य को नहीं जाना है। कबीर का कथन है कि तू बहिश्त (स्वर्ग) से दूर ही रह गया है और दरअसल तेरा मन दोज़ख में ही जाने को कर रहा है ।। ४ ।। ६ ।। प्रभाती ।। हे देव, हे दिवाकर (प्रकाश पुंज प्रभु), हे मालिक, हे आदि पुरुष और सर्वव्यापक हरि, तेरी संध्या पूजा यह ही है कि मैं शून्य अर्थात निर्विकल्प प्रभु में ही लीन बना रहूं। सिद्ध पुरुषों ने भी समाधियों में जुटे रहकर उसके रहस्य को नहीं जाना है और वे प्रभु की शरण में ही पड़े रहे हैं ।। १ ।। हे भाई, उस सर्वव्यापक निरंजन प्रभु की ही सच्ची आरती करो और सच्चे गुरु की वन्दना करते रहो। तपस्या में खड़ा हुआ ब्रह्मा भी वेदों का चिन्तन करता रहता है परन्तु उस रहस्यातीत प्रभु के रहस्य को जानना उसके लिए सम्भव नहीं होता ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के सारतत्व को तेल बनाया जाता है, प्रभु के नाम को बाती बनाया जाता है और इस देह रूपी दीपक को प्रकाशित किया जाता है। इसमें प्रभु-नाम की ज्योति जलाई जाती है तथा इस रहस्य को कोई समझने वाला ही समझ सकता है ।। २ ।। अब पाँचों शब्दों की अनहद धुन बज उठती है और वह प्रभु स्वतः ही अनुभव हो जाता है। कबीर दास ने तो हे निराकार, निर्वाण प्रभु, तेरी इस प्रकार की आरती उतारी है ।। ३ ।। ५ ।।

प्रभाती वाणी भक्त नामदेव जी की १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मन की व्यथा तो मन ही जानता है या फिर उसे किसी जान सकने वाले अर्थात प्रभु के आगे ही कहा जाए। मैं उस अन्तर्यामी प्रभु का सुमिरन करता हूँ इसलिए मुझे अब भला क्यों डरना चाहिए ।। १ ।। मुझे उस प्रभु ने अपने में बींध रखा है और वह मेरा प्रभु सभी स्थानों में पूर्ण रूप से व्याप्त है ।। १ ।। रहाउ ।। मन का ही बाजार है, मन का ही नगर है और मन का ही यह सारा प्रसार और विस्तार है। मन ही अनेकों रंगो में बसा रहता है और संसारी बनकर सारे संसार में इधर-उधर भटकता रहता है ।। २ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से यह मन प्रभु-नाम में रंग गया है

दुबिधा सहजि समाणी ॥ सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥ ३ ॥ जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी ॥ नामा कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती ॥ आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥ सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥ १ ॥ गोबिदु गाजै सबदु बाजै ॥ आनद रूपी मेरो रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला ॥ सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला ॥ २ ॥ तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला ॥ तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला ॥ ३ ॥ २ ॥ प्रभाती ॥ अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥ घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइआ ॥ १ ॥ जीअ की जोति न जानै कोई ॥ तै मै कीआ सु मालूमु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ प्रगासिआ माटी कुंभेउ ॥ आप ही करता बीठुलु देउ ॥ २ ॥ जीअ का बंधनु करमु बिआपै ॥ जो किछु कीआ सु आपै आपै ॥ ३ ॥ प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै ॥ अमरु होइ सद आकुल रहै ॥ ४ ॥ ३ ॥

प्रभाती भगत बेणी जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तनि चंदनु मसतकि पाती ॥ रिद अंतरि कर तल काती ॥ ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥ देखि बैसनो प्रान मुख भागा ॥ १ ॥ कलि भगवत बंद चिरामं ॥ क्रूर दिसटि रता निसि बादं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नितप्रति इसनानु सरीरं ॥ दुइ धोती करम मुखि खीरं ॥ रिदै छुरी संधिआनी ॥ पर दरबु हिरन की बानी ॥ २ ॥ सिल पूजसि चक्र गणेसं ॥ निसि जागसि भगति प्रवेसं ॥ पग नाचसि चितु अकरमं ॥ ए लंपट नाच अधरमं ॥ ३ ॥ म्रिग आसणु तुलसी माला ॥ कर ऊजल तिलकु कपाला ॥ रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥ रे लंपट क्रिसनु अभाखं ॥ ४ ॥ जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥ सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥ कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ ५ ॥ १ ॥

और स्वाभाविक रूप से ही दुविधाएँ समाप्त हो गई हैं। अब सब ओर प्रभु का हुकुम ही दिखाई दे रहा है और समान रूप से समाया हुआ वह निर्भय प्रभु अन्तर्मन में अनुभव होता है ।। ३ ।। प्रभु के जो सेवक उस उत्तम पुरुष प्रभु का सुमिरन करते हैं उनकी वाणी अविनाशी और अटल होती है। नामदेव का कथन है कि मैंने अपने हृदय में ही आश्चर्य स्वरूप अदृष्ट प्रभु पा लिया है ।। ४ ।। १ ।। प्रभाती ।। वह आदि से, युगों के प्रारम्भ से और युगों-युगों में बना रहने वाला प्रभु है जिसके रहस्य को मैं जान नहीं सका हूं। उसके रूप का बखान इस प्रकार ही किया गया है कि वह प्रभु ही सब में निरंतर रूप से बस रहा है ।। १ ।। शब्द की धुन के साथ वह प्रभु प्रकट हो रहा है और मेरे उस रमैया का स्वरूप आनन्द ही है ।। १ ।। रहाउ ।। वह संसार रूपी वन में चन्दन का वह वृक्ष है जिसकी सुगन्ध से सभी सुखी हो रहे हैं। सबका आदितिरूप होने के कारण वह चन्दन का भी आदि रूप ही है और उस चन्दन-प्रभु की संगत में रहकर जीव रूपी सभी लकड़ियां भी चन्दन हो जाती हैं ।। २ ।। हे प्रभु, तुम पारस हो और हम लोहा हैं, तुम्हारी संगत में ही हम कंचन हो गए हैं। तू ही दयालु रत्न रूपी हमारा प्यारा है और नामदेव तो सत्य के माध्यम से तुझमें लीन हो गया है ।। ३ ।। २ ।। प्रभाती ।। कुलातीत प्रभु ने एक ऐसा खेल प्रकट किया है कि घट-घट में वह ब्रह्म गुप्त रूप से छिपा हुआ है ।। १ ।। प्राणों की ज्योति उस प्रभु को कोई नहीं जान पाता परन्तु जो मैं कहता हूं वह उस प्रभु को पता होता है ।। १ ।। रहाउ ।। जिस प्रकार मिट्टी से घड़ा बनता है उसी प्रकार प्रभु भी अलग-अलग रूपों में दिखाई दे रहा है ।। २ ।। कर्म ही जीवों के लिए बन्धन बन जाते हैं परन्तु यह सब प्रभु स्वयं ही करता कराता है ।। ३ ।। नामदेव विनती करता है कि यह जीव जैसी भावना को मन में लाता है उसका वैसा ही फल प्राप्त कर लेता है। यदि यह जीव उस कुलातीत प्रभु में लीन बना रहे तो यह अमर हो जाता है अर्थात इसका आवागमन समाप्त हो जाता है ।।४ ।।३।।

प्रभाती भक्त बेणी जी की १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

बाहरी तौर पर व्यक्ति ने तन पर चन्दन लगा रखा है और माथे पर भी फूल-पत्ते धारण किए हुए हैं। हृदय से प्रभु को अपने अन्दर बसाने का एहसास लिया जा रहा है परन्तु बगल में छुरी छिपा कर रखी हुई है। व्यक्ति की दृष्टि ठग की तरह है परन्तु बगुले की तरह उसने अपनी सुरति प्रभु में लीन की हुई है। यह वैष्णव तो ऐसा दिखाई देता है जैसे इसके प्राण-पखेरू श्वास के मार्ग से उड़ गए हों ।। १ ।। काफी समय तक यह प्रभु की वन्दना करता हुआ दिखाई देता है परन्तु इसकी दृष्टि क्रूर और खोटी है तथा यह जीवन भर झगड़े ही करता रहता है ।। १ ।। रहाउ ।। प्रतिदिन यह शरीर को स्नान के माध्यम से धोता है और दो धोतियों को पहनने का कर्मकाण्ड करता हुआ केवल दूध ही पीता है। हृदय में इसने अपनी छुरी का निशाना लगाया हुआ है और पराया धन चुराने की इसकी पुरानी आदत है ।। २।। यह शिला का पूजन करता है और गणेश का चिन्ह धारण करके तथा रात भर जगता हुआ भक्ति में प्रवेश करने का उपक्रम करता रहता है। पाँव से तो यह नृत्य करता है परन्तु इसका चित्त ना करने योग्य कामों में लगा रहता है। हे लोभी व्यक्ति, तेरी नृत्य अधर्म ही है ।। ३ ।। तू मृग आसन पर तुलसी की माला पकड़कर बैठा हुआ स्वच्छ हाथों से माथे पर तिलक लगाता है। गले मे तूने रुद्राक्ष की माला पहनी है लेकिन तेरे हृदय में झूठ ही झूठ है। हे लम्पट, तू कृष्ण की भक्ति नहीं कर रहा अपितु तेरे वचन और कर्म तेरे कहने के विपरीत ही हैं ।। ४ ।। जिसने आत्मतत्व को नहीं पहचाना उसके सभी अन्धे धर्म-कर्म व्यर्थ हैं। बेणी का कथन है कि गुरमुख बनकर ही उस प्रभु का सुमिरन किया जाता है और सच्चे गुरु के बिना प्रभु से मिलाप का मार्ग नहीं पाया जा सकता ।। ५ ।। १ ।।

੧ਓ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु जैजावंती महला ९ ॥

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥ माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥ जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥ बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥ १ ॥ नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥ छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥ २ ॥ १ ॥ जैजावंती महला ९ ॥ रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥ कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥ बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥ अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥ १ ॥ बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥ नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥ २ ॥ २ ॥ जैजावंती महला ९ ॥ रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥ इह जग महि राम नामु सो तउ नही सुनिओ कानि ॥ बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानस को जनमु लीनु सिमरनु नह निमख कीनु ॥ दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥ १ ॥ नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु ॥ सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥ २ ॥ ३ ॥ जैजावंती महला ९ ॥ बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥ निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥ कालु तउ पहूचिओ

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि

रागु जैजावंती महला ६ ।।

हे जीव, तू प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि तेरे द्वारा करने योग्य वास्तविक कार्य यही है। तू माया के प्रपंचों की संगत को त्याग दे और प्रभु की शरण में आकर लग जा। जगत का सुख और मान-सम्मान झूठा है और यहाँ के साज सिंगार सभी मिथ्या हैं ।। १ ।। रहाउ ।। धन सम्पदा को तू सपने की तरह समझ और तू भला किस पर गर्व कर रहा है क्योंकि यह धरती का सारा राज पाट ही बालू की दीवार की तरह क्षण भर में नष्ट हो जाने वाला है ।। १ ।। सेवक नानक यह बात कहता है कि हे जीव, तेरे शरीर को तो नष्ट होना ही है। जैसे क्षण-क्षण बीतते हुए कल का समय बीत गया, उसी प्रकार वर्तमान भी चला जा रहा है ।। २ ।। १ ।। जैजावंती महला ६ ।। हे जीव, तू बार-बार प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि जीवन तो बीता चला जा रहा है। हे गँवार, तुझे बार-बार कहा जा रहा है परन्तु तू समझता क्यों नहीं। यह तेरा शरीर उस वर्षा के ओले के समान है जिसे नष्ट होते देर नहीं लगती ।। १ ।। रहाउ ।। तू सारे भ्रमों को त्यागकर केवल प्रभु का नाम ही लेता रह क्योंकि यह एक प्रभु का नाम ही अंतिम समय में तेरे साथ जाने वाला है ।। १ ।। विषयों के जहर को तू अपने प्राणों से दूर कर दे और प्रभु के यश को हृदय में धारण कर। दास नानक यह पुकार-पुकार कर कह रहा है कि जीवन रूपी अवसर निकलता जा रहा है ।। २ ।। २ ।। जैजावंती महला ६ ।। हे मन, भला तेरी क्या हालत होगी क्योंकि इस संसार में राम नाम को तो तूने कानों से सुना भी नहीं है। तू विषय-विकारों में अत्यन्त लीन बना रहा है और तूने अपनी मति को इनकी ओर से उलटाया नहीं है ।। १ ।। रहाउ ।। जन्म तो तुमने मनुष्य का लिया है परन्तु प्रभु का सुमिरन एक क्षण भर के लिए भी नहीं किया है। स्त्री के सुखों और भोगों के ही तू अधीन बना रहा है और इन सुखों को ही तूने पैरों में बेड़ियों की तरह डाल रखा है ।। १ ।। दास नानक पुकार कर यह कह रहा है कि संसार का यह प्रपंच स्वप्न की तरह अस्थिर है इसलिए यह माया जिस प्रभु की दासी है तू उस प्रभु का सुमिरन क्यों नहीं करता ।। २ ।। ३ ।। जैजावंती महला ६ ।। हे प्राणी, तेरा यह जीवन व्यर्थ के कामों में ही बीत जाएगा। हे मूर्ख, तू रात दिन पुराणों को तो सुनता है परन्तु उनके मर्म को समझाता नहीं। अब तेरा काल जब तेरे सामने

आनि कहा जैहै भाजि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥ किउ न हरि का नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥ १ ॥ राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥ नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥ २ ॥ ४ ॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सलोक सहसक्रिती महला १ ॥

पढ़ि पुस्तक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठु बिभूखन सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलक लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जो जानसि ब्रहमं करमं ॥ सभ फोकट निसचै करमं ॥ कहु नानक निसचौ धिआवै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ १ ॥ निहफलं तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते ॥ सागरं संसारस्य गुर परसादी तरहि के ॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥ २ ॥ जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥ ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥ सरब सबदं त एक सबदं जे को जानसि भेउ ॥ नानक ता को दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ३ ॥ एक क्रिस्नं त सरब देवा देव देवा त आतमह ॥ आतमं स्री बास्वदेवस्य जे कोई जानसि भेव ॥ नानक ता को दासु है सोई निरंजन देव ॥ ४ ॥

सलोक सहसक्रिती महला ५

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

कतंच माता कतंच पिता कतंच बनिता बिनोद सुतह ॥ कतंच भ्रात मीत हित बंधव कतंच मोह कुटंब्यते ॥ कतंच चपल मोहनी रूपं पेखंते तिआगं करोति ॥ रहंत संग भगवान सिमरण नानक लबध्यं

आ पहुँचा है तो तू भला भागकर कहां जाएगा ।। १ ।। रहाउ ।। जिस शरीर को तूने सदैव बना रहने वाला समझा था वह तेरा शरीर तो अब मिट्टी में मिल जाएगा। इसलिए हे निर्लज्ज मूर्ख, तू प्रभु के नाम का सुमिरन क्यों नहीं करता ।। १ ।। तू राम की भक्ति को हृदय में बसा और अपने मन के अभिमान को त्याग दे। दास नानक यह बखान करता है कि हे जीव, तू इस प्रकार का जीवन जीता हुआ इस जगत में स्थिर बना रह ।। २ ।। ४ ।।

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

श्लोक सहसक्रिती महला १ ।।

विद्वान पंडित पुस्तकें पढ़कर संध्या समय वाद-विवाद करते हैं। वे शिलाओं को पूजते हैं और बगुलों की तरह समाधि लगाते हैं; झूठ बोल-बोलकर वे लोहे को ही सोने का बना हुआ गहना बताते हैं। तीन पंक्तियों वाली गायत्री को दिन में तीन बार विचार पूर्वक कहते हैं। गले में माला डालकर माथे पर तिलक लगाए रहते हैं। धोती और सिर पर उसका पल्लू धारण किए रहते हैं। यदि वास्तव में ऐसे व्यक्ति ब्रह्म कर्म अर्थात प्रभु के आचरण को जानते होते तो उन्हें ये सब कर्म निश्चित तौर से व्यर्थ कर्म ही दिखाई पड़ते। नानक कथन करता है कि यदि निश्चय पूर्वक प्रभु का सुमिरन किया जाए तो यही ठीक है परन्तु सच्चे गुरु के बिना इस ओर चलने का मार्ग दिखाई नहीं पड़ता ।। १ ।। जब तक व्यक्ति प्रभु को नहीं पहचानता तब तक उसका जीवन निष्फल है। परन्तु गुरु की कृपा से व्यक्ति संसार समुद्र से तैर कर पार हो जाते हैं। हे नानक, प्रभु करने वाला एवं कारण रूप में पूर्ण समर्थ है जिसने सारी सृष्टि को धारण कर रखा है। सभी कारण उस कर्ता के वश में हैं, उसी का ध्यान एवं विचार किया जाना चाहिए ।। २ ।। योगियों का जीवन मार्ग, ज्ञान प्राप्ति का जीवन मार्ग माना जाता है। क्षत्रियों का जीवन मार्ग अभी तक शौर्य का मार्ग माना जाता है तथा चली आ रही परम्परा से दूसरों की सेवा करना शूद्र का जीवन मार्ग माना जा रहा है। सबका जीवन मार्ग वास्तव में एक ही जीवन मार्ग है अर्थात सब कार्य सबने करने हैं। यदि कोई इस रहस्य को जान लेता है (और सबको समान भाव से देखता है) तो नानक उसका दास है और वही व्यक्ति कालिमा-विहीन प्रभु का रूप है ।। ३ ।। सभी देवताओं का कृष्ण अर्थात परमात्मा एक ही है और वही परमात्मा देवताओं के देवत्व की आत्मा है। आत्मा ही प्रभु है यदि कोई इस रहस्य को जानता है तो नानक उसका दास है और ऐसा व्यक्ति ही निरंजन रूप परमात्मा है ।। ४ ।।

श्लोक सहसक्रिती महला ५

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

यहां कौन माता है, कौन पिता है, कौन स्त्री है और स्त्रियों के साथ विनोद, आनन्द तथा पुत्रों से सम्बन्ध भला कबके हैं। कौन भाई, मित्र का प्यार देने वाला और कौन बन्धु तथा कैसा परिवार का मोह है। यहाँ कैसी चंचल मोहिनी माया है जो कि देखते-देखते ही छोड़कर चली जाती है। सुमिरन के माध्यम से ही प्रभु के संग रहा जाता है और हे नानक, यह सुमिरन उस

अचुत तनह ॥ १ ॥ ध्रिगंत मात पिता सनेहं ध्रिग सनेहं भ्रात बांधवह ॥ ध्रिग स्नेहं बनिता बिलास सुतह ॥ ध्रिग स्नेहं ग्रिहारथ कह ॥ साधसंग स्नेह सत्यिं सुखयं बसंति नानकह ॥ २ ॥ मिथ्यंत देहं खीणंत बलनं ॥ बरधंति जरूआ हित्यंत माइआ ॥ अत्यंत आसा आथित्य भवनं ॥ गनंत स्वासा भैयान धरमं ॥ पतंति मोह कूप दुरलभ्य देहं तत आस्रयं नानक ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद गोपाल क्रिपा ॥ ३ ॥ काच कोटं रचंति तोयं लेपनं रकत चरमणह ॥ नवंत दुआरं भीत रहितं बाइ रूपं असथंभनह ॥ गोबिंद नामं नह सिमरंति अगिआनी जानंति असथिरं ॥ दुरलभ देह उधरंत साध सरण नानक ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे जपंति ॥ ४ ॥ सुभंत तुयं अचुत गुणग्यं पूरनं बहुलो क्रिपाला ॥ गंभीरं ऊचै सरबगि अपारा ॥ भ्रितिआ प्रिअं बिस्राम चरणं ॥ अनाथ नाथे नानक सरणं ॥ ५ ॥ म्रिगी पेखंत बधिक प्रहारेण लख्य आवधह ॥ अहो जस्य रखेण गोपालह नानक रोम न छेद्यते ॥ ६ ॥ बहु जतन करता बलवंत कारी सेवंत सूरा चतुर दिसह ॥ बिखम थान बसंत ऊचह नह सिमरंत मरणं कदांचह ॥ होवंति आगिआ भगवान पुरखह नानक कीटी सास अकरखते ॥ ७ ॥ सबदं रतं हितं मइआ कीरतं कली करम क्रितुआ ॥ मिटंति तत्रागत भरम मोहं ॥ भगवान रमणं सरबत्र थान्यिं ॥ द्रिसट तुयं अमोघ दरसनं बसंत साध रसना ॥ हरि हरि हरि हरे नानक प्रिअं जापु जपना ॥ ८ ॥ घटंत रूपं घटंत दीपं घटंत रवि ससीअर नख्यत्र गगनं ॥ घटंत बसुधा गिरि तर सिखंडं ॥ घटंत ललना सुत भ्रात हीतं ॥ घटंत कनिक मानिक माइआ स्वरूपं ॥ नह घटंत केवल गोपाल अचुत ॥ असथिरं नानक साध जन ॥ ९ ॥ नह बिलंब धरमं बिलंब पापं ॥ द्रिड़ंत नामं तजंत लोभं ॥ सरणि संतं किलबिख नासं प्रापतं धरम लख्यिण ॥ नानक जिह सुप्रसंन माधवह ॥ १० ॥ मिरत मोहं अलप बुध्यं रचंति बनिता बिनोद साहं ॥ जौबन बहिक्रम कनिक कुंडलह ॥ बचित्र मंदिर सोभंति बसत्रा इत्यंत माइआ ब्यापितं ॥ हे अचुत सरणि संत नानक भो भगवानए नमह ॥ ११ ॥ जनमं त मरणं हरखं त सोगं भोगं त रोगं ॥ ऊचं त नीचं

प्रभु के पुत्रों अर्थात शान्त पुरुषों से ही पाया जाता है ।। १ ।। माता-पिता में झूठा स्नेह भी धिक्कार योग्य है तथा भाई बन्धुओं में लीनता भी धिक्कार योग्य है। पुत्र, स्त्री विलास का स्नेह भी ध्क्किार योग्य है। घर के पदार्थों में लगाए स्नेह को भी धिक्कार है। हे नानक, सुख में निवास बनाए रखने वाला सत्य स्नेह केवल साधसंगत का ही स्नेह है ।। २ ।। देह स्थिर बनी रहने वाली नहीं है और इसका बल भी टूट जाता है। जब माया में मोह बन जाता है तो वास्तव में बुढ़ापे में भी वृद्धि होती जाती है। इस शरीर रूपी घर में यह जीव बेशक एक अतिथि है पर इस घर से यह बहुत सी आशाएँ लगा लेता है और भयानक धर्मराज इसके श्वास गिनता रहता है। जीव की दुर्लभ देह मोह के कुँए में गिरी रहती है परन्तु हे नानक, वहाँ भी इसे परम तत्व प्रभु का ही आसरा है। हे गोविन्द, हे प्रभु, हे धरती के पालनहार, तुम कृपा करो ।। ३ ।। यह शरीर एक कच्चा किला है जो जल का बना हुआ है और इस पर चमड़ी और रक्त का लेप किया हुआ है। इसके नौ द्वार बिना किसी दीवार के हैं और वायु रूप इसमें स्तम्भ हैं। अज्ञानी जीव प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता और इस शरीर रूपी किले को सदा स्थिर बना रहने वाला मानता है। हे नानक, इस दुर्लभ देह का उद्धार साधसंगत की शरण में आकर परमात्मा के नाम सुमिरन से ही होता है ।। ४ ।। हे अविनाशी, गुणों को जानने वाले, सर्वव्यापक, तू कृपालु है और सब ओर तू ही शोभायमान है। तू ही अपरम्पार, गम्भीर और सर्वज्ञ अर्थात अन्तर्यामी है। अपने सेवकों का तू प्रिय है और तेरे चरणों में ही वे शान्ति और सुख प्राप्त करते हैं। अनाथों के नाथ हे प्रभु, नानक तेरी ही शरण में है ।। ५ ।। एक मृगी को देखकर शिकारी अपने शस्त्र से उसपर निशाना साधता है। हे नानक, जिसकी रक्षा प्रभु करता है उसका बाल भी बाँका नहीं होता ।। ६ ।। व्यक्ति बहुत बलवान हो, बहुत उद्यमी हो और चारों दिशाओं में शूरवीर उसकी सेवा करने वाले हों, उसका निवास भी ऊँचे स्थान पर हो और उसे मरने की तो कभी याद भी ना आती हो परन्तु हे नानक, यदि प्रभु की आज्ञा हो जाए तो एक छोटी सी चींटी भी उसके श्वासों को खींच लेती है अर्थात उसे मार डालती है ।। ७ ।। कलियुग के वास्तविक कार्य ये हैं कि शब्द में लीन हुआ जाए, मन में दयाभाव को बसाया जाए और प्रभु का कीर्ति गान किया जाए। इस प्रकार जीव के सभी भ्रम और मोह नष्ट हो जाते हैं। जीव यह जानने लग जाता है कि सभी स्थानों में प्रभु ही रमण कर रहा है। हे प्रभु, सब सफलताएँ देने वाला तेरा दर्शन प्राप्त हो जाता है और इस दर्शन का निवास साधु-पुरुषों की जीभ पर ही स्थित बना रहता है अर्थात तेरे नाम के सुमिरन में ही बना रहता है। हे नानक, उस प्रिय प्रभु का बार-बार सुमिरन करता रह ।। ८ ।। रूप-सौन्दर्य, द्वीप, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, आकाश आदि सभी का क्षय होता रहता है। धरती, पहाड़, पेड़, शिखर, स्त्री, पुत्र, भाई तथा अन्य हितैशी सभी क्षीण होते रहते हैं। सोना, माणिक, धन-सम्पदा और सुन्दर स्वरूप भी घटता रहता है ; यदि कुछ नहीं घटता है तो वह केवल एक परमात्मा ही है जिसका कभी नाश नहीं होता तथा हे नानक, इसी प्रकार प्रभु के साधु, सेवक भी सदैव स्थिर बने रहते हैं ।। ६ ।। हे जीव, तू धर्म के कार्य में विलम्ब ना कर तथा पाप कर्मों को टालता जा। लोभ का त्याग करके तू प्रभु-नाम का सुमिरन कर और शान्त पुरुषों की शरण में आकर पापों का नाश कर ले। धर्म के वास्तविक लक्षण उसे ही प्राप्त होते हैं, हे नानक, जिस पर प्रभु प्रसन्न होते हैं ।। १० ।। अल्प बुद्धि वाला जीव माया के मोह में मर रहा है और स्त्री समेत रंगों और तमाशों में अपने श्वासों समेत लीन हो रहा है। जिस प्रकार सोने के कुण्डल बाहरी आभूषण हैं इसी प्रकार यौवन की अवस्था भी बाहरी अवस्था है। माया का इतना प्रभाव इस पर हो गया है कि विलक्षण घर और सुन्दर वस्त्रों में यह सजा बना रहता है। हे शान्त पुरुषों की शरण अटल प्रभु, नानक का तुझे प्रणाम है ।। १ ।। जब जन्म होगा जब मरण होगा ही, जब हर्ष होगा तो शोक भी होगा और इसी प्रकार जब भोग होगा तो रोग होना भी निश्चित ही है। कोई ऊँचा है तो वास्तव में कोई नीचा भी है।

नान्हा सु मूचं ॥ राजं त मानं अभिमानं त हीनं ॥ प्रविरति मारगं वरतंति बिनासनं ॥ गोबिंद भजन साध संगेण असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥ १२ ॥ किरपंत हरीअं मति ततु गिआनं ॥ बिगसीध्यि बुधा कुसल थानं ॥ बस्यिंत रिखिअं तिआगि मानं ॥ सीतलंत रिदयं द्रिडु संत गिआनं ॥ रहंत जनमं हरि दरस लीणा ॥ बाजंत नानक सबद बीणां ॥ १३ ॥ कहंत बेदा गुणंत गुनीआ सुणंत बाला बहु बिधि प्रकारा ॥ द्रिड़ंत सुबिदिआ हरि हरि क्रिपाला ॥ नाम दानु जाचंत नानक दैनहार गुर गोपाला ॥ १४ ॥ नह चिंता मात पित भ्रातह नह चिंता कछु लोक कह ॥ नह चिंता बनिता सुत मीतह प्रविरति माइआ सनबंधनह ॥ दइआल एक भगवान पुरखह नानक सरब जीअ प्रतिपालकह ॥ १५ ॥ अनित्य वितं अनित्य चितं अनित्य आसा बहु बिधि प्रकारं ॥ अनित्य हेतं अहं बंधं भरम माइआ मलनं बिकारं ॥ फिरंत जोनि अनेक जठरागनि नह सिमरंत मलीण बुध्यं ॥ हे गोबिंद करत मइआ नानक पतित उधारण साध संगमह ॥ १६ ॥ गिरंत गिरि पतित पातालं जलंत देदीप्य बैस्वांतरह ॥ बहंति अगाह तोयं तरंगं दुखंत ग्रह चिंता जनमं त मरणह ॥ अनिक साधनं न सिध्यते नानक असथंभं असथंभं असथंभं सबद साध स्वजनह ॥ १७ ॥ घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥ मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥ १८ ॥ अंधकार सिमरत प्रकासं गुण रमंत अघ खंडनह ॥ रिद बसंति भै भीत दूतह करम करत महा निरमलह ॥ जनम मरण रहंत स्रोता सुख समूह अमोघ दरसनह ॥ सरणि जोगं संत प्रिअ नानक सो भगवान खेमं करोति ॥ १९ ॥ पाछं करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह ॥ निरधन भयं धनवंतह रोगीअं रोग खंडनह ॥ भगत्यं भगति दानं राम नाम गुण कीरतनह ॥ पारब्रहम पुरख दातारह नानक गुर सेवा किं न लभ्यते ॥ २० ॥ अधरं धरं धारणह निरधनं धन नाम नरहरह ॥ अनाथ नाथ गोबिंदह बलहीण बल केसवह ॥ सरब भूत दयाल अचुत दीन बांधव दामोदरह ॥ सरबग्य पूरन पुरख भगवानह भगति वछल

यदि कोई छोटा है तो कोई बड़ा भी है। जब राज होता है तो उसका गर्व भी होता है और जब अभिमान होता है तो हीन भावना भी होती है। संसार में लीन करने वाला कार्य व्यवहार वास्तव में विनाश का कारण होता है। हे नानक, प्रभु का सुमिरन और साधसंगत में प्रभु का भजन ही स्थिर बना रहने वाला होता है ।। १२ ।। प्रभु की कृपा से ही तत्व ज्ञान की प्राप्ति होती है। बुद्धि खिल उठती है और सुख देने वाला स्थान प्राप्त होता है ; इन्द्रियां वश में हो जाती हैं और अभिमान का त्याग हो जाता है। शान्त-पुरुषों का ज्ञान प्राप्त करके हृदय शीतल हो जाता है तथा प्रभु का दर्शन करके बार-बार जन्म लेना समाप्त हो जाता है। हे नानक, इस प्रकार शब्द की वीणा बज उठती है ।। १३ ।। गुणवान व्यक्ति वेदों का कथन करते हैं जिन्हे अनेकों विधियों से जिज्ञासु सुनते हैं परन्तु उत्तम विद्या वे ही प्राप्त करते हैं जिन पर प्रभु कृपा करता है। नानक तो प्रभु से नाम का दान ही माँगता है और यह दान वह प्रभु गुरु ही दे सकने वाला है ।। १४ ।। माता, पिता, भाई और अन्य लोगों की व्यर्थ चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है; स्त्री, पुत्र, मित्र आदि की भी व्यर्थ चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि इन सबके सम्बन्ध सांसारिक धन सम्पदा के सम्बन्ध हैं। हे नानक, वह सर्वव्यापक प्रभु ही एक ऐसा दयालु है जो सभी जीवों का पालन पोषण करता रहता है ।। १५ ।। धन, मन और अनेकों प्रकार की आशाएँ नाशवान हैं। प्रेम के अहंकार का बन्धन और मलीन विकारों तथा माया का भ्रम भी अनित्य है। पेट की अग्नि को साथ लिए यह जीव अनेकों योनियों में भटकता रहता है परन्तु बुद्धि मलीन होने के कारण प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता। हे प्रभु, दया करो और पतितों का उद्धार करने वाले के रूप में साधु पुरुषों के साथ नानक का भी उद्धार कर दो ।। १६ ।। व्यक्ति पहाड़ से गिर जाए, पाताल में नीचे जा पड़े और अग्नि में धू-धू करता हुआ जलता रहे; जल में आगे से आगे बहता हुआ अधिक से अधिक दुखी बना रहे परन्तु इन सबसे अधिक दुखदायक उसे अपने घरबार की चिन्ता है जो वास्तव में जन्म और मरण का मूल है। हे नानक, अन्य कोई भी साधन काम नहीं आते और साधु पुरुषों का एक मात्र आसरा शब्द अथवा प्रभु का नाम ही है ।। १७ ।। व्यक्ति अनेकों घोर दुखों में पड़ा रहे तथा महा विकारों में फँस कर दरिद्र बनकर जीवन को नष्ट करता रहे परन्तु हे नानक, प्रभु के नाम सुमिरन से उसके सभी दुख उसी प्रकार मिट जाते हैं जिस प्रकार अग्नि लकड़ी को भस्म कर देती है ।। १८ ।। प्रभु सुमिरन से अंधकार में भी प्रकाश हो जाता है और व्यक्ति पापों को नाश करने वाले गुणों में रमण करता रहता है। हृदय में भयानक विकार रूपी दूत बसते हैं। प्रभु का नाम सुनने से जन्म-मरण तो समाप्त हो ही जाता है साथ ही साथ सुखों का समूह प्रभु का सफल दर्शन भी प्राप्त होता है। वह प्रभु ही शरण देने वाला है, सन्त पुरुषों का प्रिय है और हे नानक, वह प्रभु ही सबको सुख और आनन्द देने वाला है ।। १९ ।। पीछे रह जाने वालों को वह आगे कर देता है और निराश हो चुके लोगों की आशा पूरी करता है। उस प्रभु की कृपा से ही निर्धन धनवान हो जाते हैं और रोगियों का रोग नष्ट हो जाता है। प्रभु-नाम का गुणानुवाद करने से ही भक्तों को भी भक्ति का दान प्राप्त होता है। हे नानक, वह सर्वव्यापक परब्रह्म ही सबसे बड़ा दाता है और ऐसे गुरु की सेवा से भला क्या नहीं मिल सकता ।। २० ।। निराश्रितों का वह प्रभु ही आसरा बनता है और निर्धनो को वह प्रभु ही नाम रूपी धन देता है। अनाथों का नाथ वह प्रभु है और वह प्रभु ही बलहीनों का बल है। वह दीनबन्धु, दामोदर प्रभु, अविनाशी और सभी जीवों पर दया करने वाला है। वह सर्वांगपूर्ण सर्वव्यापी प्रभु सब कुछ जानने वाला है और भक्तिभाव को प्यार करने वाला

करुणा मयह ॥ घटि घटि बसंत बासुदेवह पारब्रहम परमेसुरह ॥ जाचंति नानक क्रिपाल प्रसादं नह बिसरंति नह बिसरंति नाराइणह ॥ २१ ॥ नह समरथं नह सेवकं नह प्रीति परम पुरखोतमं ॥ तव प्रसादि सिमरते नामं नानक क्रिपाल हरि हरि गुरं ॥ २२ ॥ भरण पोखण करंत जीआ बिस्राम छादन देवंत दानं ॥ स्रिजंत रतन जनम चतुर चेतनह ॥ वरतंति सुख आनंद प्रसादह ॥ सिमरंत नानक हरि हरि हरे ॥ अनित्य रचना निरमोह ते ॥ २३ ॥ दानं परा पूरबेण भुंचंते महीपते ॥ बिपरीत बुध्यं मारत लोकह नानक चिरंकाल दुख भोगते ॥ २४ ॥ ब्रिथा अनुग्रहं गोबिंदह जस्य सिमरण रिदंतरह ॥ आरोग्यं महा रोग्यं बिसिम्रिते करुणा मयह ॥ २५ ॥ रमणं केवलं कीरतनं सुधरमं देह धारणह ॥ अंम्रित नामु नाराइण नानक पीवतं संत न त्रिप्यते ॥ २६ ॥ सहण सील संतं सम मित्रस्य दुरजनह ॥ नानक भोजन अनिक प्रकारेण निंदक आवध होइ उपतिसटते ॥ २७ ॥ तिरसकार नह भवंति नह भवंति मान भंगनह ॥ सोभा हीन नह भवंति नह पोहंति संसार दुखनह ॥ गोबिंद नाम जपंति मिलि साध संगह नानक से प्राणी सुख बासनह ॥ २८ ॥ सैना साध समूह सूर अजितं संनाहं तनि निंम्रताह ॥ आवधह गुण गोबिंद रमणं ओट गुर सबद कर चरमणह ॥ आरूड़ते अस्व रथ नागह बुझंते प्रभ मारगह ॥ बिचरते निरभयं सत्रु सैना धायंते गोपाल कीरतनह ॥ जितते बिस्व संसारह नानक वस्यं करोति पंच तसकरह ॥ २९ ॥ म्रिग त्रिसना गंधरब नगरं द्रुम छाया रचि दुरमतिह ॥ ततह कुटंब मोह मिथ्या सिमरंति नानक राम राम नामह ॥ ३० ॥ नच बिदिआ निधान निगमं नच गुणग्य नाम कीरतनह ॥ नच राग रतन कंठं नह चंचल चतुर चातुरह ॥ भाग उदिम लबध्यं माइआ नानक साधसंगि खल पंडितह ॥ ३१ ॥ कंठ रमणीय राम राम माला हसत ऊच प्रेम धारणी ॥ जीह भणि जो उतम सलोक उधरणं नैन नंदनी ॥ ३२ ॥ गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ॥ कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥ ३३ ॥ चरणारबिंद भजनं रिदयं नाम धारणह ॥

करुणामय है। वह प्रभु परब्रह्म परमेश्वर घट-घट में बसने वाला है। नानक तो प्रसाद रूप में प्रभु की कृपा की ही याचना करता है कि प्रभु उसे कभी भी विस्मृत ना हो जाए ॥ २१ ॥ ना तो मैं अच्छा सेवक हूँ, ना समर्थ हूँ और ना ही परम पुरुषोत्तम प्रभु में मेरी प्रीति है। तेरी कृपा से ही तेरे नाम का सुमिरन किया जाता है और हे नानक, वह प्रभु गुरु ही कृपा करने वाला है ॥ २ ॥ वह सभी जीवों का भरण-पोषण करता है तथा सभी जीवों को सुख देता हुआ उन्हें वस्त्र आदि दान देता है। प्रभु ने ही जीव को यह अमूल्य जन्म देकर पैदा किया है और इसी से जीव चेतन और सयाना है। उस प्रभु की कृपा से ही सब ओर सुख और आनन्द बना रहता है। नानक तो बार-बार उस प्रभु का ही सुमिरन करता है क्योंकि उसके सुमिरन से ही इस नाशवान संसार से अलिप्त बना रहा जाता है ॥ २ ॥ पूर्व जन्म के किए हुए दान का फल धरती के राजा भोगते हैं परन्तु विपरीत बुद्धि के कारण ही वे इस लोक में हे नानक, बहुत समय तक दुख भोगते हैं ॥ २४ ॥ जिनके हृदय में प्रभु का सुमिरन होता है हृदय की पीड़ा को भी वे प्रभु का ही प्रसाद मानते हैं। जो करूणामय प्रभु को भुला देता है वह शारीरिक रूप से निरोग होता हुआ भी महारोगी होता है ॥ २५ ॥ देह धारण करने का वास्तविक कर्तव्य केवल प्रभु का सुमिरन है। हे नानक, प्रभु के अमृत नाम का पान करते हुए भी सन्तजन कभी तृप्त नहीं होते अर्थात प्रभु-नाम सुमिरन सदैव करते रहते हैं ॥ २६ ॥ सन्तजन सहनशील होते हैं और उनके लिए मित्र और दुर्जन व्यक्ति एक समान ही होते हैं। हे नानक, कोई अनेक प्रकार के भोजन दे, कोई निन्दा करे अथवा शस्त्र खींचकर मारने के लिए खड़ा रहे परन्तु वे सबको एक समान ही देखते हैं ॥ २७ ॥ उनका ना तो कहीं तिरस्कार होता है और ना ही कहीं अनादर होता है। उनकी महिमा में कमी नहीं आती और संसार के दुख भी उन्हें नहीं लगते। हे नानक, वे प्राणी ही सुख में निवास करते हैं जो साधसंगत में मिल बैठकर प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं ॥ २८ ॥ सभी साधुजन शूरवीरों की वह सेना है जो कभी जीते नहीं जा सकते क्योंकि उन्होंने विनम्रता का कवच धारण किया होता है। उनका शस्त्र प्रभु के गुणों में लीन बने रहना है और उनके हाथ में शब्द-गुरु की ढाल होती है। प्रभु के मार्ग को जानना ही उनके लिए हाथी, घोड़े और रथ की सवारी है। वे काम, क्रोध आदि शत्रुओं की सेना में निर्भय होकर विचरण करते हैं और प्रभु के गुणानुवाद का धावा वे बोलते रहते हैं। हे नानक, वे पाँचों चोरों को वश में करके सारे संसार को जीत लेते हैं ॥ २६ ॥ दुर्मति के कारण यह जीव संसार रूपी नाशवान नगरी की मृगतृष्णा में दौड़ता है और दुर्मति रूपी वृक्ष की छाया में बैठा रहता है। इसी प्रकार कुटुम्ब का मोह भी झूठा है इसलिए हे नानक, प्रभु-नाम का सुमिरन ही करते रहना चाहिए ॥ ३० ॥ जीव के पास ना तो वेद-विद्या का वास्तविक खजाना है ना ही यह गुणों का ज्ञाता है और ना ही इसके पास प्रभु-नाम की कीर्ति का गायन है। इसका कंठ राग विद्या रूपी रत्न वाला भी नहीं है और यह चंचल और चतुर बना रहता है। धन-सम्पत्ति तो भाग्य और उद्यम करने से ही प्राप्त होती है तथा हे नानक, साधु पुरुषों की संगत में मूर्ख व्यक्ति भी पंडित हो जाता है ॥ ३१ ॥ राम नाम का सुमिरन ही गले की सुन्दर माला है और प्रेम धारण करना ही गोमुख है जिसमें गुप्त रूप से माला फेरी जाती है। जो जीभ के द्वारा प्रभु की कीर्ति के उत्तम श्लोक कहता है वह नयनों को सुख देने वाली माया से बच जाता है। ३२ ॥ गुरु के उपदेश से विहीन जो भी प्राणी हैं उनका जीवन धिक्कार-योग्य और भ्रष्ट है। वे मूर्ख, कुत्ते, सूअर, गधे, कौऐ और सर्प जैसे भी नहीं है ॥ ३३ ॥ प्रभु के चरण कमलों को हृदय में धारण करना, नाम को आधार बनाना और

कीरतनं साधसंगेण नानक नह द्रिसटंति जमदूतनह ॥ ३४ ॥ नच दुरलभं धनं रूपं नच दुरलभं स्वरग राजनह ॥ नच दुरलभं भोजनं बिंजनं नच दुरलभं स्वछ अंबरह ॥ नच दुरलभं सुत मित्र भ्रात बांधव नच दुरलभं बनिता बिलासह ॥ नच दुरलभं बिदिआ प्रबीणं नच दुरलभं चतुर चंचलह ॥ दुरलभं एक भगवान नामह नानक लबध्यिं साधसंगि क्रिपा प्रभं ॥ ३५ ॥ जत कतह ततह द्रिसटं स्वरग मरत पयाल लोकह ॥ सरबत्र रमणं गोबिंदह नानक लेप छेप न लिप्यते ॥ ३६ ॥ बिखया भयंति अंम्रितं द्रुसटां सखा स्वजनह ॥ दुखं भयंति सुख्यं भै भीतं त निरभयह ॥ थान बिहून बिस्राम नामं नानक क्रिपाल हरि हरि गुरह ॥ ३७ ॥ सरब सील ममं सीलं सरब पावन मम पावनह ॥ सरब करतब ममं करता नानक लेप छेप न लिप्यते ॥ ३८ ॥ नह सीतलं चंद्र देवह नह सीतलं बावन चंदनह ॥ नह सीतलं सीत रुतेण नानक सीतलं साध स्वजनह ॥ ३९ ॥ मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह ॥ ग्यानं सम दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह ॥ दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजितह ॥ भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल कमल रहतह ॥ उपदेसं सम मित्र सत्रह भगवंत भगति भावनी ॥ पर निंदा नह स्रोति स्रवणं आपु त्यिागि सगल रेणुकह ॥ खट लख्यण पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह ॥ ४० ॥ अजा भोगंत कंद मूलं बसंते समीपि केहरह ॥ तत्र गते संसारह नानक सोग हरखं बिआपते ॥ ४१ ॥ छलं छिद्रं कोटि बिघनं अपराधं किलबिख मलं ॥ भरम मोहं मान अपमानं मदं माया बिआपितं ॥ म्रित्यु जनम भ्रमंति नरकह अनिक उपावं न सिध्यते ॥ निरमलं साध संगह जपंति नानक गोपाल नामं ॥ रमंति गुण गोबिंद नित प्रतह ॥ ४२ ॥ तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह ॥ करण कारण समरथह दानु देत प्रभु पूरनह ॥ निरास आस करणं सगल अरथ आलयह ॥ गुण निधान सिमरंति नानक सगल जाचंत जाचिकह ॥ ४३ ॥ दुरगम सथान सुगमं महा दूख सरब सूखणह ॥ दुरबचन भेद भरमं साकत पिसनं त सुरजनह ॥ असथितं सोग हरखं भै खीणं त निरभवह ॥

हे नानक, साधु पुरुषों के साथ मिलकर प्रभु कीर्ति का गायन करने से यमदूत जीव को देख ही नहीं पाते ।। ३४ ।। रूप और धन दुर्लभ नहीं है तथा स्वर्ग का राज भी दुर्लभ नहीं है। अनेकों व्यंजनों वाला भोजन भी दुर्लभ नहीं है और स्वच्छ वस्त्र भी दुर्लभ नहीं है। पुत्र, मित्र, भाई, बन्धु आदि भी दुर्लभ नहीं है और स्त्री के साथ भोग-विलास भी दुर्लभ नहीं है। चतुर और चालाक होना भी दुर्लभ नहीं है और ना ही विद्या में प्रवीण होना दुर्लभ है। केवल एक प्रभु का नाम ही दुर्लभ है जिसे हे नानक, प्रभु की कृपा से साधसंगत में प्राप्त किया जाता है ।। ३५ ।। इस लोक और पाताल आदि में जहाँ कहीं भी देखता हूं वहाँ प्रभु ही व्याप्त दिखाई देता है। हे नानक, वह प्रभु ही सबमें रमण कर रहा है और उस प्रभु को किसी प्रकार का भी लेप और दाग नहीं लगा है ।। ३६ ।। यदि प्रभु की कृपा हो जाए तो विष भी अमृत हो जाता है और शत्रु भी सज्जन दिखाई देने लगते हैं। दुख-सुख में बदल जाता है और भयभीत व्यक्ति निर्भय हो जाता है। स्थान विहीनों पर हे नानक, यदि प्रभु-गुरु कृपालु हो जाए तो उन्हें प्रभु-नाम का विश्राम स्थल प्राप्त हो जाता है। ३७ ।। सभी को शील प्रदान करने वाला मुझे भी शान्त स्वभाव देता है और सबको पवित्र करने वाला मुझे पवित्र करता रहता है। सबके कार्य करने वाला वह प्रभु ही मेरा कर्ता है तथा हे नानक, उसे किसी प्रकार का भी लेप अथवा दाग नहीं लगता ।। ३८ ।। प्रकाश रूप चन्द्रमा भी शीतल नहीं है और बावन चन्दन भी शीतलता प्रदान करने वाला नहीं है। सर्दी की ऋतु भी शीतल नहीं है परन्तु हे नानक, साधु रूपी हमारे सज्जन वास्तविक रूप से शीतल बने रहने वाले होते हैं ।। ३६ ।। साधु-पुरुषों का मन्त्र प्रभु-नाम ही होता है और प्रभु की सर्वव्यापकता को अनुभाव करना ही उनका ध्यान है। सुख-दुख को एक जैसा समझना ही उनके लिए ज्ञान है और निर्मल तथा शत्रु भाव से रहित होना ही उनके जीवन की युक्ति है। वे पाँचों विकारों के दोषों को रोकने वाले होते हैं और सब जीवों पर दया करने वाले होते हैं। प्रभु का कीर्तन ही उनका भोजन है और माया से वे उसी प्रकार अलिप्त रहते हैं जैसे कमल जल से अलिप्त बना रहता है। शत्रु, मित्र को वे समान भाव से उपदेश देते हैं और प्रभु की भक्ति ही उन्हें अच्छी लगती है। वे अपने कानों से पराई निन्दा नहीं सुनते और अपने अभिमान को त्यागकर सबकी चरणधूलि बने रहते हैं। ये छः लक्षण ही पूर्ण पुरुषों के लक्षण हैं और हे नानक, ऐसे व्यक्तियों को साध और सज्जन कहा जाता है ।। ४० ।। बकरी कन्दमूल खाती हुई भी यदि शेर के पास बनी रहती है तो उसे भय लगा ही रहता है। हे नानक, इस संसार की भी वही गति है और यहाँ शोक तथा हर्ष अपना प्रभाव बनाए ही रहते है।। ४१ ।। यहाँ छलछिद्रों के करोड़ों विघ्न हैं और पापों की मैल वाले अनेकों अपराध हैं। भ्रम, मोह, मान, अपमान, अहंकार, माया आदि का प्रभाव यहाँ बना रहता है। मृत्यु, जन्म और नरक में जाना आदि यहाँ है जो अनेकों उपायों से भी ठीक नहीं होते। हे नानक, प्रभु-नाम का सुमिरन करने से और सदैव प्रभु के गुणों में लीन बने रहने से ही साधसंगति में निर्मल बना रहा जा सकता है ।। ४२ ।। प्रभु की शरण ही पार उतारने वाली बेड़ी है और प्रभु में लीन बने रहना ही वास्तविक शील धारण करना है। वह प्रभु ही पूर्ण है, करने कराने वाला समर्थ है तथा दान देने वाला है। निराश लोगों को भी धैर्य और आशा बनाने वाला है तथा वह प्रभु ही सभी पदार्थों का घर है। हे नानक, सभी याचक उसी से याचना करते हैं और गुणों के भण्डार उस प्रभु का सुमिरन करते हैं ।। ४३ ।। उसी के कारण सभी दुर्गम स्थान भी सुगम हो जाते हैं और महादुख सभी सुख बन जाते हैं। दुर्वचन, भेद, भ्रम आदि चुगलखोर भले पुरुष बन जाते हैं। शोक की अन्तर्मन में बनी हुई भावना हर्ष में बदल जाती है तथा भय से टूटा हुआ व्यक्ति निर्भय हो जाता है।

भै अटवीअं महा नगर बासं धरम लख्यण प्रभ मइआ ॥ साध संगम राम राम रमणं सरणि नानक हरि हरि दयाल चरणं ॥ ४४ ॥ हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥ गण गंधरब देव मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह ॥ हरि करणहारं नमसकारं सरणि नानकु जगदीस्वरह ॥ ४५ ॥ हे कामं नरक बिस्रामं बहु जोनी भ्रमावणह ॥ चित हरणं त्रै लोक गंम्यं जप तप सील बिदारणह ॥ अलप सुख अवित चंचल ऊच नीच समावणह ॥ तव भै बिमुंचित साध संगम ओट नानक नाराइणह ॥ ४६ ॥ हे कलि मूल क्रोधं कदंच करुणा न उपरजते ॥ बिखयंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति जथा मरकटह ॥ अनिक सासन ताड़ंति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥ दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सरब जीअ रख्या करोति ॥ ४७ ॥ हे लोभा लंपट संग सिरमोरह अनिक लहरी कलोलते ॥ धावंत जीआ बहु प्रकारं अनिक भांति बहु डोलते ॥ नच मित्रं नच इसटं नच बाधव नच मात पिता तव लजया ॥ अकरणं करोति अखाद्यि खाद्यं असाज्यं साजि समजया ॥ त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिग्याप्ति नानक हरि नरहरह ॥ ४८ ॥ हे जनम मरण मूलं अहंकारं पापातमा ॥ मित्रं तजंति सत्रं द्रिड़ंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥ आवंत जावंत थकंत जीआ दुख सुख बहु भोगणह ॥ भ्रम भयान उदिआन रमणं महा बिकट असाध रोगणह ॥ बैद्यं पारब्रहम परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे ॥ ४९ ॥ हे प्राण नाथ गोबिंदह क्रिपा निधान जगद गुरो ॥ हे संसार ताप हरणह करुणा मै सभ दुख हरो ॥ हे सरणि जोग दयालह दीना नाथ मया करो ॥ सरीर स्वसथ खीण समए सिमरंति नानक राम दामोदर माधवह ॥ ५० ॥ चरण कमल सरणं रमणं गोपाल कीरतनह ॥ साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह ॥ ५१ ॥ सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं हस्त काया रख्या परमेस्वरह ॥ आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ सरब रख्या गुर दयालह भै दूख बिनासनह ॥ भगति वछल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरख अचुतह ॥ ५२ ॥ जेन कला धारिओ आकासं बैसंतरं कासट बेसटं ॥ जेन कला

यह संसार रूपी भयानक जंगल सुन्दर महानगर में परिवर्तित हो जाता है और प्रभु की कृपा के यही लक्षण प्रकट हो उठते हैं। हे नानक, अब जीव साधसंगत में प्रभु-नाम में लीन बना रहता है और दयालु प्रभु के चरणों की शरण में बना रहता है ।। ४४ ।। हे संग्राम के अजेय शूरवीर (मोह) तुम अत्यन्त बलशाली और अनेकों का नाश कर देने वाले हो। तुमने गणों, गन्धर्वों, देवताओं, मनुष्यों और पशु-पक्षियों को भी मोहित कर रखा है परन्तु जो प्रभु सब कुछ करने वाला है मेरा उसे प्रणाम है तथा नानक तो संसार के ईश्वर उस प्रभु की शरण में है ।। ४५ ।। हे नरक में ठिकाना दिलाने वाले काम, तू अनेकों योनियों मे भटकाने वाला है। तीनों लोकों में तुम गमन कर सकने वाले हो, सबके चित्त को चुराने वाले हो तथा जप, तप, शील का नाश करने वाले हो। तुम थोड़ा सुख देने वाले, धनहीन और चंचल बनाए रखने वाले तथा ऊँचे-नीचे सबको एक जैसा ही दुख देने वाले हो। तेरे भय को साधसंगत के माध्यम से दूर किया जाता है और नानक को तो उस प्रभु का ही आसरा है ।। ४६ ।। हे कलह-क्लेशों के मूल क्रोध, तुझे तो कभी भी दया आती ही नहीं। विषय-विकारों में फँसे जीवों को तूने वश में किया है और वे तेरे सामने बन्दर की तरह नाचते रहते हैं। आगे पहुँचने पर यमदूत उन्हें अनेकों प्रकार की सज़ा के साथ उनकी ताड़ना करते हैं और तेरी संगत में बने रहने वाले व्यक्ति वास्तव में नीच ही बने रहते हैं। हे नानक, दीनों के दुखों को दूर करने वाला दयालु प्रभु ही सभी जीवों की इससे रक्षा करने वाला है ।। ४७ ।। हे लम्पट लोगों के साथ सिरमौर रूप में बने रहने वाले लोभ, तुझमें फँसे हुए जीव अनेक प्रकार की लहरों में डूबते उतराते रहते हैं। तुझमें लीन जीव अनेकों प्रकार से भाग-दौड़ मचाए रहते हैं तथा अनेकों तरीकों से भटकते रहते हैं। तुझे, मित्र, इष्ट, सम्बन्धी, माता-पिता आदि किसी की भी शर्म नहीं होती। तू ना करने योग्य काम करवाता है, ना खाने योग्य पदार्थ खिलाता है और ना करने योग्य साज-सज्जा तू करवाता रहता है। नानक के प्रभु हरि मैं त्राहिमाम्-त्राहिमाम् करता हुआ तुझ स्वामी की शरण में आया हूं ।। ४८ ।। हे जन्म-मरण के मूल कारण पापों के पुंज अहंकार, तू मित्रों को दूर कर देता है और शत्रुओं की शत्रुता पक्की करके अनेक प्रकार के प्रपंचों का विस्तार कर देता है। तेरे कारण ही आवागमन में पड़े हुए जीव थकते रहते हैं और अनेकों प्रकार के सुख दुख भोगते रहते हैं वे भ्रमों के भयानक जंगल में भटकते रहते हैं और उनको महा विकट और असाध्य रोग लगे रहते हैं। हे नानक, इन असाध्य रोगों का वैद्य परब्रह्म परमेश्वर ही है। तू उस प्रभु की आराधना करता रह ।। ४६ ।। हे प्राणनाथ, कृपा के भण्डार जगत गुरु-प्रभु, हे संसार के दुखों को दूर करने वाले करुणामय, जीवों के सभी दुख दूर कर दो। हे शरण देने में समर्थ दयालु दीनानाथ, हम पर कृपा करो कि शरीर के सुख और दुख के समय नानक तुझ प्रभु का सुमिरन करता रहे ।। ५० ।। मैं तेरे चरण कमलों की शरण में बना हुआ धरती के पालनहार का गुणानुवाद करता रहूँ। हे नानक, इस भयानक और पार न किए जा सकने वाले संसार सागर को साधसंगत में ही पार किया जाता है ।। ५१ ।। उस परब्रह्म प्रभु को मैंने मस्तक और सिर पर धारण कर रखा है और शरीर और हाथों पर उस परमेश्वर को ही स्थित माना है। आत्मा में मैंने उस गोपाल स्वामी को धारण किया हुआ है तथा उस जगदीश्वर प्रभु को ही मैंने अपने कदमों की गति के रूप में धारण कर रखा है। दयालु गुरु को मैंने अपने चारों ओर धारण किया हुआ है क्योंकि वही दुखों का विनाश करने वाला है। भक्ति को प्यार करने वाले और अनाथों के नाथ तथा अटल एवं सर्वव्यापक प्रभु की शरण में ही नानक स्थित बना हुआ है ।। ५२ ।। जिसने अपनी शक्ति से आकाश को धारण किया हुआ है और लकड़ी में अग्नि को बाँधकर स्थित किया हुआ है। जिसने अपनी शक्ति में

ससि सूर नख्यत्र जोतिंयं सासं सरीर धारणं ॥ जेन कला मात गरभ प्रतिपालं नह छेदंत जटर रोगणह ॥ तेन कला असथंभं सरोवरं नानक नह छिजंति तरंग तोयणह ॥ ५३ ॥ गुसांई गरिस्ट रूपेण सिमरणं सरबत्र जीवणह ॥ लबध्यं संत संगेण नानक स्वछ मारग हरि भगतणह ॥ ५४ ॥ मसकं भगनंत सैलं करदमं तरंत पपीलकह ॥ सागरं लंघंति पिंगं तम परगास अंधकह ॥ साध संगेणि सिमरंति गोबिंद सरणि नानक हरि हरि हरे ॥ ५५ ॥ तिलक हीणं जथा बिप्रा अमर हीणं जथा राजनह ॥ आवध हीणं जथा सूरा नानक धरम हीणं तथा बैस्नवह ॥ ५६ ॥ न संखं न चक्रं न गदा न सिआमं ॥ अस्चरज रूपं रहंत जनमं ॥ नेत नेत कथंति बेदा ॥ ऊच मूच अपार गोबिंदह ॥ बसंति साध रिदयं अचुत बुझंति नानक बडभागीअह ॥ ५७ ॥ उदिआन बसनं संसारं सनबंधी स्वान सिआल खरह ॥ बिखम सथान मन मोह मदिरं महां असाध पंच तसकरह ॥ हीत मोह भै भरम भ्रमणं अहं फांस तीख्यण कठिनह ॥ पावक तोअ असाध घोरं अगम तीर नह लंघनह ॥ भजु साधसंगि गुोपाल नानक हरि चरण सरण उधरण क्रिपा ॥ ५८ ॥ क्रिपा करंत गोबिंद गोपालह सगल्यं रोग खंडणह ॥ साध संगेणि गुण रमत नानक सरणि पूरन परमेसुरह ॥ ५९ ॥ सिआमलं मधुर मानुख्यं रिदयं भूमि वैरणह ॥ निवंति होवंति मिथिआ चेतनं संत स्वजनह ॥ ६० ॥ अचेत मूड़ा न जाणंत घटंत सासा नित प्रते ॥ छिजंत महा सुंदरी कांइआ काल कंनिआ ग्रासते ॥ रचंति पुरखह कुटंब लीला अनित आसा बिखिआ बिनोद ॥ भ्रमंति भ्रमंति बहु जनम हारिओ सरणि नानक करुणा मयह ॥ ६१ ॥ हे जिहबे हे रसगे मधुर प्रिअ तुयं ॥ सत हतं परम बादं अवरत एथह सुध अछरणह ॥ गोबिंद दामोदर माधवे ॥ ६२ ॥ गरबंति नारी मदोन मतं ॥ बलवंत बलात कारणह ॥ चरन कमल नह भजंत त्रिण समानि ध्रिगु जनमनह ॥ हे पपीलका ग्रसटे गोबिंद सिमरण तुयं धने ॥ नानक अनिक बार नमो नमह ॥ ६३ ॥ त्रिणं त मेरं सहकं त हरीअं ॥ बूडं त तरीअं ऊणं त भरीअं ॥ अंधकार कोटि सूर उजारं ॥ बिनवंति नानक हरि गुर दयारं ॥ ६४ ॥

चन्द्रमाओं, सूर्यों, नक्षत्रों, शरीरों के प्राणों और इन सबकी ज्योति को धारण किया हुआ है, जिसने अपनी शक्ति से माता के गर्भ में जीवन का पालन-पोषण किया है और जिसकी शक्ति से पेट के किसी प्रकार के रोग कष्ट नहीं देते, हे नानक, उसी की शक्ति के बल से संसार सागर भी बँधा हुआ है और उस सागर के पानी की लहरें हमें तंग नहीं कर पाती ।। ५३ ।। धरती का स्वामी और अत्यन्त भारी रूप वाला वह प्रभु है जिसका सुमिरन ही सबका जीवन है। हे नानक, यह सुमिरन सन्त पुरुषों की संगत में अथवा उसकी शक्ति के पवित्र मार्ग पर चलने से ही प्राप्त होता है ।। ५४ ।। एक मच्छर पत्थर को तोड़ दे, एक चींटी कीचड़ को तैर कर पार कर जाए, एक लूला-लंगड़ा सागर से पार उतर जाए और अन्धे को घोर अंधकार में प्रकाश दिखाई देने लगे; यह सब हे नानक, साधु पुरुषों की संगत में प्रभु-नाम के सुमिरन का ही प्रताप है ।। ५५ ।। जिस प्रकार तिलक विहीन ब्राह्मण का आदर नहीं होता और अधिकार तथा हुकुम करने की शक्ति से विहीन राजा व्यर्थ होता है; संग्राम में जिस प्रकार शस्त्रों से विहीन शूरवीर बेकार होता है उसी प्रकार धर्म (कर्तव्य-कर्म) से विहीन तथाकथित वैष्णव कहलाने वाला भी व्यर्थ ही होता है ।। ५६ ।। उस प्रभु के पास ना शंख है ना चक्र है ना गदा है और ना ही उसका रंग श्याम है। वह तो आश्चर्य स्वरूप है तथा जन्म-मरण से परे रहने वाला है। वेद उसे ही नेति-नेति कहते हैं और वह प्रभु बड़ों से भी बहुत बड़ा अपार अपरम्पार प्रभु है। हे नानक, वह साधु पुरुषों के हृदय में बसता है और बड़े भाग्यशाली लोग ही उस अटल प्रभु के रहस्य को जान पाते हैं ।। ५७ ।। संसार एक जंगल की तरह है जिसमें सभी सम्बन्धी कुत्तों, गीदड़ों और गधों की तरह बसते हैं। इस भयानक स्थान में मोह की मदिरा सबके मनों में नशा बनाए रखती है और यहीं पर महा असाध्य पाँचों विकार रूपी चोर बसते हैं। मोह, भय और भ्रमों में पड़े हुए लोग भटकते रहते हैं तथा अहंकार का फन्दा यहाँ बहुत ही कड़ा बन्धन है। तृष्णा रूपी अग्नि, भोग रूपी पानी यहाँ असाध्य हैं और इस संसार सागर का किनारा पहुँच से इतना परे है कि इसे पार नहीं किया जा सकता। हे नानक, साधसंगत में प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि प्रभु के चरणों की शरण ही उद्धार करने वाली प्रभु की कृपा है ।। ५८ ।। कृपा करने वाला गोविन्द प्रभु, सभी रोगों का नाश करने वाला है। नानक तो उस पूर्ण परमेश्वर की शरण में पड़ा हुआ साधसंगत के माध्यम से उसके गुणों का सुमिरन करता रहता है ।। ५६ ।। व्यक्ति बेशक सुन्दर हो और मधुर वचन बोलने वाला हो परन्तु हृदय रूपी धरती में वह शत्रुता का जोड़-तोड़ बनाए रखने वाला हो तो उसका विनम्रता पूर्वक झुकना झूठा है। इसलिए हे शान्त पुरुषो, ऐसे व्यक्ति से सावधान बने रहना चाहिए ।। ६० ।। यह मूर्ख और नासमझ जीव यह नहीं जानता कि रोज श्वास घटते जा रहे हैं, यह महा सुन्दरी काया टूटती जा रही है और काल की सुन्दर कन्या के रूप में बुढ़ापा इसे खाता चला जा रहा है। फिर भी व्यक्ति परिवार के रंग-रागों में लीन बना रहता है और नाशवान पदार्थों की आशा बनाए रखकर अनेक प्रकार के रंग तमाशों में लीन बना रहता है। यह आवागमन में भटकता-भटकता अनेकों जीवन हार चुका है और हे नानक, अब यह अवसर उस करुणामय प्रभु की शरण में आ जाने का है ।। ६१ ।। हे रसपूर्ण जीभ, तुझे पदार्थ मीठे और प्यारे लगते हैं। सत्य की ओर से तू मर गई है और बड़े-बड़े वाद-विवादों में लगी हुई है। तू गोविन्द, माधव, दामोदर आदि शुद्ध अक्षरों का जाप कर ।। ६२ ।। स्त्री के मद में लीन व्यक्ति गर्व करता है, बलवान व्यक्ति बल के कारण अहंकार करता है परन्तु यदि वह प्रभु के चरण-कमलों का सुमिरन नहीं करता तो वह तिनके के समान है और उसका जीवन धिक्कार-योग्य है। हे विनम्रतापूर्ण चींटी तू बहुत भारी है क्योंकि तेरे पास प्रभु-नाम सुमिरन का धन है। हे नानक, उसे ही अनेकों बार प्रणाम करो ।। ६३ ।। तिनके से पहाड़ बन जाता है और सूखे से हरा हो जाताहै, डूबता हुआ पार उतर जाता है और खाली बना हुआ पूर्ण रूप से भर जाता है। नानक विनती करता है कि यदि प्रभु-गुरु दयालु हो जाए तो अंधकार में भी करोड़ों सूर्यों का उजाला हो जाता है ।। ६४ ।।

ब्रहमणह संगि उधरणं ब्रहम करम जि पूरणह ॥ आतम रतं संसार गहं ते नर नानक निहफलह ॥ ६५ ॥ पर दरब हिरणं बहु विघन करणं उचरणं सरब जीअ कह ॥ लउ लई त्रिसना अतिपति मन माए करम करत सि सूकरह ॥ ६६ ॥ मते समेव चरणं उधरणं भै दुतरह ॥ अनेक पातिक हरणं नानक साध संगम न संसयह ॥ ६७ ॥ ४ ॥

महला ५ गाथा ੧ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

करपूर पुहप सुगंधा परस मानुख्य देहं मलीणं ॥ मजा रुधिर द्रुगंधा नानक अथि गरबेण अग्यानणो ॥ १ ॥ परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह ॥ गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते ॥ २ ॥ जाणो सति होवंतो मरणो द्रिसटेण मिथिआ ॥ कीरति साथि चलंथो भणंति नानक साध संगेण ॥ ३ ॥ माया चित भरमेण इसट मित्रेखु बांधवह ॥ लबध्यं साध संगेण नानक सुख असथानं गोपाल भजणं ॥ ४ ॥ मैलागर संगेण निंमु बिरख सि चंदनह ॥ निकटि बसंतो बांसो नानक अहं बुधि न बोहते ॥ ५ ॥ गाथा गुंफ गोपाल कथं मथं मान मरदनह ॥ हतं पंच सत्रेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥ ६ ॥ बचन साध सुख पंथा लहंथा बड करमणह ॥ रहंता जनम मरणेन रमणं नानक हरि कीरतनह ॥ ७ ॥ पत्र भुरिजेण झड़ीयं नह जड़ीअं पेड संपता ॥ नाम बिहूण बिखमता नानक बहंति जोनि बासरो रैणी ॥ ८ ॥ भावनी साध संगेण लभंतं बड भागणह ॥ हरि नाम गुण रमणं नानक संसार सागर नह बिआपणह ॥ ९ ॥ गाथा गूड़ अपारं समझणं बिरला जनह ॥ संसार काम तजणं नानक गोबिंद रमणं साध संगमह ॥ १० ॥ सुमंत्र साध बचना कोटि दोख बिनासनह ॥ हरि चरण कमल ध्यानं नानक कुल समूह उधारणह ॥ ११ ॥ सुंदर मंदर सैणह जेण मध्य हरि कीरतनह ॥ मुकते रमण गोबिंदह नानक लबध्यं बड भागणह ॥ १२ ॥ हरि लबधो मित्र सुमितो ॥ बिदारण कदे न चितो ॥ जा का असथलु तोलु अमितो ॥ सुोई नानक सखा जीअ संगि कितो ॥ १३ ॥ अपजसं मिटंत सत पुत्रह ॥ सिमरतब्य रिदै

वास्तविक ब्राह्मण की संगत में उद्धार हो जाता है परन्तु ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म कर्म में पूर्ण है। जो संसार को पकड़े हुए अपने स्वार्थ में लीन बने रहते हैं हे नानक, ऐसे व्यक्ति व्यर्थ और निष्फल हैं ।। ६५ ।। पराई धन-सम्पदा को चुराने वाले, अनेकों प्रकार के विघ्न खड़े करने वाले परन्तु अपनी जीविका के लिए लोगों को उपदेश देने वाले, यह ले लूं वह ले लूं करते रहने वाले और अतृप्त तृष्णाओं को बनाए रखने वाले वास्तव में सूअरों का कर्म करने वाले होते हैं ।। ६६ ।। जो मस्त होकर प्रभु के चरणों में लीन बने रहते हैं वे संसार सागर से बच निकलते हैं। हे नानक, उनके अनेकों पाप दूर हो जाते हैं और साधसंगत में बने रहने वाले ऐसे लोगों को किसी प्रकार का संशय अथवा भय नहीं रहता ।। ६७ ।। ४ ।।

महला ५ गाथा (प्राचीन कथा अथवा बोली) १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

कपूर और फूलों की सुगन्ध मनुष्य के शरीर का स्पर्श करके मलीन हो जाते हैं। हे नानक, मनुष्य में मज्जा और रक्त की दुर्गन्ध भरी हुई है फिर भी यह अज्ञानी अपने शरीर पर अभिमान करता रहता है ।। १ ।। हे जीव, तू परमाणुओं की तरह सूक्ष्म देह धारण करके आकाश के लोकों, द्वीपों को पलक झपकने जितने समय में ही यदि घूम कर आ जाए तो भी साधु पुरुषों की संगत के बिना तू मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता ।। २ ।। हे भाई, मरण को सच मानो और यह सब दिखाई देने वाला नाशमान है। प्रभु का गुणानुवाद ही साथ चलने वाला है तथा नानक का कथन है कि साधसंगत का सुप्रभाव साथ बना रहने वाला है ।। ३ ।। माया ने जीव का चित्त इष्ट मित्रों और सम्बन्धियों में ही भटकाया हुआ है परन्तु हे नानक, साधसंगत और सुखों के स्थान प्रभु का सुमिरन करने से ही सुख प्राप्त होता है ।। ४ ।। चन्दन के साथ बसने पर नीम का वृक्ष भी चन्दन जैसा हो जाता है परन्तु हे नानक, उसके पास ही बसता हुआ बाँस अपने ऊँचा होने के अहंकार के कारण सुगन्धित नहीं होता ।। ५ ।। इस गाथा में प्रभु के यश की कथा गूंथी हुई है और इसका चिन्तन करने से अहंकार नष्ट होता है। हे नानक, प्रभु रूपी बाण चलाने से काम, क्रोध आदि पाँचों शत्रुओं का नाश हो जाता है ।। ६ ।। साधु पुरुषों के उपदेश से बड़े भाग्य से सुख का मार्ग प्राप्त होता है। हे नानक, प्रभु की कीर्ति गायन में लीन होने से जन्म-मरण छूट जाता है ।। ७ ।। जिस प्रकार वृक्ष के पत्ते टूट कर झड़ जाते हैं और फिर पेड़ की सम्पत्ति नहीं बने रह पाते अर्थात पुनः डाली के साथ नहीं लग पाते इसी प्रकार हे नानक, प्रभु-नाम से विहीन होकर जीव दुख उठाता है और दिन रात योनियों में भटकता रहता है ।। ८ ।। बड़े भाग्य से साधसंगत में जाने से मन में श्रद्धा उत्पन्न होती है। हे नानक, प्रभु-नाम के गुणानुवाद में लीन रहने से व्यक्ति को संसार सागर दुखी नहीं करता ।। ९ ।। यह गूढ़ और अपार कथा कोई बिरला व्यक्ति ही समझता है और हे नानक, साधसंगत में प्रभु-नाम में लीन होने से सांसारिक कामनाओं का त्याग हो जाता है ।। १० ।। साधु पुरुषों का उपदेश ही श्रेष्ट मन्त्र है जो करोड़ों दोषों का नाश करने वाला होता है। हे नानक, प्रभु के चरण कमलों का ध्यान समस्त कुलों का उद्धार कर देने वाला होता है ।। ११ ।। वही घर सुन्दर है जिसमें प्रभु का गुणानुवाद अर्थात कीर्ति गायन होता है। हे नानक, जो प्रभु का सुमिरन करते हैं वे ही मुक्त बने रहते हैं ।। १२ ।। श्रेष्ठ मित्र प्रभु जब मिल जाता है तो वह प्रभु फिर कभी भी जीव के हृदय को निराश नहीं करता। जिसका स्थान अपरिमित और अतुलनीय है नानक ने अपने हृदय के साथ उसी को अपना मित्र बनाया है ।। १३ ।। जिस प्रकार गुणवान पुत्र के कारण अपयश मिट जाता है उसी प्रकार हृदय में

गुर मंत्रणह ॥ प्रीतम भगवान अचुत ॥ नानक संसार सागर तारणह ॥ १४ ॥ मरणं बिसरणं गोबिंदह ॥ जीवणं हरि नाम ध्यावणह ॥ लभणं साध संगेण ॥ नानक हरि पूरबि लिखणह ॥ १५ ॥ दसन बिहून भुयंगं मंत्रं गारुड़ी निवारं ॥ ब्याधि उपाड़ण संतं ॥ नानक लबध करमणह ॥ १६ ॥ जथ कथ रमणं सरणं सरबत्र जीअणह ॥ तथ लगणं प्रेम नानक ॥ परसादं गुर दरसनह ॥ १७ ॥ चरणारबिंद मन बिध्यं ॥ सिध्यं सरब कुसलणह ॥ गाथा गावंति नानक भब्यं परा पूरबणह ॥ १८ ॥ सुभ बचन रमणं गवणं साध संगेण उधरणह ॥ संसार सागरं नानक पुनरपि जनम न लभ्यते ॥ १९ ॥ बेद पुराण सासत्र बीचारं ॥ एकंकार नाम उर धारं ॥ कुलह समूह सगल उधारं ॥ बडभागी नानक को तारं ॥ २० ॥ सिमरणं गोबिंद नामं उधरणं कुल समूहणह ॥ लबधिअं साध संगेण नानक वडभागी भेटंति दरसनह ॥ २१ ॥ सरब दोख परंतिआगी सरब धरम द्रिड़ंतणः ॥ लबधेणि साध संगेणि नानक मसतकि लिख्यणः ॥ २२ ॥ होयो है होवंतो हरण भरण संपूरणः ॥ साधू सतम जाणो नानक प्रीति कारणं ॥ २३ ॥ सुखेण बैण रतनं रचनं कसुंभ रंगणः ॥ रोग सोग बिओगं नानक सुखु न सुपनह ॥ २४ ॥

फुनहे महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हाथि कलंम अगंम मसतकि लेखावती ॥ उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥ १ ॥ संत सभा महि बैसि कि कीरति मै कहां ॥ अरपी सभु सीगारु एहु जीउ सभु दिवा ॥ आस पिआसी सेज सु कंति विछाईऐ ॥ हरिहां मसतकि होवै भागु त साजनु पाईऐ ॥ २ ॥ सखी काजल हार तंबोल सभै किछु साजिआ ॥ सोलह कीए सीगार कि अंजनु पाजिआ ॥ जे घरि आवै कंतु त सभु किछु पाईऐ ॥ हरिहां कंतै बाझु सीगारु सभु बिरथा जाईऐ ॥ ३ ॥ जिसु घरि वसिआ कंतु सा वडभागणे ॥ तिसु बणिआ हभु सीगारु साई सोहागणे ॥ हउ सुती होइ अचिंत मनि आस पुराईआ ॥ हरिहां जा घरि आइआ कंतु त सभु किछु

प्रभु के नाम का सुमिरन करने से सुख प्राप्त होता है। हे नानक, संसार सागर से पार उतारने वाला वह अटल प्रीतम प्रभु ही है ।। १४ ।। प्रभु को भुलाना मौत है और उसके नाम का सुमिरन करते रहना ही जीवन है परन्तु यह साधसंगत में ही प्राप्त होता है और हे नानक, यह उन्हें ही प्राप्त होता है जिनके भाग्य में प्रभु ने पहले से ही लिखा होता है ।। १५ ।। जैसे गारुड़ी मन्त्र को सर्प का विष दूर करने वाला और सर्प को दन्त विहीन कर देने वाला कहा जाता है उसी प्रकार प्रभु के सन्त-पुरुष सभी रोगों को दूर करने वाले होते हैं; परन्तु हे नानक, ये भाग्य से ही मिलते हैं ।। १६ ।। जहाँ कहीं भी अर्थात सर्वत्र व्याप्त प्रभु सभी जीवों का आसरा है। उसके साथ प्रेम हे नानक, गुरु के दर्शन और उसकी कृपा के कारण ही लगता है ।। १७ ।। जब हमारा मन प्रभु के चरण कमलों में बिंध गया है तो हमे सब प्रकार का सुख सिद्ध अर्थात प्राप्त हो गया है। हे नानक, परम्परा से ही श्रेष्ठ व्यक्ति उस प्रभु के गुणों की गाथा का गान करते आ रहे हैं ।। १८ ।। शुभ वचन, सुमिरन, प्रभु का गुणानुवाद साधसंगत के माध्यम से जीव का उद्धार करता है। हे नानक, इस प्रकार के आचरण से इस संसार सागर में फिर जन्म नहीं लेना पड़ता ।। १६ ।। वेद, पुराण और शास्त्रों का यही विचार है कि केवल एक प्रभु के नाम को ही हृदय में धारण करो। इस प्रकार अपने समस्त कुलों का उद्धार करो परन्तु हे नानक, कोई बड़ा भाग्यशाली ही इस प्रकार पार उतरता है ।। २० ।। प्रभु का नाम सुमिरन से समस्त कुलों का उद्धार होता है परन्तु हे नानक, वह बड़े भाग्य से साधसंगति में प्राप्त होता है तथा इसका बड़े भाग्य वाले ही दर्शन करते हैं ।। २१ ।। सभी दोषों का त्याग कर देने वाले सभी लोग अपने-अपने धर्मों अर्थात कर्त्तव्यों की हृदय में याद बनाए रखते हैं। ऐसे लोग हे नानक, मस्तक पर लिखे भाग्य लेखों के अनुसार साधसंगत के माध्यम से ही मिलते हैं ।। २ ।। जो सबका नाश करने वाला और सबका पालनहार है वही पहले भी था और आगे भी बना रहेगा। हे नानक, इस बात को निश्चित तौर से जान लो की प्रभु की प्रीति का कारण साधु पुरुष ही होते हैं ।। २३ ।। सांसारिक सुखों, मीठे मीठे बोलों और माया के क्षण भंगुर रंगों में लीन व्यक्ति हे नानक, रोगी, शोकाकुल और वियोगी बने रहते हैं तथा उन्हें सपने में भी सुख प्राप्त नहीं होता ।। २४ ।।

फुनहे (बार-बार, फुनहे एक छन्द का नाम है) महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे अगम्य प्रभु, तेरे हाथ में कलम है जिसके साथ सबके माथे पर लेख लिखे जाते हैं। हे अनुपम रूप वाले प्रभु, तू सबके साथ और सबमें लीन बना हुआ है। मुख से तुम्हारी प्रशंसा का कथन नहीं किया जा सकता और हे नानक, मैं तेरे दर्शनों को देखकर तुझ पर मोहित बनी हुई हूँ और तुझ पर बलिहारी जाती हूँ ।। १ ।। शान्त पुरुषों की सभा में बैठकर मैं तेरी कीर्ति का कथन करती हूँ तथा मेरा सारा सिंगार तुझे अर्पण है और मेरे प्राण भी मैं तुझे सौंपती हूँ। अपने प्रियतम की आज्ञा में प्यासी बनकर मैंने अपने हृदय की सेज बिछाई हुई है परन्तु हे प्रभु (हरि हाँ - यह बार-बार आने वाली इन सारे पदों की टेक है), यदि माथे पर भाग्य लेख हो तभी उस प्रियतम को पाया जाता है ।। २ ।। हे सखी, मैंने काजल, हार, पान आदि सब कुछ से अपने को सजाया है; अंजन लगाकर मैंने सोलह सिंगार भी किए हैं। अब यदि प्रियतम हृदय रूपी घर में आ बैठे तो सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है परन्तु हे प्रभु (हरिहाँ), प्रियतम के बिना यह सारा सिंगार व्यर्थ ही जाने वाला है ।। ३ ।। जिसके हृदय रूपी घर में पति प्रभु आ बसा है वही भाग्यशालिनी है, उसी का सिंगार पूर्ण है और वही सुहागिन है। मेरी आशा पूरी हो गई है और अब मैं निश्चिंत होकर जीवन रूपी रात्रि में सो रही हूँ। हरिहाँ, जिस हृदय में प्रियतम आ बसा है उसे सब कुछ

पाईआ ॥ ४ ॥ आसा इती आस कि आस पुराईऐ ॥ सतिगुर भए दइआल त पूरा पाईऐ ॥ मै तनि अवगण बहुतु कि अवगण छाइआ ॥ हरिहां सतिगुर भए दइआल त मनु ठहराइआ ॥ ५ ॥ कहु नानक बेअंतु बेअंतु धिआइआ ॥ दुतरु इहु संसारु सतिगुरू तराइआ ॥ मिटिआ आवा गउणु जां पूरा पाइआ ॥ हरिहां अंम्रितु हरि का नामु सतिगुर ते पाइआ ॥ ६ ॥ मेरै हाथि पदमु आगनि सुख बासना ॥ सखी मोरै कंठि रतंनु पेखि दुखु नासना ॥ बासउ संगि गुपाल सगल सुख रासि हरि ॥ हरिहां रिधि सिधि नव निधि बसहि जिसु सदा करि ॥ ७ ॥ पर त्रिअ रावणि जाहि सेई ता लाजीअहि ॥ नितप्रति हिरहि पर दरबु छिद्र कत ढाकीअहि ॥ हरि गुण रमत पवित्र सगल कुल तारई ॥ हरिहां सुनते भए पुनीत पारब्रहमु बीचारई ॥ ८ ॥ ऊपरि बनै अकासु तलै धर सोहती ॥ दह दिस चमकै बीजुलि मुख कउ जोहती ॥ खोजत फिरउ बिदेसि पीउ कत पाईऐ ॥ हरिहां जे मसतकि होवै भागु त दरसि समाईऐ ॥ ९ ॥ डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ ॥ वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥ हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥ १० ॥ चात्रिक चित सुचित सु साजनु चाहीऐ ॥ जिसु संगि लागे प्राण तिसै कउ आहीऐ ॥ बनु बनु फिरत उदास बूंद जल कारणे ॥ हरिहां तिउ हरि जनु मांगै नामु नानक बलिहारणे ॥ ११ ॥ मित का चितु अनूपु मरंमु न जानीऐ ॥ गाहक गुनी अपार सु ततु पछानीऐ ॥ चितहि चितु समाइ त होवै रंगु घना ॥ हरिहां चंचल चोरहि मारि त पावहि सचु धना ॥ १२ ॥ सुपनै ऊभी भई गहिओ की न अंचला ॥ सुंदर पुरख बिराजित पेखि मनु बंचला ॥ खोजउ ता के चरण कहहु कत पाईऐ ॥ हरिहां सोई जतंनु बताइ सखी प्रिउ पाईऐ ॥ १३ ॥ नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ ॥ करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ ॥ रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ ॥ हरिहां जब बिसरै गोबिद राइ दिनो दिनु घटीऐ ॥ १४ ॥ पंकज फाथे पंक महा मद गुंफिआ ॥ अंग संग उरझाइ

प्राप्त हो गया है ।। ४ ।। हे प्रियतम, मुझे मिलने की आशा इतनी तीव्र है कि मेरी आशा तो पूरी होनी ही चाहिए। सच्चा गुरु यदि दयालु हो जाए तो उस पूर्ण प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है। मेरे शरीर में बहुत से अवगुण हैं और अवगुण ही अवगुण मुझ पर छाए हुए हैं। हरिहाँ, यदि सच्चा गुरु दयालु हो जाए तो भटकता हुआ मन ठहर जाता है ।। ५ ।। नानक का कथन है कि उस अनन्त प्रभु का सुमिरन जब किया जाता है तो सच्चा गुरु इस विकराल संसार सागर से पार उतार देता है। पूर्ण प्रभु को मिलने से आवागमन मिट जाता है और हे प्रभु, अमृत नाम सच्चे गुरु से ही प्राप्त किया जाता है ।। ६ ।। मेरे हाथ में सुखदायक माना जाने वाला पद्म का चिन्ह है। हे सखी, दुखों का नाश करने वाला नाम रूपी रत्न मेरे गले में है जिसे देखकर दुख भाग खड़े होते हैं। सभी सुखों के भण्डार प्रभु के साथ मैंने निवास बना लिया है और हे हरिहाँ, ऋद्धियां, सिद्धियां और निधियां सदैव उसके हाथ में ही बनी रहती हैं ।। ७ ।। पराई स्त्री से रमण करने पर लज्जा सहन करनी पड़ती है। यदि हम सदैव दूसरे के धनमाल की ही चोरी करते रहें तो हमारे ये पाप कैसे ढके रह सकते हैं। प्रभु के गुणों में लीन बने रहने से व्यक्ति पवित्र हो जाता है और समस्त कुलों को पार उतार देता है। हे प्रभु, तुम्हारे गुणों और विचारों को तो सुनने से ही व्यक्ति पवित्र हो जाते हैं ।। ८ ।। उपर आकाश तना हुआ है और नीचे धरती शोभायमान बनी हुई है। दसों दिशाओं में उसकी शक्ति रूपी बिजली की चमक उसके मुख को दिखाती रहती है। यदि मैं प्रियतम को विदेशों में खोजती रहूंगी तो भला उसे कहां प्राप्त कर सकूंगी। हरिहाँ, यदि माथे पर भाग्य लेख होगा तो उसके दर्शन में मैं लीन बनी रहूंगी। मैंने सभी स्थानों को देखा है परन्तु कोई भी स्थान तेरे जैसा नहीं है। तुझे विधाता ने स्वयं बनाया और बसाया है इसीलिए तू शोभायमान है। इस अनुपम रामदासपुर (अमृतसर) की बस्तियाँ सघन हैं अर्थात यहाँ अनेकों लोग बसते हैं और नानक का कथन है कि हे प्रभु रामदास सरोवर में स्नान करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं ।। १० ।। चातक की तरह चेतना से पूर्ण होकर उस प्रियतम की चाहत बनाए रखनी चाहिए। जिसके साथ प्राणों की प्रीति लगी हो उसी को ही चाहते रहना चाहिए। जिस प्रकार चातक उदास होकर जल की बूंद के लिए एक वन से दूसरे वन में भटकता रहता है उसी तरह से हे प्रभु, प्रभु का सेवक नाम का दान माँगता रहता है और नानक तो उस पर बलिहारी जाता है ।। ११ ।। उस मित्र का हृदय अनुपम है और उसके रहस्य को नहीं जाना जा सकता। गुणों के ग्राहक ही महान हैं जो गुणों के सारतत्व को पहचान लेते हैं। यदि यह मन उस प्रभु में लीन हो जाए तो अत्यन्त सुख प्राप्त होता है। हरिहाँ, यदि चंचल विकार रूपी चोरों को मार डाला जाए तो तभी सत्य रूपी धन प्राप्त होता है ।। १२ ।। मैं सपने में प्रियतम को देखकर उठकर खड़ी हो गई परन्तु मैंने उसके आँचल को क्यों नहीं पकड़ा। दरअसल उसके सुन्दर स्वरूप के प्रकाश को देखकर मैं ठगी की ठगी रह गई और उसका आँचल पकड़ना भूल गई। अब उसके चरणें को खोजती हूँ, कोई मुझे बताए कि उन्हें कहां पाया जा सकता है। हरिहाँ, मेरी सखी बनकर मुझे वही तरीका बता जिससे प्रियतम को पाया जा सके ।। १३ ।। जो आँखें साधु-पुरुषों को नहीं देखती हैं वे बेहाल बनी रहती हैं। जो कान उसके शब्द को नहीं सुनते ऐसे कानों को तो बन्द ही कर देना चाहिए। जो जीभ उसके नाम का सुमिरन नहीं करती उसे तो तिल, तिल भर करके काट देना चाहिए। हरिहाँ, जब प्रभु विस्मृत हो जाता है तो प्रतिदिन हम क्षीण ही होते जाते हैं ।। १४ ।। भँवरे का पंख कमल की सुगन्ध में अटक जाता है और वह मदमस्त होकर उसी में ही सारे का सारा फँस जाता है। वह उसकी सुन्दरता में ही अपने आपको

बिसरते सुंफिआ ॥ है कोऊ ऐसा मीतु जि तोरै बिखस गांठि ॥ नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ सांठि ॥ १५ ॥ धावउ दसा अनेक प्रेम प्रभ कारणे ॥ पंच सतावहि दूत कवन बिधि मारणे ॥ तीखण बाण चलाइ नामु प्रभ ध्याईऐ ॥ हरिहां महां बिखादी घात पूरन गुरु पाईऐ ॥ १६ ॥ सतिगुर कीनी दाति मूलि न निखुटई ॥ खावहु भुंचहु सभि गुरमुखि छुटई ॥ अंम्रितु नामु निधानु दिता तुसि हरि ॥ नानक सदा अराधि कदे न जांहि मरि ॥ १७ ॥ जिथै जाए भगतु सु थानु सुहावणा ॥ सगले होए सुख हरि नामु धिआवणा ॥ जीअ करनि जैकारु निंदक मुए पचि ॥ साजन मनि आनंदु नानक नामु जपि ॥ १८ ॥ पावन पतित पुनीत कतह नही सेवीऐ ॥ झूठै रंगि खुआरु कहां लगु खेवीऐ ॥ हरिचंदउरी पेखि काहे सुखु मानिआ ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिंन जि दरगहि जानिआ ॥ १९ ॥ कीने करम अनेक गवार बिकार घन ॥ महा द्रुगंधत वासु सठ का छारु तन ॥ फिरतउ गरब गुबारि मरणु नह जानई ॥ हरिहां हरिचंदउरी पेखि काहे सचु मानई ॥ २० ॥ जिस की पूजै अउध तिसै कउणु राखई ॥ बैदक अनिक उपाव कहां लउ भाखई ॥ एको चेति गवार काजि तेरै आवई ॥ हरिहां बिनु नावै तनु छारु ब्रिथा सभु जावई ॥ २१ ॥ अउखधु नामु अपारु अमोलकु पीजई ॥ मिलि मिलि खावहि संत सगल कउ दीजई ॥ जिसै परापति होइ तिसै ही पावणे ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिंन्ह जि हरि रंगु रावणे ॥ २२ ॥ वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥ अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥ जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥ हरिहां दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥ २३ ॥

चउबोले महला ५ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

संमन जउ इस प्रेम की दम क्यिहु होती साट ॥ रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीने काटि ॥ १ ॥ प्रीति प्रेम तनु खचि रहिआ बीचु न राई होत ॥ चरन कमल मनु बेधिओ बूझनु सुरति संजोग ॥ २ ॥

भूलकर सम्पूर्ण रूप से उसमें उलझ जाता है। क्या कोई ऐसा हमारा मित्र है जो वियोग की भीषण गाँठ को तोड़ दे। हे नानक, एक प्रभु ही ऐसा है जो अपने से टूटे हुओं को भी अपने साथ जोड़ लेता है ।। १५ ।। प्रभु के प्रेम में मैं अनेकों प्रकार से दौड़ता-भागता रहता हूँ। मुझे विकारों के पाँचो दूत सताते रहते हैं; मैं किस विधि से इनका नाश करूं। हरिहाँ, इस प्रकार इन महा दुखदायकों के मारने की विधि पूर्ण गुरु से प्राप्त हो जाती है ।। १६ ।। सच्चे गुरु ने ऐसा दान दिया है जिसमें कभी भी कमी नहीं आती। इसे सभी मिलकर आनन्दपूर्वक खाओ और गुरमुख बनकर मुक्ति प्राप्त कर लो। प्रभु ने प्रसन्न होकर नाम रूपी अमृत का भण्डार दिया है। हे नानक, तू सदैव उस प्रभु की आराधना उसके नाम के माध्यम से करता रह, इससे तू कभी भी नहीं मरेगा ।। १७ ।। भक्त जहाँ भी जाता है वह स्थान शोभायुक्त हो जाता है। प्रभु-नाम के सुमिरन से ही भक्तजनों को सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। सभी लोग उनकी जय-जयकार करते हैं और उनके निन्दक जलकर मर खप जाते हैं। हे नानक, प्रभु-नाम का जाप करने से वह साजन प्रभु मन में आनन्द स्वरूप होकर स्थित बना रहता है ।। १८ ।। पतितों को पवित्र और पावन करने वाले पावन हरि का हमने कभी भी सुमिरन नहीं किया। झूठे रंगों में हम ख्वार होते रहते हैं और इससे भला कब तक गुजारा चलेगा। गन्धर्व नगरी के समान बनी हुई इस नाशवान सृष्टि को देखकर तू क्यों सुखी बने रहने का उपक्रम करता रहता है। हरिहाँ (हे प्रभु), मैं तो उन पर बलिहारी जाता हूँ जो प्रभु के दरबार में जाने-माने जाते हैं। अनेकों विकारों में फँसे हुए मूर्ख व्यक्ति कई प्रकार के कर्म करते रहते हैं। ऐसे मूर्ख व्यक्तियों का महा दुर्गन्ध में वास बना रहता है और उनका शरीर मिट्टी हो जाता है। व्यक्ति अभिमान के घोर अंधकार में ही भटकता रहता है तथा अपने मरने के तथ्य को जानता ही नहीं। हरिहाँ, गन्धर्व नगरी रूपी इस संसार को देखकर तू इसे सदैव बना रहने वाला क्यों मानता है ।। २० ।। जिसकी आयु पूरी हो गई उसे भला कौन बचा सकता है। वैद्य बेशक अनेकों उपाय कर ले परन्तु उसका कहा, किया कराया व्यर्थ होता है। हे मूर्ख, तू उस एक प्रभु का सुमिरन कर जो तेरे काम आने वाला है। हरिहाँ, प्रभु के बिना यह शरीर मिट्टी के समान है और सब कुछ व्यर्थ ही जाने वाला है ।। २१ ।। प्रभु-नाम की औषधि अपार और अमूल्य है जिसका सेवन किया जाना चाहिए। सभी सन्तजन परस्पर मिलकर उस नाम औषधि का पान करते हैं और सभी लोगों को देते भी हैं। जो इस औषधि को पाने के योग्य होता है यह उसे ही प्राप्त होती है। हरिहाँ, मैं तो उन लोगों पर बलिहारी जाता हूँ जो प्रभु के प्रेम में रमण करते रहते हैं ।। २२ ।। सत्संगत वैद्य रूप में इकट्ठी होती है और सत्संगत ही औषधि रूप में उपयुक्त औषधि है क्योंकि सत्संगत में प्रभु स्वयं विराजमान रहता है। सत्संगत में पहुंचे लोग जो भी कर्म करते हैं वह सुकर्म बनकर चारों ओर प्रकट होता है। हरिहाँ, दुख-रोग और तन के सभी पाप इस प्रकार दूर हो जाते हैं ।। २३ ।।

चौबोले महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे सम्मन (एक सिक्ख का नाम), यदि प्रेम को धन के साथ खरीदा जा सका होता तो रावण कोई कंगाल नहीं था जो प्रभु की प्राप्ति के लिए अपने सिर काट-काट कर अर्पण किया करता था अर्थात धन-सम्पदा से प्रेम प्राप्त नहीं होता इसके लिए अभिमान रहित होना आवश्यक है ।। १ ।। जब यह तन प्रेम और वास्तविक प्रीति में लीन बना रहता है तो प्रेम करने वाले तथा प्रेम के पात्र के बीच राई के दाने जितना भी अन्तर नहीं रह जाता। उस प्रभु के चरण-कमलों में मन के बिंध जाने के बाद कुछ ऐसी ही दशा होती है परन्तु इसकी समझ तभी पड़ती है यदि सुरति प्रेम में लीन बनी हो ।। २ ।।

सागर मेर उदिआन बन नव खंड बसुधा भरम ॥ मूसन प्रेम पिरंम कै गनउ एक करि करम ॥ ३ ॥ मूसन मसकर प्रेम की रही जु अंबरु छाइ ॥ बीधे बांधे कमल महि भवर रहे लपटाइ ॥ ४ ॥ जप तप संजम हरख सुख मान महत अरु गरब ॥ मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देंउ सरब ॥ ५ ॥ मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार ॥ प्रेम पिरंम न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार ॥ ६ ॥ घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल ॥ मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दइआल ॥ ७ ॥ जा को प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि ॥ नानक बिरही ब्रहम के आन न कतहू जाहि ॥ ८ ॥ लख घाटीं ऊंचौ घनो चंचल चीत बिहाल ॥ नीच कीच निम्रित घनी करनी कमल जमाल ॥ ९ ॥ कमल नैन अंजन सिआम चंद्र बदन चित चार ॥ मूसन मगन मरंम सिउ खंड खंड करि हार ॥ १० ॥ मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग ॥ प्रगटि भइओ सभ लोअ महि नानक अधम पतंग ॥ ११ ॥

सलोक भगत कबीर जीउ के ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥ आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥ १ ॥ कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥ बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥ २ ॥ कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ ॥ सरब सूख को नाइको राम नाम रसु पीउ ॥ ३ ॥ कबीर कंचन के कुंडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ ॥ दीसहि दाधे कान जिउ जिन्ह मनि नाही नाउ ॥ ४ ॥ कबीर ऐसा एकु आधु जो जीवत मिरतकु होइ ॥ निरभै होइ कै गुन रवै जत पेखउ तत सोइ ॥ ५ ॥ कबीर जा दिन हउ मूआ पाछै भइआ अनंदु ॥ मोहि मिलिओ प्रभु आपना संगी भजहि गोबिंदु ॥ ६ ॥ कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥ जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥ ७ ॥ कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेस ॥ हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु ॥ ८ ॥ कबीर सोई मारीऐ जिह मूऐ सुखु होइ ॥ भलो भलो सभु को कहै बुरो न मानै कोइ ॥ ९ ॥ कबीर राती होवहि कारीआ कारे ऊभे जंत ॥

सागर, पर्वत, निर्जन स्थान, वनों और धरती के नव खण्डों में उस प्रभु को खोजते फिरना व्यर्थ है। हे मूसन (गुरु का एक सिक्ख जो सम्मन का पुत्र था), प्रियतम प्रभु से प्रेम का कर्म इन सब कर्मों से बड़ा एक ही कर्म है ।। ३ ।। हे मूसन, प्रभु की प्रेम रूपी चाँदनी जब हृदय रूपी आकाश में छाई रहती है तो कमल में बिंधें हुए भँवरे की तरह जीव रूपी भँवरा उस प्रेम की चाँदनी में लीन बना रहता है ।। ४ ।। जप, तप, संयम, हर्ष, सुख, मान सम्मान और सभी प्रकार के अभिमानों को हे मूसन, प्रभु के क्षणभर के प्रेम पर मैं पूरी तरह से कुर्बान कर देता हूँ ।। ५ ।। हे मूसन, यह संसार मरता हुआ और ठगा जाता हुआ भी उस प्रभु के रहस्य को इसलिए नहीं जान पाता क्योंकि यह प्रियतम प्रभु के प्रेम में बिंधा हुआ नहीं है तथा झूठे कार्य-व्यवहार में ही उलझा हुआ है ।। ६ ।। जब जीव का घर और द्रव्य (धन-सम्पदा) जल जाए तो इनके बिछुड़ जाने से जीव उनके दुख में बेहाल होता है, परन्तु वास्तव में लूटा जाने वाला तो वह है जो दयालु प्रभु के प्रेम से विहीन बना रहता है ।। ७ ।। जिन्हें प्रेम का स्वाद लग गया और जो मन में प्रभु-चरणों का सुमिरनं करते रहते हैं हे नानक, प्रभु के इस प्रकार के वियोगी और विरहाकुल लोग उस प्रभु के बिना अन्य किसी के पास नहीं जाते ।। ८ ।। जो चंचल चित्त है वह लाखों ऊँची-नीची घाटियों पर चढ़ता ही रहता है अर्थात अहंकारी बनकर दुखी होता रहता है। कीचड़ को बहुत नीच समझा जाता है परन्तु इस अदभुत बात को देखो कि उस विनम्र कीचड़ में से ही कमल का फूल खिलता है ।। ९ ।। उस प्रभु के कमल नयन हैं जो काले अंजन को धारण करने वाले हैं तथा उसका सुन्दर मुख सौन्दर्य की ही प्रतिमूर्ति है। हे मूसन, उसे मिलने के लिए तो मैं दूरी बनाने वाले गले में पहने हुए हार के भी टुकड़े-टुकड़े करने को तैयार हूँ ताकि मुझमें और मेरे प्रियतम प्रभु में जरा सी भी दूरी ना रहे ।। १० ।। उस प्रभु का सुमिरन करने से मुझे तो शरीर के अंगों की भी होश नहीं रही। हे नानक, पतंगा भी दीपक की ज्योति को नहीं छोड़ता तथा अपने आपको जला डालता है और उस प्रेमी का नाम इस संसार में इसी कारण प्रकट और प्रसिद्ध है ।। ११ ।।

श्लोक भक्त कबीर जी के   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे कबीर, जीभ से प्रभु-नाम का जाप करते रहना ही मेरी माला है और यही माला भक्तों को सुख और शान्ति प्रदान करने वाली है ।। १ ।। हे कबीर, मेरी तथाकथित (नीच) जाति पर सभी हँसते हैं परन्तु मैं तो इस जाति पर ही बलिहारी जाता हूँ जिसमें बना रहकर मैंने उस सृजनहार प्रभु को सदैव याद रखा है ।। २ ।। हे कबीर, तू इधर-उधर क्यों भटक रहा है और क्यों अपने चित्त को डाँवा डोल किए हुए है। राम नाम तो सभी सुखों का मालिक है, तू इस रस का ही पान करता रह ।। ३ ।। हे कबीर, सोने के कुण्डल बनाकर उन पर हीरे-लाल जड़ाकर पहने हुए प्रभु-नाम से विहीन लोग इस प्रकार दिखाई देते हैं जैसे जला हुआ सरकण्डा ऊपर से तो चमकीला दिखाई देता है परन्तु अन्दर से राख बना हुआ होता है ।। ४ ।। हे कबीर, कोई एक आधा ही होता है जो जीवित बना रहकर भी विकारों के प्रति मृत हो चुका होता है, निर्भय होकर प्रभु के गुणों का सुमिरन करता रहता है और जिधर भी देखता है उसे वह प्रभु ही दिखाई देता है ।। ५ ।। हे कबीर, जिस दिन से मेरा अहंकार मर गया है उस दिन से ही आनन्द ही आनन्द बना हुआ है। मुझे मेरा प्रभु मिल गया है और अब सत्संगियों के साथ मैं उस प्रभु का सुमिरन करता हूँ ।।६ ।।हे कबीर, जिसने यह समझ और मान लिया कि हम स्वयं ही सबसे बुरे हैं और हमें छोड़कर बाकी सब भले ही भले हैं वही वास्तव में हमारा मित्र है ।। ७ ।। हे कबीर, हमें भी अनेकों वेश धारण करके माया प्रभावित करने के लिए आई परन्तु हमारी रक्षा तो हमारे गुरु (प्रभु) ने कर ली और वह हमें प्रणाम करके चली गई ।।८।।हे कबीर, उसी को मारो जिसके मरने से सुख मिलता है। उस अहंकार को मारने से सभी तुम्हें भला ही कहेंगे और कोई भी तुझे बुरा नहीं मानेगा ।।९ ।।हे कबीर, काली रातों में काले अर्थात चोरी आदि करने वाले बुरे लोग इधर-उधर खड़े रहते हैं।

ले फाहे उठि धावते सि जानि मारे भगवंत ॥ १० ॥ कबीर चंदन का बिरवा भला बेढ़िओ ढाक पलास ॥ ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥ ११ ॥ कबीर बांसु बडाई बूडिआ इउ मत डूबहु कोइ ॥ चंदन कै निकटे बसै बांसु सुगंधु न होइ ॥ १२ ॥ कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि ॥ पाइ कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि ॥ १३ ॥ कबीर जह जह हउ फिरिओ कउतक ठाओ ठाइ ॥ इक राम सनेही बाहरा ऊजरु मेरै भांइ ॥ १४ ॥ कबीर संतन की झुंगीआ भली भठि कुसती गाउ ॥ आगि लगउ तिउ धउलहर जिह नाही हरि को नाउ ॥ १५ ॥ कबीर संत मूए किआ रोईऐ जो अपुने ग्रिहि जाइ ॥ रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट बिकाइ ॥ १६ ॥ कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि ॥ कोने बैठे खाईऐ परगट होइ निदानि ॥ १७ ॥ कबीर माइआ डोलनी पवनु झकोलनहारु ॥ संतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु ॥ १८ ॥ कबीर माइआ डोलनी पवनु वहै हिव धार ॥ जिनि बिलोइआ तिनि खाइआ अवर बिलोवनहार ॥ १९ ॥ कबीर माइआ चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि ॥ एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ॥ २० ॥ कबीर सूखु न एंह जुगि करहि जु बहुते मीत ॥ जो चितु राखहि एक सिउ ते सुखु पावहि नीत ॥ २१ ॥ कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु ॥ मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥ २२ ॥ राम पदारथु पाइ कै कबीरा गांठि न खोल्ह ॥ नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु ॥ २३ ॥ कबीर ता सिउ प्रीति करि जा को ठाकुरु रामु ॥ पंडित राजे भूपती आवहि कउने काम ॥ २४ ॥ कबीर प्रीति इक सिउ कीए आन दुबिधा जाइ ॥ भावै लांबे केस करु भावै घररि मुडाइ ॥ २५ ॥ कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि ॥ हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥ २६ ॥ कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ॥ नांगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि ॥ २७ ॥ कबीर इहु तनु जाइगा कवनै मारगि लाइ ॥ कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ ॥ २८ ॥ कबीर मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइ ॥

वे फन्दे और चोरी करने का अन्य सामान लेकर इधर-उधर दौड़ते रहते हैं परन्तु तू यही समझ कि ये प्रभु द्वारा मारे हुए लोग ही हैं ।। १० ।। हे कबीर, चन्दन का वह छोटा सा पौधा भला माना जाता है जिसे बेशक ढाक और प्लाश के पौधों ने घेर रखा हो। चन्दन के पास बसने वाले ये निरर्थक पौधे भी चन्दन के समान ही सुगन्ध देने वाले बन जाते हैं ।। ११ ।। हे कबीर, बाँस जिस प्रकार अपने अहंकार में डूबा रहता है इस प्रकार कोई भी अहंकार में डूबा नहीं रहना चाहिए। यह खोखला बाँस चन्दन के पास बसने पर भी कभी सुगन्धित नहीं हो पाता ।। १२ ।। हे कबीर, व्यक्ति ने दुनियादारी के लिए अपने धर्म (कर्तव्य) को गँवा दिया है परन्तु यह दुनिया उसके साथ चलने वाली नहीं है। इस प्रकार अनजाने में ही व्यक्ति ने अपने पाँव पर स्वयं कुल्हाड़ा अपने हाथ से ही मारा हुआ है ।। १३ ।। हे कबीर, मैं तो जहाँ-जहां घूमा हूँ मैंने हर स्थान पर प्रभु के खेल ही देखे हैं। एक प्रभु के प्रेमी के बिना तो मेरे लिए सब उजाड़ ही उजाड़ है ।। १४ ।। हे कबीर, मेरे लिए सन्त पुरुषों की झोंपड़ी ही भली है और झूठे व्यक्तियों का तो गाँव ही मेरे लिए भट्ठी के समान है। उन महलों को आग लग जाए जिनमें प्रभु-नाम का निवास नहीं है ।। १५ ।। हे कबीर, किसी सन्त के मरने पर भला क्यों रोया जाए क्योंकि वह तो वास्तव में अपने मूल घर में चला गया है। प्रभु से टूटे हुए उन बेचारे लोगों के लिए रोना और दुख प्रकट करना उचित है जो जीवन भर एक दुकान से दूसरी दुकान पर बिकते रहें हैं अर्थात धोखाधड़ियां करते रहे हैं ।। १६ ।। हे कबीर, प्रभु से टूटा व्यक्ति ऐसा है जैसी लहसुन की खान होती है क्योंकि लहसुन को यदि कोने में बैठकर भी खाया जाए तो उसकी दुर्गन्ध का तुरन्त ही सबको पता लग जाता है ।। १७ ।। हे कबीर, माया के पदार्थ एक मटकी के समान हैं जिसमें जीवन के श्वास मथनी की तरह हैं परन्तु सन्त इसे ठीक तरह मथकर इसका मक्खन खाता है और संसारी जीव केवल छाछ ही पीते हैं ।। १८ ।। हे कबीर, इस माया रूपी मटकी में बर्फ जैसी शान्ति वाली जीवन की धारा भी चलती रहती है परन्तु जिन्होंने इसके रहस्य को समझ कर इसे बिलोया है उन्होंने ही जीवन के वास्तविक सारतत्व को ग्रहण किया है अन्यथा बाकी तो सब इसे व्यर्थ ही बिलोने में लगे रहते हैं और कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं ।। १६ ।। हे कबीर, चोरनी माया ठग-ठग कर लाकर अपनी दुकान सजाती है। एक कबीर ही इससे ठगा नहीं गया जिसने इसे काटकर बारह टुकड़े कर दिया है ।। २० ।। हे कबीर, बहुत ज्यादा मित्र बनाने से भी इस संसार में सुख नहीं मिलता। जो केवल एक प्रभु मित्र में ही अपना मन लगाए रखते हैं वे ही सदैव सुख प्राप्त करते हैं ।। २१ ।। हे कबीर, जिस मरने से संसार डरता है उस मरने से तो मेरे मन को आनन्द प्राप्त होता है क्योंकि भली प्रकार से जीवन व्यतीत करने के बाद मरने से ही पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होती है ।। २२ ।। प्रभु-नाम रूपी पदार्थ को प्राप्त करके हे कबीर, तू अपनी गठरी को सबके सामने मत खोलता रह क्योंकि यहाँ ना तो कोई समझने वाला नगर का निवासी (नागरिक) है, ना प्रभु-नाम की परख करने वाला कोई है, ना ही कोई ग्राहक है और ना ही प्रभु-नाम के महत्व को समझने वाला है ।। २३ ।। हे कबीर, तू उनसे प्रेम कर जिन्होंने प्रभु को अपना मालिक माना है। ये पंडित, राजा, जमींदार आदि तेरे किस काम आने वाले हैं ।। २४ ।। हे कबीर, केवल एक से ही प्रेम करने पर बाकी दुविधाएँ समाप्त हो जाती हैं फिर चाहे तू लम्बी जटाओं वाले केश रख ले और चाहे संन्यासी बन जा ।। २५ ।। हे कबीर, यह संसार काजल की कोठरी है जिसमें अज्ञानी अन्धे पड़े हुए हैं। मैं उनपर बलिहारी जाता हूँ जो इसमें पड़े रहने के बाद इससे बाहर भी निकल आते हैं ।। २६ ।। हे कबीर, यदि बच सकते हो तो बच जाओ परन्तु इस तन ने तो जाना ही जाना है। जिनके लाखों-करोड़ों की सम्पदा थी वे भी यहाँ से नंगे पाँव ही गए हैं ।। २७ ।। हे कबीर, यह शरीर तो जाएगा ही जाएगा चाहे तू इसे किसी भी मार्ग पर डाल दे। अब अच्छा तो यह है कि या तो तू साधसंगत में चला जा और या फिर प्रभु के गुण गाता रह अर्थात ये दोनों मार्ग वास्तव में एक ही मार्ग हैं जिस पर चलने से तू सुखी बना रहेगा ।। २८ ।। हे कबीर, यह संसार मरता हुआ सदैव समाप्त होता ही रहता है परन्तु यहाँ वास्तविक रूप से मरना किसी को भी नहीं आता।

ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥ २९ ॥ कबीर मानस जनमु दुलंभु है होइ न बारै बार ॥ जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥ ३० ॥ कबीरा तुही कबीरु तू तेरो नाउ कबीरु ॥ राम रतनु तब पाईऐ जउ पहिले तजहि सरीरु ॥ ३१ ॥ कबीर झंखु न झंखीऐ तुमरो कहिओ न होइ ॥ करम करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइ ॥ ३२ ॥ कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ राम कसउटी सो सहै जो मरि जीवा होइ ॥ ३३ ॥ कबीर ऊजल पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि ॥ एकस हरि के नाम बिनु बाधे जम पुरि जांहि ॥ ३४ ॥ कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक हजार ॥ हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार ॥ ३५ ॥ कबीर हाड जरे जिउ लाकरी केस जरे जिउ घासु ॥ इहु जगु जरता देखि कै भइओ कबीरु उदासु ॥ ३६ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड ॥ हैवर ऊपरि छत्र तर ते फुनि धरनी गाड ॥ ३७ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ ऊचा देखि अवासु ॥ आजु काल्हि भुइ लेटणा ऊपरि जामै घासु ॥ ३८ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥ अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ ॥ ३९ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग ॥ आजु काल्हि तजि जाहुगे जिउ कांचुरी भुयंग ॥ ४० ॥ कबीर लूटना है त लूटि लै राम नाम है लूटि ॥ फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिंगे छूटि ॥ ४१ ॥ कबीर ऐसा कोई न जनमिओ अपनै घरि लावै आगि ॥ पांचउ लरिका जारि कै रहै राम लिव लागि ॥ ४२ ॥ को है लरिका बेचई लरिकी बेचै कोइ ॥ साझा करै कबीर सिउ हरि संगि बनजु करेइ ॥ ४३ ॥ कबीर इह चेतावनी मत सहसा रहि जाइ ॥ पाछै भोग जु भोगवे तिन को गुड़ु लै खाहि ॥ ४४ ॥ कबीर मै जानिओ पड़िबो भलो पड़िबे सिउ भल जोगु ॥ भगति न छाडउ राम की भावै निंदउ लोगु ॥ ४५ ॥ कबीर लोगु कि निंदै बपुड़ा जिह मनि नाही गिआनु ॥ राम कबीरा रवि रहे अवर तजे सभ काम ॥ ४६ ॥ कबीर परदेसी कै घाघरै चहु दिसि लागी आगि ॥ खिंथा जलि कोइला भई तागे आंच न लाग ॥ ४७ ॥ कबीर खिंथा जलि कोइला भई खापरु फूट मफूट ॥ जोगी

मरना तो इस प्रकार चाहिए कि फिर बार-बार ना मरना पड़े ।। २६ ।। हे कबीर, मनुष्य का जन्म दुर्लभ है यह बार-बार नहीं होता। यह वैसा ही है जैसे फल पककर वृक्ष से नीचे जब धरती पर गिर पड़ता है तो वह फिर डाली में नहीं लग पाता ।। ३० ।। हे कबीर, तू प्रभु ही है और तेरा ही नाम कबीर है। यहाँ प्रभु रूपी रत्न तभी प्राप्त होता है जब पहले शरीर के साथ लगी अहं भावना का त्याग किया जाए ।। ३१ ।। हे कबीर, यहाँ झख मारने से कोई लाभ नहीं क्योंकि तुम्हारा किया हुआ यहाँ कुछ नहीं होता। सभी प्रकार का कर्म करने वाला वह प्रभु जब कृपा करता है तो उसके किए जा रहे कर्मों को कोई मिटा नहीं सकता ।। ३२ ।। हे कबीर, राम नाम की कसौटी पर कोई भी झूठा व्यक्ति ठहर नहीं पाता। प्रभु की कसौटी पर तो वही खरा उतरता है जो वास्तव में अहंकार भाव के प्रति मर कर जीवित बना रहता है ।। ३३ ।। हे कबीर, तुम स्वच्छ वस्त्र धारण करते हो और पान सुपारी खाकर सुन्दर बने रहने का उपक्रम भी करते हो परन्तु एक प्रभु के नाम से विहीन बने रहने पर तुम बाँधे हुए यमपुरी में ले जाए जाओगे ।। ३४ ।। हे कबीर, यह जीवन रूपी बेड़ा पुराना हो चुका है और बुढ़ापे के हजारों छिद्रों के सहित अब यह टूटा-फूटा हुआ है। इसमें हलके भार वाले अर्थात निर्मल जीवन व्यतीत करने वाले तो तैर कर पार उतर गए हैं और जिन्होंने अवगुणों के बोझ को सिर पर लादा हुआ है वे डूबते जा रहे हैं ।। ३५ ।। हे कबीर, व्यक्ति की हड्डियाँ लकड़ी की तरह जलती हैं और केश घास की तरह जलते हैं। इस प्रकार इस संसार को जलता हुआ देखकर कबीर तो इस संसार के प्रति चिन्तातुर उदास हो गया है ।। ३६ ।। हे कबीर, इस जीवन पर अहंकार नहीं करना चाहिए क्योंकि शरीर तो हड्डियों पर लिपटा हुआ चमड़ा ही है। जो घोड़ों पर छत्रों के नीचे बैठते थे आखिर में उन्हें भी धरती में गाड़ा जाता है ।। ३७ ।। हे कबीर, अपने ऊँचे घर को देखकर अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि आज या कल तो धरती पर लेटना ही पड़ेगा और ऊपर घास आदि उगती रहेगी ।। ३८ ।। हे कबीर, अभिमान नहीं करना चाहिए और किसी गरीब पर हँसना भी नहीं चाहिए क्योंकि तेरे जीवन की नाव अभी भी संसार सागर में ही है; क्या पता तेरे साथ क्या होगा ।। ३६ ।। हे कबीर, सुन्दर शरीर को देखकर अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि इसे तुम आज अथवा कल उसी प्रकार त्याग जाओगे जैसे साँप अपनी केंचुल को छोड़ता है ।। ४० ।। हे कबीर अगर लूटना ही है तो यहाँ राम नाम को ही लूटना चाहिए अन्यथा जब प्राण छूट जाएँगे तो तुम मीछे पछताते रहोगे ।। ४१ ।। हे कबीर, ऐसा अभी तक कोई पैदा नहीं हुआ जो अपने ही घर अर्थात अहंभाव को आग लगा दे और पाँचो पुत्रों (विकारों) को जलाकर प्रभु-नाम में अपनी लौ लगाए रखने वाला हो ।। ४२।। ऐसा कोई बिरला ही होता है जो मन रूपी लड़के को बेच डाले अर्थात मन के पीछे चलना छोड़े और आशा, तृष्णा आदि लड़कियों का भी त्याग कर दे। यदि कोई ऐसा है तो कबीर ऐसे व्यक्ति के साथ साझा करके प्रभु का व्यापार कर सकता है ।। ४३ ।। हे कबीर, तुझे कोई संदेह ना रह जाए इसलिए तुझे यह चेतावनी है कि जो भोग तूने पहले भोगे हैं उनका मूल्य तो थोड़े से गुड़ के बराबर ही है अर्थात तू समझ ले कि भोग महत्वहीन होते हैं ।। ४४ ।। हे कबीर, पहले मैं विद्वता को अच्छा समझता था फिर विद्वता से ज्यादा अच्छा योग को मानने लगा परन्तु अब पता लगा है कि भक्ति सर्वोत्तम है और लोग बेशक मेरी निन्दा करते रहें मैं भक्ति नहीं छोड़ूंगा ।। ४५ ।। हे कबीर, जिनके मन में ध्यान नहीं है उन बेचारों की निन्दा का क्या असर है। कबीर तो अन्य सभी कामों को त्यागकर प्रभु-नाम का ही सुमिरन कर रहा है ।। ४६ ।। हे कबीर, इस परदेसी जीव के जीवन रूपी घाघरे में चारों दिशाओं से आग लगी हुई है इसलिए शरीर रूपी गुदड़ी तो जलकर कोयला हो गई परन्तु इसकी आत्मा रूपी डोरी को जरा सी आँच भी नहीं लगी है ।।४७ ।।हे कबीर, जब यह गुदड़ी जलकर कोयला हो गई तो योगी का खप्पर इत्यादि भी टूट-फूट गया। बेचारा योगी

बपुड़ा खेलिओ आसनि रही बिभूति ॥ ४८ ॥ कबीर थोरै जलि माछुली झीवरि मेलिओ जालु ॥ इह टोघनै न छूटसहि फिरि करि समुंदु सम्हालि ॥ ४९ ॥ कबीर समुंदु न छोडीऐ जउ अति खारो होइ ॥ पोखरि पोखरि ढूढते भलो न कहिहै कोइ ॥ ५० ॥ कबीर निगुसांएं बहि गए थांघी नाही कोइ ॥ दीन गरीबी आपुनी करते होइ सु होइ ॥ ५१ ॥ कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ ॥ ओह नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ ॥ ५२ ॥ कबीर हरना दूबला इहु हरीआरा तालु ॥ लाख अहेरी एकु जीउ केता बंचउ कालु ॥ ५३ ॥ कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु ॥ बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर ॥ ५४ ॥ कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥ पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥ ५५ ॥ कबीर हरदी पीअरी चूंनां ऊजल भाइ ॥ राम सनेही तउ मिलै दोनउ बरन गवाइ ॥ ५६ ॥ कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनु न रहाइ ॥ बलिहारी इह प्रीति कउ जिह जाति बरनु कुलु जाइ ॥ ५७ ॥ कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहिओ निकसो किउ कै जाइ ॥ ५८ ॥ कबीर ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥ ५९ ॥ कबीर ना मोहि छानि न छापरी ना मोहि घरु नही गाउ ॥ मत हरि पूछै कउनु है मेरे जाति न नाउ ॥ ६० ॥ कबीर मुहि मरने का चाउ है मरउ त हरि कै दुआर ॥ मत हरि पूछै कउनु है परा हमारै बार ॥ ६१ ॥ कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ॥ किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु ॥ ६२ ॥ कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिह मुखि निकसै रामु ॥ ता के पग की पानही मेरे तन को चामु ॥ ६३ ॥ कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिउ नाउ ॥ चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥ ६४ ॥ कबीर महिदी करि घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न पूछीऐ कबहु न लाई पाइ ॥ ६५ ॥ कबीर जिह दरि आवत जातिअहु हटकै नाही कोइ ॥ सो दरु कैसे छोडीऐ जो दरु ऐसा होइ ॥ ६६ ॥ कबीर डूबा था

तो अपना खेल-खेलकर यहाँ से चला गया और उसके आसन पर केवल राख ही राख बची रह गई है ।। ४८ ।। हे कबीर, जीवन रूपी इस थोड़े से जल में जीव रूपी मछली इधर-उधर छोटे-छोटे आसरे देखती रहती है परन्तु जब मछुआरा (प्रभु) इसमें जाल फेंक देता है तो थोड़े-थोड़े पानियों में अर्थात छोटे-छोटे आश्रमों में जाती हुई यह जीव रूपी मछली बच नहीं पाती इसलिए इसे प्रभु रूपी विशाल समुद्र की शरण ही लेनी चाहिए ।। ४६ ।। हे कबीर, बेशक बहुत खारा ही हो फिर भी समुद्र को नहीं छोड़ना चाहिए अर्थात उस प्रभु का आसरा नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि छोटे-छोटे तालाबों पर तुझ भटकते हुए को अर्थात छोटे-छोटे देवी-देवताओं की पीछे दौड़ते हुए तुझको कोई भला नहीं कहेगा ।। ५० ।। हे कबीर, उस मालिक के आसरे से विहीन व्यक्ति तो जीवन की धारा में ही बह जाते हैं क्योंकि उन्हें मानने वाला अर्थात सुरक्षित रखने वाला गुरु रूपी मल्लाह उन्हें नहीं मिला होता। हमें अपनी विनम्रता और गरीबी में ही मस्त बने रहना चाहिए और यह भी मानना चाहिए कि वह कर्ता प्रभु जो करता है वही होता है ।। ५१ ।। हे कबीर, प्रभु को मानने वाले की कुतिया भी अच्छी है और प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति की माँ भी भाग्यहीन और बुरी है क्योंकि भक्तों की कुतिया तो सदैव भक्तों के साथ बने रहने के कारण प्रभु-नाम का यश सुनती है और दूसरी तरफ वह माँ अपने बेटे द्वारा किए हुए पापों के कारण उसके पापों की भागीदार बनी रहती है ।। ५२ ।। हे कबीर, यह संसार एक ऐसा सरोवर है जिसमें भोग पदार्थों की हरियाली बनी रहती है। मेरा प्राण रूपी हिरण दुर्बल है और इस हरियाली की तरफ खिंचता ही चला जाता है। मेरा जीव अकेला है परन्तु इसे फंसाने के लिए भोगों के रूप में लाखों शिकारी हैं; इनकी मार से मैं बहुत देर तक बच नहीं सकूंगा ।। ५३ ।। हे कबीर, गंगा के किनारे घर बनाकर यदि गंगा के निर्मल जल का भी रोज पान किया जाए तब भी प्रभु भक्ति के बिना भोग रूपी शिकारियों से मुक्ति नहीं मिलती। यह कहकर कबीर तो परमात्मा के नाम का ही सुमिरन करता हुआ चलता बना है ।। ५४ ।। हे कबीर, गंगा के जल की तरह जब मेरा मन निर्मल हो गया तो परमात्मा मुझे कबीर-कबीर पुकार कर मेरे पीछे-पीछे चलता आ रहा है ।। ५५ ।। हे कबीर, हल्दी पीले रंग की और चूना सफेद रंग का होता है परन्तु प्रभु का भक्त तो तभी प्रभु से मिलता है जब वह हल्दी के पीलेपन अर्थात त्याग और चूने की सफेदी के ढोंग अर्थात इन दोनों बाहरी प्रपंचो का त्याग कर दे ।। ५६ ।। हे कबीर, हल्दी का पीलापन चूने की सफेदी के साथ मिलकर सफेद ही हो जाता है। इसी प्रकार प्रभु की प्रीति में जा मिलने से सभी ऊँच-नीच जाति वर्ण और वंश इत्यादि की भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं ।। ५७ ।। हे कबीर, मुक्ति का द्वार तो राई के दसवें हिस्से जितना छोटा और तंग है। यह मन तो एक हाथी है यह भला उसमें से कैसे पार निकल सकेगा ।। ५८ ।। हे कबीर, यदि सच्चा गुरु मिल जाए और प्रसन्न होकर वह कृपा कर दे तो यही तंग मुक्ति का द्वार बड़ा बन जाता है और उसमें से सहज स्वाभाविक रूप से ही आया जाया जाता है ।। ५६ ।। हे कबीर, मेरी तो कोई झोंपड़ी, छप्पर और गाँव भी नहीं है। यदि प्रभु ने पूछ लिया कि तू कौन है तो मेरी तो ना कोई जाति है और ना कोई नाम है इसलिए मैं क्या बताऊँगा ।। ६० ।। हे कबीर, मुझे तो मरने का चाव है परन्तु मैं प्रभु के द्वार पर ही मरूंगा। मुझे पड़े हुए को देखकर शायद प्रभु पूछ ले कि यह कौन है जो हमारे द्वार पर पड़ा है ।। ६१ ।। हे कबीर, हमने तो कुछ भी नहीं किया और वास्तव में यह शरीर कुछ कर भी नहीं सकता। मुझे क्या पता है ; यह तो प्रभु ने ही कुछ किया है जिससे यह कबीर चारों ओर कबीर के रूप में प्रसिद्ध हो गया है ।। ६२ ।। हे कबीर, सपने में बड़बड़ाते हुए भी जिसके मुँह से राम नाम निकले, मेरे शरीर का चमड़ा तो उसके पैर की जूती ही बन जाए ।। ६३ ।। हे कबीर, मनुष्य नाम वाले हम मिट्टी के पुतले हैं जो चार दिन के लिए यहाँ अतिथि के रूप में आए हैं परन्तु यहाँ हम अधिक से अधिक स्थान पर कब्जा जमाए रखने की कोशिश करते रहते हैं ।। ६४ ।। हे कबीर, अपने आपको बार-बार पिसवा कर मेंहदी ने तो बहुत परिश्रम किया परन्तु हे प्रभु, तूने उसकी बात ही नहीं पूछी और कभी उसे अपने पाँवो में स्थान ही नहीं दिया ।। ६५ ।। हे कबीर, जिस द्वार पर आने-जाने से कोई भी मना नहीं करता उस प्रभु के द्वार को जो ऐसा विशाल है भला कैसे छोड़ा जा सकता है ।। ६६ ।। हे कबीर, मैं तो डूबने ही वाला था

पै उबरिओ गुन की लहरि झबकि ॥ जब देखिओ बेड़ा जरजरा तब उतरि परिओ हउ फरकि ॥ ६७ ॥ कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ॥ माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ ॥ ६८ ॥ कबीर बैदु मूआ रोगी मूआ मूआ सभु संसारु ॥ एकु कबीरा ना मूआ जिह नाही रोवनहारु ॥ ६९ ॥ कबीर रामु न धिआइओ मोटी लागी खोरि ॥ काइआ हांडी काठ की ना ओह चर्है बहोरि ॥ ७० ॥ कबीर ऐसी होइ परी मन को भावतु कीनु ॥ मरने ते किआ डरपना जब हाथि सिधउरा लीन ॥ ७१ ॥ कबीर रस को गांडो चूसीऐ गुन कउ मरीऐ रोइ ॥ अवगुनीआरे मानसै भलो न कहिहै कोइ ॥ ७२ ॥ कबीर गागरि जल भरी आजु काल्हि जैहै फूटि ॥ गुरु जु न चेतहि आपनो अध माझि लीजहिगे लूटि ॥ ७३ ॥ कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ ॥ गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ ॥ ७४ ॥ कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥ हिरदै रामु न चेतही इह जपनी किआ होइ ॥ ७५ ॥ कबीर बिरहु भुयंगमु मनि बसै मंतु न मानै कोइ ॥ राम बिओगी ना जीऐ जीऐ त बउरा होइ ॥ ७६ ॥ कबीर पारस चंदनै तिन्ह है एक सुगंध ॥ तिह मिलि तेऊ ऊतम भए लोह काठ निरगंध ॥ ७७ ॥ कबीर जम का ठेंगा बुरा है ओहु नही सहिआ जाइ ॥ एकु जु साधू मोहि मिलिओ तिन्हि लीआ अंचलि लाइ ॥ ७८ ॥ कबीर बैदु कहै हउ ही भला दारू मेरै वसि ॥ इह तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेइ खसि ॥ ७९ ॥ कबीर नउबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ ॥ नदी नाव संजोग जिउ बहुरि न मिलहै आइ ॥ ८० ॥ कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥ बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु लिखनु न जाइ ॥ ८१ ॥ कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ कबीर रमईआ कंठि मिलु चूकहि सरब जंजाल ॥ ८२ ॥ कबीर ऐसा को नही मंदरु देइ जराइ ॥ पांचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ ॥ ८३ ॥ कबीर ऐसा को नही इहु तनु देवै फूकि ॥ अंधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि ॥ ८४ ॥ कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनु हो बीर मसान ॥ लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु

परन्तु प्रभु के गुणानुवाद की लहर के धक्के के साथ मैं ऊपर उठा लिया गया। मैंने देखा कि शारीरिक मोह का बेड़ा बहुत ही पुराना हो चला है तो मैं छलांग लगाकर उस अहंकार रूपी बेड़े में से बाहर उतर गया हूँ ।। ६७ ।। हे कबीर, पापी व्यक्ति को ना तो भक्ति भाती है और ना ही प्रभु की पूजा अच्छी लगती है। मक्खी तो चन्दन को छोड़कर वहाँ जाती है जहाँ दुर्गन्ध होती है ।। ६८ ।। हे कबीर, इस सारे संसार में रोगी और उनके तथाकथित वैद्य सभी मरते जा रहे हैं अर्थात आध्यात्मिक तौर से मृत बने हुए हैं। कबीर, केवल वही व्यक्ति यहाँ आध्यात्मिक मौत नहीं करता जो सांसारिक भोगों की खातिर रोता नहीं रहता ।। ६६ ।। हे कबीर, जब प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया तो अन्तर्मन में बहुत बड़ा खोखलापन आ गया है। यह शरीर रूपी हांडी तो लकड़ी की है जो फिर आग पर चढ़ नहीं सकेगी ।। ७० ।। हे कबीर, दृढ़ निश्चय से जब मन को अच्छी लगने वाली प्रभु भक्ति की जाती है तो फिर उसे ठीक उसी प्रकार छोड़ा नहीं जा सकता जैसे हिन्दू परम्परा में सिन्दूर, नारियल आदि को पकड़कर सती होने वाली स्त्री फिर मरने से नहीं डरती ।। ७१ ।। हे कबीर, रस से भरे हुए गन्ने को पेरने की तकलीफ सहने के बाद ही उसका रस बाहर निकलता है और इस गुण को लोगों के सुख के लिए प्रयुक्त करने के बदले कष्ट सहकर मरना पड़ता है। अवगुणों वाले व्यक्ति को तो कोई भी भला नहीं कहता ।। ७२ ।। हे कबीर, यह शरीर रूपी कच्चा घड़ा जीवन रूपी पानी से भरा हुआ है और यह आजकल में ही फूट जाने वाला है। जो अपने गुरु का सुमिरन नहीं करते वे जीवन की यात्रा में रास्ते में ही लूट लिए जाते हैं अर्थात पाँचो विकार उनके गुणों को नष्ट कर देते हैं ।। ७३ ।। हे कबीर, मैं तो राम का कुत्ता हूँ और मेरा नाम मुतिया है। प्रभु की रस्सी मेरे गले में पड़ी हुई है और वह जिधर खींचता है मैं उधर ही जाता हूँ ।। ७४ ।। हे कबीर, यह लकड़ी की माला लोगों को क्या दिखलाता रहता है। जब हृदय से प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया तो इस माला से क्या होगा ।। ७५ ।। हे कबीर, विरह रूपी सर्प मेरे मन मे बसा हुआ है और यह किसी भी मन्त्र से बस मे नहीं आता। वास्तव में राम का वियोगी पहली बात तो जीवित बचता ही नहीं है और यदि जीवित रहता भी है तो वह उसके प्रेम में बावला बना रहता है ।। ७६ ।। हे कबीर, पारस और चन्दन का एक ही जैसा स्वभाव और गुण है। जो इनसे मिलते हैं वे इनके जैसे ही बन जाते हैं। लोहा पारस से मिलकर उत्तम बन जाता है और सुगन्धि-विहीन लकड़ी चन्दन का स्पर्श पा कर उत्तम बन जाती है ।। ७७ ।। हे कबीर, यम की चोट बहुत भीषण है उसे सहा नहीं जा सकता। प्रभु की कृपा से मुझे मार्ग दर्शक एक ऐसा साधु पुरुष मिल गया जिसने मुझे अपने आँचल के साथ लगा लिया है ।। ७८ ।। हे कबीर, वैद्य तो यही कहता है कि मैं ही सबसे अच्छा हूँ और मेरे पास ही व्यक्ति को बचाने वाली औषधि है परन्तु यह जीवन तो प्रभु की वस्तु है, इसे वह जब चाहता है ले लेता है ।। ७६ ।। हे कबीर, तू भी दस दिन अपना ढोल बजा ले। जैसे नाव में बैठे हुए लोगों का मिलाप पार उतर जाने के बाद फिर नहीं होता इसी प्रकार तू इस संसार में अपने बन्धु-बान्धवों से फिर नहीं मिल सकेगा ।। ८० ।। हे कबीर, सातों समुद्रों को यदि स्याही बना लूं और सारी वनस्पति को यदि कलम बना लूं तथा सारी धरती को कागज की तरह कर लूं तब भी प्रभु का यश लिखा नहीं जा सकता ।। ८१ ।। हे कबीर, जुलाहे की तथाकथित जाति भी मेरा क्या कर सकती है क्योंकि मेरे हृदय में तो प्रभु बसा हुआ है। हे कबीर, तू प्रभु के गले लगा रह तेरे सभी सांसारिक जंजाल मिट जाएँगे ।। ८२ । हे कबीर, ऐसा कोई भी नहीं है जो शारीरिक मोह को जला दे और पाँचो विकार रूपी लड़कों को जला मारकर प्रभु-नाम में ही लौ लगाए रखे ।। ८३ ।। हे कबीर, ऐसा कोई बिरला ही है जो इस तन के मोह को जला दे। मैं कबीर पुकार-पुकार कर यह कह रहा हूँ परन्तु अन्धे अज्ञानी लोग इस बात को जानते ही नहीं ।। ८४ ।। हे कबीर, चिता पर पहुँची हुई सती होने वाली स्त्री यह पुकार कर कहती है कि हे मेरे भाई मसान की आत्मा, तू सुन कि सभी लोग तो यहाँ तक आकर चले जाते हैं परन्तु मेरा अन्तिम काम (लेन-देन) तो तेरे साथ ही होगा अर्थात सांसारिकता को छोड़कर जब जीवन शमशन तक पहुँचता है तो व्यक्ति की की हुई अपनी कमाई ही उसका साथ

निदान ॥ ८५ ॥ कबीर मनु पंखी भइओ उडि उडि दह दिस जाइ ॥ जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ॥ ८६ ॥ कबीर जा कउ खोजते पाइओ सोई ठउरु ॥ सोई फिरि कै तू भइआ जा कउ कहता अउरु ॥ ८७ ॥ कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥ उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥ ८८ ॥ कबीर भार पराई सिरि चरै चलिओ चाहै बाट ॥ अपने भारहि ना डरै आगै अउघट घाट ॥ ८९ ॥ कबीर बन की दाधी लाकरी ठाढी करै पुकार ॥ मति बसि परउ लुहार के जारै दूजी बार ॥ ९० ॥ कबीर एक मरंते दुइ मूए दोइ मरंतह चारि ॥ चारि मरंतह छह मूए चारि पुरख दुइ नारि ॥ ९१ ॥ कबीर देखि देखि जगु ढूंढिआ कहूं न पाइआ ठउरु ॥ जिनि हरि का नामु न चेतिओ कहा भुलाने अउर ॥ ९२ ॥ कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु ॥ साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥ ९३ ॥ कबीर जग महि चेतिओ जानि कै जग महि रहिओ समाइ ॥ जिन हरि का नामु न चेतिओ बादहि जनमें आइ ॥ ९४ ॥ कबीर आसा करीऐ राम की अवरै आस निरास ॥ नरकि परहि ते मानई जो हरि नाम उदास ॥ ९५ ॥ कबीर सिख साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु ॥ चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटकिओ चीतु ॥ ९६ ॥ कबीर कारनु बपुरा किआ करै जउ रामु न करै सहाइ ॥ जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइ ॥ ९७ ॥ कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥ रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥ ९८ ॥ कबीर साधू की संगति रहउ जउ की भूसी खाउ ॥ होनहारु सो होइहै साकत संगि न जाउ ॥ ९९ ॥ कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेतु ॥ साकत कारी कांबरी धोए होइ न सेतु ॥ १०० ॥ कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाए कांइ ॥ जो किछु कीआ सो मन कीआ मूंडा मूंडु अजांइ ॥ १०१ ॥ कबीर रामु न छोडीऐ तनु धनु जाइ त जाउ ॥ चरन कमल चितु बेधिआ रामहि नामि समाउ ॥ १०२ ॥ कबीर जो हम जंतु बजावते टूटि गईं सभ तार ॥ जंतु बिचारा किआ करै चले बजावनहार ॥ १०३ ॥ कबीर माइ मूंडउ तिह गुरू की जा ते भरमु न जाइ ॥

देती है ।। ८५ ।। हे कबीर, पक्षी बना यह मन दसों दिशाओं में उड़-उड़कर भटकता रहता है। दरअसल जिसको जैसी संगत मिलती है वह वैसा ही फल प्राप्त करता है ।। ८६ ।। हे कबीर, जिसे हम ढूंढ़ते फिरते थे, वह तो तेरे हृदय रूपी स्थान में ही मिल गया है। जिस प्रभु को तू अपने से अलग समझता था अब तो तू भी वही हो गया है ।। ८७ ।। हे कबीर, बेरी के वृक्ष के निकट केले का वृक्ष कुसंगत के कारण ही मारा जाता है। जब बेरी आनन्द में झूमती है तो उसके काँटों से केले के पत्ते चीर दिये जाते हैं, इसलिए प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति की संगत नहीं खोजनी चाहिए ।। ८८ ।। हे कबीर, अपने भार की चिन्ता ना करके दूसरों के बोझ को सिर पर उठाकर तू रास्ता तय करना चाहता है। तुझे अपने बोझ का कोई भय नहीं लगता हालांकि आगे आने वाला रास्ता बहुत ही कठिन है अर्थात तू पहले अपना बोझ उठाने की शक्ति प्रभु भक्ति के माध्यम से प्राप्त कर तभी तू किसी अन्य की भी सहायता कर सकेगा ।। ८९ ।। हे कबीर, जंगल में जली हुई लकड़ी खड़ी होकर पुकार लगाती है कि कहीं वह लोहार के बस में ना पड़ जाए जो कि उसे दूसरी बार कोयले के रूप में जलाएगा। उसी प्रकार सांसारिक क्लेशों का डरा हुआ व्यक्ति यम के वश में पड़ने से डरता है कि कहीं उसे फिर आवागमन में ना पड़ना पड़े ॥९० ॥हे कबीर, प्रभु के गुणानुवाद से मन मर जाता है और इस एक के मरने के साथ दूसरा जाति अभिमान भी मर जाता है। जाति अभिमान और मन के मरने के साथ द्वेष और अहंकार आदि चारों पुरुष भी मर जाते हैं तथा साथ ही साथ कुसंगति और निन्दा रूपी दो स्त्रियां भी मर जाती हैं ॥९१ ॥ हे कबीर, मैंने इधर-उधर देख-देखकर सारे संसार को खोज डाला है परन्तु मुझे कहीं भी ठिकाना नहीं मिला। दरअसल जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं किया वे भला अन्य कामों में क्या भटकते फिरते हैं ॥९२ ॥ हे कबीर, साधु-पुरुष की ही संगति करनी चाहिए जो अंतिम समय तक साथ देती है। प्रभु से टूटे हुए लोगों की संगत जिससे कि विनाश होता है नहीं करनी चाहिए ॥९३ ॥हे कबीर, प्रभु को इस संसार में समाया हुआ समझकर ही इस संसार में रहते हुए लोगों ने उसका सुमिरन किया हैं परन्तु जिन्होंने प्रभु का सुमिरन नहीं किया उनका जीवन तो व्यर्थ ही बना रहता है ।। ९४।। हे कबीर, अन्य सभी की ओर से आशा हटाकर केवल एक प्रभु में ही आशा बनाए रखनी चाहिए। जो प्रभु के नाम से उदासीन होकर अलग बने रहते हैं वे प्रभु-नाम के महत्व को नरक में पड़ने पर ही मानते हैं ।। ९५ ।। हे कबीर, तूने अपने शिष्य और सेवक तो बहुत से बना लिए परन्तु तूने प्रभु को अपना मित्र नहीं बनाया। तुम चले तो थे प्रभु को मिलने के लिए परन्तु यह तुम्हारा चित्त आधे रास्ते में ही अपने शिष्य और सेवकों में अटक गया है ।। ९६ ।। हे कबीर, व्यक्ति द्वारा कारणों को पैदा करने से तब तक कोई काम नहीं सँवरता जब तक परमात्मा सहायता ना करे। उसकी सहायता के बिना मैं जिस डाली पर भी आसरा लेने के लिए पाँव रखता हूँ वही मुड़ती जाती है अर्थात जिस काम में भी हाथ डालता हूँ उसी में असफल हो जाता हूँ ।। ९७ ।। हे कबीर, तू दूसरों को उपदेश देता है, इस प्रकार तो तेरे मुख में रेत ही पड़ेगी। तू तो ऐसे लोगों जैसा है जो दूसरे के खलिहान की तो चौकीदारी करते रहते हैं परन्तु उनका अपना खेत उजड़ जाता है ।। ९८ ।। हे कबीर, बेशक जौ के छिलके को ही खाना पड़े फिर भी तू साधु पुरुष की संगत में बना रह। जो होना है वह होगा ही, इसलिए तू प्रभु से टुटे हुए व्यक्ति के साथ संगत मत कर ।। ९९।। हे कबीर, साधसंगत प्रतिदिन प्रेम को दुगुना करती जाती है परन्तु प्रभु से टूटा हुआ व्यक्ति ऐसे काले कम्बल के समान है जो धोने पर भी सफेद नहीं होता ।।१०० ।।हे कबीर, मन को तो तूने मूंडा ही नहीं फिर यह बाल मूंडने से क्या होगा। सब कुछ करने वाला तो मन ही है परन्तु सिर को बेकार में ही मूंडा जाता है ।।१०१ ।।हे कबीर, तन और धन जाता है तो जाने दो परन्तु प्रभु को नहीं छोड़ा जा सकता। उसके चरण कमलों में चित्त इस प्रकार बिंध गया है कि अब प्रभु-नाम में ही मैं लीन बना रहता हूँ ।। १०२ ।। हे कबीर, जो हम शरीर रूपी बाजा बजाते थे अब उसकी सभी तारें टूट गई हैं। यह बाजा भला बेचारा क्या कर सकता है जब इसे बजाने वाला आत्मा ही इसमें से निकल कर चल पड़ा है ।। १०३।। हे कबीर, जिस गुरु के माध्यम से भ्रम दूर नहीं होता ऐसे गुरु की तो माँ का सिर भी मूंड दिया जाना चाहिए।

आप डुबे चहु बेद महि चेले दीए बहाइ ॥ १०४ ॥ कबीर जेते पाप कीए राखे तलै दुराइ ॥ परगट भए निदान सभ जब पूछे धरम राइ ॥ १०५ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिओ बहुतु कुटंबु ॥ धंधा करता रहि गइआ भाई रहिआ न बंधु ॥ १०६ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइ ॥ सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ ॥ १०७ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि ॥ गदही होइ कै अउतरै भारु सहै मन चारि ॥ १०८ ॥ कबीर चतुराई अति घनी हरि जपि हिरदै माहि ॥ सूरी ऊपरि खेलना गिरै त ठाहर नाहि ॥ १०९ ॥ कबीर सुोई मुखु धंनि है जा मुखि कहीऐ रामु ॥ देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥ ११० ॥ कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु ॥ जिह कुल दासु न ऊपजै सो कुल ढाकु पलासु ॥ १११ ॥ कबीर है गइ बाहन सघन घन लाख धजा फहराहि ॥ इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥ ११२ ॥ कबीर सभु जगु हउ फिरिओ मांदलु कंध चढाइ ॥ कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइ ॥ ११३ ॥ मारगि मोती बीथरे अंधा निकसिओ आइ ॥ जोति बिना जगदीस की जगतु उलंघे जाइ ॥ ११४ ॥ बूडा बंसु कबीर का उपजिओ पूतु कमालु ॥ हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु ॥ ११५ ॥ कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ ॥ पाछै पाउ न दीजीऐ आगै होइ सु होइ ॥ ११६ ॥ कबीर जगु बाधिओ जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर ॥ जैहहि आटा लोन जिउ सोन समानि सरीरु ॥ ११७ ॥ कबीर हंसु उडिओ तनु गाडिओ सोझाई सैनाह ॥ अजहू जीउ न छोडई रंकाई नैनाह ॥ ११८ ॥ कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥ बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ ॥ ११९ ॥ कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि ॥ चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि ॥ १२० ॥ कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥ कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु ॥ १२१ ॥ कबीर देखि कै किह कहउ कहे न को पतीआइ ॥ हरि जैसा तैसा उही

ऐसा गुरु स्वयं तो चारों वेदों के खण्डन-मण्डन में डूबा ही रहता है वह चेलों को भी बहा कर डुबा देता है ।। १०४।। हे कबीर, जितने भी पाप किए जाते हैं उन्हें छिपाकर रखा जाता है परन्तु जब धर्मराज पूछता है तो अन्त में वे सभी सामने आ जाते हैं ।। १०५ ।। हे कबीर, प्रभु का सुमिरन छोड़कर बहुत तरीकों से कुटुम्ब को पाला गया। जीव यही धन्धा करता हुआ रह जाता है और उसका कोई भी भाई-बन्धु उसका साथी नहीं बनता ।। १०६ ।। हे कबीर, जो प्रभु का सुमिरन छोड़कर मन्त्रों की शक्ति से शमशान में मुर्दों को जगाने के लिए जाती है ऐसी औरतें सर्पिणी बनकर पैदा होती हैं और अपने बच्चों को भी खा जाती हैं ।। १०७ ।। हे कबीर, जो स्त्री प्रभु का सुमिरन छोड़कर तथाकथित अहोई माता का व्रत रखती है वे गधी के रूप में जन्म लेती है और चार मन भार उठाए घूमती है ।। १०८ ।। हे कबीर, सबसे अच्छी समझदारी यही है कि हृदय में प्रभु का जाप करते रहो। यह कठिन कार्य सूली पर चढ़कर खेलने के समान है क्योंकि वहाँ से गिरने पर फिर कोई ठिकाना नहीं मिलता अर्थात मरना ही मरना होता है ।। १०६ ।। हे कबीर, जिस मुख से राम नाम कहा जाता है वही मुख धन्य है। उस मुख वाली बेचारी देही तो क्या सारा ग्राम ही पवित्र हो जाएगा ।। ११० ।। हे कबीर, वही कुल भला है जिस कुल में हरि का दास जन्म लेता है। जिस कुल में प्रभु का सेवक उत्पन्न नहीं होता वह कुल तो फलहीन ढाक, प्लाश के समान ही है ।। १११ ।। हे कबीर, घोड़े हाथी रथ और लाखों झण्डे प्रभु सत्ता के चिन्ह के रूप में फहराते हैं परन्तु इन सब सुखों से तो भिक्षा माँगना बेहतर है जिसमें प्रभु का सुमिरन करते हुए दिन व्यतीत होता है ।। ११२ ।। मैं कन्धे पर ढोलक रखकर प्रकट रूप में संसार में घूमा हूँ परन्तु मैंने ठोक बजाकर यह देख लिया है कि यहाँ कोई किसी का नहीं है ।। ११३ ।। रास्ते पर मोती (गुण) बिखरे हुए हों और अगर अन्धा अज्ञानी व्यक्ति उधर से निकल आए तो उसे कुछ दिखाई नहीं देता। इसी प्रकार प्रभु की ज्योति से विहीन बना रहकर यह सारा संसार विचरण करता रहता है परन्तु गुणों को नहीं जान पाता ।। ११४ ।। कमाल नामक पुत्र पैदा होने से कबीर का वंश ही डूब गया है क्योंकि यह प्रभु का सुमिरन छोड़कर धन-माल को घर में ले आया है ।। ११५ ।। हे कबीर, साधु पुरुषों से मिलने जाया जाए तो किसी का साथ लेने के लिए नहीं देखते रहना चाहिए। उसके मार्ग पर चलते हुए पाँव पीछे नहीं हटाना चाहिए और आगे जो भी हो उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए ।। ११६ ।। हे कबीर, जिस रस्सी से संसार को बांधा हुआ है तू भी अपने आप को उसी से मत बाँध। तेरा यह सोने जैसा शरीर आटे के साथ नमक के मिलने और नष्ट होने की तरह नष्ट होता जा रहा है ।। ११७ ।। हे कबीर, जीवात्मा इस गाड़े जाने वाले तन से उड़ जाने की स्थिति में पहुँच कर संकेतों से व्यक्ति को समझाती है परन्तु यह अभी भी अपनी आंखों की नीचता को नहीं छोड़ता ।। ११८ ।। कबीर का कथन है कि हे प्रभु, मैं आँखों से तुझे देखता हूँ और कानों से तुम्हारा नाम सुनता हूँ, वाणी से तुम्हारे नाम का उच्चारण करता हूँ और हृदय रूपी स्थान में तुम्हारे चरणों को भी स्थापित किए रहता हूँ ।। ११६ ।। हे कबीर, सच्चे गुरु की कृपा से मैं नरक और स्वर्ग से बच गया हूँ। मैं तो आदि से अन्त तक प्रभु के चरण-कमलों की मौज में ही लीन बना रहा हूँ ।। १२० ।। हे कबीर, चरण-कमलों के आनन्द का अनुमान कैसे लगाया जाए। इस आनन्द को कहने से उसकी पूर्ण शोभा का पता नहीं लगता, इसे तो केवल स्वयं देखने से ही इसका आनन्द लिया जा सकता है ।। १२१ ।। हे कबीर, उसे देखकर क्या कहा जा सकता है और कहने मात्र से कोई भी सन्तुष्ट नहीं होता। प्रभु तो जैसा है वह वैसा ही है

रहउ हरखि गुन गाइ ॥ १२२ ॥ कबीर चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारे ॥ जैसे बचरहि कूंज मन माइआ ममता रे ॥ १२३ ॥ कबीर अंबर घनहरु छाइआ बरखि भरे सर ताल ॥ चात्रिक जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु ॥ १२४ ॥ कबीर चकई जउ निसि बीछुरै आइ मिलै परभाति ॥ जो नर बिछुरे राम सिउ ना दिन मिले न राति ॥ १२५ ॥ कबीर रैनाइर बिछोरिआ रहु रे संख मझूरि ॥ देवल देवल धाहड़ी देसहि उगवत सूर ॥ १२६ ॥ कबीर सूता किआ करहि जागु रोइ भै दुख ॥ जा का बासा गोर महि सो किउ सोवै सुख ॥ १२७ ॥ कबीर सूता किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि ॥ इक दिन सोवनु होइगो लांबे गोड पसारि ॥ १२८ ॥ कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु ॥ जा के संग ते बीछुरा ता ही के संगि लागु ॥ १२९ ॥ कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ ॥ पेखत ही पुंनीत होइ भेटत जपीऐ नाउ ॥ १३० ॥ कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥ बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु ॥ १३१ ॥ कबीरा रामु न चेतिओ जरा पहूंचिओ आइ ॥ लागी मंदिर दुआर ते अब किआ काढिआ जाइ ॥ १३२ ॥ कबीर कारनु सो भइओ जो कीनो करतारि ॥ तिसु बिनु दूसरु को नही एकै सिरजनहारु ॥ १३३ ॥ कबीर फल लागे फलनि पाकनि लागे आंब ॥ जाइ पहूचहि खसम कउ जउ बीचि न खाही कांब ॥ १३४ ॥ कबीर ठाकुरु पूजहि मोलि ले मनहठि तीरथ जाहि ॥ देखा देखी स्वांगु धरि भूले भटका खाहि ॥ १३५ ॥ कबीर पाहनु परमेसुरु कीआ पूजै सभु संसारु ॥ इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥ १३६ ॥ कबीर कागद की ओबरी मसु के करम कपाट ॥ पाहन बोरी पिरथमी पंडित पाड़ी बाट ॥ १३७ ॥ कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल ॥ पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु ॥ १३८ ॥ कबीर ऐसा जंतु इकु देखिआ जैसी धोई लाख ॥ दीसै चंचलु बहु गुना मति हीना नापाक ॥ १३९ ॥ कबीर मेरी बुधि कउ जमु न करै तिसकार ॥ जिनि इहु जमूआ सिरजिआ सु जपिआ परविदगार ॥ १४० ॥ कबीरु कसतूरी भइआ

परन्तु मैं तो प्रसन्नतापूर्वक उसके गुण गाता रहता है ।। १२२ ।। हे कबीर, कूंज अपने बच्चों को बार-बार याद भी करती है और साथ ही साथ अपना चुग्गा भी चुगती रहती है। जैसे बच्चों और कूंज का सम्बन्ध है उसी प्रकार मन और माया-ममता आपस में जुड़े रहते हैं ।। १२३ ।। हे कबीर, आकाश में छाए बादल बरस कर सरोवर और तालों को अर्थात जिज्ञासुओं के हृदयों को भर देते हैं परन्तु चातक की तरह जो साधारण जल को ना पीकर स्वाति नक्षत्र के जल को ही पीना चाहते हैं वे तो बेहाल ही बने रहते हैं ।। १२४ ।। हे कबीर, चकवी जो रात में अपने प्रियतम से बिछुड़ जाती है वह प्रभात होते ही उससे आ मिलती है परन्तु जो व्यक्ति प्रभु से बिछुड़ जाते हैं वे ना तो दिन में ना ही रात में उससे मिल पाते हैं ।। १२५ ।। कबीर का कथन है कि समुद्र से बिछुड़े हुए हे शंख, तू समुद्र में ही बना रह नहीं तो सूरज उगते ही तू हर रोज़ एक मंदिर से दूसरे मंदिर में पुकार ही लगाता रहेगा ।। १२६ ।। हे कबीर, तू सोया हुआ क्या कर रहा है, सावधान हो जा और यम से डर कर विनम्र बना रह। जिसका निवास ही कब्र में हो वह भला कैसे सुख से सो सकता है ।। १२७ ।। हे कबीर, तू सोया हुआ क्या कर रहा है और सुबह उठकर क्यों नहीं प्रभु का सुमिरन करता। एक दिन तो तुझे पाँव पसारकर सोना ही सोना है ।। १२८ ।। हे कबीर, तू सोया हुआ क्या कर रहा है उठ कर बैठ और सावधान बना रह। जिस प्रभु के साथ से तू बिछुड़ा है उसी में ही अपना ध्यान लगाए रख ।। १२६ ।। हे कबीर, शान्त-पुरुष की निकटता को कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए और उसी के मार्ग पर चलते रहना चाहिए। उसे देखने से ही व्यक्ति पुनीत हो जाता है और उसके सम्पर्क में आने से प्रभु-नाम का सुमिरन करता है ।। १३० ।। हे कबीर, प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति की संगत नहीं करनी चाहिए और उससे दूर भाग जाना चाहिए क्योंकि कालिख लगे बर्तन पकड़ने से भी कुछ ना कुछ दाग तो लग ही जाता है ।। १३१ ।। हे कबीर, तूने प्रभु का सुमिरन नहीं किया और अब बुढ़ापा आ पहुँचा है। बुढ़ापे की आग तो इस शरीर रूपी घर के दरवाजे तक आ पहुँची है। अब भला इस घर में से बाहर क्या निकाला जा सकता है ।। १३२ ।। हे कबीर, जो कर्ता प्रभु ने किया है वही हर काम का कारण बनता है। उस के बिना दूसरा कोई नहीं है और वह केवल एक ही सृजनहार है ।। १३३ ।। हे कबीर, इस शरीर रूपी वृक्ष में फल लगने लगे हैं और इसके आम पकने लगे हैं अर्थात यह शरीर अब अपने अंतिम चरण में है। ये फल इसके मालिक प्रभु को सही सलामत जा पहुँचेंगे यदि रास्ते में ही इनमें कोई दोष पैदा ना हो जाए ।। १३४ ।। हे कबीर, ठाकुर की मूर्ति को मोल लेकर उसकी पूजा करते हैं और लोग मन के हठ के पीछे लग कर तीर्थों पर जाते हैं। देखा-देखी में ही अनेकों प्रकार के वेश धारण करके लोग भूलते-भटकते रहते हैं ।। १३५ ।। हे कबीर, पत्थर को ही परमेश्वर मानकर सारा संसार उसकी पूजा करता जा रहा है। जो इस भरोसे में ही बना रहेगा, वह तो वास्तव में मंझधार में ही डूब जाएगा ।। १३६ ।। हे कबीर, लोग वेद-शास्त्रों की उस कोठरी में कैद हैं जिस कोठरी के दरवाजे पर कर्मकाण्ड के काले तख्ते लगे हुए हैं। (धार्मिक) पत्थरों की पूजा ने धरती को डुबा रखा है और पंडित लोग रास्ता चलते हुओं में लूट-पाट मचाए रहते हैं ।। १३७ ।। हे कबीर, जो तुझे कल करना है वह आज ही कर और जो आज अभी करना है उसे तत्काल ही कर ले क्योंकि सिर पर काल के पहुँचने पर तुझसे कुछ भी नहीं हो पाएगा ।। १३८ ।। हे कबीर, मैंने एक ऐसा जीव (मन) देखा है जैसे धुली हुई लाख हो अर्थात यह ऊपर से बहुत चमकीला पर जल्दी ही टूट कर बिखर जाने वाला होता है। यह बहुत ही चंचल दिखाई देता है और अनेकों गुणों वाला यह मतिहीन और अपवित्र बना रहने वाला होता है ।। १३६ ।। हे कबीर, मेरी बुद्धि का तिरस्कार तो अब यम भी नहीं करता क्योंकि जिस परवरदिगार ने इस यम को बनाया है मैंने उसी प्रभु का सुमिरन किया है ।। १४० ।। हे कबीर, प्रभु तो कस्तूरी बना हुआ है और

भवर भए सभ दास ॥ जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ तिउ राम निवास ॥ १४१ ॥ कबीर गहगचि परिओ कुटंब कै कांठै रहि गइओ रामु ॥ आइ परे धरम राइ के बीचहि धूमा धाम ॥ १४२ ॥ कबीर साकत ते सूकर भला राखै आछा गाउ ॥ उहु साकतु बपुरा मरि गइआ कोइ न लैहै नाउ ॥ १४३ ॥ कबीर कउडी कउडी जोरि कै जोरे लाख करोरि ॥ चलती बार न कुछ मिलिओ लई लंगोटी तोरि ॥ १४४ ॥ कबीर बैसनो हूआ त किआ भइआ माला मेलीं चारि ॥ बाहरि कंचनु बारहा भीतरि भरी भंगार ॥ १४५ ॥ कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु ॥ ऐसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु ॥ १४६ ॥ कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइआ पंथी कउ दुखु देइ ॥ ऐसा तेरा दासु है जिउ धरनी महि खेह ॥ १४७ ॥ कबीर खेह हूई तउ किआ भइआ जउ उडि लागै अंग ॥ हरि जनु ऐसा चाहीऐ जिउ पानी सरबंग ॥ १४८ ॥ कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ ॥ हरि जनु ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥ १४९ ॥ ऊच भवन कनकामनी सिखरि धजा फहराइ ॥ ता ते भली मधूकरी संतसंगि गुन गाइ ॥ १५० ॥ कबीर पाटन ते ऊजरु भला राम भगत जिह ठाइ ॥ राम सनेही बाहरा जम पुरु मेरे भांइ ॥ १५१ ॥ कबीर गंग जमुन के अंतरे सहज सुंन के घाट ॥ तहा कबीरै मटु कीआ खोजत मुनि जन बाट ॥ १५२ ॥ कबीर जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै ओड़ि ॥ हीरा किस का बापुरा पुजहि न रतन करोड़ि ॥ १५३ ॥ कबीरा एकु अचंभउ देखिओ हीरा हाट बिकाइ ॥ बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ ॥ १५४ ॥ कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥ जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥ १५५ ॥ कबीर माइआ तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ ॥ मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥ १५६ ॥ कबीर साचा सतिगुरु मै मिलिआ सबदु जु बाहिआ एकु ॥ लागत ही भुइ मिलि गइआ परिआ कलेजे छेकु ॥ १५७ ॥ कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥ अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक ॥ १५८ ॥ कबीर

उसके सेवक उसके भँवरे बने हुए हैं। जैसे-जैसे हे कबीर, ये भक्तिपूर्ण होकर उसकी तरफ बढ़ते हैं वैसे-वैसे ही प्रभु रूपी कस्तूरी का निवास इनके अन्दर होता जाता है ।। १४१ ।। हे कबीर, तू कुटुम्ब के भ्रमपूर्ण धन्धों में उलझा पड़ा है और प्रभु का नाम अब तेरे गले में ही अटक कर रह गया है। इसी दौरान धर्मराज के दूत तुझे ले जाने के लिए आ पहुँचे हैं और तेरे जीवन की धूम-धाम बीच में ही रह गई है ।। १४२ ।। हे कबीर, प्रभु से दूर रहने वाले व्यक्ति से तो सूअर अच्छा है जो गाँव को तो साफ रखता है। प्रभु से टूटा हुआ बेचारा व्यक्ति तो ऐसे ही मर-खप जाता है और कोई उसका नाम भी नहीं लेता ।। १४३ ।। हे कबीर, तूने कौड़ी-कौड़ी जोड़कर लाखों करोड़ जमा कर लिए हैं परन्तु चलते समय तुझे कुछ भी नहीं मिला और तेरी लंगोटी भी तोड़कर निकाल ली गई है ।। १४४ ।। हे कबीर, यदि तू चार प्रकार की माला पहने रहने वाला बन गया तो इसमें कौन सी बड़ी बात है क्योंकि बाहर से तो तू सोने जैसा बन गया है परन्तु तेरे अन्दर तो क्षण भंगुर राख की गन्दगी ही भरी हुई है ।। १४५ ।। हे कबीर, मन का अभिमान त्यागकर तू रास्ते का एक छोटा सा पत्थर बनकर पड़ा रह ताकि लोग तुझ पर से आते जाते रहें। जब कोई इस प्रकार का विनम्र दास बन जाता है तो उसी को ही परमात्मा मिलता है ।। १४६ ।। हे कबीर, छोटा सा पत्थर भी अगर बन गया तो कौन सी बड़ी बात है क्योंकि पत्थर तो आने जाने वालों को रुकावट बनकर दुख ही देता है। तेरा वास्तविक दास तो ऐसा होना चाहिए जैसी धरती की मिट्टी है ।। १४७ ।। हे कबीर, व्यक्ति मिट्टी भी बन गया तो कौन सी बड़ी बात है क्योंकि मिट्टी तो उड़-उड़कर सबके शरीर को लगकर उन्हें मैला करती रहती है। प्रभु का दास तो ऐसा होना चाहिए जैसे पानी होता है जोकि सबमें ही मिल जाता है ।। १४८ ।। हे कबीर, जीव यदि पानी भी बन गया तो कौन सी बड़ी बात है क्योंकि पानी भी कभी ठण्डा और कभी गर्म होता रहता है इसलिए प्रभु का सेवक तो ऐसा ही होना चाहिए जैसा प्रभु स्वयं होता है ।। १४९ ।। ऊँचे महल, सोना और सुन्दर स्त्री और महल के शिखर पर फहराती हुई ध्वजा आदि की अपेक्षा तो माँग कर खाई रोटी अच्छी है जिसके कारण सन्त पुरुषों की संगत में बैठकर प्रभु का गुणानुवाद किया जाता है ।। १५० ।। हे कबीर, नगर से तो वह उजाड़ बस्ती ठीक है जहाँ पर प्रभु की भक्ति करने वाले भक्त निवास करते हैं। प्रभु के प्यारों के बिना तो मेरे लिए वह नगर यमपुरी के समान है ।। १५१ ।। कबीर ने तो गंगा-यमुना अर्थात इड़ा और पिंगला के बीच में सहज शून्य के स्थान पर अपना ठिकाना बनाया है और अब वह कबीर मुनिजनों का रास्ता देख रहा है ।। १५२ ।। हे कबीर, प्रभु की भक्ति जितने उत्साह के साथ प्रारम्भ हुई थी यदि वैसी ही अन्त तक चलती रहे तो यह हीरा, माणिक इत्यादि बेचारे क्या हैं; उस भक्ति के बराबर तो लाखों-करोड़ों रत्न भी नहीं हो सकते ।। १५३ ।। कबीर ने तो एक आश्चर्यजनक कौतुक देखा है कि प्रभु-नाम रूपी हीरा तथाकथित विद्वानों और पंडितों की दुकानों पर बिक रहा है। हीरे के वास्तविक व्यापारियों के अभाव में लोग इस प्रभु-नाम रूपी हीरे को कौड़ियों के बदले ले रहे हैं ।। १५४ ।। हे कबीर, जहाँ ज्ञान है वास्तविक धर्म वहीं है और जहाँ झूठ है वहीं पर पाप होता है। जहाँ लोभ है वहाँ तो मौत ही है और जहाँ क्षमा-भाव है वहाँ प्रभु स्वयं उपस्थित रहता है ।। १५५ ।। हे कबीर, यदि अभिमान का त्याग नहीं किया जा सका तो धन-सम्पदा को छोड़ देने से भी क्या होता है। इस अभिमान में ही श्रेष्ट मुनिवर मर-खप गए हैं और यह अभिमान ही सबको खा जाने वाला होता है ।। १५६ ।। कबीर का कथन है कि मैं सच्चे गुरु से मिला और उसने शब्द रूपी एक बाण मुझे मारा। बाण लगते ही मैं धरती पर जा पड़ा और मेरे हृदय में छेद हो गया अर्थात शब्द के हृदय से आर-पार होते ही मैं पूर्ण रूप से विनम्र और त्यागी हो गया हूँ ।। १५७ ।। हे कबीर, यदि सीखने वाले सिक्खों में ही कमी है तो भला सच्चा गुरु भी क्या कर सकता है क्योंकि जैसे बाँस को फूँक मार-मार कर बजाने से हवा इधर-उधर बाहर निकल जाती है उसी प्रकार अन्धे अज्ञानी व्यक्ति को भी कोई प्रभावित नहीं कर सकता ।। १५८ ।। हे कबीर, हाथी, घोड़ों,

है गै बाहन सघन घन छत्रपती की नारि ॥ तासु पटंतर ना पुजै हरि जन की पनिहारि ॥ १५९ ॥ कबीर त्रिप नारी किउ निंदीऐ किउ हरि चेरी कउ मानु ॥ ओह मांग सवारै बिखै कउ ओह सिमरै हरि नामु ॥ १६० ॥ कबीर थूनी पाई थिति भई सतिगुर बंधी धीर ॥ कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर तीर ॥ १६१ ॥ कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै मांडै हाट ॥ जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की साट ॥ १६२ ॥ कबीर काम परे हरि सिमरीऐ ऐसा सिमरहु नित ॥ अमरा पुर बासा करहु हरि गइआ बहोरै बित ॥ १६३ ॥ कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥ रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥ १६४ ॥ कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर ॥ इक अवघट घाटी राम की तिह चड़ि रहिओ कबीर ॥ १६५ ॥ कबीर दुनीआ के दोखे मूआ चालत कुल की कानि ॥ तब कुलु किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि ॥ १६६ ॥ कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि ॥ पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु ॥ १६७ ॥ कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु ॥ दावा काहू को नही बडा देसु बड राजु ॥ १६८ ॥ कबीर दावै दाझनु होतु है निरदावै रहै निसंक ॥ जो जनु निरदावै रहै सो गनै इंद्र सो रंक ॥ १६९ ॥ कबीर पालि समुहा सरवरु भरा पी न सकै कोई नीरु ॥ भाग बडे तै पाइओ तूं भरि भरि पीउ कबीर ॥ १७० ॥ कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु ॥ ए दुइ अखर ना खिसहि सो गहि रहिओ कबीरु ॥ १७१ ॥ कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि ॥ पंडित पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि ॥ १७२ ॥ कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ ॥ बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥ १७३ ॥ कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥ मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥ १७४ ॥ कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥ जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥ १७५ ॥ कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥ कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥ १७६ ॥ कबीर भली भई जो भउ

अनेकों रथों वाली राजा की रानी भी हो फिर भी वह प्रभु के सेवक का पानी भरने वाली पनिहारिन के बराबर भी नहीं पहुँच सकती ।। १५९ ।। हे कबीर, राजा की रानी की निन्दा क्यों की जाती है और प्रभु की दासी को सम्मान क्यों दिया जाता है। रानी तो विषय-विकारों के लिए अपनी माँग और सिर का सिंगार करती है परन्तु प्रभु की दासी तो केवल प्रभु-नाम का ही सुमिरन करती रहती है ।। १६० ।। हे कबीर, जीव रूपी स्त्री को प्रभु-नाम रूपी स्तम्भ मिल गया और सच्चे गुरु ने उसे आसरा दे दिया तो वह अच्छी तरह स्थित और स्थिर हो जाती है। हे कबीर, अब वह रत्नों के भंडार मानसरोवर रूपी सत्संगत में बैठकर नाम रूपी हीरे को प्राप्त करती है ।। १६१ ।। हे कबीर, प्रभु रूपी हीरे को लेकर प्रभु का सेवक जौहरी अपनी शरीर रूपी दुकान सजाता है और जब वह वास्तव में किसी हीरे को परखने वाले को पा जाता है तभी वह हीरे को उसे देता है ।। १६२ ।। हे कबीर, काम पड़ने पर जैसे प्रभु को याद किया जाता है तो उसका ऐसा सुमिरन सदैव करते रहना चाहिए। इस प्रकार अमर पुरी में अपना निवास बना लो और प्रभु रूपी खोए हुए धन को वापस प्राप्त कर लो ।। १६३ ।। हे कबीर, प्रभु का सन्त और प्रभु दोनों ही सेवा के लिए उत्तम हैं क्योंकि राम तो मुक्ति का दाता है और सन्त उस प्रभु का नाम सुमिरन करवाता है ।। १६४ ।। हे कबीर, जिस मार्ग पर पंडित लोग जाते हैं आम व्यक्ति भीड़ बनाकर उन्हीं के मार्ग पर चलते हुए कर्मकाण्डी धर्म मानते रहते हैं। कबीर तो प्रभु की कठिन और विषम घाटी पर ही चढ़कर अकेला ही उस प्रभु का सुमिरन करता है ।। १६५ ।। कबीर तो अपने परिवार की चिन्ता और लज्जा में डूबा हुआ ही मरा रहा है। जब उठाकर इसे लोग शमशान घाट पर ले जाएंगे तब भला इसके परिवार की लज्जा अथवा मान-सम्मान का क्या होगा ।। १६६ ।। हे बेचारे कबीर, तू तो लोक लाज में ही डूबा हुआ मर जाएगा। जो कुछ तेरे पड़ोसी के साथ हो रहा है तू यह मान ले कि यह तेरे साथ भी होगा ।। १६७ ।। हे कबीर, प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए शरीर के पालन के लिए जो अन्न माँगा जाता है वह सबसे भला है क्योंकि उसमें कई प्रकार का अनाज होता है। उस पर किसी एक के देने का दावा नहीं होता और लेने वाले का देश और राज सब ओर बड़े रूप में फैला रहता है अर्थात वह किसी बन्धन में नहीं होता, कहीं से भी प्राप्त कर सकता है ।। १६८ ।। हे कबीर, अनेक प्रकार के दावे रखने से व्यक्ति दुखी बना रहता है और कोई भी दावा ना रखने से व्यक्ति चिन्तामुक्त बना रहता है। जो व्यक्ति चिन्तामुक्त होता है वह तो अपने सामने इन्द्र जैसे लोगों को भी कंगाल ही मानता है ।। १६६ ।। हे कबीर, प्रभु-नाम रूपी सरोवर किनारों तक पूरा भरा हुआ है परन्तु फिर भी इस जल को कोई भी नहीं पी पाता। हे कबीर, तूने बड़े भाग्य से इसको पा लिया है इसलिए अब तू हृदय रूपी बर्तन में नाम रूपी जल को भर-भरकर पीता रह ।। १७० ।। हे कबीर, सुबह जैसे तारागण की रोशनी घटने लगती है उसी तरह यह शरीर भी क्षीण हो रहा है। राम नाम के दो अक्षर कभी क्षीण नहीं होते और कबीर ने इन्हीं को पकड़ रक्खा है ।। १७१ ।। हे कबीर, इस संसार रूपी लकड़ी के मकान में दसों दिशाओं से आग लग गई है। इसमें विद्याभिमानी पंडित तो जल मरे हैं परन्तु विनम्रतापूर्ण तथाकथित मूर्ख इस माया रूपी अग्नि से दूर भाग कर बच गए हैं ।। १७२ ।। हे कबीर, कागजों पर लिखे हुए तथाकथित ज्ञान को पानी में बहा दे और अपने संशय को मन से दूर कर दे। बावन अक्षरों मे लिखे हुए वेद-शास्त्रों के ज्ञान के सारतत्व को खोजकर प्रभु के चरणों में अपना चित्त लगाए रख ।। १७३ ।। हे कबीर, करोड़ों असन्त मिलने पर भी सन्तजन अपना शान्त स्वभाव नहीं छोड़ते। चन्दन के वृक्ष के चारों ओर साँप लिपटे हुए माने जाते हैं परन्तु फिर भी वह अपनी शीतलता का त्याग नहीं करता ।। १७४ ।। हे कबीर, जब ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हो गया तो यह मन शान्त और शीतल हो गया है। माया और तृष्णा की जिस ज्वाला ने सारे संसार को जलाए रखा है वह अब प्रभु के सेवक के लिए शीतल जल के समान हो गई है ।। १७५ ।। हे कबीर, उस सृजनहार प्रभु के खेल को कोई नहीं जानता। वह मालिक या तो स्वयं जानता है अथवा उसके पास बसने वाला उसका दास जानता है ।। १७६ ।। हे कबीर,

परिआ दिसा गईं सभ भूलि ॥ ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि ॥ १७७ ॥ कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बांधी देह ॥ दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह ॥ १७८ ॥ कबीर सूरज चांद कै उदै भई सभ देह ॥ गुर गोबिंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह ॥ १७९ ॥ जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥ कहिओ कबीर बिचारि कै संत सुनहु मन माहि ॥ १८० ॥ कबीर जिनहु किछू जानिआ नही तिन सुख नीद बिहाइ ॥ हमहु जु बूझा बूझना पूरी परी बलाइ ॥ १८१ ॥ कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै अउर ॥ लागी चोट मरंम की रहिओ कबीरा ठउर ॥ १८२ ॥ कबीर चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उसास ॥ चोट सहारै सबद की तासु गुरू मै दास ॥ १८३ ॥ कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ॥ जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥ १८४ ॥ सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ ॥ कबीर जा की दिल साबति नही ता कउ कहां खुदाइ ॥ १८५ ॥ कबीर अलह की करि बंदगी जिह सिमरत दुखु जाइ ॥ दिल महि सांई परगटै बुझै बलंती नांइ ॥ १८६ ॥ कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु ॥ दफतरि लेखा मांगीऐ तब होइगो कउनु हवालु ॥ १८७ ॥ कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अंम्रितु लोनु ॥ हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु ॥ १८८ ॥ कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥ हरख सोग दाझै नही तब हरि आपहि आपि ॥ १८९ ॥ कबीर राम कहन महि भेदु है ता महि एकु बिचारु ॥ सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार ॥ १९० ॥ कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥ एकु अनेकहि मिलि गइआ एक समाना एक ॥ १९१ ॥ कबीर जा घर साध न सेवीअहि हरि की सेवा नाहि ॥ ते घर मरहट सारखे भूत बसहि तिन माहि ॥ १९२ ॥ कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥ पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥ १९३ ॥ कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥ लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥ १९४ ॥ कबीर निरमल बूंद अकास की परि गई भूमि

यह तो अच्छा ही हुआ कि विभिन्न दिशाओं के अभिमान और कर्मकाण्ड मुझे भूल ही गए हैं। ओला जो कि जल से अपने आपको अपने अभिमान के कारण अलग समझता था अब प्रभु के भय की आँच को प्राप्त करके पुनः प्रभु रूपी नदी में ही जा मिला है ।। १७७ ।। हे कबीर, मिट्टी को इकट्ठा करके शरीर रूपी पुड़िया बाँधी गई है। यह केवल चार दिन का ही दिखावा है और अन्त में यह फिर मिट्टी की मिट्टी ही हो जाएगी ।। १७८ ।। हे कबीर, दिनरात के निकलने और होने अर्थात काल (समय) के अन्दर ही यह सब शरीर बनाए गए हैं परन्तु प्रभु गुरु से मिले बिना ये सब मिट्टी ही बनते रहते हैं ।। १७६ ।। जहाँ भय मुक्त ज्ञान है वहाँ वास्तव में कोई भय नहीं रहता, जहाँ अनेकों भय और संशय बने रहते हैं वहाँ प्रभु का निवास नहीं होता। हे सन्तजनों, इसे मन लगाकर सुन लो क्योंकि कबीर ने भी इसे सोच-समझकर ही कहा है ।। १८० ।। हे कबीर, जिन्होंने कुछ भी जाना-बूझा नहीं है वे विचारहीन बनकर सुख की नींद सोते हैं। हमने जो उस जानने योग्य को जाना-बूझा तो हमारे तो गले बला ही आ लगी अर्थात हम मुसीबत में फँस गए क्योंकि अब हमें अपने सभी अवगुणों को छोड़ना पड़ा है ।। १८१ ।। हे कबीर, सांसारिक चोटों से पीड़ा होती है तो पीड़ाग्रस्त व्यक्ति बार-बार चिल्लाता है परन्तु यदि प्रभु प्रेम की वास्तविक चोट लगे तो हे कबीर, व्यक्ति स्थिर हो कर बोलने से भी चला जाता है ।। १८२ ।। हे कबीर, भाले की चोट सहना सरल है क्योंकि उसके लगने पर भी व्यक्ति साँस तो ले सकता है परन्तु शब्द की चोट व्यक्ति के अहं को पूर्णतया ध्वस्त कर देती है। जो शब्द की चोट सह ले वह मेरा गुरु है और मैं उसका दास हूँ ।। १८३ ।। कबीर का कथन है कि हे मुल्ला, तू मीनार पर चढ़कर क्या कर रहा है क्योंकि वह मालिक (खुदा) बहरा नहीं है। जिसके लिए तू बाँग देता है उसे तू अपने हृदय में ही झाँक कर देख ले ।। १८४ ।। हे शेख, सन्तोष विहीन होकर तू काबा में कौन सा हज़ करने जा रहा है। हे कबीर, जिसका हृदय पूर्ण रूप से स्वच्छ और ठीक नहीं है उसे भला खुदा से क्या लेना देना है ।। १८५ ।। हे कबीर, अल्लाह की बन्दगी कर जिसके सुमिरन से दुख चला जाता है। उस बन्दगी के कारण ही वह मालिक हृदय में प्रकट होता है और उसके नाम से तृष्णा रूपी जलती हुई अग्नि बुझ जाती है ।। १८६ ।। हे कबीर, जोर-जबरदस्ती का अत्याचार तू करता है और उसे तू हलाल का नाम देता है। जब प्रभु के बड़े दफ्तर में लेखा-जोखा किया जाएगा तब तेरा क्या हाल होगा ।। १८७ ।। हे कबीर, तू तो अमृत रूपी नमक वाली खिचड़ी ही पेट भर कर खाता रह क्योंकि माँस इत्यादि स्वाद वाले पदार्थों की रोटी खाकर अपनी जीभ के चस्के के कारण भला कौन अपना गला कटवाएगा ।। १८८ ।। हे कबीर, गुरु के चरणों में लगा हुआ व्यक्ति तभी माना जाएगा जब उसका मोह और तन के रोग दूर हो जाएं। ऐसे व्यक्ति को हर्ष और शोक जला नहीं पाते और फिर वह तथा प्रभु एक ही हो जाते हैं ।। १८६ ।। हे कबीर, राम कहने में भी भेद है और उसमें भी एक विशेष विचार है। उसी को ही लोग रामचन्द्र के लिए भी प्रयुक्त करते हैं और जो सभी कौतुकों को करने वाला प्रभु है उसे भी राम ही कहा जाता है ।। १६० ।। हे कबीर, तू राम ही राम कहता रह, परन्तु राम कहते हुए विवेकपूर्ण बना रह। एक राम तो केवल अपने शरीर तक सीमित है और एक राम सब में रमण करता हुआ एक से अनेक बना हुआ है ।। १६१ ।। हे कबीर, जिस घर में प्रभु और साधु की सेवा नहीं की जाती ऐसे घर मरघट के समान हैं और ऐसे घरों में तो भूतों का ही निवास होता है ।। १६२ ।। हे कबीर, जब सच्चे गुरु ने अपना शब्द रूपी बाण मार दिया तो मैं गूंगा, बावरा, कान से बहरा और पाँव से लंगड़ा हो गया अर्थात अब मैं अपने मन के वश में नहीं रहा और मेरे सारे अंग अब बुरी ओर से हट कर मेरे अच्छे जीवन में सहायक हो गए हैं ।। १६३ ।। हे कबीर, उस शूरवीर सच्चे गुरु ने मुझे शब्द और प्रेम का ऐसा बाण मारा है जिसे लगते ही मैं अभिमान रहित होकर धरती पर गिर पड़ा हूँ और मेरे हृदय में छेद ही हो गया है अर्थात अब मैं इसमें से आर-पार झाँक कर देख सकता हूँ तथा अवगुणों को अच्छी तरह पहचान सकता हूँ ।। १६४ ।। हे कबीर, गुरु की शिक्षा रूपी निर्मल बूंद आकाश से मैले हृदय रूपी निकम्मी धरती पर आ पड़ी है

बिकार ॥ बिनु संगति इउ मांनई होइ गई भठ छार ॥ १९५ ॥ कबीर निरमल बूंद अकास की लीनी भूमि मिलाइ ॥ अनिक सिआने पचि गए ना निरवारी जाइ ॥ १९६ ॥ कबीर हज काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ ॥ सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ ॥ १९७ ॥ कबीर हज काबै होइ होइ गइआ केती बार कबीर ॥ सांई मुझ महि किआ खता मुखहु न बोलै पीर ॥ १९८ ॥ कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु ॥ दफतरु दई जब काढि है होइगा कउनु हवालु ॥ १९९ ॥ कबीर जोरु कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ ॥ दफतरि लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाइ ॥ २०० ॥ कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइ ॥ उसु साचे दीबान महि पला न पकरै कोइ ॥ २०१ ॥ कबीर धरती अरु आकास महि दुइ तूं बरी अबध ॥ खट दरसन संसे परे अरु चउरासीह सिध ॥ २०२ ॥ कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥ तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥ २०३ ॥ कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥ जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥ २०४ ॥ कबीर बिकारह चितवते झूठे करते आस ॥ मनोरथु कोइ न पूरिओ चाले ऊठि निरास ॥ २०५ ॥ कबीर हरि का सिमरनु जो करै सो सुखीआ संसारि ॥ इत उत कतहि न डोलई जिस राखै सिरजनहार ॥ २०६ ॥ कबीर घाणी पीड़ते सतिगुर लीए छडाइ ॥ परा पूरबली भावनी परगटु होई आइ ॥ २०७ ॥ कबीर टालै टोलै दिनु गइआ बिआजु बढंतउ जाइ ॥ ना हरि भजिओ न खतु फटिओ कालु पहूंचो आइ ॥ २०८ ॥ महला ५ ॥ कबीर कूकरु भउकना करंग पिछै उठि धाइ ॥ करमी सतिगुरु पाइआ जिनि हउ लीआ छडाइ ॥ २०९ ॥ महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥ २१० ॥ महला ५ ॥ कबीर चावल कारने तुख कउ मुहली लाइ ॥ संगि कुसंगी बैसते तब पूछै धरम राइ ॥ २११ ॥ नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥ काहे छीपहु छाइलै राम न लावहु चीतु ॥ २१२ ॥ नामा कहै

परन्तु सत्संगत के बिना इसे भट्ठी की राख के समान ही समझो अर्थात सत्संगत के माध्यम से ही गुरु की शिक्षा प्रभावपूर्ण बनती है ।। १६५ ।। हे कबीर, आकाश की निर्मल बूंद को अधिकारी हृदय रूपी भूमि आत्मसात कर लेती है। अब बेशक अनेकों चतुर व्यक्ति मरते-खपते रहें परन्तु गुरु की उस शिक्षा रूपी बूंद का प्रभाव कम नहीं होता ।। १६६ ।। हे कबीर, मैं काबा में हज के लिए गया तो वहाँ मुझे खुदा मिला। मेरा मालिक मुझसे लड़ पड़ा और उसने मुझसे पूछा कि तुझे यहाँ बलि देने के लिए पशुओं और गाय आदि की कुर्बानी देने के लिए भला किसने कहा था ।। १६७ ।। कबीर तो काबा में कई बार हज करने के लिए गया और आया परन्तु हे मेरे मालिक, मुझसे कौन सी भूल हो गई कि काबा का पीर वह अल्लाह मुझसे बात ही नहीं करता ।। १६८ ।। हे कबीर, जोर-जबरदस्ती से कुर्बानी के लिए जब जीवों को मारते हो तो तुम उसे हलाल का नाम देते हो; जब विधाता अपने दफ्तर में तुम्हारा लेखा-जोखा देखेगा तो तुम्हारा क्या हाल होगा ।। १६६ ।। हे कबीर, जो जोर और जबरदस्ती की गई वह अत्याचार है और खुदा इसका जवाब लेगा। दफ्तर में जब हिसाब निकाला जाएगा तो सीधे मुँह पर ही चोटें खानी पड़ेंगी ।। २०० ।। हे कबीर, यदि हृदय पवित्र हो तो यह हिसाब-किताब देना सरल हो जाता है क्योंकि उस प्रभु के सच्चे दरबार में अन्य कोई भी हाथ थामने वाला नहीं होता ।। २०१ ।। कबीर कहता है कि इस धरती और आकाश में हे द्वैतभावना, तू तो सारी सृष्टि में कभी भी नष्ट ना होने वाले रूप में फैली हुई है। इसी करण छः दर्शन और चौरासी सिद्ध तथा उनके सम्प्रदाय सदैव शंकाओं में ही घिरे रहते हैं ।। २०२ ।। कबीर का कथन है कि हे प्रभु, मेरा तो मुझ में कुछ भी नहीं है, जो कुछ भी है वह सब तेरा ही है। अब तेरा ही तुझको सौंपते हुए भला मेरा क्या जाता है ।। २०३ ।। कबीर तो तू-तू करता हुआ तू ही हो गया और अब मुझमें अभिमान का भाव नहीं बचा है। जब अपने और पराए की भावना दूर हो गई तो फिर हे प्रभु, मैं जिधर भी देखता हूँ उधर तू ही तू दिखाई देता है ।। २०४ ।। हे कबीर, विकारों को ही ध्यान में रखते हुए जो झूठी आशाएँ लगाए रहते हैं उनका कोई भी लक्ष्य पूरा नहीं होता और वे निराश होकर यहाँ से चल पड़ते हैं ।। २०५ ।। हे कबीर, जो प्रभु का सुमिरन करता है वही इस संसार में सुखी है। जिसे वह प्रभु सबका सृजनहार बचाए रखता है वह यहाँ-वहां कभी भी नहीं भटकता ।। २०६ ।। हे कबीर, हमें तो सच्चे गुरु ने बचा लिया अन्यथा हम भी कोल्हू की घानी में पेर दिए जाते। यह तो कोई पूर्व से बना हुआ लेख ही जग उठा जिससे हमारा बचाव हो गया है ।। २०७ ।। हे कबीर, इधर-उधर करते हुए और टालमटाल करते हुए दिन बीत गया और बुरे संस्कारों का ब्याज अब बढ़ता ही जा रहा है। ना तो हमने प्रभु का सुमिरन किया और ना ही हमारे कर्जे वाला कागज़ फट पाया तथा काल अब हमारे सिर पर आ पहुँचा है ।। २०८ ।। महला ५ ।। कबीर, यह मन रूपी कुत्ता तो मुर्दा शरीर के लिए भौंकता ही रहता है और मुर्दा खाने के लिए अर्थात हराम का माल पाने के लिए उठकर भागदौड़ मचाए रहता है। सच्चा गुरु तो अच्छे भाग्य से ही प्राप्त होता है जिसने हमें सारी भाग-दौड़ से बचा लिया है ।। २०६ ।। महला ५ ।। हे कबीर, शरीर रूपी यह धरती तो साधु पुरुषों की थी परन्तु इस स्थान पर विकार आदि चोरों ने कब्जा कर लिया है। साधु-सन्तो की इस धरती में चोरों के आ बैठने पर भी साधुजनों को तो कोई बोझ प्रतीत नहीं होता अपितु चोरों को लाभ ही लाभ प्राप्त होता है क्योंकि साधु-पुरुषों की संगत में वे भी भले बन जाते हैं ।। २१० ।। महला ५ ।। हे कबीर, चावलों के लिए उसके छिलकों को भी मूसल की मार सहनी पड़ती है। इसी प्रकार कुसंगत में जब अच्छा व्यक्ति भी बैठता है तो धर्मराज उसकी भी जाँच-पड़ताल करता है ।। २११ ।। नामदेव का मित्र त्रिलोचन कहता है कि हे नामदेव, तू तो माया में मोहित बना बैठा है। तू कपड़े की छापागीरी में ही लीन बना हुआ है और सबमें रमण करने वाले उस प्रभु में चित्त क्यों नहीं लगाता ।। २१२ ।। नामदेव त्रिलोचन से कहता है

तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥ हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥ २१३ ॥ महला ५ ॥ कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥ २१४ ॥ कबीर कीचड़ि आटा गिरि परिआ किछू न आइओ हाथ ॥ पीसत पीसत चाबिआ सोई निबहिआ साथ ॥ २१५ ॥ कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥ काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥ २१६ ॥ कबीर लागी प्रीति सुजान सिउ बरजै लोगु अजानु ॥ ता सिउ टूटी किउ बनै जा के जीअ परान ॥ २१७ ॥ कबीर कोठे मंडप हेतु करि काहे मरहु सवारि ॥ कारजु साढे तीनि हथ घनी त पउने चारि ॥ २१८ ॥ कबीर जो मै चितवउ ना करै किआ मेरे चितवे होइ ॥ अपना चितविआ हरि करै जो मेरे चिति न होइ ॥ २१९ ॥ मः ३ ॥ चिंता भि आपि कराइसी अचिंतु भि आपे देइ ॥ नानक सो सालाहीऐ जि सभना सार करेइ ॥ २२० ॥ मः ५ ॥ कबीर रामु न चेतिओ फिरिआ लालच माहि ॥ पाप करंता मरि गइआ अउध पुनी खिन माहि ॥ २२१ ॥ कबीर काइआ काची कारवी केवल काची धातु ॥ साबतु रखहि त राम भजु नाहि त बिनठी बात ॥ २२२ ॥ कबीर केसो केसो कूकीऐ न सोईऐ असार ॥ राति दिवस के कूकने कबहू के सुनै पुकार ॥ २२३ ॥ कबीर काइआ कजली बनु भइआ मनु कुंचरु मय मंतु ॥ अंकसु ग्यानु रतनु है खेवटु बिरला संतु ॥ २२४ ॥ कबीर राम रतनु मुखु कोथरी पारख आगै खोलि ॥ कोई आइ मिलैगो गाहकी लेगो महगे मोलि ॥ २२५ ॥ कबीर राम नामु जानिओ नही पालिओ कटकु कुटंबु ॥ धंधे ही महि मरि गइओ बाहरि भई न बंब ॥ २२६ ॥ कबीर आखी केरे माटुके पलु पलु गई बिहाइ ॥ मनु जंजालु न छोडई जम दीआ दमामा आइ ॥ २२७ ॥ कबीर तरवर रूपी रामु है फल रूपी बैरागु ॥ छाइआ रूपी साधु है जिनि तजिआ बादु बिबादु ॥ २२८ ॥ कबीर ऐसा बीजु बोइ बारह मास फलंत ॥ सीतल छाइआ गहिर फल पंखी केल करंत ॥ २२९ ॥ कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवंत ॥ पंखी चले दिसावरी बिरखा सुफल फलंत ॥ २३० ॥ कबीर साधू

कि हे त्रिलोचन, तू मुख से तो प्रभु का जाप कर, हाथ-पाँव से सारे काम करता रह तथा अपना चित्त उस निरंजन प्रभु में लगाए रख ।। २१३ ।। महला ५ ।। हे कबीर, हमारा यहाँ कोई नहीं है ना ही हम किसी के हैं। जिसने यह सारी रचना बनाई है यह फिर वापस उसी में ही लीन हो जाती है ।। २ ।। ४ ।। हे कबीर, इस संसार रूपी कीचड़ में हमारा श्वास रूपी आटा गिर पड़ा है और हमारे हाथ में कुछ भी बाकी नहीं बचा है। अब इस जीवन रूपी चक्की को पीसते-पीसते जो प्रभु-नाम रूपी आटा चबा लिया जाता है वास्तव में वही अन्त में साथ निभता है ।। २१५ ।। हे कबीर, यह मन उलटी-सीधी सभी बातें जानता है परन्तु जानता बूझता हुआ भी बुरे काम करता रहता है। इसे भला सुख कैसे मिलेगा यदि इसके हाथ में दीपक हो और फिर भी यह कुँए में गिर पड़े ।। २१६ ।। हे कबीर, हमारी प्रीति तो उस सुजान पुरुष से लग गई है परन्तु ये अनजान लोग मुझे प्रीति करने से मना कर रहे हैं। जिसका यह जीवन और प्राण हैं उससे भला प्रीति को कैसे तोड़ा जा सकता है ।। २१७ ।। हे कबीर, बड़े-बड़े मकान और मण्डपों से हित करते हुए क्यों मरे जा रहे हो क्योंकि तुम्हारे लिए तो केवल साढ़े तींन हाथ या ज्यादा से ज्यादा पौने चार हाथ धरती की ही जरूरत है ।। २१८ ।। हे कबीर, जो मैं सोचता हूँ वह प्रभु नहीं करता और मेरे सोचने के अनुसार भला क्या हो सकता है। प्रभु तो केवल अपना सोचा हुआ ऐसा काम करता है जो मेरे चित्त और मन में भी नहीं होता ।। २१६ ।। महला ३ ।। वह चिन्ता भी स्वयं ही कराता है और बिना चिन्ता कराए हुए अपने आप ही देता जाता है। हे नानक, हमें तो उस प्रभु की प्रशंसा करते रहना चाहिए जो सबकी रक्षा करता है ।। २२० ।। महला ५ ।। हे कबीर, जिसने राम का सुमिरन नहीं किया और लालच में ही इधर-उधर भटकता रहा। वह पाप करता हुआ ही मर गया और क्षण भर में ही उसकी सारी आयु पूरी हो गई है ।। २२१ ।। हे कबीर, यह तेरा शरीर केवल कच्ची मिट्टी की धातु से बना हुआ है। यदि तू इसे ठीक-ठाक रखना चाहता है तो प्रभु-नाम का जाप कर नहीं तो तेरी बात तो बिगड़ी हुई ही है ।। २२२ ।। हे कबीर, निश्चिन्त होकर सोना नहीं चाहिए और प्रभु-नाम की पुकार लगाते रहना चाहिए। रात-दिन पुकारने से वह कभी तो पुकार सुन ही लेगा ।। २२३ ।। हे कबीर, यह शरीर कदलीवन के समान है जिसमें मन रूपी मदमस्त हाथी रहता है। इस घाटी को नियन्त्रण में रखने के लिए ज्ञान रत्न इसका अंकुश है और कोई बिरला सन्त ही इसको नियन्त्रण में रखने वाला होता है ।। २२४ ।। हे कबीर, प्रभु रत्नों वाली पोटली किसी परख करने वाले के समाने ही खोलनी चाहिए क्योंकि कोई बिरला ग्राहक ही मिलता है जो इसको महंगे मोल में ले लेता है ।। २२५ ।। हे कबीर, तू बहुत लम्बे चौड़े कुटुम्ब का ही पालन करता रहा और तूने राम नाम को बिल्कुल ही नहीं जाना है। तू व्यर्थ के धन्धों में लगा हुआ ही मरता रहा और बाहर किसी को खबर तक भी नहीं हुई कि तू कब चल बसा ।। २२६ ।। हे कबीर, पल-पल बीतते हुए पलक झपकने जैसे समय में ही तेरी सारी आयु व्यतीत हो गई है परन्तु मन ने अभी भी सांसारिक जंजाल को नहीं छोड़ा ; बेशक यम सामने खड़ा ले जाने के लिए नगाड़ा बजा रहा है ।। २२७ ।। हे कबीर, वह प्रभु वृक्ष रूप है जिसमें प्रेम और वैराग्य रूपी फल लगा है। वे साधूजन उसकी छाया के रूप हैं जिन्होंने हर प्रकार का वाद-विवाद छोड़ दिया है ।। २२८ ।। हे कबीर, तू ऐसा बीज बो जो बारहों मास फल देने वाला हो। जिसकी छाया शीतल और गहरी हो और उसमें फल भी बहुत लगते हों तथा पक्षी उस पर किलकारियाँ मारते रहते हों ।। २२६ ।। हे कबीर, वह दाता रूपी वृक्ष प्रभु दया रूपी फल धारण किए रहता है और जीवों पर उपकार करता रहता है। उस पर से पक्षी चारों दिशाओं में उड़ते रहते हैं और हे प्रभु रूपी वृक्ष, तू सदैव फलयुक्त ही बना रह ।। २३० ।। हे कबीर,

संगु परापती लिखिआ होइ लिलाट ॥ मुकति पदारथु पाईऐ टाक न अवघट घाट ॥ २३१ ॥ कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥ भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥ २३२ ॥ कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि ॥ तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जांहि ॥ २३३ ॥ नीचे लोइन करि रहउ ले साजन घट माहि ॥ सभ रस खेलउ पीअ सउ किसी लखावउ नाहि ॥ २३४ ॥ आठ जाम चउसठि घरी तुअ निरखत रहै जीउ ॥ नीचे लोइन किउ करउ सभ घट देखउ पीउ ॥ २३५ ॥ सुनु सखी पीअ महि जीउ बसै जीअ महि बसै कि पीउ ॥ जीउ पीउ बूझउ नही घट महि जीउ कि पीउ ॥ २३६ ॥ कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥ अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥ २३७ ॥ हरि है खांडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइ ॥ कहि कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइ कै खाइ ॥ २३८ ॥ कबीर जउ तुहि साध पिरंम की सीसु काटि करि गोइ ॥ खेलत खेलत हाल करि जो किछु होइ त होइ ॥ २३९ ॥ कबीर जउ तुहि साध पिरंम की पाके सेती खेलु ॥ काची सरसउं पेलि कै ना खलि भई न तेलु ॥ २४० ॥ ढूंढत डोलहि अंध गति अरु चीनत नाही संत ॥ कहि नामा किउ पाईऐ बिनु भगतहु भगवंतु ॥ २४१ ॥ हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥ ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥ २४२ ॥ कबीर जउ ग्रिहु करहि त धरमु करु नाही त करु बैरागु ॥ बैरागी बंधनु करै ता को बडो अभागु ॥ २४३ ॥

सलोक सेख फरीद के ੧ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

जितु दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥ मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ ॥ जिंदु निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ॥ साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइ ॥ जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ॥ आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइ ॥ वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणी आइ ॥ फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आपु मुहाइ ॥ १ ॥ फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलां दुनीआं भति ॥

यदि माथे पर भाग्य लेख लिखा हो तभी साधु पुरुष की संगत प्राप्त होती है। उसी से ही मुक्ति रूपी पदार्थ प्राप्त होता है और विषम मार्ग पर कोई रुकावट सामने नहीं आती ।। २३१ ।। हे कबीर, एक घड़ी भर के लिए, आधी घड़ी के लिए और आधी से भी आधी घड़ी के लिए अर्थात जितने समय के लिए भी हो सके भक्तजनों के साथ विचार चर्चा करने का लाभ ही लाभ प्राप्त होता है ।। २३२ ।। हे कबीर, भाँग, मछली, शराब इत्यादि का सेवन जो भी प्राणी करता है उसके सभी तीर्थ, व्रत तथा संयम रसातल में चले जाते हैं ।। २३३ ।। अपने प्रियतम को हृदय में बसाकर आँखे नीची करके स्थित बने रहो और बिना किसी को दिखाए हुए अपने प्रियतम के साथ सभी प्रकार के रसों का आनन्द लेते रहना चाहिए ।। २३४ ।। हे प्रभु, आठों प्रहर और चौसठ घड़ी अर्थात सारा समय मेरा हृदय तुझे ही देखता रहता है। इसलिए मैं आँखे नीची क्यों करूं क्योंकि सभी के हृदय में मैं अपने प्रियतम को ही देखता हूँ ।। २३५ ।। हे सखी, तू बता प्रियतम में हृदय रहता है या हृदय में प्रियतम रहता है; मैं तो अब पहचान ही नहीं पाती कि हृदय कौन सा है और प्रियतम कौन सा है अर्थात दोनों का अन्तर मिट गया है ।। २३६ ।। हे कबीर, ब्राह्मण तो संसारी व्यक्तियों का गुरु है यह भक्तों का गुरु नहीं है क्योंकि यह तो चारों वेदों के ज्ञान के अभिमान में ही उलझा हुआ मर खप गया है ।। २३७ ।। प्रभु वह शक्कर है जो रेत में बिखरी हुई है और जिसे अभिमानी हाथी बनकर चुन-चुनकर नहीं खाया जा सकता। कबीर का कथन है कि गुरु ने मुझे यह भली शिक्षा दी है कि मैं इसे चींटी बनकर खा लूं ।। २३८ ।। हे कबीर, यदि तुझे प्रियतम प्रभु से मिलने की आकांक्षा बनी हुई है तो तू अपने सिर को काटकर अर्थात पूर्ण रूप से निरभिमान होकर उसे गेंद बना ले। फिर तू खेलते-खेलते ही प्रेम की मस्ती में पहुँच कर सूफियों के "हाल" की अवस्था में आ जा और फिर परवाह मत कर, जो होता है उसे होने दे ।। २३६ ।। हे कबीर, यदि तुझे प्रियतम को मिलने की इच्छा है तो किसी पक्के गुरु के साथ जीवन के खेल को खेलो क्योंकि कच्ची सरसों को पेरने से ना तो वह खल बनती है और ना ही वह तेल में परिवर्तित होती है ।। २४० ।। व्यक्ति अन्धे होकर इधर-उधर टटोलते रहते हैं परन्तु सन्तजनों की पहचान नहीं कर पाते। हे नामदेव, बता कि बिना भक्ति के उस प्रभु को कैसे पाया जा सकता है ।। २४१ ।। रविदास भी सत्य ही कहता है कि जो प्रभु को छोड़कर अन्यों पर आशा लगाए रखेंगे वे व्यक्ति निश्चित रूप से नरक में ही जाएँगे ।। २४२ ।। हे कबीर, यदि गृहस्थ जीवन अपनाना है तो अपना कर्तव्य कर्म पूरी तरह कर और यदि नहीं तो फिर पूर्ण रूप से वैराग्य धारण कर ले परन्तु जो वैराग्य धारण करके भी माया के बन्धन में पड़ा रहता है वह बहुत ही भाग्यहीन है ।। २४३ ।।

श्लोक शेख फरीद के　१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

जिस दिन इस जीव रूपी स्त्री का वरण (विवाह) हो जाना है वह समय पहले ही लिखा हुआ है अर्थात नियत किया हुआ है। मौत का फरिश्ता जिसे अब तक केवल कानों से सुना जाता था वह ठीक समय पर आकर अपना मुँह दिखा देता है। हड्डियों को तोड़ते-मरोड़ते हुए वह बेचारे प्राणों को शरीर से बाहर निकाल लेता है। इन प्राणों को यह समझाओ कि यह नियत किया हुआ समय कभी टल नहीं सकता। प्राण रूपी इस जीव स्त्री के साथ मौत रूपी दुल्हा विवाह करके उसे ले ही जाएगा। प्राणों को अपने हाथों से मौत के साथ भेजकर यह देही अब भला दौड़-दौड़कर किसके गले लगेगी। क्या इसने अपने कानों से यह नहीं सुना कि दोज़ख की आग पर बना हुआ बाल से भी बारीक वह पुल है जिस पर से सब को गुजरना पड़ता है। हे फरीद, तुझे सावधान रहने की आवाज लगातार दी जा रही है इसलिए फिर भी तू खड़ा-खड़ा ही मत लुटता रह ।। १ ।। हे फरीद, प्रभु के द्वार की फकीरी बहुत ही कठिन कार्य है परन्तु मैं दुनियादारों के ही ढ़ंग तरीकों से चलता जा रहा हूँ।

बंन्हि उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥ २ ॥ किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥ सांईं मेरै चंगा कीता नाही त हं भी दझां आहि ॥ ३ ॥ फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े संमलि बुकु भरी ॥ जे जाणा सहु नंढड़ा तां थोड़ा माणु करी ॥ ४ ॥ जे जाणा लड़ु छिजणा पीडी पाईं गंढि ॥ तै जेवडु मै नाहि को सभु जगु डिठा हंढि ॥ ५ ॥ फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥ आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥ ६ ॥ फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ॥ आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥ ७ ॥ फरीदा जां तउ खटण वेल तां तू रता दुनी सिउ ॥ मरग सवाई नीहि जां भरिआ तां लदिआ ॥ ८ ॥ देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥ अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥ ९ ॥ देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु ॥ सांई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु ॥ १० ॥ फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन ॥ साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन ॥ ११ ॥ फरीदा काली जिनी न राविआ धउली रावै कोइ ॥ करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥ १२ ॥ मः ३ ॥ फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे ॥ आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ ॥ एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥ १३ ॥ फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥ कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥ १४ ॥ फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ मती देदिआ नित ॥ जो सैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥ १५ ॥ फरीदा थीउ पवाही दभु ॥ जे सांई लोड़हि सभु ॥ इकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि ॥ तां साई दै दरि वाड़ीअहि ॥ १६ ॥ फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥ जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥ १७ ॥ फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥ किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥ १८ ॥ फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥ वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥ १९ ॥ फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥ अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओमि ॥ २० ॥ फरीदा राती वडीआं

यह मैंने जो फकीरी की पोटली सिर पर उठा रखी है अब इसे छोड़कर भला मैं कहां जाऊँ अर्थात मुझे इसकी लाज रखनी चाहिए ।। २ ।। मैं कुछ भी नहीं जान पा रहा हूँ और मुझे कुछ भी सुझाई नहीं देता क्योंकि यह संसार एक बहुत ही छुपी हुई आग की तरह है। मेरे मालिक खुदा ने मेरे साथ बहुत अच्छा ही किया है नहीं तो मैं भी इसी में जलता ही रहता ।। ३ ।। हे फरीद, यदि मुझे पता हो कि मेरे श्वास रूपी तिल के दाने मेरे पास कम हैं तो बहुत सम्भल-सम्भल कर उन्हें मुट्ठी में भरूँ अर्थात जीवन को विचारपूर्वक चलाऊँ। यदि मैं यह जान जाऊँ कि मेरा मालिक पति बाल स्वभाव वाला सरल और निष्कपट है तो मैं भी अपनी चतुराईयों पर ज्यादा गर्व करना छोड़कर अपनी चतुराईयों को कम करके उन पर अभिमान भी कम कर दूं ।। ४ ।। यदि मुझे पता हो कि तुझसे प्रेम की गाँठ इस संसार में आकर ढ़ीली पड़ जाएगी तो मैं इस गाँठ को बहुत पक्का कर लेता। हे प्रभु, मैंनें सारे संसार में ढूंढ कर यह देख लिया है कि मेरे लिए तेरे जैसा कोई नहीं ।। ५ ।। हे फरीद, यदि तू बहुत ही बुद्धिमान बनता है तो फिर पाप के काले लेखों को अपने लिए मत लिख और अपने गरेबान (हृदय) में तू अपना सिर झुकाकर अपनी अच्छाईयों-बुराईयों को अच्छी तरह देख ले ।। ६ ।। हे फरीद, जो तुझे मुक्कों से मारते हैं तू पलट कर उनको घूसों से मत मार क्योंकि इन मारने वालों के पाँव चूमकर ही अर्थात विनम्रता धारण करके ही अपने वास्तविक घर और ठिकाने पर पहुँचा जाता है ।। ७ ।। हे फरीद, जब प्रभु-नाम की कमाई करने का समय था तब तो तू दुनियादारी में लगा रहा। तेरी मौत की नींव ऊपर की ओर उठती हुई ठीक उसी समय तेरे तक आ पहुँची जब तूने अपने बोझ को भरकर लाद रखा था ।। ८ ।। हे फरीद, तू देख ले अब तेरी दाढ़ी भी सफेद हो गई है, तेरा अगला ठिकाना अब पास आ गया है और यह पिछला संसार अब दूर रह गया है (तू अभी भी खुदा को याद कर ले) ।। ६ ।। हे फरीद, तू यह भी देख ले कि ये संसार रूपी पदार्थ जो शक्कर के समान लगते थे अब विष के समान कड़वे हो गए हैं। अपने खुदा के बिना भला अपने दिल की पीड़ा अब किसके सामने कही जाए ।। १० ।। हे फरीद, संसार को देख-देखकर यह आँखें भी कमजोर हो गई हैं और सुन-सुनकर कान भी बहरे हो गए हैं। अब यह जवानी चली गई है और शरीर रूपी खेती पक गई है अर्थात अनेकों विधियों से बुढ़ापा आ गया है ।। ११ ।। हे फरीद, काले बालों के रहते हुए जिन्होंने उस खुदा को याद नहीं किया तो सफेद बालों वाले बुढ़ापे में भला कौन याद कर सकता है। तू अपने मालिक से प्रेम करता रह तभी तुझपर सदैव नया ही रंग चढ़ता रहेगा अर्थात जवानी-बुढ़ापे का कोई असर नहीं होगा ।। १२ ।। महला ३ ।। हे फरीद, यदि कोई प्रभु के नाम को चित्त में बसा ले तो उसके लिए काले और सफेद बाल एक जैसे ही हैं। परन्तु जैसा कि सब लोग सोचते हैं, प्रभु से लगाया हुआ प्रेम व्यक्ति खुद नहीं लगा सकता। यह प्रेम का प्याला तो उस प्रभु का है और उसे जो अच्छा लगता है वह उसी को देता है ।। १३ ।। हे फरीद, जिन आँखों ने इस सारे संसार को मोहित कर रखा था उन्हीं आँखों को जब अब मैं देखता हूँ तो पाता हूँ कि ये आँखे जो काजल की रेखा को भी सहन नहीं कर पाती थीं अब इन पर पक्षियों के बच्चे आ-आकर बैठे रहते हैं, अर्थात ये अब पत्थर बन गई हैं ।। १४ ।। हे फरीद, चीख-पुकार लगाते हुए भी और अच्छी सलाह देते हुए भी उस शैतान को अपने पर हावी करके जो तूने सब कुछ तबाह करवा लिया है वह सब तेरे हृदय में फिर भला कैसे वापस आ सकेगा ।। १५ ।। हे फरीद, यदि तू सर्वव्यापक प्रभु को खोज रहा है तो तू रास्ते की घास की तरह विनम्र हो जा; उस घास को कोई तो काटता है और कोई उसे रौंदता है परन्तु वह विनम्र होकर नीचे ही बनी रहती है और इस प्रकार ऊपर चलने वालों के पाँव के साथ लगकर वह खुदा के घर तक भी पहुँच जाती है ।। १६ ।। हे फरीद, मिट्टी की भी निन्दा मत करो क्योंकि मिट्टी जैसा भी कोई नहीं है। हमारे जीवन में तो यह हमारे पैरों के नीचे होती है परन्तु मरने पर यही हमारे ऊपर होती है ।। १७ ।। हे फरीद, यदि लोभ है तो प्रेम नहीं हो सकता, लोभ है तो प्रेम झूठा है। यदि छप्पर टूटा हुआ है तो बरसात में उसके नीचे भला कितना समय व्यतीत किया जा सकता है ।। १८ ।। हे फरीद, तू पौधों और काँटो को कुचलता हुआ यह जंगल-जंगल क्या घूम रहा है। वह खुदा तो हृदय में बसता है उसे जंगल में क्या ढूंढ़ रहा है ।। १६ ।। हे फरीद, इन अपनी टाँगों के बल से ही तू जमीन और पहाड़ पर घूमता रहा है परन्तु उसी फरीद को आज पास में पड़ा लोटा भी सौ कोस जितना दूर लगता है ।। २० ।। हे फरीद, अब यह जीवन रूपी रात बहुत लम्बी हो गई है और

धुखि धुखि उठनि पास ॥ धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥ २१ ॥ फरीदा जे मै होदा वारिआ मिता आइड़िआं ॥ हेड़ा जलै मजीट जिउ उपरि अंगारा ॥ २२ ॥ फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ॥ हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥ २३ ॥ फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥ चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु ॥ २४ ॥ भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥ जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥ २५ ॥ फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥ गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥ २६ ॥ फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओ मांझा दुधु ॥ सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु ॥ २७ ॥ फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥ जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥ २८ ॥ रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥ फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥ २९ ॥ अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ ॥ जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ॥ ३० ॥ साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥ पिरु वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥ ३१ ॥ साहुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥ ३२ ॥ नाती धोती संबही सुती आइ नचिंदु ॥ फरीदा रही सु बेड़ी हिंङु दी गई कथूरी गंधु ॥ ३३ ॥ जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥ फरीदा किती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥ ३४ ॥ फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहि विछावण लेफु ॥ एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ॥ ३५ ॥ बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥ फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥ ३६ ॥ फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥ इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥ ३७ ॥ फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ॥ लेखा रबु मंगेसीआ तू आंहो केर्हे कंमि ॥ ३८ ॥ फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घड़ीआलु ॥ एहु निदोसां मारीऐ हम दोसां दा किआ हालु ॥ ३९ ॥ घड़ीए घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाइ ॥ सो हेड़ा घड़ीआल जिउ डुखी रैणि विहाइ ॥ ४० ॥

मेरी पीठ के सभी तरफ जलन और पीड़ा महसूस हो रही है। धिक्कार है ऐसे लोगों के जीवन पर जिन्होंने एक खुदा को छोड़कर किसी अन्य पर आस लगाए रखी है ।। २१ ।। हे फरीद, यदि अपने मित्रों के आने पर मैंने कुछ भी छिपा कर रखा हो तो मेरा यह शरीर का माँस लाल-लाल अँगारों पर जल जाए ।। २२ ।। हे फरीद, किसान बोता तो यहाँ पर बबूल है और आशा करता है कि उस पर स्वादिष्ट अंगूर लगें। यह अजीब है कि यह ऊन की कताई-बुनाई करता रहता है परन्तु रेशम के वस्त्र पहनने की इच्छा बनाए रखता है अर्थात करता तो हलके काम है और फल बहुत बड़ा माँगता है ।। २३ ।। हे फरीद, मेरा प्रेम तो उस प्रियतम के साथ लगा हुआ है परन्तु उसकी ओर जाने वाली गली में कीचड़ है और उसका घर भी बहुत दूर है। यदि मैं उस ओर चलता हूँ तो मेरा कम्बल भीगता है और यदि मैं नहीं जाता तो मेरा प्रेम टूटता है ।। २४ ।। बेशक, मेरा कम्बल पूरी तरह भीग जाए परन्तु हे अल्लाह, तेरी कृपा की बारिश होती ही रहे। मैं अपने सज्जन प्रभु को अवश्य जाकर मिलूंगा ताकि मेरा प्रेम उससे टूटने ना पाए ।। २५ ।। हे फरीद, मैं तो पगड़ी को बचाने के चक्कर में ही हूं कि कहीं यह मैली ना हो जाए, परन्तु मेरी लापरवाह रूह नहीं जानती कि एक दिन तो मेरा सिर भी मिट्टी खाता हुआ मिट्टी में लोटेगा ।।२६ ।। हे फरीद, शक्कर, खाण्ड, मिश्री, गुड़, शहद और भैंस का दूध इत्यादि सभी वस्तुएँ मीठी हैं परन्तु हे प्रभु, ये सब तेरे बराबर कुछ भी नहीं हैं ।। २७ ।। हे फरीद, मेरी तो रोटी लकड़ी की तरह सूखी है और मेरी भूख ही मेरी साग-भाजी है जिसे खाकर मैं आनन्दित हूँ। जिन्होंने घी वाली चुपड़ी हुई रोटियाँ खाई हैं (और पाप कर्म किए हैं) वे बहुत दुख उठाएँगे ।। २८ ।। रूखा-सूखा खाकर ठण्डा पानी पीते रहो और हे फरीद, पराई चुपड़ी हुई रोटी अर्थात पराए ऐश्वर्य को देखकर अपना मन मत ललचाओ ।। २६ ।। मैंने तो केवल आज ही अपने प्रियतम पति के साथ रमण नहीं किया और मेरे अंग मुड़-मुड़कर शिथिल हुए पड़े हैं। उन दुहागिन स्त्रियों से पूछो कि वे अपनी रात प्रभु पति से मिले बिना कैसे गुजारती हैं ।। ३० ।। ससुराल में जिसे आसरा नहीं मिलता और पिता के घर अर्थात इस संसार में भी जिसका कोई ठिकाना नहीं है ऐसी नाम मात्र की सुहागिन को धन्य ही कहा जा सकता है जिसका प्रियतम उसकी बात भी नहीं पूछता अर्थात उसकी तरफ ध्यान भी नहीं देता ।। ३१।। जीव स्त्री तो ससुराल और पिता के घर अर्थात इस लोक और परलोक दोनों में ही प्रियतम प्रभु की होकर रहती है और वह प्रियतम प्रभु अगम्य और अथाह है। हे नानक, वास्तव में सुहागिन वही है जो उस बेपरवाह प्रभु को भा जाती है ।। ३२ ।। नहा-धोकर, सज सँवर कर तू निश्चिंत होकर इस संसार में सोती ही रही है। परिणाम स्वरूप इस जीवन में प्रभु-नाम की कस्तूरी की सुगन्ध जो तुझे मिलनी थी उसका अवसर तो तूने गँवा दिया और तू हींग की बदबू में ही लिपटी रही है ।। ३३ ।। जवानी के चले जाने का मुझे कोई डर नहीं है यदि उस परमात्मा से मेरी प्रीति भी ना चली जाए। हे फरीद, प्रभु प्रेम से विहीन कितने ही लोगों का यौवन सूखकर कुम्हला गया है उनकी गिनती ही नहीं की जा सकती ।। ३४ ।। हे फरीद, प्रभु का चिन्तन तेरा पलंग है जो दुख की रस्सियों से बुना हुआ है और प्रभु का विरह बिछौना और रज़ाई है। हे सच्चे साहिब, तू ही देख कि हमारा जीवन तो इस प्रकार का है ।। ३५ ।। विरह-विरह की बात तो की जाती है परन्तु हे विरह, तू लोगों के दिलों पर राज करने वाला बादशाह है। हे फरीद, जिसके तन में प्रेम रूपी विरह उत्पन्न नहीं होता उस शरीर को तो मुर्दा मसान ही मानना चाहिए ।। ३६ ।। हे फरीद, दुनिया के ये पदार्थ मानो विष से भरे हुए ऐसे अंकुर हैं जिन्हें शक्कर में लपेट कर स्थित किया हुआ है। कई तो इन अंकुरों को बोते-बोते हुए ही मर-खप गए और कई इनको बोकर इनका पूरा उपभोग किए बगैर ही इन्हें छोड़कर यहाँ से चले गए हैं ।। ३७ ।। हे फरीद, दिन के चार प्रहर तो तूने मौज-मेले में गँवा दिए और रात के चार प्रहर तूने सोकर खो दिए हैं। खुदा तुझसे हिसाब माँगता हुआ पूछेगा कि तू इस संसार में क्या काम करने आया था अर्थात तूने प्रभु का सुमिरन क्यों नहीं किया ।। ३८ ।। हे फरीद, तूने दरवाजे पर रखे हुए नगाड़े को कैसा देखा है। जब इस निर्दोष को ही बार-बार पीटा जाता है तो हम अनेक दोषों वालों का क्या हाल होगा ।। ३६ ।। हर घड़ी बीतने पर इसे मारा जाता है और हर प्रहर बीतने पर इसे फिर सजा मिलती है। यह सुन्दर शरीर भी इस घड़ियाल (नगाड़े) की तरह ही है जिसकी जीवन रूपी रात्रि भी दुखों में ही बीतती है ।। ४० ।।

बुढा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह ॥ जे सउ वर्हिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥ ४१ ॥ फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥ जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥ ४२ ॥ कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥ फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अंगिआर ॥ ४३ ॥ फरीदा इकना आटा अगला इकना नाही लोणु ॥ अगै गए सिंञापसनि चोटां खासी कउणु ॥ ४४ ॥ पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥ जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ॥ ४५ ॥ फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥ कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥ ४६ ॥ फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥ वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥ ४७ ॥ फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलकु बहिठा आइ ॥ गड़ु लीता घटु लुटिआ दीवड़े गइआ बुझाइ ॥ ४८ ॥ फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥ कमादै अरु कागदै कुंने कोइलिआह ॥ मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥ ४९ ॥ फरीदा कंनि मुसला सूफु गलि दिलि काती गुड़ु वाति ॥ बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ॥ ५० ॥ फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥ जो तन रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥ ५१ ॥ मः ३ ॥ इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ॥ भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ॥ जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइ ॥ ५२ ॥ फरीदा सोई सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥ छपड़ि ढूढै किआ होवै चिकड़ि डुबै हथु ॥ ५३ ॥ फरीदा नंढी कंतु न राविओ वडी थी मुईआसु ॥ धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआसु ॥ ५४ ॥ फरीदा सिरु पलिआ दाड़ी पली मुछां भी पलीआं ॥ रे मन गहिले बावले माणहि किआ रलीआं ॥ ५५ ॥ फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा पिर नीदड़ी निवारि ॥ जो दिह लधे गाणवे गए विलाड़ि विलाड़ि ॥ ५६ ॥ फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥ मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥ ५७ ॥ फरीदा मंडप

शेख फरीद अब बूढ़ा हो गया है और उसका शरीर काँपने लग गया है। सौ साल जीने के बाद भी क्या होगा क्योंकि आखिर में तो इस शरीर को मिट्टी ही होना है ।। ४१ ।। फरीद का कथन है कि हे मालिक, मुझे पराए दरवाजे पर मत बैठा रहने दे और यदि तुझे मुझे इसी प्रकार रखना है कि मैं दूसरों पर आश्रित बना रहूं तो मेरे शरीर में से प्राणों को निकाल ले ।। ४२ ।। कंधे पर कुल्हाड़ा और सिर पर घड़ा रखे हुए जीव रूपी हे लोहार, तू सरोवर की ओर जा रहा है या फिर वन की ओर जा रहा है? फरीद का कथन है कि घड़ा कहता है कि मैं तो अपने मालिक सरोवर (प्रभु) को ढूंढ़ रहा हूं परन्तु हे कुल्हाड़े, तू अंगार को खोज रहा है अर्थात संसार रूपी फल देने वाले वृक्षों को काटकर उन्हें नष्ट करके तू उन्हें कोयले की तरह अपने पापो की कालिमा से युक्त कर देने की इच्छा रखता है ।। ४३ ।। हे फरीद, कईयों के पास तो खाने के लिए बहुत आटा है और कई ऐसे भी हैं जिनके पास नमक तक भी नहीं है। यह तो आगे पहुँचकर ही पता लगेगा कि इन दो प्रकार के जीवों में से चोटें किसे सहनी पड़ेंगी ।। ४४ ।। जिनके पास राज्य के चिन्ह, नगाड़े, छत्र, भेरियाँ और स्तुति का गायन करने वाले भाट आदि सदैव बने रहते थे वे भी यतीमों की तरह अंत में कब्रों में गाड़े जाकर सोने के लिए मजबूर हुए हैं ।। ४५ ।। हे फरीद, (अंगारों को खोजने वाले) लोग महल और मण्डप तो जरूर बनाते गए परन्तु इस झूठे सौदे को जमा करने वाले आखिर में कब्रों में ही आकर पड़े हुए हैं ।। ४६ ।। हे फरीद, गुदड़ी को धागे के अनेकों टाँके लगे हुए हैं (जिससे उसका कुछ समय तक चलते रहना सम्भव हो सकता है) परन्तु प्राणों को इस शरीर में बने रहने के लिए कोई भी टाँका नहीं लगा हुआ है अर्थात प्राण इसमें से कभी भी निकल अथवा निकाले जा सकते हैं। इस संसार से अनेकों शेख और पीर अपनी-अपनी बारी से चलते चले जा रहे हैं (परन्तु यह पता नहीं कि किसकी बारी कब है) ।। ४७ ।। हे फरीद, आँखों के इन दोनों दीपों के जलते रहने पर ही मौत का फरिश्ता सामने आ बैठा है जिसने इस शरीर रूपी किले को जीत लिया है, जीव आत्मा को लूट लिया है, और जाता-जाता इन दो दीपों को भी बुझा गया है ।। ४८ ।। हे फरीद, कपास के साथ और तिल के साथ जो होता है तू उसे अच्छी तरह देख ले कि कैसे उन्हें पीटा और पेरा जाता है। गन्ने और कागज तथा हाँडी और कोयले के साथ होते हुए को देखकर तू समझ ले कि बुरा आचरण रखने वालों की यही सजा होती है ।। ४६ ।। हे फरीद, कईयों ने कंधे पर चटाई रखी हुई है शरीर पर कफननुमा कपड़ा पहन रखा है, उनकी बोली भी गुड़ जैसी मीठी है परन्तु उनके दिल में सबको काटने के लिए कैंची विद्यमान रहती है। बाहर से तो वे बड़े उज्जवल दिखाई देते हैं परन्तु उनका दिल अन्धेरी रात की तरह होता है ।। ५० ।। हे फरीद, परमात्मा में लीन व्यक्तियों के शरीर को यदि चीरा भी जाए तो उनमें से रक्त नहीं निकलता क्योंकि उनके शरीर में रक्त होता ही नहीं है ।। ५१ ।। महला ३ ।। यह शरीर सम्पूर्ण रूप से रक्त ही है और रक्त बिना यह शरीर हो ही नहीं सकता। वास्तव में जो अपने प्रियतम प्रभु के प्रेम में लीन बने रहते हैं उनके शरीर में लोभ रूपी रक्त नहीं होता। प्रभु के भय में रहने से शरीर क्षीण हो जाता है क्योंकि उसमें से लोभ रूपी रक्त निकल जाता है। जिस प्रकार अग्नि धातु को शुद्ध कर देती है उसी प्रकार प्रभु का भय हृदय से दुर्मति की मैल को नष्ट कर देता है। हे नानक, वे व्यक्ति ही सुन्दर हैं जो प्रभु के नाम में ही लीन बने रहते हैं ।। ५२ ।। हे फरीद, तू उसी गुरु रूपी सरोवर को ढूंढ़ ले जहाँ से तुझे नाम रूपी पदार्थ प्राप्त हो जाए। छोटे-छोटे तालाबों में ढूंढ़ने से क्या होगा; तेरे हाथ कीचड़ ही लगेगा ।। ५३ ।। हे फरीद, छोटी उम्र में तो प्रियतम प्रभु के साथ रमण नहीं किया और बड़ी होने पर मर जाने वाली जीव स्त्री कब्र में भी पुकारती और चिल्लाती है कि हे मेरे मालिक, तुझसे मेरा मिलाप नहीं हो सका ।। ५४।। हे फरीद, तेरा सिर, दाढ़ी, मूछें पलकर बड़े और सफेद हो गए हैं परन्तु हे मूर्ख मन, तू बावला बनकर अभी भी रंगरलियाँ मना रहा है ।। ५५ ।। हे फरीद, और कितना तू इधर-उधर महलों मकानों पर भाग-दौड़ करता रहेगा; तू अपनी प्यारी नींद को अभी भी दूर कर दे। तुझे गिनती के जो दिन मिले हुए हैं वे दिन बीतते-बीतते समाप्त हो गए हैं ।। ५६ ।। हे फरीद, इन महलों, मण्डपों और मकानों में तू अपना चित्त मत लगा क्योंकि कब्र में जब तुझ पर विशाल मिट्टी का ढ़ेर तुझे ढ़का लेगा तो इनमें से कोई भी तेरा मित्र नहीं होगा ।। ५७ ।। हे फरीद, तू मण्डपों और

मालु न लाइ मरग सताणी चिति धरि ॥ साई जाइ सम्हालि जिथै ही तउ वंञणा ॥ ५८ ॥ फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥ मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥ ५९ ॥ फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ॥ दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि ॥ ६० ॥ फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥ गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥ ६१ ॥ तती तोइ न पलवै जे जलि टुबी देइ ॥ फरीदा जो डोहागणि रब दी झूरेदी झूरेइ ॥ ६२ ॥ जां कुआरी ता चाउ वीवाही तां मामले ॥ फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥ ६३ ॥ कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हंझ ॥ चिंजू बोड़न्हि ना पीवहि उडण संदी डंझ ॥ ६४ ॥ हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोकु विडारणि जाइ ॥ गहिला लोकु न जाणदा हंसु न कोध्रा खाइ ॥ ६५ ॥ चलि चलि गईआं पंखीआं जिन्ही वसाए तल ॥ फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥ ६६ ॥ फरीदा इट सिराणे भुइ सवणु कीड़ा लड़िओ मासि ॥ केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ॥ ६७ ॥ फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुटी नागर लजु ॥ अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥ ६८ ॥ फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टूटी नागर लजु ॥ जो सजण भुइ भारु थे से किउ आवहि अजु ॥ ६९ ॥ फरीदा बे निवाजा कुतिआ एह न भली रीति ॥ कबही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ॥ ७० ॥ उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥ जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥ ७१ ॥ जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥ कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥ ७२ ॥ फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिओहि ॥ तै पासहु ओइ लदि गए तूं अजै न पतीणोहि ॥ ७३ ॥ फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ॥ अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ॥ ७४ ॥ महला ५ ॥ फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥ मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥ ७५ ॥ फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख ॥ पवनि न इती मामले सहां न इती दुख ॥ ७६ ॥ चबण चलण रतंन से सुणीअर बहि गए ॥ हेड़े मुती धाह से जानी चलि गए ॥ ७७ ॥ फरीदा

महलो में ही धन-सम्पदा मत लगाता जा और शक्तिशाली मौत को याद कर। तू उस जगह की सम्भाल कर जहाँ तुझे वास्तव में जाना है ।। ५८ ।। हे फरीद, जिन कामों में से कोई गुण प्राप्त नहीं होता उन कामों को तू भूल जा। कहीं ऐसा ना हो कि तुझे उस मालिक के दरबार में शर्मिन्दा होना पड़े ।। ५६ ।। हे फरीद, दिल के भ्रमों को मिटाकर उस मालिक प्रभु की ही नौकरी कर। दरवेशों को तो वास्तव में वृक्षों जैसी सहनशक्ति धारण करनी चाहिए ।। ६० ।। हे फरीद, मेरे कपड़े भी काले हैं और मेरा सारा वेश भी काला है; मैं गुनाहों से भरा हुआ हूँ और लोग मुझे दरवेश कहते हैं ।। ६१ ।। पानी में ही सड़ी हुई खेती ठण्डे पानी में डूबकर भी अंकुरित नहीं हो सकती। इसी प्रकार हे फरीद, प्रभु से विमुख दुहागिन जीव स्त्री पछताती और रोती रहती है ।। ६२ ।। जब मैं कुँआरी थी तो मेरे अन्दर बहुत उत्साह था परन्तु अब जब विवाह हो गया तो अनेकों मामले सामने आ खड़े हुए। हे फरीद, अब तो यही पछतावा है कि मैं फिर पूर्व स्थिति में पहुँच कर कुँआरी नहीं हो सकती ।। ६३ ।। रेत से भरे हुए तालाब पर हंस आकर बैठ जाते हैं परन्तु अपनी चोंच को उसके पानी में डालकर उसे पीते नहीं और उन्हें उड़ जाने की ही जल्दी होती है अर्थात सन्तजन व्यर्थ के झंझटों में नहीं फंसते ।। ६४ ।। हंस उड़कर बाजरे के खेत में जाता है तो लोग उसे उड़ाने के लिए दौड़ते हैं परन्तु मूर्ख लोग नहीं जानते कि सन्त रूपी हंस संसार रूपी बाजरे को तो खाते ही नहीं अर्थात वे सांसारिकता से अलिप्त बने रहते हैं ।। ६५ ।। तालाबों को बसाए रखने वाले पक्षी भी उड़-उड़कर दूर चले जाते हैं। हे फरीद, भरा हुआ सरोवर भी आखिर में यहाँ से चल पड़ेगा और अकेले गुरमुख रूपी कमल ही यहाँ रह जाएँगे ।। ६६ ।। हे फरीद, सिरहाने ईंट रखकर भूमि पर लेटे हुए तुझको कीड़े काटते रहते हैं। कितने ही युग तुझे इसी तरह पड़े हुए बीत गए हैं (परन्तु तेरी मुक्ति नहीं हुई) ।। ६७ ।। हे फरीद, यह सुन्दर देह रूपी घड़ा टूट गया और श्वासों की सुन्दर रस्सी भी टूट गई है। मौत का फरिश्ता इज़राईल पता नहीं आज किसके घर मेहमान है अर्थात वह बिना बताए ही यहाँ से ले जाएगा ।। ६८ ।।हे फरीद, शरीर रूपी घड़े का टूट जाना और श्वासों की रस्सी समाप्त हो जाना उनके संदर्भ में उचित ही है जो वास्तव में धरती पर बोझ थे। उन्हें तो मौत के फन्दे से बाहर आना ही नहीं चाहिए ।। ६६ ।। हे फरीद, नमाज ना पढ़ने वाले कुत्ते के समान तेरा यह हाल ठीक नहीं है ; तू पाँचों वक्त की नमाज में से कभी भी चलकर मस्जिद तक नहीं पहुँचा है ।।७० ।।हे फरीद, उठ, हाथ-मुँह धो और सुबह की नमाज़ गुजार ले। जो सिर उस मालिक के सामने नहीं झुकता उसे तो काट कर फेंक देना चाहिए ।।७१ ।।जो सिर मालिक के सामने नहीं झुकता उस सिर को भला क्या किया जाए। उसे तो चूल्हे में ईंधन के तौर पर जला दिया जाना चाहिए ।। ७२ ।। हे फरीद, जिन्होंने तुझे जन्म दिया था, तेरे वे माँ-बाप कहां हैं। वे तुझसे अनन्त दूरी पर चले गए हैं परन्तु तू अभी तक भी इस तथ्य से सन्तुष्ट नहीं हुआ कि तुझे भी अन्त में मर ही जाना है ।। ७३ ।। हे फरीद, मन की ऊँच-नीच को साफ करके इस मन को मैदान की तरह समतल कर दे। ऐसा करने से दोज़ख की आग तेरे सामने बिल्कुल ही नहीं आएगी ।। ७४ ।। महला ५ ।। हे फरीद, वह कर्ता अपनी सृष्टि में व्याप्त है और यह सृष्टि उस खुदा में ही बस रही है। जब उस खुदा के बिना अन्य कोई है ही नहीं तो फिर भला बुरा किसे कहा जाए ।। ७५ ।। हे फरीद, जन्म वाले दिन जब मेरा नाड़ (ठोंठी-नाभि) काटा गया था यदि मेरी गर्दन भी काट देते तो जीवन भर मुझे इतने मामलों में ना फँसना पड़ता और इतने दुख सहन ना करने पड़ते ।। ७६ ।। चबाने वाले दाँत, चलने वाले पैर, देखने वाली आँखे और सुनने वाले कान आदि अब तो सभी बैठ गए हैं। यह सुन्दर शरीर अब कूक-पुकार लगा रहा है कि मेरे सभी प्यारे अंग अब चलते बने हैं ।। ७७ ।। हे फरीद,

बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥ देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥ ७८ ॥ फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥ नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥ ७९ ॥ फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥ जिन्हा नैण नींद्रावले तिंन्हा मिलणु कुआउ ॥ ८० ॥ फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥ ऊचे चड़ि कै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि ॥ ८१ ॥ महला ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ॥ जो जन पीरि निवाजिआ तिंन्हा अंच न लाग ॥ ८२ ॥ महला ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवंनड़ी देह ॥ विरले केई पाईअनि जिंन्हा पिआरे नेह ॥ ८३ ॥ कंधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ॥ जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाऊ गंउ करे ॥ ८४ ॥ फरीदा डुखा सेती दिहु गइआ सूलां सेती राति ॥ खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कपर वाति ॥ ८५ ॥ लंमी लंमी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥ बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥ ८६ ॥ फरीदा गली सु सजण वीह इकु ढूंढेदी न लहां ॥ धुखां जिउ मांलीह कारणि तिंन्हा मा पिरी ॥ ८७ ॥ फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ॥ कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु ॥ ८८ ॥ फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंन्हि ॥ जो जो वंञैं डीहड़ा सो उमर हथ पवंनि ॥ ८९ ॥ फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआं खूंडहि काग ॥ अजै सु रबु न बाहुड़िओ देखु बंदे के भाग ॥ ९० ॥ कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥ ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥ ९१ ॥ कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥ जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥ ९२ ॥ फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥ सरपर मैथै आवणा मरणहु ना डरिआहु ॥ ९३ ॥ एनी लोइणी देखदिआ केती चलि गई ॥ फरीदा लोकां आपो आपणी मै आपणी पई ॥ ९४ ॥ आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥ फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥ ९५ ॥ कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥ फरीदा कचै भांडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥ ९६ ॥ फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ

तू बुरे का भी भला कर और मन में क्रोध को ना आने दे इससे तेरे शरीर को रोग नहीं लगेगा और तुझे सब कुछ प्राप्त हो जाएगा ।। ७८ ।। हे फरीद, यह प्राण रूपी पक्षी इस दुनिया के सुहावने बाग में एक मेहमान की तरह हैं। सुबह होते ही मौत का नगाड़ा बज उठा है इसलिए अब चलने की तैयारी करनी चाहिए ।। ७६ ।। हे फरीद, इस जीवन रूपी रात्रि में प्रभु-नाम रूपी कस्तूरी बाँटी जाती है परन्तु सोए रहने वालों को उनका हिस्सा नहीं मिलता। जिनकी आँखों में अज्ञान की नींद भरी है उनका प्रभु से मिलाप भला कैसे होगा ।। ८० ।। हे फरीद, मैंने तो समझा था कि केवल मुझे ही दुख है परन्तु दुख तो सारे संसार में फैला हुआ है। जब मैंने जरा ऊँचाई पर जा कर देखा तो पाया कि घर-घर में यही आग लगी हुई है ।। ८१ ।। महला ५ ।। हे फरीद, यह धरती बड़ी रंगीन लगती है परन्तु इसी में ही विषय-विकारों का ज़हरीला बाग भी है। जिन सेवकों को गुरु ने बचा लिया है उन्हें इस बाग की आँच नहीं लगने पाती ।। ८२ ।। महला ५ ।। हे फरीद, इस सुन्दर देह के साथ सुन्दर आयु भी मिली हुई है परन्तु जिन्हें प्रियतम से प्रेम होता है ऐसे बिरले लोग ही उसे प्राप्त कर पाते हैं ।। ८३ ।। हे दरिया के बहाव, तू किनारों को मत तोड़ क्योंकि तुझे भी लेखा देना पड़ेगा। परन्तु दरिया भी क्या करे, क्योंकि जिधर खुदा की रज़ा होती है यह जीवन रूपी दरिया उसी ओर बह निकलता है ।। ८४ ।। हे फरीद, दुखों में ही दिन चला गया और काँटों जैसी रात भी बीत गई है। तुझे पार लगाने वाला मल्लाह (गुरु) पुकार-पुकार कर तुझे बता रहा है कि तेरा जीवन रूपी बेड़ा विकारों की लहरों के मुँह में फँसा हुआ है ।। ८५।। जीवन के लम्बे दरिया जीवन के किनारों को तोड़ने के लिए बहते रहते हैं परन्तु यदि गुरु रूपी मल्लाह सावधान होकर फिक्र करने वाला है तो जीवन रूपी बेड़े को विषय-विकारों की लहरें क्या कर सकती हैं ।। ८६ ।। हे फरीद, बातें बनाने वाले तो बीसों मित्र मिल जाएँगे परन्तु काम पड़ने पर यदि उन्हें ढूँढ़ा जाए तो एक भी नहीं मिलता। अपने प्यारे मित्रों के लिए मैं तो गोबर की धूनि की तरह धीरे-धीरे जलता रहता हूँ ।। ८७ ।। हे फरीद, यह शरीर तो भौंकने वाला कुत्ता हो गया है; अब कौन इसके लिए दुखी होता रहे। अब इसकी विषय-विकारों की कितनी ही आवाज और चीख पुकार चलती रहे परन्तु मैंने तो अपने कानों में रूई ठूंस ली है ।। ८८ ।। हे फरीद, प्रभु-नाम के खजूर पक गए हैं और यहीं सत्संगत में शहद की नदियाँ बह रही हैं यहीं इनका आनन्द ले लो क्योंकि जो-जो दिन भी बीतता जा रहा है तेरी आयु पर मौत का हाथ कसता जा रहा है ।।८६ ।।हे फरीद, तेरा शरीर सूखकर पिंजर हो गया और पाँव के तलवों पर अब कौए चोंच मार रहे हैं। मनुष्य का भाग्य भी अजीब है कि अभी तक भी खुदा ने मेरी खोज-खबर नहीं ली ।। ६० ।। हे कौवे, तूने मेरे मुर्दा हो रहे सारे शरीर को चोंच से खोज बीन लिया है और मेरा सारा माँस खा लिया है। केवल मेरी इन दो आँखों को मत छूना क्योंकि मुझे अभी भी उस प्रियतम को देख लेने की आशा लगी हुई है ।। ६१ ।। हे कौवे, तू मेरे शरीर के पिंजर पर अपनी चोंच मत चला और यदि तू इस पर बैठा भी है तो यहाँ से उड़ जा। जिस पिंजर में मेरा मालिक बस रहा है तू उसके माँस को मत खा ।। ६२ ।। हे फरीद, बेचारी कब्र यह आवाज दे रही है कि हे बेघर जीव, अब तू अपने वास्तविक घर में आ जा। मेरे पास तो तुझे जरूर आना ही पड़ेगा इसलिए तू मरने से मत डर ।।६३ ।।इन आँखों से देखते ही देखते कितनी ही दुनिया यहाँ से चली गई है। हे फरीद, लोगों में आपाधापी मची हुई है परन्तु मुझे तो अपनी ही चिन्ता लगी हुई है ।।६४ ।।यदि तू अपने आपको सँवार ले तो प्रभु का कथन है मैं तुझे मिल जाऊँगा और मुझसे मिलाप के बाद ही तुझे सुख मिलेगा। हे फरीद, यदि तू मेरा होकर रहे तो यह सारा संसार तेरा हो कर रहेगा ।।६५ ।। नदी के किनारे का पेड़ कितनी देर तक धैर्य बाँधे रह सकता है क्योंकि उसे नदी में गिरना ही गिरना होता है। हे फरीद, कच्चे मिट्टी के बर्तन में तुम पानी को कितनी देर तक रख सकते हो अर्थात बर्तन ने फूटना ही फूटना होता है ।। ६६ ।। हे फरीद, यह महल तो खाली हो गए और अब तेरा निवास धरती के नीचे हो गया है।

तलि ॥ गोरां से निमाणीआ बहसनि रूहां मलि ॥ आखीं सेखा बंदगी चलणु अजु कि कलि ॥ ९७ ॥ फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥ अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥ इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥ अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा ॥ ९८ ॥ फरीदा दरीआवै कंन्है बगुला बैठा केल करे ॥ केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥ बाज पए तिसु रब दे केलां विसरीआं ॥ जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआं ॥ ९९ ॥ साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥ आइओ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥ मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥ तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंन्हि ॥ वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥ फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥ १०० ॥ फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखीआ जंगलि जिंन्हा वासु ॥ ककरु चुगनि थलि वसनि रब न छोडनि पासु ॥ १०१ ॥ फरीदा रुति फिरी वणु कंबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥ चारे कुंडा ढूढीआं रहणु किथाऊ नाहि ॥ १०२ ॥ फरीदा पाड़ि पटोला धज करी कंबलड़ी पहिरेउ ॥ जिन्ही वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥ १०३ ॥ मः ३ ॥ काइ पटोला पाड़ती कंबलड़ी पहिरेइ ॥ नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ ॥ १०४ ॥ मः ५ ॥ फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ॥ खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥ १०५ ॥ फरीदा तिना मुख डरावणे जिना विसारिओनु नाउ ॥ ऐथै दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥ १०६ ॥ फरीदा पिछल राति न जागिओहि जीवदड़ो मुइओहि ॥ जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥ १०७ ॥ मः ५ ॥ फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥ अलह सेती रतिआ एहु सचावां साजु ॥ १०८ ॥ मः ५ ॥ फरीदा दुखु सुखु इकु करि दिल ते लाहि विकारु ॥ अलह भावै सो भला तां लभी दरबारु ॥ १०९ ॥ मः ५ ॥ फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥ सोई जीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ॥ ११० ॥ मः ५ ॥ फरीदा दिलु रता इसु दुनी सिउ दुनी न किते कंमि

अब ये बेचारी रूहें कब्रों पर कब्जा जमाए बैठी रहेंगी। सभी शेखों और फकीरों को कह दो कि बन्दगी करते रहें क्योंकि आज-कल में यहाँ से चलना ही चलना है ।। ६७ ।। हे फरीद, मौत की ओर का दृश्य तो ऐसा दिखाई देता है जैसे दरिया ने किनारे तोड़कर सब कुछ तहस-नहस कर दिया हो। सुनने में आ रहा है कि आगे जलता हुआ दोजख है जहाँ पर चीख-पुकार और हाहाकार मचा हुआ है। यह सब जानकर कुछ तो समझदारी से काम लेते हैं और प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं परन्तु अनेकों अभी भी लापरवाही से घूमते रहते हैं। दुनिया में जो आचरण किया है प्रभु के दरबार में उसी आचरण की गवाही ही मानी जाएगी ।। ६८ ।। हे फरीद, दरिया के किनारे बैठा बगुला रूपी जीव केलि-क्रीड़ा कर रहा है। मौज में मस्त उस बगुले पर अचानक ही मौत रूपी बाज टूट पड़ते हैं। जब खुदा के वे बाज पकड़ लेते हैं तो सारी मौज-मस्तियाँ भूल जाती हैं। जिन बातों की कभी याद भी नहीं आई थी वे सभी बातें परमात्मा ने प्रत्यक्ष सामने ला दी हैं ।। ६६ ।। साढ़े तीन मन का यह शरीर अन्न और पानी के आसरे चलता रहता है। संसार में यह इनसान अनेकों आशाएँ बाँधकर आता और भटकता रहता है परन्तु जब सब दरवाजों को तोड़कर मौत का फरिश्ता आ जाता है तो वे ही प्यारे भाई बन्धु इसे बाँधकर उसके सामने कर देते हैं। देखो अब वही इनसान चार लोगों के कंधे पर बैठ कर चला जा रहा है। हे फरीद, इस दुनिया में जो तूने अच्छे काम किए हैं प्रभु के दरबार में केवल वही काम आते हैं ।। १०० ।। हे फरीद, जंगल में निवास करने वाले उन पक्षियों पर मैं बलिहारी जाता हूँ जो कंकड़ चुनते हैं धरती पर बसते हुए सादा जीवन बिताते हैं परन्तु खुदा की याद को कभी नहीं छोड़ते ।। १०१ ।। हे फरीद, कुदरत के नियमों के अनुरूप मौसम बदल गया। जंगल काँप उठा और पतझड़ में सभी पत्ते झड़ने लगे हैं। अब मैं चारों ओर खोजता-फिरता हूँ परन्तु मुझे रहने का ठिकाना प्राप्त नहीं होता अर्थात संसार से जाना ही जाना है ।। १०२ ।। हे फरीद, मैं रेशमी वस्त्रों को फाड़कर उनकी धज्जियाँ उड़ा दूं और साधारण कम्बल ओढ़ लूं। जिस वेश को करने से मुझे मेरा प्रियतम मिल जाए मैं वही वेश धारण करने के लिए तैयार हूँ ।। १०३ ।। महला ३ ।। सुन्दर रेशमी वस्त्रों को तू क्यों फाड़ रही है ; क्यों कम्बल ओढ़ रही है और कम्बल ओढ़ कर इधर-उधर भटकने की सोच रही है। हे नानक, यदि नीयत को साफ कर लिया जाए तो घर बैठे ही (सब सुखों के बीच) उस प्रियतम के साथ मिलाप हो सकता है ।।१०४ ।।महला ५ ।। हे फरीद, जिन्हें धन, यौवन और अपने बहुत बड़े होने का अभिमान है वे उसी प्रकार प्रभु से विहीन बने रहते हैं जैसे ऊँचे टीले वर्षा के पानी से रहित बने रहते हैं ।।१०५ ।।हे फरीद, जिन्होंने प्रभु-नाम को भुला दिया है उनके चेहरे बड़े भयानक हैं। उन्हें यहाँ तो बहुत दुख मिलता ही है साथ ही साथ आगे भी उनको कोई ठौर-ठिकाना नहीं मिलता ।। १०६ ।। हे फरीद, तू रात के आखिरी पहर में नहीं जागा तो समझ ले तू जीवित रहता हुआ भी मरा हुआ ही है। यदि तूने खुदा को भुला दिया है तो ये मत सोच कि खुदा ने भी तुझे भुला दिया है ।। १०७ ।। महला ५ ।। हे फरीद, वह पति प्रभु अनेकों रंगों वाला और पूरी तरह बेमोहताज़ है। अल्लाह में लीन बने रहना ही वास्तव में सच्चा वेश है ।। १०८ ।। महला ५ ।। हे फर्गद, हृदय से विकारों को हटाकर तू दुख और सुख को एक समान मान ले। तुझे उसका दरबार मिल जाएगा ।। १०६ ।। महला ५ ।। हे फरीद, दुनिया रूपी बाजे को माया जिस प्रकार बजाती है यह वैसे ही बजता है और तू भी इस भेड़-चाल में खड़ा हुआ बजता जा रहा है। वही प्राणी इसके साथ नहीं बजता जिसकी खबरसार वह अल्लाह लेता रहता है ।। ११० ।। महला ५ ।। हे फरीद, दिल तो इस दुनियां में फँसा हुआ है परन्तु यह दुनियां किसी काम की नहीं है।

॥ मिसल फकीरां गाखड़ी सु पाईऐ पूर करंमि ॥ १११ ॥ पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥ जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति ॥ ११२ ॥ दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि ॥ ११३ ॥ ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥ जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥ ११४ ॥ सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥ सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥ ११५ ॥ सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेन्हि ॥ होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥ ११६ ॥ सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिड़ु करहि ॥ वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥ ११७ ॥ फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी परीति ॥ इकनि किनै चालीऐ दरवेसावी रीति ॥ ११८ ॥ तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंन्हि ॥ पैरी थकां सिरि जुलां जे मूं पिरी मिलंन्हि ॥ ११९ ॥ तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी निहालि ॥ १२० ॥ हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥ नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥ १२१ ॥ हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥ डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥ १२२ ॥ मै जाणिआ वड हंसु है तां मै कीता संगु ॥ जे जाणा बगु बपुड़ा जनमि न भेड़ी अंगु ॥ १२३ ॥ किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ॥ जे तिसु भावै नानका कागहु हंसु करे ॥ १२४ ॥ सरवर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास ॥ इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ॥ १२५ ॥ कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥ कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥ १२६ ॥ निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥ ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥ १२७ ॥ मति होदी होइ इआणा ॥ ताण होदे होइ निताणा ॥ अणहोदे आपु वंडाए ॥ को ऐसा भगतु सदाए ॥ १२८ ॥ इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥ हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥ १२९ ॥ सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥ जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥ १३० ॥

फकीरों जैसा आचरण और रहन-सहन बहुत ही कठिन काम है जिसे पूर्ण भाग्य से ही प्राप्त किया जाता है ।। ११ ।। रात्रि के पहले पहर में सुमिरन फूलों जैसा है परन्तु पिछली रात अर्थात आखिरी प्रहर का सुमिरन फल की तरह होता है। जो सावधान बने रहते हैं वे ही मालिक से इसे प्राप्त करते हैं ।। ११२ ।। सब दिए हुए दान उस मालिक प्रभु के ही हैं और उसके आगे कोई ज़ोर नहीं चल सकता। उसके दान कई जागृत जीवों को भी नहीं प्राप्त होते और दूसरी ओर वह कई सोए हुओं को भी उठाकर दे देता है ।। ११३ ।। तू अपने सुहाग को ढूंढ़ रही है इसलिए तेरे शरीर में अवश्य कोई कमी है। जिनका नाम सुहागिन होता है उनको तो किसी अन्य की आशा नहीं रहती ।। ११४ ।। सन्तोष को अपने हृदय में कमान बनाओ और इसकी डोरी भी सन्तोष की ही हो। इसका बाण भी सब्र का ही हो और ऐसे चलाए हुए तीर को वह खुदा व्यर्थ नहीं जाने देता ।। ११५ ।। सन्तोषी व्यक्ति सन्तोष में बने रहकर तन की ममता को जलाकर नष्ट करते रहते हैं। वे खुदा के नजदीक बने रहते हैं परन्तु किसी को भी अपना रहस्य नहीं बताते ।। ११६ ।। सन्तोष जीवन का ऐसा अच्छा उद्देश्य है कि हे व्यक्ति, यदि तू उसे मन में पक्का करता रहे तो तू फलता-फूलता हुआ दरिया की तरह हो जाएगा और कमजोर होकर कभी छोटा सा नाला नहीं बनेगा ।। ११७ ।। हे फरीद, फकीरी तो बहुत कठिन चीज है परन्तु तेरी प्रीति तो उपर से ही चिकनी-चुपड़ी है। कोइ बिरला ही दरवेशों की परम्पराओं का पालन करता है ।। ११८ ।। मेरा शरीर तन्दूर की तरह तप रहा है और उसमें मेरी हड्डियां ईंधन की तरह जल रही हैं। यदि मुझे मेरा प्रियतम मिल जाए तो उसे मिलने के लिए यदि मेरे पाँव थक भी जाएँ तो भी मैं सिर के बल चलती रहूंगी ।। ११९ ।। तू इस तन को तन्दूर की तरह मत तपा और हड्डियों को ईंधन की तरह मत जला। सिर और पैरों ने तेरा क्या बिगाड़ा है इसलिए तू अपने अन्दर ही अपने प्रियतम को देख ले ।। १२० ।। मैं अपने प्रियतम को ढूंढ़ रही हूँ परन्तु वह प्रियतम तो मेरे साथ ही है। हे नानक, उस अदृष्ट को देखा नहीं जा सकता परन्तु गुरमुख बने हुए व्यक्ति को वह दिखा दिया जाता है ।। १२१ ।। हंसों को तैरते हुए देखकर बगुलों को भी तैरने का चाव पैदा हुआ परन्तु तैराकी से अनजान बेचारे बगुले सिर नीचे और पाँव ऊपर करके मर-खप गए हैं ।। १२२ ।। मैंने तो समझा कि यह व्यक्ति कोई महान हंस जैसी आत्मा है और इसी कारण मैंने इसकी संगत की परन्तु यदि मैं यह जानता होता कि यह तो पाखण्डी बगुला भगत है तो मैं इस जन्म मे उसे स्पर्श भी नहीं करता ।। १२३ ।। जिस पर प्रभु कृपा दृष्टि कर दे तो फिर क्या हंस और क्या बगुला अर्थात सभी एक समान हो जाते हैं। हे नानक, यदि उस प्रभु को भा जाए तो वह कौओं को भी हंस बना देता है ।। १२४ ।। जीवन रूपी सरोवर का पक्षी तो एक ही है लेकिन इसे फन्दों मे डालने वाले पचासों हैं। मेरा यह शरीर आशाओं विकारों की लहरों में फँसा हुआ है और हे सच्चे प्रभु, मुझे तो तेरा ही आसरा है ।। १२५ ।। कौन सा शब्द बोलूं, कौन सा गुण धारण करूं और रत्नों जैसी कौन सी विधि को अपनाऊं; मैं कौन सा वेश धारण करूं जिससे मेरा प्रियतम मेरे वश में आ जाए ।। १२६ ।। विनम्रता के शब्द, क्षमा का गुण और जीभ की मिठास रूपी मणि की विधि को अपनाया जाना चाहिए। हे मेरी बहन, यदि वेश के रूप में तू इन तीनों को धारण कर ले तो तेरा प्रियतम तेरे वश में हो जाएगा ।। १२७ ।। कोई ऐसा व्यक्ति ही सच्चा भक्त कहा जाता है जो बुद्धिमान होते हुए भी अपने आपको अनजान ही समझे, जो बलशाली होते हुए भी अपने आपको बलहीन माने और जिसके पास थोड़ा सा भी हो परन्तु फिर भी वह बाँट कर खाए ।। १२८ ।। किसी को भी फीका और बुरा बोल मत बोलो क्योंकि सब में वह सच्चा मालिक विद्यमान है। किसी के हृदय को मत तोड़ो क्योंकि सभी हृदय अमूल्य माणिक, मोतियों की तरह हैं ।। १२९ ।। सभी के मन माणिक हैं इसलिए किसी का दिल तोड़ना तो बिल्कुल ही अच्छी बात नहीं है। यदि तुझमें अपने प्रियतम से मिलने का अकांक्षा है तो किसी के दिल को भी ठोकर ना लगाओ ।। १३० ।।

੧ਓ ਸਤਿ नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सवये स्री मुखबाक्य महला ५ ॥

आदि पुरख करतार करण कारण सभ आपे ॥ सरब रहिओ भरपूरि सगल घट रहिओ बिआपे ॥ ब्यापतु देखीऐ जगति जानै कउनु तेरी गति सरब की रख्या करै आपे हरि पति ॥ अबिनासी अबिगत आपे आपि उतपति ॥ एकै तूही एकै अन नाही तुम भति ॥ हरि अंतु नाही पारावारु कउनु है करै बीचारु जगत पिता है स्रब प्रान को अधारु ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ १ ॥ अंम्रित प्रवाह सरि अतुल भंडार भरि परै ही ते परै अपर अपार परि ॥ आपुनो भावनु करि मंत्रि न दूसरो धरि ओपति परलौ एकै निमख तु घरि ॥ आन नाही समसरि उजीआरो निरमरि कोटि पराछत जाहि नाम लीए हरि हरि ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ २ ॥ सगल भवन धारे एक थें कीए बिसथारे पूरि रहिओ स्रब महि आपि है निरारे ॥ हरि गुन नाही अंत पारे जीअ जंत सभि थारे सगल को दाता एकै अलख मुरारे ॥

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

सवैये श्री मुखवाक्य महला ५ ।।

वह आदि कर्ता पुरुष सब कुछ स्वयं ही करने-कराने वाला है सर्वत्र वही प्रभु भरपूर रूप में स्थित है और सभी शरीरों में व्याप्त है। सारे संसार में व्याप्त देखे जाने वाले प्रभु तेरी गति को कौन जान सकता है; सबके सम्मान की रक्षा प्रभु स्वयं ही करता है। प्रभु अविनाशी और अव्यक्त है और उसकी उत्पत्ति अपने आपसे ही हुई है। हे प्रभु, एक तू ही तू है तथा अन्य दूसरा कोई तुम्हारे जैसा नहीं है। प्रभु के ओर-छोर का रहस्य नहीं जाना जा सकता और कौन है जो उसका विचार कर सकता है। संसार का पिता वह प्रभु ही सबके प्राणों का आधार है। दास नानक, अपनी एक जीभ से तेरे उन भक्तों का क्या बखान करे जो तेरे द्वार पर आकर प्रभु के साथ ही एक रूप हो गए हैं। हाँ, मैं केवल इतना भर कह सकता हूँ कि मैं तेरे ऐसे भक्त पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ ।। १ ।। तेरे पास अमृत के प्रवाह चलते रहते हैं, तेरे अतुलनीय भण्डार भरे रहते हैं और तू परे से परे अपर-अपार प्रभु है। तू अपनी मनभावन ही करता है अन्य किसी से परामर्श नहीं लेता और तेरे इस संसार रूपी घर में उत्पत्ति और प्रलय पलक झपकते ही हो जाते हैं। तेरे समान अन्य कोई नहीं है, तेरा प्रकाश निर्मल है और हे प्रभु, तेरा नाम लेने से करोड़ों पाप दूर हो जाते हैं। दास नानक अपनी एक जीभ से तेरे उन भक्तों का क्या बखान करे जो तेरे द्वार पर आकर प्रभु के साथ ही एक रूप हो गए हैं। हाँ, मैं केवल इतना भर कह सकता हूँ कि मैं तेरे ऐसे भक्त पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ ।। २ ।। तूने समस्त लोकों को धारण किया हुआ है और एक से ही यह सारा विस्तार करते हुए तू स्वयं अलिप्त बना हुआ सब में भरपूर रूप से व्याप्त है। प्रभु के गुणों का अन्त नहीं पाया जा सकता और हे प्रभु, ये सभी जीव-जन्तु तेरे ही हैं। वह अदृष्ट प्रभु ही सबका दाता है।

आप ही धारन धारे कुदरति है देखारे बरनु चिहनु नाही मुख न मसारे ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ ३ ॥ सरब गुण निधानं कीमति न ग्यानं ध्यानं ऊचे ते ऊचौ जानीजै प्रभ तेरो थानं ॥ मनु धनु तेरो प्रानं एकै सूति है जहानं कवन उपमा देउ बडे ते बडानं ॥ जानै कउनु तेरो भेउ अलख अपार देउ अकल कला है प्रभ सरब को धानं ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ ४ ॥ निरंकारु आकार अछल पूरन अबिनासी ॥ हरखवंत आनंत रूप निरमल बिगासी ॥ गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ॥ जा कउ होंहि क्रिपाल सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ धंनि धंनि ते धंनि जन जिह क्रिपालु हरि हरि भयउ ॥ हरि गुरु नानकु जिन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिओ ॥ ५ ॥ सति सति हरि सति सति सते सति भणीऐ ॥ दूसर आन न अवरु पुरखु पऊरातनु सुणीऐ ॥ अंम्रितु हरि को नामु लैत मनि सभ सुख पाए ॥ जेह रसन चाखिओ तेह जन त्रिपति अघाए ॥ जिह ठाकुरु सुप्रसंनु भयो सतसंगति तिह पिआरु ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ तिन्ह सभ कुल कीओ उधारु ॥ ६ ॥ सचु सभा दीबाणु सचु सचे पहि धरिओ ॥ सचै तखति निवासु सचु तपावसु करिओ ॥ सचि सिरज्यिउ संसारु आपि आभुलु न भुलउ ॥ रतन नामु अपारु कीम नहु पवै अमुलउ ॥ जिह क्रिपालु होयउ गुोबिंदु सरब सुख तिनहू पाए ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ ते बहुड़ि फिरि जोनि न आए ॥ ७ ॥ कवनु जोगु कउनु ग्यानु ध्यानु कवन बिधि उस्तति करीऐ ॥ सिध साधिक तेतीस कोरि तिरु कीम न परीऐ ॥ ब्रहमादिक सनकादि सेख गुण अंतु न पाए ॥ अगहु गहिओ नही जाइ पूरि स्रब रहिओ समाए ॥ जिह काटी सिलक दयाल प्रभि सेइ जन लगे भगते ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ ते इत उत सदा मुकते ॥ ८ ॥ प्रभ दातउ दातार पर्यिउ जाचकु इकु सरना ॥ मिलै दानु संत रेन जेह लगि भउजलु तरना ॥ बिनति करउ अरदासि

उसने स्वयं ही सबको धारण करके अपनी कुदरत रूपी शक्ति को दिखाया है परन्तु उसका स्वयं अपना ना तो कोई वर्ण चिन्ह है और ना ही कोई मुँह अथवा दाढ़ी मूंछ है। दास नानक अपनी एक जीभ से तेरे उन भक्तों का क्या बखान करे जो तेरे द्वार पर आकर प्रभु के साथ ही एक रूप हो जाते हैं। हाँ, मैं केवल इतना भर कह सकता हूँ कि मैं तेरे ऐसे भक्त पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ ।। ३ ।। सभी गुणों के भण्डार हे प्रभु, तेरे ज्ञान-ध्यान का मूल्य कोई नहीं आँक सकता और तेरे पद को ही ऊँचे से ऊँचा जाना माना जाता है। यह मन, धन तथा प्राण तेरे ही हैं और सारे संसार को तूने एक ही नियम के सूत्र में पिरोया हुआ है। मैं तेरी बड़ी से बड़ी तुलना किसके साथ करूं अर्थात तुझ जैसा महान कोई नहीं है। हे अदृष्ट और अपार प्रभु तेरे रहस्य को कौन जान सकता है। तू कलाओं से परे रहने की कला का रूप है और हे प्रभु, तू ही सबका आसरा है। दास नानक अपनी एक जीभ से तेरे उन भक्तों का क्या बखान करे जो तेरे द्वार पर आकर प्रभु के साथ ही एक रूप हो जाते हैं। हाँ, मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि मैं तेरे ऐसे भक्त पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ ।। ४ ।। हे प्रभु, तू निराकार, ना छला जाने वाला पूर्ण अविनाशी, प्रसन्न बना रहने वाला, अनन्त रूपों वाला, निर्मल और सदैव खिला रहने वाला है। अनेकों लोग तेरे गुण गा रहे हैं परन्तु उनका यह गायन तेरे संदर्भ में एक तिल मात्र भी नहीं हैं। हे प्रभु, जिस सेवक पर तू कृपालु हो जाता है उसी का मिलाप तुझसे होता है। वे सेवक धन्य हैं जिनपर प्रभु कृपालु हो उठा है। प्रभु रूपी गुरु नानक से जिसका भी मिलाप हुआ है वे जन्म-मरण दोनों से ही बचे रहे हैं ।। ५ ।। वह परमात्मा सत्य है और बार-बार उसे सत्य ही कहा जाता है। उससे भी पहले होने वाला कोई अन्य पुरुष सुनने में नहीं आता है। प्रभु का अमृत नाम याद करते ही मन सभी सुखों को प्राप्त करता है और जिन्होंने प्रभु-नाम को अपनी जीभ से चखा है वे सेवक तृप्त होकर अघा गए हैं। परमात्मा जिन पर प्रसन्न होता है उनका प्यार सत्संगत के साथ बन जाता है और प्रभु रूपी गुरु नानक का जिनसे मिलाप हुआ है उनके सभी कुलों का उद्धार हो गया है ।। ६ ।। प्रभु की सत्य सभा सदैव अटल रहने वाली है। उसका न्यायालय सच्चा है और प्रभु ने अपने आपको स्थिर रूप गुरु के पास स्थित किया हुआ है। प्रभु का सिंहासन सदैव अटल बना रहने वाला है और वह सदैव सच्चा न्याय ही करता है। सदा स्थिर सच्चे प्रभु ने संसार की रचना करते हुए कुछ भी भुलाया (छोड़ा) नहीं है। उसका रत्न रूपी नाम अनन्त है और उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता। वह प्रभु जिस पर कृपालु हो गया उसी ने ही सभी सुख प्राप्त किए हैं और प्रभु के रूप गुरु नानक के साथ जिनका मिलाप हुआ है वे फिर योनियों में दुबारा नहीं आए हैं ।। ७ ।। किस योग, किस ज्ञान-ध्यान और किस विधि से हे प्रभु, तुम्हारी स्तुति की जाए। सिद्ध, साधक, तथाकथित तैंतीस करोड़ देवता भी तेरे महत्व का तिल मात्र मूल्य भी नहीं आँक सकते। ब्रह्मा, सनक, सनन्दन शेषनाग आदि तेरे गुणों की सीमा नहीं जान पाए हैं। पहुँच से दूर होने के कारण तू किसी की पकड़ में नहीं आता परन्तु फिर भी तू सर्वत्र व्याप्त है। दयालु प्रभु ने जिनका माया का फन्दा काट दिया है वे सेवक ही उसकी भक्ति में लगे हुए हैं और प्रभु के रूप नानक से जिनका मिलाप हुआ है वे इस लोक और उस लोक में सदैव मुक्त बने रहे हैं ।। ८ ।। हे प्रभु, तू दान देने वाला दाता है और यह एक याचक तेरी शरण में आ पड़ा है। इसे शान्त पुरुषों की चरण धूलि का दान मिल जाए तो यह उसके साथ लगकर संसार सागर से पार हो जाएगा।

सुनहु जे ठाकुर भावै ॥ देहु दरसु मनि चाउ भगति इहु मनु ठहरावै ॥ बलिओ चरागु अंध्यार महि सभ कलि उधरी इक नाम धरम ॥ प्रगटु सगल हरि भवन महि जनु नानकु गुरु पारब्रहम ॥ ९ ॥

सवये स्री मुखबाक्य महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काची देह मोह फुनि बांधी सठ कठोर कुचील कुगिआनी ॥ धावत भ्रमत रहनु नही पावत पारब्रहम की गति नही जानी ॥ जोबन रूप माइआ मद माता बिचरत बिकल बडौ अभिमानी ॥ पर धन पर अपवाद नारि निंदा यह मीटी जीअ माहि हितानी ॥ बलबंच छपि करत उपावा पेखत सुनत प्रभ अंतरजामी ॥ सील धरम दया सुच नास्ति आइओ सरनि जीअ के दानी ॥ कारण करण समरथ सिरीधर राखि लेहु नानक के सुआमी ॥ १ ॥ कीरति करन सरन मनमोहन जोहन पाप बिदारन कउ ॥ हरि तारन तरन समरथ सभै बिधि कुलह समूह उधारन सउ ॥ चित चेति अचेत जानि सतसंगति भरम अंधेर मोहिओ कत धंउ ॥ मूरत घरी चसा पलु सिमरन राम नामु रसना संगि लउ ॥ होछउ काजु अलप सुख बंधन कोटि जनंम कहा दुख भंउ ॥ सिख्या संत नामु भजु नानक राम रंगि आतम सिउ रंउ ॥ २ ॥ रंचक रेत खेत तनि निरमित दुरलभ देह सवारि धरी ॥ खान पान सोधे सुख भुंचत संकट काटि बिपति हरी ॥ मात पिता भाई अरु बंधप बूझन की सभ सूझ परी ॥ बरधमान होवत दिन प्रति नित आवत निकटि बिखंम जरी ॥ रे गुन हीन दीन माइआ क्रिम सिमरि सुआमी एक घरी ॥ करु गहि लेहु क्रिपाल क्रिपा निधि नानक काटि भरंम भरी ॥ ३ ॥ रे मन मूस बिला महि गरबत करतब करत महां मुघनां ॥ संपत दोल झोल संगि झूलत माइआ मगन भ्रमत घुघना ॥ सुत बनिता साजन सुख बंधप ता सिउ मोहु बढिओ सु घना ॥ बोइओ बीजु अहं मम अंकुरु बीतत अउध करत अघनां ॥ मिरतु मंजार पसारि मुखु निरखत भुंचत भुगति भुख भुखना ॥ सिमरि गुपाल दइआल सतसंगति नानक

हे मेरे ठाकुर, यदि तुझे अच्छा लगे तो मैं तेरे सामने एक विनती और अरदास करता हूँ। मेरे मन का चाव है कि तू मुझे अपना दर्शन दे और मेरा यह मन तेरी भक्ति में टिका रहे। हे प्रभु, तेरा सेवक और तेरा रूप गुरु नानक अन्धेरे मे दीपक की तरह इस संसार में प्रकट हुआ है और उसके बताए हुए प्रभु-नाम की कृपा से सारी सृष्टि पार उतर रही है ।। ६ ।।

सवैये श्री मुखवाक्य महला ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

एक तो मेरा शरीर पहले ही कच्चा अर्थात अस्थिर है और ऊपर से यह मोह में बँधा हुआ है; मैं मूर्ख, कठोर, मलीन और दुर्बुद्धि वाला हूं। मेरा मन दौड़ता-भागता, भटकता हुआ टिक नहीं पाता और मैंने परब्रह्म की गति को भी नहीं जाना है। मैं यौवन, रूप, माया और अहंकार में ही मस्त हूँ और बड़ा अभिमानी बनकर मैं विकल होकर फिर रहा हूँ। पराया धन, पराए झगड़े, स्त्री, निन्दा आदि मेरे मन को अच्छे लगते हैं। मैं लुक-छिपकर ठगने के उपाय करता रहता हूँ हालाँकि वह अन्तर्यामी प्रभु सब कुछ देखता और सुनता रहता है। शील, धर्म, दया, पवित्रता आदि मुझ में कुछ भी नहीं है और हे जीवन दान देने वाले प्रभु, मैं तेरी शरण में आ गया हूँ। हे प्रभु, तू करने-कराने वाला समर्थ है और हे नानक के स्वामी, मुझे बचा लो ।। १ ।। प्रभु की कीर्ति गायन करना और प्रभु की शरण में आ जाना - यह दोनों कर्म ही पापों को दूर करने के लिए होते हैं। वह प्रभु सभी प्रकार से हमारे समस्त कुलों का उद्धार करने वाला और पार उतरने और उतारने वाला है। हे अचेत मन, तू चेत जा और प्रभु को सत्संगत के द्वारा समझकर उसका सुमिरन कर। भ्रमों के अंधेरे में ठगा हुआ तू किधर भटक रहा है। तू उस प्रभु का नाम थोड़े समय के लिए, घड़ी भर के लिए, पल और निमिष के लिए ही बेशक अपनी जीभ से याद कर परन्तु उसकी याद बनाए रख। माया का काम-काज ओछा है और इसके सुखों के बन्धनों के फलस्वरूप तू भला करोड़ों जन्मों तक दुखों में भटकने के लिए क्यों तैयार है। हे नानक, शान्त-पुरुषों की शिक्षा के अनुसार प्रभु-नाम का भजन करो और प्रभु के प्रेम में अपनी आत्मा में ही उसके साथ रमण करते रहो ।। २ ।। माता के पेट रूपी खेत में रंचमात्र रेतस (वीर्य) रखने से यह दुर्लभ देही सँवार कर बना दी गई है। खान-पान और बढ़िया सुख उपभोग करने के लिए तुम्हें दिए गए और तुम्हारे संकटों को काटकर तुम्हारी मुसीबतों को दूर किया गया। माता-पिता, भाई और बन्धुओं को पहचानने की तुझ में बुद्धि डाली गई है। तू दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और अब भयानक बुढ़ापा तेरे निकट आता जा रहा है। हे गुणहीन, दीन और माया के कीड़े, उस मालिक का भी घड़ी भर के लिए सुमिरन कर ले। हे नानक, भ्रमों के गट्ठर को काटकर कृपा के समुद्र कृपालु प्रभु का हाथ थाम ले ।। ३ ।। हे मन, जैसे चूहा अपने बिल में बहुत अभिमानी बना रहता है और मूर्खों वाले काम करता रहता है, तेरा व्यवहार भी ऐसा ही है। माया के झूले को मस्ती से झूलता हुआ तू माया में लीन होकर उल्लू की तरह भटकता रहता है। पुत्र, स्त्री, मित्रों और बन्धुओं के सुख आदि के साथ तेरा बहुत मोह बढ़ गया है। अहंकार का बीज जो तूने बोया था उसका अंकुर फूट निकला है और तेरी आयु पाप करते हुए ही बीत रही है। मौत रूपी बिल्ली तेरा मुँह देख रही है और तू स्वादिष्ट भोजन खाता हुआ भी भूखा का भूखा ही बना रहता है अर्थात तेरा कभी पेट नहीं भरता। हे नानक,

जगु जानत सुपना ॥ ४ ॥ देह न गेह न नेह न नीता माइआ मत कहा लउ गारहु ॥ छत्र न पत्र न चउर न चावर बहती जात रिदै न बिचारहु ॥ रथ न अस्व न गज सिंघासन छिन महि तिआगत नांग सिधारहु ॥ सूर न बीर न मीर न खानम संगि न कोऊ द्रिसटि निहारहु ॥ कोट न ओट न कोस न छोटा करत बिकार दोऊ कर झारहु ॥ मित्र न पुत्र कलत्र साजन सख उलटत जात बिरख की छांरहु ॥ दीन दयाल पुरख प्रभ पूरन छिन छिन सिमरहु अगम अपारहु ॥ स्रीपति नाथ सरणि नानक जन हे भगवंत क्रिपा करि तारहु ॥ ५ ॥ प्रान मान दान मग जोहन हीतु चीतु दे ले ले पारी ॥ साजन सैन मीत सुत भाई ताहू ते ले रखी निरारी ॥ धावन पावन कूर कमावन इह बिधि करत अउध तन जारी ॥ करम धरम संजम सुच नेमा चंचल संगि सगल बिधि हारी ॥ पसु पंखी बिरख असथावर बहु बिधि जोनि भ्रमिओ अति भारी ॥ खिनु पलु चसा नामु नही सिमरिओ दीना नाथ प्रानपति सारी ॥ खान पान मीठ रस भोजन अंत की बार होत कत खारी ॥ नानक संत चरन संगि उधरे होरि माइआ मगन चले सभि डारी ॥ ६ ॥ ब्रहमादिक सिव छंद मुनीसुर रसकि रसकि ठाकुर गुन गावत ॥ इंद्र मुनिंद्र खोजते गोरख धरणि गगन आवत फुनि धावत ॥ सिध मनुख्य देव अरु दानव इकु तिलु ता को मरमु न पावत ॥ प्रिअ प्रभ प्रीति प्रेम रस भगती हरि जन ता कै दरसि समावत ॥ तिसहि तिआगि आन कउ जाचहि मुख दंत रसन सगल घसि जावत ॥ रे मन मूड़ सिमरि सुखदाता नानक दास तुझहि समझावत ॥ ७ ॥ माइआ रंग बिरंग करत भ्रम मोह कै कूपि गुबारि परिओ है ॥ एता गबु अकासि न मावत बिसटा अस्त क्रिमि उदरु भरिओ है ॥ दह दिस धाइ महा बिखिआ कउ पर धन छीनि अगिआन हरिओ है ॥ जोबन बीति जरा रोगि ग्रसिओ जमदूतन डंनु मिरतु मरिओ है ॥ अनिक जोनि संकट नरक भुंचत सासन दूख गरति गरिओ है ॥ प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है ॥ ८ ॥ गुण समूह फल सगल मनोरथ पूरन होई आस हमारी ॥ अउखध मंत्र तंत्र पर दुख हर

संसार को सपने की तरह जानते हुए तू सत्संगत में जाकर उस दयालु प्रभु का सुमिरन करता रह ।। ४ ।। यह शरीर, यह घर, यह सांसारिक प्रेम-प्यार सदा बना रहने वाला नहीं है इसलिए माया में मस्त होकर तू कहां तक अपने आपको गलाता रहेगा। छत्र, पत्र, चँवर और चँवर डुलाने वाले कुछ भी नहीं रहेंगे, तेरी आयु व्यतीत होती जा रही है और तू हृदय में इसका विचार ही नहीं करता। रथ, घोड़े, हाथी, सिंहासन आदि को क्षण भर में त्यागकर यहाँ से नंगे ही जाना होगा। तू अपनी आँखों से देख ले कि कोई भी बली, वीर, बादशाह, सरदार इनमें से कोई भी तेरे साथ नहीं होगा। ये किले, ये तेरे ठिकाने, तेरे खजानों से तेरी मुक्ति नहीं होगी। तू विकार करता रहेगा और यहाँ से दोनों हाथ झाड़कर चलता बनेगा। ये मित्र, पुत्र, स्त्री, प्यारे बन्धु सभी वृक्ष की छाया की तरह चलायमान होकर पलट जाएँगे। वह पूर्ण पुरुष प्रभु दीन दयालु है। तुम प्रत्येक क्षण उस अगम्य अपार प्रभु का सुमिरन करते रहो। सेवक नानक तो सभी ऐश्वर्यों के मालिक प्रभु की शरण में आ पड़ा है इसलिए हे प्रभु, कृपा करके उसे पार उतार दो ।। ५ ।। प्राणों की और सम्मान की बाजी लगाकर, दान माँग-माँगकर, राहजनी कर-करके अनेकों प्रकार से चित्त को समझाकर इस धन-सम्पदा को इकट्ठा किया गया है। सज्जन, सम्बन्धी, मित्रों, पुत्रों, भाईयों आदि से इसे छुपा-छुपाकर अलग रखा गया। नंगे पाँव दौड़-दौड़कर झूठ की कमाई करने की विधियों को खोजते-खोजते शरीर की सारी आयु ही तूने जला अर्थात समाप्त कर डाली है। धर्म-कर्म, संयम, पवित्रता, नित्य-कर्मों आदि की विधियों को तूने चंचल माया की संगत में गँवा दिया है। पशु-पक्षियों, वृक्षों और स्थिर बने रहने वाले पर्वतों आदि की योनियों में तू अनेकों प्रकार से भटकता रहा है। तूने उस दीनानाथ, प्राणपति प्रभु के नाम का क्षण भर के लिए भी सुमिरन नहीं किया है। तेरा खान-पान मीठे रसों वाला भोजन अंतिम समय में सब कुछ बिलकुल ही कड़वा हो जाएगा। हे नानक, केवल सन्त-पुरुषों के चरणों की संगत में ही तेरा उद्धार होगा तथा अन्य जो तेरे साथ तेरी धन-सम्पदा का मस्त होकर आनन्द भोग रहे हैं वे सब कुछ यहीं फेंककर चल निकलेंगे ।। ६ ।। ब्रह्मा, शिव और वेद तथा मुनि आदि रसपूर्वक उस प्रभु के गुण गाते हैं। इन्द्र, विष्णु उस धरती की रक्षा करने वाले प्रभु को खोजते हुए कभी धरती पर आते हैं और कभी फिर आकाश की तरफ भाग उठते हैं। सिद्ध, मनुष्य, देव, दानव सभी उसके रहस्य का एक तिल मात्र भी नहीं जान सके हैं। जिसके हृदय में प्रीतम प्रभु की प्रीति और प्रेम रस की भक्ति है प्रभु के सेवक तो उसी के दर्शनों में लीन रहते हैं। उस प्रभु को छोड़कर तू अन्यों से माँगता है और माँगते-माँगते ही तेरा मुँह, दाँत और जीभ आदि सभी घिस जाते हैं। हे मूर्ख मन, दास नानक तुझे समझाता है कि तू उस सुखदाता प्रभु का ही सुमिरन कर ।। ७ ।। हे जीव, तू नहीं जानता कि माया का रंग बदरंग हो जाता है और तू फिर भी भ्रम और मोह के अन्धे कुएँ में पड़ा हुआ है। तेरा पेट तो विष्टा, हड्डियों और कीड़ों से भरा है परन्तु तेरा अभिमान इतना बड़ा है कि वह आकाश में भी समा नहीं पाता। अज्ञान ने तुझे इस प्रकार ठगा हुआ है कि तू पराए धन को छीनकर महापाप करने के लिए दसों दिशाओं में दौड़ता फिरता है। तेरा यौवन बीतने से तू बुढ़ापे के रोग में फँसा है और यमदूतों से दण्ड पाने वाली मौत तू मरा है। तू कई योनियों के दुख और नरक भोगता है और यम के नियमों के दुखदायी गर्त में तू गलता रहता है। हे नानक, उस प्रभु की प्रेमा भक्ति से ही उद्धार होता है और उस भक्ति के लिए वह सन्त प्रभु स्वयं ही कृपा करता है ।। ८ ।। सभी गुणों के समूह का फल और हमारा उद्देश्य हमें प्राप्त हो गया है और हमारी आशा पूरी हो गई है। हमें प्रभु-नाम रूपी औषधि मिल गई है जो पराए दुख को दूर करने के लिए हमारे लिए तन्त्र-मन्त्र का ही रूप है और

सरब रोग खंडन गुणकारी ॥ काम क्रोध मद मतसर त्रिसना बिनसि जाहि हरि नामु उचारी ॥ इसनान दान तापन सुचि किरिआ चरण कमल हिरदै प्रभ धारी ॥ साजन मीत सखा हरि बंधप जीअ धान प्रभ प्रान अधारी ॥ ओट गही सुआमी समरथह नानक दास सदा बलिहारी ॥ ९ ॥ आवध कटिओ न जात प्रेम रस चरन कमल संगि ॥ दावनि बंधिओ न जात बिधे मन दरस मगि ॥ पावक जरिओ न जात रहिओ जन धूरि लगि ॥ नीरु न साकसि बोरि चलहि हरि पंथि पगि ॥ नानक रोग दोख अघ मोह छिदे हरि नाम खगि ॥ १ ॥ १० ॥ उदमु करि लागे बहु भाती बिचरहि अनिक सासत्र बहु खटूआ ॥ भसम लगाइ तीरथ बहु भ्रमते सूखम देह बंधहि बहु जटूआ ॥ बिनु हरि भजन सगल दुख पावत जिउ प्रेम बढाइ सूत के हटूआ ॥ पूजा चक्र करत सोमपाका अनिक भांति थाटहि करि थटूआ ॥ २ ॥ ११ ॥ २० ॥

सवईए महले पहिले के १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इक मनि पुरखु धिआइ बरदाता ॥ संत सहारु सदा बिखिआता ॥ तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥ तउ परम गुरू नानक गुन गावउ ॥ १ ॥ गावउ गुन परम गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥ गावहि गंभीर धीर मति सागर जोगी जंगम धिआनु धरे ॥ गावहि इंद्रादि भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ २ ॥ गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर हरि रस पूरन सरब कला ॥ गावहि सनकादि साध सिधादिक मुनि जन गावहि अछल छला ॥ गावै गुण धोमु अटल मंडलवै भगति भाइ रसु जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ३ ॥ गावहि कपिलादि आदि जोगेसुर अपरंपर अवतार वरो ॥ गावै जमदगनि परसरामेसुर कर कुठारु रघु तेजु हरिओ ॥ उधौ अक्रूरु बिदरु गुण गावै सरबातमु जिनि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ

सारे रोगों को नष्ट करने के लिए गुणकारी है। प्रभु-नाम का उच्चारण करने से काम, क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, तृष्णा आदि सभी विनष्ट हो जाते हैं। प्रभु के चरण कमल हृदय में धारण करने से सभी प्रकार के स्नान, दान, तपस्याएँ, शुद्धिकरण की क्रियाएँ उसी में ही सम्मिलित हो जाती हैं। जीवन का भोजन और प्राणों का आधार प्रभु हमारा साजन, मित्र, दोस्त और सम्बन्धी है। दास नानक ने तो उस समर्थ स्वामी का आसरा पकड़ा हुआ है और उसी पर सदैव बलिहारी जाता है ।। ६ ।। प्रभु के चरण कमलों के साथ लगा हुआ प्रेम शस्त्रों से भी काटा नहीं जा सकता है। जिसका मन प्रभु-दर्शन के मार्ग पर चलने के लिए पूर्णरूप से अपने उद्देश्य में लीन हो गया है उसे अब रोकने के लिए रस्सी से बाँधकर भी नहीं रोका जा सकता। जो प्रभु के सेवकों की चरणधूलि में लीन हो गया है उसे तो अग्नि भी नहीं जला सकती। जो पाँव प्रभु के मार्ग पर चल निकले हैं उन्हें पानी भी नहीं डुबा सकता। हे नानक, प्रभु-नाम के बाण से सभी प्रकार के रोग, दोष, पाप, मोह आदि नष्ट हो जाते हैं ।। १ ।। १० ।। अनेकों प्रकार के उद्यम करते हुए लोग कई तरीकों से छः शास्त्रों का चिन्तन करते रहते हैं। भस्म को लगाकर कई लोग अनेकों तीर्थों पर भ्रमण करते रहते हैं और कई अपने शरीर को कमजोर करके जटाएँ आदि बाँधे रहते हैं। जिस प्रकार अपने ही सूत्र के जाल में फँसी हुई मकड़ी उस जाल के प्रेम के कारण ही उसमें फँसी रहती है और मर जाती है इसी प्रकार प्रभु के सुमिरन के बिना माया-मोह के जाल में फँसे सभी जीव दुख पाते रहते हैं। ऐसे लोग पूजा, चक्र, आदि अपनाते हुए अपने हाथ से ही खाना बनाते हैं और अनेकों प्रकार के बनावटी कर्मकाण्ड करते रहते हैं ।। २ ।। ११ ।। २० ।।

सवैये महले पहले के १ (गुरु नानक की स्तुति) १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

सन्तों के आसरे के रूप में सदैव प्रसिद्ध, वर दाता प्रभु के चरणों को हृदय में टिकाकर मैं एकाग्र मन होता हूँ और उन चरणों की कृपा से परम गुरु नानक देव जी के गुणों का गायन करता हूँ ।। १ ।। सुखों के सागर उस परम गुरु के मैं गुण गाता हूँ जो पापों को दूर करने वाला और शब्द का सरोवर है। योगी और जंगम तथा बुद्धि के समुद्र और धैर्यवान, गम्भीर सभी लोग ध्यान पूर्वक उसका गुणानुवाद करते हैं। इन्द्र और प्रहलाद आदि भक्त जिन्होंने आत्मा के आनन्द को जाना है वे भी उसका गुणानुवाद करते हैं। कल्ह कवि का कथन है कि मैं उस गुरु नानक देव के सुयश का गायन करता हूँ जिसने राज और योग दोनों का आनन्द लिया है अर्थात जो गृहस्थी भी है और संसार से अलिप्त होकर प्रभु के साथ जुड़ा हुआ है ।। २ ।। प्रभु के नाम रस में भीगे हुए और सर्व कलाओं से युक्त गुरु नानक का यश गायन जनक आदि योगियों समेत करते हैं। माया द्वारा ना छले जा सकने वाले गुरु नानक का यश गायन मुनिजन, साधुजन, सनक जैसे सिद्ध आदि भी करते हैं। जिस गुरु से भक्तिभाव द्वारा प्रभु के रस का अनुभव किया है उसका गुणानुवाद ध्रुव जैसा भक्त और धौम ऋषि आदि भी करते हैं। कल्ह कवि का कथन है कि मैं उस गुरु नानक देव के सुयश का गायन करता हूँ जिसने राज और योग दोनों का आनन्द लिया है ।। ३ ।। अपरम्पर प्रभु के अवतार कहे जाने वाले तथा कपिल आदि योगेश्वर भी उस गुरु का गुण-गायन कर रहे हैं। जमदग्नि का पुत्र परशुराम जिसके हाथ में कुल्हाड़ा है और जिसने रघुवंशी राम का तेज प्रताप छीन लिया था वह भी गुरु के यश का गायन कर रहा है। सर्वव्यापक प्रभु को जानने वाले गुरु का गुणानुवाद उद्धव, अक्रूर और विदुर आदि भी कर रहे हैं। कल्ह कवि का कथन है कि मैं उस

गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ४ ॥ गावहि गुण बरन चारि खट दरसन ब्रहमादिक सिमरंथि गुना ॥ गावै गुण सेसु सहस जिहबा रस आदि अंति लिव लागि धुना ॥ गावै गुण महादेउ बैरागी जिनि धिआन निरंतरि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ५ ॥ राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु रिदंतरि ॥ स्रिसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरंतरि ॥ गुण गावहि सनकादि आदि जनकादि जुगह लगि ॥ धंनि धंनि गुरु धंनि जनमु सकयथु भलौ जगि ॥ पाताल पुरी जैकार धुनि कबि जन कल वखाणिओ ॥ हरि नाम रसिक नानक गुर राजु जोगु तै माणिओ ॥ ६ ॥ सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ ॥ त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ ॥ दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ ॥ उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ ॥ कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ ॥ स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ ॥ ७ ॥ गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन ॥ नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन ॥ भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रंगु माणै ॥ जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु न जाणै ॥ सुखदेउ परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइओ ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइओ ॥ ८ ॥ गुण गावहि पायालि भगत नागादि भुयंगम ॥ महादेउ गुण रवै सदा जोगी जति जंगम ॥ गुण गावै मुनि ब्यासु जिनि बेद ब्याकरण बीचारिअ ॥ ब्रहमा गुण उचरै जिनि हुकमि सभ स्रिसटि सवारीअ ॥ ब्रहमंड खंड पूरन ब्रहमु गुण निरगुण सम जाणिओ ॥ जपु कल सुजसु नानक गुर सहजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ९ ॥ गुण गावहि नव नाथ धंनि गुरु साचि समाइओ ॥ मांधाता गुण रवै जेन चक्रवै कहाइओ ॥ गुण गावै बलि राउ सपत पातालि बसंतौ ॥ भरथरि गुण उचरै सदा गुर संगि रहंतौ ॥ दूरबा परूरउ अंगरै गुर नानक जसु गाइओ ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर घटि घटि सहजि समाइओ ॥ १० ॥

गुरु नानक देव के सुयश का गायन करता हूँ जिसने राज और योग दोनों का आनन्द लिया है ।। ४ ।। चारों वर्ण, षटदर्शन, ब्रह्मा आदि तेरे गुणों का सुमिरन और गायन आदि करते हैं। शेषनाग हजारों जीभों से रसपूर्वक लगातार लौ लगाकर तेरे गुण गाता है। निरन्तर ध्यान में ही लीन बना रहने वाला बैरागी महादेव भी तेरे गुण गाता है। कल्ह कवि का कथन है कि मैं उस गुरु नानक देव के सुयश का गायन करता हूँ जिसने राज और योग दोनों का आनन्द लिया है ।। ५ ।। तूने राज योग को भोगा है और वह शत्रुता रहित प्रभु तेरे हृदय में बसा हुआ है। उस प्रभु के नाम के द्वारा सारी सृष्टि पार उतर गई और उसी नाम के रस को लेकर गुरु नानक भी पार उतर गया है। सनक, सनन्दन और जनक आदि युगों से तेरे गुण गा रहे हैं। हे गुरु, तू धन्य है, तू धन्य है और संसार का भला करने के कारण तेरा जन्म सार्थक हो गया है। कवि कल्ह का कथन है कि पाताल से भी तेरी जय-जयकार की धुन सुनाई पड़ रही है। हे हरि नाम के रसिक नानक, तूने ही राज और योग का आनन्द लिया है ।। ६ ।। सतयुग में तूने ही राज योग का आनन्द लेते हुए वामन रूप धारण करके राजा बलि को छला था। त्रेता युग में तूने रघुवंश का राम बनकर आनन्द लिया था। तूने ही द्वापर में कृष्ण-मुरारी बनकर कंस को मुक्ति प्रदान करके उसे कृतार्थ किया था तथा उग्रसेन को राज देकर भक्तजनों को तूने ही अभयदान दिया था। कलियुग में प्रामाणिक रूप से तुझे ही नानक, गुरु अंगद और गुरु अमरदास कहा जाता है। प्रभु ने ही स्वयं यह कहा है कि श्री गुरु (नानक) का राज अविचल और अटल है ।। ७ ।। भक्त जयदेव, त्रिलोचन और रविदास तेरे ही गुण गाते हैं। तुझे समान दृष्टि वाला मानते हए भक्त कबीर और नामदेव भी तेरे ही गुण गाते हैं। भक्त बेणी तेरे इस गुण को याद करता है कि गुरु नानक सहज अवस्था में रहते हुए आत्मा के स्वाद का चावपूर्वक आनन्द लेता है और गुरु ज्ञान के माध्यम से मिलाप वाली सुरति में लीन होकर प्रभु के बिना अन्य किसी को नहीं पहचानता। शुकदेव, परीक्षित तेरे ही गुणों में लीन हैं और गौतम ऋषि ने भी तेरे ही यश का गायन किया है। कवि कल्ह का कथन है कि गुरु नानक का यश नित्य नवीन बना रहकर सारे संसार में छाया रहता है ।। १ ।। पाताल में शेषनाग आदि के रूप वाले नाग आदि भक्त भी तेरा ही गुणानुवाद करते हैं। महादेव, योगी, यति और जंगम भी सदैव तेरे गुणों में ही लीन बने रहते हैं। वेद और व्याकरण का विचार करने वाला व्यास मुनि भी तेरे ही गुण गाता है। जिस ब्रह्मा के विधान में सारी सृष्टि की रचना हुई है वह भी तेरे गुणों का उच्चारण करता है। ब्रह्माण्ड के सभी खण्डों में ब्रह्म को सगुण और निर्गुण रूपों में उसने एक समान जाना है। हे कल्ह, तू उस गुरु नानक के सुयश का जाप कर जिसने सहज योग का आनन्द लिया है ।। ६ ।। नौ नाथ भी तुम्हारे गुण गाते हुए कहते हैं कि गुरु नानक सत्य में लीन हो चुका है। चक्रवर्ती कहलाने वाला मांधाता भी तेरे ही गुणों को याद करता है। सातवें पाताल में बसने वाला राजा बलि भी तेरा ही गुणानुवाद करता है। अपने गुरु के साथ बना रहने वाला भरथरी भी तेरे ही गुणों का उच्चारण करता है। दुर्वासा ऋषि, राजा पुरु और अंगिरस ऋषि ने भी गुरु नानक के यश का ही गायन किया है। कवि कल्ह का कथन है कि गुरु नानक का सुयश स्वाभाविक रूप से ही घट-घट में समाया हुआ है ।। १० ।।

सवईए महले दूजे के २ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई पुरखु धंनु करता कारण करतारु करण समरथो ॥ सतिगुरू धंनु नानकु मसतकि तुम धरिओ जिनि हथो ॥ त धरिओ मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥ मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु लीओ बरजि पंच भूत एक घरि राखि ले समजि ॥ जगु जीतउ गुर दुआरि खेलहि समत सारि रथु उनमनि लिव राखि निरंकारि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ १ ॥ जा की द्रिसटि अंम्रित धार कालुख खनि उतार तिमर अग्यान जाहि दरस दुआर ॥ ओइ जु सेवहि सबदु सारु गाखड़ी बिखम कार ते नर भव उतारि कीए निरभार ॥ सतसंगति सहज सारि जागीले गुर बीचारि निंमरी भूत सदीव परम पिआरि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ २ ॥ तै तउ द्रिड़िओ नामु अपारु बिमल जासु बिथारु साधिक सिध सुजन जीआ को अधारु ॥ तू ता जनिक राजा अउतारु सबदु संसारि सारु रहहि जगत्र जल पदम बीचार ॥ कलिप तरु रोग बिदारु संसार ताप निवारु आतमा त्रिबिधि तेरै एक लिव तार ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ ३ ॥ तै ता हदरथि पाइओ मानु सेविआ गुरु परवानु साधि अजगरु जिनि कीआ उनमानु ॥ हरि हरि दरस समान आतमा वंतगिआन जाणीअ अकल गति गुर परवान ॥ जा की द्रिसटि अचल ठाण बिमल बुधि सुथान पहिरि सील सनाहु सकति बिदारि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ ४ ॥ द्रिसटि धरत तम हरन दहन अघ पाप प्रनासन ॥ सबद सूर बलवंत काम अरु क्रोध बिनासन ॥ लोभ मोह वसि करण सरण जाचिक प्रतिपालण ॥ आतम रत संग्रहण कहण अंम्रित कल ढालण ॥ सतिगुरू कल सतिगुर तिलकु सति लागै सो पै तरै ॥ गुरु जगत

सवैये महले दूसरे के २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

यही सर्वव्यापक परमात्मा धन्य है जो सभी कारणों का कर्ता और सब कुछ करने में समर्थ कर्ता प्रभु है। सच्चा गुरु नानक धन्य है जिसने तुम्हारे मस्तक पर (गुरु अंगद के मस्तक पर) अपना वरद हस्त रखा है। जब तेरे माथे पर उसने हाथ रखा तो स्वाभाविक रूप से ही अमृत की घनघोर वर्षा होने लगी जिसमें सुर नर गण मुनि सुगन्धित होकर प्रत्यक्ष तौर पर सराबोर हो गए। तूने काल रूपी दुखदायी काँटे का अपनी गरज के साथ नाश कर दिया, दौड़ते हुए मन को समझाकर थाम लिया और विकार आदि पाँच भूतों को समेट कर एक ही स्थान में नियन्त्रित (काबू) कर लिया। गुरु के द्वार पर आकर तूने संसार को जीत लिया है और अपनी सुरति को निराकार प्रभु में लगाकर तू समाधि के रथ पर सवार होकर समताभाव की बाजी को खेल रहा है। हे कलसहार, तू सबको बता कि प्रभु रूप जगत-गुरु नानक का स्पर्श करने वाले लहणा (गुरु अंगद) की शोभा संसार में फैली हुई है ।। १ ।। जिस गुरु अंगद की दृष्टि अमृत की धारा है। वह पापों को उखाड़ कर दूर कर देने वाली है और उस गुरु के द्वार का दर्शन करने से ही अज्ञान का अंधकार दूर हो जाता है। जो व्यक्ति सृष्टि के सारतत्व शब्द का सुमिरन करने का विषम कार्य करते हैं उन्हें संसार सागर से पार उतार कर सच्चे गुरु ने सभी प्रकार के बोझ से मुक्त कर दिया है। जो गुरु के चिन्तन के अनुरूप सावधान हो जाते हैं वे ही सत्संगत में सहज अवस्था प्राप्त कर लेते हैं और वे सदैव विनम्रता के परम प्रेम में लीन बने रहते हैं। हे कलसहार, प्रभु के रूप जगदगुरु नानक का स्पर्श करने वाले लहणा (गुरु अंगद देव जी) की शोभा संसार के सातों द्वीपों में फैली हुई है ।। २ ।। हे गुरु अंगद, तूने तो उस प्रभु के अपरम्पर नाम को हृदय में पक्के तौर पर बिठाया है। तेरा निर्मल यश फैला हुआ है और तू ही साधक, सिद्ध-पुरुष और सन्तजनों के जीवन का आसरा है। अलिप्त बने रहने में हे गुरु अंगद, तू ही राजा जनक का रूप है। संसार में तेरा शब्द श्रेष्ठ है और तू जल में कमल की तरह रहता हुआ संसार से अलिप्त बना रहता है। रोगों को दूर करने वाला और संसार के संतापों का निवारण करने वाला तू ही कल्प वृक्ष है। तीनों गुणों में विचरण करने वाले संसारी जीव एकरस होकर अपनी लौ तुझमें लगाए रहते हैं। हे कलसहार, तू सबको बता कि प्रभु रूप जगत-गुरु नानक का स्पर्श करने वाले लहणा (गुरु अंगद देव जी) की शोभा संसार के सातों द्वीपों में फैली हुई है ।। ३ ।। तूने हज़रत गुरु नानक से सम्मान प्राप्त किया है। तूने प्रामाणिक गुरु नानक की सेवा की है जिसने असाध्य मन को साधकर ऊँचा उठाया हुआ है। तुम ऐसे हो जिसका दर्शन प्रभु-दर्शन जैसा है, जिसकी आत्मा ज्ञानवान है और जिसने प्रामाणिक गुरु की सभी कलाओं से ऊपर बनी रहने वाली अवस्था को पहचान लिया है। तुम्हारी दृष्टि अटल एवं अचल प्रभु के ठिकाने पर टिकी हुई है। तुम्हारी बुद्धि निर्मल है और श्रेष्ठ स्थान पर लगी हुई है और तुम ने विनम्र स्वभाव का कवच पहनकर माया के प्रभाव का नाश किया है। हे कलसहार, तू सब को बता दे कि प्रभु रूप जगत गुरु नानक का स्पर्श करने वाले लहणा (गुरु अंगद देव जी) की शोभा संसार के सातों द्वीपों में फैली हुई है ।। ४ ।। नजर डालते ही तुम अंधेरे को दूर करने वाले हो, पापों को जला देने वाले और नाश कर देने वाले हो। तुम बचन को पालने वाले बलवान शूरवीर हो तथा काम और क्रोध का नाश करने वाले हो। तुम लोभ और मोह को वश में करने वाले हो और शरण में आए हुए याचक का पालन-पोषण करने वाले हो। आत्म तत्व का संग्रह करने वाले हो और तुम्हारा कथन अमृत की शक्ति की धारा है। हे कलसहार, सच्चा गुरु (अंगद) शिरोमणि तिलक रूपी गुरु है और जो सचमुच ही इनके चरणों में लग जाता है वह पार उतर जाता है।

फिरणसीह अंगरउ राजु जोगु लहणा करै ॥ ५ ॥ सदा अकल लिव रहै करन सिउ इछा चारह ॥ द्रुम सपूर जिउ निवै खवै कसु बिमल बीचारह ॥ इहै ततु जाणिओ सरब गति अलखु बिडाणी ॥ सहज भाइ संचिओ किरणि अंम्रित कल बाणी ॥ गुर गमि प्रमाणु तै पाइओ सतु संतोखु ग्राहजि लयौ ॥ हरि परसिओ कलु समुलवै जन दरसनु लहणे भयौ ॥ ६ ॥ मनि बिसासु पाइओ गहरि गहु हदरथि दीओ ॥ गरल नासु तनि नठयो अमिउ अंतरगति पीओ ॥ रिदि बिगासु जागिओ अलखि कल धरी जुगंतरि ॥ सतिगुरु सहज समाधि रविओ सामानि निरंतरि ॥ उदारउ चित दारिद हरन पिखंतिह कलमल त्रसन ॥ सद रंगि सहजि कलु उचरै जसु जंपउ लहणे रसन ॥ ७ ॥ नामु अवखधु नामु आधारु अरु नामु समाधि सुखु सदा नाम नीसाणु सोहै ॥ रंगि रतौ नाम सिउ कल नामु सुरि नरह बोहै ॥ नाम परसु जिनि पाइओ सतु प्रगटिओ रवि लोइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै अठसठि मजनु होइ ॥ ८ ॥ सचु तीरथु सचु इसनानु अरु भोजनु भाउ सचु सदा सचु भाखंतु सोहै ॥ सचु पाइओ गुर सबदि सचु नामु संगती बोहै ॥ जिसु सचु संजमु वरतु सचु कबि जन कल वखाणु ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै सचु जनमु परवाणु ॥ ९ ॥ अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥ सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै ॥ गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै ॥ सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥ १० ॥

सवईए महले तीजे के ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सोई पुरखु सिवरि साचा जा का इकु नामु अछलु संसारे ॥ जिनि भगत भवजल तारे सिमरहु सोई नामु परधानु ॥ तितु नामि रसिकु नानकु लहणा थपिओ जेन स्रब सिधी ॥ कवि जन कल्य सबुधी कीरति जन अमरदास बिस्तरीया ॥ कीरति रवि किरणि प्रगटि संसारह साख तरोवर मवलसरा ॥ उतरि

भाई फेरू का शेर जैसा पुत्र लहणा जगतगुरु अंगद कहला कर राजयोग का आनन्द ले रहा है ।। ५ ।। यह सदैव बनावटों से ऊपर है और अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतन्त्र है। जैसे फलों से भरपूर वृक्ष झुकता हुआ कष्ट सहता रहता है इसी प्रकार इनका चिन्तन भी निर्मल और स्पष्ट है। इन्होंने इस तत्व को जान लिया है कि सर्वव्यापक अदृष्ट प्रभु आश्चर्य ही आश्चर्य है और इसने अमृत वाणी की कला को प्रयुक्त करते हुए स्वाभाविक रूप से ही लोगों में ज्ञान की किरणों को फैला दिया है। गुरु नानक की पहुँच तक का दर्जा हे गुरु अंगद, तूने भी प्राप्त किया है और तूने सत्य और सन्तोष को आत्मसात कर लिया है। कलसहार पुकार कर कहता है कि जिन्होंने लहणा (गुरु अंगद) जी का दर्शन कर लिया है उनको तो मानों प्रभु का ही स्पर्श प्राप्त हो गया है ।। ६ ।। तुमने मन में विश्वास धारण किया और हज़रत नानक ने तुझे गहरे और गम्भीर प्रभु तक पहुँचने की युक्ति प्रदान की है। शरीर को नष्ट कर देने वाला विष तुम्हारे पास से भाग खड़ा हुआ और अपने चित्त के अन्दर ही तुमने अमृत का पान किया है। तुम्हारा हृदय सावधान होकर खिल उठा और युगान्तरों में बने रहने वाले उस अदृष्ट प्रभु ने अपनी शक्ति को तुझ में स्थित कर दिया है। तूने लगातार सहज समाधि में लीन होकर सच्चे गुरु का सुमिरन किया है। तुम उदार चित्त वाले, दरिद्रता को दूर करने वाले हो और तुम्हें देखते ही पाप काँप उठते हैं। कलसहार नित्य बने रहने वाले प्रेम के साथ स्वाभाविक रूप से ही लहणा (गुरु अंगद) के यश का उच्चारण करता है ।। ७ ।। प्रभु का नाम ही सभी रोगों की औषधि है, नाम ही सबका आधार है और प्रभु के शोभायमान झंडे की तरह प्रभु-नाम ही समाधि का आनन्द देने वाला है। हे कलसहार, गुरु अंगद उसी प्रभु-नाम में लीन है जो नाम देवताओं और मनुष्यों को भी सुगन्धित बनाए रखता है। जिस भी व्यक्ति ने गुरु अंगद देव जी से नाम का स्पर्श मात्र भी प्राप्त किया है उसके हृदय का सत्य संसार में सूर्य की तरह चमक उठा है। गुरु अंगद के दर्शन करने मात्र से अड़सठ तीर्थों का स्नान अपने आप ही हो जाता है ।। ८ ।। सत्य ही तीर्थ है, सत्य ही स्नान है, सत्य ही भोजन है, सत्य ही प्रेम है जिसका उच्चारण करते हुए गुरु अंगद शोभायमान है। शब्द-गुरु के माध्यम से गुरु नानक के द्वारा गुरु अंगद ने सत्य को प्राप्त किया है और यह सच्चा नाम ही संगत को सुगन्धित करता रहता है। दास कलसहार कवि का कथन है कि जिस का संयम, व्रत इत्यादि प्रभु का ही नाम है उस गुरु अंगद का दर्शन करने से सदैव स्थिर बना रहने वाला प्रभु-नाम प्राप्त हो जाता है और मानव जीवन सफल हो जाता है ।। ९ ।। गुरु अंगद जब किसी पर अपनी शुभ अमृत दृष्टि धारण करता है तो उसके समस्त पाप और सब प्रकार की मैल दूर हो जाती है। काम, क्रोध और लोभ, मोह आदि सभी शक्तियों को वह अपने वश में कर लेता है। संसार के दुखों को खोकर उसके मन में सदैव सुख बसने लगता है। गुरु अंगद नवनिधियों का समुद्र है जो हमारे जीवन की कालिमा को धो देने वाला है। हे टल्ल (कलसहार का दूसरा नाम), तू कह कि गुरु अंगद देव जी का सुमिरन दिन रात सहज स्वाभाविक रूप में बने रहकर करते रहना चाहिए क्योंकि ऐसे गुरु के दर्शन करने से जन्म-मरण का दुख समाप्त हो जाता है ।। १० ।।

सवैये महले तीसरे के ३   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

उस सर्वव्यापक सच्चे प्रभु का सुमिरन करो जिसका एक नाम ही इस संसार के लिए अछल है। उसी सर्व प्रमुख प्रभु-नाम का सुमिरन करो जिसने संसार सागर से भक्तों को पार उतार दिया है। उसी नाम के माध्यम से नानक रसपूर्ण बना तथा उसी नाम के द्वारा लहणा गुरु बना और उसे सारी शक्तियां प्राप्त हुईं। हे कल्ह कवि, प्रभु-नाम के कारण ही सदबुद्धि वाले गुरु अमरदास की शोभा का लोगों में विस्तार हो रहा है। गुरु अमरदास की शोभा के सूर्य की किरण उसी प्रकार प्रकट हो रही है जैसे मौलसरी के वृक्ष की शाखाएँ चारों ओर सुगन्धि फैलाती हैं। गुरु अमरदास की शोभा के कारण उत्तर,

दखिणहि पुबि अरु पस्चमि जै जै कारु जपंथि नरा ॥ हरि नामु रसनि गुरमुखि बरदायउ उलटि गंग पस्चमि धरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ १ ॥ सिमरहि सोई नामु जख्य अरु किंनर साधिक सिध समाधि हरा ॥ सिमरहि नख्यत्र अवर ध्रू मंडल नारदादि प्रहलादि वरा ॥ ससीअरु अरु सूरु नामु उलासहि सैल लोअ जिनि उधरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ २ ॥ सोई नामु सिवरि नव नाथ निरंजनु सिव सनकादि समुधरिआ ॥ चवारसीह सिध बुध जितु राते अंबरीक भवजलु तरिआ ॥ उधउ अक्रूरु तिलोचनु नामा कलि कबीर किलविख हरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ ३ ॥ तितु नामि लागि तेतीस धिआवहि जती तपीसुर मनि वसिआ ॥ सोई नामु सिमरि गंगेव पितामह चरण चित अंम्रित रसिआ ॥ तितु नामि गुरू गंभीर गरूअ मति सत करि संगति उधरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ ४ ॥ नाम किति संसारि किरणि रवि सुरतर साखह ॥ उतरि दखिणि पुबि देसि पस्चमि जसु भाखह ॥ जनमु त इहु सकयथु जितु नामु हरि रिदै निवासै ॥ सुरि नर गण गंधरब छिअ दरसन आसासै ॥ भलउ प्रसिधु तेजो तनौ कल्य जोड़ि कर ध्याइअओ ॥ सोई नामु भगत भवजल हरणु गुर अमरदास तै पाइओ ॥ ५ ॥ नामु धिआवहि देव तेतीस अरु साधिक सिध नर नामि खंड ब्रहमंड धारे ॥ जह नामु समाधिओ हरखु सोगु सम करि सहारे ॥ नामु सिरोमणि सरब मै भगत रहे लिव धारि ॥ सोई नामु पदारथु अमर गुर तुसि दीओ करतारि ॥ ६ ॥ सति सूरउ सीलि बलवंतु सत भाइ संगति सघन गरूअ मति निरवैरि लीणा ॥ जिसु धीरजु धुरि धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥ परसहि संत पिआरु जिह करतारह संजोगु ॥ सतिगुरू सेवि सुखु पाइओ अमरि गुरि कीतउ जोगु ॥ ७ ॥ नामु नावणु नामु रस खाणु अरु भोजनु नाम रसु सदा चाय मुखि मिस्ट बाणी ॥ धनि सतिगुरु सेविओ जिसु पसाइ गति अगम जाणी ॥ कुल संबूह समुधरे पायउ नाम

दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सभी ओर लोग उनकी जय-जयकार कर रहे हैं। जिस प्रभु के नाम को गुरमुख गुरु नानक ने लोगों में बाँटा और (चेले को गुरु बनाकर) उलटी गंगा पश्चिम की ओर बहा दी वही अछल नाम जो भक्तों को संसार से पार उतार देने वाला है गुरु अमरदास को भी अन्तर्मन में अनुभव हुआ है ।। १ ।। यक्ष, किन्नर, साधना करने वाले सिद्ध और शिव आदि भी उसी प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं। नक्षत्र, नारद, प्रहलाद और ध्रुव मण्डल के श्रेष्ठ लोग उसी नाम का सुमिरन करते हैं। सूर्य और चन्द्रमा भी उसी नाम की कामना करते हैं जिसने पहाड़ों के समूहों का भी उद्धार कर दिया है। वही अछल नाम जो भक्तों को संसार से पार उतार देने वाला है गुरु अमरदास को भी अन्तर्मन में अनुभव हुआ है ।। २ ।। उसी नाम का सुमिरन करके योगियों के नौ नाथ, शिव, सनक, सनन्दन आदि का उद्धार हुआ है। चौरासी सिद्ध और अनेकों बुद्ध जिस नाम में लीन बने रहे हैं उसी नाम के सुमिरन से भक्त अम्बरीष भी संसार सागर से पार उतर गया है। उद्धव, अक्रूर, त्रिलोचन, नामदेव और कबीर आदि ने भी इस कलियुग में प्रभु-नाम के माध्यम से ही अपने पापों को दूर किया है। वही अछल नाम जो भक्तों को संसार से पार उतार देने वाला है गुरु अमरदास को भी अन्तर्मन में अनुभव हुआ है ।। ३ ।। उसी नाम में लीन होकर तैंतीस करोड़ देवता उस प्रभु का सुमिरन करते हैं तथा यतियों और तपस्वियों के मन में भी वह नाम बसा है। उसी नाम का सुमरिन करके गंगा पुत्र भीष्म पितामह प्रभु के चरणों को चित्त में धारण करके प्रभु-नाम के अमृत का रस ले सका है। निश्चित रूप से उस प्रभु-नाम की संगत में ही अत्यन्त गम्भीर और विशाल बुद्धि वाले लोगों का भी उद्धार हुआ है। वही अछल नाम जो भक्तों को संसार से पार उतार देने वाला है गुरु अमरदास को भी अन्तर्मन में अनुभव हुआ है ।। ४ ।। प्रभु-नाम की कीर्ति संसार में सूर्य की किरणों की तरह वैसे ही फैलती हैं जैसे स्वर्ग और देवताओं के वृक्ष की शाखाएँ अपनी सुगन्ध बिखेरती रहती हैं। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम के देश अर्थात सब ओर के लोग प्रभु के नाम के ही यश का उच्चारण कर रहे हैं। वही जीवन सार्थक है जिसमें प्रभु-नाम हृदय में बस जाए। देवता, मनुष्य, गण, गन्धर्व, छः दर्शन इसी प्रभु-नाम की आकांक्षा बनाए रखते हैं। तेजभान के पुत्र भल्ला कुल के सुप्रसिद्ध गुरु अमरदास की कल्ह कवि हाथ जोड़कर आराधना करता हुआ कहता है कि हे गुरु अमरदास, तूने भक्तों के जन्म-मरण को काटने वाला वही प्रभु-नाम प्राप्त कर लिया है ।। ५ ।। परमात्मा के नाम को ही तैंतीस करोड़ देवता सिद्ध, साधक याद करते हैं और नाम ने ही खण्डों-ब्रह्माण्डों को धारण कर रखा है। जिन्होंने लौ लगाकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया है उन्होंने हर्ष और शोक को समान रूप से धारण किया है। नाम ही शिरोमणि तत्व है जिसको भक्तों ने अपनी सुरति में धारण किया हुआ है। उसी नाम रूपी पदार्थ को कर्ता प्रभु ने प्रसन्न होकर गुरु अमरदास को दिया है ।। ६ ।। सत्य का शूरवीर, शील में बलवान और नेक स्वभाव वाला गुरु अमरदास है जिसकी संगत विशाल है, मति महान है और शत्रुभाव से रहित होकर वह प्रभु में लीन है। प्रभु की ओर से ही उसका धैर्य रूपी सफेद ध्वज बैकुण्ठ के पुल पर स्थित बना हुआ है अर्थात बैकुण्ठ का रास्ता दिखाने वाले शान्त पुरुष उस गुरु के प्रेम का स्पर्श करते हैं जिस गुरु का उनके साथ मिलाप बना हुआ है। गुरु अमरदास ने उन शान्त पुरुषों को इस योग्य बना दिया है कि वे सच्चे गुरु का सुमिरन करते हुए सुख प्राप्त करते हैं ।। ७ ।। प्रभु-नाम ही स्नान, खाने का रस, भोजन, प्रभु का रस, सदैव बना रहने वाला उत्साह और मीठी वाणी है। उस सच्चे गुरु का सुमिरन धन्य है जिसकी कृपा से उस अगम्य की गति को जाना जाता है। जिन्होंने प्रभु-नाम में ही अपना निवास प्राप्त कर लिया है उनके समस्त कुलों का उद्धार हो गया है।

निवासु ॥ सकयथु जनमु कल्युचरै गुरु परस्यिउ अमर प्रगासु ॥ ८ ॥ बारिजु करि दाहिणै सिधि सनमुख मुखु जोवै ॥ रिधि बसै बांवांगि जु तीनि लोकांतर मोहै ॥ रिदै बसै अकहीउ सोइ रसु तिन ही जातउ ॥ मुखहु भगति उचरै अमरु गुरु इतु रंगि रातउ ॥ मसतकि नीसाणु सचउ करमु कल्य जोड़ि कर ध्याइअउ ॥ परसिअउ गुरु सतिगुर तिलकु सरब इछ तिनि पाइअउ ॥ ९ ॥ चरण त पर सकयथ चरण गुर अमर पवलि रय ॥ हथ त पर सकयथ हथ लगहि गुर अमर पय ॥ जीह त पर सकयथ जीह गुर अमरु भणिजै ॥ नैण त पर सकयथ नयणि गुरु अमरु पिखिजै ॥ स्रवण त पर सकयथ स्रवणि गुरु अमरु सुणिजै ॥ सकयथु सु हीउ जितु हीअ बसै गुर अमरदासु निज जगत पित ॥ सकयथु सु सिरु जालपु भणै जु सिरु निवै गुर अमर नित ॥ १ ॥ १० ॥ ति नर दुख नह भुख ति नर निधन नहु कहीअहि ॥ ति नर सोकु नहु हूऐ ति नर से अंतु न लहीअहि ॥ ति नर सेव नहु करहि ति नर सय सहस समपहि ॥ ति नर दुलीचै बहहि ति नर उथपि बिथपहि ॥ सुख लहहि ति नर संसार महि अभै पटु रिप मधि तिह ॥ सकयथ ति नर जालपु भणै गुर अमरदासु सुप्रसंनु जिह ॥ २ ॥ ११ ॥ तै पढिअउ इकु मनि धरिअउ इकु करि इकु पछाणिओ ॥ नयणि बयणि मुहि इकु इकु दुहु ठांइ न जाणिओ ॥ सुपनि इकु परतखि इकु इकस महि लीणउ ॥ तीस इकु अरु पंजि सिधु पैतीस न खीणउ ॥ इकहु जि लाखु लखहु अलखु है इकु इकु करि वरनिअउ ॥ गुर अमरदास जालपु भणै तू इकु लोड़हि इकु मंनिअउ ॥ ३ ॥ १२ ॥ जि मति गही जैदेवि जि मति नामै संमाणी ॥ जि मति त्रिलोचन चिति भगत कंबीरहि जाणी ॥ रुकमांगद करतूति रामु जंपहु नित भाई ॥ अंमरीकि प्रहलादि सरणि गोबिंद गति पाई ॥ तै लोभु क्रोधु त्रिसना तजी सु मति जल्य जाणी जुगति ॥ गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु पावउ मुकति ॥ ४ ॥ १३ ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ पुहमि पातिक बिनासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ सिध साधिक आसासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ धिआनु लहीऐ पउ मुकिहि ॥ गुरु

कल्ह उच्चारण करता है कि उनका जन्म लेना सार्थक हो गया है जिन्होंने सर्व प्रसिद्ध गुरु अमरदास का दर्शन किया है ।। ८ ।। गुरु अमरदास जी के दाँए हाथ में पद्म का चिन्ह है और आध्यात्मिक शक्तियाँ (सिद्धियां) उनके सम्मुख खड़ी होकर उनके मुँह की ओर देखती रहती हैं। बाँए अंग पर सांसारिक शक्तियां (ऋद्धियां) बसी हुई हैं जो तीनों लोकों को मोहित कर लेने वाली हैं। गुरु अमरदास के हृदय में अकथनीय प्रभु बस रहा है और इस आनन्द को केवल उन्होंने स्वयं ही जाना है। इसी रंग में रंगे हुए गुरु अमरदास अपने मुख से प्रभु की भक्ति का उच्चारण कर रहे हैं। गुरु अमरदास अपने मुख से प्रभु की भक्ति का उच्चारण कर रहे हैं। गुरु अमरदास के माथे पर परमात्मा की कृपा का निशान है। हे कल्ह, हाथ जोड़कर जिसने भी इस सच्चे गुरु का सुमिरन और स्पर्श किया है उसने अपनी सभी मनोकामनाएँ पूरी कर ली हैं ।। ६ ।। वे चरण ही पूर्ण रूप से सार्थक हैं जो गुरु अमरदास के मार्ग पर चलते हैं। वही जीभ पूर्ण सफल हैं जो गुरु अमरदास का उच्चारण करती है। वे आँखे ही पूर्ण सफल हैं जो गुरु अमरदास का दर्शन करती हैं। वे कान ही पूर्ण सफल हैं जिन कानों से गुरु अमरदास का यश सुना जाता है। वही हृदय सफल है जिस हृदय में जगत का पिता गुरु अमरदास बसता है। जालप का कथन है कि वही सिर सार्थक है जो सदैव गुरु अमरादस जी के सामने झुका रहता है ।। १ ।। १० ।। वे व्यक्ति ना तो दुखी होते हैं और ना ही उन्हें कोई भूख सताती है तथा ना ही उन्हें निर्धन कहा जाता है; उन व्यक्तियों को शोक नहीं होता और वे ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनके रहस्य को नहीं जाना जा सकता। वे व्यक्ति किसी के मोहताज नहीं होते और स्वयं हजारों व्यक्तियों को कुछ ना कुछ समर्पित करते रहते हैं। वे व्यक्ति सुख पूर्ण गलीचों पर बैठकर अवगुणों को हृदय से उखाड़कर शुभ गुणों को हृदय में टिकाते हैं और वे व्यक्ति ही संसार में सुखों का भोग करते हैं और निर्भयता का वस्त्र पहनकर शत्रुओं के बीच में भी विचरण करते रहते हैं। जालप का कथन है कि वे व्यक्ति ही सार्थक और सफल होते हैं जिन पर गुरु अमरदास जी प्रसन्न होते हैं ।। २ ।। ११ ।। हे गुरु अमरदास, तूने ही एक प्रभु को समझा है, मन में धारण किया और उसको केवल एक रूप में ही पहचाना है। तेरी दृष्टि में, तेरे वचनों में वह केवल एक प्रभु ही है और तूने अपने हृदय में किसी दूसरे को जाना ही नहीं। वह प्रभु जो तीसों दिन अर्थात सदैव एक ही है और जो प्रभु पाँचों तत्वों अर्थात सारे संसार में प्रकट है, जो अविनाशी प्रभु पैंतीस अक्षरों अर्थात इस रचित वाणी में उपस्थित है उस एक प्रभु में हे गुरु अमरदास, तू सपने में भी और प्रत्यक्ष जागृत अवस्था में भी लीन बना रहता है। जालप का कथन है कि हे गुरु अमरदास, तू उस एक प्रभु को ही चाहता है और उस एक को ही मानता है जिसके एक रूप में से ही लाखों रूप निकले हैं और उन लाखों के द्वारा भी उसे देखा नहीं जा सकता ।। ३ ।। १२ ।। जो शिक्षा जयदेव ने दी और जिस उपदेश को नामदेव ने हृदय में धारण किया; जिस मति को भक्त त्रिलोचन और कबीर ने हृदय में धारण किया, और राजा रुक्मांगद का नित्य कर्म भी प्रभु-नाम का जाप करना ही था। हे भाई, सदैव प्रभु का सुमिरन करो क्योंकि इसी मति से अम्बरीष और प्रहलाद ने प्रभु की शरण में आकर ऊँची आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर ली थी। जल्ह (जालप) का कथन है कि हे गुरु अमरदास, तूने लोभ, क्रोध और तृष्णा को त्यागकर उसी शिक्षा (मति) की युक्ति को जान लिया है। गुरु अमरदास उस प्रभु का अपना भक्त है और मैं उसका दर्शन करके विकारों से मुक्ति प्राप्त करता हूँ ।। ४ ।। १३ ।। हे भाई, गुरु अमरदास का स्पर्श करने मात्र से धरती के पाप विनष्ट हो जाते हैं। गुरु अमरदास के चरण स्पर्श की सिद्ध और साधक भी आशा लगाए रहते हैं। गुरु अमरदास के स्पर्श से ध्यान एकाग्र हो जाता है और आवागमन के चक्कर समाप्त हो जाते हैं।

अमरदासु परसीऐ अभउ लभै गउ चुकिहि ॥ इकु बिंनि दुगण जु तउ रहै जा सुमंत्रि मानवहि लहि ॥ जालपा पदारथ इतड़े गुर अमरदासि डिठै मिलहि ॥ ५ ॥ १४ ॥ सचु नामु करतारु सु द्रिड़ु नानकि संग्रहिअउ ॥ ता ते अंगदु लहणा प्रगटि तासु चरणह लिव रहिअउ ॥ तितु कुलि गुर अमरदासु आसा निवासु तासु गुण कवण वखाणउ ॥ जो गुण अलख अगंम तिनह गुण अंतु न जाणउ ॥ बोहिथउ बिधातै निरमयौ सभ संगति कुल उधरण ॥ गुर अमरदास कीरतु कहै त्राहि त्राहि तुअ पा सरण ॥ १ ॥ १५ ॥ आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥ निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥ जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥ जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥ नानक कुलि निंमलु अवतर्यिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥ गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥ २ ॥ १६ ॥ जपु तपु सतु संतोखु पिखि दरसनु गुर सिखह ॥ सरणि परहि ते उबरहि छोडि जम पुर की लिखह ॥ भगति भाइ भरपूरु रिदै उचरै करतारै ॥ गुरु गउहरु दरीआउ पलक डुबंत्यह तारै ॥ नानक कुलि निंमलु अवतर्यिउ गुण करतारै उचरै ॥ गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥ ३ ॥ १७ ॥ चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ ॥ सरब चिंत तुझु पासि साधसंगति हउ तकउ ॥ तेरै हुकमि पवै नीसाणु तउ करउ साहिब की सेवा ॥ जब गुरु देखै सुभ दिसटि नामु करता मुखि मेवा ॥ अगम अलख कारण पुरख जो फुरमावहि सो कहउ ॥ गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥ ४ ॥ १८ ॥ भिखे के ॥ गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥ सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥ काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥ निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥ कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीअउ ॥ गुरु मिल्यिउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥ १ ॥ १९ ॥ रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥ संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥ बरसु एकु हउ

गुरु अमरदास के स्पर्श से निर्भय पद प्राप्त होता है और भटकन दूर हो जाती है। उस एक को पहचान कर द्वैतभाव समाप्त हो जाता है और ऐसा तभी होता है जब सच्चे गुरु के श्रेष्ठ उपदेश के माध्यम से एक प्रभु को पहचान कर प्राप्त कर लिया जाता है। हे जालप, यह उपर बताए हुए सभी पदार्थ सच्चे गुरु अमर दास के दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाते हैं ।। ५ ।। १४ ।। सदैव स्थिर बने रहने वाले प्रभु के नाम को गुरु नानक ने दृढ़तापूर्वक मन में बसाया है। उसी से लहणा ने अंगद के रूप में प्रकट होकर विनम्रता पूर्वक गुरु नानक के चरणों में ध्यान लगाए रखा। उन्हीं के वंश में आशाओं को पूरा करने वाला वह गुरु अमरदास पैदा हुआ जिसके गुणों का बखान नहीं किया जा सकता। वे गुण अदृष्ट और अगम्य हैं और मैं उन गुणों के रहस्य को नहीं जान सकता। प्रभु ने सम्पूर्ण संगत की सभी कुलों को पार उतारने के लिए गुरु अमरदास के रूप में एक जहाज की रचना की है। कीरत भट्ट का कथन है कि हे गुरु अमरदास, मेरी.रक्षा करो क्योंकि मैं तुम्हारे चरणों की शरण में आ पड़ा हूँ ।। १ ।। १५ ।। गुरु अमरदास स्वयं ही शक्तिशाली परमात्मा हैं जो संसार में प्रकट हो उठा है। निराकार प्रभु ने गुरु अमरदास का आकार धारण करके संसार को प्रकाशित कर दिया है। प्रभु ने सर्वत्र अपने व्यापक नाम को शब्द-गुरु रूपी दीपक के माध्यम से प्रकट कर दिया है। जिन सिक्खों ने इस प्रभु-नाम को ग्रहण किया है उनको गुरु ने तत्काल प्रभु चरणों से मिला दिया है। लहणा-अंगद समेत गुरु अमरदास गुरु नानक की कुल में ही प्रकट हुआ है और हे गुरु अमरदास, तू ही सबको पार उतारने वाला जहाज है और मैं हर जन्म में तेरी शरण में ही बना रहूँ ।। २ ।। १६ ।। सच्चे गुरु के दर्शन करके सिक्खों को जप, तप, सत्य और सन्तोष प्राप्त होता है। जो गुरु की शरण में आ जाते हैं वे यमपुरी के लेखे-जोखे से ऊपर उठकर पार उतर जाते हैं। गुरु अमरदास भक्ति भाव से भर कर हृदय में प्रभु-नाम का उच्चारण करता है और यह सच्चा गुरु इतना गम्भीर, सागर है कि पलक झपकने मात्र में यह डूबते हुओं को पार उतार देता है। नानक के कुल में निर्मल गुरु अमरदास प्रकट होकर प्रभु के गुणों का उच्चारण करता है और जिसने ऐसे गुरु अमरदास को याद रखा है उसके दुख और दरिद्रता दूर हो गए हैं ।। ३ ।। १७ ।। हे गुरु अमरदास, मैं चित्त में सोचता हूँ कि तुझसे एक विनती करूं, परन्तु मुझसे कहा भी नहीं जाता। हे सच्चे गुरु, मेरी सारी चिन्ताएँ तेरे हवाले हैं इसलिए मैं तो केवल साधसंगत का आसरा ही देखता हूँ। हे गुरु, तेरे हुकुम का चिन्ह (स्वीकृति) प्राप्त हो जाए तो मैं भी प्रभु की सेवा करूं। जब सच्चा गुरु पूर्ण शुभ दृष्टि से देखता है तो कर्ता प्रभु का नाम रूपी फल मुख में खाने के लिए प्राप्त हो जाता है। हे अगम्य, अदृष्ट, सभी कार्यों के कारण प्रभु, जो तू आदेश देता है मैं उसी को कह पाता हूँ। हे गुरु अमरदास तू ही सभी कार्यो का कारण है और तू जैसा मुझे रखता है मैं वैसा ही रहता हूँ ।। ४ ।। १८ ।। भिक्खा के सवैये ।। गुरु अमरदास ही ज्ञान और ध्यान रूप है और उसने अपने आत्मतत्व को प्रभु तत्व के साथ मिलाया हुआ है। सत्य के माध्यम से वही सत्य प्रभु को जानता है और उसमें एकाग्रस्थित होकर अपनी लौ लगाए रहता है। वह काम, क्रोध को वश में किए हुए है और पवन की तरह उड़ने वाला मन इधर-उधर नहीं भागता। वह निराकार प्रभु के देश में बसा रहता है और प्रभु के हुकुम को पहचानकर उसने ज्ञान प्राप्त किया है। कलियुग में गुरु अमरदास ही कर्ता पुरुष है और इस कौतुक को करने वाला वह प्रभु ही इसके रहस्य को जानता है। भिक्खा का कथन है कि मुझे वह गुरु अमरदास मिल गया है और पूर्ण सहज के रंग में उसने मुझे दर्शन दिया है ।। १ ।। १९ ।। मैं सन्तों को खोजते-खोजते थक गया हूँ और मुख से मीठे बने रहने वाले पंडित, कई तपस्वी, कई संन्यासी और अनेकों साधुओं को भी मैंने देखा है। मैं एक साल भर तक

फिरिओ किनै न्हु परचउ लायउ ॥ कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ ॥ हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के गुण हउ किआ कहउ ॥ गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ ॥ २ ॥ २० ॥ पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि चड़िअउ ॥ ध्रंम धनखु कर गहिओ भगत सीलह सरि लड़िअउ ॥ भै निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिओ ॥ काम क्रोध लोभ मोह अपतु पंच दूत बिखंडिओ ॥ भलउ भूहालु तेजो तना न्रिपति नाथु नानक बरि ॥ गुर अमरदास सचु सल्य भणि तै दलु जितउ इव जुधु करि ॥ १ ॥ २१ ॥ घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥ रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥ रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जुो गावै ॥ भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ १ ॥ २२ ॥

सवईए महले चउथे के ४ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इक मनि पुरखु निरंजनु धिआवउ ॥ गुर प्रसादि हरि गुण सद गावउ ॥ गुन गावत मनि होइ बिगासा ॥ सतिगुर पूरि जनह की आसा ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु पायउ ॥ अबिनासी अबिगतु धिआयउ ॥ तिसु भेटे दारिद्रु न चंपै ॥ कल्य सहारु तासु गुण जंपै ॥ जंपउ गुण बिमल सुजन जन केरे अमिअ नामु जा कउ फुरिआ ॥ इनि सतिगुरु सेवि सबद रसु पाया नामु निरंजन उरि धरिआ ॥ हरि नाम रसिकु गोबिंद गुण गाहकु चाहकु तत समत सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ १ ॥ छुटत परवाह अमिअ अमरा पद अंम्रित सरोवर सद भरिआ ॥ ते पीवहि संत करहि मनि मजनु पुब जिन्हु सेवा करीआ ॥ तिन भउ निवारि अनभै पदु दीना सबद मात्र ते उधर धरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ २ ॥ सतगुर मति गूढ़ बिमल सतसंगति आतमु रंगि चलूलु भया ॥ जाग्या मनु कवलु सहजि परकास्या अभै निरंजनु

घूमता रहा हूँ परन्तु किसी ने भी मुझे सन्तुष्ट नहीं किया। इन सब की लगातार चलती रहने वाली बातचीत तो मैंने सुनी परन्तु इनके आचरण को देखकर मुझे प्रसन्नता प्राप्त नहीं हो सकी अर्थात इनकी कथनी और करनी के अन्तर ने मुझे दुखी किया है। जो प्रभु-नाम को छोड़कर संसार के द्वैतभाव में अर्थात धन-सम्पदा में ही लीन बने हुए हैं उनके गुण भला मैं क्या बताऊँ। हे भिक्खा, परमात्मा ने तुझे अब गुरु से मिला दिया है इसलिए हे गुरु (अमरदास), जैसा तुम मुझे रखोगे मैं वैसा ही रहूंगा ।। २ ।। २० ।। समाधि रूपी कवच पहनकर ज्ञान रूपी घोड़े पर गुरु अमरदास ने आसन जमाया हुआ है। हाथ में धर्म का धनुष पकड़कर भक्तजनों के शील रूप वाले तीर के साथ वह विकार रूपी शत्रुओं से लड़ा है। प्रभु के भय में रहने के कारण गुरु अमरदास निर्भय है और सत्य रूपी शब्द को उसने इस प्रकार धारण किया है मानों कहीं भाला गड़ा दिया गया हो। इसी भाले से उसने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि पाँचों शत्रुओं का नाश कर दिया है। तेजभान के सुपुत्र हे गुरु अमरदास, तू अपने वंश का राजा है और गुरु नानक की कृपा से तू राजाओं का भी राजा है। हे सल्ह कवि, तू यही कह कि हे गुरु अमरदास, तूने इस प्रकार युद्ध करके विकारों के दल को जीत लिया है ।। १ ।। २१ ।। बादलों की बूंदे, धरती की वनस्पति, बसंत के फूल आदि की गिनती नहीं हो सकती। इसी प्रकार सूर्य और चन्द्रमा की किरणों, समुद्र की गहराई और गंगा की लहरों का हिसाब कौन लगा सकता है। शिव की तरह ध्यान लगाकर और सच्चे गुरु की कृपा से प्राप्त ज्ञान के द्वारा हे भल्ह कवि, उपर बताए हुए पदार्थों का तो बेशक वर्णन कर सके परन्तु हे गुरु अमरदास तेरे गुण कितने हैं और इतने भले हैं कि उनकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती तेरी तुलना तो केवल तेरे साथ करना ही उचित है ।। १ ।। २२ ।।

सवैये महले चौथे के ४ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

एक मन से उस सर्वव्यापी निरंजन प्रभु का सुमिरन करो और गुरु की कृपा से सदैव हरि गुण गाते रहो। उसके गुण गाते हुए मन खिला रहता है और सच्चा गुरु अपने सेवकों की आशाएँ पूरी करता है। गुरु रामदास जी ने सच्चे गुरु की सेवा करके ऊँची पदवी प्राप्त की है और अविनाशी तथा अदृष्ट प्रभु का सुमिरन किया है। उस गुरु के मिलाप से दरिद्रता दुखी नहीं करती और कलसहार उसी के गुणों का गायन करता है। मैं उसी प्रभु के श्रेष्ठ सेवक (गुरु रामदास) के निर्मल गुणों का गायन करता हूँ जिसे अमृत रूपी प्रभु-नाम की अनुभूति प्राप्त हुई है। उसने सच्चे गुरु की सेवा करके शब्द का रस प्राप्त किया है और निरंजन प्रभु के नाम को हृदय में धारण किया है। गुरु रामदास प्रभु-नाम का ही रसिक, गुणों का ग्राहक, सारतत्व परमात्मा को चाहने वाला और समदृष्टि का सरोवर है। हे कलसहार कवि, ठाकुर हरदास जी के सुपुत्र गुरु रामदास जी हृदय रूपी खाली सरोवरों को भी प्रभु-नाम से भर देने वाले हैं ।। १ ।। गुरु रामदास अमृत का वह सरोवर है जो सदा भरा रहता है और जिसमें से अटल पदवी प्रदान करने वाली अमृत की धाराओं का प्रवाह चलता रहता है। इस अमृत को वे सन्तजन पीते हैं और अपनी अन्तरात्मा में स्नान करते हैं जिन्होंने पूर्व जन्म की कोई सेवा की हुई है। गुरु जी ने उन सन्तजनों का भय दूर करके उनको अभय पद प्रदान किया है और अपना शब्द-मात्र उन्हें सुनाकर उनका उद्धार कर दिया है। हे कलसहार कवि, ठाकुर हरदास के सुपुत्र गुरु रामदास हृदय रूपी खाली सरोवरों को भी प्रभु-नाम से भर देने वाले हैं ।। २ ।। सच्चे गुरु रामदास की मति गहन है और आपकी सत्संगत निर्मल है। आपकी आत्मा प्रेम के गाढ़े रंग में रंगी हुई है; आपका मन सावधान बना हुआ है और हृदय रूपी कमल स्वाभाविक रूप से ही खिला हुआ है। तुमने अभय निरंजन प्रभु को

घरहि लहा ॥ सतगुरि दयालि हरि नामु द्रिड़ाया तिसु प्रसादि वसि पंच करे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ ३ ॥ अनभउ उनमानि अकल लिव लागी पारसु भेटिआ सहज घरे ॥ सतगुर परसादि परम पदु पाया भगति भाइ भंडार भरे ॥ मेटिआ जनमांतु मरण भउ भागा चितु लागा संतोख सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ ४ ॥ अभर भरे पायउ अपारु रिद अंतरि धारिओ ॥ दुख भंजनु आतम प्रबोधु मनि ततु बीचारिओ ॥ सदा चाइ हरि भाइ प्रेम रसु आपे जाणइ ॥ सतगुर कै परसादि सहज सेती रंगु माणइ ॥ नानक प्रसादि अंगद सुमति गुरि अमरि अमरु वरताइओ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तैं अटल अमर पदु पाइओ ॥ ५ ॥ संतोख सरोवरि बसै अमिअ रसु रसन प्रकासै ॥ मिलत सांति उपजै दुरतु दूरंतरि नासै ॥ सुख सागरु पाइअउ दिंतु हरि मगि न हुटै ॥ संजमु सतु संतोखु सील संनाहु मफुटै ॥ सतिगुरु प्रमाणु बिध नै सिरिउ जगि जस तूरु बजाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै अभै अमर पदु पाइअउ ॥ ६ ॥ जगु जितउ सतिगुर प्रमाणि मनि एकु धिआयउ ॥ धनि धनि सतिगुर अमरदासु जिनि नामु द्रिड़ायउ ॥ नव निधि नामु निधानु रिधि सिधि ता की दासी ॥ सहज सरोवरु मिलिओ पुरखु भेटिओ अबिनासी ॥ आदि ले भगत जितु लगि तरे सो गुरि नामु द्रिड़ाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै हरि प्रेम पदारथु पाइअउ ॥ ७ ॥ प्रेम भगति परवाह प्रीति पुबली न हुटइ ॥ सतिगुर सबदु अथाहु अमिअ धारा रसु गुटइ ॥ मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥ आजोनी संभविअउ जगतु गुर बचनि तरायउ ॥ अबिगत अगोचरु अपरपरु मनि गुर सबदु वसाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै जगत उधारणु पाइअउ ॥ ८ ॥ जगत उधारणु नव निधानु भगतह भव तारणु ॥ अंम्रित बूंद हरि नामु बिसु की बिखै निवारणु ॥ सहज तरोवर फलिओ गिआन अंम्रित फल लागे ॥ गुर प्रसादि पाईअहि धंनि ते जन वडभागे ॥ ते मुकते भए सतिगुर सबदि मनि गुर परचा पाइअउ ॥ गुर रामदास

हृदय में ही ढूंढ़ लिया है। सच्चे गुरु अमरदास जी ने तुम्हें प्रभु-नाम का सुमिरन करवाया है और उस नाम की कृपा के कारण तुमने काम, क्रोध आदि पाँचों विकारों को वश में कर लिया है। हे कलसहार कवि, ठाकुर हरदास जी के सुपुत्र गुरु रामदास जी हृदय रूपी खाली सरोवरों को भी प्रभु-नाम से भर देते हैं ।। ३ ।। गुरु रामदास जी को अनुभव और ज्ञान गहन चिन्तन के माध्यम से प्राप्त हुआ है और उनकी प्रभु में ली लगी रहने के कारण उन्हें स्वाभाविक रूप से ही अपने हृदय में प्रभु रूपी पारस का स्पर्श प्राप्त हो गया है। उसी सच्चे गुरु की कृपा से भक्ति भाव के भण्डार को भरकर हे गुरु रामदास, तुमने परम पद को प्राप्त कर लिया है। तुमने जन्म-मरण को मिटाकर मरने का भय दूर भगा दिया है और तुम्हारा चित्त सन्तोष के सरोवर उस प्रभु में लीन बना हुआ है। हे कलसहार कवि, ठाकुर हरदास जी के सुपुत्र गुरु रामदास जी हृदय रूपी खाली सरोवरों को भी प्रभु-नाम से भर देते हैं ।। ४ ।। खाली हृदयों को भर देने वाले प्रभु को गुरु रामदास जी ने ढूंढ़ लिया है और उसे अपने हृदय में धारण कर लिया है। उन्होंने अपने मन में उस सारतत्त्व प्रभु का सुमिरन किया है जो दुखों का नाश करने वाला और आत्मा को सावधान बनाए रखने वाला है। गुरु रामदास सदैव उत्साह से भरे रहते हैं और प्रभु के प्रेम में लीन होकर उस प्रेम के स्वाद को स्वयं ही जानते हैं। सच्चे गुरु की कृपा से वह सहज भाव में लीन होकर आध्यात्मिक आनन्द का आनन्द ले रहे हैं। कवि कलसहार कहता है कि गुरु नानक की कृपा और गुरु अंगद जी की दी हुई सुन्दर मति के फलस्वरूप गुरु अमरदास जी ने प्रभु के हुकुम (विधान) को कार्य-व्यवहार में स्थापित किया। हे गुरु रामदास, तुमने सदैव स्थिर बने रहने वाले अविनाशी प्रभु की पदवी प्राप्त कर ली है ।। ५ ।। गुरु रामदास सन्तोष के सरोवर में बसते हैं और अपनी जीभ के साथ नाम रूपी अमृत को प्रकट करते हैं। गुरु रामदास का दर्शन करने से हृदय को शान्ति प्राप्त होती है और पाप दूर से ही उसे देखकर नष्ट हो जाते हैं। सच्चे गुरु का दिया हुआ सुखों का सागर इसने प्राप्त कर लिया है और इसीलिए प्रभु-मार्ग पर चलता हुआ यह थकता नहीं। गुरु रामदास ने कभी भी ना टूटने वाले उस कवच को धारण किया हुआ है जो संयम, सत्य, सन्तोष और शील का बना हुआ है। गुरु रामदास को कर्ता प्रभु ने गुरु अमरदास जी की तरह ही प्रामाणिक बनाया है और सारे संसार ने इनकी शोभा के बाजे बजाए हैं। कवि कलसहार कहता है कि हे गुरु रामदास, तुमने निर्भय और अविनाशी प्रभु का पद प्राप्त कर लिया है ।। ६ ।। गुरु अमरदास की तरह ही तूने संसार को जीत लिया है और अपने मन में एक प्रभु का ही सुमिरन किया है। सच्चा गुरु अमरदास धन्य है जिसने गुरु रामदास जी को प्रभु-नाम का सुमिरन करवाया है। गुरु रामदास को नवनिधियों वाला प्रभु-नाम का वह भण्डार मिल गया है जिसकी सभी ऋद्धियां और सिद्धियां दासियां हैं। गुरु रामदास जी को शान्ति का सरोवर प्रभु मिल गया है और उनका मिलाप अविनाशी सर्वव्यापक प्रभु से हो गया है। प्रारम्भ से ही जिसमें लीन होकर भक्तजन पार उतरते आए हैं वह प्रभु का नाम गुरु अमरदास जी ने गुरु रामदास जी को हृदय में पक्का करवाया है। कवि कलसहार कहता है कि हे गुरु रामदास, तुमने प्रभु प्रेम रूपी उत्तम पदार्थ को प्राप्त कर लिया है ।। ७ ।। प्रभु के प्रेम से भरी हुई भक्ति के प्रवाह गुरु रामदास के हृदय में चल रहे हैं और पहले की बनी हुई गुरु रामदास की प्रभु-प्रीति समाप्त नहीं होती। सच्चे गुरु के अथाह शब्द की अमृत धारा का स्वाद गटागट रूप से पीकर गुरु रामदास ले रहा है। ऊँची बुद्धि गुरु रामदास की माता है, सन्तोष पिता है और तुम सहज के सरोवर में लीन बने हुए हो। योनियों के आवागमन से रहित सत्य के प्रकाश का स्वरूप श्री गुरु अमरदास के उपदेशों को आगे बढ़ाते हुए हे गुरु रामदास, तुमने संसार को पार उतार दिया है। शब्द-गुरु को मन में बसाए रखने वाला गुरु रामदास अव्यक्त, अगोचर और अपरम्पार प्रभु का रूप है। कलसहार कहता है कि हे गुरु रामदास, तूने संसार का उद्धार करने वाला प्रभु पा लिया है ।। ८ ।। सच्चे गुरु रामदास जी के पास सारे संसार के विष को दूर करने में समर्थ प्रभु-नाम की वह अमृत बूंद है जो सारे संसार को पार उतारने वाली नवनिधि रूप और भक्तों का उद्धार करने वाली है। तुम सहज के वृक्ष हो जिसे ज्ञान रूपी अमृत फल लगे हैं जो गुरु की कृपा से प्राप्त होते हैं और इन्हें प्राप्त करने वाले प्रभु के सेवक भाग्यशाली हैं। गुरु के शब्द के माध्यम से वे लोग मुक्त हो गए हैं जिन्होंने मन से गुरु रामदास के साथ प्रेम किया है। कलसहार कहता है कि हे गुरु रामदास,

कल्युचरै तै सबद नीसानु बजाइअउ ॥ ९ ॥ सेज सधा सहजु धावाणु संतोखु
सराइचउ सदा सील संनाहु सोहै ॥ गुर सबदि समाचरिओ नामु टेक संगादि बोहै ॥
आजोनीउ भल्यु अमलु सतिगुर संगि निवासु ॥ गुर रामदास कल्युचरै तुअ
सहज सरोवरि बासु ॥ १० ॥ गुरु जिन्ह कउ सुप्रसंनु नामु हरि रिदै निवासै ॥
जिन्ह कउ गुरु सुप्रसंनु दुरतु दूरंतरि नासै ॥ गुरु जिन्ह कउ सुप्रसंनु मानु
अभिमानु निवारै ॥ जिन्ह कउ गुरु सुप्रसंनु सबदि लगि भवजलु तारै ॥
परचउ प्रमाणु गुर पाइअउ तिन सकयथउ जनमु जगि ॥ स्री गुरू सरणि भजु
कल्य कबि भुगति मुकति सभ गुरू लगि ॥ ११ ॥ सतिगुरि खेमा ताणिआ
जुग जूथ समाणे ॥ अनभउ नेजा नामु टेक जितु भगत अघाणे ॥ गुरु नानकु
अंगदु अमरु भगत हरि संगि समाणे ॥ इहु राज जोग गुर रामदास तुम्ह हू रसु
जाणे ॥ १२ ॥ जनकु सोइ जिनि जाणिआ उनमनि रथु धरिआ ॥ सतु संतोखु
समाचरे अभरा सरु भरिआ ॥ अकथ कथा अमरा पुरी जिसु देइ सु पावै ॥
इहु जनक राजु गुर रामदास तुझ ही बणि आवै ॥ १३ ॥ सतिगुर नामु एक
लिव मनि जपै द्रिढु तिन्ह जन दुख पापु कहु कत होवै जीउ ॥ तारण तरण
खिन मात्र जा कउ द्रिस्टि धारै सबदु रिद बीचारै कामु क्रोधु खोवै जीउ ॥
जीअन सभन दाता अगम ग्यान बिख्याता अहिनिसि ध्यान धावै पलक न सोवै
जीउ ॥ जा कउ देखत दरिद्रु जावै नामु सो निधानु पावै गुरमुखि ग्यानि दुरमति
मैलु धोवै जीउ ॥ सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै द्रिढु तिन जन दुख
पाप कहु कत होवै जीउ ॥ १ ॥ धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥ जा की
सेवा सिध साध मुनि जन सुरि नर जाचहि सबद सारु एक लिव लाई है ॥
फुनि जानै को तेरा अपारु निरभउ निरंकारु अकथ कथनहारु तुझहि बुझाई
है ॥ भरम भूले संसार छुटहु जूनी संघार जम को न डंड काल गुरमति ध्याई
है ॥ मन प्राणी मुगध बीचारु अहिनिसि जपु धरम करम पूरै सतिगुरु पाई
है ॥ २ ॥ हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥ कवन उपमा देउ
कवन सेवा सरेउ एक मुख रसना रसहु जुग जोरि कर ॥ फुनि मन बच

तूने शब्द का नगाड़ा पूरी तरह बजाया है ।। ९ ।। तुमने श्रद्धा को सेज बनाया है, हृदय की स्थिरता शामियाना है, सन्तोष को तुमने कनात के रूप में रखा हुआ है और शील को सदैव धारण किए रहना तुम्हारा कवच है जो तुम पर शोभायमान है। शब्द-गुरु के अनुरूप तुमने आचरण बनाया है और प्रभु-नाम की तुम्हारी टेक संगी-साथियों को भी सुगन्धित कर रही है। तुम जन्म-मरण से रहित, भले, शुद्ध आत्मा वाले और सच्चे गुरु के साथ अपना निवास बनाए रखने वाले हो। कवि कलसहार कहता है कि हे गुरु रामदास, तेरा निवास सहज स्वाभाविकता के सरोवर में बना रहता है ।। १० ।। सच्चा गुरु जिस पर प्रसन्न होता है उसके हृदय में प्रभु-नाम को बसा देता है। जिन पर गुरु प्रसन्न होता है उन्हें दूर से ही देखकर पाप भाग खड़े होते हैं। जिन पर गुरु प्रसन्न होता है वे मान, अभिमान का त्याग कर देते हैं और जिन पर गुरु प्रसन्न होता है वे शब्द में लीन होकर संसार सागर से पार उतर जाते हैं। जिन्होंने सच्चे गुरु का प्रामाणिक उपदेश प्राप्त किया है, संसार में उनका जन्म लेना सार्थक हो गया है। हे कलसहार, तू गुरु की शरण में आ जा क्योंकि सच्चे गुरु की शरण में ही मुक्ति और सारे पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं ।। ११ ।। सच्चे गुरु रामदास जी ने प्रभु के गुणानुवाद का शामियाना तान दिया है और सभी युगों के जीवों के समूह उसके नीचे आकर स्थित हो गए हैं। आपके हाथ में ज्ञान का भाला है, प्रभु-नाम का आसरा है जिसकी कृपा से भक्तगण तृप्त हो रहे हैं। गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास जी और अन्य भक्तजन सभी प्रभु में लीन हो चुके हैं। हे गुरु रामदास, आपने भी राजयोग के इस स्वाद को पहचान लिया है ।। १२ ।। जनक वह है जिसने प्रभु को जान लिया है और जिसने मन के प्रवाह को पूर्ण रूप से उत्साह में रखकर विकासमान किया है जनक वही है। जिसने सत्य, सन्तोष अपने हृदय में एकत्र किए हैं और कभी भी ना भरे जा सकने वाले इस मन रूपी सरोवर को तृप्त कर लिया है। अकथनीय कथा वाली यह उपर्युक्त रहस्यपूर्ण स्थिति प्रभु जिसे देता है वही उसे प्राप्त करता है अर्थात जनक रूपी पद हर एक को नहीं मिलता। हे गुरु रामदास, जनक जैसा राजा होना तो केवल तुझसे ही सम्भव हो सकता है ।। १३ ।। जो व्यक्ति लौ लगाकर मन मे श्रद्धापूर्वक प्रभु-नाम का सुमरिन करता है उसे भला दुख और पाप कैसे लग सकते हैं। संसार को पार उतारने के लिए सच्चा गुरु जहाज है जो क्षण भर के लिए भी जिसपर कृपा दृष्टि करता है वह व्यक्ति गुरु के उपदेश का हृदय में चिन्तन करता है और अपने काम, क्रोध को खो देता है। गुरु रामदास सभी जीवों का दाता है, अगम्य प्रभु के ज्ञान का व्याख्यान करने वाला, दिन-रात प्रभु का ध्यान करने वाला और पल भर के लिए भी असावधान ना होने वाला है। जिसे देखते ही दरिद्रता दूर हो जाती है, प्रभु के नाम का खजाना प्राप्त हो जाता है उस गुरु रामदास द्वारा दिए हुए ज्ञान से गुरमुख व्यक्ति अपनी दुर्मति की मैल को धो लेता है। जो व्यक्ति सच्चे गुरु का नाम लौ लगाकर मन में श्रद्धापूर्वक याद रखता है, उसे भला पाप और क्लेश कैसे प्रभावित कर सकते हैं ।। १ ।। पूरे सच्चे गुरु को पा लेने से ही धर्म-कर्म प्राप्त होते हैं। सिद्ध, साधु, मुनिजन, देवता और मनुष्य जिस गुरु रामदास की सेवा माँगते हैं उस गुरु ने श्रेष्ठ शब्द के माध्यम से एक प्रभु में ही अपनी लौ लगाई है। हे गुरु रामदास, तू अनन्त, निर्भय और निराकार है, तेरे रहस्य को कौन जान सकता है; अकथनीय प्रभु का ज्ञान तुझे ही प्राप्त हुआ है। भ्रमों में भूले हुए हे संसारी जीव, गुरु की मति लेकर प्रभु का सुमिरन कर, तू आवागमन से बच जाएगा और यम का दण्ड तुझे नहीं सहना पड़ेगा। हे मूर्ख मन, और हे मूर्ख जीव, तू जरा सोच और रात दिन प्रभु-नाम का सुमिरन कर ; सच्चे गुरु के माध्यम से ही प्रभु पाया जाता है ।। २ ।। पूरे सच्चे के सच्चे नाम पर मैं बलिहारी जाता हूँ। हे गुरु रामदास, मैं किससे तेरी तुलना करूं और कैसे तेरी सेवा करूं। हे मेरे मन, तू दोनों हाथ जोड़कर गुरु के सामने होकर अपनी जीभ से सुमिरन करता रह। इस नाम के अतिरिक्त अपने मन-वचन

क्रम जानु अनत दूजा न मानु नामु सो अपारु सारु दीनो गुरि रिद धर ॥ नल्य कवि पारस परस कच कंचना हुइ चंदना सुबासु जासु सिमरत अन तर ॥ जा के देखत दुआरे काम क्रोध ही निवारे जी हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥ ३ ॥ राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ प्रथमे नानक चंदु जगत भयो आनंदु तारनि मनुख्य जन कीअउ प्रगास ॥ गुर अंगद दीअउ निधानु अकथ कथा गिआनु पंच भूत बसि कीने जमत न त्रास ॥ गुर अमरु गुरू स्री सति कलिजुगि राखी पति अघन देखत गतु चरन कवल जास ॥ सभ बिधि मान्यिउ मनु तब ही भयउ प्रसंनु राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ ४ ॥ रड ॥ जिसहि धार्यिउ धरति अरु विउमु अरु पवणु ते नीर सर अवर अनल अनादि कीअउ ॥ ससि रिखि निसि सूर दिनि सैल तरूअ फल फुल दीअउ ॥ सुरि नर सपत समुद्र किअ धारिओ त्रिभवण जासु ॥ सोई एकु नामु हरि नामु सति पाइओ गुर अमर प्रगासु ॥ १ ॥ ५ ॥ कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिओ ॥ बिखु ते अंम्रितु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ ॥ लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै ॥ पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै ॥ काठहु स्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ ॥ सतिगुरू चरन जिन्ह परसिआ से पसु परेत सुरि नर भइअ ॥ २ ॥ ६ ॥ जामि गुरू होइ वलि धनहि किआ गारवु दिजइ ॥ जामि गुरू होइ वलि लख बाहे किआ किजइ ॥ जामि गुरू होइ वलि गिआन अरु धिआन अनन परि ॥ जामि गुरू होइ वलि सबदु साखी सु सचह घरि ॥ जो गुरू गुरू अहिनिसि जपै दासु भटु बेनति कहे ॥ जो गुरू नामु रिद महि धरै सो जनम मरण दुह थे रहे ॥ ३ ॥ ७ ॥ गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥ गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ गुरु करु सचु बीचारु गुरू करु रे मन मेरे ॥ गुरु करु सबद सपुंन अघन कटहि सभ तेरे ॥ गुरु नयणि बयणि गुरु गुरु करहु गुरू सति कवि नल्य कहि ॥ जिनि गुरू न देखिअउ नहु कीअउ ते अकयथ संसार महि ॥ ४ ॥ ८ ॥ गुरू गुरू गुरु करु मन

और कर्म से अन्य किसी को मत मान क्योंकि वह अपरम्पर एवं श्रेष्ठ नाम गुरु रामदास ने तेरे हृदय में धारण करवा दिया है। हे नल्ह कवि, पारस का स्पर्श करने से काँच भी सोना हो जाता है और जैसे चन्दन के स्पर्श से अन्य वृक्ष भी सुगन्धित बन जाते हैं इसी प्रकार तू भी प्रभु के नाम का सुमिरन करके पार उतर जाएगा। जिस गुरु रामदास के द्वार का दर्शन करने से काम, क्रोध आदि का निवारण हो जाता है, मैं ऐसे सच्चे गुरु के सच्चे नाम पर से बलिहारी जाता हूँ ।। ३ ।। उस प्रभु ने गुरु रामदास जी को राज और योग का सिंहासन प्रदान किया है। पहले चन्द्रमा रूप गुरु नानक प्रकट हुए और सारे संसार को आनन्दित करने और उन्हें पार उतारने के लिए सब सेवकों के हृदय को प्रकाशित कर दिया। फिर गुरु अंगद देव जी को प्रभु की अकथनीय कथा का ज्ञान रूप खजाना दिया गया जिससे उन्होंने काम, क्रोध आदि पाँचों शत्रुओं को वश में कर लिया और उन्हें कोई भी भय ना रहा। फिर गुरु अमरदास सच्चे गुरु के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने कलियुग में सबके सम्मान को बचाया और आपके चरण कमलों का दर्शन करके कलियुगी जीवों के पाप भाग खड़े हुए। जब गुरु अमरदास सब प्रकार से सन्तुष्ट हो गए तो उन्होंने राजयोग का यह छत्र गुरु रामदास को प्रदान कर दिया ।। ४ ।। रड (एक छन्द का नाम) ।। जिस प्रभु ने धरती और आकाश को धारण किया हुआ है और पवन, सरोवरों के जल, आग और अन्न आदि पैदा किए हैं, जिसकी कृपा से रात को चन्द्रमा, तारागण और दिन में सूर्य निकलता है, जिसने पहाड़ों की रचना की है और जिसने वृक्षों को फल-फूल लगाए हैं, जिसने देवता, मनुष्य और सातों समुद्र पैदा करके तीनों लोकों को धारण कर रखा है उसी प्रभु का नाम सदैव अटल है और उसी नाम के प्रकाश को गुरु रामदास ने गुरु अमरदास जी से प्राप्त किया है ।। १ ।। ५ ।। जिसने भी शब्द-गुरु को कानों से सुना वह काँच से सोना बन गया। जिसने सच्चे गुरु का नाम मुँह से बोला है वह विष से अमृत बन गया है। यदि सच्चा गुरु कृपा दृष्टि करे तो जीव लोहे से लाल रत्न बन जाता है। गुरु के बताए हुए ज्ञान का यदि वह चिंतन करे तो गुरु उन पत्थर जैसों को भी माणिक बना देता है। सच्चे गुरु के चरणों को स्पर्श करने से लकड़ी को वह चन्दन कर देता है, उनके दुखों और दरिद्रताओं को दूर कर देता है और पशु तथा प्रेतों को भी देवता और मनुष्य बना देता है ।। २ ।। ६ ।। जब सच्चा गुरु किसी के पक्ष में हो जाता है तो धन होने के बावजूद भी वह अहंकार नहीं करता। यदि गुरु पक्ष में हो तो लाखों भुजाएँ भी व्यक्ति का कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। यदि गुरु पक्ष में हो तो ज्ञान-ध्यान का दान प्राप्त होने से व्यक्ति प्रभु के अलावा अन्य किसी पर प्रेम नहीं लगाता। जब गुरु सहायता करने वाला हो जाए तो व्यक्ति के हृदय में शब्द साक्षात् हो उठता है और वह सच्चे प्रभु के घर में स्थिर हो जाता है। दास नल्ह भाट विनती करता है कि जो व्यक्ति दिन-रात गुरु का ही सुमिरन करता रहता है और सच्चे गुरु के नाम को हृदय में धारण किए रहता है वह जन्म और मरण दोनों से बच जाता है ।। ३ ।। ७ ।। गुरु के बिना चारों ओर घोर अंधकार है और गुरु रूपी ज्ञान के बिना कुछ समझ में नहीं आता। गुरु के बिना सुरति और सफलता तथा मुक्ति प्राप्त नहीं होती। हे मेरे मन, गुरु के ज्ञान को अपना। गुरु के सम्पर्क में बना रह क्योंकि यही सच्चा विचार है। सम्पन्न शब्द-गुरु को धारण कर तेरे सभी पाप कट जाएंगे। नल्ह कवि कहता है कि हे मेरे मन, आँखों में, वाणी में केवल गुरु रूपी ज्ञान को ही बसाओ क्योंकि गुरु का ज्ञान ही सत्य रूप में स्थिर बना रहने वाला है। जिस व्यक्ति ने सच्चे गुरु के दर्शन नहीं किए और जो सच्चे गुरु की शरण में नहीं आया ऐसे सभी व्यक्ति संसार में असफल और निरर्थक बने रहते हैं ।। ४ ।। ८ ।। हे मेरे मन, तू ज्ञान रूपी गुरु पर ही अपना ध्यान टिकाए रख।

मेरे ॥ तारण तरण सम्रथु कलिजुगि सुनत समाधि सबद जिसु केरे ॥ फुनि दुखनि नासु सुखदायकु सूरउ जो धरत धिआनु बसत तिह नेरे ॥ पूरउ पुरखु रिदै हरि सिमरत मुखु देखत अघ जाहि परेरे ॥ जउ हरि बुधि रिधि सिधि चाहत गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥ ५ ॥ ९ ॥ गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ हुती जु पिआस पिऊस पिवंन की बंछत सिधि कउ बिधि मिलायउ ॥ पूरन भो मन ठउर बसो रस बासन सिउ जु दहं दिसि धायउ ॥ गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जल्यन तीरि बिपास बनायउ ॥ गयउ दुखु दूरि बरखन को सु गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ ६ ॥ १० ॥ समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥ गुरि कीनी क्रिपा हरि नामु दीअउ जिसु देखि चरंन अघंन हर्यउ ॥ निसि बासुर एक समान धिआन सु नाम सुने सुतु भान डर्यउ ॥ भनि दास सु आस जगत्र गुरू की पारसु भेटि परसु कर्यउ ॥ रामदासु गुरू हरि सति कीयउ समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥ ७ ॥ ११ ॥ अब राखहु दास भाट की लाज ॥ जैसी राखी लाज भगत प्रहिलाद की हरनाखस फारे कर आज ॥ फुनि द्रोपती लाज रखी हरि प्रभ जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥ सोदामा अपदा ते राखिआ गनिका पढ़त पूरे तिह काज ॥ स्री सतिगुर सुप्रसंन कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज ॥ ८ ॥ १२ ॥ झोलना ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ सबदु हरि हरि जपै नामु नव निधि अपै रसनि अहिनिसि रसै सति करि जानीअहु ॥ फुनि प्रेम रंग पाईऐ गुरमुखहि धिआईऐ अंन मारग तजहु भजहु हरि ग्यानीअहु ॥ बचन गुर रिदि धरहु पंच भू बसि करहु जनमु कुल उधरहु द्वारि हरि मानीअहु ॥ जउ त सभ सुख इत उत तुम बंछवहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ १ ॥ १३ ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपि सति करि ॥ अगम गुन जानु निधानु हरि मनि धरहु ध्यानु अहिनिसि करहु बचन गुर रिदै धरि ॥ फुनि गुरू जल बिमल अथाह मजनु करहु संत गुरसिख तरहु नाम सच रंग सरि ॥ सदा निरवैरु निरंकारु निरभउ जपै प्रेम गुर सबद रसि करत द्रिड़ु भगति हरि ॥ मुगध मन भ्रमु तजहु नामु गुरमुखि भजहु गुरू गुरु गुरू

वही इस कलियुग में तैरने-तैराने में समर्थ है और उसी शब्द को सुनकर व्यक्ति समाधि में लीन हो जाता है। जो उसका ध्यान करता है यह उसके पास ही बना रहता है और फिर उसके दुखों का नाश करके यह शूरवीर उसे सुख देने वाला बना रहता है। सच्चा गुरु पूर्ण, सर्वव्यापक पुरुष है और वह स्वयं प्रभु का सुमिरन करता है और उसका मुख देखकर पाप दूर हो जाते हैं। हे मेरे मन, यदि तू दैवी बुद्धि और शक्तियों को चाहता है तो गुरु का ही सुमिरन करता रह ।। ५ ।। ९ ।। गुरु रूपी ज्ञान का मुख देखकर ही मैंने बहुत बड़ा सुख प्राप्त किया है। मुझे जो अमृत को पीने की प्यास लगी थी उस इच्छा की सिद्धि के लिए प्रभु ने यह संयोग बना दिया है। मेरा यह मन जो रसों और वासनाओं के लिए दसों दिशाओं में दौड़ता था, मेरी वे इच्छाएँ पूरी हो गई हैं और अब मन एक स्थान पर टिक गया है। जिस सच्चे गुरु ने बैकुण्ठ जैसा गोइन्दवाल ब्यास नदी के किनारे पर बना दिया है उस गुरु के मुख को देखकर गुरु रामदास जी ने बड़ा आनन्द प्राप्त किया है और मानो उस ज्ञान रूपी गुरु को प्राप्त करके गुरु रामदास का वर्षों का दुख दूर हो गया है ।। ६ ।। १० ।। समर्थ गुरु ने गुरु रामदास के सिर पर हाथ रखा, गुरु ने कृपा करके उसे प्रभु का नाम प्रदान किया है। जिसके चरणों को देखकर पाप दूर हो जाते हैं उसी प्रभु-नाम में रात-दिन गुरु रामदास जी का पूरी तरह ध्यान लगा रहता है और प्रभु-नाम को सुनने से डरता हुआ यमराज पास नहीं आता। हे दास नल्ह कवि, तू ही बता दे कि गुरु रामदास जी को जगत के गुरु परमात्मा से ही आशा है। वे पारस गुरु अमरदास जी से मिलकर आप भी पारस हो गए हैं और समर्थ गुरु अमरदास जी द्वारा अपना हाथ उनके सिर पर रखने से प्रभु ने गुरु रामदास जी को भी अटल बना दिया है ।। ७ ।। ११ ।। हे सच्चे गुरु, अब इस दास नल्ह भट्ट की उसी प्रकार लाज रखो जैसी आपने भक्त प्रहलाद की रखी थी और हिरण्यकश्यपु को हाथ के नाखुनों से ही फाड़ डाला था। हे प्रभु, फिर तूने द्रौपदी की लाज रखी जिसके वस्त्र छीने जा रहे थे और तूने उसे अनेकों वस्त्र प्रदान किए थे। मुसीबत में फँसे हुए सुदामा की रक्षा भी तूने ही की और राम नाम पढ़ने से गणिका के कार्यों को भी तूने सँवारा। अब इस कलियुग में हे सच्चे गुरु इस दास नल्ह भट्ट पर प्रसन्न होकर इसकी भी लाज रखो ।। ८ ।। १२ ।। झूलना (छन्द का नाम)।। हे प्राणियों, सदैव गुरु का सुमिरन करो। इस बात को सत्य मानो कि सच्चा गुरु स्वयं ही सच्चे शब्द प्रभु का सुमिरन करता है, नाम रूपी नवनिधियाँ देता है और हर समय जीभ से प्रभु-नाम का आनन्द ले रहा है। यदि गुरमुख बनकर प्रभु का सुमिरन किया जाए तो फिर प्रेम रंग प्राप्त किया जाता है; इसलिए तुम अन्य मार्गों को छोड़ दो और हे ज्ञानवानों, केवल प्रभु का ही सुमिरन करो। सच्चे गुरु के वचनों को ही हृदय में धारण करो, अपने मन को वश में रखो, अपने जीवन और कुल का उद्धार करो तभी तुम प्रभु के द्वार पर माने जा सकोगे। हे प्राणियों, यदि तुम लोक परलोक के सभी सुख चाहते हो तो सदैव गुरु की याद को मन में बनाए रखो ।। १ ।। १३ ।। हे सन्तजनों और गुरु के सिक्खो, गुरु को सत्य मानते हुए उसका जाप करो। गुणों के भण्डार उस अगम्य प्रभु को जानकर उसको हृदय में धारण करो और गुरु के उपदेश को हृदय में धारण करके रात दिन उस प्रभु पर ध्यान बनाए रखो। पुनः सच्चे गुरु रूपी निर्मल और गहरे जल में स्नान करो और सच्चे नाम के प्रेम रूपी सरोवर में तैरते रहो। जो गुरु रामदास सदैव शत्रुता विहीन और निर्भय और निराकार प्रभु का सुमिरन करता है और शब्द-गुरु के प्रेम में आनन्दित बना रहकर प्रभु की भक्ति करवाता है उस गुरु के सामने होकर हे मूर्ख मन, प्रभु-नाम का सुमिरन करो, भ्रमों को छोड़ दो और सदैव

गुरु गुरू जपु सति करि ॥ २ ॥ १४ ॥ गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ उदधि गुरु गहिर गंभीर बेअंतु हरि नाम नग हीर मणि मिलत लिव लाईऐ ॥ फुनि गुरू परमल सरस करत कंचनु परस मैलु दुरमति हिरत सबदि गुरु ध्याईऐ ॥ अंम्रित परवाह छुटकंत सद द्वारि जिसु ग्यान गुर बिमल सर संत सिख नाईऐ ॥ नामु निरबाणु निधानु हरि उरि धरहु गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ ३ ॥ १५ ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मंन रे ॥ जा की सेव सिव सिध साधिक सुर असुर गण तरहि तेतीस गुर बचन सुणि कंन रे ॥ फुनि तरहि ते संत हित भगत गुरु गुरु करहि तरिओ प्रहलादु गुर मिलत मुनि जंन रे ॥ तरहि नारदादि सनकादि हरि गुरमुखहि तरहि इक नाम लगि तजहु रस अंन रे ॥ दासु बेनति कहै नामु गुरमुखि लहै गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मंन रे ॥ ४ ॥ १६ ॥ २९ ॥ सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि ॥ करी क्रिपा सतजुगि जिनि ध्रू परि ॥ स्री प्रहलाद भगत उधरीअं ॥ हस्त कमल माथे पर धरीअं ॥ अलख रूप जीअ लख्या न जाई ॥ साधिक सिध सगल सरणाई ॥ गुर के बचन सति जीअ धारहु ॥ माणस जनमु देह निस्तारहु ॥ गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥ गुर प्रसादि प्रभु पाईऐ गुर बिनु मुकति न होइ ॥ गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥ तिनि लहणा थापि जोति जगि धारी ॥ लहणै पंथु धरम का कीआ ॥ अमरदास भले कउ दीआ ॥ तिनि स्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥ हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥ अप्यउ हरि नामु अखै निधि चहु जुगि गुर सेवा करि फलु लहीअं ॥ बंदहि जो चरण सरणि सुखु पावहि परमानंद गुरमुखि कहीअं ॥ परतखि देह पारब्रहमु सुआमी आदि रूपि पोखण भरणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥ १ ॥ जिह अंम्रित बचन बाणी साधू जन जपहि करि बिचिति चाओ ॥ आनंदु नित मंगलु गुर दरसनु सफलु संसारि ॥ संसारि सफलु गंगा गुर दरसनु परसन परम पवित्र गते ॥ जीतहि जम लोकु पतित जे प्राणी हरि जन सिव गुर ग्यानि रते ॥ रघुबंसि तिलकु सुंदरु दसरथ घरि

गुरु को सत्य रूप में हृदय में बसाए रखो ।। २ ।। १४ ।। सदा गुरु का जाप करो क्योंकि गुरु के माध्यम से ही प्रभु मिलता है। गुरु ही गहरा, गम्भीर और अनन्त सागर है जिसमें लौ लगाकर स्नान करने से प्रभु-नाम रूपी नग, हीरे और मणियाँ प्राप्त होती हैं। फिर गुरु का स्पर्श तो रसपूर्ण सुगन्ध उत्पन्न कर देता है। जीव को सोना बना देता है और दुर्मति की मैल दूर कर देता है, इसलिए शब्द के माध्यम से गुरु का सुमिरन करते रहना चाहिए। जिस गुरु के द्वार पर सदैव अमृत के प्रवाह बने रहते हैं और जिस गुरु के ज्ञान रूपी सरोवार में सिक्ख और शान्त पुरुष स्नान करते हैं उस गुरु रूपी प्रभु के वासनाओं से रहित नाम रूपी खजाने को हृदय में धारण कर सदैव गुरु की याद बनाए रखो क्योंकि ऐसा करने से ही प्रभु-गुरु को प्राप्त किया जाता है ।। ३ ।। १५ ।। हे मेरे मन, गुरु का सुमिरन कर क्योंकि शिव, उसके सिद्ध साधक, देव, दैत्य और तैंतीस करोड़ देवता आदि सभी गुरु की सेवा करके और गुरु के वचनों को कानों से सुनकर पार उतर जाते हैं। वे सन्त और भक्तजन तथा सेवक पार उतर जाते हैं जो प्रेम पूर्वक गुरु की याद हृदय में बनाए रहते हैं। हे मन, गुरु से मिलकर ही प्रहलाद और अनेकों मुनि आदि पार उतर गए हैं। प्रभु रूप गुरु के माध्यम से एक नाम में ही लीन होकर नारद और सनक आदि पार उतरते हैं। इसलिए हे मन, तू अन्य रसों का त्याग करके केवल एक नाम में लीन होकर पार उतर जा। दास नल्ह कवि विनती करता है कि गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम प्राप्त किया जाता है, इसलिए हे मन, गुरु की याद को मन में बनाए रख ।। ४ ।। १६ ।। २९ ।। वह मालिक प्रभु ही शिरोमणि गुरु है जो सबसे ऊपर है। उसने ही सतयुग में भक्त ध्रुव पर कृपा की और उसी ने ही कमल रूपी अपने हाथ को भक्त प्रहलाद के माथे पर रखकर उसका उद्धार किया। उसका अदृष्ट रूप जीवों को दिखाई नहीं देता परन्तु साधक और सिद्ध सभी उसी की शरण में हैं। उस गुरु के वचन सत्य मानकर हृदय में धारण करो और अपने इस जीवन तथा शरीर का उद्धार कर लो। गुरु ही जहाज है, गुरु ही मल्लाह है और उस गुरु के बिना कोई भी पार नहीं उतर सका है। गुरु की कृपा से ही प्रभु मिलता है और गुरु के बिना विकारों से मुक्ति नहीं होती। गुरु नानक का निवास प्रभु के समीप ही है और उसी ने लहणा (गुरु अंगद) को स्थापित कर अपने प्रकाश को सारे संसार में फैलाया है। लहणा ने धर्म का मार्ग अपनाया और वही मार्ग गुरु अमरदास को दिखा दिया। उसने सोढ़ी श्री रामदास को इस मार्ग पर स्थापित किया और प्रभु-नाम का अक्षय भण्डार उसे अर्पण कर दिया। प्रभु-नाम का चारों युगों में अक्षय बना रहने वाला प्रभु-नाम का भण्डार उसे दे दिया गया परन्तु यह उसने गुरु की सेवा के फल के रूप में प्राप्त किया है। जो उसके चरणों की वन्दना करते हैं वे उसकी शरण में सुख प्राप्त करते हैं और उन्हें परम आनन्द लेने वाले गुरमुख कहा जाता है। परमात्मा सभी जीवों का मालिक है, सबका मूल रूप है और सबका पालन-पोषण करने वाला है। अब वह प्रत्यक्ष रूप में गुरु रामदास जी के रूप में प्रकट है। हे भाई, गुरु रामदास जी की अवस्था वर्णन से बाहर है और वह संसार सागर से पार उतारने के लिए जहाज है; तुम ऐसे सच्चे गुरु की सेवा करो ।। २ ।। जिस गुरु के अमृत वचनों और वाणी को साधुजन हृदय में बड़े उत्साह के साथ जपते रहते हैं और सदा आनन्दित बने रहते हैं उस गुरु का दर्शन संसार में उत्तम फल प्रदान करने वाला है। संसार में सच्चे गुरु का दर्शन गंगा के समान फल देने वाला है। गुरु के चरण स्पर्श से परम पवित्र पदवी प्राप्त होती है और जो व्यक्ति पतित आचरण के बावजूद यदि सच्चे गुरु के ज्ञान में रंगे जाते हैं तो वे प्रभु के सेवक बनकर यमलोक को भी जीत लेते हैं। गुरु रामदास मानो रघुवंश में दशरथ के घर पैदा होने वाले सुन्दर राम हैं जिनकी

मुनि बंछहि जा की सरणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥ २ ॥ संसारु अगम सागरु तुलहा हरि नामु गुरू मुखि पाया ॥ जगि जनम मरणु भगा इह आई हीऐ परतीति ॥ परतीति हीऐ आई जिन जन कै तिन्ह कउ पदवी उच भई ॥ तजि माइआ मोहु लोभु अरु लालचु काम क्रोध की ब्रिथा गई ॥ अवलोक्या ब्रहमु भरमु सभु छुटक्या दिब्य द्रिस्टि कारण करणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥ ३ ॥ परतापु सदा गुर का घटि घटि परगासु भया जसु जन कै ॥ इकि पड़हि सुणहि गावहि परभातिहि करहि इस्नानु ॥ इस्नानु करहि परभाति सुध मनि गुर पूजा बिधि सहित करं ॥ कंचनु तनु होइ परसि पारस कउ जोति सरूपी ध्यानु धरं ॥ जगजीवनु जगंनाथु जल थल महि रहिआ पूरि बहु बिधि बरनं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥ ४ ॥ जिनहु बात निस्चल ध्रूअ जानी तेई जीव काल ते बचा ॥ तिन्ह तरिओ समुद्रु रुद्रु खिन इक महि जलहर बिंब जुगति जगु रचा ॥ कुंडलनी सुरझी सतसंगति परमानंद गुरू मुखि मचा ॥ सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि मन बच क्रंम सेवीऐ सचा ॥ ५ ॥ वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोद जिसहि दही भातु खाहि जीउ ॥ देखि रूपु अति अनूपु मोह महा मग भई किंकनी सबद झनतकार खेलु पाहि जीउ ॥ काल कलम हुकमु हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु बंम्यु ग्यानु ध्यानु धरत हीऐ चाहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ १ ॥ ६ ॥ राम नाम परम धाम सुध बुध निरीकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ ॥ सुथर चित भगत हित भेखु धरिओ हरनाखसु हरिओ नख बिदारि जीउ ॥ संख चक्र गदा पदम आपि आपु कीओ छदम अपरंपर पारब्रहम लखै कउनु ताहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ २ ॥ ७ ॥ पीत बसन कुंद दसन प्रिआ सहित कंठ माल मुकटु सीसि मोर पंख चाहि जीउ ॥

शरण की कामना मुनिजन भी करते हैं। जिसकी आध्यात्मिक अवस्था वर्णन से परे है उस गुरु रामदास की सेवा करो जो पार उतार देने वाला जहाज है ।। २ ।। संसार अथाह समुद्र है जिसमें प्रभु-नाम का बेड़ा स्थित है और उसे गुरु के उपदेश के माध्यम से जिसने प्राप्त कर लिया उसके हृदय में प्रभु का प्रेम लग जाता है और उसका जन्म-मरण समाप्त हो जाता है। जिसके हृदय में प्रेम लग गया उस सेवक की पदवी बहुत ऊँची हो जाती है। वह माया, मोह, लोभ और लालच त्याग देता है और काम, क्रोध की उसकी पीड़ा दूर हो जाती है। जिस व्यक्ति ने उस करण-कारण और दिव्य दृष्टि वाले ब्रह्म रूपी गुरु रामदास को देख लिया है उसके सभी भ्रम छूट गए हैं। गुरु रामदास की ही सेवा करो जिसकी आध्यात्मिक अवस्था वर्णन से परे है और जो पार उतार देने के लिए स्वयं जहाज है ।। ३ ।। सच्चे गुरु का प्रताप और यश सदैव प्रभु के सेवकों के हृदय में प्रकट बना रहता है। कई लोग इस यश को पढ़ते-सुनने और गाते हैं और इस निर्मल यश रूपी जल में प्रातः काल स्नान करते हैं। वे अमृत बेला में इसमें स्नान करते हैं और शुद्ध हृदय के साथ विधि पूर्वक गुरु की वन्दना करते हैं। ज्योति स्वरूप गुरु का ध्यान करते हैं और उस पारस गुरु का स्पर्श करके उनका शरीर सोना हो जाता है। जगत का जीवन, संसार का मालिक जो जल-स्थल में स्थित बना हुआ है उसका अनेकों विधियों से वर्णन किया जाता है। ऐसे श्री गुरु रामदास की सेवा करो जिसकी आध्यात्मिक अवस्था कथन से परे है और जो पार उतारने के लिए जहाज है ।। ४ ।। जिन व्यक्तियों ने गुरु के वचनों को भक्त ध्रुव की तरह निश्चित रूप से जान लिया है वे व्यक्ति ही काल के भय से बच गए हैं। भयानक संसार सागर को उन्होंने एक पल में तैर कर पार कर लिया है और संसार को वे बादलों की छाया की तरह रचा हुआ मानते हैं। सत्संगत में ही उनकी कुण्डलिनी सुलझ कर सीधी हो जाती है और गुरु की कृपा से उनके मुख पर परम आनन्द की आभा प्रकट हो उठती है। सच्चा गुरु ही सबसे ऊपर है इसलिए मन, वचन और कर्म को एक सीधी रेखा में लाते हुए अर्थात आध्यात्मिक कुण्डलिनी को मन, वचन और कर्म की एकरूपता के माध्यम से सीधा करते हुए उस सच्चे प्रभु की सेवा करते रहना चाहिए ।। ५ ।। हे प्यारे, तू धन्य है, तू धन्य है। तेरे कमल जैसे नेत्र हैं और मेरे लिए तो तू वही है जिसे माँ यशोदा कहा करती थी कि हे पुत्र, तू आकर दही और चावल खा ले। जब तू दौड़ता था और तुम्हारी किंकिणी की ध्वनि होती थी और तुम्हारे अत्यन्त सुन्दर मुख को देखकर माँ यशोदा तुम्हारे प्यार में लीन हो जाती थी। काल की कलम और हुकुम गुरु के ही हाथ में है। उन्हें भला कौन मिटा सकता है। शिव और ब्रह्मा भी गुरु के दिए ज्ञान और ध्यान को हृदय में धारण किए रखना चाहते हैं। हे गुरु, तू आश्चर्य है, तू आश्चर्य ही है, सत्य स्वरूप में तू अटल है, तू ही सभी ऐश्वर्यों का निवास है और तू ही प्रारम्भ से सर्वव्यापक और स्थिर बना रहने वाला ज्ञान स्वरूप गुरु है ।। १ ।। ६।। हे सच्चे गुरु, तू सर्वोच्च ठिकाने वाला, शुद्ध बुद्धि वाला, निराकार, अनन्त है। तेरा ही नाम राम है और तेरे बराबर का भला कौन है। हे स्थिर चित्त वाले, तूने ही भक्त के हित के लिए नरसिंह का वेश धारण करके हिरण्यकश्यपु को अपने नखों से ही चीर डाला था। हे सच्चे गुरु, मेरे लिए तो तू वही है जिसके शंख, चक्र, गदा और पद्म चिन्ह हैं। जिसने वामन रूप वाला छल बनाया था। तू अपरम्पर परब्रह्म है और तुझे भला कौन पहचान सकता है। हे गुरु, तू आश्चर्य है, तू आश्चर्य ही आश्चर्य है, सत्य स्वरूप में तू अटल है, तू ही सभी ऐश्वर्यों का निवास है और तू ही प्रारम्भ से सर्वव्यापक और स्थिर बना रहने वाला ज्ञान स्वरूप गुरु है ।। २ ।। ७ ।। हे सच्चे गुरु, मेरे लिए तो पीले वस्त्रों वाला कृष्ण तू ही है जिसके सफेद फूल जैसे दाँत हैं और अपनी प्रियतमा के साथ है। गले में माला और जिसने सिर पर बड़ी चाहत से मोर पंख का मुकुट धारण किया हुआ है।

बेवजीर बडे धीर धरम अंग अलख अगम खेलु कीआ आपणै उछाहि जीउ ॥ अकथ कथा कथी न जाइ तीनि लोक रहिआ समाइ सुतह सिध रूपु धरिओ साहन के साहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ ३ ॥ ८ ॥ सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरु गुबिंद जीउ ॥ बलिहि छलन सबल मलन भग्ति फलन कान्ह कुअर निहकलंक बजी डंक चढ़ू दल रविंद जीउ ॥ राम रवण दुरत दवण सकल भवण कुसल करण सरब भूत आपि ही देवाधि देव सहस मुख फनिंद जीउ ॥ जरम करम मछ कछ हुअ बराह जमुना कै कूलि खेलु खेलिओ जिनि गिंद जीउ ॥ नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सतिगुरू सतिगुरू सतिगुर गुबिंद जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ गुर कहिआ मानु निज निधानु सचु जानु मंत्रु इहै निसि बासुर होइ कल्यानु लहहि परम गति जीउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु जण जण सिउ छाडु धोहु हउमै का फंधु काटु साधसंगि रति जीउ ॥ देइ गेहु त्रिअ सनेहु चित बिलासु जगत एहु चरन कमल सदा सेउ द्रिड़ता करु मति जीउ ॥ नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ ५ ॥ १० ॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ निरंकारु प्रभु सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तू कद का ॥ ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मद का ॥ चवरासीह लख जोनि उपाई रिजकु दीआ सभ हू कउ तद का ॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ १ ॥ ११ ॥ वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ आपे हसै आपि ही चितवै आपे चंदु सूरु परगासा ॥ आपे जलु आपे थलु थंम्हनु आपे कीआ घटि घटि बासा ॥ आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा ॥ गुरमुखि संगति सभै बिचारहु वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ २ ॥ १२ ॥ कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहिगुरू तेरी सभ रचना ॥ तू जलि थलि गगनि पयालि पूरि रह्या अंम्रित ते मीठे जा के बचना ॥ मानहि

हे बड़े धैर्य वाले, तुझे सलाह देने वाले किसी मन्त्री की आवश्यकता नहीं, तू ही धर्म-स्वरूप है, अदृष्ट और अगम्य है और तूने ही यह सारा खेल अपनी ही उत्साहपूर्ण इच्छा से रचा है। तेरी अकथनीय कथा को कहा नहीं जा सकता और तू ही हे सम्राट, स्वाभाविक रूप से यह रूप धारण कर तीनों लोकों में समाया हुआ है। हे गुरु, तू आश्चर्य है, तू आश्चर्य ही आश्चर्य है, सत्य स्वरूप में तू अटल है, तू ही सब ऐश्वर्यों का निवास है और तू ही प्रारम्भ से सर्वव्यापक और स्थिर बना रहने वाला ज्ञान स्वरूप गुरु है ।। ३ ।। ८ ।। सच्चा गुरु ही सच्चा प्रभु गुरु है। प्रभु गुरु ही राजा बलि को छलने वाला, अहंकारियों का नाश करने वाला, भक्ति का फल देने वाला है। सच्चा गुरु ही कन्हैया है। सच्चा गुरु ही कलंक रहित है जिसकी शोभा बढ़ाने के लिए सूर्य और चन्द्रमा निकलते हैं और हे सच्चे गुरु, तेरा ही डंका सब ओर बजता है। हे सच्चे गुरु (रामदास जी), आप प्रभु का सुमिरन करने वाले हो, पापों को दूर करने वाले और सभी स्थानों में सुख पैदा करने वाले हो। आप ही सभी जीवों में स्थित हो, देवताओं के भी देवता हो और मेरे लिए तो हजारों मुँह वाला शेषनाग भी तुम ही हो। मेरे लिए तो तुम्हीं ने मत्स्य, कच्छप और वाराह के रूप में जन्म लेकर कई काम किए हैं और मेरे लिए तो यमुना के किनारे तुम्हीं ने गेंद के कई खेल खेले हैं। हे गयन्द (भट्ट) के मन, इस सच्चे गुरु का श्रेष्ठ नाम हृदय में धारण करके विकारों को छोड़ दे क्योंकि यह सच्चा गुरु वही गोविन्द अर्थात धरती को धारण करने वाला प्रभु है ।। ४ ।। ६ ।। सच्चा गुरु ही सदैव स्थिर है। सच्चे गुरु का वचन मानो क्योंकि यही साथ निभने वाला खजाना है। तू इस बात को सत्य रूप में मान ले कि सच्चा गुरु ही वह मन्त्र है जिससे तुझे दिन रात सुख मिलेगा और तू परम गति को प्राप्त कर लेगा। काम, क्रोध, लोभ, मोह, और लोगों के साथ ठगी करना छोड़ दे; अहंकार का फन्दा भी दूर कर दे और साधसंगत में लीन हो जा। शरीर, घर, स्त्री का प्यार, संसार आदि मन का ही खेल है। तू सच्चे गुरु के चरण कमलों का ही ध्यान कर और अपनी मति में इसी बात को पक्का कर ले। हे गयन्द (भट्ट) के मन, तू प्रभु के श्रेष्ठ नाम को हृदय में धारण कर और विकारों को छोड़ दे क्योंकि सच्चा गुरु ही सदैव स्थिर बना रहने वाला है ।। ५ ।। १० ।। हे गुरु, तू धन्य है। तू अपने सेवकों के हृदय में युगों-युगों से बसा हुआ है और सेवकों पर सब तेरी ही कृपा है। तू निराकार है, सबका प्रभु है और कोई कह नहीं सकता कि तू कब का है। तूने उन अनेकों ब्रह्माओं और विष्णुओं का सृजन किया है जिन्हें अपने मन के अहंकार का ही मोह हो गया है। तूने चौरासी लाख योनियों को उत्पन्न किया और उन सबको तू उनकी रोज़ी-रोटी भी दे रहा है। हे गुरु, तू धन्य है। तू अपने सेवकों के हृदय में युगों-युगों से बसा हुआ है और सेवकों पर सब तेरी ही कृपा है ।।१ ।।११ ।।इस आश्चर्य स्वरूप का भी बड़ा खेल चल रहा है। वह स्वयं ही हँसता है, स्वयं ही चिन्तन करता है और स्वयं ही चाँद और सूरज को प्रकाश दे रहा है। वह स्वयं ही जल है, स्थल है, सबका आसरा है और उसने स्वयं ही घट-घट में निवास बनाया हुआ है। वह स्वयं ही नर है स्वयं ही नारी है स्वयं ही गोटियाँ बना हुआ है और स्वयं ही चौपड़ बना हुआ है। हे गुरमुख रूप में संगत कर रहे सभी लोगो, इस तथ्य को मिलकर विचार करो कि आश्चर्य रूपी गुरु (रामदास) का यह संसार रूपी खेल चल रहा है ।। २ ।। १२ ।। हे गुरु, तू धन्य है, यह सारी सृष्टि तेरी ही रचना है। तूने ही तत्वों को मिलाकर यह खेल बना दिया है। तू जल में पृथ्वी और आकाश-पाताल में सर्वत्र व्याप्त है, तेरे बोल अमृत से भी मीठे हैं।

ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का कालु निरंजन जचना ॥ गुर प्रसादि पाईऐ परमारथु सतसंगति सेती मनु खचना ॥ कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहगुरू तेरी सभ रचना ॥ ३ ॥ १३ ॥ ४२ ॥ अगमु अनंतु अनादि आदि जिसु कोइ न जाणै ॥ सिव बिरंचि धरि ध्यानु नितहि जिसु बेदु बखाणै ॥ निरंकारु निरवैरु अवरु नही दूसर कोई ॥ भंजन गढ़ण समथु तरण तारण प्रभु सोई ॥ नाना प्रकार जिनि जगु कीओ जनु मथुरा रसना रसै ॥ स्री सति नामु करता पुरखु गुर रामदास चितह बसै ॥ १ ॥ गुरू समरथु गहि करीआ ध्रुव बुधि सुमति सम्हारन कउ ॥ फुनि ध्रंम धुजा फहरंति सदा अघ पुंज तरंग निवारन कउ ॥ मथुरा जन जानि कही जीअ साचु सु अउर कछू न बिचारन कउ ॥ हरि नामु बोहिथु बडौ कलि मै भव सागर पारि उतारन कउ ॥ २ ॥ संतत ही सतसंगति संग सुरंग रते जसु गावत है ॥ ध्रम पंथु धरिओ धरनीधर आपि रहे लिव धारि न धावत है ॥ मथुरा भनि भाग भले उन्ह के मन इछत ही फल पावत है ॥ रवि के सुत को तिन्ह त्रासु कहा जु चरंन गुरू चितु लावत है ॥ ३ ॥ निरमल नामु सुधा परपूरन सबद तरंग प्रगटित दिन आगरु ॥ गहिर गंभीरु अथाह अति बड सुभरु सदा सभ बिधि रतनागरु ॥ संत मराल करहि कंतूहल तिन जम त्रास मिटिओ दुख कागरु ॥ कलजुग दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरू सगल सुख सागरु ॥ ४ ॥ जा कउ मुनि ध्यानु धरै फिरत सगल जुग कबहु क कोऊ पावै आतम प्रगास कउ ॥ बेद बाणी सहित बिरंचि जसु गावै जा को सिव मुनि गहि न तजात कबिलास कंउ ॥ जा कौ जोगी जती सिध साधिक अनेक तप जटा जूट भेख कीए फिरत उदास कउ ॥ सु तिनि सतिगुरि सुख भाइ क्रिपा धारी जीअ नाम की बडाई दई गुर रामदास कउ ॥ ५ ॥ नामु निधानु धिआन अंतरगति तेज पुंज तिहु लोग प्रगासे ॥ देखत दरसु भटकि भ्रमु भजत दुख परहरि सुख सहज बिगासे ॥ सेवक सिख सदा अति लुभित अलि समूह जिउ कुसम सुबासे ॥ बिद्यमान गुरि आपि थप्यउ थिरु साचउ तखतु गुरू रामदासै

हे गुरु, ब्रह्मा और रुद्र आदि तेरी ही सेवा करते हैं, तू काल का भी काल है और तू माया की कालिमाओं से परे रहने वाला है ; सभी लोग तुझसे ही माँगा करते हैं। गुरु की कृपा से ही ऊँचा पारमार्थिक पद प्राप्त होता है और सत्संग में मन लीन हो जाता है। हे गुरु, तू धन्य है, यह सारी सृष्टि तेरी ही रचना है। तूने ही तत्वों को मिलाकर यह खेल बना दिया है ।। ३ ।। १३ ।। ४२ ।। वह प्रभु अगम्य अनन्त, अनादि है जिसका आदि कोई भी नहीं जानता। उसी का ध्यान शिव और ब्रह्मा करते हैं और उसी के गुणों का वर्णन वेद कर रहा है। वह निराकार शत्रु रहित है और उसके समान दूसरा कोई नहीं है। वह प्रभु ही नष्ट करने वाला, बनाने वाला समर्थ है और वह स्वयं ही जीवों को संसार सागर से पार उतारने वाला जहाज है। जिस प्रभु ने कई प्रकार का जगत बनाया है उसका सुमिरन मथुरा (भट्ट) भी अपनी जीभ के साथ करता है। वही ऐश्वर्यपूर्ण सच्चा नाम रूपी कर्ता पुरुष गुरु रामदास के हृदय में बस रहा है ।। १ ।। जिस समर्थ गुरु का धर्म का ध्वज सदैव झूल रहा है मैंने अपने पापों के समूहों का नाश करने के लिए तथा मन के संकलपों-विकल्पों की तरंगों को दूर करने के लिए उस गुरु की शरण पकड़ी है। सेवक मथुरा ने अपने हृदय में सोचकर-समझकर यह सत्य कहा है कि इस तथ्य के बिना अन्य कुछ भी विचार करने योग्य नहीं है। संसार सागर से पार उतरने के लिए, प्रभु का नाम ही कलियुग में बड़ा जहाज है और वह उस समर्थ गुरु से ही प्राप्त होता है ।। २ ।। धर्म का मार्ग धरती का आसरा प्रभु ने स्वयं ही चलाया है। जिन सन्त पुरुषों ने सत्संगत के रंग में लीन होकर गुरु के इस मार्ग का यश गाया है उनकी लौ सदैव प्रभु में लगी रहती है और वे इधर-उधर भटकते नहीं हैं। हे मथुरा, तू बता दे कि ऐसे व्यक्तियों के भाग्य भले हैं, उन्हें मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं और फिर भला उन्हें सूर्य पुत्र धर्मराज का भी डर कहां रह जाता है जो गुरु रामदास जी के चरणों में अपना ध्यान लगाए रहते हैं ।। ३ ।। गुरु रामदास एक ऐसा सरोवर है जिसमें प्रभु नाम का अमृत भरा है और अमृत बेला में उसी में से शब्द की लहरें उठती रहती हैं। यह बहुत गहरा, गम्भीर अथाह और सब प्रकार के रत्नों का खजाना बना हुआ सदैव ऊपर तक भरा रहता है। इस सरोवर में सन्त रूपी हंस रमण करते रहते हैं क्योंकि उनको यम का डर नहीं होता तथा उनके दुखों का लेखा-जोखा समाप्त हो चुका होता है। कलियुग के पापों को दूर करने के लिए सच्चे गुरु का दर्शन सभी सुखों का समुद्र है ।। ४ ।। सारे युगों में भटकते हुए कोई मुनि जैसे प्रभु का ध्यान करता रहता है परन्तु उसे भी कभी-कभार ही आत्मा को प्रकाशित करने वाला प्रभु प्राप्त होता है। जिस प्रभु का यश गायन ब्रह्मा, वेद-वाणी के माध्यम से करता है और शिव मुनि जिसके लिए कैलाश पर्वत नहीं छोड़ता, जिसके लिए अनेकों योगी, यति, सिद्ध और साधक तपस्या करते हैं और जटाओं को धारण करते हुए उदासीन होकर भटकते रहते हैं उस सच्चे गुरु ने स्वाभाविक रूप से ही कृपा की है और गुरु रामदास को प्रभु-नाम का बड़प्पन प्रदान किया ।। ५ ।। गुरु रामदास के पास नाम रूपी खजाना है, अन्तर्मन में वे सदैव ध्यान लगाए रहते हैं और उनका तेज-पुंज तीनों लोकों को प्रकाशित कर रहा है। आपका दर्शन करके लोगों का भ्रम और इधर-उधर भटकने का स्वभाव भाग खड़ा होता है। उनके दुख दूर हो जाते हैं और आध्यात्मिक स्थिरता का सुख उनमें और अधिक प्रफुल्लित हो जाता है। जिस प्रकार भँवरे फूलों की सुगन्धि के चारों ओर घूमते रहते हैं इसी प्रकार सेवकगण सदैव गुरु रामदास जी के प्रेमी बने रहते हैं। गुरु अमरदास जी ने प्रत्यक्ष रूप से स्वयं गुरु रामदास जी का सच्चा सिंहासन स्थित किया है

॥ ६ ॥ तार्यउ संसारु माया मद मोहित अंम्रित नामु दीअउ समरथु ॥ फुनि कीरतिवंत सदा सुख संपति रिधि अरु सिधि न छोडइ सथु ॥ दानि बडौ अतिवंतु महाबलि सेवकि दासि कहिओ इहु तथु ॥ ताहि कहा परवाह काहू की जा कै बसीसि धरिओ गुरि हथु ॥ ७ ॥ ४९ ॥ तीनि भवन भरपूरि रहिओ सोई ॥ अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥ आपुन आपु आप ही उपायउ ॥ सुरि नर असुर अंतु नही पायउ ॥ पायउ नही अंतु सुरे असुरह नर गण गंध्रब खोजंत फिरे ॥ अबिनासी अचलु अजोनी संभउ पुरखोतमु अपार परे ॥ करण कारण समरथु सदा सोई सरब जीअ मनि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ १ ॥ सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ ॥ अंगदि अनंत मूरति निज धारी अगम ग्यानि रसि रस्यउ हीअउ ॥ गुरि अमरदासि करतारु कीअउ वसि वाहु वाहु करि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ २ ॥ नारदु ध्रू प्रहलादु सुदामा पुब भगत हरि के जु गणं ॥ अंबरीकु जयदेव त्रिलोचनु नामा अवरु कबीरु भणं ॥ तिन कौ अवतारु भयउ कलि भिंतरि जसु जगत्र परि छाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ ३ ॥ मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं ॥ बाचा करि सिमरंत तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं ॥ करम करि तुअ दरस परस सर बल्य भट जसु गाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ ४ ॥ जिह सतिगुर सिमरंत नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥ सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥ जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥ ५ ॥ ५४ ॥ जिनि सबदु कमाइ परम पदु पाइओ सेवा करत न छोडिओ पासु ॥ ता ते गउहरु

।। ६ ।। गुरु रामदास जी ने माया और अहंकार में मोहित संसार को समर्थ अमृत रूपी प्रभु-नाम देकर पार उतार दिया है। आपके पास सदा बना रहने वाला सुख, धन और शोभा है तथा सब प्रकार की सफलताएँ आपका साथ नहीं छोड़ती। आप दान देने में अत्यन्त महाबली हैं और मथुरादास ने यह कहकर सच ही कहा है कि जिसके सिर पर गुरु रामदास का हाथ है उसे भला किसी की भी क्या परवाह है ।। ७ ।। ४६ ।। तीनों लोकों में वह प्रभु व्याप्त है और उसने अपने जैसा संसार में कोई भी पैदा नहीं किया। अपने आपको उसने अपने आपसे ही पैदा किया है और उसके रहस्य को देवता, मानव, असुर भी नहीं जान सके हैं। सुर-असुर उसको नहीं जान सके तथा मनुष्य, गण-गन्धर्व आदि भी उसे खोजते हुए भटकते रहे हैं। वह पुरुषोत्तम, अमरम्पर प्रभु अविनाशी, अचल, अयोनि और स्वयंभू है अर्थात स्वयं प्रकाशित है। करने-कराने में समर्थ और सदा बने रहने वाले उस प्रभु का सभी जीव मन में सुमिरन करते हैं। हे गुरु रामदास, इस संसार में तेरी जय-जयकार होती है और तूने ही प्रभु जैसा परम पद प्राप्त किया है ।। १ ।। गुरु नानक देव ने एकाग्र मन से भक्ति की और अपना तन, मन और धन प्रभु को दे दिया। गुरु अंगद ने उस अनन्त स्वरूप वाले प्रभु को अपने अन्दर धारण किया और उस प्रभु के अगम्य ज्ञान के कारण आपका हृदय प्रेम रस में पूरी तरह भीग गया। गुरु अमरदास ने उस कर्ता प्रभु को भक्त रूप होकर अपने वश में कर लिया और उसे धन्य-धन्य कहकर उसकी आराधना की। हे गुरु रामदास, इस संसार में तेरी जय-जयकार होती है और तूने ही प्रभु जैसा परम पद प्राप्त किया है ।। २ ।। नारद, ध्रुव, प्रहलाद और सुदामा प्रभु के पहले भक्तों में गिने जाते हैं। अम्बरीष, जयदेव, त्रिलोचन, नामदेव, कबीर आदि अन्यों को भी भक्त कहा जाता है जिनका अवतार कलियुग में हुआ और उनका यश सारे संसार में फैल गया। हे गुरु रामदास, इस संसार में तेरी जय-जयकार होती है और तूने ही प्रभु जैसा परम पद प्राप्त किया है ।। ३ ।। जो मन से तेरा सुमिरन करते हैं उन व्यक्तियों का काम, क्रोध मिट जाता है। जो वचनों से तेरा सुमिरन करते हैं क्षण भर में उनका दुख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है। आचरण के माध्यम से जो तेरा दर्शन करते हैं, बल्ह भट्ट तेरा यश गाते हुए कहता है कि वे स्वयं पारस के समान हो जाते हैं। हे गुरु रामदास, इस संसार में तेरी जय-जयकार होती है और तूने ही इस संसार में प्रभु जैसा परम पद प्राप्त किया है ।। ४ ।। जिस सच्चे गुरु का सुमिरन करने से आँखों का अंधेरा (अज्ञान) क्षण भर में दूर हो जाता है, जिस सच्चे गुरु के सुमिरन से दिन-प्रतिदिन प्रभु-नाम का हृदय में निवास होता है, जिस सच्चे गुरु के सुमिरन से सभी प्रकार की सफलताएँ और नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं बल्ह भट्ट का कथन है कि हे संगत में एकत्र जीवो, सभी मिलकर उसी सच्चे गुरु रामदास को धन्य-धन्य कहो। जिसकी संगत में प्रभु को पा लिया जाता है ऐसे सच्चे गुरु का हे लोगो, तुम सुमिरन करते रहो ।। ५ ।। ५४ ।। जिस गुरु रामदास ने शब्द के अनुरूप आचरण बनाकर परमपद को प्राप्त किया और सेवा करते हुए कभी भी साथ नहीं छोड़ा उसी गुरु से हृदय में धारण करता हूँ और प्रेम पूर्वक गुरु अरजन के गुणों का सहज स्वाभाविक रूप में विचार करता हूँ। गुरु रामदास के घर में

ग्यान प्रगटु उजीआरउ दुख दरिद्र अंध्यार को नासु ॥ कवि कीरत जो संत चरन मुड़ि लागहि तिन्ह काम क्रोध जम को नही त्रासु ॥ जिव अंगदु अंगि संगि नानक गुर तिव गुर अमरदास कै गुरु रामदासु ॥ १ ॥ जिनि सतिगुरु सेवि पदारथु पायउ निसि बासुर हरि चरन निवासु ॥ ता ते संगति सघन भाइ भउ मानहि तुम मलीआगर प्रगट सुबासु ॥ ध्रू प्रहलाद कबीर तिलोचन नामु लैत उपज्यो जु प्रगासु ॥ जिह पिखत अति होइ रहसु मनि सोई संत सहारु गुरू रामदासु ॥ २ ॥ नानकि नामु निरंजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई ॥ ता ते अंगदु अंग संगि भयो साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई ॥ गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई ॥ सोढी स्रिस्टि सकल तारण कउ अब गुर रामदास कउ मिली बडाई ॥ ३ ॥ हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अंम्रितु छाडि बिखै बिखु खाई ॥ माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥ इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ॥ इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥ ४ ॥ ५८ ॥ मोहु मलि बिवसि कीअउ कामु गहि केस पछाड़्यउ ॥ क्रोधु खंडि परचंडि लोभु अपमान सिउ झाड़्यउ ॥ जनमु कालु कर जोड़ि हुकमु जो होइ सु मंनै ॥ भव सागरु बंधिअउ सिख तारे सुप्रसंनै ॥ सिरि आतपतु सचौ तखतु जोग भोग संजुतु बलि ॥ गुर रामदास सचु सल्य भणि तू अटलु राजि अभगु दलि ॥ १ ॥ तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥ सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥ आदि जुगादि अनादि कला धारी त्रिहु लोअह ॥ अगम निगम उधरण जरा जंमिहि आरोअह ॥ गुर अमरदासि थिरु थपिअउ परगामी तारण तरण ॥ अघ अंतक बदे न सल्य कवि गुर रामदास तेरी सरण ॥ २ ॥ ६० ॥

सवईए महले पंजवे के ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरं सोई पुरखु अचलु अबिनासी ॥ जिसु सिमरत दुरमति मलु नासी ॥ सतिगुर चरण कवल

ज्ञान का उज्जवल प्रकाश प्रकट हुआ और दुख और दरिद्रता के अंधकार का नाश हो गया है। हे कीरत कवि, जो उस शान्त गुरु रामदास के चरणों में आ लगते हैं उन्हें काम, क्रोध और यमदूतों का डर नहीं रहता। जिस प्रकार गुरु अंगद सदैव गुरु नानक के अंग-संग बने रहे उसी प्रकार गुरु रामदास गुरु अमरदास जी के साथ बने रहे हैं ।। १ ।। जिस गुरु रामदास ने सच्चे गुरु की सेवा करके प्रभु-नाम रूपी पदार्थ प्राप्त किया और अब आठों प्रहर जिसका प्रभु चरणों में निवास बना रहता है उस गुरु रामदास से संगतों के अनन्त जीव प्रेम में मस्त होकर उनके भय अर्थात अनुशासन को मानते हैं और कहते हैं कि हे गुरु रामदास, आप प्रत्यक्ष तौर पर मलय पर्वत के चन्दन की सुगन्धि के समान हो। प्रभु-नाम का सुमिरन करके ध्रुव, प्रहलाद, कबीर और त्रिलोचन के हृदय में जो प्रकाश दिखाई दिया और जिसे देखकर मन अत्यन्त प्रसन्न होता है, सन्तजनों का आसरा वही गुरु रामदास ही है ।। २ ।। गुरु नानक ने निरंजन प्रभु के नाम को पहचान कर प्रेम में लौ लगाकर प्रभु की भक्ति की। उनसे आगे समुद्र रूप गुरु अंगद देव सदैव उनके अंग संग बने रहे और उन्होंने शब्द और सुरति के मेल की वर्षा ही कर दी थी। गुरु अमरदास की कथा तो अकथनीय है; मेरी जीभ एक है इसलिए इसके माध्यम से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। सारे संसार को पार उतारने के लिए अब वह बड़प्पन गुरु रामदास को प्राप्त हुआ है ।। ३ ।। हम अमृत को छोड़कर विष ही विष खाए जा रहे हैं। माया और मोह के भ्रमों में पड़कर हम भूले हूए हैं और पुत्र तथा स्त्री में ही अपनी प्रीति को लगाए हुए हैं। गुरु की संगत नामक एक उत्तम पंथ हमने सुना था और उसे मिलकर हमारा यमों का भय मिट गया है अर्थात हम निर्भय हो गए हैं। हे गुरु रामदास, इस कीरत भट्ट की एक अरदास है कि हमें अपनी शरण मे बनाए रखो ।। ४ ।। ५८ ।। हे गुरु रामदास, आपने मोह का दलन करके उसे बेबस कर दिया और काम को उसके केशों से पकड़कर पछाड़ दिया है। क्रोध को तुमने अपने प्रचंड तेज से टुकड़े-टुकड़े कर दिया है और लोभ को अपमानित करके उसे दुत्कार दिया है। जीवन और मरण हाथ जोड़कर आपके हुकुम को मानते हैं और आपने संसार रूपी समुद्र को बाँध लिया है और सदैव प्रसन्न बने रहकर तुमने अपने जिज्ञासुओं (सिक्खों) को पार उतार लिया है। आपके सिर पर छत्र है, आपका तख्त (सिंहासन) सदैव स्थिर बना रहने वाला है और हे बलशाली, तुम राज और योग दोनों का आनन्द लेने वाले हो। हे सल्ह, तू सच-सच कह दे कि हे गुरु रामदास, तेरा राज अटल बना रहने वाला है और तेरे पास कभी भी नष्ट ना होने वाली फौज है ।। १ ।। चारों युगों में स्थिर बना रहने वाला तू सच्चा गुरु परमेश्वर है। देवता, मनुष्य, साधक, सिद्ध और सिक्ख आरम्भ से ही तेरा सुमिरन करते रहे हैं। तुम आदि, युगादि और अनादि हो और तीनों लोकों में तुम्हारी ही सत्ता विद्यमान है। आगमों और निगमों अर्थात वेद-वेदांगों को बचाने वाले मेरे लिए तो तुम ही हो और जन्म-मरण पर तुम ही सवार बने रहते हो अर्थात तुम्हें इनका कोई भय नहीं है। गुरु अमरदास ने आपको अटल कर दिया है और स्वयं मुक्त होकर अन्यों को पार उतारने वाले जहाज तुम ही हो। सल्ह कवि का कथन है कि हे गुरु रामदास, जो तेरी शरण में आ गया है वह पापों का अन्त करने वाला बन जाता है ।। २ ।। ६० ।।

सवैये महले पाँचवे के ५   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

मैं उस अचल और अविनाशी प्रभु का सुमिरन करता हूँ जिसका सुमिरन करने से दुर्मति की मैल दूर हो जाती है। मैं सच्चे गुरु के चरण कमलों को

रिदि धारं ॥ गुर अरजुन गुण सहजि बिचारं ॥ गुर रामदास घरि कीअउ प्रगासा ॥ सगल मनोरथ पूरी आसा ॥ तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ ॥ कल्य जोड़ि कर सुजसु वखाणिओ ॥ भगति जोग कौ जैतवारु हरि जनकु उपायउ ॥ सबदु गुरू परकासिओ हरि रसन बसायउ ॥ गुर नानक अंगद अमर लागि उतम पदु पायउ ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ ॥ १ ॥ बडभागी उनमानिअउ रिदि सबदु बसायउ ॥ मनु माणकु संतोखिअउ गुरि नामु द्रिढ़ायउ ॥ अगमु अगोचरु पारब्रहमु सतिगुरि दरसायउ ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अनभउ ठहरायउ ॥ २ ॥ जनक राजु बरताइआ सतजुगु आलीणा ॥ गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु पतीणा ॥ गुरु नानकु सचु नीव साजि सतिगुर संगि लीणा ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अपरंपरु बीणा ॥ ३ ॥ खेलु गूढ़उ कीअउ हरि राइ संतोखि समाचर्यिओ बिमल बुधि सतिगुरि समाणउ ॥ आजोनी संभविअउ सुजसु कल्य कवीअणि बखाणिअउ ॥ गुरि नानकि अंगदु वर्यउ गुरि अंगदि अमर निधानु ॥ गुरि रामदास अरजुनु वर्यउ पारसु परसु प्रमाणु ॥ ४ ॥ सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी संभउ ॥ भय भंजनु पर दुख निवारु अपारु अनंभउ ॥ अगह गहणु भ्रमु भ्रांति दहणु सीतलु सुख दातउ ॥ आसंभउ उदविअउ पुरखु पूरन बिधातउ ॥ नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइअउ ॥ धनु धंनु गुरू रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइअउ ॥ ५ ॥ जै जै कारु जासु जग अंदरि मंदरि भागु जुगति सिव रहता ॥ गुरु पूरा पायउ बड भागी लिव लागी मेदनि भरु सहता ॥ भय भंजनु पर पीर निवारनु कल्य सहारु तोहि जसु बकता ॥ कुलि सोढी गुर रामदास तनु धरम धुजा अरजुनु हरि भगता ॥ ६ ॥ ध्रंम धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु ॥ सबद सारु हरि सम उदारु अहंमेव निवारणु ॥ महा दानि सतिगुर गिआनि मनि चाउ न हुटै ॥ सतिवंतु हरि नामु मंत्रु नव निधि न निखुटै ॥ गुर रामदास तनु सरब मै सहजि चंदोआ ताणिअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै राज जोग रसु

हृदय में धारण करता हूँ और प्रेम पूर्वक गुरु अरजन के गुणों का सहज स्वाभाविक रूप में विचार करता हूँ। गुरु रामदास के घर में तूने जन्म लिया है और सभी उद्देश्यों और आशाओं को पूरा कर दिया है। जन्म से ही आपने गुरु की मति (गुरमति) और प्रभु को पहचान लिया है। कवि कल्ह हाथ जोड़कर तेरे यश का बखान करता है। तू भक्त है, योग को जीतने वाला है और प्रभु ने आपको जनक रूप में पैदा किया है। तुमने ही शब्द-गुरु को प्रकट किया है और प्रभु को अपनी जीभ पर बसाए रखा है। गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास के चरणों में लगाकर तुमने उत्तम पदवी प्राप्त की है। गुरु रामदास जी के घर में गुरु अरजन देव भक्त रूप में पैदा हो गया है ।। १ ।। शब्द को हृदय में बसा कर गुरु अरजन बड़े भाग्य वाला और पूरी तरह खिला रहने वाला है। इसने अपने माणिक रूपी मन में सन्तोष धारण किया है और गुरु रामदास जी ने तुम्हें प्रभु-नाम का सुमिरन करवाया है। सच्चे-गुरु ने तुम्हें अगम्य, अगोचर, परब्रह्म का दर्शन करवा दिया है। गुरु रामदास जी के घर में परमात्मा ने गुरु अरजन जी को ज्ञान के अनुभव के रूप में स्थापित किया है ।। २ ।। जनक के राज्य की तरह गुरु अरजन ने ज्ञान का राज्य स्थापित कर दिया है और अब तो चारों ओर सतयुग ही समाया हुआ है। कभी भी सन्तुष्ट ना होने वाला मन अब शब्द-गुरु के माध्यम से सन्तुष्ट हो गया है। वह सच्चा गुरु नानक सत्य की नींव को स्थापित करके गुरु अरजन देव में लीन हो गया है। गुरु रामदास के घर में गुरु अरजन देव अपरम्पर रूप में विद्यमान बना हुआ है ।। ३ ।। परमात्मा ने यह आश्चर्यजनक खेल बनाया है कि सच्चा गुरु अपनी विमल बुद्धि के साथ सन्तोष में विचरण कर रहा है। कल्ह आदि कविगणों ने आपके प्रति सुन्दर रूप से आपके सुन्दर यश का उच्चारण किया है और बताया है कि आप योनियों से रहित स्वतः प्रकाशित हो। गुरु नानक ने गुरु अंगद पर कृपा की वर्षा की और गुरु अंगद देव जी ने अपना सारा खजाना गुरु अमरदास जी को दे दिया। गुरु रामदास जी ने गुरु अरजन पर प्रेम की वर्षा की और उनके स्पर्श से गुरु अरजन पारस के स्पर्श जैसा हो गया है ।। ४ ।। अयोनि, स्वयंभू और अमूल्य गुरु अरजन आध्यात्मिक तौर पर चिरंजीव बना रहने वाला है। यह भय भंजन, परदुख निवारण, अनन्त और ज्ञान स्वरूप है। उस अगम्य को पकड़ लेने की शक्ति गुरु अरजन में है और यह शीतल सुखदाता भ्रमों और भ्रान्तियों को दूर कर देने वाला है। उत्पत्ति से परे यह पूर्ण सर्वव्यापक विधाता गुरु रूप में प्रकट हुआ है। गुरु नानक, गुरु अंगद और गुरु अमरदास जी की कृपा से गुरु अरजन देव सच्चे गुरु शब्द में लीन है। गुरु रामदास जी धन्य हैं जिसने गुरु अरजन देव को स्पर्श करके पारस बना कर अपने जैसा कर लिया है ।। ५ ।। जिस गुरु की महिमा और जय-जयकार इस संसार में हो रही है, जो भाग्यशाली है और जो युक्तिपूर्वक प्रभु के साथ जुड़ा रहता है, बड़े भाग्य से जिसने पूर्ण गुरु को प्राप्त कर लिया है और जिसकी लौ प्रभु में लगी रहती है तथा जो धरती के बोझ को सहन कर रहा है वही गुरु अरजन देव भय दूर करने वाला, परपीड़ा का निवारण करने वाला है और कवि कलसहार तेरे ही यश का बखान कर रहा है। गुरु अरजन, गुरु रामदास का पुत्र सोढ़ी वंश में धर्म के ध्वज को फहराने वाला प्रभु का भक्त है ।। ६ ।। गुरु अरजन देव जी ने धैर्य को अपना धर्म बनाया है, यह गुरमति में गम्भीर है और पराए दुख को दूर करने वाला है। यही शब्द का सारतत्व रूप है ; यही प्रभु जैसा उदारचित्त है तथा अहंकार का निवारण करने वाला है। सच्चे गुरु के ज्ञान वाला यह महादानी है और इसके मन से उत्साह कभी भी कम नहीं होता। यह सत्यशील है और प्रभु-नाम रूपी मन्त्र का नवनिधियों जैसा खजाना इसके पास कभी भी समाप्त नहीं होता। गुरु रामदास का सुपुत्र सर्वव्यापक है और इसने सहज स्वभाव का शामियाना अपने ऊपर धारण किया हुआ है। कल्ह कवि कहता है कि हे गुरु अरजन देव, तूने राज और योग के रहस्य को

जाणिअउ ॥ ७ ॥ भै निरभउ माणिअउ लाख महि अलखु लखायउ ॥ अगमु अगोचर गति गभीरु सतिगुरि परचायउ ॥ गुर परचै परवाणु राज महि जोगु कमायउ ॥ धंनि धंनि गुरु धंनि अभर सर सुभर भरायउ ॥ गुर गम प्रमाणि अजरु जरिओ सरि संतोख समाइयउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै सहजि जोगु निजु पाइयउ ॥ ८ ॥ अमित रसना बदनि बर दाति अलख अपार गुर सूर सबदि हउमै निवार्यउ ॥ पंचाहरु निदलिअउ सुंन सहजि निज घरि सहार्यउ ॥ हरि नामि लागि जग उधर्यउ सतिगुरु रिदै बसाइअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै जनकह कलसु दीपाइअउ ॥ ९ ॥ सोरठे ॥ गुरु अरजुनु पुरखु प्रमाणु पारथउ चालै नही ॥ नेजा नाम नीसाणु सतिगुर सबदि सवारिअउ ॥ १ ॥ भवजलु साइरु सेतु नामु हरी का बोहिथा ॥ तुअ सतिगुर सं हेतु नामि लागि जगु उधर्यउ ॥ २ ॥ जगत उधारणु नामु सतिगुर तुठै पाइअउ ॥ अब नाहि अवर सरि कामु बारंतरि पूरी पड़ी ॥ ३ ॥ १२ ॥ जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥ ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥ अंगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ ॥ अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ ॥ गुर रामदास दरसनु परसि कहि मथुरा अंम्रित बयण ॥ मूरति पंच प्रमाण पुरखु गुरु अरजुनु पिखहु नयण ॥ १ ॥ सति रूपु सति नामु सतु संतोखु धरिओ उरि ॥ आदि पुरखि परतखि लिख्यउ अछरु मसतकि धुरि ॥ प्रगट जोति जगमगै तेजु भूअ मंडलि छायउ ॥ पारसु परसि परसु परसि गुरि गुरू कहायउ ॥ भनि मथुरा मूरति सदा थिरु लाइ चितु सनमुख रहहु ॥ कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल स्रिस्टि लगि बितरहु ॥ २ ॥ तिह जन जाचहु जगत्र पर जानीअतु बासुर रयनि बासु जा को हितु नाम सिउ ॥ परम अतीतु परमेसुर कै रंगि रंग्यौ बासना ते बाहरि पै देखीअतु धाम सिउ ॥ अपर परंपर पुरख सिउ प्रेमु लाग्यौ बिनु भगवंत रसु नाही अउरै काम सिउ ॥ मथुरा को प्रभु स्रब मय अरजुन गुरु भगति कै हेति पाइ रहिओ मिलि

जान लिया है ।। ७ ।। उस निर्भय प्रभु का आनन्द गुरु अरजन देव ने लिया है जो लाखों में अदृष्ट होकर रमण कर रहा है। गुरु रामदस जी ने उसे प्रभु का उपदेश दिया है जो अगम्य, अत्यन्त गम्भीर और अगोचर है। गुरु के उपदेश के माध्यम से सफल होकर तुमने राज में ही योगी जैसा आचरण किया है। हे गुरु अरजनदेव, तुम धन्य हो क्योंकि, तुमने खाली हृदयों को प्रभु-नाम रूपी अमृत से पूरी तरह भर दिया है। गुरु की पदवी को प्रामाणिक रूप से प्राप्त करके आपने ना सही जा सकने वाली अवस्था में स्थिरता बनाए रखी है और सन्तोष के सरोवर में आप लीन बने रहे हो। कवि कल्ह (कलसहार) कहता है कि हे गुरु अरजन देव, तूने स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के साथ मिलाप प्राप्त कर लिया है ।। ८ ।। हे अदृष्ट, अपार, शूरवीर गुरु, तुम अपनी जीभ से अमृत की वर्षा करते हो और मुँह से आर्शीवाद देते हुए शब्द के माध्यम से अहंकार का निवारण करते हो। पाँचो इन्द्रियों के अज्ञान को नाश करने वाले हे गुरु, तूने आध्यात्मिक समरसता के कारण उस स्थिर प्रभु को अपने हृदय में धारण किया हुआ है। हे गुरु अरजन, तूने प्रभु-नाम में जोड़कर संसार का उद्धार कर दिया है और सच्चे गुरु को हृदय में बसाया हुआ है। कल्ह कवि कहता है कि हे गुरु, तूने जनक अर्थात ज्ञान रूपी कलश को चमका कर रखा हुआ है ।। ९ ।। सोरठे ।। गुरु अरजन वह सर्वव्यापक प्रामाणिक पुरुष है जो पार्थ अर्जुन की तरह ही कभी भी घबराने वाले नहीं हैं। प्रभु-नाम रूपी चिन्ह तुम्हारा भला है और शब्द-गुरु ने तुम्हें सुन्दर बनाया हुआ है ।। १ ।। संसार समुद्र है, प्रभु का नाम पुल है और प्रभु ही जहाज है। सच्चे गुरु प्रभु के साथ तुम्हारा प्रेम है और प्रभु-नाम में लीन होकर आपने संसार को बचा लिया है ।। २ ।। सच्चे गुरु के प्रसन्न होने पर तुमने संसार को पार उतारने वाला प्रभु-नाम प्राप्त कर लिया है और अब हमें अन्य किसी से कुछ लेना-देना नहीं है क्योंकि गुरु अरजन देव के द्वार पर हमारा काम पूरा हो गया है ।। ३ ।। १२ ।। ज्योति स्वरूप प्रभु ने अपने आपको गुरु नानक कहलवाया, उसी गुरु नानक से गुरु अंगद प्रकट हुआ और गुरु नानक की ज्योति गुरु अंगद की ज्योति के साथ मिल गई। गुरु अंगद ने कृपा धारण करके अमरदास को सच्चे गुरु के रूप में स्थित किया और सदैव बना रहने वाला छत्र गुरु अमरदास ने गुरु रामदास को प्रदान किया। मथुरा भट्ट कहता है कि गुरु रामदास जी के दर्शन करके गुरु अरजन देव के वचन अमृत समान हो गए हैं। पाँचवें स्वरूप प्रामाणिक पुरुष गुरु अरजन देव को अपनी आँखों से देखो ।। १ ।। सत्य और सन्तोष तथा सच्चे नाम का सत्य स्वरूप गुरु अरजन देव ने अपने हृदय में धारण किया हुआ है। प्रभु ने प्रत्यक्ष रूप में प्रारम्भ से ही आपके माथे पर लेख लिख दिया है। प्रकट तौर पर प्रभु की ज्योति आपके हृदय में जगमगा रही है और सारे भू-मंडल में आपका तेज-प्रताप छाया हुआ है। पारस रूपी स्पर्श करने योग्य गुरु का स्पर्श करके आप गुरु के माध्यम से ही गुरु कहलवाए हैं। हे मथुरा, तू बता दे कि गुरु अरजन देव जी के स्वरूप में मन भली प्रकार से लीन होकर उनके सम्मुख बना रहे। हे लोगो, गुरु अरजन देव ही कलियुग में जहाज है, तुम सब उसके चरणों में लगकर संसार सागर से सही सलामत पार उतर जाओ ।। २ ।। हे लोगो, उस गुरु से माँगो जो सारे संसार में प्रकट रूप से जाना जाता है और दिन-रात जिसका प्रेम और निवास प्रभु-नाम के साथ ही है। वह पूर्ण वैराग्यवान है, परमेश्वर के प्रेम रंग में रंगा है, वासनाओं से परे है परन्तु वैसे उसे गृहस्थ जीवन में ही देखा जाता है। उसका प्रेम अनन्त प्रभु के साथ लगा हुआ है और

राम सिउ ॥ ३ ॥ अंतु न पावत देव सबै मुनि इंद्र महा सिव जोग करी ॥ फुनि बेद बिरंचि बिचारि रहिओ हरि जापु न छाड्यउ एक घरी ॥ मथुरा जन को प्रभु दीन दयालु है संगति स्रिस्टि निहालु करी ॥ रामदासि गुरू जग तारन कउ गुर जोति अरजुन माहि धरी ॥ ४ ॥ जग अउरु न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥ तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन्ह अंम्रित नामु पीअउ ॥ इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥ परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥ ५ ॥ जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥ कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहु मिटि है नही रे पछुतायउ ॥ ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥ जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥ ६ ॥ कलि समुद्र भए रूप प्रगटि हरि नाम उधारनु ॥ बसहि संत जिसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ॥ भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥ ७ ॥ १९ ॥ अजै गंग जलु अटलु सिख संगति सभ नावै ॥ नित पुराण बाचीअहि बेद ब्रहमा मुखि गावै ॥ अजै चवरु सिरि ढुलै नामु अंम्रितु मुखि लीअउ ॥ गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥ मिलि नानक अंगद अमर गुर गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥ हरिबंस जगति जसु संचर्यउ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ ॥ १ ॥ देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥ हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥ रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जंपहि ॥ असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि कंपहि ॥ काटे सु पाप तिन्ह नरहु के गुरु रामदासु जिन्ह पाइयउ ॥ छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ ॥ २ ॥ २१ ॥ ९ ॥ ११ ॥ १० ॥ १० ॥ २२ ॥ ६० ॥ १४३ ॥

प्रभु के बिना उसे अन्य किसी से कोई काम नहीं है। वह गुरु अरजन देव ही मथुरा भट्ट का सर्वव्यापक प्रभु है और वह भक्ति के लिए ही प्रभु में लीन बना हुआ है ।। ३ ।। इन्द्र और शिव ने महायोग साधना की, ब्रह्मा वेदों का विचार करके थक गया और उसने घड़ी भर के लिए भी प्रभु के जाप को नहीं छोड़ा परन्तु ये सभी देवता और मुनिजन गुरु अरजन देव के रहस्य को नहीं जान सके हैं। दास मथुरा का प्रभु गुरु अरजन दीनों पर दया करने वाला है और इसने सारी संगत और सृष्टि को निहाल कर दिया है। संसार को पार उतारने के लिए गुरु-ज्योति को गुरु रामदास जी ने गुरु अरजन देव के टिका दिया है ।। ४ ।। संसार के इतने घोर अंधकार में गुरु अरजन के बिना प्रकाश देने वाला अन्य कोई नहीं इसलिए उसे अवतरित करके प्रभु ने संसार को प्रकाशित किया है। हे मथुरा, जिन्होंने प्रभु के अमृत नाम का पान कर लिया है उनके करोड़ों पाप दूर हो गए हैं। हे मन, तू गुरु के बताए हुए मार्ग से मत भटकना और गुरु तथा परमात्मा में कोई भेद मत समझना। गुरु अरजन देव के हृदय में प्रत्यक्ष रूप से पूर्ण ब्रह्म ने अपना निवास बनाया है ।। ५ ।। जब तक माथे पर हमारा भाग्य उदित नहीं हुआ था तब तक हम भटकते हुए अनेकों प्रकार से घूम रहे थे। कलियुग के घोर समुद्र में हम डूबे हुए थे और कब ये समुद्र समाप्त होगा इसी बात की चिन्ता और पछतावा कभी भी समाप्त नहीं होता था। हे मथुरा, सारे विचार का सारतत्व यही है कि सारे संसार को पार उतारने के लिए गुरु अरजन देव ने अपना यह रूप बनाया है। जिसने गुरु अरजन देव का सुमिरन किया है वह फिर कभी गर्भ योनि के संकट में नहीं फँसा ।। ६ ।। कलियुग रूपी समुद्र में लोगों का उद्धार करने के लिए गुरु अरजन देव प्रभु-नाम का रूप होकर पैदा हुए हैं। यह दुखों, दरिद्रों का निवारण करने वाले हैं और शान्त-पुरुषों का निवास इनके हृदय में बना रहता है। वे प्रभु का ही निर्मल रूप हैं और प्रभु के बिना ये कोई दूसरे नहीं है। मन, वचन से जिसने प्रभु को जाना है वह उस प्रभु के समान ही हो जाता है। धरती, आकाश, नवखण्डों में यह प्रभु की ज्योति के रूप में ही भरपूर रूप से स्थित है और हे मथुरा, तू लोगों को बता दे कि गुरु अरजन देव और प्रत्यक्ष प्रभु में कोई भी अन्तर नहीं है ॥७॥१६॥ गुरु अरजन देव के सामने प्रभु के नाम रूपी गंगा का अटल जल बहता रहता है जिसमें सारी सिक्ख संगत स्नान करती है। गुरु के दरबार में जो प्रभु की वाणी, नाम और प्रभु के गुणानुवाद का अभ्यास होता है, पुराणों का पढ़ना और ब्रह्मा का मुख से वेदों का उच्चारण करना उसी में अन्तर्निहित बना रहता है। गुरु अरजन देव के सिर पर अजेयता का चँवर डुलाया जाता है और उसके मुख में प्रभु का अमृत नाम निवास करता है। स्वयं परमेश्वर ने यह छत्र गुरु अरजन के सिर पर धारण कराया है। गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास और गुरु रामदास सभी मिलकर प्रभु में लीन हुए हैं। भट्ट, हरिबंस कहता है कि गुरु अरजन के माध्यम से सारे संसार में उन सब का यश फैल रहा है इसलिए कौन कह सकता है कि उनमें से कोई भी गुरु मृत्यु को प्राप्त हुआ है। गुरु रामदास प्रभु की आज्ञा में प्रभु के लोक में ही पहुँचे हैं और प्रभु ने उन्हें सिंहासन देकर सम्मान पूर्वक उस पर बिठाया है। देवताओं आदि ने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की है और वे तेरी कीर्ति की जय-जयकार कर रहे हैं। असुर वृत्ति वाले लोग वहां से भाग खड़े हुए हैं और उनके हृदय के पाप काँपने लग गए हैं। वास्तव में जिन्होंने गुरु रामदास को प्राप्त कर लिया उन व्यक्तियों के सभी पाप कट गए हैं। गुरु रामदास ही पृथ्वी का छत्र और सिंहासन गुरु अरजन को दे आए हैं ॥२॥२१॥६॥११॥१०॥१०॥२२॥६०॥१४३॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सलोक वारां ते वधीक ॥ महला १ ॥

उतंगी पैओहरी गहिरी गंभीरी ॥ ससुड़ि सुहीआ किव करी निवणु न जाइ थणी ॥ गचु जि लगा गिड़वड़ी सखीए धउलहरी ॥ से भी ढहदे डिठु मै मुंध न गरबु थणी ॥ १ ॥ सुणि मुंधे हरणाखीए गूड़ा वैणु अपारु ॥ पहिला वसतु सिञाणि कै तां कीचै वापारु ॥ दोही दिचै दुरजना मित्रां कूं जैकारु ॥ जितु दोही सजण मिलनि लहु मुंधे वीचारु ॥ तनु मनु दीजै सजणा ऐसा हसणु सारु ॥ तिस सउ नेहु न कीचई जि दिसै चलणहारु ॥ नानक जिन्ही इव करि बुझिआ तिन्हा विटहु कुरबाणु ॥ २ ॥ जे तूं तारू पाणि ताहू पुछु तिड़ंन्ह कल ॥ ताहू खरे सुजाण वंञा एन्ही कपरी ॥ ३ ॥ झड़ झखड़ ओहाड़ लहरी वहनि लखेसरी ॥ सतिगुर सिउ आलाइ बेड़े डुबणि नाहि भउ ॥ ४ ॥ नानक दुनीआ कैसी होई ॥ सालकु मितु न रहिओ कोई ॥ भाई बंधी हेतु चुकाइआ ॥ दुनीआ कारणि दीनु गवाइआ ॥ ५ ॥ है है करि कै ओहि करेनि ॥ गल्हा पिटनि सिरु खोहेनि ॥ नाउ लैनि अरु करनि समाइ ॥ नानक तिन बलिहारै जाइ ॥ ६ ॥ रे मन डीगि न डोलीऐ सीधै मारगि धाउ ॥ पाछै बाघु डरावणो आगै अगनि तलाउ ॥ सहसै जीअरा परि रहिओ मा कउ अवरु न ढंगु ॥ नानक गुरमुखि छुटीऐ हरि प्रीतम सिउ संगु ॥ ७ ॥ बाघु मरै मनु मारीऐ जिसु सतिगुर दीखिआ होइ ॥ आपु पछाणै हरि

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनि सैभं गुर प्रसादि।।

श्लोक 'वारों' में से बचे हुए अर्थात वे श्लोक जो गुरु ग्रन्थ की कुल बाईस वारों में अंकित होने से बच रहे हैं ।। महला १ ।।

हे विशाल और बड़े वक्षस्थल वाल मदमस्त सखी, तू कुछ गम्भीरता को धारण कर अर्थात छोटे-बड़े की पहचान करते हुए उसे यथायोग्य सम्मान दे। मैं अपनी सास को प्रणाम कैसे करूं क्योंकि अपनी जवानी और इस वक्षस्थल के कारण मुझसे नीचे ही नहीं झुका जाता। हे सखी, पर्वतों जैसे ऊँचे और विधिपूर्वक बनाए हुए महलों को भी मैंने टूटते और गिरते हुए देखा है इसलिए तू अपने विशाल स्तनों (जवानी) का अहंकार मत कर ।। १ ।। हे हिरण की आँखों वाली सुन्दर स्त्री, मेरा यह कथन अपार रहस्य पूर्ण है - पहले वस्तु को अच्छी तरह पहचान कर तभी उसका व्यापार करना चाहिए। दुर्जनों की संगत को ना करने की दुहाई दे दो और वास्तविक मित्रों का जय-जयकार करते रहो। जिस पुकार लगाने से सज्जन व्यक्ति मिल जाएं हे मुग्धा जीव स्त्री, तू उन्हें विचार पूर्वक अपना ले। उन सज्जनों को तन मन दे दे क्योंकि इसे देने में ही श्रेष्ठ आनन्द है। ऐसी वस्तुओं से प्रेम मत लगाओ जो सदैव चलायमान रूप में दिखाई देती हैं। हे नानक, जिन्होंने इस रहस्य को समझ लिया है मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ ।। २ ।। यदि तू पानी का तैराक बनना चाहता है तो उनसे पूछ जिन्हें तैरने की कला आती है। वे ही वास्तव में सयाने हैं जो इन लहरो में से पार हो गए हैं ।। ३ ।। झंझावात, बाढ़ और लाखों लहरें बह रही हैं। तू सच्चे गुरु को पुकार लगा तुझे तेरे जीवन रूपी बेड़े के डूबने का भय नहीं रहेगा ।। ४ ।। हे नानक, यह दुनिया कैसी है जहाँ सीधा रास्ता दिखाने वाला कोई भी मित्र नहीं है। भाई, बन्धुओं के लिए प्रभु से सारा प्रेम तोड़ लिया और व्यक्ति ने इस दुनिया के लिए अपना धर्म (कर्तव्य-कर्म) भी गँवा दिया है ।। ५ ।। ऐसे व्यक्ति हाय-हाय करके रोते हुए अपने मुँह को पीटते हैं और सिर के वालों को नोचते हैं। यदि ये प्रभु का नाम लें और रोने-पीटने की बजाय शुभ कर्मो का अभ्यास करें तो नानक उन पर बलिहारी जाता है ।। ६ ।। हे मन, तू इधर-उधर भटक कर अस्थिर मत बन और जीवन के सीधे मार्ग पर चलता रह। यह संसार विचित्र है क्योंकि पीछे देखने पर यह डरावने बाघ के समान है और इसमें आगे बढ़ने पर यह तृष्णा रूपी अग्नि का तालाब है। मेरा जीव तो संशय में ही पड़ा हुआ है क्योंकि मुझे मुक्ति प्राप्त करने की अन्य कोई विधि नहीं आती। हे नानक, गुरमुख बनकर और प्रभु-प्रीतम के साथ बने रहकर ही विकारों के बन्धनों से मुक्त हुआ जाता है ।। ७ ।। जिसने सच्चे गुरु से उपदेश प्राप्त किया है वह मन को मारकर काबू कर लेता है और उसके लिए संसार रूपी भयानक बाघ मर जाता है। जो अपने आपको पहचान लेता है

मिलै बहुड़ि न मरणा होइ ॥ कीचड़ि हाथु न बूडई एका नदरि निहालि ॥ नानक गुरमुखि उबरे गुरु सरवरु सची पालि ॥ ८ ॥ अगनि मरै जलु लोड़ि लहु विणु गुर निधि जलु नाहि ॥ जनमि मरै भरमाईऐ जे लख करम कमाहि ॥ जमु जागाति न लगई जे चलै सतिगुर भाइ ॥ नानक निरमलु अमर पदु गुरु हरि मेलै मेलाइ ॥ ९ ॥ कलर केरी छपड़ी कऊआ मलि मलि नाइ ॥ मनु तनु मैला अवगुणी चिंजु भरी गंधी आइ ॥ सरवरु हंसि न जाणिआ काग कुपंखी संगि ॥ साकत सिउ ऐसी प्रीति है बूझहु गिआनी रंगि ॥ संत सभा जैकारु करि गुरमुखि करम कमाउ ॥ निरमलु न्हावणु नानका गुरु तीरथु दरीआउ ॥ १० ॥ जनमे का फलु किआ गणी जां हरि भगति न भाउ ॥ पैधा खाधा बादि है जां मनि दूजा भाउ ॥ वेखणु सुनणा झूठु है मुखि झूठा आलाउ ॥ नानक नामु सलाहि तू होरु हउमै आवउ जाउ ॥ ११ ॥ हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु ॥ १२ ॥ नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥ चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥ जिस नो लाए तिसु लगै लगी ता परवाणु ॥ पिरम पैकामु न निकलै लाइआ तिनि सुजाणि ॥ १३ ॥ भांडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ ॥ धातू पंजि रलाइ कूड़ा पाजिआ ॥ भांडा आणगु रासि जां तिसु भावसी ॥ परम जोति जागाइ वाजा वावसी ॥ १४ ॥ मनहु जि अंधे घूप कहिआ बिरदु न जाणनी ॥ मनि अंधै ऊंधै कवल दिसनि खरे करूप ॥ इकि कहि जाणनि कहिआ बुझनि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इकना नादु न बेदु न गीअ रसु रसु कसु न जाणंति ॥ इकना सिधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥ १५ ॥ सो ब्रहमणु जो बिंदे ब्रहमु ॥ जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥ सील संतोख का रखै धरमु ॥ बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥ सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥ १६ ॥ खत्री सो जु करमा का सूरु ॥ पुंन दान का करै सरीरु ॥ खेतु पछाणै बीजै दानु ॥ सो खत्री दरगह परवाणु ॥ लबु लोभु जे कूड़ु कमावै ॥ अपणा कीता आपे पावै ॥ १७ ॥ तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ सिरि पैरी

उसे प्रभु मिल जाता है और उसे फिर बार-बार नहीं मरना पड़ता। उस प्रभु की कृपा दृष्टि से व्यक्ति का मन रूपी हाथ संसार के विकार रूपी कीचड़ में नहीं डूबता। हे नानक, गुरमुख बने हुए लोग ही विकारों के कीचड़ में डूबने से बच जाते हैं और गुरु रूपी नाम के सरोवर मे गुरु ही वह सदैव स्थिर बने रहने वाली दीवार है जो व्यक्ति को कीचड़ में डूबने से बचाती है ।। ८ ।। तू प्रभु-नाम रूपी जल को ढूंढ़ ले जिससे तेरी तृष्णा रूपी अग्नि बुझ जाए परन्तु गुरु रूपी समुद्र के बिना यह जल प्राप्त नहीं होगा। बेशक लाखों कर्मकाण्ड करते रहें परन्तु जीव जन्म-मरण में भटकता रहता है। यदि सच्चे गुरु की रज़ा में चलें तो मौत रूपी टैक्स लेने वाला यम पास नहीं आता। हे नानक, अमर और निर्मल पदवी तभी मिलती है यदि प्रभु गुरु से मिला दे और गुरु फिर प्रभु से मिला दे ।। ६ ।। गन्दी तलैया में कौआ मल-मलकर नहाता है परन्तु उसका मन तन मैला होता है, वह अवगुणों से भरा रहता है और उसकी चोंच में गन्दगी बनी रहती है। इसी प्रकार कुसंगत में पड़ा हुआ व्यक्ति बेशक पवित्रता का कितना ही दिखावा कर ले उसका तन मन अवगुणों से ही भरा रहता है। मनमुख रूपी कौओं की कुसंगति में फँसकर हंस रूपी मनुष्य गुरु रूपी सरोवर को पहचान नहीं पाते। हे ज्ञानी पुरुष, तू प्रेम पूर्वक इस बात को समझ ले कि प्रभु से टूटे हुए लोगों के साथ प्रीति लगाने से ऐसा ही होता है। गुरमुख बनकर और सन्त सभा की जय-जयकार करते हुए कर्म करते रहना चाहिए और हे नानक, प्रभु रूपी दरिया के किनारे गुरु रूपी तीर्थ बना होता है जिसका स्नान निर्मल बना देता है ।। १० ।। यदि प्रभु की भक्ति और प्रेम मन में नहीं है तो इस जन्म लेने का फल किस गिनती में है। यदि मन में द्वैतभाव है तो पहनना, खाना सब व्यर्थ है। देखना, सुनना, झूठा हो जाता है और मुख से बोलना भी झूठा ही हो जाता है। हे नानक, अन्य लोग तो अहंकारी बनकर आवागमन में पड़े रहते हैं परन्तु तू प्रभु-नाम का गुणानुवाद करता रह ।। ११ ।। हे भाई, प्रभु का गुणानुवाद करने वाले तो बिरले ही हैं बहुत अधिक नहीं हैं। सारा संसार तो दिखावे का काम करने वाला और घटिया बोल बोलने वाला ही है ।। १२ ।। हे नानक, हृदय में प्रेम की चोट खाया हुआ व्यक्ति तुरन्त अहंकार भाव के संदर्भ में मर जाता है और स्वार्थी जीवन का जोर उसमें नहीं बचता। हे भाई, जो प्रभु-प्रेम की चोट से इस प्रकार मर जाता है उसी की लगी हुई चोट वास्तव में प्रभु के द्वार पर स्वीकार होती है। परन्तु हे भाई, यह चोट उसी को लगती है जिसे वह लगाता है और वास्तव में वह लगाई हुई प्रेम की चोट ही स्वीकृत होती है। उस प्रियतम का प्रेम का तीर हृदय में से फिर नहीं निकलता क्योंकि यह उस सुजान प्रभु ने लगाया होता है ।। १३ ।। हे भाई, प्रभु द्वारा ही इस बनाए शरीर रूपी कच्चे बर्तन को धोकर कोई भी पवित्र नहीं कर सकता क्योंकि यह बना ही ऐसा है कि इसे विषय-विकारों का कीचड़ लगा ही रहता है। हे भाई, यदि परमात्मा की रज़ा होती है तो वह इस शरीर रूपी बर्तन को पवित्र कर देता है और गुरु, परम ज्योति को हृदय में जलाकर उस ज्योति का नाद हृदय में बजा देता है ।। १४ ।। जिनके मन पूर्ण रूप से अन्धे हैं वे अपने कहे हुए वचन का बिरद नहीं पालते अर्थात कही हुई बात को निभाते नहीं। मन अन्धा होने के कारण उनका हृदय रूपी कमल भी उलट चुका होता है और वे कुरूप बने हुए खड़े दिखाई देते हैं। जो व्यक्ति अपनी बात को कह सकते हैं और दूसरे की कही हुई बात के मर्म को बूझ सकते हैं वे व्यक्ति ही सुन्दर स्वरूप वाले कहे जाते हैं। कई लोगों को ना तो नाद की, ना वेद (ज्ञान) की, ना गायन के रस की समझ होती है और वे यह भी नहीं जानते कि रसदायक (भक्ष्य) क्या है और ना खाने योग्य (अभक्ष्य) क्या है। कई ऐसे भी होते हैं जिनके पास ना कोई सफलता होती है, ना बुद्धि होती है और ना ही कोई किसी प्रकार की कला होती है; वे अक्षर के रहस्य का ज्ञान भी नहीं रखते। हे नानक, इन सब गुणों से विहीन होते हुए भी जो व्यक्ति अहंकारी बने रहते हैं वे वास्तव में असल गधे हैं ।। १५ ।। ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म को जानता है और जप, तप करता हुआ संयम में बने रहने का कार्य करता है। वह शील और सन्तोष के कर्तव्य का पालन करता रहे तो बन्धनों को तोड़कर मुक्त हो जाता है ; वही ब्राह्मण पूजने योग्य है ।। १६ ।। कर्मों का शूरवीर ही क्षत्रिय है जो अपने शरीर को दान-पुण्य वाला बनाता है। वह योग्य खेत (पात्र) को पहचान कर उसमें दान का बीज बोता है और इस प्रकार का क्षत्रिय प्रभु के दरबार में परवान चढ़ता है। यदि कोई लोभ और झूठ का आचरण करता है तो अपने किए हुए का फल वह स्वयं ही पाता है ।। १७ ।। हे जीव, तू अपने शरीर को तन्दूर की तरह मत तपा और हड्डियों को ईंधन के तौर पर मत जला। सिर और पैरों ने

किआ फेड़िआ अंदरि पिरी सम्हालि ॥ १८ ॥ सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ ॥ नानक ते सोहागणी जिन्हा गुरमुखि परगटु होइ ॥ १९ ॥ जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ २० ॥ नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥ २१ ॥ गिआन हीणं अगिआन पूजा ॥ अंध वरतावा भाउ दूजा ॥ २२ ॥ गुर बिनु गिआनु धरम बिनु धिआनु ॥ सच बिनु साखी मूलो न बाकी ॥ २३ ॥ माणू घलै उठी चलै ॥ सादु नाही इवेही गलै ॥ २४ ॥ रामु झुरै दल मेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥ बंतर की सैना सेवीऐ मनि तनि जुझु अपारु ॥ सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥ नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥ २५ ॥ मन महि झूरै रामचंदु सीता लछमण जोगु ॥ हणवंतरु आराधिआ आइआ करि संजोगु ॥ भूला दैतु न समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥ नानक वेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥ २६ ॥ लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥ २७ ॥ महला ३ ॥ लाहौर सहरु अंम्रित सरु सिफती दा घरु ॥ २८ ॥ महला १ ॥ उदोसाहै किआ नीसानी तोटि न आवै अंनी ॥ उदोसीअ घरे ही वुठी कुड़िईं रंनी धंमी ॥ सती रंनी घरे सिआपा रोवनि कूड़ी कंमी ॥ जो लेवै सो देवै नाही खटे दंम सहंमी ॥ २९ ॥ पबर तूं हरीआवला कवला कंचन वंनि ॥ कै दोखड़ै सड़िओहि काली होईआ देहुरी नानक मै तनि भंगु ॥ जाणा पाणी ना लहां जै सेती मेरा संगु ॥ जितु डिठै तनु परफुड़ै चड़ै चवगणि वंनु ॥ ३० ॥ रजि न कोई जीविआ पहुचि न चलिआ कोइ ॥ गिआनी जीवै सदा सदा सुरती ही पति होइ ॥ सरफै सरफै सदा सदा एवै गई विहाइ ॥ नानक किस नो आखीऐ विणु पुछिआ ही लै जाइ ॥ ३१ ॥ दोसु न देअहु राइ नो मति चलै जां बुढा होवै ॥ गलां करे घणेरीआ तां अंन्हे पवणा खाती टोवै ॥ ३२ ॥ पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही ॥ नानक गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे मांहि समांही ॥ ३३ ॥

क्या बिगाड़ा है तू अपने अन्तर्मन में ही अपने प्रियतम को देख ले ।। १८ ।। सभी हृदयों में प्रभु का निवास है और प्रभु के बिना कोई भी हृदय नहीं हैं। हे नानक, वे ही वास्तविक सुहागिन हैं जिनके हृदय में प्रभु गुरु के माध्यम से प्रकट हो जाता है ।। १६ ।। हे भाई, यदि तुझे प्रेम के खेल खेलने का चाव है तो तू अपना सिर तली पर रखकर मेरी गली में आ और बिलकुल किसी की परवाह मत कर। इस मार्ग पर तभी पाँव रखा जाता है यदि सिर दे देने में जरा सी भी हिचकिचाहट ना की जाए ।। २० ।। हे भाई, धन सम्पदा वाले वणिक (बनिए) के साथ मित्रता झूठी ही होती है क्योंकि माया के लोभ में वह व्यक्ति कमजोर हो जाता है; झूठ के कारण उसकी मित्रता की नींव भी झूठी होती है। हे भाई मूला, ऐसे व्यक्ति को मरना तो बिल्कुल याद ही नहीं रहता और वह यह भी नहीं जानता कि मौत किसी भी स्थान पर आ सकती है ।। २१ ।। ज्ञान विहीन लोग अज्ञान की ही पूजा करते हैं और द्वैतभाव में पड़े हुए ऐसे लोगों का कार्य व्यवहार अन्धा ही होता है ।। २२ ।। गुरु के बिना ज्ञान सम्भव नहीं और धर्म के बिना ध्यान की एकाग्रता प्राप्त नहीं होती। इसी प्रकार सत्याचरण से विहीन शिक्षा का तो जरा सा भी असर बाकी नहीं बचता ।। २३ ।। इस बात में भी भला क्या मजा है कि व्यक्ति को जैसा यहां भेजा गया वह वैसे का वैसा ही बिना कुछ सँवारे हुए यहां से उठकर चल पड़ा है ।। २४ ।। रामचन्द्र सेना इकट्ठी करता है और उसके अन्तर्मन में अधिकार का चाव और बल भी है। वानरों की सेना उसकी सेवा करती है और उनके मन तन में भी जूझने की लालसा है परन्तु वह फिर भी दुखी बना हुआ है क्योंकि सीता को रावण ले जा चुका है और लक्ष्मण शाप के कारण मर चुका है ।। २५ ।। हे भाई, रामचन्द्र सीता और लक्ष्मण की खातिर मन में दुखी बना हुआ है क्योंकि होने वाले को मिटाया नहीं जा सकता। लक्ष्मण के मूर्छित होने पर उसने हनुमान का सुमिरन किया जोकि बड़े संयोगवश उनकी शरण में आया था। मूर्ख और भूला हुआ दैत्य रावण यह समझ ही नहीं सका कि यह सभी काम तो उस प्रभु ने खुद ही किए हैं। हे नानक, उस बेपरवाह प्रभु की कोई बराबरी नहीं कर सकता और पिछले कर्मों के फल को रामचन्द्र भी नहीं मिटा सके ।। २६ ।। हे भाई, लाहौर शहर में दिन के पहले सवा प्रहर में जीवन ज़हर के समान हो गया अर्थात यहां भोग-विलास के लिए मार-काट चलती रहती है (बाबर के लाहौर पर आक्रमण के समय जीवन छिन्न-भिन्न कर दिये जाने की ओर संकेत है) ।। २७ ।। महला ३ ।। तीसरे नानक गुरु अमरदास कहते हैं कि हे भाई, अब लाहौर में गुरु रामदास का निवास होने से वह अमृत का शान्त सरोवर बन गया है और प्रभु गुणानुवाद का घर बन गया है ।। २८ ।। महला १ ।। व्यक्ति का जीवन की भाग-दौड़ में साँस फूले रहने का यही उद्देश्य अथवा निशाना है कि अन्न-धन की कमी ना आने पाए परन्तु इस भाग दौड़ में व्यक्ति अपने तक ही केन्द्रित रहकर इन्द्रियों की झूठी धमाचौकड़ी में फँसा रहता है। आँख, कान, नाक, मुँह, काम आदि से सम्बन्धित सातों ही इन्द्रियां इस शरीर में चीख-पुकार लगाए रहती हैं और वे इन्द्रियां अपने-अपने विकारों की तृप्ति करने वाले झूठे कामों के लिए चीख-पुकार लगाए रहती हैं। इस प्रकार के कामों में लगा रहने वाला वास्तव में धन नहीं भय की कमाई ही करता है अर्थात सदैव डरता ही रहता है क्योंकि वह जो कुछ भी किसी से लेता है फिर उसे वापिस नहीं देता ।। २६ । हे सरोवर, तू कभी चारों ओर से हरा-भरा रहता था और तेरे अन्दर सोने के रंग वाले कमल के फूल खिले रहते थे। तुझे कौन सा दुख लगा है कि तू जल-भुन ही गया है; तेरा यह सुन्दर शरीर क्यों काला हो गया है। हे नानक, मेरे काले होने का कारण यह है कि मैं जिस जल स्रोत से जुड़ा था उस से टूट कर अलग हो गया हूँ। इस टूटने का कारण भी मैं जानता हूँ परन्तु फिर भी मैं उस जल स्रोत से नहीं जुड़ता जिसके साथ बने रहने और देखने से मेरा शरीर प्रफुल्लित बना रहता था और मेरी रंगत चार गुना अधिक सुन्दर बनी रहती थी ।। ३० ।। हे भाई, कोई भी बहुत लम्बी आयु भोगकर भी सन्तुष्ट नहीं हो सका है और कोई भी संसार से सभी कार्य समाप्त करके नहीं जा सका है। जो ज्ञानवान व्यक्ति प्रभु में सुरति लगाते हैं वे सदैव ही जीवित बने रहते हैं और प्रभु के दरबार में उन्हीं का सम्मान होता है। बहुत बचा-बचा कर रखने वाले का जीवन भी व्यर्थ ही व्यतीत हो जाता है और हे नानक, अब किसको कहा जाए वह प्रभु तो बिना पूछे ही यहां से ले जाता है ।। ३१ ।। हे भाई, धनवान बने व्यक्ति को भी दोष मत दो क्योंकि जैसे-जैसे वह वृद्धा होता जाता है तो उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती। वह बहुत बातें बनाने लग जाता है और उसे अन्धे व्यक्ति की तरह खड्डे में ही गिरना होता है ।। ३२ ।। उस पूर्ण प्रभु का किया हुआ सब कुछ पूर्ण ही होता है, उसमें कुछ भी घटता-बढ़ता नहीं है। हे नानक, जो उस पूर्ण में लीन हो जाता है उसी को गुरमुख के रूप में जाना जाता है ।। ३३ ।।

सलोक महला ३ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अभिआगत एह न आखीअहि जिन कै मन महि भरमु ॥ तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु ॥ १ ॥ अभै निरंजन परम पदु ता का भीखकु होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥ २ ॥ होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नवा खंडा विचि जाणीआ अपने चज वीचार ॥ ३ ॥ ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु ॥ फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥ पाहि एते जाहि वीसरि नानका इकु नामु ॥ सभ बुधी जालीअहि इकु रहै ततु गिआनु ॥ ४ ॥ माथै जो धुरि लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ नानक जो लिखिआ सो वरतदा सो बूझै जिस नो नदरि होइ ॥ ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ कूड़ै लालचि लगि ॥ धंधा माइआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ॥ जिन्हा वेलि न तूंबड़ी माइआ ठगे ठगि ॥ मनमुख बंन्हि चलाईअहि ना मिलही वगि सगि ॥ आपि भुलाए भुलीऐ आपे मेलि मिलाइ ॥ नानक गुरमुखि छुटीऐ जे चलै सतिगुर भाइ ॥ ६ ॥ सालाही सालाहणा भी सचा सालाहि ॥ नानक सचा एकु दरु बीभा परहरि आहि ॥ ७ ॥ नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा सोइ ॥ जह देखा तह एकु है गुरमुखि परगटु होइ ॥ ८ ॥ दूख विसारणु सबदु है जे मंनि वसाए कोइ ॥ गुर किरपा ते मनि वसै करम परापति होइ ॥ ९ ॥ नानक हउ हउ करते खपि मुए खूहणि लख असंख ॥ सतिगुर मिले सु उबरे साचै सबदि अलंख ॥ १० ॥ जिना सतिगुरु इक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइ ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख जाइ ॥ से जन निरमल ऊजले जि गुरमुखि नामि समाइ ॥ नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ नामि रते पातिसाह ॥ ११ ॥ जिउ पुरखै घरि भगती नारि है अति लोचै भगती भाइ ॥ बहु रस सालणे सवारदी खट रस मीठे पाइ ॥ तिउ बाणी भगत सलाहदे हरि नामै चितु लाइ ॥ मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ गुर आगै जाइ ॥ भै भगती

श्लोक महला ३ ੧ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

भिक्षुक अतिथि के तौर पर आए हुए अपने आपको मानने वाले व्यक्ति ऐसे व्यक्ति नहीं हो सकते जिनके मन में धन-सम्पति की चाहत के रूप में भटकन बनी ही हुई हो। ऐसे व्यक्तियों को दान देने से हे नानक, उनका पुण्य-लाभ भी वैसी ही भटकन पैदा करने वाला होगा ।। १ ।। परमपद रूपी अभय और निरंजन प्रभु का भिखारी बनने से हे नानक, उसका भोजन प्रभु-नाम ही बन जाता है जो किसी बिरले को ही प्राप्त होता है ।। २ ।। हे भाई, यदि मैं पंडित बनकर ज्योतिषी बन जाऊँ और चारों वेदों को भी अपने मुख से उच्चारण करता रहूँ तो भी इस नवखण्ड धरती पर मैं अपने चरित्र के कारण ही जाना जाऊँगा।। ३ ।। हे भाई, ब्रह्मवेत्ता की हत्या, गाय की हत्या, पुत्री की हत्या और दुराचारी का धन धिक्कार योग्य है और इस प्रकार के करोड़ों बुरे काम करने वाला सदैव आत्मिक रूप से कोढ़ी बनकर बाहर से अभिमानी बना रहता है। हे नानक, एक प्रभु का नाम भुला देने से व्यक्ति पर उतने ही अधिक पाप आ पड़ते हैं। व्यक्ति की सभी चतुराईयाँ जलकर नष्ट हो जाती हैं और केवल एक परमात्मा रूपी तत्व ज्ञान ही शेष बचता है ।। ४ ।। जो माथे पर प्रारम्भ से ही लिखा गया है उसे कोई नहीं मिटा सकता। हे नानक, जो लिखा हुआ है वही संसार में कार्यशील है; इस तथ्य को वही जान पाता है जिस पर प्रभु की कृपा दृष्टि होती है ।। ५ ।। जिन्होंने झूठे लालच में लगकर प्रभु-नाम को भुला दिया है उनके अन्दर तृष्णा की आग बनी रहती है और मोहिनी माया के लिए वे धन्धों में लगे रहते हैं। जिनके अन्तर्मन में ना तो भक्ति रूपी बेल है और ना ही ज्ञान रूपी फल है उन्हें माया रूपी ठग ने ठगा हुआ है। ऐसे मनमुख व्यक्तियों को बाँधकर ले जाया जाता है और ऐसे कुत्ते गायों के झुण्ड में मिल नहीं पाते अर्थात सदैव अलग ही बने हुए दिखाई देते हैं। वह प्रभु जब स्वयं ही भुलाता है और स्वयं ही मिलाता है तभी व्यक्ति उसे भूलता और उससे मिलता है। हे नानक, यदि सच्चे गुरु के प्रेम में लीन होकर चला जाए तो व्यक्ति गुरमुख बनकर मुक्त हो जाता है ।। ६ ।। गुणानुवाद के योग्य प्रभु की ही स्तुति करनी चाहिए क्योंकि हे नानक, उस एक प्रभु का ही द्वार सच्चा है तथा हमें अन्य सभी द्वार छोड़ देने चाहिए ।। ७ ।। हे नानक, मैं जिधर भी जाता हूँ उधर ही वह सच्चा प्रभु विद्यमान बना रहता है। जिधर देखता हूँ उधर एक ही दिखाई देता है और गुरमुख बने व्यक्ति के अन्तर्मन में ही वह प्रकट होता है ।। ८ ।। यदि कोई मन में बसा ले तो शब्द (ब्रह्म) ही सभी दुख दूर करने वाला है। यह गुरु की कृपा से ही मन में बसता है और अच्छे कर्मों से ही प्राप्त होता है ।। ६ ।। हे नानक, लाखों, करोड़ों असंख्य लोग मैं-मैं करते हुए ही मर-खप गए हैं। जो सच्चे गुरु से मिलकर शब्द की कृपा से प्रभु को प्राप्त हो गए हैं उन्हीं का ही उद्धार होता है ।। १० ।। जिन्होंने एक मन होकर सच्चे गुरु-प्रभु का सुमिरन किया है मैं ऐसे व्यक्तियों के चरणों को स्पर्श करता हूँ। शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु उनके मन में बस चुका होता है और उनकी माया की भूख समाप्त हो जाती है। वे सेवक ही निर्मल और उज्जवल होते हैं जो गुरमुख बनकर प्रभु-नाम में समाए रहते हैं। हे नानक, अन्य सभी बादशाहतें झूठी हैं और वास्तव में वे ही सम्राट हैं जो प्रभु-नाम में लीन बने रहते हैं ।। ११ ।। हे भाई, व्यक्ति के घर में पतिव्रता स्त्री अत्यन्त प्रेम पूर्वक पति की प्रतीक्षा करती रहती है। वह उसके लिए अनेकों रसों वाले स्वादिष्ट भोजन बनाती है। इसी प्रकार प्रभु-नाम में मन लगाकर अपनी वाणी से भक्तजन उस प्रभु का गुणानुवाद करते हैं क्योंकि उन्होंने भी मन, तन और धन को प्रभु के आगे रखा होता है और अपने गुरु को अपना शीश भेंट कर दिया होता है। भक्तजन सदा प्रभु का भय (अनुशासन) और भक्ति

भगत बहु लोचदे प्रभ लोचा पूरि मिलाइ ॥ हरि प्रभु वेपरवाहु है कितु खाधै तिपताइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हरि गुण गाइ ॥ धनु धनु कलजुगि नानका जि चले सतिगुर भाइ ॥ १२ ॥ सतिगुरू न सेविओ सबदु न रखिओ उर धारि ॥ धिगु तिना का जीविआ कितु आए संसारि ॥ गुरमती भउ मनि पवै तां हरि रसि लगै पिआरि ॥ नाउ मिलै धुरि लिखिआ जन नानक पारि उतारि ॥ १३ ॥ माइआ मोहि जगु भरमिआ घरु मुसै खबरि न होइ ॥ काम क्रोधि मनु हिरि लइआ मनमुख अंधा लोइ ॥ गिआन खड़ग पंच दूत संघारे गुरमति जागै सोइ ॥ नाम रतनु परगासिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ नामहीन नकटे फिरहि बिनु नावै बहि रोइ ॥ नानक जो धुरि करतै लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ १४ ॥ गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबदि वीचारि ॥ नामु पदारथु पाइआ अतुट भरे भंडार ॥ हरि गुण बाणी उचरहि अंतु न पारावारु ॥ नानक सभ कारण करता करै वेखै सिरजनहारु ॥ १५ ॥ गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥ तिथै ऊंघ न भुख है हरि अंम्रित नामु सुख वासु ॥ नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतम राम प्रगासु ॥ १६ ॥ काम क्रोध का चोलड़ा सभ गलि आए पाइ ॥ इकि उपजहि इकि बिनसि जांहि हुकमे आवै जाइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई रंगु लगा दूजै भाइ ॥ बंधनि बंधि भवाईअनु करणा कछू न जाइ ॥ १७ ॥ जिन कउ किरपा धारीअनु तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ सतिगुरि मिले उलटी भई मरि जीविआ सहजि सुभाइ ॥ नानक भगती रतिआ हरि हरि नामि समाइ ॥ १८ ॥ मनमुख चंचल मति है अंतरि बहुतु चतुराई ॥ कीता करतिआ बिरथा गइआ इकु तिलु थाइ न पाई ॥ पुंन दानु जो बीजदे सभ धरम राइ कै जाई ॥ बिनु सतिगुरू जमकालु न छोडई दूजै भाइ खुआई ॥ जोबनु जांदा नदरि न आवई जरु पहुचै मरि जाई ॥ पुतु कलतु मोहु हेतु है अंति बेली को न सखाई ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए नाउ वसै मनि आई ॥ नानक से वडे वडभागी जि गुरमुखि नामि समाई ॥ १९ ॥ मनमुख नामु न चेतनी बिनु नावै

ही माँगा करते हैं और प्रभु उनकी यह कामना पूरी करके उन्हें अपने से मिला लेता है। प्रभु बेपरवाह है परन्तु वह क्या खाने से सन्तुष्ट होता है। व्यक्ति यदि सच्चे गुरु की रज़ा में चले तो वह प्रभु गुणानुवाद से तृप्त बना रहता है। हे नानक, इस कलियुग में वे ही धन्य है जो सच्चे गुरु की रज़ा में चलते हैं ।। १२ ।। जिन्होंने सच्चे गुरु का सुमिरन नहीं किया और शब्द को भी हृदय में धारण नहीं किया है उनका जीवित रहना धिक्कार योग्य है और वे भला संसार में किस लिए आए हैं। गुरु की शिक्षा से मन में भय रूपी अनुशासन जब पैदा होता है तो प्रभु रूपी रस में प्रेम लग जाता है। हे नानक, प्रभु की ओर से प्रारम्भ से ही भाग्य लेख में लिखा होने से प्रभु-नाम प्राप्त होता है और प्रभु के सेवक इस प्रकार पार उतर जाते हैं ।। १३ ।। माया के मोह में संसार भ्रमों में पड़ा हुआ है और इसका घर लुटा जा रहा है परन्तु इसे पता ही नहीं चलता। मनमुख व्यक्ति इस संसार में अन्धा है और काम क्रोध ने इसके मन को चुराया हुआ है। जो ज्ञान के खड्ग से पाँचों विकारों के रूप बने हुए दुष्टों को मार देता है वही गुरु की शिक्षा पाकर सावधान बना रहता है। उसी के हृदय में नाम रूपी रत्न प्रकाशित हो उठता है और उसका मन तन निर्मल हो जाता है। प्रभु-नाम से विहीन तो कटी हुई नाक वाले बेइज्जत लोगों की तरह हैं जो प्रभु-नाम के बिना बैठे हुए रोते रहते हैं। हे नानक, उस कर्ता प्रभु ने जो प्रारम्भ से ही लिख दिया है उसे कोई भी मिटा नहीं सकता ।। १४ ।। शब्द-गुरु का चिंतन करके गुरमुख व्यक्ति प्रभु रूपी धन पैदा करते हैं। वे ही प्रभु-नाम रूपी पदार्थ को प्राप्त करते हैं जो भण्डारों को भर देता है और उसमें कभी भी कोई कमी नहीं आती। उसे प्राप्त करके व्यक्ति अपनी वाणी से उस प्रभु के गुणों का उच्चारण करता है जिसके ओर-छोर के रहस्य को कोई नहीं जान पाता। हे नानक, वह सृजनहार ही सब कुछ देखता है और वही कर्ता सभी कारणों का मूल कर्ता है ।। १५ ।। गुरमुख व्यक्ति के अन्तर्मन में शान्त अवस्था बनी रहती है और उसका मन दशम द्वार में पूर्ण रूप से स्थिर बना रहता है। वहां ना तो नींद है ना भूख है तथा वहां सुख में निवास देने वाला प्रभु का अमृत नाम स्थित होता है। हे नानक, जहां सर्वव्यापक प्रभु का प्रकाश होता है वहां दुख और सुख का प्रभाव नहीं होता ।। १६ ।। काम, क्रोध के वस्त्र पहनकर यहां सभी आए हैं; इनमें अनेकों पैदा हो रहे हैं, अनेकों का विनाश होता है तथा ये सभी प्रभु के हुकुम में ही आते जाते रहते हैं। जिनकी द्वैतभाव में प्रीति लग गई है उनका जन्म-मरण समाप्त नहीं होता। बन्धनों में बाँधकर उन्हें भटकाया जाता है और उनके लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता ।। १७ ।। जिन पर प्रभु ने कृपा की है उन्हें सच्चा गुरु आकर मिल जाता है। सच्चे गुरु के मिलाप से माया के प्रति जीव उलटकर मर जाता है और फिर सहज स्वाभाविक रूप में जीवन व्यतीत करने लग जाता है। हे नानक, भक्ति में लीन व्यक्ति ही प्रभु के नाम में समाया रहता है ।। १८ ।। मनमुख व्यक्ति की बुद्धि चंचल होती है और उसके अन्तर्मन में बहुत चतुराई भरी होती है। उसका सब किया कराया व्यर्थ जाता है और उसका एक तिल मात्र भी किया हुआ सफल नहीं होता। यह जो दान-पुण्य भी बोया जाता है इसके स्वार्थ और निःस्वार्थ होने की भावना का हिसाब धर्मराज के पास पहुँचता रहता है। सच्चे गुरु के बिना यम रूपी काल छोड़ता नहीं और व्यक्ति को द्वैतभाव में ख्वार करता रहता है। यौवन जाता हुआ तो नजर ही नहीं आता और बुढ़ापा आ पहुँचने पर व्यक्ति मर जाता है। पुत्र, स्त्री जो मोह का कारण बने रहते हैं इनमें से अंतिम समय में कोई भी मित्र और सखा नहीं बनता। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वे ही सुख प्राप्त करते हैं और उन्हीं के मन में प्रभु-नाम आ बसता है। हे नानक, वे बड़े भाग्यशाली हैं जो गुरमुख बनकर प्रभु-नाम में समा जाते हैं ।। १९ ।। मनमुख व्यक्ति प्रभु-नाम में लीन होकर सावधान नहीं बने रहते और प्रभु-नाम से विहीन होकर

दुख रोइ ॥ आतमा रामु न पूजनी दूजै किउ सुखु होइ ॥ हउमै अंतरि मैलु है सबदि न काढहि धोइ ॥ नानक बिनु नावै मैलिआ मुए जनमु पदारथु खोइ ॥ २० ॥ मनमुख बोले अंधुले तिसु महि अगनी का वासु ॥ बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु ॥ ओना आपणी अंदरि सुधि नही गुर बचनि न करहि विसासु ॥ गिआनीआ अंदरि गुर सबदु है नित हरि लिव सदा विगासु ॥ हरि गिआनीआ की रखदा हउ सद बलिहारी तासु ॥ गुरमुखि जो हरि सेवदे जन नानकु ता का दासु ॥ २१ ॥ माइआ भुइअंगमु सरपु है जगु घेरिआ बिखु माइ ॥ बिखु का मारणु हरि नामु है गुर गरुड़ सबदु मुखि पाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ मिलि सतिगुर निरमल होइआ बिखु हउमै गइआ बिलाइ ॥ गुरमुखा के मुख उजले हरि दरगह सोभा पाइ ॥ जन नानकु सदा कुरबाणु तिन जो चालहि सतिगुर भाइ ॥ २२ ॥ सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइ ॥ निरवैरै नालि वैरु रचाइदा अपणै घरि लूकी लाइ ॥ अंतरि क्रोधु अहंकारु है अनदिनु जलै सदा दुखु पाइ ॥ कूड़ु बोलि बोलि नित भउकदे बिखु खाधे दूजै भाइ ॥ बिखु माइआ कारणि भरमदे फिरि घरि घरि पति गवाइ ॥ बेसुआ केरे पूत जिउ पिता नामु तिसु जाइ ॥ हरि हरि नामु न चेतनी करतै आपि खुआइ ॥ हरि गुरमुखि किरपा धारीअनु जन विछुड़े आपि मिलाइ ॥ जन नानकु तिसु बलिहारणै जो सतिगुर लागे पाइ ॥ २३ ॥ नामि लगे से ऊबरे बिनु नावै जम पुरि जांहि ॥ नानक बिनु नावै सुखु नही आइ गए पछुताहि ॥ २४ ॥ चिंता धावत रहि गए तां मनि भइआ अनंदु ॥ गुर प्रसादी बुझीऐ सा धन सुती निचिंद ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन्हा भेटिआ गुर गोविंदु ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि पाइआ परमानंदु ॥ २५ ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ॥ सतिगुर का भाणा मंनि लैनि हरि नामु रखहि उर धारि ॥ ऐथै ओथै मंनीअनि हरि नामि लगे वापारि ॥ गुरमुखि सबदि सिञापदे तितु साचै दरबारि ॥ सचा सउदा खरचु सचु अंतरि पिरमु पिआरु ॥ जमकालु नेड़ि न

दुखों में रोते रहते हैं। वे सर्वव्यापक प्रभु तक नहीं पहुँच पाते और द्वैतभाव में पड़े हुओं को भला सुख कैसे प्राप्त होगा। उनके अन्तर्मन में अहंकार की मैल होती है जिसे वे शब्द के द्वारा धोकर बाहर नहीं निकालते। हे नानक, वे प्रभु-नाम से विहीन बनकर और मैले होकर जन्म रूपी अमूल्य वस्तु को खोकर मर जाते हैं ।। २० ।। मनमुख व्यक्ति बहरे और अन्धे होते हैं और उनके अन्दर तृष्णा रूपी अग्नि की ज्वाला बनी रहती है। सुरति के माध्यम से वे वाणी को नहीं समझते और शब्द द्वारा अपने अन्तर्मन को प्रकाशित नहीं करते। उन्हें अपने अन्दर की कोई भी होश नहीं होती और गुरु के उपदेश पर भी उनका विश्वास नहीं होता। ज्ञानी पुरुषों के अन्दर शब्द-गुरु का अनुभव उन्हें होता रहता है और वे सदैव प्रभु में लौ लगाकर खिले रहते हैं। प्रभु ही ज्ञानवानों के सम्मान की रक्षा करता है और मैं ऐसे ज्ञानवानों पर सदैव बलिहारी जाता हूँ। जो गुरमुख बनकर प्रभु का सुमिरन करते हैं नानक तो ऐसे प्रभु के सेवकों का दास है ।। २१ ।। माया एक ऐसा सर्प है जिसने अपने जहर में सारे संसार को लपेट रखा है। इस सर्प के विष को काटने वाला मन्त्र प्रभु का नाम ही है जो शब्द के रूप में मुख में डाला जाता है। जिनके भाग्य में प्रारम्भ से ही लिखा होता है उन्हें सच्चा गुरु आ मिलता है। व्यक्ति सच्चे गुरु से मिलकर निर्मल हो जाता है और उसके अहंकार का विष दूर हो जाता है। उज्जवल मुख वाले गुरमुख ही प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करते हैं। सेवक नानक तो सदैव उन पर बलिहारी जाता है जो सच्चे गुरु की रज़ा में चलते रहते हैं ।। २२ ।। वह सच्चा गुरु, सर्वव्यापक प्रभु शत्रुता से रहित है और उसी प्रभु के लिए सदैव हृदय में लौ लगानी चाहिए। जो शत्रुभाव रहित व्यक्ति के साथ शत्रुता रखता है वह समझ लो अपने घर में ही आग की चिंगारी फेंक रहा है। ऐसे व्यक्ति के हृदय में क्रोध और अहंकार बना रहता है और सदैव दुख पाता हुआ वह जलता रहता है। झूठ बोल-बोलकर व्यक्ति सदैव भौंकते रहते हैं क्योंकि उन्होंने द्वैतभाव का विष खाया होता है। माया रूपी विष के कारण ही वे भटकते हैं और घर-घर भटकते हुए बेइज़्ज़त होते रहते हैं। वे वेश्या के पुत्र के समान होते हैं जिसके पिता का कोई नाम नहीं होता। प्रभु-नाम का सुमिरन ना करने वाले ऐसे व्यक्तियों को कर्ता प्रभु ने स्वयं भटकाया होता है। प्रभु-गुरु के माध्यम से उन पर कृपा धारण करता है और फिर ऐसे, बिछुड़े हुए सेवकों को स्वयं ही मिला लेता है। दास नानक तो ऐसे सेवक पर बलिहारी जाता है जो सच्चे गुरु के चरणों में लगा रहता है ।। २३ ।। जो प्रभु-नाम में लीन हो गए उनका उद्धार हो गया है और प्रभु-नाम से विहीन बने रहने वालों को यमपुरी में जाना पड़ता है। हे नानक, प्रभु-नाम के बिना सुख प्राप्त नहीं होता और व्यक्ति आते-जाते हुए पछताते रहते हैं।। २४ ।। जो चिन्ताओं में पड़कर भाग-दौड़ से बच गए हैं उन्हीं के मन में आनन्द होता है। गुरु की कृपा से ही उस प्रभु के रहस्य को जाना जाता है और जीव रूपी स्त्री निश्चिंत होकर सोती रहती है। पहले से ही जिनके भाग्य में लिखा है उनका ही प्रभु रूपी गुरु से मिलाप होता है। हे नानक, उन्होंने ही प्रभु रूपी परम आनन्द प्राप्त किया होता है और वे ही सहज अवस्था में प्रभु से मिलाप बनाए रखते हैं ।। २५ ।। जो अपने सच्चे गुरु का शब्द-गुरु के माध्यम से सुमिरन करते हैं वे सच्चे गुरु की रज़ा को मान लेते हैं और प्रभु-नाम को हृदय में धारण किए रहते हैं। प्रभु-नाम में लीन ऐसे व्यापारियों की इस लोक और परलोक दोनों में ही बात मानी जाती है। ऐसे गुरमुख उस प्रभु के सच्चे दरबार में शब्द के माध्यम से ही अपनी पहचान बनाते हैं। उनका सौदा भी सच्चा होता है, उनका खर्च भी सच्चा होता है और उनके अन्तर्मन में उस प्रियतम प्रभु का प्यार होता है। कर्ता प्रभु ने उन्हें बख्श दिया होता है इसलिए यमकाल तो उनके पास

आवई आपि बखसे करतारि ॥ नानक नाम रते से धनवंत हैनि निरधनु होरु संसारु ॥ २६ ॥ जन की टेक हरि नामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ ॥ गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ॥ वडभागी नामु धिआइआ अहिनिसि लागा भाउ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ ॥ २७ ॥ लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ॥ इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न अंती वार ॥ बिनु हरि सांति न आवई किसु आगै करी पुकार ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रहमु बिचारु ॥ तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरि धारि ॥ २८ ॥ असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥ हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ हरि जीउ लेखै वार न आवई तूं बखसि मिलावणहारु ॥ गुर तुठै हरि प्रभु मेलिआ सभ किलविख कटि विकार ॥ जिना हरि हरि नामु धिआइआ जन नानक तिन्ह जैकारु ॥ २९ ॥ विछुड़ि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के भै भाइ ॥ जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु धिआइ ॥ गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन लभंन्हि ॥ नानक लालु अमोलका गुरमुखि खोजि लहंन्हि ॥ ३० ॥ मनमुख नामु न चेतिओ धिगु जीवणु धिगु वासु ॥ जिस दा दिता खाणा पैनणा सो मनि न वसिओ गुणतासु ॥ इहु मनु सबदि न भेदिओ किउ होवै घर वासु ॥ मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु ॥ गुरमुखि नामु सुहागु है मसतकि मणी लिखिआसु ॥ हरि हरि नामु उरि धारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु ॥ नानक तिन मुख उजले जिन अंतरि नामु प्रगासु ॥ ३१ ॥ सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥ भेख करहि बहु करम विगुते भाइ दूजै परज विगोई ॥ नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई ॥ ३२ ॥ हरि का नाउ अति वड ऊचा ऊची हू ऊचा होई ॥ अपड़ि कोइ न सकई जे सउ लोचै कोई ॥ मुखि संजम हछा न होवई करि भेख भवै सभ कोई ॥ गुर की पउड़ी जाइ चड़ै करमि परापति होई ॥ अंतरि आइ वसै गुर सबदु

भी नहीं आता। हे नानक, जो प्रभु-नाम में लीन हैं वे ही धनवान हैं, बाकी सारा संसार तो निर्धन ही है ।। २६ ।। प्रभु का नाम ही प्रभु के सेवक का आसरा है और प्रभु-नाम के बिना अन्य कोई ठौर-ठिकाना नहीं है। गुरु की शिक्षा से प्रभु-नाम मन में बसता है और व्यक्ति स्वाभाविक रूप से ही सहज अवस्था में लीन हो जाता है। बड़े भाग्य से ही प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है जिससे दिन-रात प्रभु से प्रेम बना रहता है। दास नानक तो ऐसे व्यक्तियों की चरणधूलि माँगता है और सदैव उन पर कुर्बान जाता है ।। २७ ।। चौरासी लाख योनियों को धारण करने वाली धरती जलती हुई पुकार करती रहती है। इसमें माया-मोह सब ओर व्याप्त है परन्तु अंतिम समय में कुछ भी साथ नहीं चलता। मैं किसके आगे पुकार लगाऊं क्योंकि प्रभु के बिना शान्ति प्राप्त नहीं होती। बड़े भाग्य से मैंने सच्चा गुरु प्राप्त किया है और ब्रह्म विचार के रहस्य को जाना है। हे नानक, प्रभु के सेवकों ने प्रभु को हृदय में धारण किया है इसलिए उनकी तृष्णा की अग्नि भली प्रकार बुझ गई है ।। २८ ।। हम इतनी भूल और पाप करते हैं कि उनकी कोई गिनती ही नहीं की जा सकती। हे प्रभु, कृपा करके मुझे बचा लो क्योंकि मैं बहुत बड़ा गुनाहगार और पापी हूँ। हे प्रभु, हिसाब-किताब में पड़ने से तो मेरी बात नहीं बनेगी, तू ही मुझ पर कृपा करके अपने से मिला लेने वाला है। गुरु ने प्रसन्न होकर मुझे हरि प्रभु से मिला दिया और उसने मेरे सभी विकारों को नष्ट कर दिया है। जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है हे नानक, प्रभु के उन सेवकों की सदैव जय-जयकार होती है ।। २६ ।। जो उससे बिछुड़ कर सच्चे गुरु के भय और प्रेम के अन्तर्गत रहते हुए उससे मिलते हैं वे गुरमुख प्रभु-नाम का सुमिरन करके जन्म मरण से निश्चिंत हो जाते हैं। गुरु रूपी साधु की संगत यदि मिल जाए तो हीरे और रत्न प्राप्त हो जाते हैं। हे नानक, वह अमूल्य रत्न रूपी प्रभु गुरमुख बनकर ही खोजा और पाया जाता है ।। ३० ।। मनमुख व्यक्ति प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता इसलिए उसका जीवन और निवास धिक्कार योग्य ही है क्योंकि जिसका दिया हुआ खाया और पहना जाता है, गुणों का भण्डार वह प्रभु उसने मन में नहीं बसाया होता है। जब तक यह मन शब्द के माध्यम से बींधा नहीं जाता तब तक भला अपने वास्तविक घर अर्थात प्रभु में निवास कैसे हो सकता है। मनमुख बनी हुई जीव स्त्रियों के लिए प्रभु-नाम ही उनका सुहाग है और उनके माथे पर अच्छे भाग्य की मणि अंकित बनी रहती है। उन्होंने प्रभु-नाम को अपने हृदय में धारण किया होता है और प्रभु उनके खिल चुके हृदय कमल में निवास करता है। ऐसे लोग अपने सच्चे गुरु की सेवा-सुमिरन में लगे रहते हैं और मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूँ। हे नानक, जिनके हृदय में प्रभु-नाम का प्रकाश हो चुका है उनके मुख सदैव उज्जवल बने रहते हैं ।। ३१ ।। जो शब्द में लीन होकर विकारों के प्रति मर जाता है वही सेवक मुक्त हो जाता है; शब्द के बिना मुक्ति सम्भव नहीं है। अनेकों वेश धारण कर, कर्मकाण्डों में फँसकर और द्वैतभाव में बनी रहकर यह सृष्टि सदैव कष्ट ही उठाती रहती है। हे नानक, बेशक कोई सैंकड़ो बार चाहता रहे परन्तु सच्चे गुरु के बिना प्रभु का नाम प्राप्त नहीं होता ।। ३२ ।। प्रभु का नाम अत्यन्त बड़ा और ऊँचे से भी ऊँचा होता है। सैंकड़ों बार चाहने पर भी उस तक कोई नहीं पहुँच पाता। केवल मुँह जुबानी किया हुआ संयम अच्छा नहीं होता परन्तु सभी इसी प्रकार का पाखण्ड करके भटकते रहते हैं। जीव को गुरु की सीढ़ी पर जा चढ़ना चाहिए परन्तु यह भी भाग्य से ही प्राप्त होती है। वह प्राप्त होने से शब्द गुरु मन में आ बसता है परन्तु

वीचारै कोइ ॥ नानक सबदि मरै मनु मानीऐ साचे साची सोइ ॥ ३३ ॥ माइआ मोहु दुखु सागरु है बिखु दुतरु तरिआ न जाइ ॥ मेरा मेरा करदे पचि मुए हउमै करत विहाइ ॥ मनमुखा उरवारु न पारु है अध विचि रहे लपटाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु कमावणा करणा कछू न जाइ ॥ गुरमती गिआनु रतनु मनि वसै सभु देखिआ ब्रहमु सुभाइ ॥ नानक सतिगुरि बोहिथै वडभागी चड़ै ते भउजलि पारि लंघाइ ॥ ३४ ॥ बिनु सतिगुर दाता को नही जो हरि नामु देइ आधारु ॥ गुर किरपा ते नाउ मनि वसै सदा रहै उरि धारि ॥ तिसना बुझै तिपति होइ हरि कै नाइ पिआरि ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ हरि अपनी किरपा धारि ॥ ३५ ॥ बिनु सबदै जगतु बरलिआ कहणा कछू न जाइ ॥ हरि रखे से उबरे सबदि रहे लिव लाइ ॥ नानक करता सभ किछु जाणदा जिनि रखी बणत बणाइ ॥ ३६ ॥ होम जग सभि तीरथा पढ़ि पंडित थके पुराण ॥ बिखु माइआ मोहु न मिटई विचि हउमै आवणु जाणु ॥ सतिगुर मिलिऐ मलु उतरी हरि जपिआ पुरखु सुजाणु ॥ जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु ॥ ३७ ॥ माइआ मोहु बहु चितवदे बहु आसा लोभु विकार ॥ मनमुखि असथिरु ना थीऐ मरि बिनसि जाइ खिन वार ॥ वड भागु होवै सतिगुरु मिलै हउमै तजै विकार ॥ हरि नामा जपि सुखु पाइआ जन नानक सबदु वीचार ॥ ३८ ॥ बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि ॥ ३९ ॥ लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ ॥ अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥ मनमुख सेती संगु करे मुहि कालख दागु लगाइ ॥ मुह काले तिन्ह लोभीआं जासनि जनमु गवाइ ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ जनम मरन की मलु उतरै जन नानक हरि गुन गाइ ॥ ४० ॥ धुरि हरि प्रभि करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा प्रतिपालि करे हरि राइ ॥ चुगल निंदक भुखे रुलि मुए एना हथु न किथाऊ पाइ ॥ बाहरि पाखंड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ खेति सरीरि जो बीजीऐ

कोई बिरला ही उसका चिंतन करता है। हे नानक, शब्द में लीन होने से ही मन सन्तुष्ट होता है और उस प्रभु की सच्ची शोभा का पता चलता है ।। ३३ ।। माया-मोह दुखों का वह सागर है जिसमें भरे हुए विष के ऊपर से तैर कर जाना सम्भव नहीं होता। यहां मेरा-मेरा करते हुए लोग मर खप जाते हैं और अहंकार में रहते हुए ही अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं। मनमुख व्यक्ति ना उस पार, ना इस पार होते हैं और आधे रास्ते में ही वे इधर-उधर लिपटे रहते हैं। जो प्रारम्भ से ही लिखा हुआ है उसी के अनुसार व्यक्ति आचरण करता है और इसमें कुछ भी नहीं किया जा सकता। गुरु की शिक्षा के माध्यम से ही ज्ञान रूपी रत्न मन में बसता है और स्वाभाविक रूप से ही सब कुछ परमात्मा का रूप ही देखा जाता है। हे नानक, सच्चे गुरु रूपी जहाज पर जो भाग्यशाली चढ़ जाते हैं वे ही इस संसार सागर से पार उतार दिए जाते हैं ।। ३४ ।। सच्चे गुरु के बिना अन्य कोई भी ऐसा दाता नहीं है जो प्रभु नाम का आसरा प्रदान कर दे। गुरु की कृपा से ही प्रभु-नाम मन में बसता है और सदैव हृदय में स्थित बना रहता है। यदि प्रभु के नाम के साथ प्रेम बन जाए तो व्यक्ति की तृष्णा बुझ जाती है। हे नानक, प्रभु जब अपनी कृपा करता है तो गुरमुख बनकर प्रभु-नाम से प्रेम प्राप्त किया जाता है ।। ३५ ।। शब्द की अनुभूति के बिना सारा संसार इस तरह पागल बना हुआ है कि उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं जा सकता। प्रभु जिन्हें बचाता है उन्हीं का उद्धार होता है और वे ही शब्द में अपनी लौ लगाए रहते हैं। हे नानक, जिसने इस संसार की रचना कर रखी है वह कर्ता प्रभु ही इसके बारे में सब कुछ जानता है ।। ३६ ।। होम, यज्ञ, तीर्थ और पुराणों को पढ़-पढ़ कर पंडित लोग थक चुके हैं परन्तु माया-मोह रूपी उनका विष समाप्त नहीं होता और अहंकार के वशीभूत होकर उनका जन्म-मरण चलता ही रहता है। सच्चे गुरु के मिलाप से ही मन की मल साफ होती है और उस सुजान और सर्वव्यापक प्रभु का सुमिरन किया जाता है। जिन्होंने उस प्रभु का सुमिरन किया है दास नानक सदैव उन पर कुर्बान जाता है ।। ३७ ।। अनेकों लोग माया-मोह, अनेक प्रकार की आशाओं, लोभ और विकारों का ही ध्यान करते रहते हैं। ऐसा मनमुख व्यक्ति स्थिरता प्राप्त नहीं करता और जल्दी ही मरकर विनष्ट हो जाता है। बड़ा भाग्य होने से ही सच्चा गुरु प्राप्त होता है जो अहंकार और विकारों का त्याग करवा देता है। हे दास नानक, इस शब्द का यही मुख्य विचार है कि प्रभु-नाम के सुमिरन से ही सुख प्राप्त किया जाता है ।। ३८ ।। सच्चे गुरु के बिना भक्ति नहीं होती और प्रभु के नाम में प्रेम नहीं लगता। हे दास नानक, गुरु के प्रेम और प्यार के माध्यम से ही प्रभु-नाम की आराधना की जाती है ।। ३९ ।। जहां तक हो सके लोभी व्यक्ति का विश्वास नहीं करना चाहिए। समय पड़ने पर वह उस स्थान पर धोखा देता है जहां फिर अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता है। मनमुख व्यक्ति के साथ मेल-मिलाप रखने वाला अपने मुँह पर कालिमा का दाग ही लगाता है। ऐसे लोभी व्यक्तियों के मुँह काले बने रहते हैं और वे इस संसार से अपने जीवन को गँवाकर ही जाते हैं। हे प्रभु, तू हमें सत्संगत से मिला दे ताकि प्रभु का नाम हमारे मन में आ बसे। हे दास नानक, प्रभु का गुणानुवाद करते हुए ही जन्म-मरण की मैल उतर जाती है ।।४० ।।कर्ता प्रभु ने जो प्रारम्भ से ही लिख दिया है उसे मिटाया नहीं जा सकता। यह जीव और उसका शरीर सब कुछ प्रभु का ही है और वह प्रभु ही उसका पालन-पोषण करता है। चुगलखोर और निंदक भूख से भटकते हुए ही मर जाते हैं और इन्हें कोई भी आसरा नहीं मिलता। ये बाहर से तो सभी प्रकार के पाखण्ड पूर्ण कर्म करते हैं परन्तु इनके हृदय में कपट का आचरण बना रहता है। इस शरीर रूपी खेत में जो कुछ भी बोया जाता है

सो अंति खलोआ आइ ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ ॥ ४१ ॥ मन आवण जाणु न सुझई ना सुझै दरबारु ॥ माइआ मोहि पलेटिआ अंतरि अगिआनु गुबारु ॥ तब नरु सुता जागिआ सिरि डंडु लगा बहु भारु ॥ गुरमुखां करां उपरि हरि चेतिआ से पाइनि मोख दुआरु ॥ नानक आपि ओहि उधरे सभ कुटंब तरे परवार ॥ ४२ ॥ सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ गुर परसादी हरि रसि ध्रापै ॥ हरि दरगहि गुर सबदि सिञापै ॥ बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ ॥ मनमुखु मुआ अपुना जनमु खोइ ॥ हरि नामु न चेतहि अंति दुखु रोइ ॥ नानक करता करे सु होइ ॥ ४३ ॥ गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥ सदा सदा हरि गुण रवहि अंतरि सहज धिआनु ॥ ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ तिना नदरी इको आइआ सभु आतम रामु पछानु ॥ ४४ ॥ मनमुखु बालकु बिरधि समानि है जिन्हा अंतरि हरि सुरति नाही ॥ विचि हउमै करम कमावदे सभ धरम राइ कै जांही ॥ गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ ॥ ओना मैलु पतंगु न लगई जि चलनि सतिगुर भाइ ॥ मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइ ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै अंकि समाइ ॥ ४५ ॥ बुरा करे सु केहा सिझै ॥ आपणै रोहि आपे ही दझै ॥ मनमुखि कमला रगड़ै लुझै ॥ गुरमुखि होइ तिसु सभ किछु सुझै ॥ नानक गुरमुखि मन सिउ लुझै ॥ ४६ ॥ जिना सतिगुरु पुरखु न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ ओइ माणस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥ ओना अंतरि गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ॥ मनमुख मुए विकार महि मरि जंमहि वारो वार ॥ जीवदिआ नो मिलै सु जीवदे हरि जगजीवन उर धारि ॥ नानक गुरमुखि सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ ४७ ॥ हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि ॥ गुरमती हरि पाइआ माइआ मोह परजालि ॥ हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥ धनु भगवंती नानका जिना गुरमुखि लधा हरि भालि ॥ वडभागी गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि ॥ ४८ ॥ मनमुख दह दिसि फिरि रहे

अंतिम समय में वही पक कर सामने आ खड़ा होता है। नानक की तो प्रभु के सामने यही विनती है कि हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तो तू कृपा करके हमें अपने से मिला ले ।। ४१ ।। हे मन तुझे न तो आवागमन के बारे में विचार आता है और न ही तुझे प्रभु के दरबार के बारे में कुछ पता चलता है। वास्तव में तू तो माया मोह में लिपटा हुआ है और तेरे अन्दर अज्ञान का घोर अंधकार है। यह सोया हुआ व्यक्ति तो तभी जगता है जब इसके सिर पर मौत का भारी डण्डा लगता है। जो गुरमुख इसी जीवन में हाथों-हाथ ही सावधान बने रहते हैं वे ही मोक्ष का द्वार प्राप्त करते हैं। हे नानक, वे स्वयं तो पार उतर ही जाते हैं, साथ ही साथ उनका सारा कुटुम्ब और परिवार भी संसार सागर से तैर कर पार हो जाता है ।। ४२ ।। शब्द के माध्यम से जो मायावी वृत्ति के संदर्भ में मर जाता है वही वास्तव में मरा हुआ जाना जाता है। गुरु की कृपा से ही वह प्रभु रूपी रस का पान करके तृप्त होता है। शब्द के माध्यम से ही प्रभु के दरबार में उसकी पहचान होती है। शब्द से विहीन बने हुए सभी लोग मरते हैं और मनमुख व्यक्ति अपना जीवन खोकर व्यर्थ में ही मर जाता है। वह प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करता और अन्त में दुखी होकर रोता है। हे नानक, वह कर्ता प्रभु जो कुछ भी करता है वही होता है ।। ४३ ।। गुरमुख बने हुए वे व्यक्ति कभी भी बूढ़े नहीं माने जाते जिनके अन्तर्मन में ज्ञान की सुरति बनी रहती है। वे अपने अन्तर्मन में ही सहज ध्यान लगाकर सदैव प्रभु के गुणों का सुमिरन करते रहते हैं। वे सदैव विवेकशील बने रहकर आनन्दपूर्ण बने रहते हैं और उनके लिए दुख और सुख एक समान ही होता है। उन्हें तो एक प्रभु ही दिखाई देता है और सर्वव्यापक प्रभु को ही वे सब में पहचानते हैं ।। ४४ ।। मनमुख बने हुए लोग चाहे बच्चे हो या बूढ़े वे एक समान ही होते हैं क्योंकि उनके अन्तर्मन में प्रभु की याद नहीं होती। वे अहंकार में ही सभी कर्म करते हैं और उन्हें धर्मराज को लेखा देना पड़ता है। गुरमुख व्यक्ति अच्छे और निर्मल होते हैं और स्वाभाविक रूप से ही शब्द-गुरु के माध्यम से ऐसे बने रहते हैं। जो सच्चे गुरु की रज़ा में चलते हैं उन्हें जरा सी भी मैल नहीं लगती। मनमुख व्यक्ति बेशक सौ बार अपने को धो ले परन्तु उसकी ज़ूठन कभी समाप्त नहीं होती। हे नानक, गुरु की गोदी में लीन होकर ही गुरमुख बने हुए व्यक्ति प्रभु से मिला दिए जाते हैं ।। ४५ ।। जो बुरा करता है उसका क्या हाल होता है; वह अपने क्रोध में स्वयं ही जलता रहता है। ऐसा मूर्ख मनमुख झगड़े-झंझटों में ही लगा रहता है ।। ४६ ।। जिन्होंने उस सर्वव्यापक सच्चे गुरु प्रभु का सुमिरन नहीं किया और शब्द के माध्यम से उसका चिंतन नहीं किया उन्हें मनुष्य की योनि में आया हुआ नहीं कहा जाता है ; वे गँवार लोग पशुओं और ढोरों की तरह हैं। उनके अन्तर्मन में ज्ञान-ध्यान नहीं होता और प्रभु के साथ भी उनकी प्रीति नहीं होती। ऐसे मनमुख व्यक्ति विकारों में ही मर जाते हैं और बार-बार जन्म लेकर मरते रहते हैं। जिन्होंने उस प्रभु को हृदय में धारण किया है ऐसे आध्यात्मिक रूप में जीवित रहने वाले व्यक्तियों को जो भी मिलता है वह भी जीवित हो उठता है। हे नानक, उस सच्चे प्रभु के दरबार में ऐसे गुरमुख व्यक्ति ही शोभायमान होते हैं ।। ४७ ।। यह शरीर जो प्रभु का मंदिर है इसे प्रभु ने ही बनाया है और प्रभु ही इसमें बसता है। गुरु की शिक्षा के माध्यम से माया और मोह को पूर्ण रूप से जलाकर प्रभु को प्राप्त किया जाता है। प्रभु के इस मंदिर में अनेकों पदार्थ हैं परन्तु हे जीव, तू नवनिधियों के स्वरूप प्रभु-नाम की ही सम्भाल कर। हे नानक, धन्य हैं वे भाग्यशाली जिन्होंने गुरमुख बनकर इस हरि मंदिर में ही परमात्मा को खोज लिया है। जिन भाग्यशाली लोगों ने इस शरीर रूपी किले के अन्दर हृदय रूपी मंदिर को अच्छी तरह से खोजा है उन्होंने प्रभु को हृदय में पा लिया है ।। ४८ ।। अत्यन्त तृष्णा पूर्ण और लोभ तथा विकारों में पड़े हुए मनमुख दसों दिशाओं में भटकते रहते हैं

अति तिसना लोभ विकार ॥ माइआ मोहु न चुकई मरि जंमहि वारो वार ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ अति तिसना तजि विकार ॥ जनम मरन का दुखु गइआ जन नानक सबदु बीचारि ॥ ४९ ॥ हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥ ५० ॥ धनासरी धनवंती जाणीऐ भाई जां सतिगुर की कार कमाइ ॥ तनु मनु सउपे जीअ सउ भाई लए हुकमि फिराउ ॥ जह बैसावहि बैसह भाई जह भेजहि तह जाउ ॥ एवडु धनु होरु को नही भाई जेवडु सचा नाउ ॥ सदा सचे के गुण गावां भाई सदा सचे कै संगि रहाउ ॥ पैनणु गुण चंगिआईआ भाई आपणी पति के साद आपे खाइ ॥ तिस का किआ सालाहीऐ भाई दरसन कउ बलि जाइ ॥ सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ भाई करमि मिलै तां पाइ ॥ इकि हुकमु मंनि न जाणनी भाई दूजै भाइ फिराइ ॥ संगति ढोई ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ ॥ नानक हुकमु तिना मनाइसी भाई जिना धुरे कमाइआ नाउ ॥ तिन्ह विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद बलिहारै जाउ ॥ ५१ ॥ से दाड़ीआं सचीआ जि गुर चरनी लगंन्हि ॥ अनदिनु सेवनि गुरु आपणा अनदिनु अनदि रहंन्हि ॥ नानक से मुह सोहणे सचै दरि दिसंन्हि ॥ ५२ ॥ मुख सचे सचु दाड़ीआ सचु बोलहि सचु कमाहि ॥ सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर मांहि समांहि ॥ सची रासी सचु धनु उतम पदवी पांहि ॥ सचु सुणहि सचु मंनि लैनि सची कार कमाहि ॥ सची दरगह बैसणा सचे माहि समाहि ॥ नानक विणु सतिगुर सचु न पाईऐ मनमुख भूले जांहि ॥ ५३ ॥ बाबीहा प्रिउ प्रिउ करे जलनिधि प्रेम पिआरि ॥ गुर मिले सीतल जलु पाइआ सभि दूख निवारणहारु ॥ तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक पुकार ॥ नानक गुरमुखि सांति होइ नामु रखहु उरि धारि ॥ ५४ ॥ बाबीहा तूं सचु चउ सचे सउ लिव लाइ ॥ बोलिआ तेरा थाइ पवै गुरमुखि होइ अलाइ ॥ सबदु चीनि तिख उतरै मंनि लै

परन्तु उनका धन-सम्पदा का मोह समाप्त नहीं होता और वे बार-बार जन्मते-मरते रहते हैं। जिन्होंने सच्चे गुरु का सुमिरन करके तृष्णाओं और विकारों को त्यागकर सुख प्राप्त किया है। हे दास नानक, शब्द के चिंतन के माध्यम से उनके जन्म-मरण का दुख दूर हो जाता है ।। ४६ ।। हे मन, तू प्रभु-नाम का समिरन कर जिससे तुझे प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। प्रभु सुमिरन से ही सब क्लेश और पाप कट जाते है तथा अभिमान, अहंकार आदि दूर हो जाते हैं। जब गुरमुख बनकर हृदय रूपी कमल खिल उठता है तब परमात्मा की पहचान सब में ही हो जाती है। हे प्रभु, कृपा करो ताकि दास नानक तुम्हारे नाम का सुमिरन करता रहे ।। ५० ।। हे भाई, धनासरी का गायन करते हुए धनवान वही जीव-स्त्री जानी जाती है जो सच्चे गुरु की सेवा करती रहती है। हे भाई, वह तन मन अपने प्राणों समेत अपने सच्चे गुरु को सौंप देती है और उसके हुकुम में ही गतिशील बनी रहती है। वह गुरु जहां बैठाता है वह वहीं बैटती है और जहां उसे भेजता है वह वहीं जाती है। हे भाई, सच्चे नाम जितना बड़ा धन अन्य कोई नहीं है। हे भाई, मैं तो सदैव सच्चे प्रभु के ही गुण गाता रहूँ तथा सदैव उस सत्य स्वरूप की संगत में बना रहूँ। सच्चे गुरु से मिले हुए व्यक्ति के लिए अपने गुणों और अच्छाईयों के अनुरूप अपनी साख के अनुसार ही वह अपने अन्तर्मन में प्रभु के लिए पैदा किए हुए रस को स्वयं ही पीता रहता है। ऐसे गुरु का गुणानुवाद कैसे किया जाए। हे भाई, इसके तो दर्शन पर बलिहारी जाया जाता है। सच्चे गुरु में तो महान गुण हैं और बड़े भाग्य से ही सच्चा गुरु प्राप्त होता है। कई ऐसे भी हैं जो हुकुम को मानना नहीं जानते और द्वैतभाव में पड़े हुए इधर-उधर भटकते फिरते हैं। ऐसे लोगों को संगत में भी आसरा नहीं मिलता और ना ही उन्हें बैठने के लिए ठौर-ठिकाना मिलता। हे नानक, वह प्रभु हुकुम भी उन्हीं से मनवाता है जिन्होंने प्रभु के दरबार से ही प्रभु के नाम के अनुरूप आचरण बनाने का कार्य मिला हुआ है। हे भाई, मैं ऐसे लोगों पर अपने आपको न्यौछावर करता हूँ और ऐसे लोगों पर ही सदैव बलिहारी जाता हूँ ।। ५१ ।। (सम्मान का चिन्ह) वे दाढ़ियाँ ही सत्य स्वरूप मानी जाती हैं जो गुरु के चरणों में लगी रहती हैं; प्रतिदिन वे गुरु का सुमिरन करती हैं और हर रोज आनन्द में बनी रहती हैं। हे नानक, वे मुख ही सुन्दर माने जाते हैं जो उस सच्चे प्रभु के द्वार पर दिखाई देते हैं ।। ५२ ।। जिनके मुख और दाढ़ियां सच्ची हैं वे वास्तव में सत्य बोलने वाले और सत्य पर आचरण करने वाले होते हैं। सच्चा शब्द उनके मन में बसा हुआ होता है और वे सच्चे गुरु में ही लीन बने रहते हैं। उनकी रासपूंजी सच्ची होती है, उनका धन भी सत्य ही होता है और वे उत्तम पद को प्राप्त करते हैं। वे सच ही सुनते हैं और सच को मान लेते हैं तथा उनका आचरण सच्चा होता है। वे सच्चे दरबार में ही बैठते हैं और इस सत्य प्रभु में ही लीन बने रहते हैं। हे नानक, सच्चे गुरु के बिना सत्य नहीं पाया जाता ; मनमुख व्यक्ति तो व्यर्थ ही भूलते-भटकते रहते हैं ।। ५३ ।। हे जिज्ञासु रूपी पपीहे, तू जल के भण्डार बादल के प्रेम-प्यार में प्रिय-प्रिय पुकारता है परन्तु गुरु के मिलने से ही वह शीतल जल प्राप्त होता है जो सभी दुखों का नाश करने वाला होता है। उसी शीतल जल से ही सहजभाव उत्पन्न होता है, प्यास बुझती है और कूक-पुकार समाप्त होती है। नानक का कथन है कि गुरमुख बनकर शान्त हो जाओ और हृदय में प्रभु-नाम को धारण किए रहो ।। ५४ ।। हे पपीहे, तू सच बोल और इस सच्चे प्रभु में ही अपनी लौ लगाए रख। तू गुरमुख बनकर उच्चारण कर, तभी तेरा बोल सफल होगा। तू प्रभु की रज़ा को मानकर शब्द को पहचान ले जिससे तेरी प्यास बुझ जाएगी।

रजाइ ॥ चारे कुंडा झोकि वरसदा बूंद पवै सहजि सुभाइ ॥ जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न जाइ ॥ नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइ ॥ ५५ ॥ बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ॥ सभु किछु तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ ॥ झिमि झिमि अंम्रितु वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ॥ कूक पुकार न होवई जोती जोति मिलाइ ॥ नानक सुखि सवन्हि सोहागणी सचै नामि समाइ ॥ ५६ ॥ धुरहु खसमि भेजिआ सचै हुकमि पठाइ ॥ इंदु वरसै दइआ करि गूढ़ी छहबर लाइ ॥ बाबीहे तनि मनि सुखु होइ जां ततु बूंद मुहि पाइ ॥ अनु धनु बहुता उपजै धरती सोभा पाइ ॥ अनदिनु लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइ ॥ आपे सचा बखसि लए करि किरपा करै रजाइ ॥ हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइ ॥ भै का सहजु सीगारु करिहु सचि रहहु लिव लाइ ॥ नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लए छडाइ ॥ ५७ ॥ बाबीहा सगली धरती जे फिरहि ऊडि चड़हि आकासि ॥ सतिगुरि मिलिऐ जलु पाईऐ चूकै भूख पिआस ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ॥ विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि ॥ नानक घटि घटि एको वरतदा सबदि करे परगास ॥ ५८ ॥ नानक तिसै बसंतु है जि सतिगुरु सेवि समाइ ॥ हरि वुठा मनु तनु सभु परफड़ै सभु जगु हरीआवलु होइ ॥ ५९ ॥ सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइ ॥ ६० ॥ नानक तिना बसंतु है जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ ॥ हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइ ॥ ६१ ॥ वडड़ै झालि झलुंभलै नावड़ा लईऐ किसु ॥ नाउ लईऐ परमेसरै भंनण घड़ण समरथु ॥ ६२ ॥ हरहट भी तूं तूं करहि बोलहि भली बाणि ॥ साहिबु सदा हदूरि है किआ उची करहि पुकार ॥ जिनि जगतु उपाइ हरि रंगु कीआ तिसै विटहु कुरबाणु ॥ आपु छोडहि तां सहु मिलै सचा एहु वीचारु ॥ हउमै फिका बोलणा बुझि न सका कार ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु तुझै धिआइदा अनदिनु सदा विहाण ॥ बिनु सतिगुर किनै

तब वह चारों, दिशाओं से घनघोर रूप में बरस उठेगा और सहज स्वाभाविक रूप में ही बूंद तेरे मुख में आ पड़ेगी। वैसे तो जल ही से सब कुछ उत्पन्न होता है और जल के बिना प्यास नहीं बुझती परन्तु हे नानक, जिन्होंने प्रभु रूपी जल को पी लिया है उन्हें फिर कभी भूख प्यास नहीं लगती अर्थात उनकी तृष्णाएँ समाप्त हो जाती हैं ।। ५५ ।। हे पपीहे, तू सहज स्वाभाविक रूप से बोल और सच्चे शब्द को अपना स्वभाव बना ले। सब कुछ तो अन्तर्मन में तेरे साथ ही है जिसे सच्चा गुरु दिखा देता है। हे जिज्ञासु रूपी पपीहे, जब व्यक्ति अपने आपको पहचान लेता है तो उसे घनघोर रूप में बरसता हुआ वह प्रियतम मिल जाता है। फिर यह अमृत एकरस होकर बरसता रहता है तथा जीव की तृष्णा और भूख पूरी तरह से समाप्त हो जाती है। फिर इस कूक-पुकार को नहीं लगाए रहना पड़ता तथा तेरी ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो जाती है। हे नानक, सुहागिन जीव स्त्रियाँ ही सच्चे नाम में लीन होकर सुखपूर्वक सोती हैं ।। ५६ ।। उस सच्चे मालिक प्रभु ने जब कृपा की तो अपने सच्चे हुकुम में उसने सत्य रूपी गुरु को भेजा और अब दया के बादल घनघोर रूप से बरसने लगे हैं। हे पपीहे, तेरे तन मन को तभी सुख होगा जब तत्व रूपी प्रभु-नाम की बूंद तुम्हारे मुख में पड़ेगी। गुरु रूपी बादल की ऐसी बूँदे ही अधिकता से अन्न और धन उत्पन्न करती हैं और धरती भी सुन्दर बन जाती है। फिर तो लोग भी हर रोज़ शब्द-गुरु में लीन होकर भक्ति करते हैं। वह प्रभु स्वयं ही कृपा करके अपनी रज़ा में जीव को अभयदान दे देता है। हे जीव रूपी स्त्री, तुम सच्चे शब्द में लीन होकर प्रभु का गुणानुवाद करती रहो। उसके अनुशासन को स्वाभाविक रूप से ही अपना सिंगार बना और सत्य में ही अपनी लौ लगाए रख। हे नानक, जब प्रभु का नाम हृदय में बस जाता है तो प्रभु के दरबार में भी सच्चा गुरु उसे आवागमन से छुड़ा लेता है ।। ५७ ।। हे पपीहे, यदि तू सारी धरती पर भटकता रहे और उड़कर आसमान में भी चढ़ जाए तब भी सच्चे गुरु के मिलने से ही नाम रूपी जल प्राप्त होगा जिससे भूख और प्यास समाप्त हो जाती है। यह प्राण और शरीर सब उस प्रभु का ही है और वास्तव में सब कुछ उसके पास ही है। वह तो बिना बोले हुए ही सब कुछ जानता है इसलिए फिर भला किसके आगे अरदास की जाए। हे नानक, घर-घर में वह एक प्रभु ही कार्यशील है और वही शब्द के माध्यम से हमारे हृदय में प्रकाशित होता है ।। ५८ ।। हे नानक, आनन्द का मौसम बसंत उन्हीं के लिए है जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हुए उसी में लीन बने रहते हैं। जब प्रभु प्रसन्न हो उठता है तो तन मन सभी कुछ खिल उठता है तथा सारा संसार हरा-भरा हो जाता है ।। ५९ ।। शब्द के माध्यम से ही सदैव बसंत ऋतु बनी रहती है जिससे तन मन हरा-भरा बना रहता है। हे नानक, जिसने सब कुछ पैदा किया है वह प्रभु का नाम मुझे कभी भी ना भूले ।। ६० ।। हे नानक, उन गुरमुखों के लिए ही वसंत का मौसम बना रहता है जिनके मन में वह प्रभु बसा रहता है। प्रभु प्रसन्न होता है तो तन मन प्रफुल्लित हो उठता है और सारा संसार हरा भरा हो जाता है ।। ६१ ।। अमृत बेला अर्थात भोर में किसके नाम का सुमिरन किया जाए; उस परमेश्वर के नाम को ही याद किया जाए जो नष्ट करने और फिर बना देने में समर्थ है ।। ६२ ।। हे भाई रहट, तू भी भली प्रकार से बोलता हुआ तू-तू की रट लगाए रहता है। वह मालिक तो सदैव तेरे सामने है इसलिए फिर तू भला यह ऊँची पुकार क्यों लगाए रहता है। जिसने संसार को उत्पन्न करके उसमें प्रभु-नाम का प्रेम पैदा किया है मैं तो उसी पर कुर्बान जाता हूँ। सच्चा विचार तो यही है कि अपने अभिमान को व्यक्ति जब त्याग देता है तो उसे वह मालिक प्रभु मिल जाता है। अहंकार में तो फीका ही बोला जाता है और पता ही नहीं चल पाता क्या करना अथवा नहीं करना है। वन, उसका तिनका-तिनका और तीनों लोक तेरा सुमिरन करते हुए अपना समय व्यतीत करते जाते हैं। सच्चे गुरु के बिना ये

न पाइआ करि करि थके वीचार ॥ नदरि करहि जे आपणी तां आपे लैहि सवारि ॥ नानक गुरमुखि जिन्ही धिआइआ आए से परवाणु ॥ ६३ ॥ जोगु न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ॥ नानक घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि ॥ ६४ ॥ चारे कुंडा जे भवहि बेद पड़हि जुग चारि ॥ नानक साचा भेटै हरि मनि वसै पावहि मोख दुआर ॥ ६५ ॥ नानक हुकमु वरतै खसम का मति भवी फिरहि चल चित ॥ मनमुख सउ करि दोसती सुख कि पुछहि मित ॥ गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ॥ जंमण मरण का मूलु कटीऐ तां सुखु होवी मित ॥ ६६ ॥ भुलिआं आपि समझाइसी जा कउ नदरि करे ॥ नानक नदरी बाहरी करण पलाह करे ॥ ६७ ॥

सलोक महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

वडभागीआ सोहागणी जिन्हा गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ अंतरि जोति परगासीआ नानक नामि समाइ ॥ १ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु पुरखु है जिनि सचु जाता सोइ ॥ जितु मिलिऐ तिख उतरै तनु मनु सीतलु होइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सति पुरखु है जिस नो समतु सभ कोइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरवैरु है जिसु निंदा उसतति तुलि होइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सुजाणु है जिसु अंतरि ब्रहमु वीचारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरंकारु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरू है जि सचु द्रिड़ाए सोइ ॥ नानक सतिगुर वाहु वाहु जिस ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥ हरि प्रभ सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ वडभागी हरि पाइआ पूरन परमानंदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥ ३ ॥ मूं पिरीआ सउ नेहु किउ सजण मिलहि पिआरिआ ॥ हउ ढूढेदी तिन सजण सचि सवारिआ ॥ सतिगुरु मैडा मितु है जे मिले त इहु मनु वारिआ ॥ देंदा मूं पिरु दसि हरि सजणु सिरजणहारिआ ॥ नानक हउ पिरु भाली आपणा सतिगुर नालि दिखालिआ ॥ ४ ॥ हउ खड़ी निहाली पंधु मतु मूं सजणु आवए ॥ को आणि मिलावै अजु मै पिरु

चिंतन करते-करते थक जाते हैं, परन्तु कोई भी उसे पा नहीं सका। यदि वह प्रभु अपनी कृपा दृष्टि कर दे तो वह स्वयं ही इन सबको सँवार देता है। हे नानक, गुरमुख बनकर जिन्होंने उस प्रभु का सुमिरन किया है, इस संसार में आना उन्हीं का सफल है ।। ६३ ।। भगवे कपड़े पहनने से या मैला-कुचैला वेश धारण करने से उस प्रभु से योग (मिलाप) नहीं होता। हे नानक, सच्चे गुरु के उपदेश के माध्यम से घर बैठे ही योग की प्राप्ति हो जाती है ।। ६४ ।। चारों दिशाओं में घूमने से और चार युगों तक वेद (ज्ञान) आदि का पठन-पाठन करने से भी कुछ नहीं होता। हे नानक, यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो प्रभु मन में बस जाता है और जीव मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लेता है ।। ६५ ।। हे नानक, उस मालिक का हुकुम ही चारों ओर कार्यशील है परन्तु हे जीव, तेरी मति घूमी हुई है और चित्त में चंचल होकर तू भटक रहा है। हे मित्र, तू मनमुख से दोस्ती करके अब सुख की बात क्यों पूछता है। तू गुरमुखों से दोस्ती कर और सच्चे गुरु में अपना चित्त लगा, तभी आवागमन का मूल कारण समाप्त हो जाएगा और हे मेरे मित्र, तुझे सुख प्राप्त होगा ।। ६६ ।। जिन पर वह स्वयं कृपा दृष्टि करता है उन भूले-भटके हुओं को भी समझा देता है परन्तु हे नानक, जो उसकी कृपा दृष्टि से दूर बने रहते हैं वे अनेकों प्रकार से प्रलाप करते हुए दुखी बने रहते हैं ।। ६७ ।।

श्लोक महला ४ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

वे गुरमुख बनी हुई सुहागिन जीव-स्त्रियां बड़ी भाग्यशाली हैं जिन्हें राजा प्रभु मिल गया है। हे नानक, प्रभु-नाम में लीन होकर उनके अन्तर्मन की ज्योति प्रकाशित हो उठी है ।। १ ।। वह सच्चा समर्थ गुरु धन्य है जिसने उस सत्य स्वरूप प्रभु को जान लिया है जिससे मिलाप करके तृष्णा बुझ जाती है और तन मन शीतल हो जाता है। वह सच्चा समर्थ गुरु धन्य है जिसके लिए सभी एक जैसे हैं। वह शत्रुता रहित सच्चा गुरु धन्य है जिसके लिए निन्दा और प्रशंसा एक समान ही हैं। वह सुजान सच्चा गुरु धन्य है जिसके अन्तर्मन में ब्रह्म विचार स्थित बना रहता है। वह निराकार प्रभु-गुरु धन्य है जिसका कोई भी ओर-छोर तथा सीमा नहीं है। वह सच्चा गुरु धन्य है जो सत्य को हृदय में पक्का करता है। हे नानक, वह सच्चा गुरु धन्य है जिससे प्रभु-नाम की प्राप्ति होती है ।। २ ।। प्रभु का नाम ही गुरमुखों के लिए सच्चा यश है। गुरमुख व्यक्ति प्रतिदिन प्रभु-नाम का गुणानुवाद करते हैं और प्रभु का सुमिरन करके मन में आनन्दित बने रहते हैं। वह पूर्ण परमानन्द प्रभु बड़े भाग्य से ही पाया जाता है। हे नानक, प्रभु के सेवकों ने तो उसके नाम का ही गुणानुवाद किया है जिससे उनके मन और तन में किसी प्रकार का विघ्न उत्पत्र नहीं होता ।। ३ ।। मेरा अपने प्रियतम से प्यार है और वह सज्जन मुझे कैसे प्राप्त हो। मैं उस सज्जन को ढूंढ़ रही हूँ जिसे सत्य ने सँवार दिया है। वह सच्चा गुरु मेरा मित्र है, यदि वह मुझे मिल जाए तो मैं यह मन उस पर कुर्बान कर दूं। मेरा प्रियतम सच्चा गुरु उस सृजनहार प्रभु के बारे में सब कुछ बता देता है। हे नानक, मैं तो अपने प्रियतम प्रभु को ढूंढ़ रही थी परन्तु सच्चे गुरु ने तो उसे मेरे साथ ही स्थित बना हुआ दिखा दिया है ।। ४ ।। मैं खड़ी होकर रास्ता देख रही हूँ कि शायद मेरा सज्जन इस रास्ते से निकले। कोई आकर मुझे आज मिला दे और मेरे प्रभु से

मेलि मिलावए ॥ हउ जीउ करी तिस विटउ चउ खंनीऐ जो मै पिरी दिखावए ॥ नानक हरि होइ दइआलु तां गुरु पूरा मेलावए ॥ ५ ॥ अंतरि जोरु हउमै तनि माइआ कूड़ी आवै जाइ ॥ सतिगुर का फुरमाइआ मंनि न सकी दुतरु तरिआ न जाइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी सो चलै सतिगुर भाइ ॥ सतिगुर का दरसनु सफलु है जो इछे सो फलु पाइ ॥ जिनी सतिगुरु मंनिआं हउ तिन के लागउ पाइ ॥ नानकु ता का दासु है जि अनदिनु रहै लिव लाइ ॥ ६ ॥ जिना पिरी पिआरु बिनु दरसन किउ त्रिपतीऐ ॥ नानक मिले सुभाइ गुरमुखि इहु मनु रहसीऐ ॥ ७ ॥ जिना पिरी पिआरु किउ जीवनि पिर बाहरे ॥ जां सहु देखनि आपणा नानक थीवनि भी हरे ॥ ८ ॥ जिना गुरमुखि अंदरि नेहु तै प्रीतम सचै लाइआ ॥ राती अतै डेहु नानक प्रेमि समाइआ ॥ ९ ॥ गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ ॥ अनदिनु रहहि अनंदि नानक सहजि समाईऐ ॥ १० ॥ सचा प्रेम पिआरु गुर पूरे ते पाईऐ ॥ कबहू न होवै भंगु नानक हरि गुण गाईऐ ॥ ११ ॥ जिन्हा अंदरि सचा नेहु किउ जीवन्हि पिरी विहूणिआ ॥ गुरमुखि मेले आपि नानक चिरी विछुंनिआ ॥ १२ ॥ जिन कउ प्रेम पिआरु तउ आपे लाइआ करमु करि ॥ नानक लेहु मिलाइ मै जाचिक दीजै नामु हरि ॥ १३ ॥ गुरमुखि हसै गुरमुखि रोवै ॥ जि गुरमुखि करे साई भगति होवै ॥ गुरमुखि होवै सु करे वीचारु ॥ गुरमुखि नानक पावै पारु ॥ १४ ॥ जिना अंदरि नामु निधानु है गुरबाणी वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ तिन बहदिआ उठदिआ कदे न विसरै जि आपि बखसे करतारि ॥ नानक गुरमुखि मिले न विछुड़हि जि मेले सिरजणहारि ॥ १५ ॥ गुर पीरां की चाकरी महां करड़ी सुख सारु ॥ नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु ॥ सतिगुर की सेवै लगिआ भउजलु तरै संसारु ॥ मन चिंदिआ फलु पाइसी अंतरि बिबेक बीचारु ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु ॥ १६ ॥ मनमुख सेवा जो करे दूजै भाइ चितु लाइ ॥ पुतु कलतु कुटंबु है माइआ मोहु वधाइ ॥ दरगहि लेखा मंगीऐ

मेरा मिलाप करा दे। मैं। अपने प्राणों को चार टुकड़े करके उस पर कुर्बान कर दूं जो मुझे मेरा प्रियतम दिखा दे। हे नानक, जब प्रभु दयालु होता है तभी वह पूर्ण गुरु मिलाता है ।। ५ ।। अन्तर्मन में तो अहंकार का जोर है और यह मायावी तन झूठ में ही आता-जाता रहता है। सच्चे गुरु का आदेश तो यह मान नहीं सका इसलिए यह विषम और विकराल भवसागर इससे तैरा नहीं जा सकता। जिस पर अपनी कृपा दृष्टि करे वही सच्चे गुरु के हुकुम में चलता है। सच्चे गुरु का दर्शन ही फलदायक होता है और व्यक्ति जिस चीज की भी इच्छा करता है उसे उसकी इच्छा के अनुरूप फल प्राप्त होता है। जिन्होंने सच्चे गुरु को मान लिया है मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ। नानक तो उनका दास है जो सदैव उस सच्चे गुरु-प्रभु में ही अपनी लौ लगाए रहते हैं ।। ६ ।। जिनके हृदय में प्रियतम का प्यार है वे भला उसके दर्शन के बिना कैसे सन्तुष्ट हो सकते हैं। हे नानक, वह प्रभु स्वाभाविक रूप से ही गुरमुख बनकर मिलता है और यह मन प्रसन्न बना रहता है ।। ७ ।। जिन्हें प्रियतम प्रभु से प्यार है वे प्रियतम के बिना कैसे जी सकते हैं। हे नानक, जब वे प्रभु पति को देख लेते हैं तो आवश्यक रूप से हरे-भरे बने रहते हैं ।। ८ ।। गुरमुख बने हुए जिन लोगों के अन्दर प्रेम है उन्होंने यह प्रेम उस सच्चे प्रियतम प्रभु से लगाया हुआ है। हे नानक, वे रात-दिन प्रेम में लीन बने रहते हैं ।। ९ ।। गुरमुख बनकर ही वह सच्ची प्रीति उत्पन्न होती है जिससे सच्चा प्रियतम प्राप्त किया जाता है। हे नानक, तभी रात-दिन आनन्द बना रहता है और सहजभाव में लीन हुआ जाता है ।। १० ।। सच्चा प्रेम और प्यार पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है। हे नानक, यह सच्चा प्रेम फिर कभी टूटता नहीं और व्यक्ति प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है ।। ११ ।। जिनके अन्दर सच्चा प्रेम है वे प्रियतम से विहीन होकर भला कैसे जीवित रह सकते हैं। हे नानक, गुरमुख व्यक्तियों को जो कि बहुत देर से बिछुड़े हुए थे वह स्वयं अपने से मिला लेता है ।। १२ ।। जिनमें प्रेम प्यार है हे प्रभु, तूने स्वयं ही कृपा करके उन्हें पैदा किया है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, मुझ याचक को अपना नाम प्रदान करके अपने से मिला लो ।। १३।। गुरमुख सरल भाव से ही हँसता और रोता है और वास्तव में गुरमुख जो कुछ भी करता है वह तुम्हारी भक्ति ही होती है। गुरमुख बना हुआ व्यक्ति ही विचारशील होता है और हे नानक, गुरमुख ही उस प्रभु के ओर-छोर को जान पाता है ।। १४ ।। जिन्होंने गुरु की वाणी का चिंतन करके अपने अन्तर्मन में ही प्रभु-नाम के भण्डार को पा लिया है उनके उस सच्चे दरबार में मुख सदैव उज्जवल बने रहते हैं। उन्हें उठते-बैठते कभी भी वह कर्ता प्रभु नहीं भूलता क्योंकि प्रभु ने स्वयं उन पर कृपा कर दी होती है। हे नानक, यदि सृजनहार प्रभु स्वयं अपने से मिला ले तो गुरमुख बना हुआ व्यक्ति फिर कभी उससे बिछुड़ता नहीं ।। १५ ।। गुरु और पीरों-फकीरों की सेवा है तो बहुत कठिन काम परन्तु यह सभी सुखों का सारतत्व भी है। जिस पर प्रभु स्वयं कृपा दृष्टि कर देता है उसका इस सेवा से प्रेम लगा देता है। सच्चे गुरु की सेवा में लगा हुआ जीव संसार भवसागर को पार कर जाता है। अन्तर्मन में विवेक बुद्धि और चिंतन होने से व्यक्ति मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है। हे नानक, सच्चे गुरु से मिलने पर ही दुखों को दूर करने वाले उस प्रभु को प्राप्त किया जाता है ।। १६ ।। मनमुख द्वैतभाव में लगकर जो सेवा करता है उससे उसका पुत्र, स्त्री और परिवार के प्रति माया मोह बढ़ता रहता है। जब प्रभु के दरबार में उससे हिसाब माँगा जाता है तो

कोई अंति न सकी छडाइ ॥ बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ मोह माइआ विछुड़ि सभ जाइ ॥ १७ ॥ गुरमुखि हुकमु मंने सह केरा हुकमे ही सुखु पाए ॥ हुकमो सेवे हुकमु अराधे हुकमे समै समाए ॥ हुकमु वरतु नेमु सुच संजमु मन चिंदिआ फलु पाए ॥ सदा सुहागणि जि हुकमै बुझै सतिगुरु सेवै लिव लाए ॥ नानक क्रिपा करे जिन ऊपरि तिना हुकमे लए मिलाए ॥ १८ ॥ मनमुखि हुकमु न बुझे बपुड़ी नित हउमै करम कमाइ ॥ वरत नेमु सुच संजमु पूजा पाखंडि भरमु न जाइ ॥ अंतरहु कुसुधु माइआ मोहि बेधे जिउ हसती छारु उडाए ॥ जिनि उपाए तिसै न चेतहि बिनु चेते किउ सुखु पाए ॥ नानक परपंचु कीआ धुरि करतै पूरबि लिखिआ कमाए ॥ १९ ॥ गुरमुखि परतीति भई मनु मानिआ अनदिनु सेवा करत समाइ ॥ अंतरि सतिगुरु गुरू सभ पूजे सतिगुर का दरसु देखै सभ आइ ॥ मंनीऐ सतिगुर परम बीचारी जितु मिलिऐ तिसना भुख सभ जाइ ॥ हउ सदा सदा बलिहारी गुर अपुने जो प्रभु सचा देइ मिलाइ ॥ नानक करमु पाइआ तिन सचा जो गुर चरणी लगे आइ ॥ २० ॥ जिन पिरीआ सउ नेहु से सजण मै नालि ॥ अंतरि बाहरि हउ फिरां भी हिरदै रखा समालि ॥ २१ ॥ जिना इक मनि इक चिति धिआइआ सतिगुर सउ चितु लाइ ॥ तिन की दुख भुख हउमै वडा रोगु गइआ निरदोख भए लिव लाइ ॥ गुण गावहि गुण उचरहि गुण महि सवै समाइ ॥ नानक गुर पूरे ते पाइआ सहजि मिलिआ प्रभु आइ ॥ २२ ॥ मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंति होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुचि संजमु करहि अंतरि लोभु विकार ॥ नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै दरगह होइ खुआरु ॥ २३ ॥ सभना रागां विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइ ॥ रागु नादु सभु सचु है कीमति कही न जाइ ॥ रागै नादै बाहरा इनी हुकमु न बूझिआ जाइ ॥ नानक हुकमै बूझै तिना रासि होइ सतिगुर ते सोझी पाइ ॥ सभु किछु

अन्त में उसे कोई छुड़ा नहीं पाता। प्रभु-नाम के बिना सब कुछ दुख रूप है और यह माया मोह दुखदायक है। हे नानक, गुरमुख व्यक्तियों को यह स्पष्ट रूप से दिखाई देने लग जाता है कि जिस माया के साथ मोह किया जाता है उससे पूर्ण रूप से बिछुड़ना ही होता है ।। १७ ।। गुरमुख ही अपने मालिक का हुकुम मानता है और उसके हुकुम में ही सुख प्राप्त करता है। वह उसके हुकुम में ही सेवा करता है हुकुम में ही उस प्रभु की आराधना करता है और हुकुम में ही लीन होकर अन्यों को भी उसमें लीन करता है। उसका व्रत, नियम, स्वच्छता, संयम आदि सब कुछ प्रभु का हुकुम ही है और वह हुकुम में ही मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है। जो हुकुम के रहस्य को जान जाती है वही जीव-स्त्री, सदैव सुहागिन बनी हरती है और अपनी लौ लगाकर सच्चे गुरु का सुमिरन करती है। हे नानक, जिन पर प्रभु कृपा करे उन्हें हुकुम के अन्तर्गत ही वह अपने से मिला लेता है ।। १८ ।। बेचारी मनमुख जीव स्त्री हुकुम को नहीं बूझती और सदैव अहंकार में बनी रहकर ही कर्मकाण्ड करती रहती है। उसका व्रत, नियम, शुद्धता, संयम, पूजा पाखण्ड बनकर रह जाती है और उसके भ्रमों से उसे छुटकारा नहीं मिलता। मनमुख माया और मोह में बिंधा हुआ अन्तर्मन से अशुद्ध होता है और हाथी की तरह मिट्टी ही उड़ाता रहता है। जिसने पैदा किया है उसका वह सुमिरन नहीं करता और उसे यह याद किए बिना भला कैसे सुख प्राप्त कर सकता है। हे नानक, प्रभु ने भी यह प्रपंच प्रारम्भ से ही बनाया हुआ है कि जीव पहले से लिखे हुए के अनुरूप ही आचरण बनाए रखता है ।। १६ ।। गुरमुख बनकर व्यक्ति को मन में समझ आ जाती है जिससे उसका मन सन्तुष्ट हो जाता है और वह प्रतिदिन सेवा करता हुआ उस प्रभु में लीन हो जाता है। जिसके हृदय में गुरु का निवास बना रहता है वह सबका मान-सम्मान करता है और सारी सृष्टि में वह गुरु का ही दर्शन करता है। मैं तो सदैव परम चिंतक उस सच्चे गुरु में ही अपनी श्रद्धा और प्रेम बनाए रखता हूं जिसके मिलाप से सारी भूख-प्यास दूर हो जाती है। मैं अपने गुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूं जो व्यक्ति को सच्चे प्रभु से मिला देता है। हे नानक, जो व्यक्ति गुरु के चरणों में आकर टिक गए हैं उन्होंने प्रभु की कृपा प्राप्त कर ली है ।। २० ।। हे भाई, जिनका प्रेम प्यार प्रभु से बना हुआ है मेरे वे सज्जन सदैव मेरे साथ ही हैं। मैं अन्दर-बाहर इधर-उधर आता-जाता तो अवश्य हूँ परन्तु उस परमात्मा को अपने हृदय में सम्भाल कर रखता हूँ ।। २१ ।। जिन्होंने सच्चे गुरु में ध्यान लगाकर एक मन और पूर्ण एकाग्रता से उस प्रभु का सुमिरन किया है उनके दुख, भूख और सबसे बड़ा अहंकार का रोग समाप्त हो गया है तथा प्रभु में लौ लगाकर वे पवित्र जीवन वाले बन गए हैं। वे सदैव प्रभु का गुणानुवाद करते हुए उसके गुणों में ही लीन हो जाते हैं। हे नानक, पूर्ण गुरु से ही प्रभु प्राप्त होता है और स्वाभाविक रूप से ही वह आ मिलता है ।। २ ।। मनमुख व्यक्ति के अन्तर्मन में माया-मोह तो बना रहता है परन्तु प्रभु-नाम के साथ उसका प्यार नहीं लगता। वह झूठ ही कमाता है, झूठ ही इकट्ठा करता है और झूठ का ही भोजन खाता है। वह विष रूपी माया का धन इकट्ठा करते हुए मर जाता है और उसका सब कुछ किया कराया अन्त में राख बन जाता है। वह धर्म, पवित्रता और संयम आदि का कर्मकाण्ड तो करता रहता है परन्तु उसके अन्तर्मन में लोभ का विकार बना रहता है। हे नानक, मनमुख जो कुछ भी कमाई करता अर्थात आचरण करता है वह वास्तविक रूप से सफल नहीं होता और प्रभु के दरबार में उसे ख्वार होना ही होता है ।। २३ ।। हे भाई, सभी संगीत के रागों में वही राग भला है जिसके माध्यम से प्रभु मन में आ बसता है। वह परम सत्य ही वास्तव में राग और नाद है और उस परम सत्य के मूल्य को आँका नहीं जा सकता। वह प्रभु तो इन रागों और नादों से बहुत ऊपर है ; इन राग और नादों के माध्यम से उस प्रभु के हुकुम को नहीं जाना जा सकता। हे नानक, ये राग-रंग उन्हीं को ठीक बैठता है जो सच्चे गुरु से मति लेकर प्रभु के हुकुम को बूझते हैं। हे भाई, सब कुछ

तिस ते होइआ जिउ तिसै दी रजाइ ॥ २४ ॥ सतिगुर विचि अंम्रित नामु है अंम्रितु कहै कहाइ ॥ गुरमती नामु निरमलो निरमल नामु धिआइ ॥ अंम्रित बाणी ततु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ हिरदै कमलु परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥ नानक सतिगुरु तिन कउ मेलिओनु जिन धुरि मसतकि भागु लिखाइ ॥ २५ ॥ अंदरि तिसना अगि है मनमुख भुख न जाइ ॥ मोहु कुटंबु सभु कूड़ु है कूड़ि रहिआ लपटाइ ॥ अनदिनु चिंता चिंतवै चिंता बधा जाइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई हउमै करम कमाइ ॥ गुर सरणाई उबरै नानक लए छडाइ ॥ २६ ॥ सतिगुर पुरखु हरि धिआइदा सतसंगति सतिगुर भाइ ॥ सतसंगति सतिगुर सेवदे हरि मेले गुरु मेलाइ ॥ एहु भउजलु जगतु संसारु है गुरु बोहिथु नामि तराइ ॥ गुरसिखी भाणा मंनिआ गुरु पूरा पारि लंघाइ ॥ गुरसिखां की हरि धूड़ि देहि हम पापी भी गति पांहि ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभ लिखिआ गुर नानक मिलिआ आइ ॥ जमकंकर मारि बिदारिअनु हरि दरगह लए छडाइ ॥ गुरसिखा नो साबासि है हरि तुठा मेलि मिलाइ ॥ २७ ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ जिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ राम नामु हरि कीरति गाइ करि चानणु मगु देखाइआ ॥ हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ गुरमती जमु जोहि न सकै सचै नाइ समाइआ ॥ सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ जन नानकु नाउ लए तां जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥ २८ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु भ्रमि भूले हउमै साकत दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजणा ॥ २९ ॥ गुरमती हरि हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ गुर सतिगुरि नामु दिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जन नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गुल गोले ॥ ३० ॥

उस प्रभु से ही उत्पन्न हुआ है और जैसी उसकी रज़ा है वैसा ही सब कुछ होता है ।। २४ ।। सच्चे गुरु में ही अमृत रूपी नाम है और उस अमृत नाम का सुमिरन वह स्वयं करता है और अन्यों को भी वह सुमिरन करवाता है। गुरु की शिक्षा से ही प्रभु-नाम की निर्मलता का पता चलता है और व्यक्ति उसी निर्मल नाम का सुमिरन करता है। जीवन का सारतत्व तो अमृत वाणी ही है जो गुरमुख व्यक्तियों के मन में आकर बस जाती है। उनका हृदय रूपी कमल खिल उठता है और उनकी ज्योति परम ज्योति में मिल जाती है। हे नानक, सच्चा गुरु उन्हीं से वह प्रभु स्वयं मिलाता है जिनके माथे के भाग्य लेख प्रारम्भ से ही लिखे होते हैं ।। २५ ।। मनमुख व्यक्ति के अन्तर्मन में तृष्णा की आग लगी रहती है और उसकी भूख मिटती नहीं। वह नहीं जानता कि यह मोह, यह कुटुम्ब सब नाशवान हैं परन्तु वह झूठ में ही लिपटा रहता है। वह हर दिन चिन्ता में ही पड़ा रहता है और चिन्ता में ही बँधा हुआ यहां से चला जाता है। उसका जन्म और मरण दूर नहीं होता तथा वह अहंकार में लीन होकर कामों में लगा रहता है। हे नानक, जो गुरु की शरण में आ जाते हैं उनका उद्धार हो जाता है और गुरु उन्हें छुड़ा लेता है ।। २६ ।। व्यक्ति सत्संगत में सच्चे गुरु की रज़ा में चलकर उस सर्वव्यापी सच्चे गुरु-प्रभु का सुमिरन करता है। सत्संगत में ऐसे व्यक्ति सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं और गुरु अपने से मिलाकर उन्हें प्रभु से मिला देता है। यह संसार विकराल जल से भरा हुआ सागर है और गुरु इसमें जहाज बनकर प्रभु-नाम के माध्यम से जीवों को पार उतार देता है। गुरु के सिक्खों ने उसकी रज़ा को मान लिया होता है और पूर्ण गुरु उन्हें पार उतार देता है। हे प्रभु ऐसे गुरु-सिक्खों की चरणधूलि हमें प्रदान कर ताकि हम पापी भी मुक्ति प्राप्त कर लें। प्रभु ने जिनके माथे पर प्रारम्भ से ही लिख दिया है, हे नानक, गुरु उन्हें स्वयं आकर मिला होता है। गुरु ने यम के दूतों को मारकर नष्ट कर दिया होता है और गुरु ही प्रभु के दरबार में जीव को मुक्ति प्रदान करवाता है। उन गुरसिक्खों को शाबाश है जिनपर प्रभु प्रसन्न होकर स्वयं उनसे मिलाप करता है और फिर अपने में लीन कर लेता है ।। २७ ।। उस पूर्ण गुरु ने प्रभु-नाम का सुमिरन करवाया है जिसने अन्तर्मन के भ्रम को दूर कर दिया। राम नाम रूपी प्रभु की कीर्ति का गायन करके प्रकाश युक्त मार्ग उसने हमें दिखा दिया है। अहंकार को मारकर अब हमारी एक प्रभु में ही लौ लग गई है और हमारे मन में प्रभु-नाम बस चुका है। गुरु की शिक्षा में चलने से यम तो व्यक्ति को देख भी नहीं पाता और जीव प्रभु के सच्चे नाम में लीन बना रहता है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब में कार्यशील बना रहता है और जो उसे अच्छे लगते है उन्हें ही वह नाम में लीन कर देता है। दास नानक तो उसका नाम लेता है तो जीवित बना रहता है और यदि वह उसका नाम नहीं लेता है तो क्षण भर में ही मर जाता है ।। २८ ।। प्रभु से टूटे हुए दुर्जन शाक्त लोगों के मन में अहंकार का रोग है और इस अहंकार में ही भूले हुए वे भटकते रहते हैं। हे नानक, तू साधु और सज्जन रूपी सच्चे गुरु से मिलाप कर ले और इस प्रकार अपने रोग को गँवा ले ।। २९ ।। गुरु की मति में चलकर जीव स्त्री प्रभु का जाप करती रहे, प्रभु के प्रेम में दिन रात आकर्षित बनी रहे तथा प्रभु के प्रेम में ही उसकी चोली रंगी रहे अर्थात अपने जीवन को प्रभु के प्रेम से पूर्ण बना ले। मैंने सारा संसार ढूंढ़ कर देख लिया है ; प्रभु जैसा समर्थ पुरुष मुझे कहीं नहीं मिला। सच्चे गुरु ने प्रभु के नाम को ऐसा पक्का किया है कि अब मन अन्यत्र कहीं भी नहीं डोलता। दास नानक तो प्रभु का दास है और सच्चे गुरु के गुलामों का भी गुलाम है ।। ३० ।।

सलोक महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रते सेई जि मुखु न मोड़ंन्हि जिन्ही सिञाता साई ॥ झड़ि झड़ि पवदे कचे बिरही जिन्हा कारि न आई ॥ १ ॥ धणी विहूणा पाट पटंबर भाही सेती जाले ॥ धूड़ी विचि लुडंदड़ी सोहां नानक तै सह नाले ॥ २ ॥ गुर कै सबदि अराधीऐ नामि रंगि बैरागु ॥ जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू इहु रागु ॥ ३ ॥ जां मूं इकु त लख तउ जिती पिनणे दरि कितड़े ॥ बामणु बिरथा गइओ जनंमु जिनि कीतो सो विसरे ॥ ४ ॥ सोरठि सो रसु पीजीऐ कबहू न फीका होइ ॥ नानक राम नाम गुन गाईअहि दरगह निरमल सोइ ॥ ५ ॥ जो प्रभि रखे आपि तिन कोइ न मारई ॥ अंदरि नामु निधानु सदा गुण सारई ॥ एका टेक अगंम मनि तनि प्रभु धारई ॥ लगा रंगु अपारु को न उतारई ॥ गुरमुखि हरि गुण गाइ सहजि सुखु सारई ॥ नानक नामु निधानु रिदै उरि हारई ॥ ६ ॥ करे सु चंगा मानि दुयी गणत लाहि ॥ अपणी नदरि निहालि आपे लैहु लाइ ॥ जन देहु मती उपदेसु विचहु भरमु जाइ ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु सोई सभ कमाइ ॥ सभु कछु तिस दै वसि दूजी नाहि जाइ ॥ नानक सुख अनद भए प्रभ की मंनि रजाइ ॥ ७ ॥ गुरु पूरा जिन सिमरिआ सेई भए निहाल ॥ नानक नामु अराधणा कारजु आवै रासि ॥ ८ ॥ पापी करम कमावदे करदे हाए हाइ ॥ नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ ॥ ९ ॥ नामु धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति ॥ नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत ॥ १० ॥ खुभड़ी कुथाइ मिठी गलणि कुमंत्रीआ ॥ नानक सेई उबरे जिना भागु मथाहि ॥ ११ ॥ सुतड़े सुखी सवंन्हि जो रते सह आपणै ॥ प्रेम विछोहा धणी सउ अठे पहर लवंन्हि ॥ १२ ॥ सुतड़े असंख माइआ झूठी कारणे ॥ नानक से जागंन्हि जि रसना नामु उचारणे ॥ १३ ॥ म्रिग तिसना पेखि भुलणे वुठे नगर गंध्रब ॥ जिनी सचु अराधिआ नानक मनि तनि फब ॥ १४ ॥ पतित उधारण

श्लोक महला ५ ੧ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उस प्रभु के रंग में वे ही रंगे हुए हैं जिन्होंने उस मालिक को पहचान लिया है और उससे कभी भी मुख नहीं मोड़ते। कच्चे प्यार वाले तो मरते-खपते ही रहते हैं क्योंकि उन्हें वास्तव में प्रेम की विधि ही समझ नहीं आ सकी है ।। १ ।। उस मालिक प्रभु से विहीन होकर रेशम के वस्त्रों को तो आग लगाकर जला देना चाहिए। हे नानक, यदि मेरा मालिक मेरे साथ हो तो मैं धूल में लोटती हुई भी शोभायुक्त बनी रहूँगी ।। २ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से उसकी आराधना की जाती है और प्रभु-नाम के प्यार में सच्चा वैराग्य प्राप्त होता है। हे नानक, यह मारू राग सफल है जिसके माध्यम से पाँचों विकारों के रूप शत्रुओं को जीत लिया गया है ।। ३ ।। हे ब्राह्मण, मुझे तो एक प्रभु ही लाखों जैसा है जिसके द्वार पर तेरे जैसे कितने ही माँगने वाले हैं। हे ब्राह्मण, तेरा जीवन तो व्यर्थ ही चला गया क्योंकि जिसने तुझे बनाया था तूने उसी को भुला दिया है ।। ४ ।। सोरठ के माध्यम से उस नाम रस को पीना चाहिए जो कभी भी फीका नहीं होता। हे नानक, प्रभु-नाम के ही गुणों को यदि गाया जाए तो प्रभु के दरबार में निर्मल शोभा प्राप्त होती है ।। ५ ।। जिन्हें प्रभु स्वयं बचा लेता है उन्हें कोई भी मार नहीं पाता। ऐसे व्यक्तियों के अन्तर्मन में प्रभु-नाम का भण्डार होता है और वे सदैव गुणों की सम्भाल करते हैं। उनका आसरा वह एक अगम्य प्रभु होता है जिसे उन्होंने तन मन में धारण किया होता है। उनको प्रेम का अपार रंग लगा होता है जिसे कोई भी उतार नहीं पाता। गुरमुख व्यक्ति प्रभु के गुण गाकर सहज भाव के माध्यम से सुख को अपने अन्दर सम्भाले रहते हैं। हे नानक, प्रभु-नाम के भण्डार को वे हृदय में और गले में माला के रूप में धारण किए रहते हैं ।। ६ ।। जो प्रभु करता है उसे भला करके जानो और द्वैतभाव की गणनाओं को त्याग दो। हे प्रभु, तू अपनी कृपादृष्टि से हमें निहाल कर दे और हमें अपने साथ लगा ले। अपने सेवकों को उपदेश और मति प्रदान करो ताकि उनके अन्दर का भ्रम समाप्त हो जाए। जो भाग्यलेख प्रारम्भ से ही लिखा है सब उसी के अनुसार आचरण करते हैं। सब कुछ तो उस प्रभु के हाथ में ही है और जीव के लिए तो अन्य कोई भी ठौर-ठिकाना नहीं है। हे नानक, सुख और आनन्द तभी होता है जब प्रभु की रजा मान ली जाती है ।। ७ ।। जिन्होंने पूर्ण गुरु (प्रभु) का सुमिरन किया है वे ही निहाल हो सके हैं। हे नानक, प्रभु के नाम की आराधना करनी चाहिए जिससे किया हुआ कार्य सफल होता है ।। ८ ।। पापी लोग धन्धों में लगे रहते हैं और हाय-हाय करते रहते हैं। हे नानक, जैसे मथनी दही का मन्थन करती है ऐसे ही धर्मराज भी उन पापियों को मथ देता है अर्थात नष्ट कर देता है ।। ६ ।। जो सज्जन प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं उन्होंने इस जीवन रूपी पदार्थ को जीत लिया होता है। हे नानक, वे धर्मों की बातचीत ऐसे करते हैं कि सारे संसार को पवित्र कर देते हैं ।। १० ।। मैं तो बुरी सलाह देने वालों की बातों को मीठी बातें जानकर बहुत बुरे स्थान में फँस गई हूँ। हे नानक, उद्धार उन्हीं का होता है जिनके माथे पर भाग्य लेख लिखे रहते हैं ।। ११ ।। जो अपने मालिक के प्रेम में रंगे हैं वे ही सुख से सोते हैं। अपने मालिक के प्रेम से विछुड़े हुए लोग आठों प्रहर चीख-पुकार लगाए रहते हैं ।। १२ ।। अनेकों लोग तो अज्ञान रूपी झूठी माया की नींद में ही सोए हुए हैं। हे नानक, जो अपनी जीभ से प्रभु-नाम का उच्चारण करते हैं वे ही वास्तव में जागे हुए होते हैं ।। १३ ।। झूठी गन्धर्व नगरी को देखकर और उसकी मृगतृष्णा में ही पड़े हुए लोग भटक रहे हैं। जिन्होंने सत्य की आराधना की है हे नानक, वे ही तन से और मन से सुन्दर लगते हैं ।। १४ ।। पतितों का उद्धार करने वाला

पारब्रहमु संम्रथ पुरखु अपारु ॥ जिसहि उधारे नानका सो सिमरे सिरजणहारु ॥ १५ ॥
दूजी छोडि कुवाटड़ी इकस सउ चितु लाइ ॥ दूजै भावीं नानका वहणि लुढ़ंदड़ी
जाइ ॥ १६ ॥ तिहटड़े बाजार सउदा करनि वणजारिआ ॥ सचु वखरु जिनी
लदिआ से सचड़े पासार ॥ १७ ॥ पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारि ॥
नानक हरि बिसराइ कै पउदे नरकि अंध्यार ॥ १८ ॥ माइआ मनहु न वीसरै
मांगै दंमां दंम ॥ सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ॥ १९ ॥ तिचरु
मूलि न थुड़ीदो जिचरु आपि क्रिपालु ॥ सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि
खरचि धनु मालु ॥ २० ॥ खंभ विकांदड़े जे लहां घिंनां सावी तोलि ॥ तंनि
जड़ांई आपणै लहां सु सजणु टोलि ॥ २१ ॥ सजणु सचा पातिसाहु सिरि साहां
दे साहु ॥ जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभनां दा वेसाहु ॥ २२ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ९ ॥ गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥ कहु
नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥ १ ॥ बिखिअन सिउ काहे
रचिओ निमख न होहि उदासु ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की
फास ॥ २ ॥ तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक
भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥ ३ ॥ बिरधि भइओ सूझै नही कालु
पहूचिओ आनि ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥ ४ ॥
धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु संगी नही
नानक साची जानि ॥ ५ ॥ पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥
कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥ ६ ॥ तनु धनु जिह तो
कउ दीओ तां सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब किउ
डोलत दीन ॥ ७ ॥ तनु धनु स्मपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥
कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥ ८ ॥ सभ सुख दाता
रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति

वह परब्रह्म अपार और समर्थ सर्वव्यापक प्रभु है। हे नानक, वह जिसका उद्धार कर देता है वह ही उस सृजनहार का सुमिरन करता रहता है ।। १५ ।। हे जीव, तू द्वैतभाव के मार्ग को छोड़ दे और उस एक प्रभु में ही अपने चित्त को लगा। हे नानक, जो द्वैतभाव में पड़ी हुई है वह तो मानो संसार रूपी नदी में ही बहती चली जा रही है ।। १६ ।। यह व्यापारी जीव त्रिगुणात्मक बाजार में सौदा लेता फिर रहा है अर्थात माया में जीवन का कार्य व्यवहार चला रहा है परन्तु सच्चे पंसारी अथवा व्यापारी वे ही हैं जिन्होंने सत्य रूपी सामान को यहां से लाद लिया है ।। १७ ।। प्रेम का मार्ग जो नहीं जानती वह गँवार भूली भटकती फिर रही है। हे नानक, प्रभु को भुलाकर जीव अंधेरे नरक को ही प्राप्त करते हैं ।। १८ ।। जीव के मन से धन-सम्पदा कभी भी नहीं भूलती और वह हर साँस के साथ धन ही धन माँगता जाता है। वह प्रभु उसे याद ही नहीं आता परन्तु हे नानक, यह शायद उसके भाग्य में ही नहीं है ।। १६ ।। जब तक प्रभु स्वयं कृपालु है तब तक जीवन में जरा सी भी कमी नहीं आती। हे बाबा नानक, यह शब्द ऐसा अक्षय भण्डार है जिसमें से धन माल लेकर जीव खाता-खर्चता रह सकता है ।। २० ।। यदि प्रभु तक ले जाने वाले पंख बिकते हुए मिल जाएँ तो मैं अपने सारे शरीर को उन पंखों के बराबर मानकर और अर्पण करके उन्हें ले लूं। मैं उन पंखों को अपने शरीर पर जड़कर उड़ते हुए उस सज्जन प्रभु को खोजते-खोजते खोज निकालूं अर्थात उस सज्जन प्रभु का मिलाप हासिल कर लूं ।। २१ ।। हे भाई, वास्तविक मित्र वह सदैव सत्य रूप में स्थिर बना रहने वाला सबसे श्रेष्ठ प्रभु बादशाह है। वह प्रभु सम्राट ही सभी जीवों का आसरा है और उसके पास बैठने से ही शोभा प्राप्त होती है ।। २२ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि

श्लोक महला ६ ।। तूने प्रभु का गुणानुवाद नहीं किया और अपने जीवन को निरर्थक बना दिया है। हे नानक, अपने मन से कह कि वह प्रभु का सुमिरन उसी प्रकार करता रहे जैसे मछली जल को सदैव याद रखे रहती है ।। १ ।। विषयों में तू क्यों लीन बना हुआ है और एक क्षण भर के लिए भी उनसे परे नहीं होता। हे नानक, अपने मन से कह कि वह प्रभु का भजन करे जिससे यम का फंदा गले में नहीं पड़ता ।। २ ।। जवानी तो ऐसे ही चली गई और अब हे जीव, बुढ़ापे ने तेरे तन को जीन लिया है। हे नानक, अपने मन से कह कि वह प्रभु का सुमिरन करे क्योंकि आयु तो बीतती जा रही है ।। ३ ।। तुझे पता नहीं लग रहा कि तू वृद्ध हो चुका है और काल तेरे पास ही आ पहुंचा है। हे नानक, तू बावले जीव से कह कि अभी भी तू भगवान का भजन क्यों नहीं करता ।। ४ ।। धन, स्त्री, सम्पत्ति आदि सब को जिन्होंने अपना करके माना हुआ है, हे नानक, वे इस बात को सत्य समझ लें कि इनमें से कुछ भी साथी बनने वाला नहीं है ।। ५ ।। अनाथों का नाथ प्रभु पतितों का उद्धार करने वाला और भय को दूर करने वाला है। हे नानक, तू कह दे कि केवल उसी प्रभु को ही इस प्रकार जानो कि वह सदैव तुम्हारे साथ बस रहा है ।। ६ ।। तुझे जिसने तन और धन प्रदान किया है तूने उसमें अपना प्रेम नहीं लगाया। हे नानक, तू कह दे कि हे बावले व्यक्ति अब तू धनहीन और दीन होने पर क्यों घबरा रहा है ।। ७ ।। तन, धन, सम्पत्ति और जिसने सुन्दर घर तथा अनेकों सुख दिए हैं, हे नानक, तू कह दे कि हे मेरे मन, तू उस राम के नाम का सुमिरन क्यों नहीं करता है ।। ८ ।। सभी सुखों को देने वाले परमात्मा के अलावा अन्य कोई नहीं है। हे नानक, अपने मन को सुना कर कह दे कि केवल उस प्रभु के सुमिरन से ही मुक्ति प्राप्त

होइ ॥ ९ ॥ जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥ १० ॥ पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥ ११ ॥ घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥ १२ ॥ सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥ १३ ॥ उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ १४ ॥ हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ १५ ॥ भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ १६ ॥ जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥ १७ ॥ जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥ १८ ॥ जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥ १९ ॥ भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥ २० ॥ जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥ २१ ॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥ २२ ॥ जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥ २३ ॥ निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥ २४ ॥ जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥ २५ ॥ प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥ २६ ॥ जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥ २७ ॥ माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥ २८ ॥ जो प्रानी निसि

होगी ।। ६ ।। जिसके सुमिरन से मुक्ति प्राप्त होती है हे मेरे मित्र, तू उसी का सुमिरन कर। हे नानक, तू अपने मन को सुना कर कह दे कि यह आयु निरन्तर घटती जा रही है ।। १० ।। हे चतुर और सुजान लोगो, इस बात को जान लो कि पाँच तत्वों वाला यह तन उस प्रभु ने ही बनाया है। हे नानक, यह जिससे उत्पन्न हुआ है इस तथ्य को मान लो कि यह उसी में ही लीन होगा ।। ११ ।। सन्तजनों ने यह पुकार-पुकार कर कहा है कि प्रत्येक शरीर में वह प्रभु बसता है। हे नानक, तू अपने मन से कह दे कि उस प्रभु का सुमिरन कर जिससे तू संसार सागर से पार उतर जाएगा ।। १२ ।। जिसे सुख, दुख, लोभ, मोह और अभिमान स्पर्श भी नहीं कर पाते, हे नानक, मन को सुना दे कि ऐसा व्यक्ति ही प्रभु का प्रतिरूप है ।। १३ ।। प्रशंसा, निन्दा जिसे प्रभावित नहीं करती और जिसके लिए लोहा तथा सोना एक समान हैं, हे नानक, मन को सुना कर कह दे कि ऐसे व्यक्ति को मुक्त हो चुका मानना चाहिए ।। १४ ।। हर्ष और शोक जिसे नहीं होता और शत्रु तथा मित्र जिसे समान नज़र आते हैं, हे नानक, मन को सुना कर कह दे कि ऐसा व्यक्ति ही मुक्त हो चुका जाना जाता है ।। १५ ।। जो व्यक्ति किसी को भय नहीं देता और ना ही किसी का भय मानता है हे नानक, मन को सुनाते हुए कह दे कि उसे ही ज्ञानवान कहा कर ।। १६ ।। जिसने समस्त प्रकार के विकारों के विष को त्याग दिया है और इन सबके प्रति वैराग्यवान त्यागी बन गया है हे नानक, मन को सुनाकर कह दे कि ऐसे व्यक्ति के माथे पर ऐसे ही भाग्य लेख प्रभु की ओर से लिखे हुए हैं ।। १७ ।। जिसने माया और मैं-मेरी की भावना को त्याग दिया है तथा सब विकारों के प्रति उदासीन हो गया है, हे नानक, मन को सुनाकर कह दे कि ऐसे व्यक्ति के हृदय में ही ब्रह्म का निवास होता है ।। १८ ।। जिस व्यक्ति ने अहंकार को त्यागकर उस कर्ता प्रभु को पहचान लिया है हे नानक, तू मन को बता दे कि वह इस तथ्य को सत्य मान ले कि ऐसा व्यक्ति ही मुक्त व्यक्ति होता है ।। १६ ।। इस कलियुग में प्रभु का नाम ही भय का नाश करने वाला और दुर्मति को दूर करने वाला है। हे नानक, जो रात दिन उसका सुमिरन करता है उसके सभी कार्य सफल हो जाते हैं ।। २० ।। जीभ से प्रभु के गुणों का सुमिरन करते रहो और कानों से हरि नाम को सुनते रहो। हे नानक, मन को सुनाकर कह दे कि ऐसा करने से तुझे यम के निवास अर्थात नरकों में नहीं जाना पड़ेगा ।। २१ ।। जो प्राणी मैं-मेरी की भावना को तथा लोभ-मोह और अहंकार को त्याग देता है हे नानक, तू बता दे कि वह स्वयं तो पार उतर ही जाता है अन्य कईयों का भी उद्धार कर देता है ।। २२ ।। जैसे सपने और प्रत्यक्ष देखने में अन्तर होता है हे जीव, तू इस संसार को ऐसा ही समझ। हे नानक, इसमें प्रभु के बिना कुछ भी सच्चा नहीं है ।। २३ ।। प्राणी दिन रात धन-सम्पदा के लिए सदैव भटकता रहता है और उसकी नीयत सदैव डोलती रहती है। हे नानक, करोड़ों में कोई बिरला ही होगा जिसके हृदय में प्रभु का निवास बना रहता है ।। २४ ।। जिस प्रकार जल पर बुलबुला सदैव बनता और नष्ट होता रहता है, हे नानक, तू कह दे कि हे मेरे मित्रो, इस बात को सुन लो कि यह संसार की रचना भी उस बुलबुले के समान ही है ।। २५ ।। अभिमान और धन-सम्पत्ति में अन्धा होकर यह प्राणी कभी भी परमात्मा के प्रति सावधान नहीं बनता। हे नानक, तू कह दे कि प्रभु के भजन के बिना ऐसे व्यक्तियों के गले में यम का फन्दा पड़ा ही रहता है ।। २६ ।। यदि तू चिरन्तन सुख को चाहता है तो परमात्मा की शरण को पकड़ ले। हे नानक, तू मन को सुना कर कह दे कि यह मनुष्य शरीर बहुत ही दुर्लभ पदार्थ है ।। २७ ।। मूर्ख और अनजान लोग धन-सम्पदा के लिए भाग दौड़ लगाए रहते हैं। हे नानक, तू कह दे कि प्रभु के भजन के बिना सारा जीवन व्यर्थ ही व्यतीत होता जाता है ।। २८ ।। जो व्यक्ति रात दिन

दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥ २९ ॥ मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥ ३० ॥ प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥ ३१ ॥ सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥ ३२ ॥ जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥ कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥ ३३ ॥ जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥ ३४ ॥ बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥ ३५ ॥ करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥ नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥ ३६ ॥ मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥ ३७ ॥ नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥ ३८ ॥ जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥ ३९ ॥ जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥ ४० ॥ झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥ इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥ ४१ ॥ गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥ ४२ ॥ जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥ ४३ ॥ एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥ ४४ ॥ सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इकु चिति ॥ ४५ ॥ तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥ ४६ ॥ सिरु कंपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन

उस प्रभु का सुमिरन करता है उसे प्रभु का रूप ही जाना जाता है। हे नानक, इस तथ्य को तू सत्य समझ ले कि प्रभु के सेवक और प्रभु में कोई अन्तर नहीं होता ।। २६ ।। यदि व्यक्ति का मन माया में फँसा है और प्रभु का नाम उसे भूला हुआ है तो हे नानक, तू कह दे कि प्रभु सुमिरन से विहीन यह जीवन किस काम का है ।। ३० ।। यह प्राणी माया के अहंकार में अन्धा होकर उस प्रभु का सुमिरन नहीं करता है। हे नानक, तू बता दे कि प्रभु के सुमिरन के बिना ऐसे व्यक्ति पर यम का फन्दा जरूर ही कसता जाएगा ।। ३१ ।। सुख में तो बहुत से साथी बन जाते हैं परन्तु दुखों में कोई संगी साथी नहीं रहता, हे नानक, मन से कह दे कि तू प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि यही अन्त में सहायता करने वाला है ।। ३२ ।। जन्मों-जन्मों में मैं भटकता रहा हूँ परन्तु यम का भय मुझमें से मिट नहीं सका। हे नानक, तू मन को कह दे कि प्रभु का ही सुमिरन कर जिससे तू अभय पद में निवास कर सकेगा ।। ३३ ।। मैंने अनेकों प्रयत्न किए परन्तु मेरे मन का अभिमान मिट नहीं सका। हे नानक, यह जीव दुर्मति में ही फँसा हुआ है; हे प्रभु, इसकी रक्षा कर लो ।। ३४ ।। बचपन, जवानी और बुढ़ापा, ये तीन अवस्थाएँ जीवन की जानी जाती हैं परन्तु हे नानक, तू कह दे कि प्रभु के सुमिरन के बिना ये सभी व्यर्थ ही मानी जाती हैं ।। ३५ ।। जो तूने करना था वह तो तूने किया ही नहीं और तू लोभ के फन्दे में पड़ा रहा है। हे नानक, अब तो समय आगे निकल गया और तू अज्ञानी बना अब क्यों रो रहा है ।। ३६ ।। हे मित्र, मेरा मन माया में लीन बना हुआ है और उसमें से निकलता ही नहीं। हे नानक, यह वैसा ही है कि जैसे दीवार पर बनाई हुई मूर्ति दीवार को छोड़ती ही नहीं है ।। ३७ ।। व्यक्ति चाहता कुछ और है तथा हो कुछ और ही जाता है। हे नानक, वह ठगा हुआ देखता ही रह जाता है और उसके गले में मौत का फन्दा आ पड़ता है ।। ३८ ।। सुख की कोशिशें तो बहुत की गई परन्तु दुखों के लिए कोई भी प्रयत्न नहीं करता अर्थात दुखों को रोकने का प्रयत्न कोई नहीं करता। हे नानक, तू मन को सुनाकर कह दे कि जो प्रभु को अच्छा लगता है वास्तव में वही होता है ।। ३६ ।। सारा संसार भिखारियों की तरह भटक रहा है, परन्तु सबका दाता वह एक परमात्मा ही है। हे नानक, तू मन से कह दे कि केवल उस प्रभु का ही सुमिरन करे जिससे तेरी सभी कामनाएँ पूरी होंगी ।। ४० ।। झूठा ही अभिमान क्यों कर रहा है क्योंकि यह संसार तो सपने की तरह जाना जाता है। नानक ने तो विस्तार पूर्वक यह बता दिया है कि सांसारिक पदार्थों में से तेरा तो कुछ भी नहीं है ।। ४१ ।। तू इस शरीर का अभिमान करता है परन्तु हे मेरे मित्र, यह क्षण भर में विनष्ट हो जाएगा। हे नानक, जिस प्राणी ने भी प्रभु का गुणानुवाद किया है वास्तव में उसी ने सारे संसार को जीत लिया है ।। ४२ ।। जिसके हृदय में प्रभु-नाम का सुमिरन है उस व्यक्ति को ही मुक्त मानना चाहिए। हे नानक, इस बात को सत्य मानो कि ऐसे व्यक्ति और प्रभु में कोई अन्तर नहीं होता ।। ४३ ।। जिस प्राणी के मन में केवल एक परमात्मा की भक्ति नहीं है, हे नानक, उसके शरीर को तो सूअर और कुत्ते का शरीर ही समझना चाहिए ।। ४४ ।। कुत्ता जिस प्रकार अपने मालिक का घर कभी नहीं छोड़ता, हे नानक, उसी प्रकार एकाग्र मन और चित्त के साथ उस प्रभु का सुमिरन करते रहो ।। ४५ ।। तीर्थ, व्रत और दान आदि करके जो मन में अभिमान बनाए रहता है, हे नानक, उसके ये सभी कर्म उसी प्रकार निष्फल हो जाते हैं जैसे हाथी को नहलाना व्यर्थ साबित होता है ।। ४६ ।। सिर कांपने लगा है, पाँव डगमगाने लगे हैं और आँखों की रोशनी समाप्त हो गई है। हे नानक, तू बता दे कि व्यक्ति की यह स्थिति हो गई है परन्तु फिर भी वह प्रभु के रस में लीन नहीं होता

॥ ४७ ॥ निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥ ४८ ॥ जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥ ४९ ॥ रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥ ५० ॥ चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥ इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥ ५१ ॥ जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥ नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥ ५२ ॥ दोहरा ॥ बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥ ५३ ॥ बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥ नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥ ५४ ॥ संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥ कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥ ५५ ॥ नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥ कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥ ५६ ॥ राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥ जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥ ५७ ॥ १ ॥

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ १ ॥ सलोक महला ५ ॥ तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ १ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

राग माला ॥ राग एक संगि पंच बरंगन ॥ संगि अलापहि आठउ नंदन ॥ प्रथम राग भैरउ वै

।। ४७ ।। मैंने सारे संसार को अपना समझा हुआ था परन्तु यहां कोई भी किसी का नहीं है। हे नानक, यहां केवल एक प्रभु की भक्ति ही स्थिर बनी रहने वाली है इसलिए केवल उसे ही मन में बसाए रखो ।। ४८ ।। हे मित्रो, इस बात को जान लो कि संसार की यह रचना सदैव बनी रहने वाली नहीं है। नानक का कथन है कि यह उसी प्रकार स्थिर नहीं रहती जैसे रेत की दीवार स्थिर नहीं रह सकती ।। ४६ ।। राम और रावण जिनका बहुत बड़ा परिवार था उन्हें भी यहां से जाना पड़ा है। हे नानक, तू कह दे कि यहां कुछ भी स्थिर नहीं है और यह संसार सपने की तरह है ।। ५० ।। चिन्ता तो उसकी की जाए यदि कोई अनहोनी बात घटने वाली हो। हे नानक, संसार के इस मार्ग पर तो कुछ भी स्थिर नहीं है ।। ५१ ।। जो पैदा हुआ है वह आज अथवा कल विनष्ट हो जाएगा। हे नानक, तू सारे जंजालों को छोड़कर प्रभु का गुणानुवाद कर ले ।। ५२ ।। दोहा ।। सांसारिक बन्धनों में पड़े हुए व्यक्ति का बल अन्ततः समाप्त हो जाता है और फिर उसके पास कोई उपाय नहीं बचता। हे नानक, तू कह कि हे प्रभु अब तेरा ही आसरा है और जैसे हाथी को घड़ियाल से बचाने के लिए तूने उसकी सहायता की थी वैसे ही मेरी भी सहायता कर ।। ५३ ।। हे भाई, जब व्यक्ति के अन्दर आध्यात्मिक बल पैदा होता है तो सभी उपाय कारगर हो जाते हैं। हे नानक, तू प्रभु से कह कि सब कुछ तुम्हारे ही हाथ में है और वास्तविक सहायता तुम ही करते हो ।। ५४ ।। अंतिम समय में सभी मित्र छोड़ जाते हैं और कोई भी साथ नहीं निभाता। हे नानक, तू बता दे कि ऐसी विपत्ति में केवल एक प्रभु का ही आसरा और सहारा होता है ।। ५५ ।। केवल प्रभु का नाम, साधु स्वभाव और गुरु के रूप में परमात्मा ही साथ बना रहता है। हे नानक, तू बता दे कि इस संसार में भला किस-किस ने गुरु के उपदेश का सुमिरन (और उसके अनुरूप आचरण) किया है ।। ५६ ।। हे प्रभु, जिस व्यक्ति ने भी तेरा वह नाम अपने हृदय में बसाया है जिसके बराबर अन्य कोई नहीं है; उसी नाम के सुमिरन से उसके संकट दूर हो जाते हैं और उस व्यक्ति को तुम्हारा दर्शन प्राप्त हो जाता है ।। ५७ ।। १ ।।

मुंदावणी (पहेली-आध्यात्मिक आनन्द देने वाली पहेली) महला ५ ।।

(गुरु ग्रन्थ सहिब रूपी) थाल में सत्य, सन्तोष और विचार नामक तीन वस्तुएँ परोसी गईं हैं। इन तीनों के आधार में सबको आसरा देने वाला प्रभु का अमृत नाम स्थित किया गया है। इन तीनों को जो चखता है और आनन्दित होकर खाता है उसका उद्धार हो जाता है। प्रभु का अमृत नाम रूपी पदार्थ तो त्यागा ही नहीं जा सकता और इसे सदैव ही अपने हृदय में सम्भाल कर रखना चाहिए। हे नानक, प्रभु के चरणों में लगकर घोर अंधकार वाला यह संसार सागर तैरा जा सकता है और सब तरफ परमात्मा का प्रसार ही दिखाई देने लग जाता है ।। १ ।। श्लोक महला ५ ।। तेरे किए हुए उपकारों को मैंने नहीं जाना है परन्तु मुझे तूने सब प्रकार से योग्य बनाया है। मुझ गुणविहीन में कोई भी गुण नहीं है परन्तु फिर भी तूने स्वयं ही मुझ पर दया दिखाई है। तूने दया दिखाई और मुझ पर तुम्हारी कृपा हो गई, तभी मुझे मेरा मित्र सच्चा गुरु मिल गया है। हे नानक, जब सच्चे गुरु से मुझे प्रभु-नाम प्राप्त होता है तो मैं आध्यात्मिक तौर से जीवित बना रहता हूँ और मेरा तन और मन हरा-भरा बनकर खिला रहता है ।। १ ।।

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।। राग माला ।। एक राग के साथ उसकी पाँच स्त्रियाँ हैं तथा उनके साथ उनके आठों पुत्र भी गायन करते हैं। ऐसा पहला राग गायक लोग भैरव को

करही ॥ पंच रागनी संगि उचरही ॥ प्रथम भैरवी बिलावली ॥ पुंनिआकी गावहि बंगली ॥ पुनि असलेखी की भई बारी ॥ ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ पंचम हरख दिसाख सुनावहि ॥ बंगालम मधु माधव गावहि ॥ १ ॥ ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भांति ॥ असट पुत्र भैरव के गावहि गाइन पात्र ॥ १ ॥ दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ संगि रागनी पाचउ थापहि ॥ गोंडकरी अरु देवगंधारी ॥ गंधारी सीहुती उचारी ॥ धनासरी ए पाचउ गाई ॥ माल राग कउसक संगि लाई ॥ मारू मसतअंग मेवारा ॥ प्रबलचंड कउसक उभारा ॥ खउखट अउ भउरानद गाए ॥ असट मालकउसक संगि लाए ॥ १ ॥ पुनि आइअउ हिंडोलु पंच नारि संगि असट सुत ॥ उठहि तान कलोल गाइन तार मिलावही ॥ १ ॥ तेलंगी देवकरी आई ॥ बसंती संदूर सुहाई ॥ सरस अहीरी लै भारजा ॥ संगि लाई पांचउ आरजा ॥ सुरमानंद भासकर आए ॥ चंद्रबिंब मंगलन सुहाए ॥ सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ गावहि सरस बसंत कमोदा ॥ असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ पुनि आई दीपक की बारी ॥ १ ॥ कछेली पटमंजरी टोडी कही अलापि ॥ कामोदी अउ गूजरी संगि दीपक के थापि ॥ १ ॥ कालंका कुंतल अउ रामा ॥ कमलकुसम चंपक के नामा ॥ गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ असट पुत्र दीपक के जाना ॥ १ ॥ सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ पांचउ संगि बरंगन लावहि ॥ बैरारी करनाटी धरी ॥ गवरी गावहि आसावरी ॥ तिह पाछै सिंधवी अलापी ॥ सिरीराग सिउ पांचउ थापी ॥ १ ॥ सालू सारग सागरा अउर गोंड गंभीर ॥ असट पुत्र स्रीराग के गुंड कुंभ हमीर ॥ १ ॥ खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ पांचउ संगि बरंगन लावहि ॥ सोरठि गोंड मलारी धुनी ॥ पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ मेघ राग सिउ पांचउ चीनी ॥ १ ॥ बैराधर गजधर केदारा ॥ जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ पुनि गावहि संकर अउ सिआमा ॥ मेघ राग पुत्रन के नामा ॥ १ ॥ खसट राग उनि गाए संगि रागनी तीस ॥ सभे पुत्र रागंन के अठारह दस बीस ॥ १ ॥ १ ॥

कहते हैं जिसके साथ उसकी पाँचों रागिनियों का उच्चारण होता है। भैरव की पहली रागिनी भैरवी है फिर बिलावली है और फिर पुण्या और बंगली आती है। इनके बाद असलेखी की बारी आती है और इस प्रकार भैरव की ये पाँचों स्त्रियाँ हैं। भैरव के आठों पुत्र भी अपना गायन सुनाते हैं और ये हैं पंचम, हरख, दिसाख, बंगालम, मधु, माधव ।।१।। ललित और बिलावलु, ये सब अपने-अपने तरीकों से गाए जाते हैं। इस प्रकार भैरव के इन आठों पुत्रों का, पात्र गायक गायन करते हैं ।। १ ।। दूसरा राग मालकौंस कहा जाता है जिसके साथ उसकी पाँच रागिनियाँ स्थापित की हुई हैं। ये हैं गोडकरी और देवगान्धारी, गान्धारी, सीहुति और धनासरी जो पाँचों गाई जाती हैं। ये मालकौंस के साथ लगी हुई हैं। मारू, मस्तअंग, मेवारा, प्रबलचंड, कौसक, उभारा, खौखट और भौरानद, मालकौंस के आठ पुत्र उसके साथ लगे हुए हैं ।। १ ।। इसके बाद हिंडोल आता है जिसकी पाँच स्त्रियां (रागिनियाँ) और आठ पुत्र हैं जो तान उठाते हुए किल्लोल करते हैं और स्वर मिलाकर गायन किए जाते हैं ।। १ ।। हिंडोल के संग लगी हुई उसकी पाँच स्त्रियाँ हैं तेलंगी, देवकरी, बसन्ती, संदूर और सहसअहीरी । सुरमानन्द, भास्कर, चन्द्रबिम्ब, मंगलन, सरसबान, बिनोद, बसन्त और कामोद शोभायुक्त बने रहने वाले आठ पुत्रों पर हिंडोल सवारी करता है। इसके बाद दीपक की बारी आती है ।। १ ।। कछेली, पटमंजरी और टोड़ी आलाप लेती है। कामोदी और गुजरी भी दीपक राग की रागिनियाँ हैं ।। १ ।। दीपक राग के आठ पुत्र इस प्रकार जाने जाते हैं - कालंका, कुन्तल, रामा, कमलकुसुम, चम्पक, गौरा, कानड़ा और कल्याना नामों वाले दीपक के आठ पुत्र जाने जाते हैं ।। १ ।। विद्वान लोग मिलकर सिरी राग का गायन करते हैं और इसके साथ इसकी पाँचों स्त्रियों को भी लगाते हैं। ये हैं - बैराड़ी, करनाटी, गवरी, आसावरी और इसके पीछे सिन्धवी का आलाप होता है। इस प्रकार ये पाँचों श्री राग के साथ स्थित बनी रहती हैं ।। १ ।। सिरी राग के आठ पुत्र हैं :- सालू, सारग, सागरा, गोड, गम्भीर, गुण्ड, कुम्भ और हमीर। विद्वान गायक छठवाँ राग मेघ राग गाते हैं और उसके साथ उसकी पाँचों स्त्रियों को भी लगाते हैं। ये रागिनियाँ हैं :- सोरठ, गोड, मलारी, आसा और सूहओ। मेघराग के आठ पुत्रों के नाम हैं - बैराधर, गजधर, केदारा, जबलीधर, नट, जलधारा संकर और श्यामा ।। १ ।। इस प्रकार विद्वानों ने छः रागों का गायन किया है और इन छः रागों के साथ उनकी तीस रागिनियाँ हैं। सभी रागों के पुत्रों की संख्या अठारह जमा दस बीस अर्थात अड़तालीस है और इस प्रकार इन सबका (६+३०+४८) जोड़ चौरासी बनता है ।। १ ।। १ ।।

परिशिष्ट १

बारह माह तुखारी

सामान्य काव्य में 'बारह मासा' लिखने की भारत में एक लम्बी परम्परा रही है परन्तु गुरु ग्रंथ साहिब में आध्यात्मिक दृष्टि से दो 'बारह माह' का संकलन हुआ है। इस अनुवाद कार्य की पहली सैंची (जिल्द) में पृष्ठ १३३ से १३६ तक माझ राग में गुरु अरजन देव जी द्वारा बारह माह है जो सिक्ख, जगत में इतना प्रचलित है कि हर देसी महीने के पहले दिन उसका पाठ प्रत्येक गुरुद्वारे में किया जाता है। गुरु नानक द्वारा रचित यह बारह माह राग तुखारी में अंकित है। इसी प्रकार की अन्य रचनाएं सात वारों तिथियों और ऋतुओं आदि से संबंधित भी गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित हैं जिन सब में इस तथ्य पर बल दिया गया है कि कोई महीना अथवा कोई दिन विशेष पवित्र अथवा अपवित्र नहीं है अपितु वह दिन और वह घड़ी पवित्र एवं आनन्ददायक है जिसमें प्रभु-नाम का स्मरण बना रहे।

इस रचना को आमतौर पर गुरु नानक देव जी की अंतिम रचना माना जाता है जिसका उच्चारण उन्होंने ननकाना (तलवंडी) से आकर नए बसाए करतारपुर में किया था। इस रचना में सिक्ख जीवन के उस आध्यात्मिक आयाम का वर्णन है जिसमें व्यक्ति पूर्ण रूप से क्रियाशील बना रह कर सांसारिक व्यवहार को ऊंचाईयों तक ले जाने के उद्यम में लगा रहने के नाते प्रकृति की गतिशीलता के साथ समन्वित होने के लिए सदैव ही खुले मन मे साथ तैयार बना रहता है। इस रचना से यह भी पता लगता है कि गुरु ग्रंथ साहिब में बेशक प्रकृति के और समय के चक्राकार प्रवाह को युगों, वर्षों, महीने और सप्ताहों में बांटा गया लगता है परन्तु समय का यह बंटवारा सिक्ख जीवन को जीवन की सच्चाईयों के प्रति अधिक चेतन और ज़िम्मेदार होने की प्रेरणा देता है। इस रचना में प्रकृति की सुन्दरता, उसकी उग्रता गुरु नानक देव जी के हृदय को चारों ओर फैली हुई परम सत्ता के प्रति और अधिक जीवंत एवं गुंजायमान कर देती है और गुरु नानक देव के पर्यावरण के सूक्ष्म अनुभव को प्रस्तुत करती है। विरहाकुल आत्मा का इस रचना में भंवरे, पपीहे, मेंढक, खिले हुए फूलों और हरीभरी शाखाओं के रूप में वर्णन सुन्दर बन पड़ा है जो यह भी बताता है कि प्रकृति में कुछ भी व्यर्थ एवं निरर्थक नहीं है जिसे हटाया जाय और प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ा जाय।